vol - 7 हदीस न. 5245 से 6516

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

صحيح بخاري

सहीह बुख़ारी

मय तर्जुमा व तफ़सीर

जिल्द : सात

मुरत्तिब

अमीरुल मोमिनीन फ़िल हदीष सैयदुल फ़ुक़हा हज़रत इमाम अबू अब्दुल्लाह

मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी (रह.)

उर्दू तर्जुमा व तशरीह

हज़रत मौलाना मुहम्मद दाऊद राज़ (रह.)

हिन्दी तर्जुमा

सलीम ख़िलजी

प्रकाशक : शो'बा नश्रो इशाअत

जमीअत अहले हदीस, जोधपुर-राजस्थान

© सर्वाधिकार प्रकाशनाधीन सुरक्षित

अल्लामा मुहम्मद दाऊद राज़ (रह.) के ख़लीफ़ा नज़ीर अहमद बिन मुहम्मद दाऊद राज़ ने सहीह बुख़ारी की उर्दू शरह के हिन्दी अनुवाद सम्बंधित समस्त अधिकार जमीयत अहले हदीष़ जोधपुर (प्रकाशक) के नाम कर दिये हैं। इस किताब में प्रकाशित सामग्री के सर्वाधिकार प्रकाशक के पास सुरक्षित है। कोई व्यक्ति/संस्था/समूह/प्रकाशन आदि इस पुस्तक की आंशिक अथवा पूरी सामग्री किसी भी रूप में मुद्रित/प्रकाशित नहीं कर सकता। इस चेतावनी का उल्लंघन करने वालों के ख़िलाफ़ क़ानूनी कार्रवाई की जाएगी, जिसके समस्त हर्जे-ख़र्चे के वे स्वयं उत्तरदायी होंगे। सभी विवादों का न्यायक्षेत्र जोधपुर (राजस्थान) होगा।

नाम किताब : सहीह बुख़ारी (हिन्दी तर्जुमा व तफ़्सीर)
मुरत्तिब (अ़रबी) : अबू अ़ब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी (रह.)
उर्दू तर्जुमा व शरह : अ़ल्लामा मुहम्मद दाऊद राज़ (रह.)
हिन्दी तर्जुमा व नज़रे-ष़ानी : सलीम ख़िलजी
तस्हीह (Proof Checking) : जमशेद आ़लम सलफ़ी

कम्प्यूटराइज़ेशन, डिज़ाइनिंग एवं लेज़र टाइपसेटिंग : ख़लीज मीडिया, जोधपुर (राज.) khaleejmedia78@yahoo.in # 91-98293-46786
हिन्दी टाइपिंग : मुहम्मद अकबर
ले-आउट व कवर डिज़ाइन : मुहम्मद निसार खिलजी, बिलाल ख़िलजी
मार्केटिंग एक्ज़ीक्यूटिव : फ़ैसल मोदी

ता'दाद पेज (जिल्द-7) : 736 पेज
प्रकाशन (प्रथम संस्करण) : फरवरी 2012 (रबी-उल-अव्वल 1433 हिजरी)
ता'दाद (प्रथम संस्करण) : 2400
क़ीमत (जिल्द-7) : 500/-
प्रिण्टिंग : अनमोल प्रिण्ट्स, जोधपुर (0291-2742426)
प्रकाशक : जमीयत अहले हदीष़ जोधपुर (राज.)

मिलने के पते

मुहम्मदी एण्टरप्राइजेज़
तेलियों की मस्जिद के पीछे, सोजती गेट के अन्दर, जोधपुर-1
(फ़ोन): 99296-77000, 92521-83249, 93523-63678, 90241-30861

अल किताब इण्टरनेशल
जामिया नगर, नई दिल्ली-25
(फ़ोन): 011-6986973
93125-08762

फ़ेहरिस्ते-मज़ामीन

मज़मून	सफ़ा नं.
जिमाअ से बच्चे की ख़्वाहिश रखने का बयान	23
जब ख़ाविन्द सफ़र से आए तो..........	24
सूरह नूर की एक आयत की तफ़्सीर	25
इस आयत में जो बयान है कि और वो बच्चे जो अभी बुलूग़त की उम्र	26
एक मर्द का दूसरे से यह पूछना.......	26
किताबुत्तलाक़	
सूरह तलाक़ की आयत की तशरीह	27
अगर हाइज़ा को तलाक़ दे दी जाए........	28
तलाक़ देने का बयान और क्या........	30
अगर किसी ने तीन तलाक़ दे दी.........	32
जिसने अपनी औरत को इख़्तियार दिया	40
जब किसी ने अपनी बीवी से कहा कि मैंने तुम्हें जुदा...	40
जिसने अपनी बीवी से कहा कि तू मुझ पर हराम है	41
सूरह तहरीम की आयत की तशरीह	42
निकाह से पहले तलाक़ नहीं होती	45
अगर कोई जबरन बीवी को अपनी बहन कह दे	47
ज़बदस्ती और जबरन तलाक़ देने का हुक्म	47
ख़ुलअ के बयान में	52
मियाँ-बीवी में नाइत्तिफ़ाक़ी का बयान.......	45
अगर लौण्डी किसी की निकाह में हो.......	55
बरीरा (रज़ि) के शौहर के बारे में नबी करीम (ﷺ) का..	57
सूरह बक़रह की एक आयत की तशरीह	58
इस्लाम क़ुबूल करने वाली मुश्रिक औरतों से निकाह	58
इस बयान में कि जब मुश्रिक या नस़रानी औरत.......	60
आयते शरीफ़ा ईला के बारे में	61
जो शख़्श गुम हो जाए उसके घरवालों........	63
ज़िहार का बयान	65
अगर तलाक़ वग़ैरह इशारे से दी	66
लिआन का बयान	70
जब इशारे से अपनी बीवी के बच्चे का इंकार करे.....	73
लिआन करने वाले को क़सम खिलाना	73
लिआन की इब्तिदा मर्द करेगा	74
मस्जिद में लिआन करने का बयान	75
रसूल (ﷺ) का ये फ़र्माना कि अगर मैं बग़ैर गवाही......	77
इस बारे में कि लिआन करने वाली का मह्र मिलेगा	78
हाकिम का लिआन करने वालों से ये कहना तुम में......	78
लिआन करने वालों में जुदाई कराना	79
लिआन के बाद औरत का बच्चा माँ से मिला दिया.....	80
इमाम या हाकिम लिआन के वक़्त यूँ दुआ करे	80
जब किसी ने अपनी बीवी को तीन तलाक़ दी.......	81
आयत 'वल्लाती यइस्न मिनल्महीज़' की तफ़्सीर	82
हामिला औरतों की इद्दत ये है कि बच्चा जने	82
अल्लाह का ये फ़र्माना कि मुतल्लक़ा औरतें अपने का.....	83
फ़ातिमा बिन्ते क़ैस (रज़ि.) का वाक़िआ	84
वो मुतल्लक़ा औरतें जिसके शौहर के घर में	86
अल्लाह पाक का एक इर्शादे गिरामी	87
सूरह बक़रह की एक और आयते शरीफ़ा	87
हाइज़ा से रुजूअ करना	89
जिस औरत का शौहर मर जाए वो चार महीने दस दिन...	89
औरत इद्दत में सुरमे का इस्तेमाल न करे	91
ज़मान-ए-इद्दत में हैज़ से पाकी के वक़्त.....	92
सोग वाली औरत यमन के धारीदार कपड़े पहन सकती है	92
आयत और जो लोग तुम में से मर जाए......	93
रण्डी की ख़र्ची और निकाहे फ़ासिदा का बयान	95
जिस औरत से सुह्बत की उसका पूरा मह्र वाजिब......	96
औरत को बतौरे सुलूक कुछ कपड़ा या ज़ेवर.......	97
किताबुन्नफ़्क़ात	
बीवी बच्चों पर ख़र्च करने की फ़ज़ीलत	99
मर्द पर बीवी बच्चों का ख़र्च देना वाजिब है	101
मर्द का अपनी बीवी बच्चों के लिए एक साल का ख़र्च..	102
इर्शादे बारी तआला माएँ अपने बच्चों को दूध पिलाएँ...	105

22

22

फ़ेहरिस्ते-मज़ामीन

मज़मून	सफ़ा नं.
किसी औरत का शौहर अगर ग़ायब हो....	106
औरत का अपने शौहर के घर में कामकाज करना	107
औरत के लिए ख़ादिम का होना	108
अगर मर्द ख़र्च न करे तो औरत उसकी इजाज़त......	109
औरत का अपने शौहर के माल की......	110
औरत को कपड़ा दस्तूर के मुताबिक़ देना चाहिए	111
औरत अपने ख़ाविन्द की मदद उसकी औलाद की.....	111
मुफ़्लिस आदमी को जब कुछ मिले तो पहले.......	112
रसूले करीम (ﷺ) का फ़र्माना कि जो शख़्स मर जाए...	114
आज़ाद और लौण्डी दोनों अना हो सकती है.....	115
किताबुत्तआम	
चन्द आयात की तशरीह में	117
खाने के शुरू में बिस्मिल्लाह पढ़ना और दाएँ हाथ से खाना	119
बर्तन में सामने से खाना	119
जिसने अपने साथी के साथ खाते वक़्त	120
खाने पीने में दाएँ हाथ का इस्तेमाल होना	121
पेट भर कर खाना खाना दुरुस्त है	121
सूरह नूर की एक आयते शरीफ़ा	124
मैदे की बारीक चपाती खाना.....	124
सत्तू खाने के बयान में	126
आँहज़रत (ﷺ) कोई खाना न खाते......	127
एक आदमी का पूरा खाना दो के लिए काफी हो सकता है	128
मोमिन एक आँत में खाता है	128
तकिया लगा कर खाना कैसा है?	130
भुना हुआ गोश्त खाना	131
ख़ज़ीज़ा का बयान	131
पनीर का बयान	133
चुक़न्दर और जौ खाने का बयान	133
गोश्त के पकने से पहले उसे हाण्डी से निकाल कर खाना	134
बाज़ू का गोश्त नोच कर खाना दुरुस्त है	134
गोश्त छुरी से काट कर खाना	136
रसूले करीम (ﷺ) ने किसी क़िस्म के खाने में ऐब.....	136
जौ को पीस कर मुँह से फूँक कर खाना	137
नबी करीम (ﷺ) और सहाबा की ख़ुराक का बयान	137
तल्बीना यानी हरीरा का बयान	139
सरीद के बयान में	140
खाल समेत भूनी हुई बकरी और शाना और पसली..	141
सलफ़ सॉलेहीन अपने घरों में और सफ़रों में......	142
हैस के बयान में	144
चाँदी के बर्तनों में खाना कैसा है?	145
खाने का बयान	146
सालन का बयान	147
मीठी चीज़ और शहद का बयान	148
कद्दू का बयान	149
अपने दोस्तों और मुसलमान भाईयों की दा'वत के.....	149
साहिबे ख़ाना के लिए ज़रूरी नहीं है कि.....	150
शोरबा का बयान	151
ख़ुश्क किये हुए गोश्त के टुकड़े का बयान	151
जिसने एक ही दस्तरख़्वान पर कोई चीज़.......	152
ताज़ा खजूर और ककड़ी एक साथ खाना	153
रद्दी खजूर (बवक़्ते ज़रूरत राशन तक़्सीम करने)......	153
ताज़ा और ख़ुश्क खजूर के बयान में	154
खजूर के दरख़्त का गूँदा खाना जाइज़ है	156
अज्वा खजूर का बयान	156
दो खजूरों को एक साथ मिलाकर खाना	157
ककड़ी खाने का बयान	157
खजूर के दरख़्त की बरकतों का बयान	157
एक वक़्त में दो तरह के खाने जमा करके खाना	158
दस-दस मेहमानों को एक-एक बार बुलाकर खाने पर..	158
लहसुन और दूसरी (बदबूदार) तरकारियों का बयान	159
कबाष़ का बयान	160
खाना खाने के बाद कुल्ली करने का बयान	160
रूमाल से साफ़ करने से पहले अंगुलियों को चाटना	161
रूमाल का बयान	161
खाना खाने के बाद क्या दुआ पढ़नी चाहिए	162
ख़ादिम को भी साथ खाना खिलाना मुनासिब है	162

फ़ेहरिस्ते-मज़ामीन

मज़मून	सफ़ा नं.
शुक्रगुजार खाने वाले का ष़वाब	163
किसी शख़्स की खाने की दा'वत हो.......	163
शाम का खाना हाज़िर हो तो नमाज़ के लिए जल्दी न करे	164
दा'वत खाने के बारे में एक हिदायते क़ुर्आनी	165
किताबुल अक़ीक़ा	
अगर बच्चे के अक़ीक़े का इरादा न हो तो.......	166
अक़ीक़ा के दिन बच्चे के बाल मूँडना	169
फ़ुरूअ़ के बयान में	170
अ़तीरा के बयान में	171
किताबुज़्ज़बाएह़ वस्सैद	
शिकार पर बिस्मिल्लाह पढ़ना	172
जब बे पर के तीर से या लकड़ी के अ़र्ज़ से शिकार मारा जाए?	173
तीर कमान से शिकार करने का बयान	175
अंगुली से छोटे-छोटे संगरेज़े और गुल्ले मारना	176
उसके बयान में जिसने ऐसा कुत्ता पाला........	177
जब कुत्ता शिकार में से ख़ुद खा ले	178
जब शिकार किया हुआ जानवर शिकारी को दो या तीन दिन के बाद मिले?	179
शिकारी शिकार के साथ जब दूसरा कुत्ता पाए	180
शिकार करने को बतौरे मश्ग़ला इख़्तियार करना	181
इस बयान में कि पहाड़ों पर शिकार करना जायज़ है	182
शिकार से मुतअ़ल्लिक़ सूरह माइदा की एक आयत	184
टिड्डी खाना जायज़ है	187
मजूसियों का बर्तन इस्तेमाल करना	187
ज़िब्ह पर बिस्मिल्लाह पढ़ना और......	188
वो जानवर जिनको थानों या बुतों के नाम पर ज़िब्ह किया गया हो	190
इस बारे में कि रसूलुल्लाह (ﷺ) का इर्शाद है कि जानवर को अल्लाह......	190
बाँस, सफ़ेद धारदार पत्थर और लोहा जो ख़ून बहावे...	191
औ़रत और लौण्डी का ज़बीहा भी जायज़ है	192
इस बारे में कि जानवर को दाँत, हड्डी और नाख़ून से ज़िब्ह	193
देहातियों या उनके जैसे (अहकामे दीन से बेख़बर लोगों)	193
अहले किताब के ज़बीहे और उन ज़बीहों की चर्बी का बयान	193
इस बयान में कि जो पालतू जानवर बिदक जाए......	194
नह्र और ज़िब्ह के बयान में	195
ज़िन्दा जानवर के पाँव वग़ैरह काटना या उसे बंद करके...	197
मुर्ग़ी खाने का बयान	198
घोड़े का गोश्त खाने का बयान	200
पालतू गधे का गोश्त खाना मना है	200
हर फाड़ कर खाने वाले दरिन्दे (परिन्दे) के......	203
मुर्दार जानवर की खाल का क्या हुक्म है?	203
मश्क का इस्तेमाल जायज़ है	204
ख़रगोश का गोश्त हलाल है	205
साहना खाना जायज़ है	205
जब जमे हुए या पिघले हुए घी में चूहा पड़ जाए तो क्या हुक्म है?	206
जानवर के चेहरों पर दाग देना या निशान करना कैसा है?	207
अगर मुजाहिदीन की किसी जमाअ़त को ग़नीमत मिले..	208
जब किसी क़ौम का कोई ऊँट बिदक जाए....	209
जो शख़्स भूख से बेक़रार हो वो मुर्दार खा सकता है	210
किताबुल अज़्हिया	
क़ुर्बानी करना सुन्नत है	211
इमाम का क़ुर्बानी के जानवर लोगों में तक़्सीम करना	212
मुसाफ़िर और औ़रतों की तरफ़ से क़ुर्बानी जायज़ है	213
क़ुर्बानी के दिन गोश्त की ख़्वाहिश करना जायज़ है	214
जिसने कहा कि क़ुर्बानी सिर्फ़ दसवीं तारीख़ तक ही...	214
ईदगाह में क़ुर्बानी करने का बयान	216
नबी करीम (ﷺ) का फ़र्मान अबू बुर्दा (रज़ि.) के लिए	217
इस बारे में जिसने क़ुर्बानी के जानवर अपने हाथ से....	219
जिसने दूसरे की क़ुर्बानी ज़िब्ह की	219
क़ुर्बानी का जानवर नमाज़े ईदुल अज़्हा के बाद ज़िब्ह करना चाहिए	219
ज़िब्ह किये जाने वाले जानवर की गर्दन पर.....	221
ज़िब्ह करने के वक़्त अल्लाहु अकबर कहना	222
अगर कोई शख़्स अपनी क़ुर्बानी का जानवर हरम में	222

22

23

23

फ़ेहरिस्ते-मज़ामीन

मज़मून	सफ़ा नं.
क़ुर्बानी का कितना गोश्त खाया जाए.....	223
किताबुल अश्रिबा	
सूरह माइदा की तफ़्सीर के बयान में	226
शराब अंगूर वग़ैरह से भी बनती है	226
शराब की हुर्मत जब नाज़िल हुई	229
शहद की शराब जिसे बतह कहते थे	230
इस बारे में कि जो भी पीने वाली चीज़ अ़क़्ल को मदहोश कर दे	231
उस शख़्स की बुराई जो शराब का नाम बदल कर उसे ह़लाल करे	232
बर्तनों और पत्थरों के प्यालों में नबीज़ भिगोना नाजायज़ है	233
मुमानिअ़त के बाद हर क़िस्म के बर्तनों में नबीज़ भिगोने...	234
खजूर का शर्बत यानी नबीज़ जब तक नशा आवर न हो	236
बाज़क़ (अंगूर के शीरे की हल्की आँच में पकाई हुई शराब)	236
इस बयान में कि गदरी और पुख़्ता खजूर मिलाकर	238
दूध पीना और आयते क़ुर्आनी का ज़िक्र	238
मीठा पानी ढूँढ़ना	242
दूध में पानी मिलाना जाइज़ है	243
किसी मीठी चीज़ का शर्बत और शहद का शर्बत बनाना	244
खड़े-खड़े पानी देना	244
जिसने ऊँट पर बैठ कर पानी (या दूध) पिया	246
पीने में तक़्सीम का दौर दाहिनी तरफ़ से	246
अगर आदमी दाहिनी तरफ़ वाले से इजाज़त लेकर....	246
हौज़ से मुँह लगाकर पीना जायज़ है	247
बच्चों को बड़ों-बूढ़ों की ख़िदमत करना ज़रूरी है	248
रात को बर्तन का ढाँपना ज़रूरी है	248
मश्क में मुँह लगाकर पानी पीना दुरुस्त नहीं है	249
बर्तन में साँस नहीं लेना चाहिए	250
पानी दो या तीन साँस में पीना चाहिए	251
सोने के बर्तन में खाना या पीना ह़राम है	251
चाँदी के बर्तन में पीना ह़राम है	251
कटोरियों में पीना दुरुस्त है	253
नबी करीम (ﷺ) के प्याले और आपके बर्तन में पीना	253
मुतबर्रक पानी पीना	255
किताबुल मर्ज़	
बीमारी के कफ़्फ़ारा होने का बयान	257
बीमारी की सख़्ती कोई चीज़ नहीं	259
बलाओं में सबसे ज़्यादा सख़्त आज़माइश अंबिया की होती है	260
बीमार की मिज़ाज़पुर्सी का वाजिब होना	261
बेहोश की इयादत करना	261
रियाह का रुक जाने से जिसे मिर्गी का आ़रिज़ा हो	262
उसका षवाब जिसकी बीनाई जाती रही	263
औ़रतें मर्दों की बीमारी में पूछने के लिए जा सकती हैं	263
बच्चों की इयादत भी जायज़ है	264
गाँव में रहने वालों की इयादत के लिए जाना	265
मुश्रिक की इयादत भी जायज़ है	266
अगर कोई शख़्स मरीज़ की इयादत के लिए गया.....	266
मरीज़ के ऊपर हाथ रखना	267
इयादत के वक़्त मरीज़ से क्या कहा जाए...	268
मरीज़ की इयादत को सवार हो कर या पैदल चलना.....	269
मरीज़ का यूँ कहना मुझे तक्लीफ़ है.......	271
मरीज़ लोगों से कहे कि मेरे पास से उठकर चले जाओ	273
मरीज़ बच्चे को किसी बुज़ुर्ग के पास ले जाना......	274
मरीज़ का मौत की तमन्ना करना मना है	274
जो शख़्स बीमार की इयादत को जाए वो क्या दुआ़ करे	276
इयादत करने वाले को बीमार के लिए वुज़ू करना	277
जो शख़्स वबा और बुख़ार के दूर करने के लिए दुआ़ करे	277
किताबुत्तिब्ब	
अल्लाह तआ़ला ने कोई बीमारी ऐसी नहीं उतारी जिसकी...	279
क्या मर्द कभी औ़रत का या किसी औ़रत मर्द का इलाज कर सकती है	279
अल्लाह ने शिफ़ा तीन चीज़ों में रखी है	280
शहद के ज़रिये इलाज करना	281
ऊँट के दूध के ज़रिये इलाज करने का बयान	282

23

23

फ़ेहरिस्ते-मज़ामीन

मज़मून	सफ़ा नं.
ऊँट के पेशाब से इलाज करना	283
कलौंजी का बयान	283
मरीज़ के लिए हरीरा पकाना	285
नाक में दवा डालन दुरुस्त है	285
क़िस्त हिन्दी और क़िस्त बहरी यानी कोट जो.....	285
किस वक़्त पछना लगवाया जाए	286
बीमारी की वजह से पछना लगवाना दुरुस्त है	287
आधे सर में दर्द या पूरे सर में दर्द में पछना लगवाना	288
मुह्रिम का तक्लीफ़ की वजह से सर मूँडना जाइज़ है	289
दाग़ लगवाना और लगाना	290
अष्मद और सुरमा लगाना जब आँखें दुखती हो	291
ख़ज़ाम का बयान	292
मन आँख के लिए शिफ़ा है	293
मरीज़ के हलक़ में दवा डालना	293
अ़ज़्रह यानी हलक़ का कव्वा गिर जाने का इलाज	296
पेट का आ़रिज़ा में क्या दवा दी जाए	296
स़फ़र स़िर्फ़ पेट की एक बीमारी है	297
ज़ातुल जनब (न्यूमोनिया) का बयान	297
ज़ख़्मों का ख़ून रोकने के लिए बोरिया जला कर ज़ख़्म पर लगाना	299
बुख़ार दोज़ख़ की भाप से है	299
जहाँ की आबो हवा नामुवाफ़िक़ हो वहाँ से निकल कर..	300
त़ाऊ़न का बयान	301
जो शख़्स त़ाऊ़न में स़ब्र करके वहीं रहे....	305
क़ुर्आन मजीद और मुअ़व्वज़ात पढ़कर मरीज़ पर दम करना	305
सूरह फ़ातिहा से दम करना	306
नज़रे बद लग जाने की स़ूरत में दम करना	308
नज़रे बद लगना हक़ है	308
साँप और बिच्छू के काटे पर दम करना	309
रसूले करीम (ﷺ) ने बीमारी से शिफ़ा के लिए क्या दुआ़ पढ़ी है?	310
दुआ़ पढ़ कर मरीज़ को फूँक मारना......	312
बीमार पर दम करते वक़्त दर्द की जगह पर दाहिना हाथ फेरना	314
औ़रत मर्द पर दम कर सकती है	315
दम झाड़ न कराने की फ़ज़ीलत	315
बदशगुनी लेने का बयान	317
नेक फ़ाल लेना कुछ बुरा नहीं	317
उल्लू को मनहूस समझना लग्व है	318
कहानत का बयान	318
जादू का बयान	321
शिर्क और जादू उन गुनाहों में से हैं जो आदमी को तबाह कर....	323
जादू का तोड़ करना	323
जादू के बयान में	325
इस बयान में कि बाज़ तक़रीरें भी जादू भरी होती हैं	326
अ़ज्वा खजूर जादू के लिए दवा है	326
उल्लू का मनहूस होना महज़ ग़लत़ है	327
अमराज़ में छूत लगने की कोई ह़क़ीक़त नहीं है	328
नबी करीम (ﷺ) को ज़हर दिये जाने से मुताल्लिक़ बयान	329
ज़हर पीना या ज़हरीली और ख़ौफ़नाक दवा	331
गधी का दूध पीना कैसा है?	332
जब मक्खी बर्तन में पड़ जाए	333
किताबुल लिबास	
लिबास से मुताल्लिक़ एक आयते क़ुर्आनी	333
अगर किसी का कपड़ा यूँ ही लटक जाए, तकब्बुर की निय्यत न हो	334
कपड़ा ऊपर उठाना	335
कपड़ा जो टख़नों के नीचे हो	335
हाशियादार तहबन्द पहनना	338
चादर उठाना	339
क़मीस़ पहनना	339
क़मीस़ के गिरेबान सीरे पर या ऊपर कहीं	341
लड़ाई में ऊन का जुब्बा पहनना	342
क़ुबा और रेशमी फ़ुरूज के बयान में	343
बरानस यानी टोपी पहनना	344

फ़ेहरिस्ते-मज़ामीन

मज़मून	सफ़ा नं.
पाजामा पहनने के बारे में	344
अ़मामे के बयान में	345
सर पर कपड़ा डाल कर सर छुपाना	345
ख़ूद का बयान	347
धारीदार चादरों और कमलियों का बयान	347
कमलियों और ऊनी हाशियादार चादरों के बयान में	350
इश्तिमाल स़म्माअ का बयान	351
एक कपड़े में गोट मारकर बैठना	353
काली कमली का बयान	353
सब्ज़ रंग के कपड़े पहनना	355
सफ़ेद कपड़े पहनना	356
रेशम पहनना और मर्दों का उसे अपने लिए बिछाना	357
पहने बग़ैर रेशम स़िर्फ़ छूना जायज़ है	360
मर्द के लिए रेशम का कपड़ा बतौरे फ़र्श बिछाना मना है	360
मिस्र का रेशमी कपड़ा मर्द के लिए कैसा है	360
ख़ारिश की वजह से मर्दों को रेशमी कपड़े के इस्तेमाल..	361
रेशम औ़रतों के लिए जायज़ है	361
इस बयान में कि आँह़ज़रत (ﷺ) किस लिबास या....	362
जो शख़्स़ नया कपड़ा पहने उसे क्या दुआ़ दी जाए	365
मर्दों के लिए ज़ाफ़रान (केसरिया) रंग का इस्तेमाल	366
सुर्ख़ कपड़ा पहनने के बयान में	366
सुर्ख़ ज़ीनपोश का क्या हुक्म है?	367
स़ाफ़ चमड़े की जूती पहनना	367
इस बयान में कि पहले अपने दाएँ पाँव में जूता पहने	369
इस बयान में कि पहले बाँए पैर का जूता उतारे	370
इस बारे में कि स़िर्फ़ एक पाँव में जूता हो	370
हर चप्पल में दो तस्मा होना.......	370
लाल चमड़े का ख़ैमा बनाना	371
बोरे या उस जैसी किसी ह़क़ीर चीज़ पर बैठना	372
अगर किसी कपड़े में सोने की घुण्डी या तक्मा लगा हो	372
सोने की अंगुठियाँ पहनना कैसा है	373
मर्द को चाँदी की अंगूठी पहनना	374
अंगूठी में नगीना लगाना दुरुस्त है	376
लोहे की अंगूठी का बयान	376
अंगूठी पर नक़्श करना	377
अंगूठी छंगुलिया में पहननी चाहिए	378
अंगूठी किसी ज़रूरत से मष़लन मुहर करने के लिए.....	379
अंगूठी का नगीना अंदर हथेली की तरफ़ रखना	379
आँह़ज़रत (ﷺ) का ये फ़र्माना कि कोई शख़्स़ अपनी अंगूठी पर लफ़्ज़ मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह........	380
अंगूठी का कंदा तीन सतरों में करना	380
औ़रतों के लिए सोने की अंगूठी पहनना जायज़ है	381
ज़ेवर के हार और ख़ुश्बू या मुश्क के बार औ़रतें पहन सकती हैं	381
एक औ़रत का किसी दूसरी औ़रत से हार आ़रियतन लेना	382
औ़रतों के लिए लिबास पहनने का बयान	382
बच्चों के गले में हार लटकाना जायज़ है	383
ज़नानों और हिजड़ों को जो औ़रतों की चाल ढाल....	384
मूँछों का कतरवाना	386
दाढ़ी का छोड़ देना	387
बुढ़ापे का बयान	387
ख़िज़ाब का बयान	389
घुंघराले बालों का बयान	389
ख़त्मी या गूँद वग़ैरह से बालों को जमाना	392
(सर में बीचो-बीच बालों में) माँग निकालना	394
गेसूओं के बयान में	394
क़ज़अ़ यानी कुछ सर मुँडाना कुछ बाल रखने का बयान	395
औ़रतों का अपने हाथ से अपने ख़ाविन्द को ख़ुश्बू लगाना	396
सर और दाढ़ी में ख़ुश्बू लगाना	397
कंघा करना	397
हाइज़ा औ़रत अपने ख़ाविन्द के सर में कंघी कर सकती है	397
बालों में कंघा करना	398
मुश्क का बयान	398
ख़ुश्बू लगाना मुस्तह़ब है	398
ख़ुश्बू का लौटा देना मना है	399
ज़रीरा का बयान	399

फ़ेहरिस्ते-मज़ामीन

मज़मून	सफ़ा नं.
हुस्न के लिए जो औरतें दाँत कुशादा करवाये	399
बालों में अलग से बनावटी चोटी लगाना	400
चेहरे पर रुएँ उखाड़ने वालों का बयान	402
जिस औरत के बालों में दूसरे के बाल जोड़ें जाएँ	403
गोदने वाली के बयान में	404
गोदवाने वाली औरत की बुराई का बयान	405
तस्वीरें बनाने के बयान में	406
मूर्तियाँ बनाने वालों पर क़यामत के दिन सबसे ज़्यादा..	407
तस्वीरों को तोड़ने के बयान में	407
अगर मूर्तियाँ पाँवों के तले रौंदी जाएँ	408
उस शख़्स की दलील जिसने तौशक और तकिया.....	409
जहाँ तस्वीर हों वहाँ नमाज़ पढ़नी मकरूह है	411
फ़रिश्ते उस घर में नहीं जाते जिसमें मूर्तियाँ हों	411
जिस घर में मूर्तियाँ हो वहाँ न जाना	412
मूर्ति बनाने वाले पर लअ़नत होना	412
जो मूरत बनाएगा उस पर क़यामत के दिन.....	413
जानवर पर किसी को अपने पीछे बैठा लेना	413
एक जानवर पर तीन आदमियों का सवार होना	413
जानवर के मालिक का दूसरे को सवारी पर आगे बैठाना	414
एक मर्द दूसरे मर्द के पीछे सवारी पर बैठ सकता है	414
जानवर पर औरत का मर्द के पीछे बैठना जायज़ है	415
चित्त लेट कर एक पाँव का दूसरे पाँव पर रखना	416
किताबुल अदब	
एहसान और रिश्ता-नातापरवरी की फ़ज़ीलत	417
रिश्तेदारों में अच्छे सुलूक का सबसे ज़्यादा हक़दार	417
वालदैन की इजाज़त के बग़ैर किसी को जिहाद के लिए	418
कोई शख़्स अपने माँ बाप को गाली न दे	418
जिस शख़्स ने अपने वालदैन के साथ नेक सलूक किया	419
वालदैन की नाफ़र्मानी बहुत ही बड़े गुनाहोंमें से है	421
वालिद काफ़िर या मुश्रिक हो तब भी उसके साथ नेक सुलूक करना	422
अगर ख़ाविन्द वाली मुसलमान औरतें अपनी काफ़िर माँ के....	422
काफ़िर व मुश्रिक भाई के साथ अच्छा सुलूक करना	423
नातावालों से सिलह रहमी की फ़ज़ीलत	424
क़त़अ़ रह़मी करने वाले का गुनाह	424
जो शख़्स नाता जोड़ेगा अल्लाह तआ़ला भी उस से मिलाप रखेगा	425
आँहज़रत (ﷺ) का ये फ़र्माना नाता अगर क़ायम रख...	426
नाता जोड़ने के ये मअ़नी नहीं है कि.....	427
दूसरे के बच्चों को छोड़ देना कि वो खेले...	428
बच्चे के साथ रह़्म व शफ़क़त करना	429
अल्लाह तआ़ला ने अपनी रह़मत के सौ ह़िस्से बनाए हैं	431
औलाद को इस डर से मार डालना कि उनको अपने साथ खिलाना पड़ेगा	432
बच्चोंको गोद में बैठाना	432
सुहबत का हक़ याद रखना ईमान की निशानी है	433
यतीम की परवरिश करने वाले की फ़ज़ीलत	434
बेवा औरतों की परवरिश करने वाले का षवाब	434
मिस्कीन और मुह्ताजों की परवरिश करने वाला	435
इंसानों और जानवरों सब पर रह़्म करना	435
पड़ौसी के हुक़ूक़ का बयान	437
उस शख़्स का गुनाह जिसका पड़ौसी उसके शर से......	438
कोई औरत अपनी पड़ौसन के लिए किसी चीज़ के....	439
जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो....	439
पड़ौसियों में कौन सा पड़ौसी मुक़द्दम है	440
हर नेक काम सदक़ा है	440
ख़ुश कलामी का षवाब	441
हर काम में नर्मी और उ़म्दा अख़्लाक़ अच्छी चीज़ है	441
एक मुसलमान को दूसरे मुसलमान की मदद करना	442
सूरह निसा की एक आयत की तफ़्सीर	444
आँहज़रत (ﷺ) सख़्त गो और बदज़ुबान न थे	445
ख़ुश ख़ल्क़ी और सख़ावत का बयान	447
आदमी अपने घर में क्या करता रहे	450
नेक आदमी मुहब्बत अल्लाह पाक......	450
अल्लाह की मुहब्बत रखने की फ़ज़ीलत	451

फ़ेहरिस्ते-मज़ामीन

मज़मून	सफ़ा नं.	मज़मून	सफ़ा नं.
सूरह हुजुरात की एक आयत की तफ़्सीर	452	ह्या और शर्म का बयान	491
गाली देने और लअ़नत करने की मुमानिअ़त	453	जब ह्या न हो तो जो चाहे करो	492
किसी आदमी की निस्बत ये कहना कि लम्बा.......	456	शरीअ़त की बातें पूछने में.....	492
ग़ीबत का बयान	457	नबी करीम (ﷺ) का फ़र्मान कि आसानी करो.......	494
नबी करीम (ﷺ) का फ़र्माना कि अन्सार के सब घरों ...	458	लोगों के साथ फ़राख़ी से पेश आना	496
मुफ़्सिद और शरीर लोगों की........	458	लोगों के साथ ख़ातिर तवाज़ोअ़ से पेश आना	497
चुग़लख़ोरी करना कबीरा गुनाहों में से है	459	मोमिन एक सुराख़ से.....	498
चुग़लख़ोरी की बुराई का बयान	460	मेहमान के हक़ के बयान में	499
सुरह हज्ज की एक आयत की तफ़्सीर	460	मेहमान की इ़ज़्ज़त	500
मुँहदेखी बात करने वाले के बारे में	461	मेहमान के लिए पुर तकल्लुफ़ खाना तैयार करना	502
अगर कोई शख़्स़ दूसरे शख़्स़ की गुफ़्तगू....	461	मेहमान के सामने गुस़्सा और	502
किसी की ता'रीफ़ में मुबालग़ा करना मना है	462	मेहमान का अपने मेज़बान से कहना......	504
अगर किसी को अपने किसी मुसलमान भाई का.....	463	जो उ़म्र में बड़ा हो उसकी तअ़ज़ीम करना	505
सूरह नह्ल की आयत की तशरीह	463	शे'र, रजज़ और ह़दीख़्वानी	507
हसद और पीठ पीछे बुराई की मुमानिअ़त	465	मुश्रिकों को हिजू करना दुरुस्त है	519
एक आयते शरीफ़ा की तफ़्सीर	466	शे'रो-शाइरी में इस त़रह़ अवक़ात.....	522
गुमान से कोई बात कहना	466	नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्माना कि तेरे हाथ......	522
मोमिन के किसी ऐ़ब को छुपाना	467	ज़अ़मू कहने का बयान	523
ग़ुरूर, घमण्ड और तकब्बुर की बुराई	468	लफ़्ज़ वैलक यानी तुझ पर	524
तर्के मुलाक़ात का बयान	469	अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल की मुहब्बत किसको कहते हैं	529
क्या अपने साथी की मुलाक़ात के लिए......	472	किसी का किसी को यूँ कहना	531
मुलाक़ात के लिए जाना....	473	किसी शख़्स़ का मरहबा कहना	533
जब दूसरे मुल्क वुफ़ूद....	473	लोगों को उनके बाप का नाम लेकर.....	533
किसी से भाईचारा और दोस्ती का क़रार करना	474	आदमी को ये कहना चाहिए कि मेरा नफ़्स़	534
मुस्कुराना और हंसना	475	ज़माने को बुरा कहना मना है	534
एक आयते शरीफ़ा की तफ़्सीर	480	नबी करीम (ﷺ) का यूँ फ़र्माना कि करम.....	535
अच्छे चालचलन के बारे में	481	किसी का ये कहना अल्लाह मुझे आप पर क़ुर्बान करे	536
तक्लीफ़ पर स़ब्र करने का बयान	482	अल्लाह पाक को कौन से नाम.....	437
ग़ुस़्से में जिन पर एताब है	483	नबी करीम (ﷺ) का फ़र्मान कि मेरे नाम पर	438
जो शख़्स़ अपने किसी मुसलमान भाई को......	484	ह़ुज़्न नाम रखना	539
अगर किसी ने कोई वजहे मा'क़ूल रख कर.....	485	किसी बुरे नाम को बदल कर अच्छा नाम रखना	540
ख़िलाफ़े शरअ़ काम पर ग़ुस़्सा	487	बच्चे का नाम वलीद रखना	543
ग़ुस़्से से परहेज़ करना	490	जिसने अपने किसी साथी को	544

25

25

फ़ेहरिस्ते-मज़ामीन

मज़मून	सफ़ा नं.
बच्चों की कुन्नियत रखना	544
एक कुन्नियत होते हुए......	545
अल्लाह को जो नाम बहुत ही ज़्यादा ना पसन्दीदा है	546
मुश्रिक की कुन्नियत का बयान	547
तअ़रीज़ के तौर पर	550
किसी शख़्स का किसी चीज़......	551
आसमान की त़रफ़ नज़र उठाना	551
कीचड़ या पानी में लकड़ी मारना	552
किसी शख़्स का ज़मीन पर	553
तअ़ज्जुब के वक़्त अल्लाहु अकबर	554
अंगुलियों से पत्थर या कंकरी.......	555
छींकने वाले का अलहम्दुलिल्लाह कहना	556
छींक अच्छी है और	556
जब जम्हाई आए तो चाहिए कि	558

किताबुल इस्तिअज़ान

मज़मून	सफ़ा नं.
सलाम के शुरू होने का बयान	559
सूरह नूर की एक आयत की तशरीह़	560
सलाम के बयान में	562
थोड़ी जमाअ़त बड़ी जमाअ़त को.......	563
सवार पहले पैदल को सलाम करे	563
चलने वाला पहले बैठने	563
कम उ़म्र वाला पहले.....	563
सलाम को ज़्यादा से ज़्यादा रिवाज देना	564
पहचान हो न हो, हर एक	564
पर्दा की आयत के बारे में	565
इज़्न लेने का इसलिए हुक्म दिया गया.......	567
शर्मगाह के अ़लावा.....	568
सलाम और इजाज़त तीन मर्तबा होनी चाहिए	569
अगर कोई शख़्स बुलाने पर आया हो......	570
बच्चों को सलाम करना	570
मर्दों का औरतों को सलाम करना	571
अगर घर वाला पूछे कि कौन है......	572
जवाब में सिर्फ़ अ़लैकुम सलाम कहना	572
अगर कोई शख़्स कहे कि फलाँ शख़्स......	574
ऐसी मज्लिस वालों को सलाम करना.......	574
जिसने गुनाह करने वाले को सलाम नहीं किया	576
ज़िम्मियों के सलाम का जवाब	576
जिसने ह़क़ीक़ते हाल मालूम करने के लिए.....	577
अहले किताब को किस त़रह़ ख़त़ लिखा जाए	579
ख़त़ किसके नाम से शुरू किया जाए	580
नबी करीम (ﷺ) का इर्शाद कि अपने सरदार......	580
मुस़ाफ़ा का बयान	581
दोनों हाथ पकड़ना....	582
मुआनक़ा यानी गले मिलने का बयान	594
कोई बुलाए तो जवाब में लब्बैक और सअ़दैक कहना	596
कोई शख़्स किसी दूसरे बैठे हुए मुसलमान भाई को	599
जो अपने साथियों की इजाज़त बग़ैर.......	600
हाथ से इह़तिबा करना	601
अपने साथियों के सामने तकिया लगाकर बैठना	601
जो किसी ज़रूरत या किसी ग़र्ज़ की वजह से तेज तेज चले	602
चारपाई या तख़्त का बयान	602
गाव तकिया लगाना या गद्दा बिछाना	603
जुम्आ के बाद क़ैलूला करना	605
मस्जिद में भी क़ैलूला करना जाइज़ है	605
अगर कोई शख़्स कहीं मुलाक़ात को जाए	605
आसानी के साथ आदमी जिस त़रह़ बैठ सके......	607
जिसने लोगों के सामने सरगोशी की	608
चित्त लेटने का बयान	609
किसी जगह सिर्फ़ एक आदमी हो तो एक को.....	610
राज़ छुपाना	611
जब तीन से ज़्यादा आदमी हों तो कानाफूसी करने में ...	611
देर तक सरगोशी करना	612
सोते वक़्त घर में आग को न रहने दी जाए	612
रात के वक़्त दरवाज़े बन्द करना	613
बूढ़ा होने पर ख़त्ना करना.......	613
आदमी जिस काम में मस़रूफ़ हो कर अल्लाह की इ़बादत	615

फ़ेहरिस्ते-मज़ामीन

मज़मून	सफ़ा नं.
इमारत का बनाना कैसा है?	615
किताबुद् दुआ	
सूरह मोमिन की एक आयते शरीफ़ा	618
इस्तिग़फ़ार के लिए अफ़ज़ल दुआ का बयान	619
नबी करीम (ﷺ) का दिन और रात इस्तिग़फ़ार करना	620
तौबा का बयान	620
दाईं करवट पर लेटना	622
वुज़ू करके सोने की फ़ज़ीलत	623
सोते वक़्त क्या दुआ पढ़नी चाहिए	623
सोते हुए दायाँ हाथ दाएँ रुख़्सार के नीचे रखना	624
दाईं करवट पर सोना	625
अगर रात में आदमी की आँख खुल जाए.....	625
सोते वक़्त तक्बीर व तस्बीह पढ़ना	627
सोते वक़्त शैतान से पनाह माँगना और तिलावत करना	628
आधी रात के बाद सुबह सादिक़ से पहले दुआ करने...	629
बैयतुलख़ला जाने के लिए कौन सी दुआ पढ़नी चाहिए	630
सुबह के वक़्त क्या दुआ पढ़ें	630
नमाज़ में कौनसी दुआ पढ़ें 26	632
नमाज़ के बाद दुआ करने का बयान	633
सूरह तौबा की एक आयते शरीफ़ा	635
दुआ में क़ाफ़िया लगाना मकरूह है	638
अल्लाह पाक से अपना मक़सद क़तई तौर पर माँगे	639
जब तक बन्दा जल्दबाज़ी न करे......	640
दुआ में हाथों का उठाना	640
क़िब्ला की तरफ़ मुँह किये बग़ैर दुआ करना	641
क़िब्ला रुख़ होकर दुआ करना	642
नबी करीम (ﷺ) ने अपने ख़ादिम के लिए लम्बी उम्र और ज़्यादती......	642
परेशानी के वक़्त दुआ करना	642
मुसीबत की सख़्ती से अल्लाह की पनाह माँगना	643
नबी करीम (ﷺ) का मर्ज़ुलमौत में दुआ करना......	643
मौत और ज़िन्दगी की दुआ के बारे में	644
रसूले करीम (ﷺ) पर दरूद पढ़ना	647
दुश्मनों के ग़ालिब आने से अल्लाह की पनाह माँगना	651
अज़ाबे क़ब्र से अल्लाह की पनाह माँगना	652
ज़िन्दगी और मौत के फ़ित्नों से पनाह माँगना	653
गुनाह और क़र्ज़ से अल्लाह की पनाह माँगना	653
बुज़दिली और सुस्ती से अल्लाह की पनाह माँगना	654
बुख़्ल से अल्लाह की पनाह माँगना	654
नाकारा उम्र से अल्लाह की पनाह माँगना	654
दुआ से वबा और परेशानी दूर हो जाती है	655
नाकारा उम्र, दुनिया की आज़माइश और दोज़ख़ की आज़माइश से अल्लाह की पनाह......	656
मालदारी के फ़ित्ने से अल्लाह की पनाह माँगना	657
मुह्ताजी के फ़ित्ने से पनाह माँगना	658
बरकत के साथ माल की ज़्यादती के लिए दुआ करना	658
बरकत के साथ कष़रते औलाद की दुआ करना	658
इस्तिख़ारा की दुआ का बयान	659
वुज़ू के वक़्त की दुआ का बयान	660
किसी बुलन्द टीले पर चढ़ते वक़्त की दुआ का बयान	660
किसी नशेब (ढलान) में उतरने की दुआ	661
सफ़र में जाते वक़्त या......	661
शादी करने वाले दूल्हा के लिए दुआ करना	662
जब मर्द अपनी बीवी के पास जाए तो क्या दुआ पढ़े?	663
नबी करीम (ﷺ) की ये दुआ ऐ हमारे रब! हमें दुनिया...	663
दुनिया के फ़ित्नों से पनाह माँगना	664
दुआ में एक ही फ़िक़रा बार-बार अर्ज़ करना	664
मुश्रिकीन के लिए बद् दुआ करना	665
मुश्रिकीन की हिदायत के लिए दुआ करना	668
नबी करीम (ﷺ) का यूँ दुआ करना, ऐ अल्लाह मेरे.....	668
उस क़ुबूलियत की घड़ी में दुआ करना जो जुम्आ के...	670
नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्मान कि यहूद के हक़ में...	670
बिलजहर आमीन कहने की फ़ज़ीलत का बयान	671
ला इलाह इल्लल्लाह कहने की फ़ज़ीलत का बयान	672
सुब्हानल्लाह कहने की फ़ज़ीलत	674

फ़ेहरिस्ते-मज़ामीन

मज़मून	सफ़ा नं.
अल्लाह पाक तबारक व तआला के ज़िक्र की फ़ज़ीलत	675
ला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाह कहना	678
अल्लाह पाक के एक कम सौ (99) नाम हैं	678
ठहर ठहर कर फ़ासले से वअ़ज़ व नसीहत करना	679
किताबुर्रिक़ाक़	
सेहत व फ़राग़त के बयान में	682
आख़िरत के सामने दुनिया की क्या हक़ीक़त है	683
नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्मान कि दुनिया में इस तरह	684
आरज़ू की रस्सी का दराज़ होना	684
जो शख़्स साठ साल की उम्र को पहुँच गया	686
ऐसा काम जिससे ख़ालिस अल्लाह तआला की रज़ामन्दी मक़सूद हो............	687
दुनिया की बहार और रौनक़	688
सूरह फ़ातिर की एक आयते शरीफ़ा	692
सालेहीन का गुज़र जाना	693
माल के फ़ित्ने से डरते रहना	693
नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्मान कि ये दुनिया का माल...	695
जो आदमी माल अल्लाह की राह में दे दे.....	696
जो लोग दुनिया में ज़्यादा मालदार हैं वही.....	697
नबी करीम (ﷺ) का ये इर्शाद कि अगर उहुद पहाड़ के बराबर सोना.......	699
मालदार वो है जिसका दिल ग़नी हो	701
फ़क़र की फ़ज़ीलत का बयान	701
नबी करीम (ﷺ) और आप के सहाबा किराम के गुज़रान का बयान	703
नेक अमल पर हमेशगी करना.....	708
अल्लाह के ख़ौफ़ के साथ उम्मीद भी रखना	711
अल्लाह की हराम की हुई चीज़ों से बचना	712
जो अल्लाह पर भरोसा करेगा.....	713
बेफ़ायदा बातचीत करना मना है	714
ज़बान की हिफ़ाज़त करना	714
अल्लाह के डर से रोने की फ़ज़ीलत	716
अल्लाह से डरने की फ़ज़ीलत का बयान	717
गुनाहों से बाज़ रहने का बयान	718
एक इर्शादे नबवी (ﷺ)......	719
दोज़ख़ को ख़्वाहिशाते नफ़्सानी से ढाँप दिया गया है	720
जन्नत तुम्हारे जूते के तस्मे से भी ज़्यादा.......	720
उसे देखना चाहिए जो नीचे दर्जे का है........	721
जिसने नेकी या बदी का इरादा किया.....	721
छोटे और हक़ीर गुनाहों से भी बचते रहना	721
अमलों का ऐतबार ख़ात्मे पर है	722
बुरी सोहबत से तन्हाई बेहतर है	723
दुनिया से अमानतदारी का उठ जाना	724
रिया और शोहरत तलबी की मज़म्मत में	726
जो अल्लाह की इताअत करने के लिए अपने नफ़्स......	726
तवाज़ोअ या'नी आजिज़ी करने के बयान में	727
नबी करीम (ﷺ) का इर्शाद कि मैं और क़यामत दोनों...	729
जो अल्लाह से मुलाक़ात को पसन्द करता है........	730
मौत की सख़्तियों का बयान	732

26

26

फ़ेहरिस्त तशरीहे-मज़ामीन

मज़मून	सफ़ा नं.
शादी का अव्वलीन मक़सद अफ़्ज़ाइशे नस्ल है	24
बाक़ियातुस्सालिहात में औलाद को अव्वलीन दर्जा हासिल है	24
एक निहायत ही अफ़सोसनाक वाक़िआ मअ तफ़्सीलात	26
ईदगाह में मस्तूरात में चन्दे की अपील	26
तलाक़ की तफ़्सीलात	27
एक बदनसीब औरत का बयान	30
ज़बान दराज़ मुआनिदीन पर एक नोट	31
तलाक़ देने का मस्नून तरीक़ा	33
तत्लीक़ाते षलाषा क़ुर्आन हदीष की रोशनी में	33
लिआन करने ही से जुदाई हो जाती है	39
असल तलाक़ वही है जिस में ये लफ़्ज़ इस्तेमाल किया जाए	41
शहद पीने का वाक़िआ मअ तफ़्सीलात	44
सौकनों का जलापा फ़ितरी होता है	45
फ़ज़ाइले इमाम बुख़ारी (रह.)	46
हाफ़िज़ इब्ने हजर मरहूम का ज़िक्रे ख़ैर	46
ग़ुस्से की तलाक़ पर तब्सरा	49
लौला अलिय्युना लहलकं उम्र का मौक़ा-ए-वुरूद	50
अस्रे हाज़िर के बेइन्साफ़ मुक़ल्लिदीन पर तब्सरा	50
हज़रत माइज़ अस्लमी (रज़ि.) के फ़ज़ाइल	51
इंजीले मुक़द्दस में एक ज़िना का मुक़द्दमा	51
ख़ुलअ की तफ़्सीलात	52
मुअतरेज़ीने इस्लाम के क़ौले फ़ासिद की तर्दीद	52
फ़ुक़हा-ए-किराम के एक क़यास पर तब्सरा	55
इमाम बुख़ारी (रह.) बहुत बड़े फ़क़ीहे-उम्मत हैं	56
ईला की मुद्दत चार माह है	62
मफ़्क़ूदुल ख़बर के बारे में तफ़्सीलात	64
ज़िहार की तफ़्सीलात	66
गूँगा आदमी इशारे से तलाक़ देगा	67
कभी इशारात पर भी फ़तवा दिया जा सकता है	68
हज़रत शैख़ मुहम्मद बिन अब्दुल वह्हाब नजदी (रह.)	68
हज़रत सर सय्यद अहमद व मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादयानी	68
मिर्ज़ाइयों के एक ग़लत ख़्याल की तर्दीद	72
इल्मे क़याफ़ा पर भी बाज़े यक़ीन किया है	77
हामिला औरतों की इद्दत का फ़तवा	82
एक फ़तवा-ए-नबवी का बयान	83
षलाष-ए-क़ुरूअ की तफ़्सीर	84
तलाक़े रजई में मस्कन और ख़र्च मर्द पर लाज़िम है	86
औरतों को क़ब्रिस्तान में जाना मना है	92
सुन्नी मुसलमानों के लिए क़ाबिले ग़ौर हिदायत	93
मुत्आ और बाज़ दीगर इस्तिलाहात की तशरीह	98
हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) का ज़िक्रे ख़ैर	101
दूध पिलाने की मुद्दत दो साल है	106
मर्द बख़ील हो तो औरत को इजाज़त है कि?	108
हिन्दा बिन्ते उत्बा का ज़िक्रे ख़ैर	108
इस गिरानी के दौर में क़ाबिले तवज्जो उलमा-ए-किराम	113
षुवैबा की आज़ादी का वाक़िआ	116
हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) का क़ाबिले मुतालआ वाक़िआ	118
एक मुन्किरे हदीष को क़ुदरत की तरफ़ से फ़ौरी सज़ा	119
हज़रत इमाम यूसुफ़ (रह.) का एक बेहतरीन फ़तवा	120
अहले हदीषों को बदनाम करने वालों का बयान	121
हदीष के तर्जुमे में लापरवाही	121
हज़रत अबू तलहा के घर एक दा'वते आम का वाक़िआ	122
अइम्म-ए-किराम गोह की हिल्लत के क़ाइल हैं	128
हज़रत शाह वलीउल्लाह (रह.) की एक तशरीहे हदीष	130
क़ाबिले तवज्जोह मुफ़्तियाने किराम	133
सादा ज़िन्दगी गुज़ारना अहमतरीन सुन्नते नबवी है	139

फ़ेहरिस्त तशरीहे-मज़ामीन

मज़मून	सफ़ा नं.
तअज्जुब है इन मुक़ल्लीदीने जामेदीन पर	141
फ़ज़ाइले हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.)	142
एक बकष्रत पढ़ने की दुआए नबवी	144
हज़रत उम्मुल मोमिनीन सफ़िया बिन्ते हुय्य का ज़िक्रे ख़ैर	145
हालात हज़रत जा'फ़र बिन अबी तालिब (रज़ि.)	148
ख़वासे कद्दू का बयान	149
मुख़्तसर हालात हज़रत इमाम मालिक (रह.)	151
आले मुहम्मद (ﷺ) पर एक तफ़्सील	152
सरकारी सतह पर राशन की तक़्सीम	154
खजूर की एक ख़ास ख़ुसूसियत	156
नबियों का बकरी चराना और इसमें हिकमतें	160
खाने से फ़ारिग़ होने पर एक और दुआए मस्नूना	162
अक़ीक़ा की कुछ तफ़्सीलात	166
अक़ीक़ा की और तफ़्सीलात	170
फ़रअ और अतीरा की तफ़्सीलात	170
ज़िब्ह के वक़्त बिस्मिल्लाह पढ़ना हिल्लत की शर्त है	173
हाफ़िज़ इब्ने हजर का एक फ़तवा	173
बन्दूक़ के शिकार के बारे में	174
ग़ैर मुस्लिमों के बर्तन के बारे में	174
शिकार करने का मुबाह और मज़मूम होना	181
हालात हज़रत इमाम शअबी (रह.)	186
भूल से ज़िब्ह के वक़्त बिस्मिल्लाह न पढ़ी हो तो?	189
तफ़्सील आयत 'व मा उहिल्ला लिग़ैरिल्लाह'	190
इस्लाम की असल रूह रहम व करम है	198
घोड़े की हिल्लत के मुतअल्लिक़ अज़ शैख़ुल हदीष मुबारकपुरी मदज़िल्लहुल आली	200
हालात हज़रत राफ़ेअ बिन ख़दीज़ (रज़ि.)	209
शाह अब्दुल अज़ीज़ वग़ैरह उलमा का एक क़ौल........	211
सुन्नत का इस्तिलाही मफ़्हूम	212
सारे अहले ख़ाना की तरफ़ से एक बकरा काफ़ी है	213
हालात हज़रत मुहम्मद बिन सीरीन (रह.)	214
हालात हज़रत नाफ़ेअ बिन सरजस (रह.)	216
लफ़्ज़ खुज़अ की ता'रीफ़	221
तअज्जुब है उन फ़ुक़हा पर	221
क़ुर्बानी की दुआए मस्नूना	222
मक़ासिदे क़ुर्बानी	225
क़ुर्तुबी (रह.) का एक क़ाबिले मुतालआ क़ौल	229
साहिबे हिदाया के एक ग़लत क़ौल की तर्दीद	232
हालिया ज़लज़लों पर एक नोट	233
एक ग़लत ख़्याल की तर्दीद	239
बीरे हाअ नामी बाग़ का बयान	243
खड़े होकर पानी पीना बज़रूरत जायज़ है	245
एक वहम का दिफ़ाअ अज़ हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.)	246
आँहज़रत (ﷺ) का प्याला मुबारक	254
मुअतज़िला की तर्दीद	257
नेक लोगों पर मसाइब का आना बाइष़े अज्र है	260
मिर्गी के बारे में तशरीहात	262
दवाओं से ज़्यादा नफ़अ बख़्श इलाज	263
हालात हज़रत उम्मे दर्दा (रज़ि.)	263
हज़रत बिलाल (रज़ि.) का ज़िक्रे ख़ैर	264
हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.)	267
मसला-ए-ख़िलाफ़त मन्शा-ए-ऐज़दी के तहत हल हुआ	272
इयादत के आदाब का बयान	274
वुज़ू का बचा हुआ पानी मौजिबे शिफ़ा है	277
वतन की मुहब्बत इंसान का फ़ितरी जज़्बा है	278
दो बीमारियाँ जिनकी कोई दवा नहीं है	279
मौलाना वहीदुज्जमाँ की एक ईमान अफ़रोज़ तहरीर	280
फ़वाइदे शहद का बयान	282
होम्योपैथिक इलाज पर एक तब्सरा	282
कलौंजी के फ़वाइद	283
तक़ाज़ा-ए-ईमान का बयान	288
औरतों का हाल ज़मान-ए-ज़ाहिलिय्यत में	292

फ़ेहरिस्त तशरीहे-मज़ामीन

मज़मून	सफ़ा नं.
मर्ज़ जुज़ाम पर तब्सरा	292
नाम निहाद पीरो मुर्शीद की तर्दीद	294
शहद के बारे में इर्शादे बारी तआला	297
ताऊन पर एक तब्सरा	302
दम करने की दुआ-ए-मस्नूना	310
क़बूरियों को सबक़ लेना चाहिए	311
हाफ़िज इब्ने हजर की एक तशरीह	312
दम झाड़ न कराने वालों की फ़ज़ीलत	315
अमराज़े मुतअद्दी पर एक इशारा	317
बद शगुनी के दिफ़ाअ की दुआ	318
उल्लू के मुताल्लिक़ ख़यालाते फ़ासिदा	318
सफ़र के बारे में तशरीह	318
कहानत की वज़ाहत	319
काहिनों के कुछ भाई बन्दों का बयान	319
जादू से मुताल्लिक़ आयाते क़ुर्आनी	321
जादू दिफ़ाअ करने की दवा व अमल	323
आप पर जादू के होने में हिकमत	326
तन्दुरस्त जानवर को बीमार जानवर से अलग रखो	326
तअदिया की बाबत अक़्ली दलाइल	329
आँहज़रत (ﷺ) आलिमुल ग़ैब नहीं थे	320
इलाज बिज़्ज़िद पर इशारा	333
लिबास पर इसराफ़ का मतलब	334
बुज़ुर्गों से बरकत हासिल करना	349
सब्ज़ रंग की यमनी चादरे मुबारक का ज़िक्रे ख़ैर	349
क़ब्र परस्त नाम निहाद मुसलमानों की तर्दीद	351
इस्तिमाले सम्माअ वग़ैरह की तशरीहात	352
ऐसी ही और तफ़्सीलात	353
काली कमली ओढ़ने के फ़वाइद	354
असली बुनियादे नजात कलिमा तय्यिबा सिद्क़ दिल से	357
तसर जैसे कपड़ों के मुताल्लिक़	361
हुज़ूर (ﷺ) के फ़र्श और तकिये का बयान	363
बारीक कपड़ा पहनने वाली औरतों की मज़म्मत	365
सुर्ख़ कपड़े के मुताल्लिक़ अहले हदीष़ का मसलक	367
एक ज़रूरी इस्लाह	368
फ़अलल हकीमु ला यख़्लू अनिल्हिक्मति	370
हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक (रह.)	371
मुहब्बते रसूल (ﷺ) सहाबा किराम के दिलों में	371
बेहतरीन अमल की अलामत क्या है?	372
औरतें भी अहदे नबवी ईदगाह जाती थीं	382
बअज़ुन्नास के हीलों बहानों की तर्दीद	382
एक जदीद लअनती अज़म पर एक इशारा	384
ख़साइले फ़ितरत की एक हदीष़	386
दाढ़ी रखने की फ़ज़ीलत का बयान	387
मूए मुबारक का बयान	388
मेंहदी और वस्मा का ख़िज़ाब	389
काला ख़िज़ाब करना मना है	389
नौजवानाने इस्लाम को दा'वते ख़ैर	394
मक्कार पीरों, बिदअती क़ब्रपरस्तों की तर्दीद	395
मुन्किरीने हदीष़ पर एक बयान	400
नज़र लग जाना बरहक़ है	404
एक नेचरी के ऐतराज़ का जवाब	406
क़ुबूरे औलिया पर जो परस्तिशगाहें बनी हुई हैं	408
ग़ैर ज़ीरूह की तस्वीरों का जवाज़	411
जानवरों पर सवारी करने के आदाब	414
अहले तौहीद और अहले शिर्क पर एक इशारा	415
नेक कामों को बतौरे वसीला पेश करना	420
क़ुर्आन पाक की एक अहमतरीन आयत	422
मुश्रिक भाई के साथ सिलह रह्मी करना	423
क़ुदरत का एक करिश्मा	424
एक मुसलमाननुमा मुश्रिक का बयान	432
हज़रत ख़दीजतुल क़ुबरा का ज़िक्रे ख़ैर	433
नेक कामो में सिफ़ारिश करने की तर्ग़ीब	444

फ़ेहरिस्त तश्रीहे-मज़ामीन

मज़मून	सफ़ा नं.
नबी करीम (ﷺ) की नाराज़गी की कैफ़ियत की वज़ाहत	446
नबी करीम (ﷺ) की ख़ुश अख़्लाक़ी का बयान	447
वहबी और कस्बी फ़ज़ाइल की तफ़्सील	448
अल्लाह तआला की सिफ़ते कलाम का बयान	450
ईमान की ह़लावत का ज़िक्र	451
मोमिन की इज़्ज़त बहुत अहम चीज़ है	453
अगर तह़क़ीर मक़्सूद न हो तो जिस्मानी ऐब......	453
चुग़लख़ोरी की बुराई	460
दोरुख़ा आदमी बहुत बुरा है	461
निज़ामुद्दीन औलिया का एक वाक़िआ	469
बवक़्ते ज़रूरत औरत का ग़ैर मह़रम से कलाम करना	470
ह़ज़तर उ़मर (रज़ि.) की फ़ज़ीलत	476
नबी करीम (ﷺ) मअ़सूम अ़निलख़त़ा हैं	484
जंगे बद्र की कुछ तफ़्सीलात	486
ग़ैरुल्लाह और बाप दादा की क़सम खाना	487
ह़दीष़ के मुक़ाबले किसी की बात हुज्जत नहीं	491
ह़ज़रत उम्मे सलमा और अबू सलमा का ज़िक्रे ख़ैर	493
हुक़ूक़ुल्लाह और हुक़ूक़ुल इ़बाद साथ-साथ	499
मेहमानी का ह़क़ वसूल करना	501
सिफ़ाते ह़स्ना वाली एक ह़दीष़	501
अच्छे अश्आ़र कहने जाइज़ है	507
सुलह हुदैबिया का तफ़्सीली बयान	510
हमलावर दुश्मनों को माफ़ी	512
मुसलमानों का त़वाफ़े कअ़बा......	513
जंगे ख़ैबर	513
अ़म्र बिन आ़स (रज़ि.) का इस्लाम लाना	516
ह़ज़रत आ़इशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) के तफ़्सीली ह़ालात	516
अबू हुरैरह (रज़ि.) का ज़िक्रे ख़ैर	518
नबी करीम (ﷺ) का औ़रतों को तश्बीह देना	519
इस्लाम के ख़िलाफ़ उठने वाले फ़ित्नों का जवाब देना	521
शे'र गोई की कष़रत की मज़म्मत	522
लफ़्ज़ ज़अ़मू की तश्रीह़	523
इ़बादत के साथ अल्लाह और उसके रसूल से मुह़ब्बत	527
अबुल क़ासिम कुन्नियत का बयान	538
ग़लत़ नाम बदल देना चाहिए	539
शैत़ान नबी करीम (ﷺ) की सूरत में नहीं आ सकता	542
शाहनशाह नाम रखने की मज़म्मत	547
फ़ुक़हाए सब्आ़ पर एक इशारा	549
ख़ुल्फ़ाए-ष़ालिष़ा का तज़्किरा	553
आदमी के क़द में कमी होना	559
ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) का एक वाक़िआ	570
औरतों को सलाम करने का बयान	571
एक दुआए-नबवी जो क़यामत के लिए ख़ास़ है	619
फज्र की सुन्नतों के बाद लेटना	622
तक़लीदी ज़िद और तअ़स्सुब से आदमी अंधा हो जाता है	623
राज़ व रूमूज़े नबवी के अमानतदार	625
सोने की एक और दुआ	627
तस्बीह़ाते फ़ातिमा का बयान	628
आसमाने दुनिया पर नुज़ूले बारी तआ़ला	630
बैयतुलख़ला की दुआ	630
फ़र्ज़ नमाज़ के बाद ज़िक्र व अज़्कार का बयान	633
मनाक़िबे ह़ज़रत अमीर मुआ़विया (रज़ि.)	635
ह़ज़रत आ़मिर बिन अक्वा (रज़ि.) के मनाक़िब	636
दुआ माँगने में मुबालग़ा करना मना है	639
क़ुबूलियते दुआ के लिए जल्दबाज़ी करना स़ह़ीह़ नहीं है	640
एक रकअ़त वित्र का ष़ुबूत	647
दरूद शरीफ़ से मुताल्लिक़ एक तश्रीह़	647
ग़ैर नबी पर दरूद भेजना	649
माल का फ़ित्ना और माल की बरकत दोनों की मिष़ालें	657
बयान ह़ज़रत शाह वलीउल्लाह बाबत दुआए-इस्तिख़ारा	659
दुआए-इस्तिख़ारा की तफ़्सीलात	660
सफ़र में निकलने के वक़्त की दुआ	661

फ़ेहरिस्त तशरीहे-मज़ामीन

मज़मून	सफ़ा नं.
दुश्मनाने इस्लाम के लिए बद दुआ करना	666
कमज़ोर और मसाकीन मुसलमानों के लिए दुआए-नबवी	666
जुम्आ के दिन दुआ की क़ुबूलियत की घड़ी	670
आमीन बिलजहर पर एक मक़ाला ष़नाई	671
मौलाना वहीदुज़्ज़माँ की एक क़ाबिले मुतालआ तहरीर	672
ला इलाह इल्लल्लाह वह्दहू.....अल्ख़ बड़ी फ़ज़ीलत वाला कलिमा है	674
फ़ज़ीलते ज़िक्र में वलीउल्लाही तशरीह़	675
मजालिसे ज़िक्र के फ़ज़ाइल	676
अस्माए-हुस्ना की तफ़सीलात	679
दुआ की अहमियत और आदाब का बयान	680
आदाबे क़ुबूलियते दुआ	680
जिनकी दुआ ज़रूर क़ुबूल होती है	681
लफ़्ज़ रिक़ाक़ की तशरीह़	682
मुअ़ती ह़ज़रात पर क़ुर्आनी हिदायत	696
अहले सुन्नत का मज़हब गुनहगार के मुताल्लिक़	700
सरमायादारों की मज़म्मत जो क़ारून बनकर रहते हैं	702
रसूलुल्लाह (ﷺ) और स़ह़ाबा किराम की दरवेशाना ज़िन्दगी	703
एक हदीष़े अबू हुरैरह और मोअजज़ाए नबवी	705
अस़्ह़ाबे सुफ़्फ़ा पर एक इशारा	705
ह़ज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास़ (रज़ि.) की एक हदीष़	706
ह़लाल दौलत फ़ज़्ले इलाही है	711
ईमान उम्मीद और ख़ौफ़ के दरमियान है	712
स़ब्र किसे कहते हैं?	712
तमाम हिक्मत और अख़्लाक़ का ख़ुलास़ा	715
गुनाहों से बाज़ रखने पर एक मिष़ाले नबवी	718
आमाल का दारोमदार ख़ात्मे पर है	722
ह़लूलिया की एक दलील की तर्दीद	729

तक़रीज़

शैख़ुल इस्लाम अमीरुल मुअमिनीन फिल हदीष़ अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इस्माईल अल बुख़ारी (रह.) का शज्र-ए-नसब ये है, मुहम्मद बिन इस्माईल बिन इब्राहीम बिन मुग़ीरा बिन बरदज़्बा अल बुख़ारी है। नमाज़े जुम्आ के बाद 13 शव्वाल 194 हिजरी को उलूमे नुबूव्वत का ये आफ़ताब बुख़ारा के नवाह़ से तुलूअ हुआ और ईदुल फ़ित्र 256 हिजरी सनीचर की रात में समरक़न्द के क़रीब जाकर रूपोश हो गया और नमाज़े ज़ुहर के बाद तदफ़ीन अ़मल में आई। आपने अपने बाद कोई नरीना औलाद नहीं छोड़ी।

सह़ीह़ बुख़ारी की इल्मी ख़ुसुसियात के मुताल्लिक़ अगर कुछ लिखा जाये तो बग़ैर किसी मुबालग़े के उसके लिये एक मुस्तक़िल तस्नीफ़ दरकार है। अवाम का तो ज़िक्र ही क्या? बाज़ ख़्वास के ज़हन में भी उतना ही है कि ये किताब सह़ीह़ ह़दीषों का मज्मूआ है। लेकिन जिनको बुख़ारी पर काफ़ी ग़ौरो-मुतालआ का वक़्त मिला है, उन्हें ये किताब उसूलो क़वाइद, इबादातो-मुआमलात, ग़ज़्वातो-सियर, इस्लामी मुआशरा व तमद्दुन, सियासतो-सल्तनत की एक इन्साइक्लोपीडिया नज़र आती है। अइम्मा के तबक़े में इमाम बुख़ारी ने अपनी किताब जामेउस्सह़ीह़ में जहाँ अह़ादीषे सह़ीह़ा को जमा किया है, उसके साथ और भी बहुत फ़वाइदो-नवादिर की तरफ़ इशारात फ़र्माये हैं। उन्होंने फ़िक़ह का बेशुमार ज़ख़ीरा तराजिम में फैलाया है। फिर उसके मुनासिब आषारे सह़ाबा और अह़ादीषे मरफ़ूआ पेश की हैं। ताकि हदीष और फ़िक़ह का रब्त ज़ाहिर हो जाये। फिर हर बाब में उन अह़काम के मुनासिब क़ुर्आनी आयात नक़ल की है ताकि फ़िक़ह के तमाम अबवाब क़ुर्आने करीम में इजमालन नज़र आ जाएँ और उनके मुनासिब अह़ादीष देखकर क़ुर्आन की जामेइय्यत का पूरा मुशाहदा हो जाये। इसी के साथ हदीष और क़ुर्आन का रब्त भी मालूम हो जाये।

इत्तेबा-ए-सलफ़ ये है कि जिस तरह़ इमाम बुख़ारी (रह.) ने अपने वक़्त के फ़ित्नों के मुक़ाबले के लिये किताबुर्रद्द अलल जहमिय्या, हुज्जियत अख़्बारे आह़ाद, सिफ़ाते बारी तआला, किताबुल हियल पर मुनासिब उन्वानात क़ायम किये थे। उनके क़दम ब क़दम चलकर हम भी वक़्ती साइल (सवाल करने वाले) के लिये मुनासिब उन्वानात व अब्वाब क़ायम करें। हमें बिल्कुल शुब्हा नहीं है कि अगर इमाम बुख़ारी इस ज़माने में मौजूद होते तो अपनी मुज्तहिदाना शान, दिक़्क़त रसी (बारीकबीनी), दक़ीक़ा सुख़नी (नर्मगोई) और उम्मत की ज़रूरतों के मुताल्लिक़ सह़ीह़ नब्ज़ शनासी और दर्दमन्दी की वजह से अपने अबवाबे तराजिम और उन्वानों का रुख़ यक़ीनन उन मसाइल की तरफ़ फेर देते जो हमारे वक़्त के मसाइल कहलाते हैं।

आज भी सह़ीह़ बुख़ारी में इज्तिमाईयात और इक़्तिसादियात और दीग़र ज़रूरी मसाइल की जानिब ऐसी अहम तल्मीहात और इशारे मौजूद हैं कि अगर कोई ज़ीइल्म उनसे इस्तिफ़ादा करना चाहे तो बहुत कुछ इस्तिफ़ादा कर सकता है और उन्हें जदीद अख़ज़ो-इस्तिम्बात की बुनियाद क़रार दे सकता है। बिला शुब्हा वक़्त की शदीद तरीन ज़रूरियात में ये अहम तरीन ज़रूरत बाक़ी है कि अह़दीषे नबविय्या पर उसी नज़रिये से नज़र डाली जाये कि बैनुल अक़्वामी और इज्तिमाई मसाइल में दीन की हिदायात क्या हैं और फ़र्मूदाते नबवी में वक़्त के नये-नये तक़ाज़ों और उलझनों का क्या हल पेश किया गया है।

मौलाना बद्रे आलम (मेरठी)

In the Name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful

INTRODUCTION

Imam Bukhari and his Book Sahih Al-Bukhari

It has been unanimously agreed that Imam Bukhari's work is the most authentic of all the other works in Hadith literature put together. The authenticity of Al-Bukhari's work is such that the religious learned scholars of Islam said concerning him: "The most authentic book after the Book of Allah (i.e. Al-Qur'an) is **Sahih Al-Bukhari.**"

Imam Bukhari was born on 13th Shawwal in the year 194 A.H. in Bukhara in the territory of Khurasan (West Turkistan). His real name is Muhammad bin Ismail bin Al-Mughirah Al-Bukhari. His father died when he was still a young child and he was looked after by his mother. At the age of ten he started acquiring the knowledge of Hadith. He travelled to Makkah when he was sixteen years old accompanied by his mother and elder brother. It seemed as though Imam Bukhari loved Makkah and its learned religious scholars for he remained in Makkah after bidding farewell to his mother and brother. He spent two years in Makkah and then went to Al-Madina. After spending a total of six years in Al-Hijaz which comprises Makkah and Al-Madina, he left for Basrah, Kfifa and Baghdad and visited many other places including Egypt and Syria. He came to Baghdad on many occasions. He met many religious learned scholars including Imam Ahmad bin Hanbal.

Owing to his honesty and kindness and the fact that he was trustworthy he used to keep away from the princes and rulers for fear that he may incline to say things to please them.

Many a story has been told about Imam Bukhari regarding his struggles in collecting Hadith literature. He travelled to many different places gathering the precious gems that fell from the lips of the noble Prophet Muhammad (ﷺ). It is said that Imam Bukhari collected over 300,000 Ahadith and he himself memorized 200,000 of which some were unreliable. He was born at a time when Hadith was being forged either to please rulers or kings or to corrupt the religion of Islam.

It is said that Imam Bukhari (before compiling Sahih A!Bukhari) saw in a dream. standing in front of Prophet Muhammad (ﷺ) having a fan in his hand and driving awav the dies trom the Prophet (ﷺ) imam Bukhari asked some of those who interpret dreams, and they interpreted his dream that he will drive away the falsehood asserted against the Prophet (ﷺ).

So it was a great task for him to sift the forged Ahadith from the authentic ones. He laboured day and night and although he had memorised such a large number he only chose approximately 7,275 with repetition and about 2,230 without repetition of which there is no doubt about their authenticity.

Before he recorded each Hadith, he would make ablution and offer a two Rak'at prayer and supplicate his Lord (Allah). Many religious scholars of Islam tried to find fault in the great remarkable collection - Sahih Al-Bukhari, but without success. It is for this reason, they unanimously agreed that the most authentic book after the Book of Allah is Sahih Al-Bukhdri.

Imam Bukhari died on first Shawwal in the year 256 A.H., and was buried in Khartank, a village near Samarkand. May Allah have mercy on his soul.

Dr. Muhammad Muhsin
Islamic University,
Al-Madina Al-Munawwara (Saudi Arabia)

अ़र्ज़े-मुतर्जिम

(अनुवादक की गुज़ारिशात)

क़ारेईने किराम! अल्लाह रब्बुल–इज़्ज़त के फ़ज़्ल व एहसानो–करम से स़हीह़ बुख़ारी (शरह मुहम्मद दाऊद राज़ रह.) की सातवीं जिल्द इस वक़्त आपके हाथों में है, आठवीं और आख़री जिल्द इंशाअल्लाह एक-डेढ़ महीने में आपके हाथों में होगी। **इस जिल्द में आप बहुत सारे ऐसे अनछुए मसाइल के बारे में जानकारी हास़िल करेंगे, जिनकी हमारी ज़िन्दगी में बड़ी अहमियत है। ख़ास त़ौर पर दिलों को नर्म करने के ता'ल्लुक़ से बयान की गईं अह़ादीष़।**

जिन क़ारेईन ने पहली जिल्द के प्रकाशन के दौरान स़हीह़ बुख़ारी हिन्दी (मुकम्मल 8 जिल्द) की बुकिंग करवाई थी, उन्हें यक़ीनन काफ़ी इन्तज़ार करना पड़ा है। उनको कुछ वक़्फ़े (समय-अन्तराल) से स़हीह़ बुख़ारी (हिन्दी) की एक-एक जिल्द मुहैया कराई गई। हालांकि देखा जाए तो एक-एक जिल्द दिया जाना मुनासिब भी था क्योंकि अगली जिल्द हाथ में आने तक पाठक को पहले वाली जिल्द को पढ़ने में उन्हें काफ़ी समय मिला।

क़ारेईने किराम! अ़ल्लामा दाऊद राज़ स़ाहब ने आज से क़रीब 40 साल पहले स़हीह़ बुख़ारी के अ़रबी नुस्ख़े का उर्दू में तर्जुमा और तशरीह क़लमबंद की थी। उन्होंने हर पारे के अख़ीर में अइम्म-ए-किराम समेत तमाम पाठकों से गुज़ारिश की थी कि अगर इसमें कुछ कमी नज़र आए तो उन्हें इत्तिला दें ताकि अगले एडीशन में उसकी इस्लाह की जा सके।

✽ इसलिये इस उर्दू शरह़ का हिन्दी तर्जुमा करते समय हद दर्जा एहतियात बरता गया, ऑरिजनल किताब में किसी जगह अगर कोई ग़लती नज़र आई तो उसे दुरुस्त किया गया। यहाँ तक कि एक ह़दीष़ के अ़रबी टेक्स्ट में ग़लती नज़र आई तो उसे भी स़हीह़ बुख़ारी के दूसरे नुस्ख़े से स्कैन करके, दुरुस्त करके स़हीह़ बुख़ारी (हिन्दी) में छापा गया।

✽ उर्दू तर्जुमे में छपे ह़दीष़ के रावियों के नाम को मूल अ़रबी टेक्स्ट के साथ मिलान किया गया। **ह़ुसैन** और **ह़ुस़ैन**, **बशर** और **बिश्र**, **मुस्लिमा** और **मस्लमा** जैसे बहुत सारे मिलते-जुलते लफ़्ज़ों के फ़र्क़ का भी एहतियात बरता गया।

✽ इन्हीं कारणों से स़हीह़ बुख़ारी के हिन्दी अनुवाद, कम्पोज़िंग और प्रूफ़ चैकिंग में कुछ ज़्यादा समय भी लगा है।

✽ **स़हीह़ बुख़ारी उर्दू के हिन्दीकरण प्रोजेक्ट के दौरान हमें कई दिक़्क़तों और रूकावटों का सामना करना पड़ा। कभी कम्प्यूटर हार्ड-डिस्क क्रेश हुई तो कभी मदरबोर्ड, रैम वग़ैरह ख़राब हुई। फिर भी काम की रफ़्तार बनाए रखने की ख़ातिर हमने दो कम्प्यूटर सेट नये ख़रीदे, एक्स्ट्रा हार्ड-डिस्क और रैम ख़रीदी। बिजली कटौती से काम डिस्टर्ब न हो इसके लिये 1.5 किलोवाट क्षमता का इन्वर्टर और एक्स्ट्रा बैकअप के लिये दो बड़ी-बड़ी बैटरियाँ ख़रीदीं। पूरे प्रोजेक्ट में वक़्त ज़्यादा लगने के कारण स्टाफ़ की सैलेरी मद में भी ज़्यादा रुपया ख़र्च हुआ।**

ऊपर बयान किये गये तमाम कारणों से लागत (प्रोजेक्ट कोस्ट) भी क़रीब दोगुनी हो गई, लेकिन फिर भी हमने इसका भार स़हीह़ बुख़ारी हिन्दी के प्रकाशक जमीअ़त अहले ह़दीष़ जोधपुर-राजस्थान पर नहीं पड़ने दिया। अलहम्दुलिल्लाह! हमने उसी तयशुदा लागत पर काम पूरा करके दिया है जिसका प्रोजेक्ट शुरू करते वक़्त हमने कमिटमेण्ट किया था।

क़ारेईने किराम! हमने अपनी इन्सानी अ़क़्ल व समझ-बूझ की इन्तिहा तक हद दर्जा कोशिश की है कि इस नुस्ख़े में कोई ग़लती न रहे। इसके बावजूद हम यह दावा नहीं करते कि इसकी कम्पोज़िंग में कोई कमी नहीं है। आपसे गुज़ारिश है कि अगर आपको कोई ग़लती नज़र आए तो इस्लाह की निय्यत से हमारी रहनुमाई करें।

01. **बेहद सावधानी के साथ इसकी तस्हीह व नज़रे-षानी की गई है ताकि ग़लती की कम से कम गुंजाइश रहे, इसके लिये अ़रबी के माहिर आ़लिम मौलाना जमशेद आ़लम सलफ़ी की ख़िदमात बेहद सराहनीय रही है। कुछ हज़रात ने अ़रबी हर्फ़ (ث) के लिये हिन्दी अक्षर 'ष' इस्ते'माल पर ए'तिराज़ जताया है, सहीह बुख़ारी की आठों जिल्दों के कवर पेज पर हदीष 'इन्नमल अअ़मालु बिन्नियात' छपी है जिसका मा'नी है, 'अमल का दारोमदार निय्यत पर है।' हमारी निय्यत यह है कि अ़रबी-उर्दू का हर हर्फ़ अलग नज़र आए। रहा सवाल उच्चारण का तो उसके लिये हमारी गुज़ारिश है कि नीचे लिखी इबारत का ग़ौर से मुतालआ़ करें।**

02. **इस किताब की हिन्दी को उर्दू के मुवाफ़िक़ बनाने की भरपूर कोशिश की गई है इसके लिये उर्दू के कुछ ख़ास हर्फ़ों को अलग तरह से लिखा गया ह** मिषाल के तौर पर :– (ا) के लिये **अ**, (ع) के लिये **अ़**; (ث) के लिये **ष**, (س) के लिये **स**, (ش) के लिये **श**, (ص) के लिये **स़**; (ح) के लिये **ह़**, (ہ) के लिये **ह**, (خ) के लिये **ख़**, (غ) के लिये **ग़**, (ف) के लिये **फ़**, (ك) के लिये **क**, (ق) के लिये **क़** लिखा गया है। (ج) के लिये **ज** का इस्तेमाल किया गया है लेकिन ज़ाल (ذ) ज़े (ز) ज़ाद (ض) ज़ोय (ظ) के लिये मजबूरी में एक ही हुरूफ़ **ज़** का इस्तेमाल किया गया है क्योंकि इन हर्फ़ों के लिये सहीह विकल्प हमें नज़र नहीं आया। आपको यह बता देना मुनासिब होगा कि उर्दू ज़बान के कुछ हुरूफ़ ऐसे हैं कि अगर उनकी जगह कोई दूसरा हुरूफ़ लिख दिया जाए तो अर्थ का अनर्थ हो जाता है। जैसे एक लफ़्ज़ उर्दू में पाँच तरह से लिखा जाता है; **असीर,** अलिफ़ (ا)–सीन (س) ये (ی) रे (ر) जिसका मतलब होता है **क़ैदी**। **अषीर,** अलिफ़ (ا) षे (ث) ये (ی) रे (ر) जिसका मतलब होता है **ख़ालिस़**। **अ़सीर** अ़ेन (ع) सीन (س) ये (ی) रे (ر), जिसका मतलब होता है **मुश्किल**। **अ़स़ीर** अ़ेन (ع) स़ाद (ص) ये (ی) रे (ر), जिसका मतलब होता है **अंगूर की चाशनी (शीरा)**। **अ़षीर** अ़ेन (ع) षे (ث) ये (ی) रे (ر), जिसका मतलब होता है **धूल**। कहने का मतलब ये है कि इस किताब में सहीह तलफ़्फ़ुज़ (उच्चारण) के लिये हद–दर्जा कोशिश की गई है।

03. जिन अल्फ़ाज़ में बीच में अ़ेन (ع) आया है, वहाँ (') के ज़रिये सहीह तलफ़्फ़ुज़ (उच्चारण) दर्शाने की कोशिश की गई है। अगर ऐसा न किया जाता तो **शेर** (ش ی ر) यानी Lion और ग़ज़ल के **शे'र** (ش ع ر) के मतलब में फ़र्क़ करना कितना मुश्किल होता।

04. **मैं एक बार फिर ये दोहराना मुनासिब समझता हूँ कि यह किताब अ़ल्लामा मुहम्मद दाऊद राज़ (रह.) की शरह का हिन्दी रूपान्तरण है। इसमें न कुछ घटाया गया है, न बढ़ाया गया है और न ही अनुवादक द्वारा किसी मैटर की एडीटिंग की गई है। लिहाज़ा हर तशरीह (व्याख्या) से अनुवादक सहमत हो, ये ज़रूरी नहीं है।**

इस किताब की कम्पोज़िंग, तस्हीह (त्रुटि संशोधन) और कवर डिज़ाइनिंग में मेरे जिन साथियों की मेहनत जुड़ी हैं, उन सब पर अल्लाह की रहमतें, बरकतें व सलामती नाज़िल हों। **ऐ अल्लाह! मेरे वालिद–वालदा को अपने अ़र्श के साये तले, अपनी रहमत की पनाह नसीब फ़र्मा जिनकी दुआओं के बदले तूने मुझे दीने–इस्लाम का फ़हम अ़ता किया। ऐ अल्लाह! हमारी ख़ताओं और कोताहियों से दरगुज़र फ़र्माते हुए तू हमसे राज़ी हो जा और हमें रोज़े आख़िरत वो नेअ़मतें अ़ता फ़र्मा, जिनका तूने अपने बन्दों से वा'दा फ़र्माया है।** आमीन! तक़ब्बल या रब्बल आ़लमीन!! व स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़ला नबिय्यिना व अ़ला आलिही व अस़्हाबिही व अत्बाइहि व बारिक व सल्लिम।

सलीम ख़िलजी.

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बाइसवाँ पारा

बाब 122 : जिमाअ़ से बच्चे की ख़्वाहिश रखने के बयान में

5245. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, उनसे हुशैम बिन बशीर ने, उनसे सय्यार बिन दरवान ने, उनसे आमिर शअ़बी ने और उनसे हज़रत जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ एक जिहाद (तबूक़) में था, जब हम वापस हो रहे थे तो मैं अपने सुस्त रफ़्तार ऊँट को तेज़ चलाने की कोशिश कर रहा था। इतने में मेरे पीछे से एक सवार मेरे क़रीब आए। मैंने मुड़कर देखा तो रसूलुल्लाह (ﷺ) थे। आपने फ़र्माया जल्दी क्यूँ कर रहे हो? मैंने अ़र्ज़ किया कि मेरी शादी अभी नई हुई है। आपने दरयाफ़्त किया, कुँवारी औरत से तुमने शादी की है या बेवा से? मैंने अ़र्ज़ किया कि बेवा से। आपने उस पर फ़र्माया, कुँवारी से क्यूँ न की? तुम उसके साथ खेलते और वो तुम्हारे साथ खेलती। जाबिर ने बयान किया कि फिर जब हम मदीना पहुँचे तो हमने चाहा कि शहर में दाख़िल हो जाएँ लेकिन आपने फ़र्माया, ठहर जाओ। रात हो जाए फिर दाख़िल होना ताकि तुम्हारी बीवियाँ जो परागन्दा बाल हैं वो कँघी चोटी कर लें और जिनके शौहर ग़ायब थे वो मूए ज़ेरे-नाफ़ साफ़ कर लें। हुशैम ने बयान किया कि मुझसे एक मोतबर रावी ने बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) ने ये भी फ़र्माया कि अल्कैस अल्कैस या'नी ऐ जाबिर! जब तू घर पहुँचे तो ख़ूब ख़ूब कैस कीजियो (इमाम बुख़ारी रह. ने कहा) कैस का यही मतलब है कि औलाद होने की ख़्वाहिश कीजियो। (राजेअ़ : 443)

١٢٢- باب طَلَبِ الْوَلَدِ

٥٢٤٥- حدَّثَنَا مُسَدَّدٌ عَنْ هُشَيْمٍ عَنْ سَيَّارٍ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنْ جَابِرٍ قَالَ: كُنْتُ مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي غَزْوَةٍ، فَلَمَّا قَفَلْنَا تَعَجَّلْتُ عَلَى بَعِيرٍ قَطُوفٍ، فَلَحِقَنِي رَاكِبٌ مِنْ خَلْفِي فَالْتَفَتُّ فَإِذَا أَنَا بِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((مَا يُعْجِلُكَ؟)) قُلْتُ إِنِّي حَدِيثُ عَهْدٍ بِعُرْسٍ قَالَ: ((فَبِكْرًا تَزَوَّجْتَ أَمْ ثَيِّبًا؟)) قُلْتُ: بَلْ ثَيِّبًا قَالَ: ((فَهَلاَّ جَارِيَةً تُلاَعِبُهَا وَتُلاَعِبُكَ)). قَالَ: فَلَمَّا قَدِمْنَا ذَهَبْنَا لِنَدْخُلَ فَقَالَ: ((أَمْهِلُوا حَتَّى تَدْخُلُوا لَيْلاً. أَيْ عِشَاءً. لِكَيْ تَمْتَشِطَ الشَّعِثَةُ، وَتَسْتَحِدَّ الْمُغِيبَةُ)). وَحَدَّثَنِي الثِّقَةُ أَنَّهُ قَالَ فِي هَذَا الْحَدِيثِ الْكَيْسَ الْكَيْسَ يَا جَابِرُ يَعْنِي الْوَلَدَ.

[راجع: ٤٤٣]

तश्रीह : दूसरे लोगों ने कहा कि अल कैस अल कैस से ये मुराद है कि ख़ूब-ख़ूब जिमाअ़ कीजियो। जाबिर (रज़ि.) कहते हैं कि जब मैं अपने घर पहुँचा तो मैंने अपनी बीवी से कहा कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने ये हुक्म दिया है। उसने कहा कि बख़ुशी आपका हुक्म बजा लाओ। चुनाँचे मैं सारी रात उससे जिमाअ़ करता रहा। इस फ़र्मान से इशारा उसी त़रफ़ था कि जिमाअ़ करना और त़ल्बे औलाद की निय्यत रखना बाब और ह़दीष़ में यही मुताबक़त है।

5246. हमसे मुह़म्मद बिन वलीद ने बयान किया, कहा हमसे मुह़म्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे सय्यार ने, उनसे शअ़बी ने और उनसे ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने (ग़ज़्वा तबूक़ से वापसी पर) फ़र्माया, जब रात के वक़्त तुम मदीना में पहुँचो तो उस वक़्त तक अपने घरों में न जाना जब तक उनकी बीवियाँ जो मदीना मुनव्वरह में मौजूद नहीं थे, अपना मूए ज़ेरे नाफ़ स़ाफ़ न कर लें और जिनके बाल परागन्दा हों वो कँघा न कर लें। जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, फिर ज़रूरी है कि जब तुम घर पहुँचे तो ख़ूब-ख़ूब कैस कीजियो। शअ़बी के साथ इस ह़दीष़ को उ़बैदुल्लाह ने भी वहब बिन कैसान से, उन्होंने जाबिर (रज़ि.) से, उन्होंने आँह़ज़रत (ﷺ) से रिवायत किया, उसमें भी कैस का ज़िक्र है। (राजेअ़ : 443)

٥٢٤٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سَيَّارٍ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا دَخَلْتَ لَيْلاً فَلاَ تَدْخُلْ عَلَى أَهْلِكَ حَتَّى تَسْتَحِدَّ الْمُغِيبَةُ وَتَمْتَشِطَ الشَّعِثَةُ)). قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((فَعَلَيْكَ بِالْكَيْسِ الْكَيْسِ)). تَابَعَهُ عُبَيْدُ اللهِ عَنْ وَهْبٍ عَنْ جَابِرٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ فِي الْكَيْسِ.
[راجع: ٤٤٣]

तश्रीह : ये रिवायत किताबुल बुयूअ में मौस़ूलन गुज़र चुकी है। अबू अ़म्र तौक़ानी ने अपनी किताब **मुआशरतुल्अहलिय्यिन** में निकाला कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया औलाद ढूंढो, औलाद ष़म्र-ए-क़ल्ब और नूरे चश्म है और बांझ औ़रत से परहेज़ करो। इसी वास्ते एक ह़दीष़ में आया है कि बांझ औ़रत से बचो। दूसरी ह़दीष़ में है कि शौहर से मुह़ब्बत रखने वाली, बहुत बच्चे जनने वाली औ़रत से निकाह़ करो, मैं क़यामत के दिन अपनी उम्मत की कष़रत पर फ़ख़्र करूँगा। औ़रत करने से आदमी को अस़ल ग़र्ज़ यही रखनी चाहिये कि औलाद स़ालेह़ पैदा हो जो मरने के बाद दुनिया में उसकी निशानी रहे। उसके लिये दुआए ख़ैर करे। इसीलिये बाक़ियातुस़्स़ालिह़ात में औलाद को अव्वल दर्जे ह़ासिल है। अल्लाह पाक हर मुसलमान को नेक फ़र्मांबरदार स़ालेह़ औलाद अ़त़ा करे, आमीन।

बाब 123 : जब शौहर सफ़र से आए तो औ़रत उस्तरा ले और बालों में कँघी करे

١٢٣- باب تَسْتَحِدُّ الْمُغِيبَةُ وَتَمْتَشِطُ الشَّعِثَةُ

5247. मुझसे यअ़क़ूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे हुशैम ने बयान किया, कहा हमको सय्यार ने ख़बर दी, उन्हें शअ़बी ने, उन्हें ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने, उन्होंने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ एक ग़ज़्वा (तबूक़) में थे। वापस होते हुए जब हम मदीना मुनव्वरा के क़रीब पहुँचे तो मैं अपने सुस्त रफ़्तार ऊँट को तेज़ चलाने

٥٢٤٧- حَدَّثَنِي يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ أَخْبَرَنَا سَيَّارٌ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ قَالَ كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي غَزْوَةٍ، فَلَمَّا قَفَلْنَا كُنَّا قَرِيبًا مِنَ الْمَدِينَةِ، تَعَجَّلْتُ عَلَى بَعِيرٍ لِي قَطُوفٍ،

लगा। एक साहब ने पीछे से मेरे क़रीब आकर मेरे ऊँट को एक छड़ी से जो उनके पास थी, मारा। उससे ऊँट बड़ी अच्छी चाल चलने लगा, जैसा कि तुमने अच्छे ऊँटों को चलते हुए देखा होगा। मैंने मुड़कर देखा तो रसूलुल्लाह (ﷺ) थे। मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मेरी शादी नई हुई है। आँहज़रत (ﷺ) ने इस पर पूछा, क्या तुमने शादी कर ली? मैंने अ़र्ज़ किया कि जी हाँ। दरयाफ़्त फ़र्माया, कुँवारी से की है या बेवा से? बयान किया कि मैंने अ़र्ज़ किया कि बेवा से की है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कुँवारी से शादी क्यूँ न की? तुम उसके साथ खेलते और वो तुम्हारे साथ खेलती। बयान किया कि फिर जब हम मदीना पहुँचे तो शहर में दाख़िल होने लगे लेकिन आपने फ़र्माया कि ठहर जाओ रात हो जाए फिर दाख़िल होना ताकि परागन्दा बाल औ़रत चोटी कँघा कर ले और जिसका शौहर मौजूद न रहा हो, वो ज़ेरे नाफ़ के बाल साफ़ कर ले। (राजेअ़ : 443)

فَلَحِقَنِي رَاكِبٌ مِنْ خَلْفِي فَنَخَسَ بَعِيرِي بِعَنَزَةٍ كَانَتْ مَعَهُ فَسَارَ بَعِيرِي كَأَحْسَنِ مَا أَنْتَ رَاءٍ مِنَ الإِبِلِ، فَالْتَفَتُّ فَإِذَا أَنَا بِرَسُولِ اللهِ ﷺ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنِّي حَدِيثُ عَهْدٍ بِعُرْسٍ قَالَ: ((أَتَزَوَّجْتَ؟)) قُلْتُ : نَعَمْ. قَالَ: ((أَبِكْرًا أَمْ ثَيِّبًا؟)) قَالَ قُلْتُ: بَلْ ثَيِّبًا. قَالَ: ((فَهَلاَّ بِكْرًا تُلاَعِبُهَا وَتُلاَعِبُكَ)). قَالَ: فَلَمَّا قَدِمْنَا ذَهَبْنَا لِنَدْخُلَ فَقَالَ: ((أَمْهِلُوا حَتَّى تَدْخُلُوا لَيْلاً. أَيْ عِشَاءً. لِكَيْ تَمْتَشِطَ الشَّعِثَةُ وَتَسْتَحِدَّ الْمُغِيبَةُ)).

[راجع: ٤٤٣]

बाब 124 : अल्लाह का सूरह नूर में ये फ़र्माना कि (व ला युब्दीन ज़ीनतहुन्न- अल्आय:) या'नी और औ़रतें अपनी ज़ीनत अपने शौहरों के सिवा किसी पर ज़ाहिर न होने दें।

١٢٤- باب ﴿وَلاَ يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلاَّ لِبُعُولَتِهِنَّ - إِلَى قَوْلِهِ - لَمْ يَظْهَرُوا عَلَى عَوْرَاتِ النِّسَاءِ﴾

5248. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे उ़ययना ने बयान किया, उनसे अबू हाज़िम सलमा बिन दीनार ने बयान किया कि इस वाक़िये में लोगों में इख़्तिलाफ़ था कि उहुद की जंग के मौक़े पर रसूलुल्लाह (ﷺ) के लिये कौनसी दवा इस्ते'माल की गई थी। फिर लोगों ने ह़ज़रत सहल बिन सअ़द साइ़दी (रज़ि.) से सवाल किया, वो उस वक़्त आख़िरी सहाबी थे जो मदीना मुनव्वरा में मौजूद थे। उन्होंने बतलाया कि अब कोई शख़्स ऐसा ज़िन्दा नहीं जो इस वाक़िये को मुझसे ज़्यादा जानता हो। फ़ातिमा (रज़ि.) हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के चेहरा-ए-मुबारक से ख़ून धो रही थीं और ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) अपनी ढाल में पानी भरकर ला रहे थे। (जब ख़ून बन्द न हुआ तो) एक बोरिया जलाकर आपके ज़ख़्म में भर दिया गया। (राजेअ़ : 243)

٥٢٤٨- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِي حَازِمٍ قَالَ : اخْتَلَفَ النَّاسُ بِأَيِّ شَيْءٍ دُووِيَ جُرْحُ رَسُولِ اللهِ يَوْمَ أُحُدٍ؟ فَسَأَلُوا سَهْلَ بْنَ سَعْدٍ السَّاعِدِيَّ وَكَانَ مِنْ آخِرِ مَنْ بَقِيَ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ بِالْمَدِينَةِ فَقَالَ: وَمَا بَقِيَ مِنَ النَّاسِ أَحَدٌ أَعْلَمُ بِهِ مِنِّي، كَانَتْ فَاطِمَةُ عَلَيْهَا السَّلاَمُ تَغْسِلُ الدَّمَ عَنْ وَجْهِهِ وَعَلِيٌّ يَأْتِي بِالْمَاءِ عَلَى تُرْسِهِ، فَأُخِذَ حَصِيرٌ فَحُرِّقَ فَحُشِيَ بِهِ جُرْحُهُ.

[راجع: ٢٤٣]

तशरीह : इस आयत में पहले अल्लाह पाक ने यूँ फ़र्माया, **व ला युब्दीन ज़ीनतहुन्न इल्ला मा जहर मिन्हा** (अन् नूर : 31) या'नी जिस ज़ीनत के खोलने की ज़रूरत है। मष़लन आँखें, हथेलियाँ वो तो सब पर खोल सकती हैं मगर बाक़ी ज़ीनत जैसे गला सर, सीना पिण्डली वग़ैरह ये ग़ैर मर्दों के सामने न खोलें मगर अपने शौहर के सामने या बाप या सुसरों के सामने अख़ीर आयत तक। इमाम बुख़ारी (रह.) हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) की हदीष़ इस बाब में लाए। इसकी मुताबक़त बाब से ये है कि हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) ने अपने वालिद या'नी आँहज़रत (ﷺ) का ज़ख़्म धोया तो उसमें ज़ीनत खोलने की ज़रूरत हुई होगी। मा'लूम हुआ कि बाप के सामने औरत अपनी ज़ीनत खोल सकती है। इसी से बाब का मतलब निकलता है। **फ़फ़्हम व ला तकुम्मिनल्क़ासिरीन.**

बाब 125 : इस आयत में जो बयान है कि और वो बच्चे जो अभी बलूग़त की उम्र को नहीं पहुँचे हैं उनके लिये क्या हुक्म है?

١٢٥- باب ﴿وَالَّذِينَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ﴾

तशरीह : या'नी जो बच्चे जवान नहीं हुए हैं, उनके सामने भी अल्लाह तआला ने औरतों को अपनी ज़ीनत खोलने की इजाज़त दी है। हदीष़ की मुताबक़त बाब से ज़ाहिर है कि हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने औरतों के कान वग़ैरह देखे जबकि वो कमसिन बच्चे थे।

5249. हमसे अहमद बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको सुफ़यान ष़ौरी ने ख़बर दी, उनसे अब्दुर्रहमान बिन आबिस ने, कहा मैंने हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से सुना, उनसे एक शख़्स ने ये सवाल किया था कि तुम बक़रईद या ईद के मौक़े पर रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ मौजूद थे? उन्होंने कहा कि हाँ। अगर मैं हुज़ूरे अकरम (ﷺ) का रिश्तेदार न होता तो मैं अपनी कमसिनी की वजह से ऐसे मौक़े पर हाज़िर नहीं हो सकता था। उनका इशारा (उस ज़माने में) अपने बचपन की तरफ़ था। उन्होंने बयान किया कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) बाहर तशरीफ़ ले गये और अब्बास (रज़ि.) ने अज़ान और इक़ामत का ज़िक्र नहीं किया, फिर आप औरतों के पास आए और उन्हें वा'ज़ व नसीहत की और उन्हें ख़ैरात देने का हुक्म दिया। मैंने उन्हें देखा कि फिर वो अपने कानों और गले की तरफ़ हाथ बढ़ा बढ़ाकर (अपने ज़ेवरात) हज़रत बिलाल (रज़ि.) को देने लगीं। उसके बाद हज़रत बिलाल (रज़ि.) के साथ हुज़ूरे अकरम (ﷺ) वापस तशरीफ़ लाए। (राजेअ : 98)

٥٢٤٩- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنُ عَابِسٍ، سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا سَأَلَهُ رَجُلٌ شَهِدْتَ مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْعِيدَ، أَضْحَى أَوْ فِطْرًا؟ قَالَ: نَعَمْ. وَلَوْ لاَ مَكَانِي مِنْهُ مَا شَهِدْتُهُ يَعْنِي مِنْ صِغَرِهِ قَالَ خَرَجَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَصَلَّى ثُمَّ خَطَبَ، وَلَمْ يَذْكُرْ أَذَانًا وَلاَ إِقَامَةً. ثُمَّ أَتَى النِّسَاءَ فَوَعَظَهُنَّ وَذَكَّرَهُنَّ، وَأَمَرَهُنَّ بِالصَّدَقَةِ، فَرَأَيْتُهُنَّ يَهْوِينَ إِلَى آذَانِهِنَّ وَحُلُوقِهِنَّ يَدْفَعْنَ إِلَى بِلاَلٍ، ثُمَّ ارْتَفَعَ هُوَ وَبِلاَلٌ إِلَى بَيْتِهِ.

[راجع: ٩٨]

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) बच्चे थे, उन्होंने औरतों के कान और गले देखे। बाब और हदीष़ में यही मुताबक़त है।

बाब 126 : एक मर्द का दूसरे से ये पूछना कि क्या तुमने रात अपनी औरत से सुहबत की है? और

١٢٦- باب قَوْلِ الرَّجُلِ لِصَاحِبِهِ :

هَلْ أَعْرَسْتُمُ اللَّيْلَةَ؟وَطَعْنِ الرَّجُلِ ابْنَتَهُ فِي الْخَاصِرَةِ عِنْدَ الْعِتَابِ.

किसी शख़्स का अपनी बेटी के कोख में ग़ुस्से की वजह से मारना

٥٢٥٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْقَاسِمِ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: عَاتَبَنِي أَبُو بَكْرٍ وَجَعَلَ يَطْعُنُنِي بِيَدِهِ فِي خَاصِرَتِي، فَلاَ يَمْنَعُنِي مِنَ التَّحَرُّكِ إِلاَّ مَكَانُ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَرَأْسُهُ عَلَى فَخِذِي.[راجع: ٣٣٤]

5250. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें अ़ब्दुर्रहमान बिन क़ासिम ने, उन्हें उनके वालिद क़ासिम बिन मुहम्मद ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि (उनके वालिद) ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) मुझ पर ग़ुस्सा हुए और मेरी कोख में हाथ से कचूके लगाने लगे लेकिन मैं ह़रकत इस वजह से न कर सकी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) का सरे मुबारक मेरी रान पर रखा हुआ था। (राजेअ़ : 334)

63. किताबुत्त़लाक़

त़लाक़ के बयान में

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

﴿يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَطَلِّقُوهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ وَأَحْصُوا الْعِدَّةَ﴾ أَحْصَيْنَاهُ: حَفِظْنَاهُ وَعَدَدْنَاهُ. وَطَلاَقُ السُّنَّةِ أَنْ يُطَلِّقَهَا طَاهِرًا مِنْ غَيْرِ جِمَاعٍ وَيُشْهِدُ شَاهِدَيْنِ

बाब : अल्लाह तआ़ला ने सूरह त़लाक़ में फ़र्माया, ऐ नबी! तुम और तुम्हारी उम्मत के लोग जब औरतों को त़लाक़ देने लगें तो ऐसे वक़्त त़लाक़ दो कि उनकी इद्दत उसी वक़्त शुरू हो जाए और इद्दत का शुमार करते रहो (पूरे तीन तुहर (पाकी) या तीन ह़ैज़) और सुन्नत के मुताबिक़ त़लाक़ यही है कि ह़ालते तुहर में औ़रत को एक त़लाक़ दे और उस तुहर में औ़रत से हमबिस्तरी न की हो और उस पर दो गवाह मुक़र्रर करे। लफ़्ज़े अह़्सैनाहु के मा'नी हमने उसे याद किया और शुमार करते रहे।

तश्रीह़ : लुग़त में त़लाक़ के मा'नी बन्द खोल देना और छोड़ देना है और इस्तिलाह़े शरअ़ में त़लाक़ कहते हैं उस पाबन्दी को उठा देना जो निकाह़ की वजह से शौहर और बीवी पर होती है। ह़ाफ़िज़ ने कहा कभी त़लाक़ ह़राम होती है

जैसे ख़िलाफ़े सुन्नत तलाक़ दी जाए (मष़लन हालते हैज़ में या तीन तलाक़ एक ही बार दे दे या उस तुहर (पाकी) में जिसमें वती कर चुका हो); कभी मकरूह जब बिला सबब महज़ शह्वतरानी और नई औरत की हवस में हो, कभी वाजिब होती है जब शौहर और बीवी में मुख़ालफ़त हो और किसी तरह मेल न हो सके और दोनों तरफ़ के पंच तलाक़ हो जाने को मुनासिब समझें। कभी तलाक़ मुस्तहब होती है जब औरत नेक चलन न हो, कभी जाइज़ मगर उलमा ने कहा है कि जाइज़ किसी सूरत में नहीं है मगर उस वक़्त जब नफ़्स उस औरत की तरफ़ ख़्वाहिश न करे और उसका ख़र्च उठाना बेफ़ायदा पसंद न करे। मैं (मौलाना वहीदुज़्ज़माँ मरहूम) कहता हूँ इस सूरत में भी तलाक़ मकरूह होगी। शौहर को लाज़िम है कि जब उसने एक अफ़ीफ़ा पाक दामन औरत से जिमाअ किया तो अब उसको निबाहे और अगर सिर्फ़ ये अम्र कि उस औरत को दिल नहीं चाहता तलाक़ के जवाज़ की इल्लत क़रार दी जाए तो फिर औरत को भी तलाक़ का इख़्तियार होना चाहिये। जब वो शौहर को पसंद न करे हालाँकि हमारी शरीअत में औरत को तलाक़ का इख़्तियार बिल्कुल नहीं दिया गया है (हाँ ख़ुलअ की सूरत है जिसमे औरत अपने आपको मर्द से अलग कर सकती है जिसके लिये शरीअत ने कुछ ज़वाबित रखे हैं जिनको अपने मक़ाम पर लिखा जाएगा)। निकाह के बाद अगर ज़ोजैन में ख़ुदा न ख़्वास्ता अदम ता'बीर पैदा हो तो इस सूरत में हत्तल इम्कान सुलह सफ़ाई कराई जाए जब कोई भी रास्ता न बन सके तो तलाक़ दी जाए। एक रिवायत है कि **अब्गज़ुल्हलालि इन्दल्लाहि अत्तलाक़ औकमा क़ाल** या'नी हलाल होने के बावजूद तलाक़ अल्लाह के नज़दीक बहुत ही बुरी चीज़ है मगर सद अफ़सोस कि आज भी बेशतर मुसलमानों में ये बीमारी हद से आगे गुज़री हुई है और कितने ही तलाक़ के बारे में मुक़द्दमात ग़ैर मुस्लिम अदालतों में दायर होते रहते हैं। एक मजलिस की तीन तलाक़ों के (इन्दल अहनाफ़) वक़ूअ ने इस क़दर बेड़ा ग़र्क़ किया है कि कितनी नौजवान लड़कियाँ ज़िन्दगी से तंग आ जाती हैं। कितनी ग़ैर मज़हब में दाख़िला लेकर ख़ुलासा हासिल करती हैं मगर उलमा-ए-अहनाफ़ हैं, इल्ला माशाअल्लाह जो टस से मस नहीं होते और बराबर वही दकियानूसी फ़त्वा सादिर किये जाते हैं; फिर हलाला का रास्ता इस क़दर मकरूह इख़्तियार किया हुआ है कि जिसके तसव्वुर से भी ग़ैरते इंसानी को शर्म आ जाती है। इस बारे में मुफ़स्सल मक़ाला आगे आ रहा है जो ग़ौर से मुतालआ के क़ाबिल है। जिसके लिये मैं अपने अज़ीज़ भाई मौलाना अब्दुस्समद रहमानी ख़तीब देहली का मम्नून हूँ। जज़ाहुल्लाहु अहसनल जज़ाअ। ये बेहद ख़ुशी की बात है कि आज बहुत से इस्लामी ममालिक ने एक मजलिस की तलाक़े षलाषा को क़ानूनी तौर पर एक ही तस्लीम किया है।

5251. हमसे इस्माईल बिन अब्दुल्लाह उवैसी ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक (रह.) ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि उन्होंने अपनी बीवी (आमना बिन्ते ग़फ़्फ़ार) को रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में (हालते हैज़ में) तलाक़ दे दी। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) से इसके बारे में पूछा तो आपने फ़र्माया कि अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से कहो कि अपनी बीवी से रुजूअ कर लें और फिर अपने निकाह में बाक़ी रखें। जब माहवारी (हैज़) बन्द हो जाए फिर माहवारी आए और फिर बन्द हो, तब अगर चाहें तो अपनी बीवी को अपने निकाह में बाक़ी रखें और अगर चाहें तलाक़ दे दें (लेकिन तलाक़ इस तुहर में) उनके साथ हमबिस्तरी से पहले होना चाहिये। यही (तुहर की) वो मुद्दत है जिसमें अल्लाह तआला ने औरतों को तलाक़ देने का हुक्म दिया है। (राजेअ : 4908)

٥٢٥١– حدَّثنا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ طَلَّقَ امْرَأَتَهُ وَهِيَ حَائِضٌ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ، فَسَأَلَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ رَسُولَ اللهِ ﷺ عَنْ ذَلِكَ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مُرْهُ فَلْيُرَاجِعْهَا، ثُمَّ لْيُمْسِكْهَا حَتَّى تَطْهُرَ، ثُمَّ تَحِيضَ ثُمَّ تَطْهُرَ، ثُمَّ إِنْ شَاءَ أَمْسَكَ بَعْدُ، وَإِنْ شَاءَ طَلَّقَ قَبْلَ أَنْ يَمَسَّ، فَتِلْكَ الْعِدَّةُ الَّتِي أَمَرَ اللهُ أَنْ يُطَلَّقَ لَهَا النِّسَاءُ)).

[راجع: ٤٩٠٨]

बाब 2 : अगर हाइज़ा को तलाक़ दे दी जाए तो

٢– باب إِذَا طُلِّقَتِ الْحَائِضُ تَعْتَدُّ

ये तलाक़ शुमार होगी या नहीं?

بِذَلِكَ الطَّلاَقِ

तश्रीह : चारों इमाम और अकष़र फ़ुक़हा तो इस तरफ़ गये हैं कि ये तलाक़ शुमार होगी और ज़ाहिर ये और अहले हदीष़ और इमामिया और हमारे मशाइख़ में से इमाम इब्ने तैमिया, इमाम इब्ने हज़म और अल्लामा इब्ने क़य्यिम और जनाब मुहम्मद बाक़िर और हज़रत जा'फ़र सादिक़ और इमाम नासिर और अहले बैत का ये क़ौल है कि इस तलाक़ का शुमार न होगा। इसलिये कि ये बिदई और हराम थी। शौकानी और मुहक़्क़िक़ीन अहले हदीष़ ने इसको तरजीह दी है।

5252. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने, उनसे अनस बिन सीरीन ने, कहा कि मैं ने इब्ने उमर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि इब्ने उमर (रज़ि.) ने अपनी बीवी को हालते हैज़ में तलाक़ दे दी। फिर उमर (रज़ि.) ने उसका ज़िक्र नबी करीम (ﷺ) से किया, आँहज़रत (ﷺ) ने इस पर फ़र्माया कि चाहिये कि रुजूअ कर लें। (अनस ने बयान किया कि) मैंने इब्ने उमर (रज़ि.) से पूछा कि क्या ये तलाक़, तलाक़ समझी जाएगी? उन्होंने कहा कि चुप रह फिर क्या समझी जाएगी? और क़तादा ने बयान किया, उनसे यूनुस बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने बयान किया (कि आँहज़रत ﷺ ने इब्ने उमर रज़ि. से) फ़र्माया, उसे हुक्म दो कि रुजूअ कर ले (यूनुस बिन जुबैर ने बयान किया कि) मैंने पूछा, क्या ये तलाक़ तलाक़ समझी जाएगी? इब्ने उमर (रज़ि.) ने कहा तू क्या समझता है अगर कोई किसी फ़र्ज़ के अदा करने से आजिज़ बन जाए या अहमक़ हो जाए। (राजेअ : 4908)

٥٢٥٢- حدَّثنا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَنَسِ بْنِ سِيرِينَ قَالَ : سَمِعْتُ بْنَ عُمَرَ قَالَ: طَلَّقَ ابْنُ عُمَرَ امْرَأَتَهُ وَهِيَ حَائِضٌ فَذَكَرَ عُمَرُ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ((لِيُرَاجِعْهَا)) قُلْتُ أَتُحْتَسَبُ؟ قَالَ ((فَمَهْ)) وَعَنْ قَتَادَةَ عَنْ يُونُسَ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ ((مُرْهُ فَلْيُرَاجِعْهَا)) قُلْتُ تُحْتَسَبُ؟ قَالَ ((أَرَأَيْتَ إِنْ عَجَزَ وَاسْتَحْمَقَ)).

[راجع: ٤٩٠٨]

तो वो फ़र्ज़ उसके ज़िम्मे से साक़ित होगा? हर्गिज़ नहीं! मतलब ये कि उस तलाक़ का शुमार होगा।

5253. हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा और अबू मअमर अब्दुल्लाह बिन अम्र मुन्क़री ने कहा (या हमसे बयान किया) कहा हमसे अब्दुल वारिष़ बिन सईद ने, कहा हमसे अय्यूब सुख़्तियानी ने, उन्होंने सईद बिन जुबैर से, उन्होंने इब्ने उमर (रज़ि.) से, उन्होंने कहा ये तलाक़ जो मैंने हैज़ में दी थी मुझ पर शुमार की गई। (राजेअ : 4908)

٥٢٥٣- وَقَالَ أَبُو مَعْمَرٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: حُسِبَتْ عَلَيَّ بِتَطْلِيقَةٍ.

[راجع: ٤٩٠٨]

तश्रीह : या'नी उसके बाद मुझको दो ही तलाक़ों का और इख़्तियार रहा। चारा इमाम और जुम्हूर फ़ुक़हा ने इसी से दलील ली है और ये कहा है कि जब इब्ने उमर (रज़ि.) ख़ुद कहते हैं कि ये तलाक़ शुमार की गई तो अब उसके वक़ूअ में क्या शक रहा। हम कहते हैं कि हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) का सिर्फ़ क़ौल हुज्जत नहीं हो सकता क्योंकि उन्होंने ये बयान नहीं किया कि आँहज़रत (ﷺ) ने उसके शुमार किये जाने का हुक्म दिया। मैं (वहीदुज़्ज़माँ) कहता हूँ कि सईद बिन जुबैर ने इब्ने उमर (रज़ि.) से ये रिवायत की और अबुज़्ज़ुबैर ने उसके ख़िलाफ़ रिवायत की। इसको अबू दाऊद वग़ैरह ने निकाला कि इब्ने उमर (रज़ि.) ने इस तलाक़ को कोई चीज़ नहीं समझा और शअबी ने कहा अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) के नज़दीक ये तलाक़ शुमार न होगी। इसको

अ़ब्दुल बर ने निकाला और इब्ने ह़ज़म ने स़ह़ीह़ इस्नाद के साथ नाफ़ेअ़ से, उन्होंने इब्ने उ़मर (रज़ि.) से ऐसा ही निकाला कि इस त़लाक़ का शुमार न होगा। और सईद बिन मंसूर ने अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक से, उन्होंने इब्ने उ़मर (रज़ि.) से ऐसा ही निकाला कि उन्होंने अपनी औ़रत को ह़ालते ह़ैज़ में त़लाक़ दे दी तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये त़लाक़ कोई चीज़ नहीं है। ह़ाफ़िज़ ने कहा ये सब रिवायतें अबुज़्ज़ुबैर की रिवायत की ताईद करती हैं और अबुज़्ज़ुबैर की रिवायत स़ह़ीह़ है। इसकी सनद इमाम मुस्लिम की शर्त़ पर है। अब ख़त़्त़ाबी और क़स्त़लानी वग़ैरह का ये कहना कि अबुज़्ज़ुबैर की रिवायत मुकर (ग़ैर मक़बूल) है क़ाबिले क़ुबूल न होगी और इमाम शाफ़िई का ये कहना कि नाफ़ेअ़ अबुज़्ज़ुबैर से ज़्यादा षिक़ह है और नाफ़ेअ़ की रिवायत ये है कि इस त़लाक़ का शुमार होगा स़ह़ीह़ नहीं क्योंकि इब्ने ह़ज़्म ने ख़ुद नाफ़ेअ़ ही के त़रीक़ से अबुज़्ज़ुबैर के मुवाफ़िक़ निकाला है। (वह़ीदी)

बाब 3 : त़लाक़ देने का बयान और क्या त़लाक़ देते वक़्त औ़रत के मुँह दर मुँह त़लाक़ दे

٣- باب مَنْ طَلَّقَ، وَهَلْ يُوَاجِهُ الرَّجُلُ امْرَأَتَهُ بِالطَّلاَقِ؟

5254. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे वलीद बिन मुस्लिम ने बयान किया, कहा हमसे इमाम औज़ाई ने बयान किया, कहा कि मैंने ज़ुह्री से पूछा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की किन बीवी ने आँह़ज़रत (ﷺ) से पनाह मांगी थी? उन्होंने बयान किया कि मुझे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने ख़बर दी और उन्हें ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि जौन की बेटी (उमैमा या अस्मा) जब हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के यहाँ (निकाह के बाद) लाई गईं और आँह़ज़रत (ﷺ) उनके पास गये तो ये कह दिया कि मैं तुमसे अल्लाह की पनाह माँगती हूँ। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उस पर फ़र्माया कि तुमने बहुत बड़ी चीज़ से पनाह माँगी है, अपने मायके चली जाओ। अबू अ़ब्दुल्लाह ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने इस ह़दीष को ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ बिन अबी मनीअ़ से, उसने भी अपने दादा अबू मनीअ़ (उ़बैदुल्लाह बिन अबी ज़ियाद) से, उन्हों ने ज़ुह्री से, उन्होंने उ़र्वा से, उन्होंने आइशा (रज़ि.) से रिवायत किया है।

٥٢٥٤- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدُ حَدَّثَنَا الأَوْزَاعِيُّ قَالَ: سَأَلْتُ الزُّهْرِيَّ أَيُّ أَزْوَاجِ النَّبِيِّ ﷺ اسْتَعَاذَتْ مِنْهُ؟ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ ابْنَةَ الْجَوْنِ لَمَّا أُدْخِلَتْ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ وَدَنَا مِنْهَا قَالَتْ: أَعُوذُ بِاللهِ مِنْكَ، فَقَالَ لَهَا: ((لَقَدْ عُذْتِ بِعَظِيمٍ، الْحَقِي بِأَهْلِكِ)). قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ : رَوَاهُ حَجَّاجُ بْنُ أَبِي مَنِيعٍ عَنْ جَدِّهِ عَنِ الزُّهْرِيِّ أَنَّ عُرْوَةَ أَخْبَرَهُ أَنَّ عَائِشَةَ قَالَتْ.

तश्रीह : आपने उस औ़रत से फ़र्माया कि अपने मायके चली जा, ये त़लाक़ का किनाया है। ऐसे किनाया के अल्फ़ाज़ में अगर त़लाक़ की निय्यत हो तो त़लाक़ पड़ जाती है। कहते हैं फिर सारी उ़म्र ये औ़रत मींगनियाँ चुनती रहीं और कहती जाती थी मैं बदनसीब हूँ। एक रिवायत में यूँ है कि ये औ़रत बड़ी ख़ूबसूरत थी कुछ औ़रतों ने जब उसे देखा तो उन्होंने उसको फ़रेब दिया कि आँह़ज़रत (ﷺ) जब तेरे पास आएँ तो **(अऊ़ज़ुबिल्लाहि मिन्का)** कह देना। आपको ऐसा कहना पसंद आता है। वो भोली भाली औरत उस चकमे में आ गई। जब आँह़ज़रत (ﷺ) ने उससे सुह़बत करनी चाही तो वो यही कह बैठी। आपने उसको त़लाक़ दे दी। ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने उससे ये निकाला कि औ़रत के मुँह-दर-मुँह उसे त़लाक़ देने में कोई क़बाह़त नहीं है। मैं (वह़ीदुज़्ज़माँ) कहता हूँ कि ये एक ख़ास़ वाक़िया है। अव्वल तो उस औ़रत को कोई ह़क़्क़े सुह़बत आप पर न था। दूसरे ख़ुद उसने शरारत की। भला ये क्या बात थी कि शौहर बीवी का भी सबसे प्यारा होता है, उससे अल्लाह की पनाह माँगने लगी। इसलिये आपने उसके मुँह-दर-मुँह त़लाक़ दे दी। ये कुछ भी मुरव्वत के ख़िलाफ़ न था। कुछ लोगों ने ये भी नक़ल किया है कि वो औ़रत ज़िंदगी भर नादिम रही और कहती रहीं कि मैं बड़ी बदबख़्त हूँ। ये भी मरवी है कि

वो मरने से पहले फ़ातिरुल अ़क़्ल हो गई थी।

5255. हमसे अबू नुऐ़म फ़ज़ल बिन दुकैन ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन ग़सील ने बयान किया, उनसे ह़म्ज़ा बिन अबी उसैद ने और उनसे अबू उसैद (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ बाहर निकले और एक बाग़ में पहुँचे जिसका नाम शौत़ था। जब हम वहाँ जाकर और बाग़ों के दरम्यान पहुँचे तो बैठ गये। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम लोग यहीं बैठो, फिर आप बाग़ में गये, जूनिय्या लाई जा चुकी थीं, और उन्हें खजूर के एक घर में उतारा। उसका नाम उमैमा बिन्ते नोअ़मान बिन शराह़ील था। उनके साथ एक दाई भी उनकी देखभाल के लिये थी। जब ह़ुज़ूरे अकरम (ﷺ) उनके पास गये तो फ़र्माया कि अपने आपको मेरे ह़वाले कर दे। उसने कहा क्या कोई शहज़ादी किसी आ़म आदमी के लिये अपने आपको ह़वाला कर सकती है? बयान किया कि इस पर ह़ुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने अपना शफ़क़त का हाथ उनकी त़रफ़ बढ़ाकर उसके सर पर रखा तो उसने कहा कि मैंतुमसे अल्लाह की पनाह माँगती हूँ। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, तुमने उसी से पनाह मांगी जिससे पनाह माँगी जाती है। उसके बाद आँह़ज़रत (ﷺ) बाहर हमारे पास तशरीफ़ लाए और फ़र्माया, अबू उसैद! उसे दो राज़क़िया कपड़े पहनाकर उसे उसके घर पहुँचा आओ। (दीगर मक़ामात : 5257)

٥٢٥٥- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ غَسِيلٍ عَنْ حَمْزَةَ بْنِ أَبِي أُسَيْدٍ عَنْ أَبِي أُسَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ حَتَّى انْطَلَقْنَا إِلَى حَائِطٍ يُقَالُ لَهُ الشَّوْطُ، حَتَّى انْتَهَيْنَا إِلَى حَائِطَيْنِ، فَجَلَسْنَا بَيْنَهُمَا فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((اجْلِسُوا هَهُنَا))، وَدَخَلَ، وَقَدْ أُتِيَ بِالْجَوْنِيَّةِ. فَأُنْزِلَتْ فِي بَيْتٍ فِي نَخْلٍ أُمَيْمَةَ بِنْتِ النُّعْمَانِ بْنِ شَرَاحِيلَ، وَمَعَهَا دَايَتُهَا حَاضِنَةٌ لَهَا، فَلَمَّا دَخَلَ عَلَيْهَا النَّبِيُّ ﷺ قَالَ : ((هَبِي نَفْسَكِ لِي))، قَالَتْ: وَهَلْ تَهَبُ الْمَلِكَةُ نَفْسَهَا لِلسُّوقَةِ؟ قَالَ: فَأَهْوَى بِيَدِهِ يَضَعُ يَدَهُ عَلَيْهَا لِتَسْكُنَ فَقَالَتْ : أَعُوذُ بِاللهِ مِنْكَ فَقَالَ: ((قَدْ عُذْتِ بِمَعَاذٍ))، ثُمَّ خَرَجَ عَلَيْنَا فَقَالَ : ((يَا أَبَا أُسَيْدٍ، اكْسُهَا رَازِقِيَّتَيْنِ، وَأَلْحِقْهَا بِأَهْلِهَا)). [طرفه في : ٥٢٥٧].

5256, 5257. और हुसैन बिन अल वलीद नीसापुरी ने बयान किया कि उनसे अ़ब्दुर्रह़मान ने, उनसे अ़ब्बास बिन सहल ने, उनसे उनके वालिद (सहल बिन सअ़द) और अबू उसैद (रज़ि.) ने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उमैमा बिन्ते शराह़ील से निकाह़ किया था, फिर जब वो आँह़ज़रत (ﷺ) के यहाँ लाई गईं, आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनकी त़रफ़ हाथ बढ़ाया जिसे उसने नापसंद किया। इसलिये आँह़ज़रत (ﷺ) ने अबू उसैद (रज़ि.) से फ़र्माया कि उनका सामान कर दें और राज़क़िया के दो कपड़े उन्हेंपहनने के लिये दे दें। (दीगर मक़ामात : 5637)

٥٢٥٦، ٥٢٥٧- وَقَالَ الْحُسَيْنُ بْنُ الْوَلِيدِ النَّيْسَابُورِيُّ : عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عَبَّاسِ بْنِ سَهْلٍ عَنْ أَبِيهِ وَأَبِي أُسَيْدٍ قَالاَ تَزَوَّجَ النَّبِيُّ ﷺ أُمَيْمَةَ بِنْتَ شَرَاحِيلَ، فَلَمَّا أُدْخِلَتْ عَلَيْهِ بَسَطَ يَدَهُ إِلَيْهَا، فَكَأَنَّهَا كَرِهَتْ ذَلِكَ، فَأَمَرَ أَبَا أُسَيْدٍ أَنْ يُجَهِّزَهَا وَيَكْسُوهَا ثَوْبَيْنِ رَازِقِيَّيْنِ.

[طرفه في : ٥٦٣٧].

तश्रीह़ : ज़ुबान दराज़ क़िस्म के मुआ़निदीन (निन्दकों) ने इस वाक़िये को भी उछाला है ह़ालाँकि उनकी ह़फ़्वात मह़ज़ ह़फ़्वात हैं। पहले उस औ़रत से निकाह़ हुआ था, बाद में बवक़्ते ख़ल्वत उसे शैत़ान ने वरग़ला दिया तो उसने

ये गुस्ताख़ी की। आँहज़रत (ﷺ) ने उसकी ये कैफ़ियत देखकर उसे किनायतन तलाक़ दे दी और इज़्ज़त आबरू के साथ उसे रुख़्सत कर दिया, बात ख़त्म हुई मगर दुश्मनों को एक शोशा चाहिये, सच है,

गुल अस्त साएदी व दर चश्म दुश्मनाँ ख़ार अस्त

- حدثنا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ أَبِي الْوَزِيرِ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ عَنْ حَمْزَةَ عَنْ أَبِيهِ، وَعَنْ عَبَّاسِ بْنِ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ عَنْ أَبِيهِ بِهَذَا.

हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन अबी अल वज़ीर ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे हम्ज़ा ने, उनसे उनके वालिद और अ़ब्बास बिन सहल बिन सअ़द ने, उनसे अ़ब्बास के वालिद (सहल बिन सअ़द रज़ि.) ने इसी तरह।

٥٢٥٨- حدثنا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ حَدَّثَنَا هَمَّامُ بْنُ يَحْيَى عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَبِي غَلاَّبٍ يُونُسَ بْنِ جُبَيْرٍ قَالَ: قُلْتُ لاِبْنِ عُمَرَ رَجُلٌ طَلَّقَ امْرَأَتَهُ وَهِيَ حَائِضٌ. فَقَالَ: تَعْرِفُ ابْنَ عُمَرَ إِنَّ ابْنَ عُمَرَ طَلَّقَ امْرَأَتَهُ وَهِيَ حَائِضٌ فَأَتَى عُمَرُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَذَكَرَ ذَلِكَ لَهُ فَأَمَرَهُ أَنْ يُرَاجِعَهَا، فَإِذَا طَهُرَتْ فَأَرَادَ أَنْ يُطَلِّقَهَا فَلْيُطَلِّقْهَا. قُلْتُ: فَهَلْ عَدَّ ذَلِكَ طَلاَقًا؟ قَالَ: ((أَرَأَيْتَ إِنْ عَجَزَ وَاسْتَحْمَقَ)).
[راجع: ٤٩٠٨]

5258. हमसे हज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम बिन यह्या ने, उनसे क़तादा ने, उनसे अबू अनाजब यूनुस बिन जुबैर ने कि मैंने इब्ने उमर (रज़ि.) से अ़र्ज़ किया, एक शख़्स ने अपनी बीवी को उस वक़्त तलाक़ दी जब वो हाइज़ा थी (उसका क्या हुक्म?) उस पर उन्होंने कहा तुम इब्ने उमर (रज़ि.) को जानते हो? इब्ने उमर (रज़ि.) ने अपनी बीवी को उस वक़्त तलाक़ दी थी जब वो हाइज़ा थी, फिर उमर (रज़ि.) नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए, उसके बारे में आपसे पूछा। आँहुज़ूर (ﷺ) ने उन्हें हुक्म दिया कि (इब्ने उमर रज़ि इस वक़्त अपनी बीवी से) रुजूअ़ कर लें, फिर जब वो हैज़ से पाक हो जाएँ तो उस वक़्त अगर इब्ने उमर (रज़ि.) चाहें उन्हें तलाक़ दें। मैंने अ़र्ज़ किया, क्या उसे भी आँहज़रत (ﷺ) ने तलाक़ शुमार किया था? इब्ने उमर (रज़ि.) ने कहा अगर कोई आ़जिज़ है और हिमाक़त का षुबूत दे तो उसका क्या इलाज है। (राजेअ़ : 4908)

٤- باب مَنْ أَجَازَ طَلاَقَ الثَّلاَثِ، لِقَوْلِ اللهِ تَعَالَى:

बाब 4 : अगर किसी ने तीन तलाक़ दे दी तो जिसने कहा कि तीनों तलाक़ पड़ जाएँगी उसकी दलील और अल्लाह पाक ने सूरह बक़र: में फ़र्माया तलाक़ दो बार है

﴿الطَّلاَقُ مَرَّتَانِ، فَإِمْسَاكٌ بِمَعْرُوفٍ أَوْ تَسْرِيحٌ بِإِحْسَانٍ﴾ وَقَالَ ابْنُ الزُّبَيْرِ فِي مَرِيضٍ طَلَّقَ : لاَ أَرَى أَنْ تَرِثَ مَبْتُوتَتُهُ. وَقَالَ الشَّعْبِيُّ تَرِثُهُ وَقَالَ ابْنُ شُبْرُمَةَ تَزَوَّجُ

उसके बाद या दस्तूर के मुवाफ़िक़ औरत को रख लेना चाहिये या अच्छी तरह रुख़्सत कर देना और अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) ने कहा अगर किसी बीमार शख़्स ने अपनी औरत को तलाक़े बाइन दे दी तो वो अपने शौहर की वारिष़ न होगी और आ़मिर शअ़बी ने कहा वारिष़ होगी (उसको सईद बिन मंसूर ने वस्ल किया) और इब्ने शुबरमा (कूफ़ा के क़ाज़ी) ने शअ़बी

إِذَا انْقَضَتِ الْعِدَّةُ؟ قَالَ: نَعَمْ. قَالَ أَرَأَيْتَ إِنْ مَاتَ الزَّوْجُ الآخَرُ فَرَجَعَ عَنْ ذَلِكَ؟

से कहा, क्या वो औरत इद्दत के बाद दूसरे से निकाह कर सकती है? उन्होंने कहा हाँ। इब्ने शुबरमा ने कहा, फिर अगर उसका दूसरा शौहर भी मर जाए (तो वो क्या दोनों की वारिष़ होगी?) इस पर शअ़बी ने अपने फ़त्वे से रुजूअ किया।

सुन्नत ये है कि अगर औरत को तीन तलाक़ देनी मंजूर हों तो पहले तुहर में एक तलाक़ दे, फिर दूसरे तुहर में एक तलाक़ दे, फिर तीसरे तुहर में एक तलाक़ दे। अब रज्अत नहीं हो सकती और वो औरत बाइना हो गई और ये शौहर उस औरत से फिर निकाह नहीं कर सकता जब तक वो औरत दूसरे शौहर से निकाह करके उसके घर न रह ले और फिर वो दूसरा शौहर उसे अपनी मर्ज़ी से तलाक़ न दे दे और वो औरत तलाक़ की इद्दत न गुज़ार ले और बेहतर ये है कि एक ही तलाक़ पर इक्तिफ़ा करे। इद्दत गुज़र जाने के बाद वो औरत बाइना हो जाएगी। अब अगर किसी ने अपनी औरत को एक ही बार में तीन तलाक़ दे दी या एक ही तुहर में बदफ़िआत एक एक करके तीन तलाक़ दे दी तो उसमें उलमा का इख़्तिलाफ़ है। जुम्हूर उलमा व चारों इमामों का तो ये क़ौल है कि तीन तलाक़ पड़ जाएँगी लेकिन ऐसा करने वाला एक बिदअत और हराम का मुर्तकिब होगा और इमाम इब्ने हज़्म और एक जमाअते अहले हदीष़ और अहले बैत का ये क़ौल है कि एक तलाक़ भी नहीं पड़ेगी और अकष़र अहले हदीष़ और इब्ने अब्बास (रज़ि.) और मुहम्मद बिन इस्हाक़ और अता और इक्रिमा का ये क़ौल है कि एक तलाक़े रजई पड़ेगी ख़्वाह औरत मदख़ूला हो या ग़ैर मदख़ूला और हमारे मशाइख़ और हमारे इमामों ने जैसे शैख़ुल इस्लाम अल्लामा इब्ने तैमिया और शैख़ुल इस्लाम अल्लामा इब्ने क़य्यिम और अल्लामा शौकानी और मुहम्मद बिन इब्राहीम वज़ीर वग़ैरह (रह.) ने इसी को इख़्तियार किया है। शौकानी ने कहा यही क़ौल सबसे ज़्यादा सहीह है और इस बाब में एक सरीह हदीष़ है इब्ने अब्बास (रज़ि.) की कि रूकाना ने अपनी औरत को एक मजलिस में तीन तलाक़ दे दी। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि एक तलाक़ पड़ी है इससे रुजूअ कर ले और हज़रत उमर (रज़ि.) ने अपनी ख़िलाफ़त में गो उसके ख़िलाफ़ फ़त्वा दिया और तीन तलाक़ों को क़ायम रखा मगर हदीष़ के ख़िलाफ़ हमको न हज़रत उमर (रज़ि.) की इत्तिबाअ ज़रूरी है न किसी और की और ख़ुद इमाम मुस्लिम हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से रिवायत करते हैं कि तीन तलाक़ एक बार देना एक ही तलाक़ था, आँहज़रत (ﷺ) के बाद और अबूबक्र व उमर (रज़ि.) की ख़िलाफ़त में भी दो बरस तक। फिर हज़रत उमर (रज़ि.) ने लोगों को उनकी जल्दबाज़ी की सज़ा देने के लिये ये हुक्म दिया कि तीनों तलाक़ पड़ जाएँगी। ये हज़रत उमर (रज़ि.) का इज्तिहाद था जो हदीष़ के ख़िलाफ़ क़ाबिले अमल नहीं हो सकता। मैं (मौलाना वहीदुज़्ज़माँ मरहूम) कहता हूँ, मुसलमानो! अब तुमको इख़्तियार है ख़्वाह हज़रत उमर (रज़ि.) के फ़त्वे पर अमल करके आँहज़रत (ﷺ) की हदीष़ को छोड़ दो, ख़्वाह हदीष़ पर अमल करो और हज़रत उमर (रज़ि.) के फ़त्वे का कुछ ख़्याल न करो। हम तो रसूल की बात को इख़्तियार करते हैं।

तत्लीक़ाते ष़लाष़ा क़ुर्आन व हदीष़ की रोशनी में

मजलिसे वाहिद की तलाक़े ष़लाष़ा ख़्वाह बैक लफ़्ज़ **अन्ति, तालिकुन ष़लाषन** दी जाएँ, या कई अल्फ़ाज़ **अन्ति तालिकुन अन्ति तालिकुन अन्ति तालिकुन** से दी जाएँ। शरअ के हुक्म के मुताबिक़ उन हर एक सूरत में एक ही तलाक़ वाक़ेअ होगी और शौहर के लिये लौटाने का हक़ बाक़ी रहेगा। इसलिये कि मज्मूई तौर पर एक ही वक़्त में तीन तलाक़ों का इस्ते'माल सरीह मअसियत और खुली हुई बिदअत है। यही वजह है कि जुम्हूर उम्मते मुहम्मद (ﷺ) ने इस तरीक़े को शरई ए'तिबार से क़तअन हराम क़रार दिया है और इस तलाक़ को तलाक़े बिदई बताया है या'नी ऐसी तलाक़ जिसका षुबूत न क़ुर्आन मजीद में है और न अहादीषे रसूलुल्लाह (ﷺ) में। क़ुर्आन करीम में जो तरीक़ा तलाक़ देने का बताया गया है वो ये है कि हर तलाक़ तफ़रीक़ के साथ हो या'नी हर तलाक़ का इस्ते'माल हर तुहर में होना चाहिये, न कि एक ही तुहर में। चुनाँचे इर्शादे बारी तआला है, **अत्तलाकु मर्रतानि फइम्साकुम्बिअरूफ़िन औ तस्रीहुम्बि इहसानिन** (अल बक़र : 229) या'नी तलाक़े शरई जिसके बाद रुजूअ किया जा सकता है दो तुहरों में दी हुई दो तलाक़ें हैं फिर शौहर के लिये दो ही रास्ते रह जाते हैं या तो अच्छे तरीक़े से उसको रोक लेना है या हुस्ने सुलूक़ के साथ उसे रुख़्सत कर देना है। इस आयत की तफ़्सीर

में जुम्हूरे मुफ़स्सिरीन ने यही बताया है कि यहाँ तलाक़ देने का क़ायदा तफ़रीक़ के साथ रब्बुल आलमीन ने बताया है। चुनाँचे तफ़्सीरे कबीर में इमाम राज़ी ने इस आयत की तफ़्सीर में लिखा है। **इन्न हाज़िहिल्आयत दाल्लतुन अलल्अम्रि बितफ़्रीक़ित्तल्लीक़ात** (तफ़्सीर कबीर पेज 248, जिल्द 2) या'नी ये आयते करीमा दलालत कर रही है उस हुक्मे ख़ुदावन्दी पर कि तलाक़ तफ़्रीक़ के साथ देनी चाहिये या'नी अलग अलग तुहर में, एक तुहर में नहीं। फिर आगे जुम्हूर का मसलक बताते हुए लिखते हैं। **लौ तल्लक़हा इष्नैनि औ ष़लाष़न ला यक़उ इल्ला वाहिदतन व हाज़ल्क़ौलु हुवल्अक़्यसु** या'नी अगर कोई शख़्स एक ही बार दो तलाक़ें दे दे या तीन तलाक़ें दे तो एक ही तलाक़ वाक़ेअ होगी और यही क़यास के ज़्यादा मुवाफ़िक़ भी है या'नी अक़्लन और शरअ़न यही सहीह है। यही चीज़ अल्लामा अबूबक्र जस्सास राज़ी ने अपने अह्कामुल क़ुर्आन में लिखी है। **अन्नल्आयः अत्तलाकु मर्रतानि तज़म्मनितल्अम्रू बिईक़ाइष्नैनि फ़ी मर्रतैनि फ़मन औक़अल्इष्नैनि फ़ी मर्रतिन फहुव मुख़ालिफ़ुन लिहुक्मिहा** (अहकामुल्क़ुर्आन पेज 380, जिल्द 1) या'नी दो तलाक़ दो बार (दो तुहर में) वाक़ेअ करने के अम्र को शामिल है। पस जो कोई दो तलाक़ एक ही बार या'नी एक ही तुहर पर वाक़ेअ करता है वो हुक्मे ख़ुदावन्दी की सरीह ख़िलाफ़वर्ज़ी करता है। अल्लामा नसफ़ी ने भी तफ़्सीर मदारिक में इसी अम्र को वाज़ेह किया है कि तलाक़ बित् तफ़रीक़ ही सहीह है और यही फ़र्माने ख़ुदावन्दी है। चुनाँचे लिखते हैं **अत्तल्लीकुश्शरई तल्लीक़तुन बअ़द तल्लीक़तिन अलत्तफ़्सीरक़ि दूनल्जमइ** (तफ़्सीर मदारिक पेज 171, जिल्द 2) या'नी शरई तलाक़ के इस्ते'माल का तरीक़ा ये है कि हर तुहर में तफ़रीक़ के साथ तलाक दी जाए एक ही बार में न दी जाए। तफ़्सीर नीशापूरी में भी इसी की वज़ाहत की गई है। **अत्तल्लीकुश्शरई तल्लीक़तुन बअ़द तल्लीक़तिन अलत्तफ़्रीक़ि दूनल्जमइ वल्इर्सालु दफ़्अतुन वाहिदः** या'नी तलाक़े शरई वो तलाक़ है जो अलग अलग अपने अपने वक़्त या'नी तुहर में दी जाए ये नहीं कि सबको इकट्ठी करके एक ही बार दे दी जाए, ये बिलकुल ख़िलाफ़े शरअ़ है। फिर आगे अल्लामा अबू ज़ैद दबोसी के हवाले से अस्हाबे रसूल का मसलक बताते हैं **व जअ़म अबू ज़ैद अद्दबूसी फ़िल्अस्रार अन्न हाज़ा क़ौल उ़मर व उ़ष्मान व अ़ली व इब्नि अ़ब्बास व इब्नि उ़मर व इम्रान बिन हुसैन व अबी मूसा अश्अ़री व अबिद्दर्दा व हुज़ैफ़ा रज़िल्लाहु अन्हुम अज्मईन षुम्म मिन हाउलाइ मन क़ाल लौ तल्लक़हा इष्नतैनि औ ष़लाष़न ला यक़उ इल्ला वाहिदः व हाज़ा हुवल्अक़्यसु** या'नी अबू ज़ैद दबूसी ने अल अस्रार में लिखा है कि ये क़ौल हज़रत उ़मर, हज़रत उ़ष्मान, हज़रत अ़ली, हज़रत इब्ने अ़ब्बास, हज़रत इब्ने उ़मर, हज़रत इमरान बिन हुसैन, हज़रत अबू मूसा अशअ़री, हज़रत अबू दर्दाअ, हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ियल्लाहु अ़न्हुम) का है, फिर उनमें कुछ अस्हाब वो हैं जो कहते हैं कि जो शख़्स बैक वक़्त दो तलाक़ या तीन तलाक़ देता है तो सिर्फ़ एक ही तलाक़ वाक़ेअ होती है और यही क़ौल क़यास के सबसे ज़्यादा मुवाफ़िक़ है। चुनाँचे यही मतलब आयते करीमा का इब्ने कष़ीर ने तफ़्सीर इब्ने कष़ीर में, अल्लामा शौकानी ने फ़त्हुल क़दीर में, अल्लामा आलूसी ने तफ़्सीर रूहुल मआनी में लिखा है। जब क़ुर्आने करीम से ये ष़ाबित हो गया है कि तलाक़े शरई वही तलाक़ है जो हर तुहर में अलग अलग दी जाए। एक तुहर में जिस क़द्र भी तलाक़ें दी जाएँगी वो क़ुर्आन करीम के मुताबिक़ एक ही होंगी क्योंकि हर एक तुहर एक तलाक़ से ज़्यादा का महल ही नहीं है। अब अगर कोई शख़्स चंद तलाक़ों का इस्ते'माल एक तुहर में करता है तो वो सरीह हुर्मत का इर्तिकाब करता है या'नी अल्लाह के क़ानून को तोड़ता है और अल्लाह तआ़ला के क़ानून के मुताबिक़ एक ही तलाक़ का ए'तिबार होगा। चूँकि एक तुहर एक तलाक़ से ज़्यादा का महल नहीं है। अब हदीष़े रसूलुल्लाह (ﷺ) में उसकी मज़ीद तसरीह और तौज़ीह मुलाहिज़ा फ़र्माएँ। अल्लाह तआ़ला किताब व सुन्नत पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ बख़्शे, आमीन।

अ़निब्नि अ़ब्बास कानत्तलाकु अ़ला अहदि रसूलिल्लाहि (ﷺ) व अबी बक्र व सनतैनि मिन ख़िलाफ़ति उ़मर तलाकुष़्ष़लाषि वाहिदः फ़क़ाल उ़मरुब्नुल्ख़त्ताब इन्नन्नास कदिस्तअजलू फ़ी अम्रि कानत लहुम फ़ी इनातिन फलौ अम्ज़ैनाहू अ़लैहिम अम्ज़ाहु अ़लैहिम (सहीह मुस्लिम पेज 447, जिल्द 1)

या'नी इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़मान-ए-रिसालत में और हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) के पूरे अहदे ख़िलाफ़त में और हज़रत उ़मर (रज़ि.) की ख़िलाफ़त के शुरू दो साल तक तीन तलाक़ें एक ही शुमार होती थीं। हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि लोगों ने ऐसे काम में जल्दबाज़ी शुरू कर दी जिसमें उनको मुह्लत

थी पस अगर हम उन पर तीन तलाक़ों को नाफ़िज़ कर दें (तो मुनासिब है) पस उन्होंने तीन तलाक़ों को तीन नाफ़िज़ कर दिया।

पहले इस हदीष़ की सेहत पर ग़ौर फ़र्मा लें, इमाम मुस्लिम (रह़.) ने अपने मुक़द्दमे मुस्लिम शरीफ़ में लिखा है। जो ह़दीष़ सनद के ऐतिबार से आला तरीन मक़ाम रखती है वो ह़दीष़ मैं बाब के शुरू में लाता हूँ। पूरी मुस्लिम शरीफ़ में यही इल्तिज़ाम किया है। चुनाँचे फ़र्माते हैं। **फअम्मल्क़िस्मुल्अव्वलु फइन्ना नतवक़्क़ा अन तक़द्दमल्अख़बारूल्लती हिय अस्लमु मिनल्ड़्यूबि मिन ग़ैरिहा** या'नी हमने क़स्द किया है कि उन अह़ादीष़ को पहले रिवायत करें जिसकी सनद तमाम ड़्यूब से पाक और स़ह़ीह़ सालिम हो दूसरी अह़ादीष़ से **अल्अव्वलु मा रवाहुल्हुफ़्फ़ाज़ुल्मुत्तक़ून** अब आप मज़्कूरा ह़दीष़ को जो मुस्लिम शरीफ़ में है बाब की पहली ह़दीष़ देख रहे हैं तो मा'लूम हुआ कि इमाम मुस्लिम (रह़.) के नज़दीक ये ह़दीष़ आलातरीन सेह़त रखती है और हर क़िस्म के ड़्यूब से पाक है। इसी वजह से बाब की पहली ह़दीष़ है वैसे भी उसके जय्यदुल इस्नाद होने पर जुम्हूर मुह़द्दिष़ीन का इत्तिफ़ाक़ है। इमाम नववी ने भी बाब की पहली ह़दीष़ के बारे में यही तस़रीह़ की है। अल्अव्वलु म रवाहुल हुफ़्फ़ाजु अव्वल क़िस्म की सनदों से वही ह़दीष़ मरवी है जिनके रूवात हुफ़्फ़ाज़े ह़दीष़ और भरोसेमंद लोग हैं और उसी को बाब के शुरू में लाते हैं। ह़दीष़े मुस्लिम की सिह़त मा'लूम करने के बाद इस ह़दीष़ में दोनों हुक्म बयान किये गये हैं। ग़ौर फ़र्माईए एक हुक्म शरई दूसरा हुक्म सियासी। पहला हुक्म तो शरई है कि जनाब रसूलुल्लाह (ﷺ) के पूरे अहदे रिसालत में और ह़ज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) के पूरे अहदे ख़िलाफ़त में और ह़ज़रत ड़मर (रज़ि.) की ख़िलाफ़त के दो साल तक मजलिसे वाह़िद की तलाक़े ष़लाष़ा एक ही होती थी और उसमें एक फ़र्द का भी इख़्तिलाफ़ नहीं था। तमाम के तमाम अस्ह़ाब रसूलुल्लाह (ﷺ) का इस पर इज्माअ था। दूसरा हुक्म अम्ज़ाए ष़लाष़ या'नी तीन तलाक़ों को तीन क़रार देने का है। ये हुक्म बिल्कुल सियासी और तअ़ज़ीरी है और उसकी इ़ल्लत भी ह़दीष़ में मौजूद है कि लोग ड़ज्लत करने लगे इस अम्र में जिसमें अल्लाह तआला ने उनको मुह्लत दी तो फिर सज़ा के तौर पर ये हुक्म नाफ़िज़ कर दिया और यही नहीं बल्कि उसमें मज़ीद इज़ाफ़ा किया कि ऐसे लोगों को जो बैक वक़्त तीन तलाक़ें इस्ते'माल करते थे कोड़े लगवाकर मियाँ–बीवी में तफ़रीक़ करा देते थे। चुनाँचे महल्ला में अ़ल्लामा इब्ने ह़ज़्म ने बस़राह़त इसको लिखा है। नीज़ इस ह़दीष़ में ह़ज़रत ड़मर (रज़ि.) के क़ब्ल और बाद दोनों ज़मानों का अलग अलग तआम्मुल भी नज़र आ जाता है और ये भी मा'लूम हो जाता है कि अ़हदे रिसालत से लेकर ह़ज़रत ड़मर (रज़ि.) की ख़िलाफ़त के दो तीन साल तक बइत्तिफ़ाक़ स़ह़ाबा किराम एक तुहर की तीन तलाक़ एक ही होती थी और उसी पर इज्माअ़े स़ह़ाबा था। इख़्तिलाफ़ दर ह़क़ीक़त शुरू ख़िलाफ़त ड़मर (रज़ि.) के तीसरे साल के बाद हुआ। जब उन्होंने सियासी और तअ़ज़ीरी फ़र्मान का निफ़ाज़ फ़र्माया और हुक्म दे दिया कि जो कोई एक तुहर में तीन तलाक़ें देगा उसे तीन मानकर हमेशा के लिये तफ़रीक़ करा दूँगा और ये हुक्म पूरी तरह़ नाफ़िज़ कर दिया गया। यही वजह है कि अ़हदे ख़िलाफ़ते ड़मर (रज़ि.) से पहले स़ह़ाबा किराम के फ़तवों में कोई इख़्तिलाफ़ नज़र नहीं आता जो इख़्तिलाफ़ स़ह़ाबा किराम के फ़त्वों में नज़र आता है वो अ़हदे ख़िलाफ़ते ड़मर (रज़ि.) में है। चुनाँचे मुह़द्दिष़ीन, मुअर्रिख़ीन के अ़लावा ख़ुद अइम्मा अह़नाफ़ (हनफ़ी इमामों) ने इस बात को तस्लीम किया और अपनी अपनी किताब में लिखा है। चुनाँचे अ़ल्लामा क़ुहस्तानी लिखते हैं **इअलम अन्न फ़िस्सदरिल अव्वलि इज़ा अर्सलष़्ष़लाष़ जुम्लतन लम यहकुम इल्ला बिवुक़ूइन वाहिदतिन इला ज़मनि ड़मर ष़ुम्म बिवुक़ूइष़्ष़लाष़ति लिकष़्रतिही बैनन्नासि ष़लाष़न** या'नी स़द्रे अव्वल (अ़हदे रिसालत, अ़हदे अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि.) में ह़ज़रत ड़मर (रज़ि.) के ज़माना तक अगर कोई शख़्स़ इकट्ठा तीन तलाक़ें देता तो वो सिर्फ़ एक तलाक़ होती थी, फिर लोग जब कष़रत से तलाक़ें देने लगे तो तहदीदन तीन को तीन नाफ़िज़ कर दिया गया।

यही चीज़ तह़ावी (रह़.) ने दुर्रे मुख़्तार के ह़ाशिये पर लिखी है।

इन्न कान फिस्सदरिल्अव्वलि इज़ा अर्सलष़्ष़लाष़ जुम्लतन लम युहकम इल्ला बिवुक़ूइन वाहिदतिन इला ज़मनि ड़मर रज़ियल्लाहु अन्हु ष़ुम्म हुकिम बिवुक़ूइष़्ष़लाष़ि सियासतन लिकष़्रतिही बैनन्नासि (दुर्रि मुख़्तार पेज 105, जिल्द 2)

या'नी स़द्रे अव्वल में ह़ज़रत ड़मर (रज़ि.) के ज़माने तक जब कोई शख़्स़ एक दफ़ा तीन तलाक़ें दे देता तो सिर्फ़

एक तलाक़ के वक़ूअ का हुक्म किया जाता था, फिर लोगों ने कष़रत से तलाक़ देनी शुरू की तो सियासत व तअज़ीरन तीन तलाक़ के वक़ूअ का हुक्म किया जाने लगा।

मजमउल्अन्हार शरहु मुल्तक़ल अब्हुर में इसी तरह यही इबारत है। इसी तरह जामेउर्रमूज़ वग़ैरह में भी यही सराहत मौजूद है। इसी चीज़ को पूरे शरह व बस्त के साथ अल्लामा इब्ने तैमिया (रह.) और उनके शागिर्दे रशीद अल्लामा इब्ने क़य्यिम (रह.) ने अपनी अपनी किताबों में तहरीर फ़र्माया है। मुलाहिज़ा हो फ़तावा इब्ने तैमिया, **इगाष़तुल्लहफ़ान इलामुल्मुवक्किईन** हज़रत उमर (रह.) के दौरे ख़िलाफ़त में ही इख़्तिलाफ़ शुरू हुआ और दोनों तरह के फ़तावे दिये जाने लगे। अब हम मुसलमानों का अमल उसी पर होना चाहिये जिस पर सद्रे अव्वल में था, या'नी एक दफ़ा की दी हुई तलाक़े ष़लाष़ा एक ही मानी जाए। जिस तरह हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह (ﷺ) का इर्शाद है। हज़रत रूकाना (रज़ि.) का वाक़िया भी मुलाहिज़ा फ़र्माएँ। पूरी तफ़्सील से मुहद्दिष़ीन ने इस रिवायत को नक़ल फ़र्माया है और ये हदीष़ नस्से सरीह की हैष़ियत रखती है।

तल्लक़ रूकाना इम्रातहू ष़लाष़न फ़ी मज्लिसिन वाहिदिन फहज़न अलैहा हुज़्नन शदीदा क़ाल फसअलहू रसूलुल्लाहि (ﷺ) कैफ़ तल्लक्तहा ष़लाष़न क़ाल तल्लक्तुहा ष़लाष़न फक़ाल फ़ी मज्लिसिन वाहिदिन क़ाल नअम क़ाल फइन्नमा तिल्क वाहिदः फ़राजिअहा इन शिअत काल फराजअहा (मुस्नद अहमद पेज 165, जिल्द 1) या'नी हज़रत रूकाना (रज़ि.) अपनी बीवी को एक मजलिस में तीन तलाक़ें देकर सख़्त ग़मगीन हुए। आँहज़रत (ﷺ) को ख़बर हुई तो पूछा कि तुमने किस तरह तलाक़ दी है। अर्ज़ किया कि हुज़ूर (ﷺ)! मैंने तीन तलाक़ें दे दी हैं। आपने फ़र्माया क्या एक मजलिस में दी हैं? जवाब दिया हाँ एक ही मजलिस में दी है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ये तीन तलाक़ें एक मजलिस की एक ही हुईं, अगर तू चाहता है तो बीवी से रुजूअ कर ले। इब्ने अब्बास (रज़ि.) जो रावी हदीष़ हैं कहते हैं कि हज़रत रूकाना (रज़ि.) ने रुजूअ कर लिया। ये हदीष़ भी सनद के ए'तिबार से बिलकुल सहीह है।

चुनाँचे फ़न्ने हदीष़ के इमामुल अइम्मा हाफ़िज़ इब्ने हजर अस्क़लानी फ़त्हुल बारी में इसी मुस्नद अहमद की हदीष़ के बारे में लिखते हैं, **व हाज़ल्हदीषु नस्सुन फिल्मस्अलति ला तुक़्बलु तावीलुल्लज़ी फ़ी गैरिही.** या'नी मजलिस वाहिद की तलाक़े ष़लाष़ा के एक होने में ये हदीष़ ऐसी नस्से सरीह है जिसमें तावील की गुंजाइश नहीं जो दूसरों में की जाती है।

हाफ़िज़ इब्ने हजर की ये तस्दीक़ सेहत उन तमाम शुकूक व शुब्हात को दूर कर देती है जो कुछ कम फ़हम लोगों के दिलों में पैदा होती हैं। ये हदीष़ भी मसलके अहले हदीष़ के लिये वाज़ेह और रोशन दलील है और तलाक़े ष़लाष़ा के एक तलाक़ होने का बेहतरीन षुबूत है। इमाम नसाई सुनन नसई में एक हदीष़ महमूद बिन लुबैद से रिवायत करते हैं। इसमें जनाब रसूलुल्लाह (ﷺ) के क़हर व ग़ज़ब का हाल मुलाहिज़ा हो।

अन महमूद बिन लुबैद क़ाल अख्बर रसूलुल्लाहि (ﷺ) अन रजुलिन तल्लक़ इम्रातहू ष़लाष़न व तत्लीक़ातिन जमीअन फक़ाम गज़बन षुम्म क़ाल अ यल्अबु बिकिताबिल्लाहि व अना बैन अज़्हुरिकुम क़ाम रजुलुन व क़ाल रसूलुल्लाहि इल्ला नक़्तुलु सुनन नसई (पेज 538)

महमूद बिन लुबैद से मरवी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) को ख़बर दी गई कि एक शख़्स ने अपनी बीवी को इकट्ठी तीन तलाक़ें दे दीं। पस जनाब रसूलुल्लाह (ﷺ) हालते गुस्सा में खड़े हुए और फ़र्माया कि अल्लाह तआला से खेला जाता है हालाँकि मैं तुममें मौजूद हूँ। ये सुनकर एक शख़्स खड़ा हुआ और कहा या रसूलल्लाह (ﷺ) क्या इसको क़त्ल न कर दूँ।

इस हदीष़ के मज़्मून से ये साफ़ ज़ाहिर है कि एक मजलिस की तीन तलाक़ें शरीअत की निगाह में ऐसा शदीद जुर्म है कि अल्लाह के रसूल सुनते ही क़हरमान हो गये और ऐसे फ़ेअल के मुर्तकिब को सहाबा क़त्ल के लिये आमादा हो गये। कुछ हज़रात ने इस हदीष़ पर ये शुब्हा ज़ाहिर किया है कि इस हदीष़ में क़हर व ग़ज़ब का ज़िक्र तो ज़रूर है मगर एक तलाक़ होने का कोई ज़िक्र नहीं है या'नी जनाब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ये नहीं फ़र्माया कि ये तीन तलाक़ें एक हुईं। इससे मा'लूम होता है कि तीन तलाक़ें तीन ही आपने मानी थीं। ये शुब्हा बिल्कुल ग़लत हैं। इसलिये कि जब ये पहले मा'लूम हो चुका कि अहदे रिसालत में एक दफ़ा की दी हुई तलाक़ें एक ही होती थीं और लौटाने का हक़ बाक़ी रहता था तो फिर ये शुब्हा किस तरह सहीह हो सकता है। आम क़ायदा के मुताबिक़ ये भी तलाक़ रजई हुई। इसलिये कि एक दफ़ा की दी हुई तीन तलाक़ें हमेशा अल्लाह

के रसूल (ﷺ) ने एक ही मानी हैं। जैसा कि मुस्लिम शरीफ़ की हदीष़ में मज़्कूर हो चुका है और जैसा कि हज़रत रूकाना (रज़ि.) की हदीष़ में गुज़र चुका कि आपने मजलिसे वाहिद की तलाक़े ष़लाष़ा के बारे में फ़र्माया, **फइन्नमा तिल्क वाहिदतुन फ़ राज़िअहा इन शिअत** या'नी एक वक़्त की दी हुई तलाक़े ष़लाष़ा एक ही तलाक़ वाक़ेअ होती है। अगर तुम चाहते हो तो बीवी से रुजूअ कर लो। जनाबे रसूलुल्लाह (ﷺ) का ये ऐसा हत्मी हुक्म है कि उसके बाद तीन तलाक़ों के तीन होने का शुब्हा तक नहीं रह जाता। स़ेहत के ए'तिबार से भी ये हदीष़ स़हीह है। चुनाँचे इब्ने हजर ने इस हदीष़ के बारे में फ़त्हुल बारी में लिखा है **व रूवातुहू मौष़ुक़ून** इस हदीष़ के तमाम रावी ष़िक़ह हैं।

अ़ल्लामा इब्ने क़य्यिम (रह़.) ने ईलामुल मुअक़्क़िईन में ष़ाबित किया है कि मजलिसे वाहिद की तलाक़े ष़लाष़ा के एक होने पर फ़तावा हमेशा उ़लमा ने दिये हैं। चुनाँचे लिखते हैं, **फअफ़्ता बिही अब्दुल्लाहि ब्नि अ़ब्बास वज़्ज़ुबैर बिन अवाम व अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ व अ़ली इब्नु मस्ऊद व अम्मत्ताबिऊन फअफ़्ता बिही इक्रमा व अफ़्ता बिही ताऊस व अम्मत्ताबिऊन फअफ़्ता बिही मुहम्मद बिन इस्हाक़ व गैरूहू व अफ़्ता बिही ख़लास बिन अमर वल्हारिष़ अक्ली व अम्मा इत्तिबाउ ताबिइत्ताबिईन फअफ़्ता बिही दाऊद बिन अ़ली व अक्ष़रु अस्हाबिही व अफ़्ता बिही बअ़ज़ु अस्हाबिही व अफ़्ता बिही बअ़ज़ु व अफ़्ता बिही बअ़ज़ु अस्हाबि अहमद** (इ़लामुल्मुवक़्क़िईन पेज 26) या'नी स़हाबा किराम में अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास, हज़रत ज़ुबैर बिन अ़वाम, हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़, हज़रत अ़ली, हज़रत इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) ने तीन तलाक़ों के एक होने का फ़त्वा दिया है। ताबेईन में इमाम ताऊस, इमाम इक्रिमा ने भी इसी का फ़त्वा दिया है और तबेअ ताबेईन में से मुहम्मद बिन इस्हाक़ वग़ैरह ने भी यही फ़त्वा दिया और ख़लास बिन अ़म्र और हारिष़ अ़क्ली ने उसी का फ़त्वा दिया है और तबेअ ताबेईन के इत्तिबाअ में से दाऊद बिन अ़ली और उनके अकष़र अस्हाब ने भी उसी का फ़त्वा दिया है और कुछ मालिकिया और कुछ हनफ़िया और कुछ हनाबिला ने भी तीन तलाक़ों के एक होने का फ़त्वा दिया है।

अ़ल्लामा इब्ने क़य्यिम (रह़.) की इस तस़रीह से क़तई तौर पर ष़ाबित हो जाता हैकि स़हाबा किराम के बाद भी क़रनन बाद क़रन अस्हाबे इ़ल्म व फ़ज़्ल तीन तलाक़ों के एक होने का फ़त्वा देते आए हैं और ये भी मा'लूम हो जाता है कि जिन लोगों ने स़द्रे अव्वल के फ़त्वा पर अ़मल किया, उन्होंने तीन तलाक़ों को एक बताया और जिन लोगों ने हज़रत उ़मर (रज़ि.) के सियासी फ़ैस़ला को माना, उन्होंने तीन को तीन माना। चुनाँचे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) का फ़त्वा भी दोनों तरह का हदीष़ में मन्क़ूल है मगर तीन तलाक़ों के एक होने का फ़त्वा ख़ुद हज़रत सय्यदना मुहम्मद रसूलुल्लाह (ﷺ) का है इसलिये **आमिल बिल किताब वस्सुन्नति** का यही मसलक है और यही उनका मज़हब है। हज़रत उ़मर (रज़ि.) का सियासी फ़ैस़ला इम्ज़ाओ ष़लाष़ को आ़मिल बिल किताब वस्सुन्नह नहीं मानते जिस तरह बहुत से स़हाबा व ताबेईन व तबेअ ताबेईन (रह़.) ने नहीं माना।

अ़ल्लामा ऐनी (रह़.) ने उ़म्दतुल क़ारी में इसी तरफ़ इशारा किया है, **फीहि ख़िलाफ़ुन ज़हब ताऊस व मुहम्मद बिन इस्हाक़ वल्हज्जाज बिन अर्तात वन्नखई वब्नु मुक़ातिल वज्जाहिरिय्यः इला अन्नर्रजुल तल्लक इम्रातहू मअन फक़द वक़अत अलैहा वाहिदः** (उम्दतुल्क़ारी जिल्द 9, पेज 537) तलाक़े ष़लाष़ा के वक़ूअ में इख़्तिलाफ़ है। इमाम ताऊस और मुहम्मद बिन इस्हाक़ व हज्जाज बिन अरतात व इमाम नख़ई (रह़.) जो उस्ताज़े इमाम अबू हनीफ़ा (रह़.) हैं और मुहम्मद बिन मुक़ातिल जो शागिर्दे इमाम अबू हनीफ़ा हैं और ज़ाहिर ये सब इस बात की तरफ़ गये हैं कि जब कोई शख़्स अपनी बीवी को तीन तलाक़ें बयक वक़्त दे दे तो इस पर एक ही वाक़ेअ होगी, तीन नहीं होंगी। जैसा कि क़ुर्आन व हदीष़ से ष़ाबित है। ख़ुलास़ा यही है कि एक मजलिस की तलाक़े ष़लाष़ा दलाइल के ए'तिबार से और क़ुर्आने करीम और हदीष़े रसूल (ﷺ) के उस़ूल से एक ही तलाक़ के हुक्म में हैं और उसी पर अ़मल जुम्हूर स़हाबा का हज़रत उ़मर (रज़ि.) की ख़िलाफ़त के इब्तिदाई तीन साल तक रहा है। बाद में हज़रत उ़मर (रज़ि.) के सियासी फ़ैस़ले से इख़्तिलाफ़ चला और आज तक चला आ रहा है और शायद क़यामत तक रहेगा। इब्ने क़य्यिम (रह़.) ने **इगाष़तुल्लहफान** में लिखा है, **अन्निज़ाउ फ़ी हाज़िहिल्मस्अलति ष़ाबितुन अ़न अ़हदि सहाबति इला वक्तिना हाज़ा** या'नी वक़ूआ ष़लाष़ा के मसले में स़हाबा किराम (रज़ि.) से लेकर हमारे इस ज़माने तक नज़ाअ चला आ रहा है। वक़्त का शदीद तक़ाज़ा है कि आज अ़हदे रिसालत

ही के तआमुल पर उम्मत मुत्तफ़िक़ हो जाए।

अल्लाह तआला हम सब मुसलमानों को क़ुर्आन व हदीष़ से षाबित शुदा मसला पर अमल की तौफ़ीक़ बख़्शे और हक़ व बातिल में तमीज़ पैदा करने की सलाहियत अता करे, आमीन या रब्बल आलमीन। (अज़् क़लम... हज़रत मौलाना अब्दुस्समद साहब रहमानी सद्रे मुदर्रिस मदरसा सबीलुस्सलाम देहली)

٥٢٥٩- حدَّثنا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَنَّ سَهْلَ بْنَ سَعْدٍ السَّاعِدِيَّ أَخْبَرَهُ أَنَّ عُوَيْمِرًا الْعَجْلاَنِيَّ جَاءَ إِلَى عَاصِمِ بْنِ عَدِيٍّ الأَنْصَارِيِّ فَقَالَ لَهُ : يَا عَاصِمُ، أَرَأَيْتَ رَجُلاً وَجَدَ مَعَ امْرَأَتِهِ رَجُلاً أَيَقْتُلُهُ فَتَقْتُلُونَهُ، أَمْ كَيْفَ يَفْعَلُ؟ سَلْ لِي يَا عَاصِمُ عَنْ ذَلِكَ رَسُولَ اللهِ ﷺ: فَسَأَلَ عَاصِمٌ عَنْ ذَلِكَ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَكَرِهَ رَسُولُ اللهِ ﷺ الْمَسَائِلَ وَعَابَهَا، حَتَّى كَبُرَ عَلَى عَاصِمٍ مَا سَمِعَ مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ؟ فَلَمَّا رَجَعَ عَاصِمٌ إِلَى أَهْلِهِ جَاءَ عُوَيْمِرٌ فَقَالَ: يَا عَاصِمُ، مَاذَا قَالَ لَكَ رَسُولُ اللهِ ﷺ؟ فَقَالَ : عَاصِمٌ لَمْ تَأْتِنِي بِخَيْرٍ، قَدْ كَرِهَ رَسُولُ اللهِ ﷺ الْمَسْأَلَةَ الَّتِي سَأَلْتُهُ عَنْهَا قَالَ : عُوَيْمِرٌ : وَاللهِ لاَ أَنْتَهِي حَتَّى أَسْأَلَهُ عَنْهَا. فَأَقْبَلَ عُوَيْمِرٌ حَتَّى أَتَى رَسُولَ اللهِ ﷺ وَسَطَ النَّاسِ فَقَالَ : يَا رَسُولَ اللهِ، أَرَأَيْتَ رَجُلاً وَجَدَ مَعَ امْرَأَتِهِ رَجُلاً، أَيَقْتُلُهُ فَتَقْتُلُونَهُ، أَمْ كَيْفَ يَفْعَلُ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((قَدْ أَنْزَلَ اللهُ فِيكَ وَفِي صَاحِبَتِكَ، فَاذْهَبْ فَأْتِ بِهَا)). قَالَ سَهْلٌ : فَتَلاَعَنَا، وَأَنَا مَعَ النَّاسِ عِنْدَ رَسُولِ اللهِ ﷺ، فَلَمَّا فَرَغَا قَالَ

5259. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने और उन्हें सहल बिन सअद साएदी (रज़ि.) ने ख़बर दी कि उवेमिर उज्लानी (रज़ि.) आसिम बिन अदी अंसारी (रज़ि.) के पास आए और उनसे कहा कि ऐ आसिम! तुम्हारा क्या ख़याल है, अगर कोई अपनी बीवी के साथ किसी ग़ैर को देखे तो क्या उसे वो क़त्ल कर सकता है? लेकिन फिर तुम क़िसास में उसे (शौहर को) भी क़त्ल कर दोगे या फिर वो क्या करेगा? आसिम मेरे लिये ये मसला आप रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछ दीजिए। आसिम (रज़ि.) ने जब हुज़ूरे अकरम (रज़ि.) से ये मसला पूछा तो आँहज़रत (ﷺ) ने इन सवालात को नापसंद फ़र्माया और इस सिलसिले में हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के कलिमात आसिम (रज़ि.) पर गिराँ गुज़रे और जब वो वापस अपने घर आ गये तो उवेमिर (रज़ि.) ने आकर उनसे पूछा कि बताइये आपसे हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने क्या फ़र्माया? आसिम ने उस पर कहा तुमने मुझको आफ़त में डाला। जो सवाल तुमने पूछा था वो आँहज़रत (ﷺ) को नागवार गुज़रा। उवेमिर ने कहा कि अल्लाह की क़सम ये मसला आँहुज़ूर (ﷺ) से पूछे बग़ैर मैं बाज़ नहीं आऊँगा। चुनाँचे वो रवाना हुए और हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में पहुँचे। आँहज़रत (ﷺ) लोगों के दरम्यान तशरीफ़ रखते थे। उवेमिर (रज़ि.) ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! अगर कोई शख़्स अपनी बीवी के साथ किसी ग़ैर को पा लेता है तो आपका क्या ख़याल है? क्या वो उसे क़त्ल कर दे? लेकिन इस सूरत में आप उसे क़त्ल कर देंगे या फिर उसे क्या करना चाहिये? हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह तआला ने तुम्हारी बीवी के बारे में वह्य नाज़िल की है, इसलिये तुम जाओ और अपनी बीवी को भी साथ लाओ। सहल ने बयान किया कि फिर दोनों (मियाँ—बीवी) ने लिआन किया। लोगों के साथ मैं भी रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ उस वक़्त मौजूद था। लिआन से जब दोनों फ़ारिग़ हुए तो हज़रत उवेमिर (रज़ि.) ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! अगर उसके बाद भी मैं उसे अपने

पास रखूँ तो (उसका मत़लब ये होगा कि) मैं झूठा हूँ। चुनाँचे उन्होंने हुज़ूर अकरम (ﷺ) के हुक्म से पहले ही अपनी बीवी को तीन त़लाक़ दी। इब्ने शिहाब ने बयान किया कि फिर लिआ़न करने वाले के लिये यही त़रीक़ा जारी हो गया।

(राजेअ़ : 423)

عُوَيْمِرٌ كَذَبْتُ عَلَيْهَا يَا رَسُولَ اللهِ إِنْ أَمْسَكْتُهَا، فَطَلَّقَهَا ثَلاَثًا قَبْلَ أَنْ يَأْمُرَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ. قَالَ ابْنُ شِهَابٍ: فَكَانَتْ تِلْكَ سُنَّةُ الْمُتَلاَعِنَيْنِ. [راجع: ٤٢٣]

तश्रीह : कि लिआ़न के बाद वो मिलकर नहीं रह सकते बल्कि हमेशा के लिये एक-दूसरे से जुदा हो जाते हैं। ये ह़दीष़ उन लोगों की दलील है जो कहते हैं तीन त़लाक़ इकट्ठा दे दे तब भी तीनों पड़ जाती हैं। अहले ह़दीष़ ये जवाब देते हैं कि उ़वेमिर (रज़ि.) ने नादानी से ये फ़ेअ़ल किया क्योंकि उसको ये मा'लूम न था कि ख़ुद लिआ़न से मर्द और औ़रत मे जुदाई हो जाती है और आँह़ज़रत (ﷺ) ने उस पर इंकार इस वजह से नहीं किया कि वो औ़रत अब उसकी औ़रत नहीं रही थी तो तीन त़लाक़ क्या अगर हज़ार त़लाक़ देता तब भी बेकार थी। हाँ अगर लिआ़न न हुआ होता तो आप ज़रूर उस पर इंकार करते और फ़र्माते कि एक ही त़लाक़ पड़ी है जैसे मह़मूद बिन लुबैद ने रिवायत किया है। आँह़ज़रत (ﷺ) से बयान किया कि एक मर्द ने अपनी औ़रत को तीन इकट्ठी त़लाक़ दे दी हैं। आप ग़ुस्सा हुए और फ़र्माया क्या अल्लाह की किताब से खेल करते हो, अभी मैं तुममें मौजूद हूँ तो ये ह़ाल है। इसको नसाई ने निकाला इसके रावी षिक़ः हैं।

5260. हमसे सईद बिन उ़फ़ैर ने बयान किया, कहा कि मुझसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, कहा कि मुझसे अ़क़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, कहा कि मुझे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने ख़बर दी और उन्हें ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रिफ़ाआ़ क़ुर्ज़ी (रज़ि.) की बीवी रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुईं और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! रिफ़ाआ़ ने मुझे त़लाक़ दे दी थी और त़लाक़ भी बाइन, फिर मैंने उसके बाद अ़ब्दुर्रह़मान बिन ज़ुबैर क़ुर्ज़ी (रज़ि.) से निकाह़ कर लिया लेकिन उनके पास तो कपड़े के पल्लू जैसा है (या'नी वो नामर्द हैं) आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, ग़ालिबन तुम रिफ़ाआ़ के पास दोबारा जाना चाहती हो लेकिन ऐसा उस वक़्त तक नहीं हो सकता जब तक तुम अपने मौजूदा शौहर का मज़ा न चख लो और वो तुम्हारा मज़ा न चख ले।

(राजेअ़ : 2639)

٥٢٦٠- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عُفَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنِي اللَّيْثُ قَالَ حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ : أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّ عَائِشَةَ أَخْبَرَتْهُ أَنَّ امْرَأَةَ رِفَاعَةَ الْقُرَظِيِّ جَاءَتْ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنَّ رِفَاعَةَ طَلَّقَنِي فَبَتَّ طَلاَقِي، وَإِنِّي نَكَحْتُ بَعْدَهُ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ الزُّبَيْرِ الْقُرَظِيَّ، وَإِنَّ مَا مَعَهُ مِثْلُ الْهُدْبَةِ. قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لَعَلَّكِ تُرِيدِينَ أَنْ تَرْجِعِي إِلَى رِفَاعَةَ؟ لاَ، حَتَّى يَذُوقَ عُسَيْلَتَكِ وَتَذُوقِي عُسَيْلَتَهُ)).

[راجع: ٢٦٣٩]

5261. मुझसे मुह़म्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे यह़्या बिन सईद क़त़्त़ान ने बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह बिन उ़मर उ़मरी ने, कहा कि मुझसे क़ासिम बिन मुह़म्मद ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कि एक स़ाह़ब ने अपनी बीवी को तीन त़लाक़ दे दी थी। उनकी बीवी

٥٢٦١- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ عُبَيْدِ اللهِ قَالَ : حَدَّثَنِي الْقَاسِمُ بْنُ مُحَمَّدٍ عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ رَجُلاً طَلَّقَ امْرَأَتَهُ ثَلاَثًا، فَتَزَوَّجَتْ فَطَلَّقَ. فَسُئِلَ النَّبِيُّ

صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَتَحِلُّ لِلأَوَّلِ؟ قَالَ: ((لاَ، حَتَّى يَذُوقَ عُسَيْلَتَهَا كَمَا ذَاقَ الأَوَّلُ)).

[راجع: ٢٦٣٩]

ने दूसरी शादी कर ली, फिर दूसरे शौहर ने भी (हमबिस्तरी से पहले) उन्हें तलाक़ दे दी। रसूलुल्लाह (ﷺ) से सवाल किया गया कि क्या पहला शौहर अब उनके लिये हलाल है (कि उनसे दोबारा शादी कर लें) आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि नहीं, यहाँ तक कि वो या'नी शौहरे षानी उसका मज़ा चखे जैसा कि पहले ने मज़ा चखा था। (राजेअ : 2639)

मौजूदा प्रचलित हलाला की सूरत क़त्अन हराम है जिसके करने और कराने वालों पर आँहज़रत (ﷺ) ने ला'नत फ़र्माई है।

٥- باب مَنْ خَيَّرَ نِسَاءَهُ وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى :

﴿قُلْ لِأَزْوَاجِكَ إِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزِينَتَهَا فَتَعَالَيْنَ أُمَتِّعْكُنَّ وَأُسَرِّحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيلاً﴾

बाब 5 : जिसने अपनी औरतों को इख़्तियार दिया और अल्लाह तआला का

सूरह अहज़ाब में फ़र्मान कि आप अपनी बीवियों से फ़र्मा दीजिए कि अगर तुम दुनयवी ज़िन्दगी और उसका मज़ा चाहती हो तो आओ मैं तुम्हें कुछ मताअ़े (दुनयवी) दे दिलाकर अच्छी तरह से रुख़्सत कर दूँ।

٥٢٦٢- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: خَيَّرَنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ فَاخْتَرْنَا اللهَ وَرَسُولَهُ فَلَمْ يَعُدَّ ذَلِكَ عَلَيْنَا شَيْئًا.

[طرفه في : ٥٢٦٣].

5262. हमसे उमर बिन हफ़्स बिन ग़याष ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे अअ़मश ने बयान किया, कहा हमसे मुस्लिम बिन सबीह ने बयान किया, उनसे मसरूक़ ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें इख़्तियार दिया था और हमने अल्लाह और उसके रसूल को ही पसंद किया था लेकिन उसका हमारे हक़ में कोई शुमार (तलाक़) में नहीं हुआ था। (दीगर मक़ाम : 5263)

٥٢٦٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا عَامِرٌ عَنْ مَسْرُوقٍ قَالَ سَأَلْتُ عَائِشَةَ عَنِ الْخِيَرَةِ فَقَالَتْ: خَيَّرَنَا النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَفَكَانَ طَلاَقًا؟ قَالَ مَسْرُوقٌ: لاَ أُبَالِي أَخَيَّرْتُهَا وَاحِدَةً أَوْ مِائَةً بَعْدَ أَنْ تَخْتَارَنِي.

[راجع: ٥٢٦٢]

5263. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या क़त्तान ने बयान किया, उनसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने, कहा हमसे आमिर ने बयान किया, उनसे मसरूक़ ने बयान किया कि मैंने हज़रत आइशा (रज़ि.) से इख़्तियार के बारे में सवाल किया तो उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने हमें इख़्तियार दिया था तो क्या महज़ ये इख़्तियार तलाक़ बन जाता। मसरूक़ ने कहा कि इख़्तियार देने के बाद अगर तुम मुझे पसंद कर लेती हो तो उसकी कोई हैषियत नहीं, चाहे मैं एक मर्तबा इख़्तियार दूँ या सौ मर्तबा। (तलाक़ नहीं होगी) (राजेअ : 5262)

٦- باب

बाब : 6 जब किसी ने अपनी बीवी से कहा कि मैंने तुम्हें जुदा किया

إذا قَالَ فَارَقْتُكِ، أَوْ سَرَّحْتُكِ، أَوِ الْخَلِيَّةُ أَوِ الْبَرِيَّةُ، أَوْ مَا عُنِيَ بِهِ الطَّلاَقُ، فَهُوَ عَلَى نِيَّتِهِ. وَقَوْلِ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿وَسَرِّحُوهُنَّ سَرَاحًا جَمِيلاً﴾ وَقَالَ: ﴿وَأُسَرِّحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيلاً﴾ وَقَالَ تَعَالَى: ﴿فَإِمْسَاكٌ بِمَعْرُوفٍ أَوْ تَسْرِيحٌ بِإِحْسَانٍ﴾ وَقَالَ: ﴿أَوْ فَارِقُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ﴾.وقالت عائشة قد علم النبي ﷺ أن أبوي لم يكونا يأمراني بفراقه

या मैंने रुख़सत किया, या यूँ कहे कि अब तू ख़ाली है या अलग है कि आओ मैं तुमको अच्छी तरह से रुख़सत कर दूँ। इसी तरह सूरत बक़र: में फ़र्माया या इसी तरह का कोई ऐसा लफ़्ज़ इस्ते'माल किया जिससे तलाक़ भी मुराद ली जा सकती है तो उसकी निय्यत के मुताबिक़ तलाक़ हो जाएगी। अल्लाह तआला का सूरह अहज़ाब में इर्शाद है, उन्हें ख़ूबी के साथ रुख़सत कर दो और उसी आयत में फ़र्माया, उसके बाद या तो रख लेना है क़ायदा के मुताबिक़ या ख़ुश अख़लाक़ी के साथ छोड़ देना है, और आइशा (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) को ख़ूब मा'लूम था कि मेरे वालिदैन (आँहज़रत ﷺ से) फ़िराक़ का मश्वरा दे ही नहीं सकते (यहाँ फ़िराक़ से तलाक़ मुराद है)

٧- باب مَنْ قَالَ لاِمْرَأَتِهِ أَنْتِ عَلَيَّ حَرَامٌ

बाब 8 : जिसने अपनी बीवी से कहा कि तू मुझ पर हराम है

وَقَالَ الْحَسَنُ : نِيَّتُهُ. وَقَالَ أَهْلُ الْعِلْمِ : إِذَا طَلَّقَ ثَلاَثًا فَقَدْ حَرُمَتْ عَلَيْهِ، فَسَمَّوْهُ حَرَامًا بِالطَّلاَقِ وَالْفِرَاقِ. وَلَيْسَ هَذَا كَالَّذِي يُحَرِّمُ الطَّعَامَ لأَنَّهُ لاَ يُقَالُ لِطَعَامِ الْحِلِّ حَرَامٌ، وَيُقَالُ لِلْمُطَلَّقَةِ حَرَامٌ، وَقَالَ فِي الطَّلاَقِ ثَلاَثًا ﴿لاَ تَحِلُّ لَهُ مِنْ بَعْدُ حَتَّى تَنْكِحَ زَوْجًا غَيْرَهُ﴾

इमाम हसन बसरी ने कहा कि इस सूरत में फ़त्वा उसकी निय्यत पर होगा और अहले इल्म ने यूँ कहा है कि जब किसी ने अपनी बीवी को तीन तलाक़ दे दी तो वो उस पर हराम हो जाएगी। यहाँ तलाक़ और फ़िराक़ के अल्फ़ाज़ के ज़रिये हुर्मत साबित की और औरत को अपने ऊपर हराम करना खाने को हराम की तरह नहीं है उसकी वजह ये है कि हलाल खाने का हराम नहीं कह सकते और तलाक़ वाली औरत को हराम कहते हैं और अल्लाह तआला ने तीन तलाक़ वाली औरत के लिये ये फ़र्माया कि वो अगले शौहर के लिये हलाल न होगी जब तक दूसरे शौहर से निकाह न करे।

٥٢٦٤- وَقَالَ اللَّيْثُ عَنْ نَافِعٍ قَالَ: كَانَ ابْنُ عُمَرَ إِذَا سُئِلَ عَمَّنْ طَلَّقَ ثَلاَثًا قَالَ : لَوْ طَلَّقْتَ مَرَّةً أَوْ مَرَّتَيْنِ، فَإِنَّ النَّبِيَّ ﷺ أَمَرَنِي بِهَذَا فَإِنْ طَلَّقْتَهَا ثَلاَثًا حَرُمَتْ حَتَّى تَنْكِحَ زَوْجًا غَيْرَكَ.

[راجع: ٤٩٠٨]

5264. और लैष बिन सअद ने नाफ़ेअ से बयान किया कि अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से अगर ऐसे शख़्स का मसला पूछा जाता जिसने अपनी बीवी को तीन तलाक़ दी होती, तो वो कहते अगर तू एक बार या दो बार तलाक़ देता तो रुजूअ कर सकता था क्योंकि आँहज़रत (ﷺ) ने मुझको ऐसा ही हुक्म दिया था लेकिन जब तूने तीन तलाक़ दे दी तो वो औरत अब तुझ पर हराम हो गई यहाँ तक कि वो तेरे सिवा और किसी शख़्स से निकाह करे। (राजेअ : 4908)

तश्रीह : इमाम हसन बसरी (रह़.) के फ़त्वा की रिवायत को अब्दुर्रज़ाक़ ने वस्ल किया है। मतलब ये है कि ऐसा कहने वाले की निय्यत अगर तलाक़ की होगी तो तलाक़ हो जाएगी। अगर ज़िहार की निय्यत होगी तो ज़िहार हो जाएगा। हनफ़िया कहते हैं अगर एक तलाक़ या दो तलाक़ की निय्यत करे तो एक तलाक़ बाइन पड़ेगी अगर तलाक़ की

निय्यत न करे तो वो ईला होगा। इमाम अबू ष़ौर और औज़ाई ने कहा ऐसे कहने से क़सम का कफ़्फ़ारा दे। कुछ ने कहा ज़िहार का कफ़्फ़ारा दे, मालिकिया कहते हैं ऐसा कहने से तीन त़लाक़ पड़ जाएगी। कुछ कहते हैं कि ऐसा कहना लग्व है और उसमें कुछ लाज़िम न आएगा। ग़र्ज़ इस मसले में कुर्तुबी ने सलफ़ के अठारह क़ौल नक़ल किये हैं तो रुख़्सत के लफ़्ज़ से त़लाक़ मुराद नहीं रखी। मत़लब इमाम बुख़ारी (रह़.) का ये है कि स़रीह़ त़लाक़ वही है जिसमें त़लाक़ का लफ़्ज़ हो या उसका मुश्तक़ मष़लन **अन्ति मुतल्लक़तुन त़लक़्तुकि अन्ति त़ालिकुन अ़लैकित्तलाकु** बाक़ी अल्फ़ाज़ जैसे फ़िराक़ तसरीह़ ख़ुलिया बरया वग़ैरह उनसे त़लाक़ जब ही पड़ेगी कि शौहर की निय्यत त़लाक़ की हो क्योंकि इन अल्फ़ाज़ के मा'नी सिवा त़लाक़ के और भी आए हैं जैसे सूरह अह़ज़ाब की उस आयत में **या अय्युहल्लज़ीन आमनू इज़ा नकह़तुमुल्मूमिनाति षुम्म तल्लकतुमूहुन्न मिन क़ब्लि अन्तमस्सूहुन्न फमालकुम अ़लैहिन्न मिन इ़द्दतिन तअ़तद्दूनहा फमत्तिऊहुन्न व सर्रिहूहुन्न सराहन जमीला** (अल् अह़ज़ाब : 49) यहाँ तसरीह़ से रुख़्सत करना मराद है न कि त़लाक़ देना क्योंकि त़लाक़ का ज़िक्र तो पहले हो चुका है और ग़ैर मदख़ूला औ़रत एक ही त़लाक़ से बायन हो जाती है। दूसरी त़लाक़ का महल कहाँ है ख़ुलासा ये कि आयत में तस्रीह़ और फ़ारिक़ूहुन्न से त़लाक़ मुराद नहीं है क्योंकि त़लाक़ का ज़िक्र ऊपर हो चुका है। (वह़ीदी)

5265. हमसे मुह़म्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमसे अबू मुआ़विया ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन उ़र्वा ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि एक शख़्स रिफ़ाई ने अपनी बीवी (तमीमा बिन्ते वहब) को त़लाक़ दे दी, फिर एक दूसरे शख़्स से उनकी बीवी ने निकाह़ किया लेकिन उन्होंने भी उनको त़लाक़ दे दी। उन दूसरे शौहर के पास कपड़े के पल्लू की त़रह़ था। औ़रत को उससे पूरा मज़ा जैसा वो चाहती थी नहीं मिला। आख़िर अ़ब्दुर्रह़मान ने थोड़े ही दिनों रखकर उसको त़लाक़ दे दी। अब वो औ़रत आँह़ज़रत (ﷺ) के पास आई और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरे शौहर ने मुझे त़लाक़ दे दी थी, फिर मैं ने एक दूसरे मर्द से निकाह़ किया वो मेरे पास तन्हाई में आए लेकिन उनके साथ तो कपड़े के पल्लू की त़रह़ के सिवा और कुछ नहीं है। कल एक ही बार उसने मुझसे सुह़बत की वो भी बेकार (दुख़ूल ही नहीं हुआ ऊपर ही ऊपर छूकर रह गया) क्या अब मैं अपने पहले शौहर के लिये ह़लाल हो गई? आपने फ़र्माया तू अपने पहले शौहर के लिये ह़लाल नहीं हो सकती जब तक दूसरा शौहर तेरी शीरीनी न चखे। (राजेअ़ : 2639)

٥٢٦٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: طَلَّقَ رَجُلٌ امْرَأَتَهُ فَتَزَوَّجَتْ زَوْجًا غَيْرَهُ، فَطَلَّقَهَا وَكَانَتْ مَعَهُ مِثْلُ الْهُدْبَةِ فَلَمْ تَصِلْ مِنْهُ إِلَى شَيْءٍ تُرِيدُهُ، فَلَمْ يَلْبَثْ أَنْ طَلَّقَهَا فَأَتَتِ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّ زَوْجِي طَلَّقَنِي، وَإِنِّي تَزَوَّجْتُ زَوْجًا غَيْرَهُ فَدَخَلَ بِي وَلَمْ يَكُنْ مَعَهُ إِلاَّ مِثْلُ الْهُدْبَةِ فَلَمْ يَقْرَبْنِي إِلاَّ هَنَةً وَاحِدَةً لَمْ يَصِلْ مِنِّي إِلَى شَيْءٍ، أَفَأَحِلُّ لِزَوْجِي الأَوَّلِ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((لاَ تَحِلِّينَ لِزَوْجِكِ الأَوَّلِ حَتَّى يَذُوقَ الآخَرُ عُسَيْلَتَكِ وَتَذُوقِي عُسَيْلَتَهُ)).

[راجع: ٢٦٣٩]

तश्रीह़ : या'नी जब तक अच्छी त़रह़ दुख़ूल न हो। इससे ष़ाबित हुआ कि स़िर्फ़ ह़श्फ़ा का फ़ुर्ज में दाख़िल हो जाना तह़लील के लिये काफ़ी है। इमाम ह़सन बस़री ने इंज़ाल की भी शर्त़ रखी है। ये ह़दीष़ लाकर इमाम बुख़ारी (रह़.) ने ये ष़ाबित किया कि औ़रत का हुक्म खाने पीने की त़रह़ नहीं है बल्कि वो ह़क़ीक़तन ह़लाल या ह़राम होती है जैसे इस ह़दीष़ में है कि पहले शौहर के लिये ह़लाल नहीं हो सकती।

बाब : 8 अल्लाह तआ़ला का ये फ़र्माना, ऐ नबी!

٨- بَابُ لِمَ تُحَرِّمُ

जो चीज़ अल्लाह ने आपके लिये हलाल की है उसे अपने ऊपर क्यूँ हराम करते हो

مَا أَحَلَّ اللهُ لَكَ (التحريم: ١)

٥٢٦٦- حدثني الْحَسَنُ بْنُ صَبَّاحٍ سَمِعَ الرَّبِيعَ بْنَ نَافِعٍ حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ عَنْ يَعْلَى بْنِ حَكِيمٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ أَنَّهُ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ سَمِعَ ابْنَ عَبَّاسٍ يَقُولُ: إِذَا حَرَّمَ امْرَأَتَهُ لَيْسَ بِشَيْءٍ، وَقَالَ: ﴿لَكُمْ فِي رَسُولِ اللهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ﴾. [راجع: ٤٩١١]

5266. मुझसे हसन बिन सब्बाह ने बयान किया, उन्होंने रबीअ बिन नाफ़ेअ से सुना कि हमसे मुआविया बिन सलाम ने बयान किया, उनसे यह्या बिन अबी कष़ीर ने, उनसे यअला बिन हकीम ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने, उन्होंने उन्हें ख़बर दी कि उन्होंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि अगर किसी ने अपनी बीवी को अपने ऊपर हराम कहा तो ये कोई चीज़ नहीं और फ़र्माया कि तुम्हारे लिये रसूलुल्लाह (ﷺ) की पैरवी उम्दह पैरवी है। (राजेअ : 4911)

तश्रीह : कुछ अहले सियर ने आयते बाब का शाने नुज़ूल हज़रत मारिया के वाक़िया को बताया है जब आँहज़रत (ﷺ) ने उनको अपने ऊपर हराम कर लिया था।

٥٢٦٧- حدثني الْحَسَنُ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ الصَّبَّاحِ حَدَّثَنَا حَجَّاجٌ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ قَالَ زَعَمَ عَطَاءٌ أَنَّهُ سَمِعَ عُبَيْدَ بْنَ عُمَيْرٍ يَقُولُ: سَمِعْتُ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا إِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَمْكُثُ عِنْدَ زَيْنَبَ ابْنَةِ جَحْشٍ وَيَشْرَبُ عِنْدَهَا عَسَلاً، فَتَوَاصَيْتُ أَنَا وَحَفْصَةُ أَنْ أَيَّتَنَا دَخَلَ عَلَيْهَا النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلْتَقُلْ: إِنِّي أَجِدُ مِنْكَ رِيحَ مَغَافِيرَ، أَكَلْتَ مَغَافِيرَ؟ فَدَخَلَ عَلَى إِحْدَاهُمَا فَقَالَتْ لَهُ ذَلِكَ، فَقَالَ: ((لاَ، بَلْ شَرِبْتُ عَسَلاً عِنْدَ زَيْنَبَ ابْنَةِ جَحْشٍ، وَلَنْ أَعُودَ لَهُ))، فَنَزَلَتْ : ﴿يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَا أَحَلَّ اللهُ لَكَ- إِلَى - إِنْ تَتُوبَا إِلَى اللهِ﴾ لِعَائِشَةَ وَحَفْصَةَ ﴿وَإِذْ أَسَرَّ النَّبِيُّ إِلَى بَعْضِ أَزْوَاجِهِ حَدِيثًا﴾ لِقَوْلِهِ : بَلْ شَرِبْتُ عَسَلاً)).

5267. मुझसे हसन बिन मुहम्मद बिन सब्बाह ने बयान किया, कहा हमसे हज्जाज बिन मुहम्मद अअवर ने, उनसे इब्ने जुरैज ने कि अता बिन अबी रिबाह ने यक़ीन के साथ कहा कि उन्होंने उबैद बिन उमैर से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने हज़रत आइशा (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) उम्मुल मोमिनीन ज़ैनब बिन्ते जह्श (रज़ि.) के यहाँ ठहरते थे और उनके यहाँ शहद पिया करते थे। चुनाँचे मैंने और हफ़्सा (रज़ि.) ने मिलकर सलाह की कि आँहज़रत (ﷺ) हममें से जिसके यहाँ भी तशरीफ़ लाएँ तो आँहज़रत (ﷺ) से ये कहा जाए कि आपके मुँह से मग़ाफ़िर (एक ख़ास क़िस्म के बदबूदार गोंद) की बू आती है, क्या आपने मग़ाफ़िर खाया है? आँहज़रत (ﷺ) उसके बाद हममें से एक के यहाँ तशरीफ़ लाए तो उन्होंने आँहजरत (ﷺ) से यही बात कही। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि नहीं बल्कि मैंने ज़ैनब बिन्ते जह्श (रज़ि.) के यहाँ शहद पिया है, अब दोबारा नहीं पियूँगा। इस पर ये आयत नाज़िल हुई कि ऐ नबी! आप वो चीज़ क्यूँ हराम करते हैं जो अल्लाह ने आपके लिये हलाल की है, ता अन ततूबा इलल्लाह ये हज़रत आइशा (रज़ि.) और हफ़्सा (रज़ि.) की तरफ़ ख़िताब है। व इज़ा असर्रन नबिय्यु इला बअज़ि अज़्वाजिही हदीष़ा) में हदीष़ से आपका यही फ़र्माना मुराद है कि मैंने मग़ाफ़िर नहीं खाया बल्कि शहद पिया है। (राजेअ : 4912)

तशरीह : ये हदीष लाकर हज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) के क़ौल का रद्द किया है जो कहते हैं औरत के ह़राम करने में कुछ लाज़िम नहीं आता क्योंकि उन्होंने इसी आयत से दलील ली है तो ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने बयान कर दिया कि ये आयत शहद के ह़राम कर लेने में उतरी है न कि औरत के ह़राम कर लेने में।

आँह़ज़रत (ﷺ) को इससे बड़ी नफ़रत थी कि आपके बदन या कपड़े में से कोई बदबू आए। आप इंतिहाई नफ़ासत पसंद थे। हमेशा ख़ुश्बू में मुअ़त्तर रहते थे। ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) और ह़ज़रत ह़फ़्सा (रज़ि.) ने ये सलाह इसलिये की कि आप शहद पीना छोड़कर उस दिन से ज़ैनब (रज़ि.) के पास ठहरना छोड़ दें।

5268. हमसे फ़र्वा बिन अबी मग़राअ ने बयान किया, कहा हमसे अ़ली बिन मिस्हर ने, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) शहद और मीठी चीज़ें पसंद करते थे। आँह़ज़रत (ﷺ) अ़स्र की नमाज़ से फ़ारिग़ होकर जब वापस आते तो अपनी अज़्वाज के पास वापस तशरीफ़ ले जाते और कुछ से क़रीब भी होते थे। एक दिन आँह़ज़रत (ﷺ) ह़फ़्सा बिन्ते उ़मर (रज़ि.) के पास तशरीफ़ ले गये और मा'मूल से ज़्यादा देर उनके घर ठहरे। मुझे उस पर ग़ैरत आई और मैंने उसके बारे में पूछा तो मा'लूम हुआ कि ह़फ़्सा (रज़ि.) को उनकी क़ौम की किसी ख़ातून ने उन्हें शहद का एक डब्बा दिया है और उन्होंने उसी का शरबत आँह़ज़रत (ﷺ) के लिये पेश किया है। मैंने अपने जी में कहा कि अल्लाह की क़सम! मैं तो एक ह़ीला करूँगी, फिर मैंने सौदा बिन्ते ज़म्आ (रज़ि.) से कहा कि आँह़ज़रत (ﷺ) तुम्हारे पास आएँगे और जब आएँ तो कहना कि मा'लूम होता है आपने मग़ाफ़ीर खा रखा है? ज़ाहिर है कि आँह़ज़रत (ﷺ) उसके जवाब में इंकार करेंगे। उस वक़्त कहना कि फिर ये बू कैसी है जो आपके मुँह से मैं मा'लूम कर रही हूँ? इस पर आँह़ज़रत (ﷺ) कहेंगे कि ह़फ़्सा ने शहद का शरबत मुझे पिलाया है। तुम कहना कि ग़ालिबन उस शहद की मक्खी ने मग़ाफ़ीर के पेड़ का अ़र्क़ चूसा होगा। मैं भी आँह़ज़रत (ﷺ) से यही कहूँगी और स़फ़िया तुम भी यही कहना। आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि सौदा (रज़ि.) कहती थीं कि अल्लाह की क़सम आँह़ज़रत (ﷺ) ज्योंही दरवाज़े पर आकर खड़े हुए तो तुम्हारे डर से मैंने इरादा किया

٥٢٦٨- حَدَّثَنَا فَرْوَةُ بْنُ أَبِي الْمَغْرَاءِ حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُحِبُّ الْعَسَلَ وَالْحَلْوَاءَ، وَكَانَ إِذَا انْصَرَفَ مِنَ الْعَصْرِ دَخَلَ عَلَى نِسَائِهِ فَيَدْنُو مِنْ إِحْدَاهُنَّ، فَدَخَلَ عَلَى حَفْصَةَ بِنْتِ عُمَرَ فَاحْتَبَسَ أَكْثَرَ مَا كَانَ يَحْتَبِسُ، فَغِرْتُ، فَسَأَلْتُ عَنْ ذَلِكَ فَقِيلَ لِي: أَهْدَتْ لَهَا امْرَأَةٌ مِنْ قَوْمِهَا عُكَّةً مِنْ عَسَلٍ، فَسَقَتِ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْهُ شَرْبَةً. فَقُلْتُ : أَمَا وَاللهِ لَنَحْتَالَنَّ لَهُ، فَقُلْتُ لِسَوْدَةَ بِنْتِ زَمْعَةَ إِنَّهُ سَيَدْنُو مِنْكِ، فَإِذَا دَنَا مِنْكِ فَقُولِي: أَكَلْتَ مَغَافِيرَ، فَإِنَّهُ سَيَقُولُ لَكِ لاَ فَقُولِي لَهُ مَا هَذِهِ الرِّيحُ الَّتِي أَجِدُ مِنْكَ؟ فَإِنَّهُ سَيَقُولُ لَكِ سَقَتْنِي حَفْصَةُ شَرْبَةَ عَسَلٍ، فَقُولِي لَهُ: جَرَسَتْ نَحْلُهُ الْعُرْفُطَ، وَسَأَقُولُ ذَلِكَ. وَقُولِي أَنْتِ يَا صَفِيَّةُ ذَاكِ. قَالَتْ : تَقُولُ سَوْدَةُ: فَوَاللهِ مَا هُوَ إِلاَّ أَنْ قَامَ عَلَى

الْبَابِ فَأَرَدْتُ أَنْ أُبَادِئَهُ بِمَا أَمَرْتِنِي بِهِ فَرَقًا مِنْكِ. فَلَمَّا دَنَا مِنْهَا قَالَتْ لَهُ سَوْدَةُ : يَا رَسُولَ اللهِ : أَكَلْتَ مَغَافِيرَ قَالَ : ((لاَ)). قَالَتْ فَمَا هَذِهِ الرِّيحُ الَّتِي أَجِدُ مِنْكَ؟ قَالَ ((سَقَتْنِي حَفْصَةُ شَرْبَةَ عَسَلٍ)).فَقَالَتْ : جَرَسَتْ نَحْلُهُ الْعُرْفُطَ. فَلَمَّا دَارَ إِلَيَّ قُلْتُ لَهُ نَحْوَ ذَلِكَ. فَلَمَّا دَارَ إِلَى صَفِيَّةَ قَالَتْ لَهُ مِثْلَ ذَلِكَ. فَلَمَّا دَارَ إِلَى حَفْصَةَ قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، أَلاَ أَسْقِيكَ مِنْهُ؟ قَالَ : ((لاَ حَاجَةَ لِي فِيهِ)). قَالَتْ : تَقُولُ سَوْدَةُ وَاللهِ لَقَدْ حَرَمْنَاهُ قُلْتُ لَهَا : اسْكُتِي.

[راجع: ٤٩١٢]

कि आँहज़रत (ﷺ) से वो बात कहूँ जो तुमने मुझसे कही थी। चुनाँचे जब आँहज़रत (ﷺ) सौदा (रज़ि.) के क़रीब तशरीफ़ ले गये तो उन्हों ने कहा, या रसूलल्लाह! क्या आपने मग़ाफ़ीर खाया है? आपने फ़र्माया कि नहीं। उन्होंने कहा, फिर ये बू कैसी है जो आपके मुँह से मैं महसूस करती हूँ? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हफ़्सा ने मुझे शहद का शरबत पिलाया है। इस पर सौदा (रज़ि.) बोलीं उस शहद की मक्खी ने मग़ाफ़ीर के पेड़ का अर्क़ चूसा होगा। फिर जब आँहज़रत (ﷺ) मेरे यहाँ तशरीफ़ लाए तो मैंने भी यही बात कही उसके बाद जब सफ़िया (रज़ि.) के यहाँ तशरीफ़ ले गये तो उन्होंने भी उसी को दोहराया। उसके बाद जब फिर आँहुज़ूर (ﷺ) हफ़्सा के यहाँ तशरीफ़ ले गये तो उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! वो शहद फिर नोश फ़र्माएँ। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुझे उसकी ज़रूरत नहीं है। आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि इस पर सौदा बोलीं, वल्लाह! हम आँहज़रत (ﷺ) को रोकने में कामयाब हो गये, मैने उनसे कहा कि अभी चुप रहो। (राजेअ : 4912)

तशरीह : कहीं बात खुल न जाए और हफ़्सा (रज़ि.) तक पहुँच न जाए। हज़रत सौदा (रज़ि.) हालाँकि उम्र में आइशा (रज़ि.) से कहीं बड़ी थीं बल्कि बूढ़ी थीं मगर हज़रत आइशा (रज़ि.) से डरती थीं क्योंकि आँहज़रत (ﷺ) की इनायत और मुहब्बत हज़रत आइशा (रज़ि.) पर बहुत थी। हर एक बीवी हज़रत आइशा (रज़ि.) के ख़िलाफ़ करने से डरती थी कि कहीं आँहज़रत (ﷺ) को हमसे ख़फ़ा न कर दें। सौकनों में ऐसा जलापा फ़ितरी (प्राकृति क रूप से) होता है। अल्लाह पाक अज़्वाजे मुतह्हरात के ऐसे हालात को माफ़ करने वाला है। **वल्लाहु हुवल्गफ़ूरूर्रहीम.**

٩- باب لا طلاق قبل النكاح

बाब 9 : निकाह से पहले तलाक़ नहीं होती

وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ طَلَّقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَمَسُّوهُنَّ، فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُّونَهَا، فَمَتِّعُوهُنَّ وَسَرِّحُوهُنَّ سَرَاحًا جَمِيلاً﴾ وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : جَعَلَ اللهُ الطَّلاَقَ بَعْدَ النِّكَاحِ. وَيُرْوَى فِي ذَلِكَ عَنْ عَلِيٍّ وَسَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ

और अल्लाह तआला ने सूरह अहज़ाब में फ़र्माया। ऐ ईमान वालो! जब तुम मोमिन औरतों से निकाह करो फिर तुम उन्हें तलाक़ दे दो। इससे पहले कि तुमने उन्हें हाथ लगाया हो तो अब उन पर कोई इद्दत ज़रूरी नहीं है जिसे तुम शुमार करने लगो तो उनके साथ अच्छा सुलूक करके अच्छी तरह रुख़सत कर दो। और इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि अल्लाह तआला ने तलाक़ को निकाह के बाद रखा है। (इसको इमाम अहमद और बैहक़ी और इब्ने ख़ुज़ैमा ने निकाला) और इस सिलसिले में अली कर्रमल्लाह वज्हहू, सईद बिन मुसय्यिब, उर्वा बिन

وَعُرْوَةَ ابْنِ الزُّبَيْرِ وَأَبِي بَكْرِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ وَعُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ وَأَبَانَ بْنِ عُثْمَانَ وَعَلِيِّ بْنِ حُسَيْنٍ وَشُرَيْحٍ وَسَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ وَالْقَاسِمِ وَسَالِمٍ وَطَاوُسٍ وَالْحَسَنِ وَعِكْرِمَةَ وَعَطَاءٍ وَعَامِرِ بْنِ سَعْدٍ وَجَابِرِ بْنِ زَيْدٍ وَنَافِعِ بْنِ جُبَيْرٍ وَمُحَمَّدِ بْنِ كَعْبٍ وَسُلَيْمَانَ بْنِ يَسَارٍ وَمُجَاهِدٍ وَالْقَاسِمِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ وَعَمْرِو بْنِ هَرِمٍ وَالشَّعْبِيِّ أَنَّهَا لاَ تَطْلُقُ.

ज़ुबैर, अबूबक्र बिन अ़ब्दुर्रहमान, उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा, अबान बिन उ़ष्मान, अ़ली बिन हुसैन, शुरैह, सईद बिन जुबैर , क़ासिम, सालिम, ताऊस, हसन, इक्रिमा, अ़ता, आ़मिर बिन सअ़द, जाबिर बिन ज़ैद, नाफ़ेअ़ बिन जुबैर, मुहम्मद बिन कअ़ब, सुलैमान बिन कअ़ब, सुलैमान बिन यसार, मुजाहिद, क़ासिम बिन अ़ब्दुर्रहमान, अ़म्र बिन हज़म और शअ़बी (रह.) उन सब बुज़ुर्गों से ऐसी ही रिवायतें आई हैं। सबने यही कहा है कि तलाक़ नहीं पड़ेगी।

तशरीह : इस बाब के लाने से इमाम बुख़ारी (रह.) की ग़र्ज़ मालिकिया और हनफ़िया के मज़हब का रद्द करना है। मालिकिया कहते हैं अगर कोई किसी मुअ़य्यन औ़रत की निस्बत कहे मैं उससे निकाह करूँ तो उसको तलाक़ है। फिर उसी से निकाह करे तो तलाक़ पड़ जाएगी। अहले हदीष़ और इमाम बुख़ारी (रह.) और इमाम शाफ़िई और इमाम अहमद बिन हंबल का ये मज़हब है कि तलाक़ नहीं पड़ेगी। ख़्वाह मुअ़य्यन औ़रत की निस्बत कहे या मुत्लक़ यूँ कहे अगर मैं किसी औ़रत से निकाह करूँ तो उसको तलाक़ है। हनफ़िया कहते हैं दोनों सूरतों में निकाह करते ही तलाक़ पड़ जाएगी और इस बाब में मर्फ़ूअ़न अहादीष़ भी वारिद हैं जिनसे अहले हदीष़ के मज़हब की ताईद होती है चुनाँचे बाब का तर्जुमा ख़ुद एक हदीष़ है जिसको तबरानी और सईद बिन मंसूर ने मर्फ़ूअ़न निकाला मगर इमाम बुख़ारी (रह.) उनको अपनी शर्त पर न होने से न ला सके और बहुत से फ़ुक़हा-ए-ताबेईन और सहाबा के अक़्वाल नक़ल किये जिनसे ये निकलता है कि तलाक़ न पड़ने पर गोया इज्माअ़ के क़रीब हो गया है। आयते शरीफ़ा **व सर्रिहूहुन्न सराहन जमीला** (अल् अह्ज़ाब : 46) में मज़्कूर है कि तुम उनसे निकाह करो फिर तलाक़ दो तो मा'लूम हुआ कि तलाक़ वही सहीह है जो निकाह के बाद वाक़ेअ़ हो और जिन लोगों ने हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) पर ये ए'तिराज़ किया है कि इस आयत से इस्तिदलाल सहीह नहीं होता उनको ये ख़बर नहीं कि ख़ुद हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने जो इस उम्मत के बड़े आ़लिम थे इस मतलब पर इसी आयत से इस्तिदलाल किया है। हाकिम ने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से रिवायत किया, उन्होंने कहा इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) ने ऐसा नहीं कहा और अगर कहा तो उनसे लग़्ज़िश हुई। अल्लाह तआ़ला ने यूँ फ़र्माया मुसलमानो! जब तुम मुसलमान औ़रतों से निकाह करो फिर उनको तलाक़ दो और यूँ नहीं फ़र्माया जब तुम उनको तलाक़ दो फिर उनसे निकाह करो। हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने इस मक़ाम पर दो सहाबियों और 23 ताबेईन के अक़्वाल बयान किये जो इस उम्मत के बड़े फ़क़ीह और आ़लिम गुज़रे हैं। यहाँ से हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) की वुस्अ़ते इल्मी मा'लूम होती है कि क़त्अ़े नज़र मर्फ़ूअ़ अहादीष़ के हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) को सहाबा और ताबेईन और फ़ुक़हा के अक़्वाल भी बेहद याद थे। इतने हाफ़िज़े का तो कोई शख़्स इस उम्मते इस्लामिया में नज़र नहीं आता गोया मुअ़जिज़ा थे, जनाबे रिसालते मआब (ﷺ) के। इमाम बुख़ारी (रह.) के बहुत ज़माना बाद हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह.) पैदा हुए ये भी आँहज़रत (ﷺ) का एक मुअ़जिज़ा थे इनके वुस्अ़ते इल्म की भी कोई इंतिहा नहीं है। हदीष़ की मअ़रिफ़त में दरियाए बे पायाँ थे। देखिए उनके अक़्वाल की तख़रीज कहाँ कहाँ से ढूँढ़कर हाफ़िज़ साहब ही ने बयान की है और सियूती भी हाफ़िज़े हदीष़ थे मगर उनमें हदीष़ की ऐसी परख नहीं है जैसी हाफ़िज़ साहब में थी। हाफ़िज़ साहब तन्क़ीदे हदीष़ और मअ़रिफ़ते रिजाल में भी अपना नज़ीर नहीं रखते थे जैसे इहात-ए-हदीष़ में और क़स्तलानी और ऐ़नी वग़ैरह तो महज़ ख़ौशा चीन हैं, दूसरों की पकी पकाई हाँडी खाने वाले। अल्लाह तआ़ला आ़लमे बरज़ख़ और हश्र में हमको उन सब बुज़ुर्गों की मअ़य्यत नसीब करे आमीन या रब्बल आ़लमीन। (वहीदी)

बाब 10 : अगर कोई (किसी ज़ालिम के डर से) जबरन बीवी को अपनी बहन कह दे

तो कुछ नुक़्सान न होगा न उस औरत पर त़लाक़ पड़ेगी न ज़िहार का कफ़्फ़ारा लाज़िम होगा। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) ने अपनी बीवी सारा को कहा कि ये मेरी बहन है (या'नी अल्लाह की राह में दीनी बहन)

बाब 11 : ज़बरदस्ती और जबरन त़लाक़ देने का हुक्म

इसी त़रह़ नशा या जुनून में दोनों का हुक्म एक होना, इसी त़रह़ भूल या चूक से त़लाक़ देना या भूल चूक से कोई शिर्क (कुछ ने यहाँ लफ़्ज़ वशशक नक़ल किया है जो ज़्यादा क़रीने क़यास है) का हुक्म निकाल बैठना या शिर्क का कोई काम करना क्योंकि आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया तमाम काम निय्यत से स़ह़ीह़ होते हैं और हर एक आदमी को वही मिलेगा जो निय्यत करे और आ़मिर शअ़बी ने ये आयत पढ़ी रब्बना ला तुआख़िज़्ना इन्नसीना औ अख़तअना और इस बाब मे ये भी बयान है कि वसवासी और मज्नून आदमी का इक़रार स़ह़ीह़ नहीं है क्योंकि आँह़ज़रत (ﷺ) ने उस शख़्स़ से फ़र्माया जो ज़िना का इक़रार कर रहा था, कहीं तुझको जुनून तो नहीं है और ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने कहा जनाब अमीर ह़म्ज़ा ने मेरी ऊँटनियों के पेट फाड़ डाले (उनके गोश्त के कबाब बनाए) आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनको मलामत करनी शुरू की फिर आपने देखा कि वो नशे मे चूर हैं, उनकी आँखें सुर्ख़ हैं। उन्होंने (नशे की ह़ालत में) ये जवाब दिया तुम सब क्या मेरे बाप के ग़ुलाम नहीं हो? आँह़ज़रत (ﷺ) ने पहचान लिया कि वो बिल्कुल नशे में चूर हैं, आप निकलकर चले आए, हम भी आपके साथ निकल खड़े हुए। और उ़ष्मान (रज़ि.) ने कहा मज्नून और नशे वाले की त़लाक़ नहीं पड़ेगी (उसे इब्ने अबी शैबा ने वस्ल किया) और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा नशे और ज़बरदस्ती की त़लाक़ नहीं पड़ेगी (इसको सईद बिन मंस़ूर और इब्ने अबी शैबा ने वस्ल किया) और उ़क़्बा बिन आ़मिर जहनी स़ह़ाबी (रज़ि.) ने कहा अगर त़लाक़ का वस्वसा दिल में आए तो जब तक ज़ुबान से न निकाले त़लाक़ नहीं पड़ेगी और अ़ता बिन

١٠ - باب إِذَا قَالَ لِامْرَأَتِهِ وَهُوَ مُكْرَهٌ : هَذِهِ أُخْتِي، فَلاَ شَيْءَ عَلَيْهِ

قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِسَارَةَ هَذِهِ أُخْتِي، وَذَلِكَ فِي ذَاتِ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ)).

١١ - باب الطَّلاَقِ فِي الإِغْلاَقِ وَالْمُكْرَهِ وَالسَّكْرَانِ وَالْمَجْنُونِ وَأَمْرِهِمَا وَالْغَلَطِ وَالنِّسْيَانِ فِي الطَّلاَقِ

وَالشِّرْكِ وَغَيْرِهِ، لِقَوْلِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((الأَعْمَالُ بِالنِّيَّةِ، وَلِكُلِّ امْرِىءٍ مَا نَوَى)). وَتَلاَ الشَّعْبِيُّ ﴿لاَ تُؤَاخِذْنَا إِنْ نَسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا﴾ وَمَا لاَ يَجُوزُ مِنْ إِقْرَارِ الْمُوَسْوِسِ. وَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((لِلَّذِي أَقَرَّ عَلَى نَفْسِهِ أَبِكَ جُنُونٌ؟)) وَقَالَ عَلِيٌّ بَقَرَ حَمْزَةُ خَوَاصِرَ شَارِفَيَّ فَطَفِقَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَلُومُ حَمْزَةَ، فَإِذَا حَمْزَةُ قَدْ ثَمِلَ مُحْمَرَّةٌ عَيْنَاهُ. ثُمَّ قَالَ حَمْزَةُ : هَلْ أَنْتُمْ إِلاَّ عَبِيدٌ لأَبِي؟ فَعَرَفَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ قَدْ ثَمِلَ، فَخَرَجَ وَخَرَجْنَا مَعَهُ. وَقَالَ عُثْمَانُ لَيْسَ لِمَجْنُونٍ وَلاَ لِسَكْرَانَ طَلاَقٌ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: طَلاَقُ السَّكْرَانِ وَالْمُسْتَكْرَهِ لَيْسَ بِجَائِزٍ. وَقَالَ عُقْبَةُ بْنُ عَامِرٍ. لاَ يَجُوزُ

طَلَاقُ الْمُوَسْوِسِ. قَالَ عَطَاءٌ : إِذَا بَدَأَ بِالطَّلَاقِ فَلَهُ شَرْطُهُ. وَقَالَ نَافِعٌ : طَلَّقَ رَجُلٌ امْرَأَتَهُ الْبَتَّةَ إِنْ خَرَجَتْ، فَقَالَ ابْنُ عُمَرَ : إِنْ خَرَجَتْ فَقَدْ بُتَّتْ مِنْهُ، وَإِنْ لَمْ تَخْرُجْ فَلَيْسَ بِشَيْءٍ. وَقَالَ الزُّهْرِيُّ فِيمَنْ قَالَ : إِنْ لَمْ أَفْعَلْ كَذَا وَكَذَا فَامْرَأَتِي طَالِقٌ ثَلَاثًا يُسْأَلُ عَمَّا قَالَ وَعَقَدَ عَلَيْهِ قَلْبُهُ حِينَ حَلَفَ بِتِلْكَ الْيَمِينِ، فَإِنْ سَمَّى أَجَلًا أَرَادَهُ وَعَقَدَ عَلَيْهِ قَلْبُهُ حِينَ حَلَفَ جُعِلَ ذَلِكَ فِي دِينِهِ وَأَمَانَتِهِ. وَقَالَ إِبْرَاهِيمُ : إِنْ قَالَ لَا حَاجَةَ لِي فِيكِ نِيَّتُهُ. وَطَلَاقُ كُلِّ قَوْمٍ بِلِسَانِهِمْ وَقَالَ قَتَادَةُ : إِذَا قَالَ إِذَا حَمَلْتِ فَأَنْتِ طَالِقٌ ثَلَاثًا يَغْشَاهَا عِنْدَ كُلِّ طُهْرٍ مَرَّةً، فَإِنِ اسْتَبَانَ حَمْلُهَا فَقَدْ بَانَتْ وَقَالَ الْحَسَنُ : إِذَا قَالَ الْحَقِي بِأَهْلِكِ نِيَّتُهُ: وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ الطَّلَاقُ عَنْ وَطَرٍ، وَالْعِتَاقُ مَا أُرِيدَ بِهِ وَجْهُ اللهِ وَقَالَ الزُّهْرِيُّ : إِنْ قَالَ مَا أَنْتِ بِامْرَأَتِي نِيَّتُهُ، وَإِنْ نَوَى طَلَاقًا فَهُوَ مَا نَوَى وَقَالَ عَلِيٌّ : أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ الْقَلَمَ رُفِعَ عَنْ ثَلَاثَةٍ : عَنِ الْمَجْنُونِ حَتَّى يُفِيقَ وَعَنِ الصَّبِيِّ حَتَّى يُدْرِكَ، وَعَنِ النَّائِمِ حَتَّى يَسْتَيْقِظَ. وَقَالَ عَلِيٌّ : وَكُلُّ الطَّلَاقِ جَائِزٌ إِلَّا طَلَاقَ الْمَعْتُوهِ.

अबी रिबाह़ ने कहा अगर किसी ने पहले (अन्ता ताालिक़) कहा उसके बाद शर्त लगाई कि अगर तू घर में गई तो शर्त के मुताबिक़ तलाक़ पड़ जाएगी। और नाफ़ेअ़ ने इब्ने उ़मर (रज़ि.) से पूछा अगर किसी ने अपनी औ़रत से यूँ कहा तुझको तलाक़े बाइन है अगर तू घर से निकली फिर वो निकल खड़ी हुई तो क्या हुक्म है। उन्होंने कहा औ़रत पर तलाक़े बाइन पड़ जाएगी। अगर न निकले तो तलाक़ नहीं पड़ेगी और इब्ने शिहाब ज़ुह्री ने कहा (उसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने निकाला) अगर कोई मर्द यूँ कहे मैं ऐसा ऐसा न करूँ तो मेरी औ़रत पर तीन तलाक़ हैं। उसके बाद यूँ कहे जब मैंने कहा था तो एक मुद्दत मुअ़य्यन की निय्यत की थी (या'नी एक साल या दो साल में या एक दिन या दो दिन में) अब अगर उसने ऐसी ही निय्यत की थी तो मामला उसके और अल्लाह के बीच रहेगा (वो जाने उसका काम जाने) और इब्राहीम नख़ई ने कहा (उसे इब्ने अबी शैबा ने निकाला) अगर कोई अपनी बीवी से यूँ कहे अब मुझको तेरी ज़रूरत नहीं है तो उसकी निय्यत पर मदार रहेगा और इब्राहीम नख़ई ने ये भी कहा कि दूसरी ज़बान वालों की तलाक़ अपनी अपनी ज़ुबान में होगी और क़तादा ने कहा अगर कोई अपनी औ़रत से यूँ कहे जब तुझको पेट रह जाए तो तुझ पर तीन तलाक़ हैं। उसको लाज़िम है कि हर तुहर पर औ़रत से एक बार सुहबत करे और जब मा'लूम हो जाए कि उसको पेट रह गया, उसी वक़्त वो मर्द से जुदा हो जाएगी और इमाम हसन बसरी (रह.) ने कहा अगर कोई अपनी औ़रत से कहा जा अपने मायके चली जा और तलाक़ की निय्यत करे तो तलाक़ पड़ जाएगी और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा तलाक़ तो (मजबूरी से) दी जाती है ज़रूरत के वक़्त और गुलाम को आज़ाद करना अल्लाह की रज़ामन्दी के लिये होता है और इब्ने शिहाब ज़ुह्री ने कहा अगर किसी ने अपनी औ़रत से कहा तू मेरी बीवी नहीं है और उसकी निय्यत तलाक़ की थी तो तलाक़ पड़ जाएगी और अ़ली (रज़ि.) ने फ़र्माया (जिसे बग़वी ने जअ़दियात में वस्ल किया) उ़मर क्या तुमको ये मा'लूम नहीं है कि तीन आदमी मरफ़ूउ़ल क़लम हैं (या'नी उनके आ़माल नहीं लिखे जाते) एक तो पागल जब तक वो तंदुरुस्त न हो, दूसरे बच्चा जब तक वो जवान न हो, तीसरे सोने वाला जब तक वो बेदार न हो और

अली (रज़ि.) ने ये भी फ़र्माया कि हर एक तलाक़ पड़ जाएगी मगर नादान, बेवक़ूफ़ (जैसे दीवाना, नाबालिग़, नशा में मस्त वग़ैरह) की तलाक़ नहीं पड़ेगी।

तश्रीह : लफ़्ज़ इग़्लाक़ के मा'नी ज़बरदस्त के हैं या'नी कोई मर्द पर जबर करे तलाक़ देने पर और वो दे दे तो तलाक़ वाक़ेअ न होगी। कुछ ने कहा इग़्लाक़ से ग़ुस्सा मुराद है या'नी अगर ग़ुस्से और तैश की हालत में तलाक़ दे तो तलाक़ न पड़ेगी। मुताख़िरीने हनाबिला का यही क़ौल है लेकिन अकष़र उलमा और अइम्मा उसके ख़िलाफ़ हैं वो कहते हैं तलाक़ तो अकष़र ग़ुस्से ही के वक़्त दी जाती है पस अगर ग़ुस्से में तलाक़ न पड़े तो हर तलाक़ देने वाला यही कहेगा कि मैं उस वक़्त ग़ुस्से में था। कुछ ने **अश्शिर्क** की जगह लफ़्ज़ **अश्शक** पढ़ा है या'नी अगर शक हो गया कि तलाक़ का लफ़्ज़ ज़ुबान से निकाला था या नहीं तो तलाक़ वाक़ेअ न होगी। ये बाब लाकर हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने हनफ़िया का रद्द किया है। वो कहते हैं नशे में या ज़बरदस्ती से कोई तलाक़ दे तो तलाक़ पड़ जाएगी। इसी तरह अगर और कोई कलिमा कहना चाहता था लेकिन ज़ुबान से ये निकल गया अन्ति तालिक़ तब भी तलाक़ हो जाएगी, इसी तरह अगर भूले से अन्ति तालिक़ कह दिया। लेकिन अहले हदीष़ के नज़दीक उनमें से किसी सूरत में तलाक़ नहीं पड़ेगी जब तक तलाक़ सुन्नत के मुवाफ़िक़ निय्यत करके ऐसे तुहर में न दे जिसमें जिमाअ न किया हो और अगर ऐसे तुहर में भी निय्यत करके किसी ने तीन तलाक़ दे दी तो एक ही तलाक़ पड़ेगी। इसी तरह अहले हदीष़ के नज़दीक तलाक़ मुअल्लक़ बिश्शर्त मष़लन कोई अपनी बीवी से यूँ कहे अगर तू घर से बाहर निकलेगी तो तुझ पर तलाक़ है फिर वो घर से निकली तो तलाक़ नहीं पड़ेगी क्योंकि उनके नज़दीक ये तलाक़ ख़िलाफ़े सुन्नत है और ख़िलाफ़े सुन्नत तलाक़ वाक़ेअ नहीं होती मगर एक ही सूरत में या'नी जब तुहर में तीन तलाक़ एक बारगी दे दी तो गोया ये काम ख़िलाफ़े सुन्नत है मगर एक तलाक़ पड़ जाएगी मैं (मौलाना वहीदुज़्ज़माँ मरहूम) कहता हूँ हमारे पेशवा मुताख़िरीन हनाबिला जो ग़ैज़ व ग़ज़ब में तलाक़ न पड़ने के क़ाइल हुए हैं वही मज़हब सहीह उम्दा मा'लूम होता है बरख़िलाफ़ उन उलमा के जो उसके ख़िलाफ़ में हैं क्योंकि ग़ैज़ व ग़ज़ब में भी इंसान बेइख़्तियार हो जाता है पस जब तक तलाक़ की निय्यत करके तलाक़ न दे, उस वक़्त तक तलाक़ नहीं पड़ेगी। इसी तरह तलाक़े मुअल्लक़ में भी जुम्हूर उलमा मुख़ालिफ़ हैं। वो कहते हैं जब शर्त पूरी हो तो तलाक़ पड़ जाएगी। बड़ी आसानी अहले हदीष़ के मज़हब में है और हमारे ज़माने के मुनासिब हाल भी उन ही का मज़हब है तलाक़ जहाँ तक वाक़ेअ न हो वहीं तक बेहतर है क्योंकि वो अब्ग़ज़े मुबाहात में से है और तअज्जुब है उन लोगों से जिन्होंने हमारे इमामे हुम्माम शैख़ुल इस्लाम इब्ने तैमिया (रह.) पर तीन तलाक़ों के मसले में बलवा किया, उनको सताया। अरे बेवक़ूफ़ों! शैख़ुल इस्लाम ने तो वो क़ौल इख़्तियार किया जो हदीष़ और इज्माए सहाबा के मुवाफ़िक़ था और उसमें इस उम्मत के लिये आसानी थी। उनके एहसान का तो शुक्रिया अदा करना था न कि उन पर बलवा करना, उनको सताना, अल्लाह उनसे राज़ी हो और उनको जज़ाए ख़ैर दे जिस मुश्किल में हम हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) या हज़रत इमाम शाफ़िई (रह.) की बेजा तक़्लीद की वजह से पड़ गये थे उससे उन्होंने मुख़्लिसी दिलवाई। (वहीदी अज़ मौलाना वहीदुज़्ज़माँ मरहूम)

5269. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन उर्वा ने बयान किया, कहा हमसे क़तादा ने बयान किया, उनसे ज़ुरारह बिन औफ़ा ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह तआला ने मेरी उम्मत को ख़यालाते फ़ासिदा की हद तक मुआफ़ किया है, जब तक कि उस पर अमल न करे या उसे

٥٢٦٩- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ حَدَّثَنَا قَتَادَةُ عَنْ زُرَارَةَ بْنِ أَوْفَى عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ اللهَ تَجَاوَزَ عَنْ أُمَّتِي مَا

ज़ुबान से अदा न करे। क़तादा (रह.) ने कहा कि अगर किसी ने अपने दिल में तलाक़ दे दी तो उसका ए'तिबार नहीं होगा जब तक ज़ुबान से न कहे। (राजेअ : 2528)

حَدَّثَتْ بِهِ أَنْفُسُهَا. مَا لَمْ تَعْمَلْ أَوْ تَتَكَلَّمْ)). قَالَ قَتَادَةُ : إِذَا طَلَّقَ فِي نَفْسِهِ فَلَيْسَ بِشَيْءٍ. [راجع: ٢٥٢٨]

तश्रीह : हुआ ये कि एक दीवानी औरत को हज़रत उमर (रज़ि.) के पास लेकर आए, उसको ज़िना से हमल रह गया था, हज़रत उमर (रज़ि.) ने उसको संगसार करना चाहा। उस वक़्त हज़रत अली (रज़ि.) ने ये फ़र्माया **अलम तअलम अन्नल्क़लम रूफ़िअ अन षलाषतिन** अल्अख़, जिस पर एक रिवायत के मुताबिक़ हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि **लौ ला अलिय्युन लहलक उमरू** अल्लाह अल्लाह हज़रत उमर (रज़ि.) की बेनफ़्सी व हक़ परस्ती। एक बार हज़रत उमर (रज़ि.) मिम्बर पर ख़ुत्बा दे रहे थे और गिराँ महर बाँधने से मना कर रहे थे, एक औरत ने क़ुर्आन मजीद की ये आयत पढ़ी, **व आतैतुम इहदाहुन्न किन्तारन फला ताखुज़ू मिन्हु शैआ** (अन् निसा : 20) हज़रत उमर (रज़ि.) ने बरसरे मिम्बर फ़र्माया कि उमर से बढ़कर सब लोग समझदार हैं, यहाँ तक कि औरतें बच्चे भी उमर से ज़्यादा इल्म रखते हैं। कोई हक़ शनासी और इंसाफ़ परवरी हज़रत उमर (रज़ि.) से सीखे जहाँ किसी ने कोई मा'कूल बात कही, या क़ुर्आन या हदीष़ से कोई मा'कूल बात कही क़ुर्आन या हदीष़ से सनद पेश की और उन्होंने फ़ौरन मान ली, सरे तस्लीम ख़म कर दिया, कभी अपनी बात की पूछ न की न अपने इल्म व फ़ज़्ल पर ग़ुर्रा किया और हमारे ज़माने में तो मुक़ल्लिदीने बेइंसाफ़ का ये हाल है कि इनको सैंकड़ों अहादीष़ और आयतें सुनाओ जब भी नहीं मानते, अपने इमाम की पैरवी किये जाते हैं और क़ुर्आन व हदीष़ की तावील करते हैं। कहो इसकी ज़रूरत ही क्या आन पड़ी है, क्या ये अइम्मा किराम पैग़म्बरों की तरह मा'सूम थे कि उनका हर क़ौल वाजिबुत्तस्लीम हो। फिर हम इमाम ही के क़ौल की तावील क्यूँ न करें कि शायद उनका मतलब दूसरा होगा या उनको ये हदीष़ न पहुँची होगी (वहीदी) इमामों से ग़लती मुम्किन है अल्लाह उनकी लग़्ज़िशों को माफ़ करे वो मा'सूम अनिल ख़ता नहीं थे, उनका एहतिराम अपनी जगह पर है।

5270. हमसे अस्बग़ बिन फ़ुर्ज ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह बिन वहब ने ख़बर दी, उन्हें यूनुस ने, उन्हें इब्ने शिहाब ने, कहा कि मुझे अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने ख़बर दी और उन्हें जाबिर (रज़ि.) ने कि क़बीला असलम के एक साहब माइज़ नामी मस्जिद में नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि उन्होंने ज़िना किया है। आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे मुँह मोड़ लिया लेकिन फिर वो आँहज़रत (ﷺ) के सामने आ गये (और ज़िना का इक़रार किया) फिर उन्होंने अपने ऊपर चार मर्तबा शहादत दी तो आँहज़रत (ﷺ) ने उन्हें मुख़ातिब करते हुए फ़र्माया, तुम पागल तो नहीं हो, क्या वाक़ई तुमने ज़िना किया है? उन्होंने अर्ज़ किया कि जी हाँ, फिर आपने पूछा क्या तू शादीशुदा है? उसने कहा कि जी हाँ हो चुकी है। फिर आँहज़रत (ﷺ) ने उन्हें ईदगाह पर रजम करने का हुक्म दिया। जब उन्हें पत्थर लगा तो वो भागने लगे लेकिन उन्हें हर्रा के पास पकड़ा गया और जान से मार दिया गया। (दीगर मुक़ाम : 5272, 6814, 6816, 6820, 6826, 7168)

٥٢٧٠- حَدَّثَنَا أَصْبَغُ أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ عَنْ يُونُسَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ جَابِرٍ أَنَّ رَجُلاً مِنْ أَسْلَمَ أَتَى النَّبِيَّ ﷺ وَهُوَ فِي الْمَسْجِدِ فَقَالَ إِنَّهُ قَدْ زَنَى فَأَعْرَضَ عَنْهُ فَتَنَحَّى لِشِقِّهِ الَّذِي أَعْرَضَ فَشَهِدَ عَلَى نَفْسِهِ أَرْبَعَ شَهَادَاتٍ فَدَعَاهُ فَقَالَ: ((هَلْ بِكَ جُنُونٌ؟ هَلْ أَحْصَنْتَ؟)) قَالَ: نَعَمْ فَأَمَرَ بِهِ أَنْ يُرْجَمَ بِالْمُصَلَّى فَلَمَّا أَذْلَقَتْهُ الْحِجَارَةُ جَمَزَ حَتَّى أُدْرِكَ بِالْحَرَّةِ فَقُتِلَ.
[أطرافه في : ٥٢٧٢، ٦٨١٤، ٦٨١٦، ٦٨٢٠، ٦٨٢٦، ٧١٦٨].

तशरीह : हज़रत माइज़ असलमी सहाबी मर्तबा में औलिया अल्लाह से भी बढ़कर थे। उनका सब्र व इस्तिक़लाल क़ाबिले सद ता'रीफ़ है कि अपनी ख़ुशी से ज़िना की सज़ा कुबूल की और जान देनी गवारा की मगर आख़िरत का अज़ाब पसंद न किया। दूसरी रिवायत में है कि जब आँहज़रत (ﷺ) ने उसके भागने का हाल सुना तो फ़र्माया तुमने उसे छोड़ क्यूँ नहीं दिया शायद वो तौबा करता और अल्लाह उसका गुनाह मुआफ़ कर देता। इमाम शाफ़िई और अहले हदीष़ का यही क़ौल है कि जब ज़िना इक़रार से ष़ाबित हुआ हो और रजम करते वक़्त वो भागे तो फ़ौरन उसे छोड़ देना चाहिये। अब अगर इक़रार से रुजूअ करे तो हद साक़ित हो जाएगी वरना फिर हद लगाई जाएगी। सुब्हानल्लाह सहाबा (रज़ि.) का क्या कहना उनमें हज़ारों शख़्स ऐसे मौजूद थे जिन्होंने उम्रभर कभी ज़िना नहीं किया था और एक हमारा ज़माना है कि हज़ारों में कोई एक आध शख़्स ऐसा निकलेगा जिसने कभी ज़िना न किया हो। इंजील मुक़द्दस में है कि हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) के सामने एक औरत को लाए जिसने ज़िना कराया था और आपसे मसला पूछा। आपने फ़र्माया तुममें वो इसको संगसार करे जिसने ख़ुद ज़िना न किया हो। ये सुनते ही सब आदमी जो उसको लाए थे शर्मिन्दा होकर चल दिये, वो औरत मिस्कीन बैठी रही। आख़िर उसने हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) से पूछा अब मेरे बाब में क्या हुक्म होता है? आपने फ़र्माया नेकबख़्त तू भी जा तौबा कर अब ऐसा न कीजियो। अल्लाह तआला ने तेरा क़सूर माफ़ कर दिया। (वहीदी)

٥٢٧١- حدَّثنا أبو اليَمانِ أخبَرَنَا شُعَيبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : أخبَرَنِي أبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ وَسَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ أتَى رَجُلٌ مِنْ أَسْلَمَ رَسُولَ اللهِ ﷺ وَهُوَ فِي الْمَسْجِدِ فَنَادَاهُ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنَّ الآخِرَ قَدْ زَنَى، يَعْنِي نَفْسَهُ فَأَعْرَضَ عَنْهُ فَتَنَحَّى لِشِقِّ وَجْهِهِ الَّذِي أَعْرَضَ قِبَلَهُ. فَقَالَ يَا رَسُولَ اللهِ ﷺ إِنَّ الآخِرَ قَدْ زَنَى فَأَعْرَضَ عَنْهُ فَتَنَحَّى لِشِقِّ وَجْهِهِ الَّذِي أَعْرَضَ قِبَلَهُ فَقَالَ ذَلِكَ: فَأَعْرَضَ عَنْهُ فَتَنَحَّى لَهُ الرَّابِعَةَ فَلَمَّا شَهِدَ عَلَى نَفْسِهِ أَرْبَعَ شَهَادَاتٍ دَعَاهُ فَقَالَ: ((هَلْ بِكَ جُنُونٌ؟)) قَالَ: لاَ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((اذْهَبُوا بِهِ فَارْجُمُوهُ)) وَكَانَ قَدْ أُحْصِنَ.

[أطرافه في : ٦٨١٥، ٦٨٢٥، ٧١٦٧].

5271. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, कहा कि मुझे अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान और सईद बिन मुसय्यिब ने ख़बर दी कि अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि क़बीला असलम का एक शख़्स रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, आँहज़रत (ﷺ) मस्जिद में तशरीफ़ रखते थे। उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) को मुख़ातब किया और अर्ज़ किया कि उन्होंने ज़िना कर लिया है। आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे चेहरा फेर लिया लेकिन वो आदमी आँहज़रत (ﷺ) के सामने उस रुख़ की तरफ़ मुड़ गया, जिधर आप (ﷺ) ने चेहरा मुबारक फेर लिया था और अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! दूसरे (या'नी ख़ुद) ने ज़िना किया है। आँहज़रत (ﷺ) ने इस बार भी चेहरा मोड़ लिया लेकिन वो फिर आँहज़रत (ﷺ) के सामने उस रुख़ की तरफ़ आ गया जिधर आँहज़रत (ﷺ) ने चेहरा मोड़ लिया था और यही अर्ज़ किया। आँहज़रत (ﷺ) ने फिर उनसे चेहरा मोड़ लिया, फिर जब चौथी बार वो इसी तरह आँहज़रत (ﷺ) के सामने आ गया और अपने ऊपर उन्होंने चार बार (ज़िना की) शहादत दी तो आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे पूछा तुम पागल तो नहीं हो? उन्होंने अर्ज़ किया कि नहीं। फिर आँहज़रत (ﷺ) ने सहाबा से फ़र्माया कि इन्हें ले जाओ और संगसार करो क्योंकि वो शादी शुदा थे। (दीगर मक़ामात : 6815, 6825, 7167)

٥٢٧٢- وَعَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : أَخْبَرَنِي مَنْ سَمِعَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ الأَنْصَارِيَّ

5272. और ज़ुह्री से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मुझे एक ऐसे शख़्स ने ख़बर दी जिन्होंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह

قَالَ: كُنْتُ فِيمَنْ رَجَمَهُ فَرَجَمْنَاهُ بِالْمُصَلَّى بِالْمَدِينَةِ فَلَمَّا أَذْلَقَتْهُ الْحِجَارَةُ، جَمَزَ حَتَّى أَدْرَكْنَاهُ بِالْحَرَّةِ فَرَجَمْنَاهُ حَتَّى مَاتَ. [راجع: ٥٢٧٠]

अंसारी (रज़ि.) से सुना था कि उन्होंने बयान किया कि मैं भी उन लोगों में था जिन्होंने उन स़हाबी को संगसार किया था। हमने उन्हें मदीना मुनव्वरह की ईदगाह पर संगसार किया था। जब उन पर पत्थर पड़ा तो वो भागने लगे लेकिन हमने उन्हें ह़र्रा में फिर पकड़ लिया और उन्हें संगसार किया यहाँ तक कि वो मर गये। (राजेअ : 5270)

ये ह़ज़रत माइज़ असलमी (रज़ि.) थे। अल्लाह उनसे राज़ी हुआ, वो अल्लाह से राज़ी हुए।

١٢- باب الْخُلْعِ، وَكَيْفَ الطَّلاَقُ فِيهِ؟

وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَلاَ يَحِلُّ لَكُمْ أَنْ تَأْخُذُوا مِمَّا آتَيْتُمُوهُنَّ شَيْئاً﴾ إِلاَّ أَنْ يَخَافَا أَنْ لاَ يُقِيمَا حُدُودَ اللهِ. وَأَجَازَ عُمَرُ الْخُلْعَ دُونَ السُّلْطَانِ. وَأَجَازَ عُثْمَانُ الْخُلْعَ دُونَ عِقَاصِ رَأْسِهَا. وَقَالَ طَاوُسٌ إِلاَّ أَنْ يَخَافَا أَنْ لاَ يُقِيمَا حُدُودَ اللهِ فِيمَا افْتَرَضَ لِكُلٍّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا عَلَى صَاحِبِهِ فِي الْعِشْرَةِ وَالصُّحْبَةِ، وَلَمْ يَقُلْ قَوْلَ السُّفَهَاءِ لاَ يَحِلُّ حَتَّى تَقُولَ: لاَ أَغْتَسِلُ لَكَ مِنْ جَنَابَةٍ.

बाब 12 : ख़ुला के बयान में

और ख़ुला में त़लाक़ क्यूँकर पड़ेगी? और अल्लाह तआला ने सूरह बक़रः में फ़र्माया कि, और तुम्हारे लिये (शौहरों के लिये) जाइज़ नहीं कि जो (महर) तुम उन्हें (अपनी बीवियों को) दे चुके हो, उसमें से कुछ भी वापस लो, सिवा इस सूरत के जबकि ज़ोजैन उसका डर मह़सूस करें कि वो (एक साथ रहकर) अल्लाह के ह़ुदूद को क़ायम नहीं रख सकते। उ़मर (रज़ि.) ने ख़ुला जाइज़ रखा है। उसमें बादशाह या क़ाज़ी के हुक्म की ज़रूरत नहीं है और ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) ने कहा कि अगर बीवी अपने सारे माल के बदल में ख़ुला करे सिर्फ़ जोड़ा बाँधने का धागा रहने दे तब भी ख़ुला कराना दुरुस्त है। त़ाउस ने कहा कि इल्ला अन् यख़ाफ़ा अन् ला युक़ीमा हुदूदल्लाह का ये मत़लब है कि जब बीवी और शौहर अपने अपने फ़राइज़ को जो हुस्ने मुआशरत और स़ुह़बत के बारे में हैं अदा न कर सकें (उस वक़्त ख़ुला कराना दुरुस्त है जब औ़रत कहे कि मैं जनाबत या हैज़ से गुस्ल ही नहीं करूँगी।)

तश्रीह़ : अब तू सुह़बत कैसे करेगा। इसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने वस्ल किया ये इब्ने त़ाउस का क़ौल है कि उन बेवक़ूफ़ों की त़रह़ ये नहीं कहा। उन्होंने इसका रद्द किया कि ख़ुला सिर्फ़ उस वक़्त दुरुस्त है जब औ़रत बिलकुल मर्द का कहना न सुने और किसी त़रह़ इस्लाह़ की उम्मीद न हो जैसे सईद बिन मंसूर ने शअ़बी से निकाला। एक औ़रत ने अपने शौहर से कहा मैं तो तेरी कोई बात नहीं सुनूँगी न तेरी क़सम पूरी करूँगी न मैं जनाबत का गुस्ल करूँगी। उस वक़्त शअ़बी ने कहा अगर औ़रत ऐसी नाराज़ है तो अब शौहर को जाइज़ है कि उससे कुछ ले ले और उसे छोड़ दे।

नोट : जो ए'तिराज़ करने वाले कहते हैं कि औ़रत को शादी के मामले में इस्लाम ने मजबूर कर दिया है उनका ये क़ौल सरासर ग़लत़ है। अव्वल तो औ़रत की बग़ैर इजाज़त निकाह़ ही नहीं हो सकता। दूसरे अगर औ़रत पर ज़ुल्म हो रहा है तो उसको अपने शौहर से अलग होने का पूरा पूरा ह़क़ ह़ासिल है। इसी को इस्लाम में लफ़्ज़ ख़ुला से ज़िक्र किया गया है। औ़रत इस ह़ालत में क़ाज़ी-ए-इस्लाम के ज़रिये शरई त़रीक़े पर ख़ुला के ज़रिये ऐसे शौहर से ख़ुलास़ी ह़ासिल करने के लिये पूरे त़ौर पर मुख़्तार

है। लिहाज़ा ए'तिराज़ करने वालों के ऐसे तमाम ए'तिराज़ात ग़लत हैं ।

٥٢٧٣- حدَّثنا أَزْهَرُ بْنُ جَمِيلٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ الثَّقَفِيُّ حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ امْرَأَةَ ثَابِتِ بْنِ قَيْسٍ أَتَتِ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ، ثَابِتُ بْنُ قَيْسٍ مَا أَعْتُبُ عَلَيْهِ فِي خُلُقٍ وَلاَ دِينٍ، وَلَكِنِّي أَكْرَهُ الْكُفْرَ فِي الإِسْلاَمِ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَتَرُدِّينَ عَلَيْهِ حَدِيقَتَهُ؟)) قَالَتْ نَعَمْ. قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((اقْبَلِ الْحَدِيقَةَ وَطَلِّقْهَا تَطْلِيقَةً)). [أطرافه في: ٥٢٧٤، ٥٢٧٥، ٥٢٧٦، ٥٢٧٧].

5273. हमसे अज़हर बिन जमील ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वह्हाब ष़क़फ़ी ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि ष़ाबित बिन क़ैस (रज़ि.) की बीवी नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुई और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! मुझे उनके अख़्लाक़ और दीन की वजह से उनसे कोई शिकायत नहीं है। अल्बत्ता मैं इस्लाम में कुफ्र को पसंद नहीं करती (क्योंकि उनके साथ रहकर उनके हुक़ूक़े ज़ोजियत को नहीं अदा कर सकती)। इस पर आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया, क्या तुम उनका बाग़ (जो उन्होंने महर में दिया था) वापस कर सकती हो? उन्होंने कहा जी हाँ। आँह़ज़रत (ﷺ) ने (ष़ाबित रज़ि. से) फ़र्माया कि बाग़ क़ुबूल कर लो और उन्हें त़लाक़ दे दो। (दीगर मक़ामात: 5274, 5275, 5276, 5277)

٥٢٧٤- حدَّثنا إِسْحَاقُ الْوَاسِطِيُّ حَدَّثنا خَالِدٌ عَنْ خَالِدٍ الْحَذَّاءِ عَنْ عِكْرِمَةَ أَنَّ أُخْتَ عَبْدِ اللهِ بْنِ أُبَيٍّ بِهَذَا وَقَالَ: ((تَرُدِّينَ حَدِيقَتَهُ)) قَالَتْ: نَعَمْ. فَرَدَّتْهَا وَأَمَرَهُ أَنْ يُطَلِّقَهَا. وَقَالَ إِبْرَاهِيمُ بْنُ طَهْمَانَ عَنْ خَالِدٍ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَطَلَّقَهَا.

[راجع: ٤٢٧٣]

5274. हमसे इस्ह़ाक़ वास्त़ी ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद त़ह्हान ने बयान किया, उनसे ख़ालिद हज़्ज़ाअ ने, उनसे इक्रिमा ने कि अ़ब्दुल्लाह बिन अबी (मुनाफ़िक़) की बहन जमीला (रज़ि.) (जो उबई की बेटी थी) ने ये बयान किया और रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनसे पूछा था कि क्या तुम उन (ष़ाबित रज़ि.) का बाग़ वापस कर दोगी? उन्होंने अ़र्ज़ किया हाँ कर दूँगी। चुनाँचे उन्होंने बाग़ वापस कर दिया और उन्होंने उनके शौहर को हुक्म दिया कि उन्हें त़लाक़ दे दें और इब्राहीम बिन त़ह्मान ने बयान किया कि उनसे ख़ालिद ने, उनसे इक्रिमा ने नबी करीम (ﷺ) से और (इस रिवायत में बयान किया कि) उनके शौहर (ष़ाबित रज़ि.) ने उन्हें त़लाक़ दे दी। (राजेअ़ 4273)

٥٢٧٥- وَعَنِ ابْنِ أَبِي تَمِيمَةَ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّهُ قَالَ: جَاءَتِ امْرَأَةُ ثَابِتِ بْنِ قَيْسٍ إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنِّي لاَ أَعْتِبُ عَلَى ثَابِتٍ فِي دِينٍ، وَلاَ خُلُقٍ وَلَكِنِّي لاَ أُطِيقُهُ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى

5275. और इब्ने अबी तमीमा से रिवायत है, उनसे इक्रिमा ने, उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने, उन्होंने बयान किया कि ष़ाबित बिन क़ैस (रज़ि.) की बीवी रसूलुल्लाह (ﷺ)! की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुईं और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ) मुझे ष़ाबित के दीन और उनके अख़्लाक़ की वजह से कोई शिकायत नहीं है लेकिन मैं उनके साथ गुज़ारा नहीं कर सकती। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उस पर फ़र्माया फिर क्या तुम

उनका बाग़ वापस कर सकती हो? उन्होंने अ़र्ज़ किया जी हाँ। (राजेअ़ : 5273)

قالت : نعم.[راجع: ٥٢٧٣]

तश्रीह : इससे मा'लूम होता है कि ष़ाबित (रज़ि.) ने उसके साथ कोई बद अख़्लाक़ी नहीं की थी लेकिन नसाई की रिवायत में है कि ष़ाबित (रज़ि.) ने उसका हाथ तोड़ डाला था। इब्ने माजा की रिवायत में है कि ष़ाबित (रज़ि.) बदसूरत आदमी थे, इस वजह से जमीला को उनसे नफ़रत पैदा हो गई थी।

5276. हमसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक मख़रमी ने कहा, कहा हमसे क़ुराद अबू नूह ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन हाज़िम ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुख़्तियानी ने, उनसे इक्रिमा ने और उनसे हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि ष़ाबित बिन क़ैस बिन शमास (रज़ि.) की बीवी नबी करीम (ﷺ) के पास आईं और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! ष़ाबित (रज़ि.) के दीन और उनके अख़्लाक़ से मुझे कोई शिकायत नहीं लेकिन मुझे ख़तरा है (कि मैं ष़ाबित रज़ि. की नाशुक्री में न फंस जाऊँ) आँहज़रत (ﷺ) ने इस पर उनसे पूछा क्या तुम उनका बाग़ (जो उन्होंने महर में दिया था) वापस कर सकती हो? उन्होंने अ़र्ज़ किया जी हाँ। चुनाँचे उन्होंने वो बाग़ वापस कर दिया और आँहज़रत (ﷺ) के हुक्म से ष़ाबित (रज़ि.) ने उन्हें अपने से अलग कर दिया। (राजेअ़ : 5273)

٥٢٧٦- حدَّثنا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ الْمُبَارَكِ الْمُخَرِّمِيُّ حَدَّثَنَا قُرَادٌ أَبُو نُوحٍ حَدَّثَنَا جَرِيرُ بْنُ حَازِمٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: جَاءَتِ امْرَأَةُ ثَابِتِ بْنِ قَيْسِ بْنِ شَمَّاسٍ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ، مَا أَنْقِمُ عَلَى ثَابِتٍ فِي دِينٍ وَلاَ خُلُقٍ، إِلاَّ أَنِّي أَخَافُ الْكُفْرَ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((فَتَرُدِّينَ عَلَيْهِ حَدِيقَتَهُ؟)) قَالَتْ نَعَمْ. فَرَدَّتْ عَلَيْهِ وَأَمَرَهُ فَفَارَقَهَا. [راجع: ٥٢٧٣]

तश्रीह : इन सनदों के बयान करने से हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) की ग़र्ज़ ये है कि रावियों ने इसमें इख़्तिलाफ़ किया है। अय्यूब पर इब्ने तहमान और जरीर ने इसको मौसूलन नक़ल किया है और हम्माद ने मुर्सलन एक रिवायत में बयान किया है कि ष़ाबित (रज़ि.) की उस औरत का नाम हबीबा बिन्ते सहल था। बज़्ज़ार ने रिवायत किया कि ये पहला ख़ुला था इस्लाम में। वल्लाहु आलम बिस्सवाब।

बाब 13 : मियाँ—बीवी में नाइत्तिफ़ाक़ी का बयान और ज़रूरत के वक़्त ख़ुला का हुक्म देना

और अल्लाह ने सूरह निसा में फ़र्माया अगर तुम मियाँ—बीवी की नाइत्तिफ़ाक़ी से डरो तो एक पंच मर्द वालों में से भेजो और एक पंच औरत की तरफ़ से मुक़र्रर करो (आख़िर आयत तक)

١٣- باب الشِّقَاقِ، وَهَلْ يُشِيرُ بِالْخُلْعِ عِنْدَ الضَّرُورَةِ؟ وَقَوْلُهُ تَعَالَى: ﴿وَإِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوا حَكَمًا مِنْ أَهْلِهِ وَحَكَمًا مِنْ أَهْلِهَا إلى قوله خبيرا﴾ الآيَةَ

तश्रीह : अब अगर ये दोनों पंच मियाँ—बीवी में मिलाप करा दें तब तो ख़ैर उसका ज़िक्र ख़ुद आयत में है। अगर ये दोनों पंच जुदाई की राय दें तो जुदाई हो जाएगी, मियाँ—बीवी के इजाज़त की ज़रूरत नहीं। इमाम मालिक और औज़ाई और इस्हाक़ का यही क़ौल है और इमाम शाफ़िई और इमाम अहमद कहते हैं कि इजाज़त ज़रूरी है।

5277. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, उनसे हम्माद

٥٢٧٧- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ: حَدَّثَنَا حَمَّادٌ

बिन यज़ीद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुख़्तियानी ने, उनसे इक्रिमा ने यही क़िस्सा (मुर्सलन) नक़ल किया और उसमें ख़ातून का नाम जमीला आया है। (राजेअ : 5273)

عَنْ أَيُّوبَ عَنْ عِكْرِمَةَ: أَنَّ جَمِيلَةَ فَذَكَرَ الْحَدِيثَ. [راجع: ٥٢٧٣]

5278. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने और उनसे मिस्वर बिन मख़रमा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आप फ़र्मा रहे थे कि बनी मुग़ीरह ने इसकी इजाज़त मांगी है कि अ़ली (रज़ि.) से वो अपनी बेटी का निकाह़ कर लें लेकिन मैं उन्हें उसकी इजाज़त नहीं दूँगा।

٥٢٧٨- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنِ الْمِسْوَرِ بْنِ مَخْرَمَةَ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((إِنَّ بَنِي الْمُغِيرَةِ اسْتَأْذَنُوا فِي أَنْ يَنْكِحَ عَلِيٌّ ابْنَتَهُمْ، فَلاَ آذَنُ)).

तश्रीह : ये एक टुकड़ा है उस ह़दीष़ का जो किताबुन् निकाह़ में गुज़र चुकी है कि ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने अबू जहल की बेटी से निकाह़ करना चाहा था। आँह़ज़रत (ﷺ) ख़फ़ा हुए तो वो इस इरादे से बाज़ आए। इस ह़दीष़ की मुत़ाबक़त बाब का तर्जुमा से इस त़रह़ है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) को जो दूसरे निकाह़ से रोका तो इसी वजह से कि उनमें और ह़ज़रत फ़ाति़मा ज़ौहरा (रज़ि.) में नाइत्तिफ़ाक़ी का डर था। आपने तो फ़र्मा दिया कि ये नामुम्किन है कि अल्लाह के रसूल की बेटी और अल्लाह के दुश्मन की बेटी एक घर में जमा हो सकें।

बाब 14 : बाब अगर लौण्डी किसी के निकाह़ में हो उसके बाद बेची जाए तो बैअ़ से त़लाक़ न पड़ेगी

١٤- باب لاَ يَكُونُ بَيْعُ الأَمَةِ طَلاَقًا

तश्रीह : क्योंकि निकाह़ रज़ामन्दी का सौदा है और लौण्डीपने में इसको अपने नफ़्स पर इख़्तियार न था। मुम्किन है कि मालिक ने जिससे उसका निकाह़ कर दिया हो वो उसको पसंद न करती हो। इस वजह से आज़ादी के बाद उसे इख़्तियार दिया गया और कुछ रिवायतों में ये भी आया है कि उसका शौहर आज़ाद था मगर ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) के बाब का तर्जुमा से ये निकलता है कि उन्होंने उसके ग़ुलाम होने को तरजीह़ दी है और जुम्हूर उ़लमा का यही मज़हब है कि लौण्डी को ये इख़्तियार उसी वक़्त होगा जब उसका शौहर ग़ुलाम हो। अगर आज़ाद हो तो ये इख़्तियार न होगा लेकिन ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) और अहले कूफ़ा के नज़दीक लौण्डी को आज़ादी के वक़्त हर ह़ाल में इख़्तियार होगा ख़्वाह उसका शौहर ग़ुलाम हो या आज़ाद और तअ़ज्जुब है कि ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) लौण्डी के बाब में तो मुत़्लक़न इस इख़्तियार के क़ाइल हुए हैं और कुँवारी नाबालिग़ लड़की को जिसका निकाह़ उसके बाप ने पढ़ा दिया हो और बुलूग़ के बाद वो नाराज़ हो ये इख़्तियार नहीं देते ह़ालाँकि एक ह़दीष़ में इसकी स़राह़त आ चुकी है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने ऐसी लड़की को इख़्तियार दिया था और क़यासे स़ह़ीह़ भी उसका मुईद है।

5279. हमसे इस्माईल बिन अ़ब्दुल्लाह उवैसी ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने, उनसे रबीआ़ बिन अबी अ़ब्दुर्रह़मान ने, उनसे क़ासिम बिन मुह़म्मद ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुत़ह्हरा आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि बरीरह (रज़ि.) से दीन के तीन मसले मा'लूम हो गये। अव्वल ये कि उन्हें आज़ाद किया गया और फिर उनके शौहर के बारे में इख़्तियार दिया गया (कि चाहें उनके निकाह़ में रहें वरना अलग हो जाएँ) और रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (उन्हीं के बारे में) फ़र्माया कि विलाअ उसी से क़ायम होती है जो आज़ाद

٥٢٧٩- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ رَبِيعَةَ بْنِ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنِ الْقَاسِمِ بْنِ مُحَمَّدٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ: كَانَ فِي بَرِيرَةَ ثَلاَثُ سُنَنٍ: إِحْدَى السُّنَنِ أَنَّهَا أُعْتِقَتْ فَخُيِّرَتْ فِي زَوْجِهَا، وَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((الْوَلاَءُ لِمَنْ أَعْتَقَ)). وَدَخَلَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَالْبُرْمَةُ تَفُورُ

करे और एक मर्तबा हुज़ूरे अकरम (ﷺ) घर में तशरीफ़ लाए तो एक हाँडी में गोश्त पकाया जा रहा था, फिर खाने के लिये आँहज़रत (ﷺ) के सामने रोटी और घर का सालन पेश किया गया। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं ने तो देखा कि हाँडी में गोश्त भी पक रहा है? अ़र्ज़ किया गया कि जी हाँ लेकिन वो गोश्त बरीरह को स़दक़ा में मिला है और आँहज़रत (ﷺ) स़दक़ा नहीं खाते। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि वो उनके लिये स़दक़ा है और हमारे लिये बरीरह की त़रफ़ से ताह़फ़ा है। (राजेअ़ : 456)

بِلَحْمٍ، فَقُرِّبَ إِلَيْهِ خُبْزٌ وَأُدْمٌ مِنْ أُدْمِ الْبَيْتِ، فَقَالَ: ((أَلَمْ أَرَ الْبُرْمَةَ فِيهَا لَحْمٌ))؟ قَالُوا: بَلَى. وَلَكِنْ ذَاكَ لَحْمٌ تُصُدِّقَ بِهِ عَلَى بَرِيرَةَ وَأَنْتَ لاَ تَأْكُلُ الصَّدَقَةَ، قَالَ: ((عَلَيْهَا صَدَقَةٌ وَلَنَا هَدِيَّةٌ)). [راجع: ٤٥٦]

तश्रीह : जब तक शौहर त़लाक़ न दे जुम्हूर का यही मज़हब है लेकिन इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) और उबई बिन कअ़ब (रज़ि.) से मन्क़ूल है कि लौण्डी की बेअ़ त़लाक़ है। ताबेईन में से सईद बिन मुसय्यिब और ह़सन और मुजाहिद भी इसी के क़ाइल हैं। उ़र्वा ने कहा त़लाक़ ख़रीददार के इख़्तियार में रहेगी। ह़दीष़ से बाब का मत़लब यूँ निकला कि जब आपने बरीरह (रज़ि.) को आज़ाद होने के बाद इख़्तियार दिया कि अपने शौहर को रखे या उससे जुदा हो जाए तो मा'लूम हुआ कि लौण्डी का आज़ाद होना त़लाक़ नहीं है वरना इख़्तियार के क्या मा'नी होते और जब आज़ादी त़लाक़ नहीं होती तो बैअ़ भी त़लाक़ न होगी। ये ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) की बारीकी इस्तिम्बात़ और तफ़क़्क़ोह की दलील है। बेवक़ूफ़ हैं वो जो इमाम बुख़ारी (रह़.) की फ़ुक़ाहत के क़ाइल नहीं हैं। ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) मुज्तहिदे मुत़्लक़ और फ़िक़्हुल ह़दीष़ में इमामुल फ़ुक़हा हैं।

बाब : 15 अगर लौण्डी गुलाम के निकाह़ में हो फिर वो लौण्डी आज़ाद हो जाए तो उसे इख़्तियार होगा ख़्वाह वो निकाह़ बाक़ी रखे या फ़स्ख़ कर डाले

١٥- باب خِيَارِ الأَمَةِ تَحْتَ الْعَبْدِ

5280. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा और हम्माम ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, उनसे इक्रिमा ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि मैंने उन्हें गुलाम देखा था। आपकी मुराद बरीरह (रज़ि.) के शौहर (मुग़ीष़) से थी। (दीगर मक़ामात : 5281, 5282, 5283)

٥٢٨٠- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ وَهَمَّامٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: رَأَيْتُهُ عَبْدًا، يَعْنِي زَوْجَ بَرِيرَةَ. [أطرافه في : ٥٢٨١، ٥٢٨٢، ٥٢٨٣].

5281. हमसे अ़ब्दुल आला बिन ह़म्माद ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे अय्यूब ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि ये मुग़ीष़ बनी फ़लाँ के गुलाम थे। आपका इशारा बरीरह (रज़ि.) के शौहर की त़रफ़ था। गोया इस वक़्त भी मैं उन्हें देख रहा हूँ कि मदीना की गलियों में वो बरीरह (रज़ि.) के पीछे पीछे रोते फिर रहे हैं। (राजेअ़ : 5280)

٥٢٨١- حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى بْنُ حَمَّادٍ حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ : ذَاكَ مُغِيثٌ عَبْدُ بَنِي، فُلاَنٍ يَعْنِي زَوْجَ بَرِيرَةَ، كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَيْهِ يَتْبَعُهَا فِي سِكَكِ الْمَدِينَةِ يَبْكِي عَلَيْهَا. [راجع: ٥٢٨٠]

5282. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल वह्हाब ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे इक्रिमा ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि बरीरह

٥٢٨٢- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ

(रज़ि.) के शौहर एक हब्शी ग़ुलाम थे। उनका मुग़ीष़ नाम था, वो बनी फ़लाँ के ग़ुलाम थे। जैसे वो मंज़र अब भी मेरी आँखों में है कि वो मदीना की गलियों में बरीरह (रज़ि.) के पीछे पीछे फिर रहे हैं। (राजेअ़ : 5280)

बाब 16 : बरीरह (रज़ि.) के शौहर के बारे में नबी करीम (ﷺ) का सिफ़ारिश करना

5283. हमसे मुहम्मद बिन सलाम बैकुन्दी ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल वह्हाब ष़क़फ़ी ने ख़बर दी, कहा हमसे ख़ालिद हज़्ज़ाअ ने, उनसे इक्रिमा ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि बरीरह (रज़ि.) के शौहर ग़ुलाम थे और उनका नाम मुग़ीष़ था। गोया मैं इस वक़्त उसको देख रहा हूँ जब वो बरीरह (रज़ि.) के पीछे-पीछे रोते हुए फिर रहे थे और आंसुओं से उनकी दाढ़ी तर हो रही थी। इस पर नबी करीम (ﷺ) ने अ़ब्बास (रज़ि.) से फ़र्माया, अ़ब्बास! क्या तुम्हें मुग़ीष़ की बरीरह से मुहब्बत और बरीरह की मुग़ीष़ से नफ़रत पर हैरत नहीं हुई? आख़िर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने बरीरह (रज़ि.) से फ़र्माया काश! तुम उसके बारे में अपना फ़ैसला बदल देतीं। उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या आप मुझे उसका हुक्म फ़र्मा रहे हैं? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया मैं सिर्फ़ सिफ़ारिश कर रहा हूँ। उन्होंने इस पर कहा कि मुझे मुग़ीष़ के पास रहने की ख़्वाहिश नहीं है। (राजेअ़ : 5280)

बाब : 17

5284. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन रजाअ ने बयान किया, कहा हमको शुअ़बा ने ख़बर दी, उन्हें हकम ने, उन्हें इब्राहीम नख़ई ने, उन्हें अस्वद ने कि आइशा (रज़ि.) ने बरीरह (रज़ि.) को ख़रीदने का इरादा किया लेकिन उनके मालिकों ने कहा कि वो इसी शर्त पर उन्हें बेच सकते हैं कि बरीरह का तर्का हम लें और उनके साथ विलाअ (आज़ादी के बाद) उन्हीं से क़ायम हो। आइशा (रज़ि.) ने जब उसका ज़िक्र नबी करीम (ﷺ) से किया तो आपने फ़र्माया कि उन्हें ख़रीदकर आज़ाद कर दो तर्का तो उसी को मिलेगा जो लौण्डी ग़ुलाम को आज़ाद करे और विलाअ भी उसी के साथ क़ायम हो सकती है जो आज़ाद करे और नबी करीम (ﷺ) के सामने गोश्त लाया गया फिर

زَوْجُ بَرِيرَةَ عَبْدًا أَسْوَدَ يُقَالُ لَهُ: مُغِيثٌ، عَبْدًا لِبَنِي فُلاَنٍ، كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَيْهِ يَطُوفُ وَرَاءَهَا فِي سِكَكِ الْمَدِينَةِ. [راجع: ٥٢٨٠]

١٦- باب شَفَاعَةِ النَّبِيِّ ﷺ فِي زَوْجِ بَرِيرَةَ

٥٢٨٣- حدثني مُحَمَّدٌ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ زَوْجَ بَرِيرَةَ كَانَ عَبْدًا يُقَالُ لَهُ مُغِيثٌ، كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَيْهِ يَطُوفُ خَلْفَهَا يَبْكِي وَدُمُوعُهُ تَسِيلُ عَلَى لِحْيَتِهِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ لِعَبَّاسٍ: ((يَا عَبَّاسُ أَلاَ تَعْجَبُ مِنْ حُبِّ مُغِيثٍ بَرِيرَةَ، وَمِنْ بُغْضِ بَرِيرَةَ مُغِيثًا)). فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ((لَوْ رَاجَعْتِيهِ)) قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ، تَأْمُرُنِي. قَالَ: ((إِنَّمَا أَنَا أَشْفَعُ)). قَالَتْ لاَ حَاجَةَ لِي فِيهِ.

[راجع: ٥٢٨٠]

١٧- باب

٥٢٨٤- حدثنا عَبْدُ اللهِ بْنُ رَجَاءٍ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنِ الْحَكَمِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنِ الأَسْوَدِ أَنَّ عَائِشَةَ أَرَادَتْ أَنْ تَشْتَرِيَ بَرِيرَةَ فَأَبَى مَوَالِيهَا إِلاَّ أَنْ يَشْتَرِطُوا الْوَلاَءَ، فَذَكَرَتْ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ((اشْتَرِيهَا وَأَعْتِقِيهَا، فَإِنَّمَا الْوَلاَءُ لِمَنْ أَعْتَقَ)). وَأُتِيَ النَّبِيُّ ﷺ بِلَحْمٍ، فَقِيلَ: إِنَّ هَذَا مَا تُصُدِّقَ عَلَى

कहा गया कि ये गोश्त बरीरह (रज़ि.) को सदक़ा किया गया था। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि वो उनके लिये सदक़ा है और हमारे लिये उनका तोहफ़ा है। (राजेअ : 456)

بَرِيرَةَ: ((هُوَ لَهَا صَدَقَةٌ وَلَنَا هَدِيَّةٌ)). [راجع: ٤٥٦]

हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, उनसे शुअबा ने बयान किया, और इस रिवायत में ये इज़ाफ़ा किया कि फिर (आज़ादी के बाद) उन्हें उनके शौहर के बारे में इख़्तियार दिया गया (कि चाहें उनके पास रहें और अगर चाहें उनसे अपना निकाह तोड़ लें।)

حَدَّثَنَا آدَمُ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ وَ زَادَ فَخُيِّرَتْ مِنْ زَوْجِهَا.

बाब 18 : अल्लाह तआला का सूरह बक़रः में यूँ फ़र्माना कि और मुश्रिक औरतों से निकाह न करो यहाँ तक कि वो ईमान लाएँ और यक़ीनन मोमिना लौण्डी मुश्रिका औरत से बेहतर है गो मुश्रिक औरत तुमको भली लगे

١٨- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَلاَ تَنْكِحُوا الْمُشْرِكَاتِ حَتَّى يُؤْمِنَّ، وَلأَمَةٌ مُؤْمِنَةٌ خَيْرٌ مِنْ مُشْرِكَةٍ وَلَوْ أَعْجَبَتْكُمْ﴾

5285. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअद ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने कि इब्ने उमर (रज़ि.) से अगर यहूदी या नस़रानी औरतों से निकाह के बारे में सवाल किया जाता तो वो कहते कि अल्लाह तआला ने मुश्रिक औरतो से निकाह मोमिनों के लिये हराम क़रार दिया है और मैं नहीं समझता कि इससे बढ़कर और क्या शिर्क होगा कि एक औरत ये कहे कि उसके रब हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) हैं हालाँकि वो अल्लाह के मक़्बूल बन्दों में से एक मक़्बूल बन्दे हैं।

٥٢٨٥- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ نَافِعٍ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ كَانَ إِذَا سُئِلَ عَنْ نِكَاحِ النَّصْرَانِيَّةِ وَالْيَهُودِيَّةِ، قَالَ: إِنَّ اللهَ حَرَّمَ الْمُشْرِكَاتِ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ، وَلاَ أَعْلَمُ مِنَ الإِشْرَاكِ شَيْئًا أَكْبَرَ مِنْ أَنْ تَقُولَ الْمَرْأَةُ رَبُّهَا عِيسَى، وَهُوَ عَبْدٌ مِنْ عِبَادِ اللهِ.

तश्रीह : ये ख़ास़ इब्ने उमर (रज़ि.) की राय थी। दूसरे सलफ़ ने उनका ख़िलाफ़ किया है। शायद इब्ने उमर (रज़ि.) सूरह माइदा की इस आयत **वल्मुहस़नातु मिनल्लज़ीन ऊतुल्किताब** (अल् माइद : 5) को मन्सूख़ समझते हों। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि सूरह बक़रः की ये आयत **व ला तन्किहुल्मुश्रिकाति** (अल् बक़र : 221) सूरह माइदह की आयत से मन्सूख़ है और इब्ने उमर (रज़ि.) के सिवा और कोई इसका क़ाइल नहीं हुआ कि यहूदी या नस़रानी औरत से निकाह नाजाइज़ है और हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) का भी झुकाव इब्ने उमर (रज़ि.) के क़ौल की त़रफ़ मा'लूम होता है। अ़ता ने कहा यहूदी या नस़रानी औरत से निकाह करना दुरुस्त है और बहुत से स़हाबा से ष़ाबित है कि उन्होंने अहले किताब की औरतों से निकाह किया।

बाब 19 : इस्लाम क़ुबूल करने वाली मुश्रिक औरतों से निकाह और उनकी इद्दत का बयान

١٩- باب نِكَاحِ مَنْ أَسْلَمَ مِنَ الْمُشْرِكَاتِ وَعِدَّتِهِنَّ

5286. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम बिन उ़र्वा ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने जुरैज ने कि अ़ता ख़ुरासानी ने बयान किया और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) और मोमिनीन के लिये मुश्रिकीन दो त़रह के थे। एक तो मुश्रिकीन लड़ाई करने वालों से कि आँहज़रत (ﷺ) उनसे जंग करते थे और वो आँहज़रत (ﷺ) से जंग करते थे। दूसरे अ़हदो पैमान करने वाले मुश्रिकीन कि आँहज़रत (ﷺ) उनसे जंग नहीं करते थे और न वो आँहज़रत (ﷺ) से जंग करते थे और जब अहले ह़र्ब की कोई औ़रत (इस्लाम क़ुबूल करने के बाद) हिजरत करके (मदीना मुनव्वरा) आती तो उन्हें उस वक़्त तक पैग़ामे निकाह़ न दिया जाता यहाँ तक कि उन्हें हैज़ आता और फिर वो उससे पाक होतीं, फिर जब वो पाक हो जातीं तो उनसे निकाह़ जाइज़ हो जाता, फिर अगर उनके शौहर भी, उनके किसी दूसरे शख़्स से निकाह़ कर लेने से पहले हिजरत करके आ जाते तो ये उन्हीं को मिलतीं और अगर मुश्रिकीन में से कोई गुलाम या लौण्डी मुसलमान होकर हिजरत करती तो वो आज़ाद समझे जाते और उनके वही हुक़ूक़ होते जो तमाम मुहाजिरीन के थे। फिर अ़ता ने मुआ़हिद मुश्रिकीन के सिलसिले में मुजाहिद की ह़दीष़ की त़रह से स़ूरतेह़ाल बयान की कि अगर मुआ़हिद मुश्रिकीन की कोई गुलाम या लौण्डी हिजरत करके आ जाती तो उन्हें उनके मालिक मुश्रिकीन को वापस नहीं किया जाता था। अल्बत्ता जो उनकी क़ीमत होती वो वापस कर दी जाती थी।

٥٢٨٦- حدَّثنا إبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا هِشَامٌ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ. وَقَالَ عَطَاءٌ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ كَانَ الْمُشْرِكُون عَلَى مَنْزِلَتَيْنِ مِنَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَالْمُؤْمِنِينَ، كَانُوا مُشْرِكِي أَهْلِ حَرْبٍ يُقَاتِلُهُمْ وَيُقَاتِلُونَهُ. وَمُشْرِكِي أَهْلِ عَهْدٍ لاَ يُقَاتِلُهُمْ وَلاَ يُقَاتِلُونَهُ. وَكَانَ إِذَا هَاجَرَتِ امْرَأَةٌ مِنْ أَهْلِ الْحَرْبِ لَمْ تُخْطَبْ حَتَّى تَحِيضَ وَتَطْهُرَ، فَإِذَا طَهُرَتْ حَلَّ لَهَا النِّكَاحُ، فَإِنْ هَاجَرَ زَوْجُهَا قَبْلَ أَنْ تَنْكِحَ رُدَّتْ إِلَيْهِ، وَإِنْ هَاجَرَ عَبْدٌ مِنْهُمْ أَوْ أَمَةٌ فَهُمَا حُرَّانِ، وَلَهُمَا مَا لِلْمُهَاجِرِينَ. ثُمَّ ذَكَرَ مِنْ أَهْلِ الْعَهْدِ. مِثْلَ حَدِيثِ مُجَاهِدٍ. وَإِنْ هَاجَرَ عَبْدٌ أَوْ أَمَةٌ لِلْمُشْرِكِينَ أَهْلِ الْعَهْدِ لَمْ يُرَدُّوا وَرُدَّتْ أَثْمَانُهُمْ.

5287. और अ़ता ने ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से बयान किया कि क़ुरैबा बिन्ते अबी उमय्या उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) के निकाह़ में थीं, फिर उ़मर (रज़ि.) ने (मुश्रिकीन से निकाह़ की मुख़ालफ़त की आयत के बाद) उन्हें त़लाक़ दे दी तो मुआविया बिन अबी सुफ़यान (रज़ि.) ने उनसे निकाह़ कर लिया और उम्मुल ह़कम बिन्ते अबी सुफ़यान अ़याज़ बिन ग़नम फ़हरी के निकाह़ में थीं, उस वक़्त उसने उन्हें त़लाक़ दे दी (और वो मदीना हिजरत करके आ गईं) और अ़ब्दुल्लाह बिन उ़ष्मान ष़क़फ़ी ने उनसे निकाह़ किया।

٥٢٨٧- وَقَالَ عَطَاءٌ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ كَانَتْ قُرَيْبَةُ بِنْتُ أَبِي أُمَيَّةَ عِنْدَ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ فَطَلَّقَهَا. فَتَزَوَّجَهَا مُعَاوِيَةُ بْنُ أَبِي سُفْيَانَ وَكَانَتْ أُمُّ الْحَكَمِ ابْنَةُ أَبِي سُفْيَانَ تَحْتَ عِيَاضِ بْنِ غَنْمٍ الْفِهْرِيِّ فَطَلَّقَهَا فَتَزَوَّجَهَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عُثْمَانَ الثَّقَفِيُّ.

तश्रीह : इस मसले में इख़्तिलाफ़ है अकष़र उ़लमा का ये क़ौल है कि जो औ़रत दारुल ह़रब से मुसलमान होकर दारुस्सलाम में हिजरत करते हैं उसको तीन हैज़ तक या ह़ामिला हो तो वज़अ़े ह़मल तक इ़द्दत करनी चाहिये। उसके बाद किसी मुसलमान से निकाह़ कर सकती है। क़ुरैबा बिन्ते अबी उमय्या जो उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा (रज़ि.) की बहन थी और उम्मुल ह़कम अबू सुफ़यान (रज़ि.) की बेटी ये दोनों औ़रतें काफ़िरा थीं जब उनको त़लाक़ दी गई तो उन्होंने इ़द्दत भी की होगी लिहाज़ा बाब का मत़लब निकल आया। कुछ ने कहा क़ुरैबा मुसलमान हो गई थीं। कुछ ने दो क़ुरैबा बतलाई हैं। एक तो वो जो मुसलमान होकर हिजरत कर आई थी और एक वो जो काफ़िर रही थी, यहाँ यही मुराद है।

बाब 20 : इस बयान में कि जब मुश्रिक या नस़रानी औ़रत जो मुआ़हिद मुश्रिक या ह़र्बी मुश्रिक के निकाह़ में हो इस्लाम लाए

٢٠- باب إِذَا أَسْلَمَتِ الْمُشْرِكَةُ أَوِ النَّصْرَانِيَّةُ تَحْتَ الذِّمِّيِّ أَوِ الْحَرْبِيِّ

और अ़ब्दुल वारिष़ बिन सईद ने बयान किया, उनसे ख़ालिद ह़ज़्ज़ाअ ने, उनसे इक्रिमा ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि अगर कोई नस़रानी औ़रत अपने शौहर से थोड़ी देर पहले भी इस्लाम लाई तो वो अपने शौहर पर ह़राम हो जाती है और दाऊद ने बयान किया कि उनसे इब्राहीम स़ाइग़ ने कि अ़ता से ऐसी औ़रत के बारे में पूछा गया जो ज़िम्मी क़ौम से ता'ल्लुक़ रखती हो और इस्लाम क़ुबूल कर ले, फिर उसके बाद उसका शौहर भी उसकी इ़द्दत के ज़माने ही में इस्लाम ले आए तो क्या वो उसी की बीवी समझी जाएगी? फ़र्माया कि नहीं अल्बत्ता अगर वो नया निकाह़ करना चाहे, नए महर के साथ (तो कर सकता है) मुजाहिद ने फ़र्माया कि (बीवी के इस्लाम लाने के बाद) अगर शौहर उसकी इ़द्दत के ज़माने में ही इस्लाम ले आया तो उससे निकाह़ कर लेना चाहिये और अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया कि, न मोमिन औ़रतें मुश्रिक मर्दों के लिये ह़लाल हैं और न मुश्रिक मर्द मोमिन औ़रतों के ह़लाल हैं और ह़सन और क़तादा ने दो मजूसियों के बारे में (जो मियाँ-बीवी थे) जो इस्लाम ले आए थे, कहा कि वो दोनों अपने निकाह़ पर बाक़ी हैं और अगर उनमें से कोई अपने साथी से (इस्लाम में) सबक़त कर जाए और दूसरा इंकार कर दे तो औ़रत अपने शौहर से जुदा हो जाती है और शौहर उसे ह़ासिल नहीं कर सकता (सिवा निकाहे जदीद के) और इब्ने जुरैज ने कहा कि मैंने अ़ता से पूछा कि मुश्रिकीन की कोई औ़रत (इस्लाम क़ुबूल करने के बाद) अगर मुसलमानों के पास आए तो क्या उसके मुश्रिक शौहर को उसका महर वापस कर दिया जाएगा? क्योंकि

وَقَالَ عَبْدُ الْوَارِثِ عَنْ خَالِدٍ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ: إِذَا أَسْلَمَتِ النَّصْرَانِيَّةُ قَبْلَ زَوْجِهَا بِسَاعَةٍ حَرُمَتْ عَلَيْهِ. وَقَالَ دَاوُدُ عَنْ إِبْرَاهِيمَ الصَّائِغِ سُئِلَ عَطَاءٌ عَنِ امْرَأَةٍ مِنْ أَهْلِ الْعَهْدِ أَسْلَمَتْ ثُمَّ أَسْلَمَ زَوْجُهَا فِي الْعِدَّةِ أَهِيَ امْرَأَتُهُ؟ قَالَ: لاَ، إِلاَّ أَنْ تَشَاءَ هِيَ بِنِكَاحٍ جَدِيدٍ وَصَدَاقٍ، وَقَالَ مُجَاهِدٌ: إِذَا أَسْلَمَ فِي الْعِدَّةِ يَتَزَوَّجُهَا وَقَالَ اللهُ تَعَالَى : ﴿لاَ هُنَّ حِلٌّ لَهُمْ وَلاَ هُمْ يَحِلُّونَ لَهُنَّ﴾ وَقَالَ الْحَسَنُ وَقَتَادَةُ فِي مَجُوسِيَّيْنِ أَسْلَمَاهُمَا عَلَى نِكَاحِهِمَا : وَإِذَا سَبَقَ أَحَدُهُمَا صَاحِبَهُ وَأَبَى الآخَرُ بَانَتْ لاَ سَبِيلَ لَهُ عَلَيْهَا، وَقَالَ ابْنُ جُرَيْجٍ قُلْتُ لِعَطَاءٍ: امْرَأَةٌ مِنَ الْمُشْرِكِينَ جَاءَتْ إِلَى الْمُسْلِمِينَ أَيُعَاوَضُ زَوْجُهَا مِنْهَا لِقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿وَآتُوهُمْ مَا أَنْفَقُوا﴾ قَالَ : لاَ إِنَّمَا كَانَ ذَاكَ بَيْنَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَبَيْنَ أَهْلِ الْعَهْدِ، وَقَالَ مُجَاهِدٌ : هَذَا كُلُّهُ فِي صُلْحٍ بَيْنَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَبَيْنَ قُرَيْشٍ.

अल्लाह तआला ने फ़र्माया है, और उन्हें वो वापस कर दो जो उन्होंने ख़र्च किया हो। अ़ता ने फ़र्माया कि नहीं, ये सिर्फ़ नबी करीम (ﷺ) और मुआहिद मुश्रिकीन के दरम्यान था और मुजाहिद ने फ़र्माया कि ये सब कुछ हुज़ूरे अकरम (ﷺ) और क़ुरैश के दरम्यान बाहमी सुलह की वजह से था।

٥٢٨٨- حدَّثنا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ ح. وَقَالَ إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ: حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ حَدَّثَنِي يُونُسُ قَالَ ابْنُ شِهَابٍ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ: كَانَتِ الْمُؤْمِنَاتُ إِذَا هَاجَرْنَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ يَمْتَحِنُهُنَّ بِقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمنوا إِذَا جَاءَكُمُ الْمُؤْمِنَاتُ مُهَاجِرَاتٍ فَامْتَحِنُوهُنَّ﴾ إِلَى آخِرِ الآيَةِ قَالَتْ عَائِشَةُ : فَمَنْ أَقَرَّ بِهَذَا الشَّرْطِ مِنَ الْمُؤْمِنَاتِ فَقَدْ أَقَرَّ بِالْمِحْنَةِ، فَكَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ إِذَا أَقْرَرْنَ بِذَلِكَ مِنْ قَوْلِهِنَّ قَالَ لَهُنَّ رَسُولُ اللهِ ﷺ: انْطَلِقْنَ فَقَدْ بَايَعْتُكُنَّ لاَ وَاللهِ مَا مَسَّتْ يَدُ رَسُولِ اللهِ ﷺ يَدَ امْرَأَةٍ قَطُّ، غَيْرَ أَنَّهُ بَايَعَهُنَّ بِالْكَلاَمِ، وَاللهِ مَا أَخَذَ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَلَى النِّسَاءِ إِلاَّ بِمَا أَمَرَهُ اللهُ، يَقُولُ لَهُنَّ إِذَا أَخَذَ عَلَيْهِنَّ: ((قَدْ بَايَعْتُكُنَّ كَلاَمًا)).

[راجع: ٢٧١٣]

5288. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने और इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया कि मुझसे अ़ब्दुल्लाह इब्ने वहब ने बयान किया, उनसे यूनुस ने बयान किया कि इब्ने शिहाब ने बयान किया कि मुझे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने ख़बर दी और उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुत़ह्हरा आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मोमिन औ़रतें जब हिजरत करके नबी करीम (ﷺ) के पास आती थीं तो आँह़ज़रत (ﷺ) उन्हें आज़माते थे अल्लाह के इस इर्शाद की वजह से, कि, ऐ वो लोगों! जो ईमान ले आए हो, जब मोमिन औ़रतें तुम्हारे पास हिजरत करके आएँ तो उन्हें आज़माओ आख़िर आयत तक। आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर उन (हिजरत करने वाली) मोमिन औ़रतों में से जो इस शर्त़ का इक़रार कर लेती (जिसका ज़िक्र इसी सूरह मुम्तहिना में है कि, अल्लाह का किसी को शरीक न ठहराओगी) तो वो आज़माइश में पूरी समझी जाती थी। चुनाँचे जब वो उसका अपनी ज़ुबान से इक़रार कर लेतीं तो रसूलुल्लाह (ﷺ) उनसे फ़र्माते कि अब जाओ मैंने तुमसे अ़हद ले लिया है। हर्गिज़ नहीं! वल्लाह! आँह़ज़रत (ﷺ) के हाथ ने (बेअ़त लेते वक़्त) किसी औ़रत का हाथ कभी नहीं छुआ। आँह़ज़रत (ﷺ) उनसे सिर्फ़ ज़बान से (बेअ़त लेते थे) वल्लाह आँह़ज़रत (ﷺ) ने औ़रतों से सिर्फ़ उन्हीं चीज़ों का अ़हद लिया जिनका अल्लाह ने आपको हुक्म दिया था। बेअ़त लेने के बाद आप उनसे फ़र्माते कि मैंने तुमसे अ़हद ले लिया है। ये आप सिर्फ़ ज़ुबान से कहते कि मैंने तुमसे बेअ़त ले ली। (राजेअ़ : 2413)

٢١- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى :

﴿لِلَّذِينَ يُؤْلُونَ مِنْ نِسَائِهِمْ تَرَبُّصُ أَرْبَعَةِ

बाब 21 : अल्लाह तआ़ला का (सूरह बक़र: में) फ़र्माना

कि वो लोग जो अपनी बीवियों से ईला करते हैं, उनके लिये

أَشْهُرٍ إِلَى قَوْلِهِ سَمِيعٌ عَلِيمٌ﴾ فَإِنْ فَاؤُوا رَجَعُوا.

चार महीने की मुद्दत मुक़र्रर है, आख़िर आयत समीउन अलीम तक फ़ाऊ के मा'नी क़सम तोड़ दें अपनी बीवी से सुहबत करें।

٥٢٨٩- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَبِي أُوَيْسٍ عَنْ أَخِيهِ عَنْ سُلَيْمَانَ عَنْ حُمَيْدٍ الطَّوِيلِ أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ يَقُولُ: آلَى رَسُولُ اللهِ ﷺ مِنْ نِسَائِهِ، وَكَانَتْ انْفَكَّتْ رِجْلُهُ، فَأَقَامَ فِي مَشْرُبَةٍ لَهُ تِسْعًا وَعِشْرِينَ ثُمَّ نَزَلَ، فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ، آلَيْتَ شَهْرًا، فَقَالَ: ((الشَّهْرُ تِسْعٌ وَعِشْرُونَ)). [راجع: ٣٧٨]

5289. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, उनसे उनके भाई अब्दुल हमीद ने, उनसे सुलैमान बिन बिलाल ने, उनसे हुमैद तवील ने कि उन्होंने हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपनी अज़्वाजे मुतह्हरात से ईला किया था। आँहज़रत (ﷺ) के पैर में मोच आ गई थी। इसलिये आपने अपने बालाख़ाना में उन्तीस दिन तक क़याम फ़र्माया, फिर आप वहाँ से उतरे। लोगों ने कहा कि या रसूलल्लाह! आपने एक महीने का ईला किया था। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि महीना उन्तीस दिन का भी होता है। (राजेअ :378)

तश्रीह : ईला क़सम खाने को कहते हैं कि कोई मर्द अपनी औरत के पास मुद्दते मुक़र्रर तक न जाने की क़सम खा ले। मज़ीद तफ़्सील नीचे की हदीष़ में मुलाहिज़ा हो। लफ़्ज़ ईला के इस्तिलाही मा'नी ये हैं कि कोई क़सम खाए कि वो अपनी औरत के पास नहीं जाएगा। जुम्हूर उलमा के नज़दीक ईला की मुद्दत चार महीने है।

٥٢٩٠- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ نَافِعٍ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا كَانَ يَقُولُ فِي الإِيلاَءِ الَّذِي سَمَّى اللهُ تَعَالَى: لاَ يَحِلُّ لأَحَدٍ بَعْدَ الأَجَلِ إِلاَّ أَنْ يُمْسِكَ بِالْمَعْرُوفِ أَوْ يَعْزِمَ بِالطَّلاَقِ كَمَا أَمَرَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ. وَقَالَ لِي إِسْمَاعِيلُ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ إِذَا مَضَتْ أَرْبَعَةُ أَشْهُرٍ، يُوقَفُ حَتَّى يُطَلِّقَ وَلاَ يَقَعُ عَلَيْهِ الطَّلاَقُ حَتَّى يُطَلِّقَ. وَيُذْكَرُ ذَلِكَ عَنْ عُثْمَانَ وَعَلِيٍّ وَأَبِي الدَّرْدَاءِ وَعَائِشَةَ وَاثْنَي عَشَرَ رَجُلاً مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

5290. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअद ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने कि इब्ने उमर (रज़ि.) उस ईला के बारे में जिसका ज़िक्र अल्लाह तआला ने किया है, फ़र्माते थे कि मुद्दत पूरी होने के बाद किसी के लिये जाइज़ नहीं, सिवा उसके कि क़ायदा के मुताबिक़ (अपनी बीवी को) अपने पास ही रोक ले या फिर तलाक़ दे, जैसा कि अल्लाह तआला ने हुक्म दिया है और हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि मुझसे इस्माईल ने बयान किया कि उनसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) ने कि जब चार महीने गुज़र जाएँ तो उसे क़ाज़ी के सामने पेश किया जाएगा, यहाँ तक कि वो तलाक़ दे दे और तलाक़ उस वक़्त तक नहीं होती जब तक तलाक़ दी न जाए और हज़रत उष़्मान, अली, अबू दर्दा और आइशा और बारह दूसरे सहाबा रिज़्वानुल्लाह अलैहिम से भी ऐसा ही मन्क़ूल है।

हनफ़िया कहते हैं कि चारे माह की मुद्दत गुज़रने पर अगर मर्द रुजूअ न करे तो ख़ुद तलाक़े बाइन पड़ जाएगी मगर हनफ़िया का ये क़ौल सहीह नहीं है तफ़्सील के लिये देखो शरह वहीदी।

बाब 22 : जो शख़्स गुम हो जाए उसके घर वालों और जायदाद में क्या अमल होगा

٢٢- باب حُكْمِ الْمَفْقُودِ فِي أَهْلِهِ وَمَالِهِ

और इब्नुल मुसय्यिब ने कहा जब जंग के वक़्त सफ़ से अगर कोई शख़्स गुम हुआ तो उसकी बीवी को एक साल उसका इंतिज़ार करना चाहिये (और फिर उसके बाद दूसरा निकाह करना चाहे) अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने एक लौण्डी किसी से ख़रीदी (अस्ल मालिक क़ीमत लिये बग़ैर कहीं चला गया और गुम हो गया) तो आपने उसके पहले मालिक को एक साल तक तलाश किया, फिर जब वो नहीं मिला तो (ग़रीबों को उस लौण्डी की क़ीमत में से) एक एक दो दो दिरहम देने लगे और आपने दुआ की कि ऐ अल्लाह! ये फ़लाँ की तरफ़ से है (जो उसका पहला मालिक था और जो क़ीमत लिये बग़ैर कहीं गुम हो गया था) फिर अगर वो (आने के बाद) उस सदक़ा से इंकार करेगा (और क़ीमत का मुतालबा करेगा तो उसका स़वाब) मुझे मिलेगा और लौण्डी की क़ीमत की अदायगी मुझ पर वाजिब होगी। इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) ने कहा कि उसी तरह तुम लुक़्ता ऐसी चीज़ को कहते हैं जो रास्ते में पड़ी हुई किसी को मिल जाए, के साथ किया करो। ज़ुह्री ने ऐसे क़ैदी के बारे में जिसकी क़याम मा'लूम हो, कहा कि उसकी बीवी दूसरा निकाह न करे और न उसका माल तक़्सीम किया जाए, फिर उसकी ख़बर मिलनी बंद हो जाए तो उसका मामला भी मफ़्क़ूदुल ख़बर की तरह हो जाता है।

وَقَالَ ابْنُ الْمُسَيَّبِ : إِذَا فُقِدَ فِي الصَّفِّ عِنْدَ الْقِتَالِ تَرَبَّصُ امْرَأَتُهُ سَنَةً. وَاشْتَرَى ابْنُ مَسْعُودٍ جَارِيَةً وَالْتَمَسَ صَاحِبَهَا سَنَةً فَلَمْ يَجِدْهُ وَفُقِدَ، فَأَخَذَ يُعْطِي الدِّرْهَمَ وَالدِّرْهَمَيْنِ وَقَالَ: اللَّهُمَّ عَنْ فُلاَنٍ فَإِنْ أَبَى فُلاَنٌ فَلِي وَعَلَيَّ، وَقَالَ: هَكَذَا فَافْعَلُوا بِاللُّقَطَةِ. وَقَالَ الزُّهْرِيُّ فِي الأَسِيرِ: يُعْلَمُ مَكَانُهُ لاَ تَتَزَوَّجُ امْرَأَتُهُ وَلاَ يُقْسَمُ مَالُهُ، فَإِذَا انْقَطَعَ خَبَرُهُ فَسُنَّتُهُ سُنَّةُ الْمَفْقُودِ.

5291. मुझसे इस्माईल ने बयान किया कि उनसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कि जब चार महीने गुज़र जाएँ तो उसे क़ाज़ी के सामने पेश किया जाएगा, यहाँ तक कि वो तलाक़ दे दे, और तलाक़ उस वक़्त तक नहीं होती जब तक तलाक़ दी न जाए। और ह़ज़रत उ़स्मान, अ़ली, अबू दर्दा और आ़इशा और बारह दूसरे सह़ाबा रिज़्वानुल्लाह अ़लैहिम से भी ऐसा ही मन्क़ूल है।

٥٢٩١- وَقَالَ لِي إِسْمَاعِيلُ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ: إِذَا مَضَتْ أَرْبَعَةُ أَشْهُرٍ يُوقَفُ حَتَّى يُطَلِّقَ وَلاَ يَقَعُ عَلَيْهِ الطَّلاَقُ حَتَّى يُطَلِّقَ. وَيُذْكَرُ ذَلِكَ عَنْ عُثْمَانَ وَعَلِيٍّ و أَبِي الدَّرْدَاءِ و عَائِشَةَ وَاثْنَيْ عَشَرَ رَجُلاً مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ.

5292. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने कहा, उनसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने, उनसे यह़्या बिन सईद ने, उनसे मुम्बइ़स़ के मौला यज़ीद ने कि नबी करीम (ﷺ) से खोई हुई बकरी के बारे में सवाल किया गया तो आपने फ़र्माया कि उसे पकड़ लो, क्योंकि या वो तुम्हारी होगी (अगर एक साल तक

٥٢٩٢- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ عَنْ يَزِيدَ مَوْلَى الْمُنْبَعِثِ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ سُئِلَ عَنْ ضَالَّةِ الْغَنَمِ فَقَالَ : ((خُذْهَا فَإِنَّمَا هِيَ لَكَ أَوْ

لأَخِيكَ أَوْ لِلذِّئْبِ)). وَسُئِلَ عَنْ ضَالَّةِ الإِبِلِ، فَغَضِبَ وَاحْمَرَّتْ وَجْنَتَاهُ وَقَالَ: ((مَا لَكَ وَلَهَا، مَعَهَا الْحِذَاءُ وَالسِّقَاءُ، تَشْرَبُ الْمَاءَ وَتَأْكُلُ الشَّجَرَ، حَتَّى يَلْقَاهَا رَبُّهَا)). وَسُئِلَ عَنِ اللُّقَطَةِ. فَقَالَ: ((اعْرِفْ وِكَاءَهَا وَعِفَاصَهَا وَعَرِّفْهَا سَنَةً. فَإِنْ جَاءَ مَنْ يَعْرِفُهَا، وَإِلاَّ فَاخْلِطْهَا بِمَالِكَ)). قَالَ سُفْيَانُ: فَلَقِيتُ رَبِيعَةَ بْنَ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ قَالَ سُفْيَانُ: وَلَمْ أَحْفَظْ عَنْهُ شَيْئاً غَيْرَ هَذَا فَقُلْتُ: أَرَأَيْتَ حَدِيثَ يَزِيدَ مَوْلَى الْمُنْبَعِثِ فِي أَمْرِ الضَّالَّةِ هُوَ عَنْ زَيْدِ بْنِ خَالِدٍ؟ قَالَ : نَعَمْ، قَالَ يَحْيَى وَيَقُولُ رَبِيعَةُ عَنْ يَزِيدَ مَوْلَى الْمُنْبَعِثِ عَنْ زَيْدِ بْنِ خَالِدٍ، قَالَ سُفْيَانُ : فَلَقِيتُ رَبِيعَةَ فَقُلْتُ لَهُ. [راجع: ٩١]

ऐलान के बाद उसका मालिक न मिला) या तुम्हारे किसी भाई की होगी या फिर भेड़िये की होगी (अगर ये उन्ही जंगलों में फिरती रही) और आँहज़रत (ﷺ) से खोये हुए ऊँट के बारे में सवाल किया गया तो आप ग़ुस्सा हो गये और ग़ुस्सा की वजह से आपके दोनों रुख़सार सुर्ख़ हो गये और आपने फ़र्माया, तुम्हें उससे क्या ग़र्ज़! उसके पास (मज़बूत) खुर हैं (जिसकी वजह से चलने में उसे कोई दुश्वारी नहीं होगी) उसके पास मशकीज़े है जिससे वो पानी पीता रहेगा और पेड़ के पत्ते खाता रहेगा, यहाँ तक कि उसका मालिक उसे पा लेगा और नबी (ﷺ) से लुक़्ता के बारे में सवाल किया गया तो आपने फ़र्माया कि उसकी रस्सी का (जिससे वो बँधा हो) और उसके ज़ुर्फ़ का (जिसमें वो रखा हो) ऐलान करो और उसका एक साल तक ऐलान करो, फिर अगर कोई ऐसा शख़्स आ जाए जो उसे पहचानता हो (और उसका मालिक हो तो उसे दे दो) वरना उसे अपने माल के साथ मिला लो। सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया कि फिर मैं रबीआ बिन अ़ब्दुर्रहमान से मिला और मुझे उनसे उसके सिवा और कोई चीज़ महफ़ूज़ नहीं है। मैंने उनसे पूछा था कि गुमशुदा चीज़ों के बारे में मुम्बइ़ष के मौला यज़ीद की ह़दीष़ के बारे में आपका क्या ख़याल है? क्या वो ज़ैद बिन ख़ालिद से मन्क़ूल है? तो उन्होंने कहा कि हाँ (सुफ़यान ने बयान किया कि हाँ) यह्या ने बयान किया कि रबीआ ने मुम्बइ़ष के मौला यज़ीद से बयान किया, उनसे ज़ैद बिन ख़ालिद ने। सुफ़यान ने बयान किया कि फिर मैंने रबीआ से मुलाक़ात की और उनसे उसके बारे में पूछा। (राजेअ : 91)

तश्रीह : या'नी ऊँट के पकड़ने की क्या ज़रूरत है उसको खाने पीने चलने में किसी की मदद और हिफ़ाज़त की ज़रूरत है न भेड़िये का डर है। इस ह़दीष़ की मुनासबत बाब का तर्जुमा से मुश्किल है। कुछ ने कहा इस ह़दीष़ से ये निकला कि दूसरे के माल में तसर्रुफ़ करना उस वक़्त तक जाइज़ नहीं जब तक उसके ज़ाये होने का डर न हो पस इसी त़रह मफ़्क़ूद की औरत में भी तसर्रुफ़ करना जाइज़ नहीं जब तक उसके शौहर की मौत यक़ीनी न हो। मैं (वह़ीदुज़्ज़माँ मरहूम) कहता हूँ ये क़यास स़ह़ीह़ नहीं है और ह़ज़रत उ़मर, ह़ज़रत उ़ष्मान, इब्ने उ़मर, ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास, इब्ने मसऊ़द और कई स़ह़ाबा (रज़ि.) से सही सनदों के साथ मरवी है, उनको सईद बिन मंसूर और अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने निकाला कि मफ़्क़ूद की औरत चार बरस तक इंतिज़ार करे। अगर इस अ़र्से तक उसकी ख़बर न मा'लूम हो तो उसकी औरत दूसरा निकाह़ कर ले और एक जमाअ़त ताबेईन जैसे इब्राहीम नख़ई और अ़ता और ज़ुह्री और मक्हूल और शअ़बी उसी के क़ाइल हुए हैं और इमाम अह़मद और इस्ह़ाक़ ने कहा उसके लिये कोई मुद्दत मुक़र्रर नहीं। मुद्दत उसके वास्ते है जो लड़ाई में गुम हो या दरिया में और ह़नफ़िया और शाफ़िइया ने कहा मफ़्क़ूद की औरत उस वक़्त तक निकाह़ न करे जब तक कि शौहर का ज़िन्दा या मुर्दा होना ज़ाहिर न हो और ह़नफ़िया ने उसकी मुद्दत नब्बे बरस या सौ बरस या 120 बरस की है और दलील ली है। इस मर्फ़ूअ़ ह़दीष़ से कि मफ़्क़ूद की औरत उसी की औरत है यहाँ तक कि ह़ाल खुले। अबू उ़बैदह ने अ़ली (रज़ि.) से और अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने इब्ने मसऊ़द

(रज़ि.) से ऐसा ही नक़ल किया है मगर मर्फ़ूअ ह़दीष़ ज़ईफ़ और स़ह़ीह़ उसका वक़्फ़ है और इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) से दूसरी रिवायत में चार बरस की मुद्दत मन्क़ूल है और अ़ली (रज़ि.) की रिवायत भी ज़ईफ़ है तो स़ह़ीह़ वही चार साल की मुद्दत हुई और अगर औ़रत को ह़नफ़िया या शाफ़िया या ह़नाबिला के मज़हब के मुवाफ़िक़ उधर रखा जाए तो उसमें स़रीह़ ज़रर पहुँचाना है पस क़ाज़ी मफ़्क़ूद की औ़रत का निकाह़ फ़स्ख़ कर सकता है जब देखे कि औ़रत को तकलीफ़ है या उसको नान नफ़्क़ा देने वाला कोई नहीं और ह़नफ़िया और शाफ़िइया और ह़नाबिला के मज़हब के मुवाफ़िक़ तो शायद ही दुनिया में कोई औ़रत निकले जो सारी उ़म्र बिन शौहर के बाइज़्ज़त साथ बैठी रहे। अगर बिल फ़र्ज़ बैठी भी रहे तो फिर नब्बे साल या सौ साल या 120 साल शौहर की उ़म्र होने पर या उसके सब हम उ़म्र मर जाने पर औ़रत की उ़म्र भी तो नब्बे साल से या अस्सी साल से ग़ालिबन कम न रहेगी और इस उ़म्र में निकाह़ की इजाज़त देना गोया उ़ज़्र बदतर अज़्गुनाह है। हमारी शरीअ़त में नान नफ़्क़ा न देने या नामर्दी की वजह से जब निकाह़ का फ़स्ख़ जाइज़ है तो मफ़्क़ूद भी बत़रीक़े औला जाइज़ होना चाहिये और तअ़ज्जुब ये है कि ह़नफ़िया ईला में या'नी चार महीने तक औ़रत के पास न जाने की क़सम में तो ये हुक्म देते हैं कि चार महीने गुज़रने पर उस औ़रत को एक त़लाक़ बाइन पड़ जाती है और यहाँ इस बेचारी औ़रत की सारी जवानी बर्बाद होने पर भी उनको रह़म नहीं आता। फ़र्माते हैं कि मौत इक़रान के बाद दूसरा निकाह़ नहीं कर सकती है। क्या ख़ूब इंस़ाफ़ है अब अगर औ़रत दूसरा निकाह़ कर ले उसके बाद पहले शौहर का ह़ाल मा'लूम हो कि वो ज़िन्दा है तो वो पहले ही शौहर की औ़रत होगी और शअ़बी ने कहा दूसरे शौहर से क़ाज़ी उसको जुदा कर देगा वो इद्दत पूरी करके फिर पहले शौहर के पास रहे। अगर पहला शौहर मर जाए तो उसकी भी इद्दत बैठे और उसकी वारिष़ भी होगी। कुछ ने कहा पहला शौहर अगर आए तो उसको इख़्तियार होगा चाहे अपनी औ़रत दूसरे शौहर से छीन ले चाहे जो महर औ़रत को दिया हो वो उससे वसूल कर लेवे। मैं (वह़ीदुज़्ज़माँ मरहूम) कहता हूँ अगर मफ़्क़ूद ने बिला बहाने अपना अह़वाल मख़्फ़ी रखा था और औ़रत के लिये नान नफ़्क़ा का इंतिज़ाम नहीं करके गया था न कुछ जायदाद छोड़कर गया था तो क़यास ये है कि वो अपनी ज़ोजा को दूसरे शौहर से नहीं फेर सकता और अगर उ़ज़्र मा'क़ूल ष़ाबित हो जिसकी वजह से ख़बर न भेज सका और वो अपनी ज़ोजा के लिये नान नफ़्क़ा की जायदाद छोड़ गया था या बन्दोबस्त कर गया था तब उसको इख़्तियार होना चाहिये, ख़्वाह औ़रत फेर ले ख़्वाह महर जो दिया हो वो दूसरे शौहर से ले ले और ये क़ौल गो जदीद है और इत्तिफ़ाक़ उ़लमा के ख़िलाफ़ है मगर मुक़्तज़ाए इंसाफ़ है। वल्लाह आलम (शरह़ मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ)

बाब 23 : ज़िहार का बयान और अल्लाह तआ़ला का सूरह मुजादिला में फ़र्माना, अल्लाह ने उस औ़रत की बात सुन ली जो आपसे, अपने शौहर के बारे में बह़ष़ करती थी

٢٣- باب الظِّهَارِ وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى ﴿قَدْ سَمِعَ اللهُ قَوْلَ الَّتِي تُجَادِلُكَ فِي زَوْجِهَا

आयत फ़मल्लम यस्तति़अ फ़इत़्आमु सित्तीन मिस्कीना) तक, और मुझसे इस्माईल ने बयान किया, कहा मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया कि उन्होंने इब्ने शिहाब से किसी ने ये मसला पूछा तो उन्होंने बतलाया कि उसका ज़िहार भी आज़ाद के ज़िहार की त़रह होगा। इमाम मालिक ने बयान किया कि गुलाम रोज़े दो महीने के रखेगा। ह़सन बिन हुर्र ने कहा कि आज़ाद मर्द या गुलाम का ज़िहार आज़ाद औ़रत या लौण्डी से यक्साँ है। इक्रिमा ने कहा कि अगर कोई शख़्स़ अपनी लौण्डी से ज़िहार करे तो उसकी कोई ह़ैष़ियत नहीं होती। ज़िहार अपनी बीवियों से होता है और अ़रबी ज़ुबान में लाम फ़ी के

- إِلَى قَوْلِهِ - فَمَنْ لَمْ يَسْتَطِعْ فَإِطْعَامُ سِتِّينَ مِسْكِينًا﴾ وَقَالَ لِي إِسْمَاعِيلُ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ أَنَّهُ سَأَلَ ابْنَ شِهَابٍ عَنْ ظِهَارِ الْعَبْدِ، فَقَالَ: نَحْوَ ظِهَارِ الْحُرِّ، قَالَ مَالِكٌ: وَصِيَامُ الْعَبْدِ شَهْرَانِ، وَقَالَ الْحَسَنُ بْنُ الْحُرِّ: ظِهَارُ الْحُرِّ وَالْعَبْدِ مِنَ الْحُرَّةِ وَالأَمَةِ سَوَاءٌ، وَقَالَ عِكْرِمَةُ : إِنْ ظَاهَرَ مِنْ أَمَتِهِ فَلَيْسَ بِشَيْءٍ إِنَّمَا الظِّهَارُ

مِنَ النِّسَاءِ، وَفِي الْعَرَبِيَّةِ لِمَا قَالُوا: أَيْ فِيمَا قَالُوا : وَفِي بَعْضِ مَا قَالُوا، وَهَذَا أَوْلَى، لأَنَّ اللهَ تَعَالَى لَمْ يَدُلَّ عَلَى الْمُنْكَرِ وَقَوْلِ الزُّورِ.

मा'नों में आता है तो यऊदूना लिमा क़ालू का ये मा'नी होगा कि फिर उस औरत को रखना चाहें और ज़िहार के कलिमा को बातिल करना और ये तर्जुमा उससे बेहतर है क्योंकि ज़िहार को अल्लाह ने बुरी बात और झूठ फ़र्माया है उसको दोहराने के लिये कैसे कहेगा।

औरत ख़ौला बिन्ते ष़अ़ल्बा थी जिसके बारे में सूरह मुजादला की इब्तिदाई आयात का नुज़ूल हुआ।

तश्रीह : शौहर का अपनी बीवी को अपनी किसी ज़ी रह़म मह़रम औरत के किसी ऐसे अ़ज़्व से तश्बीह देना जिसे देखना उसके लिये ह़राम हो, ज़िहार कहलाता है। अगर कोई शख़्स अपनी बीवी से ज़िहार कर ले तो उस वक़्त तक उसका अपनी बीवी से मिलना ह़राम है जब तक कि वो उसका कफ़्फ़ारा न दे ले। उसके कफ़्फ़ारे का ज़िक्र मज़्कूरा बाला आयत में हुआ है। वो दो महीने लगातार रोज़े रखना और त़ाक़त न हो तो फिर साठ मिस्कीनों को खाना खिलाना है।

٢٤- باب الإِشَارَةِ فِي الطَّلاَقِ وَالأُمُورِ

बाब 24 : अगर त़लाक़ वग़ैरह इशारे से दे मष़लन वो गूँगा हो तो क्या हुक्म है?

وَقَالَ ابْنُ عُمَرَ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لاَ يُعَذِّبُ اللهُ بِدَمْعِ الْعَيْنِ، وَلَكِنْ يُعَذِّبُ بِهَذَا))، فَأَشَارَ إِلَى لِسَانِهِ. وَقَالَ كَعْبُ بْنُ مَالِكٍ: أَشَارَ النَّبِيُّ ﷺ إِلَيَّ أَيْ خُذِ النِّصْفَ، وَقَالَتْ أَسْمَاءُ: صَلَّى النَّبِيُّ ﷺ فِي الْكُسُوفِ، فَقُلْتُ لِعَائِشَةَ مَا شَأْنُ النَّاسِ وَهِيَ تُصَلِّي فَأَوْمَأَتْ بِرَأْسِهَا إِلَى الشَّمْسِ، فَقُلْتُ آيَةٌ؟ فَأَوْمَأَتْ بِرَأْسِهَا، أَيْ نَعَمْ. وَقَالَ أَنَسٌ: أَوْمَأَ النَّبِيُّ ﷺ بِيَدِهِ إِلَى أَبِي بَكْرٍ أَنْ يَتَقَدَّمَ وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: أَوْمَأَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِيَدِهِ لاَ حَرَجَ. وَقَالَ أَبُو قَتَادَةَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((فِي الصَّيْدِ لِلْمُحْرِمِ آحَدٌ مِنْكُمْ)). أَمَرَهُ أَنْ يَحْمِلَ عَلَيْهَا أَوْ أَشَارَ إِلَيْهَا قَالُوا لاَ، قَالَ ((فَكُلُوا)).

और इब्ने ड़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह तआ़ला आँख के आंसू पर अ़ज़ाब नहीं देगा लेकिन उस पर अ़ज़ाब देगा, उस वक़्त आपने ज़ुबान की त़रफ़ इशारा किया (कि नौह़ा अ़ज़ाबे इलाही का बाअ़िष़ है) और कअ़ब बिन मालिक (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने (एक क़र्ज़ के सिलसिले में जो मेरा एक स़ाह़ब पर था) मेरी त़रफ़ इशारा किया कि आधा ले लो (और आधा छोड़ दो) अस्मा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) कसूफ़ की नमाज़ पढ़ रहे थे (मैं पहुँची और) आइशा (रज़ि.) से पूछा कि लोग क्या कर रहे हैं? आइशा (रज़ि.) भी नमाज़ पढ़ रही थीं। इसलिये उन्होंने अपने सर से सूरज की त़रफ़ इशारा किया (कि ये सूरज ग्रहण की नमाज़ है) मैंने कहा, क्या ये कोई निशानी है? उन्होंने अपने सर के इशारे से बताया कि हाँ और अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने अपने हाथ से अबूबक्र (रज़ि.) को इशारा किया कि आगे बढ़ें। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने अपने हाथ से इशारा किया कि कोई ह़र्ज नहीं और अबू क़तादा ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने मह़रम के शिकार के सिलसिले में दरयाफ़्त किया कि क्या तुममें से किसी ने शिकारी को शिकार मारने के लिये कहा था या उसकी त़रफ़ इशारा किया था? स़ह़ाबा ने अ़र्ज़ किया कि नहीं । आँह़ज़रत

(ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर (उसका गोश्त) खाओ।

हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने इस बाब के ज़ेल वो अहादीष़ बयान की हैं जिनसे ये निकलता है कि जिस इशारे से मतलब समझा जावे तो वो बोलने की तरह है अगर गूँगा शख़्स एक उँगली उठाकर तलाक़ का इशारा करे तो तलाक़ पड़ जाएगी। इन जुम्ला आष़ारे मज़्कूरा में ऐसे ही मतलब वाले इशारात का ज़िक्र है जिनको मुअतबर समझा गया।

5293. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे अबू आ़मिर अ़ब्दुल मलिक बिन अ़म्र ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन तह्मान ने बयान किया, उनसे ख़ालिद हज़्ज़ाअ ने, उनसे इक्रिमा ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने बैतुल्लाह का तवाफ़ अपने ऊँट पर सवार होकर किया और आँहज़रत (ﷺ) जब भी रुक्न के पास आते तो उसकी तरफ़ इशारा करके तक्बीर कहते और ज़ैनब बिन्ते जहश (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, याजूज माजूज के दीवार में इतना सूराख़ हो गया है और आपने अपनी उँगलियों से नब्बे का अ़दद बनाया। (राजेअ़ : 1607)

٥٢٩٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ عَمْرٍو حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ عَنْ خَالِدٍ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: طَافَ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَلَى بَعِيرِهِ، وَكَانَ كُلَّمَا أَتَى عَلَى الرُّكْنِ أَشَارَ إِلَيْهِ وَكَبَّرَ وَقَالَتْ زَيْنَبُ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((فُتِحَ مِنْ رَدْمِ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ، مِثْلُ هَذِهِ. وَعَقَدَ تِسْعِينَ)).

[راجع: ١٦٠٧]

इस हदीष़ में भी चंद इशारात को मुअ़तबर समझा गया हदीष़ और बाब में यही वजहे मुताबक़त है।

5294. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उनसे बिशर बिन मुफ़ज़्ज़ल ने बयान किया, उनसे सलमा बिन अ़ल्क़मा ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन सीरीन ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि अबुल क़ासिम (ﷺ) ने फ़र्माया जुम्आ में एक ऐसी घड़ी आती है जो मुसलमान भी उस वक़्त खड़ा नमाज़ पढ़े और अल्लाह से कोई ख़ैर मांगे तो अल्लाह उसे ज़रूर देगा। आँहज़रत (ﷺ) ने (इस साअ़त की वज़ाहत करते हुए) अपने दस्ते मुबारक से इशारा किया और अपनी उँगलियों को दरम्यानी उँगली और छोटी उँगली के बीच में रखा जिससे हमने समझा कि आप इस साअ़त को बहुत मुख़्तसर होने को बता रहे हैं। (राजेअ़ : 935)

٥٢٩٤- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ الْمُفَضَّلِ حَدَّثَنَا سَلَمَةُ بْنُ عَلْقَمَةَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ أَبُو الْقَاسِمِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((فِي الْجُمُعَةِ سَاعَةٌ لاَ يُوَافِقُهَا مُسْلِمٌ قَائِمٌ يُصَلِّي يَسْأَلُ اللهَ خَيْرًا إِلاَّ أَعْطَاهُ)). وَقَالَ: بِيَدِهِ وَوَضَعَ أَنْمِلَتَهُ عَلَى بَطْنِ الْوُسْطَى وَالْخِنْصَرِ. قُلْنَا يُزَهِّدُهَا.

[راجع: ٩٣٥]

5295. और उवैसी ने बयान किया, उनसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे शुअ़बा बिन हज्जाज ने, उनसे हिशाम बिन यज़ीद ने, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में एक यहूदी ने एक लड़की पर ज़ुल्म किया, उसके चाँदी के ज़ेवरात जो वो पहने

٥٢٩٥- وَقَالَ الأُوَيْسِيُّ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ شُعْبَةَ بْنِ الْحَجَّاجِ عَنْ هِشَامِ بْنِ زَيْدٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: عَدَا يَهُودِيٌّ فِي عَهْدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ عَلَى

جَارِيَةٍ فَأَخَذَ أَوْضَاحًا كَانَتْ عَلَيْهَا، وَرَضَخَ رَأْسَهَا، فَأَتَى بِهَا أَهْلُهَا رَسُولَ اللهِ ﷺ وَهِيَ فِي آخِرِ رَمَقٍ وَقَدْ أُصْمِتَتْ فَقَالَ لَهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَنْ قَتَلَكِ؟ فُلاَنٌ؟)) لِغَيْرِ الَّذِي قَتَلَهَا، فَأَشَارَتْ بِرَأْسِهَا أَنْ لاَ. قَالَ فَقَالَ لِرَجُلٍ آخَرَ غَيْرَ الَّذِي قَتَلَهَا فَأَشَارَتْ أَنْ لاَ. فَقَالَ: ((فَفُلاَنٌ)) لِقَاتِلِهَا فَأَشَارَتْ أَنْ نَعَمْ، فَأَمَرَ بِهِ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَرُضِخَ رَأْسُهُ بَيْنَ حَجَرَيْنِ.

[راجع: ٢٤١٣]

हुए थी छीन लिये औरउसका सर कुचल दिया। लड़की के घर वाले उसे आँहज़रत (ﷺ) के पास लाए तो उसकी ज़िंदगी की बस आख़िरी घड़ी बाक़ी थी और वो बोल नहीं सकती थी। आँहज़रत (ﷺ) ने उससे पूछा कि तुम्हें किसने मारा है? फ़लाँ ने? आँहज़रत (ﷺ) ने इस वाक़िया से ग़ैर मुता'ल्लिक़ आदमी का नाम लिया। इसलिये उसने अपने सर के इशारे से कहा कि नहीं। बयान किया कि फिर आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा कि फ़लाँ ने तुम्हें मारा है? तो उस लड़की ने सर के इशारे से हाँ कहा।

(राजेअ: 2413)

तश्रीह: इसके बाद उस यहूदी ने भी उस जुर्म का इक़रार कर लिया तो आँहज़रत (ﷺ) ने उसके लिये हुक्म दिया और उसका सर भी दो पत्थरों से कुचल दिया गया। इस ह़दीष़ मे भी कुछ इशारात को क़ाबिले इस्तिनाद जाना गया। यही वजहे मुत़ाबक़त है।

जिस त़रह़ उस बदबख़्त ने उस मा'सूम लड़की को बेदर्दी से मारा था उसी त़रह़ उससे क़िस़ास़ लिया गया। अहले ह़दीष़ और हमारे इमाम अह़मद बिन ह़ंबल और मालिकिया और शाफ़िइया सबका मज़हब इसी ह़दीष़ के मुवाफ़िक़ है कि क़ातिल ने जिस त़रह़ मक़्तूल का क़त्ल किया है उसी त़रह़ उससे भी क़िस़ास़ लिया जाएगा लेकिन ह़नफ़िया उसके खिलाफ़ कहते हैं कि हमेशा क़िस़ास़ तलवार से लेना चाहिये। आँहज़रत (ﷺ) ने जो दो बार उस लड़की से औरों का नाम लेकर पूछा उससे ये मत़लब था कि उससे उस लड़की का होश व ह़वास वाली होना ष़ाबित हो जाए और उसकी शहादत पूरी मुअतबर समझी जाए। इस ह़दीष़ से गवाही बवक़्ते मर्ग का एक उ़म्दा गवाही होना निकलता है जिसे अंग्रेज़ों ने अपने क़ानूने शहादत में भी एक क़ाबिले ए'तिबार शहादत किया है। (वह़ीदी)

٥٢٩٦- حدثني قَبِيصَةُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((الْفِتْنَةُ مِنْ هُنَا. وَأَشَارَ إِلَى الْمَشْرِقِ)).

5296. हमसे क़ुबैस़ा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने और उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना आप फ़र्मा रहे थे कि फ़ित्ना उधर से उठेगा और आपने मश्रिक़ की त़रफ़ इशारा किया।

तश्रीह: या'नी मश्रिक़ी ममालिक की त़रफ़। इस ह़दीष़ में किसी शख़्स़ का नाम मज़्कूर नहीं बल्कि जो शख़्स़ मश्रिक़ की त़रफ़ से नमूदार हो और गुमराही और बेदीनी की दा'वत दे वो इससे मुराद हो सकता है और तअज्जुब है उन लोगों पर जिन्होंने ह़ज़रत इमाम मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल वह्हाब को इस फ़ित्ने से मुराद लिया है। ह़ज़रत इमाम मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल वह्हाब तो लोगों को तौह़ीद और इत्तिबाअ़े सुन्नत की त़रफ़ बुलाते थे। उन्होंने अहले मक्का को जो रिसाला लिखकर भेजा है उसमें स़ाफ़ ये मरक़ूम है कि क़ुर्आन और स़ह़ीह़ ह़दीष़ हमारे और तुम्हारे दरम्यान हुक्म है, इस पर अ़मल करो। अल्बत्ता मुमालिक मश्रिक़ी में सय्यद अह़मद ख़ाँ रईस नियाचरा और मिर्ज़ा ग़ुलाम अह़मद क़ादयानी इस ह़दीष़ के मिस्दाक़ हो सकते हैं। हमारे उस्ताद मौलाना बशीरुद्दीन स़ाह़ब क़न्नोजी मुह़द्दिष़ फ़र्माते थे कि मश्रिक़ से मुराद बदायून का क़स्बा है वहीं से फ़ज़्ले रसूल ज़ाहिर हुआ जिसने दुनिया में बहुत सी बिदअ़तें फैलाईं और

अहले ह़दीष़ और अहले तौह़ीद को काफ़िर क़रार दिया। (वह़ीदी)

5297. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन अ़ब्दुल ह़मीद ने बयान किया, उनसे अबू इस्ह़ाक़ शैबानी ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा ने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ एक सफ़र में थे। जब सूरज डूब गया तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने एक स़ह़ाबी (ह़ज़रत बिलाल रज़ि.) से फ़र्माया कि उतरकर मेरे लिये सत्तू घोल (क्योंकि आप रोज़े से थे) उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! अगर अंधेरा होने दें तो बेहतर है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फिर फ़र्माया कि उतरकर सत्तू घोल। उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! अगर आप और अंधेरा हो लेने दें तो बेहतर है, अभी दिन बाक़ी है। फिर आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उतरो और सत्तू घोल लो। आख़िर तीसरी मर्तबा कहने पर उन्होंने उतरकर आँह़ज़रत (ﷺ) का सत्तू घोला। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उसे पिया, फिर आपने अपने हाथ से मश्रिक़ की त़रफ़ इशारा किया और फ़र्माया कि जब तुम देखो की रात इधर से आ रही है तो रोज़ेदार को इफ्तार कर लेना चाहिये। (राजेअ़ : 1941)

٥٢٩٧- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا جَرِيرُ بْنُ عَبْدِ الْحَمِيدِ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ الشَّيْبَانِيِّ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي أَوْفَى قَالَ: كُنَّا فِي سَفَرٍ مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ، فَلَمَّا غَرَبَتِ الشَّمْسُ قَالَ لِرَجُلٍ: ((انْزِلْ فَاجْدَحْ لِي)) قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، لَوْ أَمْسَيْتَ ثُمَّ قَالَ: ((انْزِلْ فَاجْدَحْ)) قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، لَوْ أَمْسَيْتَ إِنَّ عَلَيْكَ نَهَارًا. ثُمَّ قَالَ: ((انْزِلْ فَاجْدَحْ)) فَنَزَلَ، فَجَدَحَ لَهُ فِي الثَّالِثَةِ، فَشَرِبَ رَسُولُ اللهِ ﷺ، ثُمَّ أَوْمَأَ بِيَدِهِ إِلَى الْمَشْرِقِ فَقَالَ: ((إِذَا رَأَيْتُمُ اللَّيْلَ قَدْ أَقْبَلَ مِنْ هَهُنَا فَقَدْ أَفْطَرَ الصَّائِمُ)). [راجع: ١٩٤١]

5298. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन सलमा ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ़ ने बयान किया, उनसे सुलैमान तैमी ने, उनसे अबू उ़ष़्मान ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, तुममें से किसी को (सेह़री खाने से) बिलाल की पुकार न रोके, या आपने फ़र्माया कि, उनकी अज़ान क्योंकि वो पुकारते हैं, या फ़र्माया, अज़ान देते हैं ताकि उस वक़्त नमाज़ पढ़ने वाला रुक जाए। उसका ऐलान से ये मक़्सूद नहीं होता कि सुबह़ स़ादिक़ हो गइ। उस वक़्त यज़ीद बिन ज़ुरैअ़ ने अपने दोनों हाथ बुलंद किये (सुबह़ काज़िब की स़ूरत बताने के लिये) फिर एक हाथ को दूसरे हाथ पर फैलाया (सुबह़ स़ादिक़ की स़ूरत के इज़्हार के लिये)। (राजेअ़ : 621)

٥٢٩٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ سَلَمَةَ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ عَنْ سُلَيْمَانَ التَّيْمِيِّ عَنْ أَبِي عُثْمَانَ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لاَ يَمْنَعَنَّ أَحَدًا مِنْكُمْ نِدَاءُ بِلاَلٍ))، أَوْ قَالَ: ((أَذَانُهُ مِنْ سَحُورِهِ فَإِنَّمَا يُنَادِي)). أَوْ قَالَ: ((يُؤَذِّنُ لِيَرْجِعَ قَائِمَكُمْ وَلَيْسَ أَنْ يَقُولَ كَأَنَّهُ يَعْنِي الصُّبْحَ أَوِ الْفَجْرَ)) وَأَظْهَرَ يَزِيدُ يَدَيْهِ ثُمَّ مَدَّ إِحْدَاهُمَا مِنَ الأُخْرَى. [راجع: ٦٢١]

5299. और लैष़ ने बयान किया कि उनसे जा'फ़र बिन रबीआ़ ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन हुर्मुज़ ने, उन्होंने ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, बख़ील और सख़ी की मिष़ाल दो आदमियों जैसी

٥٢٩٩- وَقَالَ اللَّيْثُ حَدَّثَنِي جَعْفَرُ بْنُ رَبِيعَةَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ هُرْمُزَ سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَثَلُ

الْبَخِيلِ وَالْمُنْفِقِ، كَمَثَلِ رَجُلَيْنِ عَلَيْهِمَا جُبَّتَانِ مِنْ حَدِيدٍ مِنْ لَدُنْ ثَدْيَيْهِمَا إِلَى تَرَاقِيهِمَا، فَأَمَّا الْمُنْفِقُ فَلاَ يُنْفِقُ شَيْئاً إِلاَّ مَادَّتْ عَلَى جِلْدِهِ حَتَّى تُجِنَّ بَنَانَهُ وَتَعْفُوَ أَثَرَهُ، وَأَمَّا الْبَخِيلُ فَلاَ يُرِيدُ، يُنْفِقُ إِلاَّ لَزِمَتْ كُلُّ حَلْقَةٍ مَوْضِعَهَا، فَهُوَ يُوسِعُهَا وَلاَ تَتَّسِعُ، وَيُشِيرُ بِإِصْبَعِهِ إِلَى حَلْقِهِ)).

[راجع: ١٤٤٣].

है जिन पर लोहे की दो ज़िरहें सीने से गर्दन तक हैं। सख़ी जब भी कोई चीज़ ख़र्च करता है तो ज़िरह उसके चमड़े पर ढीली हो जाती है और उसके पैर की उँगलियों तक पहुँच जाती है (और फैलकर इतनी बढ़ जाती है कि) उसके निशान क़दम को मिटाती चलती है लेकिन बख़ील जब भी ख़र्च का इरादा करता है तो उसकी ज़िरह का हर ह़ल्क़ा अपनी अपनी जगह चिमट जाता है, वो उसे ढीला करना चाहता है लेकिन वो ढीला नहीं होता। उस वक़्त आपने अपनी उँगली से अपने ह़लक़ की त़रफ़ इशारा किया। (राजेअ : 1443)

तश्रीह : इन तमाम अह़ादीष़ में कुछ मख़्सूस़ आदमियों की त़रफ़ से इशारात का होना मुअतबर समझा गया। बाब और इन अह़ादीष़ में यही वजहे मुत़ाबक़त है।

٢٥- باب اللِّعَانِ وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى:

﴿وَالَّذِينَ يَرْمُونَ أَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ شُهَدَاءُ إِلاَّ أَنْفُسُهُمْ﴾ إِلَى قَوْلِهِ ﴿الصَّادِقِينَ﴾ فَإِذَا قَذَفَ الأَخْرَسُ امْرَأَتَهُ بِكِتَابَةٍ أَوْ إِشَارَةٍ أَوْ إِيمَاءٍ مَعْرُوفٍ فَهُوَ كَالْمُتَكَلِّمِ، لأَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَدْ أَجَازَ الإِشَارَةَ فِي الْفَرَائِضِ، وَهُوَ قَوْلُ بَعْضِ أَهْلِ الْحِجَازِ وَأَهْلِ الْعِلْمِ، وَقَالَ اللهُ تَعَالَى ﴿فَأَشَارَتْ إِلَيْهِ، قَالُوا : كَيْفَ نُكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِي الْمَهْدِ صَبِيًّا﴾ وَقَالَ الضَّحَّاكُ ﴿إِلاَّ رَمْزًا﴾ إِلاَّ إِشَارَةً. وَقَالَ بَعْضُ النَّاسِ لاَ حَدَّ وَلاَ لِعَانَ. ثُمَّ زَعَمَ أَنَّ الطَّلاَقَ بِكِتَابٍ أَوْ إِشَارَةٍ أَوْ إِيمَاءٍ جَائِزٌ. وَلَيْسَ بَيْنَ الطَّلاَقِ وَالْقَذْفِ فَرْقٌ. فَإِنْ قَالَ: الْقَذْفُ لاَ يَكُونُ إِلاَّ بِكَلاَمٍ، قِيلَ لَهُ: كَذَلِكَ الطَّلاَقُ لاَ يَجُوزُ إِلاَّ بِكَلاَمٍ. وَإِلاَّ بَطَلَ الطَّلاَقُ وَالْقَذْفُ، وَكَذَلِكَ الْعِتْقُ.

बाब : 25 लिआ़न का बयान

और अल्लाह तआ़ला ने सूरह नूर में फ़र्माया और जो लोग अपनी बीवियों पर तोहमत लगाते हैं और उनके पास उनकी ज़ात के सिवा कोई गवाह न हो, आख़िर आयत मिनस्स़ादिक़ीन तक। अगर गूँगा अपनी बीवी पर लिखकर, इशारा से या किसी मख़्सूस़ इशारा से तोहमत लगाए तो उसकी ह़ैषियत बोलने वाले की सी होगी क्योंकि नबी करीम (ﷺ) ने फ़राइज़ में इशारा को जाइज़ क़रार दिया है और यही कुछ अहले ह़िजाज़ और कुछ दूसरे अहले इल्म का फ़त्वा है और अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया, और (मरयम अ़लैहि.ने) उनकी (ईसा अ़लैहि.) त़रफ़ इशारा किया तो लोगों ने कहा कि हम उससे किस त़रह बातचीत कर सकते हैं जो अभी गहवारा में बच्चा है। और ज़ह़्ह़ाक ने कहा कि इल्ला रम्ज़ा बमा'नी अल इशारा है कुछ लोगों ने कहा है कि (इशारे से) ह़द और लिआ़न नहीं हो सकती, जबकि वो ये मानते हैं कि त़लाक़ किताबत, इशारा और ईमाअ से हो सकती है। ह़ालाँकि त़लाक़ और तोहमत में कोई फ़र्क़ नहीं है। अगर वो उसके मुद्दई हों कि तोहमत स़िर्फ़ कलाम ही के ज़रिये मानी जाएगी तो उनसे कहा जाएगा कि फिर यही स़ूरत त़लाक़ में भी होनी चाहिये और वो भी स़िर्फ़ कलाम ही के ज़रिये मुअतबर माना जाना चाहिये वरना त़लाक़ और तोहमत (अगर इशारा से हो) तो सबको बात़िल मानना चाहिये और (इशारा से ग़ुलाम की) आज़ादी का भी

وَكَذَلِكَ الأَصَمُّ يُلاعِنُ. وَقَالَ الشَّعْبِيُّ وَقَتَادَةُ: إِذَا قَالَ أَنْتِ طَالِقٌ فَأَشَارَ بِأَصَابِعِهِ تَبِينُ مِنْهُ بِإِشَارَتِهِ. وَقَالَ إِبْرَاهِيمُ. الأَخْرَسُ إِذَا كَتَبَ الطَّلاَقَ بِيَدِهِ لَزِمَهُ. وَقَالَ حَمَّادٌ: الأَخْرَسُ وَالأَصَمُّ إِنْ قَالَ بِرَأْسِهِ جَازَ.

यही हश्र होगा और यही सूरत लिआन करने वाले गूँगे के साथ भी पेश आएगी और शअबी और क़तादा ने बयान किया कि जब किसी शख़्स. ने अपनी बीवी से कहा कि, तुझे तलाक़ है, और अपनी उँगलियों से इशारा किया तो वो मुतल्लक़ा बाइना हो जाएगी। इब्राहीम ने कहा कि गूँगा अगर तलाक़ अपने हाथ से लिखे तो वो पड़ जाती है। हम्माद ने कहा कि गूँगे और बहरे अगर अपने सर से इशारा करें तो जाइज़ है।

कुछ लोग जब ये मानते हैं कि तलाक़ किताबत, इशारे और ईमाअ से हो सकती है तो उनका ये फ़त्वा बिलकुल ग़लत है कि इशारे से हद और लिआन नहीं हो सकते।

तश्रीह : या'नी ज़िहाक बिन मज़ाहिम ने जो तफ़्सीर के इमाम हैं और अब्द बिन हुमैद और अबू हुज़ैफ़ह ने सुफ़यान षौरी की तफ़्सीर में उसकी तसरीह कर दी है। अब किरमानी का ये कहना कि ये ज़ह्हाक बिन शराहील हैं महज़ ग़लत है। ज़ह्हाक बिन शराहील तो ताबेई हैं मगर उनसे कुर्आन की तफ़्सीर बिलकुल मन्कूल नहीं है और हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने उनसे सिर्फ़ दो अहादीष इस किताब में नक़ल की हैं। एक फ़ज़ाइले कुर्आन में एक इस्तिताबा बमुर्तदीन में। मैं (वहीदुज़्ज़माँ) कहता हूँ कि इल्मे हदीष में क़यास से एक बात कह देने मे यही ख़राबियाँ होती हैं जो किरमानी और ऐनी से अकषर मक़ामात में हुई हैं। अल्लाह तआला हाफ़िज़ इब्ने हजर को जज़ा-ए-ख़ैर दे। उन्होंने किरमानी की बहुत सी ग़लतियाँ हमको बतला दी हैं।

٥٣٠٠- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا لَيْثٌ عَنْ يَحْيَى بْنُ سَعِيدِ الأَنْصَارِيِّ أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ يَقُولُ : قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَلاَ أُخْبِرُكُمْ بِخَيْرِ دُورِ الأَنْصَارِ؟)) قَالُوا: بَلَى يَا رَسُولَ اللهِ، قَالَ: ((بَنُو النَّجَّارِ، ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ بَنُو عَبْدِ الأَشْهَلِ، ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ بَنُو الْحَارِثِ بْنِ الْخَزْرَجِ، ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ بَنُو سَاعِدَةَ. ثُمَّ قَالَ بِيَدِهِ فَقَبَضَ أَصَابِعَهُ، ثُمَّ بَسَطَهُنَّ كَالرَّامِي بِيَدِهِ، ثُمَّ قَالَ : وَفِي كُلِّ دُورِ الأَنْصَارِ خَيْرٌ)).

5300. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष बिन सअद ने बयान किया, उनसे यह्या बिन सईद अंसारी ने और उन्होंने अनस बिन मालिक अंसारी (रज़ि.) से सुना, बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया तुम्हें बताऊँ कि क़बीला अंसार का सबसे बेहतर घराना कौनसा है? सहाबा ने अर्ज़ किया ज़रूर बताइये या रसूलल्लाह! आपने फ़र्माया कि बनू नज्जार का। उसके बाद उनका मर्तबा है जो उनसे क़रीब हैं या'नी बनू अब्दुल अश्हल का, उसके बाद वो हैं जो उनसे क़रीब हैं, बनी हारिष बिन ख़ज़रज का। उसके बाद वो हैं जो उनसे क़रीब हैं, बनू साअदा का। फिर आँहज़रत (ﷺ) ने अपने हाथ से इशारा किया और अपनी मुट्ठी बंद की, फिर उसे इस तरह खोला जैसे कोई अपने हाथ की चीज़ को फेंकता है फिर फ़र्माया कि अंसार के हर घराना में ख़ैर है।

٥٣٠١- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ أَبُو حَازِمٍ : سَمِعْتُ مِنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدِ السَّاعِدِيِّ صَاحِبِ رَسُولِ اللهِ

5301. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उयैना ने बयान किया कि अबू हाज़िम ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) के सहाबी सहल बिन सअद साएदी (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया

يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((بُعِثْتُ أَنَا وَالسَّاعَةُ كَهَذِهِ مِنْ هَذِهِ)). أَوْ قَالَ ((كَهَاتَيْنِ)) وَقَرَنَ بَيْنَ السَّبَّابَةِ وَالْوُسْطَى. [راجع: ٤٩٣٦]

कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, मेरी बिअ़षत क़यामत से इतनी क़रीब है जैसे उसकी उससे (या'नी शहादत की उँगली बीच की उँगली से) या आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया (रावी को शक था) कि जैसे ये दोनों उँगलियाँ हैं और आपने शहादत की और बीच की उँगलियों को मिलाकर बताया। (राजेअ़ : 4936)

किरमानी के ज़माने तक तो आँहज़रत (ﷺ) की पैग़म्बरी पर सात सौ अस्सी बरस गुज़र चुके थे। अब तो चौदह सौ बरस पूरे हो रहे हैं फिर इस क़ुर्ब के क्या मा'नी होंगे। इसका जवाब ये है कि ये क़ुर्ब बनिस्बत उस ज़माने के है जो आदम (अ़लैहिस्सलाम) के वक़्त से लेकर आँहज़रत (ﷺ) की नबूवत तक गुज़रा था। वो तो हज़ारों बरस का ज़माना था या क़ुर्ब से ये मक़्सूद है कि मुझमें और क़यामत के बीच में अब कोई नया पैग़म्बर साहिबे शरीअ़त आने वाला नहीं है और ईसा (अ़लैहिस्सलाम) जो क़यामत के क़रीब दुनिया में फिर तशरीफ़ लाएँगे तो उनकी कोई नई शरीअ़त नहीं होगी बल्कि वो शरीअ़ते मुहम्मदी पर चलेंगे पस मिर्ज़ाइयों का आमद ईसा (अ़लैहिस्सलाम) से अक़ीद-ए-ख़त्मे नुबुव्वत पर मुआरज़ा पेश करना बिलकुल ग़लत़ है।

٥٣٠٢- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا جَبَلَةُ بْنُ سُحَيْمٍ سَمِعْتُ ابْنَ عُمَرَ يَقُولُ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((الشَّهْرُ هَكَذَا وَهَكَذَا وَهَكَذَا))، يَعْنِي ثَلاَثِينَ ثُمَّ قَالَ: ((وَهَكَذَا وَهَكَذَا وَهَكَذَا)) يَعْنِي تِسْعًا وَعِشْرِينَ يَقُولُ مَرَّةً ثَلاَثِينَ وَمَرَّةً تِسْعًا وَعِشْرِينَ. [راجع: ١٩٠٨]

5302. हमसे आदम ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा हमसे जबला बिन सुहैम ने बयान किया, उन्होंने हज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, महीना इतने, इतने और इतने दिनों का होता है। आपकी मुराद तीस दिन से थी। फिर फ़र्माया और इतने, इतने और इतने दिनों का होता है। आपका इशारा उन्तीस दिनों की त़रफ़ था। एक मर्तबा आपने तीस की त़रफ़ इशारा किया और दूसरी मर्तबा उन्तीस की त़रफ़।

(राजेअ़ : 1908)

٥٣٠٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ عَنْ إِسْمَاعِيلَ عَنْ قَيْسٍ عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ قَالَ: وَأَشَارَ النَّبِيُّ ﷺ بِيَدِهِ نَحْوَ الْيَمَنِ: ((الإِيمَانُ هَهُنَا - مَرَّتَيْنِ - أَلاَ وَإِنَّ الْقَسْوَةَ وَغِلَظَ الْقُلُوبِ فِي الْفَدَّادِينَ حَيْثُ يَطْلُعُ قَرْنَا الشَّيْطَانِ رَبِيعَةَ وَمُضَرَ)). [راجع: ٣٣٠٢]

5303. हमसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, कहा हमसे यह़्या बिन सईद ने बयान किया, उनसे इस्माईल ने, उनसे क़ैस ने और उनसे अबू मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि और नबी करीम (ﷺ) ने अपने हाथ से यमन की त़रफ़ इशारा करके फ़र्माया कि बरकतें उधर हैं। दो मर्तबा (आँहज़रत ﷺ ने ये फ़र्माया) हाँ और सख़्ती और स़ख़्त दिली उनकी करख़त आवाज़ वालों में है जहाँ से शैत़ान की दोनों सींगें तुलूअ़ होती हैं या'नी रबीआ़ और मुज़र में। (राजेअ़ : 3302)

٥٣٠٤- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ زُرَارَةَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي حَازِمٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ سَهْلٍ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَنَا وَكَافِلُ

5304. हमसे अ़म्र बिन ज़ुरारह ने बयान किया, कहा कि हमको अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबी ह़ाज़िम ने ख़बर दी, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे सहल (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, मैं और यतीम की परवरिश करने

الْيَتِيمِ فِي الْجَنَّةِ هَكَذَا))، وَأَشَارَ بِالسَّبَّابَةِ وَالْوُسْطَى وَفَرَّجَ بَيْنَهُمَا شَيْئًا.
[طرفه في : ٦٠٠٥].

वाला जन्नत में इस तरह होंगे और आपने शहादत की उँगली और बीच की उँगली से इशारा किया और उन दोनों उँगलियों के दरम्यान थोड़ी सी जगह खुली रखी। (दीगर मक़ामात : 6005)

इन जुम्ला अहादीष़ में इशारात को मुअतबर गर्दाना गया है। बाब से उनकी यही वजहे मुताबक़त है।

٢٦- باب إِذَا عَرَّضَ بِنَفْيِ الْوَلَدِ

बाब : 26 जब इशारों से अपनी बीवी के बच्चे का इंकार करे और साफ़ न कह सके कि ये मेरा लड़का नहीं है तो क्या हुक्म है?

٥٣٠٥- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ قَزَعَةَ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَجُلاً أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، وُلِدَ لِي غُلاَمٌ أَسْوَدُ، فَقَالَ: ((هَلْ لَكَ مِنْ إِبِلٍ؟)) قَالَ: نَعَمْ قَالَ: ((مَا أَلْوَانُهَا؟)) قَالَ: حُمْرٌ. قَالَ : ((هَلْ فِيهَا مِنْ أَوْرَقَ؟)) قَالَ: نَعَمْ. قَالَ : ((فَأَنَّى ذَلِكَ؟)) قَالَ : لَعَلَّهُ نَزَعَهُ عِرْقٌ. قَالَ : ((فَلَعَلَّ ابْنَكَ هَذَا نَزَعَهُ)).
[طرفاه في : ٦٨٤٧، ٧٣١٤].

5305. हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे सईद बिन मुसय्यिब ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि एक सहाबी नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरे यहाँ तो काला कलूटा बच्चा पैदा हुआ है। उस पर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया तुम्हारे पास कुछ ऊँट भी हैं? उन्होंने कहा जी हाँ! आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा, उनके रंग कैसे हैं ? उन्होंने कहा सुर्ख़ रंग के हैं । आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा, उनमें कोई स्याही माइल सफ़ेद ऊँट भी है? उन्होंने कहा कि जी हाँ। आँहज़रत (ﷺ) ने उस पर फ़र्माया कि फिर ये कहाँ से आ गया? उन्होंने कहा अपनी नस्ल के किसी बहुत पहले के ऊँट पर ये पड़ा होगा। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि इसी तरह तुम्हारा ये लड़का भी अपनी नस्ल के किसी दौर के रिश्तेदार पर पड़ा होगा। (दीगर मक़ामात : 6847, 7314)

हज़रत इमाम ने इससे ष़ाबित किया कि बाप के बारे में इशारा भी मुअतबर समझा जाएगा।

तश्रीह : अल्फ़ाज़े हदीष़ **फलअल्ल इब्नक हाज़ा नज़अहू** से ये निकला कि सिर्फ़ लड़के की सूरत या रंग के इख़्तिलाफ़ पर ये कहना दुरुस्त नहीं कि ये लड़का मेरा नहीं है जब तक क़वी दलील से हरामकारी का षुबूत नहीं मिल जाता। मष़लन आँखों से उसको ज़िना कराते हुए देखा हो या जब शौहर ने जिमाअ किया हो उससे छः महीने कम में लड़का पैदा हो, जब जिमाअ किया हो उससे चार बरस बाद बच्चा पैदा हो। हदीष़ से भी यही निकला कि इशारा और किनाया में क़ज़फ़ करना मौजिबे हद नहीं और मालिकिया के नज़दीक इसमें भी हद वाजिब होगी।

٢٧- باب إِحْلاَفِ الْمُلاَعِنِ

बाब 27 : लिआन करने वाले को क़सम खिलाना

٥٣٠٦- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَجُلاً مِنَ الأَنْصَارِ

5306. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे जुवैरिया ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने बयान किया और उनसे अब्दुल्लाह ने क़बीला अंसार के एक सहाबी ने अपनी बीवी पर तोहमत लगाई तो नबी करीम (ﷺ) ने दोनों

قَذَفَ امْرَأَتَهُ فَأَحْلَفَهُمَا النَّبِيُّ ﷺ ثُمَّ فَرَّقَ بَيْنَهُمَا. [راجع: ٤٧٤٨]

मियाँ–बीवी से क़सम खिलवाई और फिर दोनों में जुदाई करा दी। (राजेअ़ : 4748)

٢٨- باب يَبْدَأُ الرَّجُلُ بِالتَّلاَعُنِ

बाब : 28 लिआ़न की इब्तिदा मर्द करेगा (फिर औरत)

٥٣٠٧- حدثني مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ عَنْ هِشَامِ بْنِ حَسَّانَ حَدَّثَنَا عِكْرِمَةُ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ هِلاَلَ بْنَ أُمَيَّةَ قَذَفَ امْرَأَتَهُ فَجَاءَ فَشَهِدَ وَالنَّبِيُّ ﷺ يَقُولُ: ((إِنَّ اللهَ يَعْلَمُ أَنَّ أَحَدَكُمَا كَاذِبٌ، فَهَلْ مِنْكُمَا تَائِبٌ؟)) ثُمَّ قَامَتْ فَشَهِدَتْ.[راجع: ٢٦٧١]

5307. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबी अ़दी ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन ह़स्सान ने, कहा कि हमसे इक्रिमा ने बयान किया और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि हिलाल बिन उमय्या ने अपनी बीवी पर तोह्मत लगाई, फिर वो आए और गवाही दी। नबी करीम (ﷺ) ने उस वक़्त फ़र्माया, अल्लाह ख़ूब जानता है कि तुममें से एक झूठा है, तो क्या तुममें से कोई (जो वाक़ई गुनाह का मुर्तकिब हुआ है) रुजूअ़ करेगा? उसके बाद उनकी बीवी खड़ी हुई और उन्होंने गवाही दी। अपने बरी होने की। (राजेअ़ : 2671)

तश्रीह : बाब और ह़दीष़ में मुत़ाबक़त ज़ाहिर है। ह़दीष़ से ये निकला कि पहले मर्द से गवाही लेनी चाहिये। इमाम शाफ़िई और अकष़र उ़लमा का यही क़ौल है। अगर औ़रत से पहले गवाही ली जाए तब भी लिआ़न दुरुस्त हो जाएगा। कहते हैं उस औ़रत ने पाँचवीं बार में ज़रा ताम्मुल किया। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा हम समझे कि वो अपने क़सूर का इक़रार करेगी मगर फिर कहने लगी मैं अपनी क़ौम को सारी उ़म्र के लिये ज़लील नहीं कर सकती और उसने पाँचवीं बार भी क़सम खाकर लिआ़न कर दिया।

٢٩- باب اللِّعَانِ، وَمَنْ طَلَّقَ بَعْدَ اللِّعَانِ

बाब 29 : लिआ़न और लिआ़न के बाद त़लाक़ देने का बयान

٥٣٠٨- حدثنا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَنَّ سَهْلَ بْنَ سَعْدٍ السَّاعِدِيَّ أَخْبَرَهُ أَنَّ عُوَيْمِرًا الْعَجْلاَنِيَّ جَاءَ إِلَى عَاصِمِ بْنِ عَدِيٍّ الأَنْصَارِيِّ فَقَالَ لَهُ: يَا عَاصِمُ أَرَأَيْتَ رَجُلاً وَجَدَ مَعَ امْرَأَتِهِ رَجُلاً أَيَقْتُلُهُ فَتَقْتُلُونَهُ، أَمْ كَيْفَ يَفْعَلُ؟ سَلْ لِي يَا عَاصِمُ عَنْ ذَلِكَ، فَسَأَلَ عَاصِمٌ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ ذَلِكَ، فَكَرِهَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَسَائِلَ وَعَابَهَا حَتَّى كَبُرَ عَلَى عَاصِمٍ مَا سَمِعَ مِنْ

5308. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने और उन्हें सहल बिन सअ़द साएदी ने ख़बर दी कि उ़वैमिर अ़ज्लानी, आ़सिम बिन अ़दी अंस़ारी के पास आए और उनसे कहा कि आ़सिम आपका क्या ख़याल है कि एक शख़्स़ अगर अपनी बीवी के साथ किसी ग़ैर मर्द को देखे तो क्या उसे क़त्ल कर देगा लेकिन फिर आप लोग उसे भी क़त्ल कर देंगे। आख़िर उसे क्या करना चाहिये? आ़सिम, मेरे लिये ये मसला पूछ दो। चुनाँचे आ़सिम (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से ये मसला पूछा। आँह़ज़रत (ﷺ) ने इस त़रह़ के सवालात को नापसंद फ़र्माया और इज़्हारे नागवारी किया। आ़सिम (रज़ि.) ने इस सिलसिले में आँह़ज़रत (ﷺ) से जो कुछ सुना उसका बहुत अष़र लिया। फिर जब घर वापस आए

तो उ़वैमिर उनके पास आए और पूछा, आ़सिम! आपको रसूलुल्लाह (ﷺ) ने क्या जवाब दिया। आ़सिम (रज़ि.) ने कहा, उ़वैमिर तुमने मेरे साथ अच्छा मामला नहीं किया, जो मसला तुमने पूछा था, आँहज़रत (ﷺ) ने उसे नापसंद फ़र्माया। उ़वैमिर (रज़ि.) ने कहा कि अल्लाह की क़सम जब तक मैं ये मसला आँहज़रत (ﷺ) से मा'लूम न कर लूँ, बाज़ नहीं आऊँगा। चुनाँचे उ़वैमिर (रज़ि.) हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए, आँहज़रत (ﷺ) उस वक़्त सहाबा के बीच में मौजूद थे। उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! आपका उस शख़्स के बारे में क्या इर्शाद है जो अपनी बीवी के साथ किसी ग़ैर मर्द को देखे, क्या वो उसे क़त्ल कर दे? लेकिन फिर आप लोग उसे (क़िसास) में क़त्ल कर देंगे, तो फिर उसे क्या करना चाहिये? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम्हारे और तुम्हारे बीवी के बारे में अभी वह्य नाज़िल हुई है। जाओ और अपनी बीवी को लेकर आओ। सहल ने बयान किया कि फिर उन दोनों ने लिआ़न किया। मैं भी आँहज़रत (ﷺ) के पास उस वक़्त मौजूद था। जब लिआ़न से फ़ारिग़ हुए तो उ़वैमिर (रज़ि.) ने कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! अगर अब भी मैं उसे (अपनी बीवी को) अपने साथ रखता हूँ तो इसका मतलब ये है कि मैं झूठा हूँ। चुनाँचे उन्होंने उन्हें तीन तलाक़ें आँहज़रत (ﷺ) के हुक्म से पहले ही दे दीं। इब्ने शिहाब ने बयान किया कि फिर यही लिआ़न करने वालों के लिये सुन्नत तरीक़ा मुक़र्रर हो गया।

رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. فَلَمَّا رَجَعَ عَاصِمٌ إِلَى أَهْلِهِ جَاءَهُ عُوَيْمِرٌ فَقَالَ: يَا عَاصِمُ مَاذَا قَالَ لَكَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ فَقَالَ عَاصِمٌ لِعُوَيْمِرٍ: لَمْ تَأْتِنِي بِخَيْرٍ، قَدْ كَرِهَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَسْأَلَةَ الَّتِي سَأَلْتُهُ عَنْهَا، فَقَالَ عُوَيْمِرٌ: وَاللهِ لاَ أَنْتَهِي حَتَّى أَسْأَلَهُ عَنْهَا فَأَقْبَلَ عُوَيْمِرٌ حَتَّى جَاءَ رَسُولَ اللهِ ﷺ وَسَطَ النَّاسِ، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ أَرَأَيْتَ رَجُلاً وَجَدَ مَعَ امْرَأَتِهِ رَجُلاً أَيَقْتُلُهُ فَتَقْتُلُونَهُ، أَمْ كَيْفَ يَفْعَلُ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((قَدْ أُنْزِلَ فِيكَ وَفِي صَاحِبَتِكَ فَاذْهَبْ فَأْتِ بِهَا))، قَالَ سَهْلٌ: فَتَلاَعَنَا وَأَنَا مَعَ النَّاسِ عِنْدَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. فَلَمَّا فَرَغَا مِنْ تَلاَعُنِهِمَا قَالَ عُوَيْمِرٌ: كَذَبْتُ عَلَيْهَا يَا رَسُولَ اللهِ إِنْ أَمْسَكْتُهَا. فَطَلَّقَهَا ثَلاَثًا، قَبْلَ أَنْ يَأْمُرَهُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ ابْنُ شِهَابٍ: فَكَانَتْ سُنَّةَ الْمُتَلاَعِنَيْنِ.

बाब : 30 मस्जिद में लिआ़न करने का बयान

٣٠- باب التَّلاَعُنِ فِي الْمَسْجِدِ

5309. हमसे यह्या बिन जा'फ़र ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ बिन हम्माम ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, कहा कि मुझे इब्ने शिहाब ने लिआ़न के बारे में और ये कि शरीअ़त की तरफ़ से इसका सुन्नत तरीक़ा क्या है, ख़बर दी बनी साइदा के सहल बिन सअ़द (रज़ि.) से, उन्होंने बयान किया कि क़बीला अंसार के एक सहाबी रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! उस शख़्स के बारे में आपका क्या इर्शाद है जो अपनी

٥٣٠٩- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ جَعْفَرٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي ابْنُ شِهَابٍ عَنِ الْمُلاَعَنَةِ وَعَنِ السُّنَّةِ فِيهَا عَنْ حَدِيثِ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ أَخِي بَنِي سَاعِدَةَ أَنَّ رَجُلاً مِنَ الأَنْصَارِ جَاءَ إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ

وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، أَرَأَيْتَ رَجُلاً وَجَدَ مَعَ امْرَأَتِهِ رَجُلاً أَيَقْتُلُهُ، أَمْ كَيْفَ يَفْعَلُ؟ فَأَنْزَلَ اللهُ فِي شَأْنِهِ مَا ذُكِرَ فِي الْقُرْآنِ مِنْ أَمْرِ الْمُتَلاَعِنَيْنِ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((قَدْ قَضَى اللهُ فِيكَ وَفِي امْرَأَتِكَ))، قَالَ فَتَلاَعَنَا فِي الْمَسْجِدِ وَأَنَا شَاهِدٌ، فَلَمَّا فَرَغَا قَالَ: كَذَبْتُ عَلَيْهَا يَا رَسُولَ اللهِ إِنْ أَمْسَكْتُهَا، فَطَلَّقَهَا ثَلاَثًا قَبْلَ أَنْ يَأْمُرَهُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ فَرَغَا مِنَ التَّلاَعُنِ، فَفَارَقَهَا عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ((ذَاكَ تَفْرِيقٌ بَيْنَ كُلِّ مُتَلاَعِنَيْنِ))، قَالَ ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ ابْنُ شِهَابٍ: فَكَانَتِ السُّنَّةُ بَعْدَهُمَا أَنْ يُفَرَّقَ بَيْنَ الْمُتَلاَعِنَيْنِ، وَكَانَتْ حَامِلاً وَكَانَ ابْنُهَا يُدْعَى لأُمِّهِ قَالَ: ثُمَّ جَرَتِ السُّنَّةُ فِي مِيرَاثِهَا أَنَّهَا تَرِثُهُ وَيَرِثُ مِنْهَا مَا فَرَضَ اللهُ لَهُ قَالَ: ابْنُ جُرَيْجٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ السَّاعِدِيِّ فِي هَذَا الْحَدِيثِ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((إِنْ جَاءَتْ بِهِ أَحْمَرَ قَصِيرًا كَأَنَّهُ وَحَرَةٌ فَلاَ أُرَاهَا إِلاَّ قَدْ صَدَقَتْ وَكَذَبَ عَلَيْهَا، وَإِنْ جَاءَتْ بِهِ أَسْوَدَ أَعْيَنَ ذَا أَلْيَتَيْنِ فَلاَ أُرَاهُ إِلاَّ قَدْ صَدَقَ عَلَيْهَا، فَجَاءَتْ بِهِ عَلَى الْمَكْرُوهِ مِنْ ذَلِكَ)).

[راجع: ٤٢٣]

बीवी के साथ किसी ग़ैर मर्द को देखे, क्या वो उसे क़त्ल कर दे या उसे क्या करना चाहिये? उन्हीं के बारे में अल्लाह तआला ने क़ुर्आन मजीद की वो आयत नाज़िल की जिसमें लिआन करने वालों के लिये तफ़्सीलात बयान हुई है। आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि अल्लाह तआला ने तुम्हारी बीवी के बारे में फ़ैसला कर दिया है। बयान किया कि फिर दोनों ने मस्जिद में लिआन किया, मैं उस वक़्त वहाँ मौजूद था। जब दोनों लिआन से फ़ारिग़ हुए तो अंसारी सहाबी ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! अगर अब भी मैं इसे अपने निकाह में रखूँ तो इसका मतलब ये होगा कि मैंने इस पर झूठी तोहमत लगाई थी। चुनाँचे लिआन से फ़ारिग़ होने के बाद उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) के हुक्म से पहले ही उन्हें तीन तलाक़ें दे दीं। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की मौजूदगी में ही उन्हें जुदा कर दिया। (सहल ने या इब्ने शिहाब ने) कहा कि हर लिआन करने वाले मियाँ—बीवी के बीच यही जुदाई का सुन्नत तरीक़ा मुक़र्रर हुआ। इब्ने जुरैज ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया कि उनके बाद शरीअत की तरफ़ से तरीक़ा ये मुतअय्यन हुआ कि दो लिआन करने वालों के बीच तफ़रीक़ करा दी जाया करे और वो औरत हामला थी और उनका बेटा अपनी माँ की तरफ़ मन्सूब किया जाता था। बयान किया कि फिर ऐसी औरत के मीराष़ के बारे में भी ये तरीक़ा शरीअत की तरफ़ से मुक़र्रर हो गया कि बच्चा उसका वारिष़ होगा और वो बच्चे की वारिष़ होगी। उसके मुताबिक़ जो अल्लाह तआला ने विराष़त के सिलसिले में फ़र्ज़ किया है। इब्ने जुरैज ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने और उनसे सहल बिन सअद साएदी (रज़ि.) ने, इसी हदीष़ में कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया था कि अगर (लिआन करने वाली ख़ातून) उसने सुर्ख़ और पस्ता क़द बच्चा जना जैसे वहरा तो मैं समझूँगा कि औरत ही सच्ची है और उसके शौहर ने उस पर झूठी तोहमत लगाई है लेकिन अगर काला, बड़ी आँखों वाला और बड़े सुरीनों वाला बच्चा जना तो मैं समझूँगा कि शौहर ने उसके बारे में सच कहा था। (औरत झूठी है) जब बच्चा पैदा हुआ तो वो बुरी शक्ल का था (या'नी उस मर्द की सूरत पर जिससे वो बदनाम हुई थी)। (राजेअ : 423)

तश्रीह : इस ह़दीष़ से इल्मे क़याफ़ा का मुअतबर होना पाया जाता है। मगर हम कहते हैं कि आँह़ज़रत (ﷺ) को बइल्हामे ग़ैबी इल्मे क़याफ़ा की वो बात बतलाई जाती जो ह़क़ीक़त में सच होती। दूसरे लोग इस इल्म की रू से क़त्अन कोई हुक्म नहीं दे सकते। इमाम शाफ़िई ने भी इल्मे क़याफ़ा को मुअतबर रखा है, फिर भी ये इल्म यक़ीनी नहीं बल्कि बातिनी है। वह़रा (छिपकली की त़रह़ एक ज़हरीला जानवर, पस्ता क़द औरत या ऊँट की तश्बीह इससे देते हैं)

٣١- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((لَوْ كُنْتُ رَاجِمًا بِغَيْرِ بَيِّنَةٍ)).

٥٣١٠- حدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عُفَيْرٍ، قَالَ حَدَّثَنِي اللَّيْثُ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ ابْنِ الْقَاسِمِ عَنِ الْقَاسِمِ بْنِ مُحَمَّدٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّهُ ذُكِرَ التَّلاَعُنُ عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ عَاصِمُ بْنُ عَدِيٍّ فِي ذَلِكَ قَوْلاً ثُمَّ انْصَرَفَ، فَأَتَاهُ رَجُلٌ مِنْ قَوْمِهِ يَشْكُو إِلَيْهِ أَنَّهُ قَدْ وَجَدَ مَعَ امْرَأَتِهِ رَجُلاً، فَقَالَ عَاصِمٌ: مَا ابْتُلِيتُ بِهَذَا إِلاَّ لِقَوْلِي. فَذَهَبَ بِهِ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَأَخْبَرَهُ بِالَّذِي وَجَدَ عَلَيْهِ امْرَأَتَهُ، وَكَانَ ذَلِكَ الرَّجُلُ مُصْفَرًّا قَلِيلَ اللَّحْمِ سَبْطَ الشَّعَرِ، وَكَانَ الَّذِي ادَّعَى عَلَيْهِ أَنَّهُ وَجَدَهُ عِنْدَ أَهْلِهِ خَدْلاً آدَمَ كَثِيرَ اللَّحْمِ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ((اللَّهُمَّ بَيِّنْ))، فَجَاءَتْ شَبِيهًا بِالرَّجُلِ الَّذِي ذَكَرَ زَوْجُهَا أَنَّهُ وَجَدَهُ، فَلاَعَنَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَيْنَهُمَا. قَالَ رَجُلٌ لاِبْنِ عَبَّاسٍ فِي الْمَجْلِسِ: هِيَ الَّتِي قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((لَوْ رَجَمْتُ

बाब 31 : रसूलुल्लाह (ﷺ) का ये फ़र्माना कि अगर मैं बग़ैर गवाही के किसी को संगसार करने वाला होता तो इस औरत को संगसार करता

5310. हमसे सईद बिन उ़फ़ैर ने बयान किया, कहा कि मुझसे लैष़ ने बयान किया, उनसे यह्या बिन सईद ने, उनसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन क़ासिम ने, उनसे क़ासिम बिन मुह़म्मद ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) की मजलिस में लिआ़न का ज़िक्र हुआ और आ़स़िम (रज़ि.) ने इस सिलसिले में कोई बात कही (कि मैं अगर अपनी बीवी के साथ किसी ग़ैर मर्द को देख लूँ तो वहीं क़त्ल कर दूँ) और चले गये, फिर उनकी क़ौम के एक स़ह़ाबी (उ़वैमिर रज़ि.) उनके पास आए ये शिकायत लेकर कि उन्हों ने अपनी बीवी के साथ एक ग़ैर मर्द को पाया है। आ़स़िम (रज़ि.) ने कहा कि मुझे आज ये इब्तिला मेरी इसी बात की वजह से हुआ है (जो आपने आँह़ज़रत ﷺ के सामने कही थी) फिर वो उन्हें लेकर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और आँह़ज़रत (ﷺ) को वो वाक़िया बताया जिसमें मुलव्विष़ उस स़ह़ाबी ने अपनी बीवी को पाया था। ये स़ाह़ब ज़र्द रंग, कम गोश्त वाले (पतले–दुबले) और सीधे बाल वाले थे और जिसके बारे में उन्होंने दा'वा किया था कि उसे उन्होंने अपनी बीवी के साथ (तन्हाई में) पाया, वो गठे हुए जिस्म का, गंदुमी और भरे गोश्त वाला था। फिर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने दुआ़ फ़र्माई कि ऐ अल्लाह! इस मामले को स़ाफ़ कर दे। चुनाँचे उस औरत ने बच्चा उसी मर्द की शक्ल का जना जिसके बारे में शौहर ने दा'वा किया था कि उसे उन्होंने अपनी बीवी के साथ पाया था। आँह़ज़रत (ﷺ) ने मियाँ–बीवी के बीच लिआ़न कराया। एक शागिर्द ने मजलिस में इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से पूछा क्या यही वो औरत है जिसके बारे में हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया था कि अगर मैं किसी को बिला शहादत के संगसार कर सकता

तो इस औरत को संगसार करता। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि नहीं (ये जुम्ला आँहज़रत ﷺ ने) उस औरत के बारे में फ़र्माया था जिसकी बदकारी इस्लाम के ज़माने में खुल गई थी। अबू सालेह और अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने इस हदीष में बजाय ख़दला के के कसरा के साथ दाल ख़दिला रिवायत किया है लेकिन मा'नी वही है। (दीगर मक़ामात : 5316, 6855, 6856,7238)

أَحَدًا بِغَيْرِ بَيِّنَةٍ رَجَمْتُ هَذِهِ)) فَقَالَ: لاَ تِلْكَ امْرَأَةٌ كَانَتْ تُظْهِرُ فِي الإِسْلاَمِ السُّوءَ. قَالَ أَبُو صَالِحٍ وَعَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ : خَدِلاً.

[أطرافه في: ٥٣١٦، ٦٨٥٥، ٦٨٥٦، ٧٢٣٨].

बाब 32 : इस बारे में कि लिआन करने वाली का महर मिलेगा

٣٢- باب صَدَاقِ الْمُلاَعَنَةِ

5311. हमसे अम्र बिन ज़ुरारह ने बयान किया, कहा हमको इस्माईल ने ख़बर दी, उन्हें अय्यूब ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने बयान किया कि मैंने हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से ऐसे शख़्स का हुक्म पूछा जिसने अपनी बीवी पर तोह्मत लगाई हो तो उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने बनी अज्लान के मियाँ–बीवी के बीच ऐसी सूरत में जुदाई करा दी थी और फ़र्माया था कि अल्लाह ख़ूब जानता है कि तुममें से एक झूठा है, तो क्या तुममें से एक (जो वाक़ई गुनाह में मुब्तला हो) रुजूअ करेगा लेकिन उन दोनों ने इंकार किया तो हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने उनमें जुदाई करा दी। और बयान किया कि मुझसे अम्र बिन दीनार ने फ़र्माया कि हदीष के कुछ हिस्से मेरा ख़्याल है कि मैंने अभी तुमसे बयान नहीं किये हैं। फ़र्माया कि उन साहब ने (जिन्होंने लिआन किया था) कहा कि मेरे माल का क्या होगा (जो मैंने महर में दिया था?) बयान किया कि इस पर उनसे कहा गया कि वो माल (जो औरत को महर में दिया था) अब तुम्हारा नहीं रहा। अगर तुम सच्चे हो (इस तोह्मत लगाने मे तब भी क्योंकि) तुम इस औरत के पास तन्हाई में जा चुके हो और अगर तुम झूठे तब तो तुमको और भी महर न मिलना चाहिये। (दीगर मक़ामात : 5212, 5349, 5350)

٥٣١١- حدَّثني عَمْرُو بْنُ زُرَارَةَ أَخْبَرَنَا إِسْمَاعِيلُ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ قَالَ: قُلْتُ لاِبْنِ عُمَرَ رَجُلٌ قَذَفَ امْرَأَتَهُ. فَقَالَ: فَرَّقَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَيْنَ أَخَوَيْ بَنِي الْعَجْلاَنِ، وَقَالَ : ((اللهُ يَعْلَمُ أَنَّ أَحَدَكُمَا كَاذِبٌ فَهَلْ مِنْكُمَا تَائِبٌ؟)) فَأَبَيَا فَقَالَ: ((اللهُ يَعْلَمُ أَنَّ أَحَدَكُمَا كَاذِبٌ فَهَلْ مِنْكُمَا تَائِبٌ؟)) فَأَبَيَا. فَأَبَيَا. فَفَرَّقَ بَيْنَهُمَا قَالَ أَيُّوبُ: فَقَالَ لِي عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ إِنَّ فِي الْحَدِيثِ شَيْئًا لاَ أَرَاكَ تُحَدِّثُهُ قَالَ : قَالَ الرَّجُلُ؟ مَالِي، قَالَ : قِيلَ لاَ مَالَ لَكَ إِنْ كُنْتَ صَادِقًا فَقَدْ دَخَلْتَ بِهَا وَإِنْ كُنْتَ كَاذِبًا فَهُوَ أَبْعَدُ مِنْكَ.

[أطرافه في: ٥٣١٢، ٥٣٤٩، ٥٣٥٠].

बाब : 33 हाकिम का लिआन करने वालों से ये कहना तुममें से एक ज़रूर झूठा है तो क्या वो तौबा करता है?

٣٣- باب قَوْلِ الإِمَامِ لِلْمُتَلاَعِنَيْنِ إِنَّ أَحَدَكُمَا كَاذِبٌ فَهَلْ مِنْكُمَا تَائِبٌ

5312. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया,

٥٣١٢- حدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا

कहा हमसे सुफ़यान बिन ड़ययना ने बयान किया कि अ़म्र ने कहा कि मैंने सईद बिन जुबैर से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने ह़ज़रत इब्ने ड़मर (रज़ि.) से लिआ़न करने वालों का हुक्म पूछा तो उन्होंने बयान किया कि उनके बारे में रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया था कि तुम्हारा ह़िसाब तो अल्लाह तआ़ला के ज़िम्मे है, तुममें से एक झूठा है। अब तुम्हें तुम्हारी बीवी पर कोई इख़्तियार नहीं। उन स़ह़ाबी ने अ़र्ज़ किया कि मेरा माल वापस करा दीजिए (जो महर मे दिया गया था) आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अब वो तुम्हारा माल नहीं है। अगर तुम उसके मामले में सच्चे हो तो तुम्हारा ये माल उसके बदले में ख़त्म हो चुका कि तुमने उसकी शर्मगाह को हलाल किया था और अगर तुमने उस पर झूठी तोह्मत लगाई थी फिर तो वो तुमसे बईदतर है। सुफ़यान ने बयान किया कि ये ह़दीष़ मैंने अ़म्र से याद की और अय्यूब ने बयान किया कि मैंने सईद बिन जुबैर से सुना, कहा कि मैंने इब्ने ड़मर (रज़ि.) से ऐसे शख़्स़ के बारे में पूछा जिसने अपनी बीवी से लिआ़न किया हो तो आपने अपनी दो उँगलियों से इशारा किया। सुफ़यान ने इस इशारा को अपनी दो शहादत और बीच की उँगलियों को जुदा करके बताया कि नबी करीम (ﷺ) ने क़बीला बनी अ़ज्लान के मियाँ—बीवी के दरम्यान जुदाई कराई थी और फ़र्माया था कि अल्लाह जानता है कि तुममें से एक झूठा है, तो क्या वो रुजूअ़ कर लेगा? आपने तीन मर्तबा ये फ़र्माया। अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने कहा कि सुफ़यान बिन ड़ययना ने मुझसे कहा, मैंने ये ह़दीष़ जैसे अ़म्र बिन दीनार और अय्यूब से सुनकर याद रखी थी वैसी ही तुझसे बयान कर दी। (राजेअ़ : 5311)

سُفْيَانُ قَالَ عَمْرٌو سَمِعْتُ سَعِيدَ بْنَ جُبَيْرٍ قَالَ: سَأَلْتُ ابْنَ عُمَرَ عَنِ الْمُتَلاَعِنَيْنِ فَقَالَ قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِلْمُتَلاَعِنِ ((حِسَابُكُمَا عَلَى اللهِ أَحَدُكُمَا كَاذِبٌ، لاَ سَبِيلَ لَكَ عَلَيْهَا))، قَالَ : مَالِي. قَالَ : ((لاَ مَالَ لَكَ، إِنْ كُنْتَ صَدَقْتَ عَلَيْهَا فَهُوَ بِمَا اسْتَحْلَلْتَ مِنْ فَرْجِهَا))، وَإِنْ كُنْتَ كَذَبْتَ عَلَيْهَا فَذَاكَ أَبْعَدُ لَكَ)). قَالَ سُفْيَانُ : حَفِظْتُهُ مِنْ عَمْرٍو وَقَالَ أَيُّوبُ : سَمِعْتُ سَعِيدَ بْنَ جُبَيْرٍ قَالَ : قُلْتُ لاِبْنِ عُمَرَ رَجُلٌ لاَعَنَ امْرَأَتَهُ فَقَالَ بِإِصْبَعَيْهِ، وَفَرَّقَ سُفْيَانُ بَيْنَ إِصْبَعَيْهِ السَّبَّابَةِ وَالْوُسْطَى: وَفَرَّقَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَيْنَ أَخَوَيْ بَنِي الْعَجْلاَنِ، وَقَالَ: ((اللهُ يَعْلَمُ أَنَّ أَحَدَكُمَا كَاذِبٌ فَهَلْ مِنْكُمَا تَائِبٌ؟)) ثَلاَثَ مَرَّاتٍ. قَالَ سُفْيَانُ : حَفِظْتُهُ مِنْ عَمْرٍو وَأَيُّوبَ كَمَا أَخْبَرْتُكَ.

[راجع: ٥٣١١]

हा़स़िल ये हुआ कि सुफ़यान ने इस ह़दीष़ को अ़म्र बिन दीनार और अय्यूब सुख़्तियानी दोनों से रिवायत किया है।

बाब 34 : लिआ़न करने वालों में जुदाई कराना

٣٤- باب التَّفْرِيقِ بَيْنَ الْمُتَلاَعِنَيْنِ

5313. हमसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, कहा हमसे अनस बिन अ़याज़ ने बयान किया, उनसे ड़बैदुल्लाह ने और उनसे नाफ़ेअ़ ने कि ह़ज़रत इब्ने ड़मर (रज़ि.) ने उन्हें ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) ने उस मर्द और उसकी बीवी के बीच जुदाई करा दी थी जिन्होंने अपनी बीवी पर तोह्मत लगाई थी और दोनों से क़सम ली थी। (राजेअ़ : 4748)

٥٣١٣- حدثني إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ عِيَاضٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ عَنْ نَافِعٍ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَرَّقَ بَيْنَ رَجُلٍ وَامْرَأَةٍ قَذَفَهَا، وَأَحْلَفَهُمَا. [راجع: ٤٧٤٨]

5314. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह ने, कहा मुझे नाफ़ेअ़ ने ख़बर दी और उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि क़बीला अंसार के एक साहब और उनकी बीवी के दरम्यान रसूलुल्लाह (ﷺ) ने लिआ़न कराया था और दोनों के दरम्यान जुदाई करा दी थी। (राजेअ़ : 4748)

٥٣١٤- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ عُبَيْدِ اللهِ أَخْبَرَنِي نَافِعٌ عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ لاَعَنَ النَّبِيُّ ﷺ بَيْنَ رَجُلٍ وَامْرَأَةٍ مِنَ الأَنْصَارِ وَفَرَّقَ بَيْنَهُمَا.

[راجع: ٤٧٤٨]

बाब 35 : लिआ़न के बाद औरत का बच्चा (जिसको मर्द कहे कि ये मेरा बच्चा नहीं है) माँ से मिला दिया जाएगा (उसी का बच्चा कहलाएगा)

٣٥- باب يُلْحَقُ الْوَلَدُ بِالْمُلاَعِنَةِ

5315. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे मालिक ने, कहा कि मुझसे नाफ़ेअ़ ने बयान किया और उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने एक साहब और उनकी बीवी के दरम्यान लिआ़न कराया था, फिर उनस साहब ने अपनी बीवी के लड़के का इंकार किया तो आँहज़रत (ﷺ) ने दोनों के बीच जुदाई करा दी और लड़का औरत को दे दिया। (राजेअ़ : 4748)

٥٣١٥- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا مَالِكٌ قَالَ: حَدَّثَنِي نَافِعٌ عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ لاَعَنَ بَيْنَ رَجُلٍ وَامْرَأَتِهِ، فَانْتَفَى مِنْ وَلَدِهَا فَفَرَّقَ بَيْنَهُمَا، وَأَلْحَقَ الْوَلَدَ بِالْمَرْأَةِ. [راجع: ٤٧٤٨]

बाब : 36 इमाम या हाकिम लिआ़न के वक़्त यूँ दुआ़ करे या अल्लाह! जो असल हक़ीक़त है वो खोल दे

٣٦- باب قَوْلِ الإِمَامِ : اللَّهُمَّ بَيِّنْ

5316. हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा कि मुझसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, उनसे यह्या बिन सईद ने, कहा कि मुझे अ़ब्दुर्रहमान बिन क़ासिम ने ख़बर दी, उन्हें क़ासिम बिन मुहम्मद ने और उन्हें इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने, उन्होंने बयान किया कि लिआ़न करने वालों का ज़िक्र नबी करीम (ﷺ) की मजलिस में हुआ तो आ़सिम बिन अ़दी (रज़ि.) ने इस पर एक बात कही (कि अगर मैं अपनी बीवी के साथ किसी को पाऊँ तो वहीं क़त्ल कर डालूँ) फिर वापस आए तो उनकी क़ौम के एक साहब उनके पास आए और उनसे कहा कि मैंने अपनी बीवी के साथ एक ग़ैर मर्द को पाया है। आ़सिम (रज़ि.) ने कहा कि इस मामले में मेरा ये इब्तिला मेरी इस बात की वजह से हुआ है (जिसके कहने की हिम्मत मैंने हुज़ूर अकरम ﷺ के सामने की थी) फिर वो उन साहब को साथ लेकर आँहज़रत (ﷺ) के पास गये और आँहज़रत (ﷺ) को इस सूरत से ख़बर दिया जिसमें उन्होंने अपनी बीवी को पाया था।

٥٣١٦- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ بْنُ بِلاَلٍ عَنْ يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ الْقَاسِمِ عَنِ الْقَاسِمِ بْنُ مُحَمَّدٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّهُ قَالَ: ذُكِرَ الْمُتَلاَعِنَانِ عِنْدَ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ عَاصِمُ بْنُ عَدِيٍّ: فِي ذَلِكَ قَوْلاً ثُمَّ انْصَرَفَ، فَأَتَاهُ رَجُلٌ مِنْ قَوْمِهِ فَذَكَرَ لَهُ أَنَّهُ وَجَدَ مَعَ امْرَأَتِهِ رَجُلاً فَقَالَ عَاصِمٌ: مَا ابْتُلِيتُ بِهَذَا الأَمْرِ إِلاَّ لِقَوْلِي. فَذَهَبَ بِهِ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَأَخْبَرَهُ بِالَّذِي وَجَدَ عَلَيْهِ امْرَأَتَهُ وَكَانَ ذَلِكَ الرَّجُلُ مُصْفَرًّا قَلِيلَ اللَّحْمِ سَبْطَ الشَّعَرِ، وَكَانَ الَّذِي

ये स़ाहब ज़र्द रंग, कम गोश्त वाले और सीधे बालों वाले थे और वो जिसे उन्होंने अपनी बीवी के पास पाया था गंदुमी, गठे जिस्म का ज़र्द, भरे गोश्त वाला था उसके बाल बहुत ज़्यादा घुँघराले थे। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ अल्लाह! मामला स़ाफ़ कर दे। चुनाँचे उनकी बीवी ने जो बच्चा जना वो उसी शख़्स़ से मुशाबेह था जिसके बारे में शौहर ने कहा था कि उन्होंने अपनी बीवी के पास उसे पाया था। फिर हुज़ूर अकरम (ﷺ) ने दोनों के दरम्यान लिआ़न कराया। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से एक शागिर्द ने मजलिस में पूछा, क्या ये वही औ़रत है जिसके बारे में हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया था कि अगर मैं किसी को बिला शहादत संगसार करता तो इसे करता? इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि नहीं। ये दूसरी औ़रत थी जो इस्लाम के ज़माने में ऐ़लानिया बदकारी किया करती थी। (राजेअ़ : 423)

وَجَدَ عِنْدَ أَهْلِهِ آدَمَ خَدْلاً كَثِيرَ اللَّحْمِ جَعْدًا قَطِطًا فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((اللَّهُمَّ بَيِّنْ)). فَوَضَعَتْ شَبِيهًا بِالرَّجُلِ الَّذِي ذَكَرَ زَوْجُهَا أَنَّهُ وَجَدَ عِنْدَهَا، فَلاَعَنَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بَيْنَهُمَا فَقَالَ رَجُلٌ لاِبْنِ عَبَّاسٍ: فِي الْمَجْلِسِ : هِيَ الَّتِي قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لَوْ رَجَمْتُ أَحَدًا بِغَيْرِ بَيِّنَةٍ لَرَجَمْتُ هَذِهِ)). فَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : لاَ. تِلْكَ امْرَأَةٌ كَانَتْ تُظْهِرُ السُّوءَ فِي الإِسْلاَمِ. [راجع: ٤٢٣]

मगर गवाहों से उस पर बदकारी स़ाबित नहीं हुई न उसने इक़रार किया उसी वजह से इस पर ह़द न जारी हो सकी।

बाब 37 : जब किसी ने अपनी बीवी को तीन त़लाक़ दी और बीवी ने इ़द्दत गुज़ार कर दूसरे शौहर से शादी की लेकिन दूसरे शौहर ने उससे स़ुह़बत नहीं की, (तो क्या वो पहले शौहर के निकाह़ में जा सकेगी?)

٣٧- بَابُ إِذَا طَلَّقَهَا ثُمَّ تَزَوَّجَتْ بَعْدَ الْعِدَّةِ زَوْجًا غَيْرَهُ فَلَمْ يَمَسَّهَا

5317. हमसे अ़म्र बिन अ़ली ने बयान किया, कहा हमसे यह़्या ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने (दूसरी सनद और ह़ज़रत इमाम बुख़ारी रह. ने कहा कि) हमसे उ़स्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दह ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कि रिफ़ाआ़ क़ुरज़िय्य (रज़ि.) ने एक ख़ातून से निकाह़ किया, फिर उन्हें त़लाक़ दे दी, उसके बाद एक–दूसरे स़ाहब ने उन ख़ातून से निकाह़ कर लिया, फिर वो नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुईं और अपने दूसरे शौहर का ज़िक्र किया और कहा कि वो तो उनके पास आते ही नहीं और ये कि उनके पास कपड़े के पल्लू जैसा है (उन्होंने पहले शौहर के साथ दोबारा निकाह़ की ख़्वाहिश ज़ाहिर की

٥٣١٧- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ حَدَّثَنَا يَحْيَى حَدَّثَنَا هِشَامٌ قَالَ : حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ عَائِشَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ
ح. حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ حَدَّثَنَا عَبْدَةُ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ رِفَاعَةَ الْقُرَظِيَّ تَزَوَّجَ امْرَأَةً ثُمَّ طَلَّقَهَا، فَتَزَوَّجَتْ آخَرَ، فَأَتَتِ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَذَكَرَتْ لَهُ أَنَّهُ لاَ يَأْتِيهَا، وَأَنَّهُ لَيْسَ مَعَهُ إِلاَّ مِثْلُ هُدْبَةٍ فَقَالَ: ((لاَ حَتَّى تَذُوقِي عُسَيْلَتَهُ وَيَذُوقَ عُسَيْلَتَكِ)).

लेकिन) आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि नहीं । जब तक तुम उस (दूसरे शौहर) का मज़ा न चख लो और ये तुम्हारा मज़ा न चख लें। (राजेअ : 2639)

[راجع: ٢٦٣٩]

पहले शौहर से तुम्हारा निकाह़ स़ह़ीह़ नहीं होगा।

बाब 38 : और आयत वल्लाती यइस्ना अल्अख़

٣٨- باب

या'नी, तुम्हारी मुत़ल्लक़ा बीवियों में से जो हैज़ आने से मायूस हो चुकी हों, अगर तुम्हें शुब्हा हो, की तफ़्सीर मुजाहिद ने कहा या'नी जिन औरतों का ह़ाल तुमको मा'लूम न हो कि उनको हैज़ आता है या नहीं आता। इसी त़रह़ वो औरतें जो बुढ़ापे की वजह से हैज़ से मायूस हो गई हैं। इसी त़रह़ वो औरतें जो नाबालिग़ी की वजह से अभी हैज़ वाली ही नहीं हुई हैं। इस सब क़िस्म की औरतों की इद्दत तीन महीने हैं।

﴿وَاللاَّئِي يَئِسْنَ مِنَ الْمَحِيضِ مِنْ نِسَائِكُمْ إِنِ ارْتَبْتُمْ﴾ قَالَ مُجَاهِدٌ: إِنْ لَمْ تَعْلَمُوا يَحِضْنَ أَوْ لاَ يَحِضْنَ، وَاللاَّئِي قَعَدْنَ عَنِ الْحَيضِ وَاللاَّئِي لَمْ يَحِضْنَ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلاَثَةُ أَشْهُرٍ

बाब 39 : ह़ामला औरतों की इद्दत ये है कि बच्चा जनें

٣٩ - باب ﴿وَأُولاَتُ الأَحْمَالِ أَجَلُهُنَّ أَنْ يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ﴾

तशरीह़ : जनते ही उनकी इद्दत ख़त्म हो जाएगी। तो ये आयत **व ऊलातुल्अह़्मालि अजलुहुन्न अंय्यज़अन ह़मलहुन्न** (अत् त़लाक़ : 4) मुख़स्स़स़ है इस आयत की **वल्लज़ीन युतवफ़्फ़ौन मिन्कुम व यज़रून अज़्वाजंय्यतरब्बस़्न बिअन्फ़ुसिहिन्न अर्बअत अश्हुरिव्वं अशरा** (अल बक़र : 234) और ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) से ये मन्क़ूल है कि अबअ़दुल अज्लैन तक इद्दत करे। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) का भी यही क़ौल है लेकिन बाक़ी स़ह़ाबा सब उसके ख़िलाफ़ हैं और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से रुजूअ़ भी मन्क़ूल है। ऐसे ही अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) से वो कहते थे जो चाहे मैं उससे मुबाहला करने को तैयार हूँ कि सूरह त़लाक़ आख़िर में उतरी और उससे वो आयत **वल्लज़ीन युतवफ़्फ़ौन मिन्कुम** ह़ामला औरतों के बाब में मन्सूख़ हो गई।

5318. हमसे यह़्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे जा'फ़र बिन रबीआ़ ने, उनसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन हुर्मुज़ ने, कहा कि मुझे ख़बर दी अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने कि ज़ैनब बिन्ते उम्मे सलमा (रज़ि.) ने अपनी वालिदा नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुत़ह्हरा उम्मे सलमा (रज़ि.) से ख़बर दी कि एक ख़ातून जो इस्लाम लाई थीं और जिनका नाम सबीआ़ था, शौहर का जब इंतिक़ाल हुआ तो वो ह़ामला थीं। अबू सनाबिल बिन बअ़कक (रज़ि.) ने उनके पास निकाह़ का पैग़ाम भेजा लेकिन उन्होंने निकाह़ करने से इंकार किया। अबुस सनाबिल ने कहा कि अल्लाह की क़सम! जब तक इद्दत की दो मुद्दतों मे

٥٣١٨- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ جَعْفَرِ بْنِ رَبِيعَةَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ هُرْمُزَ الأَعْرَجِ قَالَ : أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ زَيْنَبَ ابْنَةَ أَبِي سَلَمَةَ أَخْبَرَتْهُ عَنْ أُمِّهَا أُمِّ سَلَمَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّ امْرَأَةً مِنْ أَسْلَمَ يُقَالُ لَهَا سُبَيْعَةُ كَانَتْ تَحْتَ زَوْجِهَا تُوُفِّيَ عَنْهَا وَهِيَ حُبْلَى، فَخَطَبَهَا أَبُو السَّنَابِلِ بْنُ بَعْكَكٍ، فَأَبَتْ أَنْ تَنْكِحَهُ، فَقَالَ: ((وَا للهِ

ما يصلحُ أنْ تنكحيه حتى تعتدي آخر الأجلين)). فمكثتْ قريبًا منْ عشرِ ليالٍ ثمّ جاءتِ النّبيّ ﷺ فقال: ((انكحي)) [راجع: ٤٩٠٩]

से लम्बी मुद्दत न गुज़ार लूँगी, तुम्हारे लिये इससे (जिससे निकाह वो करना चाहती थीं) निकाह करना सहीह नहीं होगा। फिर वो (वज़अ़े हमल के बाद) तक़रीबन दस दिन तक रुकी रहीं। उसके बाद हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुईं तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अब निकाह कर लो। (राजेअ़ : 4909)

तश्रीह : अबुस सनाबिल ने औरत को ये ग़लत़ मसला सुनाकर उसको बहकाया कि बिल फ़ेल वो अपना निकाह मुल्तवी कर दे तो उसके अ़ज़ीज़ व अक़रबा जो उस वक़्त मौजूद न थे आ जाएँगे और वो उसको समझा बुझाकर मुझसे निकाह पर राज़ी कर देंगे। दो मुद्दतों से एक वज़अ़े हमल की मुद्दत, दूसरी चार माह दस दिन की मुद्दत मुराद है। जिसके लिये अबुस सनाबिल ने फ़त्वा दिया था हालाँकि हामला की इद्दत वज़अ़े हमल है और बस।

٥٣١٩- حدّثنا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ عَنِ اللَّيْثِ عَنْ يَزِيدَ أَنَّ ابْنَ شِهَابٍ كَتَبَ إِلَيْهِ أَنَّ عُبَيْدَ اللهِ بْنَ عَبْدِ اللهِ أَخْبَرَهُ عَنْ أَبِيهِ أَنَّهُ كَتَبَ إِلَى ابْنِ أَرْقَمَ أَنْ يَسْأَلَ سُبَيْعَةَ الأَسْلَمِيَّةَ كَيْفَ أَفْتَاهَا النَّبِيُّ ﷺ، فَقَالَتْ: أَفْتَانِي إِذَا وَضَعْتُ أَنْ أَنْكِحَ. [راجع: ٣٩٩١]

5319. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उनसे लैष ने, उनसे यज़ीद ने कि इब्ने शिहाब ने उन्हें लिखा कि उबैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह ने अपने वालिद (अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा बिन मसऊ़द) से उन्हें ख़बर दी कि उन्होंने इब्नुल अरक़म को लिखा कि सबीआ़ असलमिया से पूछें कि नबी करीम (ﷺ) ने उनके बारे में क्या फ़त्वा दिया था तो उन्होंने फ़र्माया कि जब मेरे यहाँ बच्चा पैदा हो गया तो आँहज़रत (ﷺ) ने मुझे फ़त्वा दिया कि अब मैं निकाह कर लूँ। (राजेअ़ : 3991)

٥٣٢٠- حدّثنا يَحْيَى بْنُ قَزَعَةَ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنِ الْمِسْوَرِ بْنِ مَخْرَمَةَ أَنَّ سُبَيْعَةَ الأَسْلَمِيَّةَ نُفِسَتْ بَعْدَ وَفَاةِ زَوْجِهَا بِلَيَالٍ، فَجَاءَتِ النَّبِيَّ ﷺ فَاسْتَأْذَنَتْهُ أَنْ تَنْكِحَ، فَأَذِنَ لَهَا فَنَكَحَتْ.

5320. हमसे यह्या बिन क़ज़आ़ ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने, उनसे मिस्वर बिन मख़रमा ने कि सबीआ़ असलमिया अपने शौहर की वफ़ात के बाद चंद दिनों तक हालते निफ़ास में रहीं, फिर नबी करीम (ﷺ) के पास आकर उन्होंने निकाह की इजाज़त मांगी तो आँहज़रत (ﷺ) ने उन्हें इजाज़त दी और उन्होंने निकाह किया।

٤٠- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَالْمُطَلَّقَاتُ يَتَرَبَّصْنَ بِأَنْفُسِهِنَّ ثَلاَثَةَ قُرُوءٍ﴾ وَقَالَ إِبْرَاهِيمُ: فِيمَنْ تَزَوَّجَ فِي الْعِدَّةِ فَحَاضَتْ عِنْدَهُ ثَلاَثَ حِيَضٍ بَانَتْ مِنَ الأَوَّلِ، وَلاَ تَحْتَسِبُ بِهِ لِمَنْ بَعْدَهُ. وَقَالَ الزُّهْرِيُّ : تَحْتَسِبُ وَهَذَا أَحَبُّ إِلَى سُفْيَانَ يَعْنِي قَوْلَ الزُّهْرِيِّ. وَقَالَ مَعْمَرٌ:

बाब : 40 अल्लाह का ये फ़र्माना कि

मुतल्लक़ा औरतें अपने को तीन तुहर या तीन हैज़ तक रोके रखें, और इब्राहीम ने उस शख़्स के बारे में फ़र्माया जिसने किसी औरत से इद्दत ही में निकाह कर लिया और फिर वो उसके पास तीन हैज़ की मुद्दत गुज़रने तक रही कि अगर उसके बाद वो पहले ही शौहर से जुदा होगी। (और ये सिर्फ़ उसकी इद्दत समझी जाएगी) दूसरे निकाह की इद्दत का शुमार उसमें नहीं होगा लेकिन ज़ुहरी ने कहा कि उसी में दूसरे निकाह की इद्दत का शुमार भी होगा, यही या'नी

يُقَالُ أَقْرَأَتِ الْمَرْأَةُ إِذَا دَنَا حَيْضُهَا، وَأَقْرَأَتْ إِذَا دَنَا طُهْرُهَا. وَيُقَالُ مَا قَرَأَتْ بِسَلًى قَطُّ إِذَا لَمْ تَجْمَعْ وَلَدًا فِي بَطْنِهَا.

ज़ुहरी का क़ौल सुफ़यान को ज़्यादा पसंद था। मअ़मर ने कहा कि अक़्रअतिल मरअतु उस वक़्त बोलते हैं जब औरत का हैज़ क़रीब हो। इसी तरह अक़्रात उस वक़्त भी बोलते हैं जब औरत का तुहर क़रीब हो, जब किसी औरत के पेट में कभी हमल न हुआ हो तो उसके लिये अरब कहते हैं। मा क़रअत बिसल्ली क़त्तु या'नी उसको कभी पेट नहीं रहा।

तश्रीह : क़ुरूअ हैज़ और तुहर दोनों मा'नों में आता है। इसीलिये हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह़.) ने ष़लाष़ते क़ुरूअ से तीन हैज़ मुराद रखे हैं और शाफ़िई ने तीन तुहर। मगर इमाम अबू हनीफ़ा (रह़.) का मज़हब राजेह है इसलिये कि तलाक़ तुहर में शुरू है हैज़ में नहीं अब अगर किसी ने एक तुहर में तलाक़ दी तो या तो ये तुहर इद्दत में शुमार होगा। शाफ़िइया कहते हैं तब तो इद्दत तीन तुहर से कम ठहरेगी। अगर महसूब न होगा तो इद्दत तीन तुहर से ज़ाइद हो जाएगी। शाफ़िइया ये जवाब देते हैं कि दो तुहर और तीसरे तुहर के एक हिस्से को तीन तुहर कह सकते हैं जैसे फ़र्माया अल्हज्जु अश्हुरूम्मअलूमातुन (अल् बक़र : 197) हालाँकि हक़ीक़त में हज्ज के दो महीने दस दिन हैं।

٤١- باب قِصَّةِ فَاطِمَةَ بِنْتَ قَيْسٍ وَقَوْلِهِ عَزَّ وَجَلَّ

﴿وَاتَّقُوا اللهَ رَبَّكُمْ لاَ تُخْرِجُوهُنَّ مِنْ بُيُوتِهِنَّ، وَلاَ يَخْرُجْنَ إِلاَّ أَنْ يَأْتِينَ بِفَاحِشَةٍ مُبَيِّنَةٍ. وَتِلْكَ حُدُودُ اللهِ وَمَنْ يَتَعَدَّ حُدُودَ اللهِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهُ، لاَ تَدْرِي لَعَلَّ اللهَ يُحْدِثُ بَعْدَ ذَلِكَ أَمْرًا. أَسْكِنُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِنْ وُجْدِكُمْ وَلاَ تُضَارُّوهُنَّ لِتُضَيِّقُوا عَلَيْهِنَّ، وَإِنْ كُنَّ أُولاَتِ حَمْلٍ فَأَنْفِقُوا عَلَيْهِنَّ حَتَّى يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ - إِلَى قَوْلِهِ - بَعْدَ عُسْرٍ يُسْرًا﴾.

बाब 41 : फ़ातिमा बिन्ते क़ैस (रज़ि.) का वाक़िया और अल्लाह तआ़ला का फ़र्मान

और अपने परवरदिगार अल्लाह से डरते रहो, उन्हें उनके घरों से न निकालो और न वो ख़ुद निकलें, बजुज़ इस सूरत के कि वो किसी खुली बेहयाई का इर्तिकाब करें। ये अल्लाह की मुक़र्रर की हुई हदें हैं और जो कोई अल्लाह की हुदूद से बढ़ेगा, उसने अपने ऊपर ज़ुल्म किया। तुझे ख़बर नहीं शायद कि अल्लाह उसके बाद कोई नई बात पैदा कर दे। उन मुतल्लक़ात को अपनी हैष़ियत के मुताबिक़ रहने का मकान दो जहाँ तुम रहते हो और अगर वो हमल वालियाँ हों तो उन्हें ख़र्च भी देते रहो। उनके हमल के पैदा होने तक। आख़िर आयत अल्लाह तआ़ला के इर्शाद, बअ़द उस्रि युस्रा तक।

٥٣٢١ ، ٥٣٢٢- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ عَنِ الْقَاسِمِ بْنِ مُحَمَّدٍ وَسُلَيْمَانَ بْنِ يَسَارٍ أَنَّهُ سَمِعَهُمَا يَذْكُرَانِ أَنَّ يَحْيَى بْنَ سَعِيدِ بْنِ الْعَاصِ طَلَّقَ بِنْتَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْحَكَمِ، فَانْتَقَلَهَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ، فَأَرْسَلَتْ

5321,5322. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद अंसारी ने, उनसे क़ासिम बिन मुहम्मद और सुलैमान बिन यसार ने, वो दोनों बयान करते थे कि यह्या बिन सईद बिन अल आ़स ने अ़ब्दुर्रहमान बिन हकम की साहबज़ादी (उमरह) को तलाक़ दे दी थी और उनके बाप अ़ब्दुर्रहमान उन्हें उनके (शौहर के) घर से ले आए (इद्दत के अय्याम गुज़रने से पहले) आइशा को जब मा'लूम हुआ तो उन्होंने मरवान बिन

عَائِشَةُ أُمُّ الْمُؤْمِنِينَ إِلَى مَرْوَانَ، وَهُوَ أَمِيرُ الْمَدِينَةِ اتَّقِ اللهَ وَارْدُدْهَا إِلَى بَيْتِهَا. وَقَالَ مَرْوَانُ فِي حَدِيثِ سُلَيْمَانَ : إِنَّ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ الْحَكَمِ غَلَبَنِي. وَقَالَ الْقَاسِمُ بْنُ مُحَمَّدٍ : أَوَ مَا بَلَغَكِ شَأْنُ فَاطِمَةَ بِنْتِ قَيْسٍ؟ قَالَتْ: لاَ يَضُرُّكَ أَنْ لاَ تَذْكُرَ حَدِيثَ فَاطِمَةَ. فَقَالَ مَرْوَانُ بْنُ الْحَكَمِ : إِنْ كَانَ بِكِ شَرٌّ فَحَسْبُكِ مَا بَيْنَ هَذَيْنِ مِنَ الشَّرِّ.

[أطرافه في : ٥٣٢٣، ٥٣٢٥، ٥٣٤٧].

[أطرافه في : ٥٣٢٤، ٥٣٢٦، ٥٣٢٨].

हकम के यहाँ, जो उस वक़्त मदीना का अमीर था, कहलवाया कि अल्लाह से डरो और लड़की को उसके घर (जहाँ उसे तलाक़ हुई है) पहुँचा दो, जैसा कि सुलैमान बिन यसार की हदीष़ में है। मरवान ने उसका जवाब ये दिया कि लड़की के वालिद अ़ब्दुर्रहमान बिन हकम ने मेरी बात नहीं मानी और क़ासिम बिन मुहम्मद ने बयान किया कि (मरवान ने उम्मुल मोमिनीन को ये जवाब दिया कि) क्या आपको फ़ातिमा बिन्ते क़ैस (रज़ि.) के मामले का इल्म नहीं है? (उन्होंने भी अपने शौहर के घर इद्दत नहीं गुज़ारी थी) आ़इशा (रज़ि.) ने बतलाया कि अगर तुम फ़ातिमा के वाक़िया का हवाला न देते तब भी तुम्हारा कुछ न बिगड़ता (क्योंकि वो तुम्हारे लिये दलील नहीं बन सकता) मरवान बिन हकम ने इस पर कहा कि अगर आपके नज़दीक (फ़ातिमा रज़ि. का उनके शौहर के घर से मुंतक़िल करना) उनके और उनके शौहर के रिश्तेदारी के दरम्यान कशीदगी की वजह से था तो यहाँ भी यही वजह काफ़ी है कि दोनों (मियाँ–बीवी) के बीच कशीदगी थी।

(दीगर मक़ामात : 5323, 5324, 5325, 5326, 5328, 5347)

٥٣٢٣، ٥٣٢٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْقَاسِمِ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ أَنَّهَا قَالَتْ: مَا لِفَاطِمَةَ، أَلاَ تَتَّقِي اللهَ؟ يَعْنِي فِي قَوْلِهَا: لاَ سُكْنَى وَلاَ نَفَقَةَ.

[راجع: ٥٣٢١، ٥٣٢٢]

5323,5324. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा बिन हज्जाज ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रहमान बिन क़ासिम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने कहा, फ़ातिमा बिन्ते क़ैस अल्लाह से डरती नहीं! उनका इशारा उनके उस क़ौल की तरफ़ था (कि मुतल्लक़ा बाइना को) नफ़्क़ा व सकना देना ज़रूरी नहीं जो कहती है कि तलाक़े बाइन जिस औरत पर पड़े उसे मस्कन और ख़र्चा नहीं मिलेगा। (राजेअ : 5321, 5322)

٥٣٢٥، ٥٣٢٦- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَبَّاسٍ حَدَّثَنَا ابْنُ مَهْدِيٍّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْقَاسِمِ عَنْ أَبِيهِ قَالَ : قَالَ عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ لِعَائِشَةَ : أَلَمْ تَرَى إِلَى فُلاَنَةَ بِنْتِ الْحَكَمِ طَلَّقَهَا زَوْجُهَا الْبَتَّةَ

5326, 5325. हमसे अ़म्र बिन अ़ब्बास ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने मह्दी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रहमान बिन क़ासिम ने, उनसे उनके वालिद ने कि उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने हज़रत आ़इशा (रज़ि.) से कहा कि आप फ़ुलाना (अ़म्रह) बिन्ते हकम का मामला नहीं देखतीं। उनके शौहर ने उन्हें तलाक़े बाइना दे दी और वो वहाँ से निकल आईं (इद्दत गुज़ारे बग़ैर) हज़रत आ़इशा

فَخَرَجَتْ؟ فَقَالَتْ : بِئْسَ مَا صَنَعَتْ. قَالَ: أَلَمْ تَسْمَعِي فِي قَوْلِ فَاطِمَةَ؟ قَالَتْ: أَمَا إِنَّهُ لَيْسَ لَهَا خَيْرٌ فِي ذِكْرِ هَذَا الْحَدِيثِ. وَزَادَ ابْنُ أَبِي الزِّنَادِ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ : عَابَتْ عَائِشَةُ أَشَدَّ الْعَيْبِ وَقَالَتْ : إِنَّ فَاطِمَةَ كَانَتْ فِي مَكَانٍ وَحْشٍ فَخِيفَ عَلَى نَاحِيَتِهَا فَلِذَلِكَ أَرْخَصَ لَهَا النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

[راجع: ٥٣٢١، ٥٣٢٢]

(रज़ि.) ने बतलाया कि जो कुछ उसने क्या बहुत बुरा किया। ड़र्वा ने कहा आपने फ़ातिमा (रज़ि.) के वाक़िया के बारे में नहीं सुना। बतलाया कि उसके लिये इस ह़दीष़ को ज़िक्र करने में कोई ख़ैर नहीं है और इब्ने अबी ज़िनाद ने हिशाम से ये इज़ाफ़ा किया है और उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि ह़ज़रत ड़ाइशा (रज़ि.) ने हिशाम से ये इज़ाफ़ा किया है और उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि ह़ज़रत ड़ाइशा (रज़ि.) ने (ड़म्रह बिन्ते ह़कम के मामले पर) अपनी शदीद नागवारी का इज़्हार फ़र्माया और फ़र्माया कि फ़ातिमा बिन्तेक़ैस (रज़ि.) तो एक उजाड़ जगह में थीं और उसके चारों त़रफ़ डर और वह्शत बरसती थी, इसलिये नबी करीम (ﷺ) ने (वहाँ से मुंतक़िल होने की) उन्हें इजाज़त दे दी थी। (राजेअ़ : 5321, 5322)

٤٢- باب الْمُطَلَّقَةِ إِذَا خُشِيَ عَلَيْهَا فِي مَسْكَنِ زَوْجِهَا أَنْ يُقْتَحَمَ عَلَيْهَا، أَوْ تَبْذُوَ عَلَى أَهْلِهَا بِفَاحِشَةٍ.

बाब : 42 वो मुत़ल्लक़ा औरत जिसके शौहर के घर में किसी (चोर वग़ैरह या ख़ुद शौहर) के अचानक अंदर आ जाने का डर हो या शौहर के घर वाले बद कलामी करें तो उसको इद्दत के अंदर वहाँ से उठ जाना दुरुस्त है

तश्रीह़ : लेकिन जिस औरत को त़लाक़े रजई दी जाए उसके लिये सबके नज़दीक मस्कन और ख़र्चा शौहर पर लाज़िम होगा या'नी इद्दत पूरी होने तक गो ह़ामिला न हो और त़लाक़े बाइन वाली के लिये कुछ सलफ़ ने मस्कन वाजिब रखा है इस आयत से **अस्किनूहुन्न** लेकिन नफ़्क़ा वाजिब नहीं रखा और ह़ामला औरत के लिये वज़्ए ह़मल तक मस्कन और ख़र्च सबने लाज़िम रखा है लेकिन ग़ैर ह़ामला में जिसको त़लाक़े बाइन दी जाए इख़्तिलाफ़ है। जैसे ऊपर गुज़र चुका। ह़नफ़िया ने उसके लिये भी नफ़्क़ा और मस्कन वाजिब रखा है क्योंकि आयत आम है और ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) के क़ौल से दलील लेते हैं कि उन्होंने फ़ातिमा बिन्ते क़ैस की रिवायत को रद्द किया और कहा हम अल्लाह की किताब और अपने पैग़म्बर की सुन्नत एक औरत के कहने पर नहीं छोड़ सकते जो मा'लूम नहीं उसने याद रखा या भूल गई। ह़ालाँकि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने बाइना औरत के लिये सिर्फ़ मस्कन को लाज़िम रखा न कि नफ़्क़ा को। दूसरे इमाम अह़मद ने कहा ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) से ये क़ौल ष़ाबित नहीं है। इमाम शौकानी ने अहले ह़दीष़ का मज़हब रखा है कि नफ़्क़ा और सुकना सिर्फ़ मुत़ल्लक़ा रजई के लिये वाजिब है मुत़ल्लक़ा बाइना के लिये वाजिब नहीं है मगर औरत ह़ामला हो इसी त़रह़ वफ़ात की इद्दत में भी नफ़्क़ा और सुकना वाजिब नहीं है मगर जब ह़ामला हो।

٥٣٢٧، ٥٣٢٨- حدثني حِبَّانُ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ أَنَّ عَائِشَةَ أَنْكَرَتْ ذَلِكَ عَلَى فَاطِمَةَ. [راجع: ٥٣٢١، ٥٣٢٢]

5327,5328. मुझसे ह़िब्बान बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें ड़र्वा ने कि ड़ाइशा (रज़ि.) ने फ़ातिमा बिन्ते क़ैस (रज़ि.) की इस बात का (कि मुत़ल्लक़ा बाइना को नफ़्क़ा व सुकना नहीं मिलेगा) इंकार किया। (राजेअ़ : 5321,5322)

तश्रीह़ : जो वो कहती थी कि तीन त़लाक़ वाली के लिये न मस्कन है न ख़र्चा। ह़दीष़ से बाब का तर्जुमा नहीं निकलता

मगर हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने अपनी आदत के मुवाफ़िक़ उसके दूसरे तरीक़ की तरफ़ इशारा किया जिसमें ये मज़्कूर है कि हज़रत आइशा(रज़ि.) ने फ़ातिमा बिन्ते क़ैस (रज़ि.) से कहा कि तेरी ज़ुबान ने तुझको निकलवाया था।

٤٣- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى : ﴿وَلاَ يَحِلُّ لَهُنَّ أَنْ يَكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللهُ فِي أَرْحَامِهِنَّ﴾ مِنَ الْحَيْضِ وَالْحَمْلِ

बाब : 43 अल्लाह तआ़ला का ये फ़र्माना कि औरतों के लिये ये जाइज़ नहीं कि अल्लाह तआ़ला ने जो उनके रहमों में पैदा कर रखा है उसे वो छुपा रखें कि हैज़ आता है या हमल है

٥٣٢٩- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الْحَكَمِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنِ الأَسْوَدِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : لَمَّا أَرَادَ رَسُولُ اللهِ ﷺ أَنْ يَنْفِرَ، إِذَا صَفِيَّةُ عَلَى بَابِ خِبَائِهَا كَئِيبَةً، فَقَالَ لَهَا: ((عَقْرَى أَوْ حَلْقَى إِنَّكِ لَحَابِسَتُنَا، أَكُنْتِ أَفَضْتِ يَوْمَ النَّحْرِ؟)) قَالَتْ : نَعَمْ. قَالَ : ((فَانْفِرِي إِذًا)).[راجع: ٢٩٤]

5329. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा बिन हज्जाज ने, उनसे हकम बिन उत्बा ने, उनसे इब्राहीम नख़ई ने, उनसे अस्वद बिन यज़ीद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब नबी करीम (ﷺ) ने (हज्जतुल वदाअ में) कूच का इरादा किया तो देखा कि सफ़िया (रज़ि.) अपने ख़ैमा के दरवाज़े पर ग़मगीन खड़ी हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया, अक़्रा या (फ़र्माया रावी को शक था) हल्क़ा मा'लूम होता है कि तुम हमें रोक दोगी, क्या तुमने क़ुर्बानी के दिन तवाफ़ कर लिया है? उन्होंने अर्ज़ किया कि जी हाँ। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर चलो। (राजेअ : 294)

(अक़्रा हल्क़ा अरब में प्यार के अल्फ़ाज़ हैं उससे बद्दुआ मक़्सूद नहीं है। अक़्रा या'नी अल्लाह तुझको ज़ख़्मी करे। हल्क़ा तेरे हलक़ में ज़ख़्म हो। इस हदीष़ की मुताबक़त बाब से यूँ है कि आपने सिर्फ़ सफ़िया (रज़ि.) का क़ौल उनके हाइज़ा होने के बारे में तस्लीम फ़र्माया तो मा'लूम हुआ कि शौहर के मुक़ाबले में भी या'नी रज्अत और सुकूते रज्अत और इद्दत गुज़र जाने वग़ैरह इन उमूर में औरत के क़ौल की तस्दीक़ की जाएगी।

٤٤- باب ﴿وَبُعُولَتُهُنَّ أَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ﴾ فِي الْعِدَّةِ وَكَيْفَ يُرَاجِعُ الْمَرْأَةَ إِذَا طَلَّقَهَا وَاحِدَةً أَوْ ثِنْتَيْنِ

बाब 44 : और अल्लाह का सूरह बक़रह में ये फ़र्माना कि इद्दत के अंदर औरतों के शौहर उनके ज़्यादा हक़दार हैं या'नी रुज्अत कर

के और इस बात का बयान कि जब औरत को एक या दो तलाक़ दी हों तो क्यूँ कर रज्अत करे

٥٣٣٠- حَدَّثَنِي مُحَمَّدٌ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ حَدَّثَنَا يُونُسُ عَنِ الْحَسَنِ قَالَ : زَوَّجَ مَعْقِلٌ أُخْتَهُ فَطَلَّقَهَا تَطْلِيقَةً. [راجع: ٤٥٢٩]

5330. मुझसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल वह्हाब ष़क़फ़ी ने ख़बर दी, उनसे यूनुस बिन उबैद ने बयान किया, उनसे इमाम हसन बसरी ने बयान किया कि मअक़ल बिन यसार (रज़ि.) ने अपनी बहन जमीला का निकाह किया, फिर (उनके शौहर ने) उन्हें एक तलाक़ दी। (राजेअ : 4529)

٥٣٣١- وحدثني مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى

5331. मुझसे मुहम्मद बिन मुष़न्ना ने बयान किया, कहा हमसे

حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى حَدَّثَنَا سَعِيدٌ عَنْ قَتَادَةَ حَدَّثَنَا الْحَسَنُ أَنَّ مَعْقِلَ بْنَ يَسَارٍ كَانَتْ أُخْتُهُ تَحْتَ رَجُلٍ فَطَلَّقَهَا، ثُمَّ خَلَّى عَنْهَا حَتَّى انْقَضَتْ عِدَّتُهَا، ثُمَّ خَطَبَهَا، فَحَمِيَ مَعْقِلٌ مِنْ ذَلِكَ آنِفًا فَقَالَ: خَلَّى عَنْهَا وَهُوَ يَقْدِرُ عَلَيْهَا ثُمَّ يَخْطُبُهَا، فَحَالَ بَيْنَهُ وَبَيْنَهَا، فَأَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى ﴿وَإِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَلاَ تَعْضُلُوهُنَّ﴾ إِلَى آخِرِ الآيَةِ فَدَعَاهُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَرَأَ عَلَيْهِ، فَتَرَكَ الْحَمِيَّةَ، وَاسْتَقَادَ لأَمْرِ اللهِ.
[راجع: ٤٥٢٩]

अ़ब्दुल आ़ला ने बयान किया, कहा हमसे सईद बिन अबी उ़रूबा ने उनसे क़तादा ने, कहा हमसे इमाम ह़सन बस़री ने बयान किया कि मअ़क़ल बिन यसार (रज़ि.) की बहन एक आदमी के निकाह में थीं, फिर उन्होंने उन्हें त़लाक़ दे दी, उसके बाद उन्होंने तन्हाई में इद्दत गुज़ारी। इद्दत के दिन जब ख़त्म हो गये तो उनके पहले शौहर ने ही फिर मअ़क़ल (रज़ि.) के पास उनके लिये निकाह का पैग़ाम भेजा। मअ़क़ल (रज़ि) को उस पर बड़ी ग़ैरत आई। उन्होंने कहा जब वो इद्दत गुज़ार रही थी तो उसे उस पर क़ुदरत थी (कि दौराने इद्दत में रज्अ़त कर ले लेकिन ऐसा नहीं किया) और अब मेरे पास निकाह़ का पैग़ाम भेजता है। चुनाँचे वो उनके और अपनी बहन के बीच में ह़ाइल हो गये। इस पर ये आयत नाज़िल हुई। और जब तुम अपनी औ़रतों को त़लाक़ दे चुको और वो अपनी मुद्दत को पहुँच चुकें तो तुम उन्हें मत रोको, आख़िर आयत तक, फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें बुलाकर ये आयत सुनाई तो उन्होंने ज़िद छोड़ दी और अल्लाह के हुक्म के सामने झुक गये। (राजेअ़ : 4529)

अहले ह़दीष़ का क़ौल ये है कि इद्दत गुज़र जाने के बाद रज्अ़त निकाहे जदीद से होती है और इद्दत के अंदर औ़रत से जिमाअ़ करना ही रज्अ़त के लिये काफ़ी है।

٥٣٣٢- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ نَافِعٍ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا طَلَّقَ امْرَأَةً لَهُ وَهِيَ حَائِضٌ تَطْلِيقَةً وَاحِدَةً، فَأَمَرَهُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يُرَاجِعَهَا ثُمَّ يُمْسِكَهَا حَتَّى تَطْهُرَ، ثُمَّ تَحِيضَ عِنْدَهُ حَيْضَةً أُخْرَى، ثُمَّ يُمْهِلَهَا حَتَّى تَطْهُرَ مِنْ حَيْضِهَا، فَإِنْ أَرَادَ أَنْ يُطَلِّقَهَا فَلْيُطَلِّقْهَا حِينَ تَطْهُرُ مِنْ قَبْلِ أَنْ يُجَامِعَهَا، فَتِلْكَ الْعِدَّةُ الَّتِي أَمَرَ اللهُ أَنْ تُطَلَّقَ لَهَا النِّسَاءُ. وَكَانَ عَبْدُ اللهِ إِذَا سُئِلَ عَنْ ذَلِكَ قَالَ لأَحَدِهِمْ: إِنْ كُنْتَ طَلَّقْتَهَا ثَلاَثًا فَقَدْ حَرُمَتْ عَلَيْكَ حَتَّى تَنْكِحَ زَوْجًا

5332. हमसे क़ुतैबा ने बयान किया, कहा हमको लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे इब्ने उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने कि उन्होंने अपनी बीवी को एक त़लाक़ दी तो उस वक़्त वो ह़ाइज़ा थीं। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनको हुक्म दिया कि रज्अ़त कर लें और उन्हें उस वक़्त तक अपने साथ रखें जब तक वो इस हैज़ से पाक होने के बाद फिर दोबारा ह़ाइज़ा न हों। उस वक़्त भी उनसे कोई तअ़र्रुज़ न करें और जब वो उस हैज़ से भी पाक हो जाएँ तो अगर उस वक़्त उन्हें त़लाक़ देने का इरादा हो तो तुहर में इससे पहले कि उनसे हमबिस्तरी करें, त़लाक़ दें। पस यही वो वक़्त है जिसके बारे में अल्लाह तआ़ला ने हुक्म दिया है कि उसमें औ़रतों को त़लाक़ दी जाए और अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से अगर उसके (मुत़ल्लक़ा ष़लाष़ा के) बारे में सवाल किया जाता तो सवाल करने वाले से वो कहते कि अगर तुमने तीन त़लाक़ें दे दी हैं तो फिर तुम्हारी बीवी तुम पर ह़राम है। यहाँ तक कि वो तुम्हारे सिवा दूसरे

غَيْرُهُ وَزَادَ فِيهِ غَيْرُهُ عَنِ اللَّيْثِ : حَدَّثَنِي نَافِعٌ قَالَ ابْنُ عُمَرَ: لَوْ طَلَّقْتَ مَرَّةً أَوْ مَرَّتَيْنِ فَإِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَمَرَنِي بِهَذَا.
[راجع: ٤٩٠٨]

शौहर से निकाह करे। ग़ैर क़तीबह (अबुज जहम) के इस हदीष़ में लैष़ से ये इज़ाफ़ा किया है कि (उन्होंने बयान किया कि) मुझसे नाफ़ेअ ने बयान किया और उनसे इब्ने ड़मर (रज़ि.) ने कहा कि अगर तुमने अपनी बीवी को एक या दो त़लाक़ दे दी हो। तो तुम उसे दोबारा अपने निकाह में ला सकते हो) क्योंकि नबी करीम (ﷺ) ने मुझे इसका हुक्म दिया था। (राजेअ : 4908)

٤٥- باب مُرَاجَعَةِ الْحَائِضِ

बाब 45 : बाब ह़ाइज़ा से रज्अ़त करना

٥٣٣٣- حَدَّثَنَا حَجَّاجٌ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِيرِينَ حَدَّثَنِي يُونُسُ بْنُ جُبَيْرٍ سَأَلْتُ ابْنَ عُمَرَ فَقَالَ طَلَّقَ ابْنُ عُمَرَ امْرَأَتَهُ وَهْيَ حَائِضٌ فَسَأَلَ عُمَرُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَمَرَهُ أَنْ يُرَاجِعَهَا ثُمَّ يُطَلِّقَ مِنْ قُبُلِ عِدَّتِهَا)) قُلْتُ: أَفَتَعْتَدُّ بِتِلْكَ التَّطْلِيقَةِ قَالَ: ((أَرَأَيْتَ إِنْ عَجَزَ وَاسْتَحْمَقَ)).
[راجع : ٤٩٠٨]

5333. हमसे ह़ज्जाज ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे मुह़म्मद बिन सीरीन ने बयान किया, कहा मुझसे यूनुस बिन जुबैर ने बयान किया कि मैंने इब्ने ड़मर (रज़ि.) से पूछा तो उन्होंने बतलाया कि इब्ने ड़मर (रज़ि.) ने अपनी बीवी को त़लाक़ दे दी, उस वक़्त वो ह़ाइज़ा थीं। फिर ह़ज़रत ड़मर (रज़ि.) ने उसके बारे में नबी करीम (ﷺ) से पूछा तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने हुक्म दिया कि इब्ने ड़मर (रज़ि.) अपनी बीवी से रुजूअ कर लें, फिर जब त़लाक़ का स़हीह वक़्त आए तो त़लाक़ दें (यूनुस बिन जुबैर ने बयान किया कि इब्ने ड़मर रज़ि. से) मैंने पूछा कि क्या उस त़लाक़ का भी शुमार बयान हुआ था? उन्होंने बतलाया कि अगर कोई त़लाक़ देने वाला शरअ के अहकाम बजा लाने से आजिज़ हो या अहमक़ बेवक़ूफ़ हो (तो क्या त़लाक़ नहीं पड़ेगी?)। (राजेअ : 4908)

٤٦- باب تُحِدُّ الْمُتَوَفَّى عَنْهَا زَوْجُهَا أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا

बाब 46 : जिस औरत का शौहर मर जाए वो चार महीने दस दिन तक सोग मनाए

وَقَالَ الزُّهْرِيُّ : لاَ أَرَى أَنْ تَقْرَبَ الصَّبِيَّةُ الْمُتَوَفَّى عَنْهَا الطِّيبَ لأَنَّ عَلَيْهَا الْعِدَّةَ.
حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي بَكْرِ بْنِ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ حَزْمٍ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ نَافِعٍ عَنْ زَيْنَبَ ابْنَةِ أَبِي سَلَمَةَ أَنَّهَا أَخْبَرَتْهُ هَذِهِ الأَحَادِيثَ الثَّلاَثَةَ.

ज़ुह्री ने कहा कि कम ड़म्र लड़की का शौहर भी अगर इंतिक़ाल कर गया हो तो मैं उसके लिये भी ख़ुश्बू का इस्ते'माल जाइज़ नहीं समझता क्योंकि उस पर इद्दत वाजिब है हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन अबीबक्र बिन मुहम्मद बिन अ़म्र बिन ह़ज़्म ने, उन्हें हुमैद बिन नाफ़ेअ ने और उन्हें ज़ैनब बिन्ते अबी सलमा (रज़ि.) ने इन तीन अह़ादीष़ की ख़बर दी।

5334. ज़ैनब (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतह्हरा उम्मे हबीबा (रज़ि.) के पास उस वक़्त गई जब उनके वालिद अबू सुफ़यान बिन हर्ब (रज़ि.) का इंतिक़ाल हुआ था। उम्मे हबीबा ने ख़ुश्बू मंगवाई जिसमें ख़लूक़ ख़ुश्बू की ज़र्दी या किसी और चीज़ की मिलावट थी, फिर वो ख़ुश्बू एक लौण्डी ने उनको लगाई और उम्मुल मोमिनीन ने ख़ुद अपने रुख़सारों पर उसे लगाया। उसके बाद कहा कि वल्लाह! मुझे ख़ुश्बू के इस्ते'माल की कोई ख़्वाहिश नहीं थी लेकिन मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि किसी औरत के लिये जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखती हो जाइज़ नहीं कि वो तीन दिन से ज़्यादा किसी का सोग मनाए सिवा शौहर के (कि उसका सोग) चार महीने दस दिन का है। (राजेअ: 1280)

٥٣٣٤- قَالَتْ زَيْنَبُ : دَخَلتُ عَلَى أُمِّ حَبِيبَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ حِينَ تُوُفِّيَ أَبُوهَا أَبُو سُفْيَانَ بْنُ حَرْبٍ، فَدَعَتْ أُمُّ حَبِيبَةَ بِطِيبٍ فِيهِ صُفْرَةٌ أَوْ غَيْرُهُ، فَدَهَنَتْ مِنْهُ جَارِيَةً ثُمَّ مَسَّتْ بِعَارِضَيْهَا ثُمَّ قَالَتْ : اما وا لله مَالِي بِالطِّيبِ مِنْ حَاجَةٍ، غَيْرَ أَنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((لاَ يَحِلُّ لاِمْرَأَةٍ تُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ أَنْ تُحِدَّ عَلَى مَيِّتٍ فَوْقَ ثَلاَثِ لَيَالٍ، إِلاَّ عَلَى زَوْجٍ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا)). [راجع: ١٢٨٠]

5335. हज़रत ज़ैनब (रज़ि.) ने बयान किया कि उसके बाद मैं उम्मुल मोमिनीन ज़ैनब बिन्ते जह्श (रज़ि.) के यहाँ उस वक़्त गई जब उनके भाई का इंतिक़ाल हुआ। उन्होंने भी ख़ुश्बू मंगवाई और इस्ते'माल की और कहा कि वल्लाह! मुझे ख़ुश्बू के इस्ते'माल की ख़्वाहिश नहीं थी लेकिन मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को बरसरे मिम्बर ये फ़र्माते सुना है कि किसी औरत के लिये जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखती हो ये जाइज़ नहीं कि किसी मय्यत पर तीन दिन से ज़्यादा सोग मनाए सिर्फ़ शौहर के लिये चार महीने दस दिन का सोग है। (राजेअ: 1282)

٥٣٣٥- قَالَتْ زَيْنَبُ: فَدَخَلْتُ عَلَى زَيْنَبَ ابْنَةِ جَحْشٍ حِينَ تُوُفِّيَ أَخُوهَا، فَدَعَتْ بِطِيبٍ فَمَسَّتْ مِنْهُ ثُمَّ قَالَتْ : أَمَا وَاللهِ مَالِي بِالطِّيبِ مِنْ حَاجَةٍ، غَيْرَ أَنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ عَلَى الْمِنْبَرِ ((لاَ يَحِلُّ لاِمْرَأَةٍ تُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ أَنْ تُحِدَّ عَلَى مَيِّتٍ فَوْقَ ثَلاَثِ لَيَالٍ، إِلاَّ عَلَى زَوْجٍ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا)). [راجع: ١٢٨٢]

5336. ज़ैनब बिन्ते उम्मे सलमा (रज़ि.) ने कहा कि मैंने उम्मे सलमा रज़ि.) को भी ये कहते सुना कि एक ख़ातून रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आईं और अर्ज़ किया या रसूल ल्लाह (ﷺ)! मेरी लड़की के शौहर का इंतिक़ाल हो गया है और उसकी आँखों में तकलीफ़ है तो क्या वो सुर्मा लगा सकती है? आँहज़रत (ﷺ) ने उस पर फ़र्माया कि नहीं, दो तीन मर्तबा (आपने ये फ़र्माया) हर मर्तबा ये फ़र्माते थे कि नहीं! फिर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि (शरई इद्दत) चार महीने और दस दिन ही की है। जाहिलियत में तो तुम्हें साल भर तक मींगनी फेंकनी पड़ती थी (जब कहीं इद्दत से बाहर होती थी)।

٥٣٣٦- قَالَتْ زَيْنَبُ وَسَمِعْتُ أُمَّ سَلَمَةَ تَقُولُ: جَاءَتِ امْرَأَةٌ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ، فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنَّ ابْنَتِي تُوُفِّيَ عَنْهَا زَوْجُهَا وَقَدِ اشْتَكَتْ عَيْنُهَا أَفَتَكْحُلُهَا؟ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لاَ)) مَرَّتَيْنِ أَوْ ثَلاَثًا. كُلُّ ذَلِكَ يَقُولُ: لاَ. ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّمَا هِيَ أَرْبَعَةُ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا، وَقَدْ كَانَتْ إِحْدَاكُنَّ فِي

الْجَاهِلِيَّةِ تَرْمِي بِالْبَعْرَةِ عَلَى رَأْسِ الْحَوْلِ)).[طرفاه في : ٥٣٣٨، ٥٧٠٦].

(दीगर मक़ामात : 5338, 5706)

٥٣٣٧- قَالَ حُمَيْدٌ : فَقُلْتُ لِزَيْنَبَ وَمَا تَرْمِي بِالْبَعْرَةِ عَلَى رَأْسِ الْحَوْلِ؟ فَقَالَتْ زَيْنَبُ: كَانَتِ الْمَرْأَةُ إِذَا تُوُفِّيَ عَنْهَا زَوْجُهَا دَخَلَتْ حِفْشًا وَلَبِسَتْ شَرَّ ثِيَابِهَا وَلَمْ تَمَسَّ طِيبًا حَتَّى تَمُرَّ بِهَا سَنَةٌ، ثُمَّ تُؤْتَى بِدَابَّةٍ حِمَارٍ أَوْ شَاةٍ أَوْ طَائِرٍ فَتَفْتَضُّ بِهِ، فَقَلَّمَا تَفْتَضُّ بِشَيْءٍ إِلاَّ مَاتَ، ثُمَّ تَخْرُجُ فَتُعْطَى بَعْرَةً فَتَرْمِي، ثُمَّ تُرَاجِعُ بَعْدَ مَا شَاءَتْ مِنْ طِيبٍ أَوْ غَيْرِهِ. سُئِلَ مَالِكٌ رَحِمَهُ اللهُ : مَا تَفْتَضُّ بِهِ؟ قَالَ: تَمْسَحُ بِهِ جِلْدَهَا.

5337. हुमैद ने बयान किया कि मैंने ज़ैनब बिन्ते उम्मे सलमा (रज़ि.) से पूछा कि उसका क्या मत़लब है कि, साल भर तक मींगनी फेंकनी पड़ती थी? उन्होंने फ़र्माया कि ज़माना-ए-जाहिलियत में जब किसी औ़रत का शौहर मर जाता तो वो एक निहायत तंग व तारीक कोठरी में दाख़िल हो जाती। सबसे बुरे कपड़े पहनती और ख़ुश्बू का इस्ते'माल तर्क कर देती। यहाँ तक कि उसी ह़ालत मे एक साल गुज़र जाता फिर किसी चौपाए गधे या बकरी या परिन्दा को उसके पास लाया जाता और वो इ़द्दत से बाहर आने के लिये उस पर हाथ फेरती। ऐसा कम होता था कि वो किसी जानवर पर हाथ फेर दे और वो मर न जाए। उसके बाद वो निकाली जाती और उसे मींगनी दी जाती जिसे वो फेंकती। अब वो ख़ुश्बू वग़ैरह कोई भी चीज़ इस्ते'माल कर सकती थी। इमाम मालिक से पूछा गया कि, तफ़तज़्ज़ु बिही का क्या मत़लब है तो आपने फ़र्माया वो उसका जिस्म छूती थी।

٤٧- باب الْكُحْلِ لِلْحَادَّةِ

बाब 47 : औ़रत इ़द्दत में सुर्मे का इस्ते'माल न करे

٥٣٣٨- حَدَّثَنَا آدَمُ بْنُ أَبِي إِيَاسٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا حُمَيْدُ بْنُ نَافِعٍ عَنْ زَيْنَبَ ابْنَةِ أُمِّ سَلَمَةَ عَنْ أُمِّهَا أَنَّ امْرَأَةً تُوُفِّيَ زَوْجُهَا، فَخَشُوا عَيْنَيْهَا، فَأَتَوْا رَسُولَ اللهِ ﷺ فَاسْتَأْذَنُوهُ فِي الْكُحْلِ، فَقَالَ: ((لاَ تَكَحَّلْ، قَدْ كَانَتْ إِحْدَاكُنَّ تَمْكُثُ فِي شَرِّ أَحْلاَسِهَا. أَوْ شَرِّ بَيْتِهَا. فَإِذَا كَانَ حَوْلٌ فَمَرَّ كَلْبٌ رَمَتْ بِبَعْرَةٍ فَلاَ حَتَّى تَمْضِيَ أَرْبَعَةُ أَشْهُرٍ وَعَشْرٌ)). وَسَمِعْتُ زَيْنَبَ ابْنَةَ أُمِّ سَلَمَةَ تُحَدِّثُ عَنْ أُمِّ حَبِيبَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ:

5338. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने, कहा हमसे हुमैद बिन नाफ़ेअ़ ने, उनसे ज़ैनब बिन्ते उम्मे सलमा (रज़ि.) ने अपनी वालिदा से कि एक औ़रत के शौहर का इंतिक़ाल हो गया, उसके बाद उसकी आँख में तकलीफ़ हुई तो उसके घर वाले रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और आपसे सुर्मा लगाने की इजाज़त त़लब की। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि सुर्मा (ज़माना-ए-इ़द्दत में) न लगाओ। (ज़माना-ए-जाहिलियत में) तुम्हें बदतरीन कपड़े में वक़्त गुज़ारना पड़ता था, या (रावी को शक था कि ये फ़र्माया कि) बदतरीन घर में वक़्त (इ़द्दत) गुज़ारना पड़ता था। जब इस त़रह़ एक साल पूरा हो जाता तो उसके पास से कुत्ता गुज़रता और वो उस पर मींगनी फेंकती (जब इ़द्दत से बाहर आती) पस सुर्मा न लगाओ। यहाँ तक कि चार महीने दस दिन गुज़र जाएँ और मैंने ज़ैनब बिन्ते उम्मे सलमा से सुना, वो उम्मे ह़बीबा से

बयान करती थीं कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया। (राजेअ : 5336)

[راجع: ٥٣٣٦]

5339. एक मुसलमान औरत जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखती हो। उसके लिये जाइज़ नहीं कि वो किसी (की वफ़ात) का सोग तीन दिन से ज़्यादा मनाए सिवाय शौहर के कि उसके लिये चार महीने दस दिन हैं। (राजेअ : 1280)

٥٣٣٩- ((لاَ يَحِلُّ لاِمْرَأَةٍ مُسْلِمَةٍ تُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ أَنْ تُحِدَّ فَوْقَ ثَلاَثَةِ أَيَّامٍ، إِلاَّ عَلَى زَوْجِهَا أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا)). [راجع: ١٢٨٠]

5340. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे बिश्र ने बयान किया, कहा हमसे सलमा बिन्ते अल्क़मा ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन सीरीन ने कि उम्मे अ़तिया (रज़ि.) ने बयान किया कि हमें मना किया गया है कि शौहर के सिवा किसी का सोग तीन दिन से ज़्यादा मनाएँ। (राजेअ : 303)

٥٣٤٠- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا بِشْرٌ حَدَّثَنَا سَلَمَةُ بْنُ عَلْقَمَةَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ قَالَتْ أُمُّ عَطِيَّةَ : نُهِينَا أَنْ نُحِدَّ أَكْثَرَ مِنْ ثَلاَثٍ إِلاَّ بِزَوْجٍ. [راجع: ٣٠٣]

बाब 48 : ज़मान-ए-इद्दत में हैज़ से पाकी के वक़्त ऊ़द का इस्ते'माल करना जाइज़ है

٤٨- باب الْقُسْطِ لِلْحَادَّةِ عِنْدَ الطُّهْرِ

5341. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल वह्हाब ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे ह़फ़्सा ने और उनसे उम्मे अ़तिया (रज़ि.) ने बयान किया कि हमें इससे मना किया गया कि किसी मय्यित का तीन दिन से ज़्यादा सोग मनाएँ सिवाए शौहर के कि उसके लिये चार महीने दस दिन की इद्दत थी। इस अ़र्से में हम न सुर्मा लगाते न ख़ुश्बू इस्ते'माल करते और न रंगा कपड़ा पहनते थे। अल्बत्ता वो कपड़ा उससे अलग था जिसका (धागा) बुनने से पहले ही रंग दिया गया हो। हमें उसकी इजाज़त थी कि अगर कोई हैज़ के बाद ग़ुस्ल करे तो उस वक़्त अज़्फ़ार का थोड़ा सा ऊ़द इस्ते'माल कर ले और हमें जनाज़े के पीछे चलने की भी मुमानअ़त थी। (राजेअ : 313)

٥٣٤١- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الْوَهَّابِ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ حَفْصَةَ عَنْ أُمِّ عَطِيَّةَ قَالَتْ : كُنَّا نُنْهَى أَنْ نُحِدَّ عَلَى مَيِّتٍ فَوْقَ ثَلاَثٍ إِلاَّ عَلَى زَوْجٍ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا. وَلاَ نَكْتَحِلَ، وَلاَ نَطَّيَّبَ، وَلاَ نَلْبَسَ ثَوْبًا مَصْبُوغًا، إِلاَّ ثَوْبَ عَصْبٍ. وَقَدْ رُخِّصَ لَنَا عِنْدَ الطُّهْرِ إِذَا اغْتَسَلَتْ إِحْدَانَا مِنْ مَحِيضِهَا فِي نُبْذَةٍ مِنْ كُسْتِ أَظْفَارٍ، وَكُنَّا نُنْهَى عَنِ اتِّبَاعِ الْجَنَائِزِ. [راجع: ٣١٣]

औ़रतों का जनाज़े के साथ जाना इसलिये मना है कि औ़रतें कमज़ोर दिल और बेसब्र होती हैं। इस सूरत में उनसे ख़िलाफ़े शरई उमूर का इर्तिकाब मुम्किन है इसलिये शरअ़ शरीफ़ ने इब्तिदा ही में औ़रतों को इससे रोक दिया। इसीलिये औ़रतों का क़ब्रिस्तान में जाना मना है।

बाब 49 : सोग वाली औ़रत यमन के धारीदार कपड़े पहन सकती है

٤٩- باب تَلْبَسُ الْحَادَّةُ ثِيَابَ الْعَصْبِ

5342. हमसे फ़ज़ल बिन दुकैन ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुस्सलाम बिन ह़र्ब ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन ह़स्सान ने, उनसे ह़फ़्स़ा बिन्ते सीरीन ने और उनसे उम्मे अ़तिया (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जो औ़रत अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखती हो उसके लिये जाइज़ नहीं कि तीन दिन से ज़्यादा किसी का सोग मनाए सिवा शौहर के वो उसके सोग में न सुर्मा लगाए न रंगा हुआ कपड़ा पहने मगर यमन का धारीदार कपड़ा (जो बुनने से पहले ही रंगा गया हो)। (राजेअ़ : 313)

٥٣٤٢- حدثنا الفَضْلُ بْنُ دُكَيْنٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ السَّلاَمِ بْنُ حَرْبٍ عَنْ هِشَامٍ عَنْ حَفْصَةَ عَنْ أُمِّ عَطِيَّةَ قَالَتْ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لاَ يَحِلُّ لاِمْرَأَةٍ تُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ أَنْ تُحِدَّ فَوْقَ ثَلاَثٍ، إِلاَّ عَلَى زَوْجٍ، فَإِنَّهَا لاَ تَكْتَحِلُ وَلاَ تَلْبَسُ مَصْبُوغًا إِلاَّ ثَوْبَ عَصْبٍ)). [راجع: ٣١٣]

5343. इमाम बुख़ारी के शैख़ अंसारी ने बयान किया कि हमसे हिशाम बिन ह़स्सान ने बयान किया, कहा हमसे ह़फ़्स़ा बिन्ते सीरीन ने और उनसे उम्मे अ़तिया ने कि नबी करीम (ﷺ) ने मना फ़र्माया (किसी मय्यित पर) शौहर के अ़लावा तीन दिन से ज़्यादा सोग करने से और (फ़र्माया कि) ख़ुश्बू का इस्ते'माल न करे, सिवा तुहर के वक़्त जब ह़ैज़ से पाक हो तो थोड़ा सा ऊ़द (क़स्त़) और (मक़ाम) अज़्फ़ार (की ख़ुश्बू इस्ते'माल कर सकती है) अबू अ़ब्दुल्लाह (ह़ज़रत इमाम बुख़ारी रह.) कहते हैं कि क़स्त़ और अल कस्त एक ही चीज़ हैं, जैसे काफ़ूर और क़ाफ़ूर दोनों एक हैं। (राजेअ़ : 313)

٥٣٤٣- وَقَالَ الأَنْصَارِيُّ: حدثنا هِشَامٌ حَدَّثَتْنَا حَفْصَةُ حَدَّثَتْنِي أُمُّ عَطِيَّةَ نَهَى النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: وَلاَ تَمَسُّ طِيبًا إِلاَّ أَدْنَى طُهْرِهَا اذا طهرت نُبْذَةً مِنْ قُسْطٍ وَأَظْفَارٍ. قال ابوعبدالله: القسط والكست مثل الكافور والقافور. [راجع: ٣١٣]

तश्रीह : किसी भी मय्यित पर तीन दिन से ज़्यादा सोग करना मना है मगर शौहर के लिये चार महीने दस दिन के सोग की इजाज़त है। अब वो लोग ख़ुद ग़ौर कर लें जो ह़ज़रत हुसैन (रज़ि.) के नाम पर हर साल मुहर्रम में सोग करते, स्याह कपड़े पहनते और मातम करते हुए अपनी छाती को कूटते हैं। ये लोग यक़ीनन अल्लाह और उसके रसूल के नाफ़र्मान हैं, हदाहुमुल्लाहुम अल्लाह इनको हिदायत फ़र्माए, आमीन। इस सिलसिले में सुन्नी ह़ज़रात को ज़रूर ग़ौर करना चाहिये कि वो अहले सुन्नत के मसलक के ख़िलाफ़ ह़रकत करके सख़्त गुनाह के मुर्तकिब हो रहे हैं।

बाब 50 : और जो लोग तुममें से मर जाएँ और बीवियाँ छोड़ जाएँ, अल्लाह तआ़ला के फ़र्मान (और सूरह बक़रः) बिमा तअ़मलून खबीर या'नी वफ़ात की इद्दत का बयान

٥٠- باب ﴿وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا - إِلَى قَوْلِهِ - بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ﴾.

5344. मुझसे इस्ह़ाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमको रौह बिन उ़बादा ने ख़बर दी, कहा हमसे शिब्ल बिन अ़ब्बाद ने, उनसे इब्ने अबी नजीह ने और उनसे मुजाहिद ने आयते करीमा वल्लज़ीन युतवफ़्फ़ौन अल्अख़ या'नी और जो लोग तुममें से वफ़ात पा जाएँ और बीवियाँ छोड़ जाएँ, के बारे में कहा कि ये इद्दत जो शौहर के घर वालों के पास गुज़ारी जाती थी, पहले

٥٣٤٤- حدثني إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ أَخْبَرَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ حَدَّثَنَا شِبْلٌ عَنِ ابْنِ أَبِي نَجِيحٍ عَنْ مُجَاهِدٍ ﴿وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا﴾ قَالَ: كَانَتْ هَذِهِ الْعِدَّةُ تَعْتَدُّ

عِنْدَ أَهْلِ زَوْجِهَا وَاجِبًا، فَأَنْزَلَ اللهُ ﴿وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا وَصِيَّةً لِأَزْوَاجِهِمْ مَتَاعًا إِلَى الْحَوْلِ غَيْرَ إِخْرَاجٍ، فَإِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا فَعَلْنَ فِي أَنْفُسِهِنَّ مِنْ مَعْرُوفٍ﴾ قَالَ: جَعَلَ اللهُ لَهَا تَمَامَ السَّنَةِ سَبْعَةَ أَشْهُرٍ وَعِشْرِينَ لَيْلَةً وَصِيَّةً، إِنْ شَاءَتْ سَكَنَتْ فِي وَصِيَّتِهَا وَإِنْ شَاءَتْ خَرَجَتْ، وَهُوَ قَوْلُ اللهِ تَعَالَى ﴿غَيْرَ إِخْرَاجٍ، فَإِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ﴾ فَالْعِدَّةُ كَمَا هِيَ وَاجِبٌ عَلَيْهَا زَعَمَ ذَلِكَ عَنْ مُجَاهِدٍ وَقَالَ عَطَاءٌ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ نَسَخَتْ هَذِهِ الْآيَةُ عِدَّتَهَا عِنْدَ أَهْلِهَا، فَتَعْتَدُّ حَيْثُ شَاءَتْ وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿غَيْرَ إِخْرَاجٍ﴾ وَقَالَ عَطَاءٌ إِنْ شَاءَتْ اعْتَدَّتْ عِنْدَ أَهْلِهَا وَسَكَنَتْ فِي وَصِيَّتِهَا، وَإِنْ شَاءَتْ خَرَجَتْ، لِقَوْلِ اللهِ ﴿فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا فَعَلْنَ﴾ قَالَ عَطَاءٌ : ثُمَّ جَاءَ الْمِيرَاثُ فَنَسَخَ السُّكْنَى، فَتَعْتَدُّ حَيْثُ شَاءَتْ وَلَا سُكْنَى لَهَا.

[راجع: ٤٥٣١]

वाजिब थी, इसलिये अल्लाह तआ़ला ने ये आयत उतारी वल्लज़ीना युतवफ़्फ़ौना मिन्कुम अल्अख़ या'नी और जो लोग तुममें से वफ़ात पा जाएँ और बीवियाँ छोड़ जाएँ (उन पर लाज़िम है कि) अपनी बीवियों के ह़क़ में नफ़ा उठाने की वसिय्यत कर जाएँ कि वो एक साल तक (घर से) न निकाली जाएँ लेकिन अगर वो (ख़ुद) निकल जाएँ तो कोई गुनाह तुम पर नहीं। इस बाब में जिसे वो (बीवियाँ) अपने बारे में दस्तूर के मुताबिक़ करें। मुजाहिद ने कहा कि अल्लाह तआ़ला ने ऐसी बेवा के लिये सात महीने बीस दिन साल भर में से वसिय्यत क़रार दी। अगर वो चाहे तो शौहर की वसिय्यत के मुताबिक़ वहीं ठहरी रहे और अगर चाहे (चार महीने दस दिन की इद्दत) पूरी करके वहाँ से चली जाए। अल्लाह तआ़ला के इर्शाद ग़ैर इख़राज तक या'नी उन्हें निकाला न जाए। अल्बत्ता अगर वो ख़ुद चली जाएँ तो तुम पर कोई गुनाह नहीं, का यही मंशा है। पस इद्दत तो जैसी कि पहली थी, अब भी उस पर वाजिब है। इब्ने अबी नजीह़ ने इसे मुजाहिद से बयान किया और अ़ता ने बयान कया कि ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि इस पहली आयत के बेवा को शौहर के घर में इद्दत गुज़ारने के हुक्म को मन्सूख़ कर दिया, इसलिये अब वो जहाँ चाहे इद्दत गुज़ारे और (इसी त़रह़ इस आयत ने) अल्लाह तआ़ला के इर्शाद ग़ैर इख़राज या'नी, उन्हें निकाला न जाए, (को भी मन्सूख़ कर दिया है) अ़ता ने कहा कि अगर वो चाहे तो अपने (शौहर के) घर वालों के यहाँ ही इद्दत गुज़ारे और वसिय्यत के मुताबिक़ क़याम करे और अगर चाहे वहाँ से चली आए क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया है। फ़लैस अ़लैकुम जुनाहुन अल्अख़ या'नी, पस तुम पर उसका कोई गुनाह नहीं, जो वो अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ करें, अ़ता ने कहा कि उसके बाद मीराष़ का हुक्म नाज़िल हुआ और उसने मकान के हुक्म को मन्सूख़ कर दिया। पस वो जहाँ चाहे इद्दत गुज़ार सकती है और उसके लिये (शौहर की त़रफ़ से) मकान का इंतिज़ाम नहीं होगा। (राजेअ़ : 4531)

तश्रीह़ : आ़म मुफ़स्सिरीन का ये क़ौल है कि एक साल की मुद्दत की आयत मन्सूख़ है और चार महीने दस दिन की आयत उसकी नासिख़ है और पहले एक साल की इद्दत का हुक्म हुआ था फिर अल्लाह ने उसको कम करके चार महीने दस दिन रखा और दूसरी आयत उतारी। अगर औरत सात महीने बीस दिन या एक साल पूरा होने तक अपने ससुराल में रहना चाहे तो ससुराल वाले उसे निकाल नहीं सकते। ग़ैरा इख़राज का यही मतलब है। ये मज़हब ख़ास़ मुजाहिद का है।

उन्होंने ये ख़्याल किया कि एक साल की इद्दत का हुक्म बाद में उतरा है और चार महीने दस दिन का पहले और ये तो हो नहीं सकता कि नासिख़ मंसूख़ से पहले उतरे। इसलिये उन्होंने दोनों आयतों में यूँ जमा किया। बाक़ी तमाम मुफ़स्सिरीन का ये क़ौल है कि एक साल की इद्दत की आयत मंसूख़ है और चार महीने दस दिन की इद्दत की आयत उसकी नासिख़ है और पहले एक साल की इद्दत का हुक्म हुआ था फिर अल्लाह ने उसे कम करके चार महीने दस दिन रखा और दूसरी आयत उतारी या'नी **अर्बअत अश्हुरिव्वं अ़श्रा** वाली आयत। अब औरत ख़्वाह ससुराल में रहे, ख़्वाह अपने मायके में इसी तरह तीन तलाक़ के बाद शौहर के घर में रहने की कोई ज़रूरत नहीं है। शौहर के घर में इद्दत पूरी करना उस वक़्त औरत पर वाजिब है, जब तलाक़े रजई हो क्योंकि शौहर के रुजूअ करने की उम्मीद होती है।

5345. हमसे मुहम्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबीबक्र बिन अ़म्र बिन हज़्म ने बयान किया, उनसे हुमैद बिन नाफ़ेअ़ ने बयान किया, उनसे ज़ैनब बिन्ते उम्मे सलमा (रज़ि.) ने बयान किया और उनसे उम्मे हबीबा बिन्ते अबी सुफ़यान (रज़ि.) ने बयान किया कि जब उनके वालिद की वफ़ात की ख़बर पहुँची तो उन्होंने ख़ुश्बू मंगवाई और अपने दोनों बाज़ुओं पर लगाई फिर कहा कि मुझे ख़ुश्बू की कोई ज़रूरत न थी लेकिन मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है कि जो औरत अल्लाह और आख़िरत पर ईमान रखती हो वो किसी मय्यत का तीन दिन से ज़्यादा सोग न मनाए सिवा शौहर के कि उसके लिये चार महीने दस दिन हैं। (राजेअ़ : 1280)

٥٣٤٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي بَكْرِ بْنِ عَمْرِو بْنِ حَزْمٍ حَدَّثَنِي حُمَيْدُ بْنُ نَافِعٍ عَنْ زَيْنَبَ ابْنَةِ أُمِّ سَلَمَةَ عَنْ أُمِّ حَبِيبَةَ ابْنَةِ أَبِي سُفْيَانَ لَمَّا جَاءَهَا نَعِيُّ أَبِيهَا، دَعَتْ بِطِيبٍ فَمَسَحَتْ ذِرَاعَيْهَا وَقَالَتْ: مَالِي بِالطِّيبِ مِنْ حَاجَةٍ، لَوْ لاَ أَنِّي سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((لاَ يَحِلُّ لاِمْرَأَةٍ تُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ تُحِدُّ عَلَى مَيِّتٍ فَوْقَ ثَلاَثٍ، إِلاَّ عَلَى زَوْجٍ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا)).

[راجع: ١٢٨٠]

ष़ाबित हुआ कि शौहर के सिवा किसी और के लिये तीन दिन से ज़्यादा मातम करने वाली औरतें ईमान से महरूम हैं। पस उनको अल्लाह से डरकर अपने ईमान की ख़ैर मनानी चाहिये।

बाब 51 : मुहरिमा की ख़र्ची और निकाहे फ़ासिद का बयान

٥١- باب مَهْرِ الْبَغِيِّ وَالنِّكَاحِ الْفَاسِدِ

और इमाम हसन बस़री (रह.) ने कहा कि अगर कोई शख़्स न जानकर किसी मुहरिमा औरत से निकाह करे तो उनके दरम्यान जुदाई करा दी जाएगी और वो जो कुछ महर ले चुकी है वो उसी का होगा। उसके सिवा और कुछ उसे नहीं मिलेगा, फिर उसके बाद उसे उसका महरे मिष़्ल दिया जाएगा।

وَقَالَ الْحَسَنُ : إِذَا تَزَوَّجَ مُحَرَّمَةً وَهُوَ لاَ يَشْعُرُ فُرِّقَ بَيْنَهُمَا، وَلَهَا مَا أَخَذَتْ وَلَيْسَ لَهَا غَيْرُهُ. ثُمَّ قَالَ : بَعْدُ، لَهَا صَدَاقُهَا.

अकष़र उ़लमा का यही फ़त्वा है। कुछ ने कहा कि जो महर ठहरा था वो मिलेगा और बस।

5346. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने, उनसे अबूबक्र बिन अ़ब्दुर्रहमान ने और उनसे अबू मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने कुत्ते की

٥٣٤٦- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

قَالَ: نَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنْ ثَمَنِ الْكَلْبِ وَحُلْوَانِ الْكَاهِنِ وَمَهْرِ الْبَغِيِّ.
[راجع: ٢٢٣٧]

क़ीमत, काहिन की कमाई और ज़ानिया औरत के ज़िना की कमाई खाने से मना किया। (राजेअ : 2237)

ये सब कमाईयाँ ह़राम हैं। कुछ ने शिकारी कुत्ते की बेअ दुरुस्त रखी है। अब जो मौलवी मशाइख़ ज़ानिया औरत की दा'वत खाते हैं या फ़ाल तअवीज़ गण्डे करके ज़ानिया से पैसा लेते हैं वो मौलवी मशाइख़ नहीं बल्कि अच्छे ख़ासे ह़रामख़ोर हैं वो पेट के बन्दे हैं। फ़ह़ज़रुहुम अय्युहल मुअमिनून।

٥٣٤٧- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا عَوْنُ بْنُ أَبِي جُحَيْفَةَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ : لَعَنَ النَّبِيُّ ﷺ الْوَاشِمَةَ وَالْمُسْتَوْشِمَةَ، وَآكِلَ الرِّبَا وَمُوكِلَهُ، وَنَهَى عَنْ ثَمَنِ الْكَلْبِ، وَكَسْبِ الْبَغِيِّ، وَلَعَنَ الْمُصَوِّرِينَ.
[راجع: ٢٠٨٦]

5347. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा बिन ह़ज्जाज ने बयान किया, कहा हमसे औन बिन अबी जुहैफ़ा ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने कि नबी करीम (ﷺ) ने गोदने वाली और गुदवाने वाली, सूद खाने वाले और सूद खिलाने वाले पर ला'नत भेजी और आपने कुत्ते की क़ीमत और ज़ानिया की कमाई खाने से मना किया और तस्वीर बनाने वालों पर ला'नत की। (राजेअ : 2086)

मज़्कूरा तमाम उमूर बाइ़षे ला'नत हैं । अल्लाह तआला हर मुसलमान को उनसे दूर रहने की तौफ़ीक़ अ़ता करे। (आमीन)

٥٣٤٨- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الْجَعْدِ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ جُحَادَةَ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ نَهَى النَّبِيُّ ﷺ، عَنْ كَسْبِ الإِمَاءِ.[راجع: ٢٢٨٣]

5348. हमसे अ़ली बिन जअदि ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुअबा ने ख़बर दी, उन्हें मुहम्मद बिन जुह़ादा ने, उन्हें अबू ह़ाज़िम ने और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी (ﷺ) ने लौण्डियों की ज़िना की कमाई से मना किया। (राजेअ :2283)

ह़ाफ़िज़ ने कहा अगर जान-बूझकर कोई मुह़रिम औरत मष़लन माँ बहन बेटी वग़ैरह से ह़राम जानकर भी निकाह़ कर ले तो उस पर ह़द क़ायम की जाएगी। अइम्मा-ए-ष़लाष़ा और अहले ह़दीष़ का यही फ़त्वा है। उसका ये जुर्म इतना संगीन है कि उसे ख़त्म कर देना ही ऐन इंसाफ़ है।

٥٢- باب الْمَهْرِ لِلْمَدْخُولِ عَلَيْهَا وَكَيْفَ الدُّخُولُ، أَوْ طَلَّقَهَا قَبْلَ الدُّخُولِ وَالْمَسِيسِ

बाब 52 : जिस औरत से सुह़बत की उसका पूरा महर वाजिब हो जाना और सुह़बत के क्या मा'नी हैं और दख़ूल और मसास से पहले त़लाक़ दे देने का हुक्म (जिमाअ करना या ख़ल्वत हो जाना)

अहले कूफ़ा कहते हैं कि महज़ ख़ल्वत हो जाने से ही महर वाजिब हो जाता है जिमाअ करे या न करे। इमाम शाफ़िई का फ़त्वा ये है कि महर जब ही वाजिब होगा जब जिमाअ करे यही क़रीने क़यास है।

٥٣٤٩- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ زُرَارَةَ أَخْبَرَنَا إِسْمَاعِيلُ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ قَالَ: قُلْتُ لاِبْنِ عُمَرَ رَجُلٌ قَذَفَ امْرَأَتَهُ فَقَالَ: فَرَّقَ نَبِيُّ اللهِ ﷺ بَيْنَ أَخَوَيْ بَنِي

5349. हमसे अ़म्र बिन ज़ुरारह ने बयान किया, कहा हमको इस्माईल बिन अ़लिया ने ख़बर दी, उन्हें अय्यूब सुख़्तियानी ने और उनसे सईद बिन जुबैर ने बयान किया कि मैंने इब्ने उ़मर (रज़ि.) से ऐसे शख़्स के बारे में सवाल किया जिसने अपनी बीवी पर तोह्मत लगाई हो तो उन्होंने कहा कि नबी करीम

الْعَجْلاَنِ وَقَالَ: ((اللهُ يَعْلَمُ أَنَّ أَحَدَكُمَا كَاذِبٌ، فَهَلْ مِنْكُمَا تَائِبٌ؟)) فَأَبَيَا. فَقَالَ: ((اللهُ يَعْلَمُ أَنَّ أَحَدَكُمَا كَاذِبٌ، فَهَلْ مِنْكُمَا تَائِبٌ؟)) فَأَبَيَا. فَفَرَّقَ بَيْنَهُمَا قَالَ : أَيُّوبُ. فَقَالَ لِي عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ: فِي الْحَدِيثِ شَيْءٌ لاَ أَرَاكَ تُحَدِّثُهُ قَالَ: قَالَ الرَّجُلُ : مَالِي قَالَ: ((لاَ مَالَ لَكَ، إِنْ كُنْتَ صَادِقًا فَقَدْ دَخَلْتَ بِهَا، وَإِنْ كُنْتَ كَاذِبًا فَهُوَ أَبْعَدُ مِنْكَ)).[راجع: ٥٣١١]

(ﷺ) ने बनी अ़ज्लान के मियाँ–बीवी में जुदाई करा दी थी और फ़र्माया था कि अल्लाह ख़ूब जानता है कि तुममें से एक झूठा है, तो क्या वो रुजूअ़ करेगा? लेकिन दोनों ने इंकार किया। आपने दोबारा फ़र्माया कि अल्लाह ख़ूब जानता है उसे जो तुममें से एक झूठा है वो तौबा करता है या नहीं? लेकिन दोनों ने फिर तौबा से इंकार किया। पस आँहज़रत (ﷺ) ने उनमें जुदाई करा दी। अय्यूब ने बयान किया कि मुझसे अ़म्र बिन दीनार ने कहा कि यहाँ ह़दीष़ में एक चीज़ और है मैंने तुम्हें उसे बयान करते नहीं देखा। वो ये है कि (तोह्मत लगाने वाले) शौहर ने कहा था कि मेरा माल (महर) दिलवा दीजिए। आँहज़रत (ﷺ) ने उस पर फ़र्माया कि वो तुम्हारा माल ही नहीं रहा। अगर तुम सच्चे भी हो तो तुम उससे ख़ल्वत कर चुके हो और अगर झूठे हो तब तो तुमको बत़रीक़े औला कुछ न मिलना चाहिये। (राजेअ़ : 5311)

तश्रीह : ह़दीष़ के लफ़्ज़ **फक़द दखल्त बिहा** से निकला कि जिमाअ़ से महर वाजिब होता है क्योंकि दूसरी रिवायत में लफ़्ज़ **बिमा इस्तह़ल्लत मिन फ़र्जिहा** साफ़ मौजूद है। अगर वो मर्द उस औ़रत से सुह़बत न कर चुका होता तो बेशक अगर उसने सारा महर अदा कर दिया होता तो उसको उसमें से कुछ या'नी आधा वापस मिलता आख़िरी जुम्ले का मत़लब है कि तूने इस औ़रत से सुह़बत भी की फिर इसे बदनाम भी किया। अब माले महर का सवाल ही क्या है? इससे ये भी ज़ाहिर हुआ कि इस्लाम में औ़रत की इ़ज़्ज़त को ख़ास़ त़ौर पर मल्ह़ूज़ रखा गया है। अपनी औ़रत पर झूठा इल्ज़ाम लगाना उसके शौहर के लिये बहुत बड़ा गुनाह है।

٥٣– باب الْمُتْعَةِ لِلَّتِي لَمْ يُفْرَضْ لَهَا لِقَوْلِهِ اللهُ تَعَالَى :

बाब 53 : औ़रत को बत़ौरे सुलूक़ कुछ कपड़ा या ज़ेवर या नक़द देना जब उसका महर न ठहरा हा

﴿وَلاَ جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِنْ طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ مَا لَمْ تَمَسُّوهُنَّ أَوْ تَفْرِضُوا لَهُنَّ فَرِيضَةً – إِلَى قَوْلِهِ – إِنَّ اللهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ﴾ وَقَوْلِهِ ﴿وَلِلْمُطَلَّقَاتِ مَتَاعٌ بِالْمَعْرُوفِ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِينَ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ﴾ وَلَمْ يَذْكُرِ النَّبِيُّ ﷺ فِي الْمُلاَعَنَةِ مُتْعَةً حِينَ طَلَّقَهَا زَوْجُهَا.

क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने सूरह बक़रः में फ़र्माया ला जुनाह अ़लैकुम या'नी तुम पर कोई गुनाह नहीं कि तुम उन बीवियों को जिन्हें तुमने न हाथ लगाया हो और न उनके लिये महर मुक़र्रर किया हो त़लाक़ दे दो तो उनको कुछ फ़ायदा पहुँचाओ इर्शाद, बिमा तअ़मलूना बस़ीर तक। और अल्लाह तआ़ला ने इसी सूरत में फ़र्माया त़लाक़ वाली औ़रतों के लिये दस्तूर के मुवाफ़िक़ देना परहेज़गारों पर वाजिब है। अल्लाह तआ़ला उसी त़रह़ तुम्हारे लिये खोलकर अपने अह़काम बयान करता है शायद कि तुम समझो। और लिआ़न के मौक़े पर, जब औ़रत के शौहर ने उसे त़लाक़ दी थी तो नबी करीम (ﷺ) ने मताअ़ का ज़िक्र नहीं फ़र्माया था।

٥٣٥٠- حدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرٍو عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ لِلْمُتَلاَعِنَيْنِ: ((حِسَابُكُمَا عَلَى اللهِ أَحَدُكُمَا كَاذِبٌ، لاَ سَبِيلَ لَكَ عَلَيْهَا)). قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ مَالِي. قَالَ: ((لاَ مَالَ لَكَ، إِنْ كُنْتَ صَدَقْتَ عَلَيْهَا فَهُوَ بِمَا اسْتَحْلَلْتَ مِنْ فَرْجِهَا، وَإِنْ كُنْتَ كَذَبْتَ عَلَيْهَا فَذَاكَ أَبْعَدُ وَأَبْعَدُ لَكَ مِنْهَا)).

[راجع: ٥٣١١]

5350. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़यैना ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने लिआ़न करने वाले मियाँ–बीवी से फ़र्माया कि तुम्हारा ह़िसाब अल्लाह के यहाँ होगा। तुममें से एक तो यक़ीनन झूठा है। तुम्हारे या'नी (शौहर के) लिये उसे (बीवी को) ह़ासिल करने का अब कोई रास्ता नहीं है। शौहर ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरा माल? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अब वो तुम्हारा माल नहीं रहा। अगर तुमने उसके बारे में सच कहा था तो वो उसके बदले में है कि तुमने उसकी शर्मगाह अपने लिये ह़लाल की थी और अगर तुमने उस पर झूठी तोह्मत लगाई थी तब तो और ज़्यादा तुझको कुछ न मिलना चाहिये। (राजेअ़ : 5311)

तश्रीह : मत्आ़ से मुराद फ़ायदा पहुँचाना इसमें उ़लमा का इख़्तिलाफ़ है। ह़नफ़िया का क़ौल है कि ये मत्आ़ उस औ़रत के लिये वाजिब है जिसका महर मुक़र्रर न हुआ हो और सुह़बत से पहले उसको त़लाक़ दी जाए। कुछ ने कहा कि त़लाक़ वाली औ़रत को मत्आ़ देना चाहिये। कुछ ने कहा कि किसी के लिये मत्आ़ देना वाजिब नहीं। इमाम बुख़ारी (रह़.) का मैलान क़ौले अव्वल की त़रफ़ मा'लूम होता है जैसा कि ह़नफ़िया का फ़त्वा है कि ऐसी औ़रत को भी ज़रूर कुछ न कुछ देना चाहिये जो महर के अ़लावा हो। बहरह़ाल औ़रत सुलूक़ की ह़क़दार है। अल्ह़म्दुलिल्लाह कि किताबुन् निकाह़ वत् त़लाक़ आज बतारीख़ 4 ज़िलह़िज्ज सन 1394 हिज्री को ख़त्म की गई। कोई क़लमी लग़्ज़िश हो गई हो उसके लिये अल्लाह से मआ़फ़ी चाहता हूँ और उ़लम-ए-कामिलीन से इस्लाह़ का त़लबगार हूँ।

किताबुन निकाह़ को ख़त्म करते हुए कुछ अल्फ़ाज़ जो कई जगह वारिद हुए हैं। उनकी मज़ीद वज़ाह़त करनी मुनासिब है जो दर्ज ज़ेल हैं।

ख़ुलअ़ : ये लफ़्ज़ इंख़िलाअ़ से मुश्तक़ है। जिसके मआ़नी निकालकर फेंक देने के हैं और शरीअ़त में उस अ़क़्द को कहते हैं जो मियाँ–बीवी के दरम्यान माल व मताअ़ या ज़मीन वग़ैरह देकर बीवी अपने शौहर से रुस्तगारी ह़ासिल कर ले और अलग हो जाए। गोया ये औ़रत की त़रफ़ से मर्द से जुदाई होती है।

ज़िहार : बीवी को या बीवी के किसी ऐसे ह़िस्से को जिसकी नज़ीर से पूरी औ़रत की ज़ात ता'बीर की जाए। माँ, बहन या वो औ़रत जिससे निकाह़ जाइज़ नहीं तश्बीह दी जाए मष़लन बीवी से मर्द कह दे कि तू मेरी माँ जैसी है या मेरी बहन की पुश्त जैसी तेरी पुश्त है। इस सूरत में मर्द पर कफ़्फ़ारा लाज़िम आता है। (लफ़्ज़ मत्आ़ से यहाँ जुदा होने वाली औ़रत को कुछ न कुछ माली मदद देना मुराद है)

लिआ़न : के ये मा'नी हैं कि मर्द अपनी बीवी को ज़िना से मुत्तहम करे लेकिन उसके पास उस अम्र की शहादत नहीं और औ़रत उससे इंकार करती है तो उस सूरत में लिआ़न का हुक्म दिया जाए पहले मर्द को चार बार क़सम खिलाई जाए कि मैं अल्लाह की क़सम खाकर शहादत देता हूँ कि मैंने जो कुछ कहा है वो बिलकुल सच है। पाँचवीं मर्तबा क़सम के साथ ये भी कहे कि अगर मैं ये बात झूठ कह रहा हूँ तो मुझ पर अल्लाह की ला'नत हो। उसके बाद औ़रत भी क़सम खाकर कहे कि उसने जो तोह्मत मुझ पर लगाई है वो बिलकुल झूठ है और पाँचवीं बार क़सम खाकर ये कहे कि अगर मैं झूठी हूँ तो मुझ पर अल्लाह की ला'नत हो। इस लिआ़न के बाद मर्द औ़रत में जुदाई हो जाती है।

ईला : लुग़त में क़सम खा लेने को कहते हैं कि वो बीवी से एक ख़ास़ मुद्दत तक जिमाअ़ न करेगा। इसका भी कफ़्फ़ारा देना

वाजिब होता है। ईला की आख़िरी मुद्दत चार माह है। फिर शौहर पर लाज़िम होगा कि या तो उस क़सम को तोड़ दे और औरत से मिलाप कर ले वरना त़लाक़ देकर जुदा कर दे। **व आखिरू दअवाना अनिल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्आलमीन**

63. किताबुन् नफ़्क़ात

बीवी-बच्चों को ख़र्च देने के बयान में

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बाब 1 : बीवी बच्चों पर ख़र्च करने की फ़ज़ीलत

١- باب فَضْلِ النَّفَقَةِ عَلَى الأَهْلِ

और अल्लाह ने सूरह बक़रः में फ़र्माया कि ऐ पैग़म्बर! तुझसे पूछते हैं क्या ख़र्च करें? कह दो जो बच रहे। अल्लह इसी त़रह़ देने का हुक्म तुमसे बयान करता है इसलिये कि तुम दुनिया और आख़िरत दोनों कामों की फ़िक्र करो। और ह़ज़रत ह़सन बस़री ने कहा इस आयत में अ़फ़्वा से वो माल मुराद है जो ज़रूरी ख़र्च के बाद बच रहे।

﴿وَيَسْأَلُونَكَ مَا ذَا يُنْفِقُونَ؟ قُلِ الْعَفْوَ، كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللهُ لَكُمُ الآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ فِي الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ﴾ وَقَالَ الْحَسَنُ: الْعَفْوُ الْفَضْلُ.

पस आयत का मत़लब ये है कि बच्चों अ़ज़ीज़ों को खिलाओ पिलाओ जो फ़ालतू बच रहे उसे ग़रीबों पर ख़र्च करके आख़िरत कमाओ

5351. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अ़दी बिन स़ाबित ने बयान किया कि मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन यज़ीद अंस़ारी से सुना और उन्होंने अबू मसऊ़द अंस़ारी (रज़ि.) से (अ़ब्दुल्लाह बिन यज़ीद अंस़ारी ने बयान किया कि) मैंने उनसे पूछा क्या तुम इस ह़दीस़ को नबी करीम (ﷺ) से रिवायत करते हो। उन्होंने कहा कि हाँ। नबी करीम (ﷺ) से कि आपने फ़र्माया कि जब मुसलमान अपने घर में अपनी बीवी बाल बच्चों पर अल्लाह का हुक्म अदा करने की निय्यत से ख़र्च करे तो उसमें भी उसको

٥٣٥١- حَدَّثَنَا آدَمُ بْنُ أَبِي إِيَاسٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَدِيِّ بْنِ ثَابِتٍ قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ يَزِيدَ الأَنْصَارِيَّ عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ الأَنْصَارِيِّ، فَقُلْتُ: عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((إِذَا أَنْفَقَ الْمُسْلِمُ نَفَقَةً عَلَى أَهْلِهِ وَهُوَ يَحْتَسِبُهَا

كَانَتْ لَهُ صَدَقَةً)).

सदक़े का षवाब मिलता है।

٥٣٥٢- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((قَالَ اللهُ: أَنْفِقْ يَا ابْنَ آدَمَ، أُنْفِقْ عَلَيْكَ)). [راجع: ٤٦٨٤]

5352. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अअरज ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह तआला फ़र्माता है कि ऐ इब्ने आदम! तू ख़र्च कर तो मैं तुझको दिये जाऊँगा। (राजेअ : 4684)

तश्रीह : ख़र्च करने से घर वालों पर ख़र्च करना फिर दीगर ग़रीबों को देना मुराद है। ख़र्च होगा तो आमदनी का भी फ़िक्र करना पड़ेगा। पस बन्दा जिस काम में हाथ डालेगा अल्लाह बरकत करेगा। अल्लाह के देने का यही मतलब है।

٥٣٥٣- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ قَزَعَةَ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ ثَوْرِ بْنِ زَيْدٍ عَنْ أَبِي الْغَيْثِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((السَّاعِي عَلَى الأَرْمَلَةِ وَالْمِسْكِينِ كَالْمُجَاهِدِ فِي سَبِيلِ اللهِ أَوِ الْقَائِمِ اللَّيْلِ الصَّائِمِ النَّهَارِ)). [طرفاه في : ٦٠٠٦، ٦٠٠٧].

5353. हमसे यह्या बिन क़ज़आ ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे षौर बिन ज़ैद ने, उनसे अबुल ग़ैष (सालिम) ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, बेवाओं और मिस्कीनों के काम आने वाला अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाले के बराबर है, या रात भर इबादत और दिन को रोज़े रखने वाले के बराबर है। (दीगर मक़ामात : 6006, 6007)

ख़िदमते ख़ल्क़ कितना बड़ा नेक काम है इस हदीष से अंदाज़ा लगाया जा सकता है। अल्लाह तौफ़ीक़ दे, आमीन।

٥٣٥٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَامِرِ بْنِ سَعْدٍ عَنْ سَعْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَعُودُنِي وَأَنَا مَرِيضٌ بِمَكَّةَ، فَقُلْتُ : لِي مَالٌ أُوصِي بِمَالِي كُلِّهِ؟ قَالَ: ((لاَ)) قُلْتُ فَالشَّطْرُ قَالَ: ((لاَ)) قُلْتُ: فَالثُّلُثُ. قَالَ: ((الثُّلُثُ، وَالثُّلُثُ كَثِيرٌ، أَنْ تَدَعَ وَرَثَتَكَ أَغْنِيَاءَ خَيْرٌ مِنْ أَنْ تَدَعَهُمْ عَالَةً يَتَكَفَّفُونَ النَّاسَ فِي أَيْدِيهِمْ، وَمَهْمَا أَنْفَقْتَ فَهُوَ لَكَ صَدَقَةٌ، حَتَّى اللُّقْمَةَ تَرْفَعُهَا فِي فِي امْرَأَتِكَ، وَلَعَلَّ اللهَ يَرْفَعُكَ، يَنْتَفِعُ بِكَ نَاسٌ

5354. हमसे मुहम्मद बिन कषीर ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान षौरी ने ख़बर दी, उन्हें सईद बिन इब्राहीम ने, उनसे आमिर बिन सअद (रज़ि.) ने, उन्होंने सअद (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) मेरी एयादत के लिये तशरीफ़ लाए। मैं उस वक़्त मक्का मुकर्रमा में बीमार था। मैंने आँहज़रत (ﷺ) से कहा कि मेरे पास माल है। क्या मैं अपने तमाम माल की वसिय्यत कर दूँ? आपने फ़र्माया कि नहीं। मैंने कहा फिर आधे की कर दूँ? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि नहीं! मैंने कहा, फिर तिहाई की कर दूँ (फ़र्माया) तिहाई की कर दो और तिहाई भी बहुत है। अगर तुम अपने वारिषों को मालदार छोड़कर जाओ तो ये उससे बेहतर है कि तुम उन्हें मुहताज व तंगदस्त छोड़ो कि लोगों के सामने वो हाथ फ़ैलाते फिरें और तुम जब भी ख़र्च करोगे तो वो तुम्हारी तरफ़ से सदक़ा होगा। यहाँ तक कि उस लुक़्मे पर भी षवाब मिलेगा जो तुम अपनी बीवी के मुँह में रखने के लिये उठाओगे और उम्मीद है कि अभी अल्लाह तुम्हें

ज़िन्दा रखेगा, तुमसे बहुत से लोगों को नफ़ा होगा और बहुत से दूसरे (कुफ़्फ़ार) नुक़्सान उठाएँगे।

وَيُضَرُّبِكَ آخَرُوْنَ)).

तश्रीह : आँहज़रत (ﷺ) ने जैसी उम्मीद ज़ाहिर की थी, अल्लाह ने उसको पूरा किया। सअ़द बिन अबी वक़्क़ास़ (रज़ि.) वफ़ाते नबवी के बाद मुद्दते दराज़ तक ज़िन्दा रहे। इराक़ का मुल्क उन्होंने ही फ़तह किया। काफ़िरों को ज़ेर किया और वो मुद्दतों इराक़ के ह़ाकिम रहे। **स़दक़ रसूलुल्लाहि (ﷺ)**। सअ़द (रज़ि.) अ़श्रा मुबश्शरा में से हैं। 17 साल की उ़म्र में मुसलमान हुए और कुछ ऊपर सत्तर साल की उ़म्र पाई और सन 55 हिजरी में इंतिक़ाल हुआ। मरवान बिन ह़कम ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और मदीना त़य्यिबा में दफ़न हुए। **रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अर्ज़ाहु व अन्ना अज्मईन.**

बाब 2 : मर्द पर बीवी बच्चों का ख़र्च देना वाजिब है

٢- باب وُجُوبِ النَّفَقَةِ عَلَى الأَهْلِ الْعِيَالِ

इसी त़रह़ नाना नानी, दादा दादी का ख़र्च जब वो मुह़ताज़ हों। इसी त़रह़ अपने गुलाम लौण्डी का मगर जो दिन गुज़र जाएँ उनका ख़र्चा देना वाजिब नहीं। यहाँ तक कि बीवी का भी छोड़े हुए दिनों का ख़र्चा देना वाजिब नहीं।

5355. हमसे अ़म्र बिन ह़फ़्स़ ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, उनसे आ'मश ने बयान किया, उनसे अबू स़ालेह़ ने बयान किया, कहा कि मुझसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया, उन्होंने बयान किया कि नबी (ﷺ) ने फ़र्माया सबसे बेहतरीन स़दक़ा वो है जिसे देकर देने वाला मालदार ही रहे और हर ह़ाल में ऊपर का हाथ (देने वाले का) नीचे का (लेने वाले के) हाथ से बेहतर है और (ख़र्च की) इब्तिदा उनसे करो जो तुम्हारी निगाहबानी में हैं। औरत को इस मुत़ालबे का ह़क़ है कि मुझे खाना दे वरना त़लाक़ दे। ग़ुलाम को इस मुत़ालबे का ह़क़ है कि मुझे खाना दो और मुझसे काम लो। बेटा कह सकता है कि मुझे खाना खिलाओ या किसी और पर छोड़ दो। लोगों ने कहा ऐ अबू हुरैरह (रज़ि.) क्या (ये आख़िरी टुकड़ा भी) कि बीवी कहती है आख़िर तक, आपने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है? उन्होंने कहा कि नहीं बल्कि ये अबू हुरैरह (रज़ि.) की ख़ुद अपनी समझ से है। (राजेअ़ : 1426)

٥٣٥٥- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ حَدَّثَنَا ابى حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ حَدَّثَنَا أَبِي صَالِحٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَفْضَلُ الصَّدَقَةِ مَا تَرَكَ غِنًى، وَالْيَدُ الْعُلْيَا خَيْرٌ مِنَ الْيَدِ السُّفْلَى، وَأَبْدَأْ بِمَنْ تَعُولُ، تَقُولُ الْمَرْأَةُ : إِمَّا أَنْ تُطْعِمَنِي وَإِمَّا أَنْ تُطَلِّقَنِي. وَيَقُولُ الْعَبْدُ: أَطْعِمْنِي وَاسْتَعْمِلْنِي. وَيَقُولُ الابْنُ: أَطْعِمْنِي، إِلَى مَنْ تَدَعُنِي؟)) فَقَالُوا: يَا أَبَا هُرَيْرَةَ سَمِعْتَ هَذَا مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ قَالَ: لاَ هَذَا مِنْ كِيسِ أَبِي هُرَيْرَةَ.

[راجع: ١٤٢٦]

मा'लूम हुआ कि हुक़ूक़ुल्लाह के बाद इंसानी हुक़ूक़ में अपने वालिद और तमाम मुता'ल्लिक़ीन के हुक़ूक़ का अदा करना सबसे बड़ी इ़बादत है।

5356. हमसे सईद बिन उ़फ़ैर ने बयान किया, कहा कि मुझसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, कहा कि मुझसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन ख़ालिद बिन मुसाफ़िर ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे सईद बिन अल मुसय्यिब ने और उनसे ह़ज़रत

٥٣٥٦- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عُفَيْرٍ قَالَ: حَدَّثَنِي اللَّيْثُ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ خَالِدِ بْنِ مُسَافِرٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ

ابنِ المُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((خَيْرُ الصَّدَقَةِ، مَا كَانَ مِنْ ظَهْرِ غِنًى وَابْدَأْ بِمَنْ تَعُولُ)).

[راجع: ١٤٢٦]

अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, बेहतरीन ख़ैरात वो है जिसे देने पर आदमी मालदार ही रहे और इब्तिदा उनसे करो जो तुम्हारी निगरानी में हैं जिनके खिलाने पहनाने के तुम ज़िम्मेदार हो। (राजेअ : 1426)

या'नी अपने अहल व अ़याल और तमाम मुता'ल्लिक़ीन और मज़दूर वग़ैरह जिनका खाना तुमने अपने ज़िम्मे लिया हुआ है। इसी तरह क़राबतदार भी जो ग़रीब और मिस्कीन हों पहले उनकी ख़बरगीरी करना दीगर फ़ुक़रा व मसाकीन पर मुक़द्दम है।

٣- باب حَبْسِ نَفَقَةِ الرَّجُلِ قُوتَ سَنَةٍ عَلَى أَهْلِهِ، وَكَيْفَ نَفَقَاتُ الْعِيَالِ؟

बाब 3 : मर्द का अपनी बीवी बच्चों के लिये एक साल का ख़र्च जमा करना जाइज़ है और बीवी बच्चों पर क्यूँ कर ख़र्च करे उसका बयान

٥٣٥٧- حدثني مُحَمَّدُ بْنُ سَلاَمٍ أَخْبَرَنَا وَكِيعٌ عَنِ ابْنِ عُيَيْنَةَ قَالَ : قَالَ لِي مَعْمَرٌ قَالَ لِي الثَّوْرِيُّ : هَلْ سَمِعْتَ فِي الرَّجُلِ يَجْمَعُ لأَهْلِهِ قُوتَ سَنَتِهِمْ أَوْ بَعْضَ السَّنَةِ؟ قَالَ : مَعْمَرٌ : فَلَمْ يَحْضُرْنِي. ثُمَّ ذَكَرْتُ حَدِيثًا حَدَّثَنَاهُ ابْنُ شِهَابٍ الزُّهْرِيُّ عَنْ مَالِكِ بْنِ أَوْسٍ عَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَبِيعُ نَخْلَ بَنِي النَّضِيرِ، وَيَحْبِسُ لأَهْلِهِ قُوتَ سَنَتِهِمْ.

[راجع: ٢٩٠٤]

5357. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमको वकीअ़ ने ख़बर दी, उनसे इब्ने उ़ययना ने कहा कि मुझसे मअ़मर ने बयान किया कि उनसे ष़ौरी ने पूछा कि तुमने ऐसे शख़्स के बारे में भी सुना है जो अपने घरवालों के लिये साल भर का या साल से कम का ख़र्च जमा कर ले। मअ़मर ने बयान किया कि उस वक़्त मुझे याद नहीं आया फिर बाद में याद आया कि इस बारे में एक ह़दीष़ ह़ज़रत इब्ने शिहाब ने हमसे बयान की थी, उनसे मालिक बिन औस ने और उनसे ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) बनी नज़ीर के बाग़ की खजूर बेचकर अपने घरवालों के लिये साल भर की रोज़ी जमा कर दिया करते थे। (राजेअ़ : 2904)

इसी से बाब का मत़लब ह़ासिल हुआ। ये जमा करना तवक्कल के ख़िलाफ़ नहीं है। ये इंतिज़ामी मामला है और अहल व अ़याल का इंतिज़ामे ख़ूराक वग़ैरह का करना मर्द पर लाज़िम है।

٥٣٥٨- حدثنا سَعِيدُ بْنُ عُفَيْرٍ قَالَ: حَدَّثَنِي اللَّيْثُ قَالَ : حَدَّثَنَا عُقَيْلٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ : أَخْبَرَنِي مَالِكُ بْنُ أَوْسِ بْنِ الْحَدَثَانِ وَكَانَ مُحَمَّدُ بْنُ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ ذَكَرَ لِي ذِكْرًا مِنْ حَدِيثِهِ. فَانْطَلَقْتُ حَتَّى دَخَلْتُ عَلَى مَالِكِ بْنِ أَوْسٍ فَسَأَلْتُهُ، فَقَالَ مَالِكٌ : انْطَلَقْتُ حَتَّى أَدْخُلَ عَلَى عُمَرَ إِذْ

5358. हमसे सईद बिन उ़फ़ैर ने बयान किया, कहा कि मुझसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, कहा कि मुझसे अ़क़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ज़ुहरी ने बयान किया कि मुझे मालिक बिन औस बिन ह़दष़ान ने ख़बर दी (इब्ने शिहाब ज़ुहरी ने बयान किया कि) मुहम्मद बिन जुबैर बिन मुत़इम ने उसका कुछ ह़िस्सा बयान किया था। इसलिये मैं रवाना हुआ और मालिक ने मुझसे बयान किया कि मैं उ़मर (रज़ि.) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ तो उनके दरबान यरफ़ा उनके पास

أَتَاهُ حَاجِبُهُ يَرْفَا فَقَالَ: هَلْ لَكَ فِي عُثْمَانَ وَعَبْدِ الرَّحْمَنِ وَالزُّبَيْرِ وَسَعْدٍ يَسْتَأْذِنُونَ؟ قَالَ: نَعَمْ فَأْذِنْ لَهُمْ. قَالَ فَدَخَلُوا وَسَلَّمُوا فَجَلَسُوا. ثُمَّ لَبِثَ يَرْفَا قَلِيلاً فَقَالَ لِعُمَرَ هَلْ لَكَ فِي عَلِيٍّ وَعَبَّاسٍ؟ قَالَ: نَعَمْ، فَأْذِنْ لَهُمَا. فَلَمَّا دَخَلاَ سَلَّمَا وَجَلَسَا. فَقَالَ عَبَّاسٌ : يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ، اقْضِ بَيْنِي وَبَيْنَ هَذَا فَقَالَ الرَّهْطُ عُثْمَانُ وَأَصْحَابُهُ : يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ، اقْضِ بَيْنَهُمَا وَأَرِحْ أَحَدَهُمَا مِنَ الآخَرِ. فَقَالَ عُمَرُ اتَّئِدُوا. أَنْشُدُكُمْ بِاللهِ الَّذِي بِهِ تَقُومُ السَّمَاءُ وَالأَرْضُ هَلْ تَعْلَمُونَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ : ((لاَ نُورَثُ، مَا تَرَكْنَا صَدَقَةٌ)) يُرِيدُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَفْسَهُ. قَالَ الرَّهْطُ: قَدْ قَالَ ذَلِكَ. فَأَقْبَلَ عُمَرُ عَلَى عَلِيٍّ وَعَبَّاسٍ فَقَالَ: أَنْشُدُكُمَا بِاللهِ، هَلْ تَعْلَمَانِ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ ذَلِكَ؟ قَالاَ: قَدْ قَالَ ذَلِكَ قَالَ عُمَرُ: فَإِنِّي أُحَدِّثُكُمْ عَنْ هَذَا الأَمْرِ: إِنَّ اللهَ كَانَ خَصَّ رَسُولَهُ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي هَذَا الْمَالِ بِشَيْءٍ لَمْ يُعْطِهِ أَحَدًا غَيْرَهُ، قَالَ اللهُ ﴿مَا أَفَاءَ اللهُ عَلَى رَسُولِهِ مِنْهُمْ فَمَا أَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَلاَ رِكَابٍ – إِلَى قَوْلِهِ – قَدِيرٌ﴾ فَكَانَتْ هَذَا خَالِصَةً لِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. وَاللهِ مَا احْتَازَهَا دُونَكُمْ، وَلاَ اسْتَأْثَرَ بِهَا

आए और कहा ड़ष्मान बिन अ़फ़्फ़ान, अ़ब्दुर्रहमान, ज़ैद और सअ़द (रज़ि.) (आपसे मिलने की) इजाज़त चाहते हैं क्या आप उन्हें आने की इजाज़त देंगे? ड़मर (रज़ि.) ने कहा कि अंदर बुला लो। चुनाँचे उन्हें उसकी इजाज़त दे दी गई। रावी ने कहा कि फिर ये सब अंदर तशरीफ़ लाए और सलाम करके बैठ गये। यरफ़ा ने थोड़ी देर बाद फिर ड़मर (रज़ि.) से आकर कहा कि अ़ली और अ़ब्बास (रज़ि.) भी मिलना चाहते हैं क्या आपकी तरफ़ से इजाज़त है? ड़मर (रज़ि.) ने उन्हें भी अंदर बुलाने के लिये कहा। अंदर आकर उन हज़रात ने भी सलाम किया और बैठ गये। उसके बाद अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा, अमीरुल मोमिनीन मेरे और इन (अ़ली रज़ि.) के बीच फ़ैसला कर दीजिए। दूसरे सहाबा ड़ष्मान (रज़ि.) और उनके साथियों ने भी कहा कि अमीरुल मोमिनीन इनका फ़ैसला फ़र्मा दीजिए और इन्हें इस उलझन से नजात दीजिए। ड़मर (रज़ि.) ने कहा जल्दी न करो मैं अल्लाह की क़सम देकर तुमसे पूछता हूँ जिसके हुक्म से आसमान व ज़मीन क़ायम हैं, क्या तुम्हें मा'लूम है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया है हमारा कोई वारिष नहीं होता, जो कुछ हम अंबिया वफ़ात के वक़्त छोड़ते हैं वो सदक़ा होता है, हुज़ूर अकरम (ﷺ) का इशारा ख़ुद अपनी ज़ात की तरफ़ था। सहाबा ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) ने ये इर्शाद फ़र्माया था। उसके बाद ड़मर (रज़ि.) अ़ली (रज़ि.) और अ़ब्बास (रज़ि.) की तरफ़ मुतवज्जह हुए और उनसे पूछा मैं अल्लाह की क़सम देकर आपसे पूछता हूँ, क्या आप लोगों को मा'लूम है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ये इर्शाद फ़र्माया था। उन्होंने भी तस्दीक़ की कि आँहज़रत (ﷺ) ने वाक़ई ये फ़र्माया था। फिर ड़मर (रज़ि.) ने कहा कि अब मैं आपसे इस मामले में बात करूँगा। अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल (ﷺ) को उस माल (फ़ै) में मुख़्तारे कुल होने की ख़ुसूसियत बख़्शी थी और आँहज़रत (ﷺ) के सिवा उसमें से किसी दूसरे को कुछ नहीं दिया था। अल्लाह तआ़ला ने इर्शाद फ़र्माया था। मा अफ़ाअल्लाहु अ़ला रसूलिही मिन्हुम इला क़ौलिही क़दीर। इसलिये ये (चार ख़ुम्स) ख़ास आपके लिये थे। अल्लाह की क़सम आँहज़रत (ﷺ) ने तुम्हें नज़रअंदाज़ करके उस माल को अपने लिये ख़ास नहीं कर लिया था और न तुम्हारा कम करके उसे आँहज़रत (ﷺ) ने अपने लिये रखा था, बल्कि आँहज़रत

عَلَيْكُمْ، لَقَدْ أَعْطَاكُمُوهَا وَبَثَّهَا فِيكُمْ حَتَّى بَقِيَ منها هَذَا الْمَالُ، فَكَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُنْفِقُ عَلَى أَهْلِهِ نَفَقَةَ سَنَتِهِمْ مِنْ هَذَا الْمَالِ ثُمَّ يَأْخُذُ مَا بَقِيَ فَيَجْعَلُهُ مَجْعَلَ مَالِ اللهِ. فَعَمِلَ بِذَلِكَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَيَاتَهُ. أَنْشُدُكُمْ بِاللهِ، هَلْ تَعْلَمُونَ ذَلِكَ، قَالُوا: نَعَمْ. قَالَ لِعَلِيٍّ وَعَبَّاسٍ: أَنْشُدُكُمَا بِاللهِ هَلْ تَعْلَمَانِ ذَلِكَ؟ قَالاَ: نَعَمْ. ثُمَّ تُوُفِّيَ اللهُ نَبِيَّهُ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ أَنَا وَلِيُّ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَبَضَهَا أَبُو بَكْرٍ فَعَمِلَ فِيهَا بِمَا عَمِلَ بِهِ فِيهَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَنْتُمَا حِينَئِذٍ وَأَقْبَلَ عَلَى عَلِيٍّ وَعَبَّاسٍ تَزْعُمَانِ أَنَّ أَبَا بَكْرٍ كَذَا وَكَذَا، وَاللهُ يَعْلَمُ أَنَّهُ فِيهَا صَادِقٌ بَارٌّ رَاشِدٌ تَابِعٌ لِلْحَقِّ. ثُمَّ تَوَفَّى اللهُ أَبَا بَكْرٍ، فَقُلْتُ أَنَا وَلِيُّ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَبِي بَكْرٍ، فَقَبَضْتُهَا سَنَتَيْنِ أَعْمَلُ فِيهَا بِمَا عَمِلَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَبُوبَكْرٍ ثُمَّ جِئْتُمَانِي وَكَلِمَتُكُمَا وَاحِدَةٌ وَأَمْرُكُمَا جَمِيعٌ، جِئْتَنِي تَسْأَلُنِي نَصِيبَكَ مِنَ ابْنِ أَخِيكَ، وَأَتَى هَذَا يَسْأَلُنِي نَصِيبَ امْرَأَتِهِ مِنْ أَبِيهَا، فَقُلْتُ: إِنْ شِئْتُمَا دَفَعْتُهُ إِلَيْكُمَا، عَلَى أَنَّ عَلَيْكُمَا عَهْدَ اللهِ وَمِيثَاقَهُ لِتَعْمَلاَنِ فِيهَا بِمَا عَمِلَ بِهِ

(ﷺ) ने पहले तुम सब में उसकी तक़्सीम की आख़िर में जो माल बाक़ी रह गया तो उससे आप अपने घर वालों के लिये साल भर का ख़र्च लेते और उसके बाद जो बाक़ी बचता उसे अल्लाह के माल के मस्रफ़ ही में (मुसलमानों के लिये) ख़र्च कर देते। आपने अपनी ज़िंदगी भर उसी के मुताबिक़ अमल किया। ऐ उ़ष्मान! मैं तुम्हें अल्लाह की क़सम देता हूँ, क्या तुम्हें ये मा'लूम है? सबने कहा कि जी हाँ, फिर आपने अ़ली और अ़ब्बास (रज़ि.) से पूछा, मैं तुम्हें अल्लाह की क़सम देता हूँ, क्या तुम्हें ये भी मा'लूम है? उन्होंने भी कहा कि जी हाँ मा'लूम है। फिर अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी की वफ़ात की और अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) का ख़लीफ़ा हूँ। चुनाँचे उन्होंने उस जायदाद को अपने क़ब्ज़े में ले लिया और हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के अ़मल के मुताबिक़ उसमें अ़मल किया। अ़ली और अ़ब्बास (रज़ि.) की तरफ़ मुतवज्जह होकर उन्होंने कहा, आप दोनों उस वक़्त मौजूद थे, आप ख़ूब जानते हैं कि अबूबक्र (रज़ि.) ने ऐसा ही किया था और अल्लाह जानता है कि अबूबक्र (रज़ि.) उसमें मुख़्लिस, मुह्तात व नेक निय्यत और सहीह रास्ते पर थे और ह़क़ की इत्तिबाअ़ करने वाले थे। फिर अल्लाह तआ़ला ने अबूबक्र (रज़ि.) की भी वफ़ात की और अब मैं आँहज़रत (ﷺ) और अबूबक्र (रज़ि.) का जानशीन हूँ। मैं दो साल से इस जायदाद को अपने क़ब्ज़े में लिये हुए हूँ और वही करता हूँ जो रसूलुल्लाह (ﷺ) और अबूबक्र (रज़ि.) ने उसमें किया था। अब आप हज़रात मेरे पास आए हैं, आपकी बात एक ही है और आपका मामला भी एक है। आप (अ़ब्बास रज़ि.) आए और मुझसे अपने भतीजे (आँहुज़ूर ﷺ की विराष़त का मुतालबा किया और आप अ़ली रज़ि.) आए और उन्होंने अपनी बीवी की तरफ़ से उनके वालिद के तर्के का मुतालबा किया। मैंने आप दोनों से कहा कि अगर आप चाहें तो मैं आपको ये जायदाद दे सकता हूँ लेकिन इस शर्त के साथ कि आप पर अल्लाह का अ़हद वाजिब होगा। वो ये कि आप दोनों भी इस जायदाद में वही तर्ज़े अ़मल रखेंगे जो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने रखा था, जिसके मुताबिक़ अबूबक्र (रज़ि.) ने अ़मल किया और जबसे मैं उसका वाली हुआ हूँ मैंने जो उसके साथ मामला रखा और अगर ये शर्त मंज़ूर न हो

رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَبِمَا عَمِلَ بِهِ فِيهَا أَبُو بَكْرٍ وَبِمَا عَمِلْتُ بِهِ فِيهَا مُنْذُ وَلِيتُهَا، وَإِلاَّ فَلاَ تُكَلِّمَانِي فِيهَا. فَقُلْتُمَا ادْفَعْهَا إِلَيْنَا بِذَلِكَ. فَدَفَعْتُهَا إِلَيْكُمَا بِذَلِكَ أَنْشُدُكُمْ بِاللهِ هَلْ دَفَعْتُهَا إِلَيْهِمَا بِذَلِكَ؟ فَقَالَ الرَّهْطُ: نَعَمْ. قَالَ: فَأَقْبَلَ عَلَى عَلِيٍّ وَعَبَّاسٍ فَقَالَ: كَمَا أَنْشُدُكُمَا بِاللهِ هَلْ دَفَعْتُهَا إِلَيْكُمَا بِذَلِكَ؟ قَالاَ: نَعَمْ. قَالَ: أَفَتَلْتَمِسَانِ مِنِّي قَضَاءً غَيْرَ ذَلِكَ؟ فَوَ الَّذِي بِإِذْنِهِ تَقُومُ السَّمَاءُ وَالأَرْضُ لاَ أَقْضِي فِيهَا قَضَاءً غَيْرَ ذَلِكَ حَتَّى تَقُومَ السَّاعَةُ، فَإِنْ عَجَزْتُمَا عَنْهَا فَادْفَعَاهَا فَأَنَا أَكْفِيكُمَاهَا.

[راجع: ٢٩٠٤]

तो फिर आप मुझसे इस बारे में बातचीत छोड़ दें। आप लोगों ने कहा कि इस शर्त़ के मुत़ाबिक़ वो जायदाद हमारे ह़वाले कर दो और मैंने उसे इस शर्त़ के साथ तुम लोगों के ह़वाले कर दिया। क्यूँ उ़ष्मान और इनके साथियों! मैं आपको अल्लाह की क़सम देता हूँ मैंने इस शर्त़ ही पर वो जायदाद अ़ली और अ़ब्बास (रज़ि.) के क़ब्ज़े में दी है न? उन्होंने कहा कि जी हाँ। रावी ने बयान किया कि फिर आप अ़ली और अ़ब्बास (रज़ि.) की त़रफ़ मुतवज्जह हुए और कहा मैं आप ह़ज़रात को अल्लाह की क़सम देता हूँ क्या मैंने आप दोनों के ह़वाले वो इस शर्त़ के साथ की थी? दोनों ह़ज़रात ने फ़र्माया कि जी हाँ। फिर उ़मर (रज़ि.) ने फ़र्माया, क्या आप ह़ज़रात अब उसके सिवा मुझसे कोई और फ़ैस़ला चाहते हैं? उस ज़ात की क़सम जिसके हुक्म से आसमान और ज़मीन क़ायम हैं इसके सिवा मैं कोई और फ़ैस़ला क़यामत तक नहीं कर सकता। अब आप लोग इसकी ज़िम्मेदारी पूरी करने से आ़जिज़ हैं तो मुझे वापस कर दें मैं इसका भी बन्दोबस्त आप ही कर लूँगा।

(राजेअ़ : 2904)

तश्रीह़ : इस ह़दीष़ में माले ख़ुम्स में से अपने अहल के लिये आँह़ज़रत (ﷺ) का अ़मल मन्क़ूल है कि आप उसमें से साल भर का ख़र्चा रख लिया करते थे। यही बाब और ह़दीष़ में मुत़ाबक़त है। आख़िरी जुम्ले का मत़लब ये कि तुम चाहो कि मैं ज़ाती मुल्क इम्लाक की त़रह़ ये जायदाद तुम दोनों में बांट दूँ ये नहीं हो सकता क्योंकि तुम सबको ख़ूब मा'लूम है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) का इर्शाद है **ला नूरिषु मा तरक्ना स़दक़ा** हमारा तर्का एक स़दक़ा होता है जिसका कोई ख़ास़ वारिष़ नहीं हो सकता।

٤- باب وَقَالَ اللهُ تَعَالَى

﴿وَالْوَالِدَاتُ يُرْضِعْنَ أَوْلاَدَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ أَرَادَ أَنْ يُتِمَّ الرَّضَاعَةَ﴾ إِلَى قَوْلِهِ ﴿بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ﴾ وَقَالَ ﴿وَحَمْلُهُ وَفِصَالُهُ ثَلاَثُونَ شَهْرًا﴾ وَقَالَ ﴿وَإِنْ تَعَاسَرْتُمْ فَسَتُرْضِعُ لَهُ أُخْرَى، لِيُنْفِقْ ذُو سَعَةٍ مِنْ سَعَتِهِ وَمَنْ قُدِرَ عَلَيْهِ

बाब 4 : और अल्लाह तआ़ला ने सूरह बक़रः में फ़र्माया है

और माएँ अपने बच्चों को दूध पिलाएँ पूरे दो साल (ये मुद्दत) उसके लिये है जो दूध की मुद्दत पूरी करना चाहे, इर्शाद बिमा तअ़मलून बस़ीर तक। और सूरह अह़क़ाफ़ में फ़र्माया, और उसका ह़मल और उसका दूध छोड़ना तीस महीनों में होता है, और सूरह त़लाक़ में फ़र्माया और अगर तुम मियाँ–बीवी आपस में ज़िद करोगे तो बच्चे को दूध कोई दूसरी औ़रत

رِزْقُهُ﴾ إِلَى قَوْلِهِ ﴿بَعْدَ عُسْرٍ يُسْرًا﴾ وَقَالَ يُونُسُ : عَنِ الزُّهْرِيِّ : نَهَى اللهُ تَعَالَى أَنْ تُضَارَّ وَالِدَةٌ بِوَلَدِهَا، وَذَلِكَ أَنْ تَقُولَ الْوَالِدَةُ، لَسْتُ مُرْضِعَتَهُ، وَهِيَ أَمْثَلُ لَهُ غِذَاءً وَأَشْفَقُ عَلَيْهِ وَأَرْفَقُ بِهِ مِنْ غَيْرِهَا، فَلَيْسَ لَهَا أَنْ تَأْبَى بَعْدَ أَنْ يُعْطِيَهَا مِنْ نَفْسِهِ مَا جَعَلَ اللهُ عَلَيْهِ، وَلَيْسَ لِلْمَوْلُودِ لَهُ أَنْ يُضَارَّ بِوَلَدِهِ وَالِدَتَهُ فَيَمْنَعَهَا أَنْ تُرْضِعَهُ ضِرَارًا لَهَا إِلَى غَيْرِهَا، فَلاَ جُنَاحَ عَلَيْهِمَا أَنْ يَسْتَرْضِعَا عَنْ طِيبِ نَفْسِ الْوَالِدِ وَالْوَالِدَةِ. فَإِنْ أَرَادَا فِصَالاً عَنْ تَرَاضٍ مِنْهُمَا وَتَشَاوُرٍ فَلاَ جُنَاحَ عَلَيْهِمَا بَعْدَ أَنْ يَكُونَ ذَلِكَ عَنْ تَرَاضٍ مِنْهُمَا وَتَشَاوُرٍ. فِصَالُهُ فِطَامُهُ.

पिलाएगी। वुस्अत वाले को ख़र्च दूध पिलाने के लिये अपनी वुस्अत के मुताबिक़ करना चाहिये और जिसकी आमदनी कम हो उसे चाहिये कि उसे अल्लाह ने जितना दिया हो उसमें से ख़र्च करे। अल्लाह तआला के इर्शाद बअद उस्रि युस्रा तक और यूनुस ने ज़ुह्री से बयान किया कि अल्लाह तआला ने इससे मना किया है कि माँ उसके बच्चे की वजह से बाप को तकलीफ़ पहुँचाए और इसकी सूरत ये है मष़लन कि माँ कह दे कि मैं इसे दूध नहीं पिलाऊँगी हालाँकि उसकी ग़िज़ा बच्चे के ज़्यादा मुवाफ़िक़ है। वो बच्चे पर ज़्यादा मेहरबान होती है और दूसरे के मुक़ाबले में बच्चे के साथ वो ज़्यादा लतीफ़ व नर्मी कर सकती है। इसलिये उसके लिये जाइज़ नहीं कि वो बच्चे को दूध पिलाने से उस वक़्त भी इंकार कर दे जबकि बच्चे का वालिद उसे (नान नफ़्क़ा में) अपनी तरफ़ से वो सब कुछ देने को तैयार हो जो अल्लाह ने उस पर फ़र्ज़ किया है। इसी तरह फ़र्माया कि बाप अपने बच्चे की वजह से माँ को नुक़्सान न पहुँचाए। इसकी सूरत ये है मष़लन बाप माँ को दूध पिलाने से रोके और ख़्वाह मख़्वाह किसी दूसरी औरत को दूध पिलाने के लिये मुक़र्रर करे। अल्बत्ता अगर माँ और बाप अपनी ख़ुशी से किसी दूसरी औरत को दूध पिलाने के लिये मुक़र्रर करें तो दोनों पर कुछ गुनाह नहीं और अगर वो वालिद और वालिदा दोनों अपनी रज़ामन्दी और मश्वरे से बच्चे का दूध छुड़ाना चाहें तो फिर उन पर कुछ गुनाह न होगा (गो अभी मुद्दते रुख़सत बाक़ी हो) फ़िसाल के मा'नी दूध छुड़ाना।

तश्रीह : तबरी ने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से नक़ल किया। पहली आयत **वल्वालिदातु युर्ज़िअन** (अल् बक़र : 233) से इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये दलील ली कि माँ को अपने बच्चे का दूध पिलाना वाजिब है। ये उस सूरत में है जब बच्चा किसी दूसरी औरत का दूध न पिये या कोई अना न मिले या बाप मुहताजी की वजह से अना न रख सके। इस बात में माओं से वो औरतें मुराद हैं जिनको शौहर ने तलाक़ दे दी हो तो ऐसी औरतों को दूध पिलाई की उज्रत शौहर को देनी होगी दूसरी आयत में दूध पिलाने की मुद्दत मज़्कूर है। इस आयत को और सूरह लुक़्मान की इस आयत **व फिसालुहू फ़ी आमैनि** (लुक़्मान : 14) को हज़रत अली (रज़ि.) ने मिलाकर ये निकाला है कि हमल की मुद्दत कम से कम छः माह है। तीसरी आयत में ये मज़्कूर है कि शौहर दूध पिलाने की उज्रत अपने मक़्दूर के मुवाफ़िक़ दे। दूध पिलाने की मुद्दत पूरे दो साल है। इससे ज़्यादा दूध पिलाना सहीह नहीं है।

٥- باب نَفَقَةِ الْمَرْأَةِ إِذَا غَابَ عَنْهَا زَوْجُهَا، وَنَفَقَةِ الْوَلَدِ

बाब 5 : किसी औरत का शौहर अगर ग़ायब हो तो उसकी औरत क्यूँ कर ख़र्च करे और औलाद के ख़र्च का बयान

तश्रीह : अगर शौहर कहीं चला गया हो और उसका पता मा'लूम हो तो औरत अपने शहर के क़ाज़ी के पास जाए वो उस शहर के क़ाज़ी को लिखकर जहाँ उसका शौहर हो औरत का खर्चा मंगवाए। अगर ये अम्र मुम्किन न हो जैसा कि हमारे ज़माने का ह़ाल है कि क़ाज़ियों को मुत्लक़ इख़्तियार नहीं है तो औरत अपने शहर के क़ाज़ी को ख़बर दे और वो निकाह़ फ़स्ख़ करा दे। रूयानी ने कहा कि इस पर फ़त्वा है अगर शौहर का बिलकुल पता न हो जब भी क़ाज़ी निकाह़ को फ़स्ख़ करा सकता है। इसी त़रह़ अगर शौहर मुफ़्लिस हो और नान नफ़्क़ा न दे सकता हो शाफ़िइया और अहले ह़दीष़ का यही क़ौल है और ह़नफ़िया ने जो मज़हब इख़्तियार किया है वो औरतों पर स़रीह़ ज़ुल्म है और ऐसा हुक्म जिसकी वह ताक़त नहीं रखती है और इस ज़माने में कोई औरत इस पर नहीं चल सकती। वो कहते हैं शौहर मुफ़्लिस हो या ग़ायब हर ह़ाल में औरत स़ब्र से बैठी रहे। अल्बत्ता उसके नाम पर क़र्ज़ लेकर खा सकती है। बतलाइये मुफ़्लिस या ग़ायब को कौन क़र्ज़ देगा। इस ज़माने में तो मालदारों को भी बग़ैर गिरवी के कोई क़र्ज़ नहीं देता। (वह़ीदी)

٥٣٥٩- حَدَّثَنَا ابْنُ مُقَاتِلٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : جَاءَتْ هِنْدُ بِنْتُ عُتْبَةَ فَقَالَتْ : يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّ أَبَا سُفْيَانَ رَجُلٌ مِسِّيكٌ، فَهَلْ عَلَيَّ حَرَجٌ أَنْ أُطْعِمَ مِنَ الَّذِي لَهُ عِيَالَنَا. قَالَ: ((لاَ. إِلاَّ بِالْمَعْرُوفِ)). [راجع: ٢٢١١]

5359. हमसे मुह़म्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें यूनुस बिन यज़ीद ने, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें उ़र्वा ने ख़बर दी, और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि हिन्द बिन्त उ़त्बा (रज़ि.) ह़ाज़िर हुई और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! अबू सुफ़यान (उनके शौहर) बहुत बख़ील हैं, तो क्या मेरे लिये उसमें कोई गुनाह है अगर मैं उनके माल में से (उसके पीठ पीछे) अपने बच्चों को खिलाऊँ? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि नहीं , लेकिन दस्तूर के मुताबिक़ होना चाहिये। (राजेअ़ : 2211)

٥٣٦٠- حَدَّثَنَا يَحْيَى حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ عَنْ مَعْمَرٍ عَنْ هَمَّامٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا أَنْفَقَتِ الْمَرْأَةُ مِنْ كَسْبِ زَوْجِهَا عَنْ غَيْرِ أَمْرِهِ فَلَهُ نِصْفُ أَجْرِهِ)). [راجع: ٢٠٦٦]

5360. हमसे यह़्या बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, उनसे मअ़मर बिन राशिद ने, उनसे हम्माम बिन उ़ययना ने, कहा कि मैंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अगर औरत अपने शौहर की कमाई में से, उसके हुक्म के बग़ैर (दस्तूर के मुताबिक़) अल्लाह के रास्ते में ख़र्च कर दे तो उसे भी आधा ष़वाब मिलता है। (राजेअ़ : 2066)

ये जब है कि औरत को मर्द की रज़ामन्दी मा'लूम हो। अगर औरत दयानतदार नहीं है तो ऐसे ख़र्च के लिये उसे हर्गिज़ इजाज़त नहीं दी जाएगी। आयत **फ़स्स़ालिहातु क़ानितातुन हाफ़िज़ातुल्लिल्ग़ैबि** (अन् निसा : 34) में **हफ़िजल्लाहु** से ये अम्र ज़ाहिर है।

٦- باب عَمَلِ الْمَرْأَةِ فِي بَيْتِ زَوْجِهَا

बाब 6 : औरत का अपने शौहर के घर में काम काज करना

तश्रीह : या'नी वही कामकाज जो औरतों के मा'मूल में हैं जैसे आटा गूंधना, पीसना, घर में झाड़ू देना, खाना पकाना वग़ैरह ये काम भी औरत पर उस वक़्त वाजिब है जब शौहर मुह़ताज हो, गो औरत अपने घराने की अमीर हो जो

काम औरत अपने माँ बाप के घर में करती थी वही शौहर के घर में करे। इमाम मालिक ने कहा कि औरत घर के कामकाज पर मजबूर की जाएगी गो वो अपने ख़ानदान की अमीर हो बशर्ते कि शौहर मुह्ताजगी की वजह से लौण्डी गुलाम न रख सके।

5361. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे शुअबा ने, कहा कि मुझसे हकम ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी लैला ने, उनसे अली (रज़ि.) ने बयान किया कि फ़ातिमा (रज़ि.) नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में ये शिकायत करने के लिये हाज़िर हुई कि चक्की पीसने की वजह से उनके हाथों में कितनी तकलीफ़ है। उन्हें मा'लूम हुआ था कि आँहज़रत (ﷺ)के पास कुछ गुलाम आए हैं लेकिन आँहज़रत (ﷺ) से उनकी मुलाक़ात न हो सकी। इसलिये आइशा (रज़ि.) से इसका ज़िक्र किया। जब आप तशरीफ़ लाए तो आइशा (रज़ि.) ने आपसे इसका तज़्किरा किया। अली (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) हमारे यहाँ तशरीफ़ लाए (रात के वक़्त) हम उस वक़्त अपने बिस्तरों पर लेट चुके थे हमने उठना चाहा तो आपने फ़र्माया कि तुम दोनों जिस तरह थे उसी तरह रहो। फिर आँहुज़ूर (ﷺ) मेरे और फ़ातिमा के बीच बैठ गये। मैंने आपके क़दमों की ठण्डक अपने पेट पर महसूस की, फिर आपने फ़र्माया, तुम दोनों ने जो चीज़ मुझसे मांगी है, क्या मैं तुम्हें उससे बेहतर एक बात न बता दूँ? जब तुम (रात के वक़्त) अपने बिस्तर पर लेट जाओ तो 33 मर्तबा सुब्हानल्लाह 33 मर्तबा अल्हम्दुलिल्लाह और 34 मर्तबा अल्लाहु अकबर पढ़ लिया करो ये तुम्हारे लिये लौण्डी गुलाम से बेहतर है। (राजेअ : 3113)

٥٣٦١- حدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ شُعْبَةَ قَالَ : حَدَّثَنِي الْحَكَمُ عَنِ ابْنِ أَبِي لَيْلَى حَدَّثَنَا عَلِيٌّ أَنَّ فَاطِمَةَ عَلَيْهَا السَّلاَمُ أَتَتِ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَشْكُو إِلَيْهِ مَا تَلْقَى فِي يَدِهَا مِنَ الرَّحَى وَبَلَغَهَا أَنَّهُ جَاءَهُ رَقِيقٌ فَلَمْ تُصَادِفْهُ، فَذَكَرَتْ ذَلِكَ لِعَائِشَةَ. فَلَمَّا جَاءَ أَخْبَرَتْهُ عَائِشَةُ قَالَ: فَجَاءَنَا وَقَدْ أَخَذْنَا مَضَاجِعَنَا، فَذَهَبْنَا نَقُومُ فَقَالَ: ((عَلَى مَكَانِكُمَا)) فَجَاءَ فَقَعَدَ بَيْنِي وَبَيْنَهَا حَتَّى وَجَدْتُ بَرْدَ قَدَمَيْهِ عَلَى بَطْنِي. فَقَالَ ((أَلاَ أَدُلُّكُمَا عَلَى خَيْرٍ مِمَّا سَأَلْتُمَا؟ إِذَا أَخَذْتُمَا مَضَاجِعَكُمَا أَوْ أَوَيْتُمَا إِلَى فِرَاشِكُمَا فَسَبِّحَا ثَلاَثًا وَثَلاَثِينَ وَاحْمَدَا ثَلاَثًا وَثَلاَثِينَ وَكَبِّرَا أَرْبَعًا وَثَلاَثِينَ فَهُوَ خَيْرٌ لَكُمَا مِنْ خَادِمٍ)).

[راجع: ٣١١٣]

तश्रीह : अल्लाह तुमको कामकाज की ताक़त देगा और ख़ादिम की हाजत न रहेगी। जब लख़्ते जिगर रसूलुल्लाह (ﷺ) की ये हालत है तो दूसरी औरतों की क्या हक़ीक़त है कि वो अपने आपको बड़ी ख़ानदानी समझकर घरेलू काम काज को अपने लिये आर समझें।

बाब 7 : औरत के लिये ख़ादिम का होना

٧- باب خَادِمِ الْمَرْأَةِ

5362. हमसे अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, कहा हमसे उबैदुल्लाह बिन अबी यज़ीद ने बयान किया, उन्होंने मुजाहिद से सुना, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन अबी लैला से सुना, उनसे हज़रत अली बिन अबी तालिब (रज़ि.) बयान करते थे कि फ़ातिमा (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुई थीं और

٥٣٦٢- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ أَبِي يَزِيدَ سَمِعَ مُجَاهِدًا سَمِعْتُ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ أَبِي لَيْلَى يُحَدِّثُ عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ أَنَّ فَاطِمَةَ عَلَيْهَا السَّلاَمُ أَتَتِ النَّبِيَّ ﷺ تَسْأَلُهُ

خَادِمًا، فَقَالَ : ((أَلاَ أُخْبِرُكِ مَا هُوَ خَيْرٌ لَكِ مِنْهُ، تُسَبِّحِينَ اللهَ عِنْدَ مَنَامِكِ ثَلاَثًا وَثَلاَثِينَ، وَتَحْمَدِينَ اللهَ ثَلاَثًا وَثَلاَثِينَ، وَتُكَبِّرِينَ اللهَ أَرْبَعًا وَثَلاَثِينَ)). ثُمَّ قَالَ سُفْيَانُ : إِحْدَاهُنَّ أَرْبَعٌ وَثَلاَثُونَ، فَمَا تَرَكْتُهَا بَعْدُ. قِيلَ : وَلاَ لَيْلَةَ صِفِّينَ؟ قَالَ وَلاَ لَيْلَةَ صِفِّينَ.[راجع: ٣١١٣]

आपसे एक ख़ादिम मांगा था, फिर आपने फ़र्माया कि क्या मैं तुम्हें एक ऐसी चीज़ न बता दूँ जो तुम्हारे लिये इससे बेहतर हो। सोते वक़्त 33 बार सुब्हानल्लाह, 33 बार अल्हम्दुलिल्लाह और 34 बार अल्लाहु अकबर पढ़ लिया करो। सुफ़यान बिन उ़ययना ने कहा कि उनमें से एक कलिमा 34 बार कह ले। ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने कहा कि फिर मैंने उन कलिमों को कभी नहीं छोड़ा। उनसे पूछा गया जंगे सिफ़्फ़ीन की रातों में भी नहीं? कहा कि सिफ़्फ़ीन की रातों में भी नहीं। (राजेअ : 3113)

तश्रीह : सिफ़्फ़ीन वो जगह है जहाँ ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) और अमीर मुआ़विया बिन अबी सुफ़यान के बीच जंग बरपा हुई थी। ह़ालते जंग में भी आपने इस अहमतरीन वज़ीफ़े को नहीं छोड़ा। वज़ीफ़ा के कामयाब होने की यही शर्त है।

٨- باب خِدْمَةِ الرَّجُلِ فِي أَهْلِهِ

बाब 8 : मर्द अपने घर के काम काज करे तो कैसा है?

٥٣٦٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَرْعَرَةَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الْحَكَمِ بْنِ عُتَيْبَةَ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنِ الأَسْوَدِ بْنِ يَزِيدَ سَأَلْتُ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: مَا كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَصْنَعُ فِي الْبَيْتِ؟ قَالَتْ : كَانَ يَكُونُ فِي مِهْنَةِ أَهْلِهِ فَإِذَا سَمِعَ الأَذَانَ خَرَجَ.[راجع: ٢٢١١]

5363. हमसे मुह़म्मद बिन अ़रअ़रह ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे ह़कम बिन उ़त्बा ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अस्वद बिन यज़ीद ने कि मैंने ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) से पूछा कि घर में नबी करीम (ﷺ) क्या क्या करते थे? उम्मुल मोमिनीन (रज़ि.) ने बयान किया कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) घर के काम किया करते थे, फिर आप जब अज़ान की आवाज़ सुनते तो बाहर चले जाते थे। (राजेअ : 2211)

तश्रीह : घर के काम काज करना और अपने घरवालों की मदद करना हमारे प्यारे रसूल (ﷺ) की सुन्नत है और जो लोग घर में अपाहिज बने रहते हैं और हर काम के लिये दूसरों का सहारा ढूँढ़ते हैं वो सिर्फ़ बेअ़क़्ल हैं, उनकी सेह़त भी हमेशा ख़राब रह सकती है और सफ़र वग़ैरह में उनको और भी तकलीफ़ उठानी पड़ती है। इल्ला माशाअल्लाह.

٩- باب إِذَا لَمْ يُنْفِقِ الرَّجُلُ، فَلِلْمَرْأَةِ أَنْ تَأْخُذَ بِغَيْرِ عِلْمِهِ مَا يَكْفِيهَا وَوَلَدَهَا بِالْمَعْرُوفِ

बाब 9 : अगर मर्द ख़र्च न करे तो औरत उसकी इजाज़त बग़ैर उसके माल में से इतने ले सकती है जो दस्तूर के मुताबिक़ उसके लिये और उसके बच्चों के लिये काफ़ी हो

٥٣٦٤- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ هِشَامٍ قَالَ : أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ هِنْدَ بِنْتَ عُتْبَةَ قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنَّ أَبَا سُفْيَانَ رَجُلٌ شَحِيحٌ، وَلَيْسَ يُعْطِينِي مَا يَكْفِينِي وَوَلَدِي إِلاَّ مَا أَخَذْتُ

5364. हमसे मुह़म्मद बिन मुष़न्ना ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, कहा कि मुझे मेरे वालिद (उ़र्वा ने) ख़बर दी और उन्हें आइशा (रज़ि.) ने कि हिन्द बिन्ते उ़त्बा ने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह! अबू सुफ़यान (उनके शौहर) बख़ील हैं और मुझे इतना नहीं देते जो मेरे और मेरे बच्चों के लिये काफ़ी हो सके। हाँ अगर मैं उनकी लाइल्मी में उनके माल में से ले लूँ (तो काम चलता है) आँह़ज़रत (ﷺ)

ने फ़र्माया कि तुम दस्तूर के मुवाफ़िक़ ले सकती हो जो तुम्हारे और तुम्हारे बच्चों के लिये काफ़ी हो सके। (राजेअ : 2211)

مِنْهُ وَهُوَ لاَ يَعْلَمُ. فَقَالَ: ((خُذِي مَا يَكْفِيكِ وَوَلَدَكِ بِالْمَعْرُوفِ)).

[راجع: ٢٢١١]

तश्रीह : बख़ील मर्द की औरत को जाइज़ तौर पर उसकी इजाज़त बग़ैर इसके माल में से अपना और बच्चों का गुज़रान ले लेना जाइज़ है। यही हिन्द बिन्त उत्बा (रज़ि.) हैं जिनके बारे मज़ीद तफ़्सील ये है **व कानत हिन्द लम्मा क़ुतिल अबूहा उत्बा व अम्मुहा शैबा व अख़ूहल्वलीद यौम बद्रिन शक़्क़ अलैहा फ़लम्मा कान यौम उहुदिन क़ुतिल हम्ज़तु फ़रिहत बिज़ालिक व अमदत इला बत्निही फ़शक़्क़त्हा व अख़ज़त कबिदहू फलाक्तहा षुम्म तफ़ज़त्हा फलम्मा कान यौमुल्फ़त्हि व दख़ल अबू सुफ़्यान मक्कत मुस्लिमन बअ़द अन असर्रतहू ख़ैलुन्नबिय्यि (ﷺ) तिल्कल्लैलत फअजारहूल्अब्बास फग़ज़बत हिन्द लिअज्लि इस्लामिही व अखज़त बिलिहयतिही षुम्म इन्नहा बअ़द इस्तिक़्रारिन्निबिय्यि (ﷺ) बिमक्कत जाअत फअस्लमत व बायअ़त व क़ालत या रसूलल्लाहि मा कान अला ज़हरिल्अर्ज़ि मिन अहलि खबाइन अहब्बु इला अंय्यज़िल्लू मिन अहलि खाबाइक वमा अला ज़हरिल्अर्ज़ि अल्यौम खबाउन अहब्बु इला अय्यइज़्ज़ू मिन अहलि खबाइक फक़ाल अयज़न वल्लज़ी नफ़्सी बियदिही** (फतह पारा 22 पेज 238) ये इसलिये हुआ कि जंगे बद्र में जब हिन्द का बाप उत्बा और उसका चचा शैबा और उसका भाई वलीद मक़्तूल हुए तो ये उस पर बहुत भारी गुज़रा और उस ग़ुस्से की बिना पर उसने वहशी को लालच देकर उससे हज़रत हम्ज़ा को क़त्ल करवाया। इससे वे बहुत ख़ुश हुई और हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) के पेट को उसने चाक किया और आपके कलेजे को निकालकर चबाकर फेंक दिया। जब फ़तहे मक्का का दिन हुआ और अबू सुफ़यान (रज़ि.) मक्का में मुसलमान होकर दाख़िल हुआ क्योंकि उसे इस्लामी लश्कर ने क़ैद कर लिया था। पस उसे हज़रत अब्बास (रज़ि.) ने पनाह दी तो उसके इस्लाम लाने पर हिन्दा बहुत ग़ुस्सा हुई और उसकी दाढ़ी को पकड़ लिया। जब आँहज़रत (ﷺ) मक्का में मुस्तक़िल तौर पर क़ाबिज़ हो गये तो हिन्दा हाज़िरे दरबारे रिसालत होकर मुसलमान हो गई और कहा कि या रसूलल्लाह! दुनिया में कोई घराना मेरी नज़रों में आपके घराने से ज़्यादा ज़लील न था मगर आज इस्लाम की बदौलत दुनिया में कोई घराना मेरे नज़दीक आपके घराने से ज़्यादा मुअ़ज़्ज़ज़ नहीं है। आँहज़रत (ﷺ) ने जवाब में फ़र्माया कि उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, मेरे नज़दीक भी यही मामला है। इससे आँहज़रत (ﷺ) के अख़्लाक़े फ़ाज़िला को मा'लूम किया जा सकता है कि ऐसी दुश्मन औरत के लिये भी आपके दिल में कितनी गुंजाइश हो जाती है जबकि वो इस्लाम क़ुबूल कर लेती है। आप उसकी सारी मुख़ालिफ़ाना हरकतों को फ़रामोश फ़र्माकर उसे अपने दरबारे आलिया में शर्फ़े बारयाबी अता फ़र्माकर सरफ़राज़ कर देते हैं। (ﷺ) **अल्फ अल्फ मर्रतन व उद्दिद कुल्लु ज़र्रतिन व अला आलिही व अस्हाबिही अज्मईन आमीन**

बाब : 10 औरत का अपने शौहर के माल की और जो वो ख़र्च के लिये दे उसकी हिफ़ाज़त करना

١٠- باب حِفْظِ الْمَرْأَةِ زَوْجَهَا فِي ذَاتِ يَدِهِ وَالنَّفَقَةِ

5365. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, कहा हमसे अ ब्दुल्लाह बिन ताउस ने बयान किया, उनसे उनके वालिद (ताउस) और अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अअ़रज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया ऊँट पर सवार होने वाली औरतों में (या'नी अरब की औरतों में) बेहतरीन औरतें क़ुरैशी औरतें हैं। दूसरे रावी (इब्ने ताउस) ने बयान किया कि, क़ुरैश की सालेह नेक औरतें (सिर्फ़ लफ़्ज़ क़ुरैशी

٥٣٦٥- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا ابْنُ طَاوُسٍ عَنْ أَبِيهِ وَأَبُو الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((خَيْرُ نِسَاءٍ رَكِبْنَ الإِبِلَ نِسَاءُ قُرَيْشٍ)) وَقَالَ الآخَرُ : صَالِحُ نِسَاءِ قُرَيْشٍ أَحْنَاهُ عَلَى وَلَدٍ فِي صِغَرِهِ وَأَرْعَاهُ عَلَى زَوْجٍ فِي ذَاتِ يَدِهِ. وَيُذْكَرُ

عَنْ مُعَاوِيَةَ وَابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.
[راجع: ٣٤٣٤]

ओरतों के बजाय) बच्चे पर बचपन में सबसे ज़्यादा मेहरबान और अपने शौहर के माल की सबसे ज़्यादा हिफ़ाज़त करने वालियाँ होती हैं। मुआविया और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने भी नबी करीम (ﷺ) से ऐसी ही रिवायत की है। (राजेअ़ : 3434)

तश्रीह : मुआविया (रज़ि.) की रिवायत को इमाम अह़मद और त़बरानी ने और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की रिवायत को इमाम अह़मद ने वस्ल किया है। क़ुरैशी औरतें फ़ित़रतन इन ख़ूबियों की मालिक होती हैं। इसलिये उनका ख़ुसूसी ज़िक्र हुआ। उनके बाद जिन औरतों में ये ख़ूबियाँ हों वो किसी भी ख़ानदान से मुता'ल्लिक़ हों इस ता'रीफ़ की ह़क़दार हैं। इस ह़दीष़ के ज़ेल ह़ज़रत शाह वलीउल्लाह मुह़द्दिष़ देहलवी मरहूम फ़र्माते हैं । आँह़ज़रत (ﷺ) ने ये बयान किया कि क़ुरैश की औरतें इस वजह से बेहतर होती हैं कि वो अपनी औलाद पर उनके बचपन में बड़ी मुश्फ़िक़ व मेहरबान हुआ करती हैं और शौहर के माल व ग़ुलाम वग़ैरह की सबसे ज़्यादा मुह़ाफ़िज़त करती हैं और ज़ाहिर है कि यही दो मक़्सद हैं जो निकाह़ के मक़ासिद में सबसे ज़्यादा अहम और अ़ज़ीमुश्शान हैं और इन ही से तदबीरे मंज़िल और निज़ामे ख़ानादारी वाबस्ता है। पस ये अम्र मुस्तह़ब है कि ऐसे क़बीला और ख़ानदान वाली औरत से निकाह़ किया जाए जिनके आ़दात व अख़्लाक़ व अत्वार अच्छे हों और उनमें क़ुरैश जैसी औरतों के औस़ाफ़ भी पाए जाएँ। (ह़ुज्जतुल्लाहिल बालिग़ा)

١١ - باب كِسْوَةِ الْمَرْأَةِ بِالْمَعْرُوفِ

बाब 11 : औरत को कपड़ा दस्तूर के मुताबिक़ देना चाहिये

٥٣٦٦ - حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ مَيْسَرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ زَيْدَ بْنَ وَهْبٍ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: آتَى إِلَيَّ النَّبِيُّ ﷺ حُلَّةَ سِيَرَاءَ، فَلَبِسْتُهَا فَرَأَيْتُ الْغَضَبَ فِي وَجْهِهِ، فَشَقَقْتُهَا بَيْنَ نِسَائِي.
[راجع: ٢٦١٤]

5366. हमसे ह़ज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा कि मुझे अ़ब्दुल मलिक बिन मैसरह ने ख़बर दी, कहा कि मैंने ज़ैद बिन वहब से सुना और उनसे अ़ली (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने मुझे मेरा कपड़ा का जोड़ हदिया में दिया तो मैंने उसे ख़ुद पहन लिया, फिर मैंने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के चेहरा मुबारक पर ख़फ़्गी देखी तो मैंने उसे फ़ाड़कर अपनी औरतों में तक़्सीम कर दिया। (राजेअ़ : 2614)

तश्रीह : या'नी अपनी रिश्तेदार औरतों को क्योंकि ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) के घर में ह़याते नबवी तक सिवाए ह़ज़रत फ़ात़िमा ज़ुहरा (रज़ि.) के और कोई औरत न थी। दूसरी रिवायत में यूँ है कि मैंने उसे फ़ात़िमों में बांट दिया या'नी ह़ज़रत फ़ात़िमातुज़् ज़ुहरा और फ़ात़िमा बिन्ते असद ह़ज़रत अ़ली की वालिदा और फ़ात़िमा बिन्ते ह़म्ज़ा (रज़ि.)। मा'लूम हुआ कि रेशम या सोना जैसी चीज़ें किसी त़ौर पर किसी मर्द को मिल जाएँ तो उन्हें वो ख़ुद इस्ते'माल करने के बजाय अपनी मस्तूरात को तक़्सीम कर सकता है।

١٢ - باب عَوْنِ الْمَرْأَةِ زَوْجَهَا فِي وَلَدِهِ

बाब 12 : औरत अपने शौहर की मदद उसकी औलाद की परवरिश में कर सकती है

या'नी उस औलाद की ता'लीम व तर्बियत जो उसके पेट से न हो ह़दीष़े जाबिर में जाबिर की बहनों की ता'लीम व तर्बियत में मदद निकलती है गोया औलाद को भी बहनों पर क़यास किया है। ये ख़िदमत कुछ औरत पर फ़र्ज़ जैसी नहीं है जैसे इब्ने बत़्त़ाल ने कहा मगर अख़्लाक़न औरत को ऐसा करना ही चाहिये।

5367. हमसे मुसद्दद बिन मुसरहद ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने, उनसे अम्र ने और उनसे जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कि मेरे वालिद शहीद हो गये और उन्होंने सात लड़कियाँ छोड़ीं या (रावी ने कहा कि) नौ लड़कियाँ। चुनाँचे मैंने एक पहले की शादीशुदा औरत से निकाह किया। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझसे पूछा, जाबिर! तुमने शादी की है? मैंने कहा कि जी हाँ। फ़र्माया, कुँवारी से या ब्याही से। मैंने अ़र्ज़ किया ब्याही से। फ़र्माया तुमने किसी कुँवारी लड़की से शादी क्यूँ न की। तुम उसके साथ खेलते और वो तुम्हारे साथ खेलती। तुम उसके साथ हंसी मज़ाक़ करते और वो तुम्हारे साथ हंसी मज़ाक़ करती। जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि इस पर मैंने आँहज़रत (ﷺ) से अ़र्ज़ किया कि अ़ब्दुल्लाह (मेरे वालिद) शहीद हो गये और उन्होंने कई लड़कियाँ छोड़ी हैं, इसलिये मैंने ये पसंद नहीं किया कि उनके पास उन ही जैसी लड़की ब्याह लाऊँ, इसलिये मैं ने एक ऐसी औरत से शादी की है जो उनकी देखभाल कर सके और उनकी इस्लाह का ख़्याल रखे। आँहज़रत (ﷺ) ने उस पर फ़र्माया, अल्लाह तुम्हें बरकत दे या (रावी को शक था) आँहज़रत (ﷺ) ने ख़ैरन फ़र्माया या'नी अल्लाह तुमको ख़ैर अ़ता करे। (राजेअ : 443)

٥٣٦٧- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ عَمْرٍو عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا، قَالَ : هَلَكَ أَبِي وَتَرَكَ سَبْعَ بَنَاتٍ أَوْ تِسْعَ بَنَاتٍ فَتَزَوَّجْتُ امْرَأَةً ثَيِّبًا. فَقَالَ لِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((تَزَوَّجْتَ يَا جَابِرُ؟)) فَقُلْتُ : نَعَمْ. فَقَالَ : ((بِكْرًا أَمْ ثَيِّبًا؟)) قُلْتُ : بَلْ ثَيِّبًا. قَالَ : ((فَهَلاَّ جَارِيَةً تُلاَعِبُهَا وَتُلاَعِبُكَ. وَتُضَاحِكُهَا وَتُضَاحِكُكَ؟)) قَالَ: فَقُلْتُ لَهُ إِنَّ عَبْدَ اللهِ هَلَكَ وَتَرَكَ بَنَاتٍ، وَإِنِّي كَرِهْتُ أَنْ أَجِيئَهُنَّ بِمِثْلِهِنَّ، فَتَزَوَّجْتُ امْرَأَةً تَقُومُ عَلَيْهِنَّ وَتُصْلِحُهُنَّ، فَقَالَ: ((بَارَكَ اللهُ لَكَ أَوْ خَيْرًا)).

[راجع: ٤٤٣]

तश्रीह : मा'लूम हुआ कि शादी के लिये औरत के इंतिख़ाब में बहुत कुछ सोच विचार करना ज़रूरी है। महज़ ज़ाहिरी हुस्न देखकर किसी औरत पर फ़रेफ़्ता हो जाना अ़क्लमंदी नहीं है। हज़रत जाबिर (रज़ि.) को अल्लाह तआला ने आपकी दुआ से बहुत बरकत दी। उनका क़र्ज़ भी सब अदा करा दिया हमेशा ख़ुश रहे और हमेशा आँहज़रत (ﷺ) के मंज़ूरे नज़र रहे।

बाब 13 : मुफ़्लिस आदमी को (जब कुछ मिले तो) पहले अपनी बीवी को खिलाना वाजिब है

١٣- بَابُ نَفَقَةِ الْمُعْسِرِ عَلَى أَهْلِهِ

तश्रीह : क्योंकि आँहज़रत (ﷺ) ने बाब की हदीष में उस मुफ़्लिस शख़्स से फ़र्माया जिस पर रमज़ान का कफ़्फ़ारा वाजिब था जाओ तुम मियाँ–बीवी इस खजूर के ज़्यादा हक़दार हो।

5368. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे हुमैद बिन अ़ब्दुर्रहमान ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में एक स़ाहब आए और कहा कि मैं तो हलाक हो गया।

٥٣٦٨- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ حَدَّثَنَا ابْنُ شِهَابٍ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ

عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلٌ فَقَالَ: هَلَكْتُ. قَالَ: ((وَلِمَ؟)) قَالَ وَقَعْتُ عَلَى أَهْلِي فِي رَمَضَانَ قَالَ: ((فَأَعْتِقْ رَقَبَةً)). قَالَ لَيْسَ عِنْدِي. قَالَ: ((فَصُمْ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ)) قَالَ: لاَ أَسْتَطِيعُ قَالَ: ((فَأَطْعِمْ سِتِّينَ مِسْكِينًا)). قَالَ: لاَ أَجِدُ فَأُتِيَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِعَرَقٍ فِيهِ تَمْرٌ، فَقَالَ: ((أَيْنَ السَّائِلُ؟)) قَالَ هَا أَنَا ذَا قَالَ: ((تَصَدَّقْ بِهَذَا)). قَالَ: عَلَى أَحْوَجَ مِنَّا يَا رَسُولَ اللهِ، فَوَ الَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ، مَا بَيْنَ لاَبَتَيْهَا أَهْلُ بَيْتٍ أَحْوَجُ مِنَّا فَضَحِكَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى بَدَتْ أَنْيَابُهُ قَالَ: ((فَأَنْتُمْ إِذًا)).

[راجع: ١٩٣٦]

आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, आख़िर बात क्या हुई? उन्होंने कहा कि मैंने अपनी बीवी से रमज़ान में हमबिस्तरी कर ली। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया फिर एक गुलाम आज़ाद कर दो (ये कफ़्फ़ारा हो जाएगा)। उन्होंने अर्ज़ किया कि मेरे पास कुछ नहीं है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, फिर दो महीने लगातार रोज़े रख लो। उन्होंने कहा कि मुझमें इसकी भी ताक़त नहीं है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर साठ मिस्कीनों को खाना खिलाओ। उन्होंने कहा कि इतना मेरे पास सामान भी नहीं है। उसके बाद आपके पास एक टोकरा लाया गया जिसमें खजूरें थीं। आपने दरयाफ़्त किया कि मसला पूछने वाला कहाँ है? उन साहब ने अर्ज़ किया में यहाँ हाज़िर हूँ। आपने फ़र्माया लो इसे (अपनी तरफ़ से) सदक़ा कर देना। उन्होंने कहा अपने से ज़्यादा ज़रूरतमंद पर, या रसूलल्लाह! उस ज़ात की क़सम जिसे आपको हक़ के साथ भेजा है, इन दोनों पथरीले मैदानों के बीच कोई घराना हमसे ज़्यादा मुहताज नहीं है। इस पर आँहज़रत (ﷺ) हंसे और आपके मुबारक दांत दिखाई देने लगे और फ़र्माया, फिर तुम ही इसके ज़्यादा मुस्तहिक़ हो। (राजेअ: 1936)

तश्रीह : दूसरी रिवायत में यूँ है तू भी खा और अपने घरवालों को भी खिला तो आपने कफ़्फ़ारे की अदायगी पर उसके घरवालों का खाना मुक़द्दम समझा या उस शख़्स ने कफ़्फ़ारा के वजूब के साथ अपने घर वालों के ख़र्च का एहतिमाम किया और उनकी मुहताजी ज़ाहिर की। अगर घर वालों को खिलाना ज़रूरी न होता तो वो इस खजूर को ख़ैरात करना मुक़द्दम समझता। अर्क़ ऐसे थैले को कहते हैं जिसमें 15 साअ़ खजूर समा जाए। इस हदीष़ से आज महंगाई के दौर में आम्मतुल मुस्लिमीन के लिये बहुत सहूलत निकलती है जबकि लोग गिरानी से सख़्त परेशान हैं और अकष़र भूख से मौतें हो रही हैं। ऐसे नाज़ुक वक़्त में उलमा-ए-किराम का फ़र्ज़ है कि वो सदक़ा ख़ैरात के सिलसिले में ऐसे गुरबा का बहुत ज़्यादा ध्यान रखें, सदक़ा फ़ित्र वग़ैरह में भी यही उसूल है।

١٤- باب ﴿وَعَلَى الْوَارِثِ مِثْلُ ذَلِكَ﴾ وَهَلْ عَلَى الْمَرْأَةِ مِنْهُ شَيْءٌ؟ ﴿وَضَرَبَ اللهُ مَثَلاً رَجُلَيْنِ أَحَدُهُمَا أَبْكَمُ - إِلَى قَوْلِهِ - صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ﴾

बाब 14 : अल्लाह तआला का सूरह बक़र: में ये फ़र्माना कि बच्चे के वारिष़ (मष़लन भाई चचा वग़ैरह) पर भी यही लाज़िम है और अल्लाह तआला ने सूरह नहल में फ़र्माया अल्लाह दूसरों की मिष़ाल बयान करता है एक तो गूँगा है जो कुछ भी क़ुदरत नही रखता आख़िर आयत स़िरातम मुस्तक़ीम तक

तश्रीह : या'नी दूध पिलाने का नान नफ़्क़ा ख़र्च वग़ैरह देना या'नी जब बच्चा के पास कुछ माल न हो तो इमाम अह़मद के नज़दीक उसके वारिष़ ख़र्चा देंगे और ह़नफ़िया के नज़दीक बच्चा के हर मह़रम रिश्तेदार और जुम्हूर के नज़दीक वारिष़ों को ये ख़र्चा देना ज़रूरी नहीं। **व अलल्वारिषि मिष्लु ज़ालिक** (अल बक़र : 233) के मा'नी उन्होंने ये किये हैं कि वारिष़ भी हमको नुक़्सान न पहुँचाए। ज़ैद बिन षाबित ने कहा है कि अगर बच्चा की माँ और चचा दोनों हों तो हर एक बक़द्र अपने ह़िस़्से विराष़त के उसका ख़र्चा उठाएगा। ये बाब लाकर ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने ज़ैद का क़ौल रद्द किया कि औरत की मिष़ाल गूँगे की सी है और गूँगे की निस्बत फ़र्माया **ला यक्दिरू अला शैइन** (अन् नह्ल : 75) तो औरत पर कोई ख़र्चा वाजिब नहीं हो सकता।

5369. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब ने बयान किया, उन्हें हिशाम ने ख़बर दी, उन्हें उनके वालिद ने, उन्हें ज़ैनब बिन्ते अबी सलमा (रज़ि.) ने कि उम्मे सलमा (रज़ि.) ने बयान किया, मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या मुझे अबू सलमा (रज़ि.) (उनके पहले शौहर) के लड़कों के बारे में षवाब मिलेगा अगर मैं उन पर ख़र्च करूँ। मैं उन्हें उस मुहताजी में देख नहीं सकती, वो मेरे बेटे ही तो हैं। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ। तुम्हें हर उस चीज़ का षवाब मिलेगा जो तुम उन पर ख़र्च करोगी। (राजेअ़ 1467)

٥٣٦٩- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ أَخْبَرَنَا هِشَامٌ عَنْ أَبِيهِ عَنْ زَيْنَبَ ابْنَةِ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ : قُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ، هَلْ لِي مِنْ أَجْرٍ فِي بَنِي أَبِي سَلَمَةَ أَنْ أُنْفِقَ عَلَيْهِمْ، وَلَسْتُ بِتَارِكَتِهِمْ هَكَذَا وَهَكَذَا، إِنَّمَا هُمْ بَنِيَّ. قَالَ: ((نَعَمْ، لَكِ أَجْرُ مَا أَنْفَقْتِ عَلَيْهِمْ)).

[راجع: ١٤٦٧]

5370. हमसे मुह़म्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि हिन्द ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! अबू सुफ़यान बख़ील हैं। अगर मैं उनके माल में से इतना (उनसे पूछे बग़ैर) ले लिया करूँ जो मेरे और मेरे बच्चों को काफ़ी हो तो क्या इसमे कोई गुनाह है? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि दस्तूर के मुताबिक़ ले लिया करो। (राजेअ़ : 2211)

٥٣٧٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ هِنْدُ : يَا رَسُولَ اللهِ، إِنَّ أَبَا سُفْيَانَ رَجُلٌ شَحِيحٌ، فَهَلْ عَلَيَّ جُنَاحٌ أَنْ آخُذَ مِنْ مَالِهِ مَا يَكْفِينِي وَبَنِيَّ؟ قَالَ: ((خُذِي بِالْمَعْرُوفِ)).

[راجع: ٢٢١١]

तश्रीह : इस ह़दीष़ से ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने ये निकाला कि औलाद का ख़र्चा बाप पर लाज़िम है वरना आँह़ज़रत (ﷺ) ह़ज़रत हिन्दा को ये हुक्म फ़र्माते कि आधा खर्च तू दे और आधा अबू सुफ़यान के माल से ले मगर आपने ऐसा नहीं किया।

बाब 15 : रसूले करीम (ﷺ) का ये फ़र्माना जो शख़्स़ मर जाए और क़र्ज़ वग़ैरह का बोझ (मरते वक़्त) छोड़े या लावारिष़ बच्चे छोड़ जाए तो उनका बन्दोबस्त मुझ पर है

١٥- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((مَنْ تَرَكَ كَلاًّ أَوْ ضَيَاعًا فَإِلَيَّ))

या'नी मेरे ज़िम्मे है। इस बाब के यहाँ लाने से ह़ज़रत इमाम बुख़ारी का मक़्स़द ये है कि कोई नादार मुसलमान औलाद छोड़ जाए तो औलाद की परवरिश बैतुलमाल से की जाएगी। आज के ज़माने में ऐसे लावारिष़ मुस्लिम बच्चों की परवरिश माले

ज़कात से करना मालदार मुसलमानों का अहमतरीन फ़रीज़ा है।

5371. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अबू सलमा ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास जब किसी ऐसे शख़्स का जनाज़ा लाया जाता जिस पर क़र्ज़ होता तो आप दरयाफ़्त फ़र्माते कि मरने वाले ने क़र्ज़ की अदायगी के लिये तर्का छोड़ा है या नहीं। अगर कहा जाता कि इतना छोड़ा है जिससे उनका क़र्ज़ अदा हो सकता है तो आप उनकी नमाज़ पढ़ते, वरना मुसलमानों से कहते कि अपने साथी पर तुम ही नमाज़ पढ़ लो। फिर जब अल्लाह तआ़ला ने आँहुज़ूर (ﷺ) पर फ़तूहात के दरवाज़े खोल दिये तो फ़र्माया कि मैं मुसलमानों से उनकी ख़ुद अपनी ज़ात से भी ज़्यादा क़रीब हूँ इसलिये उनके मुसलमानों में से जो कोई वफ़ात पाए और क़र्ज़ छोड़े तो उसकी अदायगी की ज़िम्मेदारी मेरी है और जो कोई माल छोड़े वो उसके वरष़ा का है। (राजेअ़ : 2298)

٥٣٧١- حدَّثنا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَانَ يُؤْتَى بِالرَّجُلِ الْمُتَوَفَّى عَلَيْهِ الدَّيْنُ، فَيَسْأَلُ: ((هَلْ تَرَكَ لِدَيْنِهِ فَضْلاً؟)) فَإِنْ حُدِّثَ أَنَّهُ تَرَكَ وَفَاءً صَلَّى، وَإِلاَّ قَالَ لِلْمُسْلِمِينَ : ((صَلُّوا عَلَى صَاحِبِكُمْ)). فَلَمَّا فَتَحَ اللهُ عَلَيْهِ الْفُتُوحَ قَالَ : ((أَنَا أَوْلَى بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ أَنْفُسِهِمْ، فَمَنْ تُوُفِّيَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ فَتَرَكَ دَيْنًا فَعَلَيَّ قَضَاؤُهُ، وَمَنْ تَرَكَ مَالاً فَلِوَرَثَتِهِ)).[راجع: ٢٢٩٨]

तश्रीह : लफ़्ज़ स़ल्लू अ़ला स़ाहिबिकुम कहने से ये मक़्स़द था कि लोग क़र्ज़ अदा करने की फ़िक्र रखें।

बाब 16 : आज़ाद और लौण्डी दोनों अना हो सकती हैं या'नी दूध पिला सकती हैं

١٦- باب الْمُرَاضِعِ مِنَ الْمَوَالِيَاتِ وَغَيْرِهِنَّ

5372. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें उ़र्वा ने ख़बर दी, उनको अबू सलमा की स़ाहबज़ादी ज़ैनब ने ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतह्हरा उम्मे ह़बीबा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मेरी बहन (उ़ज़ा) बिन्ते अबी सुफ़यान से निकाह कर लीजिए। आपने फ़र्माया और तुम उसे पसंद भी करोगी (कि तुम्हारी बहन तुम्हारी सौकन बन जाए) मैंने अ़र्ज़ किया जी हाँ, उससे ख़ाली तो मैं अब भी नहीं हूँ और मैं पसंद करती हूँ कि अपनी बहन को भी भलाई में अपने साथ शरीक कर लूँ। आपने इस पर फ़र्माया कि ये मेरे लिये जाइज़ नहीं है। (दो बहनों को एक साथ निकाह में जमा करना) मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! वल्लाह इस तरह की बातें हो रही हैं

٥٣٧٢- حدَّثنا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ أَنَّ زَيْنَبَ ابْنَةَ أَبِي سَلَمَةَ أَخْبَرَتْهُ أَنَّ أُمَّ حَبِيبَةَ زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ: قُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ، انْكِحْ أُخْتِي ابْنَةَ أَبِي سُفْيَانَ؟ قَالَ : ((أَوَتُحِبِّينَ ذَلِكِ)) قُلْتُ: نَعَمْ لَسْتُ لَكَ بِمُخْلِيَةٍ وَأَحَبُّ مَنْ شَارَكَنِي فِي الْخَيْرِ أُخْتِي. فَقَالَ: ((إِنَّ ذَلِكِ لاَ يَحِلُّ لِي)). فَقُلْتُ : يَا رَسُولَ اللهِ فَوَ اللهِ إِنَّا نَتَحَدَّثُ أَنَّكَ تُرِيدُ أَنْ تَنْكِحَ دُرَّةَ ابْنَةَ أَبِي سَلَمَةَ،

فَقَالَ: ((ابْنَةَ أُمِّ سَلَمَةَ؟)) فَقُلْتُ : نَعَمْ، قَالَ: ((فَوَ اللهِ لَوْ لَمْ تَكُنْ رَبِيبَتِي فِي حِجْرِي مَا حَلَّتْ لِي، إِنَّهَا ابْنَةُ أَخِي مِنَ الرَّضَاعَةِ، أَرْضَعَتْنِي وَأَبَا سَلَمَةَ ثُوَيْبَةُ، فَلاَ تَعْرِضْنَ عَلَيَّ بَنَاتِكُنَّ وَلاَ أَخَوَاتِكُنَّ)). وَقَالَ شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ : قَالَ عُرْوَةُ ثُوَيْبَةُ أَعْتَقَهَا أَبُو لَهَبٍ.

[راجع:٥١٠١]

कि आप दुर्रह बिन्ते अबी सलमा से निकाह़ का इरादा रखते हैं। आँह़ज़रत (ﷺ) ने दरयाफ़्त फ़र्माया, उम्मे सलमा की बेटी। जब मैंने अ़र्ज़ किया, जी हाँ तो आपने फ़र्माया अगर वो मेरी परवरिश में न होती जब भी वो मेरे लिये ह़लाल नहीं थी वो तो मेरे रज़ाई भाई की लड़की है। मुझे और अबू सलमा को षुवैबा ने दूध पिलाया था, पस तुम मेरे लिये अपनी लड़कियों और बहनों को न पेश किया करो। और शुऐ़ब ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने और उनसे उ़र्वा ने, कहा कि षुवैबा को अबू लहब ने आज़ाद किया था। (राजेअ़ : 5101)

तशरीह़ : इस ह़दीष़ से ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने बाब का मत़लब निकाला कि अना हो सकती है या'नी आज़ाद मर्दों को दूध पिला सकती है जैसा कि षुवैबा (लौण्डी) ने आँह़ज़रत (ﷺ) को दूध पिलाया था। षुवैबा को अबू लहब ने नबी अकरम (ﷺ) की विलादत की ख़ुशी में आज़ाद किया था।

अल्ह़म्दुलिल्लाह कि किताबुन नफ़्क़ात का बयान ख़त्म हुआ। ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने इस बारे में मसाइल को जिस तफ़्सील से किताब व सुन्नत की रोशनी में बयान किया है वो ह़ज़रत इमाम ही जैसे मुज्तहिदे मुत़्लक़ व मुह़द्दिषे कामिल का ह़क़ था। अल्लाह तआ़ला आपको उम्मत की त़रफ़ से बेशुमार जज़ाएँ अ़ता करे और क़यामत के दिन बुख़ारी शरीफ़ के तमाम क़द्रदानों को आपके साथ दरबारे रिसालत में शर्फ़े बारयाबी नस़ीब हो और मुझ नाचीज़ को मेरे अहल व अ़याल और तमाम क़द्रदानों के साथ जवारे रसूल (ﷺ) में जगह मिल सके। व रह़िमुल्लाह अ़ब्दन क़ाल आमीन।

षुवैबा की आज़ादी के बारे में मज़ीद तशरीह़ ये है,

व ज़करस्सुहैल अन्नल्अ़ब्बास क़ाल लम्मा मात अबू लहब रायतुहू फ़ी मनामी बअ़द हौलिन फ़ी शर्रि हालिन मा लक़ैतु बअ़दकुम राहतन इल्ला अन्नल्अ़ज़ाब युख़फ़्फ़फ़ु कुल्ल यौमष्नैनि क़ाल व ज़ालिक अनन्नबिय (ﷺ) वुलिद यौमुल्इष्नैनि व कानत षुवैबतु बश्शरत अबा लहब बिमौलिहिदी फ़अ़ातक़हा (अल् हादी वल्इशरून पेज 47)

सुहैल ने ज़िक्र किया है कि ह़ज़रत अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि मैंने अबू लहब को मरने के एक साल बाद ख़्वाब में बुरी ह़ालत में देखा और उसने कहा कि मैंने तुमसे जुदा होने के बाद कोई आराम नहीं देखा। मगर इतना ज़रूर है कि हर सोमवार के दिन मेरे अ़ज़ाब में कुछ तख़्फ़ीफ़ (कमी) हो जाती है और ये इसलिये कि आँह़ज़रत (ﷺ) सोमवार ही के दिन पैदा हुए थे और अबू लहब की लौण्डी षुवैबा ने अबू लहब को आपकी पैदाइश की ख़ुशख़बरी सुनाई थी, जिसे सुनकर ख़ुशी में अबू लहब ने उसे आज़ाद कर दिया था। यही अबू लहब है जो बाद में ज़िद और हठधर्मी में इतना सख़्त हो गया कि उसके बारे में क़ुर्आने करीम में सूरह तब्बत यदा अबी लहब नाज़िल हुई। मा'लूम हुआ कि ज़िद्द और हठधर्मी की बिना पर किसी स़ह़ीह़ ह़दीष़ का इंकार करना बहुत ही बुरी ह़रकत है। जैसा कि आजकल अकष़र अ़वाम का ह़ाल है कि बहुत सी इस्लामी बातों और रसूले करीम (ﷺ) की सुन्नतों को ह़क़ व ष़ाबित जानते हुए भी उनका इंकार किये जाते हैं। ऐसे लोगों को अल्लाह नेक हिदायत दे और ज़िद और हठधर्मी से बचाए (आमीन)।

70. किताबुल अत्इमा

किताब खानों के बयान में

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(या'नी खाने के आदाब और अक़्साम के बयान में) **अत्इमा, तआम** की जमा है। त़आम हर खाने को कहते हैं और कभी गेहूँ को भी कहते हैं। लफ़्ज़ तअमहू बिल फ़त्ह़ मज़ा और ज़ायक़ा और तुअमतु बिज ज़म्मा त़आम को कहा जाता है। ह़लाल ह़राम खानों का बयान और खाने के आदाब इनका भी मुसलमानों के लिये मा'लूम करना ज़रूरी है। इसीलिये ये एक मुस्तक़िल किताब लिखी गई है।

बाब : और अल्लाह तआला ने सूरह बक़र: में फ़र्माया कि मुसलमानों! खाओ उन पाकीज़ा चीज़ों को जिनकी मैंने तुम्हें रोज़ी दी है और फ़र्माया कि और ख़र्च करो उन पाकीज़ा चीज़ों में से जो तुमने कमाई हैं और अल्लाह तआला ने सूरह मोमिनून में फ़र्माया खाओ पाकीज़ा चीज़ों में से और नेक अमल करो, बेशक तुम जो कुछ भी करते हो उनको मैं जानता हूँ।

﴿كُلُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ﴾ الآيَةَ. وَقَوْلِهِ : ﴿أَنْفِقُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا كَسَبْتُمْ﴾ وَقَوْلِهِ ﴿كُلُوا مِنَ الطَّيِّبَاتِ وَاعْمَلُوا صَالِحًا إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ﴾

5373. हमसे मुहम्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको सुफ़यान ष़ौरी ने ख़बर दी, उन्हें मंसूर ने उनसे अबू वाइल ने बयान किया और उनसे अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, भूखे को खिलाओ पिलाओ, बीमार की मिज़ाजपुर्सी करो और क़ैदी को छुड़ाओ। सुफ़यान ष़ौरी ने कहा कि (ह़दीष़ में) लफ़्ज़ आनी से मुराद क़ैदी है। (राजेअ : 3046)

٥٣٧٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((أَطْعِمُوا الْجَائِعَ، وَعُودُوا الْمَرِيضَ، وَفُكُّوا الْعَانِيَ)). قَالَ سُفْيَانُ: وَالْعَانِي الأَسِيرُ. [راجع: ٣٠٤٦]

बेगुनाह मज़्लूम क़ैदी मुसलमान को आज़ाद कराना बहुत बड़ी नेकी है। ज़हे नसीब उस मुसलमान के जिसको ये सआदत मिल सके। अल्लाह जन्नत नसीब करे ह़ज़रत मौलाना ह़कीम अ़ब्दुश्शकूर शकरावी अखी अल मुकर्रम मौलाना अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ स़ाह़ब को जिन्होंने एक नाज़ुकतरीन वक़्त में मेरी इसी त़रह़ मदद फ़र्माई थी। **अल्लाहुम्मग़्फ़िर्लहुम व र्हम्हुम आमीन** (राज़)

5374. हमसे यूसुफ़ बिन ईसा मरवज़ी ने बयान किया, कहा

٥٣٧٤- حَدَّثَنَا يُوسُفُ بْنُ عِيسَى،

हमसे मुहम्मद बिन फ़ुज़ैल ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे अबू हाज़िम (सलमा बिन अश्जई) ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की वफ़ात तक आले मुहम्मद (ﷺ) पर कभी ऐसा ज़माना नहीं गुज़रा कि कुछ दिन बराबर उन्होंने पेट भरकर खाना खाया हो और इसी सनद से।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُضَيْلٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ : مَا شَبِعَ آلُ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ طَعَامٍ ثَلاَثَةَ أَيَّامٍ حَتَّى قُبِضَ.

5375. अबू हाज़िम से रिवायत है कि उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने (बयान किया कि फ़ाक़ा की वजह से) मैं सख़्त मशक़्क़त में मुब्तला था, फिर मेरी मुलाक़ात उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) से हुई और उनसे मैंने क़ुर्आन मजीद की एक आयत पढ़ने के लिये कहा। उन्होंने मुझे वो आयत पढ़कर सुनाई और फिर अपने घर में दाख़िल हो गये। उसके बाद मैं बहुत दूर तक चलता रहा। आख़िर मशक़्क़त और भूख की वजह से मैं मुँह के बल गिर पड़ा। अचानक मैंने देखा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) मेरे सर के पास खड़े हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ अबू हुरैरह! मैंने कहा हाज़िर हूँ, या रसूलल्लाह! तैयार हूँ। फिर आँहज़रत (ﷺ) ने मेरा हाथ पकड़कर मुझे खड़ा किया। आप समझ गये कि मैं किस तकलीफ़ में मुब्तला हूँ। फिर आप मुझे अपने घर ले गये और मेरे लिये दूध का एक बड़ा प्याला मंगवाया। मैंने उसमें से दूध पिया। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, दोबारा पियो (अबू हुरैरह!) मैंने दोबारा पिया। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया और पियो। मैंने और पिया। यहाँ तक कि मेरा पेट भी प्याला की तरह भरपूर हो गया। अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर मैं उमर (रज़ि.) से मिला और उनसे अपना सारा वाक़िया बयान किया और कहा कि ऐ उमर! अल्लाह तआला ने उसे उस ज़ात के ज़रिये पूरा करा दिया, जो आपसे ज़्यादा मुस्तहिक़ थी। अल्लाह की क़सम! मैंने तुमसे आयत पूछी थी हालाँकि मैं उसे तुमसे भी ज़्यादा बेहतर तरीक़े पर पढ़ सकता था। उमर (रज़ि.) ने कहा अल्लाह की क़सम! अगर मैंने तुमको अपने घर में दाख़िल कर लिया होता और तुमको खाना खिला देता तो लाल लाल (उम्दह) ऊँट मिलने से भी ज़्यादा मुझ को ख़ुशी होती। (दीगर मक़ामात : 6246, 6452)

٥٣٧٥- وَعَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَصَابَنِي جَهْدٌ شَدِيدٌ، فَلَقِيتُ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ، فَاسْتَقْرَأْتُهُ آيَةً مِنْ كِتَابِ اللهِ، فَدَخَلَ دَارَهُ وَفَتَحَهَا عَلَيَّ، فَمَشَيْتُ غَيْرَ بَعِيدٍ فَخَرَرْتُ لِوَجْهِي مِنَ الْجَهْدِ وَالْجُوعِ، فَإِذَا رَسُولُ اللهِ ﷺ قَائِمٌ عَلَى رَأْسِي فَقَالَ : ((يَا أَبَا هُرَيْرَةَ))، فَقُلْتُ: لَبَّيْكَ رَسُولَ اللهِ وَسَعْدَيْكَ، فَأَخَذَ بِيَدِي فَأَقَامَنِي وَعَرَفَ الَّذِي بِي، فَانْطَلَقَ بِي إِلَى رَحْلِهِ فَأَمَرَ لِي بِعُسٍّ مِنْ لَبَنٍ فَشَرِبْتُ مِنْهُ، ثُمَّ قَالَ : ((عُدْ فَاشْرَبْ يَا أَبَا هُرَيْرَةَ))، فَعُدْتُ. فَشَرِبْتُ ثُمَّ قَالَ: ((عُدْ))، فَعُدْتُ فَشَرِبْتُ حَتَّى اسْتَوَى بَطْنِي فَصَارَ كَالْقِدْحِ قَالَ : فَلَقِيتُ عُمَرَ وَذَكَرْتُ لَهُ الَّذِي كَانَ مِنْ أَمْرِي وَقُلْتُ لَهُ : تَوَلَّى اللهُ ذَلِكَ مَنْ كَانَ لَهُ أَحَقُّ بِهِ مِنْكَ يَا عُمَرُ، وَاللهِ لَقَدْ اسْتَقْرَأْتُكَ الآيَةَ وَلأَنَا أَقْرَأُ لَهَا مِنْكَ قَالَ عُمَرُ : وَاللهِ لأَنْ أَكُونَ أَدْخَلْتُكَ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ أَنْ يَكُونَ لِي مِثْلُ حُمْرِ النَّعَمِ.

[طرفاه في: ٦٢٤٦، ٦٤٥٢].

तश्रीह : मगर अफ़सोस है कि मैं उस वक़्त तुम्हारा मतलब नहीं समझा और तुमने भी कुछ नहीं कहा। मैं यही समझा कि तुम एक आयत भूल गये हो उसको मुझसे पूछना चाहते हो। इस हदीष से ये निकला कि पेट भरकर खाना पीना

दुरुस्त है क्योंकि अबू हुरैरह (रज़ि.) ने पेट भरकर दूध पिया। ह़दीष़ की गहराई में जाकर मत़लब निकालना ग़ायते कमाल था जो अल्लाह तआला ने इमाम बुख़ारी (रह़.) को अ़ता फ़र्माया। अल्लाह तआला उन चमगादड़ों पर रह़म करे जो आफ़ताब आलमताब को न देख सकने की वजह से उसके वजूद ही को तस्लीम करने से क़ासिर हैं। **लबिअस मा कानू यस्नअ़ून**

बाब 2 : खाने के शुरू में बिस्मिल्लाह पढ़ना और दाएँ हाथ से खाना

٢- باب التَّسْمِيَةِ عَلَى الطَّعَامِ، وَالأَكْلِ بِالْيَمِينِ

5376. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान ष़ौरी ने ख़बर दी, कहा कि मुझे वलीद बिन कष़ीर ने ख़बर दी, उन्होंने वहब बिन कैसान से सुना, उन्होंने उ़मर बिन अबी सलमा (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैं बच्चा था और रसूलुल्लाह (ﷺ) की परवरिश में था और (खाते वक़्त) मेरा हाथ बर्तन में चारों त़रफ़ घूमा करता। इसलिये आपने मुझसे फ़र्माया, बेटे! बिस्मिल्लाह पढ़ लिया कर, दाहिने हाथ से खाया कर और बर्तन में वहाँ से खाया कर जो जगह तुझसे नज़दीक हो। चुनाँचे उसके बाद में हमेशा उसी हिदायत के मुत़ाबिक़ खाता रहा। (दीगर मक़ाम : 5378)

٥٣٧٦- حدَّثنا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ قَالَ الْوَلِيدُ بْنُ كَثِيرٍ: أَخْبَرَنِي أَنَّهُ سَمِعَ وَهْبَ بْنَ كَيْسَانَ أَنَّهُ سَمِعَ عُمَرَ بْنَ أَبِي سَلَمَةَ يَقُولُ : كُنْتُ غُلاَمًا فِي حَجْرِ رَسُولِ اللهِ ﷺ، وَكَانَتْ يَدِي تَطِيشُ فِي الصَّحْفَةِ، فَقَالَ لِي رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((يَا غُلاَمُ سَمِّ اللهَ، وَكُلْ بِيَمِينِكَ، وَكُلْ مِمَّا يَلِيكَ))، فَمَا زَالَتْ تِلْكَ طِعْمَتِي بَعْدُ.

[طرفه في : ٥٣٧٨].

तश्रीह़ : अगर शुरू में बिस्मिल्लाह भूल जाए तो जब याद आए उस वक़्त यूँ कहे। **बिस्मिल्लाहि अव्वलिही व आखिरिही** अगर बहुत से आदमी खाने पर हों तो पुकार कर बिस्मिल्लाह कहे ताकि और लोगों को भी याद आ जाए। शुरू में बिस्मिल्लाह कहना और दाएँ हाथ से खाना खाना वाजिब है। एक ह़दीष़ में है कि रसूले करीम (ﷺ) ने एक शख़्स को बाएँ हाथ से खाने से रोका। उसने कहा कि मैं दाहिने हाथ से नही खा सकता। आपने फ़र्माया अच्छा तो दाहिने हाथ से न खाएगा, फिर उसका दायाँ हाथ मफ़्लूज हो गया। उसके झूठ की कुदरत ने फ़ौरन सज़ा दी। **नऊ़ज़ुबिल्लाह मिन ग़ज़बिल्लाह**

बाब 3 : बर्तन में सामने से खाना और ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया (खाने से पहले) अल्लाह का नाम लिया करो और हर शख़्स अपने नज़दीक से खाए

٣- باب الأَكْلِ مِمَّا يَلِيهِ

وَقَالَ أَنَسٌ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((اذْكُرُوا اسْمَ اللهِ، وَلْيَأْكُلْ كُلُّ رَجُلٍ مِمَّا يَلِيهِ)).

5377. मुझसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह उवैसी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे मुह़म्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे मुह़म्मद बिन अ़म्र बिन ह़लह़ला दैली ने बयान किया, उनसे वहब बिन कैसान अबू नुऐम ने बयान किया, उनसे उ़मर बिन अबी सलमा (रज़ि.) ने, वो नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुत़ह्हरा उम्मे सलमा (रज़ि.) के (अबू सलमा से)

٥٣٧٧- حدَّثنا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ حَلْحَلَةَ الدِّيلِيِّ عَنْ وَهْبِ بْنِ كَيْسَانَ أَبِي نُعَيْمٍ عَنْ عُمَرَ بْنِ أَبِي سَلَمَةَ وَهُوَ ابْنُ أُمِّ سَلَمَةَ زَوْجِ

النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: أَكَلْتُ يَوْمًا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ طَعَامًا، فَجَعَلْتُ آكُلُ مِنْ نَوَاحِي الصَّحْفَةِ، فَقَالَ لِي رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((كُلْ مِمَّا يَلِيكَ)). [راجع: ٥٣٧٦]

बेटे हैं। बयान किया कि एक दिन मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ खाना खाया और बर्तन के चारों तरफ़ से खाने लगा तो आँहज़रत (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया कि अपने नज़दीक से खा। (राजेअ : 5376)

٥٣٧٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ وَهْبِ بْنِ كَيْسَانَ أَبِي نُعَيْمٍ: قَالَ أُتِيَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِطَعَامٍ، وَمَعَهُ رَبِيبُهُ عُمَرُ بْنُ أَبِي سَلَمَةَ، فَقَالَ: ((سَمِّ اللهَ، وَكُلْ مِمَّا يَلِيكَ)). [راجع: ٥٣٧٦]

5378. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उनसे अबू नुऐ़म वहब बिन कैसान ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में खाना लाया गया। आपके साथ आपके रबीब उ़मर बिन अबी सलमा (रज़ि.) भी थे। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि बिस्मिल्लाह पढ़ और अपने सामने से खा। (राजेअ : 5376)

٤- باب مَنْ تَتَبَّعَ حَوَالِي الْقَصْعَةِ مَعَ صَاحِبِهِ إِذَا لَمْ يَعْرِفْ مِنْهُ كَرَاهِيَةً

बाब 4 : जिसने अपने साथी के साथ खाते वक़्त प्याले में चारों तरफ़ हाथ बढ़ाए बशर्ते कि साथी की तरफ़ से मा'लूम हो कि उसे कराहियत नहीं होगी

٥٣٧٩- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ عَنْ مَالِكٍ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ يَقُولُ: إِنَّ خَيَّاطًا دَعَا رَسُولَ اللهِ ﷺ لِطَعَامٍ صَنَعَهُ. قَالَ : أَنَسٌ فَذَهَبْتُ مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ: فَرَأَيْتُهُ يَتَتَبَّعُ الدُّبَّاءَ مِنْ حَوَالِي الْقَصْعَةِ، قَالَ : فَلَمْ أَزَلْ أُحِبُّ الدُّبَّاءَ مِنْ يَوْمَئِذٍ. [راجع: ٢٠٩٢]

5379. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने, उनसे इस्हाक़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबी त़लहा ने, उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि एक दर्ज़ी ने रसूलुल्लाह (ﷺ) की खाने की दा'वत की जो उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) के लिये तैयार किया था। अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के साथ मैं भी गया, मैंने देखा कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) प्याला में चारों तरफ़ कद्दू तलाश करते थे (खाने के लिये) बयान किया कि उसी दिन से कद्दू मुझको भी बहुत भाने लगा। (राजेअ : 2092)

तश्रीह : क्योंकि आँहज़रत (ﷺ) को भाता था। ईमान की यही निशानी है कि जो चीज़ पैग़म्बर (ﷺ) पसंद फ़र्माते, उसे मुसलमान भी पसंद करे। इमाम अबू यूसुफ़ शागिर्द इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) से मन्क़ूल है कि एक शख़्स ने कहा आँहज़रत (ﷺ) कद्दू पसंद फ़र्माते थे मुझको तो पसंद नहीं है। इमाम अबू यूसुफ़ ने कहा कि गर्दन मारने का हथियार लाओ ये शख़्स मुर्तद हो गया है, इसकी गर्दन मार दी जाए जो मुर्तद की सज़ा है। यहाँ से मुक़ल्लिदों को सबक़ लेना चाहिये कि उनके इमाम यूसुफ़ ने खाने–पीने की सुन्नतों में भी ऐसा कलिमा कहना बाइ़षे कुफ़्र क़रार दिया तो इ़बादात की सुन्नतों में जैसे आमीन बिल जहर और रफ़उ़ल यदैन वग़ैरह सुनने नबवी हैं। अगर उनके बारे में कोई शख़्स ऐसा कलिमा कहे और सुन्नतों की तह़क़ीर करे तो वो किस क़द्र गुनाहगार होगा और शरई स्टेट में इसकी सज़ा हो सकती है। याद रखना चाहिये कि रसूले करीम (ﷺ) की एक छोटी सी सुन्नत की भी तह़क़ीर करना कुफ़्र है, फिर इन नामो–निहाद उ़लमा पर किस क़दर अफ़सोस है

जिन्होंने आ़म मुसलमानों को वरग़लाने के लिये सुन्नते नबवी पर अ़मल करने वालों को बुरे बुरे अल्क़ाब से मुलक़्क़ब कर दिया है। कोई अहले ह़दीष़ को ग़ैर मुक़ल्लिद कहता है, कोई लामज़हब कहता है, कोई वहाबी कहता है, कोई आमीन वालों से मुलक़्क़ब करता है। ये सारे अल्क़ाब बग़र्ज़े तौहीन पर लाने गुनाहे कबीरा की ह़द तक पहुँचाने वाले हैं। अल्लाह तआ़ला ऐसे लोगों को नेक हिदायत दे कि वो रसूले करीम (ﷺ) की सुन्नतों की तौहीन करके अपनी आख़िरत ख़राब करने से बाज़ आएँ। (आमीन!)

बाब 5 : खाने पीने में दाहिने हाथ का इस्ते'माल करना

٥- باب التَّيَمُّنِ فِي الأَكْلِ وَغَيْرِهِ

उ़मर बिन अबी सलमा (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया कि दाहिने हाथ से खा।

قال عمر بن أبي سلمة : قال لي النبيّ ﷺ: ((كُلْ بِيَمِينِكَ)).

5380. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, कहा हमको शुअ़बा ने ख़बर दी, उन्हें अश्अ़ष़ ने, उन्हें उनके वालिद ने, उन्हें मसरूक़ ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया, कि नबी करीम (ﷺ) जहाँ तक मुम्किन होता पाकी ह़ासिल करने में, जूता पहनने और कंघा करने में दाहिनी त़रफ़ से इब्तिदा करते। अश्अ़ष़ इस ह़दीष़ का रावी जब वासित़ शहर में था तो उसने इस ह़दीष़ में यूँ कहा था कि हर एक काम में हुज़ूर (ﷺ) दाहिनी त़रफ़ से इब्तिदा करते। (राजेअ़ : 168)

٥٣٨٠- حدَّثنا عَبْدَانُ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَشْعَثَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ كَانَ النَّبِيُّ ﷺ، يُحِبُّ التَّيَمُّنَ مَا اسْتَطَاعَ فِي طُهُورِهِ وَتَنَعُّلِهِ وَتَرَجُّلِهِ. وَكَانَ قَالَ بِوَاسِطٍ قَبْلَ هَذَا، فِي شَأْنِهِ كُلِّهِ.
[راجع: ١٦٨]

ह़दीष़ के तर्जुमा में लापरवाही : आजकल जो तराजिमे बुख़ारी शरीफ़ शाये हो रहे हैं उनमें कुछ ह़ज़रात तर्जुमा करते वक़्त इस क़दर खुली ग़लती करते हैं जिसे लापरवाही कहना चाहिये। चुनाँचे रिवायत में लफ़्ज़े वासित़ से शहर जहाँ रावी सकूनत रखते थे मुराद है मगर बरख़िलाफ़ तर्जुमा यूँ किया गया है कि (अश्अ़ष़ ने वासित़ के ह़वाले से इससे पहले बयान किया) (देखो तफ़्हीमुल बुख़ारी पारा 22 पेज नं. 85) गोया मुतर्जिम स़ाह़ब के नज़दीक वासित़ किसी रावी का नाम है ह़ालाँकि यहाँ शहरे वासित़ मुराद है जो बस़रा के क़रीब एक बस्ती है। शारेह़ीन लिखते हैं **व कान क़ाल बिवासित़ अय कान शुअबतु क़ाल बिबलदि वासित़ फ़िज़्ज़मनानिस्साबिक फ़ी शानि कुल्लिही अयज़ाद अ़लैहि हाज़िहिल्कलिमत क़ाल बअ़्ज़ुल्मशायख अल्क़ाइलु बिवासित हुव अशअ़ष़ वल्लाहु आलमु कज़ा फिल्किर्मानी** (ह़ाशिया बुख़ारी, पारा 22 पेज 810) या'नी शुअ़बा ने ये लफ़्ज़ कहे तो वो वासित़ शहर में थे कुछ लोगों ने उससे अश्अ़ष़ को मुराद लिया है, वल्लाहु आ़लम।

बाब 6 : पेट भरकर खाना खाना दुरुस्त है

٦- باب مَنْ أَكَلَ حَتَّى شَبِعَ

5381. हमसे इस्माईल बिन अ़लिया ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे इस्ह़ाक़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबी त़लह़ा ने, उन्होंने ने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि अबू त़लह़ा (रज़ि.) ने अपनी बीवी ह़ज़रत उम्मे सुलैम (रज़ि.) से कहा कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) की आवाज़ में ज़ुअ़फ़ व नक़ाहत को महसूस किया है और मा'लूम होता है कि आप फ़ाक़ा से हैं।

٥٣٨١- حدَّثنا إِسْمَاعِيلُ حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ يَقُولُ: قَالَ أَبُو طَلْحَةَ لأُمِّ سُلَيْمٍ : لَقَدْ سَمِعْتُ صَوْتَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ضَعِيفًا أَعْرِفُ فِيهِ الْجُوعَ، فَهَلْ عِنْدَكِ مِنْ شَيْءٍ؟

क्या तुम्हारे पास कोई चीज़ है? चुनाँचे उन्होंने जौ की चंद रोटियाँ निकालीं, फिर अपना दुपट्टा निकाला और उसके एक हिस्से में रोटियों को लपेटकर मेरे (या'नी अनस रज़ि. के) कपड़े के नीचे छुपा दिया और एक हिस्सा मुझे चादर की तरह ओढ़ा दिया, फिर मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में भेजा। बयान किया कि मैं जब हुज़ूर अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आपको मस्जिद में पाया और आपके साथ सहाबा थे। मैं उन सब हज़रात के सामने जाकर खड़ा हो गया। आँहज़रत (ﷺ) ने दरयाफ़्त किया, ऐ अनस! तुम्हें अबू तलहा ने भेजा होगा। मैंने अर्ज़ किया, जी हाँ। उसके बाद आँहज़रत (ﷺ) ने अपने सब साथियों से फ़र्माया कि खड़े हो जाओ। चुनाँचे आप रवाना हुए। मैं सबके आगे आगे चलता रहा। जब मैं अबू तलहा (रज़ि.) के पास वापस पहुँचा तो उन्होंने कहा उम्मे सुलैम! हुज़ूर अकरम (ﷺ) सहाबा को साथ लेकर तशरीफ़ लाए हैं, हालाँकि हमारे पास खाने का इतना सामान नहीं जो सबको काफ़ी हो सके। उम्मे सुलैम (रज़ि.) इस पर बोलीं कि अल्लाह और उसके रसूल ख़ूब जानते हैं। बयान किया कि फिर अबू तलहा (रज़ि.) (इस्तिक़्बाल के लिये) निकले और आँहज़रत (ﷺ) से मुलाक़ात की। उसके बाद अबू तलहा (रज़ि.) और हुज़ूरे अकरम (ﷺ) घर की तरफ़ मुतवज्जह हुए और घर में दाख़िल हो गये। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया उम्मे सुलैम! जो कुछ तुम्हारे पास है वो यहाँ लाओ। उम्मे सुलैम (रज़ि.) रोटी लाईं, आँहज़रत (ﷺ) ने हुक्म दिया और उसका चूरा कर लिया गया। उम्मे सुलैम (रज़ि.) ने अपने घी के डब्बे में से घी निचोड़कर उसका मलीदा बना लिया, फिर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने दुआ की जो कुछ अल्लाह तआला ने आपसे दुआ करानी चाही, उसके बाद फ़र्माया अब दस दस आदमी को खाने के लिये बुला लो। चुनाँचे दस सहाबा को बुलाया। सबने खाया और शिकमसैर होकर बाहर चले गये। फिर आपने फ़र्माया कि दस को और बुला लो, उन्हें बुलाया गया और सबने शिकमसैर होकर खाया और बाहर चले गये। फिर आपने फ़र्माया कि दस सहाबा को और बुला लो, फिर दस सहाबा को बुलाया गया और उन लोगों ने भी ख़ूब पेट भरकर खाया और बाहर तशरीफ़ ले गये। उसके बाद फिर और दस सहाबा को

فَأَخْرَجَتْ أَقْرَاصًا مِنْ شَعِيرٍ، ثُمَّ أَخْرَجَتْ خِمَارًا لَهَا فَلَفَّتِ الْخُبْزَ بِبَعْضِهِ، ثُمَّ دَسَّتْهُ تَحْتَ ثَوْبِي وَرَدَّتْنِي بِبَعْضِهِ، ثُمَّ أَرْسَلَتْنِي إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: فَذَهَبْتُ بِهِ فَوَجَدْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْمَسْجِدِ وَمَعَهُ النَّاسُ، فَقُمْتُ عَلَيْهِمْ، فَقَالَ لِي رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَرْسَلَكَ أَبُو طَلْحَةَ؟)) فَقُلْتُ: نَعَمْ. قَالَ ((بِطَعَامٍ؟)) قَالَ: فَقُلْتُ: نَعَمْ. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لِمَنْ مَعَهُ: ((قُومُوا)). فَانْطَلَقَ وَانْطَلَقْتُ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ حَتَّى جِئْتُ أَبَا طَلْحَةَ، فَقَالَ أَبُو طَلْحَةَ: يَا أُمَّ سُلَيْمٍ قَدْ جَاءَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِالنَّاسِ، وَلَيْسَ عِنْدَنَا مِنَ الطَّعَامِ مَا نُطْعِمُهُمْ. فَقَالَتْ: اللهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ. قَالَ: فَانْطَلَقَ أَبُو طَلْحَةَ حَتَّى لَقِيَ رَسُولَ اللهِ ﷺ، فَأَقْبَلَ أَبُو طَلْحَةَ وَرَسُولُ اللهِ ﷺ حَتَّى دَخَلاَ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((هَلُمِّي يَا أُمَّ سُلَيْمٍ مَا عِنْدَكِ؟)). فَأَتَتْ بِذَلِكَ الْخُبْزِ فَأَمَرَ بِهِ فَفُتَّ وَعَصَرَتْ عَلَيْهِ أُمُّ سُلَيْمٍ عُكَّةً لَهَا فَأَدَمَتْهُ ثُمَّ قَالَ فِيهِ رَسُولُ اللهِ ﷺ مَا شَاءَ اللهُ أَنْ يَقُولَ. ثُمَّ قَالَ: ((ائْذَنْ لِعَشَرَةٍ)). فَأَذِنَ لَهُمْ فَأَكَلُوا حَتَّى شَبِعُوا ثُمَّ خَرَجُوا ثُمَّ قَالَ: ((ائْذَنْ لِعَشَرَةٍ)). فَأَذِنَ لَهُمْ فَأَكَلُوا حَتَّى شَبِعُوا ثُمَّ خَرَجُوا ثُمَّ قَالَ: ((ائْذَنْ لِعَشَرَةٍ)) فَأَذِنَ لَهُمْ فَأَكَلُوا حَتَّى شَبِعُوا ثُمَّ خَرَجُوا. ثُمَّ

أَذِنَ لِعَشَرَةٍ فَأَكَلَ الْقَوْمُ كُلُّهُمْ وَشَبِعُوا وَالْقَوْمُ ثَمَانُونَ رَجُلاً.

बुलाया गया इस तरह तमाम सहाबा ने पेट भरकर खाया। उस वक़्त अस्सी (80) सहाबा की जमाअत वहाँ मौजूद थी।

तशरीह : हज़रत उम्मे सुलैम (रज़ि.) समझ गई थीं कि आँहज़रत (ﷺ) जो इतने लोगों को साथ ला रहे हैं तो खाने में ज़रूर आपकी दुआ से बरकत होगी। जब आँहज़रत (ﷺ) घर पर तशरीफ़ लाए तो हज़रत अबू तलहा (रज़ि.) ने चुप से कहा कि या रसूलल्लाह! घर में इतने आदमियों के खाने का इंतिज़ाम नहीं है। आपने फ़र्माया कि चलो अंदर घर में चलो अल्लाह बकरत करेगा। चुनाँचे यही हुआ, हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) इस हदीष़ को यहाँ इसलिये लाए कि उसमें सबका शिकमसैर होकर खाना मज़्कूर है।

٥٣٨٢- حَدَّثَنَا مُوسَى حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: وَحَدَّثَ أَبُو عُثْمَانَ أَيْضًا عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ ثَلاَثِينَ وَمِائَةً فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((هَلْ مَعَ أَحَدٍ مِنْكُمْ طَعَامٌ؟)) فَإِذَا مَعَ رَجُلٍ صَاعٌ مِنْ طَعَامٍ أَوْ نَحْوُهُ. فَعُجِنَ، ثُمَّ جَاءَ رَجُلٌ مُشْرِكٌ مُشْعَانٌّ طَوِيلٌ بِغَنَمٍ يَسُوقُهَا، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَبَيْعٌ أَمْ عَطِيَّةٌ؟)) أَوْ قَالَ ((هِبَةٌ)) قَالَ : لاَ بَلْ بَيْعٌ قَالَ : فَاشْتَرَى مِنْهُ شَاةً. فَصُنِعَتْ فَأَمَرَ نَبِيُّ اللهِ ﷺ بِسَوَادِ الْبَطْنِ يُشْوَى. وَايْمُ اللهِ مَا مِنَ الثَّلاَثِينَ وَمِائَةٍ إِلاَّ قَدْ حَزَّ لَهُ حُزَّةً مِنْ سَوَادِ بَطْنِهَا، إِنْ كَانَ شَاهِدًا أَعْطَاهَا إِيَّاهُ، وَإِنْ كَانَ غَائِبًا خَبَأَهَا لَهُ، ثُمَّ جَعَلَ فِيهَا قَصْعَتَيْنِ، فَأَكَلْنَا أَجْمَعُونَ وَشَبِعْنَا، وَفَضَلَ فِي الْقَصْعَتَيْنِ فَحَمَلْتُهُ عَلَى الْبَعِيرِ. أَوْ كَمَا قَالَ. [راجع: ٢٢١٦]

5382. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे मुअतमिर बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि अबू उ़ष्मान नह्दी ने भी बयान किया और उनसे हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन अबीबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि हम एक सौ तीस आदमी नबी करीम (ﷺ) के साथ थे। आँहज़रत (ﷺ) ने दरयाफ़्त किया कि तुममें से किसी के पास खाना है। एक स़ाहब ने अपने पास से एक स़ाअ़ के क़रीब आटा निकाला, उसे गूँध लिया गया, फिर एक मुश्रिक लम्बा तड़ंगा अपनी बकरियाँ हाँकता हुआ उधर आ गया। आँहज़रत (ﷺ) ने उससे पूछा कि ये बेचने की हैं या अ़तिया हैं या आँहुज़ूर (ﷺ) ने (अ़तिया के बजाय) हिबा फ़र्माया। उस शख़्स ने कहा कि नहीं बल्कि बेचने की हैं। चुनाँचे आँहज़रत (ﷺ) ने उससे एक बकरी ख़रीदी फिर वो ज़िब्ह की गई और आपने उसकी कलेजी भूने जाने का हुक्म दिया और क़सम अल्लाह की एक सौ तीस लोगों की जमाअ़त में कोई शख़्स ऐसा नहीं रहा जिसे आँहज़रत (ﷺ) ने उस बकरी की कलेजी का एक एक टुकड़ा काटकर न दिया हो मगर वो मौजूद था तो उसे वहीं दे दिया और अगर वो मौजूद नहीं था तो उसका हिस्सा महफ़ूज़ रखा, फिर उस बकरी के गोश्त को पकाकर दो बड़े कूँडों में रखा और हम सबने उनमें से पेट भरकर खाया फिर भी दोनों कूँडों में खाना बच गया तो मैंने उसे ऊँट पर लाद लिया या अ़ब्दुर्रहमान रावी ने ऐसा ही कोई कलिमा कहा। (राजेअ : 2216)

ये रावी को शक है, ये हदीष़ बेअ़ और हिबा के बयान में भी गुज़र चुकी है।

٥٣٨٣- حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ حَدَّثَنَا مَنْصُورٌ عَنْ أُمِّهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ

5383. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम क़स़्स़ाब ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब बिन ख़ालिद ने बयान किया, हमसे मंसूर बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे उनकी वालिदा

الله عنها تُوُفِّيَ النَّبِيُّ ﷺ حِينَ شَبِعْنَا مِنَ الأَسْوَدَيْنِ التَّمْرِ وَالْمَاءِ.

(सफ़िया बिन्ते शैबा) ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) की वफ़ात हुई, उन दिनों हम पानी और खजूर से सैर हो जाने लगे थे।

तश्रीह : मतलब ये है कि शुरू ज़माने में तो ग़िज़ा की ऐसी क़िल्लत थी कि खजूर भी पेट भरकर न मिलती, फिर अल्लाह तआला ने ख़ैबर फ़तह करा दिया और आँहज़रत (ﷺ) की वफ़ात उस वक़्त हुई कि हमको खजूर बाइफ़रात पेट भरकर मिलने लगी थी।

٧- باب

﴿لَيْسَ عَلَى الأَعْمَى حَرَجٌ، وَلاَ عَلَى الأَعْرَجِ حَرَجٌ وَلاَ عَلَى الْمَرِيضِ حَرَجٌ﴾ الآيَةَ إِلَى قَوْلِهِ: ﴿لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ﴾

बाब 7 : अल्लाह तआला का सूरह नूर में फ़र्माना कि अंधे पर कोई हर्ज नहीं और न लंगड़े पर कोई हर्ज है और न मरीज़ पर कोई हर्ज..आख़िर आयत लअल्लकुम तअक़िलून तक

٥٣٨٤- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ: سَمِعْتُ بُشَيْرَ بْنَ يَسَارٍ يَقُولُ: حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ النُّعْمَانِ قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى خَيْبَرَ، فَلَمَّا كُنَّا بِالصَّهْبَاءِ قَالَ يَحْيَى وَهِيَ مِنْ خَيْبَرَ عَلَى رَوْحَةٍ دَعَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِطَعَامٍ، فَمَا أُتِيَ إِلاَّ بِسَوِيقٍ، فَلُكْنَاهُ فَأَكَلْنَا مِنْهُ، ثُمَّ دَعَا بِمَاءٍ فَمَضْمَضَ وَمَضْمَضْنَا، فَصَلَّى بِنَا الْمَغْرِبَ وَلَمْ يَتَوَضَّأْ قَالَ سُفْيَانُ: سَمِعْتُهُ مِنْهُ عَوْدًا وَبَدْءًا. [راجع: ٢٠٩]

5384. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह बिन मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया कि यह्या बिन सईद अंसारी ने बयान किया, उन्होंने बशीर बिन यसार से सुना, कहा कि हमसे सुवैद बिन नोअमान (रज़ि.) ने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ ख़ैबर की तरफ़ (सन 7 हिजरी में) निकले जब हम मक़ामे सहबाअ पर पहुँचे। यह्या ने बयान किया कि सहबाअ ख़ैबर से दो पहर (प्रहर/घड़ी) की राह पर है तो उस वक़्त हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने खाना तलब किया लेकिन सत्तू के सिवा और कुछ नहीं लाई गई, फिर हमने उसी को सूखा फाँक लिया, फिर आँहज़रत (ﷺ) ने पानी तलब किया और कुल्ली की, हमने भी कुल्ली की। उसके बाद आपने हमें मग़रिब की नमाज़ पढ़ाई और वुज़ू नहीं किया (मग़रिब के लिये क्योंकि पहले से बा वुज़ू थे) सुफ़यान ने बयान किया कि मैंने यह्या से इस हदीष में यूँ सुना कि आपने न सत्तू खाते वक़्त वुज़ू किया न खाने से फ़ारिग़ होकर। (राजेअ : 209)

ऐसे मवाक़ेअ पर जहाँ भी किसी जगह लफ़्ज़ वुज़ू आया है वहाँ अकष़र जगह वुज़ू लग़्वी या'नी कुल्ली करना मुराद है।

٨- باب الْخُبْزِ الْمُرَقَّقِ، وَالأَكْلِ عَلَى الْخِوَانِ وَالسُّفْرَةِ

बाब 8 : (मेदा की बारीक) चपातियाँ खाना और ख़ुवान (दबीज़) और दस्तरख़्वान पर खाना

٥٣٨٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِنَانٍ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ قَتَادَةَ قَالَ: كُنَّا عِنْدَ أَنَسٍ وَعِنْدَهُ

5385. हमसे मुहम्मद बिन सिनान ने बयान किया, उनसे हम्माम ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, कहा कि हम हज़रत अनस (रज़ि.) की ख़िदमत में बैठे हुए थे, उस वक़्त उनका

خَبَّازٌ لَهُ فَقَالَ مَا أَكَلَ النَّبِيُّ ﷺ خُبْزًا مُرَقَّقًا وَلاَ شَاةً مَسْمُوطَةً، حَتَّى لَقِيَ اللهَ.

[طرفاه في : ٥٤٢١، ٦٣٥٧].

रोटी पकाने वाला ख़ादिम भी मौजूद था। उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने कभी चपाती (मैदा की रोटी) नहीं खाई और न सारी दम पुख़्ता बकरी खाई यहाँ तक कि आप अल्लाह से जा मिले। (दीगर मक़ाम : 5421, 6357)

तश्रीह : हदीष़ में लफ़्ज़ शातन मस्मूततन है या'नी वो बकरी जिसके बाल गर्म पानी से दूर किये जाएँ, फिर चमड़े समेत भून ली जाए ये छोटे बच्चे के साथ करते हैं चूँकि उसका गोश्त नर्म होता है ये दुनियादार मग़रूर लोगों का काम है।

٥٣٨٦- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ هِشَامٍ قَالَ : حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ يُونُسَ قَالَ عَلِيٌّ : هُوَ الإِسْكَافُ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : مَا عَلِمْتُ النَّبِيَّ ﷺ أَكَلَ عَلَى سُكُرُّجَةٍ قَطُّ، وَلاَ خُبِزَ لَهُ مُرَقَّقٌ قَطُّ وَلاَ أَكَلَ عَلَى خِوَانٍ قَطُّ قِيلَ لِقَتَادَةَ: فَعَلَى مَا كَانُوا يَأْكُلُونَ؟ قَالَ: عَلَى السُّفَرِ.

[طرفاه في: ٥٤١٥، ٤٦٥٠].

5386. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे मुआज़ बिन हिशाम ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उनसे यूनुस ने, अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह अल मदीनी ने कहा कि ये यूनुस इस्काफ़ हैं (न कि यूनुस बिन उ़बैद बस़री) उनसे क़तादा ने और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं नहीं जानता कि नबी करीम (ﷺ) ने कभी तश्तरी रखकर (एक वक़्त मुख़्तलिफ़ क़िस्म का) खाना खाया हो और न कभी आपने पतली रोटियाँ (चपातियाँ) खाईं और न कभी आपने मेज़ पर खाया। क़तादा से पूछा गया कि फिर किस चीज़ पर आप खाते थे? कहा कि आप सुफ़रा (आ़म दस्तरख़्वान) पर खाना खाया करते थे। (दीगर मक़ाम : 4650, 5415)

मेज़ पर खाना दुरुस्त है मगर त़रीक़-ए-सुन्नत के ख़िलाफ़ है, इस्लाम में सादगी ही मेह़बूब है।

٥٣٨٧- حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي مَرْيَمَ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ أَخْبَرَنَا حُمَيْدٌ أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسًا يَقُولُ: قَامَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَبْنِي بِصَفِيَّةَ، فَدَعَوْتُ الْمُسْلِمِينَ إِلَى وَلِيمَتِهِ أَمَرَ بِالأَنْطَاعِ فَبُسِطَتْ، فَأُلْقِيَ عَلَيْهَا التَّمْرُ وَالأَقِطُ وَالسَّمْنُ، وَقَالَ عَمْرٌو : عَنْ أَنَسٍ بَنَى بِهَا النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، ثُمَّ صَنَعَ حَيْسًا فِي نِطَعٍ.

[راجع: ٣٧١]

5387. हमसे सईद बिन मरयम ने बयान किया, कहा हमको मुहम्मद बिन जा'फ़र ने ख़बर दी, कहा मुझको हुमैद ने ख़बर दी और उन्होंने ह़ज़रत अनस (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने ह़ज़रत स़फ़िया (रज़ि.) से निकाह के बाद उनके साथ रास्ते में क़याम किया और मैंने मुसलमानों को आपके वलीमे की दा'वत में बुलाया। आँह़ज़रत (ﷺ) ने दस्तरख़्वान बिछाने का हुक्म दिया और वो बिछाया गया, फिर आपने उस पर खजूर, पनीर और घी डाल दिया और अ़म्र ने कहा, उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने ह़ज़रत स़फ़िया (रज़ि.) के साथ सुह़बत की, फिर एक चमड़े के दस्तरख़्वान पर (खजूर, घी, पनीर मिलाकर बना हुआ) ह़लवा रखा। (राजेअ़ : 371)

ये अल्लाह के रसूल (ﷺ) का वलीमा था।

٥٣٨٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ أَخْبَرَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ أَبِيهِ وَ عَنْ وَهْبِ بْنِ

5388. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमको अबू मुआविया ने ख़बर दी, कहा हमसे हिशाम बिन

كَيْسَانَ قَالَ : كَانَ أَهْلُ الشَّامِ يُعَيِّرُونَ ابْنَ الزُّبَيْرِ يَقُولُونَ : يَا ابْنَ ذَاتِ النِّطَاقَيْنِ، فَقَالَتْ لَهُ أَسْمَاءُ : يَا بُنَيَّ إِنَّهُمْ يُعَيِّرُونَكَ بِالنِّطَاقَيْنِ هَلْ تَدْرِي مَا كَانَ النِّطَاقَانِ؟ إِنَّمَا كَانَ نِطَاقِي شَقَقْتُهُ نِصْفَيْنِ فَأَوْكَيْتُ قِرْبَةَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِأَحَدِهِمَا ، وَجَعَلْتُ فِي سُفْرَتِهِ آخَرَ. قَالَ فَكَانَ أَهْلُ الشَّامِ إِذَا عَيَّرُوهُ بِالنِّطَاقَيْنِ يَقُولُ ايها: وَالإِلَهِ تِلْكَ شَكَاةٌ ظَاهِرٌ عَنْكَ عَارُهَا. [راجع: ٢٩٩٧]

उ़र्वा ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और वहब बिन कैसान ने बयान किया कि अहले शाम (ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ के फ़ौजी) शाम के लोग ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) को आ़र दिलाने के लिये कहने लगे या इब्ने ज़ातुन नात़क़ैन (ऐ दो कमरबंद वाली के बेटे और उनकी वालिदा) ह़ज़रत अस्मा (रज़ि.) ने कहा। ऐ बेटे! ये तुम्हें दो कमरबंद वाली की आ़र दिलाते हैं, तुम्हें मा'लूम है वो कमरबंद क्या थे? वो मेरा कमरबंद था जिसके मैंने दो टुकड़े कर दिये थे और एक टुकड़े से नबी करीम (ﷺ) के बर्तन का मुँह बाँधा था और दूसरे से दस्तरख़्वान बनाया (उसमें तौशा लपेटा) वहब ने बयान किया कि फिर जब ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) को अहले शाम दो कमरबंद वाली की आ़र दिलाते थे, तो वो कहते हाँ। अल्लाह की क़सम ये बेशक सच है और वो ये मिस्रा पढ़ते तिल्का शकातुन ज़ाहिर मिन्क आ़रहा ये तो वैसा त़अ़ना है जिसमें कुछ ऐ़ब नहीं है। (राजेअ़ : 2997)

तश्रीह : ये अबू ज़ुवैब शायर के क़सीदे का मिस्रा है। उसका पहला मिस्रा ये है **व गय्यरनिल्वाशिऊन इन्नी उहिब्बुहा** ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने ये ह़दीष़ लाकर ष़ाबित किया कि दस्तरख़्वान कपड़े का भी हो सकता है। ह़ज़रत अस्मा (रज़ि.) ने शबे हिजरत में अपने कमरबंद के दो टुकड़े करके एक से आपके पानी का मशकीज़ा बाँधा और दूसरे से आपका तौशा लपेटा। उस दिन से उनका लक़ब ज़ातुन नात़क़ैन (दो कमरबंद वाली) हो गया था।

٥٣٨٩- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ أَبِي بِشْرٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ أُمَّ حُفَيْدٍ بِنْتَ الْحَارِثِ بْنِ حَزْنٍ خَالَةَ ابْنِ عَبَّاسٍ أَهْدَتْ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ، سَمْنًا وَأَقِطًا وَأَضُبًّا، فَدَعَا بِهِنَّ فَأُكِلْنَ عَلَى مَائِدَتِهِ، وَتَرَكَهُنَّ النَّبِيُّ ﷺ كَالْمُتَقَذِّرِ لَهُنَّ، وَلَوْ كُنَّ حَرَامًا مَا أُكِلْنَ عَلَى مَائِدَةِ النَّبِيِّ ﷺ وَلاَ أَمَرَ بِأَكْلِهِنَّ. [راجع: ٢٥٧٥]

5389. हमसे अबुन नोअ़मान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, उनसे अबू बिश्र ने, उनसे सईद बिन ज़ुबैर ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की ख़ाला उम्मे हुफ़ैद बिन्ते ह़ारिष़ बिन हुज़्न (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) को घी, पनीर और साह्ना हदिया के त़ौर पर भेजी। आँह़ज़रत (ﷺ) ने औ़रतों को बुलाया और उन्होंने आपके दस्तरख़्वान पर साहना को खाया लेकिन आपने उसे हाथ भी नहीं लगाया जैसे आप उसे नापसंद करते हैं लेकिन अगर साहना ह़राम होता तो आपके दस्तरख़्वान पर खाया न जाता और न आप उन्हें खाने के लिये फ़र्माते। (राजेअ़ : 2575)

तश्रीह : बल्कि मना फ़र्माते। उससे ह़नफ़िया का रद्द होता है जो साहना को ह़राम जानते हैं। पूरा बयान आगे आएगा, इंशाअल्लाह। यहाँ ये ह़दीष़ इसलिये लाए कि उसमें दस्तरख़्वान पर खाने का ज़िक्र है।

بَابُ السَّوِيقِ -٩

बाब 9 : सत्तू खाने के बयान में

5390. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद ने बयान किया, उनसे यह्या बिन सईद अंसारी ने, उनसे बशीर बिन यसार ने, उन्हें सुवैद बिन नोअमान (रज़ि.) ने ख़बर दी कि वो नबी करीम (ﷺ) के साथ मक़ामे सहबाअ में थे। वो ख़ैबर से एक मंज़िल पर है। नमाज़ का वक़्त क़रीब था तो आँहज़रत (ﷺ) ने खाना तलब किया लेकिन सत्तू के सिवा और कोई चीज़ नहीं लाई गई। आख़िर आँहज़रत (ﷺ) ने उसको फाँक लिया और हमने भी फाँका फिर आपने पानी तलब फ़र्माया और कुल्ली की। उसके बाद आपने नमाज़ पढ़ाई और हमने भी आपके साथ नमाज़ पढ़ी और आपने (उस नमाज़ के लिये नया) वुज़ू नहीं किया। (राजेअ : 209)

٥٣٩٠- حدَّثنا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ يَحْيَى عَنْ بُشَيْرِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ سُوَيْدِ بْنِ النُّعْمَانِ أَنَّهُ أَخْبَرَهُ أَنَّهُمْ كَانُوا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالصَّهْبَاءِ وَهِيَ عَلَى رَوْحَةٍ مِنْ خَيْبَرَ فَحَضَرَتِ الصَّلاَةُ، فَدَعَا بِطَعَامٍ، فَلَمْ يَجِدْهُ إِلاَّ سَوِيقًا، فَلاَكَ مِنْهُ، فَلُكْنَا مَعَهُ، ثُمَّ دَعَا بِمَاءٍ فَمَضْمَضَ ثُمَّ صَلَّى وَصَلَّيْنَا، وَلَمْ يَتَوَضَّأْ. [راجع: ٢٠٩]

बाब 10 : आँहज़रत (ﷺ) कोई खाना (जो पहचाना न जाता) न खाते जब तक लोग बतला देते कि ये फ़लाँ खाना है और आपको जब तक मा'लूम न हो जाता न खाते थे

١٠- باب مَا كَانَ النَّبِيُّ ﷺ لاَ يَأْكُلُ حَتَّى يُسَمَّى لَهُ فَيَعْلَمَ مَا هُوَ

5391. हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल अबुल हसन ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह बिन यअला ने ख़बर दी, कहा हमको यूनुस ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया कि मुझे अबू उमामा बिन सहल बिन हनीफ़ अंसारी ने ख़बर दी, उन्हें हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने ख़बर दी और उन्हें हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) ने जो सैफ़ुल्लाह (अल्लाह की तलवार) के लक़ब से मशहूर हैं, ख़बर दी कि वो रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ उम्मुल मोमिनीन हज़रत मैमूना (रज़ि.) के घर में दाख़िल हुए। उम्मुल मोमिनीन उनकी और इब्ने अब्बास (रज़ि.) की ख़ाला हैं। उनके यहाँ भुना हुआ साहना मौजूद था जो उनकी बहन हफ़ीदा बिन्तुल हारिष़ (रज़ि.) नजद से लाई थीं। उन्होंने वो भुना हुआ साहना हुज़ूर अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में पेश किया। ऐसा बहुत कम होता था कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) किसी खाने के लिये उस वक़्त तक हाथ बढ़ाएँ जब तक आपको उसके बारे में बता न दिया जाए कि ये फ़लाँ खाना है लेकिन उस दिन आपने भुने हुए साहने के गोश्त की तरफ़ हाथ बढ़ाया। इतने में वहाँ मौजूद औरतों में से एक औरत ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) को बता क्यूँ नहीं देतीं कि उस वक़्त आपके सामने जो तुमने पेश किया है वो साहना है, या

٥٣٩١- حدَّثنا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ أَبُو الْحَسَنِ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو أُمَامَةَ بْنُ سَهْلِ بْنِ حُنَيْفٍ الأَنْصَارِيُّ أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ خَالِدَ بْنَ الْوَلِيدِ الَّذِي يُقَالُ لَهُ سَيْفُ اللهِ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ دَخَلَ مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ عَلَى مَيْمُونَةَ وَهْيَ خَالَتُهُ وَخَالَةُ ابْنِ عَبَّاسٍ فَوَجَدَ عِنْدَهَا ضَبًّا مَحْنُوذًا قَدِمَتْ بِهِ أُخْتُهَا حُفَيْدَةُ بِنْتُ الْحَارِثِ مِنْ نَجْدٍ، فَقَدَّمَتِ الضَّبَّ لِرَسُولِ اللهِ ﷺ، وَكَانَ قَلَّمَا يُقَدِّمُ يَدَهُ لِطَعَامٍ حَتَّى يُحَدَّثَ بِهِ وَيُسَمَّى لَهُ، فَأَهْوَى رَسُولُ اللهِ ﷺ يَدَهُ إِلَى الضَّبِّ، فَقَالَتِ امْرَأَةٌ مِنَ النِّسْوَةِ الْحُضُورِ: أَخْبِرْنَ رَسُولَ اللهِ ﷺ مَا قَدَّمْتُنَّ

रसूलल्लाह! (ये सुनकर) आपने अपना हाथ साहना से हटा लिया। ह़ज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) बोले कि या रसूलल्लाह! क्या साहना ह़राम है? आपने फ़र्माया कि नहीं लेकिन ये मेरे मुल्क में चूँकि नहीं पाया जाता, इसलिये त़बियत पसंद नहीं करती। ह़ज़रत ख़ालिद (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर मैंने उसे अपनी त़रफ़ खींच लिया और उसे खाया। उस वक़्त हुज़ूरे अकरम (ﷺ) मुझे देख रहे थे। (दीगर मक़ाम: 5400, 5537)

لَهُ، هُوَ الضَّبُّ يَا رَسُولَ اللهِ، فَرَفَعَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَدَهُ عَنِ الضَّبِّ، فَقَالَ خَالِدُ بْنُ الْوَلِيدِ: أَحَرَامٌ الضَّبُّ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ : ((لاَ، وَلَكِنْ لَمْ يَكُنْ بِأَرْضِ قَوْمِي، فَأَجِدُنِي أَعَافُهُ)). قَالَ خَالِدٌ : فَاجْتَرَرْتُهُ فَأَكَلْتُهُ وَرَسُولُ اللهِ ﷺ يَنْظُرُ إِلَيَّ. [طرفاه في : ٥٤٠٠، ٥٥٣٧].

तश्रीह़ : इससे स़ाफ़ साहना की ह़िल्लत निकलती है। क़स्त़लानी ने कहा अइम्मा अरबआ़ उसकी ह़िल्लत के क़ाइल हैं और त़ह़ावी ने जो ह़नफ़ी हैं, उसकी ह़िल्लत को तरजीह़ दी है मगर बाद वाले ह़नफ़िया जैसे स़ाह़िबे हिदाया ने उसको मकरूह लिखा है और अबू दाऊद की ह़दीष़ से दलील ली है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने जुब्ब खाने से मना किया मगर ये ह़दीष़ ज़ईफ़ है जो स़ह़ीह़ ह़दीष़ के मुक़ाबले पर क़ाबिले इस्तिदलाल नहीं है। बयान में ह़ज़रत ख़ालिद (रज़ि.) की वालिदा लुबाबा सुग़रा थीं और ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की वालिदा लुबाबा कुबरा थीं। ये दोनों ह़ारिष़ की बेटी हैं और ह़ज़रत मैमूना (रज़ि.) की बहन हैं।

बाब 11 : एक आदमी का पूरा खाना दो के लिये काफ़ी हो सकता है

١١- باب طَعَامُ الْوَاحِدِ يَكْفِي الاِثْنَيْنِ

5392. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी ने कहा कि हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अअ़रज ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया दो आदमियों का खाना तीन के लिये काफ़ी है और तीन का चार के लिये काफ़ी है।

٥٣٩٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ. أَخْبَرَنَا ح. مَالِكٌ وَحَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((طَعَامُ الاِثْنَيْنِ كَافِي الثَّلاَثَةِ، وَطَعَامُ الثَّلاَثَةِ كَافِي الأَرْبَعَةِ)).

तश्रीह़ : या'नी दो के खाने पर तीन आदमी और तीन के खाने पर चार आदमी क़नाअ़त कर सकते हैं। बज़ाहिर ह़दीष़ बाब का तर्जुमा के मुत़ाबिक़ नहीं है मगर ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने अपनी आ़दत के मुवाफ़िक़ ह़दीष़ के दूसरे त़रीक़ की त़रफ़ इशारा किया है जिसे इमाम मुस्लिम ने निकाला है। उसमे साफ़ यूँ है कि एक आदमी का खाना दो को किफ़ायत करता है।

बाब 12 : मोमिन एक आंत में खाता है (और काफ़िर सात आंतों में) इस बाब में एक ह़दीषे मर्फ़ूअ ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से मरवी है

١٢- باب الْمُؤْمِنُ يَأْكُلُ فِي مِعًى وَاحِدٍ.

فِيهِ : أَبُو هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ

5393. हमसे मुह़म्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे

٥٣٩٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا

अ़ब्दुस्समद बिन अ़ब्दुल वारिष़ ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा बिन ह़ज्जाज ने बयान किया, उनसे वाक़िद बिन मुह़म्मद ने, उनसे नाफ़ेअ़ ने बयान किया कि इब्ने उ़मर (रज़ि.) उस वक़्त तक खाना नहीं खाते थे, जब तक उनके साथ खाने के लिये कोई मिस्कीन न लाया जाता। एक मर्तबा मैं उनके साथ खाने के लिये एक शख़्स को लाया कि उसने बहुत ज़्यादा खाना खाया। बाद में ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि आइन्दा उस शख़्स को मेरे साथ खाने के लिये न लाना। मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना है कि मोमिन एक आंत में खाता और काफ़िर सातो आंतें भर लेता है। (दीगर मक़ाम : 5394, 5395)

عَبْدُ الصَّمَدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ وَاقِدِ بْنِ مُحَمَّدٍ عَنْ نَافِعٍ قَالَ : كَانَ ابْنُ عُمَرَ لاَ يَأْكُلُ حَتَّى يُؤْتَى بِمِسْكِينٍ يَأْكُلُ مَعَهُ، فَأَدْخَلْتُ رَجُلاً يَأْكُلُ مَعَهُ، فَأَكَلَ كَثِيرًا. فَقَالَ: يَا نَافِعُ لاَ تُدْخِلْ هَذَا عَلَيَّ، سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((الْمُؤْمِنُ يَأْكُلُ فِي مِعًي وَاحِدٍ، وَالْكَافِرُ يَأْكُلُ فِي سَبْعَةِ أَمْعَاءٍ)).

[طرفاه في : ٥٣٩٤، ٥٣٩٥].

अल्लाह तआ़ला हर मुसलमान को ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) के उस्वा पर अ़मल करने की सआ़दत अ़त़ा करे कि खाने के वक़्त किसी न किसी मिस्कीन को याद कर लिया करें।

ईं सआ़दत बज़ोरे बाज़ू नैस्त — ताना बख़्शद ख़ुदाए बख़्शिंदा

5394. हमसे मुह़म्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दह बिन सुलैमान ने ख़बर दी, उन्हें उ़बैदुल्लाह उ़मरी ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ़ ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया मोमिन एक आंत में खाता है और काफ़िर या मुनाफ़िक़ (अ़ब्दह ने कहा कि) मुझे यक़ीन नहीं है कि उनमें से किसके बारे मे उ़बैदुल्लाह ने बयान किया कि वो सातों आंतें भर लेता है और इब्ने बुकैर ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने, उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने इसी ह़दीष़ की त़रह बयान फ़र्माया। (राजेअ़ : 5393)

٥٣٩٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلاَمٍ أَخْبَرَنَا عَبْدَةُ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّ الْمُؤْمِنَ يَأْكُلُ فِي مِعًي وَاحِدٍ، وَإِنَّ الْكَافِرَ أَوِ الْمُنَافِقَ)). فَلاَ أَدْرِي أَيُّهُمَا قَالَ عُبَيْدُ اللهِ يَأْكُلُ ((فِي سَبْعَةِ أَمْعَاءٍ)). وَقَالَ ابْنُ بُكَيْرٍ: حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ بِمِثْلِهِ. [راجع: ٥٣٩٣]

तश्रीह़ : ह़दीष़ का मक़्सद ये है कि काफ़िर बहुत खाता है और मोमिन कम खाता है। एक की बहुत ज़्यादा खाने की आ़दत को बयान करने के लिये ये ता'बीर इख़्तियार की गई है।

5395. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने कि अबू नहीक बड़े खाने वाले आदमी थे। उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया है कि काफ़िर सातों आंतों में खाता है। अबू नहीक ने इस पर अ़र्ज़ किया कि मैं अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) पर ईमान रखता हूँ। (राजेअ़ : 5394)

٥٣٩٥- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرٍو قَالَ: كَانَ أَبُو نَهِيكٍ رَجُلاً أَكُولاً، فَقَالَ لَهُ ابْنُ عُمَرَ: إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ الْكَافِرَ يَأْكُلُ فِي سَبْعَةِ أَمْعَاءٍ))، فَقَالَ فَأَنَا أُؤْمِنُ بِاللهِ وَرَسُولِهِ. [راجع: ٥٣٩٤]

तश्रीह : सात आंतों में खाने और एक आंत में खाने से जो कुछ अल्लाह और रसूल की मुराद है बग़ैर कुरेद किये मेरा उस पर ईमान है, इसमें रद्द है उन लोगों का भी जिन्होंने क़ौले अतिब्बा से सिर्फ़ छः आंतों का होना नक़ल किया है हालाँकि अतिब्बा (डॉक्टरों) के क़ौल के आगे रसूले करीम (ﷺ) का इर्शादे गिरामी एक मोमिन मुसलमान के लिये बहुत बड़ी हक़ीक़त रखता है। पस **आमन्ना बिक़ौलि रसूलिल्लाहि (ﷺ)**

5396. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, उन्हों ने कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अअ़रज ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, मुसलमान एक आंत में खाता है और काफ़िर सातों आंतों में खाता है। (राजेअ : 5397)

٥٣٩٦- حدَّثنا إِسْمَاعِيلُ حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((يَأْكُلُ الْمُسْلِمُ فِي مِعًي وَاحِدٍ، وَالْكَافِرُ يَأْكُلُ فِي سَبْعَةِ أَمْعَاءٍ)).

[طرفه في : ٥٣٩٧].

हदीष़ का मज़्मून बतौरे अकष़र के है न ये कि बहुत खाने वाले काफ़िर ही होते हैं। कुछ मुसलमान भी बहुत खाते हैं मगर कम खाना ही बेहतर है।

5397. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अ़दी बिन ष़ाबित ने बयान किया, उनसे अबू हाज़िम ने बयान किया और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि एक स़ाहब बहुत ज़्यादा खाना खाया करते थे, फिर वो इस्लाम लाए तो कम खाने लगे। इसका ज़िक्र रसूलुल्लाह (ﷺ) से किया गया तो आपने फ़र्माया कि मोमिन एक आंत में खाता है और काफ़िर सातों आंतों में खाता है। (राजेअ : 5396)

٥٣٩٧- حدَّثنا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَدِيِّ بْنِ ثَابِتٍ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَجُلاً يَأْكُلُ أَكْلاً كَثِيرًا، فَأَسْلَمَ فَكَانَ يَأْكُلُ أَكْلاً قَلِيلاً، فَذُكِرَ ذَلِكَ لِلنَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: ((إِنَّ الْمُؤْمِنَ يَأْكُلُ فِي مِعًى وَاحِدٍ، وَالْكَافِرَ يَأْكُلُ فِي سَبْعَةِ أَمْعَاءٍ)). [راجع: ٥٣٩٦]

तश्रीह : इस हदीष़ की शरह में शाह वलीउल्लाह मुहद्दिष़ देहलवी (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि उसके मा'नी ये हैं कि काफ़िर की तमामतर हिर्स़ पेट होता है और मोमिन का अस़ल मक़्स़ूद आख़िरत हुआ करती है। पस मोमिन की शान यही है कि खाना कम खाना ईमान की उ़म्दह से उ़म्दह ख़स़लत है और ज़्यादा खाने की हिर्स़ कुफ़्र की ख़स़लत है। (हुज्जतुल्लाहिल बालिग़ा)

बाब 13 : तकिया लगाकर खाना कैसा है?

١٣- باب الأَكْلِ مُتَّكِئًا

5398. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मिस्अ़र ने बयान किया, उनसे अ़ली इब्नुल अक़्मर ने कि मैंने अबू जुहैफ़ा (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, मैं टेक लगाकर नहीं खाता।

٥٣٩٨- حدَّثنا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا مِسْعَرٌ عَنْ عَلِيِّ بْنِ الأَقْمَرِ سَمِعْتُ أَبَا جُحَيْفَةَ يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنِّي لاَ آكُلُ مُتَّكِئًا)).

5399. मुझसे उ़ष़मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा

٥٣٩٩- حدثني عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ

हमको जरीर ने ख़बर दी, उन्हें मंसूर ने, उन्हें अली बिन अक़्मर ने और उनसे अबू जुहैफ़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर था। आपने एक सहाबी से जो आपके पास मौजूद थे फ़र्माया कि मैं टेक लगाकर नहीं खाता।(दीगर मक़ामात : 5399)

أَخْبَرَنَا جَرِيرٌ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ عَلِيِّ بْنِ الأَقْمَرِ عَنْ أَبِي جُحَيْفَةَ قَالَ : كُنْتُ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ لِرَجُلٍ عِنْدَهُ: ((لاَ آكُلُ وَأَنَا مُتَّكِىءٌ)).[طرفه في : ٥٣٩٩].

दोनों अहादीष़ से तकिया लगाकर खाना मना ष़ाबित हुआ लेकिन इब्ने अबी शैबा ने हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) और हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) वग़ैरह से उसका जवाज़ भी नक़ल किया है मगर ख़ुद आँहज़रत (ﷺ) का फ़ेल मौजूद है जिसके आगे दीगर हैच।

बाब 14 : भुना हुआ गोश्त खाना और अल्लाह तआ़ला का फ़र्मान फिर वो भुना हुआ बछड़ा लेकर आए लफ़्ज़ हनीज़ के मा'नी भुना हुआ है

١٤- باب الشِّوَاءِ وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿فَجَاءَ بِعِجْلٍ حَنِيذٍ﴾ أَيْ مَشْوِيٍّ

5400. हमसे अली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें अबू उमामा बिन सहल ने और उन्हें इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के लिये भुना हुआ साहना पेश किया गया कि ये साहना है तो आपने अपना हाथ रोक लिया। हज़रत ख़ालिद (रज़ि.) ने पूछा क्या ये हराम है? फ़र्माया कि नहीं लेकिन चूँकि ये मेरे मुल्क में नहीं होता इसलिये तबियत उसे गवारा नहीं करती। फिर ख़ालिद (रज़ि.) ने उसे खाया और नबी करीम (ﷺ) देख रहे थे। इमाम मालिक ने इब्ने शिहाब से ज़ब्बुन महनूज़ (या'नी भुना हुआ साहना ज़ब्बुन मश्विय्युन की जगह महनूज़ नक़ल किया, दोनों लफ़्ज़ों का एक मा'नी है)। (राजेअ : 5391)

٥٤٠٠- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَبِي أُمَامَةَ بْنِ سَهْلٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنْ خَالِدِ بْنِ الْوَلِيدِ قَالَ : أُتِيَ النَّبِيُّ ﷺ بِضَبٍّ مَشْوِيٍّ، فَأَهْوَى إِلَيْهِ لِيَأْكُلَ، فَقِيلَ لَهُ: إِنَّهُ ضَبٌّ، فَأَمْسَكَ يَدَهُ. فَقَالَ خَالِدٌ: أَحَرَامٌ هُوَ؟ قَالَ: ((لاَ، وَلَكِنَّهُ لاَ يَكُونُ بِأَرْضِ قَوْمِي، فَأَجِدُنِي أَعَافُهُ)). فَأَكَلَ خَالِدٌ وَرَسُولُ اللهِ ﷺ يَنْظُرُ. قَالَ مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ بِضَبٍّ مَحْنُوذٍ. [راجع: ٥٣٩١]

बाब का मतलब हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने इस हदीष़ से यूँ निकाला कि सिर्फ़ साहना होने की वजह से वो गोश्त आपने छोड़ा वरना खाने में भुना गोश्त खाना ष़ाबित हुआ।

बाब 15 : ख़ज़ीरा का बयान और नज़्र बिन शुमैल ने कहा कि ख़ज़ीरा भूसी से बनता है और हरीरह दूध से

١٥- باب الْخَزِيرَةِ. قَالَ النَّضْرُ: الْخَزِيرَةُ مِنَ النُّخَالَةِ وَالْحَرِيرَةُ مِنَ اللَّبَنِ

अकष़र ने कहा कि हरीरह आटा से बनाया जाता है और ख़ज़ीरा जो आटे और गोश्त के टुकड़ों से पतला पतला हरीरा की तरह बनाया जाता है अगर गोश्त न हो खाली आटा हो तो वो हरीरा है।

5401. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उनसे इमाम लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्हें महमूद बिन रबीअ़ अंसारी ने

٥٤٠١- حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ:

أَخْبَرَنِي مَحْمُودُ بْنُ الرَّبِيعِ الأَنْصَارِيُّ، أَنَّ عُتْبَانَ بْنَ مَالِكٍ وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِمَّنْ شَهِدَ بَدْرًا مِنَ الأَنْصَارِ أَنَّهُ أَتَى رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللهِ، إِنِّي أَنْكَرْتُ بَصَرِي، وَأَنَا أُصَلِّي لِقَوْمِي، فَإِذَا كَانَتِ الأَمْطَارُ سَالَ الْوَادِي الَّذِي بَيْنِي وَبَيْنَهُمْ، لَمْ أَسْتَطِعْ أَنْ آتِيَ مَسْجِدَهُمْ فَأُصَلِّي لَهُمْ، فَوَدِدْتُ يَا رَسُولَ اللهِ أَنَّكَ تَأْتِي فَتُصَلِّي فِي بَيْتِي فَأَتَّخِذُهُ مُصَلًّى. فَقَالَ: ((سَأَفْعَلُ إِنْ شَاءَ اللهُ)). قَالَ عُتْبَانُ: فَغَدَا رَسُولُ اللهِ ﷺ وَأَبُوبَكْرٍ حِينَ ارْتَفَعَ النَّهَارُ، فَاسْتَأْذَنَ النَّبِيُّ ﷺ فَأَذِنْتُ لَهُ، فَلَمْ يَجْلِسْ حَتَّى دَخَلَ الْبَيْتَ، ثُمَّ قَالَ لِي : ((أَيْنَ تُحِبُّ أَنْ أُصَلِّي مِنْ بَيْتِكَ؟)) فَأَشَرْتُ إِلَى نَاحِيَةٍ مِنَ الْبَيْتِ، فَقَامَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَكَبَّرَ، فَصَفَفْنَا، فَصَلَّى رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ سَلَّمَ وَحَبَسْنَاهُ عَلَى خَزِيرٍ صَنَعْنَاهُ، فَثَابَ فِي الْبَيْتِ رِجَالٌ مِنْ أَهْلِ الدَّارِ ذَوُو عَدَدٍ، فَاجْتَمَعُوا فَقَالَ قَائِلٌ مِنْهُمْ : أَيْنَ مَالِكُ بْنُ الدُّخْشُنِ! فَقَالَ بَعْضُهُمْ: ذَلِكَ مُنَافِقٌ، لاَ يُحِبُّ اللهَ وَرَسُولَهُ. قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((لاَ تَقُلْ، أَلاَ تَرَاهُ قَالَ : لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ يُرِيدُ بِذَلِكَ وَجْهَ اللهِ؟)) قَالَ : اللهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ. قَالَ : قُلْنَا فَإِنَّا نَرَى وَجْهَهُ وَنَصِيحَتَهُ إِلَى الْمُنَافِقِينَ فَقَالَ:

ख़बर दी कि उ़त्बान बिन मालिक (रज़ि.) जो नबी करीम (ﷺ) के सहाबा में से थे और क़बीला अंसार के उन लोगों में से थे जिन्होंने बद्र की लड़ाई में शिर्कत की थी। आप आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरी आँख की बसारत कमज़ोर है और मैं अपनी क़ौम को नमाज़ पढ़ाता हूँ। बरसात में वादी जो मेरे और उनके बीच हाइल है, बहने लगती है और मेरे लिये उनकी मस्जिद में जाना और उनमें नमाज़ पढ़ना मुम्किन नहीं रहता। इसलिये या रसूलल्लाह! मेरी ये ख़्वाहिश है कि आप मेरे घर तशरीफ़ ले चलें और मेरे घर में आप नमाज़ पढ़ें ताकि मैं उसी जगह को नमाज़ पढ़ने की जगह बना लूँ। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि इंशाअल्लाह मैं जल्दी ही ऐसा करूँगा । हज़रत उ़त्बान (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के साथ चाश्त के वक़्त जब सूरज कुछ बुलंद हो गया तशरीफ़ लाए और आँहज़रत (ﷺ) ने अंदर आने की इजाज़त चाही। मैंने आपको इजाज़त दे दी। आप बैठे नहीं बल्कि घर में दाख़िल हो गये और दरयाफ़्त फ़र्माया कि अपने घर में किस जगह तुम पसंद करते हो कि मैं नमाज़ पढ़ूँ? मैंने घर के एक कोने की तरफ़ इशारा किया। आँहज़रत (ﷺ) वहाँ खड़े हो गये और (नमाज़ के लिये) तक्बीर कही। हमने भी (आपके पीछे) सफ़ बना ली। आँहज़रत (ﷺ) ने दो रकअ़त (नफ़्ली) नमाज़ पढ़ी फिर सलाम फेरा और हमने आँहज़रत (ﷺ) को ख़ज़ीरा (हरीरा की एक क़िस्म) के लिये जो आपके लिये हमने बनाया था रोक लिया। घर में क़बीला के बहुत से लोग आ आकर जमा हो गये। उनमें से एक साहब ने कहा मालिक बिन दुख़्शन (रज़ि.) कहाँ हैं? इस पर किसी ने कहा कि वो तो मुनाफ़िक़ है अल्लाह और उसके रसूल से उसे मुहब्बत नहीं है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, ये न कहो, क्या तुम नहीं देखते कि उन्होंने इक़रार किया है कि ला इलाहा इल्लल्लाह या'नी अल्लाह के सिवा और कोई मा'बूद नहीं और उससे उनका मक़्सद सिर्फ़ अल्लाह की ख़ुशनूदी हासिल करना है। उन सहाबी ने कहा कि अल्लाह और उसके रसूल ही ज़्यादा जानते हैं। रावी ने बयान किया कि हमने अ़र्ज़ किया (या रसूलल्लाह) लेकिन हम उनकी तवज्जह और उनका लगाव मुनाफ़िक़ीन के

साथ ही देखते हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया लेकिन अल्लाह ने दोज़ख़ की आग को उस शख़्स पर हराम कर दिया है जिसने कलिमा ला इलाहा इल्लल्लाह का इक़रार कर लिया हो और उससे उसका मक़्सद अल्लाह की ख़ुशनूदी हो। इब्ने शिहाब ने बयान किया कि फिर मैंने हुसैन बिन मुहम्मद अंसारी से जो बनी सालिम के एक फ़र्द औरउनके सरदार थे। महमूद की हदीष के बारे में पूछा तो उन्होंने उसकी तस्दीक़ की। (राजेअ : 424)

((فَإِنَّ اللهَ حَرَّمَ عَلَى النَّارِ مَنْ قَالَ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ يَبْتَغِي بِذَلِكَ وَجْهَ اللهِ؟)) قَالَ ابْنُ شِهَابٍ : ثُمَّ سَأَلْتُ الْحُصَيْنَ بْنَ مُحَمَّدٍ الأَنْصَارِيَّ أَحَدَ بَنِي سَالِمٍ، وَكَانَ مِنْ سَرَاتِهِمْ عَنْ حَدِيثِ مَحْمُودٍ، فَصَدَّقَهُ.
[راجع: ٤٢٤]

ये हदीष पहले भी गुज़र चुकी है। दोज़ख़ हराम होने का ये मतलब है कि वो तब्क़ा मोमिन पर हराम है जिसमें काफ़िर और मुनाफ़िक़ रहेंगे या दोज़ख़ में हमेशा के लिये रहना मुसलमान पर हराम है। इस हदीष से साफ़ ज़ाहिर है कि किसी कलिमा गो मुसलमान को किसी मा'कूल शरई वजह के बग़ैर काफ़िर क़रार देना जाइज़ नहीं है। इस सूरत में वो कुफ़्र ख़ुद कहने वाले की तरफ़ लौट जाता है।

बाब 16 : पनीर का बयान

١٦- باب الأَقِطِ

और हुमैद ने कहा कि मैंने अनस (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने सफ़िया (रज़ि.) से निकाह किया तो(दा'वते वलीमा में) खजूर, पनीर और घी रखा और अम्र बिन अबी अम्र ने बयान किया और अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने (खजूर, पनीर और घी का) मलीदा बनाया था।

وَقَالَ حُمَيْدٌ: سَمِعْتُ أَنَسًا: بَنَى النَّبِيُّ ﷺ بِصَفِيَّةَ، فَأَلْقَى التَّمْرَ وَالأَقِطَ وَالسَّمْنَ. وَقَالَ عَمْرُو بْنُ أَبِي عَمْرٍو عَنْ أَنَسٍ: صَنَعَ النَّبِيُّ ﷺ حَيْسًا.

5402. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अबू बिश्र ने, उनसे सईद ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरी ख़ाला ने नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में साहना का गोश्त, पनीर और दूध हदियतन पेश किया तो साहना का गोश्त आपके दस्तरख़्वान पर रखा गया और अगर साहना हराम होता तो आपके दस्तरख़्वान पर नहीं रखा जा सकता था लेकिन आपने दूध पिया और पनीर खाया। (राजेअ : 2575)

٥٤٠٢- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي بِشْرٍ عَنْ سَعِيدٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: أَهْدَتْ خَالَتِي إِلَى النَّبِيِّ ﷺ ضِبَابًا وَأَقِطًا وَلَبَنًا، فَوُضِعَ الضَّبُّ عَلَى مَائِدَتِهِ، فَلَوْ كَانَ حَرَامًا لَمْ يُوضَعْ، وَشَرِبَ اللَّبَنَ وَأَكَلَ الأَقِطَ. [راجع: ٢٥٧٥]

मगर साहना का गोश्त आपको पसंद नहीं आया जिसे सहाबा किराम (रज़ि.) ने खा लिया जिससे साफ़ साहना के खाने का जवाज़ षाबित हुआ।

बाब 17 : चुक़न्दर और जौ खाने का बयान

١٧- باب السِّلْقِ وَالشَّعِيرِ

5403. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यअक़ूब बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे अबू हाज़िम ने और उनसे सहल बिन सअद (रज़ि.) ने बयान किया कि हमें जुम्आ के दिन बड़ी ख़ुशी रहती थी। हमारी एक बूढ़ी

٥٤٠٣- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ: إِنْ كُنَّا لَنَفْرَحُ

ख़ातून थी वो चुक़न्दर की जड़ें लेकर अपनी हाँडी में पकाती थीं, ऊपर से कुछ दाने जौ के उसमे डाल देती थी। हम जुम्आ की नमाज़ पढ़कर उनकी मुलाक़ात को जाते तो वो हमारे सामने ये खाना रखती थीं। जुम्आ के दिन हमें बड़ी ख़ुशी उसी वजह से रहती थी। हम नमाज़े जुम्आ के बाद ही खाना खाया करते थे। अल्लाह की क़सम न उसमें चर्बी होती थी न घी और जब भी हम मज़े से उसको खाते। (राजेअ : 938)

يَوْمِ الْجُمُعَةِ، كَانَتْ لَنَا عَجُوزٌ تَأْخُذُ أُصُولَ السِّلْقِ فَتَجْعَلُهُ فِي قِدْرٍ لَهَا، فَتَجْعَلُ فِيهِ حَبَّاتٍ مِنْ شَعِيرٍ، إِذَا صَلَّيْنَا زُرْنَاهَا فَقَرَّبَتْهُ إِلَيْنَا، وَكُنَّا نَفْرَحُ بِيَوْمِ الْجُمُعَةِ مِنْ أَجْلِ ذَلِكَ، وَمَا كُنَّا نَتَغَدَّى وَلاَ نَقِيلُ إِلاَّ بَعْدَ الْجُمُعَةِ، وَاللهِ مَا فِيهِ شَحْمٌ وَلاَ وَدَكٌ. [راجع ٩٣٨]

मा'लूम हुआ कि चकुन्दर जैसी सब्ज़ी में जौ जैसी चीज़ें मिलाकर दलिया बनाया जाए तो वो मज़ेदार क़िस्म का खीचड़ा बन सकता है। इब्तिदाई दौर में जब मुहाजिरीन मदीना में आए और तंगदस्ती का आलम था, ऐसी पुरख़ुलूस दा'वत भी उनके लिये बड़ी ग़नीमत थी।

बाब 18 : गोश्त के पकने से पहले उसे हाँडी से निकालकर खाना और मुँह से नोचना

١٨- باب النَّهْسِ، وَانْتِشَالِ اللَّحْمِ

5404. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल वह्हाब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, कहा हमसे अय्यूब सुख़्तियानी ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन सीरीन ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने शाने की हड्डी का गोश्त खाया, फिर खड़े हुए और नमाज़ पढ़ी। आपने (नमाज़ के लिये नया) वुज़ू नहीं किया और (उसी सनद से)। (राजेअ : 207)

٥٤٠٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الْوَهَّابِ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: تَعَرَّقَ رَسُولُ اللهِ ﷺ كَتِفًا، ثُمَّ قَامَ فَصَلَّى وَلَمْ يَتَوَضَّأْ. [راجع: ٢٠٧]

5405. अय्यूब और आ़सिम से रिवायत है, उनसे इक्रिमा ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने पकती हुई हँडिया में से अधकच्ची बोटी निकाली और उसे खाया फिर नमाज़ पढ़ाई और नया वुज़ू नहीं किया। (राजेअ : 207)

٥٤٠٥- وَعَنْ أَيُّوبَ وَعَاصِمٍ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ : انْتَشَلَ النَّبِيُّ ﷺ عَرْقًا مِنْ قِدْرٍ فَأَكَلَ، ثُمَّ صَلَّى وَلَمْ يَتَوَضَّأْ.[راجع: ٢٠٧]

ताक़त के लिहाज़ से ऐसा गोश्त खाना ज़्यादा मुफ़ीद है ये भी मा'लूम हुआ कि ऐसा गोश्त खाने से नया वुज़ू करना ज़रूरी नहीं है हाँ लग़्वी वुज़ू मुँह धोना कुल्ली करना मुँह साफ़ करना ज़रूरी है उसे लग़्वी वुज़ू कहा गया है।

बाब 19 : बाज़ू का गोश्त नोचकर खाना दुरुस्त है

١٩- باب تَعَرُّقِ الْعَضُدِ

5406. मुझसे मुहम्मद बिन मुष़न्ना ने बयान किया, कहा कि मुझसे उ़ष़्मान इब्ने उ़मर ने बयान किया, उनसे फ़ुलैह़ बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे अबू ह़ाज़िम सलमा बिन दीनार मदनी ने, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी क़तादा ने और उनसे उनकेवालिद ने बयान किया कि हम नबी करीम

٥٤٠٦- حدثني مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى قَالَ: حَدَّثَنِي عُثْمَانُ بْنُ عُمَرَ حَدَّثَنَا فُلَيْحٌ حَدَّثَنَا أَبُو حَازِمٍ الْمَدَنِيُّ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي قَتَادَةَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ خَرَجْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ

(ﷺ) के साथ मक्का की त़रफ़ निकले (स़ुलह़ हुदैबिया के मौक़े पर)। (राजेअ़ : 1821) दूसरी सनद

5407. और मुझसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह उवैसी ने बयान किया, कहा हमसे मुह़म्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे अबू ह़ाज़िम ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी क़तादा असलमी ने, उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि मैं एक दिन नबी करीम (ﷺ) के चंद स़ह़ाबा के साथ मक्का के रास्ते मे एक मंज़िल पर बैठा हुआ था। आँह़ज़रत (ﷺ) ने हमारे आगे पड़ाव किया था। स़ह़ाबा किराम (रज़ि.) एह़राम की ह़ालत में थे लेकिन में एह़राम में नहीं था। लोगों ने एक गोरख़र को देखा। मैं उस वक़्त अपना जूता टांकने में मस़रूफ़ था। उन लोगों ने मुझे उस गोरख़र के बारे में बताया कुछ नहीं लेकिन चाहते थे कि मैं किसी त़रह़ देख लूँ। चुनाँचे मैं मुतवज्जह हुआ और मैंने उसे देख लिया, फिर मैं घोड़े के पास गया और उसे ज़ीन पहनाकर उस पर सवार हो गया लेकिन कोड़ा और नेज़ा भूल गया था। मैंने उन लोगों से कहा कि कोड़ा और नेज़ा मुझे दे दो। उन्होंने कहा कि नहीं अल्लाह की क़सम हम तुम्हारी शिकार के मामले में कोई मदद नहीं करेंगे। (क्योंकि हम मुह़रिम हैं) मैं ग़ुस़्स़ा हो गया और मैंने उतरकर ख़ुद ये दोनों चीज़ें उठाईं फिर सवार होकर उस पर हमला किया और उसे ज़िब्ह़ कर लिया। जब वो ठण्डा हो गया तो मैं उसे साथ लाया फिर उसे पकाकर मैंने और सबने खाया लेकिन बाद में उन्हें शुब्हा हुआ कि एह़राम की ह़ालत में इस (शिकार का गोश्त) खाना कैसा है? फिर हम रवाना हुए और मैंने उसका गोश्त छुपाकर रखा। जब हम आँह़ज़रत (ﷺ) के पास आए तो हमने आपसे उसके बारे में पूछा। आपने दरयाफ़्त किया, तुम्हारे पास कुछ बचा हुआ भी है? मैंने वही दस्त पेश किया और आपने भी उसे खाया। यहाँ तक कि उसका गोश्त आपने अपने दांतों से खींच–खींचकर खाया और आप एह़राम में थे। मुह़म्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया कि मुझसे ज़ैद बिन असलम ने ये वाक़िया बयान किया, उनसे अ़त़ा बिन यसार ने और उनसे ह़ज़रत अबू क़तादा (रज़ि.) ने इसी त़रह़ सारा वाक़िया बयान किया। (राजेअ़ : 1821)

نَحْوَ مَكَّةَ. [راجع:١٨٢١]

٥٤٠٧- وحدثني عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي قَتَادَةَ السَّلَمِيِّ عَنْ أَبِيهِ أَنَّهُ قَالَ: كُنْتُ يَوْمًا جَالِسًا مَعَ رِجَالٍ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ فِي مَنْزِلٍ فِي طَرِيقِ مَكَّةَ وَرَسُولُ اللهِ نَازِلٌ أَمَامَنَا، وَالْقَوْمُ مُحْرِمُونَ وَأَنَا غَيْرُ مُحْرِمٍ. فَأَبْصَرُوا حِمَارًا وَحْشِيًّا، وَأَنَا مَشْغُولٌ أَخْصِفُ نَعْلِي فَلَمْ يُؤْذِنُونِي لَهُ، وَأَحَبُّوا أَنِّي أَبْصَرْتُهُ، فَالْتَفَتُّ فَأَبْصَرْتُهُ، فَقُمْتُ إِلَى الْفَرَسِ فَأَسْرَجْتُهُ ثُمَّ رَكِبْتُ، وَنَسِيتُ السَّوْطَ وَالرُّمْحَ، فَقُلْتُ لَهُمْ : نَاوِلُونِي السَّوْطَ وَالرُّمْحَ، فَقَالُوا: لاَ وَاللهِ لاَ نُعِينُكَ عَلَيْهِ بِشَيْءٍ. فَغَضِبْتُ فَنَزَلْتُ فَأَخَذْتُهُمَا ثُمَّ رَكِبْتُ فَشَدَدْتُ عَلَى الْحِمَارِ فَعَقَرْتُهُ، ثُمَّ جِئْتُ بِهِ وَقَدْ مَاتَ. فَوَقَعُوا فِيهِ يَأْكُلُونَهُ ثُمَّ إِنَّهُمْ شَكُّوا فِي أَكْلِهِمْ إِيَّاهُ وَهُمْ حُرُمٌ، فَرُحْنَا وَخَبَأْتُ الْعَضُدَ مَعِي. فَأَدْرَكْنَا رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَسَأَلْنَاهُ عَنْ ذَلِكَ فَقَالَ: ((مَعَكُمْ مِنْهُ شَيْءٌ؟)) فَنَاوَلْتُهُ الْعَضُدَ فَأَكَلَهَا حَتَّى تَعَرَّقَهَا وَهُوَ مُحْرِمٌ قَالَ مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ: وَحَدَّثَنِي زَيْدُ بْنُ أَسْلَمَ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي قَتَادَةَ مِثْلَهُ.

[راجع:١٨٢١]

तश्रीह : गोश्त छुरी से काटकर खाने की मुमानअ़त एक ह़दीष़ में मरवी है मगर अबू क़तादा ने कहा कि वो ह़दीष़ ज़ईफ़ है। ह़ाफ़िज़ ने कहा उसका एक शाहिद और है जिसे तिर्मिज़ी ने स़फ़्वान बिन उमय्या से निकाला कि गोश्त को मुँह से नोचकर खाओ वो जल्दी हज़म होगा, उसकी सनद भी ज़ईफ़ है। माफ़िल बाब ये है कि मुँह से नोचकर खाना बेहतर होगा। मैं (मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ मरहूम) कहता हूँ जब गोश्त छुरी से काटकर खाना दुरुस्त हुआ तो रोटी भी छुरी से काटकर खाना दुरुस्त होगी। इसी त़रह़ कांटे से खाना भी दुरुस्त होगा। इसी त़रह़ चमचे से भी और जिन लोगों ने उन बातों में तशद्दुद और ग़ुलू किया है और ज़रा ज़रा सी बातों पर मुसलमानों को काफ़िर बनाया है मैं उनका ये तशद्दुद हर्गिज़ पसंद नहीं करता। काफ़िरों की मुशाबिहत करना तो मना है मगर ये वही मुशाबिहत है जो उनके मज़हब की ख़ास़ निशानी हो जैसे स़लीब लगाना या अंग्रेज़ों की टोपी पहनना लेकिन जब किसी की निय्यत मुशाबिहत की न हो, यही लिबास मुसलमानों में भी राइज हो मष़लन तुर्क या ईरान के मुसलमानों में तो उसको मुशाबिहत में दाख़िल नहीं कर सकते और न ऐसे खाने पीने लिबास को फ़ुरूई बातों की वजह से मुसलमान के कुफ़्र का फ़त्वा दे सकते हैं (वह़ीदी)। मगर मुसलमान के लिये दीगर अक़्वाम की मख़्सूस़ आदात व ग़लत़ रिवायात से बचना ज़रूरी है।

बाब 19 : बाज़ू का गोश्त नोचकर खाना दुरुस्त है

٢٠- باب قَطْعِ اللَّحْمِ بِالسِّكِّينِ

5408. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, उन्हें जा'फ़र बिन अ़म्र बिन उमय्या ज़मरी ने ख़बर दी, उन्हें उनके वालिद अ़म्र बिन उमय्या (रज़ि.) ने ख़बर दी कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) को देखा आप अपने हाथ से बकरी के शाने का गोश्त काटकर खा रहे थे, फिर आपको नमाज़ के लिये बुलाया गया तो आपने गोश्त और वो छुरी जिससे गोश्त की बोटी काट रहे थे, डाल दी और नमाज़ के लिये खड़े हो गये, फिर आपने नमाज़ पढ़ी और आपने नया वुज़ू नहीं किया (क्योंकि आप पहले ही वुज़ू किये हुए थे)। (राजेअ़ : 208)

٥٤٠٨- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي جَعْفَرُ بْنُ عَمْرِو بْنِ أُمَيَّةَ أَنَّ أَبَاهُ عَمْرَو بْنَ أُمَيَّةَ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ رَأَى النَّبِيَّ ﷺ يَحْتَزُّ مِنْ كَتِفِ شَاةٍ فِي يَدِهِ، فَدُعِيَ إِلَى الصَّلاَةِ، فَأَلْقَاهُ وَالسِّكِّينَ الَّتِي يَحْتَزُّ بِهَا، ثُمَّ قَامَ فَصَلَّى وَلَمْ يَتَوَضَّأْ.

[راجع: ٢٠٨]

बाब 21 : रसूले करीम (ﷺ) ने कभी किसी क़िस्म के खाने में कोई ऐ़ब नहीं निकाला है

٢١- باب مَا عَابَ النَّبِيُّ ﷺ طَعَامًا

5409. हमसे मुह़म्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान ने ख़बर दी, उन्हें आ'मश ने, उन्हें अबू ह़ाज़िम ने, और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने कभी किसी खाने में कोई ऐ़ब नहीं निकाला। अगर पसंद हुआ तो खा लिया और अगर नापसंद हुआ तो छोड़ दिया। (राजेअ़ : 3563)

٥٤٠٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ : مَا عَابَ النَّبِيُّ ﷺ طَعَامًا قَطُّ، إِنِ اشْتَهَاهُ أَكَلَهُ، وَإِنْ كَرِهَهُ تَرَكَهُ.

[راجع: ٣٥٦٣]

तश्रीह : मा'लूम हुआ कि खाने का ऐ़ब बयान करना जैसे यूँ कहना कि उसमें नमक नहीं है या फीका है या नमक ज़्यादा है। ये सारी बातें मकरूह हैं। पकाने और तरकीब में किसी नुक़्स़ की इस्लाह़ करना मकरूह नहीं है।

बाब : 22 जौ को पीसकर मुँह से फूँककर उसका भूसा उड़ा देना दुरुस्त है

٢٢- باب النَّفْخِ فِي الشَّعِيرِ

5410. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, कहा हमसे अबू ग़स्सान (मुहम्मद बिन मुतर्रफ़ लैषी) ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबू हाज़िम सलमा बिन दीनार ने बयान किया, उन्होंने सहल बिन सअद साएदी (रज़ि.) से पूछा, क्या तुमने नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में मैदा देखा था? उन्होंने कहा कि नहीं। मैंने पूछा क्या तुम जौ के आटे को छानते थे? कहा नहीं, बल्कि हम उसे सिर्फ़ फूँक लिया करते थे। (दीगर मक़ाम : 5413)

٥٤١٠- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ حَدَّثَنَا أَبُو غَسَّانَ قَالَ : حَدَّثَنِي أَبُو حَازِمٍ أَنَّهُ سَأَلَ سَهْلاً : هَلْ رَأَيْتُمْ فِي زَمَانِ النَّبِيِّ ﷺ النَّقِيَّ؟ قَالَ: لاَ. فَقُلْتُ كُنْتُمْ تَنْخُلُونَ الشَّعِيرَ؟ قَالَ لاَ وَلَكِنْ كُنَّا نَنْفُخُهُ.

[طرفه في : ٥٤١٣].

तश्रीह : इस क़िस्म का आटा खाना बाइ़षे स़ेह़त और मुफ़ीद है। मैदा अकषर क़ब्ज़ करता और बवासीर का बाइ़ष बनता है। ख़ास़ तौर पर आजकल जो ग़ैर मुल्की मैदा आ रहा है जिसमें अल्लाह जाने किन किन चीज़ों की मिलावट होती है ये सख़्त षक़ील और इससे कई बीमारियाँ हो रही है, इल्ला माशाअल्लाह।

बाब 23 : नबी करीम (ﷺ) और आपके स़हाबा किराम (रज़ि.) की ख़ूराक का बयान

٢٣- باب مَا كَانَ النَّبِيُّ ﷺ وَأَصْحَابُهُ يَأْكُلُونَ

5411. हमसे अबुन नोअ़मान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अ़ब्बास जुरैरी ने बयान किया, उनसे अबू उ़ष्मान नहदी ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि एक दिन नबी करीम (ﷺ) ने अपने स़ह़ाबा (रज़ि .) को खजूर तक़्सीम की और हर शख़्स़ को सात खजूरें दीं। मुझे भी सात खजूरें इनायत फ़र्माईं। उनमें एक ख़राब थी (और सख़्त थी) लेकिन मुझे वही सबसे ज़्यादा अच्छी मा'लूम हुई क्योंकि उसका चबाना मुझको मुश्किल हो गया। (दीगर मक़ाम : 5441 मीम)

٥٤١١- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ عَبَّاسٍ الْجُرَيْرِيِّ عَنْ أَبِي عُثْمَانَ النَّهْدِيِّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَسَمَ النَّبِيُّ ﷺ يَوْمًا بَيْنَ أَصْحَابِهِ تَمْرًا، فَأَعْطَى كُلَّ إِنْسَانٍ سَبْعَ تَمَرَاتٍ، فَأَعْطَانِي سَبْعَ تَمَرَاتٍ إِحْدَاهُنَّ حَشَفَةٌ، فَلَمْ يَكُنْ فِيهِنَّ تَمْرَةٌ أَعْجَبَ إِلَيَّ مِنْهَا، شَدَّتْ. فِي مَضَاغِي. [طرفه في : ٥٤٤١م].

ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) का मत़लब ये है कि उस वक़्त मुसलमानों पर ऐसी तंगी थी कि सात खजूरें एक आदमी को बत़ौरे राशन मिलती और उनमें भी कुछ ख़राब और सख़्त होती मगर हम सब उसी पर ख़ुश रहा करते थे। अब भी मुसलमानों का फ़र्ज़ है कि तंगी व फ़राख़ी हर ह़ाल में ख़ुश रहें।

5412. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे वहब बिन जुरैर ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने, उनसे क़ैस बिन अबी ह़ाज़िम ने और उनसे ह़ज़रत सअ़द बिन अबी

٥٤١٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ جَرِيرٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ إِسْمَاعِيلَ عَنْ قَيْسٍ عَنْ سَعْدٍ قَالَ : رَأَيْتُنِي

سَابِعَ سَبْعَةٍ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا لَنَا طَعَامٌ إِلاَّ وَرَقُ الْحُبْلَةِ، أَوِ الْحَبَلَةِ حَتَّى يَضَعَ أَحَدُنَا مَا تَضَعُ الشَّاةُ، ثُمَّ أَصْبَحَتْ بَنُو أَسَدٍ تُعَزِّرُنِي عَلَى الإِسْلاَمِ، خَسِرْتُ إِذًا وَضَلَّ سَعْيِي.

वक़्क़ास (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने अपने आपको नबी करीम (ﷺ) के साथ उन सात आदमियों में से सातवाँ पाया (जिन्होंने इस्लाम सबसे पहले क़ुबूल किया था) उस वक़्त हमारे पास खाने के लिये यही कीकर के फल या पत्ते के सिवा और कुछ नहीं होता। ये खाने खाते हम लोगों का पाख़ाना भी बकरी की मींगनियों की तरह हो गया था या अब ये ज़माना है कि बनी असद क़बीले के लोग मुझको शरीअत के अहकाम सिखलाते हैं। अगर मैं अभी तक इस हाल में हूँ कि बनी असद के लोग मुझको शरीअत के अहकाम सिखलाएँ तब तो मैं तबाह ही हो गया मेरी मेहनत बर्बाद हो गई।

तश्रीह : हुआ ये था कि हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) हज़रत उमर (रज़ि.) की तरफ़ से कूफ़ा के हाकिम थे। वहाँ बनू असद के लोगों ने हज़रत उमर (रज़ि.) से उनकी ये शिकायत की कि उनको नमाज़ अच्छी तरह पढ़नी नहीं आती। हज़रत सअद (रज़ि.) ने उनका रद्द किया कि अगर मुझको अब तक नमाज़ पढ़नी भी नहीं आई हालाँकि मैं क़दीम ज़माने का मुसलमान हूँ कि जब मैं मुसलमान हुआ था तो कुल छः आदमी मुसलमान थे तो तुम लोगों को नमाज़ पढ़ना कैसे आ गया तुम तो कल मुसलमान हुए हो। बनू असद की सब शिकायतें ग़लत थीं और हज़रत सअद (रज़ि.) पर उनका एं'तिराज़ करना ऐसा था कि छोटा मुँह और बड़ी बात, ख़ताए बुज़ुर्गा गिरफ़्तन ख़ता अस्त (वहीदी)

٥٤١٣- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ عَنْ أَبِي حَازِمٍ قَالَ : سَأَلْتُ سَهْلَ بْنَ سَعْدٍ فَقُلْتُ : هَلْ أَكَلَ رَسُولُ اللّٰهِ ﷺ النَّقِيَّ؟ فَقَالَ سَهْلٌ : مَا رَأَى رَسُولُ اللّٰهِ ﷺ النَّقِيَّ مِنْ حِينَ ابْتَعَثَهُ اللّٰهُ حَتَّى قَبَضَهُ اللّٰهُ. قَالَ : فَقُلْتُ : هَلْ كَانَتْ لَكُمْ فِي عَهْدِ رَسُولِ اللّٰهِ ﷺ مَنَاخِلُ؟ قَالَ: مَا رَأَى رَسُولُ اللّٰهِ ﷺ مُنْخُلاً مِنْ حِينَ ابْتَعَثَهُ اللّٰهُ حَتَّى قَبَضَهُ اللّٰهُ، قَالَ قُلْتُ: كَيْفَ كُنْتُمْ تَأْكُلُونَ الشَّعِيرَ غَيْرَ مَنْخُولٍ؟ قَالَ : كُنَّا نَطْحَنُهُ وَنَنْفُخُهُ، فَيَطِيرُ مَا طَارَ، وَمَا بَقِيَ ثَرَّيْنَاهُ فَأَكَلْنَاهُ. [راجع: ٥٤١٠]

5413. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यअ़क़ूब ने बयान किया, उनसे अबू हाज़िम ने बयान किया कि मैंने सहल बिन सअ़द (रज़ि.) से पूछा, क्या नबी करीम (ﷺ) ने कभी मैदा खाया था? उन्होंने कहा कि जब अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को नबी बनाया उस वक़्त से वफ़ात तक आँहज़रत (ﷺ) ने मैदा देखा भी नहीं था। मैंने पूछा क्या नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में आपके पास छलनियाँ थीं। कहा कि जब अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को नबी बनाया उस वक़्त से आपकी वफ़ात तक आँहज़रत (ﷺ) ने छलनी देखी भी नहीं। बयान किया कि मैंने पूछा आप लोग फिर बग़ैर छना हुआ जो किस तरह खाते थे? बतलाया हम उसे पीस लेते थे फिर उसे फूँकते थे जो कुछ उड़ना होता उड़ जाता और जो बाक़ी रह जाता उसे गूँध लेते (और पकाकर) खा लेते थे। (राजेअ : 5410)

तश्रीह : सुन्नते नबवी का तक़ाज़ा यही है कि हर मुसलमान अब भी ऐसी ही सादा ज़िंदगी पर साबिर व शाकिर रहे जिसमें दीन व दुनिया दोनों का भला है।

٥٤١٤- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ

5414. मुझसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्हें रौह बिन उबादा ने ख़बर दी, उनसे इब्ने अबी ज़िअब ने बयान

किया, उनसे सईद मक़्बरी ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि वो कुछ लोगों के पास से गुज़रे जिनके सामने भुनी हुई बकरी रखी थी। उन्होंने उनको खाने पर बुलाया लेकिन उन्होंने खाने से इंकार कर दिया और कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) इस दुनिया से रुख़्सत हो गये और आपने कभी जौ की रोटी भी आसूदा होकर नहीं खाई।

أَخْبَرَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ عَنْ سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ مَرَّ بِقَوْمٍ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ شَاةٌ مَصْلِيَّةٌ، فَدَعَوْهُ، فَأَبَى أَنْ يَأْكُلَ قَالَ: خَرَجَ رَسُولُ اللهِ ﷺ مِنَ الدُّنْيَا وَلَمْ يَشْبَعْ مِنَ الْخُبْزِ الشَّعِيرِ.

तश्रीह : ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने आँह़ज़रत (ﷺ) का ह़ाल याद करके उसका खाना गवारा न किया और चूँकि ये वलीमा की दा'वत न थी इसलिये उसका क़ुबूल करना भी ज़रूरी न था।

5415. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी अल अस्वद ने बयान किया, कहा हमसे मुआ़ज़ बिन हिशाम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने बयान किया, उनसे यूनुस बिन अबी अल फ़रात ने, उनसे क़तादा ने और उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने कभी मेज़ पर खाना नहीं खाया और न तश्तरी में दो चार क़िस्म की चीज़ें रखकर खाई और न कभी चपाती खाई। मैंने क़तादा से पूछा, फिर आप किस चीज़ पर खाना खाते थे? बतलाया कि सफ़रा (चमड़े के दस्तरख़्वान) पर।

٥٤١٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي الأَسْوَدِ حَدَّثَنَا مُعَاذٌ حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ يُونُسَ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ : مَا أَكَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى خِوَانٍ، وَلاَ فِي سُكُرُّجَةٍ، وَلاَ خُبِزَ لَهُ مُرَقَّقٌ. قُلْتُ لِقَتَادَةَ : عَلَى مَا يَأْكُلُونَ؟ قَالَ : عَلَى السُّفَرِ.

5417. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन अ़ब्दुल ह़मीद ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे इब्राहीम बिन नख़ई ने, उनसे अस्वद बिन यज़ीद नेऔर उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कि मदीना हिजरत करने के बाद आले मुह़म्मद (ﷺ) ने कभी बराबर तीन दिन तक गेहूँ की रोटी पेट भरकर नहीं खाई यहाँ तक कि आप दुनिया से तशरीफ़ ले गये। (दीगर मक़ाम : 6454)

٥٤١٦- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنِ الأَسْوَدِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: مَا شَبِعَ آلُ مُحَمَّدٍ ﷺ مُنْذُ قَدِمَ الْمَدِينَةَ مِنْ طَعَامِ الْبُرِّ ثَلاَثَ لَيَالٍ تِبَاعًا حَتَّى قُبِضَ.

[طرفه في : ٦٤٥٤].

तश्रीह : आप बहुत कम खाना पसंद फ़र्माते थे। यही ह़ाल आपकी आले पाक का था। यहाँ अक्षर से यही मुराद है। अल्लाह हर मुसलमान को अपने रसूल (ﷺ) की हर क़िस्म की सुन्नत पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ बख़्शे। ख़ास़ तौर पर मुद्दइयाने इल्म व फ़ज़्ल को जो कष्रत ख़ोरी (ज़्यादा खाने) में बदनाम हैं जैसे अकष्र पीरज़ादे सज्जादानशीन जो बकष्रत खा खाकर लह़ीम व शह़ीम (मोटे-ताज़े) बन जाते हैं, इल्ला माशा अल्लाह।

बाब 24 : तल्बीना या'नी ह़रीरा का बयान

٢٤- باب التَّلْبِينَةِ

5417. हमसे यह़्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील बिन ख़ालिद ने,

٥٤١٧- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ

عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهَا كَانَتْ إِذَا مَاتَ الْمَيِّتُ مِنْ أَهْلِهَا فَاجْتَمَعَ لِذَلِكَ النِّسَاءُ ثُمَّ تَفَرَّقْنَ، إِلاَّ أَهْلَهَا وَخَاصَّتَهَا، أَمَرَتْ بِبُرْمَةٍ مِنْ تَلْبِينَةٍ فَطُبِخَتْ، ثُمَّ صُنِعَ ثَرِيدٌ فَصُبَّتِ التَّلْبِينَةُ عَلَيْهَا ثُمَّ قَالَتْ: كُلْنَ مِنْهَا، فَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((التَّلْبِينَةُ مُجِمَّةٌ لِفُؤَادِ الْمَرِيضِ، تَذْهَبُ بِبَعْضِ الْحُزْنِ)).

[طرفاه في : ٥٦٨٩، ٥٦٩٠].

उनसे इब्ने शिहाब ज़ुहरी ने, उनसे उ़र्वा ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतह्हरा ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कि जब किसी घर में किसी की वफ़ात हो जाती और उसकी वजह से औ़रतें जमा होतीं और फिर वो चली जातीं। स़िर्फ़ घर वाले और ख़ास़-ख़ास़ औ़रतें रह जातीं तो आप हाँडी में तल्बीना पकाने का हुक्म देतीं। वो पकाया जाता फिर षरीद बनाया जाता और तल्बीना उस पर डाला जाता। फिर उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) फ़र्मातीं कि उसे खाओ क्योंकि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना है आप फ़र्माते थे कि तल्बीना मरीज़ के दिल को तस्कीन देता है और उस का ग़म दूर करता है। (दीगर मक़ाम : 5689, 5690)

तश्रीह़ : तल्बीना आटे और दूध से या भूसी और दूध से बनाया जाता है। उसमें शहद भी डालते हैं और गोश्त के शोरबा में रोटी के टुकड़े डालकर पकाएँ तो उसे षरीद कहते हैं और कभी उसमें गोश्त भी शरीक रहता है।

٢٥- باب الثَّرِيدِ

बाब 25 : षरीद के बयान में

٥٤١٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ الْجَمَلِيِّ عَنْ مُرَّةَ الْهَمْدَانِيِّ، عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ ((كَمُلَ مِنَ الرِّجَالِ كَثِيرٌ، وَلَمْ يَكْمُلْ مِنَ النِّسَاءِ إِلاَّ مَرْيَمُ بِنْتُ عِمْرَانَ، وَآسِيَةُ امْرَأَةُ فِرْعَوْنَ، وَفَضْلُ عَائِشَةَ عَلَى النِّسَاءِ كَفَضْلِ الثَّرِيدِ عَلَى سَائِرِ الطَّعَامِ)).

[راجع: ٣٤١١]

हमसे मुह़म्मद बिन बश्शार ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे गुंदर ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन मुर्रह जमली ने बयान किया, उनसे मुर्रह हम्दानी ने, उनसे ह़ज़रत अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मर्दों में तो बहुत से कामिल हुए लेकिन औ़रतों में ह़ज़रत मरयम बिन्ते इमरान और फ़िरऔ़न की बीवी ह़ज़रत आसिया के सिवा और कोई कामिल नहीं हुआ और ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) की फ़ज़ीलत तमाम औ़रतों पर ऐसी है जैसे तमाम खानों पर षरीद की फ़ज़ीलत। (राजेअ़ : 3411)

तश्रीह़ : यहूदी ह़ज़रत मरयम अ़लैहस्सलाम को नऊ़ज़ुबिल्लाह बुरे लफ़्ज़ों से याद करते हैं। क़ुर्आन मजीद ने उनको स़िद्दीक़ा के लफ़्ज़ से मौसूम फ़र्माया और उनकी फ़ज़ीलत में ये ह़दीष़ वारिद हुई। इस त़रह इंजील यूह़न्ना 16 बाब का वो फ़िक़रा नबी करीम (ﷺ) पर ही स़ादिक़ हुआ कि वो मेरी बुज़ुर्गी करेगा। ह़ज़रत आसिया ज़ोजा फ़िरऔ़न का मक़ाम भी बहुत अकमल है और ह़ज़रत आ़इशा स़िद्दीक़ा (रज़ि.) के मक़ामे रफ़ीअ़ का क्या कहना है।

٥٤١٩- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَوْنٍ حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ عَنْ أَبِي طُوَالَةَ عَنْ أَنَسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((فَضْلُ عَائِشَةَ عَلَى

5419. हमसे अ़म्र बिन औ़न ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे अबू त़वाला ने और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया औ़रतों पर ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) की फ़ज़ीलत ऐसी

النِّسَاءِ كَفَضْلِ الثَّرِيدِ عَلَى سَائِرِ الطَّعَامِ))

है जैसे तमाम खानों पर ष़रीद की फ़ज़ीलत है।

٥٤٢٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُنِيرٍ، سَمِعَ أَبَا حَاتِمٍ الأَشْهَلَ بْنَ حَاتِمٍ حَدَّثَنَا ابْنُ عَوْنٍ عَنْ ثُمَامَةَ بْنِ أَنَسٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: دَخَلْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ عَلَى غُلاَمٍ لَهُ خَيَّاطٍ، فَقَدَّمَ إِلَيْهِ قَصْعَةً فِيهَا ثَرِيدٌ، قَالَ: وَأَقْبَلَ عَلَى عَمَلِهِ، قَالَ: فَجَعَلَ النَّبِيُّ ﷺ يَتَتَبَّعُ الدُّبَّاءَ، قَالَ: فَجَعَلْتُ أَتَتَبَّعُهُ فَأَضَعُهُ بَيْنَ يَدَيْهِ، قَالَ: فَمَا زِلْتُ بَعْدُ أُحِبُّ الدُّبَّاءَ. [راجع: ٢٠٩٢]

5420. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुनीर ने बयान किया, उन्होंने अबू ह़ातिम अश्हल इब्ने ह़ातिम से सुना, उनसे इब्ने औ़न ने बयान किया, उनसे ष़ुमामा बिन अनस ने और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) के साथ आपके एक ग़ुलाम के पास गया जो दर्ज़ी थे। उन्होंने आँह़ज़रत (ﷺ) के स ामने एक प्याला पेश किया जिसमें ष़रीद था। बयान किया कि फिर वो अपने काम में लग गये। बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) उसमें से कद्दू तलाश करने लगे। कहा कि फिर मैं भी उसमें से कद्दू तलाश कर करके आँह़ज़रत (ﷺ) के सामने रखने लगा। बयान किया कि उसके बाद से मैं भी कद्दू बहुत पसंद करता हूँ। (राजेअ़ : 2092)

तश्रीह : ष़रीद बेहतरीन खाना है जो सरीउ़ल हज़्म और जय्यदुल कीमूस और मक़्वी (ताक़त पहुँचाने वाला) है और कद्दू एक निहायत उ़म्दा तरकारी है। गर्म मुल्कों में जैसा कि अ़रब है उसका खाना बहुत ही मुफ़ीद है। ह़रारत, जिगर और तशंगी को रफ़ा करता है और क़ाबिज़ नहीं है न रियाह़ पैदा करता है। जल्द जल्द हज़्म होने वाली और बेहतरीन ग़िज़ा है। आँह़ज़रत (ﷺ) के पसंद फ़र्माने की वजह से अहले ईमान के लिये बहुत ही पसंदीदा है जामेदीन पर जो बज़ाहिर मुह़ब्बते रसूल (ﷺ) का दम भरते और अ़मलन बहुत सी सुनने नबवी से न सिर्फ़ मह़रूम बल्कि उनसे नफ़रत करते हैं। ऐसे मुक़ल्लिदीन को सोचना चाहिये कि क़यामत के दिन रसूले करीम (ﷺ) को क्या मुँह दिखलाएँगे।

٢٦- باب شَاةٍ مَسْمُوطَةٍ وَالْكَتِفِ وَالْجَنْبِ

बाब : 26 खाल समेत भुनी हुई बकरी और शाना और पसली के गोश्त का बयान

٥٤٢١- حَدَّثَنَا هُدْبَةُ بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا هَمَّامُ بْنُ يَحْيَى عَنْ قَتَادَةَ قَالَ : كُنَّا نَأْتِي أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ وَخَبَّازُهُ قَائِمٌ، قَالَ: كُلُوا، فَمَا أَعْلَمُ النَّبِيَّ ﷺ رَأَى رَغِيفًا مُرَقَّقًا حَتَّى لَحِقَ بِاللهِ، وَلاَ رَأَى شَاةً سَمِيطًا بِعَيْنِهِ قَطُّ. [راجع: ٥٣٨٥]

5422. हमसे हुदबा बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम बिन यह़्या ने बयान किया, उनसे क़तादा ने बयान किया कि हम ह़ज़रत अनस (रज़ि.) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए तो उनकी रोटी पकाने वाला उनके पास ही खड़ा था। उन्होंने कहा कि खाओ। मैं नहीं जानता कि नबी करीम (ﷺ) ने कभी पतली रोटी (चपाती) देखी हो। यहाँ तक कि आप अल्लाह से जा मिले और न आँह़ज़रत (ﷺ) ने कभी मुसल्लम भुनी हुई बकरी देखी। (राजेअ़ : 5585)

٥٤٢٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ جَعْفَرِ بْنِ عَمْرِو بْنِ أُمَيَّةَ الضَّمْرِيِّ عَنْ

5422. हमसे मुह़म्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें जा'फ़र बिन उ़मर बिन उमय्या ज़मरी ने, उन्हें उनके वालिद ने, उन्होंने बयान किया कि मैंने देखा कि

أَبِيهِ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَحْتَزُّ مِنْ كَتِفِ شَاةٍ فَأَكَلَ مِنْهَا، فَدُعِيَ إِلَى الصَّلاَةِ، فَقَامَ فَطَرَحَ السِّكِّينَ، فَصَلَّى وَلَمْ يَتَوَضَّأْ.

[راجع: ٢٠٨]

रसूलुल्लाह (ﷺ) बकरी के शाने में से गोश्त काट रहे थे, फिर आपने उसमें से खाया, फिर आपको नमाज़ के लिये बुलाया गया तो आप खड़े हो गये और छुरी डाल दी और नमाज़ पढ़ी लेकिन नया वुज़ू नहीं किया। (राजेअ : 208)

٢٧- باب مَا كَانَ السَّلَفُ يَدَّخِرُونَ فِي بُيُوتِهِمْ وَأَسْفَارِهِمْ مِنَ الطَّعَامِ وَاللَّحْمِ وَغَيْرِهِ وَقَالَتْ عَائِشَةُ وَأَسْمَاءُ: صَنَعْنَا لِلنَّبِيِّ ﷺ وَأَبِي بَكْرٍ سُفْرَةً.

बाब 27 : सलफ़े सालिहीन अपने घरों में और सफ़रों में जिस तरह का खाना मयस्सर होता

और गोश्त वग़ैरह महफ़ूज़ रख लिया करते थे और हज़रत आइशा और हज़रत अस्मा (रज़ि.) कहती हैं कि हमने नबी करीम (ﷺ) और हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के लिये (मक्का मुकर्रमा से मदीना मुनव्वरह के सफ़रे हिजरत के लिये) तौशा तैयार किया था (जिसे एक दस्तरख़्वान में बाँध दिया गया था)।

तश्रीह : उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) हज़रत सय्यदना अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) की बेटी हैं। उनकी माँ का नाम उम्मे रूमान ज़ैनब है जिनका सिलसिला नसब नबवी में किनाना से जा मिलता है। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) का नाम अ़ब्दुल्लाह बिन उ़ष्मान है। मर्दों में सबसे पहले यही इस्लाम लाए थे। हज़रत आइशा (रज़ि.) का निकाह रसूले करीम (ﷺ) से शव्वाल सन 10 नबवी में मक्का मुकर्रमा में हुआ और रुख़्सती शव्वाल सन 1 हिजरी में मदीना मुनव्वरह में हुई। यही वो ख़ातून उ़ज़्मा हैं जिनकी इस्लामी ख़ून से विलादत और इस्लामी दूध से परवरिश हुई। यही वो तय्यिबा ख़ातून हैं जिनका पहला निकाह सिर्फ़ रसूले करीम (ﷺ) से ही हुआ। उनके फ़ज़ाइल सियर व अहादीष़ में वारिद हुए हैं। इल्म व फ़ज़ल व तदय्युन व तक़्वा व सख़ावत में भी ये बेनज़ीर मक़ाम रखती थीं। हज़रत उ़र्वा बिन जुबैर (रज़ि.) कहते हैं कि मैंने देखा कि एक दिन म हज़रत आइशा (रज़ि.) ने सत्तर हज़ार दिरहम अल्लाह की राह में तक़्सीम फ़र्मा दिये, ख़ुद उनके जिस्म पर पेवन्द लगा हुआ करता था। एक और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) ने एक लाख दिरहम उनकी ख़िदमत में भेजे। उन्होंने सब उसी रोज़ अल्लाह की राह में सदक़ा कर दिये। उस दिन आप रोज़े से थीं। शाम को लौण्डी ने सूखी रोटी सामने रख दी और ये भी कहा कि अगर आप सालन के लिये कुछ दिरहम बचा लेतीं तो मैं सालन तैयार कर लेती। हज़रत सिद्दीक़ा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मुझे तो ख़्याल न रहा, तुझे याद दिला देना था। अ़ल्लामा इब्ने तैमिया (रह.) ने हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) और हज़रत आइशा (रज़ि.) के फ़ज़ाइल पर तब्सिरा करते हुए लिखा है कि दोनों में अलग अलग ऐसी ऐसी ख़ुसूसियात पाई जाती हैं जिनकी बिना पर हम दोनों ही को बहुत आ़ला व अफ़ज़ल यक़ीन रखते हैं। कुतुब अहादीष़ में हज़रत आइशा (रज़ि.) से 2210 अहादीष़ मरवी हैं जिनमें 174 अहादीष़ मुत्तफ़क़ अ़लैह हैं और सिर्फ़ बुख़ारी शरीफ़ में 54 और सिर्फ़ मुस्लिम मे 67 और दीगर कुतुबे अहादीष़ में 2017 अहादीष़ मरवी हैं। फ़तावा शरइया और हल्ल मुश्किलात इल्मिया और बयान रिवायात अ़रबिया और वाक़ियात तारीख़िया का शुमार उनके अ़लावा है। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने जंग जमल में शिर्कत की। आप उसमें एक ऊँट के होदज में सवार थीं, इसीलिये ये जंगे जमल के नाम से मशहूर हुई। मुक़ाबला हज़रत अली (रज़ि.) से था। जंग के ख़ात्मे पर हज़रत सिद्दीक़ा (रज़ि.) ने फ़र्माया था कि मेरी और हज़रत अ़ली (रज़ि.) की शकर रंजी ऐसी ही है जैसे उ़मूमन भावज और देवर में हो जाया करती है। हज़रत अ़ली (रज़ि.) ने फ़र्माया अल्लाह की क़सम यही बात है। अ़ल्लामा इब्ने हज़्म और अ़ल्लामा इब्ने तैमिया लिखते हैं कि फ़रीक़ेन में से कोई भी आग़ाज़ जंग करना नहीं चाहता था मगर चंद शरीरों ने जो क़त्ले उ़ष्मानी में मुलव्विष़ थे, इस तरह जंग करा दी कि रात को अस्हाबे जमल के लश्कर पर छापा मारा। वो समझे कि ये फ़ेअल बहुक्म व बइल्म हज़रत अ़ली (रज़ि.) हुआ है। उन्होंने भी मुदाफ़िअ़त में हमला किया और जंग बर्पा हो गई। अ़ल्लामा इब्ने हज़्म मज़ीद लिखते हैं कि उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) और हज़रत ज़ुबैर (रज़ि.) और हज़रत तलहा (रज़ि.) और उनके जुम्ला रुफ़्क़ा ने इमामत अ़ली (रज़ि.) के बत़लान या जरह में एक

लफ़्ज़ भी नहीं कहा न उन्होंने नक़्स बेअ़त किया न किसी दूसरे की बेअ़त की न अपने लिये कोई दा'वा किया। ये जुम्ला वजूह यक़ीन दिलाते हैं कि ये जंग सिर्फ़ इत्तिफ़ाक़ी ह़ादष़ा था जिसका दोनों जानिब किसी को ख़्याल भी न था (किताबुल फ़ज़ल फ़िलमाल ह़िस़्सा चहारुम पेज 158 मत्बूआ मिस्र सन 1317 हिजरी) उस जंग के बानी ख़ुद क़ातिलीन ह़ज़रत उ़ष़्मान (रज़ि.) थे जो दरपर्दा यहूदी थे। जिन्होंने मुसलमानों को तबाह करने का मंसूबा बनाकर बाद में क़िसास़ उ़ष़्मान (रज़ि.) का नाम लेकर और ह़ज़रत आ़इशा सि़द्दीक़ा (रज़ि.) को बहका फुसलाकर अपने साथ मिलाकर ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) के ख़िलाफ़ अ़लमे-बग़ावत बुलंद किया था। ये वाक़िया 15 जमादिष़्ष़ानी सन 36 हिजरी को पेश आया था। लड़ाई सुबह़ से तीसरे पहर तक रही। ह़ज़रत ज़ुबैर (रज़ि.) आग़ाज़ जंग से पहले ही स़फ़ से अलग हो गये थे। ह़ज़रत त़लह़ा (रज़ि.) शहीद हुए मगर जान बह़क़ होने से पेशतर उन्होंने बेअ़त मरतज़्वी की तजदीद ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) के एक अफ़सर के हाथ पर की थी (रज़ियल्लाहु अ़न्हुम अज्मईन)

5423. हमसे ख़ल्लाद बिन यह़्या ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने, उनसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन आ़बिस ने, उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि मैंने आ़इशा (रज़ि.) से पूछा क्या नबी करीम (ﷺ) ने तीन दिन से ज़्यादा क़ुर्बानी का गोश्त खाने को मना किया है? उन्होंने कहा कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने ऐसा कभी नहीं किया। सि़र्फ़ एक साल उसका हुक्म दिया था जिस साल क़ह़त़ पड़ा था। आँह़ज़रत (ﷺ) ने चाहा था (इस हुक्म के ज़रिये) कि जो माल वाले हैं वो (गोश्त मह़फ़ूज़ करने के बजाय) मुह़ताजों को खिला दें और हम बकरी के पाये मह़फ़ूज़ रख लेते थे और उसे पन्द्रह पन्द्रह दिन बाद खाते थे। उनसे पूछा गया कि ऐसा करने के लिये क्या मजबूरी थी? उस पर उम्मुल मोमिनीन (रज़ि.) हंस पड़ीं और फ़र्माया आले मुह़म्मद (ﷺ) ने सालन के साथ गेहूँ की रोटी तीन दिन तक बराबर कभी नहीं खाई यहाँ तक कि आप (ﷺ) अल्लाह से जा मिले। और इब्ने कष़ीर ने बयान किया कि हमें सुफ़यान ने ख़बर दी, उनसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन आ़बिस ने यही ह़दीष़ बयान की। (दीगर मक़ामात : 5438, 5570, 6687)

٥٤٢٣- حَدَّثَنَا خَلاَّدُ بْنُ يَحْيَى حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَابِسٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ : قُلْتُ لِعَائِشَةَ أَنَهَى النَّبِيُّ ﷺ أَنْ تُؤْكَلَ لُحُومُ الأَضَاحِي فَوْقَ ثَلاَثٍ؟ قَالَتْ : مَا فَعَلَهُ إِلاَّ فِي عَامٍ جَاعَ النَّاسُ فِيهِ، فَأَرَادَ أَنْ يُطْعِمَ الْغَنِيُّ الْفَقِيرَ. وَإِنْ كُنَّا لَنَرْفَعُ الْكُرَاعَ فَنَأْكُلُهُ بَعْدَ خَمْسَ عَشْرَةَ. قِيلَ : مَا اضْطَرَّكُمْ إِلَيْهِ؟ فَضَحِكَتْ، قَالَتْ مَا شَبِعَ آلُ مُحَمَّدٍ ﷺ مِنْ خُبْزِ بُرٍّ مَأْدُومٍ ثَلاَثَةَ أَيَّامٍ حَتَّى لَحِقَ بِا للهِ. وَقَالَ ابْنُ كَثِيرٍ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَابِسٍ بِهَذَا.

[أطرافه في : ٥٤٣٨، ٥٥٧٠، ٦٦٨٧].

इस सनद के बयान करने से ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) की ये ग़र्ज़ है कि सुफ़यान का सिमाअ़ अ़ब्दुर्रह़मान से ष़ाबित हो जाए। इब्ने कष़ीर की रिवायत को त़बरानी ने वस़्ल किया।

5424. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अ़म्र ने, उनसे अ़त़ा ने और उनसे ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि (मक्का मुकर्रमा से ह़ज्ज की) क़ुर्बानी का गोश्त हम नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में मदीना मुनव्वरह लाते थे। उसकी मुताबअ़त मुह़म्मद ने की इब्ने उ़यय़ना के वास्त़े से और इब्ने जुरैज ने बयान किया कि मैंने अ़त़ा से पूछा क्या ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.)

٥٤٢٤- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرٍو عَنْ عَطَاءٍ عَنْ جَابِرٍ قَالَ: كُنَّا نَتَزَوَّدُ لُحُومَ الْهَدْيِ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ إِلَى الْمَدِينَةِ. تَابَعَهُ مُحَمَّدٌ عَنِ ابْنِ عُيَيْنَةَ وَقَالَ ابْنُ جُرَيْجٍ: قُلْتُ

ने ये भी कहा था कि यहाँ तक कि हम मदीना मुनव्वरा आ गये? उन्होंने कहा कि उन्होंने ये नहीं कहा था। (राजेअ : 1719)

لِعَطَاءٍ : أَقَالَ حَتَّى جِئْنَا الْمَدِينَةَ قَالَ: لاَ.
[راجع:١٧١٩]

तश्रीह : ह़ालाँकि अ़म्र बिन दीनार की रिवायत में ये मौजूद है तो शायद अ़त़ा से ये ह़दीष़ बयान करने में ग़लती हुई। कभी उन्होंने उस लफ़्ज़ को याद रखा, कभी इंकार किया। मुस्लिम की रिवायत में यूँ है। मैंने अ़त़ा से पूछा किया जाबिर (रज़ि.) ने ये कहा है **हत्ता जिअनल्मदीनत** उन्होंने कहा कि हाँ कहा है।

बाब 28 : हैस का बयान

٢٨- باب الْحَيْسِ

वो ह़लवा जो खजूर, घी और आटे से बनाया जाता है।

5425. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे मुत्तलिब बिन अ़ब्दुल्लाह बिन हन्तब के ग़ुलाम अ़म्र बिन अबी अ़म्र ने, उन्हों ने ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ह़ज़रत अबू त़लह़ा (रज़ि.) से फ़र्माया कि अपने यहाँ के बच्चों में कोई बच्चा तलाश कर लाओ जो मेरे काम कर दिया करे। चुनाँचे ह़ज़रत अबू त़लह़ा (रज़ि.) मुझे अपनी सवारी पर अपने पीछे बिठाकर लाए। मैं आँह़ज़रत (ﷺ) की जब भी आप कहीं पड़ाव करते ख़िदमत करता। मैं सुना करता था कि आँह़ज़रत (ﷺ) बकष़रत ये दुआ पढ़ा करते थे। ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह माँगता हूँ ग़म से, रंज से, अ़जज़ से, सुस्ती से, बुख़्ल से, बुज़दिली से, क़र्ज़ के बोझ से और लोगों के ग़लबे से। (ह़ज़रत अनस रज़ि. ने बयान किया कि) फिर मैं उस वक़्त से बराबर आपकी ख़िदमत करता रहा। यहाँ तक कि हम ख़ैबर से वापस हुए और ह़ज़रत स़फ़िया बिन्ते हुय्यि (रज़ि.) भी साथ थीं। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उन्हें पसंद फ़र्माया था। मैं देखता था कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनके लिये अपनी सवारी पर पीछे कपड़े से पर्दा किया और फिर उन्हें वहाँ बिठाया। आख़िर जब हम मक़ामे स़ह्बा में पहुँचे तो आपने दस्तरख़्वान पर हैस (खजूर, पनीर और घी वग़ैरह का मलीदा) बनाया फिर मुझे भेजा और मैं लोगों को बुला लाया, फिर सब लोगों ने उसे खाया। यही आँह़ज़रत (ﷺ) की त़रफ़ से ह़ज़रत स़फ़िया (रज़ि.) से निकाह की दा'वते वलीमा थी। फिर आप रवाना हुए और जब उहुद दिखाई दिया तो आपने फ़र्माया कि ये पहाड़ हमसे मुह़ब्बत रखता है और हम उससे मुह़ब्बत रखते हैं।

٥٤٢٥- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ عَمْرِو بْنِ أَبِي عَمْرٍو مَوْلَى الْمُطَّلِبِ بْنِ عَبْدِ اللهِ حَنْطَبٍ أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لأَبِي طَلْحَةَ: ((الْتَمِسْ غُلاَمًا مِنْ غِلْمَانِكُمْ يَخْدُمُنِي))، فَخَرَجَ بِي أَبُو طَلْحَةَ يُرْدِفُنِي وَرَاءَهُ، فَكُنْتُ أَخْدُمُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كُلَّمَا نَزَلَ فَكُنْتُ أَسْمَعُهُ يُكْثِرُ أَنْ يَقُولَ: ((اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحَزَنِ، وَالْعَجْزِ وَالْكَسَلِ، وَالْبُخْلِ وَالْجُبْنِ، وَضَلَعِ الدَّيْنِ وَغَلَبَةِ الرِّجَالِ)). فَلَمْ أَزَلْ أَخْدُمُهُ حَتَّى أَقْبَلْنَا مِنْ خَيْبَرَ، وَأَقْبَلَ بِصَفِيَّةَ بِنْتِ حُيَيٍّ قَدْ حَازَهَا، فَكُنْتُ أَرَاهُ يُحَوِّي لَهَا وَرَاءَهُ بِعَبَاءَةٍ أَوْ بِكِسَاءٍ ثُمَّ يُرْدِفُهَا وَرَاءَهُ حَتَّى إِذَا كُنَّا بِالصَّهْبَاءِ صَنَعَ حَيْسًا فِي نِطَعٍ، ثُمَّ أَرْسَلَنِي فَدَعَوْتُ رِجَالاً فَأَكَلُوا، وَكَانَ ذَلِكَ بِنَاءَهُ بِهَا ثُمَّ أَقْبَلَ حَتَّى إِذَا بَدَا لَهُ أُحُدٌ قَالَ : ((هَذَا جَبَلٌ يُحِبُّنَا وَنُحِبُّهُ)). فَلَمَّا أَشْرَفَ عَلَى

उसके बाद जब मदीना नज़र आया तो फ़र्माया, ऐ अल्लाह! मैं उसके दोनों पहाड़ों के दरम्यानी इलाक़े को उसी तरह हुर्मत वाला इलाक़ा बनाता हूँ जिस तरह हज़रत इब्राहीम (अलैहि.) ने मक्का को हुर्मत वाला शहर बनाया था। ऐ अल्लाह! उसके रहने वालों को बरकत अता फ़र्मा। उनके मुद्द में और उनके साअ में बरकत फ़र्मा। (राजेअ : 371)

الْمَدِينَةِ قَالَ: ((اللَّهُمَّ إِنِّي أُحَرِّمُ مَا بَيْنَ لاَبَتَيْهَا مِثْلَ مَا حَرَّمَ بِهِ إِبْرَاهِيمُ مَكَّةَ، اللَّهُمَّ بَارِكْ لَهُمْ فِي مُدِّهِمْ وَصَاعِهِمْ)).

[راجع: ٣٧١]

तश्रीह : अल्लाह तआला ने अपने हबीब की दुआ कुबूल फ़र्माई और मदीना को मिष्ले मक्का के बरकतों से मालामाल फ़र्मा दिया। मदीना की आबो-हवा मुअतदिल (संतुलित) है और वहाँ का पानी शीरीं और वहाँ की ग़िज़ा बेहतरीन अष़रात रखती है। मदीना भी मक्का की तरह हरम है जो लोग मदीना की हुर्मत का इंकार करते हैं वो सख़्त ग़लती पर हैं। इस बारे में अहले हदीष़ ही का मसलक सहीह है कि मदीना भी मिष्ले मक्का हरम है। **ज़ादल्लाहु शर्फ़न व तअ़ज़ीमन**

हज़रत सफ़िया बिन्ते हुय्यि बिन अख़्तब बिन शुअबा सब्त हज़रत हारून (अलैहि.) से हैं। उनकी माँ का नाम बर्रा बिन्ते सम्वाल था। ये जंगे ख़ैबर में सबाया में थीं। हज़रत दह्या कल्बी (रज़ि.) ने उनके लिये दरख़्वास्त की मगर लोगों ने कहा कि ये बनू कुरैज़ा और बनू नज़ीर की सय्यदा हैं उसे नबी करीम (ﷺ) अपने हरम में दाख़िल फ़र्मा लें तो बेहतर है। चुनाँचे उनको आज़ाद करके आपने उनसे निकाह कर लिया। एक रोज़ नबी करीम (ﷺ) ने देखा कि हज़रत सफ़िया (रज़ि.) रो रही हैं। आपने वजह पूछी तो उन्होंने कहा कि मैंने सुना है कि हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) मुझको हक़ीर समझती हैं और अपने लिये बतौरे फ़ख़्र कहती हैं कि मेरा नसबनामा रसूले करीम (ﷺ) से मिलता है। नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुमने क्यूँ न कह दिया कि तुम मुझसे क्यूँकर बेहतर हो सकती हो। मेरे बाप हज़रत हारून (अलैहिस्सलाम) और मेरे चचा हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) और मेरे शौहर हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह (ﷺ) हैं। एक बार हज़रत सफ़िया (रज़ि.) की एक लौण्डी ने हज़रत फ़ारूक़ (रज़ि.) से आकर शिकायत की कि हज़रत सफ़िया (रज़ि.) सब्त (शनिवार) की इज़्ज़त करती हैं और यहूद को अतियात देती हैं। हज़रत उमर (रज़ि.) ने उनसे दरयाफ़्त कर भेजा। उन्होंने कहा कि जबसे अल्लाह ने हमको जुम्आ अता किया है मैंने सब्त कभी पसंद नहीं किया। रहे यहूदी उनसे मेरी क़राबत के ता'ल्लुक़ात हैं और मैं उनको ज़रूर देती रहती हूँ। फिर हज़रत सफ़िया (रज़ि.) ने उस लौण्डी से पूछा कि उस शिकायत की वजह क्या है? लौण्डी ने कहा कि मुझे शैतान ने बहका दिया था। हज़रत सफ़िया (रज़ि.) ने उनको राहे लिल्लाह आज़ाद कर दिया। हज़रत सफ़िया (रज़ि.) का इंतिक़ाल रमज़ान सन 50 हिजरी में हुआ। उनसे दस अहादीष़ मरवी हैं। उनके मामू रिफ़ाआ बिन सम्वाल सहाबी थे। उनकी हदीष़ मौता इमाम मालिक में है। (रहमतुल लिल् आलमीन, जिल्द दोम पेज नं. 222)

बाब 29 : चाँदी के बर्तन में खाना कैसा है?

٢٩- باب الأَكْلِ فِي إِنَاءٍ مُفَضَّضٍ

5426. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे सैफ़ बिन अबी सुलैमान ने, कहा कि मैंने मुजाहिद से सुना, कहा कि मुझसे अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला ने बयान किया कि ये लोग हुज़ैफ़ा बिन अल यमान (रज़ि.) की ख़िदमत में मौजूद थे। उन्होंने पानी मांगा तो एक मजूसी ने उनको पानी (चाँदी के प्याले में) लाकर दिया। जब उसने प्याला उनके हाथ में दिया तो उन्होंने प्याले को उस पर फेंककर मारा और कहा अगर मैंने उसे बारहा उससे मना न किया होता (कि चाँदी सोने

٥٤٢٦- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا سَيْفُ بْنُ أَبِي سُلَيْمَانَ قَالَ: سَمِعْتُ مُجَاهِدًا يَقُولُ: حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي لَيْلَى أَنَّهُمْ كَانُوا عِنْدَ حُذَيْفَةَ، فَاسْتَسْقَى فَسَقَاهُ مَجُوسِيٌّ، فَلَمَّا وَضَعَ الْقَدَحَ فِي يَدِهِ رَمَاهُ بِهِ وَقَالَ: لَوْ لاَ أَنِّي نَهَيْتُهُ غَيْرَ مَرَّةٍ وَلاَ مَرَّتَيْنِ، كَأَنَّهُ يَقُولُ: لَمْ أَفْعَلْ هَذَا، وَلَكِنِّي

سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((لاَ تَلْبَسُوا الْحَرِيرَ وَلاَ الدِّيبَاجَ، وَلاَ تَشْرَبُوا فِي آنِيَةِ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَلاَ تَأْكُلُوا فِي صِحَافِهَا، فَإِنَّهَا لَهُمْ فِي الدُّنْيَا وَلَنَا فِي الآخِرَةِ)).

के बर्तन में मुझे कुछ न दिया करो) आगे वो ये फ़र्माना चाहते थे कि तो मैं उससे ये मामला न करता लेकिन मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है कि रेशम व दीबा न पहनो और न सोने चाँदी के बर्तन में कुछ पीयो और न उनकी प्लेटों में कुछ खाओ क्योंकि ये चीज़ें उन (कुफ़्फ़ार के लिये) दुनिया में हैं और हमारे लिये आख़िरत में हैं।

चाँदी सोने के बर्तनों में खाना पीना मुसलमानों के लिये क़त्अन हराम है।

٣٠- باب ذِكْرِ الطَّعَامِ

बाब 30 : खाने का बयान

٥٤٢٧- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَثَلُ الْمُؤْمِنِ الَّذِي يَقْرَأُ الْقُرْآنَ كَمَثَلِ الأُتْرُجَّةِ: رِيحُهَا طَيِّبٌ وَطَعْمُهَا طَيِّبٌ، وَمَثَلُ الْمُؤْمِنِ الَّذِي لاَ يَقْرَأُ الْقُرْآنَ كَمَثَلِ التَّمْرَةِ: لاَ رِيحَ لَهَا وَطَعْمُهَا حُلْوٌ، وَمَثَلُ الْمُنَافِقِ الَّذِي يَقْرَأُ الْقُرْآنَ كَمَثَلِ الرَّيْحَانَةِ: رِيحُهَا طَيِّبٌ وَطَعْمُهَا مُرٌّ. وَمَثَلُ الْمُنَافِقِ الَّذِي لاَ يَقْرَأُ الْقُرْآنَ كَمَثَلِ الْحَنْظَلَةِ: لَيْسَ لَهَا رِيحٌ، وَطَعْمُهَا مُرٌّ)).

[راجع: ٥٠٢٠]

5427. हमसे क़ुतैबा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, उनसे क़तादा ने बयान किया, उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया और उनसे हज़रत अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया उस मोमिन की मिष़ाल जो क़ुर्आन पढ़ता हो संतरे जैसी है जिसकी ख़ुश्बू भी पाकीज़ा है और मज़ा भी पाकीज़ा है और उस मोमिन की मिष़ाल जो क़ुर्आन नहीं पढ़ता खजूर जैसी है जिसमें कोई ख़ुश्बू नहीं होती लेकिन मज़ा मीठा होता है और मुनाफ़िक़ की मिष़ाल जो क़ुर्आन पढ़ता हो, रैहाना (फूल) जैसी है जिसकी ख़ुश्बू तो अच्छी होती है लेकिन मज़ा कड़वा होता है और जो मुनाफ़िक़ क़ुर्आन भी नहीं पढ़ता उसकी मिष़ाल उंदराइन जैसी है जिसमें कोई ख़ुश्बू नहीं होती और जिसका मज़ा भी कड़वा होता है। (राजेअ : 5020)

तश्रीह : इस हदीष़ से हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये निकाला कि मज़ेदार और ख़ुश्बूदार खाना खाना दुरुस्त है क्योंकि मोमिन की मिष़ाल आपने उससे दी। हदीष़ से ये भी निकला कि अगर हलाल तौर से अल्लाह तआला मज़ेदार खाना इनायत फ़र्माए तो उसे ख़ुशी से खाए, हक़ तआला का शुक्र बजा लाए और मज़ेदार खाने खाना ज़ुहद (तक़्वा) और दरवेशी के ख़िलाफ़ नहीं है और जो कुछ जाहिल फ़क़ीर मज़ेदार खाने को पानी या नमक मिलाकर बदमज़ा करके खाते हैं ये अच्छा नहीं है। कुछ बुज़ुर्गों ने कहा है कि ख़ुश ज़ायक़ा पर ख़ुश होना चाहिये। उसे बद मज़ा बनाना हिमाक़त और नादानी है। ऐसे जाहिल फ़क़ीर शरीअ़ते इलाही को उलट-पलट करने वाले हलाल व हराम की न परवाह करने वाले दरहक़ीक़त दुश्मनाने इस्लाम होते हैं। अइज़्ना मिन शुरूरिहिम आमीन

٥٤٢٨- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا خَالِدٌ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَنَسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((فَضْلُ عَائِشَةَ عَلَى النِّسَاءِ

5428. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, औरतों पर आइशा (रज़ि.) की फ़ज़ीलत ऐसी है जैसे

तमाम खानों पर ष़रीद की फ़ज़ीलत है।

كَفَضْلِ الثَّرِيدِ عَلَى سَائِرِ الطَّعَامِ)).

इसीलिये ष़रीद खाना भी गोया बेहतरीन खाना खाना है जो आज भी मुसलमानों में मरग़ूब है। ख़ुसूसन मुहब्बाने रसूल (ﷺ) में आज भी ष़रीद बनाकर खाना मरग़ूब है।

5429. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे मालिक ने बयान किया, उनसे सुमय ने, उनसे अबू स़ालेह ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, सफ़र अ़ज़ाब का एक टुकड़ा है, जो इंसान को सोने और खाने से रोक देता है। पस जब किसी शख़्स की सफ़री ज़रूरत हस्बे मंशा पूरी हो जाए तो उसे जल्द ही घर वापस आ जाना चाहिये। (राजेअ़: 1804)

٥٤٢٩- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ سُمَيٍّ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((السَّفَرُ قِطْعَةٌ مِنَ الْعَذَابِ: يَمْنَعُ أَحَدَكُمْ نَوْمَهُ وَطَعَامَهُ، فَإِذَا قَضَى نَهْمَتَهُ مِنْ وَجْهِهِ فَلْيُعَجِّلْ إِلَى أَهْلِهِ)).

[راجع:١٨٠٤]

तश्रीह़ : पहले ज़मानों में सफ़र वाक़ई नमूना-ए-सक़र होता था आज के ह़ालात बदल गये हैं फिर भी सफ़र मे तकलीफ़ होती है। इसलिये इस ह़दीष़ का हुक्म आज भी बाक़ी है।

बाब 31 : सालन का बयान

٣١- باب الأُدْمِ

5430. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन जा'फ़र ने, उनसे रबीअ़ा ने, उन्होंने क़ासिम बिन मुह़म्मद से सुना, आपने बयान किया कि बरीरह (रज़ि.) के साथ शरीअ़त की तीन सुन्नतें क़ायम हुईं। ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने उन्हें (उनके मालिकों से) ख़रीदकर आज़ाद करना चाहा तो उनके मालिकों ने कहा कि विलाअ का ता'ल्लुक़ हमसे ही क़ायम होगा। (आ़इशा रज़ि. ने बयान किया कि) मैंने उसका ज़िक्र रसूलुल्लाह (ﷺ) से किया तो आपने फ़र्माया कि अगर तुम ये शर्त लगा भी लो जब भी विलाअ उसी के साथ क़ायम होगा जो आज़ाद करेगा। फिर बयान किया कि बरीरह आज़ाद की गईं और उन्हें इख़्तियार दिया गया कि अगर वो चाहें तो अपने शौहर के साथ रहें या उनसे अलग हो जाएँ और तीसरी बात ये है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) एक दिन आ़इशा (रज़ि.) के घर तशरीफ़ लाए, चूल्हे पर हाँडी पक रही थी। आपने दोपहर का खाना त़लब किया तो रोटी और घर में मौजूद सालन पेश किया गया। आँह़ज़रत (ﷺ) ने दरयाफ़्त फ़र्माया क्या मैंने गोश्त (पकते हुए) नहीं देखा है? अ़र्ज़ किया कि देखा है या रसूलल्लाह! लेकिन वो गोश्त तो बरीरह को स़दक़ा में मिला है, उन्होंने हमें हदिया के त़ौर पर दिया है। आपने फ़र्माया उनके लिये वो स़दक़ा है

٥٤٣٠- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ رَبِيعَةَ أَنَّهُ سَمِعَ الْقَاسِمَ بْنَ مُحَمَّدٍ يَقُولُ : كَانَ فِي بَرِيرَةَ ثَلاَثُ سُنَنٍ: أَرَادَتْ عَائِشَةُ أَنْ تَشْتَرِيَهَا فَتُعْتِقَهَا، فَقَالَ أَهْلُهَا: وَلَنَا الْوَلاَءُ. فَذَكَرَتْ ذَلِكَ لِرَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: ((لَوْ شِئْتِ اشْتَرَطْتِيهِ لَهُمْ، فَإِنَّمَا الْوَلاَءُ لِمَنْ أَعْتَقَ)). قَالَ : وَأُعْتِقَتْ فَخُيِّرَتْ فِي أَنْ تَقِرَّ تَحْتَ زَوْجِهَا أَوْ تُفَارِقَهُ. وَدَخَلَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَوْمًا بَيْتَ عَائِشَةَ وَعَلَى النَّارِ بُرْمَةٌ تَفُورُ، فَدَعَا بِالْغَدَاءِ فَأُتِيَ بِخُبْزٍ وَأُدْمٍ مِنْ أُدْمِ الْبَيْتِ، فَقَالَ: ((أَلَمْ أَرَ لَحْمًا؟)) قَالُوا: بَلَى يَا رَسُولَ اللهِ. وَلَكِنَّهُ لَحْمٌ تُصُدِّقَ بِهِ عَلَى بَرِيرَةَ فَأَهْدَتْهُ لَنَا فَقَالَ: ((هُوَ صَدَقَةٌ عَلَيْهَا وَهَدِيَّةٌ لَنَا)).

लेकिन हमारे लिये हदिया है। [راجع: ٤٥٦]

बाब 32 : मीठी चीज़ और शहद का बयान

٣٢- باب الْحَلْوَاءِ وَالْعَسَلِ

5431. मुझसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम हंज़िली ने बयान किया, उनसे अबू उसामा ने, उनसे हिशाम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे मेरे वालिद ने ख़बर दी और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) मीठी चीज़ और शहद पसंद फ़र्माया करते थे। (राजेअ : 4912)

٥٤٣١- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الْحَنْظَلِيُّ عَنْ أُسَامَةَ عَنْ هِشَامٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يُحِبُّ الْحَلْوَاءَ. وَالْعَسَلَ. [راجع: ٤٩١٢]

इस नियत से मीठी चीज़ और शहद खाना भी ऐन षवाब है। मुहब्बते नबवी का तक़ाज़ा यही है कि जो चीज़ आपने पसंद फ़र्माई हम भी उसे पसंद करें ऐसे ही लोगों का नाम अहले हदीष है।

5432. हमसे अब्दुर्रहमान बिन शैबा ने बयान किया, कहा कि मुझे इब्ने अबी अल फ़ुदैक ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने अबी ज़िब ने, उन्हें मक़्बरी ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं पेट भरने के बाद हर वक़्त नबी करीम (ﷺ) के साथ ही रहा करता था। उस वक़्त मैं रोटी नहीं खाता था, न रेशम पहनता था, न फ़लाँ और फ़लानी मेरी ख़िदमत करते थे (भूख की शिद्दत की वजह से कुछ औक़ात) मैं अपने पेट पर कंकरियाँ लगा लेता और कभी में किसी से कोई आयत पढ़ने के लिये कहता हालाँकि वो मुझे याद होती। मक़्सद सिर्फ़ ये होता कि वो मुझे अपने साथ ले जाए और खाना खिला दे और मिस्कीनों के लिये सबसे बेहतरीन शख़्स हज़रत जा'फ़र बिन अबी तालिब (रज़ि.) थे, हमें अपने घर साथ ले जाते और जो कुछ भी घर में होता खिला देते थे। कभी तो ऐसा होता कि घी का डब्बा निकालकर लाते और उसमें कुछ न होता। हम उसे फाड़कर उसमें जो कुछ लगा होता चाट लेते थे। (राजेअ : 3708)

٥٤٣٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ شَيْبَةَ قَالَ: أَخْبَرَنِي ابْنُ أَبِي الْفُدَيْكِ عَنِ ابْنِ أَبِي ذِئْبٍ عَنِ الْمَقْبُرِيِّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ أَلْزَمُ النَّبِيَّ ﷺ لِشِبَعِ بَطْنِي، حِينَ لاَ آكُلُ الْخَبْزَ، وَلاَ أَلْبَسُ الْحَرِيرَ، وَلاَ يَخْدُمُنِي فُلاَنٌ وَلاَ فُلاَنَةُ، وَأُلْصِقُ بَطْنِي بِالْحَصْبَاءِ، وَأَسْتَقْرِئُ الرَّجُلَ الآيَةَ وَهْيَ مَعِي كَيْ يَنْقَلِبَ بِي فَيُطْعِمَنِي. وَخَيْرُ النَّاسِ لِلْمَسَاكِينِ جَعْفَرُ بْنُ أَبِي طَالِبٍ : يَنْقَلِبُ بِنَا فَيُطْعِمُنَا مَا كَانَ فِي بَيْتِهِ، حَتَّى إِنْ كَانَ لَيُخْرِجُ إِلَيْنَا الْعُكَّةَ لَيْسَ فِيهَا شَيْءٌ، فَنَشْتَقُّهَا فَنَلْعَقُ مَا فِيهَا. [راجع: ٣٧٠٨]

तश्रीह : इब्ने मुनीर ने कहा चूँकि अकषर कुप्पियों में शहद होता है और एक तरीक़ में उसकी सराहत आई है या'नी शहद की कुप्पी तो बाब की मुनासबत हासिल हो गई। गोया इमाम बुख़ारी (रह.) ने इस तरीक़ की तरफ़ इशारा किया घी का डब्बा भी मुराद हो सकता है। हज़रत जा'फ़र बिन अबी तालिब (रज़ि.) हज़रत अली (रज़ि.) से दस साल बड़े थे। मुहाजिरीने हब्शा के सरदार रहे। सन 7 हिजरी में मदीना वापस तशरीफ़ लाए। आँहज़रत (ﷺ) ग़ज़्व-ए-ख़ैबर में थे ये भी वहाँ पहुँच गये। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं नहीं कह सकता कि मुझको फ़तहे ख़ैबर की ख़ुशी ज़्यादा है या जा'फ़र के आने की। सन 8 हिजरी में जंगे मौता में शहीद हुए। तलवार और नेज़े के नब्बे से ज़्यादा ज़ख़्म उनके सामने की तरफ़ मौजूद

थे। दोनों बाज़ू जड़ से कट गये थे उम्र मुबारक बवक़्ते शहादत चालीस साल की थी।

बाब 33 : कद्दू का बयान

٣٣- باب الدُّبَّاء

5433. हमसे अ़म्र बिन अ़ली ने बयान किया, कहा हमसे अज़हर बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे इब्ने औ़न ने, उनसे षुमामा बिन अनस ने और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपने एक दर्ज़ी गुलाम के पास तशरीफ़ ले गये, फिर आपकी ख़िदमत में (पका हुआ) कद्दू पेश किया गया और आप उसे (रग़बत के साथ) खाने लगे। उसी वक़्त से मैं भी कद्दू पसंद करता हूँ क्योंकि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को उसे मैंने खाते हुए देखा है। (राजेअ़ : 2092)

٥٤٣٣- حدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ حَدَّثَنَا أَزْهَرُ بْنُ سَعْدٍ عَنِ ابْنِ عَوْنٍ عَنْ ثُمَامَةَ بْنِ أَنَسٍ عَنْ أَنَسٍ أَنَّ رسول الله ﷺ أَتَى مَوْلًى لَهُ خَيَّاطًا، فَأُتِيَ بِدُبَّاءٍ فَجَعَلَ يَأْكُلُهُ، فَلَمْ أَزَلْ أُحِبُّهُ مُنْذُ رَأَيْتُ رَسُولَ الله ﷺ يَأْكُلُهُ. [راجع: ٢٠٩٢]

तश्रीह़ : एक रिवायत में है कि ह़ज़रत अनस (रज़ि.) कद्दू खाते और कहते तू वो पेड़ है जो मुझको बहुत ही ज़्यादा मह़बूब है क्योंकि आँह़ज़रत (ﷺ) तुझसे मुह़ब्बत रखते थे। इमाम अह़मद ने रिवायत किया है कि कद्दू आपको सब खानों में ज़्यादा पसंद था। ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने रिवायत किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया हाँडी में कद्दू ज़्यादा डालो इससे आदमी का रंज दूर होता है। एक ह़दीष़ में है कि कद्दू और ख़ुर्मा वो दोनों जन्नत के मेवे हैं। एक ह़दीष़ में है कि कद्दू से दिमाग़ को त़ाक़त होती है। एक ह़दीष़ में है कि कद्दू बस़ारत को क़वी करता और क़ल्ब (दिल) को रोशन करता है।

बाब 34 : अपने दोस्तों और मुसलमान भाइयों की दा'वत के लिये खाना तकल्लुफ़ से तैयार कराए

٣٤- باب الرَّجُلِ يَتَكَلَّفُ الطَّعَامَ لإِخْوَانِهِ.

सिर्फ़ इतना ही तकल्लुफ़ जो ह़द्दे इस्राफ़ में न हो।

5434. हमसे मुह़म्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अबू वाइल ने और उनसे अबू मसऊ़द अंस़ारी (रज़ि.) ने बयान किया कि जमाअ़ते अंस़ार में एक स़ाह़ब थे जिन्हें अबू शुऐ़ब कहा जाता था। उनके पास एक गुलाम था जो गोश्त बेचता था। ह़ज़रत अबू शुऐ़ब (रज़ि.) ने उन गुलाम से कहा कि तुम मेरी त़रफ़ से खाना तैयार कर दो। मैं चाहता हूँ कि रसूलुल्लाह (ﷺ) समेत पाँच आदमियों की दा'वत करूँ। चुनाँचे वो हुज़ूर अकरम (ﷺ) को चार दूसरे आदमियों के साथ बुलाकर लाए। उनके साथ एक स़ाह़ब भी चलने लगे तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हम पाँच आदमियों की तुमने दा'वत की है मगर ये स़ाह़ब भी हमारे साथ आ गये हैं, अगर चाहो तो इन्हें इजाज़त दो और

٥٤٣٤- حدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ الأَنْصَارِيِّ قَالَ: كَانَ مِنَ الأَنْصَارِ رَجُلٌ يُقَالُ لَهُ أَبُو شُعَيْبٍ، وَكَانَ لَهُ غُلاَمٌ لَحَّامٌ، فَقَالَ: اصْنَعْ لِي طَعَامًا أَدْعُو رَسُولَ الله ﷺ خَامِسَ خَمْسَةٍ، فَدَعَا رَسُولَ الله ﷺ خَامِسَ خَمْسَةٍ، فَتَبِعَهُمْ رَجُلٌ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّكَ دَعَوْتَنَا خَامِسَ خَمْسَةٍ، وَهَذَا رَجُلٌ قَدْ

अगर चाहो मना कर दो। ह़ज़रत अबू शुऐब (रज़ि.) ने कहा कि मैंने उन्हें भी इजाज़त दे दी। मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया कि मैंने मुहम्मद बिन इस्माईल से सुना, वो बयान करते थे कि जब लोग दस्तरख़्वान पर बैठे हों तो उन्हें इसकी इजाज़त नहीं है कि एक दस्तरख़्वान वाले दूसरे दस्तरख़्वान वालों को अपने दस्तरख़्वान से उठाकर कोई चीज़ दें। अल्बत्ता एक ही दस्तरख़्वान पर उनके शुरका को उसमें से कोई चीज़ देने न देने का इख़्तियार है। (राजेअ : 2081)

تَبِعَنَا، فَإِنْ شِئْتَ أَذِنْتَ لَهُ وَإِنْ شِئْتَ تَرَكْتَهُ)). قَالَ بَلْ أَذِنْتُ لَهُ. قَالَ مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ: سَمِعْتُ مُحَمَّدَ بْنَ إِسْمَاعِيلَ يَقُولُ: إِذَا كَانَ الْقَوْمُ عَلَى الْمَائِدَةِ، لَيْسَ لَهُمْ أَنْ يُنَاوِلُوا مِنْ مَائِدَةٍ إِلَى مَائِدَةٍ أُخْرَى، وَلَكِنْ يُنَاوِلُ بَعْضُهُمْ بَعْضًا فِي تِلْكَ الْمَائِدَةِ أَوْ يَدَعُو.

[راجع: ٢٠٨١]

तश्रीह : बाब की मुताबक़त इससे निकली कि उसने ख़ास़ पाँच आदमियों का खाना तैयार कराया तो ज़रूर उसमें तकल्लुफ़ किया होगा। मा'लूम हुआ कि मेज़बान को इख़्तियार है कि जो बिन बुलाए चला आए, उसको इजाज़त दे या न दे। बिन बुलाए दा'वत में जाना ह़राम है मगर जब ये यक़ीन हो कि मेज़बान उसके जाने से ख़ुश होगा और दोनों में बेतकल्लुफ़ी हो तो दुरुस्त है। इसी त़रह़ अगर आ़म दा'वत है तो उसमें भी जाना जाइज़ है।

बाब 35 : स़ाह़िबे खाना के लिये ज़रूरी नहीं है कि मेहमान के साथ आप भी वो खाए

٣٥- بَابُ مَنْ أَضَافَ رَجُلاً إِلَى طَعَامٍ وَأَقْبَلَ هُوَ عَلَى عَمَلِهِ

5435. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुनीर ने बयान किया, उन्होंने नज़्र से सुना, उन्हें इब्ने औ़न ने ख़बर दी, कहा कि मुझे षुमामा बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अनस ने ख़बर दी और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं नौ उ़म्र था और रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ रहता था। आँह़ज़रत (ﷺ) अपने एक दर्ज़ी गुलाम के पास तशरीफ़ ले गये। वो एक प्याला लाया जिसमें खाना था और ऊपर कद्दू के क़तले थे। आप कद्दू तलाश करने लगे। ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि जब मैंने ये देखा तो कद्दू के क़तले आपके सामने जमा करके रखने लगा। ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि (प्याला आँह़ुज़ूर (ﷺ) के सामने रखने के बाद) गुलाम अपने काम में लग गया। ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि उसी वक़्त से मैं कद्दू पसंद करने लगा, जब मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) का ये अ़मल देखा। (राजेअ : 2092)

٥٤٣٥- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُنِيرٍ سَمِعَ النَّضْرَ أَخْبَرَنَا ابْنُ عَوْنٍ قَالَ : أَخْبَرَنِي ثُمَامَةُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَنَسٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ غُلاَمًا أَمْشِي مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَدَخَلَ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَلَى غُلاَمٍ لَهُ خَيَّاطٍ، فَأَتَاهُ بِقَصْعَةٍ فِيهَا طَعَامٌ وَعَلَيْهِ دُبَّاءٌ، فَجَعَلَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَتَتَبَّعُ الدُّبَّاءَ. قَالَ: فَلَمَّا رَأَيْتُ ذَلِكَ جَعَلْتُ أَجْمَعُهُ بَيْنَ يَدَيْهِ، قَالَ فَأَقْبَلَ الْغُلاَمُ عَلَى عَمَلِهِ. قَالَ أَنَسٌ: لاَ أَزَالُ أُحِبُّ الدُّبَّاءَ بَعْدَ مَا رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ صَنَعَ مَا صَنَعَ. [راجع: ٢٠٩٢]

कि आप कद्दू तलाश करके खा रहे थे, गुलाम दस्तरख़्वान पर खाना रखने के बाद दूसरे काम में लग गया और साथ खाने नहीं

बैठा। इससे बाब का मसला ष़ाबित हुआ।

बाब 36 : शोरबे का बयान

٣٦- باب الْمَرَقِ

5436. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक बिन अनस ने, उनसे इस्हाक़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबी त़लहा ने, उन्होंने ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना कि एक दर्ज़ी ने रसूलुल्लाह (ﷺ) को खाने की दा'वत दी जो उन्होंने आँहुज़ूर (ﷺ) के लिये तैयार किया था। मैं भी आपके साथ गया। आँह़ज़रत (ﷺ) के सामने जौ की रोटी और शोरबा पेश किया गया। जिसमें कद्दू और ख़ुश्क गोश्त के टुकड़े थे। मैंने देखा कि आँह़ज़रत (ﷺ) प्याले में चारों त़रफ़ कद्दू तलाश कर रहे थे। उसी दिन से मैं भी कद्दू पसंद करने लगा।

(राजेअ़ : 2092)

٥٤٣٦- حدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مالكٍ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ أَنَّ خَيَّاطًا دَعَا النَّبِيَّ ﷺ لِطَعَامٍ صَنَعَهُ، فَذَهَبْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فَقَرَّبَ خُبْزَ شَعِيرٍ، وَمَرَقًا فِيهِ دُبَّاءٌ وَقَدِيدٌ، رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَتَتَبَّعُ الدُّبَّاءَ مِنْ حَوَالَي الْقَصْعَةِ، فَلَمْ أَزَلْ أُحِبُّ الدُّبَّاءَ بَعْدَ يَوْمَئِذٍ. [راجع:٢٠٩٢]

मुहब्बत का यही तक़ाज़ा है जिसे महबूब पसंद करे उसे मुहिब्ब भी पसंद करे। सच है। इन्नल्मुहिब्ब लिमय्युहिब्बु मुत़ीउ़ जअलनल्लाहु मिन्हुम आमीन।

तश्रीह : ह़ज़रत इमाम मालिक बिन अनस बिन अस़बही इमामे दारुल हिजरत के लक़ब से मशहूर हैं। सन 95 हिजरी में पैदा हुए और बउ़म्र 84 साल सन 179 हिजरी में इंतिक़ाल फ़र्माया। शाह वलीउल्लाह (रह़.) फ़र्माते हैं कि जब किसी ह़दीष़ की सनद ह़ज़रत इमाम मालिक (रज़ि.) तक पहुँच जाती है तो वो ह़दीष़ निहायत आ़ला मक़ाम स़ेह़त तक पहुँच जाती है। ह़ज़रत इमाम शाफ़िई और ह़ज़रत हारून रशीद जैसे एक ह़ज़ार उ़लमा और वो लोग उनके शागिर्द हैं।

बाब 37 : ख़ुश्क़ किये हुए गोश्त के टुकड़े का बयान

٣٧- باب الْقَدِيدِ

5437. हमसे ह़कीम बिन अबू नुऐ़म ने बयान किया, कहा हमसे मालिक बिन अनस ने, उनसे इस्हाक़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने देखा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में शोरबा लाया गया। उसमें कद्दू और सूखे गोश्त के टुकड़े थे, फिर मैंने देखा कि आँह़ज़रत (ﷺ) उसमें से कद्दू के क़तले तलाश कर करके खा रहे थे। (राजेअ़ : 2092)

٥٤٣٧- حدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ أُتِيَ بِمَرَقَةٍ فِيهَا دُبَّاءٌ وَقَدِيدٌ، فَرَأَيْتُهُ يَتَتَبَّعُ الدُّبَّاءَ يَأْكُلُهَا. [راجع:٢٠٩٢]

5438. हमसे क़ुबैस़ा ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन आ़बिस ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने ऐसा कभी नहीं किया कि तीन दिन से ज़्यादा गोश्त क़ुर्बानी वाला रखने से मना फ़र्माया हो। स़िर्फ़

٥٤٣٨- حدَّثَنَا قَبِيصَةُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَابِسٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : مَا فَعَلَهُ إِلاَّ فِي عَامٍ جَاعَ النَّاسُ، أَرَادَ أَنْ يُطْعِمَ الْغَنِيُّ

الْفَقِيرَ، وَإِنْ كُنَّا لَنَرْفَعُ الْكُرَاعَ بَعْدَ خَمْسَ عَشْرَةَ، وَمَا شَبِعَ آلُ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ خُبْزِ بُرٍّ مَأْدُومٍ ثَلاَثًا. [راجع:٥٤٢٣]

उस साल ये हुक्म दिया था जिस साल क़हत की वजह से लोग फ़ाक़े में मुब्तला थे। मक़्सद ये था कि जो लोग ग़नी हैं वो गोश्त मुहताजों को खिलाएँ (और जमा करके न रखें) और हम तो बकरी के पाए महफ़ूज़ करके रख लेते थे और पन्द्रह दिन बाद तक (खाते थे) और आले मुहम्मद (ﷺ) ने कभी सालन के साथ गेहूँ की रोटी तीन दिन तक बराबर सैर होकर नहीं खाई। (राजेअ: 5432)

तश्रीह : आले मुहम्मद (ﷺ) के सिलसिले में आपके फ़र्ज़न्दाने नरीना (बेटे) तीन थे मगर तीनों हालते तिफ़्ल (बचपन) में अल्लाह को प्यारे हो गये, जिनके नाम क़ासिम, अब्दुल्लाह और इब्राहीम (रज़ि.) हैं और दुख़्तराने ज़ाहिरा चार हैं। बेटियों में (1) हज़रत ज़ैनब (रज़ि.) हैं जो हज़रत क़ासिम से छोटी और दीगर औलादे नबी से बड़ी हैं। (2) हज़रत रुक़य्या (रज़ि.) जो हज़रत ज़ैनब (रज़ि.) से छोटी हैं। (3) हज़रत उम्मे कुलषुम (रज़ि.) जो हज़रम रुक़य्या (रज़ि.) से छोटी हैं (4) हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) हैं जिनके फ़ज़ाइल बेशुमार हैं। हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) को रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक ख़ास वसिय्यत फ़र्माई थी कि मेरी बेटी इस दुआ को हमेशा पढ़ा करो। **या हय्युन या क़य्यूम बिरहमति अस्तग़ीषु व ला तक्किलनी इला नफ़्सी त़र्फ़त ऐनिन व अस्लिह ली शानी कफ़्फ़हू** (बैहक़ी) आले रसूल (ﷺ) का लफ़्ज़ उन सब पर उनकी आल औलाद पर हज़रात हस्नैन (रज़ि.) और उनकी औलाद पर बोला जाता है।

बाब 38 : जिसने एक ही दस्तरख़्वान पर कोई चीज़ उठाकर अपने दूसरे साथी को दी

٣٨- باب مَنْ نَاوَلَ أَوْ قَدَّمَ إِلَى صَاحِبِهِ عَلَى الْمَائِدَةِ شَيْئًا. قَالَ: وَقَالَ ابْنُ الْمُبَارَكِ : لاَ بَأْسَ أَنْ يُنَاوِلَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا، وَلاَ يُنَاوِلُ مِنْ هَذِهِ الْمَائِدَةِ إِلَى مَائِدَةٍ أُخْرَى.

या उसके सामने रखी (इमाम बुख़ारी रह. ने) कहा कि अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने कहा कि उसमें कोई हर्ज नहीं अगर (एक दस्तरख़्वान पर) एक—दूसरे की त़रफ़ दस्तरख़्वान के खाने बढ़ाए लेकिन ये जाइज़ नहीं कि (मेज़बान की इजाज़त के बग़ैर) एक दस्तरख़्वान से दूसरे दस्तरख़्वान की त़रफ़ कोई चीज़ बढ़ाई जाए।

٥٤٣٩- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ يَقُولُ إِنَّ خَيَّاطًا دَعَا رَسُولَ اللهِ ﷺ لِطَعَامٍ صَنَعَهُ، قَالَ أَنَسٌ فَذَهَبْتُ مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ إِلَى ذَلِكَ الطَّعَامِ، فَقَرَّبَ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ خُبْزًا مِنْ شَعِيرٍ، وَمَرَقًا فِيهِ دُبَّاءٌ وَقَدِيدٌ، قَالَ أَنَسٌ : فَرَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَتَتَبَّعُ الدُّبَّاءَ مِنْ حَوْلِ الْقَصْعَةِ، فَلَمْ أَزَلْ أُحِبُّ الدُّبَّاءَ مِنْ يَوْمَئِذٍ. وَقَالَ ثُمَامَةُ عَنْ

5439. हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबी त़लहा ने, उन्होंने हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना कि एक दर्ज़ी ने रसूलुल्लाह (ﷺ) को खाने की दा'वत दी जो उसने आँहज़रत (ﷺ) के लिये तैयार किया था। हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं भी हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के साथ उस दा'वत में गया। उन्होंने आपकी ख़िदमत में जौ की रोटी और शोरबा, जिसमें कद्दू और ख़ुश्क किया हुआ गोश्त था, पेश किया। हज़रत अनस (रज़ि.) ने कहा कि मैंने देखा कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) प्याला में चारों त़रफ़ कद्दू तलाश कर रहे हैं। उसी दिन से मैं भी कद्दू पसंद करने लगा। षुमामा ने बयान किया और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने कि फिर मैं आँहज़रत

أَنَسٍ فَجَعَلْتُ أَجْمَعُ الدُّبَّاءَ بَيْنَ يَدَيْهِ.

[راجع: ٢٠٢٩]

(ﷺ) के सामने कद्दू के क़तले (तलाश कर करके) जमा करने लगा। (राजेअ : 2029)

तश्रीह : हज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने इसी षुमामा की रिवायत से बाब का तर्जुमा निकाला है क्योंकि इससे ये षाबित हुआ कि एक दस्तरख़्वान वाले दूसरे शख़्स को जो उस दस्तरख़्वान पर बैठा हो खाना दे सकते हैं ख़्वाह खाना एक ही बर्तन में हो या अलग बर्तनों में मगर जिसको खाना दे रहे हैं उसकी मर्ज़ी भी होना ज़रूरी है। अगर कोई शिकमसैर हो रहा हो उसे खाना देना उसकी इजाज़त के बग़ैर ग़लत होगा।

٣٩- باب الرُّطَبِ بِالْقِثَّاءِ

बाब 39 : ताज़ा खजूर और ककड़ी एक साथ खाना

٥٤٤٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ جَعْفَرِ بْنِ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ، يَأْكُلُ الرُّطَبَ بِالْقِثَّاءِ.

[طرفاه في : ٥٤٤٧، ٥٤٤٩].

5440. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र बिन अबी त़ालिब (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) को ताज़ा खजूर, ककड़ी के साथ खाते देखा है।

(दीगर मक़ामात : 5447, 5449)

तश्रीह : ये बड़ी दानाई और ह़िक्मत की बात है एक–दूसरी की मुस्लेह़ हैं खजूर की गर्मी, ककड़ी तोड़ देती है जो ठण्डी है, ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह ह़ज़रत जा'फ़र (रज़ि.) के पहले बेटे हैं जो ह़ब्श में पैदा हुए। कष़रते सख़ावत से उनका लक़ब बह़रुल जूद था। ह़द दर्जा के इ़बादतगुज़ार थे। सन 80 हिजरी में बउ़म्र 90 साल मदीना मुनव्वरा में वफ़ात पाई, (रज़ियल्लाहु अ़न्हु)

٤٠- باب الْحَشَفِ

बाब 40 : रद्दी खजूर (बवक़्ते ज़रूरत राशन तक़्सीम करने) के बयान में

٥٤٤١- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ عَبَّاسٍ الْجُرَيْرِيِّ عَنْ أَبِي عُثْمَانَ قَالَ: تَضَيَّفْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ سَبْعًا، فَكَانَ هُوَ وَامْرَأَتُهُ وَخَادِمُهُ يَعْتَقِبُونَ اللَّيْلَ أَثْلاَثًا، يُصَلِّي هَذَا، ثُمَّ يُوقِظُ هَذَا. وَسَمِعْتُهُ يَقُولُ: قَسَمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بَيْنَ أَصْحَابِهِ تَمْرًا. فَأَصَابَنِي سَبْعُ تَمَرَاتٍ إِحْدَاهُنَّ حَشَفَةٌ. [راجع: ٥٤١١]

5441. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अ़ब्बास जुरैरी ने और उनसे अबू उ़ष्मान ने बयान किया कि मैं ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) के यहाँ सात दिन तक मेहमान रहा, वो और उनकी बीवी और उनके ख़ादिम ने रात में (जागने की) बारी मुक़र्रर कर रखी थी। रात के एक तिहाई ह़िस्से में एक स़ाह़ब नमाज़ पढ़ते रहे फिर वो दूसरे को जगा देते और मैंने ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) को ये कहते सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपने स़ह़ाबा में एक मर्तबा खजूर तक़्सीम की और मुझे भी सात खजूरें दीं, एक उनमें ख़राब थी।

(राजेअ़ : 5411)

तश्रीह : मगर उन्होंने उसे भी बख़ुशी क़ुबूल किया। इत़ाअ़त-शिआ़री का यही तक़ाज़ा है न कि उन मुक़ल्लिदीन जामेदीन की त़रह़ जो मीठा मीठा हुप और कड़वा कड़वा थूके मुवाफ़िक़ अ़मल करते हैं, इल्ला माशाअल्लाह।

ह़दीष़ से बवक़्ते ज़रूरत राशन तक़्सीम करना भी ष़ाबित हुआ जो ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने इस ह़दीष़ हाज़ा से ष़ाबित फ़र्माया है और आपके इज्तिहादे इल्मी की दलील है फिर भी कितने मुआनिद मुक़ल्लिद अ़क़्ल के ख़ुद कोरे हैं जो ह़ज़रत इमाम को मुज्तहिद नहीं मानते बल्कि मिष़्ल अपने मुक़ल्लिद मशहूर करते हैं, नऊ़ज़ुबिल्लाह।

5441. हमसे मुह़म्मद बिन स़ब्बाह़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इस्माईल बिन ज़करिया ने बयान किया, उनसे आ़स़िम ने, उनसे अबू उ़ष़्मान ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हममें खजूर तक़्सीम की पाँच मुझे इनायत कीं चार तो अच्छी खजूरें थीं और एक ख़राब थी जो मेरे दांतों के लिये सबसे ज़्यादा सख़्त थी। (राजेअ़ : 5411)

٥٤٤١م- حدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الصَّبَّاحِ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ زَكَرِيَّا عَنْ عَاصِمٍ عَنْ أَبِي عُثْمَانَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَسَمَ النَّبِيُّ ﷺ بَيْنَنَا تَمْرًا، فَأَصَابَنِي مِنْهُ خَمْسٌ : أَرْبَعُ تَمَرَاتٍ وَحَشَفَةٌ، ثُمَّ رَأَيْتُ الْحَشَفَةَ هِيَ أَشَدُّهُنَّ لِضِرْسِي.

[راجع: ٥٤١١]

तशरीह : अनाज की कमी के ज़माने में इन अह़ादीष़ से सरकारी सत़ह़ पर राशन की तक़्सीम का त़रीक़ा ष़ाबित हुआ। ये भी मा'लूम हुआ कि राशन अच्छा हो या रद्दी बराबर ह़िस्से सबको तक़्सीम करना चाहिये। आज के दौरे महंगाई में राशन की स़ह़ीह़ तक़्सीम के लिये इन अह़ादीष़े नबवी में बड़ी रोशनी मिलती है मगर देखने समझने अ़मली जामा पहनाने के लिये दीदा बीना की ज़रूरत है न कि आजकल जैसे बद दयानत तक़्सीम करने वालों की जिनके हाथों स़ह़ीह़ तक़्सीम न होने के बाइ़ष़ अल्लाह की मख़्लूक़ परेशान है ये राशन तक़्सीम करने का दूसरा वाक़िया है।

बाब 41 : ताज़ा खजूर और ख़ुश्क खजूर का बयान

٤١- باب الرُّطَبِ وَالتَّمْرِ

और अल्लाह तआ़ला का (सूरह मरयम में) ह़ज़रत मरयम को ख़ित़ाब, और अपनी त़रफ़ खजूर की शाख़ को हिला तो तुम पर ताज़ा तर खजूरें गिरेंगी।

وَقَالَ اللهُ تَعَالَى: ﴿وَهُزِّي إِلَيْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسَاقِطْ عَلَيْكِ رُطَبًا جَنِيًّا﴾

5442. और मुह़म्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे मंसूर इब्ने स़फ़िया ने, उनसे उनके वालिदा ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की वफ़ात हो गई और हम पानी और खजूर ही से (अकष़र दिनों में) पेट भरते रहे। (राजेअ़ : 5383)

٥٤٤٢- وقال مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ مَنْصُورِ بْنِ صَفِيَّةَ حَدَّثَتْنِي أُمِّي عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: تُوُفِّيَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَقَدْ شَبِعْنَا مِنَ الأَسْوَدَيْنِ التَّمْرِ وَالْمَاءِ. [راجع: ٥٣٨٣]

तशरीह : आयत में तर खजूर का ज़िक्र है इसीलिये यहाँ उसे नक़ल किया गया। आयत में उस वक़्त का ज़िक्र है जब ह़ज़रत मरयम (अ़लैहस्सलाम) ह़ालते ज़चगी में खजूर के पेड़ के नीचे ग़मगीन बैठी हुई थीं। ऐसे वक़्त में अल्लाह तआ़ला ने उनको इत़्मीनान दिलाया और ताज़ा खजूरों से उनकी ज़ियाफ़त फ़र्माई।

5443. हमसे सई़द बिन अबी मरयम ने बयान किया, कहा हमसे अबू ग़स्सान ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबू ह़ाज़िम ने बयान किया, उनसे इब्राहीम बिन अ़ब्दुर्रहमान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबी रबीआ़ ने और उनसे ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि मदीना मे एक यहूदी था और मुझे

٥٤٤٣- حدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ حَدَّثَنَا أَبُو غَسَّانَ قَالَ : حَدَّثَنِي أَبُو حَازِمٍ عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي رَبِيعَةَ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ

الله عَنهُمَا قَالَ: كَانَ بِالْمَدِينَةِ يَهُودِيٌّ، وَكَانَ يُسْلِفُنِي فِي تَمْرِي إِلَى الْجِدَادِ، وَكَانَتْ لِجَابِرٍ الأَرْضُ الَّتِي بِطَرِيقِ رُومَةَ فَجَلَسَتْ فَخَلاَ عَامًا، فَجَاءَنِي الْيَهُودِيُّ عِنْدَ الْجِدَادِ وَلَمْ أَجِدْ مِنْهَا شَيْئًا، فَجَعَلْتُ أَسْتَنْظِرُهُ إِلَى قَابِلٍ، فَيَأْبَى فَأُخْبِرَ بِذَلِكَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ لأَصْحَابِهِ ((امْشُوا نَسْتَنْظِرْ لِجَابِرٍ مِنَ الْيَهُودِيِّ)). فَجَاؤُونِي فِي نَخْلِي، فَجَعَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُكَلِّمُ الْيَهُودِيَّ، فَيَقُولُ: أَبَا الْقَاسِمِ لاَ أُنْظِرُهُ. فَلَمَّا رَآهُ قَامَ فَطَافَ فِي النَّخْلِ، ثُمَّ جَاءَهُ فَكَلَّمَهُ. فَأَبَى. فَقُمْتُ فَجِئْتُ بِقَلِيلِ رُطَبٍ فَوَضَعْتُهُ بَيْنَ يَدَيِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَكَلَ، ثُمَّ قَالَ: ((أَيْنَ عَرِيشُكَ يَا جَابِرُ؟)) فَأَخْبَرْتُهُ، فَقَالَ: ((افْرُشْ لِي فِيهِ)). فَفَرَشْتُهُ فَدَخَلَ فَرَقَدَ ثُمَّ اسْتَيْقَظَ فَجِئْتُهُ بِقَبْضَةٍ أُخْرَى فَأَكَلَ مِنْهَا، ثُمَّ قَامَ فَكَلَّمَ الْيَهُودِيَّ، فَأَبَى عَلَيْهِ فَقَامَ فِي الرِّطَابِ فِي النَّخْلِ الثَّانِيَةَ، ثُمَّ قَالَ: ((يَا جَابِرُ، جُذَّ وَاقْضِ)). فَوَقَفَ فِي الْجِدَادِ فَجَدَدْتُ مِنْهَا مَا قَضَيْتُهُ وَفَضَلَ مِنْهُ. فَخَرَجْتُ حَتَّى جِئْتُ النَّبِيَّ ﷺ فَبَشَّرْتُهُ فَقَالَ: ((أَشْهَدُ أَنِّي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ)). عُرُوشٌ وَعَرِيشٌ: بِنَاءٌ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: مَعْرُوشَاتٍ مَا يُعَرَّشُ مِنَ الْكُرُومِ وَغَيْرِ

क़र्ज़ इस शर्त पर दिया करता था कि मेरी खजूरें तैयार होने के वक़्त ले लेगा। ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) की एक ज़मीन बीरे रूमा (कुआँ) के रास्ते में थी। एक साल खजूर के बाग़ में फल नहीं आए। फल चुने जाने का जब वक़्त आया तो वो यहूदी मेरे पास आया लेकिन मैंने तो बाग़ से कुछ भी नहीं तोड़ा था। इसलिये मैं आइन्दा साल के लिये मुह्लत माँगने लगा लेकिन उसने मुहलत देने से इंकार कर दिया। उसकी ख़बर जब रसूलुल्लाह (ﷺ) को दी गई तो आपने अपने स़ह़ाबा से फ़र्माया कि चलो, यहूदी से जाबिर (रज़ि.) के लिये हम मुह्लत मांगेंगे। चुनाँचे ये सब मेरे पास मेरे बाग़ में तशरीफ़ लाए। आँह़ज़रत (ﷺ) उस यहूदी से बातचीत फ़र्माते रहे लेकिन वो यही कहता रहा कि अबुल क़ासिम मैं मुह्लत नहीं दे सकता। जब आँह़ज़रत (ﷺ) ने ये देखा तो आप खड़े हो गये और खजूर के बाग़ मे चारों ओर फिरे फिर तशरीफ़ लाए और उससे बातचीत की लेकिन उसने अब भी इंकार किया फिर मैं खड़ा हुआ और थोड़ी सी ताज़ा खजूर लाकर आँह़ज़रत (ﷺ) के सामने रखी। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उसको तनावुल फ़र्माया फिर फ़र्माया कि उसमें मेरे लिये कुछ फ़र्श बिछा दो। मैंने बिछा दिया तो आप दाख़िल हुए और आराम फ़र्माया फिर बेदार हुए तो मैं एक मुट्ठी और खजूर लाया। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उसमे से भी तनावुल फ़र्माया फिर आप खड़े हुए और यहूदी से बातचीत की। उसने अब भी इंकार किया। आँह़ज़रत (ﷺ) दोबारा बाग़ में खड़े हुए फिर फ़र्माया। जाबिर! जाओ अब फल तोड़ो और क़र्ज़ अदा करो। आप खजूरों के तोड़े जाने की जगह खड़े हो गये और मैंने बाग़ में से इतनी खजूरें तोड़ लीं जिनसे मैंने क़र्ज़ अदा कर दिया और उसमें से खजूरें बच भी गईं फिर मैं वहाँ से निकला और ह़ुज़ूरे अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर होकर ये ख़ुशख़बरी सुनाई तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया मैं गवाही देता हूँ कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ। ह़ज़रत अबू अ़ब्दुल्लाह इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि इस ह़दीष़ में जो उ़रूश का लफ़्ज़ है। उ़रूश और अ़रीश इमारत की छत को कहते हैं। ह़ज़रत इ़ब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि (सूरह अन्आ़म में लफ़्ज़) मअ़रूशात से

ذٰلِكَ، يُقَالُ عُرُوشُهَا أَبْنِيَتُهَا.

मुराद अंगूर वग़ैरह की टट्टियाँ हैं। दूसरी आयत (सूरह बक़रः) में ख़ावितुन अ़ला उ़रूशिहा या'नी अपनी छतों पर गिरे हुए।

ह़दीष़ में ख़ुश्क व तर खजूरों का ज़िक्र हैं यही वजहे मुत़ाबिक़त है आपकी दुआ व बरकत से ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) का क़र्ज़ अदा हो गया।

बाब 42 : खजूर के पेड़ का गूँद खाना जाइज़ है

٤٢- باب أَكْلِ الْجُمَّارِ

(अल जिमार वल जामूर) पेड़ ख़ुर्मा का गूँद जो चर्बी की त़रह़ सफ़ेद होता है। (मिस्बाह़)

5444. हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स़ बिन ग़याष़ ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, उनसे आ'मश ने बयान किया, कहा कि मुझसे मुजाहिद ने बयान किया और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में बैठे हुए थे कि खजूर के पेड़ का गाभा लाया गया। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कुछ पेड़ ऐसे होते हैं जिनकी बरकत मुसलमान की बरकत की त़रह़ होती है। मैंने ख़्याल किया कि आपका इशारा खजूर के दरख़्त की त़रफ़ है। मैंने सोचा कि कह दूँ कि वो पेड़ खजूर का होता है या रसूलल्लाह (ﷺ)! लेकिन फिर जो मैंने मुड़कर देखा तो मजलिस में मेरे अ़लावा नौ आदमी और थे और मैं उनमें सबसे छोटा था। इसलिये मैं ख़ामोश रहा फिर आपने फ़र्माया कि वो पेड़ खजूर का है। (राजेअ़ : 61)

٥٤٤٤- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصِ بْنِ غِيَاثٍ حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ قَالَ: حَدَّثَنِي مُجَاهِدٌ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: بَيْنَا نَحْنُ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ جُلُوسٌ، إِذْ أُتِيَ بِجُمَّارِ نَخْلَةٍ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّ مِنَ الشَّجَرِ لَمَا بَرَكَتُهُ كَبَرَكَةِ الْمُسْلِمِ))، فَظَنَنْتُ أَنَّهُ يَعْنِي النَّخْلَةَ. فَأَرَدْتُ أَنْ أَقُولَ هِيَ النَّخْلَةُ يَا رَسُولَ اللهِ، ثُمَّ الْتَفَتُّ فَإِذَا أَنَا عَاشِرُ عَشَرَةٍ أَنَا أَحْدَثُهُمْ، فَسَكَتُّ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((هِيَ النَّخْلَةُ)). [راجع: ٦١]

तश्रीह : खजूर का पेड़ आदमी से बहुत मुशाबिहत रखता है। इसके गाभे मे ऐसी बू होती है जैसी आदमी के नुत्फ़े में और इसका सर काट डालो तो वो आदमी की त़रह़ मर जाता है और पेड़ नहीं मरते बल्कि फिर हरे भरे हो जाते हैं मगर खजूर का सर आदमी के सर की मिष़ाल है। इसीलिये हुकमा (हकीमों) ने खजूर को ऐसी आख़िरी नबातात से क़रार दिया है कि वहाँ से हैवानात और नबातात में इत्तिस़ाल बहुत क़रीब होता है।

बाब 43 : अ़ज्वा खजूर का बयान

٤٣- باب الْعَجْوَةِ.

5445. हमसे जुम्अ़ा बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मरवान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको हाशिम बिन हाशिम ने ख़बर दी उन्होंने कहा कि हमको आ़मिर बिन सअ़द ने ख़बर दी और उनसे उनके वालिद सअ़द बिन अबी वक़्क़ास़ (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने हर दिन सुबह़ के वक़्त सात अ़ज्वा खजूरें खा

٥٤٤٥- حَدَّثَنَا جُمُعَةُ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا مَرْوَانُ أَخْبَرَنَا هَاشِمُ بْنُ هَاشِمٍ أَخْبَرَنَا عَامِرُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَنْ تَصَبَّحَ كُلَّ يَوْمٍ سَبْعَ تَمَرَاتٍ عَجْوَةٍ لَمْ يَضُرُّهُ فِي ذَلِكَ

लीं, उसे उस दिन न ज़हर नुक़्सान पहुँचा सकेगा और न जादू।

الْيَوْمَ سَمٌّ وَلاَ سِحْرٌ)).

तश्रीह : सनद में जुम्आ बिन अ़ब्दुल्लाह रावी की कुन्नियत अबूबक्र बल्ख़ी है और नाम है यह्या, जुम्आ उनका लक़ब है, अबू ख़ाक़ान भी उनकी कुन्नियत है। उनसे एक यही ह़दीष़ इस किताब में मरवी है और बाक़ी कुतुबे सित्ता की किताबों में उनसे कोई रिवायत नहीं है। अ़ज्वा मदीना में एक उ़म्दह क़िस्म की खजूर का नाम है।

बाब 44 : दो खजूरों को एक साथ मिलाकर खाना

मना है जब दूसरे लोगों के साथ खा रहा हो।

٤٤- باب الْقِرَانِ فِي التَّمْرِ

5446. हमसे आदम ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा हमसे जबला बिन सुहैम ने बयान किया, कहा कि हमें अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) के साथ (जब वो ह़ज्जाज़ के ख़लीफ़ा थे) एक साल क़ह़त़ का सामना करना पड़ा तो उन्होंने राशन में हमें खाने के लिये खजूरें दीं। अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) हमारे पास से गुज़रते और हम खजूर खा रहे होते तो वो फ़र्माते कि दो खजूरों को एक साथ मिलाकर न खाओ क्योंकि नबी करीम (ﷺ) ने दो खजूरों को एक साथ मिलाकर खाने से मना किया है, फिर फ़र्माया सिवा उस सूरत में कि जब उसको खाने वाला शख़्स अपने साथी से (जो खाने में शरीक है) उसकी इजाज़त ले ले। शुअ़बा ने बयान किया कि इजाज़त वाला टुकड़ा ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) का क़ौल है। (राजेअ़ : 2455)

٥٤٤٦- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا جَبَلَةُ بْنُ سُحَيْمٍ قَالَ : أَصَابَنَا عَامُ سَنَةٍ مَعَ ابْنِ الزُّبَيْرِ، رَزَقَنَا تَمْرًا، فَكَانَ عَبْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ يَمُرُّ بِنَا وَنَحْنُ نَأْكُلُ وَيَقُولُ : لاَ تُقَارِنُوا فَإِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى عَنِ الْقِرَانِ، ثُمَّ يَقُولُ: إِلاَّ أَنْ يَسْتَأْذِنَ الرَّجُلُ أَخَاهُ.

قَالَ شُعْبَةُ : الإِذْنُ مِنْ قَوْلِ ابْنِ عُمَرَ.

[راجع: ٢٤٥٥]

बाब 45 : ककड़ी खाने का बयान

٤٥- باب الْقِثَّاءِ

5447. मुझसे इस्माईल बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने बयान किया और उन्होंने ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) से सुना कि मैंने नबी करीम (ﷺ) को खजूर को ककड़ी के साथ खाते हुए देखा। (राजेअ़ : 5440)

٥٤٤٧- حَدَّثَنِي إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ جَعْفَرٍ قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَأْكُلُ الرُّطَبَ بِالْقِثَّاءِ.

[راجع: ٥٤٤٠]

बाब : 46 खजूर के पेड़ की बरकत का बयान

٤٦- باب بَرَكَةِ النَّخْلِ

5448. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुह़म्मद बिन त़लह़ा ने बयान किया, उनसे ज़ुबैद ने बयान किया, उनसे मुजाहिद ने बयान किया, उन्होंने ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने

٥٤٤٨- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ طَلْحَةَ عَنْ زُبَيْدٍ عَنْ مُجَاهِدٍ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مِنَ

फ़र्माया कि पेड़ों मे एक पेड़ मिस्ल मुसलमान के है और वो खजूर का पेड़ है। (राजेअ : 61)

الشَّجَرِ شَجَرَةٌ تَكُونُ مِثْلُ الْمُسْلِمِ وَهِيَ النَّخْلَةُ)). [راجع: ٦١]

जिसका फल बेहद मुक़व्वी और बेहतरीन लज़्ज़त वाला शीरीं होता है। मुसलमान को भी ऐसा ही बनकर रहना चाहिये और अपनी ज़ात से ख़ल्क़ुल्लाह (अल्लाह की मख़्लूक़) को ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा पहुँचाना चाहिये। किसी को नाहक़ ईज़ा रसानी मुसलमान का काम नहीं है। खजूर मदीना मुनव्वरह की ख़ास पैदावार है ये इसलिये भी मुसलमानों को ज़्यादा महबूब है।

बाब 47 : एक वक़्त में दो तरह के (फल) या दो क़िस्म के खाने जमा करके खाना

٤٧- باب جَمْعِ اللَّوْنَيْنِ أَوِ الطَّعَامَيْنِ بِمَرَّةٍ

5449. हमसे इब्ने मुक़ातिल ने बयान किया, उन्हों ने कहा हमको अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमको इब्राहीम बिन सअ़द ने ख़बर दी, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को ककड़ी के साथ खजूर खाते हुए देखा है। (राजेअ : 5440)

٥٤٤٩- حَدَّثَنَا ابْنُ مُقَاتِلٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ جَعْفَرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَأْكُلُ الرُّطَبَ بِالْقِثَّاءِ. [راجع: ٥٤٤٠]

बाब 48 : दस-दस मेहमानों को एक एक बार बुलाकर खाने पर बिठाना

٤٨- باب مَنْ أَدْخَلَ الضِّيفَانَ عَشَرَةً عَشَرَةً، وَالْجُلُوسِ عَلَى الطَّعَامِ عَشَرَةً عَشَرَةً

5450. हमसे सुल्त बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने, उनसे जअ़द अबू उ़ष्मान ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने और (उसकी रिवायत हम्माद ने) हिशाम से भी की, उनसे मुहम्मद ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने और सिनान अबू रबीआ़ से (भी की) और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि उनकी वालिदा उम्मे सुलैम (रज़ि.) ने एक मुद्द जौ लिया और उसे पीसकर उसका ख़त़ीफ़ा (आटे को दूध में मिलाकर पकाते हैं) पकाया और उनके पास जो घी का डब्बा था उसमें उस पर से घी निचोड़ा, फिर मुझे नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में (बुलाने के लिये) भेजा। मैं आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में गया तो आप अपने सहाबा के साथ तशरीफ़ रखते थे। मैंने आपको खाना खाने के लिये बुलाया। आपने दरयाफ़्त फ़र्माया और वो लोग भी जो मेरे साथ हैं ? चुनाँचे मैं वापस आया और कहा कि आँहज़रत (ﷺ) तो फ़र्माते हैं कि जो मेरे साथ मौजूद हैं वो भी चलेंगे। इस पर अबू त़लहा आपकी ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! वो

٥٤٥٠- حَدَّثَنَا الصَّلْتُ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنِ الْجَعْدِ أَبِي عُثْمَانَ عَنْ أَنَسٍ وَعَنْ هِشَامٍ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أَنَسٍ وَعَنْ سِنَانٍ أَبِي رَبِيعَةَ عَنْ أَنَسٍ أَنَّ أُمَّ سُلَيْمٍ أُمَّهُ عَمَدَتْ إِلَى مُدٍّ مِنْ شَعِيرٍ جَشَّتْهُ وَجَعَلَتْ مِنْهُ خَطِيفَةً وَعَصَرَتْ عُكَّةً عِنْدَهَا، ثُمَّ بَعَثَتْنِي إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَتَيْتُهُ وَهُوَ فِي أَصْحَابِهِ فَدَعَوْتُهُ، قَالَ: ((وَمَنْ مَعِي)). فَجِئْتُ فَقُلْتُ: إِنَّهُ يَقُولُ وَمَنْ مَعِي فَخَرَجَ إِلَيْهِ أَبُو طَلْحَةَ قَالَ : يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّمَا هُوَ

तो एक चीज़ है जो उम्मे सुलैम ने आपके लिये पकाई है। आँहज़रत (ﷺ) तशरीफ़ लाए और खाना आपके पास लाया गया। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि दस आदमियों को मेरे पास अंदर बुला लो। चुनाँचे दस स़हाबा दाख़िल हुए और खाना पेट भरकर खाया फिर फ़र्माया दस आदमियों को मेरे पास और बुला लो। ये दस भी अंदर आए और पेट भरकर खाया फिर फ़र्माया और दस आदमियों को बुला लो। इस त़रह उन्होंने चालीस आदमियों का शुमार किया। उसके बाद आँहज़रत (ﷺ) ने खाना खाया फिर आप खड़े हुए तो मैं देखने लगा कि खाने में से कुछ भी कम नहीं हुआ।

شَيْءٌ صَنَعَتْهُ أُمُّ سُلَيْمٍ، فَدَخَلَ فَجِيءَ بِهِ وَقَالَ : ((أَدْخِلْ عَلَيَّ عَشَرَةً)). فَدَخَلُوا، فَأَكَلُوا حَتَّى شَبِعُوا ثُمَّ قَالَ: ((أَدْخِلْ عَلَيَّ عَشَرَةً)). فَدَخَلُوا فَأَكَلُوا حَتَّى شَبِعُوا، ثُمَّ قَالَ : ((أَدْخِلْ عَلَيَّ عَشَرَةً)). حَتَّى عَدَّ أَرْبَعِينَ ثُمَّ أَكَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ قَامَ فَجَعَلْتُ أَنْظُرُ هَلْ نَقَصَ مِنْهَا شَيْءٌ؟.

बाब 49 : लहसुन और दूसरे (बदबूदार) तरकारियों का बयान. (जैसे प्याज़, मूली वग़ैरह) इस बारे में ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने आँह़ज़रत (ﷺ) से कराहत नक़ल की है

٤٩- باب مَا يُكْرَهُ مِنَ الثُّومِ وَالْبُقُولِ.

فِيهِ : عَنِ ابْنِ عُمَرَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

5451. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वारिष़ ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने बयान किया कि ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने कहा मैंने नबी करीम (ﷺ) को लहसुन के बारे में कुछ कहते नहीं सुना। अल्बत्ता आपने फ़र्माया कि जो शख़्स़ (लहसुन) खाए तो वो हमारी मस्जिद के क़रीब न आए। (राजेअ़ : 856)

٥٤٥١- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ قَالَ: قِيلَ لأَنَسٍ: مَا سَمِعْتَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ فِي الثُّومِ؟ فَقَالَ: ((مَنْ أَكَلَ فَلاَ يَقْرَبَنَّ مَسْجِدَنَا)).
[راجع: ٨٥٦]

या'नी हमारे साथ नमाज़ में शरीक न हो क्योंकि उनकी बू से फ़रिश्तों को और नमाज़ियों को भी तकलीफ़ होती है। हाँ अगर ख़ूब स़ाफ़ करके या कुछ खाकर बू को दूर किया जा सके तो अलग बात है। आजकल बीड़ी सिगरेट पीने वालों के लिये भी मुँह की सफ़ाई का यही हुक्म है।

5452. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे अबू स़फ़्वान अ़ब्दुल्लाह बिन सईद ने बयान किया, कहा हमको यूनुस ने ख़बर दी, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे अ़ता ने बयान किया कि ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) कहते थे कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने लहसुन या प्याज़ खाई हो तो उसे चाहिये कि हमसे दूर रहे। या ये फ़र्माया कि हमारी मस्जिद से दूर रहे। (राजेअ़ : 854)

٥٤٥٢- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا أَبُو صَفْوَانَ عَبْدُ اللهِ بْنُ سَعِيدٍ أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: حَدَّثَنِي عَطَاءٌ أَنَّ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا زَعَمَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ أَكَلَ ثُومًا أَوْ بَصَلاً فَلْيَعْتَزِلْنَا، أَوْ لِيَعْتَزِلْ مَسْجِدَنَا)).
[راجع: ٨٥٤]

तश्रीह : अगर लहसुन या प्याज़ पकाकर ख़ाई जाए जबकि उसमें बू न रहे तो कोई ह़र्ज नहीं है जैसा कि अबू दाऊद की रिवायत में है।

बाब 50 : कबाष़ का बयान और वो पीलू के पेड़ का फल है

٥٠- باب الْكَبَاثِ، وَهُوَ ثَمَرُ الأَرَاكِ

5453. हमसे सईद बिन ड़फ़ैर ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने वहब ने बयान किया, उनसे यूनुस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्हें अबू सलमा ने ख़बर दी, कहा कि मुझे ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने ख़बर दी, उन्होंने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ मक़ामे मर्रुज़ ज़ह्रान पर थे, हम पीलू तोड़ रहे थे। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो ख़ूब काला हो वो तोड़ो क्योंकि वो ज़्यादा लज़ीज़ होता है। ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया आपने बकरियाँ चराई हैं? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ और कोई नबी ऐसा नहीं गुज़रा जिसने बकरियाँ न चराई हों। (राजेअ़ : 3406)

٥٤٥٣- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عُفَيْرٍ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ عَنْ يُونُسَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ قَالَ : أَخْبَرَنِي جَابِرُ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ بِمَرِّ الظَّهْرَانِ نَجْنِي الْكَبَاثَ فَقَالَ: ((عَلَيْكُمْ بِالأَسْوَدِ مِنْهُ فَإِنَّهُ أَيْطَبُ)) فَقَالَ: أَكُنْتَ تَرْعَى الْغَنَمَ. قَالَ: ((وَهَلْ مِنْ نَبِيٍّ إِلاَّ رَعَاهَا؟)). [راجع: ٣٤٠٦]

तश्रीह : इसमें बड़ी बड़ी ह़िक्मतें थीं, जैसे पैग़म्बरी की वजह से ग़ुरूर न आना, दिल में शफ़क़त पैदा होना, बकरियाँ चराकर आदमियों की क़यादत करने की लियाक़त पैदा करना। दरह़क़ीक़त हर नबी व रसूल अपनी उम्मत का राई होता है और उम्मत बमंज़िला बकरियों के उनकी रइ़यत होती है। इसलिये ये तम्ष़ील बयान की गई।

बाब 51 : खाना खाने के बाद कुल्ली करने का बयान

٥١- باب الْمَضْمَضَةِ بَعْدَ الطَّعَامِ.

5454. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, उन्होंने यह्या बिन सईद से सुना, उन्होंने बशीर बिन यसार से, उनसे सुवैद बिन नोअ़मान ने, कहा कि हम रसूले करीम (ﷺ) के साथ ख़ैबर रवाना हुए। जब हम मक़ामे स़हबा पर पहुँचे तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने खाना त़लब किया। खाने में सत्तू के सिवा और कोई चीज़ नहीं लाई गई, फिर हमने खाना खाया और आँहुज़ूर (ﷺ) कुल्ली करके नमाज़ के लिये खड़े हो गये। हमने भी कुल्ली की। (राजेअ़ : 209)

٥٤٥٤- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ سَمِعْتُ يَحْيَى بْنَ سَعِيدٍ عَنْ بُشَيْرِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ سُوَيْدِ بْنِ النُّعْمَانِ قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ إِلَى خَيْبَرَ، فَلَمَّا كُنَّا بِالصَّهْبَاءِ دَعَا بِطَعَامٍ فَمَا أُتِيَ إِلاَّ بِسَوِيقٍ، فَأَكَلْنَا، فَقَامَ إِلَى الصَّلاَةِ فَتَمَضْمَضَ وَمَضْمَضْنَا. [راجع: ٢٠٩]

5455. यह्या ने बयान किया कि मैंने बशीर से सुना, उन्होंने बयान किया, हमसे सुवैद (रज़ि.) ने बयान किया, हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ ख़ैबर की त़रफ़ निकले जब हम मक़ामे स़हबा पर पहुँचे। यह्या ने कहा कि ये जगह ख़ैबर से एक मंज़िल की दूरी पर है तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने खाना त़लब किया

٥٤٥٥- قَالَ يَحْيَى : سَمِعْتُ بُشَيْرًا يَقُولُ : أَخْبَرَنَا سُوَيْدٌ خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ إِلَى خَيْبَرَ، فَلَمَّا كُنَّا بِالصَّهْبَاءِ قَالَ يَحْيَى: وَهِيَ مِنْ خَيْبَرَ عَلَى رَوْحَةٍ دَعَا

بطَعَام فَمَا أُتِيَ إِلاَّ بِسَوِيق، فَلُكْنَاهُ فَأكلنا مَعَهُ، ثُمَّ دَعَا بِمَاءِ فَمَضْمَضَ وَمَضْمَضْنَا مَعَهُ. ثُمَّ صَلَّى بِنَا الْمَغْرِبَ وَلَمْ يَتَوَضَّأْ. وَقَالَ سُفْيَانُ: كَأَنَّكَ تَسْمَعُهُ مِنْ يَحْيَى.

[راجع: ٢٠٩]

लेकिन सत्तू के सिवा और कोई चीज़ नहीं लाई गई। हमने उसे आपके साथ खाया फिर आपने हमें मग़्रिब की नमाज़ पढ़ाई और नया वुज़ू नहीं किया और सुफ़यान ने कहा गोया कि तुम ये हदीष़ यह्या ही से सुन रहे हो। (राजेअ : 209)

٥٢- باب لَعْقِ الأَصَابِعِ وَمَصِّهَا قَبْلَ أَنْ تُمْسَحَ بِالْمِنْدِيلِ

बाब 52 : रूमाल से साफ़ करने से पहले उँगलियों को चाटना

٥٤٥٦- حدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ عَنْ عَطَاءٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا أَكَلَ أَحَدُكُمْ فَلاَ يَمْسَحْ يَدَهُ حَتَّى يَلْعَقَهَا أَوْ يُلْعِقَهَا)).

5456. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने, उनसे अ़ता ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जब कोई शख़्स खाना खाए तो हाथ चाटने या किसी को चटाने से पहले हाथ न पोंछे।

तश्रीह : यहाँ रूमाल से मुराद वो कपड़ा है जो खाने के बाद हाथ की चिकनाई दूर करने के लिये इस्ते'माल किया जाता है। आपने उँगलियाँ चाटकर उस रूमाल से हाथ साफ़ करने का हुक्म दिया। अगरचे ह़दीष़ में साफ़ तौर पर लफ़्ज़ रूमाल नहीं है मगर ह़ज़रत इमाम ने ह़दीष़ के दूसरे त़रीक़ की त़रफ़ इशारा किया है जिसे मुस्लिम ने निकाला है। जिसके अल्फ़ाज़ हैं कि **फला यम्सह यदहू बिल्मिन्दील** या'नी हाथों को रूमाल से पोंछने से पहले चाटकर साफ़ कर ले।

٥٣- باب الْمِنْدِيلِ

बाब 53 : रूमाल का बयान

٥٤٥٧- حدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ قَالَ: حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ فُلَيْحٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْحَارِثِ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ سَأَلَهُ عَنِ الْوُضُوءِ مِمَّا مَسَّتِ النَّارُ، فَقَالَ: لاَ قَدْ كُنَّا زَمَانَ النَّبِيِّ ﷺ لاَ نَجِدُ مِثْلَ ذَلِكَ مِنَ الطَّعَامِ إِلاَّ قَلِيلاً، فَإِذَا نَحْنُ وَجَدْنَاهُ لَمْ يَكُنْ لَنَا مَنَادِيلُ إِلاَّ أَكُفَّنَا وَسَوَاعِدَنَا وَأَقْدَامَنَا. ثُمَّ نُصَلِّي وَلاَ نَتَوَضَّأُ.

5457. हमसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, कहा कि मुझसे मुहम्मद बिन फुलैह ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे वालिद ने, उनसे सईद बिन अल हारिष़ ने और उनसे जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कि सईद बिन अल हारिष़ ने जाबिर (रज़ि.) से ऐसी चीज़ के (खाने के बाद) जो आग पर रखी हो वुज़ू के बारे में पूछा (कि क्या ऐसी चीज़ खाने से वुज़ू टूट जाता है?) तो उन्होंने कहा कि नहीं। नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में हमें इस त़रह का खाना (जो पका हुआ होता) बहुत कम मयस्सर आता था और अगर मयस्सर आ भी जाता तो सिवा हमारी हथेलियों बाज़ुओं और पैरों के कोई रूमाल नहीं होता था (और हम उन्हीं से अपने हाथ साफ़ करके) नमाज़ पढ़ लेते थे और वुज़ू।

अगर पहले से होता तो नया वुज़ू नहीं करते थे।

बाब 54 : खाना खाने के बाद क्या दुआ पढ़नी चाहिये?

٥٤- بابٌ مَا يَقُولُ إِذَا فَرَغَ مِنْ طَعَامِهِ؟

5458. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे षौर ने उनसे ख़ालिद बिन मअदान ने और उनसे ह़ज़रत अबू उमामा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) के सामने से जब खाना उठाया जाता तो आप ये दुआ पढ़ते। तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह के लिये, बहुत ज़्यादा पाकीज़ा बरकत वाली, हम इस खाने का ह़क़ पूरी तरह अदा न कर सके और ये हमेशा के लिये रुख़्सत नहीं किया गया है (और ये इसलिये कहा ताकि) उससे हमको बेपरवाही का ख़्याल न हो, ऐ हमारे रब! (दीगर मक़ामात 5459)

٥٤٥٨- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ ثَوْرٍ عَنْ خَالِدِ بْنِ مَعْدَانَ عَنْ أَبِي أُمَامَةَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ إِذَا رَفَعَ مَائِدَتَهُ قَالَ: ((الْحَمْدُ للهِ كَثِيرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيهِ، غَيْرَ مَكْفِيٍّ وَلاَ مُوَدَّعٍ وَلاَ مُسْتَغْنًى عَنْهُ رَبَّنَا)). [طرفه في : ٥٤٥٩].

5459. हमसे अबू आ़सिम ने बयान किया, उनसे षौर बिन यज़ीद ने बयान किया, उनसे ख़ालिद बिन मअदान ने और उनसे ह़ज़रत अबू उमामा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) जब खाने से फ़ारिग़ होते और एक मर्तबा बयान किया कि जब आँह़ज़रत (ﷺ) अपना दस्तरख़्वान उठाते तो ये दुआ पढ़ते, तमाम ता'रीफ़ें उस अल्लाह के लिये हैं जिसने हमारी किफ़ायत की और हमें सैराब किया। हम इस खाने का ह़क़ पूरी तरह अदा न कर सके वरना हम इस नेअ़मत के मुंकिर नहीं हैं। और एक बार फ़र्माया, तेरे ही लिये तमाम ता'रीफ़ें हैं ऐ हमारे रब! इसका हम ह़क़ अदा नहीं कर सके और न ये हमेशा के लिये रुख़्सत किया गया है। (ये इसलिये कहा ताकि) इससे हमको बेनियाज़ी का ख़्याल न हो। ऐ हमारे रब! (राजेअ़ : 5458)

٥٤٥٩- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ عَنْ ثَوْرِ بْنِ يَزِيدَ عَنْ خَالِدِ بْنِ مَعْدَانَ عَنْ أَبِي أُمَامَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا فَرَغَ مِنْ طَعَامِهِ، وَقَالَ مَرَّةً إِذَا رَفَعَ مَائِدَتَهُ قَالَ: ((الْحَمْدُ للهِ الَّذِي كَفَانَا وَأَرْوَانَا، غَيْرَ مَكْفِيٍّ وَلاَ مَكْفُورٍ)). وَقَالَ مَرَّةً : ((لَكَ الْحَمْدُ رَبَّنَا، غَيْرَ مَكْفِيٍّ وَلاَ مُوَدَّعٍ وَلاَ مُسْتَغْنًى رَبَّنَا)).

[راجع: ٥٤٥٨]

तश्रीह : दूसरी रिवायात की बिना पर ये दुआ भी मसनून है **अल्हम्दुलिल्लाहिल्लज़ी अत्अमना व सक़ाना व जअलना मिनल्मुस्लिमीन** दूसरे के घर खाने के बाद इन लफ़्ज़ों में उनको दुआ देनी चाहिये। **अल्लाहुम्म बारिक लहुम फ़ीमा रज़क्तहुम वग्फ़िर लहुम वर्हम्हुम**

बाब 55 : ख़ादिम को भी साथ में खाना खिलाना मुनासिब है

٥٥- بابُ الأَكْلِ مَعَ الْخَادِمِ

5460. हमसे ह़फ़्स बिन उ़मर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे मुह़म्मद ने, वो ज़ियाद के स़ाहबज़ादे हैं, कहा कि मैंने ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना,

٥٤٦٠- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مُحَمَّدٍ هُوَ ابْنُ زِيَادٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ

عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((إِذَا أَتَى أَحَدَكُمْ خَادِمُهُ بِطَعَامِهِ فَإِنْ لَمْ يُجْلِسْهُ مَعَهُ فَلْيُنَاوِلْهُ أَكْلَةً أَوْ أَكْلَتَيْنِ، أَوْ لُقْمَةً أَوْ لُقْمَتَيْنِ، فَإِنَّهُ وَلِيَ حَرَّهُ وَعِلاَجَهُ)). [راجع: ٢٥٥٧]

उनसे नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जब तुममें से किसी शख़्स का ख़ादिम उसका खाना लाए तो अगर वो उसे अपने साथ नहीं बिठा सकता तो कम अज़्कम एक या दो लुक़्मा उस खाने में से खिला दे (क्योंकि) उसने पकाते वक़्त) उसकी गर्मी और तैयारी की मशक़्क़त बर्दाश्त की है। (राजेअ़ : 2557)

٥٦- باب الطَّاعِمُ الشَّاكِرُ، مِثْلُ الصَّائِمِ الصَّابِرِ.

فِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ

बाब 56 : शुक्रगुज़ार खाने वाला (ष़वाब में) स़ाबिर रोज़ेदार की

तरह है इस मसले में ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने एक ह़दीष़ नबी करीम (ﷺ) से रिवायत की है।

٥٧- باب الرَّجُلِ يُدْعَى إِلَى طَعَامٍ فَيَقُولُ: وَهَذَا مَعِي. وَقَالَ أَنَسٌ : إِذَا دَخَلْتَ عَلَى مُسْلِمٍ لاَ يُتَّهَمُ فَكُلْ مِنْ طَعَامِهِ، وَاشْرَبْ مِنْ شَرَابِهِ

बाब 57 : किसी शख़्स की खाने की दा'वत हो

और दूसरा शख़्स भी उसके साथ तुफ़ैली हो जाए तो इजाज़त लेने के लिये वो कहे कि ये भी मेरे साथ आ गया है और ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने कहा कि जब तुम किसी ऐसे मुसलमान के घर जाओ (जो अपने दीन व माल में) ग़लत़ कामों से बदनाम न हो तो उसका खाना खाओ और उसका पानी पियो।

٥٤٦١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي الأَسْوَدِ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ حَدَّثَنَا شَقِيقٌ حَدَّثَنَا أَبُو مَسْعُودٍ الأَنْصَارِيُّ، قَالَ: كَانَ رَجُلٌ مِنَ الأَنْصَارِ يُكْنَى أَبَا شُعَيْبٍ وَكَانَ لَهُ غُلاَمٌ لَحَّامٌ فَأَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ فِي أَصْحَابِهِ، فَعَرَفَ الْجُوعَ فِي وَجْهِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَذَهَبَ إِلَى غُلاَمِهِ اللَّحَّامِ فَقَالَ: اصْنَعْ لِي طَعَامًا يَكْفِي خَمْسَةً لَعَلِّي أَدْعُو النَّبِيَّ ﷺ خَامِسَ خَمْسَةٍ. فَصَنَعَ لِي طُعَيْمًا، ثُمَّ أَتَاهُ فَدَعَاهُ فَتَبِعَهُمْ رَجُلٌ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((يَا أَبَا شُعَيْبٍ، إِنَّ رَجُلاً تَبِعَنَا فَإِنْ شِئْتَ أَذِنْتَ لَهُ وَإِنْ شِئْتَ تَرَكْتَهُ)). قَالَ لاَ بَلْ أَذِنْتُ لَهُ.

5461. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी अस्वद ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने, उनसे आ'मश ने, उनसे शक़ीक़ ने, और उनसे अबू मसऊद अंस़ारी (रज़ि.) ने बयान किया, उन्होंने बयान किया कि जमाअ़ते अंस़ार के एक स़हाबी अबू शुऐब (रज़ि.) के नाम से मशहूर थे। उनके पास एक गुलाम था जो गोश्त बेचा करता था। वो स़हाबी नबी करीम (ﷺ) की मजलिस में ह़ाज़िर हुए तो आँह़ज़रत (ﷺ) के चेहरा-ए-मुबारक से फ़ाक़ा का अंदाज़ा लगा लिया। चुनाँचे वो अपने गोश्त बेचने वाले गुलाम के पास गये और कहा कि मेरे लिये पाँच आदमियों का खाना तैयार कर दो। मैं हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को चार दूसरे आदमियों के साथ दा'वत दूँगा। गुलाम ने खाना तैयार कर दिया। उसके बाद अबू शुऐब (रज़ि.) आँह़ज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में गये और आपको खाने की दा'वत दी। उनके साथ एक और स़ाह़ब भी चलने लगे तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ऐ अबू शुऐब! ये स़ाह़ब भी हमारे साथ आ गये हैं, अगर तुम चाहो तो इन्हें भी इजाज़त दे दो और अगर चाहो तो छोड़ दो। उन्होंने अ़र्ज़ किया नहीं बल्कि मैं इन्हें भी इजाज़त देता हूँ।

(राजेअ : 2081) [راجع: ٢٠٨١]

मगर अफ़सोस हर किसी के घर चले जाना या किसी को अपने साथ में ले जाना जाइज़ नहीं है, कोई मुख़्लिस़ दोस्त हो तो बात अलग है।

बाब 58 : शाम का खाना ह़ाज़िर हो तो नमाज़ के लिये जल्दी न करे

٥٨- باب إِذَا حَضَرَ الْعَشَاءُ فَلاَ يَعْجَلْ عَنْ عِشَائِهِ

बल्कि पहले खाने से फ़ारिग़ हो जाना बेहतर है।

5462. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने और लैष़ ने बयान किया, कहा उन्होंने कि मुझसे यूनुस ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्हें जा'फ़र बिन अ़म्र बिन उमय्या (रज़ि.) ने ख़बर दी, उन्हें उनके वालिद अ़मर बिन उमय्या ने ख़बर दी कि उन्होंने देखा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपने हाथ से बकरी के शाने का गोश्त काट काटकर खा रहे थे, फिर आपको नमाज़ के लिये बुलाया गया तो आप गोश्त और छुरी जिससे आप काट रहे थे, छोड़कर खड़े हो गये और नमाज़ पढ़ाई और उस नमाज़ के लिये वुज़ू नहीं किया। (राजेअ : 208)

٥٤٦٢- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ. وَقَالَ اللَّيْثُ حَدَّثَنِي يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي جَعْفَرُ بْنُ عَمْرِو بْنِ أُمَيَّةَ أَنَّ أَبَاهُ عَمْرَو بْنَ أُمَيَّةَ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ رَأَى رَسُولَ اللهِ ﷺ يَحْتَزُّ مِنْ كَتِفِ شَاةٍ فِي يَدِهِ، فَدُعِيَ إِلَى الصَّلاَةِ فَأَلْقَاهَا وَالسِّكِّينَ الَّتِي كَانَ يَحْتَزُّ بِهَا، ثُمَّ قَامَ فَصَلَّى وَلَمْ يَتَوَضَّأْ. [راجع: ٢٠٨]

5463. हमसे मुअ़ल्ला बिन असद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे वुहैब ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे अबू क़िलाबा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जब रात का खाना सामने रख दिया गया हो और नमाज़ भी खड़ी हो गई हो तो पहले खाना खाओ।

٥٤٦٣- حَدَّثَنَا مُعَلَّى بْنُ أَسَدٍ حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا وُضِعَ الْعَشَاءُ وَأُقِيمَتِ الصَّلاَةُ فَابْدَؤُوا بِالْعَشَاءِ)).

और अय्यूब से रिवायत है, उनसे नाफ़ेअ़ ने, उनसे ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने इसी के मुत़ाबिक़।

وَعَنْ أَيُّوبَ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ نَحْوَهُ.

5464. और अय्यूब से रिवायत है, उनसे नाफ़ेअ़ ने कि ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने एक मर्तबा रात का खाना खाया और उस वक़्त आप इमाम की क़िरअत सुन रहे थे। (राजेअ : 673)

٥٤٦٤- وعن أَيُّوبَ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّهُ تَعَشَّى مَرَّةً وَهُوَ يَسْمَعُ قِرَاءَةَ الإِمَامِ. [راجع: ٦٧٣]

मा'लूम हुआ कि खाना और जमाअ़त दोनों ह़ाज़िर हों तो खाना खा लेना मुक़द्दम है वरना दिल उसकी त़रफ़ लगा रहेगा।

5465. हमसे मुह़म्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कि नबी

٥٤٦٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ

عَنْ عَائِشَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا أُقِيمَتِ الصَّلَاةُ وَحَضَرَ الْعَشَاءُ فَابْدَؤُوا بِالْعَشَاءِ)). قَالَ وُهَيْبٌ وَيَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ عَنْ هِشَامٍ إِذَا وُضِعَ الْعَشَاءُ.

करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जब नमाज़ खड़ी हो चुके और रात का खाना भी सामने हो तो खाना खाओ। वुहैब और यह्या बिन सईद ने बयान किया, उनसे हिशाम ने कि, जब रात का खाना रखा जा चुके।

या'नी खाना सामने आ जाए तो पहले खाना खा लेना चाहिये, ताकि फिर नमाज़ सुकून से अदा की जा सके।

٥٩- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى : ﴿فَإِذَا طَعِمْتُمْ فَانْتَشِرُوا﴾

बाब 59 : अल्लाह तआला का इर्शाद फिर जब तुम खाना खा चुको तो दा'वत वाले के घर से उठकर चले जाओ

क्योंकि घर वाले को दीगर उमूर भी अंजाम देने हो सकते हैं खाना खाने के बाद उनका वक़्त लेना ख़िलाफ़े अदब है। हाँ वो अगर बख़ुशी दोस्ताना बातचीत के अज़्ख़ुद रोकना चाहे तो दूसरी बात है।

٥٤٦٦- حدثني عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنِي عَنْ صَالِحٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَنَّ أَنَسًا قَالَ: أَنَا أَعْلَمُ النَّاسِ بِالْحِجَابِ، كَانَ أُبَيُّ بْنُ كَعْبٍ يَسْأَلُنِي عَنْهُ أَصْبَحَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَرُوسًا بِزَيْنَبَ ابْنَةِ جَحْشٍ وَكَانَ تَزَوَّجَهَا بِالْمَدِينَةِ، فَدَعَا النَّاسَ لِلطَّعَامِ بَعْدَ ارْتِفَاعِ النَّهَارِ، فَجَلَسَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَجَلَسَ مَعَهُ رِجَالٌ بَعْدَ مَا قَامَ الْقَوْمُ، حَتَّى قَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَمَشَى وَمَشَيْتُ مَعَهُ، حَتَّى بَلَغَ بَابَ حُجْرَةِ عَائِشَةَ، ثُمَّ ظَنَّ أَنَّهُمْ خَرَجُوا، فَرَجَعَ، فَرَجَعْتُ مَعَهُ فَإِذَا هُمْ جُلُوسٌ مَكَانَهُمْ، فَرَجَعَ وَرَجَعْتُ مَعَهُ الثَّانِيَةَ حَتَّى بَلَغَ بَابَ حُجْرَةِ عَائِشَةَ، فَرَجَعَ وَرَجَعْتُ مَعَهُ فَإِذَا هُمْ قَدْ قَامُوا، فَضَرَبَ بَيْنِي وَبَيْنَهُ سِتْرًا، وَأُنْزِلَ الْحِجَابُ.

5466. मुझसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे यअ़क़ूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उनसे स़ालेह ने, उनसे इब्ने शिहाब ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया मैं पर्दा के हुक्म के बारे में ज़्यादा जानता हूँ। उबई बिन कअ़ब (रज़ि.) भी मुझसे इसके बारे मे पूछा करते थे। ज़ैनब बिन्ते जह़श (रज़ि.) से रसूलुल्लाह (ﷺ) की शादी का मौक़ा था। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनसे निकाह मदीना मुनव्वरह में किया था। दिन चढ़ने के बाद हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने लोगों की खाने की दा'वत की थी। आप बैठे हुए थे और आपके साथ कुछ और स़हाबा भी बैठे हुए थे। उस वक़्त तक दूसरे लोग (खाने से फ़ारिग़ होकर) जा चुके थे। आख़िर आप भी खड़े हो गये और चलते रहे। मैं भी आपके साथ चलता रहा। आप आ़इशा (रज़ि.) के हुज्रे पर पहुँचे फिर आपने ख़्याल किया कि वो लोग (भी जो खाने के बाद घर में बैठे थे) जा चुके होंगे (इसलिये आप वापस तशरीफ़ लाए) मैं भी आपके साथ वापस आया लेकिन वो लोग अब भी उसी जगह बैठे हुए थे। आप फिर वापस आ गये। मैं भी आपके साथ दोबारा वापस आया। आप आ़इशा (रज़ि.) के हुज्रे पर पहुँचे फिर आप वहाँ से वापस हुए। मैं भी आपके साथ था। अब वो लोग जा चुके थे। उसके बाद आँह़ज़रत (ﷺ) ने अपने और मेरे दरम्यान पर्दा लटकाया और पर्दे की आयत नाज़िल हुई।

(राजेअ: 4791) [راجع: ٤٧٩١]

तश्रीह : सूरह अह़ज़ाब का बेशतर ह़िस्सा ऐसे ही अदब के बारे में नाज़िल हुआ है जिनका मल्ह़ूज़ रखना बहुत ज़रूरी है। ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) इस ह़दीष़ को यहाँ इस ग़र्ज़ से लाए हैं कि इसमें नक़लकर्दा आयत में अल्लाह तआला ने खाने का अदब बयान किया कि जब खाने से फ़ारिग़ हों तो उठकर चला जाना चाहिये, वहीं जमे रहना और घर वाले को तकलीफ़ देना गुनाह है। (फ़त्हुल बारी)

71. किताबुल अ़क़ीक़ा

किताब अ़क़ीक़ा के मसाइल के बारे में

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

तश्रीह : अ़क़ीक़ा वो क़ुर्बानी जो सातवें दिन बच्चे का सर मुँडाने के वक़्त की जाती है। अकष़र उ़लमा के नज़दीक ये सातवें दिन अ़क़ीक़ा के साथ बच्चा का नाम रखना, सर मुँडाना और उसके वज़न के बराबर चाँदी ख़ैरात करना मुस्तह़ब है। अल अ़क़ीक़ा नौ ज़ाइदा (नवजात) बच्चे के बाल नीज़ वो बकरी जो पैदाइश के सातवें दिन बाल मूँडते वक़्त ज़िब्ह की जाए। (मिस्बाहुल लुग़ात, पेज 565)

बाब 1 : अगर बच्चे के अ़क़ीक़े का इरादा न हो तो पैदाइश के दिन ही उसका नाम रखना और उसकी तह़नीक करना जाइज़ है

١ - باب تَسْمِيَةِ الْمَوْلُودِ غَدَاةَ يُولَدُ لِمَنْ لَمْ يَعُقَّ عَنْهُ، وَتَحْنِيكِهِ

ष़ाबित हुआ कि अ़क़ीक़ा करना सुन्नत है फ़र्ज़ नहीं है। बाब मुनअ़क़िद करने से इमाम बुख़ारी (रह़.) का यही मक़्सद है कि अ़क़ीक़ा वाजिब नहीं बल्कि सिर्फ़ सुन्नत है। लफ़्ज़ **तह़नीक हन्नक (और) हनक** से है। जिसके मा'नी चबाकर नरम बनाना है। ह़नकुस्सबिय्यि बच्चे को मुहज़्ज़ब बनाना (मिस्बाहुल लुग़ात, पेज नं. 180)

5467. मुझसे इस्ह़ाक़ बिन नस़्र ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, कहा कि मुझसे यज़ीद ने बयान किया, उनसे अबू बुर्दा ने और उनसे अबू मूसा (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरे यहाँ एक लड़का पैदा हुआ तो मैं उसे लेकर नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उसका नाम इब्राहीम रखा और खजूर को अपने दंदाने मुबारक से नरम करके उसे चटाया और उसके लिये बरकत की दुआ की फिर मुझे दे दिया। ये अबू मूसा (रज़ि .) के सबसे बड़े

٥٤٦٧- حدثني إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرٍ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ قَالَ حَدَّثَنِي بُرَيْدٌ عَنْ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : وُلِدَ لِي غُلاَمٌ فَأَتَيْتُ بِهِ النَّبِيَّ ﷺ، فَسَمَّاهُ إِبْرَاهِيمَ، فَحَنَّكَهُ بِتَمْرَةٍ، وَدَعَا لَهُ بِالْبَرَكَةِ، وَدَفَعَهُ إِلَيَّ وَكَانَ أَكْبَرَ وَلَدِ أَبِي مُوسَى.

लड़के थे। (दीगर मक़ामात : 6198)

[طرفه في : ٦١٩٨].

पैदाइश के बाद ही बच्चे को आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में लाया गया था। उसी से बाब का मतलब षाबित हुआ। इमाम इब्ने हिब्बान ने उनका नाम भी सहाबा में शुमार किया है क्योंकि उसने आँहज़रत (ﷺ) को देखा मगर आपसे रिवायत नहीं की।

5468. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में एक नौ मौलूद बच्चा लाया गया ताकि आप उसकी तह्नीक कर दें उस बच्चे ने आपके ऊपर पेशाब कर दिया, आपने उस पर पानी बहा दिया। (राजेअ : 222)

٥٤٦٨- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: أُتِيَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِصَبِيٍّ يُحَنِّكُهُ، فَبَالَ عَلَيْهِ، فَأَتْبَعَهُ الْمَاءَ.

[راجع: ٢٢٢]

तश्रीह : बच्चा बादे विलादत फ़ौरन ही ख़िदमत में लाया गया। आपने तह्नीक फ़र्माई या'नी खजूर का टुकड़ा अपने दहाने मुबारक में नरम करके बच्चे को चटा दिया। इसी से बाब का मज़्मून षाबित हुआ। अक़ीक़ा का इरादा न हो तो पैदा होते ही ख़त्ना व तह्नीक करना जाइज़ है। अक़ीक़ा करना हो तो ये आमाल बरोज़े अक़ीक़ा किये जाएँ।

5469. हमसे इस्हाक़ बिन नज़्र ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन उर्वा ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत अस्मा बिन्ते अबीबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) मक्का में उनके पेट में थे। उन्होंने कहा कि फिर मैं (जब हिजरत के लिये) निकली तो वक़्ते विलादत क़रीब था। मदीना मुनव्वरह पहुँचकर मैंने पहली मंज़िल क़ुबा में की और यहीं अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) पैदा हो गये। मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में बच्चे को लेकर हाज़िर हुई और उसे आपकी गोद में रख दिया। आँहज़रत (ﷺ) ने खजूर तलब की और उसे चबाया और बच्चे के मुँह में अपना थूक डाल दिया। चुनाँचे पहली चीज़ जो उस बच्चे के पेट में गई वो हुज़ूरे अकरम (ﷺ) का थूक मुबारक था फिर आपने खजूर से तह्नीक की और उसके लिये बरकत की दुआ की। ये सबसे पहला बच्चा था जो इस्लाम में (हिजरत के बाद मदीना मुनव्वरह में) पैदा हुआ। सहाबा किराम (रज़ि.) इससे बहुत ख़ुश हुए क्योंकि ये अफ़वाह फैलाई जा रही थी कि यहूदियों ने तुम (मुसलमानों) पर जादू कर दिया है। इसलिये तुम्हारे यहाँ अब कोई बच्चा पैदा नहीं होगा। (राजेअ : 3909)

٥٤٦٩- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرٍ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا، أَنَّهَا حَمَلَتْ بِعَبْدِ اللهِ بْنِ الزُّبَيْرِ بِمَكَّةَ، قَالَتْ : فَخَرَجْتُ وَأَنَا مُتِمٌّ، فَأَتَيْتُ الْمَدِينَةَ، فَنَزَلْتُ قُبَاءَ فَوَلَدْتُ بِقُبَاءَ، ثُمَّ أَتَيْتُ بِهِ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَوَضَعْتُهُ فِي حَجْرِهِ، ثُمَّ دَعَا بِتَمْرَةٍ فَمَضَغَهَا ثُمَّ تَفَلَ فِي فِيهِ، فَكَانَ أَوَّلَ شَيْءٍ دَخَلَ جَوْفَهُ رِيقُ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ حَنَّكَهُ بِالتَّمْرَةِ، ثُمَّ دَعَا لَهُ فَبَرَّكَ عَلَيْهِ، وَكَانَ أَوَّلَ مَوْلُودٍ وُلِدَ فِي الإِسْلاَمِ، فَفَرِحُوا بِهِ فَرَحًا شَدِيدًا، لأَنَّهُمْ قِيلَ لَهُمْ : إِنَّ الْيَهُودَ قَدْ سَحَرَتْكُمْ فَلاَ يُولَدُ لَكُمْ.

[راجع: ٣٩٠٩]

पहली हदीष मुज्मल थी वही वाक़िया इसमें मुफ़स्सल बयान किया गया है वो बच्चा हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) थे जो बाद में एक निहायत ही जलीलुल क़द्र बुज़ुर्ग षाबित हुए। यहूदियों की उस बकवास से कुछ मुसलमानों को रंज भी था

जब ये बच्चा पैदा हुआ तो मुसलमानों ने ख़ुशी में इस ज़ो र से नारा–ए–तक्बीर बुलंद किया कि सारा मदीना गूँज उठा। (देखो शरह़ वह़ीदी)

٥٤٧٠– حَدَّثَنَا مَطَرُ بْنُ الْفَضْلِ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَوْنٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ سِيرِينَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : كَانَ ابْنٌ لأَبِي طَلْحَةَ يَشْتَكِي، فَخَرَجَ أَبُو طَلْحَةَ فَقُبِضَ الصَّبِيُّ. فَلَمَّا رَجَعَ أَبُو طَلْحَةَ قَالَ : مَا فَعَلَ ابْنِي؟ قَالَتْ أُمُّ سُلَيْمٍ: هُوَ أَسْكَنُ مَا كَانَ فَقَرَّبَتْ إِلَيْهِ الْعَشَاءَ فَتَعَشَّى، ثُمَّ أَصَابَ مِنْهَا، فَلَمَّا فَرَغَ قَالَتْ: وَارِ الصَّبِيَّ. فَلَمَّا أَصْبَحَ أَبُو طَلْحَةَ أَتَى رَسُولَ اللهِ ﷺ فَأَخْبَرَهُ فَقَالَ: ((أَعْرَسْتُمُ اللَّيْلَةَ؟)) قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: ((اللَّهُمَّ بَارِكْ لَهُمَ)). فَوَلَدَتْ غُلاَمًا. قَالَ لِي أَبُو طَلْحَةَ احْفَظِيهِ حَتَّى تَأْتِيَ بِهِ النَّبِيَّ ﷺ، فَأَتَى بِهِ النَّبِيَّ ﷺ وَأَرْسَلَتْ مَعَهُ بِتَمَرَاتٍ، فَأَخَذَهُ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ : ((أَمَعَهُ شَيْءٌ؟)) قَالُوا نَعَمْ. تَمَرَاتٍ فَأَخَذَهَا النَّبِيُّ ﷺ فَمَضَغَهَا ثُمَّ أَخَذَ مِنْ فِيهِ فَجَعَلَهَا فِي فِي الصَّبِيِّ وَحَنَّكَهُ بِهِ وَسَمَّاهُ عَبْدَ اللهِ.

[راجع: ١٣٠١]

5470. हमसे मत़र बिन फ़ज़ल ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन हारून ने, उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन औ़न ने ख़बर दी, उन्हें अनस बिन सीरीन ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि अबू त़लह़ा (रज़ि.) का एक लड़का बीमार था। अबू त़लह़ा कहीं बाहर गये हुए थे कि बच्चे का इंतिक़ाल हो गया। जब वो (थके मांदे) वापस आए तो पूछा कि बच्चा कैसा है? उनकी बीवी उम्मे सुलैम (रज़ि.) ने कहा कि वो पहले से ज़्यादा सुकून के साथ है फिर बीवी ने उनके सामने रात का खाना रखा और अबू त़लह़ा (रज़ि.) ने खाना खाया। उसके बाद उन्होंने उनके साथ हमबिस्तरी की फिर जब फ़ारिग़ हुए तो उन्होंने कहा कि बच्चे को दफ़न कर दो। सुबह़ हुई तो अबू त़लह़ा (रज़ि.) रसूले करीम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और आपको वाक़िये की ख़बर दी। आँह़ज़रत (ﷺ) ने दरयाफ़्त किया तुमने रात हमबिस्तरी भी की थी? उन्होंने अ़र्ज़ किया कि जी हाँ। आँह़ज़रत (ﷺ) ने दुआ़ की, ऐ अल्लाह! इन दोनों को बरकत अ़त़ा फ़र्मा। फिर उनके यहाँ एक बच्चा पैदा हुआ तो मुझसे अबू त़लह़ा (रज़ि.) ने कहा कि इसे ह़िफ़ाज़त के साथ आँह़ज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में ले जाओ। चुनाँचे बच्चा आँह़ज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में लाए और उम्मे सुलैम (रज़ि.) ने बच्चे के साथ खजूरें भेजीं, आँह़ज़रत (ﷺ) ने बच्चे को लिया और दरयाफ़्त किया कि इसके साथ कोई चीज़ भी है? लोगों ने कहा कि जी हाँ खजूरें हैं। आपने उसे लेकर चबाया और फिर उसे अपने मुँह से निकालकर बच्चे के मुँह में रख दिया और उससे बच्चे की तह़नीक की और उसका नाम अ़ब्दुल्लाह रखा।

(राजेअ़: 1301)

इस ह़दीष़ से भी बाब का मज़्मून बख़ूबी ष़ाबित हो गया। नीज़ स़ब्र व शुक्र का बेहतरीन फल भी ष़ाबित हुआ। तह़नीक के मा'नी पीछे गुज़र चुके हैं। ह़ज़रत अबू त़लह़ा (रज़ि.) का ये मरने वाला बच्चा अबू उ़मैर नामी था जिससे आँह़ज़रत (ﷺ) मज़ाक़न फ़र्माया करते थे **या अबा उमैर या फअलन्नगीर** ऐ अबू उ़मैर! तूने जो चिड़िया पाल रखी है वो किस ह़ाल में है। इस ह़दीष़ से ये निकलता है कि अबू त़लह़ा ने बच्चे का अ़क़ीक़ा नहीं किया और बच्चे का उसी दिन नाम रख लिया। मा'लूम हुआ कि अ़क़ीक़ा मुस्तह़ब है, कुछ वाजिब नहीं। (मुतर्जम वह़ीदी)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ عَنِ ابْنِ عَوْنٍ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أَنَسٍ

हमसे मुह़म्मद बिन मुष़न्ना ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अ़दी ने बयान किया, उन्होंने इब्ने औ़न से, उन्होंने मुह़म्मद बिन सीरीन से, वो ह़ज़रत अनस (रज़ि.) से रिवायत करते हैं

وَسَاقَ الْحَدِيثَ.

कि उन्होंने इस हदीष़ को (मिष़्ल साबिक़) पूरे त़ौर पर बयान किया।

٢- باب إِمَاطَةِ الأَذَى عَنِ الصَّبِيِّ فِي الْعَقِيقَةِ

बाब 2 : अ़क़ीक़े के दिन बच्चे के बाल मूँडना (या ख़त्ना करना)

٥٤٧١- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ سَلْمَانَ بْنِ عَامِرٍ قَالَ: مَعَ الْغُلاَمِ عَقِيقَةٌ. وَقَالَ حَجَّاجٌ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ أَخْبَرَنَا أَيُّوبُ وَقَتَادَةُ وَهِشَامٌ وَحَبِيبٌ عَنِ ابْنِ سِيرِينَ عَنْ سَلْمَانَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. وَقَالَ غَيْرُ وَاحِدٍ عَنْ عَاصِمٍ وَهِشَامٍ عَنْ حَفْصَةَ بِنْتِ سِيرِينَ عَنِ الرَّبَابِ عَنْ سَلْمَانَ بْنِ عَامِرٍ الضَّبِّيِّ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. وَرَوَاهُ يَزِيدُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ عَنِ ابْنِ سِيرِينَ عَنْ سَلْمَانَ قَوْلَهُ.

[طرفه في : ٥٤٧٢].

5471. हमसे अबुन नोअ़मान ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुख़्तियानी ने, उनसे मुह़म्मद बिन सीरीन ने, उनसे सलमान बिन आ़मिर (रज़ि.) (स़ह़ाबी) ने बयान किया कि बच्चे का अ़क़ीक़ा करना चाहिये। और ह़ज्जाज बिन मिन्हाल ने कहा, उनसे ह़म्माद बिन सलमा ने बयान किया, कहा हमको अय्यूब सुख़्तियानी, क़तादा, हिशाम बिन ह़स्सान और ह़बीब बिन शहीद इन चारों ने ख़बर दी, उन्हें मुह़म्मद बिन सीरीन ने और उन्हें ह़ज़रत सलमान बिन आ़मिर (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से। और कई लोगों ने बयान किया, उनसे आ़स़िम बिन सुलैमान और हिशाम बिन ह़स्सान ने, उनसे ह़फ़्स़ा बिन्ते सीरीन ने, उनसे रबाब बिन्ते सुलेअ़ ने, उनसे सलमान बिन आ़मिर ने, और उन्होंने मर्फ़ूअ़न नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया है और उसकी रिवायत यज़ीद बिन इब्राहीम तस्तरी ने की, उनसे मुह़म्मद बिन सीरीन ने और उनसे ह़ज़रत सलमान बिन आ़मिर (रज़ि.) ने अपना क़ौल मौक़ूफ़न (ग़ैर मर्फ़ूअ़) ज़िक्र किया। (दीगर मक़ामात : 5472)

٥٤٧٢- وقال أَصْبَغُ أَخْبَرَنِي ابْنُ وَهْبٍ عَنْ جَرِيرِ بْنِ حَازِمٍ عَنْ أَيُّوبَ السَّخْتِيَانِيِّ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ حَدَّثَنَا سَلْمَانُ بْنُ عَامِرٍ الضَّبِّيُّ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((مَعَ الْغُلاَمِ عَقِيقَةٌ، فَأَهْرِيقُوا عَنْهُ دَمًا، وَأَمِيطُوا عَنْهُ الأَذَى)).

5472. और अस़्बग़ बिन फ़ुर्ज ने बयान किया कि मुझे अ़ब्दुल्लाह बिन वहब ने ख़बर दी, उन्हें जरीर बिन ह़ाज़िम ने, उन्हें ह़ज़रत अय्यूब सुख़्तियानी ने, उन्हें मुह़म्मद बिन सीरीन ने कि हमसे ह़ज़रत सलमान बिन आ़मिर अ़स़्स़ब्बिय्यि (रज़ि.) ने बयान किया, कहा कि मैंने रसूले करीम (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि लड़के के साथ उसका अ़क़ीक़ा लगा हुआ है इसलिये उसकी त़रफ़ से जानवर ज़िब्ह़ करो और उससे बाल दूर करो। (सर मुँडा दो या ख़त्ना करो)

तश्रीह : मुख़्तलिफ़ सनदों के ज़िक्र का मक़्स़द ये है कि सलमान बिन आ़मिर की रिवायत को जिसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने मौक़ूफ़न नक़ल किया है उसे ह़म्माद बिन सलमा ने मर्फ़ूअ़न रिवायत किया है। ह़म्माद बिन सलमा पर कुछ लोगों ने कलाम किया है। मगर अकष़र ने उनको ष़िक़ह भी कहा है। ह़सन और क़तादा ने इस ह़दीष़ की रू से ये कहा है कि लड़के का अ़क़ीक़ा करना चाहिये और लड़की का अ़क़ीक़ा ज़रूरी नहीं। मगर उनका ये क़ौल ज़ईफ़ है लड़की का भी अ़क़ीक़ा सुन्नत है। अगर अ़क़ीक़ा में ऊँट गाय वग़ैरह ज़िब्ह़ करे तो जुम्हूर के नज़दीक ये दुरुस्त है। (शरह़ वह़ीदी)

حدثني عَبْدُ اللهِ بْنُ أبي الأَسْوَدِ حَدَّثَنَا

मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी अल अस्वदने बयान किया, कहा

हमसे क़ुरैश बिन अनस ने बयान किया, कहा कि उनसे हबीब बिन शहीद ने बयान किया कि मुझे मुहम्मद बिन सीरीन ने हुक्म दिया कि मैं हज़रत इमाम हसन बस़री (रह.) से पूछूँ कि उन्होंने अक़ीक़े की हदीष़ किससे सुनी है। मैंने उनसे पूछा तो उन्होंने कहा कि समुरह बिन जुन्दब (रज़ि.) से सुनी है। (राजेअ़ : 5471)

قُرَيْشُ بْنُ أَنَسٍ عَنْ حَبِيبِ بْنِ الشَّهِيدِ قَالَ : أَمَرَنِي ابْنُ سِيرِينَ أَنْ أَسْأَلَ الْحَسَنَ: مِمَّنْ سَمِعَ حَدِيثَ الْعَقِيقَةِ، فَسَأَلْتُهُ فَقَالَ : مِنْ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدَبٍ. [راجع: ٥٤٧١]

तश्रीह : अक़ीक़ा सुन्नत है जो बच्चे की विलादत के सातवें दिन होना चाहिये बच्चा हो तो दो बकरे और अगर बच्ची हो तो एक बकरा मस्नून है। सातवें दिन न हो सके तो बतौरे क़ज़ा जब तौफ़ीक़ हो करना दुरुस्त है। अक़ीक़ा का गोश्त तक़्सीम करना या पकाकर ख़ुद खाना, दोस्त अह़बाब और ग़रीबों को खिलाना मुनासिब है। बाक़ी और बातें जो इस सिलसिले में मशहूर हैं सब बेषुबूत हैं। अक़ीक़े के जानवर के लिये क़ुर्बानी जैसी शराइत नहीं हैं, वल्लाहु आलम। ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने ह़ज़रत समुरह बिन जुन्दब (रज़ि.) की ह़दीष़ से इस ह़दीष़ की त़रफ़ इशारा फ़र्माया है जिसे अस्ह़ाबे सुनन ने समुरह (रज़ि.) ही से रिवायत किया है कि हर लड़का अपने अक़ीक़े में गिरवी है उसकी त़रफ़ से सातवें दिन क़ुर्बानी की जाए उसका सर मुँडाया जाए उसका नाम रखा जाए।

बाब 3 : फ़रअ़ के बयान में

٣- باب الفرع

तश्रीह : फ़रअ़ ऊँटनी का पहला बच्चा जाहिलियत के ज़माने में मुश्रिक लोग उसको अपने बुतों के सामने काटते। इस्लाम के ज़माने में ये रस्म उसी त़रह़ क़ायम रही मगर उसे अल्लाह के नाम पर ज़िब्ह़ करने लगे फिर ये रस्म मौक़ूफ़ और मन्सूख़ कर दी गई। जैसा कि नीचे लिखी ह़दीष़ से ज़ाहिर है। सनद में ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक एक अ़जीब मुबारक शख़्स़ गुज़रे हैं। अहले ह़दीष़ के पेशवा उधर फ़ुक़हा के भी इमाम हैं और कहते हैं कि फ़ुक़हा में ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा के शागिर्द भी हैं उधर ह़ज़रात सूफ़िया के राह नुमा बड़े औलिया अल्लाह में भी गिने जाते हैं। ऐसी जामिइयत के शख़्स़ इस उम्मत में बहुत कम गुज़रे हैं जो अहले ह़दीष़ और फ़ुक़हा और सूफ़िया तीनों में मुक़्तदा और पेशवा गिने जाएँ। एक ये अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक दूसरे सुफ़यान ष़ौरी तीसरे वकीअ़ बिन जर्राह़ चौथे इमाम ह़सन बस़री।

उलाइक आबाई फजिअतनी बिमिष्लिहिम   इजा जमअ़तना या जरीरल्मजामिउ

5473. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने ख़बर दी, उन्हें इब्न मुसय्यिब ने और उन्हें ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया (इस्लाम में) फ़रआ और अ़तीरा नहीं हैं। फ़रअ़ (ऊँटनी के) सबसे पहले बच्चे को कहते थे जिसे (जाहिलियत में) लोग अपने बुतों के लिये ज़िब्ह़ करते थे और अ़तीरा को रजब में ज़िब्ह़ किया जाता था। (दीगर मक़ामात : 5474)

٥٤٧٣- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ أَخْبَرَنَا الزُّهْرِيُّ عَنِ ابْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لاَ فَرَعَ وَلاَ عَتِيرَةَ)) وَالْفَرَعُ أَوَّلُ النِّتَاجِ، كَانُوا يَذْبَحُونَهُ لِطَوَاغِيتِهِمْ. وَالْعَتِيرَةُ فِي رَجَبٍ.

[أطرافه في : ٥٤٧٤].

तश्रीह : अ़वाम जुहला मुसलमानों में अब तक ये रस्म माहे रजब में कूँडे भरने की रस्म के नाम से जारी है। रजब के आख़िरी अ़शरे में कुछ जगह बड़े ही एहतिमाम से ये कूँडे भरने का त्यौहार मनाया जाता है। कुछ लोग उसे खड़े पीर की नियाज़ बतलाते और उसे खड़े ही खड़े खाते हैं। ये तमाम बिदआत गुमराही की तरफ़ ले जानी वाली हैं। अल्लाह से दुआ है कि वो मुसलमानों को ऐसी ख़ुराफ़ात से बचने की हिदायत बख़्शे, आमीन।

बाब 4 : अतीरा के बयान में

٤- باب الْعَتِيرَةِ

माहे रजब में जाहिलियत वाले क़ुर्बानी किया करते थे, उसी का नाम उन्होंने अतीरा रखा था। इस्लाम ने ऐसी ग़लत रस्मों को जिनका ता'ल्लुक़ शिर्क से था यक्सर ख़त्म कर दिया। लफ़्ज़ अतीरा बाब ज़रब यज़्रिबु से है जिसके मा'नी ज़िब्ह करने के हैं। (मिस्बाहुल लुग़ात)

٥٤٧٤- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ الزُّهْرِيُّ حَدَّثَنَا عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((لاَ فَرَعَ وَلاَ عَتِيرَةَ)). قَالَ وَالْفَرَعُ أَوَّلُ نِتَاجٍ كَانَ يُنْتَجُ لَهُمْ، كَانُوا يَذْبَحُونَهُ لِطَوَاغِيتِهِمْ. وَالْعَتِيرَةُ فِي رَجَبٍ.
[راجع: ٥٤٧٣]

5474. हमसे अली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सईद बिन मुसय्यिब ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया फ़रअ़ और अ़तीरा (इस्लाम में) नहीं हैं। बयान किया कि, फ़रअ़ सबसे पहले बच्चे को कहते थे जो उनके यहाँ (ऊँटनी से) पैदा होता था, उसे वो अपने बुतों के नाम पर ज़िब्ह करते थे और अ़तीरा वो क़ुर्बानी जिसे वो रजब में करते थे (और उसकी खाल पेड़ पर डाल देते)। (राजेअ़ : 5473)

तश्रीह़ : यूँ अल्लाह के लिये स़दक़ा ख़ैरात, क़ुर्बानी हर वक़्त जाइज़ है मगर ज़िलहिज्ज के अ़लावा किसी और महीने की क़ैद लगाकर कोई क़ुर्बानी या ख़ैरात करना ऐसे कामों की इस्लाम में कोई अस़ल नहीं है जैसे ईस़ाले ष़वाब मय्यित के लिये जाइज़ है मगर तीजा या दहुम या चहल्लुम की तख़्सीस़ नाजाइज़ और बिदअ़त है जिसकी कोई अस़ल शरीअ़त में नहीं है। तम्मत बिल ख़ैर।

ख़ात्मा

अल्हम्दुलिल्लाहिल्लज़ी बिनिअ़मतिही ततिम्मुस्सालिहात

ह़म्दो स़लात के बाद मह़ज़ अल्लाह पाक के फ़ज़्ल व करम और फ़िदाइयाने इस्लाम की पुरख़ुलूस़ दुआओं के नतीजे में आज इस पारे की तस्वीद से फ़राग़त ह़ासिल हुई। अल्लाह तआला मेरी क़लमी लग़्ज़िशों को मुआफ़ फ़र्माए और इस ख़िदमते ह़दीष़े नबवी को क़ुबूल करके तमाम मुआविनीने किराम व शाऐक़ीने इ़ज़ाम और बिरादराने इस्लाम के लिये ज़रिया बरकाते दारैन बनाए। जो दूर व नज़दीक इलाक़ों से तक्मीले स़ह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़ मुतर्जम उर्दू के लिये पुरख़ुलूस़ दुआओं से मुझ नाचीज़ की हिम्मत अफ़ज़ाई फ़र्मा रहे हैं। या अल्लाह! जिस त़रह़ तूने यहाँ तक की मंज़िलें मेरे लिये आसान फ़र्माई हैं इसी त़रह़ बक़ाया आठ पारों की इशाअ़त भी आसान फ़र्माइयो और मुझको तौफ़ीक़ दीजिए कि तेरी और तेरे ह़बीब (ﷺ) की ऐन रज़ा के मुताबिक़ मैं इस ख़िदमत को अंजाम दे सकूँ। या अल्लाह! मेरे असातिज़ा किराम व जुम्ला मुआविनीने इ़ज़ाम और आल औलाद के ह़क़ में ये ख़िदमत क़ुबूल फ़र्मा और हम सबको क़यामत के दिन दरबारे रिसालते मआब (ﷺ) में जमा फ़र्माईयो, आपके मुबारक हाथ से आबे कौष़र नस़ीब फ़र्माइयो और इस ख़िदमत को हम सबके लिये बाइ़ष़े नजात बनाइयो। **रब्बना तक़ब्बल मिन्ना इन्नक अन्तस्समीउल्अ़लीम व तुब अ़लैना इन्नक अन्तत्तव्वाबुर्रहीम बिरहमतिक या अर्हमर्राहिमीन व स़ल्लि अ़ला हबीबिक ख़ैरिल्मुर्सलीन व अ़ला आलिही व अस़्ह़ाबिही अज्मईन, आमीन या रब्बल्आलमीन**

राक़िम मुह़म्मद दाऊद राज़ स़ाह़ब वल्द अ़ब्दुल्लाह अस् सलफ़ी मस्जिद अहले ह़दीष़ नम्बर 4121 अजमेरी गेट देहली नम्बर 6 भारत (रबीउ़ल अव्वल सन 1395हिजरी)

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

तेईसवाँ पारा

72. किताबुल ज़बाइह वस्सैद

ज़बीहा और शिकार के बयान में

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

बाब 1 : शिकार पर बिस्मिल्लाह पढ़ना और अल्लाह तआला ने सूरह माइदह में फ़र्माया कि तुम पर मुरदार का खाना ह़राम किया गया है

١ - بَابُ التَّسْمِيَةِ عَلَى الصَّيْدِ وَقَوْلِ اللهِ ﴿حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ﴾

إِلَى قَوْلِهِ: ﴿فَلاَ تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِ﴾ وَقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَيَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِنَ الصَّيْدِ تَنَالُهُ أَيْدِيكُمْ وَرِمَاحُكُمْ﴾ الآيَةَ. وَقَوْلِهِ جَلَّ ذِكْرُهُ: ﴿أُحِلَّتْ لَكُمْ بَهِيمَةُ الأَنْعَامِ إِلاَّ مَا يُتْلَى عَلَيْكُمْ - إِلَى قَوْلِهِ - فَلاَ تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِ﴾ وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ الْعُقُودُ: الْعُهُودُ، مَا أُحِلَّ وَحُرِّمَ. إِلاَّ مَا يُتْلَى عَلَيْكُمْ : الْخِنْزِيرُ، يَجْرِمَنَّكُمْ: يَحْمِلَنَّكُمْ. شَنَآنُ : عَدَاوَةُ. الْمُنْخَنِقَةُ تُخْنَقُ فَتَمُوتُ. الْمَوْقُوذَةُ: تُضْرَبُ بِالْخَشَبِ، يُوقِذُهَا فَتَمُوتُ. وَالْمُتَرَدِّيَةُ: تَتَرَدَّى مِنَ الْجَبَلِ.

पस तुम ए'तिराज़ करने वाले काफ़िरों से न डरो और मुझसे डरो। और अल्लाह तआला का इसी सूरह माइदह में फ़र्मान कि, ऐ ईमान वालों! अल्लाह तआला तुम्हें कुछ शिकार दिखलाकर आज़माएगा जिस तक तुम्हारे हाथ और तुम्हारे नेज़े पहुँच सकेंगे अल आयत और अल्लाह तआला का इसी सूरह माइदह में फ़र्मान कि, तुम्हारे लिये चौपाए मवेशी ह़लाल किये गये सिवा उनके जिनका ज़िक्र तुमसे किया जाता है (मुरदार और सूअर वग़ैरह) और अल्लाह का फ़र्मान कि पस तुम (इन काफ़िरों) से न डरो और मुझ ही से डरो। और ह़ज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि अल उक़ूद से मुराद.. ह़लाल व ह़राम के बारे में अहदो पैमान... इल्ला मा युत्ला अलैकुम से सूअर, मुरदार, ख़ून वग़ैरह मुराद है। यज्रि मन्नकुम बाअिष़ बने, शिनान के मा'नी अदावत दुश्मनी, अल मुन्ख़निक़त जिस जानवर का गला घोंटकर मार दिया गया हो और उससे वो मर गया हो अल

وَالنَّطِيحَةُ: تَنْطِحُ الشَّاةُ، فَمَا أَدْرَكْتَهُ يَتَحَرَّكُ بِذَنَبِهِ أَوْ بِعَيْنِهِ فَاذْبَحْ وَكُلْ.

मौक़ूज़त जिसे लकड़ी या पत्थर से मारा जाए और उससे वो मर जाए अल मुतरद्दियतु, जो पहाड़ से फिसलकर गिर पड़े और मर जाए। अन्नत़ीहत जिसको किसी जानवर ने सींग से मार दिया हो। पस अगर तुम उसे दुम हिलाते हुए या आँख घुमाते हुए पाओ तो ज़िब्ह करके खा लो क्योंकि ये उसके ज़िन्दा होने की दलील है।

तश्रीह : अस़ल में लफ़्ज़ ज़बाइह़ ज़बीह़ा की जमा है ज़बीह़ा वो जानवर जो ज़िब्ह किया जाए और स़ैद उस जानवर को जो शिकार किया जाए आयत **इल्ला मा ज़क्कैतुम** में ज़बीह़ा मुराद है। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) के क़ौल को इब्ने अबी ह़ातिम ने वस्ल किया है। **अल्उक़ूद** सूरह माइदह में है या'नी **औफ़ू बिल्उक़ूद** अल्लाह के अ़हदो पैमान पूरे करो। आयत व अह़ादीष़ की बिना पर ज़िब्ह के वक़्त बिस्मिल्लाह पढ़ना ह़िल्लत की शर्त है अगर अ़मदन बिस्मिल्लाह न पढ़ा तो वो जानवर मुरदार होगा। दूसरे कुत्ते से ग़ैर मुस्लिम का छोड़ा हुआ कुत्ता या ग़ैर सधा हुआ कुत्ता मुराद है।

٥٤٧٥- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا زَكَرِيَّا عَنْ عَامِرٍ عَنْ عَدِيِّ بْنِ حَاتِمٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَأَلْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ صَيْدِ الْمِعْرَاضِ قَالَ: ((مَا أَصَابَ بِحَدِّهِ، فَكُلْهُ. وَمَا أَصَابَ بِعَرْضِهِ فَهُوَ وَقِيذٌ)). وَسَأَلْتُهُ عَنْ صَيْدِ الْكَلْبِ فَقَالَ: ((مَا أَمْسَكَ عَلَيْكَ فَكُلْ، فَإِنَّ أَخْذَ الْكَلْبِ ذَكَاةٌ. وَإِنْ وَجَدْتَ مَعَ كَلْبِكَ، أَوْ كِلاَبِكَ كَلْبًا غَيْرَهُ، فَخَشِيتَ أَنْ يَكُونَ أَخَذَهُ مَعَهُ وَقَدْ قَتَلَهُ فَلاَ تَأْكُلْ فَإِنَّمَا ذَكَرْتَ اسْمَ اللهِ عَلَى كَلْبِكَ وَلَمْ تَذْكُرْهُ عَلَى غَيْرِهِ)).

[راجع: ١٧٥]

5475. हमसे अबू नुऐ़म फ़ज़्ल बिन दुकैन ने बयान किया, कहा हमसे ज़करिया बिन अबी ज़ाइदा ने बयान किया, उनसे आ़मिर शअ़बी ने, उनसे अ़दी बिन ह़ातिम (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से बे-पर के तीर या लकड़ी या गज़ से शिकार के बारे में पूछा तो आपने फ़र्माया कि अगर उसकी नोक शिकार को लग जाए तो खा लो लेकिन अगर उसकी चौड़ाई की त़रफ़ से शिकार को लगे तो वो न खाओ क्योंकि वो मौक़ूज़ा है और मैंने आप (ﷺ) से कुत्ते के शिकार के बारे में सवाल किया तो आपने फ़र्माया कि जिसे वो तुम्हारे लिये रखे (या'नी वो ख़ुद न खाए) उसे खा लो क्योंकि कुत्ते का शिकार को पकड़ लेना ये भी ज़िब्ह करना है और अगर तुम अपने कुत्ते या कुत्तों के साथ कोई दूसरा कुत्ता भी पाओ और तुम्हें अंदेशा हो कि तुम्हारे कुत्ते ने शिकार उस दूसरे के साथ पकड़ा होगा और कुत्ता शिकार को मार चुका हो तो ऐसा शिकार न खाओ क्यों कि तुमने अल्लाह का नाम (बिस्मिल्लाह पढ़कर) अपने कुत्ते पर लिया था दूसरे कुत्ते पर नहीं लिया था। (राजेअ़ : 175)

तश्रीह : ये अ़दी अ़रब के मशहूर सख़ी ह़ातिम के बेटे हैं जो मुसलमान हो गये तो ये ह़दीष़ उन लोगों की दलील है जो बिस्मिल्लाह पढ़ने को ह़िल्लत की दलील कहते हैं। ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर (रह़.) ने कहा कि बाज़ और शिकार और तमाम शिकारी परिन्दों का भी वही हुक्म है जो कुत्ते का हुक्म है उनका भी शिकार खाना दुरुस्त है जब बिस्मिल्लाह पढ़कर उनको शिकार पर छोड़ा जाए। अ़दी अपने बाप की त़रह सख़ी थे काफ़ी त़वील उ़म्र पाई।

٢- باب صَيْدِ الْمِعْرَاضِ

बाब 2 : बे-पर के तीर या'नी लकड़ी गज़ वग़ैरह से शिकार करने का बयान

وَقَالَ ابْنُ عُمَرَ فِي الْمَقْتُولَةِ بِالْبُنْدُقَةِ: تِلْكَ

और ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने ग़ल्ले से मर जाने वाले

शिकार के बारे में कहा कि वो भी मौक़ूज़ा (बोझ के दबाव से मरा हुआ है जो ह़राम है) और सालिम, क़ासिम, मुजाहिद, इब्राहीम, अ़ता और इमाम ह़सन बस़री (रह़महुमुल्लाहि अज्मईन) ने इसको मकरूह रखा है और इमाम ह़सन बस़री (रह़.) गाँव और शहरों में ग़ल्ले चलाने को मकरूह समझते थे और उनके सिवा दूसरी जगहों (मैदान, जंगल वग़ैरह) में कोई मुज़ायक़ा नहीं समझते थे।

الْمَوْقُوذَةُ. وَكَرِهَ سَالِمٌ وَالْقَاسِمُ وَمُجَاهِدٌ وَإِبْرَاهِيمُ وَعَطَاءٌ وَالْحَسَنُ وَكَرِهَ الْحَسَنُ رَمْيَ الْبُنْدُقَةِ فِي الْقُرَى وَالأَمْصَارِ، وَلاَ يَرَى بَأْسًا فِيمَا سِوَاهُ.

गुलैल बाज़ी शिकार करने का पुराना त़रीक़ा है मगर उससे अगर बस्ती में गुलैल बाज़ी की जाए तो बहुत से नुक़्सानात का भी ख़त़रा है। लिहाज़ा बस्ती के अंदर गुलैल बाज़ी करना कोई दानिशमन्दी नहीं है। हाँ जंगलों में उससे शिकार करने में कोई ऐ़ब नहीं है।

5476. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी सफ़र ने, उनसे शअ़बी ने कहा कि मैंने ह़ज़रत अ़दी बिन ह़ातिम (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से बे पर के तीर या लकड़ी गज़ से शिकार के बारे में पूछा तो आपने फ़र्माया कि जब तुम उसकी नोक से शिकार को मार लो तो उसे खाओ लेकिन अगर उसकी अ़र्ज़ की त़रफ़ से शिकार को लगे और उससे वो मर जाए तो वो मौक़ूज़ा (मुरदार) है उसे न खाओ। मैंने सवाल किया कि मैं अपना कुत्ता भी (शिकार के लिये) दौड़ाता हूँ? आपने फ़र्माया कि जब तुम अपने कुत्ते पर बिस्मिल्लाह पढ़कर शिकार के पीछे दौड़ाओ तो वो शिकार खा सकते हो। मैंने पूछा और अगर वो कुत्ता शिकार में से खा ले? आपने फ़र्माया कि फिर न खाओ क्योंकि वो शिकार उसने तुम्हारे लिये नहीं पकड़ा था, स़िर्फ़ अपने लिये पकड़ा था। मैंने पूछा मैं कुछ वक़्त अपना कुत्ता छोड़ता हूँ और बाद में उसके साथ दूसरा कुत्ता भी पाता हूँ? आपने फ़र्माया कि फिर (उसका शिकार) न खाओ क्योंकि बिस्मिल्लाह तुमने स़िर्फ़ अपने कुत्ते पर पढ़ी है, दूसरे पर नहीं पढ़ी है। (राजेअ़ : 175)

٥٤٧٦- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي السَّفَرِ عَنِ الشَّعْبِيِّ قَالَ: سَمِعْتُ عَدِيَّ بْنَ حَاتِمٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَأَلْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الْمِعْرَاضِ فَقَالَ: ((إِذَا أَصَبْتَ بِحَدِّهِ فَكُلْ، فَإِذَا أَصَابَ بِعَرْضِهِ فَقَتَلَ فَإِنَّهُ وَقِيذٌ فَلاَ تَأْكُلْ)). فَقُلْتُ: أُرْسِلُ كَلْبِي قَالَ: ((إِذَا أَرْسَلْتَ كَلْبَكَ وَسَمَّيْتَ فَكُلْ)). قُلْتُ فَإِنْ أَكَلَ؟ قَالَ: ((فَلاَ تَأْكُلْ. فَإِنَّهُ لَمْ يُمْسِكْ عَلَيْكَ، إِنَّمَا أَمْسَكَ عَلَى نَفْسِهِ)). قُلْتُ أُرْسِلُ كَلْبِي فَأَجِدُ مَعَهُ كَلْبًا آخَرَ قَالَ : ((لاَ تَأْكُلْ فَإِنَّكَ إِنَّمَا سَمَّيْتَ عَلَى كَلْبِكَ وَلَمْ تُسَمِّ عَلَى آخَرَ)).

[راجع: ١٧٥]

तश्रीह़ : ग़ल्ला वो है जो गुलैल में रखकर फेंका जाता है जो अपने बोझ से जानवर को मारता और वो गोश्त को चीरता नहीं है। मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ मरह़ूम ने बन्दूक़ का मारा हुआ शिकार ह़लाल कहा है क्योंकि बन्दूक़ की गोली गोश्त को चीरकर अंदर घुस जाती है। जुम्हूर उ़लमा का फ़त्वा यही है कि जब दूसरा कुत्ता उसमें शरीक हो जाए तो उसका खाना दुरुस्त नहीं है। बहुत से उ़लमा बन्दूक़ का शिकार, जबकि वो ज़िब्ह़ से पहले मर जाए उसे ह़लाल नहीं जानते। एह़तियात़ इसी में है, वल्लाहु आ़लम बिस़्स़वाब।

बाब 3 : जब बे-पर के तीर से या लकड़ी के अ़र्ज़

٣- بَابُ مَا أَصَابَ الْمِعْرَاضُ

से शिकार मारा जाए तो उसका क्या हुक्म है?

بِعَرْضِهِ

5477. हमसे क़ुबैसा बिन उक़्बा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, उनसे मंसूर बिन मुअतमिर ने, उनसे इब्राहीम नख़ई ने, उनसे हम्माम बिन हारिष़ ने और उनसे अदी बिन हातिम (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! हम सिखाए हुए कुत्ते (शिकार पर) छोड़ते हैं? आपने फ़र्माया कि जो शिकार वो स़िर्फ़ तुम्हारे लिये रखे उसे खाओ। मैंने अर्ज़ किया अगरचे कुत्ते शिकार को मार डालें। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया (हाँ) अगरचे मार डालें! मैंने अर्ज़ किया कि हम बे-पर के तीर या लकड़ी से शिकार करते हैं? आपने फ़र्माया कि अगर उनकी धार उसको ज़ख़्मी करके फाड़ डाले तो खाओ लेकिन अगर उनके अर्ज़ से शिकार मारा जाए तो उसे न खाओ (वो मुरदार है)

٥٤٧٧- حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ هَمَّامِ بْنِ الْحَارِثِ عَنْ عَدِيِّ بْنِ حَاتِمٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، قَالَ : قُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ، إِنَّا نُرْسِلُ الْكِلاَبَ الْمُعَلَّمَةَ. قَالَ: ((كُلْ مَا أَمْسَكْنَ عَلَيْكَ)). قُلْتُ : وَإِنْ قَتَلْنَ. قَالَ : ((وَإِنْ قَتَلْنَ)). قُلْتُ: وَإِنَّا نَرْمِي بِالْمِعْرَاضِ قَالَ: ((كُلْ مَا خَزَقَ وَمَا أَصَابَ بِعَرْضِهِ فَلاَ تَأْكُلْ)).

[راجع: ١٧٥]

तशरीह : जुम्हूर उलमा का फ़त्वा इस हदीष़ पर है और अबू शुअबा वाली हदीष़ जिसे अबू दाऊद ने रिवायत किया, वो ज़ईफ़ है और ये अदी (रज़ि.) की हदीष़ क़वी है। इस पर अमल करना औला है। हज़रत अदी (रज़ि.) भी अपने बाप हातिम की तरह सख़ावत में मशहूर हैं। ये फ़तह मक्का के साल मुसलमान हुए और ये अपनी क़ौम समेत इस्लाम पर ष़ाबित क़दम रहे और इराक़ की फ़तूहात में शरीक रहे फिर हज़रत अली (रज़ि.) के साथ रहे और 68 साल की उम्र पाई (फ़त्हुल बारी)

बाब 4 : तीर कमान से शिकार करने का बयान

٤- باب صَيْدِ الْقَوْسِ

और इमाम हसन बस़री (रह.) और इब्राहीम नख़ई (रज़ि.) ने कहा कि जब किसी शख़्स़ ने बिस्मिल्लाह कहकर तीर या तलवार से शिकार को मारा और उसकी वजह से शिकार का हाथ या पैर जुदा हो गया तो जो हिस़्सा जुदा हो गया वो न खाओ और बाक़ी खा लो और इब्राहीम नख़ई (रह.) ने कहा कि जब शिकार की गर्दन पर या उसके दरम्यान में मारो तो खा सकते हो और आ'मश ने ज़ैद से रिवायत किया कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) की आल के एक शख़्स़ से एक नील गाय भड़क गई तो हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने उन्हें हुक्म दिया कि जहाँ मुम्किन हो सके वहीं उसे ज़ख़्म लगाएँ (और कहा कि) गोरख़र का जो हिस़्सा (मारते वक़्त) कटकर गिर गया हो उसे छोड़ दो और बाक़ी खा सकते हो।

وَقَالَ الْحَسَنُ وَإِبْرَاهِيمُ: إِذَا ضَرَبَ صَيْدًا فَبَانَ مِنْهُ يَدٌ أَوْ رِجْلٌ لاَ تَأْكُلُهُ الَّذِي بَانَ، وَتَأْكُلُ سَائِرَهُ. وَقَالَ إِبْرَاهِيمُ: إِذَا ضَرَبْتَ عُنُقَهُ أَوْ وَسَطَهُ فَكُلْهُ، وَقَالَ الأَعْمَشُ عَنْ زَيْدٍ: اسْتَعْصَى عَلَى رَجُلٍ مِنْ آلِ عَبْدِ اللهِ حِمَارٌ، فَأَمَرَهُمْ أَنْ يَضْرِبُوهُ حَيْثُ تَيَسَّرَ، دَعُوا مَا سَقَطَ مِنْهُ وَكُلُوهُ.

इसलिये कि वे कटकर गिरने वाला हिस़्सा ज़िन्दा जानवर से जुदा कर दिया गया और दूसरी हदीष़ में है कि जो हिस़्सा ज़िन्दा जानवर से काट लिया जाए वो हिस़्सा मुरदार है तो उसका खाना भी हराम है।

5478. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यज़ीद मक़्बरी ने बयान किया, कहा हमसे हैवा बिन शुरैह ने बयान किया, कहा कि मुझे रबीआ़ बिन यज़ीद दमिश्क़ी ने ख़बर दी, उन्हें अबू इदरीस आइज़ुल्लाह ख़ौलानी ने, उन्हें ह़ज़रत अबू ष़अ़्लबा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी! हम अहले किताब के गाँव में रहते हैं तो क्या हम उनके बर्तन में खा सकते हैं? और हम ऐसी ज़मीन में रहते हैं जहाँ शिकार बहुत होता है। मैं तीर कमान से भी शिकार करता हूँ और अपने उस कुत्ते से भी जो सिखाया हुआ नहीं है और उस कुत्ते से भी जो सिखाया हुआ है तो उसमें से किस का खाना मेरे लिये जाइज़ है। आपने फ़र्माया कि तुमने जो अहले किताब के बर्तन का ज़िक्र किया है तो अगर तुम्हें उसके सिवा कोई और बर्तन मिल सके तो उसमें न खाओ लेकिन तुम्हें कोई दूसरा बर्तन न मिले तो उनके बर्तन को ख़ूब धोकर उसमें खा सकते हो और जो शिकार तुम अपनी तीर कमान से करो और (तीर फेंकते वक़्त) अल्लाह का नाम लिया हो तो (उसका शिकार) खा सकते हो और जो शिकार तुमने ग़ैर सधाए हुए कुत्ते से किया हो और शिकार ख़ुद ज़िब्ह किया हो तो उसे खा सकते हो। (दीगर मक़ामात : 5488, 5496)

٥٤٧٨ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يَزِيدَ حَدَّثَنَا حَيْوَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي رَبِيعَةُ بْنُ يَزِيدَ الدِّمَشْقِيُّ عَنْ أَبِي إِدْرِيسَ عَنْ أَبِي ثَعْلَبَةَ الْخُشَنِيِّ قَالَ: قُلْتُ: يَا نَبِيَّ اللهِ إِنَّا بِأَرْضِ قَوْمٍ أَهْلِ كِتَابٍ، أَفَنَأْكُلُ فِي آنِيَتِهِمْ؟ وَبِأَرْضِ صَيْدٍ أَصِيدُ بِقَوْسِي وَبِكَلْبِي الَّذِي لَيْسَ بِمُعَلَّمٍ وَبِكَلْبِي الْمُعَلَّمِ، فَمَا يَصْلُحُ لِي؟ قَالَ: ((أَمَّا مَا ذَكَرْتَ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ، فَإِنْ وَجَدْتُمْ غَيْرَهَا فَلاَ تَأْكُلُوا فِيهَا، وَإِنْ لَمْ تَجِدُوا فَاغْسِلُوهَا وَكُلُوا فِيهَا. وَمَا صِدْتَ بِقَوْسِكَ فَذَكَرْتَ اسْمَ اللهِ فَكُلْ، وَمَا صِدْتَ بِكَلْبِكَ الْمُعَلَّمِ. فَذَكَرْتَ اسْمَ اللهِ فَكُلْ، وَمَا صِدْتَ بِكَلْبِكَ غَيْرِ مُعَلَّمٍ فَأَدْرَكْتَ ذَكَاتَهُ فَكُلْ)).[طرفاه في : ٥٤٨٨، ٥٤٩٦].

तश्रीह : अगर बग़ैर सिखलाया हुआ कुत्ता कोई शिकार तुम्हारे पास लाए बशर्ते कि वो शिकार ज़िन्दा तुमको मिल जाए और तुम उसे ख़ुद ज़िब्ह करो तो वो तुम्हारे लिये ह़लाल है वरना ह़लाल नहीं और ग़ैर मुस्लिमों के बर्तनों में अगर खाना ही पड़े तो उनको ख़ूब धोकर पाक स़ाफ़ कर लेना ज़रूरी है तब वो बर्तन मुसलमानों के इस्ते'माल के लिये जाइज़ हो सकता है वरना उनके बर्तनों का काम में लाना जाइज़ नहीं है।

बाब 5 : उँगली से छोटे छोटे संग रेज़े और ग़ल्ले मारना

٥- بَابُ الْخَذْفِ وَالْبُنْدُقَةِ

5479. हमसे यूसुफ़ बिन राशिद ने बयान किया, कहा हमसे वकीअ़ और यज़ीद बिन हारून ने बयान किया और अल्फ़ाज़े ह़दीष़ यज़ीद के हैं, उनसे कहमस बिन ह़सन ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन यज़ीद ने, ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल (रज़ि.) ने एक शख़्स़ को कंकरी फेंकते देखा तो फ़र्माया कि कंकरी न फेंको क्योंकि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने कंकरी फेंकने से मना किया है या (उन्होंने बयान किया कि) आँह़ज़रत (ﷺ) कंकरी फेंकने को पसंद नहीं करते थे और कहा कि उससे न शिकार किया जा सकता है और न दुश्मन को कोई नुक़्स़ान पहुँचाया जा सकता है अल्बत्ता ये कभी किसी का दांत तोड़ देती है और आँख

٥٤٧٩ - حَدَّثَنَا يُوسُفُ بْنُ رَاشِدٍ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ وَيَزِيدُ بْنُ هَارُونَ وَاللَّفْظُ لِيَزِيدَ عَنْ كَهْمَسِ بْنِ الْحَسَنِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ بُرَيْدَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مُغَفَّلٍ أَنَّهُ رَأَى رَجُلاً يَخْذِفُ فَقَالَ لَهُ: لاَ تَخْذِفْ، فَإِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ نَهَى عَنِ الْخَذْفِ أَوْ كَانَ يَكْرَهُ الْخَذْفَ. وَقَالَ: إِنَّهُ لاَ يُصَادُ بِهِ صَيْدٌ وَلاَ يُنْكَأُ بِهِ عَدُوٌّ، وَلَكِنَّهَا قَدْ تَكْسِرُ

फोड़ देती है। उसके बाद भी उन्होंने उस शख़्स को कंकरियाँ फेंकते देखा तो कहा कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की ह़दीष़ तुम्हें सुना रहा हूँ कि आपने कंकरी फेंकने से मना किया या कंकरी फेंकने को नापसंद किया और तुम अब भी फेंके जा रहे हो, मैं तुमसे इतने दिनों तक कलाम नहीं करूँगा। (राजेअ : 4841)

السِّنَّ، وَتَفْقَأُ الْعَيْنَ. ثُمَّ رَآهُ بَعْدَ ذَلِكَ يَخْذِفُ فَقَالَ لَهُ: أُحَدِّثُكَ عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ أَنَّهُ نَهَى عَنِ الْخَذْفِ، أَوْ كَرِهَ الْخَذْفَ، وَأَنْتَ تَخْذِفُ؟ لاَ أُكَلِّمُكَ كَذَا وَكَذَا. [راجع: ٤٨٤١]

तश्रीह : इस ह़दीष़ से ज़ाहिर हो गया कि ह़दीष़ पर चलना और ह़दीष़ के सामने अपनी राये क़यास को छोड़ना ईमान का तक़ाज़ा है और यही स़िराते मुस्तक़ीम है अल्लाह इसी पर क़ायम व दायम रखे और इसी राहे ह़दीष़ पर मौत नस़ीब करे, आमीन।

ह़ाफ़िज़ स़ाह़ब फ़र्माते हैं, **व फिल्हदीषि जवाज़ु हिज्रिन अन्न मन खालफस्सुन्नत व तर्कु कलामिही व ला यदखुलु ज़ालिक फिन्नहयि अनिल्हिज्रि फौक़ ष़लाष़िन फइन्नहू यतअल्लक़ू बिमन हजर बिहज़्रि नफ़्सिहीया**'नी इससे उन लोगों से सलाम व कलाम छोड़ देना जाइज़ ष़ाबित हुआ जो सुन्नत की मुख़ालफ़त करें और ये अ़मल उस ह़दीष़ के ख़िलाफ़ न होगा जिसमें तीन दिन से ज़्यादा तर्के कलाम की मुख़ालफ़त आई है। इसलिये कि वो अपने नफ़्स के लिये है और ये मुह़ब्बत सुन्नते नबवी फ़िदाहू रूह़ी के लिये। सच है यही वो स़िराते मुस्तक़ीम है जिससे अल्लाह मिलेगा जैसा कि अ़ल्लामा त़ह़तावी ने मुफ़स़्स़ल बयान फ़र्माया है **फइन कुल्त मा वुक़ूफ़ुक अ़ला अन्नक अ़ला सिरातिम्मुस्तक़ीम व कुल्लु वाहिदिम्मिन हाजिहिल्फ़िरक़ि यद्दई अन्नहू अ़लैहि कुल्तु लैस ज़ालिक लिल्इद्दिआइ वत्तषब्बुति बिइस्तिअमालिहिम अल्वहमुल्क़ासिर वल्क़ौलुज़्ज़ाइम बल बिन्नक़्लि अ़न जहाबिज़ति हाज़िहिस्सुन्अति व उ़लमाइ अहलिल्हदीषिल्लज़ीन जमऊ सिहाहल्हदीषि फ़ी ऊमूरि रसूलिल्लाहि (ﷺ) व अहवालहू व अफ़्आलहू व हरकातहू व सकनातहू व अहवालस्सहाबति वल्मुहाजिरीन वल्अन्स़ारिल्लज़ीन बिइह़सानि मिष्लुल्इमाम बुख़ारी व मुस्लिम व गैरहुमा मिनष्षिक़ातिल्मश्हूरीनल्लज़ीन इत्तफ़क़ अहलुश्शर्कि वल्गर्बि अ़ला स़िह्हति मा औरदूहु फ़ी कुतुबिहिम मिन उमूरिन्नबिय्यि (ﷺ) व अस़्हाबिही (रज़ि.) षुम्म बअदयिहिम वत्तफ़क़ अषरहुम वहतदा बिसियरिहिम फ़िल्उसूलि वल्फ़ुरूइ बैनल्हक़्क़ि वल्बातिलिल्मुमय्यज़ि बैन मन हुव अलस़्स़िरातिल्मुस्तक़ीम व बैन मन हुव अलस्सबीलिल्लज़ी अ़ला यमीनिही व शिमालिही** (तहतावी हाशियः दुर्रे मुख़्तार मत्बुअः बिवलाक़ काहिरः जिल्द : 4 किताबुज़्ज़बाइह पेज 135)

अगर तू कहे कि तुझे अपना स़िराते मुस्तक़ीम पर होना कैसे मा'लूम हो ह़ालाँकि उन तमाम फ़िर्क़ों में हर एक यही दा'वा करता है तो मैं जवाब दूँगा कि ये स़िर्फ़ दा'वा कर लेने और अपने वहम व गुमान को सनद बना लेने से ष़ाबित नहीं हो सकता बल्कि उस पर वो है जो इल्म मन्क़ूल ह़ास़िल करे उस फ़न के माहिर उ़लमाए अहले ह़दीष़ से जिन बुज़ुर्गों ने आँह़ज़रत (ﷺ) की स़ह़ीह़ अह़ादीष़ जमा कीं जो आँह़ज़रत (ﷺ) के उमूर और अह़वाल और ह़रकात व सक्नात में मरवी हैं और जिन बुज़ुर्गों ने स़ह़ाबा किराम अंस़ार व मुहाजिरीन के ह़ालात जमा किये जिन्होंने उनकी एह़सान के साथ पैरवी की जैसे कि ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) व ह़ज़रत इमाम मुस्लिम वग़ैरह हैं जो ष़िक़ह लोग थे और मशहूर थे, जिन बुज़ुर्गों की वारिद की हुई मर्फ़ूअ़ व मौक़ूफ़ अह़ादीष़ की स़ेह़त पर कुल उ़लमा मश्रिक़ व मग़्रिब मुत्तफ़िक़ हैं। इस नक़्ल के बाद देखा जाएगा कि उन मुह़द्दिष़ीने किराम के त़रीक़े को मज़बूत थामने वाला और उनकी पूरी पूरी इत्तिबाअ़ करने वाला और तमाम कुल्ली व जुज़्इ छोटे बड़े कामों मे उनकी रविश पर चलने वाला कौन है। अब जो फ़िर्क़ा इस त़रीक़े पर होगा (या'नी अह़ादीष़े रसूल पर बत़रीक़ स़ह़ाबा बिला क़ैदे मज़हब अ़मल करने वाला) उसकी निस्बत हुक्म किया जाएगा कि यही जमाअ़त वो है जो स़िराते मुस्तक़ीम पर है बस यही वे उसूल है जो ह़क़ व बात़िल के बीच फ़र्क़ करने वाला है और यही वो कसौटी है जो स़िराते मुस्तक़ीम पर हैं उनमें और इनमें जो उसके दाएँ बाएँ हैं, तमीज़ कर देती है।

बाब 6 : उसके बयान में जिसने ऐसा कुत्ता पाला

٦- بابُ مَنِ اقْتَنَى كَلْبًا لَيْسَ بِكَلْبِ

जो न शिकार के काम लिये हो और न मवेशी की हिफ़ाज़त के लिये

صَيْدٍ أَوْ مَاشِيَةٍ

5480. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन मुस्लिम ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने हज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने ऐसा कुत्ता पाला जो न मवेशी की हिफ़ाज़त के लिये है और न शिकार करने के लिये तो रोज़ाना उसकी नेकियों मे से दो क़ीरात़ की कमी हो जाती है। (दीगर मक़ामात : 5481, 5482)

٥٤٨٠- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُسْلِمٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ دِينَارٍ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنِ اقْتَنَى كَلْبًا لَيْسَ بِكَلْبِ مَاشِيَةٍ أَوْ ضَارِيَةٍ، نَقَصَ كُلَّ يَوْمٍ مِنْ عَمَلِهِ قِيرَاطَانِ)).

[طرفاه في : ٥٤٨١، ٥٤٨٢].

5481. हमसे मक्की बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको ह़ंज़ला बिन अबी सुफ़यान ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मैंने सालिम से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि शिकारियों और मवेशी की हिफ़ाज़त की ग़र्ज़ के सिवा जिसने कुत्ता पाला तो उसके ष़वाब में से रोज़ाना दो क़ीरात़ की कमी हो जाती है। (राजेअ़ : 5480)

٥٤٨١- حَدَّثَنَا الْمَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ أَخْبَرَنَا حَنْظَلَةُ بْنُ أَبِي سُفْيَانَ قَالَ: سَمِعْتُ سَالِمًا يَقُولُ سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ يَقُولُ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((مَنِ اقْتَنَى كَلْبًا، إِلاَّ كَلْبَ ضَارٍ لِصَيْدٍ أَوْ كَلْبَ مَاشِيَةٍ فَإِنَّهُ يَنْقُصُ مِنْ أَجْرِهِ كُلَّ يَوْمٍ قِيرَاطَانِ)). [راجع: ٥٤٨٠]

खेती की ह़िफ़ाज़त करने वाला कुत्ता भी इसी में दाख़िल है या'नी उसमें गुनाह नहीं।

5482. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ़ ने, और उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने मवेशी की हिफ़ाज़त या शिकार की ग़र्ज़ के सिवा किसी और वजह से कुत्ता पाला उसके ष़वाब से रोज़ाना दो क़ीरात़ की कमी हो जाती है। (राजेअ़ : 5480)

٥٤٨٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَنِ اقْتَنَى كَلْبًا إِلاَّ كَلْبَ مَاشِيَةٍ أَوْ ضَارٍ نَقَصَ مِنْ عَمَلِهِ كُلَّ يَوْمٍ قِيرَاطَانِ)).

[راجع: ٥٤٨٠]

बाब 7 : जब कुत्ता शिकार में से ख़ुद खा ले तो उसका क्या हुक्म है?

٧- باب إِذَا أَكَلَ الْكَلْبُ. وَقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿يَسْأَلُونَكَ مَاذَا أُحِلَّ لَهُمْ قُلْ أُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبَاتُ وَمَا عَلَّمْتُمْ مِنَ الْجَوَارِحِ مُكَلِّبِينَ﴾: الصَّوَائِدُ. الْكَوَاسِبُ اجْتَرَحُوا:

और अल्लाह ने सूरह माइदह में फ़र्माया कि, आपसे पूछते हैं कि क्या चीज़ खानी हमारे लिये ह़लाल की गई है, आप कह दें कि तुम पर कुल पाकीज़ा जानवर खाने ह़लाल हैं और तुम्हारे सधाए हुए शिकारी कुत्तों और जानवरों का शिकार भी जो शिकार पर छोड़े जाते हैं। तुम उन्हें इस तरीक़े पर सिखाते हो

اكْتَسَبُوا ﴿تُعَلِّمُونَهُنَّ مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللهُ، فَكُلُوا مِمَّا أَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ- إِلَى قَوْلِهِ - سَرِيعُ الْحِسَابِ﴾. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : إِنْ أَكَلَ الْكَلْبُ فَقَدْ أَفْسَدَهُ، إِنَّمَا أَمْسَكَ عَلَى نَفْسِهِ، وَاللهُ يَقُولُ: ﴿تُعَلِّمُونَهُنَّ مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللهُ﴾ فَتُضْرَبُ وَتُعَلَّمُ حَتَّى يَتْرُكَ. وَكَرِهَهُ ابْنُ عُمَرَ. وَقَالَ عَطَاءٌ إِنْ شَرِبَ الدَّمَ وَلَمْ يَأْكُلْ فَكُلْ.

जिस तरह तुम्हें अल्लाह ने सिखाया है सो खाओ, उस शिकार को जिसे (शिकारी जानवर या कुत्ता) तुम्हारे लिये पकड़कर रखें, अल्लाह के क़ौल, बेशक अल्लाह हिसाब जल्द कर देता है,तक। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि अगर कुत्ते ने शिकार का गोश्त ख़ुद भी खा लिया तो उसने शिकार को नापाक कर दिया क्यों कि उस सूरत में उसने ख़ुद के लिये शिकार को रोका है और अल्लाह तआ़ला का इसी सूरह में फ़र्माना कि तुम उन्हें सिखाते हो उसमें से जो अल्लाह ने तुम्हें सिखाया है, इसलिये ऐसे कुत्ते को पीटा जाएगा और सिखाया जाता रहेगा, यहाँ तक कि शिकार में से वो खाने की आ़दत छोड़ दे। ऐसे शिकार को इब्ने उ़मर (रज़ि.) मकरूह समझते थे और अ़त़ा ने कहा कि अगर सिर्फ़ शिकार का ख़ून पी लिया हो और उसका गोश्त न खाया हो तो तुम खा सकते हो।

अ़त़ा का क़ौल भी एह़तियात़ के ख़िलाफ़ है लिहाज़ा ऐसे शिकार से भी परहेज़ मुनासिब है।

٥٤٨٣- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُضَيْلٍ عَنْ بَيَانٍ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنْ عَدِيِّ بْنِ حَاتِمٍ قَالَ: ((سَأَلْتُ رَسُولَ اللهِ قُلْتُ: إِنَّا قَوْمٌ نَصِيدُ بِهَذِهِ الْكِلاَبِ، فَقَالَ: ((إِذَا أَرْسَلْتَ كِلاَبَكَ الْمُعَلَّمَةَ وَذَكَرْتَ اسْمَ اللهِ فَكُلْ، مِمَّا أَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ وَإِنْ قَتَلْنَ إِلاَّ أَنْ يَأْكُلَ الْكَلْبُ، فَإِنِّي أَخَافُ أَنْ يَكُونَ إِنَّمَا أَمْسَكَهُ عَلَى نَفْسِهِ، وَإِنْ خَالَطَهَا كِلاَبٌ مِنْ غَيْرِهَا فَلاَ تَأْكُلْ)). [راجع: ١٧٥]

5483. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन फ़ुज़ैल ने बयान किया, उनसे बयान बिन बिश्र ने, उनसे शअ़बी ने और उनसे ह़ज़रत अ़दी बिन ह़ातिम (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा कि हम लोग उन कुत्तों से शिकार करते हैं? आपने फ़र्माया कि अगर तुम अपने सिखाए हुए कुत्तों को शिकार के लिये छोड़ते वक़्त अल्लाह का नाम लेते हो तो जो शिकार वो तुम्हारे लिये पकड़कर लाएँ उसे खाओ ख़्वाह वो शिकार को मार ही डालें। अल्बत्ता अगर कुत्ता शिकार मे से ख़ुद भी खा ले तो उसमें ये अंदेशा है कि उसने ये शिकार ख़ुद अपने लिये पकड़ा था और अगर दूसरे कुत्ते भी तुम्हारे कुत्तों के सिवा शिकार में शरीक हो जाएँ तो न खाओ। (राजेअ़ : 175)

ये सधाए हुए कुत्तों के बारे में है अगर वो शिकार को मार भी डालें मगर ख़ुद खाने को मुँह न डालें तो वो जानवर खाया जा सकता है मगर ऐसे सधाए हुए कुत्ते आजकल उ़नक़ा हैं इल्ला माशा अल्लाह।

٨- باب الصَّيْدِ إِذَا غَابَ عَنْهُ يَوْمَيْنِ أَوْ ثَلاَثَةً

बाब 8 : जब शिकार किया हुआ जानवर शिकारी को दो या तीन दिन के बाद मिले तो वो क्या करे?

5484. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे ष़ाबित बिन यज़ीद ने बयान किया, कहा हमसे आ़सिम बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे शअ़बी ने, उनसे अ़दी बिन ह़ातिम (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जब तुमने अपना कुत्ता शिकार पर छोड़ा और बिस्मिल्लाह भी पढ़ी और कुत्ते ने शिकार पकड़ा और उसे मार डाला तो उसे खाओ और अगर उसने ख़ुद भी खा लिया हो तो तुम न खाओ क्योंकि ये शिकार उसने अपने लिये पकड़ा है और अगर दूसरे कुत्ते जिन पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो, उस कुत्ते के साथ शिकार में शरीक हो जाएँ और शिकार पकड़कर मार डालें तो ऐसा शिकार न खाओ क्योंकि तुम्हें मा'लूम नहीं कि किस कुत्ते ने मारा है और अगर तुमने शिकार पर तीर मारा फिर वो शिकार तुम्हें दो या तीन दिन बाद मिला और उस पर तुम्हारे तीर का निशान के सिवा और कोई दूसरा निशान नहीं है तो ऐसा शिकार खाओ लेकिन अगर वो पानी में गिर गया हो तो न खाओ। (राजेअ़ : 175)

٥٤٨٤- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا ثَابِتُ بْنُ يَزِيدَ حَدَّثَنَا عَاصِمٌ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنْ عَدِيِّ بْنِ حَاتِمٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا أَرْسَلْتَ كَلْبَكَ وَسَمَّيْتَ فَأَمْسَكَ وَقَتَلَ فَكُلْ وَإِنْ أَكَلَ فَلاَ تَأْكُلْ، فَإِنَّمَا أَمْسَكَ عَلَى نَفْسِهِ. وَإِذَا خَالَطَ كِلاَبًا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللهِ عَلَيْهَا فَأَمْسَكْنَ وَقَتَلْنَ فَلاَ تَأْكُلْ، فَإِنَّكَ لاَ تَدْرِي أَيُّهَا قَتَلَ. وَإِنْ رَمَيْتَ الصَّيْدَ فَوَجَدْتَهُ بَعْدَ يَوْمٍ أَوْ يَوْمَيْنِ لَيْسَ بِهِ إِلاَّ أَثَرُ سَهْمِكَ فَكُلْ. وَإِنْ وَقَعَ فِي الْمَاءِ فَلاَ تَأْكُلْ)).

[راجع: ١٧٥]

5485. और अ़ब्दुल आ़ला ने बयान किया, उनसे दाऊद बिन अबी यासर ने, उनसे आ़मिर शअ़बी ने और उनसे ह़ज़रत अ़दी बिन ह़ातिम (रज़ि.) ने कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से अ़र्ज़ की कि वो शिकार तीर से मारते हैं फिर दो या तीन दिन पर उसे तलाश करते हैं, तब वो मुर्दा ह़ालत में मिलता है और उसके अंदर उनका तीर घुसा हुआ होता है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर तू चाहे तो खा सकता है। (राजेअ़ : 175)

٥٤٨٥- وقال عَبْدُ الأَعْلَى عَنْ دَاوُدَ عَنْ عَامِرٍ عَنْ عَدِيٍّ أَنَّهُ قَالَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَرْمِي الصَّيْدَ فَيَقْتَفِرُ أَثَرَهُ الْيَوْمَيْنِ وَالثَّلاَثَةَ ثُمَّ يَجِدُهُ مَيِّتًا وَفِيهِ سَهْمُهُ قَالَ: ((يَأْكُلُ إِنْ شَاءَ)).

[راجع: ١٧٥]

ये उसी सूरत में जाइज़ है कि शिकार बदबूदार न हुआ हो वरना फिर वो खाना मुनासिब नहीं है।

बाब 9 : शिकारी जब शिकार के साथ दूसरा कुत्ता पाए तो वो क्या करे?

٩- باب إِذَا وَجَدَ مَعَ الصَّيْدِ كَلْبًا آخَرَ

5486. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी अस् सफ़र ने, उनसे आ़मिर शअ़बी ने और उनसे ह़ज़रत अ़दी बिन ह़ातिम (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैं (शिकार के लिये) अपना कुत्ता छोड़ते वक़्त बिस्मिल्लाह पढ़ लेता हूँ। आपने फ़र्माया कि जब कुत्ता छोड़ते वक़्त बिस्मिल्लाह पढ़ लिया हो और फिर वो कुत्ता शिकार पकड़

٥٤٨٦- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي السَّفَرِ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنْ عَدِيِّ بْنِ حَاتِمٍ قَالَ: قُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ، إِنِّي أُرْسِلُ كَلْبِي وَأُسَمِّي، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ((إِذَا أَرْسَلْتَ

के मार डाले और ख़ुद भी खा ले तो ऐसा शिकार न खाओ क्योंकि ये शिकार उसने ख़ुद के लिये पकड़ा है। मैंने कहा कि मैं कुत्ता शिकार पर छोड़ता हूँ लेकिन उसके साथ दूसरा कुत्ता भी मुझे मिलता है और मुझे ये मा'लूम नहीं कि किसने शिकार पकड़ा है? आपने फ़र्माया कि ऐसा शिकार न खाओ क्योंकि तुमने अपने कुत्ते पर बिस्मिल्लाह पढ़ी है दूसरे कुत्ते पर नहीं पढ़ी और मैंने आपसे बे-पर के तीर या लकड़ी से शिकार का हुक्म पूछा तो आपने फ़र्माया कि अगर शिकार नोक की धार से मरा हो तो खा लेकिन अगर तूने उसकी चौड़ाई से उसे मारा है तो ऐसा शिकार बोझ से मरा है पस उसे न खा। (राजेअ़ : 175)

كَلْبَكَ وَسَمَّيْتَ فَأَخَذَ فَقَتَلَ فَأْكُلْ فَلاَ تَأْكُلْ، فَإِنَّمَا أَمْسَكَ عَلَى نَفْسِهِ)). قُلْتُ: إِنِّي أُرْسِلُ كَلْبِي أَجِدُ مَعَهُ كَلْبًا آخَرَ لاَ أَدْرِي أَيُّهُمَا أَخَذَهُ، فَقَالَ: ((لاَ تَأْكُلْ، فَإِنَّمَا سَمَّيْتَ عَلَى كَلْبِكَ وَلَمْ تُسَمِّ عَلَى غَيْرِهِ)). وَسَأَلْتُهُ عَنْ صَيْدِ الْمِعْرَاضِ فَقَالَ: ((إِذَا أَصَبْتَ بِحَدِّهِ فَكُلْ وَإِذَا أَصَبْتَ بِعَرْضِهِ فَقَتَلَ فَإِنَّهُ وَقِيذٌ فَلاَ تَأْكُلْ)). [راجع: ١٧٥]

तश्रीह : वो मौक़ूज़, मुरदार है। मज़ीद तफ़्सीलात पहले गुज़र चुकी हैं। हज़रत हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं **व फीहि तहरीमु अक्लिस्सैदिल्लज़ी अकलल्कल्बु मिन्हु व लौ कानल्कल्बु मुअल्लमन** (फ़तह) अगर सधाया हुआ कुत्ता ही क्यूँ न हो जब वो शिकार से खा ले तो वो शिकार खाना हराम हो जाता है। लफ़्ज़ कल्बुका की इज़ाफ़त से सधाया हुआ कुत्ता ख़रीदना बेचना जाइज़ षाबित होता है। (फ़तह)

बाब 10 : शिकार करने को बतौरे मशग़ला इख़्तियार करना

١٠- باب مَا جَاءَ فِي التَّصَيُّدِ

तश्रीह : इस बाब को लाकर हज़रत इमामुल मुज्तहिदीन ने ये षाबित फ़र्माया है कि शिकार करना मुबाह है और इस पर इत्तिफ़ाक़ है मगर जो महज़ खेल व तफ़रीह के लिये शिकार करे और फ़राइज़े इस्लामिया से ग़ाफ़िल हो जाए वो मज़मूम है। **अखरजत्तिर्मिज़ी मिन हदीषि इब्नि अ़ब्बास रफ़अ़हू मन सकनल्बादियत जफ़ा व मनित्तबअ़स्सैद गफल** या'नी जो जंगल में रहा उसमें सख़्ती आ जाती है वो जो शिकार के पीछे लगा वो ग़ाफ़िल हो जाता है मगर ये क़ायदा कुल्लिया नहीं है क्योंकि उसके ख़िलाफ़ भी होता है पस फ़राइज़ का रहे एहसास आ़लम के मज़ाहिर में यही सूफ़ी का मक़्सद है यही शारेअ का इशारह है।

5487. मुझसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमको मुहम्मद बिन फ़ुज़ैल ने ख़बर दी, उनसे बयान बिन बिश्र ने, उनसे आ़मिर शअ़बी ने और उनसे हज़रत अ़दी बिन हातिम (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा कि हम उस क़ौम में सकूनत रखते हैं जो इन कुत्तों से शिकार करती है। आपने फ़र्माया कि जब तुम अपना सिखाया हुआ कुत्ता छोड़ो और उस पर अल्लाह का नाम ले लो तो अगर वो कुत्ता तुम्हारे लिये शिकार लाया हो तो तुम उसे खा सकते हो लेकिन अगर कुत्ते ने ख़ुद भी खा लिया हो तो वो शिकार न खाओ क्यों कि अंदेशा है कि उसने वो शिकार ख़ुद अपने लिये पकड़ा है और अगर उस कुत्ते के साथ कोई दूसरा कुत्ता भी शिकार में शामिल हो जाए तो फिर शिकार न खाओ। (राजेअ़ : 175)

٥٤٨٧- حَدَّثَنِي مُحَمَّدٌ أَخْبَرَنِي ابْنُ فُضَيْلٍ عَنْ بَيَانٍ عَنْ عَامِرٍ عَنْ عَدِيِّ بْنِ حَاتِمٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَأَلْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقُلْتُ: إِنَّا قَوْمٌ نَتَصَيَّدُ بِهَذِهِ الْكِلاَبِ. فَقَالَ: ((إِذَا أَرْسَلْتَ كِلاَبَكَ الْمُعَلَّمَةَ وَذَكَرْتَ اسْمَ اللهِ فَكُلْ مِمَّا أَمْسَكْنَ عَلَيْكَ، إِلاَّ أَنْ يَأْكُلَ الْكَلْبُ فَلاَ تَأْكُلْ، فَإِنِّي أَخَافُ أَنْ يَكُونَ إِنَّمَا أَمْسَكَ عَلَى نَفْسِهِ، وَإِنْ خَالَطَهَا كَلْبٌ مِنْ غَيْرِهَا فَلاَ تَأْكُلْ)). [راجع: ١٧٥]

5488. हमसे अबू आसिम नबील ने बयान किया, उनसे हैवा बिन शुरैह ने (दूसरी सनद) और हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा, मुझसे अहमद बिन अबी रजाअ ने बयान किया, उनसे सलमा बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने बयान किया, उनसे हैवा बिन शुरैह ने बयान किया कि मैंने रबीआ बिन यज़ीद दमिश्क़ी से सुना, कहा कि मुझे अबू इदरीस आइज़ुअल्लाह ने ख़बर दी, कहा कि मैंने हज़रत अबू ष़अल्बा ख़ुशनी (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! हम अहले किताब के मुल्क मे रहते हैं और उनके बर्तन में खाते हैं और हम शिकार की ज़मीन में रहते हैं, जहाँ मैं अपने तीर से शिकार करता हूँ और अपने सधाए हुए कुत्ते से शिकार करता हूँ और ऐसे कुत्तों से भी जो सधाए हुए नहीं होते तो उसमें से क्या चीज़ हमारे लिये जाइज़ है? आपने फ़र्माया तुमने जो ये कहा है कि तुम अहले किताब के मुल्क में रहते हो और उनके बर्तन में भी खाते हो तो अगर तुम्हें उनके बर्तनों के अलावा दूसरे बर्तन मिल जाएँ तो उनके बर्तनों में न खाओ लेकिन उनके बर्तनों के सिवा दूसरे बर्तन न मिलें तो उन्हें धोकर फिर उनमें खाओ और तुमने शिकार की सर ज़मीन का ज़िक्र किया है तो जो शिकार तुम अपने तीर से मारो और तीर चलाते वक़्त अल्लाह का नाम लिया हो तो उसे खाओ और जो शिकार तुमने अपने सधाये हुए कुत्ते से किया हो और उस पर अल्लाह का नाम लिया हो तो उसे खा और जो शिकार तुमने अपने बिला सधाये कुत्ते से किया हो और ज़िब्ह भी ख़ुद ही किया हो तो उसे भी खाओ। (राजेअ : 5487)

٥٤٨٨- حدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ عَنْ حَيْوَةَ بْنِ شُرَيْحٍ وَحَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ أَبِي رَجَاءٍ حَدَّثَنَا سَلَمَةُ بْنُ سُلَيْمَانَ عَنِ ابْنِ الْمُبَارَكِ عَنْ حَيْوَةَ بْنِ شُرَيْحٍ قَالَ: سَمِعْتُ رَبِيعَةَ بْنَ يَزِيدَ الدِّمَشْقِيَّ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو إِدْرِيسَ عَائِذُ اللهِ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا ثَعْلَبَةَ الْخُشَنِيَّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: أَتَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ، إِنَّا بِأَرْضِ قَوْمٍ أَهْلِ الْكِتَابِ، نَأْكُلُ فِي آنِيَتِهِمْ، وَأَرْضِ صَيْدٍ أَصِيدُ بِقَوْسِي، وَأَصِيدُ بِكَلْبِي الْمُعَلَّمِ وَالَّذِي لَيْسَ مُعَلَّمًا، فَأَخْبِرْنِي مَا الَّذِي يَحِلُّ لَنَا مِنْ ذَلِكَ؟ فَقَالَ: ((أَمَّا مَا ذَكَرْتَ أَنَّكَ بِأَرْضِ قَوْمٍ أَهْلِ الْكِتَابِ تَأْكُلُ فِي آنِيَتِهِمْ، فَإِنْ وَجَدْتُمْ غَيْرَ آنِيَتِهِمْ فَلاَ تَأْكُلُوا فِيهَا، وَإِنْ لَمْ تَجِدُوا فَاغْسِلُوهَا ثُمَّ كُلُوا فِيهَا وَأَمَّا مَا ذَكَرْتَ أَنَّكَ بِأَرْضِ صَيْدٍ، فَمَا صِدْتَ بِقَوْسِكَ فَاذْكُرِ اسْمَ اللهِ ثُمَّ كُلْ، وَمَا صِدْتَ بِكَلْبِكَ الْمُعَلَّمِ فَاذْكُرِ اسْمَ اللهِ ثُمَّ كُلْ. وَمَا صِدْتَ بِكَلْبِكَ الَّذِي لَيْسَ مُعَلَّمًا فَأَدْرَكْتَ ذَكَاتَهُ فَكُلْ)). [راجع: ٥٤٧٨]

5489. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन ज़ैद ने बयान किया, और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि मर्रूज़ ज़हरान (मक्का के क़रीब एक मक़ाम) में हमने एक ख़रगोश को उभारा लोग उसके पीछे दौड़े मगर न पाया फिर मैं उसके पीछे लगा और मैंने उसे पकड़ लिया और उसे हज़रत अबू तलहा (रज़ि.) के पास लाया, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) की

٥٤٨٩- حدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ شُعْبَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي هِشَامُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: انْفَجْنَا أَرْنَبًا بِمَرِّ الظَّهْرَانِ فَسَعَوْا عَلَيْهَا حَتَّى لَغِبُوا، فَسَعَيْتُ عَلَيْهَا حَتَّى أَخَذْتُهَا، فَجِئْتُ بِهَا إِلَى أَبِي طَلْحَةَ، فَبَعَثَ إِلَى

ख़िदमत में उसका कूल्हा रखा और दोनों रानें भेजीं तो आपने उन्हें क़ुबूल कर लिया।

النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِوَرِكِهَا وَ فَخِذَيْهَا، فَقَبِلَهُ.

मा'लूम हुआ कि ख़रगोश खाना दुरुस्त है अकष़र उ़लमा का यही फ़त्वा है।

5490. हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे उ़मर बिन उ़बैदुल्लाह के ग़ुलाम अबुन्नज़्र ने, उनसे क़तादा (रज़ि.) के ग़ुलाम नाफ़ेअ ने और उनसे हज़रत अबू क़तादा (रज़ि.) ने कि वो रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ थे फिर वो मक्का के रास्ते मे एक जगह पर अपने कुछ साथियों के साथ जो एहराम बाँधे हुए थे पीछे रह गये ख़ुद अबू क़तादा (रज़ि.) एहराम से नहीं थे उसी अ़र्से में उन्होंने एक गोरख़र देखा और (उसे शिकार करने के इरादे से) अपने घोड़े पर बैठ गये। उसके बाद अपने साथियों से (जो मुहरिम थे) कोड़ा मांगा लेकिन उन्होंने देने से इंकार कर दिया फिर अपना नेज़ा मांगा लेकिन उसे भी उठाने के लिये वो तैयार नहीं हुए तो उन्होंने वो ख़ुद उठाया और गोरख़र पर हमला किया और उसे शिकार कर लिया फिर कुछ ने तो उसका गोश्त खाया और कुछ ने खाने से इंकार किया। उसके बाद जब वो आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो उसका हुक्म पूछा आपने फ़र्माया कि ये तो एक खाना था जो अल्लाह ने तुम्हारे लिये मुहय्या किया था। (राजेअ : 1821)

٥٤٩٠- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ أَبِي النَّضْرِ مَوْلَى عُمَرَ بْنِ عُبَيْدِ اللهِ عَنْ نَافِعٍ مَوْلَى أَبِي قَتَادَةَ عَنْ أَبِي قَتَادَةَ أَنَّهُ كَانَ مَعَ رَسُولِ اللهِ، حَتَّى إِذَا كَانَ بِبَعْضِ طَرِيقِ مَكَّةَ تَخَلَّفَ مَعَ أَصْحَابٍ لَهُ مُحْرِمِينَ، وَهُوَ غَيْرُ مُحْرِمٍ، فَرَأَى حِمَارًا وَحْشِيًّا، فَاسْتَوَى عَلَى فَرَسِهِ ثُمَّ سَأَلَ أَصْحَابَهُ أَنْ يُنَاوِلُوهُ سَوْطًا فَأَبَوْا، فَسَأَلَهُمْ رُمْحَهُ فَأَبَوْا، فَأَخَذَهُ ثُمَّ شَدَّ عَلَى الْحِمَارِ فَقَتَلَهُ، فَأَكَلَ مِنْهُ بَعْضُ أَصْحَابِ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَأَبَى بَعْضُهُمْ، فَلَمَّا أَدْرَكُوا رَسُولَ اللهِ ﷺ سَأَلُوهُ عَنْ ذَلِكَ فَقَالَ: ((إِنَّمَا هِيَ طُعْمَةٌ أَطْعَمَكُمُوهَا اللهُ)).
[راجع: ١٨٢١]

हालते एहराम में किसी दूसरे का शिकार किया हुआ जानवर खाना जाइज़ है।

5491. हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे ज़ैद बिन असलम ने, उनसे अ़ता बिन यसार ने और उनसे हज़रत अबू क़तादा (रज़ि.) ने इसी तरह रिवायत किया अल्बत्ता इस रिवायत में ये लफ़्ज़ ज़्यादा है कि आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा था कि तुम्हारे पास उसका कुछ गोश्त बचा हुआ है या नहीं। (राजेअ : 1821)

٥٤٩١- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي قَتَادَةَ مِثْلَهُ إِلاَّ أَنَّهُ قَالَ: ((هَلْ مَعَكُمْ مِنْ لَحْمِهِ شَيْءٌ؟)).
[راجع: ١٨٢١]

तश्रीह : इन तमाम अहादीष़ के लाने का मक़्सद ये बतलाना है कि शिकार को मशग़ला के तौर पर इख़्तियार करना जाइज़ है मगर ये मशग़ला ऐसा न हो कि फ़राइज़े इस्लामिया की अदायगी में सुस्ती करने का सबब बन जाए। इस सूरत में ये मशग़ला बेहतर न होगा।

बाब 11 : इस बयान में कि पहाड़ों पर शिकार करना जाइज़ है

١١- باب التَّصَيُّدِ عَلَى الْجِبَالِ

इस बाब के लाने से हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) की ग़र्ज़ ये है कि शिकार के लिये पहाड़ों पर चढ़ना मेहनत उठाना या घोड़े को

हाँक ले जाना जाइज़ दुरुस्त है।

5492. हमसे यह्या बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा कि मुझसे इब्ने वहब ने बयान किया, उन्हें अम्र ने ख़बर दी, उनसे अबुन् नज़्र ने बयान किया, उनसे क़तादा के ग़ुलाम नाफ़ेअ और तवामा के ग़ुलाम अबू स़ालेह ने कि उन्होंने ह़ज़रत अबू क़तादा (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैं मक्का और मदीना के दरम्यान रास्ते में नबी करीम (ﷺ) के साथ था। दूसरे लोग तो एह़राम बाँधे हुए थे लेकिन मैं एह़राम में नहीं था और एक घोड़े पर सवार था। मैं पहाड़ों पर चढ़ने का बड़ा आ़दी था फिर अचानक मैंने देखा कि लोग ललचाई हुई नज़रों से कोई चीज़ देख रहे हैं। मैंने जो देखा तो एक गोरख़र था। मैंने उनसे पूछा कि ये क्या है? लोगों ने कहा हमें मा'लूम नहीं! मैंने कहा कि ये तो गोरख़र है। लोगों ने कहा कि जो तुमने देखा है वही है। मैं अपना कोड़ा भूल गया था इसलिये उनसे कहा कि मुझे मेरा कोड़ा दे दो लेकिन उन्होंने कहा कि हम इसमें तुम्हारी कोई मदद नहीं करेंगे (क्योंकि हम मुह़रिम हैं) मैंने उतरकर ख़ुद कोड़ा उठाया और उसके पीछे से उसे मारा, वो वहीं गिर गया फिर मैंने उसे ज़िब्ह किया और अपने साथियों के पास उसे लेकर आया। मैंने कहा कि अब उठो और उसे उठाओ, उन्होंने कहा कि हम इसे नहीं छुएँगे। चुनाँचे मैं ही उसे उठाकर उनके पास लाया। कुछ ने तो उसका गोश्त खाया लेकिन कुछ ने इंकार कर दिया फिर मैंने उनसे कहा कि अच्छा मैं अब तुम्हारे लिये आँह़ज़रत (ﷺ) से रुकने की दरख़्वास्त करूँगा। मैं आँह़ज़रत (ﷺ) के पास पहुँचा और आपसे वाक़िया बयान किया। आपने फ़र्माया कि तुम्हारे पास उसमें से कुछ बाक़ी बचा है? मैंने अ़र्ज़ किया जी हाँ। फ़र्माया खाओ क्योंकि ये एक खाना है जो अल्लाह तआ़ला ने तुमको खिलाया है। (राजेअ़ : 1521)

٥٤٩٢- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ أَخْبَرَنَا عَمْرٌو أَنَّ أَبَا النَّضْرِ حَدَّثَهُ عَنْ نَافِعٍ مَوْلَى أَبِي قَتَادَةَ وَأَبِي صَالِحٍ مَوْلَى التَّوْأَمَةِ سَمِعْتُ أَبَا قَتَادَةَ قَالَ: كُنْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِيمَا بَيْنَ مَكَّةَ وَالْمَدِينَةِ وَهُمْ مُحْرِمُونَ وَأَنَا رَجُلٌ حِلٌّ عَلَى فَرَسٍ، وَكُنْتُ رَقَّاءً عَلَى الْجِبَالِ، فَبَيْنَا أَنَا عَلَى ذَلِكَ إِذْ رَأَيْتُ النَّاسَ مُتَشَوِّفِينَ لِشَيْءٍ، فَذَهَبْتُ أَنْظُرُ فَإِذَا هُوَ حِمَارُ وَحْشٍ، فَقُلْتُ لَهُمْ: مَا هَذَا؟ قَالُوا: لاَ نَدْرِي، قُلْتُ: هُوَ حِمَارٌ وَحْشِيٌّ، فَقَالُوا: هُوَ مَا رَأَيْتَ. وَكُنْتُ نَسِيتُ سَوْطِي، فَقُلْتُ لَهُمْ : نَاوِلُونِي سَوْطِي فَقَالُوا: لاَ نُعِينُكَ عَلَيْهِ، فَنَزَلْتُ فَأَخَذْتُهُ، ثُمَّ ضَرَبْتُ فِي أَثَرِهِ، فَلَمْ يَكُنْ إِلاَّ ذَاكَ حَتَّى عَقَرْتُهُ، فَأَتَيْتُ إِلَيْهِمْ فَقُلْتُ لَهُمْ: قُومُوا فَاحْتَمِلُوا قَالُوا : لاَ نَمَسُّهُ، حَتَّى جِئْتُهُمْ بِهِ فَأَبَى بَعْضُهُمْ وَأَكَلَ بَعْضُهُمْ، فَقُلْتُ : أَنَا أَسْتَوْقِفُ لَكُمُ النَّبِيَّ ﷺ فَأَدْرَكْتُهُ، فَحَدَّثْتُهُ الْحَدِيثَ، فَقَالَ لِي ((أَبَقِيَ مَعَكُمْ شَيْءٌ مِنْهُ؟)) قُلْتُ: نَعَمْ. فَقَالَ: ((كُلُوا فَهُوَ طُعْمٌ أَطْعَمَكُمُوهَا اللهُ)).

[راجع: ١٥٢١]

तश्रीह : ह़ज़रत अबू क़तादा (रज़ि.) ने अपने को शिकार के लिये पहाड़ों पर चढ़ने का आ़दी बताया है। यही बाब से मुत़ाबक़त है। तवामा वो लड़की जो जुड़वाँ पैदा हो। ये उमय्या बिन ख़ल्फ़ की बेटी थी जो अपने भाई के साथ जुड़वा पैदा हुई थी। इसलिये उसका यही नाम पड़ गया।

बाब 12 : सूरह माइदह की उस आयत की तफ़्सीर कि, हलाल किया गया है तुम्हारे लिये

١٢- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى ﴿أُحِلَّ

दरिया का शिकार खाना

﴿لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ﴾
وَقَالَ عُمَرُ: صَيْدُهُ مَا اصْطِيدَ، وَطَعَامُهُ مَا رُمِيَ بِهِ. وَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: الطَّافِي حَلاَلٌ وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : طَعَامُهُ مَيْتَتُهُ، إِلاَّ مَا قَذِرْتَ مِنْهَا وَالْجِرِّيُّ لاَ تَأْكُلُهُ الْيَهُودُ، وَنَحْنُ نَأْكُلُهُ وَقَالَ شُرَيْحٌ صَاحِبُ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: كُلُّ شَيْءٍ فِي الْبَحْرِ مَذْبُوحٌ. وَقَالَ عَطَاءٌ : أَمَّا الطَّيْرُ فَأَرَى أَنْ يَذْبَحَهُ وَقَالَ ابْنُ جُرَيْجٍ: قُلْتُ لِعَطَاءٍ صَيْدُ الأَنْهَارِ وَقِلاَتِ السَّيْلِ أَصَيْدُ بَحْرٍ هُوَ؟ قَالَ: نَعَمْ : ثُمَّ تَلاَ ﴿هَذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ. وَهَذَا مِلْحٌ أُجَاجٌ، وَمِنْ كُلٍّ تَأْكُلُونَ لَحْمًا طَرِيًّا﴾ وَرَكِبَ الْحَسَنُ عَلَيْهِ السَّلاَمُ عَلَى سَرْجٍ مِنْ جُلُودِ كِلاَبِ الْمَاءِ. وَقَالَ الشَّعْبِيُّ : لَوْ أَنَّ أَهْلِي أَكَلُوا الضَّفَادِعَ لأَطْعَمْتُهُمْ. وَلَمْ يَرَ الْحَسَنُ بِالسُّلَحْفَاةِ بَأْسًا. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: كُلْ مِنْ صَيْدِ الْبَحْرِ، وَ إِنْ صَادَهُ نَصْرَانِيٌّ أَوْ يَهُودِيٌّ أَوْ مَجُوسِيٌّ. وَقَالَ أَبُو الدَّرْدَاءِ فِي الْمُرِي: ذَبَحَ الْخَمْرَ النِّينَانُ وَالشَّمْسُ.

उमर (रज़ि.) ने कहा कि दरिया का शिकार वो है जो तदबीर या'नी जाल वग़ैरह से शिकार किया जाए और, उसका खाना वो है जिसे पानी ने बाहर फेंक दिया हो। अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा कि जो दरिया का जानवर मरकर पानी के ऊपर तैरकर आए वो ह़लाल है। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि, उसका खाना से मुराद दरिया का मुरदार है, सिवा उसके जो बिगड़ गया हो। बाम, झींगा मछली को यहूदी नहीं खाते, लेकिन हम (फ़राग़त से) खाते हैं, और नबी करीम (ﷺ) के स़हाबी शुरैह़ (रज़ि.) ने कहा कि हर दरियाई जानवर मज़्बूह़ा है, उसे ज़िब्ह़ की ज़रूरत नहीं। अ़ता ने कहा कि दरियाई परिन्दे के बारे में मेरी राय है कि उसे ज़िब्ह़ करे। इब्ने जुरैज ने कहा कि मैंने अ़ता बिन अबी रिबाह़ से पूछा, क्या नहरों का शिकार और सैलाब के गढ़ों का शिकार भी दरियाई शिकार है (कि उसका खाना बिला ज़िब्ह़ जाइज़ हो) कहा कि हाँ। फिर उन्होंने (दलील के त़ौर पर) सूरह नह़ल की इस आयत की तिलावत की कि, ये दरिया बहुत ज़्यादा मीठा है और ये दूसरा दरिया बहुत ज़्यादा खारा है और तुम उनमें से हर एक से ताज़ा गोश्त (मछली) खाते हो और ह़सन (रज़ि.) दरियाई कुत्ते के चमड़े से बनी हुई ज़ीन पर सवार हुए और शअ़बी ने कहा कि अगर मेरे घर वाले मेंढक खाएँ तो मैं भी उनको खिलाऊँगा और ह़सन बस़री कछुआ खाने में कोई ह़र्ज नहीं समझते थे। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि दरियाई शिकार खाओ ख़्वाह नस़रानी ने किया हो या किसी यहूदी ने किया हो या मजूसी ने किया हो और अबू दर्दा (रज़ि.) ने कहा कि शराब में मछली डाल दें और सूरज की धूप उस पर पड़े तो फिर वो शराब नहीं रहती।

तश्रीह़ : ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) इस अष़र को इसलिये लाए कि मछली के शराब में डालने से वही अषर होता है जो शराब में नमक डालने से क्योंकि फिर शराब की स़िफ़त उसमें बाक़ी नहीं रह जाती। ये उन लोगों के मज़हब पर मब्नी है जो शराब का सिर्का बनाना दुरुस्त जानते हैं। कुछ ने मरी को मकरूह रखा है। मरी उसको कहते हैं कि शराब में नमक और मछली डालकर धूप में रख दें। क़स्तलानी ने कहा कि यहाँ इमाम बुख़ारी (रह़.) ने शाफ़िइया का ख़िलाफ़ किया है क्योंकि इमाम बुख़ारी (रह़.) किसी ख़ास़ मुज्तहिद की पैरवी करने वाले नहीं हैं बल्कि जिस क़ौल की दलील क़वी होती है उसको ले लेते हैं। आजकल अकष़र मुक़ल्लिदीन ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) को शाफ़ई कह कर गिराते हैं। उनकी ये हफ़्वात हर्गिज़ लायक़े तवज्जह नहीं हैं। इमाम बुख़ारी (रह़.) पुख़्ता अहले ह़दीष़ और किताबो सुन्नत को मानने वाले, तक़्लीदे जामिद से कोसों दूर ख़ुद फ़क़ीहे आज़म व मुज्तहिदे मुअ़ज़्ज़म थे।

हज़रत इमाम शअबी का नाम आमिर बिन शुरहबील बिन अब्द अबू अम्र शअबी हिमयरी है। मुष्बत व षिक़ा व इमाम बुज़ुर्ग मर्तबा ताबेई हैं। पाँच सौ सहाबा किराम को देखा। अड़तालीस (48) सहाबा से अहादीष रिवायत की हैं। सन 17 हिजरी में पैदा हुए और सन 107 हिजरी के लगभग में वफ़ात पाई। इमाम शअबी हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) के सबसे बड़े उस्ताद और इब्राहीम नख़ई के हम अस्र हैं। इमाम शअबी अहकामे शरइया में क़यास के क़ाइल न थे। उनके हिल्म व करम का ये आलम था कि रिश्तेदारी में जिसके बारे में उनको मा'लूम हो जाता कि वो क़र्ज़दार होकर मरे हैं तो उनका क़र्ज़ ख़ुद अदा कर देते। इमाम शअबी ने कभी अपने किसी गुलाम व लौण्डी को ज़द व कूब नहीं किया। कूफ़ा के अकषर उलमा के बरख़िलाफ़ हज़रत उष्मान व हज़रत अली (रज़ि.) दोनों के बारे में अच्छा अक़ीदा रखते थे। फ़त्वा देने में निहायत मुहतात थे। उनसे जो मसला पूछा जाता अगर उसके बारे मे उनके पास कोई हदीष न होती तो ला अदरी मैं नहीं जानता कह दिया करते। आ'मश का बयान है कि एक शख़्स ने इमाम शअबी से पूछा कि इब्लीस की बीवी का क्या नाम है। इमाम शअबी ने कहा कि ज़ाक अर्स मा शहित्तुहू मुझे उस शादी में शिर्कत का इत्तिफ़ाक़ नहीं हुआ था। एक मर्तबा ख़ुरासान की मुहिम पर क़ुतैबा बिन मुस्लिम बाहली अमीरुल मुजाहिदीन के साथ जिहाद में शरीक हुए और कार हाय नुमायाँ अंजाम दिये। अब्दुल मलिक ने इमाम शअबी को शाहे रोम के पास सफ़ीर बनाकर भेजा था। (तज़्किरतुल हुफ़्फ़ाज़ : जिल्द 1 पेज नं. 45 तमीम)

٥٤٩٣- حدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَمْرٌو أَنَّهُ سَمِعَ جَابِرًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: غَزَوْنَا جَيْشَ الْخَبَطِ، أَبُو عُبَيْدَةَ، فَجُعْنَا جُوعًا شَدِيدًا، فَأَلْقَى الْبَحْرُ حُوتًا مَيِّتًا لَمْ يُرَ مِثْلُهُ يُقَالُ لَهُ الْعَنْبَرُ، فَأَكَلْنَا مِنْهُ نِصْفَ شَهْرٍ، فَأَخَذَ أَبُو عُبَيْدَةَ عَظْمًا مِنْ عِظَامِهِ فَمَرَّ الرَّاكِبُ تَحْتَهُ. [راجع: ٢٤٨٣]

5493. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या क़त्तान ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने कहा कि मुझे अम्र ने ख़बर दी और उन्होंने जाबिर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि हम ग़ज़्व-ए-ख़ब्त में शरीक थे, हमारे अमीरुल जैश हज़रत अबू उबैदह (रज़ि.) थे। हम सब भूख से बेताब थे कि समुन्दर ने एक मुर्दा मछली बाहर फेंकी। ऐसी मछली देखी नहीं गई थी। उसे अम्बर कहते थे, हमने वो मछली पन्द्रह दिन तक खाई। फिर अबू उबैदह (रज़ि.) ने उसकी एक हड्डी लेकर (खड़ी कर दी) तो वो इतनी ऊँची थी कि एक सवार उसके नीचे से गुज़र गया। (राजेअ : 2483)

ये ग़ज़्वा सन 8 हिजरी में किया गया था जिसमें भूख की वजह से लोगों ने पत्ते खाए, इसीलिये उसे जैशुल ख़ब्त कहा गया।

٥٤٩٤- حدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرٍو وَقَالَ: سَمِعْتُ جَابِرًا يَقُولُ: بَعَثَنَا النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثَلاَثَمِائَةِ رَاكِبٍ، وَأَمِيرُنَا أَبُو عُبَيْدَةَ نَرْصُدُ عِيرًا لِقُرَيْشٍ، فَأَصَابَنَا جُوعٌ شَدِيدٌ حَتَّى أَكَلْنَا الْخَبَطَ فَسُمِّيَ جَيْشَ الْخَبَطِ، وَأَلْقَى الْبَحْرُ حُوتًا يُقَالُ لَهُ الْعَنْبَرُ : فَأَكَلْنَا نِصْفَ شَهْرٍ، وَادَّهَنَّا بِوَدَكِهِ حَتَّى صَلَحَتْ

5494. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान षौरी ने ख़बरदी, उनसे अम्र बिन दीनार ने, उन्होंने जाबिर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने तीन सौ सवार रवाना किये। हमारे अमीर अबू उबैदह (रज़ि.) थे। हमें क़ुरैश के तिजारती क़ाफ़िला की नक़ल व हरकत पर नज़र रखनी थी फिर (खाना ख़त्म हो जाने की वजह से) हम सख़्त भूख और फ़ाक़ा की हालत में थे। नौबत यहाँ तक पहुँच गई थी कि हम सल्लम के पत्ते (ख़ब्त) खाकर वक़्त गुज़ारते थे। इसीलिये इस मुहिम का नाम जैशुल ख़ब्त पड़ गया और समुन्दर ने एक मछली बाहर डाल दी। जिसका नाम अम्बर.

أجْسَامُنَا، قَال فَأَخَذَ أَبُو عُبَيْدَةَ ضِلَعًا مِنْ أَضْلاَعِهِ فَنَصَبَهُ فَمَرَّ الرَّاكِبُ تَحْتَهُ. وَكَانَ فِينَا رَجُلٌ فَلَمَّا اشْتَدَّ الْجُوعُ نَحَرَ ثَلاَثَ جَزَائِرَ ثُمَّ ثَلاَثَ جَزَائِرَ، ثُمَّ نَهَاهُ أَبُو عُبَيْدَةَ. [راجع: ٢٤٨٣]

था। हमने उसे आधे महीने तक खाया और उसकी चर्बी तैल के तौर पर अपने जिस्म पर मली जिससे हमारे जिस्म तन्दरुस्त हो गये। बयान किया कि फिर अबू उ़बैदह (रज़ि.) ने उसकी एक पसली की हड्डी लेकर खड़ी की तो एक सवार उसके नीचे से गुज़र गया। हमारे साथ एक स़ाहब (क़ैस बिन सअ़द बिन उ़बादा रज़ि.) थे जब हम बहुत ज़्यादा भूखे हुए तो उन्होंने यके बाद दीगर तीन ऊँट ज़िब्ह कर दिये। बाद में अबू उ़बैदह (रज़ि.) ने उन्हें उससे मना कर दिया। (राजेअ़: 2483)

क्योंकि सवारियों के कम होने का ख़तरा था और सफ़र में सवारियों का होना भी ज़रूरी है।

बाब 13 : टिड्डी खाना जाइज़ है

١٣- باب أَكْلِ الْجَرَادِ

٥٤٩٥- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي يَعْفُورٍ قَالَ : سَمِعْتُ ابْنَ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا، قَالَ: غَزَوْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ سَبْعَ غَزَوَاتٍ، أَوْ سِتًّا كُنَّا نَأْكُلُ مَعَهُ الْجَرَادَ. قَالَ سُفْيَانُ: وَأَبُو عَوَانَةَ وَإِسْرَائِيلُ عَنْ أَبِي يَعْفُورٍ عَنِ ابْنِ أَبِي أَوْفَى سَبْعَ غَزَوَاتٍ.

5495. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअ़बा बिन ह़ज्जाज ने बयान किया, उनसे अबू यअ़फ़ूर ने बयान किया कि मैंने ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) से सुना कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ सात या छः ग़ज़्वों में शरीक हुए। हम आपके साथ टिड्डी खाते थे। सुफ़यान, अबू अ़वाना और इस्राईल ने अबू यअ़फ़ूर से बयान किया और उनसे इब्ने अबी औफ़ा ने सात ग़ज़्वा के लफ़्ज़ रिवायत किया।

टिड्डी खाना जाइज़ है। ये अ़तिया भी है और अ़ज़ाब भी क्योंकि जहाँ उनका ह़मला हो जाए खेतियाँ बर्बाद हो जाती हैं। इल्ला माशाअल्लाह

बाब 14 : मजूसियों का बर्तन इस्ते'माल करना और मुरदार का खाना कैसा है?

١٤- باب آنِيَةِ الْمَجُوسِ وَالْمَيْتَةِ

٥٤٩٦- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ عَنْ حَيْوَةَ بْنِ شُرَيْحٍ قَالَ: حَدَّثَنِي رَبِيعَةُ بْنُ يَزِيدَ الدِّمَشْقِيُّ، حَدَّثَنِي أَبُو إِدْرِيسَ الْخَوْلاَنِيُّ حَدَّثَنِي أَبُو ثَعْلَبَةَ الْخُشَنِيُّ قَالَ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنَّا بِأَرْضِ أَهْلِ الْكِتَابِ، فَنَأْكُلُ فِي آنِيَتِهِمْ؟ وَبِأَرْضِ صَيْدٍ أَصِيدُ بِقَوْسِي، وَأَصِيدُ بِكَلْبِي الْمُعَلَّمِ، وَبِكَلْبِي الَّذِي لَيْسَ بِمُعَلَّمٍ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَمَّا مَا ذَكَرْتَ،

5496. हमसे अबू आ़सिम नबील ने बयान किया, उनसे ह़ैवा बिन शुरैह़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे रबीआ़ बिन यज़ीद दमिश्क़ी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे अबू इदरीस ख़ौलानी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे ह़ज़रत अबू ष़अ़लबा ख़ुशनी (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ और कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! हम अहले किताब के मुल्क में रहते हैं और मैं अपने तीर कमान से भी शिकार करता हूँ और सधाये हुए कुत्ते से और बे सधाए कुत्ते से भी? आपने फ़र्माया तुमने जो ये कहा है कि तुम अहले किताब के मुल्क में रहते हो तो उनके

أَنَّكَ بِأَرْضِ أَهْلِ كِتَابٍ، فَلاَ تَأْكُلُوا فِي آنِيَتِهِمْ إِلاَّ أَنْ لاَتَجِدُوا بُدًّا فَاغْسِلُوهَا وَكُلُوا. وَأَمَّا مَا ذَكَرْتَ، أَنَّكُمْ بِأَرْضِ صَيْدٍ، فَمَا صِدْتَ بِقَوْسِكَ فَاذْكُرِ اسْمَ اللهِ وَكُلْ، وَمَا صِدْتَ بِكَلْبِكَ الْمُعَلَّمِ فَاذْكُرِ اسْمَ اللهِ وَكُلْ وَمَا صِدْتَ بِكَلْبِكَ الَّذِي لَيْسَ بِمُعَلَّمٍ فَأَدْرَكْتَ ذَكَاتَهُ فَكُلْهُ)).

[راجع: ٥٤٧٨]

बर्तनों में न खाया करो। अल्बत्ता अगर ज़रूरत हो और खाना ही पड़ जाये तो उन्हें ख़ूब धो लिया करो और जो तुमने ये कहा है कि तुम शिकार की ज़मीन में रहते हो तो जो शिकार तुम अपने तीर कमान से करो और उस पर अल्लाह का नाम लिया हो तो उसे खाओ और जो शिकार तुमने अपने सधाए हुए कुत्ते से किया हो और उस पर अल्लाह का नाम लिया हो वो भी खाओ और जो शिकार तुमने अपने बिला सधाए हुए कुत्ते से किया हो और उसे ख़ुद ज़िब्ह किया हो उसे खाओ। (राजेअ : 5478)

इस आख़िरी जुम्ला से मा'लूम हुआ कि मुरदार का खाना जाइज़ नहीं है।

तश्रीह : अहले किताब के बर्तनों से वो बर्तन मुराद थे जिनमें वो लोग हराम जानवरों का गोश्त पकाते थे और बर्तन जिनमें वो शराब पीते थे इसलिये उनके इस्ते'माल से मना किया गया और सख़्त ज़रूरत के वक़्त मजबूरी में उनको ख़ूब साफ़ करके इस्ते'माल करने की इजाज़त दी गई (फ़त्हुल बारी)

٥٤٩٧ - حدثنا الْمَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ حَدَّثَنِي يَزِيدُ بْنُ أَبِي عُبَيْدٍ عَنْ سَلَمَةَ بْنِ الأَكْوَعِ قَالَ : لَمَّا أَمْسَوْا يَوْمَ فَتَحُوا خَيْبَرَ أَوْقَدُوا النِّيرَانَ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((عَلَى مَا أَوْقَدْتُمْ هَذِهِ النِّيرَانَ؟)) قَالُوا: لُحُومَ الْحُمُرِ الأَنْسِيَّةِ قَالَ: ((أَهْرِيقُوا مَا فِيهَا، وَاكْسِرُوا قُدُورَهَا)). فَقَامَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ فَقَالَ: نُهَرِيقُ مَا فِيهَا وَنَغْسِلُهَا؟ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((أَوْ ذَاكَ)).

[راجع: ٢٤٧٧]

5497. हमसे मक्की बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे यज़ीद बिन अबी उबैदह ने बयान किया, उनसे सलमा बिन अल अक्वा (रज़ि.) ने बयान किया कि फ़त्हे ख़ैबर की शाम को लोगों ने आग रोशन की तो आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा कि ये आग तुम लोगों ने किस लिये रोशन की है? लोगों ने बताया कि गधे का गोश्त है। आपने फ़र्माया कि हाँडियों में जो कुछ (गधे का गोश्त) है उसे फेंक दो और हाँडियों को तोड़ डालो। एक शख़्स ने खड़े होकर कहा हाँडी में जो कुछ (गोश्त वग़ैरह) है उसे हम फेंक दें और बर्तन धो लें? आपने फ़र्माया कि ये भी कर सकते हो। (राजेअ : 2477)

तश्रीह : इस हदीष़ से हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने बाब का मतलब यूँ निकाला कि गधा चूँकि हराम था तो ज़िब्ह से कुछ फ़ायदा न हुआ वो मुरदार ही रहा और मुरदार का हुक्म हुआ कि जिस हाँडी में मुरदार पकाया जाए वो हाँडी भी तोड़ दी जाए या धो डाले।

١٥ - باب التَّسْمِيَةِ عَلَى الذَّبِيحَةِ، وَمَنْ تَرَكَ مُتَعَمِّدًا

बाब : 15 ज़िब्ह पर बिस्मिल्लाह पढ़ना और जिसने उसे क़स्दन छोड़ दिया हो उसका बयान

قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: مَنْ نَسِيَ فَلاَ بَأْسَ وَقَالَ

इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि अगर कोई बिस्मिल्लाह पढ़ना भूल गया तो कोई हर्ज नहीं है और अल्लाह तआ़ला का

ﷲ تعالی ﴿وَلَا تَأْكُلُوا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللهِ عَلَيْهِ وَإِنَّهُ لَفِسْقٌ﴾ وَالنَّاسِي لاَ يُسَمَّى فَاسِقًا. وَقَوْلِهِ ﴿وَإِنَّ الشَّيَاطِينَ لَيُوحُونَ إِلَى أَوْلِيَائِهِمْ لِيُجَادِلُوكُمْ وَإِنْ أَطَعْتُمُوهُمْ إِنَّكُمْ لَمُشْرِكُونَ﴾.

फ़र्मान, और न खाओ उस जानवर को जिस पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो और बिला शुब्हा ये नाफ़र्मानी है और (कोई नेक काम) भूल जाने वाले को फ़ासिक़ नहीं कहा जा सकता, और अल्लाह तआला का क़ुर्आन में फ़र्मान और बेशक शयातीन अपने दोस्तों को पट्टी पढ़ाते हैं ताकि वो तुमसे कठहुज्जती करें और अगर तुम उनका कहा मानोगे तो अल्बत्ता तुम भी मुश्रिक हो जाओगे।

तश्रीह : गोया ये आयत लाकर ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने इस क़ौल को क़ुव्वत दी कि अगर भूल से बिस्मिल्लाह तर्क करे तो जानवर ह़लाल ही रहेगा क्योंकि भूल से तर्क करने वाला न शैत़ान का दोस्त हो सकता है न मुश्रिक हो सकता है।

٥٤٩٨- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ سَعِيدِ بْنِ مَسْرُوقٍ عَنْ عَبَايَةَ بْنِ رِفَاعَةَ بْنِ رَافِعٍ عَنْ جَدِّهِ رَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِذِي الْحُلَيْفَةِ فَأَصَابَ النَّاسَ جُوعٌ، فَأَصَبْنَا إِبِلاً وَغَنَمًا وَكَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي أُخْرَيَاتِ النَّاسِ، فَعَجِلُوا فَنَصَبُوا الْقُدُورَ، فَدُفِعَ إِلَيْهِمُ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَمَرَ بِالْقُدُورِ فَأُكْفِئَتْ، ثُمَّ قَسَمَ فَعَدَلَ عَشَرَةً مِنَ الْغَنَمِ بِبَعِيرٍ فَنَدَّ مِنْهَا بَعِيرٌ، وَكَانَ فِي الْقَوْمِ خَيْلٌ يَسِيرَةٌ، فَطَلَبُوهُ فَأَعْيَاهُمْ، فَأَهْوَى إِلَيْهِ رَجُلٌ بِسَهْمٍ فَحَبَسَهُ اللهُ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ((إِنَّ لِهَذِهِ الْبَهَائِمِ أَوَابِدَ كَأَوَابِدِ الْوَحْشِ، فَمَا نَدَّ عَلَيْكُمْ فَاصْنَعُوا بِهِ هَكَذَا)). قَالَ: وَقَالَ جَدِّي إِنَّا لَنَرْجُوا أَوْ نَخَافُ أَنْ نَلْقَى الْعَدُوَّ غَدًا وَلَيْسَ مَعَنَا مُدًى، أَفَنَذْبَحُ بِالْقَصَبِ؟ فَقَالَ: ((مَا أَنْهَرَ الدَّمَ وَذُكِرَ اسْمُ اللهِ عَلَيْهِ فَكُلْ لَيْسَ السِّنَّ وَالظُّفُرَ

5498. मुझसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, उनसे सईद बिन मसरूक़ ने, उनसे अ़बाया बिन रिफ़ाआ बिन राफ़ेअ़ ने अपने दादा राफ़ेअ़ बिन ख़दीज से, उन्होंने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ मक़ामे ज़िल हुलैफ़ा मे थे कि (हम) लोग भूख और फ़ाक़ा में मुब्तला हो गये फिर हमें (ग़नीमत में) ऊँट और बकरियाँ मिलीं। आँह़ज़रत (ﷺ) सबसे पीछे थे। लोगों ने जल्दी की भूख की शिद्दत की वजह से (और आँह़ज़रत ﷺ) के तशरीफ़ लाने से पहले ही ग़नीमत के जानवरों को ज़िब्ह कर लिया) और हाँडियाँ पकने के लिये चढ़ा दीं फिर जब आँह़ज़रत (ﷺ) वहाँ पहुँचे तो आपने हुक्म दिया और हाँडियाँ उलट दी गईं फिर आँह़ज़रत (ﷺ) ने ग़नीमत की तक़्सीम की और दस बकरियों को एक ऊँट के बराबर क़रार दिया। उनमें से एक ऊँट भाग गया। क़ौम के पास घोड़ों की कमी थी लोग उस ऊँट के पीछे दौड़े लेकिन उसने सबको थका दिया। आख़िर एक शख़्स ने उस पर तीर का निशाना किया तो अल्लाह तआला ने उसे रोक दिया उस पर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि उन जानवरों में जंगलियों की तरह वह़शत होती है। इसलिये जब कोई जानवर भड़ककर भाग जाए तो उसके साथ ऐसा ही किया करो। अ़बाया ने बयान किया कि मेरे दादा (राफेअ़ बिन ख़दीज रज़ि.) ने आँह़ज़रत (ﷺ) से अ़र्ज़ किया कि हमें अंदेशा है कि कल हमारा दुश्मन से मुक़ाबला होगा और हमारे पास छुरियाँ नहीं हैं क्या हम (धारदार) लकड़ी से ज़िब्ह कर लें। आपने फ़र्माया कि जो चीज़ भी ख़ून बहा दे

وَسَأُخْبِرُكُمْ عَنْهُ أَمَّا السِّنُّ فَعَظْمٌ وَأَمَّا الظُّفُرُ فَمُدَى الْحَبَشَةِ)).

[راجع: ٢٤٨٨]

और (ज़िब्ह करते वक़्त) जानवर पर अल्लाह का नाम लिया हो तो उसे खाओ अल्बत्ता (ज़िब्ह करने वाला आला) दांत और नाख़ुन न होना चाहिये। दांत इसलिये नहीं कि ये हड्डी है (और हड्डी से ज़िब्ह करना जाइज़ नहीं है) और नाख़ुन इसलिये नहीं कि हब्शी लोग उनको छुरी की जगह इस्ते'माल करते हैं। (राजेअ: 2488)

इस बाब का मतलब इस लफ़्ज़ से निकलता है **व ज़ुकिरस्मुल्लाहि अलैहि** हनफ़िया ने उस नाख़ून और दांत से ज़िब्ह जाइज़ रखा है जो आदमी के बदन से जुदा हो मगर ये सहीह नहीं है।

बाब 16 : वो जानवर जिनको थानों और बुतों के नाम पर ज़िब्ह किया गया हो उनका खाना हराम है

١٦- باب مَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ وَالأَصْنَامِ

٥٤٩٩- حَدَّثَنَا مُعَلَّى بْنُ أَسَدٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ، يَعْنِي ابْنَ الْمُخْتَارِ أَخْبَرَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَالِمٌ أَنَّهُ سَمِعَ عَبْدَ اللهِ يُحَدِّثُ عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ أَنَّهُ لَقِيَ زَيْدَ بْنَ عَمْرِو ابْنِ نُفَيْلٍ بِأَسْفَلِ بَلْدَحٍ وَذَاكَ قَبْلَ أَنْ يُنْزَلَ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ الْوَحْيُ، فَقَدَّمَ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ سُفْرَةً فِيهَا لَحْمٌ، فَأَبَى أَنْ يَأْكُلَ مِنْهَا، ثُمَّ قَالَ: ((إِنِّي لاَ آكُلُ مِمَّا تَذْبَحُونَ عَلَى أَنْصَابِكُمْ، وَلاَ آكُلُ إِلاَّ مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللهِ عَلَيْهِ)).

5499. हमसे मुअल्ला बिन असद ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल अज़ीज़ या'नी इब्नुल मुख़्तार ने बयान किया, उन्हें मूसा बिन उक़्बा ने ख़बर दी, कहा कि मुझे सालिम ने ख़बर दी, उन्होंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से सुना और उनसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने कि आँहुज़ूर (ﷺ) की ज़ैद बिन अम्र बिन नौफ़िल से मुक़ामे बलदह के नशीबी हिस्सा में मुलाक़ात हुई। ये आप पर वह्य नाज़िल होने से पहले का ज़माना है। आपने वो दस्तरख़्वान जिसमें गोश्त था जिसे उन लोगों ने आपकी ज़ियाफ़त के लिये पेश किया था मगर उन पर ज़िब्ह के वक़्त बुतों का नाम लिया गया था, आपने उसे ज़ैद बिन अम्र के सामने वापस फ़र्मा दिया और आपने फ़र्माया कि तुम जो जानवर अपने बुतों के नाम पर ज़िब्ह करते हो मैं उन्हें नहीं खाता, मैं सिर्फ़ उसी जानवर का गोश्त खाता हूँ जिस पर (ज़िब्ह करते वक़्त) अल्लाह का नाम लिया गया हो।

तश्रीह : क़ुर्आनी दलील **व मा उहिल्ल लिग़ैरिल्लाहि** (अल माइद : 3) से उन तमाम जानवरों का गोश्त हराम हो जाता है जो जानवर ग़ैरुल्लाह के नाम पर तक़र्रुब के लिये नज़्र कर दिये जाते हैं। उसी में मदार का बकरा और सय्यद सालार के नाम पर छोड़ा हुआ जानवर भी दाख़िल है जैसा कि अहले बिदअत का मा'मूल है। बलदह हिजाज में मक्का के क़रीब एक मुक़ाम है। रिवायत में मज़्कूरा ज़ैद बिन अम्र सईद बिन ज़ैद के वालिद हैं और सईद अशरा मुबश्शरह में से हैं। रज़ियल्लाहु अन्हुम व अरज़ाहुम।

बाब 17 : इस बारे में कि नबी करीम (ﷺ) का इर्शाद है कि जानवर को अल्लाह ही के नाम पर ज़िब्ह करना चाहिये

١٧- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((فَلْيَذْبَحْ عَلَى اسْمِ اللهِ))

٥٥٠٠- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنِ الأَسْوَدِ بْنِ قَيْسٍ عَنْ جُنْدَبِ بْنِ

5500. हमसे क़ुतैबा ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने, उनसे अस्वद बिन क़ैस ने, उनसे जुन्दब बिन सुफ़यान

بجلی ... سُفْيَانَ الْبَجَلِيِّ قَالَ: ضَحَّيْنَا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ أُضْحِيَةً ذَاتَ يَوْمٍ فَإِذَا أُنَاسٌ قَدْ ذَبَحُوا ضَحَايَاهُمْ قَبْلَ الصَّلاَةِ فَلَمَّا انْصَرَفَ رَآهُمُ النَّبِيُّ ﷺ أَنَّهُمْ قَدْ ذَبَحُوا قَبْلَ الصَّلاَةِ فَقَالَ: ((مَنْ ذَبَحَ قَبْلَ الصَّلاَةِ فَلْيَذْبَحْ مَكَانَهَا أُخْرَى وَمَنْ كَانَ لَمْ يَذْبَحْ حَتَّى صَلَّيْنَا فَلْيَذْبَحْ عَلَى اسْمِ اللهِ)). [راجع: ٩٨٥]

बजली ने बयान किया कि हमने रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ एक मर्तबा क़ुर्बानी की। कुछ लोगों ने ईद की नमाज़ से पहले ही क़ुर्बानी कर ली थी। जब आँहज़रत (ﷺ) (नमाज़ पढ़कर) वापस तशरीफ़ लाए तो आपने देखा कि लोगों ने अपनी क़ुर्बानियाँ नमाज़ से पहले ही ज़िब्ह कर ली हैं फिर आपने फ़र्माया कि जिस शख़्स ने नमाज़ से पहले क़ुर्बानी ज़िब्ह कर ली हो, उसे चाहिये कि उसकी जगह दूसरी ज़िब्ह करे और जिसने नमाज़ पढ़ने से पहले न ज़िब्ह की हो उसे चाहिये कि अल्लाह के नाम पर ज़िब्ह करे। (राजेअ : 985)

मा'लूम हुआ कि जो लोग क़ुर्बानी का जानवर नमाज़ से पहले इधर उधर ले जाकर ज़िब्ह कर देते हैं वो क़ुर्बानी नहीं सिर्फ़ एक मा'मूली गोश्त बनकर रह जाता है। क़ुर्बानी वही है जो नमाज़े ईद के बाद ज़िब्ह की जाए और बस।

١٨- بَابُ مَا أَنْهَرَ الدَّمَ مِنَ الْقَصَبِ وَالْمَرْوَةِ وَالْحَدِيدِ

बाब 18 : बानिस, सफ़ेद धारदार पत्थर और लोहा जो ख़ून बहा दे उसका हुक्म किया है?

٥٥٠١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ عَنْ نَافِعٍ سَمِعَ ابْنَ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ يُخْبِرُ ابْنَ عُمَرَ أَنَّ أَبَاهُ أَخْبَرَهُ أَنَّ جَارِيَةً لَهُمْ كَانَتْ تَرْعَى غَنَمًا بِسَلْعٍ، فَأَبْصَرَتْ بِشَاةٍ مِنْ غَنَمِهَا مَوْتًا. فَكَسَرَتْ حَجَرًا فَذَبَحَتْهَا. فَقَالَ لأَهْلِهِ: لاَ تَأْكُلُوا حَتَّى آتِيَ النَّبِيَّ ﷺ فَأَسْأَلَهُ، أَوْ حَتَّى أُرْسِلَ إِلَيْهِ مَنْ يَسْأَلُهُ، فَأَتَى النَّبِيَّ ﷺ أَوْ بَعَثَ إِلَيْهِ فَأَمَرَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِأَكْلِهَا. [راجع: ٢٣٠٤]

5501. हमसे मुहम्मद बिन अबी बक्र ने बयान किया, कहा हमसे मुअतमिर ने, उनसे उबैदुल्लाह ने, उनसे नाफ़ेअ ने, उन्होंने इब्ने कअब बिन मालिक से सुना, उन्होंने इब्ने उमर (रज़ि.) से सुना कि उन्हें उनके वालिद ने ख़बर दी कि उनके घर की एक लौण्डी सल्अ पहाड़ी पर बकरियाँ चराया करती थी (चराते वक़्त एक मर्तबा) उसने देखा कि एक बकरी मरने वाली है। चुनाँचे उसने एक पत्थर तोड़कर उससे बकरी ज़िब्ह कर दी तो कअब बिन मालिक (रज़ि.) ने अपने घर वालों से कहा कि उसे उस वक़्त तक न खाना जब तक मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) से उसका हुक्म न पूछ आऊँ या (उन्होंने ये कहा कि) मैं किसी को भेजूँ जो आँहज़रत (ﷺ) से मसला पूछ आए फिर वो आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए या किसी को भेजा और आँहज़रत (ﷺ) ने उसके खाने की इजाज़त बख़्शी। (राजेअ : 2304)

٥٥٠٢- حَدَّثَنَا مُوسَى حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ عَنْ نَافِعٍ عَنْ رَجُلٍ مِنْ بَنِي سَلِمَةَ أَخْبَرَ عَبْدَ اللهِ أَنَّ جَارِيَةً لِكَعْبِ بْنِ مَالِكٍ تَرْعَى غَنَمًا لَهُ بِالْجُبَيْلِ الَّذِي بِالسُّوقِ وَهُوَ

5502. हमसे मूसा ने बयान किया, कहा हमसे जुवेरिया ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने, उनसे बनी सलमा के एक साहब (इब्ने कअब बिन मालिक) ने कि उन्होंने हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) को ये ख़बर दी कि हज़रत कअब बिन मालिक (रज़ि.) की एक लौण्डी उस पहाड़ी पर जो सूक़े मदनी में है और

बِسَلْعٍ، فَأُصِيبَتْ شَاةٌ، فَكَسَرَتْ حَجَرًا فَذَبَحَتْهَا، فَذَكَرُوا لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَمَرَهُمْ بِأَكْلِهَا.

[راجع: ٢٣٠٤]

जिसका नाम सल्ड़ है, बकरियाँ चराया करती थी। एक बकरी मरने के क़रीब हो गई तो उसने एक पत्थर तोड़कर उससे बकरी को ज़िब्ह कर लिया, फिर लोगों ने रसूले करीम (ﷺ) से इसका ज़िक्र किया तो आँहज़रत (ﷺ) ने उसे खाने की इजाज़त अता फ़र्माई। (राजेअ:2304)

٥٥٠٣- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ شُعْبَةَ عَنْ سَعِيدِ بْنِ مَسْرُوقٍ عَنْ عَبَايَةَ بْنِ رَافِعٍ عَنْ جَدِّهِ أَنَّهُ قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ لَيْسَ لَنَا مُدًى فَقَالَ: ((مَا أَنْهَرَ الدَّمَ وَذُكِرَ اسْمُ اللهِ فَكُلْ، لَيْسَ الظُّفُرَ وَالسِّنَّ، أَمَّا الظُّفُرُ فَمُدَى الْحَبَشَةِ، وَأَمَّا السِّنُّ فَعَظْمٌ. وَنَدَّ بَعِيرٌ فَحَبَسَهُ، فَقَالَ: إِنَّ لِهَذِهِ الإِبِلِ أَوَابِدَ كَأَوَابِدِ الْوَحْشِ، فَمَا غَلَبَكُمْ مِنْهَا فَاصْنَعُوا هَكَذَا)).

[راجع: ٢٤٨٨]

5503. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, कहा कि मुझे मेरे वालिद ने ख़बर दी, उन्हें शुअ़बा ने, उन्हें सईद बिन मसरूक़ ने, उन्हें अ़बाया बिन राफ़ेअ़ ने और उन्हें उनके दादा (हज़रत राफ़ेअ़ बिन ख़दीज रज़ि.) ने कि उन्होंने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! हमारे पास छुरी नहीं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो (धारदार) चीज़ ख़ून बहा दे और उस पर अल्लाह का नाम ले लिया गया हो तो (उससे ज़िब्ह किया हुआ जानवर) खा सकते हो लेकिन नाख़ुन और दांत से ज़िब्ह न किया गया हो क्योंकि नाख़ुन हब्शियों की छुरी है और दांत हड्डी है और एक ऊँट भाग गया तो (तीर मारकर) उसे रोक लिया गया। आपने उस पर फ़र्माया ये ऊँट भी जंगली जानवरों की तरह भड़क उठते हैं इसलिये जो तुम्हारे क़ाबू से बाहर हो जाए उसके साथ ऐसा ही किया करो। (राजेअ: 2488)

١٩- باب ذَبِيحَةِ الْمَرْأَةِ وَالأَمَةِ

बाब 19 : (मुसलमान) औरत और लौण्डी का ज़बीहा भी जाइज़ है

٥٥٠٤- حَدَّثَنَا صَدَقَةُ أَخْبَرَنَا عَبْدَةُ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ لِكَعْبِ بْنِ مَالِكٍ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ امْرَأَةً ذَبَحَتْ شَاةً بِحَجَرٍ، فَسُئِلَ النَّبِيُّ ﷺ عَنْ ذَلِكَ، فَأَمَرَ بِأَكْلِهَا، وَقَالَ اللَّيْثُ: حَدَّثَنَا نَافِعٌ أَنَّهُ سَمِعَ رَجُلاً مِنَ الأَنْصَارِ يُخْبِرُ عَبْدَ اللهِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّ جَارِيَةً لِكَعْبٍ بِهَذَا.

[راجع: ٢٣٠٤]

5504. हमसे सदक़ा ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दह ने ख़बर दी, उन्हें उ़बैदुल्लाह ने, उन्हें नाफ़ेअ़ ने, उन्हें कअ़ब बिन मालिक के एक बेटे ने और उन्हें उनके बाप कअ़ब बिन मालिक (रज़ि.) ने कि एक औरत ने बकरी पत्थर से ज़िब्ह कर ली थी तो नबी करीम (ﷺ) से उसके बारे में पूछा गया तो आपने उसके खाने का हुक्म फ़र्माया। और लैष़ ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने बयान किया, उन्हों ने क़बीला अंसार के एक शख़्स को सुना कि उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) को ख़बर दी नबी करीम (ﷺ) से कि कअ़ब (रज़ि.) की एक लौण्डी थी फिर इसी ह़दीष़ की तरह बयान किया। (राजेअ: 2304)

٥٥٠٥- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ رَجُلٍ مِنَ الأَنْصَارِ عَنْ مُعَاذِ بْنِ سَعْدٍ أَوْ سَعْدِ بْنِ مُعَاذٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ

5505. हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने, उनसे क़बीला अंसार के एक आदमी ने कि हज़रत मुआज़ बिन सअ़द

या सअ़द बिन मुआ़ज़ ने उन्हें ख़बर दी कि कअ़ब बिन मालिक (रज़ि.) की एक लौण्डी सल्ड़ पहाड़ी पर बकरियाँ चराया करती थी। रेवड़ में से एक बकरी मरने लगी तो उसने उसे मरने से पहले पत्थर से ज़िब्ह कर दिया फिर नबी करीम (ﷺ) से उसके बारे में पूछा गया तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसे खाओ।

جَارِيَةً لِكَعْبِ بْنِ مَالِكٍ كَانَتْ تَرْعَى غَنَمًا بِسَلْعٍ فَأُصِيبَتْ شَاةٌ مِنْهَا، فَأَدْرَكَتْهَا فَذَبَحَتْهَا بِحَجَرٍ، فَسُئِلَ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: ((كُلُوهَا)).

बाब और अह़ादीष़ में मुत़ाबक़त ज़ाहिर है।

बाब 20 : इस बारे में कि जानवर को दांत, हड्डी और नाख़ुन से ज़िब्ह न किया जाए

٢٠- باب لاَ يُذَكَّى بِالسِّنِّ وَالْعَظْمِ وَالظُّفُرِ

5506. हमसे क़ुबैस़ा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने, उनसे उनके वालिद ने, उनसे अ़बाया बिन रिफ़ाअ़ा ने, और उनसे राफ़ेअ़ बिन ख़दीज (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि खाओ या'नी (ऐसे जानवर को जिसे ऐसी धारदार चीज़ से ज़िब्ह किया गया हो) जो ख़ून बहा दे। सिवा दांत और नाख़ुन के (या'नी उनसे ज़िब्ह करना दुरुस्त नहीं है) (राजेअ़ : 2488)

٥٥٠٦- حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَبَايَةَ بْنِ رِفَاعَةَ عَنْ رَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((كُلْ يَعْنِي - مَا أَنْهَرَ الدَّمَ - إِلاَّ السِّنَّ وَالظُّفُرَ)). [راجع: ٢٤٨٨]

तश्रीह : बाब की ह़दीष़ में स़िर्फ़ दांत और नाख़ुन का ज़िक्र है हड्डी इमाम बुख़ारी (रह.) ने इस ह़दीष़ के दूसरे त़रीक़ से निकाली जिसमें दांत से ज़िब्ह जाइज़ न होने की ये वजह मज़्कूर है कि वो हड्डी है।

बाब : 21 देहातियों या उनके जैसे (अह़कामे दीन से बेख़बर लोगों) का ज़बीह़ा कैसा है?

٢١- باب ذَبِيحَةِ الأَعْرَابِ وَنَحْوِهِمْ

5507. हमसे मुह़म्मद बिन उ़बैदुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे उसामा बिन ह़फ़्स़ मदनी ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कि (गाँव के) कुछ लोग हमारे यहाँ गोश्त (बेचने) लाते हैं और हमें मा'लूम नहीं कि उन्होंने उस पर अल्लाह का नाम भी (ज़िब्ह करते वक़्त) लिया था या नहीं? आपने फ़र्माया कि तुम उन पर खाते वक़्त अल्लाह का नाम लिया करो और खा लिया करो। ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि ये लोग अभी इस्लाम में नये नये दाख़िल हुए थे। उसकी मुताबअ़त अ़ली ने दरावर्दी से की और उसकी मुताबअ़त अबू ख़ालिद और तुफ़ावी ने की। (राजेअ़ : 2057)

٥٥٠٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدِ اللهِ حَدَّثَنَا أُسَامَةُ بْنُ حَفْصٍ الْمَدَنِيُّ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا. أَنَّ قَوْمًا قَالُوا لِلنَّبِيِّ ﷺ: إِنَّ قَوْمًا يَأْتُونَا بِاللَّحْمِ لاَ نَدْرِي أَذُكِرَ اسْمُ اللهِ عَلَيْهِ أَمْ لاَ، فَقَالَ: ((سَمُّوا عَلَيْهِ أَنْتُمْ وَكُلُوهُ)). قَالَتْ: وَكَانُوا حَدِيثِي عَهْدٍ بِالْكُفْرِ. تَابَعَهُ عَلِيٌّ عَنِ الدَّرَاوَرْدِيِّ وَتَابَعَهُ أَبُو خَالِدٍ وَالطُّفَاوِيُّ.[راجع: ٢٠٥٧]

बाब 22 : अहले किताब के ज़बीहे और उन ज़बीहों की चर्बी

٢٢- باب ذَبَائِحِ أَهْلِ الْكِتَابِ

وَشُحُومِهَا مِنْ أَهْلِ الْحَرْبِ وَغَيْرِهِمْ وَقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿الْيَوْمَ أُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبَاتُ وَطَعَامُ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ حِلٌّ لَكُمْ وَطَعَامُكُمْ حِلٌّ لَهُمْ﴾ وَقَالَ الزُّهْرِيُّ: لاَ بَأْسَ بِذَبِيحَةِ نَصَارَى الْعَرَبِ، وَإِنْ سَمِعْتَهُ يُسَمِّي لِغَيْرِ اللهِ فَلاَ تَأْكُلْ وَإِنْ لَمْ تَسْمَعْهُ فَقَدْ أَحَلَّهُ اللهُ لَكُمْ وَعَلِمَ كُفْرَهُمْ وَيُذْكَرُ عَنْ عَلِيٍّ نَحْوُهُ. وَقَالَ الْحَسَنُ وَإِبْرَاهِيمُ: لاَ بَأْسَ بِذَبِيحَةِ الأَقْلَفِ.

का बयान ख़्वाह वो हर्बियों में से हों या ग़ैर हर्बियों में से। और अल्लाह तआ़ला ने सूरह निसा में फ़र्माया कि आज तुम्हारे लिये पाकीज़ा चीज़ें हलाल कर दी गईं हैं और उन लोगों का खाना भी जिन्हें किताब दी गई है तुम्हारे लिये हलाल है और तुम्हारा खाना उनके लिये हलाल है। ज़ुहरी ने कहा कि नसारा अ़रब के ज़बीहे मे कोई हर्ज नहीं और अगर तुम सुन लो कि वो (ज़िब्ह करते वक़्त अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लेता है तो उसे न खाओ और अगर न सुनो तो अल्लाह तआ़ला ने उसे तुम्हारे लिये हलाल किया है और अल्लाह तआ़ला को उनके कुफ़्र का इल्म था। हज़रत अ़ली (रज़ि.) से भी इसी तरह की रिवायत नक़ल की जाती है। हसन और इब्राहीम ने कहा कि ग़ैर मख़्तून (अहले किताब) के ज़बीहे में कोई चीज़ नहीं है।

आजकल के अहले किताब या मजूसी सरासर मुश्रिक हैं और अपने मा'बूदाने बातिल ही का नाम लेते हैं। लिहाज़ा उनका ज़बीहा जाइज़ नहीं है। हर्बी वो काफ़िर जो मुसलमानों से लड़ रहे हों ग़ैर हर्बी जिनसे लड़ाई न हो।

٥٥٠٨- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ هِلاَلٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مُغَفَّلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا مُحَاصِرِينَ قَصْرَ خَيْبَرَ، فَرَمَى إِنْسَانٌ بِجِرَابٍ فِيهِ شَحْمٌ، فَنَزَوْتُ لآخُذَهُ، فَالْتَفَتُّ فَإِذَا النَّبِيُّ ﷺ فَاسْتَحْيَيْتُ مِنْهُ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ طَعَامُهُمْ ذَبَائِحُهُمْ. [راجع: ٣١٥٣]

5508. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे हुमैद बिन हिलाल ने, और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल (रज़ि.) ने बयान किया कि हम ख़ैबर के क़िले का मुहासरा किये हुए थे कि एक शख़्स ने एक थैला फेंका जिसमें (यहूदियों के ज़बीहे की) चर्बी थी। मैं उस पर झपटा कि उठा लूँ लेकिन मुड़कर जो देखा तो पीछे रसूलुल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ फ़र्मा थे। मैं आपको देखकर शर्मा गया। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि (आयत में) तआमुहुम से मुराद अहले किताब का ज़िब्ह कर्दा जानवर है। (राजेअ़ : 3153)

तश्रीह : क़ालज़्ज़ुहरी ला बास बिज़बीहति नसारल्अ़रबि व इन समिअ़तहू युहिल्लु लिगैरिल्लाहि फ़ला ताकुल व इल्लम तस्मअ़हुम फ़क़द अहल्लहुल्लाहु लकुम व उलिम कुफ़्रहुम (फ़तह) या'नी अ़रब के नसारा का ज़बीहा दुरुस्त है हाँ अगर तुम सुनो कि उसने ज़िब्ह के वक़्त ग़ैरुल्लाह का नाम लिया है तो फिर उसका ज़बीहा न खाओ हाँ अगर न सुना हो तो उसका ज़बीहा बावजूद उनके काफ़िर होने के हलाल किया है।

٢٣- باب مَا نَدَّ مِنَ الْبَهَائِمِ فَهُوَ بِمَنْزِلَةِ الْوَحْشِ

बाब 23 : इस बयान मे कि जो पालतू जानवर बिदक जाए वो जंगली जानवर के हुक्म मे है

وَأَجَازَهُ ابْنُ مَسْعُودٍ وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: مَا أَعْجَزَكَ مِنَ الْبَهَائِمِ مِمَّا فِي يَدَيْكَ فَهُوَ كَالصَّيْدِ وَفِي بَعِيرٍ تَرَدَّى فِي بِئْرٍ مِنْ حَيْثُ

इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) ने भी उसकी इजाज़त दी है। इब्ने अ़ब्बास(रज़ि.) ने कहा कि जो जानवर तुम्हारे क़ाबू में होने के बावजूद तुम्हें आजिज़ कर दे (और ज़िब्ह न करने दे) वो भी शिकार ही के हुक्म में है और (फ़र्माया कि) ऊँट अगर कुएँ में

गिर जाएँ तो जिस तरफ़ से मुम्किन हो उसे ज़िब्ह कर लो। अली, इब्ने उमर और आइशा (रज़ि.) का यही फ़त्वा है।

قَدَرْتَ عَلَيْهِ فَذَكِّهِ. وَرَأَى ذَلِكَ عَلِيٌّ وَابْنُ عُمَرَ وَعَائِشَةُ

5509. हमसे अम्र बिन अली ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने, उनसे उनके वालिद ने, उनसे अबाया बिन रिफ़ाआ बिन राफ़ेअ बिन ख़दीज ने और उनसे राफ़ेअ बिन ख़दीज (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने अर्ज़ की या रसूलल्लाह! कल हमारा मुक़ाबला दुश्मन से होगा और हमारे पास छुरियां नहीं हैं? आपने फ़र्माया कि फिर जल्दी कर लो या (इसके बजाय) अरिन कहा या'नी जल्दी कर लो जो हथियार ख़ून बहा दे और ज़बीहा पर अल्लाह का नाम लिया गया हो तो उसे खाओ। अल्बत्ता दांत और नाख़ुन न होना चाहिये और इसकी वजह भी बता दूँ। दांत तो हड्डी है और नाख़ुन हब्शियों की छुरी है। और हमें ग़नीमत में ऊँट और बकरियाँ मिलीं उनमें से एक ऊँट बिदककर भाग पड़ा तो एक साहब ने तीर से उसे मारकर गिरा लिया। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये ऊँट भी कभी-कभी जंगली जानवरों की तरह बिदकते हैं, इसलिये अगर इनमें से कोई भी तुम्हारे क़ाबू से बाहर हो जाए तो उसके साथ ऐसा ही करो। (राजेअ: 2488)

٥٥٠٩ - حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ حَدَّثَنَا يَحْيَى حَدَّثَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ عَبَايَةَ بْنِ رِفَاعَةَ بْنِ رَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ قَالَ : قُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ، إِنَّا لاَقُو الْعَدُوِّ غَدًا وَلَيْسَتْ مَعَنَا مُدًى. فَقَالَ: ((اعْجَلْ - أَوْ أَرِنْ - مَا أَنْهَرَ الدَّمَ وَذُكِرَ اسْمُ اللهِ عَلَيْهِ فَكُلْ لَيْسَ السِّنَّ وَالظُّفُرَ وَسَأُحَدِّثُكَ، أَمَّا السِّنُّ فَعَظْمٌ وَأَمَّا الظُّفُرُ فَمُدَى الْحَبَشَةِ)). وَأَصَبْنَا نَهْبَ إِبِلٍ وَغَنَمٍ، فَنَدَّ مِنْهَا بَعِيرٌ فَرَمَاهُ رَجُلٌ بِسَهْمٍ فَحَبَسَهُ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّ لِهَذِهِ الإِبِلِ أَوَابِدَ كَأَوَابِدِ الْوَحْشِ، فَإِذَا غَلَبَكُمْ مِنْهَا شَيْءٌ فَافْعَلُوا بِهِ هَكَذَا)). [راجع: ٢٤٨٨]

तश्रीह: ऐसा ऊँट या कोई और हलाल जानवर अगर क़ाबू से बाहर हो जाए तो उसे तीर वग़ैरह से बिस्मिल्लाह पढ़कर गिरा लिया जाए तो वो हलाल है। रिवायत में मज़्कूरा लफ़्ज़ अरिन राअ के कसरा और नून के जज़म के साथ है। फ़राजअन्नववी इन अरिन (बिमअ़ना) अअजिल या'नी ज़िब्ह करते वक़्त जल्दी करो ताकि जानवर को तकलीफ़ न हो। (फ़त्ह)

बाब 24 : नहर और ज़िब्ह के बयान में

٢٤- باب النَّحْرِ وَالذَّبْحِ

और इब्ने जुरैज ने अता से बयान किया कि ज़िब्ह और नहर, सिर्फ़ ज़िब्ह करने की जगह या'नी (हलक़ पर) और नहर करने की जगह या'नी (सीना के ऊपर के हिस्से) में ही हो सकता है। मैंने पूछा क्या जिन जानवरों को ज़िब्ह किया जाता है (हलक़ पर छुरी फेरकर) उन्हें नहर करना (सीना के ऊपर के हिस्सा में छुरी मारकर ज़िब्ह करना) काफ़ी होगा? उन्होंने कहा कि हाँ अल्लाह ने (क़ुर्आन मजीद में) गाय को ज़िब्ह करने का ज़िक्र किया है पस अगर तुम किसी जानवर को ज़िब्ह करो जिसे नहर किया जाता है (जैसे ऊँट) तो जाइज़ है लेकिन मेरी राय में उसे नहर करना ही बेहतर है, ज़िब्ह गर्दन की रगों का काटना है। मैंने

وَقَالَ ابْنُ جُرَيْجٍ : عَنْ عَطَاءٍ، لاَ ذَبْحَ وَلاَ نَحْرَ إِلاَّ فِي الْمَذْبَحِ وَالْمَنْحَرِ. قُلْتُ: أَيَجْزِي مَا يُذْبَحُ أَنْ أَنْحَرَهُ؟ قَالَ: نَعَمْ. ذَكَرَ اللهُ ذَبْحَ الْبَقَرَةِ، فَإِنْ ذَبَحْتَ شَيْئًا يُنْحَرُ جَازَ، وَالنَّحْرُ أَحَبُّ إِلَيَّ، وَالذَّبْحُ قَطْعُ الأَوْدَاجِ. قُلْتُ فَيُخَلِّفُ الأَوْدَاجَ حَتَّى يَقْطَعَ النُّخَاعَ؟ قَالَ : لاَ إِخَالُ. وَأَخْبَرَنِي نَافِعٌ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ نَهَى عَنِ

النَّخعِ يَقُولُ يَقْطَعُ مَا دُونَ الْعَظْمِ، ثُمَّ يَدَعُ حَتَّى تَمُوتَ. وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ إِنَّ اللهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تَذْبَحُوا بَقَرَةً﴾ وَقَالَ ﴿فَذَبَحُوهَا وَمَا كَادُوا يَفْعَلُونَ﴾ وَقَالَ سَعِيدُ بْنُ جُبَيْرٍ: عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ الزَّكَاةُ فِي الْحَلْقِ وَاللَّبَّةِ. وَقَالَ ابْنُ عُمَرَ وَابْنُ عَبَّاسٍ وَأَنَسٌ : إِذَا قُطِعَ الرَّأْسُ فَلاَ بَأْسَ.

कहा कि गर्दन की रगें काटते हुए क्या हराम मग़ज़ भी काट दिया जाएगा? उन्होंने कहा कि मैं इसे ज़रूरी नहीं समझता और नाफ़ेअ ने ख़बर दी कि इब्ने उमर (रज़ि.) ने हराम मग़ज़ काटने से मना किया है। आपने फ़र्माया सिर्फ़ गर्दन की हड्डी तक (रगों को) काटा जाएगा और छोड़ दिया जाएगा ताकि जानवर मर जाए और अल्लाह तआला का सूरह बक़रः में फ़र्मान और जब मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपनी क़ौम से कहा कि बिला शुब्हा अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि तुम एक गाय ज़िब्ह करो और फ़र्माया, फिर उन्होंने ज़िब्ह किया और वो करने वाले नहीं थे। सईद ने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से बयान किया ज़िब्ह हलक़ में भी किया जा सकता है और सीना के ऊपर के हिस्से में भी। इब्ने उमर, इब्ने अब्बास और अनस (रज़ि.) ने कहा कि अगर सर कट जाएगा तो कोई हर्ज नहीं।

तश्रीह : नहर ख़ास ऊँट में होता है दूसरे जानवर ज़िब्ह किये जाते हैं। हाफ़िज़ ने कहा ऊँट का ज़िब्ह भी कई अहादीष से षाबित है। गाय का ज़िब्ह क़ुर्आन मजीद में और नहर हदीष में मज़्कूर है और जुम्हूर उलमा के नज़दीक नहर और ज़िब्ह दोनो जाइज़ है।

٥٥١٠- حَدَّثَنَا خَلاَّدُ بْنُ يَحْيَى حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ قَالَ: أَخْبَرَتْنِي فَاطِمَةُ بِنْتُ الْمُنْذِرِ امْرَأَتِي عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَتْ: نَحَرْنَا عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ فَرَسًا فَأَكَلْنَاهُ.

5510. हमसे ख़ल्लाद बिन यह्या ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उर्वा ने कहा कि मुझे मेरी बीवी फ़ातिमा बिन्ते मुंज़िर ने ख़बर दी, उनसे हज़रत अस्मा बिन्ते अबीबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि हमने रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में एक घोड़ा नहर किया और उसे खाया।

٥٥١١- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ سَمِعَ عَبْدَةَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ فَاطِمَةَ عَنْ أَسْمَاءَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: ذَبَحْنَا عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَرَسًا وَنَحْنُ بِالْمَدِينَةِ فَأَكَلْنَاهُ. [راجع: ٥٥١٠]

5511. हमसे इस्हाक़ ने बयान किया, उन्होंने अब्दह से सुना, उन्होंने हिशाम से, उन्होंने फ़ातिमा से और उनसे हज़रत अस्मा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़ माने में हमने एक घोड़ा ज़िब्ह किया और उसका गोश्त खाया उस वक़्त हम मदीना में थे। (राजेअ : 5510)

٥٥١٢- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ هِشَامٍ عَنْ فَاطِمَةَ بِنْتِ الْمُنْذِرِ أَنَّ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ: قَالَتْ: نَحَرْنَا عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَرَسًا فَأَكَلْنَاهُ. تَابَعَهُ وَكِيعٌ وَابْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ هِشَامٍ فِي النَّحْرِ.

5512. हमसे क़ुतैबा ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे फ़ातिमा बिन्ते मुंज़िर ने कि हज़रत अस्मा बिन्ते अबीबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में हमने एक घोड़े को नहर किया (उसके सीने के ऊपर के हिस्से में छुरी मारकर) फिर उसे खाया। इसकी मुताबअत वकीअ और इब्ने उयय‍ना ने हिशाम से नहर के ज़िक्र के साथ की।

(राजेअ़ : 5510)

[راجع: ٥٥١٠]

घोड़े का नह्र और ज़बीहा दोनों जाइज़ है और उसका गोश्त हलाल है मगर चूँकि जिहाद में इसकी ज़्यादा ज़रूरत है इसलिये इसको खाने का आम मा'मूल नहीं है।

बाब 25 : ज़िन्दा जानवर के पैर वग़ैरह काटना या उसे बन्द करके तीर मारना या बाँधकर उसे तीरों का निशाना बनाना जाइज़ नहीं है

٢٥- باب يُكْرَهُ مِنَ الْمُثْلَةِ وَالْمَصْبُورَةِ وَالْمُجَثَّمَةِ

अल्मुष्लतु बिज़म्मिल्मीम व सुकूनिष्षा हिय क़ित्उ अत्राफिल्हैवानि औ बअ़ज़िहा व हुव हय्युन वस्सबूरतु वल्मुजष्षमतुल्लती तुर्बतु व तुज्अलु गरज़ल्लिर्रम्यि फ़इजा मातत मिन ज़ालिक लम यहिल्लु अक्लुहा मत़लब वही है जो बयान हुआ रिवायत में मज़्कूरा हकम बिन अय्यूब इब्ने अबी अ़क़ील ष़क़फ़ी हज्जाज बिन यूसुफ़ के चचा के बेटे हैं जो बस़रा में उनके नाइब मुक़र्रर हुए थे। रह़िमहुल्लाहु तआ़ला।

55130 हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने, उनसे हिशाम बिन ज़ैद ने, कहा कि मैं अनस (रज़ि.) के साथ हकम बिन अय्यूब के यहाँ गया, उन्होंने वहाँ चंद लड़कों को या नौजवानों को देखा कि एक मुर्ग़ी को बाँधखर उस पर तीर का निशाना लगा रहे हैं तो उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने ज़िन्दा जानवर को बाँधकर मारने से मना किया है।

٥٥١٣- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ هِشَامِ بْنِ زَيْدٍ قَالَ: دَخَلْتُ مَعَ أَنَسٍ عَلَى الْحَكَمِ بْنِ أَيُّوبَ فَرَأَى غِلْمَانًا أَوْ فِتْيَانًا نَصَبُوا دَجَاجَةً يَرْمُونَهَا، فَقَالَ أَنَسٌ: نَهَى النَّبِيُّ ﷺ أَنْ تُصْبَرَ الْبَهَائِمُ.

5514. हमसे अह़मद बिन यअ़क़ूब ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इस्हाक़ बिन सईद बिन अ़म्र ने ख़बर दी, उन्होंने अपने वालिद से सुना कि वो ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से बयान करते थे कि वो यह्या बिन सईद के यहाँ तशरीफ़ ले गये। यह्या की औलाद में से एक बच्चा एक मुर्ग़ी बाँधकर उस पर तीर का निशाना लगा रहा था। ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) मुर्ग़ी के पास गये और उसे खोल लिया फिर मुर्ग़ी को और बच्चे को अपने साथ लाए और यह्या से कहा कि अपने बच्चे को मना कर दो कि इस जानवर को बाँधकर न मारे क्योंकि मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) से सुना है आपने किसी जंगली जानवर या किसी भी जानवर को बाँधकर जान से मारने से मना किया है।

٥٥١٤- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يَعْقُوبَ، أَخْبَرَنَا إِسْحَاقُ بْنُ سَعِيدِ بْنِ عَمْرٍو عَنْ أَبِيهِ أَنَّهُ سَمِعَهُ يُحَدِّثُ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: أَنَّهُ دَخَلَ عَلَى يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ وَغُلاَمٌ مِنْ بَنِي يَحْيَى رَابِطٌ دَجَاجَةً يَرْمِيهَا، فَمَشَى إِلَيْهَا ابْنُ عُمَرَ حَتَّى حَلَّهَا، ثُمَّ أَقْبَلَ بِهَا وَبِالْغُلاَمِ مَعَهُ فَقَالَ: ازْجُرُوا غُلاَمَكُمْ عَنْ أَنْ يَصْبِرَ هَذَا الطَّيْرَ لِلْقَتْلِ، فَإِنِّي سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ نَهَى أَنْ تُصْبَرَ بَهِيمَةٌ أَوْ غَيْرُهَا لِلْقَتْلِ.

5515. हमसे अबुन नोअ़मान ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़वाना ने, उनसे अबू बिश्र ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने कि मैं इब्ने उ़मर (रज़ि.) के साथ था वो चंद जवानों या (ये कहा कि) चंद आदमियों के पास से गुज़रे जिन्होंने एक मुर्ग़ी बाँध रखी थी और उस पर तीर का निशाना लगा रहे थेजब उन्होंने

٥٥١٥- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ أَبِي بِشْرٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ قَالَ: كُنْتُ عِنْدَ ابْنِ عُمَرَ، فَمَرُّوا بِفِتْيَةٍ أَوْ بِنَفَرٍ نَصَبُوا دَجَاجَةً يَرْمُونَهَا، فَلَمَّا رَأَوْا

ابْنَ عُمَرَ تَفَرَّقُوا عَنْهَا، وَقَالَ ابْنُ عُمَرَ: مَنْ فَعَلَ هَذَا؟ إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ، لَعَنَ مَنْ فَعَلَ هَذَا. تَابَعَهُ سُلَيْمَانُ عَنْ شُعْبَةَ.

इब्ने उमर (रज़ि.) को देखा तो वहाँ से भाग गये। इब्ने उमर (रज़ि.) ने कहा ये कौन कर रहा था? ऐसा करने वालों पर नबी करीम (ﷺ) ने ला'नत भेजी है। इसकी मुताबअत सुलैमान ने शुअबा से की है।

मुर्ग़ी या और ऐसे ही ज़िन्दा जानवरों को बाँधखर उन पर निशाना बाज़ी करना ऐसा जुर्म है जिनका इर्तिकाब करने वालों पर अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने ला'नत की है।

- حَدَّثَنَا الْمِنْهَالُ عَنْ سَعِيدٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ لَعَنَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ مَثَّلَ بِالْحَيَوَانِ وَقَالَ عَدِيٌّ عَنْ سَعِيدٍ: عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

हमसे मिन्हाल ने बयान किया, उनसे सईद ने और उनसे हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने ऐसे शख़्स पर ला'नत भेजी है जो किसी ज़िन्दा जानवर के पैर या दूसरे टुकड़े काट डाले। और अदी ने बयान किया, उनसे सईद ने, उनसे हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया।

٥٥١٦- حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَدِيُّ بْنُ ثَابِتٍ قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ يَزِيدَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ نَهَى عَنِ النُّهْبَةِ وَالْمُثْلَةِ. [راجع: ٢٤٧٤]

5516. हमसे हज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि मुझको अदी बिन ष़ाबित ने ख़बर दी, कहा कि मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन यज़ीद (रज़ि.) से सुना, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से कि आँहज़रत (ﷺ) ने रहज़नी करने और मुष़्ला करने से मना किया है। (राजेअ : 2474)

तश्रीह : ये तमाम अहादीष़ इस्लाम की रहम व करम की पाकीज़ा हिदायात पर साफ़-साफ़ दलील हैं जिनके ख़िलाफ़ अमल करने वाले इस्लाम के नज़दीक मल्ऊन हैं जो मुआनेदीन इस्लामी रहम व करम के मुंकिर हैं उनको ऐसी पाकीज़ा ता'लीमात पर ग़ौरो–फ़िक्र करना चाहिये। साफ़ हिदायत है **इर्हमु मन फ़िल्अर्ज़ि यर्हमुकुम मन फ़िस्समाइ,** लोगों! तुम ज़मीन वालों पर रहम करो तुम पर आसमान वाला रहम करेगा सच है।

करो मेहरबानी तुम अहले ज़मी पर ख़ुदा मेहरबाँ होगा अर्शे बरीं पर

बाब 26 : मुर्ग़ी खाने का बयान

٢٦- باب الدَّجَاجِ

٥٥١٧- حَدَّثَنَا يَحْيَى حَدَّثَنَا وَكِيعٌ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ، عَنْ زَهْدَمٍ الْجَرْمِيِّ عَنْ أَبِي مُوسَى يَعْنِي الأَشْعَرِيَّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَأْكُلُ دَجَاجًا. [راجع: ٣١٣٣]

5517. हमसे यह्या ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे वकीअ ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे अबू क़िलाबा ने, उनसे ज़ह्दम जर्मी ने, उनसे अबू मूसा या'नी अल अशअरी (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को मुर्ग़ी खाते देखा है। (राजेअ : 3133)

मुर्ग़ी के हलाल होने पर सबका इत्तिफ़ाक़ है ये हज़रत यह्या बिन अबी कष़ीर हैं बनू तै के आज़ादकर्दा हैं इन्होंने हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से मुलाक़ात की है और इनसे इक्रिमा और औज़ाई वग़ैरह ने रिवायत की है।

٥٥١٨- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ بْنُ أَبِي تَمِيمَةَ عَنِ

5518. हमसे अबू मअमर ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वारिष़ ने बयान किया, कहा हमसे अय्यूब बिन अबी तमीमा

القَاسِمِ عَنْ زَهْدَمٍ قَالَ: كُنَّا عِنْدَ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ وَكَانَ بَيْنَنَا وَبَيْنَ هَذَا الحَيِّ مِنْ جَرْمٍ إِخَاءٌ فَأُتِيَ بِطَعَامٍ فِيهِ لَحْمُ دَجَاجٍ وَفِي القَوْمِ رَجُلٌ جَالِسٌ أَحْمَرُ فَلَمْ يَدْنُ مِنْ طَعَامِهِ، قَالَ: ادْنُ فَقَدْ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَأْكُلُ مِنْهُ. قَالَ: إِنِّي رَأَيْتُهُ أَكَلَ شَيْئًا فَقَذِرْتُهُ، فَحَلَفْتُ أَنْ لاَ آكُلَهُ. فَقَالَ ادْنُ، أُخْبِرْكَ أَوْ أُحَدِّثْكَ إِنِّي أَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي نَفَرٍ مِنَ الأَشْعَرِيِّينَ، فَوَافَقْتُهُ وَهُوَ غَضْبَانُ، وَهُوَ يَقْسِمُ نَعَمًا مِنْ نَعَمِ الصَّدَقَةِ: فَاسْتَحْمَلْنَاهُ فَحَلَفَ أَنْ لاَ يَحْمِلَنَا قَالَ: مَا عِنْدِي مَا أَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ. ثُمَّ أُتِيَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِنَهْبٍ مِنْ إِبِلٍ، فَقَالَ: أَيْنَ الأَشْعَرِيُّونَ أَيْنَ الأَشْعَرِيُّونَ؟ قَالَ: فَأَعْطَانَا خَمْسَ ذَوْدٍ غُرِّ الذُّرَى فَلَبِثْنَا غَيْرَ بَعِيدٍ، فَقُلْتُ لِأَصْحَابِي: نَسِيَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَمِينَهُ، فَوَاللَّهِ لَئِنْ تَغَفَّلْنَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَمِينَهُ لاَ نُفْلِحُ أَبَدًا فَرَجَعْنَا إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْنَا: يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنَّا اسْتَحْمَلْنَاكَ فَحَلَفْتَ أَنْ لاَ تَحْمِلَنَا، فَظَنَنَّا أَنَّكَ نَسِيتَ يَمِينَكَ. فَقَالَ: ((إِنَّ اللَّهَ هُوَ حَمَلَكُمْ، إِنِّي وَاللَّهِ إِنْ شَاءَ اللَّهُ لاَ أَحْلِفُ عَلَى يَمِينٍ فَأَرَى غَيْرَهَا خَيْرًا

ने बयान किया, उनसे क़ासिम ने, उनसे ज़हदम ने बयान किया कि हम अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) के पास थे हममें और उस क़बीला जर्म में भाईचारा था फिर खाना लाया गया जिसमें मुर्ग़ी का गोश्त भी था, ह़ाज़िरीन में एक शख़्स सुर्ख़ रंग का बैठा हुआ था लेकिन वो खाने में शरीक नहीं हुआ, अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) ने उससे कहा कि तुम भी शरीक हो जाओ। मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को इसका गोश्त खाते हुए देखा है। उसने कहा कि मैंने मुर्ग़ी को गंदगी खाते देखा था उसी वक़्त से मुझे इससे घिन आने लगी है और क़सम खा ली है कि अब इसका गोश्त नहीं खाऊँगा। अबू मूसा (रज़ि.) ने कहा कि शरीक हो जाओ मैं तुम्हें ख़बर देता हूँ या उन्होंने कहा कि मैं तुमसे बयान करता हूँ कि मैं आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में क़बीला अशअ़र के चंद लोगों को साथ लेकर ह़ाज़िर हुआ, मैं आँहज़रत (ﷺ) के सामने आया तो आप नाराज़ थे आप सदक़ा के ऊँट तक़्सीम कर रहे थे। उसी वक़्त हमने आँहज़रत (ﷺ) से सवारी के लिये ऊँट का सवाल किया। आँहज़रत (ﷺ) ने क़सम खा ली कि आप हमें सवारी के लिये ऊँट नहीं देंगे। आपने फ़र्माया कि मेरे पास तुम्हारे लिये सवारी का कोई जानवर नहीं है। उसके बाद आँहज़रत (ﷺ) के पास माले ग़नीमत के ऊँट लाए गये तो आपने फ़र्माया कि अशअ़री कहाँ हैं, अशअ़री कहाँ हैं? बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) ने हमें पाँच सफ़ेद कोहान वाले ऊँट दे दिये। थोड़ी देर तक तो हम ख़ामोश रहे लेकिन फिर मैंने अपने साथियों से कहा कि आँहज़रत (ﷺ) अपनी क़सम भूल गये हैं और अगर हमने आँहज़रत (ﷺ) को आपकी क़सम के बारे में ग़ाफ़िल रखा तो हम कभी फ़लाह नहीं पा सकेंगे। चुनाँचे हम आपकी ख़िदमत में वापस आए और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! हमने आपसे सवारी के ऊँट एक मर्तबा मांगे थे तो आपने हमें सवारी के लिये कोई जानवर न देने की क़सम खा ली थी हमारे ख़्याल में आप अपनी क़सम भूल गये हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि बिला शुब्हा अल्लाह ही की वो ज़ात है जिसने तुम्हें सवारी के लिये जानवर अ़त़ा फ़र्माया। अल्लाह की क़सम! अगर अल्लाह ने चाहा तो कभी ऐसा नहीं हो सकता कि मैं कोई क़सम खा लूँ और फिर बाद में मुझ पर वाज़ेह हो जाए कि

مِنْهَا إِلاَّ أَتَيْتُ الَّذِي هُوَ خَيْرٌ وَتَحَلَّلْتُهَا)).

[راجع: ٣١٣٣]

इसके सिवा दूसरी चीज़ इससे बेहतर है और फिर वही मैं न करूँ जो बेहतर है, मैं क़सम तोड़ दूँगा और वही करूँगा जो बेहतर होगा और क़सम तोड़ने का कफ़्फ़ारा अदा करूँगा। (राजेअ : 3133)

अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) का दिली मत़लब ये था कि तुम भी अपनी क़सम तोड़कर मुर्ग़ी खाने में शरीक हो जाओ। मुर्ग़ी ऐसा जानवर नहीं है जिसकी मुत्लक़ ग़िज़ा गन्दगी हो वो अगर गन्दगी खाती है तो पाकीज़ा चीज़ें भी बकष़रत खाती है पस उसके ह़लाल होने में कोई शक व शुब्हा नहीं है।

٢٧- باب لُحُومِ الْخَيْلِ

बाब 27 : घोड़े का गोश्त खाने का बयान

٥٥١٩- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ فَاطِمَةَ عَنْ أَسْمَاءَ قَالَتْ: نَحَرْنَا فَرَسًا عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَأَكَلْنَاهُ. [راجع: ٥٥١٠]

5519. हमसे हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम ने बयान किया, उनसे फ़ात़िमा ने और उनसे ह़ज़रत अस्मा (रज़ि.) ने बयान किया कि हमने रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में एक घोड़ा ज़िब्ह़ किया और उसे खाया। (राजेअ : 5510)

٥٥٢٠- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ قَالَ: نَهَى النَّبِيُّ ﷺ يَوْمَ خَيْبَرَ عَنْ لُحُومِ الْحُمُرِ وَرَخَّصَ فِي لُحُومِ الْخَيْلِ.

[راجع: ٤٢١٩]

5520. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने, उनसे मुह़म्मद बिन अ़ली ने और उनसे ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया कि जंगे ख़ैबर में रसूलुल्लाह (ﷺ) ने गधे का गोश्त खाने की मुमानअ़त कर दी थी और घोड़े का गोश्त खाने की रुख़सत दी थी। (राजेअ : 4219)

तश्रीह : अज़् ह़ज़रत अल उस्ताज़ मौलाना अबुल ह़सन उ़बैदुल्लाह स़ाह़ब शैख़ुल ह़दीष़ मुबारकपुरी मद्दज़िल्लहुल आ़ली घोड़े की बिला कराहियत ह़िल्लत के क़ाइल, इमाम शाफ़िई और इमाम अह़मद के अ़लावा स़ाह़ेबैन और त़ह़ावी ह़नफ़ी भी हैं। इमाम मालिक से कराहियमं तंज़ीही और तह़रीमी दोनों मन्क़ूल हैं। इमाम अबू ह़नीफ़ा से तीन क़ौल मन्क़ूल हैं कराहते तंज़ीही तह़रीमी, रुजूअ़ अ़निल क़ौल बित्तह़रीम। ह़नफ़िया के यहाँ अस़ह़ और अरजह क़ौल तह़रीम का है। त़रफ़ैन के दलाइल और जवाबात शुरूह़े बुख़ारी (फ़त्ह़ुल बारी, ऐ़नी) शर्ह़े मौत़ा इमाम मालिक ज़रक़ानी व शर्ह़े मआ़नी अल आष़ार लित त़ह़ावी में बित् तफ़्स़ील मज़्कूर हैं। ह़िल्लत के दलाइले वाज़िह़ा क़विय्या आ जाने के बाद तअ़ाम्मुल या अ़मल उम्मत की त़रफ़ इल्तिफ़ात बे मा'नी और खेल हैं। हुज्जते शरई किताब व सुन्नत और इज्माअ़ फिर क़यासे स़ह़ीह़ा है। घोड़े का आ़म और बड़ा मस़रफ़ शुरू ही से सवारी रहा है। इसलिये इसके खाने का रिवाज नहीं है। अ़लावा बरीं अ़त़ा बिन अबी रिबाह़ से तमाम स़ह़ाबा की त़रफ़ से घोड़े का गोश्त खाना बग़ैर किसी इख़्तिलाफ़ के ष़ाबित है **कानस्सलफु (अय अस़्सहाबतु) कानू याकूलूनहू इब्नु अबी शैबा** (उ़बैदुल्लाह रह़मानी मुबारकपुरी)

٢٨- باب لُحُومِ الْحُمُرِ الإِنْسِيَّةِ. فِيهِ عَنْ سَلَمَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ

बाब 28 : पालतू गधों का गोश्त खाना मना है इस बाब में ह़ज़रत सलमा (रज़ि.) की ह़दीष़ नबी करीम (ﷺ) से मरवी है

5521. हमसे स़दक़ा ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दह् ने ख़बर दी, उन्हें उ़बैदुल्लाह ने, उन्हें सालिम और नाफ़ेअ ने और उन्हें ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने जंगे ख़ैबर के मौक़े पर गधों के गोश्त की मुमानअ़त कर दी थी। (राजेअ़ : 853)

٥٥٢١- حَدَّثَنَا صَدَقَةُ أَخْبَرَنَا عَبْدَةُ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ عَنْ سَالِمٍ وَ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا، نَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنْ لُحُومِ الْحُمُرِ الأَهْلِيَّةِ يَوْمَ خَيْبَرَ.
[راجع: ٨٥٣]

5522. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह ने, कहा मुझसे नाफ़ेअ ने बयान किया, और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने पालतू गधों के गोश्त की मुमानअ़त की थी। इस रिवायत की मुताबअ़त इब्नुल मुबारक ने की थी, उनसे नाफ़ेअ ने और अबू उसामा ने बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह ने और उनसे सालिम ने इसी त़रह से बयान किया।(राजेअ़ : 853)

٥٥٢٢- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ عُبَيْدِ اللهِ حَدَّثَنِي نَافِعٌ عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: نَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنْ لُحُومِ الْحُمُرِ الأَهْلِيَّةِ. تَابَعَهُ ابْنُ الْمُبَارَكِ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ عَنْ نَافِعٍ. وَقَالَ أَبُو أُسَامَةَ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ عَنْ سَالِمٍ.
[راجع: ٨٥٣]

तश्रीह : ह़ज़रत मुसद्दद बिन मुस्रहिद बस़रा के बाशिन्दे हैं । ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) और अबू दाऊद वग़ैरह के उस्ताज हैं । सन 228 हिजरी में इंतिक़ाल फ़र्माया, रह़िमहुल्लाहु तआ़ला।

5523. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें मुह़म्मद बिन अ़ली के बेटे अ़ब्दुल्लाह और ह़सन ने और उन्हें उनके वालिद ने कि ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने बयान किया कि जंगे ख़ैबर के साल रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुत्आ़ और पालतू गधों के गोश्त के खाने से मना फ़र्मा दिया था। (राजेअ़ : 4216)

٥٥٢٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ وَالْحَسَنِ ابْنَيْ مُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ عَنْ أَبِيهِمَا عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللهِ ﷺ عَنِ الْمُتْعَةِ عَامَ خَيْبَرَ، وَلُحُومِ حُمُرِ الإِنْسِيَّةِ. [راجع: ٤٢١٦]

तश्रीह : ह़ुर्मते मुत्आ़ के बारे में उम्मत का इज्माअ़ है मगर शिया ह़ज़रात इसकी ह़िल्लत के क़ाइल हैं और कुछ शाज़ आष़ार से इस्तिदलाल करते हैं। कुछ लोग इस बारे में अ़ल्लामा इब्ने ह़ज़्म को भी मुत्तहम करते हैं ह़ालाँकि ह़ाफ़िज़ स़ाहब ने स़ाफ़ लिखा है **व क़दिअतरफ़ इब्नु ह़ज़्म मअ ज़ालिक बितहरीमिहा लिषुबूति क़ौलिही (ﷺ) इन्नहा हरामुन इला यौमिल्क़ियामति क़ाल फआमन्ना बिहाज़ल्क़ौलि वल्लाहु आ़लमु** (फ़त्हुल्बारी पारह 21, पेज 63) या'नी इसके बावजूद अ़ल्लामा इब्ने ह़ज़्म ने मुत्आ़ की ह़ुर्मत का इक़रार किया है क्यों कि ये स़ह़ीह़ है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने उसे क़यामत तक के लिये ह़राम क़रार दे दिया है पस इसी फ़र्माने नबवी पर हमारा ईमान है।

5524. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद ने बयान किया, उनसे अ़म्र ने, उनसे मुह़म्मद बिन अ़ली ने और उनसे ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने जंगे ख़ैबर के मौक़े पर गधों का गोश्त खाने से मना कर दिया था और घोड़ों के लिये

٥٥٢٤- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ عَمْرٍو عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ قَالَ نَهَى النَّبِيُّ ﷺ يَوْمَ خَيْبَرَ عَنْ لُحُومِ الْحُمُرِ، وَرَخَّصَ فِي

रुख़्सत फ़र्मा दी थी। (राजेअ : 4219)

5525,5526. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह़्या ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अ़दी ने बयान किया और उनसे बरा और इब्ने अबी औफ़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने गधे का गोश्त खाने से मना फ़र्मा दिया था।(राजेअ : 3155, 4221, 4222)

5527. हमसे इस्ह़ाक़ ने बयान किया, कहा हमको यअ़क़ूब बिन इब्राहीम ने ख़बर दी, कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, उनसे स़ालेह़ ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें अबू इदरीस ने ख़बर दी और उनसे ह़ज़रत अबू ष़अ़लबा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने पालतू गधे का गोश्त खाना ह़राम क़रार दिया था। इस रिवायत की मुताबअ़त ज़ुबैदी और अ़क़ील ने इब्ने शिहाब से की है। मालिक, मअ़मर, माजिशून, यूनुस और इब्ने इस्ह़ाक़ ने ज़ुह्री से बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने हर फाड़कर खाने वाले दरिन्दे का गोश्त खाने से मना किया है।

5528. हमसे मुह़म्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल वह्हाब ष़क़फ़ी ने ख़बर दी, उन्हें अय्यूब ने, उन्हें मुह़म्मद ने और उन्हें ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में एक स़ाह़ब आए और अ़र्ज़ किया कि मैंने गधे का गोश्त खा लिया है फिर दूसरे स़ाह़ब आए और कहा कि मैंने गधे का गोश्त खा लिया है फिर तीसरे स़ाह़ब आए और कहा कि गधे ख़त्म हो गये। उसके बाद आँह़ज़रत (ﷺ) ने एक मुनादी के ज़रिये लोगों में ऐलान करवाया कि अल्लाह और उसके रसूल तुम्हें पालतू गधों का गोश्त खाने से मना करते हैं क्योंकि वो नापाक हैं चुनाँचे उसी वक़्त हाँडियाँ उलट दी गईं ह़ालाँकि वो (गधे के) गोश्त से जोश मार रही थीं।(राजेअ : 371)

5529. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अ़म्र ने बयान किया कि मैंने ह़ज़रत जाबिर बिन ज़ैद (रज़ि.) से पूछा कि लोगों का ख़याल है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने पालतू गधों का गोश्त खाने

لحُومِ الْخَيْلِ. [راجع: ٤٢١٩]

٥٥٢٥، ٥٥٢٦- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ شُعْبَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي عَدِيٌّ عَنِ الْبَرَاءِ وَابْنِ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ قَالاَ: نَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنْ لُحُومِ الْحُمُرِ. [راجع: ٣١٥٥، ٤٢٢١، ٤٢٢٢]

٥٥٢٧- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ صَالِحٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَنَّ أَبَا إِدْرِيسَ أَخْبَرَهُ أَنَّ أَبَا ثَعْلَبَةَ قَالَ: حَرَّمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لُحُومَ الْحُمُرِ الأَهْلِيَّةِ. تَابَعَهُ الزُّبَيْدِيُّ، وَعُقَيْلٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ. وَقَالَ مَالِكٌ وَمَعْمَرٌ وَالْمَاجِشُونُ وَيُونُسُ وَابْنُ إِسْحَاقَ عَنِ الزُّهْرِيِّ نَهَى النَّبِيُّ ﷺ، عَنْ كُلِّ ذِي نَابٍ مِنَ السِّبَاعِ.

٥٥٢٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلاَمٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ الثَّقَفِيُّ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ جَاءَهُ جَاءٍ فَقَالَ: أُكِلَتِ الْحُمُرُ ثُمَّ جَاءَهُ جَاءٍ فَقَالَ: أُكِلَتِ الْحُمُرُ، ثُمَّ جَاءَهُ جَاءٍ فَقَالَ: أُفْنِيَتِ الْحُمُرُ. فَأَمَرَ مُنَادِيًا فَنَادَى فِي النَّاسِ : إِنَّ اللهَ وَرَسُولَهُ يَنْهَيَانِكُمْ عَنْ لُحُومِ الْحُمُرِ الأَهْلِيَّةِ، فَإِنَّهَا رِجْسٌ فَأُكْفِئَتِ الْقُدُورُ، وَإِنَّهَا لَتَفُورُ بِاللَّحْمِ. [راجع: ٣٧١]

٥٥٢٩- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: عَمْرٌو قُلْتُ لِجَابِرِ بْنِ زَيْدٍ يَزْعُمُونَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ نَهَى عَنْ حُمُرِ

से मना किया था? उन्होंने कहा कि हकम बिन अम्र ग़िफ़ारी (रज़ि.) ने हमें बस़रा में यही बताया था लेकिन इल्म के समुन्दर हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने इससे इंकार किया और (इस्तिदलाल में) इस आयत की तिलावत की, क़ुल ला अजिद फ़ीमा ऊह़िया इलय्या मुहर्रमा।

الأَهْلِيَّةِ، فَقَالَ: قَدْ كَانَ يَقُولُ ذَاكَ الْحَكَمُ بْنُ عَمْرٍو الْغِفَارِيُّ عِنْدَنَا بِالْبَصْرَةِ. وَلَكِنْ أَبَى ذَاكَ الْبَحْرُ ابْنُ عَبَّاسٍ وَقَرَأَ ﴿قُلْ لاَ أَجِدُ فِيمَا أُوحِيَ إِلَيَّ مُحَرَّمًا﴾.

तश्रीह : इस आयत में हराम माकूलात का ज़िक्र है जिसमें मज़्कूरा गधे का ज़िक्र नहीं है। शायद इब्ने अब्बास (रज़ि.) को इन अहादीष़ का इल्म न हुआ हो वरना वो कभी ऐसा न कहते ये भी मुम्किन है कि उन्होंने इस ख़्याल से बाद में रुजूअ कर लिया हो, वल्लाहु आलम बिस्सवाब।

बाब 29 : हर फाड़कर खाने वाले दरिन्दे (व परिन्दे) के गोश्त खाने के बारे में

٢٩- باب أَكْلِ كُلِّ ذِي نَابٍ مِنَ السِّبَاعِ

5530. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें अबू इदरीस ख़ौलानी ने और वो हज़रत अबू ष़अलबा ख़श्नी (रज़ि.) से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हर फाड़कर खाने वाले दरिन्दों का गोश्त खाने से मना किया था। इस रिवायत की मुताबअत यूनुस, मअमर, इब्ने उयैना और माजिशून ने ज़ुहरी की सनद से की है। (राजेअ : 5780,5781)

٥٥٣٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَبِي إِدْرِيسَ الْخَوْلاَنِيِّ، عَنْ أَبِي ثَعْلَبَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ نَهَى عَنْ أَكْلِ كُلِّ ذِي نَابٍ مِنَ السِّبَاعِ. تَابَعَهُ يُونُسُ وَ مَعْمَرٌ وَ ابْنُ عُيَيْنَةَ وَالْمَاجِشُونُ عَنِ الزُّهْرِيِّ. [راجع: ٥٧٨٠، ٥٧٨١]

ज़ी नाब से मुराद ऐसे दांत हैं जिनसे दरिन्दा जानवर या परिन्दा अपने शिकार को ज़ख़्मी करके फाड़ देता है।

बाब 30 : मुरदार जानवर की खाल का क्या हुक्म है?

٣٠- باب جُلُودِ الْمَيْتَةِ

5531. हमसे ज़ुहैर बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे यअक़ूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, उनसे स़ालेह ने बयान किया, कहा मुझसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्हें उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने ख़बर दी और उन्हें हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) एक मरी हुई बकरी के क़रीब से गुज़रे तो आपने फ़र्माया कि तुमने इसके चमड़े से फ़ायदा क्यूँ न उठाया? लोगों ने कहा कि ये तो मरी हुई है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि स़िर्फ़ उसका खाना हराम किया गया है। (राजेअ : 1492)

٥٥٣١- حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ صَالِحٍ قَالَ حَدَّثَنِي ابْنُ شِهَابٍ أَنَّ عُبَيْدَ اللهِ بْنَ عَبْدِ اللهِ أَخْبَرَهُ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ مَرَّ بِشَاةٍ مَيِّتَةٍ فَقَالَ: ((هَلاَّ اسْتَمْتَعْتُمْ بِإِهَابِهَا؟)) قَالُوا: إِنَّهَا مَيِّتَةٌ. قَالَ: ((إِنَّمَا حَرُمَ أَكْلُهَا)). [راجع: ١٤٩٢]

चमड़ा दबाग़त से पाक हो जाता है।

5532. हमसे ख़त्ताब बिन उ़ष्मान ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन हिमयर ने बयान किया, उनसे ष़ाबित बिन अज्लान

٥٥٣٢- حَدَّثَنَا خَطَّابُ بْنُ عُثْمَانَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حِمْيَرٍ عَنْ ثَابِتِ بْنِ عَجْلاَنَ

ने बयान किया, उन्होंने सईद बिन जुबैर से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) एक मरे हुए बकरे के पास से गुज़रे तो फ़र्माया कि उसके मालिकों को क्या हो गया है अगर वो उसके चमड़े को काम में लाते (तो बेहतर होता) (राजेअ़: 1492)

قَالَ سَمِعْتُ سَعِيدَ بْنَ جُبَيْرٍ قَالَ سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ مَرَّ النَّبِيُّ ﷺ بِعَنْزٍ مَيِّتَةٍ فَقَالَ: ((مَا عَلَى أَهْلِهَا لَوْ انْتَفَعُوا بِإِهَابِهَا)). [راجع: ١٤٩٢]

बाब 31 : मुश्क का इस्ते'माल जाइज़ है

٣١- بَابُ الْمِسْكِ

5533. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल वाहिद ने बयान किया, कहा हमसे अ़म्मारा बिन क़अ़क़ाअ़ ने बयान किया, उनसे अबू ज़रअ़ा बिन अम्र बिन जरीर ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जो ज़ख़्मी भी अल्लाह के रास्ते में ज़ख़्मी हो गया हो उसे क़यामत के दिन इस ह़ालत में उठाया जाएगा कि उसके ज़ख़्म से जो ख़ून जारी होगा उसका रंग जो ख़ून ही जैसा होगा मगर उसमें मुश्क जैसी ख़ुश्बू होगी। (राजेअ़ : 237)

٥٥٣٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ عَنْ عَبْدِ الْوَاحِدِ حَدَّثَنَا عُمَارَةُ بْنُ الْقَعْقَاعِ عَنْ أَبِي زُرْعَةَ بْنِ عَمْرِو بْنِ جَرِيرٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَا مِنْ مَكْلُومٍ يُكْلَمُ فِي اللهِ إِلاَّ جَاءَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَكَلْمُهُ يَدْمِي، اللَّوْنُ لَوْنُ دَمٍ، وَالرِّيحُ رِيحُ مِسْكٍ)). [راجع: ٢٣٧]

तश्रीह : मुश्क के ज़िक्र की मुनासबत इस मक़ाम में ये है कि जैसे खाल दबाग़त से पाक हो जाती है ऐसे ही मुश्क भी पहले एक गंदा ख़ून होती है फिर सूखकर पाक हो जाती है मुश्क का बइज्माअ़ अहले इस्लाम पाक होना कई ह़दीष़ों से ष़ाबित है कि आँह़ज़रत (ﷺ) मुश्क का इस्ते'माल फ़र्माया करते थे और आपने जन्नत की मिट्टी के लिये फ़र्माया कि वो मुश्क जैसी ख़ुश्बूदार है और क़ुर्आन मजीद में है ख़िताम़ुहू मिस्क और मुस्लिम ने अबू सईद (रज़ि.) से रिवायत किया कि मुश्क सब ख़ुश्बुओं से बढ़कर उ़म्दह ख़ुश्बू है अल ग़र्ज़ मुश्क पाक है।

5534. हमसे मुह़म्मद बिन अ़ला ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे बुरैद बिन अ़ब्दुल्लाह ने, उनसे अबू बुर्दा ने और उनसे ह़ज़रत अबू मूसा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया नेक और बुरे दोस्त की मिष़ाल मुश्क साथ रखने वाले और भट्टी धोंकने वाले की सी है (जिसके पास मुश्क है और तुम उसकी मुह़ब्बत में हो) वो उसमें से या तुम्हें कुछ तोह़फ़ा के त़ौर पर देगा या तुम उससे ख़रीद सकोगे या (कम अज़्कम) तुम उसकी उ़म्दह ख़ुश्बू से तो लुत्फ़ अन्दोज़ हो ही सकोगे और भट्टी धोंकने वाला या तुम्हारे कपड़े (भट्टी की आग से) जला देगा या तुम्हें उसके पास से एक नागवार बदबूदार धुआँ पहुँचेगा। (राजेअ़ : 2101)

٥٥٣٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ بُرَيْدٍ عَنْ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَثَلُ جَلِيسِ الصَّالِحِ وَالسُّوْءِ، كَحَامِلِ الْمِسْكِ وَنَافِخِ الْكِيرِ، فَحَامِلُ الْمِسْكِ إِمَّا أَنْ يُحْذِيَكَ، وَإِمَّا أَنْ تَبْتَاعَ مِنْهُ، وَإِمَّا أَنْ تَجِدَ مِنْهُ رِيحًا طَيِّبَةً. وَنَافِخُ الْكِيرِ إِمَّا أَنْ يُحْرِقَ ثِيَابَكَ، وَإِمَّا أَنْ تَجِدَ رِيحًا خَبِيثَةً)). [راجع: ٢١٠١]

तश्रीह : मुज्तहिदे मुत्लक़ ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने इस ह़दीष़ से भी मुश्क का पाक और बेहतर होना ष़ाबित फ़र्माया है और उसे अच्छे और स़ालेह़ दोस्त से तश्बीह दी है बेशक

सुहबते सालेह तरा सालेह कुनद सुहबते तालेअ तुरा तालेअ कुनद

हज़रत अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) मक्का मुकर्रमा में मुसलमान हुए थे। ये हाफ़िज़े क़ुर्आन और सुन्नते रसूल के हामिल थे। कलामे इलाही ख़ास अंदाज़ और लहन दाऊद (अलैहिस्सलाम) से पढ़ा करते थे। तमाम सामिईन महव रहते थे। उनकी तिलावत पर ख़ुश होकर हज़रत उमर (रज़ि.) ने उनको बसरा का हाकिम बनाया। सन 52 हिजरी में वफ़ात पाई (रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अरज़ाहु)

बाब 32 : ख़रगोश का गोश्त हलाल है

٣٢- باب الأَرْنَبِ

5535. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन ज़ैद ने और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि हमने एक ख़रगोश का पीछा किया। हम मर्रूज़ ज़हरान में थे। लोग उसके पीछे दौड़े और थक गये फिर मैंने उसे पकड़ लिया और उसे हज़रत अबू तलहा (रज़ि.) के पास लाया। उन्होंने उसे ज़िब्ह किया और उसके दोनों कूल्हे या (रावी ने बयान किया कि) उसकी दोनों रानें नबी करीम (ﷺ) के पास भेजीं और आँहज़रत (ﷺ) ने उन्हें क़ुबूल फ़र्माया।

٥٥٣٥- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ هِشَامِ بْنِ زَيْدٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: انْفَجْنَا أَرْنَبًا وَنَحْنُ بِمَرِّ الظَّهْرَانِ، فَسَعَى الْقَوْمُ فَتَعِبُوا، فَأَخَذْتُهَا فَجِئْتُ بِهَا إِلَى أَبِي طَلْحَةَ فَذَبَحَهَا فَبَعَثَ بِوَرِكَيْهَا، أَوْ قَالَ: بِفَخِذَيْهَا إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَبِلَهَا.

कुछ लोग इस जानवर को इसलिये नहीं खाते कि उसकी मादा को हैज़ आता है। हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने उनके ख़्याल की तर्दीद फ़र्माते हुए ख़रगोश का खाना हलाल षाबित फ़र्माया है।

बाब 33 : साहना खाना जाइज़ है

٣٣- باب الضَّبِّ

5536. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन मुस्लिम ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, साहना मैं ख़ुद नहीं खाता लेकिन इसे हराम भी नहीं क़रार देता।

٥٥٣٦- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُسْلِمٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ دِينَارٍ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((الضَّبُّ لَسْتُ آكُلُهُ وَلاَ أُحَرِّمُهُ)).

साहना एक मशहूर जंगली जानवर है जो हलाल है मगर आँहज़रत (ﷺ) ने उसे नहीं खाया जैसा कि यहाँ मज़्कूर है।

5537. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अबू उमामा बिन सहल ने, उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया और उनसे हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) ने बयान किया कि वो नबी करीम (ﷺ) के साथ उम्मुल मोमिनीन हज़रत मैमूना (रज़ि.) के घर गये तो आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में भुना हुआ साहना लाया गया आपने उसकी तरफ़ हाथ बढ़ाया लेकिन कुछ औरतों ने कहा कि आप जो

٥٥٣٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَبِي أُمَامَةَ بْنِ سَهْلٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنْ خَالِدِ بْنِ الْوَلِيدِ أَنَّهُ دَخَلَ مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ بَيْتَ مَيْمُونَةَ، فَأُتِيَ بِضَبٍّ مَحْنُوذٍ فَأَهْوَى إِلَيْهِ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِيَدِهِ

فَقَالَ بَعْضُ النِّسْوَةِ: أَخْبِرُوا رَسُولَ اللهِ ﷺ بِمَا يُرِيدُ أَنْ يَأْكُلَ، فَقَالُوا. هُوَ ضَبٌّ يَا رَسُولَ اللهِ، فَرَفَعَ يَدَهُ فَقُلْتُ: أَحَرَامٌ هُوَ يَا رَسُولَ اللهِ؟ فَقَالَ: ((لاَ وَلَكِنْ لَمْ يَكُنْ بِأَرْضِ قَوْمِي فَأَجِدُنِي أَعَافُهُ)). قَالَ خَالِدٌ: فَاجْتَرَرْتُهُ فَأَكَلْتُهُ، وَرَسُولُ اللهِ ﷺ يَنْظُرُ.[راجع: ٥٣٩١]

खाना देख रहे हैं उसके बारे में आपको बता दो। औरतों ने कहा कि ये साहना है या रसूलल्लाह! चुनाँचे आँहज़रत (ﷺ) ने अपना हाथ खींच लिया। मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या ये हराम है? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि नहीं लेकिन चूँकि ये हमारे मुल्क में नहीं पाया जाता इसलिये तबीअत इससे इंकार करती है। हज़रत ख़ालिद (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर मैंने उसे अपनी तरफ़ खींच लिया और खाया और आँहज़रत (ﷺ) देख रहे थे। (राजेअ : 5391)

तश्रीह : कोई खाए या न खाए ये अम्र इख़्तियार है मगर साहना का खाना बिला तरद्दुद जाइज़ व हलाल है। जैसा कि यहाँ अहादीष़ में मज़्कूर है। इमाम अहमद और इमाम तहावी ने निकाला कि आँहज़रत (ﷺ) ने साहना के गोश्त की हाँडियाँ उलट दी थीं। ये इस पर महमूल है कि पहले आपको उसके मस्ख़ होने का गुमान था फिर ये गुमान जाता रहा और आपने सहाबा को उसके खाने की इजाज़त दी। हज़रत ख़ालिद (रज़ि.) अल्लाह की तलवार से मुलक़्क़ब हैं जो सन 21 हिजरी में फ़ौत हुए। रज़ियल्लाहु व अरज़ाहु।

٣٤- بَابُ إِذَا وَقَعَتِ الْفَأْرَةُ فِي السَّمْنِ الْجَامِدِ أَوِ الذَّائِبِ

बाब 34 : जब जमे हुए या पिघले हुए घी में चूहा पड़ जाए तो क्या हुक्म है

٥٥٣٨- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ أَنَّهُ سَمِعَ ابْنَ عَبَّاسٍ يُحَدِّثُهُ عَنْ مَيْمُونَةَ أَنَّ فَأْرَةً وَقَعَتْ فِي سَمْنٍ فَمَاتَتْ، فَسُئِلَ النَّبِيُّ ﷺ عَنْهَا فَقَالَ ((أَلْقُوهَا وَمَا حَوْلَهَا وَكُلُوهُ)). قِيلَ لِسُفْيَانَ فَإِنَّ مَعْمَرًا يُحَدِّثُهُ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: مَا سَمِعْتُ الزُّهْرِيَّ يَقُولُ: إِلاَّ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنْ مَيْمُونَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ، وَلَقَدْ سَمِعْتُهُ مِنْهُ مِرَارًا.

[راجع: ٢٣٥]

5538. हमसे हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, कहा कि मुझे उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन उत्बा ने ख़बर दी, उन्होंने हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से सुना, उनसे हज़रत मैमूना (रज़ि.) ने बयान किया कि एक चूहा घी में पड़कर मर गया तो नबी करीम (ﷺ) से उसका हुक्म पूछा गया। आपने फ़र्माया कि चूहे को और उसके चारों तरफ़ से घी को फेंक दो और बाक़ी घी को खाओ। सुफ़यान से कहा गया कि मअमर इस हदीष़ को ज़ुह्री से बयान करते हैं कि उनसे सईद बिन मुसय्यिब और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने ये हदीष़ ज़ुह्री से सिर्फ़ उबैदुल्लाह से बयान करते सुनी है कि उनसे हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने, उनसे हज़रत मैमूना (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया और मैंने ये हदीष़ उनसे बारहा सुनी है। (राजेअ : 235)

तश्रीह : मअमर की रिवायत को अबू दाऊद ने निकाला। इस्माईली ने सुफ़यान से नक़ल किया, उन्होंने कहा मैंने ज़ुह्री से ये हदीष़ कई बार यूँ ही सुनी है अन अब्दिल्लाह अन इब्ने अब्बास अन मैमूना किसी हदीष़ में ये सराहत नहीं

है कि आसपास का घी कितनी दूर तक निकालें। ये हर आदमी की राय पर मुंहसिर है अगर पतला घी या तैल हो तो एक रिवायत में यूँ है कि उसे तीन चुल्लू निकाल दें मगर ये रिवायत ज़ईफ़ है। अब जो तैल या घी खाने के काम का न रहा उसका जलाना दुरुस्त है। हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) से मन्क़ूल है कि अगर घी पतला हो तो उसे और काम में लाए मगर खाने में उसे इस्ते'माल न करो। हज़रत मैमूना (रज़ि.) उम्मुल मोमिनीन में से हैं जो सन 7 हिजरी उम्रतुल क़ज़ा के मौक़े पर निकाहे नबवी में आईं और इत्तिफ़ाक़ देखिए कि उसी जगह बाद में उनका इंतिक़ाल हुआ। ये आपकी आख़िरी बीवी हैं जिनसे ये मन्क़ूल है।

٥٥٣٩- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ عَنْ يُونُسَ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنِ الدَّابَّةِ تَمُوتُ فِي الزَّيْتِ وَالسَّمْنِ، وَهُوَ جَامِدٌ أَوْ غَيْرُ جَامِدٍ، الْفَأْرَةُ أَوْ غَيْرُهَا، قَالَ : بَلَغَنَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ أَمَرَ بِفَأْرَةٍ مَاتَتْ فِي سَمْنٍ فَأَمَرَ بِمَا قَرُبَ مِنْهَا فَطُرِحَ، ثُمَّ أُكِلَ. عَنْ حَدِيثِ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ. [راجع: ٢٣٥]

5539. हमसे अब्दान ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्हें यूनुस ने, उन्हें मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन शिहाब ज़ुहरी ने कि अगर कोई जानवर चूहा या कोई और जमे हुए या ग़ैर जमे हुए घी या तैल में पड़ जाए तो उसके बारे में हमें ये हदीष़ पहुँची है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने चूहे के बारे जो घी में मर गया था, हुक्म दिया कि उसे और उसके चारों तरफ़ से घी निकालकर फेंक दिया जाए और फिर बाक़ी घी खाया गया। हमें ये हदीष़ उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह की सनद से पहुँची है। (राजेअ : 235)

हज़रत मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन शिहाब ज़ुहरी ज़ुहरा बिन किलाब की तरफ़ मन्सूब हैं। बहुत बड़े फ़क़ीह और ज़बरदस्त मुहद्दिष़ हैं। बमाहे रमज़ानुल मुबारक सन 124 हिजरी में वफ़ात पाई, रहिमहुल्लाह।

٥٥٤٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنْ مَيْمُونَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ قَالَتْ: سُئِلَ النَّبِيُّ ﷺ عَنْ فَأْرَةٍ سَقَطَتْ فِي سَمْنٍ، فَقَالَ: ((أَلْقُوهَا وَمَا حَوْلَهَا وَكُلُوهُ)). [راجع: ٢٣٥]

5540. हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अब्दुल्लाह इब्ने अब्दुल्लाह ने, उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने और उनसे हज़रत मैमूना (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) से उस चूहे का हुक्म पूछा गया जो घी में गिर गया हो। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि चूहे को और उसके चारों और से घी को फेंक दो फिर बाक़ी घी खा लो। (राजेअ : 235)

٣٥- باب الْوَسْمِ وَالْعَلَمِ فِي الصُّورَةِ

बाब 35 : जानवरों के चेहरों पर दाग़ देना या निशान करना कैसा है?

٥٥٤١- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى عَنْ حَنْظَلَةَ عَنْ سَالِمٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّهُ كَرِهَ أَنْ تُعْلَمَ الصُّورَةُ وَقَالَ ابْنُ عُمَرَ: نَهَى النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ تُضْرَبَ. تَابَعَهُ قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا الْعَنْقَزِيُّ عَنْ حَنْظَلَةَ وَقَالَ

5541. हमसे उबैदुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, उनसे हंज़ला ने, उनसे सालिम ने, उनसे हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) ने कि वो चेहरे पर निशान लगाने को नापसंद करते थे और हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने चेहरे पर मारने से मना किया है। उबैदुल्लाह बिन मूसा के साथ इस हदीष़ को क़ुतैबा बिन सईद ने भी रिवायत किया, कहा हमको अम्र बिन मुहम्मद

अन्क़ज़ी ने ख़बर दी, उन्होंने हंज़ला से।

تَضْرِبُ الصُّورَةَ.

इस रिवायत में स़राहत है कि मुँह पर मारने से मना किया कुछ जाहिल पढ़ाने वालों की आदत है कि बच्चों के मुँह पर मारा करते हैं। उनको इस ह़दीष़ से नस़ीह़त लेनी चाहिये।

5542. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन ज़ैद ने और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में अपने भाई (अ़ब्दुल्लाह बिन अबी त़लह़ा नौ मौलूद) को लाया ताकि आप उसकी तह़नीक फ़र्मा दें। आँह़ज़रत (ﷺ) उस वक़्त ऊँटों के बाड़े में तशरीफ़ रखते थे। मैंने देखा कि आप एक बकरी को दाग़ रहे थे (शुअ़बा ने कहा कि) मैं समझता हूँ कि (हिशाम ने) कहा कि उसके कानों को दाग़ रहे थे। (राजेअ़: 1502)

٥٥٤٢- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ هِشَامِ بْنِ زَيْدٍ عَنْ أَنَسٍ قَالَ: دَخَلْتُ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِأَخٍ لِي يُحَنِّكُهُ وَهُوَ فِي مِرْبَدٍ لَهُ فَرَأَيْتُهُ يَسِمُ شَاةً حَسِبْتُهُ قَالَ : فِي آذَانِهَا.

[راجع: ١٥٠٢]

मा'लूम हुआ कि बकरी के कानों को दाग़ना जाइज़ है। किसी बुज़ुर्ग का मुँह में खजूर नर्म करके बच्चे के ह़लक़ में डाल देने को तह़नीक कहा जाता है।

बाब 36 : अगर मुजाहिदीन की किसी जमाअ़त को ग़नीमत मिले और उनमें

से कुछ लोग अपने दूसरे साथियों की इजाज़त के बग़ैर (तक़्सीम से पहले) ग़नीमत की बकरी या ऊँट में से कुछ ज़िब्ह कर लें तो ऐसा गोश्त खाना ह़लाल नहीं है बवजहे राफ़ेअ़ बिन ख़दीज (रज़ि.) की ह़दीष़ के जो उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से नक़ल की है। त़ाऊस और इक्रिमा ने चोर के ज़बीह़ा के बारे में कहा कि उसे फेंक दो (मा'लूम हुआ कि वो खाना ह़राम है)

٣٦- باب إِذَا أَصَابَ قَوْمٌ غَنِيمَةً، فَذَبَحَ بَعْضُهُمْ غَنَمًا أَوْ إِبِلاً بِغَيْرِ أَمْرِ أَصْحَابِهِمْ، لَمْ تُؤْكَلْ لِحَدِيثِ رَافِعٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. وَقَالَ طَاوُسٌ وَعِكْرِمَةُ فِي ذَبِيحَةِ السَّارِقِ اطْرَحُوهُ.

5543. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे अबुल अह़वस़ ने बयान किया, उनसे सईद बिन मसरूक़ ने बयान किया, उनसे अ़बाया बिन रिफ़ाआ़ ने, उनसे उनके वालिदने और उनसे अ़बाया के दादा राफ़ेअ़ बिन ख़दीज (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से अ़र्ज़ किया कि कल हमारा दुश्मन से मुक़ाबला होगा और हमारे पास छुरियाँ नहीं हैं? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो हथियार ख़ून बहा दे और (जानवरों को ज़िब्ह करते वक़्त) उस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो उसे खाओ बशर्ते कि ज़िब्ह का हथियार दांत और नाख़ुन न हो और मैं उसकी वजह तुम्हें बताऊँगा, दांत तो हड्डी है और नाख़ुन ह़ब्शियों की छुरी है और जल्दी करने वाले लोग

٥٥٤٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مَسْرُوقٍ عَنْ عَبَايَةَ بْنِ رِفَاعَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ رَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ قَالَ : قُلْتُ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، إِنَّنَا نَلْقَى الْعَدُوَّ غَدًا وَلَيْسَ مَعَنَا مُدًى، فَقَالَ: ((مَا أَنْهَرَ الدَّمَ وَذُكِرَ اسْمُ اللهِ فَكُلُوا، مَا لَمْ يَكُنْ سِنٌّ وَلاَ ظُفُرٌ، وَسَأُحَدِّثُكُمْ عَنْ ذَلِكَ: أَمَّا السِّنُّ فَعَظْمٌ، وَأَمَّا الظُّفُرُ فَمُدَى الْحَبَشَةِ))، وَتَقَدَّمَ

آگے بढ़ گے...

आगे बढ़ गये थे और ग़नीमत पर क़ब्ज़ा कर लिया था लेकिन नबी करीम (ﷺ) पीछे के सहाबा के साथ थे चुनाँचे (आगे पहुँचने वालों ने जानवर ज़िब्ह करके) हाँडियाँ पकने के लिये चढ़ा दीं लेकिन आँहज़रत (ﷺ) ने उन्हें उलट देने का हुक्म फ़र्माया फिर आपने ग़नीमत लोगों के दरम्यान तक़्सीम की। उस तक़्सीम में एक ऊँट को दस बकरियों के बराबर आपने क़रार दिया था फिर आगे के लोगों से एक ऊँट बिदककर भाग गया। लोगों के पास घोड़े नहीं थे फिर एक शख़्स ने उस ऊँट पर तीर मारा और अल्लाह तआला ने उसे रोक लिया। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये जानवर भी कभी वहशी जानवरों की तरह बिदकने लगते हैं। इसलिये जब उनमें से कोई ऐसा करे तो तुम भी उनके साथ ऐसा ही करो। (राजेअ : 2488)

سَرَعَانُ النَّاسِ فَأَصَابُوا مِنَ الْغَنَائِمِ وَالنَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي آخِرِ النَّاسِ، فَنَصَبُوا قُدُورًا. فَأَمَرَ بِهَا فَأُكْفِئَتْ، وَقَسَمَ بَيْنَهُمْ وَعَدَلَ بَعِيرًا بِعَشْرِ شِيَاهٍ. ثُمَّ نَدَّ بَعِيرٌ مِنْ أَوَائِلِ الْقَوْمِ، وَلَمْ يَكُنْ مَعَهُمْ خَيْلٌ، فَرَمَاهُ رَجُلٌ بِسَهْمٍ فَحَبَسَهُ اللهُ فَقَالَ: ((إِنَّ لِهَذِهِ الْبَهَائِمِ أَوَابِدَ كَأَوَابِدِ الْوَحْشِ. فَمَا فَعَلَ مِنْهَا هَذَا فَافْعَلُوا مِثْلَ هَذَا)).

[راجع: ٢٤٨٨]

तश्रीह : हज़रत राफ़ेअ बिन ख़दीज (रज़ि.) की कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह हारषी अंसारी है। जंगे उहुद में उनको तीर लगा जिस पर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं क़यामत के दिन तुम्हारे इस तीर का गवाह हूँ। उनका ज़ख़्म अब्दुल मलिक बिन मरवान के ज़माने तक बाक़ी रहा। 86 साल की उम्र में सन 73 हिजरी में वफ़ात पाई, रज़ियल्लाहु अन्हु।

बाब : 37 जब किसी क़ौम को कोई ऊँट बिदक जाए और उनमें से कोई शख़्स ख़ैरख़्वाही की नियत से उसे तीर से निशाना लगाकर मार डाले तो जाइज़ है? हज़रत राफ़ेअ बिन ख़दीज (रज़ि.) की नबी करीम (ﷺ) से रिवायतकर्दा हदीष़ उसकी ताइद करती है

जो आगे आ रही है।

٣٧- باب إِذَا نَدَّ بَعِيرٌ لِقَوْمٍ، فَرَمَاهُ بَعْضُهُمْ بِسَهْمٍ فَقَتَلَهُ، فَأَرَادَ إِصْلاَحَهُمْ فَهُوَ جَائِزٌ لِخَبَرِ رَافِعٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

5544. हमसे इब्ने सलाम ने बयान किया, कहा हमको उमर बिन उबैदुल तुनाफ़िसी ने ख़बर दी, उन्हें सईद बिन मसरूक़ ने, उनसे अबाया बिन रिफ़ाआ ने, उनसे उनके दादा हज़रत राफ़ेअ बिन ख़दीज (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ एक सफ़र में थे। एक ऊँट बिदककर भाग पड़ा, फिर एक आदमी ने तीर से उसे मारा और अल्लाह तआला ने उसे रोक दिया, बयान किया कि फिर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये ऊँट भी कुछ औक़ात जंगली जानवरों की तरह बिदकते हैं, इसलिये उनमें से जो तुम्हारे क़ाबू से बाहर हो जाएँ, उनके साथ ऐसा ही किया करो। राफ़ेअ ने बयान किया कि मैंने अर्ज़ किया

٥٥٤٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلاَمٍ أَخْبَرَنَا عُمَرُ بْنُ عُبَيْدٍ الطَّنَافِسِيُّ عَنْ سَعِيدِ بْنِ مَسْرُوقٍ عَنْ عَبَايَةَ بن رفاعة عَنْ جَدِّهِ رَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي سَفَرٍ، فَنَدَّ بَعِيرٌ مِنَ الإِبِلِ قَالَ: فَرَمَاهُ رَجُلٌ بِسَهْمٍ فَحَبَسَهُ. قَالَ : ثُمَّ قَالَ: ((إِنَّ لَهَا أَوَابِدَ كَأَوَابِدِ الْوَحْشِ فَمَا غَلَبَكُمْ مِنْهَا فَاصْنَعُوا بِهِ هَكَذَا)). قَالَ:

قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنَّا نَكُونُ فِي الْمَغَازِي وَالأَسْفَارِ، فَنُرِيدُ أَنْ نَذْبَحَ فَلاَ يَكُونُ مُدًى قَالَ : ((أَرِنْ مَا أَنْهَرَ أَوْ نَهَرَ الدَّمَ وَذُكِرَ اسْمُ اللهِ فَكُلْ. غَيْرَ السِّنِّ وَالظُّفُرِ. فَإِنَّ السِّنَّ عَظْمٌ، وَالظُّفُرَ مُدَى الْحَبَشَةِ)). [راجع: ٢٤٨٨]

या रसूलल्लाह (ﷺ)! हम अकष़र ग़ज़्वात और दूसरे सफ़रों में रहते हैं और जानवर ज़िब्ह़ करना चाहते हैं लेकिन हमारे पास छुरियाँ नहीं होतीं। फ़र्माया कि देख लिया करो जो हथियार ख़ून बहा दे या (आपने बजाय नहर के) अन्हर फ़र्माया और उस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो तो उसे खाओ। अल्बत्ता दांत और नाख़ुन न हो क्योंकि दांत हड्डी है और नाख़ुन हब्शियों की छुरी है। (राजेअ़ : 2488)

छुरी न होने पर बवक़्ते ज़रूरत दांत और नाख़ुन के सिवा हर ऐसे आला से ज़िब्ह़ जाइज़ है जो ख़ून बहा सके।

٣٨- باب أَكْلِ الْمُضْطَرِّ لِقَوْلِهِ تَعَالَى:

बाब 38 : बाब जो शख़्स़ भूख से बेक़रार हो (स़ब्र न कर सके) वो मुरदार खा सकता है

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُلُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَاشْكُرُوا للهِ إِنْ كُنْتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ. إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيرِ وَمَا أُهِلَّ بِهِ لِغَيْرِ اللهِ. فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلاَ عَادٍ فَلاَ إِثْمَ عَلَيْهِ﴾ وَقَالَ ﴿فَمَنِ اضْطُرَّ فِي مَخْمَصَةٍ غَيْرَ مُتَجَانِفٍ لإِثْمٍ﴾ فَإِنَّ اللهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ وَقَوْلِهِ : ﴿فَكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللهِ عَلَيْهِ إِنْ كُنْتُمْ بِآيَاتِهِ مُؤْمِنِينَ. وَمَالَكُمْ أَنْ تَأْكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ لَكُمْ مَا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ إِلاَّ مَا اضْطُرِرْتُمْ إِلَيْهِ، وَإِنَّ كَثِيرًا لَيُضِلُّونَ بِأَهْوَائِهِمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ، إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِينَ﴾ وَقَوْلِهِ جَلَّ وَعَلاَ: ﴿قُلْ لاَ أَجِدُ فِيمَا أُوحِيَ إِلَيَّ مُحَرَّمًا عَلَى طَاعِمٍ يَطْعَمُهُ إِلاَّ أَنْ يَكُونَ مَيْتَةً أَوْ دَمًا مَسْفُوحًا أَوْ لَحْمَ خِنْزِيرٍ فَإِنَّهُ رِجْسٌ أَوْ فِسْقًا أُهِلَّ لِغَيْرِ اللهِ بِهِ فَمَنِ

क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने सूरह बक़र: में फ़र्माया, मुसलमानों! हमने जो पाकीज़ा रोज़ियाँ तुमको दी हैं उनमें से खाओ और अगर तुम ख़ास़कर अल्लाह को पूजने वाले हो (तो उन नेअ़मतों पर) उसका शुक्र अदा करो अल्लाह ने तो तुम पर बस मुरदार और ख़ून और सूअर का गोश्त और वो जानवर जिस पर अल्लाह के सिवा और किसी का नाम पुकारा जाए ह़राम किया है फिर जो कोई भूख से बेक़रार हो जाए बशर्ते कि बेहुक्मी न करे न ज़्यादती तो उस पर कुछ गुनाह नहीं है, और अल्लाह ने सूरह माइदह में फ़र्माया, फिर जो कोई भूख से लाचार हो गया हो उसको गुनाह की ख़्वाहिश न हो, और सूरह अन्आ़म में फ़र्माया, जिन जानवरों पर अल्लाह का नाम लिया जाए उनको खाओ अगर तुम उसकी आयतों पर ईमान रखते हो और तुमको क्या हो गया है जो तुम उन जानवरों को नहीं खाते जिन पर अल्लाह का नाम लिया गया है और अल्लाह ने तो साफ़-स़ाफ़ उन चीज़ों को बयान कर दिया जिनका खाना तुम पर ह़राम है वो भी जब तुम लाचार न हो जाओ (लाचार हो जाओ तो उनको भी खा सकते हो) और बहुत लोग ऐसे हैं जो बग़ैर जाने बूझे अपने मन माने लोगों को गुमराह करते हैं और तेरा मालिक ऐसे ह़द से बढ़ जाने वालों को ख़ूब जानता है और अल्लाह ने सूरह अन्आ़म में फ़र्माया, ऐ पैग़म्बर! कह दे कि जो मुझ पर वह्य भेजी गई उसमें किसी खाने वाले पर कोई खाना ह़राम नहीं जानता अल्बत्ता अगर मुरदार हो या बहता हुआ ख़ून या सूअर का गोश्त तो वो ह़राम है क्योंकि वो पलीद है या

कोई गुनाह की चीज़ हो कि उस पर अल्लाह के सिवा और किसी का नाम पुकारा गया हो फिर जो कोई भूख से लाचार हो जाए बशर्ते कि बेहुक्मी न करे न ज़्यादती तो तेरा मालिक बख़्शने वाला मेहरबान है। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा मस्फ़ूहा के मा'नी बहता हुआ ख़ून और सूरह नहल में फ़र्माया अल्लाह ने जो तुमको पाकीज़ा रोज़ी दी है हलाल उसको खाओ और जो तुम ख़ालिस अल्लाह को पूजने वाले हो तो उसकी नेअमत का शुक्र अदा करो, अल्लाह ने तो बस तुम पर मुरदार हराम किया है और बहता हुआ ख़ून और सूअर का गोश्त और वो जानवर जिस पर अल्लाह के सिवा और किसी का नाम पुकारा जाए फिर जो कोई बेहुक्मी और ज़्यादती की निय्यत न रखता हो लेकिन भूख से मजबूर हो जाए (वो इन चीज़ों को भी खा ले) तो अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلاَ عَادٍ فَإِنَّ رَبَّكَ غَفُورٌ رَحِيمٌ﴾ وَقَالَ: ﴿فَكُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللهُ حَلاَلاً طَيِّبًا وَاشْكُرُوا نِعْمَةَ اللهِ إِنْ كُنْتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيرِ وَمَا أُهِلَّ لِغَيْرِ اللهِ بِهِ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلاَ عَادٍ فَإِنَّ اللهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ﴾.

तश्रीह: मौलाना शाह अब्दुल अज़ीज़ (रह.) और उलमा की एक जमाअत का फ़त्वा है कि जिस जानवर पर तक़रीब लिग़ैरिल्लाह की निय्यत से अल्लाह के सिवा दूसरे का नाम पुकारा जाए मष़लन ये कहा जाए कि ये गाय सय्यद अहमद कबीर की है या ये बकरा शैख़ सदद का है वो हराम हो गया गो ज़िब्ह के वक़्त उस पर अल्लाह का नाम लें आयते कुर्आनी का भी मफ़्हूम यही है।

73. किताबुल अज़ाही

किताब (क़ुर्बानी के मसाइल) का बयान

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बाब : 1 क़ुर्बानी करना सुन्नत है और हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) ने कहा कि ये सुन्नत है और ये अम्र मशहूर है

١ - باب سُنَّةِ الأُضْحِيَّةِ

وَقَالَ ابْنُ عُمَرَ : هِيَ سُنَّةٌ وَمَعْرُوفٌ

तश्रीह: जुम्हूर का यही मज़हब है कि क़ुर्बानी करना सुन्नते मुअक्किदा है। कुछ लोगों ने कहा कि क़ुर्बानी करना वुस्अत वाले पर वाजिब है। अल्लामा इब्ने हज़्म ने कहा कि क़ुर्बानी का वुजूब ष़ाबित नहीं हुआ।

5545. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे ज़ुबैद अयामी ने, उनसे शअ़बी ने और उनसे ह़ज़रत बरा बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया आज (ईदुल अज़्हा के दिन) की इब्तिदा हम नमाज़ (ईद) से करेंगे फिर वापस आकर क़ुर्बानी करेंगे जो इस त़रह़ करेगा वो हमारी सुन्नत के मुत़ाबिक़ करेगा लेकिन जो शख़्स (नमाज़े ईद से) पहले ज़िब्ह़ करेगा तो उसकी ह़ैषियत स़िर्फ़ गोश्त की होगी जो उसने अपने घर वालों के लिये तैयार कर लिया है क़ुर्बानी वो क़त़अ़न भी नहीं । इस पर अबू बुर्दा बिन नियार (रज़ि.) खड़े हुए उन्होंने (नमाज़े ईद से पहले ही) ज़िब्ह़ कर लिया था और अ़र्ज़ किया कि मेरे पास एक साल से कम का बकरा है (क्या उसकी दोबारा क़ुर्बानी अब नमाज़ के बाद कर लूँ?) आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसकी क़ुर्बानी कर लो लेकिन तुम्हारे बाद ये किसी और के लिये काफ़ी नहीं होगा। मुत़रफ़ ने आ़मिर से बयान किया और उनसे बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने नमाज़े ईद के बाद क़ुर्बानी की उसकी क़ुर्बानी पूरी होगी और उसने मुसलमानों की सुन्नत के मुत़ाबिक़ अ़मल किया। (राजेअ़ : 951)

٥٥٤٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ زُبَيْدٍ الأَيَامِيِّ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنِ الْبَرَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّ أَوَّلَ مَا نَبْدَأُ بِهِ فِي يَوْمِنَا هَذَا نُصَلِّي، ثُمَّ نَرْجِعُ فَنَنْحَرُ، مَنْ فَعَلَهُ فَقَدْ أَصَابَ سُنَّتَنَا، وَمَنْ ذَبَحَ قَبْلُ فَإِنَّمَا هُوَ لَحْمٌ قَدَّمَهُ لأَهْلِهِ لَيْسَ مِنَ النُّسُكِ فِي شَيْءٍ)). فَقَامَ أَبُو بُرْدَةَ بْنُ نِيَارٍ وَقَدْ ذَبَحَ فَقَالَ : إِنَّ عِنْدِي جَذَعَةً فَقَالَ: ((اذْبَحْهَا وَلَنْ تَجْزِيَ عَنْ أَحَدٍ بَعْدَكَ)). قَالَ مُطَرِّفٌ: عَنْ عَامِرٍ عَنِ الْبَرَاءِ قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((مَنْ ذَبَحَ بَعْدَ الصَّلاَةِ تَمَّ نُسُكُهُ، وَأَصَابَ سُنَّةَ الْمُسْلِمِينَ)).

[راجع: ٩٥١]

तशरीह : सुन्नत से इस ह़दीष़ में त़रीक़ मुराद है। ह़ाफ़िज़ ने कहा कि इमाम बुख़ारी (रह़.) का मत़लब ये है कि लफ़्ज़े सुन्नत यहाँ त़रीक़ के मा'नी में है मगर त़रीक़ वाजिब और सुन्नत दोनों को शामिल है। जब वजूब की कोई दलील नहीं तो मा'लूम हुआ कि त़रीक़ से सुन्नते इस्तिलाह़ी मुराद है, वहुवा मत़्लूब।

5546. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे मुह़म्मद बिन सीरीन ने और उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने नमाज़े ईद से पहले क़ुर्बानी कर ली उसने अपनी ज़ात के लिये जानवर ज़िब्ह़ किया और जिसने नमाज़े ईद के बाद क़ुर्बानी की उसकी क़ुर्बानी पूरी हुई। उसने मुसलमानों की सुन्नत को पा लिया। (राजेअ़ : 984)

٥٥٤٦- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ ذَبَحَ قَبْلَ الصَّلاَةِ، فَإِنَّمَا ذَبَحَ لِنَفْسِهِ، وَمَنْ ذَبَحَ بَعْدَ الصَّلاَةِ فَقَدْ تَمَّ نُسُكُهُ وَأَصَابَ سُنَّةَ الْمُسْلِمِينَ)). [راجع: ٩٥٤]

मा'लूम हुआ कि नमाज़ से पहले क़ुर्बानी के जानवर पर हाथ डालना किसी सूरत में भी जाइज़ नहीं।

बाब 2 : इमाम का क़ुर्बानी के जानवर लोगों में तक़्सीम करना

٢- باب قِسْمَةِ الإِمَامِ الأَضَاحِيَّ بَيْنَ النَّاسِ

5547. हमसे मुआज़ बिन फ़ुज़ाला ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन उर्वा ने बयान किया, उनसे यह्या ने और उनसे बअजतल जुहनी ने और उनसे उक़्बा बिन आमिर जहनी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने अपने सहाबा में कुर्बानी के जानवर तक़्सीम किये। हज़रत उक़्बा (रज़ि.) के हिस्से में एक साल से कम का बकरी का बच्चा आया। उन्होंने बयान किया कि उस पर मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मेरे हिस्से में तो एक साल से कम का बच्चा आया है? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम उसी की कुर्बानी कर लो। (राजेअ : 2300)

٥٥٤٧- حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ فَضَالَةَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ يَحْيَى عَنْ بَعْجَةَ الْجُهَنِيِّ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ الْجُهَنِيِّ قَالَ: قَسَمَ النَّبِيُّ ﷺ بَيْنَ أَصْحَابِهِ ضَحَايَا، فَصَارَتْ لِعُقْبَةَ جَذَعَةٌ، فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ، صَارَتْ جَذَعَةٌ، قَالَ: ((ضَحِّ بِهَا)).
[راجع: ٢٣٠٠]

तश्रीह : ये हुक्म ख़ास हज़रत उक़्बा (रज़ि.) ही के लिये था। अब हुक्म यही है कि कुर्बानी का जानवर दो दांत वाला होना चाहिये। हज़रत हिशाम बिन उर्वा मदीना के मशहूर ताबेईन और बकष़रत रिवायत करने वालों में से हैं, सन 146 हिजरी में बमुक़ामे बग़दाद इंतिक़ाल फ़र्माया, रहिमहुल्लाह।

बाब 3 : मुसाफ़िरों और औरतों की तरफ़ से कुर्बानी होना जाइज़ है

٣- باب الأُضْحِيَةِ لِلْمُسَافِرِ وَالنِّسَاءِ

तश्रीह : ये बाब लाकर हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने इसका रद्द किया जो कहता है कि औरत को अपनी कुर्बानी अलग से करनी चाहिये। ये मसला भी कई हदीष़ों से ष़ाबित है कि एक बकरे की कुर्बानी सारे घर वालों की तरफ़ से काफ़ी है चाहे घर के अफ़राद कितने ही हों।

5548. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अब्दुर्रहमान बिन क़ासिम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) हज्जतुल विदाअ के मौक़े पर) उनके पास आए वो मक्का मुकर्रमा में दाख़िल होने से पहले मक़ामे सरिफ़ में हाइज़ा हो गई थीं उस वक़्त आप रो रही थीं। आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा क्या बात है क्या तुम्हें हैज़ का ख़ून आने लगा है? हज़रत आइशा (रज़ि.) ने अर्ज़ किया कि जी हाँ। आपने फ़र्माया कि ये तो अल्लाह तआला ने हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) की बेटियों के मुक़द्दर में लिख दिया है। तुम हाजियों की तरह तमाम अरकाने हज्ज अदा कर लो बस बैतुल्लाह का तवाफ़ न करो, फिर जब हम मिना में थे तो हमारे पास गाय का गोश्त लाया गया। मैंने पूछा कि ये क्या है? लोगों ने बताया कि आप (ﷺ) ने अपनी बीवियों की तरफ़ से गाय की कुर्बानी की है। (राजेअ : 294)

٥٥٤٨- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْقَاسِمِ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ دَخَلَ عَلَيْهَا وَحَاضَتْ بِسَرِفَ قَبْلَ أَنْ تَدْخُلَ مَكَّةَ وَهِيَ تَبْكِي، فَقَالَ: ((مَا لَكِ أَنَفِسْتِ؟)) قَالَتْ: نَعَمْ، قَالَ: ((إِنَّ هَذَا أَمْرٌ كَتَبَهُ اللهُ عَلَى بَنَاتِ آدَمَ، فَاقْضِي مَا يَقْضِي الْحَاجُّ غَيْرَ أَنْ لاَ تَطُوفِي بِالْبَيْتِ)). فَلَمَّا كُنَّا بِمِنًى أُتِيتُ بِلَحْمِ بَقَرٍ. فَقُلْتُ: مَا هَذَا؟ قَالُوا: ضَحَّى رَسُولُ اللهِ ﷺ عَنْ أَزْوَاجِهِ بِالْبَقَرِ.
[راجع: ٢٩٤]

तश्रीह : और ज़ाहिर है कि आपने अपनी बीवियों को अलग अलग कुर्बानी करने का हुक्म नहीं फ़र्माया, तो जुम्हूर का मज़हब ष़ाबित हो गया। इमाम मालिक और इब्ने माजा और तिर्मिज़ी ने अता बिन यसार से रिवायत किया है

कि मैंने ह़ज़रत अबू अय्यूब (रज़ि.) से पूछा कि आँह़ज़रत (ﷺ) के ज़माने में कुर्बानी का क्या दस्तूर था? उन्हों ने कहा आदमी अपनी और अपने घर वालों की त़रफ़ से एक बकरा क़ुर्बानी करता और खाता और खिलाता फिर लोगों ने फ़ख़्र की राह से वो अ़मल शुरू कर दिया जो तुम देखते हो जो ख़िलाफ़े सुन्नत है।

बाब 4 : क़ुर्बानी के दिन गोश्त की ख़्वाहिश करना जाइज़ है

٤- باب مَا يُشْتَهَى مِنَ اللَّحْمِ يَوْمَ النَّحْرِ

5549. हमसे स़दक़ा ने बयान किया, कहा हमको इब्ने अ़लिया ने ख़बर दी, उन्हें अय्यूब ने, उन्हें मुह़म्मद बिन सीरीन ने और उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने क़ुर्बानी के दिन फ़र्माया कि जिसने नमाज़े ईद से पहले क़ुर्बानी ज़िब्ह़ कर ली है वो दोबारा क़ुर्बानी करे उस पर एक स़ाह़ब ने खड़े होकर अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! ये वो दिन है जिसमें गोश्त खाने की ख़्वाहिश होती है फिर उन्होंने अपने पड़ोसियों का ज़िक्र किया और (कहा कि) मेरे पास एक साल से कम का बकरी का बच्चा है जिसका गोश्त दो बकरियों के गोश्त से बेहतर है तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने उन्हें उसकी इजाज़त दे दी। मुझे नहीं मा'लूम कि ये इजाज़त दूसरों को भी है या नहीं। फिर आँह़ज़रत (ﷺ) दो मेंढ़ों की त़रफ़ मुड़े और उन्हें ज़िब्ह़ किया फिर लोग बकरियों की त़रफ़ बढ़े और उन्हें तक़्सीम करके (ज़िब्ह़ किया) (राजेअ : 984)

٥٥٤٩- حَدَّثَنَا صَدَقَةُ أَخْبَرَنَا ابْنُ عُلَيَّةَ عَنْ أَيُّوبَ عَنِ ابْنِ سِيرِينَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ يَوْمَ النَّحْرِ: ((مَنْ كَانَ ذَبَحَ قَبْلَ الصَّلاَةِ فَلْيُعِدْ))، فَقَامَ رَجُلٌ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنَّ هَذَا يَوْمٌ يُشْتَهَى فِيهِ اللَّحْمُ وَذَكَرَ جِيرَانَهُ وَعِنْدِي جَذَعَةٌ خَيْرٌ مِنْ شَاتَيْ لَحْمٍ، فَرَخَّصَ لَهُ فِي ذَلِكَ فَلاَ أَدْرِي أَبَلَغَتِ الرُّخْصَةُ مَنْ سِوَاهُ أَمْ لاَ. ثُمَّ انْكَفَأَ النَّبِيُّ ﷺ إِلَى كَبْشَيْنِ فَذَبَحَهُمَا، وَقَامَ النَّاسُ إِلَى غُنَيْمَةٍ فَتَوَزَّعُوهَا. أَوْ قَالَ: فَتَجَزَّعُوهَا.

[راجع: ٩٥٤]

तश्रीह : ह़ज़रत मुह़म्मद बिन सीरीन ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) के आज़ादकर्दा हैं। ये फ़क़ीह आ़लिम आ़बिद व ज़ाहिद व मुत्तक़ी व मशहूर मुह़द्दिष़ थे। लोग उनको देखते तो अल्लाह याद आ जाता था। मौत के ज़िक्र से उनका रंग ज़र्द हो जाता था। मशहूर जलीलुल क़द्र ताबेईन में से हैं। सन 110 हिजरी में बउम्र 77 साल वफ़ात पाई।

बाब 5 : जिसने कहा कि क़ुर्बानी स़िर्फ़ दसवीं तारीख़ तक ही दुरुस्त है

٥- باب مَنْ قَالَ : الأَضْحَى يَوْمَ النَّحْرِ

तश्रीह : हुमैद बिन अ़ब्दुर्रह़मान और मुह़म्मद बिन सीरीन और इमाम दाऊद ज़ाहिरी का यही क़ौल है मगर जुम्हूर के नज़दीक 11,12,13 तक क़ुर्बानी करना दुरुस्त है।

5550. हमसे मुह़म्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वह्हाब ने बयान किया, कहा हमसे अय्यूब सुख़ितयानी ने बयान किया, उनसे मुह़म्मद बिन सीरीन ने, उनसे इब्ने अबीबक्र ने और उनसे अबू बक्र (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया ज़माना फिरकर उसी ह़ालत पर आ

٥٥٥٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلاَمٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنِ ابْنِ أَبِي بَكْرَةَ عَنْ أَبِي بَكْرَةَ رَضِيَ

الله عَنهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((الزَّمَانُ قَدِ اسْتَدَارَ كَهَيْئَتِهِ يَوْمَ خَلَقَ الله السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضَ، السَّنَةُ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا، مِنْهَا أَرْبَعَةٌ حُرُمٌ : ثَلاَثٌ مُتَوَالِيَاتٌ ذُوالْقَعْدَةِ وَ ذُوالْحِجَّةِ وَ الْمُحَرَّمُ، وَ رَجَبُ مُضَرَ الَّذِي بَيْنَهُ جُمَادَى وَشَعْبَانَ. أَيُّ شَهْرٍ هَذَا؟)) قُلْنَا : الله وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ. فَسَكَتَ حَتَّى ظَنَنَّا أَنَّهُ سَيُسَمِّيهِ بِغَيْرِ اسْمِهِ قَالَ : ((أَلَيْسَ ذَا الْحِجَّةِ)). قُلْنَا : بَلَى. قَالَ : ((أَيُّ بَلَدٍ هَذَا))، قُلْنَا الله وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ. فَسَكَتَ حَتَّى ظَنَنَّا أَنَّهُ سَيُسَمِّيهِ بِغَيْرِ اسْمِهِ قَالَ: ((أَلَيْسَ الْبَلْدَةَ؟)) قُلْنَا: بَلَى. قَالَ : ((فَأَيُّ يَوْمٍ هَذَا؟)) قُلْنَا : الله وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ. فَسَكَتَ حَتَّى ظَنَنَّا أَنَّهُ سَيُسَمِّيهِ بِغَيْرِ اسْمِهِ قَالَ : ((أَلَيْسَ يَوْمَ النَّحْرِ؟)) قُلْنَا : بَلَى. قَالَ: ((فَإِنَّ دِمَاءَكُمْ وَأَمْوَالَكُمْ)) قَالَ مُحَمَّدٌ : وَأَحْسِبُهُ قَالَ: ((وَأَعْرَاضَكُمْ عَلَيْكُمْ حَرَامٌ، كَحُرْمَةِ يَوْمِكُمْ هَذَا، فِي بَلَدِكُمْ هَذَا، فِي شَهْرِكُمْ هَذَا، وَسَتَلْقَوْنَ رَبَّكُمْ فَيَسْأَلُكُمْ عَنْ أَعْمَالِكُمْ. أَلاَ فَلاَ تَرْجِعُوا بَعْدِي ضُلاَّلاً يَضْرِبُ بَعْضُكُمْ رِقَابَ بَعْضٍ. أَلاَ لِيُبَلِّغِ الشَّاهِدُ الْغَائِبَ، فَلَعَلَّ بَعْضَ مَنْ يَبْلُغُهُ أَنْ يَكُونَ أَوْعَى لَهُ مِنْ بَعْضِ مَنْ سَمِعَهُ)). وَكَانَ مُحَمَّدٌ إِذَا ذَكَرَهُ قَالَ: صَدَقَ النَّبِيُّ صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ قَالَ: ((أَلاَ هَلْ بَلَّغْتُ أَلاَ هَلْ

गया है जिस हालत पर उस दिन था जिस दिन अल्लाह तआला ने आसमान व ज़मीन पैदा किये थे। साल बारह महीने का होता है उनमें चार हुर्मत के महीने हैं, तीन पे दर पे ज़ीक़अदा, ज़िलहिज्ज और मुहर्रम और एक मुज़र का रजब जो जमादिल उख़्रा और शाबान के बीच में पड़ता है (फिर आपने पूछा) ये कौनसा महीना है? हमने अ़र्ज़ किया अल्लाह और उसके रसूल ज़्यादा जानते हैं। आप ख़ामोश हो गये। हमने समझा कि शायद आँहज़रत (ﷺ) इसका कोई और नाम रखेंगे लेकिन आपने फ़र्माया क्या ये ज़िलहिज्ज नहीं है? हमने अ़र्ज़ किया ज़िलहिज्ज ही है। फिर फ़र्माया ये कौनसा शहर है? हमने कहा कि अल्लाह और उसके रसूल को इसका ज़्यादा इल्म है। फिर आँहज़रत (ﷺ) खामोश हो गये और हमने समझा कि शायद आप उसका कोई और नाम रखेंगे लेकिन आपने फ़र्माया क्या ये बलदह (मक्का मुकर्रमा) नहीं है? हमने अ़र्ज़ किया क्यूँ नहीं। फिर आपने दरयाफ़्त फ़र्माया ये दिन कौनसा है? हमने अ़र्ज़ किया कि अल्लाह और उसके रसूल को इसका बेहतर इल्म है। आँहज़रत (ﷺ) खामोश हो गये और हमने समझ कि आप इसका कोई और नाम तजवीज़ करें गे लेकिन आपने फ़र्माया क्या ये क़ुर्बानी का दिन (यौमुन् नहर) नहीं है? हमने अ़र्ज़ किया क्यूँ नहीं! फिर आपने फ़र्माया पस तुम्हारा ख़ून, तुम्हारे अम्वाल। मुहम्मद बिन सीरीन ने बयान किया कि मेरा ख़्याल है कि (इब्ने अबी बक्र ने) ये भी कहा कि, और तुम्हारे इज़्ज़त तुम पर (एक की दूसरे पर) इस तरह बा-हुर्मत हैं जिस तरह इस दिन की हुर्मत तुम्हारे इस शहर में और इस महीने में है और तुम अ़न्क़रीब अपने रब से मिलोगे उस वक़्त वो तुम्हारे आमाल के बारे में सवाल करेगा आगाह हो जाओ मेरे बाद गुमराह न हो जाना कि तुममें से कुछ कुछ दूसरे की गर्दन मारने लगो। हाँ जो यहाँ मौजूद हैं वो (मेरा पैग़ाम) ग़ैर मौजूद लोगों को पहुँचा दें। मुम्किन है कि कुछ वो जिन्हें ये पैग़ाम पहुँचाया जाए कुछ इनसे ज़्यादा इसे महफ़ूज़ करने वाले हों जो इसे सुन रहे हैं। इस पर मुहम्मद बिन सीरीन कहा करते थे कि नबी करीम (ﷺ) ने सच फ़र्माया फिर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया आगाह हो जाओ क्या मैंने (उसका पैग़ाम तुमको) पहुँचा दिया है। आगाह हो जाओ क्या मैंने पहुँचा दिया है?

(राजेअ : 67)

بَلَّغْتُ)).

[راجع: ٦٧]

तश्रीह : यौमुन्नहर सिर्फ़ दसवीं ज़िलहिज्ज ही को कहा जाता है उसके बाद कुर्बानी 11, 12, 13 तक जाइज़ है। ये अय्यामे तशरीक़ कहलाते हैं । अरबों ने तारीख़ को सब उलट–पलट कर दिया था एक महीना को पीछे डालकर दूसरा महीना आगे कर देते कभी साल तेरह माह का करते। आँहज़रत (ﷺ) को अल्लाह ने हज्जतुल वदाअ में बतला दिया कि ये महीना हक़ीक़त में ज़िलहिज्ज का है। अबसे हिसाब दुरुस्त रखो। मुज़र एक अरबी क़बीला था जो माहे रजब का बहुत अदब करता था इसीलिये रजब उसकी तरफ़ मन्सूब हो गया।

बाब 6 : ईदगाह में कुर्बानी करने का बयान

٦- باب الأَضْحَى وَالنَّحْرِ بِالْمُصَلَّى

5551. हमसे मुहम्मद बिन अबीबक्र मक़्दमी ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद बिन हारिष़ ने बयान किया, कहा हमसे उबैदुल्लाह ने बयान किया और उनसे नाफ़ेअ ने बयान किया कि अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) कुर्बानगाह में नहर किया करते थे और उबैदुल्लाह ने बयान किया कि मुराद वो जगह है जहाँ नबी करीम (ﷺ) कुर्बानी करते थे। (राजेअ : 982)

मज़ीद वज़ाहत हदीषे ज़ेल में है।

٥٥٥١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ الْمُقَدَّمِيُّ، حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ الْحَارِثِ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ عَنْ نَافِعٍ قَالَ: كَانَ عَبْدُ اللهِ يَنْحَرُ فِي الْمَنْحَرِ، قَالَ عُبَيْدُ اللهِ: يَعْنِي مَنْحَرَ النَّبِيِّ ﷺ. [راجع: ٩٨٢]

5552. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे कष़ीर बिन फ़र्क़द ने, उनसे नाफ़ेअ ने और उन्हें हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) (कुर्बानी) ज़िब्ह और नहर ईदगाह में किया करते थे। (राजेअ : 982)

٥٥٥٢- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ كَثِيرِ بْنِ فَرْقَدٍ عَنْ نَافِعٍ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَذْبَحُ وَيَنْحَرُ بِالْمُصَلَّى.

[راجع: ٩٨٢]

तश्रीह : हज़रत नाफ़ेअ बिन सरजिस हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र (रज़ि.) के आज़ादकर्दा हैं। हदीष़ के बारे में शुहरत याफ़्ता बुज़ुर्गों में से हैं। हज़रत इमाम मालिक फ़र्माते हैं कि मैं जब नाफ़ेअ के वास्ते से हदीष़ सुन लेता हूँ तो किसी और रावी से बिलकुल बेफ़िक्र हो जाता हूँ। सन 117 हिजरी में वफ़ात पाई। इमाम मालिक की किताब मौता में ज़्यादातर इन ही की रिवायात हैं। रहमतुल्लाहि रहमतुन वासिआ। नाफ़ेअ से हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) की रिवायत कर्दा हदीष़ मुराद है।

बाब 7 : नबी करीम (ﷺ) ने सींग वाले दो मेंढ़ों की कुर्बानी की. रावी बयान करते हैं कि वो मेंढ़े ख़ूब मोटे–ताज़े थे

٧- باب فِي أُضْحِيَةِ النَّبِيِّ ﷺ بِكَبْشَيْنِ أَقْرَنَيْنِ. وَيُذْكَرُ سَمِينَيْنِ

और यह्या बिन सईद ने बयान किया कि मैंने अबू उमामा बिन सहल (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि हम मदीना मुनव्वरह में कुर्बानी के जानवर को खिला पिलाकर फ़र्बा किया करते थे और आम मुसलमान भी कुर्बानी के जानवर को

وَقَالَ يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ سَمِعْتُ أَبَا أُمَامَةَ بْنَ سَهْلٍ قَالَ: كُنَّا نُسَمِّنُ الأُضْحِيَةَ بِالْمَدِينَةِ. وَكَانَ الْمُسْلِمُونَ يُسَمِّنُونَ.

इसी तरह फ़र्बा किया करते थे।

5553. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, उन्हों ने कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन सुहैब ने बयान किया, उन्होंने ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना कि उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) दो मेंढ़ों की क़ुर्बानी करते थे और मैं भी दो मेंढ़ों की क़ुर्बानी करता था। (दीगर मक़ामात : 5554, 5558, 5564, 5565, 7399)

٥٥٥٣- حَدَّثَنَا آدَمُ بْنُ أَبِي إِيَاسٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ صُهَيْبٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُضَحِّي بِكَبْشَيْنِ وَأَنَا أُضَحِّي بِكَبْشَيْنِ. [أطرافه في: ٥٥٥٤، ٥٥٥٨، ٥٥٦٤، ٥٥٦٥، ٧٣٩٩].

5554. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वह्हाब ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे अबू क़िलाबा ने और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) सींग वाले दो चितकबरे मेंढ़ों की त़रफ़ मुतवज्जह हुए और उन्हें अपने हाथ से जिब्ह़ किया। इसकी मुताबअ़त वुहैब ने की, उनसे अय्यूब ने और इस्माईल और ह़ाकिम बिन वरदान ने बयान किया कि उनसे अय्यूब ने, उनसे मुह़म्मद बिन सीरीन ने और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया। (राजेअ़ : 5553)

٥٥٥٤- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ عَنْ أَنَسٍ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ انْكَفَأَ إِلَى كَبْشَيْنِ أَقْرَنَيْنِ أَمْلَحَيْنِ، فَذَبَحَهُمَا بِيَدِهِ. تَابَعَهُ وُهَيْبٌ عَنْ أَيُّوبَ وَقَالَ إِسْمَاعِيلُ وَحَاتِمُ بْنُ وَرْدَانَ : عَنْ أَيُّوبَ عَنِ ابْنِ سِيرِينَ عَنْ أَنَسٍ. [راجع: ٥٥٥٣]

5555. हमसे अ़म्र बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे यज़ीद ने, उनसे अबुल ख़ैर ने और उनसे ह़ज़रत उ़क़्बा बिन आ़मिर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने अपने स़ह़ाबा में तक़्सीम करने के लिये आपको कुछ क़ुर्बानी की बकरियाँ दीं उन्होंने उन्हें तक़्सीम किया फिर एक साल से कम का एक बच्चा बच गया तो उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से उसका तज़्किरा किया। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसकी क़ुर्बानी तुम कर लो। (राजेअ़ : 2300)

मगर ऐसा करना किसी और के लिये किफ़ायत नहीं करेगा।

٥٥٥٥- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يَزِيدَ عَنْ أَبِي الْخَيْرِ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أَعْطَاهُ غَنَمًا يَقْسِمُهَا عَلَى صَحَابَتِهِ ضَحَايَا، فَبَقِيَ عَتُودٌ، فَذَكَرَهُ لِلنَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ : ((ضَحِّ أَنْتَ بِهِ)). [راجع: ٢٣٠٠]

बाब 8 : नबी करीम (ﷺ) का फ़र्मान अबू बुर्दा के लिये कि बकरी के एक साल से कम उ़म्र के बच्चे ही की क़ुर्बानी कर ले लेकिन तुम्हारे बाद इसकी क़ुर्बानी किसी और के लिये जाइज़ नहीं होगी।

٨- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ لأَبِي بُرْدَةَ: ((ضَحِّ بِالْجَذَعِ مِنَ الْمَعَزِ وَلَنْ تَجْزِيَ عَنْ أَحَدٍ بَعْدَكَ)).

5556. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे मुत़र्रिफ़ ने बयान किया, उनसे आ़मिर ने और उनसे बरा बिन आ़ज़िब ने, उन्होंने

٥٥٥٦- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا مُطَرِّفٌ عَنْ عَامِرٍ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ:

बयान किया कि मेरे मामूं अबू बुर्दा (रज़ि.) ने ईद की नमाज़ से पहले ही क़ुर्बानी कर ली थी। आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि तुम्हारी बकरी सिर्फ़ गोश्त की बकरी है। उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मेरे पास एक साल से कम उ़म्र का एक बकरी का बच्चा है? आपने फ़र्माया कि तुम उसे ही ज़िब्ह कर लो लेकिन तुम्हारे बाद (इसकी क़ुर्बानी) किसी और के लिये जाइज़ नहीं होगी फिर फ़र्माया जो शख़्स नमाज़े ईद से पहले क़ुर्बानी कर लेता है वो सिर्फ़ अपने खाने को जानवर ज़िब्ह करता है और जो ईद की नमाज़ के बाद क़ुर्बानी करे उसकी क़ुर्बानी पूरी होती है और वो मुसलमानों की सुन्नत को पा लेता है। इस रिवायत की मुताबअ़त उ़बैदह ने शअ़बी और इब्राहीम से की और उसकी मुताबअ़त वकीअ़ ने की, उनसे हुरैष़ ने और उनसे शअ़बी ने (बयान किया) और आ़सिम और दाऊद ने शअ़बी से बयान किया कि, मेरे पास एक दूध पीती पठिया है। और ज़ुबैद और फ़रास ने शअ़बी से बयान किया कि, मेरे पास एक साल से कम उ़म्र का बच्चा है। और अबुल अह़वस़ ने बयान किया, उनसे मंस़ूर ने बयान किया कि, एक साल से कम की पठिया। और इब्नुल औ़न ने बयान किया कि, एक साल से कम उ़म्र की दूध पीती पठिया है। (राजेअ़ : 951)

ضَحَّى خَالٌ لِي، يُقَالُ لَهُ أَبُو بُرْدَةَ قَبْلَ الصَّلاَةِ فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((شَاتُكَ شَاةُ لَحْمٍ)) فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنَّ عِنْدِي دَاجِنًا جَذَعَةً مِنَ الْمَعَزِ قَالَ: ((اذْبَحْهَا وَلَنْ تَصْلُحَ لِغَيْرِكَ)). ثُمَّ قَالَ: ((مَنْ ذَبَحَ قَبْلَ الصَّلاَةِ، فَإِنَّمَا يَذْبَحُ لِنَفْسِهِ، وَمَنْ ذَبَحَ بَعْدَ الصَّلاَةِ فَقَدْ تَمَّ نُسُكُهُ وَأَصَابَ سُنَّةَ الْمُسْلِمِينَ)). تَابَعَهُ عُبَيْدَةُ عَنِ الشَّعْبِيِّ وَإِبْرَاهِيمَ. وَتَابَعَهُ وَكِيعٌ عَنْ حُرَيْثٍ عَنِ الشَّعْبِيِّ. وَقَالَ عَاصِمٌ : وَدَاوُدَ عَنِ الشَّعْبِيِّ عِنْدِي عَنَاقُ لَبَنٍ وَقَالَ زُبَيْدٌ وَفِرَاسٌ عَنِ الشَّعْبِيِّ: عِنْدِي جَذَعَةٌ وَقَالَ أَبُو الأَحْوَصِ: حَدَّثَنَا مَنْصُورٌ عَنَاقٌ جَذَعَةٌ وَقَالَ ابْنُ عَوْنٍ: عَنَاقٌ جَذَعٌ، عَنَاقُ لَبَنٍ.[راجع: ٩٥١]

तमाम रिवायतों का मक़्स़द एक ही है।

5557. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे सलमा ने, उनसे अबू जुहैफ़ा ने और उनसे ह़ज़रत बरा (रज़ि.) ने बयान किया कि ह़ज़रत अबू बुर्दा (रज़ि.) ने नमाज़े ईद से पहले क़ुर्बानी ज़िब्ह कर ली थी तो नबी करीम (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि उसके बदले में दूसरी क़ुर्बानी कर लो। उन्होंने अ़र्ज़ किया कि मेरे पास एक साल से कम उ़म्र के बच्चे के सिवा और कोई जानवर नहीं है। शुअ़बा ने बयान किया कि मेरा ख़्याल है कि ह़ज़रत अबू बुर्दा (रज़ि.) ने ये भी कहा था कि वो एक साल की बकरी से भी उ़म्दह है। आपने फ़र्माया फिर उसी की उसके बदले में क़ुर्बानी कर दो लेकिन तुम्हारे बाद ये किसी के लिये काफ़ी नहीं होगी और ह़ातिम बिन वरदान ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे मुह़म्मद ने और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने नबी करीम से आख़िर

٥٥٥٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سَلَمَةَ عَنْ أَبِي جُحَيْفَةَ عَنِ الْبَرَاءِ قَالَ: ذَبَحَ أَبُو بُرْدَةَ قَبْلَ الصَّلاَةِ فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((أَبْدِلْهَا)) قَالَ: لَيْسَ عِنْدِي إِلاَّ جَذَعَةٌ قَالَ: شُعْبَةُ : وَأَحْسِبُهُ قَالَ: هِيَ خَيْرٌ مِنْ مُسِنَّةٍ قَالَ: ((اجْعَلْهَا مَكَانَهَا وَلَنْ تَجْزِيَ عَنْ أَحَدٍ بَعْدَكَ)) وَقَالَ حَاتِمُ: بْنُ وَرْدَانَ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أَنَسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَالَ: ((عَنَاقٌ جَذَعَةٌ)).

हदीष़ तक (इस रिवायत में ये लफ़्ज़ हैं) कि, एक साल से कम उम्र की पट्ठी है। (राजेअ : 951)

[راجع: ٩٥١]

बाब 9 : इस बारे में जिसने कुर्बानी के जानवर अपने हाथ से ज़िब्ह किये

٩- باب مَنْ ذَبَحَ الأَضَاحِيَ بِيَدِهِ

5558. हमसे आदम बिन अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा हमसे क़तादा ने बयान किया, उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने दो चितकबरे मेंढ़ों की कुर्बानी की। मैंने देखा कि आँह़ज़रत (ﷺ) अपने पैर जानवर के ऊपर रखे हुए हैं और बिस्मिल्लाह वल्लाहु अकबर पढ़ रहे हैं। इस त़रह आपने दोनों मेंढ़ों को अपने हाथ से ज़िब्ह किया। (राजेअ : 5553)

٥٥٥٨- حَدَّثَنَا آدَمُ بْنُ أَبِي إِيَاسٍ حَدَّثَنَا بْنُ أَبِي إِيَاسٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا قَتَادَةُ عَنْ أَنَسٍ قَالَ: ضَحَّى النَّبِيُّ ﷺ بِكَبْشَيْنِ أَمْلَحَيْنِ، فَرَأَيْتُهُ وَاضِعًا قَدَمَهُ عَلَى صِفَاحِهِمَا يُسَمِّي وَيُكَبِّرُ، فَذَبَحَهُمَا بِيَدِهِ.

[راجع: ٥٥٥٣]

बेहतर यही है कि कुर्बानी करने वाले ख़ुद ज़िब्ह करें और जानवर को हाथ लगाएं।

बाब 10 : जिसने दूसरे की कुर्बानी ज़िब्ह की. एक स़ाहब ने ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) की उनके ऊँट की कुर्बानी में मदद की. ह़ज़रत अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) ने अपनी लड़कियों से कहा कि अपनी कुर्बानी वो अपने हाथ ही से ज़िब्ह करें

١٠- باب مَنْ ذَبَحَ ضَحِيَّةَ غَيْرِهِ. وَأَعَانَ رَجُلٌ ابْنَ عُمَرَ فِي بَدَنَتِهِ. وَأَمَرَ أَبُو مُوسَى بَنَاتِهِ أَنْ يُضَحِّينَ بِأَيْدِيهِنَّ

अगर ज़िब्ह न कर सकें तो कम अज़ कम वहाँ ह़ाज़िर रहकर उस जानवर को हाथ लगाएँ और दुआ-ए-मस्नूना पढ़ें।

5559. हमसे कुतैबा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रहमान बिन क़ासिम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मुक़ामे सरिफ़ में रसूलुल्लाह (ﷺ) मेरे पास तशरीफ़ लाए और मैं रो रही थी तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया क्या बात है, क्या तुम्हें हैज़ आ गया है? मैंने अ़र्ज़ किया जी हाँ। आपने फ़र्माया ये तो अल्लाह तआ़ला ने आदम की बेटियों की तक़्दीर में लिख दिया है। इसलिये ह़ाजियों की त़रह तमाम आ़माले ह़ज्ज अंजाम दे सिर्फ़ का'बा का त़वाफ़ न करो और आँह़ज़रत (ﷺ) ने अपनी बीवियों की त़रफ़ से गाय की कुर्बानी की। (राजेअ : 294)

٥٥٥٩- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْقَاسِمِ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: دَخَلَ عَلَيَّ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِسَرِفَ وَأَنَا أَبْكِي، فَقَالَ: ((مَا لَكِ أَنَفِسْتِ؟)) قُلْتُ: نَعَمْ. قَالَ: ((هَذَا أَمْرٌ كَتَبَهُ اللهُ عَلَى بَنَاتِ آدَمَ اقْضِي مَا يَقْضِي الْحَاجُّ. غَيْرَ أَنْ لاَ تَطُوفِي بِالْبَيْتِ)). وَضَحَّى رَسُولُ اللهِ ﷺ عَنْ نِسَائِهِ بِالْبَقَرِ. [راجع: ٢٩٤]

बाब 11 : कुर्बानी का जानवर नमाज़े ईदुल

١١- باب الذَّبْحِ بَعْدَ الصَّلاَةِ

अज़्हा के बाद ज़िब्ह करना चाहिये

5560. हमसे हज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि मुझे ज़ुबैद ने ख़बर दी, कहा कि मैंने शअबी से सुना, उनसे ह़ज़रत बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना। आँहज़रत (ﷺ) ख़ुत्बा दे रहे थे। ख़ुत्बा में आपने फ़र्माया आज के दिन की इब्तिदा हम नमाज़ (ईद) से करेंगे फिर वापस आकर क़ुर्बानी करेंगे जो शख़्स इस तरह करेगा वो हमारी सुन्नत को पा लेगा लेकिन जिसने (ईद की नमाज़ से पहले) जानवर ज़िब्ह कर लिया तो वो ऐसा गोश्त है जिसे उसने अपने घर वालों के खाने के लिये तैयार किया है वो क़ुर्बानी किसी दर्जा में भी नहीं। ह़ज़रत अबू बुर्दा (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैंने तो ईद की नमाज़ से पहले क़ुर्बानी कर ली है अल्बत्ता मेरे पास अभी एक साल से कम उम्र का एक बकरी का बच्चा है और साल भर की बकरी से बेहतर है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम उसी की क़ुर्बानी उसके बदले में करो लेकिन तुम्हारे बाद ये किसी के लिये जाइज़ न होगा। (राजेअ : 951)

٥٥٦٠- حدَّثنا حَجَّاجُ بْنُ الْمِنْهَالِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي زُبَيْدٌ قَالَ: سَمِعْتُ الشَّعْبِيَّ عَنِ الْبَرَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَخْطُبُ فَقَالَ: ((إِنَّ أَوَّلَ مَا نَبْدَأُ مِنْ يَوْمِنَا هَذَا أَنْ نُصَلِّيَ ثُمَّ نَرْجِعَ، فَنَنْحَرَ فَمَنْ فَعَلَ هَذَا فَقَدْ أَصَابَ سُنَّتَنَا، وَمَنْ نَحَرَ فَإِنَّمَا هُوَ لَحْمٌ يُقَدِّمُهُ لأَهْلِهِ، لَيْسَ مِنَ النُّسُكِ فِي شَيْءٍ)). فَقَالَ أَبُو بُرْدَةَ : يَا رَسُولَ اللهِ، ذَبَحْتُ قَبْلَ أَنْ أُصَلِّيَ وَعِنْدِي جَذَعَةٌ خَيْرٌ مِنْ مُسِنَّةٍ. فَقَالَ: ((اجْعَلْهَا مَكَانَهَا وَلَمْ تَجْزِيَ أَوْ تُوفِّيَ عَنْ أَحَدٍ بَعْدَكَ)).

[راجع: ٩٥١]

बाब 12 : उसके बारे में जिसने नमाज़ से पहले क़ुर्बानी की और फिर उसे लौटाया

١٢- باب مَنْ ذَبَحَ قَبْلَ الصَّلاَةِ أَعَادَ

5561. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन इब्राहीम ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे मुहम्मद ने और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने नमाज़ से पहले क़ुर्बानी कर ली हो वो दोबारा क़ुर्बानी करे। इस पर एक स़हाबी उठे और अ़र्ज़ किया इस दिन गोश्त की लोगों को ख़्वाहिश ज़्यादा होती है फिर उन्होंने अपने पड़ोसियों की मुहताजी का ज़िक्र किया जैसे आँहज़रत (ﷺ) ने उनका बहाना क़ुबूल कर लिया हो (उन्होंने ये भी कहा कि) मेरे पास एक साल का एक बच्चा है और दो बकरियों से भी अच्छा है। चुनाँचे आँहज़रत (ﷺ) ने उन्हें उसकी क़ुर्बानी की इजाज़त दे दी लेकिन मुझे इसका इल्म नहीं कि ये इजाज़त दूसरों को भी थी या नहीं फिर आँहज़रत (ﷺ) दो मेंढ़ों की त़रफ़ मुतवज्जह हुए। उनकी मुराद ये थी कि उन्हें आँहज़रत (ﷺ) ने ज़िब्ह किया फिर लोग बकरियों की त़रफ़ मुतवज्जह

٥٥٦١- حدَّثنا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أَنَسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((مَنْ ذَبَحَ قَبْلَ الصَّلاَةِ فَلْيُعِدْ))، فَقَالَ رَجُلٌ: هَذَا يَوْمٌ يُشْتَهَى فِيهِ اللَّحْمُ وَذَكَرَ مِنْ جِيرَانِهِ، فَكَأَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَذَرَهُ، وَعِنْدِي جَذَعَةٌ خَيْرٌ مِنْ شَاتَيْنِ فَرَخَّصَ لَهُ النَّبِيُّ ﷺ فَلاَ أَدْرِي بَلَغَتِ الرُّخْصَةَ أَمْ لاَ. ثُمَّ انْكَفَأَ إِلَى كَبْشَيْنِ، يَعْنِي فَذَبَحَهُمَا، ثُمَّ انْكَفَأَ النَّاسُ إِلَى غُنَيْمَةٍ فَذَبَحُوهَا.

हुए और उन्हें ज़िब्ह किया। (राजेअ : 954) [راجع: ٩٥٤]

तश्रीह : जिज़्आ पाँचवें साल में जो ऊँट लगा हो और दूसरे बरस में जो गाय बकरी लगी हो, भेड़ जो बरस भर की हो गई हो आठ माह की भेड़ भी जिज़्आ है (लुग़ातुल हदीष़)

٥٥٦٢- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا الأَسْوَدُ بْنُ قَيْسٍ سَمِعْتُ جُنْدَبَ بْنَ سُفْيَانَ الْبَجَلِيَّ قَالَ : شَهِدْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَوْمَ النَّحْرِ فَقَالَ: ((مَنْ ذَبَحَ قَبْلَ أَنْ يُصَلِّيَ فَلْيُعِدْ مَكَانَهَا أُخْرَى، وَمَنْ لَمْ يَذْبَحْ فَلْيَذْبَحْ)). [راجع: ٩٥٤]

5562. हमसे आदम ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा हमसे अस्वद बिन क़ैस ने बयान किया, कहा मैंने ह़ज़रत जुन्दब बिन सुफ़यान बजली (रज़ि.) से सुना कि क़ुर्बानी के दिन मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिसने नमाज़ से पहले क़ुर्बानी कर ली हो वो उसकी जगह दोबारा करे और जिसने क़ुर्बानी अभी न की हो वो कर दे। (राजेअ : 954)

٥٥٦٣- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ فِرَاسٍ عَنْ عَامِرٍ عَنِ الْبَرَاءِ قَالَ صَلَّى رَسُولُ اللهِ ﷺ ذَاتَ يَوْمٍ فَقَالَ: ((مَنْ صَلَّى صَلاَتَنَا، وَاسْتَقْبَلَ قِبْلَتَنَا فَلاَ يَذْبَحْ حَتَّى يَنْصَرِفَ)). فَقَامَ أَبُو بُرْدَةَ بْنُ نِيَارٍ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، فَعَلْتُ فَقَالَ : ((هُوَ شَيْءٌ عَجَّلْتَهُ)). قَالَ: فَإِنَّ عِنْدِي جَذَعَةً هِيَ خَيْرٌ مِنْ مُسِنَّتَيْنِ أَذْبَحُهَا؟. قَالَ: ((نَعَمْ ثُمَّ لاَ تَجْزِي عَنْ أَحَدٍ بَعْدَكَ)). قَالَ عَامِرٌ: هِيَ خَيْرُ نَسِيكَتِهِ. [راجع: ٩٥١]

5563. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़वाना ने, उनसे फ़रास ने, उनसे आ़मिर ने, उनसे बरा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने एक दिन नमाज़े ईद पढ़ी और फ़र्माया जो हमारी त़रह़ नमाज़ पढ़ता हो और हमारे क़िब्ला को क़िब्ला बनाता हो वो नमाज़े ईद से फ़ारिग़ होने से पहले क़ुर्बानी न करे। उस पर अबू बुर्दा बिन नियार (रज़ि.) खड़े हुए और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैंने तो क़ुर्बानी कर ली। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया फिर वो एक ऐसी चीज़ हुई जिसे तुमने वक़्त से पहले ही कर लिया है। उन्होंने अ़र्ज़ किया मेरे पास एक साल से कम उ़म्र का बच्चा है जो एक साल की दो बकरियों से उ़म्दह है क्या मैं उसे ज़िब्ह कर लूँ। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कर लो लेकिन तुम्हारे बाद ये किसी और के लिये जाइज़ नहीं है। आ़मिर ने बयान किया कि ये उनकी बेहतरीन क़ुर्बानी थी। (राजेअ : 951)

तश्रीह : तअ़ज्जुब है उन फ़ुक़हा-ए-अह़नाफ़ पर जो इन वाज़ेह़ अह़ादीष़ के होते हुए लोगों को इजाज़त दें कि अपनी क़ुर्बानियाँ सुबह़ सवेरे फ़ज्र के वक़्त जंगलों में या ऐसी जगह जहाँ नमाज़ ईद न पढ़ी जाती हो वहाँ ज़िब्ह़ करके ले आओ उनको याद रखना चाहिये कि वो लोगों की क़ुर्बानियाँ ज़ाये करके उनका बोझ अपनी गर्दनों पर रखे हुए हैं। हदाहुमुल्लाहु आमीन।

١٣- باب وَضْعِ الْقَدَمِ عَلَى صَفْحِ الذَّبِيحَةِ

बाब 13 : ज़िब्ह़ किये जाने वाले जानवर की गर्दन पर पैर रखना जाइज़ है

٥٥٦٤- حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ قَتَادَةَ حَدَّثَنَا أَنَسٌ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

5564. हमसे ह़ज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, उन्होंने कहा कि हमसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम

أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يُضَحِّي بِكَبْشَيْنِ أَمْلَحَيْنِ أَقْرَنَيْنِ، وَوَضَعَ رِجْلَهُ عَلَى صَفْحَتِهِمَا، وَيَذْبَحُهُمَا بِيَدِهِ. [راجع: ٥٥٥٣]

(ﷺ) सींग वाले दो चितकबरे मेंढों की कुर्बानी किया करते थे और आँहज़रत (ﷺ) अपना पैर उनकी गर्दनों के ऊपर रखते और उन्हें अपने हाथ से ज़िब्ह करते थे। (राजेअ़ : 5553)

١٤- باب التَّكْبِيرِ عِنْدَ الذَّبْحِ

बाब 14 : ज़िब्ह करने के वक़्त अल्लाहु अकबर कहना

आ़म तौर से हर ज़बीहा पर बिस्मिल्लाह अल्लाहु अकबर बाआवाज़े बुलंद पढ़कर जानवर को ज़िब्ह करना चाहिये।

٥٥٦٥- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ قَالَ: ضَحَّى النَّبِيُّ ﷺ بِكَبْشَيْنِ أَمْلَحَيْنِ أَقْرَنَيْنِ، ذَبَحَهُمَا بِيَدِهِ، وَسَمَّى وَكَبَّرَ وَوَضَعَ رِجْلَهُ عَلَى صِفَاحِهِمَا.[راجع: ٥٥٥٣]

5565. हमसे क़ुतैबा ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने सींग वाले दो चितकबरे मेंढ़ों की क़ुर्बानी की उन्हें अपने हाथ से ज़िब्ह किया। बिस्मिल्लाह और अल्लाहु अकबर पढ़ा और अपना पैर उनकी गर्दन के ऊपर रखकर ज़िब्ह किया। (राजेअ़ : 5553)

तश्रीह : क़ुर्बानी का जानवर ज़िब्ह करते वक़्त ये दुआ पढ़नी मस्नून है, **इन्नी वज्जहतु वज्हिय लिल्लज़ी फ़त़रस्समावाति वल्अर्ज़ हनीफव्वंमा अना मिनल्मुश्रिकीन इन्न स़लाती व नुसुकी व मह़याय व ममाती लिल्लाहि रब्बिल्आलमीन ला शरीक लहू व बिज़ालिक उमिर्तु व अना अव्वलु मिनल्मुस्लिमीन अल्लाहुम्म तक़ब्बल अ़न्नी बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर** अगर दूसरे की क़ुर्बानी करना है तो इस त़रह़ कहे **अल्लाहुम्म तक़ब्बल अ़न फुलानिब्नि फुलान** की जगह उनका नाम ले। ये दुआ पढ़कर तेज़ छुरी से जानवर ज़िब्ह कर दिया जाए।

١٥- باب إِذَا بَعَثَ بِهَدْيِهِ لِيُذْبَحَ لَمْ يَحْرُمْ عَلَيْهِ شَيْءٌ

बाब 15 : अगर कोई शख़्स अपनी क़ुर्बानी का जानवर ह़रम में किसी के साथ ज़िब्ह करने के लिये भेजे तो उस पर कोई चीज़ ह़राम नहीं हुई

٥٥٦٦- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا إِسْمَاعِيلُ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنْ مَسْرُوقٍ أَنَّهُ أَتَى عَائِشَةَ فَقَالَ لَهَا: يَا أُمَّ الْمُؤْمِنِينَ، إِنَّ رَجُلاً يَبْعَثُ بِالْهَدْيِ إِلَى الْكَعْبَةِ وَيَجْلِسُ فِي الْمِصْرِ فَيُوصِي أَنْ تُقَلَّدَ بَدَنَتُهُ، فَلاَ يَزَالُ مِنْ ذَلِكَ الْيَوْمِ مُحْرِمًا حَتَّى يَحِلَّ النَّاسُ. قَالَ: فَسَمِعْتُ تَصْفِيقَهَا مِنْ وَرَاءِ الْحِجَابِ، فَقَالَتْ: لَقَدْ كُنْتُ أَفْتِلُ قَلاَئِدَ هَدْيِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَيَبْعَثُ هَدْيَهُ إِلَى الْكَعْبَةِ، فَمَا يَحْرُمُ عَلَيْهِ مِمَّا حَلَّ لِلرِّجَالِ

5566. हमसे अह़मद बिन मुह़म्मद ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्हें इस्माईल ने ख़बर दी, उन्हें शअ़बी ने, उन्हें मसरूक़ ने कि वो ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) की ख़िदमत में आए और अ़र्ज़ किया कि उम्मुल मोमिनीन! अगर कोई शख़्स क़ुर्बानी का जानवर का'बा में भेज दे और ख़ुद अपने शहर में मुक़ीम हो और जिसके ज़रिये भेजे उसे उसकी वसिय्यत कर दे कि उसके जानवर के गले में (निशानी के तौर पर) एक क़लादा पहना दिया जाए तो क्या उस दिन से वो उस वक़्त तक के लिये मुह़रिम हो जाएगा जब तक ह़ाजी अपना एह़राम न खोल लें। बयान किया कि उस पर मैंने पर्दे के पीछे उम्मुल मोमिनीन के अपने एक हाथ से दूसरे हाथ पर मारने की आवाज़ सुनी और उन्होंने कहा मैं ख़ुद नबी करीम (ﷺ) के क़ुर्बानी के जानवरों के क़लादे बाँधती थी, आँहज़रत (ﷺ) उसे

का'बा भेजते थे लेकिन लोगों के वापस होने तक आँहज़रत (ﷺ) पर कोई चीज़ हराम नहीं होती थी जो उनके घर के दूसरे लोगों के लिये हलाल हो। (राजेअ : 1696)

مِنْ أَهْلِهِ حَتَّى يَرْجِعَ النَّاسُ.
[راجع: ١٦٩٦]

का'बा को कुर्बानी का जानवर भेजना एक कारे ष़वाब है मगर उसका भेजने वाला किसी ऐसे अम्र का पाबन्द नहीं होता जिसकी पाबन्दी एक मुहरिम हाजी को करना लाज़िम होता है।

बाब 16 : कुर्बानी का कितना गोश्त खाया जाए और कितना जमा करके रखा जाए

١٦- باب مَا يُؤْكَلُ مِنْ لُحُومِ الأَضَاحِيِّ، وَمَا يَتَزَوَّدُ مِنْهَا

5567. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ने बयान किया कि अ़म्र ने बयान किया, उन्हें अ़ता ने ख़बर दी, उन्होंने हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मदीना पहुँचने तक हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में कुर्बानी का गोश्त जमा करते थे और कई मर्तबा (बजाय लुहूमल अज़ाही के) लुहूमल हदयि का लफ़्ज़ इस्ते'माल किया। (राजेअ : 1719)

٥٥٦٧- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ عَمْرٌو أَخْبَرَنِي عَطَاءٌ سَمِعَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كُنَّا نَتَزَوَّدُ لُحُومَ الأَضَاحِي عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ إِلَى الْمَدِينَةِ. وَقَالَ غَيْرَ مَرَّةٍ: لُحُومَ الْهَدْيِ. [راجع: ١٧١٩]

5568. हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा कि मुझसे सुलैमान ने बयान किया, उनसे यह्या बिन सईद ने, उनसे क़ासिम ने, उन्हें इब्ने ख़ुज़ैमा ने ख़बर दी, उन्होंने हज़रत अबू सईद (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि वो सफ़र में थे जब वापस आए तो उनके सामने गोश्त लाया गया। कहा गया कि ये हमारी कुर्बानी का गोश्त है। हज़रत अबू सईद (रज़ि.) ने कहा कि इसे हटाओ मैं इसे नहीं चखूँगा। हज़रत अबू सईद (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर मैं उठ गया और घर से बाहर निकलकर अपने भाई हज़रत अबू क़तादा (रज़ि.) के पास आया वो माँ की तरफ़ से उनके भाई थे और बद्र की लड़ाई में शिर्कत करने वालों में से थे। मैंने उनसे इसका ज़िक्र किया और उन्होंने कहा कि तुम्हारे बाद हुक्म बदल गया है। (राजेअ : 3997)

٥٥٦٨- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ عَنِ الْقَاسِمِ أَنَّ ابْنَ خَبَّابٍ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا سَعِيدٍ يُحَدِّثُ أَنَّهُ كَانَ غَائِبًا فَقَدِمَ فَقُدِّمَ إِلَيْهِ لَحْمٌ فَقَالَ : وَهَذَا مِنْ لَحْمِ ضَحَايَانَا، فَقَالَ : أَخِّرُوهُ، لاَ أَذُوقُهُ، قَالَ : ثُمَّ قُمْتُ فَخَرَجْتُ حَتَّى آتِيَ أَخِي أَبَا قَتَادَةَ وَكَانَ أَخَاهُ لأُمِّهِ وَكَانَ بَدْرِيًّا. فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لَهُ فَقَالَ: إِنَّهُ قَدْ حَدَثَ بَعْدَكَ أَمْرٌ.
[راجع: ٣٩٩٧]

जिसकी तफ़्सील नीचे लिखी हदीष़ में आ रही है।

5569. हमसे अबू आ़सिम ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी उ़बैद ने और उनसे सलमा बिन अक्वा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने तुममें से कुर्बानी की तो तीसरे दिन वो इस हालत में सुबह करे कि उसके घर में कुर्बानी का गोश्त में से कुछ भी बाक़ी न हो। दूसरे साल

٥٥٦٩- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي عُبَيْدٍ عَنْ سَلَمَةَ بْنِ الأَكْوَعِ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ ضَحَّى مِنْكُمْ، فَلاَ يُصْبِحَنَّ بَعْدَ ثَالِثَةٍ، وَفِي بَيْتِهِ مِنْهُ شَيْءٌ)).

सहाबा किराम (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या हम इस साल भी वही करें जो पिछले साल किया था। (कि तीन दिन से ज़्यादा क़ुर्बानी का गोश्त न रखें) आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अब खाओ खिलाओ और जमा करो। पिछले साल तो चूँकि लोग तंगी में मुब्तला थे, इसलिये मैंने चाहा कि तुम लोगों की मुश्किलात में उनकी मदद करो।

मा'लूम हुआ कि क़हत में अनाज वग़ैरह रोककर रख लेना गुनाह है।

5570. हमसे इस्माईल बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे भाई ने बयान किया, उनसे सुलैमान ने, उनसे यह्या बिन सईद ने, उनसे अ़म्र बिन्ते अ़ब्दुर्रहमान ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मदीना में हम क़ुर्बानी के गोश्त में नमक लगाकर रख देते थे और फिर उसे रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में भी पेश करते थे फिर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि क़ुर्बानी का गोश्त तीन दिन से ज़्यादा न खाया करो। ये हुक्म ज़रूरी नहीं था बल्कि आपका मंशा ये था कि हम क़ुर्बानी का गोश्त (उन लोगों को भी जिनके यहाँ क़ुर्बानी न हुई हो) खिलाएँ और अल्लाह ज़्यादा जानने वाला है। (राजेअ़ : 5423)

5571. हमसे हिब्बान बिन मूसा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मुझे यूनुस ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने, उन्होंने कहा कि मुझसे इब्ने अज़हर के गुलाम अबू उबैद ने बयान किया कि वो बक़र ईद के दिन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) के साथ ईदगाह में मौजूद थे। हज़रत उमर (रज़ि.) ने ख़ुत्बा से पहले ईद की नमाज़ पढ़ाई फिर लोगों के सामने ख़ुत्बा दिया और ख़ुत्बा में फ़र्माया ऐ लोगों! रसूलुल्लाह (ﷺ) ने तुम्हें इन दो ईदों में रोज़ा रखने से मना किया है एक तो वो दिन है जिस दिन तुम (रमज़ान के) रोज़े पूरे करके इफ़्तार करते हो (ईदुल फ़ित्र) और दूसरा तुम्हारी क़ुर्बानी का दिन है। (राजेअ़ : 1990)

5572. अबू उबैद ने बयान किया कि फिर मैं उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान (रज़ि.) के साथ (उनकी हिफ़ाज़त के ज़माने

فَلَمَّا كَانَ الْعَامُ الْمُقْبِلُ قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ، نَفْعَلُ كَمَا فَعَلْنَا الْعَامَ الْمَاضِي قَالَ: ((كُلُوا وَأَطْعِمُوا وَادَّخِرُوا، فَإِنَّ ذَلِكَ الْعَامَ كَانَ بِالنَّاسِ جَهْدٌ فَأَرَدْتُ أَنْ تُعِينُوا فِيهَا)).

٥٥٧٠- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ : حَدَّثَنِي أَخِي عَنْ سُلَيْمَانَ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ عَنْ عَمْرَةَ بِنْتِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: الضَّحِيَّةُ، كُنَّا نُمَلِّحُ مِنْهُ فَنَقْدَمُ بِهِ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ بِالْمَدِينَةِ فَقَالَ : ((لاَ تَأْكُلُوا إِلاَّ ثَلاَثَةَ أَيَّامٍ)). وَلَيْسَتْ بِعَزِيمَةٍ. وَلَكِنْ أَرَادَ أَنْ نُطْعِمَ مِنْهُ وَاللهُ أَعْلَمُ.
[راجع: ٥٤٢٣]

٥٥٧١- حَدَّثَنَا حِبَّانُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ قَالَ: أَخْبَرَنِي يُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : حَدَّثَنِي أَبُو عُبَيْدٍ مَوْلَى ابْنِ أَزْهَرَ أَنَّهُ شَهِدَ الْعِيدَ يَوْمَ الأَضْحَى مَعَ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ فَصَلَّى قَبْلَ الْخُطْبَةِ ثُمَّ خَطَبَ النَّاسَ فَقَالَ: يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَدْ نَهَاكُمْ عَنْ صِيَامِ هَذَيْنِ الْعِيدَيْنِ: أَمَّا أَحَدُهُمَا فَيَوْمُ فِطْرِكُمْ مِنْ صِيَامِكُمْ، وَأَمَّا الآخَرُ فَيَوْمٌ تَأْكُلُونَ نُسُكَكُمْ. [راجع: ١٩٩٠]

٥٥٧٢- قَالَ أَبُو عُبَيْدٍ ثُمَّ شَهِدْتُ الْعِيدَ مَعَ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ فَكَانَ ذَلِكَ يَوْمَ

में ईदगाह में) हाज़िर था। उस दिन जुम्अ़ा भी था। आपने ख़ुत्बा से पहले नमाज़े ईद पढ़ाई फिर ख़ुत्बा दिया और फ़र्माया ऐ लोगों! आज के दिन तुम्हारे लिये दो ईदें जमा हो गई हैं। (ईद और जुम्अ़ा) पस अत़राफ़ के रहने वालों में से जो शख़्स पसंद करे जुम्अ़े का भी इंतिज़ार करे और अगर कोई वापस जाना चाहे (नमाज़े ईद के बाद ही) तो वो वापस जा सकता है, मैंने उसे इजाज़त दे दी है।

الْجُمُعَةِ، فَصَلَّى قَبْلَ الْخُطْبَةِ ثُمَّ خَطَبَ فَقَالَ: يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ هَذَا يَوْمٌ قَدِ اجْتَمَعَ لَكُمْ فِيهِ عِيدَانِ، فَمَنْ أَحَبَّ أَنْ يَنْتَظِرَ الْجُمُعَةَ مِنْ أَهْلِ الْعَوَالِي فَلْيَنْتَظِرْ، وَمَنْ أَحَبَّ أَنْ يَرْجِعَ فَقَدْ أَذِنْتُ لَهُ.

5573. हज़रत अबू उ़बैद ने बयान किया कि फिर मैं ईद की नमाज़ में हज़रत अ़ली बिन अबी त़ालिब (रज़ि.) के साथ आया। उन्होंने भी नमाज़ ख़ुत्बा से पहले पढ़ाई फिर लोगों को ख़ुत्बा दिया और कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने तुम्हें अपनी कुर्बानी का गोश्त तीन दिन से ज़्यादा खाने की मुमानअ़त की है और मअ़मर ने ज़ुहरी से और उनसे अबू उ़बैदह ने इसी त़रह बयान किया।

٥٥٧٣- قَالَ أَبُو عُبَيْدٍ: ثُمَّ شَهِدْتُهُ مَعَ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ فَصَلَّى قَبْلَ الْخُطْبَةِ، ثُمَّ خَطَبَ النَّاسَ فَقَالَ إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ نَهَاكُمْ أَنْ تَأْكُلُوا لُحُومَ نُسُكِكُمْ فَوْقَ ثَلاَثٍ. وَعَنْ مَعْمَرٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَبِي عُبَيْدٍ نَحْوَهُ.

ये मुमानअ़त एक वक़्ती चीज़ थी ज़बकि लोग क़ह़त़ में मुब्तला हो गये थे बाद में इस मुमानअ़त को उठा लिया गया।

5574. हमसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुर्रहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको यअ़क़ूब बिन इब्राहीम बिन सअ़द ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब के भतीजे ने, उन्हें उनके चचा इब्ने शिहाब (मुहम्मद बिन मुस्लिम) ने, उन्हें सालिम ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि कुर्बानी का गोश्त तीन दिन तक खाओ। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) मिना से कूच करते वक़्त रोटी ज़ैतून के तैल से खाते क्योंकि वो कुर्बानी के गोश्त से (तीन दिन के बाद) परहेज़ करते थे।

٥٥٧٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحِيمِ أَخْبَرَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدٍ عَنِ ابْنِ أَخِي ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَمِّهِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((كُلُوا مِنَ الأَضَاحِي ثَلاَثًا)). وَكَانَ عَبْدُ اللهِ يَأْكُلُ بِالزَّيْتِ حِينَ يَنْفِرُ مِنْ مِنًى مِنْ أَجْلِ لُحُومِ الْهَدْيِ.

तश्रीह : कुर्बानी करने में माली और जानी ईषार के साथ साथ मुह़ताजों और ग़रीबों की हमदर्दी और मदद भी है जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया है, **वल बुदनु जअ़ल्नाहा लकुम मिन शआइरिल्लाह लकुम फ़ीहा ख़ैरन फ़ज़्कुरिस्मल्लाह अ़लैहा स़वाफ़ फ़इज़ा वजबत जुनूबुहा फ़कुलू मिन्हा व अत़्अ़मुल क़ानिअ़ वल मुअ़तर कज़ालिक सख़्ख़रना लकुम लअ़ल्लकुम तश्कुरून** (अल हज्ज) और कुर्बानी के ऊँट हमने तुम्हारे लिये अल्लाह के निशानात मुक़र्रर कर दिये हैं उनमें तुम्हें नफ़ा है। पस उन्हें खड़ा करके नाम अल्लाह पढ़कर नह़र करो। फिर जब उनके पहलू ज़मीन से लग जाएँ तो उसे ख़ुद भी खाओ, मिस्कीनों, सवाल से रुकने वालों और सवाल करने वालों को भी खिलाओ। इसी त़रह हमने चौपायों को तुम्हारे मातह़त कर रखा है ताकि तुम शुक्रगुज़ारी करो।

मा'लूम हुआ कि कुर्बानी के गोश्त को ख़ुद भी खाओ और ग़रीबों, मिस्कीनों, मुह़ताजों, सवालियों को भी खिलाओ। कुर्बानी के गोश्त के तीन ह़िस्से करने चाहिये। एक ह़िस्सा अपने लिये, एक ह़िस्सा दोस्त अह़बाब के लिये और एक ह़िस्सा ग़रीबों व मिस्कीनों के लिये। (इब्ने कष़ीर)

74. किताबुल अश्रिबा

किताब मशरूबात के बयान में

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बाब : और अल्लाह तआला के फ़र्मान (दर सूरह माइदह) की तफ़्सीर, बिला शुब्हा शराब, जुआ, बुत और पांसे गंदे काम हैं शैतान के कामों से पस तुम उनसे परहेज़ करो ताकि तुम फ़लाह पाओ

الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالأَنْصَابُ وَالأَزْلاَمُ رِجْسٌ مِنْ عَمَلِ الشَّيْطَانِ فَاجْتَنِبُوهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ﴾

लफ़्ज़ अज़्लाम ज़लम की जमा है जिससे वो तीर मुराद हैं जो मुश्रिकीने मक्का ने का'बा में रखे हुए थे जिन पर लफ़्ज़ कर और न कर लिखे हुए थे। अगर करने का तीर हाथ में आता तो इरादा का काम करते और न कर लिखा निकलता तो न करते इसीलिये उनसे मना किया गया। आयत में शराब और जुआ वग़ैरह को बुतपरस्ती के साथ ज़िक्र किया गया है जो इन कामों की इंतिहाई बुराई पर इशारा है .... ये आयते मज़्कूरा फ़तहे मक्का के दिन नाज़िल हुई।

5575. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्हों ने कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ़ ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने दुनिया में शराब पी और फिर उससे तौबा नहीं की तो आख़िरत में वो इससे मह़रूम रहेगा।

٥٥٧٥- حدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((مَنْ شَرِبَ الْخَمْرَ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ لَمْ يَتُبْ مِنْهَا حُرِمَهَا فِي الآخِرَةِ)).

या'नी जन्नत में जाने ही न पाएगा तो वहाँ की शराब उसे कैसे नसीब हो सकेगी।

5576. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, कहा मुझको ह़ज़रत सईद बिन मुसय्यिब ने ख़बर दी और उन्होंने ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना कि जिस रात रसूलुल्लाह (ﷺ) को मेअ़राज कराई गई तो आपको (बैतुल मक़्दिस के शहर) ईलया में शराब और दूध के दो प्याले पेश किये गये। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उन्हें देखा फिर आपने दूध का प्याला ले लिया। इस पर ह़ज़रत जिब्रईल

٥٥٧٦- حدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ أُتِيَ لَيْلَةَ أُسْرِيَ بِهِ بِإِيلِيَاءَ بِقَدَحَيْنِ مِنْ خَمْرٍ وَلَبَنٍ، فَنَظَرَ إِلَيْهِمَا ثُمَّ أَخَذَ اللَّبَنَ، فَقَالَ جِبْرِيلُ : الْحَمْدُ للهِ

الَّذِي هَدَاكَ لِلْفِطْرَةِ، وَلَوْ أَخَذْتَ الْخَمْرَ غَوَتْ أُمَّتُكَ: تَابَعَهُ مَعْمَرٌ وَابْنُ الْهَادِ وَعُثْمَانُ بْنُ عُمَرَ وَالزُّبَيْدِيُّ عَنِ الزُّهْرِيِّ.

[راجع: ٣٣٩٤]

(अलैहिस्सलाम) ने कहा उस अल्लाह के लिये ता'रीफ़ें हैं जिसने आपको दीने फ़ितरत की तरफ़ चलने की हिदायत फ़र्माई। अगर आपने शराब का प्याला ले लिया होता तो आपकी उम्मत गुमराह हो जाती। शुऐब के साथ इस हदीष़ को मअ़मर, इब्नुल हाद, उ़ष्मान बिन उ़मर और ज़ुबैदी ने ज़ुहरी से नक़ल किया है। (राजेअ़ : 3394)

तश्रीह : दूध इंसान की फ़ित्री ग़िज़ा है और शराब तमाम बुराइयों की जड़ है। इसकी हुर्मत की यही वजह है कि उसे पीकर अ़क्ल ज़ाइल हो जाती है और जराइम और बुरे काम कर बैठता है। इसीलिये इसे क़लील या कष़ीर हर तरह हराम कर दिया गया।

٥٥٧٧- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ حَدَّثَنَا قَتَادَةُ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ حَدِيثًا لاَ يُحَدِّثُكُمْ بِهِ غَيْرِي، قَالَ: ((مِنْ أَشْرَاطِ السَّاعَةِ أَنْ يَظْهَرَ الْجَهْلُ، وَيَقِلَّ الْعِلْمُ، وَيَظْهَرَ الزِّنَا، وَتُشْرَبَ الْخَمْرُ، وَيَقِلَّ الرِّجَالُ، وَتَكْثُرَ النِّسَاءُ، حَتَّى يَكُونَ لِخَمْسِينَ امْرَأَةً قَيِّمُهُنَّ رَجُلٌ وَاحِدٌ)).

[راجع: ٨٠]

5577. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम दस्तवाई ने बयान किया, कहा हमसे क़तादा ने बयान किया और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से एक हदीष़ सुनी है जो तुमसे अब मेरे सिवा कोई और नहीं बयान करेगा। (क्योंकि अब मेरे सिवा कोई सहाबी ज़िन्दा मौजूद नहीं रहा है) आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि क़यामत की निशानियों में से ये है कि जिहालत ग़ालिब हो जाएगी और इल्म कम हो जाएगा, ज़िनाकारी बढ़ जाएगी, शराब कष़रत से पी जाने लगेगी, औरतें बहुत हो जाएँगी, यहाँ तक कि पचास पचास औरतों की निगरानी करने वाला सिर्फ़ एक ही मर्द रह जाएगा। (राजेअ़ : 80)

तश्रीह : हज़रत अनस (रज़ि.) बस़रा में मुबल्लिग़ के तौर पर काम कर रहे थे। उनकी वफ़ात बस़रा ही में सन 91 हिजरी में हुई। बस़रा में ये आख़िरी स़हाबी थे। एक सौ साल की उ़म्र पाई। रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अरज़ाहु

٥٥٧٨- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا سَلَمَةَ بْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ وَابْنَ الْمُسَيَّبِ يَقُولاَنِ : قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ ((لاَ يَزْنِي حِينَ يَزْنِي وَهُوَ مُؤْمِنٌ، لاَ يَشْرَبُ الْخَمْرَ حِينَ يَشْرَبُهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ، وَلاَ يَسْرِقُ السَّارِقُ حِينَ يَسْرِقُ وَهُوَ مُؤْمِنٌ))، قَالَ ابْنُ شِهَابٍ : وَأَخْبَرَنِي عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ أَبِي بَكْرِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ

5578. हमसे अहमद बिन स़ालेह ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने वहब ने बयान किया, कहा कि मुझे यूनुस ने ख़बर दी, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, कहा कि मैंने अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान और इब्ने मुसय्यिब से सुना, वो बयान करते थे कि हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कोई शख़्स जब ज़िना करता है तो ऐन ज़िना करते वक़्त वो मोमिन नहीं होता। इसी तरह जब कोई शराब पीता है तो ऐन शराब पीते वक़्त वो मोमिन नहीं होता। इसी तरह जब चोर चोरी करता है तो उस वक़्त वो मोमिन नहीं होता। और इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्हें अ़ब्दुल मलिक बिन अबीबक्र बिन अ़ब्दुर्रहमान बिन हारिष़ बिन हिशाम ने ख़बर दी, उनसे हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) बयान करते थे और उनसे

الْحَارِثِ بْنِ هِشَامٍ أَنَّ أَبَا بَكْرٍ كَانَ يُحَدِّثُهُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ثُمَّ يَقُولُ : كَانَ أَبُو بَكْرٍ يُلْحِقُ مَعَهُنَّ وَلاَ يَنْتَهِبُ نُهْبَةً ذَاتَ شَرَفٍ يَرْفَعُ النَّاسُ إِلَيْهِ أَبْصَارَهُمْ فِيهَا حِينَ يَنْتَهِبُهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ. [راجع: ٢٤٧٥]

हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) फिर उन्होंने बयान किया कि हज़रत अबूबक्र बिन अ़ब्दुर्रहमान हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) की हदीष़ में बताई गई बातों के साथ इतना और ज़्यादा करते थे कि कोई शख़्स (दिन दहाड़े) अगर किसी बड़ी पूँजी पर इस त़ौर डाका डालता है कि लोग देखते के देखते रह जाते हैं तो वो मोमिन रहते हुए ये लूटमार नहीं करता। (राजेअ़ : 2475)

तश्रीह : मत़लब ये है कि उन गुनाहों का इर्तिकाब करने वाला ईमान से बिलकुल महरूम हो जाता है क्योंकि ये गुनाह ईमान की ज़िद (विपरीत) हैं फिर अगर वो तौबा कर ले तो उसके दिल में ईमान लौट आता है और अगर यही काम करता रहे तो वो बेईमान बनकर मरता है। इसकी ताईद वो हदीष़ करती है जिसमें फ़र्माया कि **अल्मूमिनु मन अमिनहुन्नासु अ़ला दिमाइहिम व अम्वालिहिम** मोमिन वो है जिसको लोग अपने ख़ून और अपने मालों के लिये अमानतदार समझें, सच है। **ला ईमान लिमन ला अमानत लहू व ला दीन लिमन ला अ़हद लहू औ कमा क़ाल (ﷺ)**

٢- باب الْخَمْرِ مِنَ الْعِنَبِ وَغَيْرِهِ

बाब 2 : शराब अंगूर वग़ैरह से भी बनती है

जैसे खजूर और शहद वग़ैरह से। इमाम बुख़ारी (रह़.) ने ये बाब लाकर उन लोगों का रद्द किया जो शराब को अंगूर से ख़ास़ करते हैं और कहते हैं कि अंगूर के सिवा और चीज़ों की शराब इतनी पीनी दुरुस्त है कि नशा न पैदा हो लेकिन इमाम मुहम्मद ने इस बाब में अपने मज़हब के ख़िलाफ़ किया है और वो अहले हदीष़ और इमाम अहमद और इमाम मालिक और इमाम शाफ़िई और जुम्हूर के मुवाफ़िक़ हो गये हैं। उन्होंने कहा कि जिस चीज़ से नशा पैदा हो वो शराब है। थोड़ी हो या ज़्यादा बिलकुल हराम है।

٥٥٧٩- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ صَبَّاحٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَابِقٍ حَدَّثَنَا مَالِكٌ هُوَ ابْنُ مِغْوَلٍ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : لَقَدْ حُرِّمَتِ الْخَمْرُ وَمَا بِالْمَدِينَةِ مِنْهَا شَيْءٌ. [راجع: ٤٦١٦]

5579. हमसे हसन बिन स़ब्बाह़ ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन साबिक़ ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने जो मिग़वल के स़ाहबज़ादे हैं, बयान किया उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे हज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि जब शराब हराम की गई तो अंगूर की शराब मदीना मुनव्वरह में नहीं मिलती थी। (राजेअ़ : 4616)

٥٥٨٠- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ حَدَّثَنَا أَبُو شِهَابٍ عَبْدُ رَبِّهِ بْنُ نَافِعٍ عَنْ يُونُسَ عَنْ ثَابِتٍ الْبُنَانِيِّ عَنْ أَنَسٍ قَالَ: حُرِّمَتْ عَلَيْنَا الْخَمْرُ، حِينَ حُرِّمَتْ، وَمَا نَجِدُ - يَعْنِي بِالْمَدِينَةِ - خَمْرَ الأَعْنَابِ إِلاَّ قَلِيلاً، وَعَامَّةُ خَمْرِنَا الْبُسْرُ وَالتَّمْرُ. [راجع: ٢٤٦٤]

5580. हमसे अह़मद बिन यूनुस ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू शिहाब अ़ब्दुरब्बिह बिन नाफ़ेअ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे यूनुस ने, उनसे ष़ाबित बिनानी ने और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि जब शराब हम पर हराम की गई तो मदीना मुनव्वरह में अंगूर की शराब बहुत कम मिलती थी। आ़म इस्ते'माल की शराब कच्ची और पक्की खजूर से तैयार की जाती थी। (राजेअ़ : 2464)

٥٥٨١- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ أَبِي حَيَّانَ حَدَّثَنَا عَامِرٌ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ

5581. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, कहा उनसे अबू हय्यान ने, कहा हमसे आ़मिर ने बयान किया और उनसे हज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कि हज़रत

ड़मर (रज़ि.) मिम्बर पर खड़े हुए और कहा अम्मा बअ़द! जब शराब की हुर्मत का हुक्म नाज़िल हुआ तो वो पाँच चीज़ों से बनती थी। अंगूर, खजूर, शहद, गेहूँ और जौ और शराब (ख़म्र) वो है जो अ़क़्ल को ज़ाइल कर दे। (राजेअ़ : 2619)

اللهُ عَنْهُمَا قَامَ عُمَرُ عَلَى الْمِنْبَرِ فَقَالَ: أَمَّا بَعْدُ، نَزَلَ تَحْرِيمُ الْخَمْرِ وَهْيَ مِنْ خَمْسَةٍ: الْعِنَبِ، وَالتَّمْرِ، وَالْعَسَلِ، وَالْحِنْطَةِ، وَالشَّعِيرِ. وَالْخَمْرُ مَا خَامَرَ الْعَقْلَ.
[راجع: ٢٦١٩]

तश्रीह : इस ह़दीष़ से मसाइल पेशआमदा की तफ़्सीलात का मिम्बर पर बयान करना भी ष़ाबित हुआ और ज़ाहिर है कि ये सामेईन की मादरी ज़ुबान में मुनासिब है नेज़ ह़म्द व नअ़त के बाद लफ़्ज़ अम्मा बअ़द! का इस्ते'माल करना भी उससे ष़ाबित हुआ। (फ़त्हुल बारी) सामेईन की मादरी ज़ुबान में अ़रबी ख़ुत्बा पढ़कर इसका तर्जुमा सुनाना ज़रूरी है वरना ख़ुत्बा का मक़्स़द फ़ौत हो जाएगा।

बाब 3 : शराब की हुर्मत जब नाज़िल हुई तो वो कच्ची और पक्की खजूरों से तैयार की जाती थी

٣- باب نَزَلَ تَحْرِيمُ الْخَمْرِ وَهْيَ مِنَ الْبُسْرِ وَالتَّمْرِ

5582. हमसे इस्माईल बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे मालिक बिन अनस ने बयान किया, उनसे इस्हाक़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबी त़लह़ा ने और उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं अबू उ़बैदह, अबू त़लह़ा और उबई बिन कअ़ब (रज़ि.) को कच्ची और पक्की खजूर से तैयार की हुई शराब पिला रहा था कि एक आने वाले ने आकर बताया कि शराब ह़राम कर दी गई है। उस वक़्त ह़ज़रत अबू त़लह़ा (रज़ि.) ने कहा कि अनस उठो और शराब को बहा दो चुनाँचे मैंने उसे बहा दिया। (राजेअ़ : 2464)

٥٥٨٢- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ أَسْقِي أَبَا عُبَيْدَةَ وَأَبَا طَلْحَةَ وَأُبَيَّ بْنَ كَعْبٍ مِنْ فَضِيخِ زَهْوٍ وَتَمْرٍ فَجَاءَهُمْ آتٍ فَقَالَ: إِنَّ الْخَمْرَ قَدْ حُرِّمَتْ. فَقَالَ: أَبُو طَلْحَةَ قُمْ يَا أَنَسُ فَأَهْرِقْهَا، فَأَهْرَقْتُهَا. [راجع: ٢٤٦٤]

तश्रीह : ता'मील के लिये मदीना का ये ह़ाल था कि शराब बारिश के पानी की त़रह़ मदीना की गलियों में बह रही थी अल्अहादीष़ुल्वारिदतु अ़न अनसिन व गैरूहु अ़ला सिह़्ह़तिहा व कष़्रतिहा तब्तिलु मज़्हबल्कूफीयीन अल्क़ाइलीन बिअन्नल्खम्र ला यकूनु इल्ला मिनल्इनबि व मा कान मिन गैरिही ला युसम्मा खम्रन व ला यतानवलुहू इस्मुल्खम्रि व हुव क़ौलु मुखालिफ़िन लिलुग़तिल्अ़रबि व लिसुन्नतिस्सहीहति व लिस्सहाबति (फ़त्हुल्बारी)। या'नी क़ुर्तुबी ने कहा कि ह़ज़रत अनस (रज़ि.) वग़ैरह से जो स़ह़ीह़ रिवायात ह़ज़रत से नक़ल हुई हैं वो कूफ़ियों के मज़हब को बात़िल ठहराती हैं जो कहते है कि ख़म्र स़िर्फ़ अंगूर ही से कशीद कर्दा शराब को कहा जाता है और जो उसके अ़लावा चीज़ों से तैयार की जाए वो ख़म्र नहीं है। अहले कूफ़ा का ये क़ौल लुग़ते अ़रब और सुन्नते स़ह़ीह़ा और स़ह़ाबा किराम (रज़ि.) के ख़िलाफ़ है।

5583. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे मअ़मर ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने कि मैंने ह़ज़रत अनस (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि एक क़बीला में खड़ा मैं अपने चचाओं को खजूर की शराब पिला रहा था उनमें

٥٥٨٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسًا قَالَ: كُنْتُ قَائِمًا عَلَى الْحَيِّ أَسْقِيهِمْ عُمُومَتِي، وَأَنَا

أَصْغَرُهُمْ. الْفَضِيخَ، فَقِيلَ: حُرِّمَتِ الْخَمْرُ، فَقَالُوا : اكْفِئْهَا، فَكَفَأْنَا. قُلْتُ لأَنَسٍ مَا شَرَابُهُمْ؟ قَالَ : رُطَبٌ وَبُسْرٌ. فَقَالَ أَبُو بَكْرِ بْنُ أَنَسٍ: وَكَانَتْ خَمْرَهُمْ. فَلَمْ يُنْكِرْ أَنَسٌ. وَحَدَّثَنِي بَعْضُ أَصْحَابِي أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسًا يَقُولُ: كَانَتْ خَمْرَهُمْ يَوْمَئِذٍ. [راجع: ٢٤٦٤]

सबसे कम उम्र था। किसी ने कहा कि शराब हराम कर दी गई। उन हज़रात ने कहा कि अब उसे फेंक दो। चुनाँचे हमने शराब फेंक दी। मैंने अनस (रज़ि.) से पूछा कि वो किस चीज़ की शराब बनती थी? फ़र्माया कि ताज़ा पकी हुई और कच्ची खजूरों की। अबूबक्र बिन अनस ने कहा कि उनकी शराब (खजूर की) होती थी तो हज़रत अनस (रज़ि.) ने इसका इंकार नहीं किया और मुझसे मेरे कुछ अस्हाब ने बयान किया कि उन्होंने हज़रत अनस (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि उस ज़माने मे उनकी शराब अकषर कच्ची और पक्की खजूर से तैयार की जाती थी। (राजेअ : 2464)

जैसाकि हदीषे ज़ेल में मौजूद है।

٥٥٨٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ الْمُقَدَّمِيُّ حَدَّثَنَا يُوسُفُ أَبُو مَعْشَرٍ الْبَرَاءُ قَالَ: سَمِعْتُ سَعِيدَ بْنَ عُبَيْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنِي بَكْرُ بْنُ عَبْدِ اللهِ أَنَّ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ حَدَّثَهُمْ أَنَّ الْخَمْرَ حُرِّمَتْ وَالْخَمْرُ يَوْمَئِذٍ الْبُسْرُ وَالتَّمْرُ. [راجع: ٢٤٦٤]

5584. हमसे मुहम्मद बिन अबीबक्र मक़्दमी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यूसुफ़ अबू मअशर बरा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने सईद बिन अ़ब्दुल्लाह से सुना, उन्होंने कहा कि मुझसे बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया और उन्होंने कहा कि मुझसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि जब शराब हराम की गई तो वो कच्ची और पुख़्ता खजूरों से तैयार की जाती थी। (राजेअ : 2464)

इन सह़ीह़ हदीषों से मा'लूम हुआ कि अ़रब ज़माना जाहिलियत में ख़ाम और पुख़्ता खजूरों की शराब को बहुत ज़्यादा मरग़ूब रखते थे और ये खजूर बकषरत पाई जाती थी जिसकी शराब बड़ी उ़म्दह होती थी जिसको अल्लाह ने हराम कर दिया।

٤- باب الْخَمْرُ مِنَ الْعَسَلِ، وَهُوَ الْبِتْعُ

وَ قَالَ مَعْنٌ سَأَلْتُ مَالِكَ بْنَ أَنَسٍ عَنِ الْفُقَّاعِ فَقَالَ: إِذَا لَمْ يُسْكِرْ فَلاَ بَأْسَ. وَقَالَ ابْنُ الدَّرَاوَرْدِيُّ : سَأَلْنَا عَنْهُ فَقَالُوا: لاَ يُسْكِرُ لاَ بَأْسَ بِهِ.

बाब 4 : शहद की शराब जिसे बित्अ कहते थे और मअन बिन ईसा ने कहा,

कि मैंने हज़रत इमाम मालिक बिन अनस से फ़ुक़्क़ाअ (जो किशमिश से तैयार की जाती थी) के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि अगर उसमें नशा न हो तो कोई हर्ज नहीं और इब्नुल दरावर्दी ने बयान किया कि हमने उसके बारे में पूछा तो कहा कि अगर उसमें नशा होता हो तो कोई हर्ज नहीं।

तश्रीह : बित्अ शहद की वो शराब है जो मुल्के यमन में बहुत ज़्यादा राइज थी। इसका पीना हराम कर दिया गया। फ़ुक़्क़ाअ वो शराब है जो किशमिश से तैयार की जाती है।

٥٥٨٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَبِي

5585. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान ने और उनसे हज़रत आइशा

(रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से बित्अ के बारे में पूछा गया तो आपने फ़र्माया कि जो भी पीने वाली चीज़ नशा लावे वो हराम है। (राजेअ : 242)

سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ عَائِشَةَ قَالَتْ : سُئِلَ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَنِ الْبِتْعِ فَقَالَ: ((كُلُّ شَرَابٍ أَسْكَرَ فَهُوَ حَرَامٌ)).

[راجع: ٢٤٢]

5586. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझको अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान ने ख़बर दी और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से बित्अ के बारे में सवाल किया गया। ये मशरूब शहद से तैयार किया जाता था और यमन में उसका आम रिवाज था। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो चीज़ भी नशा लाने वाली हो वो हराम है। (राजेअ : 242)

٥٥٨٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: سُئِلَ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَنِ الْبِتْعِ وَهُوَ نَبِيذُ الْعَسَلِ، وَكَانَ أَهْلُ الْيَمَنِ يَشْرَبُونَهُ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((كُلُّ شَرَابٍ أَسْكَرَ فَهُوَ حَرَامٌ)).[راجع: ٢٤٢]

5587. और ज़ुह्री से रिवायत है, कहा कि मुझसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि, दुब्बा और मज़फ़्फ़त में नबीज़ न बनाया करो और हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) उसके साथ हन्तुम और नक़ीर का भी इज़ाफ़ा किया करते थे।

٥٥٨٧- وَعَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لاَ تَنْتَبِذُوا فِي الدُّبَّاءِ وَلاَ فِي الْمُزَفَّتِ)). وكان أبوهُريرةَ يُلحِقُ مَعَهَا الحَنتم والنَّقير

तश्रीह : इस हदीष़ से मा'लूम हुआ कि चार ऐसे बर्तन हैं जिनके इस्ते'माल से आँहुज़ूर (ﷺ) ने मना फ़र्माया है। दुब्बाअ या'नी कद्दू के तूम्बे से। मज़फ़्फ़त या'नी रोग़नदार राल के बर्तन से। हन्तुम या'नी लाखी मुर्तबान से। नक़ीर, या'नी लकड़ी के बने हुए बर्तन से। यही वो चार बर्तन हैं जिनमें नबीज़ बनाने से रोका गया है।

बाब 5 : इस बारे में कि जो भी पीने वाली चीज़ अ़क़्ल को मदहोश कर दे वो ख़म्र है

٥- باب مَا جَاءَ فِي أَنَّ الْخَمْرَ مَا خَامَرَ الْعَقْلَ مِنَ الشَّرَابِ

5588. हमसे अहमद बिन अबी रजाअ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह्या बिन क़त्तान ने बयान किया, उनसे अबू हय्यान तमीमी ने, उनसे शअ़बी ने और उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) के मिम्बर पर ख़ुत्बा देते हुए कहा जब शराब की हुर्मत का हुक्म हुआ तो वो वो पाँच चीज़ों से बनती थी। अंगूर से, खजूर से, गेहूँ से, जौ और शहद, और ख़म्र (शराब) वो है जो अ़क़्ल को मख़्मूर कर दे और तीन मसाइल ऐसे हैं कि मेरी तमन्ना थी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) हमसे

٥٥٨٨- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ أَبِي رَجَاءٍ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ أَبِي حَيَّانَ التَّيْمِيِّ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: خَطَبَ عُمَرُ عَلَى مِنْبَرِ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: إِنَّهُ قَدْ نَزَلَ تَحْرِيمُ الْخَمْرِ، وَهِيَ مِنْ خَمْسَةِ أَشْيَاءَ : الْعِنَبِ، وَالتَّمْرِ، وَالْحِنْطَةِ، وَالشَّعِيرِ، وَالْعَسَلِ. وَالْخَمْرُ مَا

جُدا होने से पहले हमें उनका हुक्म बता जाते, दादा का मसला, कलाला का मसला और सूद के चंद मसाइल। अबू हिब्बान ने बयान किया कि मैंने शअबी से पूछा ऐ अबू अम्र! एक शरबत सिंध में चावल से बनाया जाता है। उन्होंने कहा कि ये चीज़ रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में नहीं पाई जाती थी या कहा कि हज़रत उमर (रज़ि.) के ज़माने में न थी और फ़ुर्ज इब्ने मिन्हाल ने भी इस हदीष को हम्माद बिन सलमा से बयान किया और उनसे अबू हय्यान ने उसमें अंगूर के बजाय किशमिश है।

خَامَرَ الْعَقْلَ. وَثَلاَثٌ وَدِدْتُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ لَمْ يُفَارِقْنَا حَتَّى يَعْهَدَ إِلَيْنَا عَهْدًا: الْجَدُّ، وَالْكَلاَلَةُ، وَأَبْوَابٌ مِنْ أَبْوَابِ الرِّبَا. قَالَ قُلْتُ: يَا أَبَا عَمْرٍو، فَشَيْءٌ يُصْنَعُ بِالسِّنْدِ مِنَ الأُرْزِّ؟ قَالَ: ذَاكَ لَمْ يَكُنْ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ. أَوْ قَالَ عَلَى عَهْدِ عُمَرَ. وَقَالَ حَجَّاجٌ عَنْ حَمَّادٍ عَنْ أَبِي حَيَّانَ مَكَانَ الْعِنَبِ الزَّبِيبَ.

तश्रीह : दादा का मसला ये कि दादा भाई को महरूम करेगा या भाई से महरूम हो जाएगा या मुक़ासमा होगा। सूद का मसला ये कि उन छः चीज़ों के सिवा जिनका ज़िक्र हदीष में आया है और चीज़ों का भी कम व बेश लेना हराम है या नहीं जिनके बारे में हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं **लम यकुन हाज़ा अला अहदिनन्नबिय्यि (ﷺ) व लौ कान नहा अन्हु इल्ला अन्नहू क़द अम्मलअश्रिबत कुल्लहा फ़क़ाल अल्खम्रू मा मर्रलअक़्लु** (फ़त्ह) या'नी अगर ये चावलों की शराब कशीद हुई होती तो आप इसको भी साफ़ मना कर देते इसलिये कि आपने तमाम शराबों के बारे में आम तौर पर फ़र्माया कि हर वो मशरूब जो अक़्ल को ज़ाइल कर दे वो ख़म्र शराब है और वो हराम है।

5589. हमसे हफ़्स बिन उमर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन अबी अल अस्फ़र ने बयान किया, उनसे शअबी ने उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) नेकि हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा शराब पाँच चीज़ों से बनती थी। किशमिश, खजूर और गेहूं, जौ और शहद से। (राजेअ : 4619)

٥٥٨٩– حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي السَّفَرِ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنِ ابْنِ عُمَرَ عن عمر قَالَ: الْخَمْرُ تُصْنَعُ مِنْ خَمْسَةٍ: مِنَ الزَّبِيبِ، وَالتَّمْرِ، وَالْحِنْطَةِ، وَالشَّعِيرِ، وَالْعَسَلِ.

[راجع: ٤٦١٩]

तश्रीह : हज़रत उमर (रज़ि.) ने बरसों तमाम सहाबा के सामने ये बयान किया और सबने सकूत किया गोया इज्माअ हो गया अब इस इज्माअ के ख़िलाफ़ एक इब्राहीम नख़ई का क़ौल क्या हुज्जत हो सकता है और इन हनफ़िया पर तअज्जुब होता है जो सहीह हदीष को छोड़कर ग़लत मसले पर जमे रहते हैं। **व क़ाल अहलुल्मदीनति व साइरुल्हिजाज़िईन व अहलुल्हदीषि कुल्लुहुम कुल्लु मुस्किरिन खम्रून व हुक्मुहू हुक्मु मत्तुखिज़ मिनल्इनबि अल्ख** (फ़त्हुल्बारी)। साहिबे हिदाया का ये क़ौल है कि ख़म्र वही है जो किशमिश से तैयार की जाती है उसके जवाब में हाफ़िज़ इब्ने हजर फ़र्माते हैं कि अहले मदीना बल्कि सारे हिजाज़ी और तमाम अहले हदीष का क़ौल ये है कि हर नशा लाने वाली चीज़ शराब है और सबका हुक्म वही है जो किशमिश से तैयार कर्दा शराब का है। मज़ीद तफ़्सील के लिये फ़त्हुल बारी जुज़ षानी अशर पेज 146 का मुतालआ किया जाए।

बाब 6 : उस शख़्स की बुराई के बयान में जो शराब का नाम बदलकर उसे हलाल करे

٦– باب مَا جَاءَ فِيمَنْ يَسْتَحِلُّ الْخَمْرَ وَيُسَمِّيهِ بِغَيْرِ اسْمِهِ

5590. और हिशाम बिन अम्मार ने बयान किया कि उनसे सदक़ा बिन ख़ालिद ने बयान किया, उनसे अब्दुर्रहमान बिन

٥٥٩٠– وَقَالَ هِشَامُ بْنُ عَمَّارٍ حَدَّثَنَا

صَدَقَةُ بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ يَزِيدَ بْنِ جَابِرٍ حَدَّثَنَا عَطِيَّةُ بْنُ قَيْسٍ الْكِلاَبِيُّ حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ غَنْمٍ الأَشْعَرِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو عَامِرٍ أَوْ أَبُو مَالِكٍ الأَشْعَرِيُّ وَاللَّهِ مَا كَذَبَنِي سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((لَيَكُونَنَّ مِنْ أُمَّتِي أَقْوَامٌ يَسْتَحِلُّونَ الْحِرَ وَالْحَرِيرَ وَالْخَمْرَ وَالْمَعَازِفَ، وَلَيَنْزِلَنَّ أَقْوَامٌ إِلَى جَنْبِ عَلَمٍ يَرُوحُ عَلَيْهِمْ بِسَارِحَةٍ لَهُمْ، يَأْتِيهِمْ يعني الفقير لِحَاجَةٍ فَيَقُولُوا: ارْجِعْ إِلَيْنَا غَدًا فَيُبَيِّتُهُمُ اللَّهُ، وَيَضَعُ الْعَلَمَ، وَيَمْسَخُ آخَرِينَ قِرَدَةً وَخَنَازِيرَ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ)).

यज़ीद ने, उनसे अ़तिया बिन क़ैस कलाबी ने, उनसे अ़ब्दुर्रहमान बिन ग़नम अशअ़री ने बयान किया कहा कि मुझसे अबू आ़मिर (रज़ि.) या अबू मालिक अशअ़री (रज़ि.) ने बयान किया अल्लाह की क़सम उन्होंने झूठ नहीं बयान किया कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मेरी उम्मत में ऐसे बुरे लोग पैदा हो जाएँगे जो ज़िनाकारी, रेशम का पहनना, शराब पीना और गाने बजाने को हलाल बना लेंगे और कुछ मुतकब्बिर क़िस्म के लोग पहाड़ की चोटी पर (अपने बंगलों में रिहाइश करने के लिये) चले जाएँगे। चरवाहे उनके मवेशी सुबह व शाम लाएँगे और ले जाएँगे। उनके पास एक फ़क़ीर आदमी अपनी ज़रूरत लेकर जाएगा तो वो टालने के लिये उससे कहेंगे कि कल आना लेकिन अल्लाह तआ़ला रात ही को उनको (उनकी सरकशी की वजह से) हलाक कर देगा पहाड़ को (उन पर) गिरा देगा और उनमें से बहुत सों को क़यामत तक के लिये बंदर और सूअर की सूरतों में मस्ख़ कर देगा।

तश्रीह : ये सारी बुराइयाँ आज आ़म हो रही हैं गाना बजाना, रेडियो ने घर घर आ़म कर दिया है। शराबनोशी आ़म है, ज़िनाकारी की हुकूमतें सरपरस्ती करती हैं। उनके नतीजे में वादी सवात पाकिस्तान में ज़लज़ला और हिमाचल परदेश का ज़लज़ला हिन्दुस्तान में इबरत के लिये काफ़ी है। लड़कों को लड़कियों की शक्ल में तब्दील होना और लड़कियों को लड़कों जैसा हुलिया बनाना भी आ़म हो रहा है। इसीलिये सूरतें मस्ख़ होती जा रही हैं और अ़ज़ाब मुख़्तलिफ़ सूरतों में बदलकर हम पर नाज़िल हो रहा है।

٧- باب الانْتِبَاذِ فِي الأَوْعِيَةِ وَالتَّوْرِ

बाब 7 : बर्तनों और पत्थर के प्यालों में नबीज़ भिगोना जाइज़ है

खजूर को पानी में भिगोकर उसे मल छानकर बनाना नबीज़ कहलाता है। ये एक मुक़व्वी फ़रहत बख़्श मशरूब है औइया में तूर भी दाख़िल है वो बर्तन जो पत्थर या पतील या लकड़ी से बनाया जाए औइया विआ़ की जमा है जिसके मा'नी बर्तन के हैं।

٥٥٩١- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي حَازِمٍ قَالَ: سَمِعْتُ سَهْلاً يَقُولُ: أَتَى أَبُو أُسَيْدٍ السَّاعِدِيُّ فَدَعَا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فِي عُرْسِهِ فَكَانَتِ امْرَأَتُهُ خَادِمَهُمْ وَهْيَ الْعَرُوسُ قَالَ أَتَدْرُونَ مَا سَقَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ؟ أَنْقَعْتُ لَهُ تَمَرَاتٍ مِنَ اللَّيْلِ فِي تَوْرٍ.

5591. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे यअ़क़ूब बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे अबू हाज़िम सलमा बिन दीनार ने बयान किया कि मैंने सहल बिन सअ़द साअ़दी से सुना, उन्होंने कहा कि अबू उसैद मालिक बिन रबीअ़ आए और नबी करीम (ﷺ) को अपने वलीमे की दा'वत दी, उनकी बीवी ही सब काम कर रही थीं हालाँकि वो नई दुलहन थीं। हज़रत सहल (रज़ि.) ने बयान किया तुम्हें मा'लूम है कि मैंने आँहज़रत (ﷺ) को क्या पिलाया था।

आँहज़रत (ﷺ) के लिये उन्होंने पत्थर के कूँडे में रात के वक़्त खजूर भिगो दी थी। (राजेअ : 5176)

[راجع: ٥١٧٦]

उन ही का शरबत को पिलाया।

बाब 8 : मुमानअ़त के बाद हर क़िस्म के बर्तनों में नबीज़ भिगोने के लिये नबी करीम (ﷺ) की तरफ़ से इजाज़त का होना

٨- باب تَرْخِيصِ النَّبِيِّ ﷺ فِي الأَوْعِيَةِ وَالظُّرُوفِ بَعْدَ النَّهْيِ

5592. हमसे यूसुफ़ बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह अबू अहमद ज़ुबैरी ने, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, उनसे मंसूर बिन मुअ़तमिर ने, उनसे सालिम बिन अबी अल जअ़दि ने और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने चंद बर्तनों में नबीज़ भिगोने की (जिनमें शराब बनती है) मुमानअ़त कर दी थी फिर अंसार ने अ़र्ज़ किया कि हमारे पास तो दूसरे बर्तन नहीं हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया तो ख़ैर फिर इजाज़त है। इमाम बुख़ारी (रह.) कहते हैं मुझसे ख़लीफ़ा बिन ख़य्यात ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, उनसे मंसूर बिन मुअ़तमिर ने और उनसे सालिम बिन अबी अल जअ़दि ने फिर यही ह़दीष़ रिवायत की थी।

٥٥٩٢- حَدَّثَنَا يُوسُفُ بْنُ مُوسَى حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ أَبُو أَحْمَدَ الزُّبَيْرِيُّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ سَالِمٍ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الظُّرُوفِ فَقَالَتِ الأَنْصَارُ: إِنَّهُ لاَ بُدَّ لَنَا مِنْهَا، قَالَ: فَلاَ إِذَن. وَقَالَ خَلِيفَةُ. حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ سَالِمِ بْنِ أَبِي الْجَعْدِ بِهَذَا.

मा'लूम हुआ कि जिन बर्तनों में शराब बनती थी उन बर्तनों के इस्ते'माल से और उनमें नबीज़ बनाने से भी मना फ़र्माया ताकि शराब का शाइबा तक बाक़ी न रहे।

5593. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने, वो सुलैमान बिन अबी मुस्लिम अह़वल से, वो मुजाहिद से, वो अबू अ़याज़ अ़म्र बिन अस्वद से और उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स से रिवायत किया कि जब नबी करीम (ﷺ) ने मश्कों के सिवा और बर्तनों में नबीज़ भिगोने से मना किया तो लोगों ने आपसे अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! हर किसी को मश्क कहाँ से मिल सकते है? उस वक़्त आपने बिन लाख लगे घड़े में नबीज़ भिगोने की इजाज़त दे दी।

٥٥٩٣- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ أَبِي مُسْلِم الأَحول عَنْ مُجَاهِد عَنْ أَبِي عِيَاضٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنُ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : لَمَّا نَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنِ الأَسْقِيَةِ قِيلَ لِلنَّبِيِّ ﷺ لَيْسَ كُلُّ النَّاسِ يَجِدُ سِقَاءً، فَرَخَّصَ لَهُمْ فِي الْجَرِّ غَيْرَ الْمُزَفَّتِ.

तशरीह : लफ़्ज़ी तर्जुमा तो यूँ है आपने मश्कों में नबीज़ भिगोने से मना किया मगर ये मतलब सहीह नहीं हो सकता क्योंकि आगे ये मज़्कूर है कि हर शख़्स को मश्कें कैसे मिल सकती हैं ? इस रिवायत में ग़लती हुई है और सहीह यूँ है। नहा अ़निल इम्तिबाज़ इल्ला फ़िल अस्क़िया। कुछ उ़लमा ने इन ही अहादीष़ की रू से घड़ों और लाखी बर्तनों और कद्दू के तूम्बे में अब भी नबीज़ भिगोना मकरूह रखा है लकिन अकष़र उ़लमा ये कहते हैं कि ये मुमानअ़त आपने उस वक़्त

की थी जब शराब की हुर्मत नई-नई हुई थी कि कहीं शराब के बर्तनों नबीज़ भिगोते-भिगोते लोग फिर शराब की त़रफ़ माइल न हो जाएँ। जब शराब की हुर्मत दिलों पर जम गई तो आपने ये क़ैद उठा दी। हर बर्तन में नबीज़ भिगोने की इजाज़त दे दी। (वह़ीदी)

- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بِهَذَا وَقَالَ : فِيهِ لَمَّا نَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنِ الأَوْعِيَةِ.

हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद मस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने यही बयान किया और उसमें यूँ है कि जब नबी करीम (ﷺ) ने चंद बर्तनों में नबीज़ भिगोने से मना किया।

ये भी उसी वक़्त का ज़िक्र है जबकि शराब ह़राम की गई थी और शराब के बर्तनों के इस्ते'माल से भी रोक दिया गया था। बाद में ये मुमानअ़त उठा दी गई थी।

٥٥٩٤- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ سُفْيَانَ حَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ عَنْ إِبْرَاهِيمَ التَّيْمِيِّ عَنِ الْحَارِثِ بْنِ سُوَيْدٍ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: نَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنِ الدُّبَّاءِ وَالْمُزَفَّتِ. - حَدَّثَنَا عُثْمَانُ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنِ الأَعْمَشِ بِهَذَا.

5594. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह़्या ने, कि उनसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने, उनसे सुफ़यान ष़ौरी ने, उनसे इब्राहीम तैमी ने, उनसे ह़ारिष़ बिन सुवैद ने और उनसे अ़ली (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने दुब्बाअ और मुज़फ़्फ़त (ख़ास़ क़िस्म के बर्तन जिनमें शराब बनती थी) के इस्ते'माल की भी मुमानअ़त कर दी थी। हमसे उ़ष़्मान ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, कहा उनसे आ'मश ने यही ह़दीष़ बयान की।

٥٥٩٥- حَدَّثَنِي عُثْمَانُ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ إِبْرَاهِيمَ : قُلْتُ لِلأَسْوَدِ : هَلْ سَأَلْتَ عَائِشَةَ أُمَّ الْمُؤْمِنِينَ عَمَّا يُكْرَهُ أَنْ يُنْتَبَذَ فِيهِ؟ فَقَالَ: نَعَمْ. قُلْتُ: يَا أُمَّ الْمُؤْمِنِينَ عَمَّا نَهَى النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يُنْتَبَذَ فِيهِ؟ قَالَتْ: نَهَانَا فِي ذَلِكَ أَهْلَ الْبَيْتِ، أَنْ نَنْتَبِذَ فِي الدُّبَّاءِ وَالْمُزَفَّتِ قُلْتُ: أَمَا ذَكَرَتِ الْجَرَّ وَالْحَنْتَمَ؟ قَالَتْ: إِنَّمَا أُحَدِّثُكَ مَا سَمِعْتُ، أُحَدِّثُ مَا لَمْ أَسْمَعْ؟

5595. हमसे उ़ष़्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन अ़ब्दुल ह़मीद ने, उनसे मंसूर बिन मुअ़तमिर ने, उनसे इब्राहीम नख़ई ने कि मैंने अस्वद बिन यज़ीद से पूछा क्या तुमने उम्मुल मोमिनीन आ़इशा (रज़ि.) से पूछा था कि किस बर्तन में नबीज़ (खजूर का मीठा शरबत) बनाना मकरूह है। उन्होंने कहा कि हाँ मैंने अ़र्ज़ किया उम्मुल मोमिनीन! किस बर्तन में आँह़ज़रत (ﷺ) ने नबीज़ बनाने से मना किया था। उन्होंने कहा कि ख़ास़ घर वालों को कद्दू की तूम्बी और लाखी बर्तन में नबीज़ भिगोने से मना किया था। (इब्राहीम नख़ई ने बयान किया कि) मैंने अस्वद से पूछा उन्होंने घड़े और सब्ज़ मर्तबान का ज़िक्र नहीं किया। उसने कहा कि मैं तुमसे वही बयान करता हूँ जो मैंने सुना क्या वो भी बयान कर दूँ जो मैंने न सुना हो।

तश्रीह: कुछ उ़लमा ने इन ही अह़ादीष़ की रू से घड़ों और लाखी बर्तनोंऔर कद्दू के तूम्बे में अब भी नबीज़ भिगोना मकरूह रखा है लेकिन अक्ष़र उ़लमा ये कहते हैं कि ये मुमानअ़त आपने उस वक़्त की थी जब शराब शुरू में ह़राम की गई थी। जब एक मुद्दत बाद शराब की हुर्मत दिलों में जम गई तो आपने ये क़ैद उठा दी और हर बर्तन में नबीज़ भिगोने की इजाज़त दे दी।

5596. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वाह़िद बिन ज़ियाद ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान शैबानी ने बयान किया, कहा कि मैंने ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने सब्ज़ घड़े से मना किया था, मैंने पूछा क्या हम सफ़ेद घड़ों में पी लिया करें कहा कि नहीं।

٥٥٩٦- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ الشَّيْبَانِيُّ قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: نَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنِ الْجَرِّ الأَخْضَرِ، قُلْتُ: أَنَشْرَبُ فِي الأَبْيَضِ؟ قَالَ: ((لاَ)).

इस क़िस्म के बर्तन अकषर शराब रखने के लिये इस्ते'माल किये जाते थे। इसलिये शराब की बन्दिश के लिये इन बर्तनों से भी रोक दिया गया। बर्तनों के बारे में बन्दिश एक वक़्ती चीज़ है।

बाब 9 : खजूर का शरबत या'नी नबीज़ जब तक नशाआवर (नशा लाने वाली) न हो पीना जाइज़ है

٩- باب نَقِيعِ التَّمْرِ مَا لَمْ يُسْكِرْ

5597. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे यअ़क़ूब बिन अ़ब्दुर्रह़मान अल क़ारी ने बयान किया, उनसे अबू ह़ाज़िम ने, उन्होंने ह़ज़रत सहल बिन सअ़द से सुना कि ह़ज़रत अबू उसैद साएदी (रज़ि.) ने अपने वलीमे की दा'वत नबी करीम (ﷺ) को दी, उस दिन उनकी बीवी (उम्मे उसैद सल्लामा) ही मेहमानों की ख़िदमत कर रही थीं। जोज़ा अबू उसैद ने कहा तुम जानते हो मैंने रसूले करीम (ﷺ) के लिये किस चीज़ का शरबत तैयार किया था पत्थर के कूँडे में रात के वक़्त कुछ खजूरें भिगो दी थीं और दूसरे दिन सुबह़ को आप (ﷺ) को पिला दी थीं। (राजेअ़ : 5176)

٥٥٩٧- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْقَارِيُّ، عَنْ أَبِي حَازِمٍ قَالَ: سَمِعْتُ سَهْلَ بْنَ سَعْدٍ السَّاعِدِيَّ أَنَّ أَبَا أُسَيْدٍ السَّاعِدِيَّ دَعَا النَّبِيَّ ﷺ لِعُرْسِهِ فَكَانَتِ امْرَأَتُهُ خَادِمَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَهِيَ الْعَرُوسُ فَقَالَتْ: أَتَدْرُونَ مَا أَنْقَعْتُ لِرَسُولِ اللهِ ﷺ؟ أَنْقَعْتُ لَهُ تَمَرَاتٍ مِنَ اللَّيْلِ فِي تَوْرٍ.

[راجع: ٥١٧٦]

बाब 10 : बाज़क़ (अंगूर के शीरे की हल्की आँच में पकाई हुई शराब) के बारे में और

١٠- باب الْبَاذَقِ وَمَنْ نَهَى عَنْ كُلِّ مُسْكِرٍ مِنَ الأَشْرِبَةِ،

उसके बारे में जिसने कहा कि हर नशाआवर मशरूब ह़राम है और उ़मर, अबू उ़बैदह बिन जर्राह़ और मुआ़ज़ (रज़ि.) की राय ये थी कि जब कोई ऐसा शरबत (त़ला) पककर एक षुलुष तिहाई रह जाए तो उसको पीने में कोई ह़र्ज नहीं है और बरा बिन आ़ज़िब (रज़ि.) और अबू जुहैफ़ा (रज़ि.) ने (पककर) आधा रह जाने पर भी पिया। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि शीरा जब तक ताज़ा हो उसे पी सकते हो। उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि मैंने उ़बैदुल्लाह (उनके लड़के) के मुँह में एक मशरूब की बू के

وَرَأَى عُمَرُ وَأَبُو عُبَيْدَةَ وَمُعَاذٌ شُرْبَ الطِّلاَءِ عَلَى الثُّلُثِ، وَشَرِبَ الْبَرَاءُ وَأَبُو جُحَيْفَةَ عَلَى النِّصْفِ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: اشْرَبِ الْعَصِيرَ مَا دَامَ طَرِيًّا، وَقَالَ عُمَرُ: وَجَدْتُ مِنْ عُبَيْدِ اللهِ رِيحَ شَرَابٍ. وَأَنَا سَائِلٌ عَنْهُ فَإِنْ كَانَ يُسْكِرُ جَلَدْتُهُ.

बारे में सुना है मैं उससे पूछूँगा अगर वो पीने की चीज़ नशा आवर ष़ाबित हुई तो मैं उस पर ह़द जारी कर दूँगा।

तश्रीह़ : फिर ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने उसकी तह़क़ीक़ की तो मा'लूम हुआ कि वो नशा आवर मशरूब है। आपने उसको पूरी ह़द लगाई। इसे इमाम मालिक ने वस़्ल किया है। जब किसी फल वग़ैरह का शीरा इतना पका लिया जाए कि उसका एक तिहाई ह़िस़्स़ा स़िर्फ़ बाक़ी रह जाए तो वो बिगड़ता भी नहीं और न उसमें नशा पैदा होता है। रिवायत में भी यही मुराद है।

5598. हमसे मुह़म्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान ष़ौरी ने ख़बर दी, उन्हें अबुल जुवेरिया ने, कहा कि मैंने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से बाज़क़ (अंगूर का शीरा हल्की आँच दिया हुआ) के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि ह़ज़रत मुह़म्मद (ﷺ) बाज़क़ के वजूद से पहले ही दुनिया से रुख़्स़त हो गये थे जो चीज़ भी नशा लाए वो ह़राम है। अबुल जुवेरिया ने कहा कि बाज़क़ तो ह़लाल व त़य्यब है। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि अंगूर ह़लाल त़य्यब था जब उसकी शराब बन गई तो वो ह़राम ख़बीष़ है। (न कि ह़लाल व त़य्यब)

٥٥٩٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِي الْجُوَيْرِيَةِ قَالَ: سَأَلْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ عَنِ الْبَاذِقِ فَقَالَ: سَبَقَ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْبَاذَقَ، فَمَا أَسْكَرَ فَهُوَ حَرَامٌ، قَالَ: الشَّرَابُ الْحَلاَلُ الطَّيِّبُ. قَالَ: لَيْسَ بَعْدَ الْحَلاَلِ الطَّيِّبِ إِلاَّ الْحَرَامُ الْخَبِيثُ.

तश्रीह़ : कुछ क़ुदमाअ शायर ने सच कहा है

व अश्रबुहा अज़्अमुहा हरामन   व अर्जू अफ़्व रब्बी जी इत्मिनान

या'नी मैं शराब पीता हूँ और उसे ह़राम भी जानता हूँ मगर मुझे अपने रब की त़रफ़ से मआ़फ़ी की उम्मीद है कि वो बहुत ही एह़सान करने वाला है

व यश्रबुहा व यज़्अमुहा हलालन   व तिल्क अलल्मुसम्मा ख़त़ीअत़ानि

बहरह़ाल ह़राम चीज़ ह़राम है उसे ह़लाल जानना कुफ़्र है। बाज़क़ बादा का मअ़रब है वो शराब जो अंगूर का शीरा निकालकर पकाई जाए या'नी थोड़ा सा पकाएँ कि वो रक़ीक़ और स़ाफ़ रहे। अगर उसे इतना पकाएँ कि आधा जल जाए तो उसे मुंस़िफ़ कहें गे और अगर दो तिहाई जल जाए तो उसे मुष़्लष़ कहेंगे। उसे तुला भी कहते हैं कि वो गाढ़ा होकर उस लेप की त़रह़ हो जाता है जो ख़ारिश वाले ऊँटों पर लगाते हैं। मुंस़िफ़ का पीना दुरुस्त है अगर उसमें नशा पैदा हो जाए तो वो बिल इत्तिफ़ाक़ ह़राम है।

5599. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी शैबा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हिशाम बिन उ़र्वा ने बयान किया, उनसे उनके बाप (उ़र्वा बिन ज़ुबैर) ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ह़लवा और शहद को दोस्त रखते थे। (राजेअ़ : 4912)

٥٥٩٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُحِبُّ الْحَلْوَاءَ وَالْعَسَلَ. [راجع: ٤٩١٢]

तश्रीह़ : इस ह़दीष़ की बाब का तर्जुमा से मुत़ाबक़त मुश्किल है। शायद मत़लब ये हो कि अंगूर का शीरा जब इतना पकाया जाए तो ह़लवा हो गया और आँह़ज़रत (ﷺ) ह़लवा को पसंद करते थे। (वह़ीदी) मगर ये शर्त़ ज़रूरी है कि उसमें मुत़लक़ नशा न हो वरना वो ह़राम होगा।

बाब 11 : इस बयान में कि गदरी और पुख़्ता खजूर मिलाकर भिगोने से जिसने मना किया है नशा की वजह से इसी वजह से दो सालन मिलाना मना है

١١- باب مَنْ رَأَى أَنْ لاَ يُخْلَطَ الْبُسْرُ وَالتَّمْرُ إِذَا كَانَ مُسْكِرًا، وَأَنْ لاَ يَجْعَلَ إِدَامَيْنِ فِي إِدَامٍ

5600. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम दस्तवाई ने बयान किया, कहा हमसे क़तादा ने बयान किया और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं हज़रत अबू तलहा (रज़ि.), हज़रत अबू दुजाना और सुहैल बिन बैज़ाअ (रज़ि.) को कच्ची और पकी खजूर मिली हुई नबीज़ पिला रहा था कि शराब हराम कर दी गई और मैंने मौजूदा शराब फेंक दी। मैं ही उन्हें पिला रहा था मैं सबसे कम उम्र था। हम उस नबीज़ को उस वक़्त शराब ही समझते थे और अम्र बिन हारिष़ रावी ने बयान किया कि हमसे क़तादा ने बयान किया, उन्होंने अनस (रज़ि.) से सुना। (राजेअ : 2464)

٥٦٠٠- حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ حَدَّثَنَا هِشَامٌ حَدَّثَنَا قَتَادَةُ عَنْ أَنَسٍ قَالَ : إِنِّي لأَسْقِي أَبَا طَلْحَةَ وَأَبَا دُجَانَةَ وَسُهَيْلَ بْنَ الْبَيْضَاءِ خَلِيطَ بُسْرٍ وَتَمْرٍ إِذْ حُرِّمَتِ الْخَمْرُ، فَقَذَفْتُهَا وَأَنَا سَاقِيهِمْ وَأَصْغَرُهُمْ، وَإِنَّا نَعُدُّهَا يَوْمَئِذٍ الْخَمْرَ. وَقَالَ عَمْرُو بْنُ الْحَارِثِ : حَدَّثَنَا قَتَادَةُ سَمِعَ أَنَسًا.

[راجع: ٢٤٦٤]

5601. हमसे अबू आसिम ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने, कहा मुझको अता बिन अबी रिबाह ने ख़बर दी, उन्होंने हज़रत जाबिर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने किशमिश और खजूर (के शीरे) को और कच्ची और पकी हुई खजूर को मिलाकर भिगोने से मना किया था। इस तौर उस में नशा जल्दी पैदा हो जाता है।

٥٦٠١- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، أَخْبَرَنِي عَطَاءٌ أَنَّهُ سَمِعَ جَابِرًا يَقُولُ: نَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنِ الزَّبِيبِ وَالتَّمْرِ، وَالْبُسْرِ، وَالرُّطَبِ.

5602. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम दस्तवाई ने बयान किया, कहा हमको यह्या बिन अबी कष़ीर ने ख़बर दी, उन्हें अब्दुल्लाह बिन अबी क़तादा ने और उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने उसकी मुमानअ़त की थी कि पुख़्ता और गदराई हुई खजूर, पुख़्ता खजूर और किशमिश को मिलाकर नबीज़ बनाया जाए। आपने हर एक को जुदा जुदा भिगोने का हुक्म दिया।

٥٦٠٢- حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ حَدَّثَنَا هِشَامٌ أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيرٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي قَتَادَةَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: نَهَى النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يُجْمَعَ بَيْنَ التَّمْرِ وَالزَّهْوِ، وَالتَّمْرِ وَالزَّبِيبِ، وَلْيُنْبَذْ كُلُّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا عَلَى حِدَةٍ.

बाब 12 : दूध पीना और अल्लाह तआ़ला ने सूरह नह्ल में फ़र्माया कि अल्लाह पाक लीद और ख़ून के दरम्यान से ख़ालिस़ दूध पैदा करता है जो पीने वालों को ख़ूब रचता पचता है।

١٢- باب شُرْبِ اللَّبَنِ وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿مِنْ بَيْنِ فَرْثٍ وَدَمٍ لَبَنًا خَالِصًا سَائِغًا لِلشَّارِبِينَ﴾

तश्रीह : **क़ाल इब्नुत्तीन अल्हालुत्तफ़न्नुनु फ़ी हाज़िहित्तर्जुमति यरूद्दु क़ौल मन ज़अम अन्नल्लब्न युस्किरू फरद्द ज़ालिक बिन्नुसूस़ि** (इब्ने माजा) या'नी इब्ने तोन ने कहा कि हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने इस बाब में उन लोगों के ख़्याल की तर्दीद की है जो कहते हैं कि दूध अगर कष़रत से पिया जाए तो नशा ले आता है। **व हाज़िहिल्आयतु स़रीहतुन फ़ी इहलालि शराबि लब्निल्अन्आमि बिजमीइ अफ़रादिहिम मौक़अल्इम्तिनानि बिही यइम्मु जमीउ अल्बानिल्अन्आमि फ़ी हालि हयातिहा** (फ़त्ह) या'नी ये आयत स़ाफ़ दलील है उस अम्र पर कि तमाम अन्आम हलाल जानवरों का दूध पीना हलाल है और बहालते ज़िन्दगी तमाम अन्आम चौपाये हलाल जानवर इसमें दाख़िल हैं।

5603. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमको यूनुस ने ख़ बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें सईद बिन मुसय्यिब ने, और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि शबे मेअ़राज में रसूले करीम (ﷺ) को दूध और शराब के दो प्याले पेश किये गये। (राजेअ़ : 3394)

٥٦٠٣- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: أُتِيَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لَيْلَةَ أُسْرِيَ بِهِ بِقَدَحِ لَبَنٍ وَقَدَحِ خَمْرٍ. [راجع: ٣٣٩٤]

आपने दूध को इख़्तियार फ़र्माया ये आपके दीने फ़ित़रत पर होने की दलील थी।

5604. हमसे हुमैदी ने बयान किया, उन्होंने सुफ़यान बिन उ़ययना से सुना, उन्होंने कहा कि हमको सालिम अबुन् नज़्र ने ख़बर दी, उन्होंने उम्मुल फ़ज़ल (वालिदा अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास) के गुलाम उ़मेर से सुना, वो उम्मुल फ़ज़ल (रज़ि.) से बयान करते हैं, उन्होंने बयान किया कि अ़रफ़ा के दिन रसूलुल्लाह (ﷺ) के रोज़े के बारे में स़हाबा किराम (रज़ि.) को शुब्हा था। इसलिये मैंने आपके लिये एक बर्तन में दूध भेजा और आँहज़रत (ﷺ) ने उसे पी लिया। हुमैदी कहते हैं कभी सुफ़यान इस हदीष़ को यूँ बयान करते थे कि अ़रफ़ा के दिन रसूलुल्लाह (ﷺ) के रोज़े के बारे में लोगों को शक था इसलिये उम्मुल फ़ज़ल ने आँहज़रत (ﷺ) के लिये (दूध) भेजा) कभी सुफ़यान इस हदीष़ को मुर्सलन उम्मुल फ़ज़ल से रिवायत करते थे सालिम और उ़मैर का नाम न लेते। जब उनसे पूछते कि ये हदीष़ मुर्सलन है या मर्फ़ूअ़ मुत्तस़िल तो वो उस वक़्त कहते (मर्फ़ूअ़ मुत्तस़िल है) उम्मे फ़ज़ल से मरवी है (जो स़हाबियाः थीं) (राजेअ़ : 1658)

٥٦٠٤- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ سَمِعَ سُفْيَانَ أَخْبَرَنَا سَالِمٌ أَبُو النَّضْرِ أَنَّهُ سَمِعَ عُمَيْرًا مَوْلَى أُمِّ الْفَضْلِ يُحَدِّثُ عَنْ أُمِّ الْفَضْلِ قَالَتْ : شَكَّ النَّاسُ فِي صِيَامِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ عَرَفَةَ، فَأَرْسَلْتُ إِلَيْهِ بِإِنَاءٍ فِيهِ لَبَنٌ فَشَرِبَ، فَكَانَ سُفْيَانُ رُبَّمَا قَالَ: شَكَّ النَّاسُ فِي صِيَامِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ عَرَفَةَ، فَأَرْسَلَتْ إِلَيْهِ أُمُّ الْفَضْلِ فَإِذَا وُقِفَ عَلَيْهِ : قَالَ : هُوَ عَنْ أُمِّ الْفَضْلِ.

[راجع: ١٦٥٨]

5605. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अबू स़ालेह (ज़क्वान) और अबू सुफ़यान (त़लहा बिन नाफ़ेअ़ क़ुरैशी) ने और उनसे हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान

٥٦٠٥- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ وَأَبِي سُفْيَانَ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ قَالَ : جَاءَ أَبُو حُمَيْدٍ

किया, कि अबू हुमैद साएदी मक़ामे नक़ीअ से दूध का एक प्याला (खुला हुआ) लाए तो आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि इसे ढंककर क्यूँ नहीं लाए एक लकड़ी ही इस पर रख लेते। (दीगर मक़ामात : 5606)

بِقَدَحٍ مِنْ لَبَنٍ مِنَ النَّقِيعِ فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَلاَ خَمَّرْتَهُ وَلَو أَنْ تَعْرِضَ عَلَيْهِ عُودًا)). [طرفه في : ٥٦٠٦].

आड़ी लकड़ी रख देना गोया बिस्मिल्लाह की बरकत है तो शैतान उससे दूर रहेगा। दूध या पानी खुला लाने में ये ख़राबी है कि उसमें ख़ाक पड़ती है कीड़े उड़कर गिरते हैं।

5606. हमसे अम्र बिन हफ़्स बिन ग़याष़ ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, कहा मैंने अबू स़ालेह से सुना, जैसा कि मुझे याद है वो ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अंस़ारी (रज़ि.) से बयान करते थे कि उन्होंने बयान किया कि एक अंस़ारी स़हाबी अबू हुमैदी साअ़दी (रज़ि.) मुक़ामे नक़ीअ से एक बर्तन में दूध नबी करीम (ﷺ) के लिये लाए। आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि उसे ढंककर क्यूँ नहीं लाए, इस पर लकड़ी ही रख देते। और आ'मश ने कहा कि मुझसे अबू सुफ़यान ने बयान किया, उनसे ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने यही ह़दीष़ बयान की। (राजेअ़ : 5605)

٥٦٠٦- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا صَالِحٍ يَذْكُرُ أُرَاهُ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ جَاءَ أَبُو حُمَيْدٍ رَجُلٌ مِنَ الأَنْصَارِ، مِنَ النَّقِيعِ بِإِنَاءٍ مِنْ لَبَنٍ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَلاَ خَمَّرْتَهُ، وَلَوْ أَنْ تَعْرِضَ عَلَيْهِ عُودًا)). وَحَدَّثَنِي أَبُو سُفْيَانَ عَنْ جَابِرٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ بِهَذَا. [راجع: ٥٦٠٥]

तश्रीह: अदब का तक़ाज़ा है कि दूध या पानी के बर्तन को हमेशा ढाँप कर रखा जाए कभी खुला हुआ न छोड़ा जाए इस तरह करने से ह़िफ़ाज़त होगी।

5607. मुझसे मह़मूद ने बयान किया, कहा हमको अबुन्नज़्र ने ख़बर दी, कहा हमको शुअ़बा ने ख़बर दी, उनसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया कि मैंने बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) मक्का मुकर्रमा से तशरीफ़ लाए तो अबू बक्र (रज़ि.) आपके साथ थे। अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा कि (रास्ते में) हम एक चरवाहे के क़रीब से गुज़रे। हुज़ूर अकरम (ﷺ) प्यासे थे फिर मैंने एक प्याले में (चरवाहे से पूछकर) कुछ दूध दूहा। आपने वो दूध पिया और उससे मुझे ख़ुशी ह़ासिल हुई और सुराक़ा बिन जअ़शम घोड़े पर सवार हमारे पास (पीछा करते हुए) पहुँच गया। आँहज़रत (ﷺ) ने उसके लिये बद्दुआ की। आख़िर उसने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) उसके ह़क़ में बद्दुआ न करें और वो वापस हो जाएगा। आँहज़रत (ﷺ) ने ऐसा ही किया। (राजेअ़ : 2439)

٥٦٠٧- حدثني مَحْمُودٌ أَخْبَرَنَا أَبُوالنَّضْرِ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ: سَمِعْتُ الْبَرَاءَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَدِمَ النَّبِيُّ ﷺ مِنْ مَكَّةَ وَأَبُو بَكْرٍ مَعَهُ قَالَ أَبُو بَكْرٍ مَرَرْنَا بِرَاعٍ وَقَدْ عَطِشَ رَسُولُ اللهِ ﷺ قَالَ أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ فَحَلَبْتُ كُثْبَةً مِنْ لَبَنٍ فِي قَدَحٍ فَشَرِبَ حَتَّى رَضِيتُ وَأَتَانَا سُرَاقَةُ بْنُ جُعْشُمٍ عَلَى فَرَسٍ، فَدَعَا عَلَيْهِ فَطَلَبَ إِلَيْهِ سُرَاقَةُ أَنْ لاَ يَدْعُوَ عَلَيْهِ وَأَنْ يَرْجِعَ، فَفَعَلَ النَّبِيُّ ﷺ. [راجع: ٢٤٣٩]

तश्रीह : सुराक़ा बिन जअ़शम आँहज़रत (ﷺ) के पीछे आया था आख़िर आँहज़रत (ﷺ) की बद्दुआ से उसका घोड़ा ठोकर खाकर गिरा, घोड़े का पैर ज़मीन में धंस गया तीन बार ऐसा ही हुआ आख़िर उसने पुख़्ता अ़हद किया कि अब मैं वापस लौट जाऊँगा बल्कि जो कोई आपकी तलाश में मिलेगा उसे भी वापस लौटा दूँगा आख़िर सुराक़ा मुसलमान हो गया।

5608. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, कहा हमसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रहमान अअ़रज ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया क्या ही उ़म्दह स़दक़ा है ख़ूब दूध देने वाली ऊँटनी जो कुछ दिनों के लिये किसी को अ़तिया के त़ौर पर दी गई हो और ख़ूब दूध देने वाली बकरी जो कुछ दिनों के लिये अ़तिया के त़ौर पर दी गई हो जिससे सुबह व शाम दूध बर्तन भर भरकर निकाला जाए। (राजेअ़ : 2629)

٥٦٠٨- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((نِعْمَ الصَّدَقَةُ اللِّقْحَةُ الصَّفِيُّ مِنْحَةً، وَالشَّاةُ الصَّفِيُّ مِنْحَةً، تَغْدُوا بِإِنَاءٍ وَتَرُوحُ بِآخَرَ)). [راجع: ٢٦٢٩]

5609. हमसे अबू आ़सिम ने बयान किया, उनसे इमाम औज़ाई ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह ने और उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दूध पिया फिर कुल्ली की और फ़र्माया कि इसमें चिकनाहट होती है। (राजेअ़ : 211)

٥٦٠٩- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ عَنِ الأَوْزَاعِيِّ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ، شَرِبَ لَبَنًا فَمَضْمَضَ وَقَالَ ((إِنَّ لَهُ دَسَمًا)). [راجع: ٢١١]

5610. और इब्राहीम बिन त़हमान ने कहा कि उनसे शुअ़बा ने, उनसे क़तादा ने और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया, उनसे रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब मुझे सिदरतुल मुंतहा तक ले जाया गया तो वहाँ मैंने चार नहरें देखीं। दो ज़ाहिरी नहरें और दो बात़िनी। ज़ाहिरी नहरें तो नील और फ़ुरात हैं और बात़िनी नहरें जन्नत की दो नहरें हैं। फिर मेरे पास तीन प्याले लाए गये एक प्याले में दूध था, दूसरे में शहद था, और तीसरे में शराब थी। मैंने वो प्याला लिया जिसमें दूध था और पिया। उस पर मुझसे कहा गया कि तुमने और तुम्हारी उम्मत ने अस़ल फ़ित़रत को पा लिया। हिशाम और सईद और हम्माम ने क़तादा से, उन्होंने हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से, उन्होंने इमाम मालिक बिन स़अ़स़आ (रज़ि.) से ये हदीष़ रिवायत की है। उसमें नदियों का ज़िक्र तो

٥٦١٠- وَقَالَ إِبْرَاهِيمُ بْنُ طَهْمَانَ: عَنْ شُعْبَةَ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((رُفِعْتُ إِلَى السِّدْرَةِ، فَإِذَا أَرْبَعَةُ أَنْهَارٍ: نَهْرَانِ ظَاهِرَانِ، وَنَهْرَانِ بَاطِنَانِ، فَأَمَّا الظَّاهِرَانِ النِّيلُ وَالْفُرَاتُ، وَأَمَّا الْبَاطِنَانِ فَنَهْرَانِ فِي الْجَنَّةِ، فَأُتِيتُ بِثَلاَثَةِ أَقْدَاحٍ: قَدَحٌ فِيهِ لَبَنٌ، وَقَدَحٌ فِيهِ عَسَلٌ، وَقَدَحٌ فِيهِ خَمْرٌ. فَأَخَذْتُ الَّذِي فِيهِ اللَّبَنُ فَشَرِبْتُ، فَقِيلَ لِي: أَصَبْتَ الْفِطْرَةَ أَنْتَ وَأُمَّتُكَ)) وَقَالَ هِشَامٌ وَسَعِيدٌ وَهَمَّامٌ: عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ عَنْ مَالِكِ بْنِ صَعْصَعَةَ عَنِ النَّبِيِّ

ऐसा ही है लेकिन तीन प्यालों का ज़िक्र नहीं है।

(राजेअ : 3570)

ﷺفِي الأَنْهَارِ نَحْوَهُ وَلَمْ يَذْكُرُوا ثَلاَثَةَ أَقْدَاحٍ. [راجع: ٣٥٧٠]

तश्रीह : इन रिवायतों को इमाम बुख़ारी (रह.) ने किताब बदउल ख़ल्क़ में वस्ल किया है। आँहज़रत (ﷺ) के सामने दूध लाया गया और उसके पीने के बाद आपको आलमे मल्कूतुस्समावात की सैर कराई गई। सिदरतुल मुन्तहा उसको इसलिये कहते हैं कि फ़रिश्तों का इल्म वहाँ जाकर ख़त्म हो जाता है और वो आगे जा भी नहीं सकते।

बाब 13 : मीठा पानी ढूँढना

١٣- باب اسْتِعْذَابِ الْمَاءِ

5611. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने, उनसे इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह ने, उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि अबू तलहा (रज़ि.) के पास मदीना के तमाम अंसार में सबसे ज़्यादा खजूर के बाग़ात थे और उनका सबसे पसंदीदा माल बीरे हाअ का बाग़ था। ये मस्जिदे नबवी के सामने ही था और रसूलुल्लाह (ﷺ) वहाँ तशरीफ़ ले जाते थे और उसका उम्दह पानी पीते थे। अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर जब आयत, तुम हर्गिज़ नेकी नहीं पाओगे जब तक वो माल न ख़र्च करो जो तुम्हें अज़ीज़ हो। नाज़िल हुई तो अबू तलहा (रज़ि.) खड़े हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! अल्लाह तआला फ़र्माता है, तुम हर्गिज़ नेकी को नहीं पाओगे जब तक वो माल न ख़र्च करो जो तुम्हें अज़ीज़ हो। और मुझे अपने माल में सबसे ज़्यादा अज़ीज़ बीरे हाअ का बाग़ है और वो अल्लाह तआला के रास्ते में सदक़ा है, उसका षवाब और अज्र मैं अल्लाह के यहाँ पाने की उम्मीद रखता हूँ, इसलिये या रसूलल्लाह! आप जहाँ उसे मुनासिब समझें ख़र्च करें। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया ख़ूब ये बहुत ही फ़ायदा बख़्श माल है या (इसके बजाय आपने) रायहुन (याअ के साथ फ़र्माया) हदीष के रावी अब्दुल्लाह को इसमें शक था (आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे मज़ीद फ़र्माया कि) जो कुछ तूने कहा है मैंने सुन लिया। मेरा ख़याल है कि तुम उसे अपने रिश्तेदारों को दे दो। हज़रत अबू तलहा (रज़ि.) ने अर्ज़ किया कि ऐसा ही करूँगा या रसूलल्लाह! चुनाँचे उन्होंने अपने रिश्तेदारों और अपने चचा के लड़कों में उसे तक़्सीम कर दिया। और इस्माईल बिन यह्या बिन यह्या ने रायेह का लफ़्ज़ नक़ल किया है। (राजेअ : 1461)

٥٦١١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللهِ أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ يَقُولُ: كَانَ أَبُو طَلْحَةَ أَكْثَرَ أَنْصَارِيٍّ بِالْمَدِينَةِ مَالاً مِنْ نَخْلٍ، وَكَانَ أَحَبُّ مَالِهِ إِلَيْهِ بَيْرُحَاءَ، وَكَانَتْ مُسْتَقْبِلَ الْمَسْجِدِ وَكَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَدْخُلُهَا وَيَشْرَبُ مِنْ مَاءٍ فِيهَا طَيِّبٍ. قَالَ أَنَسٌ: فَلَمَّا نَزَلَتْ ﴿لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتَّى تُنْفِقُوا مِمَّا تُحِبُّونَ﴾ قَامَ أَبُو طَلْحَةَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنَّ اللهَ يَقُولُ ﴿لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتَّى تُنْفِقُوا مِمَّا تُحِبُّونَ﴾ وَإِنَّ أَحَبَّ مَالِي إِلَيَّ بَيْرُحَاءَ. وَإِنَّهَا صَدَقَةٌ لِلَّهِ أَرْجُوا بِرَّهَا وَذُخْرَهَا عِنْدَ اللهِ، فَضَعْهَا يَا رَسُولَ اللهِ حَيْثُ أَرَاكَ اللهُ. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((بَخٍ، ذَلِكَ مَالٌ رَابِحٌ أَوْ رَايِحٌ)) شَكَّ عَبْدُ اللهِ ((وَقَدْ سَمِعْتُ مَا قُلْتَ وَإِنِّي أَرَى أَنْ تَجْعَلَهَا فِي الأَقْرَبِينَ)) فَقَالَ أَبُو طَلْحَةَ أَفْعَلُ يَا رَسُولَ اللهِ فَقَسَمَهَا أَبُو طَلْحَةَ فِي أَقَارِبِهِ وَفِي بَنِي عَمِّهِ. وَقَالَ إِسْمَاعِيلُ وَيَحْيَى بْنُ يَحْيَى رَايِحٌ. [راجع: ١٤٦١]

तश्रीह : बीरे ह़ाअ के मीठे पानी वाले बाग़ में पानी पीने के लिये आँह़ज़रत (ﷺ) का तशरीफ़ ले जाना यही बाब और ह़दीष़ में मुताबक़त है बीरे ह़इ या बीरे ह़ाअ ये ह़ज़रत अबू त़लह़ा (रज़ि.) के बाग़ का नाम था। (लुग़ातुल ह़दीष़, किताब, पेज : 42) मीठा पानी अल्लाह की बड़ी भारी नेअ़मत है। जैसा कि ह़दीष़े अबू हुरैरह (रज़ि.) से वारिद है कि **अव्वलु मा युहासबु बिहिल्अब्द यौमल्क़ियामति अ लम असिह्ह जिस्मक व उर्वीक मिनल्माइल्बारिद** या'नी क़यामत के रोज़ अल्लाह पहले ही ह़िसाब में फ़र्माएगा कि ऐ बन्दे! क्या मैंने तुझको तन्दरुस्ती नहीं दी थी और क्या मैंने तुझे ठण्डे मीठे पानी से सैराब नहीं किया था **व अम्मा बिनिअ़मति रब्बिक फहद्दिष़** (अज़्ज़ुहा : 11) की तअ़मील में ये नोट लिखा गया **वल्लाहु अलीमुम्बिज़ातिस्सुदूर** अल्ह़म्दुलिल्लाह ख़ादिम ने अपने खेतों वाक़ेअ़ मौज़अ़ रहपुवा में दो कुंए ता'मीर कराए हैं जिसमें बेहतरीन मीठा पानी है। पहला कुआँ ह़ज़रत डाक्टर अ़ब्दुल वह़ीद स़ाह़ब कोटा राजस्थान का ता'मीर कर्दा है जिसका पानी बहुत ही मीठा है **जज़ाहुल्लाहु खैरल्जज़ा फ़िद्दारैन** (ख़ादिम राज़ ड़फ़ियु अ़न्हु)

बाब 14 : दूध में पानी मिलाना (बशर्ते कि धोखे से बेचा न जाए) जाइज़ है

١٤- باب شُرْبِ اللَّبَنِ بِالْمَاءِ

5612. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको यूनुस ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया और उन्हें ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने ख़बर दी कि उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को दूध पीते देखा और आँह़ज़रत (ﷺ) उनके घर तशरीफ़ लाए थे (बयान किया कि) मैंने बकरी का दूध निकाला और उसमें कुएँ का ताज़ा पानी मिलाकर (आँह़ुज़ूर ﷺ को) पेश किया आपने प्याला लेकर पिया। आपके बाएँ त़रफ़ ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) थे और दाएँ त़रफ़ एक अअ़राबी था आपने अपना बाक़ी दूध अअ़राबी को दिया और फ़र्माया कि पहले दाएँ त़रफ़ से हाँ दाएँ त़रफ़ वाले का ह़क़ है। (राजेअ़ : 2352)

٥٦١٢- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : أَخْبَرَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ رَأَى رَسُولَ اللهِ ﷺ، شَرِبَ لَبَنًا وَأَتَى دَارَهُ فَحَلَبْتُ شَاةً فَشُبْتُ لِرَسُولِ اللهِ ﷺ مِنَ الْبِئْرِ فَتَنَاوَلَ الْقَدَحَ فَشَرِبَ وَعَنْ يَسَارِهِ أَبُو بَكْرٍ وَعَنْ يَمِينِهِ أَعْرَابِيٌّ فَأَعْطَى الأَعْرَابِيَّ فَضْلَهُ ثُمَّ قَالَ: ((الأَيْمَنَ فَالأَيْمَنَ)). [راجع: ٢٣٥٢]

मा'लूम हुआ कि खाना खिलाते और शरबत या दूध पिलाते वक़्त दाएँ त़रफ़ से शुरू करना चाहिये अगरचे बाएँ जानिब बड़े बुज़ुर्ग ही क्यूँ न हों।

5613. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद ने बयान किया, कहा हमसे अबू आ़मिर ने, कहा हमसे फुलैह़ बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे सई़द बिन ह़ारिष़ ने और उनसे जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) क़बीला अंस़ार के एक स़ह़ाबी के यहाँ तशरीफ़ ले गये आँह़ज़रत (ﷺ) के साथ आपके एक रफ़ीक़ (अबूबक्र रज़ि.) भी थे। उनसे आपने फ़र्माया कि अगर तुम्हारे यहाँ उसी रात का बासी पानी किसी मशकीज़े में रखा हुआ हो (तो हमें पिलाओ) वरना हम मुँह

٥٦١٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ حَدَّثَنَا فُلَيْحُ بْنُ سُلَيْمَانَ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْحَارِثِ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ، دَخَلَ عَلَى رَجُلٍ مِنَ الأَنْصَارِ وَمَعَهُ صَاحِبٌ لَهُ فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنْ كَانَ عِنْدَكَ مَاءٌ

بَاتَ هَذِهِ اللَّيْلَةَ فِي شَنَّةٍ وَإِلاَّ كَرَعْنَا)). قَالَ: وَالرَّجُلُ يُحَوِّلُ الْمَاءَ فِي حَائِطِهِ قَالَ: فَقَالَ الرَّجُلُ يَا رَسُولَ اللهِ، عِنْدِي مَاءٌ بَائِتٌ فَانْطَلِقْ إِلَى الْعَرِيشِ قَالَ: فَانْطَلَقَ بِهِمَا فَسَكَبَ فِي قَدَحٍ ثُمَّ حَلَبَ عَلَيْهِ مِنْ دَاجِنٍ لَهُ قَالَ: فَشَرِبَ رَسُولُ اللهِ ﷺ ثُمَّ شَرِبَ الرَّجُلُ الَّذِي جَاءَ مَعَهُ.

[طرفه في : ٥٦٢١].

लगा के पानी पी लेंगे। जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि वो स़ाहब (जिनके यहाँ आप तशरीफ़ ले गये थे) अपने बाग़ में पानी दे रहे थे। बयान किया कि उन स़ाहब ने कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरे पास रात का बासी पानी मौजूद है, आप छप्पर में तशरीफ़ ले चलें। बयान किया कि फिर वो उन दोनों ह़ज़रात को साथ लेकर गये फिर उन्होंने एक प्याले में पानी लिया और अपनी एक दूध देने वाली बकरी का उसमें दूध निकाला। बयान किया कि फिर आँह़ज़रत (ﷺ) ने उसे पिया, उसके बाद आपके रफ़ीक़ अबूबक्र स़िद्दीक़ (रज़ि.) ने पिया। (दीगर मक़ामात : 5621)

١٥- باب شَرَابِ الْحَلْوَاءِ وَالْعَسَلِ

बाब 15 : किसी मीठी चीज़ का शरबत और शहद का शरबत बनाना जाइज़ है

وَقَالَ الزُّهْرِيُّ لاَ يَحِلُّ شُرْبُ بَوْلِ النَّاسِ لِشِدَّةٍ تَنْزِلُ، لأَنَّهُ رِجْسٌ قَالَ اللهُ تَعَالَى: ﴿أُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبَاتُ﴾ وَقَالَ ابْنُ مَسْعُودٍ فِي السَّكَرِ: إِنَّ اللهَ لَمْ يَجْعَلْ شِفَاءَكُمْ فِيمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ

और ज़ुह्री ने कहा अगर प्यास की शिद्दत हो और पानी न मिले तो भी इंसान का पेशाब पीना जाइज़ नहीं क्योंकि वो नजासत है। अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया है कि तुम्हारे लिये पाकीज़ा चीज़ें ह़लाल की गई हैं और ह़ज़रत इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) ने नशा लाने वाली चीज़ों के बारे में कहा कि अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे लिये ह़राम चीज़ों में शिफ़ा नहीं रखी है।

तश्रीह : ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) के ख़ादिमे ख़ास़ हैं। इस्लाम लाने वालों में छठा नम्बर उनका है। बड़उम्र कुछ ऊपर साठ साल सन 32 हिजरी मदीना में वफ़ात पाई और बक़ीअ़ ग़रक़द में दफ़न हुए।

٥٦١٤- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ قَالَ : أَخْبَرَنِي هِشَامٌ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُعْجِبُهُ الْحَلْوَاءُ وَالْعَسَلُ.

[راجع: ٤٩١٢]

5614. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, कहा कि मुझे हिशाम ने ख़बर दी, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) शीरनी और शहद को दोस्त रखते थे। (राजेअ़ : 4912)

तश्रीह : व फीहि जवाज़ुन अक्लु लज़ीज़िल्अत्इमति वत्तय्यिबाति मिनर्रिज़्क़ि व अन्न ज़ालिक ला युनाफ़िज़्ज़ुहदु वल्मुराक़बतु ला सय्यिमा अन्न ह़स़ल इत्तिफ़ाक़न (फ़त्हुल्बारी) या'नी इस ह़दीष़ में जवाज़ है लज़ीज़ और त़य्यिबात रिज़्क़ खाने के लिये और ये ज़ुहद और तक़्वा के ख़िलाफ़ नहीं है ख़ास़कर जबकि इत्तिफ़ाक़ी त़ौर पर ह़ासिल हो जाए।

١٦- باب الشُّرْبِ قَائِمًا

बाब 16 : खड़े खड़े पानी पीना

٥٦١٥- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا مِسْعَرٌ عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ مَيْسَرَةَ عَنِ النَّزَّالِ

5615. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, कहा हमसे मिस्अ़र ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल मलिक बिन मैसरह ने, उनसे नज़्ज़ाल ने बयान किया कि वो ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) की

ख़िदमत में मस्जिदे कूफ़ा के सहन में हाज़िर हुए फिर हज़रत अ़ली (रज़ि.) ने खड़े होकर पानी पिया और कहा कि कुछ लोग खड़े होकर पानी पीने को मकरूह समझते हैं हालाँकि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को इसी तरह करते देखा है जिस तरह तुमने मुझे इस वक़्त खड़े होकर पानी पीते देखा है। (दीगर मक़ामात : 5616)

قَالَ أَتَى عَلِيٌّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَلَى بَابِ الرَّحَبَةِ بِمَاءٍ فَشَرِبَ قَائِمًا فَقَالَ: إِنَّ نَاسًا يَكْرَهُ أَحَدُهُمْ أَنْ يَشْرَبَ وَهُوَ قَائِمٌ، وَإِنِّي رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ فَعَلَ كَمَا رَأَيْتُمُونِي فَعَلْتُ.

[طرفه في : ٥٦١٦].

5616. हमसे आदम ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल मलिक बिन मैसरह ने बयान किया, उन्होंने नज़्ज़ाल बिन सबरह से सुना, वो हज़रत अ़ली (रज़ि.) से बयान करते थे कि उन्होंने ज़ुहर की नमाज़ पढ़ी फिर मस्जिदे कूफ़ा के सेहन में लोगों की ज़रूरतों के लिये बैठ गये। इस अ़र्से में अ़सर की नमाज़ का वक़्त आ गया फिर उनके पास पानी लाया गया। उन्होंने पानी पिया और अपना चेहरा और हाथ धोये, उनके सर और पैर (के धोने का भी) ज़िक्र किया। फिर उन्होंने खड़े होकर वुज़ू का बचा हुआ पानी पिया, उसके बाद कहा कि कुछ लोग खड़े होकर पानी पीने को बुरा समझते हैं हालाँकि नबी करीम (ﷺ) ने यूँ ही किया था जिस तरह मैने किया। वुज़ू का पानी खड़े होकर पिया। (राजेअ़ : 5615)

٥٦١٦- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ مَيْسَرَةَ سَمِعْتُ النَّزَّالَ بْنَ سَبْرَةَ يُحَدِّثُ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ صَلَّى الظُّهْرَ ثُمَّ قَعَدَ فِي حَوَائِجِ النَّاسِ فِي رَحَبَةِ الْكُوفَةِ حَتَّى حَضَرَتْ صَلاَةُ الْعَصْرِ، ثُمَّ أُتِيَ بِمَاءٍ فَشَرِبَ وَغَسَلَ وَجْهَهُ وَيَدَيْهِ، وَذَكَرَ رَأْسَهُ وَرِجْلَيْهِ ثُمَّ قَامَ فَشَرِبَ فَضْلَهُ وَهُوَ قَائِمٌ، ثُمَّ قَالَ: إِنَّ نَاسًا يَكْرَهُونَ الشُّرْبَ قَائِمًا، وَإِنَّ النَّبِيَّ ﷺ صَنَعَ مِثْلَ مَا صَنَعْتُ. [راجع: ٥٦١٥]

तश्रीह : जुम्हूर उ़लमा के नज़दीक इसमें कोई क़बाहत नहीं है जैसे खड़े खड़े पेशाब करने में जबकि कोई उ़ज़्र बैठने से मानेअ़ हो। बरिवायत मुस्लिम आँहज़रत (ﷺ) ने एक शख़्स को खड़े खड़े पानी पीने पर झिड़का। जुम्हूर कहते हैं ये नही तंजीही है और बैठकर पानी पीना बेहतर है। जो लोग खड़े होकर पानी पीना मकरूह जानते हैं वो भी इसके क़ाइल हैं कि वुज़ू से बचा हुआ पानी और इसी तरह ज़मज़म का पानी खड़े होकर पीना सुन्नत है, **व फ़ी हदीषि अलिय्यिम्मिनल्फ़वाइदि अन्न अलल्आलिमि इज़ा राअन्नास इज्तनबू शैअन व हुव अयलमु जवाज़हू अंय्युवज़्ज़िह लहुम वज्हस्सवाबि फ़ीहि ख़श्यतन अंय्यतूलल्अम्रू फयज़ुन्नु तहरीमहू** या'नी हदीष़ अ़ली (रज़ि.) से ये फ़ायदा ज़ाहिर हुआ कि कोई आ़लिम जब देखे कि लोग एक जाइज़ चीज़ के खाने से परहेज़ करते हैं तो उनके फ़ासिद ख़्याल के मिटाने को उस चीज़ के खाने के जवाज़ को वाज़ेह कर दे वरना एक दिन अ़वाम उसे बिलकुल ही हराम समझने लग जाएँगे।

5617. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे आ़सिम बिन अहवल ने, उनसे शअ़बी ने और उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने ज़मज़म का पानी खड़े होकर पिया। (राजेअ़ : 1637)

٥٦١٧- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَاصِمٍ الأَحْوَلِ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: شَرِبَ النَّبِيُّ ﷺ قَائِمًا مِنْ زَمْزَمَ. [راجع: ١٦٣٧]

आदाबे ज़मज़म से है कि का'बा रुख़ खड़े होकर उसे पिया जाए और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) की ये दुआ़ पढ़ी जाए **अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक इल्मन नाफ़िअ़न व रिज़्क़न वासिअ़न व शिफ़ाअम्मिन कुल्लि दाइन** (मुस्तदरक हाकिम)

बाब : 17 जिसने ऊँट पर बैठकर (पानी या दूध) पिया

١٧- باب مَنْ شَرِبَ وَهُوَ وَاقِفٌ عَلَى بَعِيرِهِ

5618. हमसे मालिक बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबी सलमा ने बयान किया, कहा हमको अबुन्नज़्र ने ख़बर दी, उन्हें ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) के ग़ुलाम ड़मेर ने और उन्हें उम्मे फ़ज़ल बिन्ते ह़ारिष़ ने कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) के लिये दूध का एक प्याला भेजा मैदाने अ़रफ़ात में। वो अ़रफ़ा के दिन की शाम का वक़्त था और आँह़ज़रत (ﷺ) (अपनी सवारी पर) सवार थे, आपने अपने हाथ में वो प्याला लिया और उसे पी लिया। मालिक ने अबुन् नज़्र से अपने ऊँट पर के अल्फ़ाज़ ज़्यादा किये। (राजेअ़ : 1658)

٥٦١٨- حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي سَلَمَةَ أَخْبَرَنَا أَبُو النَّضْرِ عَنْ عُمَيْرٍ مَوْلَى ابْنِ عَبَّاسٍ عَنْ أُمِّ الْفَضْلِ بِنْتِ الْحَارِثِ أَنَّهَا أَرْسَلَتْ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ بِقَدَحِ لَبَنٍ وَهُوَ وَاقِفٌ عَشِيَّةَ عَرَفَةَ، فَأَخَذَهُ بِيَدِهِ فَشَرِبَهُ. زَادَ مَالِكٌ عَنْ أَبِي النَّضْرِ عَلَى بَعِيرِهِ. [راجع: ١٦٥٨]

तश्रीह : कुछ ने ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) पर यहाँ ये ए'तिराज़ किया है कि ऊँट पर तो आदमी बैठा होता है न कि खड़ा, फिर इस बाब के लाने से ये कहाँ निकला कि पानी खड़े खड़े पीना दुरुस्त है और ये एक अलग मत़लब है और ये बाब इसलिये लाए कि ऊँट पर सवार होना खड़े रहने से भी ज़्यादा है कि शायद कोई ख़्याल करे कि सवार रहकर भी खाना पीना मकरूह होगा।

बाब 18 : पीने में तक़्सीम का दौर दाहिनी त़रफ़ पस दाहिनी त़रफ़ से शुरू हो

١٨- باب الأَيْمَنَ فَالأَيْمَنَ فِي الشُّرْبِ

5619. हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने और उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में पानी मिला हुआ दूध पेश किया गया आँह़ज़रत (ﷺ) के दाहिनी त़रफ़ एक देहाती था और बाईं तरफ़ ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.)। आँह़ज़रत (ﷺ) ने पीकर बाक़ी देहाती को दिया और फ़र्माया कि दाईं त़रफ़ से पस दाईं त़रफ़ से।

(राजेअ़ : 2352)

٥٦١٩- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ أُتِيَ بِلَبَنٍ قَدْ شِيبَ بِمَاءٍ، وَعَنْ يَمِينِهِ أَعْرَابِيٌّ وَعَنْ شِمَالِهِ أَبُو بَكْرٍ، فَشَرِبَ ثُمَّ أَعْطَى الأَعْرَابِيَّ وَقَالَ: ((الأَيْمَنَ الأَيْمَنَ)). [راجع: ٢٣٥٢]

बाब : 19 अगर आदमी दाहिनी त़रफ़ वाले से इजाज़त लेकर पहले बाईं त़रफ़ वाले को दे जो उ़म्र में बड़ा हो

١٩- باب هَلْ يَسْتَأْذِنُ الرَّجُلُ مَنْ عَنْ يَمِينِهِ فِي الشُّرْبِ لِيُعْطِيَ الأَكْبَرَ؟

5620. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अबू ह़ाज़िम बिन दीनार ने और उनसे ह़ज़रत सहल बिन सअ़द

٥٦٢٠- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي حَازِمِ بْنِ دِينَارٍ عَنْ سَهْلِ

(रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में एक शरबत लाया गया आँहज़रत (ﷺ) ने उसमें से पिया, आपके दाईं तरफ़ एक लड़का बैठा हुआ था और बाईं तरफ़ बूढ़े लोग (हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि. जैसे बैठे हुए) थे। आँहज़रत (ﷺ) ने बच्चे से कहा क्या तुम मुझे इजाज़त दोगे कि मैं इन (शुयूख़) को (पहले) दे दूँ। लड़के ने कहा अल्लाह की क़सम या रसूलल्लाह! आपके जूठे में से मिलने वाले अपने हिस्से के मामले में मैं किसी पर ईषार नहीं करूँगा। रावी ने बयान किया कि इस पर आँहज़रत (ﷺ) ने लड़के के हाथ में प्याला दे दिया। (राजेअ: 2351)

بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أُتِيَ بِشَرَابٍ فَشَرِبَ مِنْهُ، وَعَنْ يَمِينِهِ غُلاَمٌ وَعَنْ يَسَارِهِ الأَشْيَاخُ فَقَالَ لِلْغُلاَمِ: ((أَتَأْذَنُ لِي أَنْ أُعْطِيَ هَؤُلاَءِ؟)) فَقَالَ الْغُلاَمُ: وَاللهِ يَا رَسُولَ اللهِ، لاَ أُوثِرُ بِنَصِيبِي مِنْكَ أَحَدًا قَالَ فَتَلَّهُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي يَدِهِ. [راجع: ٢٣٥١]

लफ़्ज़ फ़त्तलहू बतलाता है कि आपने वो प्याला बादिले नाख़्वास्ता उस लड़के के हाथ पर रख दिया, आपकी ख़्वाहिश थी कि वो अपने बड़ों के लिये ईषार करे मगर उसने ऐसा नहीं किया तो आँहज़रत (ﷺ) ने प्याला उसके हवाले कर दिया।

बाब 20 : हौज़ से मुँह लगाकर पानी पीना जाइज़ है

٢٠- بَابُ الْكَرْعِ فِي الْحَوْضِ

5621. हमसे यह्या बिन स़ालेह़ ने बयान किया, कहा हमसे फ़ुलेह़ बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे सईद बिन हारिष़ ने और उनसे हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) क़बीला अंसार के एक सहाबी के यहाँ तशरीफ़ ले गये। आँहज़रत (ﷺ) के साथ आपके एक रफ़ीक़ भी थे। आँहज़रत (ﷺ) और आपके रफ़ीक़ ने उन्हें सलाम किया और उन्होंने सलाम का जवाब दिया। फिर अ़र्ज किया कि या रसूलल्लाह! मेरे माँ बाप आप पर निषार हों ये बड़ी गर्मी का वक़्त है वो अपने बाग़ में पानी दे रहे थे। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अगर तुम्हारे पास मश्क में रात का रखा हुआ पानी है (तो वो पिला दो) वरना हम मुँह लगाकर पी लेंगे (यहीं से बाब का तर्जुमा निकलता है) वो स़ाहब उस वक़्त भी बाग़ में पानी दे रहे थे। उन्होंने अ़र्ज किया या रसूलल्लाह! मेरे पास मश्क में रात का रखा हुआ बासी पानी है फिर वो छप्पर में गये और एक प्याले में बासी पानी लिया फिर अपनी एक दूध देने वाली बकरी का दूध उसमें निकाला। आँहज़रत (ﷺ) ने उसे पिया फिर वो दोबारा लाए और इस मर्तबा आँहज़रत (ﷺ) के रफ़ीक़ हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) ने पिया।

(राजेअ: 5613)

٥٦٢١- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ صَالِحٍ حَدَّثَنَا فُلَيْحُ بْنُ سُلَيْمَانَ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْحَارِثِ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ دَخَلَ عَلَى رَجُلٍ مِنَ الأَنْصَارِ وَمَعَهُ صَاحِبٌ لَهُ، فَسَلَّمَ النَّبِيُّ ﷺ وَصَاحِبُهُ فَرَدَّ الرَّجُلُ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي، وَهْيَ سَاعَةٌ حَارَّةٌ، وَهُوَ يُحَوِّلُ فِي حَائِطٍ لَهُ يَعْنِي الْمَاءَ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((إِنْ كَانَ عِنْدَكَ مَاءٌ بَاتَ فِي شَنَّةٍ)). وَإِلاَّ كَرَعْنَا وَالرَّجُلُ يُحَوِّلُ الْمَاءَ فِي حَائِطٍ فَقَالَ الرَّجُلُ يَا رَسُولَ اللهِ، عِنْدِي مَاءٌ بَاتَ فِي شَنَّةٍ فَانْطَلَقَ إِلَى الْعَرِيشِ فَسَكَبَ فِي قَدَحٍ مَاءً ثُمَّ حَلَبَ عَلَيْهِ مِنْ دَاجِنٍ لَهُ فَشَرِبَ النَّبِيُّ ﷺ ثُمَّ أَعَادَ فَشَرِبَ الرَّجُلُ الَّذِي جَاءَ مَعَهُ.

[راجع: ٥٦١٣]

तश्रीह : हदीष में हौज़ का ज़िक्र नहीं है मगर दस्तूर ये है कि बाग़ में जब पानी कुएँ से निकाला जाए तो एक हौज़ में जमा होकर आगे पेड़ों में जाता है यहाँ भी ऐसा ही होगा क्योंकि वो बाग़ वाला अपने पेड़ों को पानी दे रहा था।

बाब 21 : बच्चों का बड़ों—बूढ़ों की ख़िदमत करना ज़रूरी है

5622. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे मुअतमिर ने, उनसे उनके वालिद ने, कि मैंने अनस (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैं खड़ा हुआ अपने क़बीले में अपने चचाओं को खजूर की शराब पिला रहा था। मैं उनमें से सबसे छोटा था, इतने में किसी ने कहा कि शराब हराम कर दी गई (अबू तलहा रज़ि. ने) कहा कि शराब फेंक दो। चुनाँचे हमने फेंक दी। सुलैमान ने कहा कि मैंने अनस (रज़ि .) से पूछा उस वक़्त लोग किस चीज़ की शराब पीते थे कहा कि पक्की और कच्ची खजूर की। अबूबक्र बिन अनस ने कहा कि यही उनकी शराब होती थी अनस (रज़ि .) ने इसका इंकार नहीं किया। बक्र बिन अब्दुल्लाह मुज़्नी या क़तादा ने कहा और मुझसे कुछ लोगों ने बयान किया कि उन्होंने अनस (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि इनकी उन दिनों यही (फ़जीह) इनकी शराब थी। (राजेअ : 2464)

٢١- باب خِدْمَةِ الصِّغَارِ الْكِبَارَ

٥٦٢٢- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ عَنْ أَبِيهِ قَالَ : سَمِعْتُ أَنَسًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ قَائِمًا عَلَى الْحَيِّ أَسْقِيهِمْ عُمُومَتِي وَأَنَا أَصْغَرُهُمُ الْفَضِيخَ، فَقِيلَ حُرِّمَتِ الْخَمْرُ، فَقَالَ: أَكْفِئْهَا، فَكَفَأْنَا، قُلْتُ لأَنَسٍ: مَا شَرَابُهُمْ؟ قَالَ: رُطَبٌ وَبُسْرٌ. فَقَالَ أَبُو بَكْرِ بْنِ أَنَسٍ: وَكَانَتْ خَمْرَهُمْ. فَلَمْ يُنْكِرْ أَنَسٌ وَحَدَّثَنِي بَعْضُ أَصْحَابِي أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسًا يَقُولُ : كَانَتْ خَمْرَهُمْ يَوْمَئِذٍ.

[راجع : ٢٤٦٤]

तश्रीह : जो कच्ची और पक्की खजूरों से बनाई जाती थी। छोटों का फ़र्ज़ है कि हर मुम्किन ख़िदमत में कोताही न करें, बड़ों बूढ़ों की ख़िदमत करके उनकी दुआएँ हासिल करें, ये ऐन सआदतमंदी होगी।

बाब 22 : रात को बर्तन का ढंकना ज़रूरी है

5623. हमसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको रौह बिन उबादा ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमको इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मुझे अता ने ख़बर दी, उन्होंने हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि रात की जब इब्तिदा हो या (आपने फ़र्माया) जब शाम हो तो अपने बच्चों को रोक लो (और घर से बाहर न निकलने दो) क्योंकि उस वक़्त शैतान फैल जाते हैं फिर जब रात की एक घड़ी गुज़र जाए तो उन्हें छोड़ दो और दरवाज़े बन्द कर लो और उस वक़्त अल्लाह का नाम लो क्योंकि शैतान बंद दरवाज़े को नहीं खोलता और अल्लाह का नाम लेकर अपने मशकीज़े का मुँह बाँध दो। अल्लाह का नाम लेकर अपने बर्तनों को ढंक दो, ख़्वाह किसी

٢٢- باب تَغْطِيَةِ الإِنَاءِ

٥٦٢٣- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ أَخْبَرَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَطَاءٌ أَنَّهُ سَمِعَ جَابِرَ بْنَ عَبْدَ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ : قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِذَا كَانَ جُنْحُ اللَّيْلِ أَوْ أَمْسَيْتُمْ فَكُفُّوا صِبْيَانَكُمْ، فَإِنَّ الشَّيَاطِينَ تَنْتَشِرُ حِينَئِذٍ، فَإِذَا ذَهَبَ سَاعَةٌ مِنَ اللَّيْلِ فَحُلُّوهُمْ، وَأَغْلِقُوا الأَبْوَابَ وَاذْكُرُوا اسْمَ اللهِ، فَإِنَّ الشَّيْطَانَ لاَ يَفْتَحُ بَابًا مُغْلَقًا، وَأَوْكُوا قِرَبَكُمْ وَاذْكُرُوا اسْمَ اللهِ،

وَخَمِّرُوا آنِيَتَكُمْ وَاذْكُرُوا اسْمَ اللهِ، وَلَوْ أَنْ تَعْرُضُوا عَلَيْهَا شَيْئًا وَأَطْفِئُوا مَصَابِيحَكُمْ)). [راجع: ٣٢٨٠]

चीज़ को चौड़ाई में रखकर ही ढंक सको और अपने चिराग़ (सोने से पहले) बुझा दिया करो। (राजेअ : 3280)

तशरीह : सोते वक़्त चिराग़ बुझा देने का फ़ायदा दूसरी रिवायत में मज़्कूर है कि चूहा बत्ती मुँह में दबाकर खींच ले जाता है अकष़र घरों में आग लग जाती है लिहाज़ा हर ह़ाल में ज़रूरी है कि सोते वक़्त चिराग़ बुझा दिये जाएँ रोशनी गुल कर दी जाए।

٥٦٢٤- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ عَطَاءٍ عَنْ جَابِرٍ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((أَطْفِئُوا الْمَصَابِيحَ إِذَا رَقَدْتُمْ، وَغَلِّقُوا الأَبْوَابَ وَأَوْكُوا الأَسْقِيَةَ وَخَمِّرُوا الطَّعَامَ وَالشَّرَابَ، وَأَحْسِبُهُ، قَالَ: وَلَوْ بِعُودٍ تَعْرُضُهُ عَلَيْهِ)). [راجع: ٣٢٨٠]

5624. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम बिन यह्या ने बयान किया, उनसे अ़ता बिन अबी रिबाह़ ने, और उनसे ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अंसारी (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम जब सोने लगो तो चिराग़ बुझा दो, दरवाज़े बंद कर दो, मश्कों के मुँह बाँध दो और खाने–पीने के बर्तनों को ढाँप दो। ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) ने कहा कि मेरा ख़्याल है कि ये भी कहा ख़्वाह लकड़ी ही के ज़रिये से ढंक सको जो उसकी चौड़ाई में बिस्मिल्लाह कहकर रख दी जाए। (राजेअ : 3280)

लफ़्ज़ ख़मरू ढाँकने के मा'नी में है कि खाने–पीने के बर्तनों का ढाँकना किसी क़दर ज़रूरी है। दरवाज़े को बंद करने की ताकीद भी है।

बाब 23 मश्क में मुँह लगाकर पानी पीना दुरुस्त नहीं है

٢٣- بَابُ اخْتِنَاثِ الأَسْقِيَةِ

तशरीह : इस बाब के लाने से ह़ज़रत इमाम बुख़ारी की ये ग़र्ज़ है कि अगर कोई मश्क का मुँह न मरोड़े बल्कि यूँ ही उसका मुँह खोल कर पानी पीने लगे तो भी मना है और पिछले बाब में इसकी स़राह़त न थी बल्कि उसमें मश्क का मुँह मोड़कर पानी पीने का ज़िक्र था।

٥٦٢٥- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللهِ ﷺ عَنِ اخْتِنَاثِ الأَسْقِيَةِ، يَعْنِي أَنْ تُكْسَرَ أَفْوَاهُهَا فَيُشْرَبَ مِنْهَا. [أطرافه في : ٥٦٢٦].

5625. हमसे आदम ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबी ज़िब ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने, उनसे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा ने और उनसे ह़ज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने मश्कों में इख़्तिनाष़ से मना फ़र्माया या'नी मश्क का मुँह खोलकर उसमें मुँह लगाकर पानी पीने से रोका।(दीगर मक़ामात : 5626)

٥٦٢٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا سَعِيدٍ الْخُدْرِيَّ يَقُولُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَنْهَى عَنِ اخْتِنَاثِ الأَسْقِيَةِ. قَالَ عَبْدُ

5626. हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको यूनुस ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया कि मुझसे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने ह़ज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से सुना, कहा कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना कि आपने मश्कों

में (इख़्तिनाष़) से मना फ़र्माया है। अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया कि मअ़मर ने बयान किया या उनके अ़लावा ने कि इख़्तिनाष़ मश्क से मुँह लगाकर पानी पीने को कहते हैं। (राजेअ़ : 5625)

ا لله: قَالَ مَعْمَرٌ أَوْ غَيْرُهُ هُوَ الشُّرْبُ مِنْ أَفْوَاهِهَا. [راجع: ٥٦٢٥]

तश्रीह़ : व क़द जज़मल्ख़त्ताबी अन्न तफ़्सीरल्इख़्तिनाषि मिन कलामिज़्ज़ुहरी या'नी बक़ौल ख़त्ताबी लफ़्ज़ इख़्तिनाष़ की तफ़्सीर ज़ुहरी का कलाम है। मुस्नद अबूबक्र बिन अबी शैबा में है कि एक शख़्स़ ने मश्क से मुँह लगाकर पानी पिया उसके पेट में मश्क से एक छोटा सांप दाख़िल हो गया, इसलिये आँह़ज़रत (ﷺ) ने इस अ़मल से सख़्ती के साथ मना किया। जिन रिवायतों से जवाज़ षाबित होता है उनको इस वाक़िये ने मन्सूख़ क़रार दे दिया है। (फ़त्हुल बारी) ये तशरीह़ गुज़िश्ता ह़दीष़ के बारे में है।

बाब : 24 मश्क के मुँह से मुँह लगाकर पानी पीना

٢٤- باب الشُّرْبِ مِنْ فَمِ السِّقَاءِ

5627. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, कहा हमसे अय्यूब ने बयान किया कि हमसे इक्रिमा ने कहा, तुम्हें मैं चंद छोटी छोटी बातें न बता दूँ जिन्हें हमसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया था कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मश्क के मुँह से मुँह लगाकर पानी पीने की मुमानअ़त की थी और (इससे भी आपने मना किया था कि) कोई शख़्स़ अपने पड़ौसी को अपनी दीवार में खूँटी वग़ैरह गाड़ने से रोके। (राजेअ़ : 2463)

٥٦٢٧- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ ا لله حَدَّثَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ قَالَ : قَالَ لَنَا عِكْرِمَةُ أَلاَ أُخْبِرُكُمْ بِأَشْيَاءَ قِصَارٍ حَدَّثَنَا بِهَا أَبُو هُرَيْرَةَ؟ نَهَى رَسُولُ ا لله ﷺ عَنِ الشُّرْبِ مِنْ فَمِ الْقِرْبَةِ، أَوِ السِّقَاءِ. وَأَنْ يَمْنَعَ جَارَهُ أَنْ يَغْرِزَ خَشَبَهُ فِي دَارِهِ. [راجع: ٢٤٦٣]

तश्रीह़ : हमारे ज़माने में मुसलमानों को क्या हो गया है कि ऐसी ऐसी छोटी छोटी बातों पर भी लड़ झगड़कर अ़दालत तक नौबत ले जाते और दुनिया व दीन बर्बाद करते हैं।

5628. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा हमको अय्यूब ने ख़बर दी, उन्हें इक्रिमा ने और उन्हें ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने मश्क के मुँह से पानी पीने की मुमानअ़त फ़र्मा दी थी। (राजेअ़ : 2463)

٥٦٢٨- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ أَخْبَرَنَا أَيُّوبُ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ا لله عَنْهُ نَهَى النَّبِيُّ ﷺ أَنْ يُشْرَبَ مِنْ فِي السِّقَاءِ. [راجع: ٢٤٦٣]

5629. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ़ ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद ह़ज़्ज़ाअ ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने मश्क के मुँह से पानी पीने को मना किया था।

٥٦٢٩- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ ا لله عَنْهُمَا قَالَ نَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنِ الشُّرْبِ مِنْ فِي السِّقَاءِ

तश्रीह़ : मश्क के मुँह से मुँह लगाकर पानी पीना ख़त़रनाक काम है मुम्किन है कि मश्क से इतना पानी बिला क़स्द पेट में चला जाए कि जान के लाले पड़ जाएँ लिहाज़ा चेरा कारे कुनद आक़िल कि बअ़द आयद पशीमानी। सुराह़ी का भी यही ह़ुक्म है।

बाब 25 : बर्तन में सांस

٢٥- باب النَّهْيِ عَنِ التَّنَفُّسِ فِي

नहीं लेना चाहिये

الإِنَاء

5630. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे शैबान ने बयान किया, उनसे यह्या बिन अबी कष़ीर ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी क़तादा ने, उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जब तुममें से कोई शख़्स पानी पिये तो (पीने के) बर्तन में (पानी पीते वक़्त) सांस न ले और जब तुममें से कोई शख़्स पेशाब करे तो दाहिने हाथ को ज़कर पर न फेरे और जब इस्तिंजा करे तो दाहिने हाथ से न करे। (राजेअ: 153)

٥٦٣٠- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ يَحْيَى عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي قَتَادَةَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِذَا شَرِبَ أَحَدُكُمْ فَلاَ يَتَنَفَّسْ فِي الإِنَاءِ وَإِذَا بَالَ أَحَدُكُمْ فَلاَ يَمْسَحْ ذَكَرَهُ بِيَمِينِهِ وَإِذَا تَمَسَّحَ أَحَدُكُمْ فَلاَ يَتَمَسَّحْ بِيَمِينِهِ)).

[راجع: ١٥٣]

उनकी ख़िदमात के लिये अल्लाह ने बायाँ हाथ बनाया है और सीधा हाथ खाने—पीने के लिये और तमाम ज़रूरी कामों के लिये है, इसलिये हर हाथ से उसकी हैष़ियत का काम लेना चाहिये बर्तन में सांस लेना तिब्ब की रू से भी नुक़्सानदेह है। इस तरह मेअ़दा के बुख़ारात इसमें दाख़िल हो सकते हैं (फ़त्हुलबारी)

बाब 26 : पानी दो या तीन सांस में पीना चाहिये

٢٦- باب الشُّرْبِ بِنَفَسَيْنِ أَوْ ثَلاَثَةٍ

5631. हमसे अबू आ़सिम और अबू नुऐम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे उ़र्वा बिन ष़ाबित ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे षुमामा बिन अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, बयान किया कि ह़ज़रत अनस (रज़ि.) दो या तीन सांसों में पानी पीते थे और कहा कि रसूले करीम (ﷺ) तीन सांसों में पानी पीते थे।

٥٦٣١- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ وَأَبُو نُعَيْمٍ قَالاَ: حَدَّثَنَا عَزْرَةُ بْنُ ثَابِتٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي ثُمَامَةُ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: كَانَ أَنَسٌ يَتَنَفَّسُ فِي الإِنَاءِ مَرَّتَيْنِ أَوْ ثَلاَثًا وَزَعَمَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَتَنَفَّسُ ثَلاَثًا.

तश्रीह : त़बरानी की रिवायत में है कि जब आपके पास पानी का प्याला आता तो पहले आप बिस्मिल्लाह पढ़कर पीना शुरू करते, दरम्यान में तीन सांस लेते आख़िर में अल्ह़म्दुलिल्लाह पढ़ते और फ़र्माया कि पीने के इब्तिदा में बिस्मिल्लाह पढ़ो आख़िर में अल्ह़म्दु लिल्लाह कहो (फ़त्हुल बारी)

बाब 27 : सोने के बर्तन में खाना और पीना ह़राम है

٢٧- باب الشُّرْبِ فِي آنِيَةِ الذَّهَبِ

5632. हमसे ह़फ़्स़ बिन उ़मर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे ह़कीम बिन अबी लैला ने, उन्होंने बयान किया कि ह़ुज़ैफ़ा बिन यमान (रज़ि.) मदाइन में थे। उन्होंने पानी मांगा तो एक देहाती ने उनको चँदी के बर्तन में पानी लाकर दिया, उन्होंने बर्तन को उस पर फेंक मारा फिर कहा मैंने बर्तन सिर्फ़ इस वजह से फेंका है कि उस शख़्स को मैं इससे मना कर चुका था लेकिन ये बाज़ न आया और रसूले करीम (ﷺ) ने हमें रेशम व दीबा के पहनने से और सोने और चाँदी के बर्तन में खाने—पीने से मना किया था और आपने

٥٦٣٢- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الْحَكَمِ ابْنِ أَبِي لَيْلَى قَالَ: كَانَ حُذَيْفَةُ بِالْمَدَائِنِ، فَاسْتَسْقَى، فَأَتَاهُ دِهْقَانٌ بِقَدَحِ فِضَّةٍ، فَرَمَاهُ بِهِ فَقَالَ: إِنِّي لَمْ أَرْمِهِ إِلاَّ أَنِّي نَهَيْتُهُ فَلَمْ يَنْتَهِ وَإِنَّ النَّبِيَّ ﷺ نَهَانَا عَنِ الْحَرِيرِ وَالدِّيبَاجِ وَالشُّرْبِ فِي آنِيَةِ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ، وَقَالَ: ((هُنَّ لَهُمْ

इर्शाद फ़र्माया था कि ये चीज़ें उन कुफ़्फ़ार के लिये दुनिया में है और तुम्हें आख़िरत में मिलेंगी। (राजेअ़ : 5426)

فِي الدُّنْيَا، وَهِيَ لَكُمْ فِي الآخِرَةِ)).
[راجع: ٥٤٢٦]

तश्रीह : चाँदी सोने के बर्तनों में मुसलमानों को खाना पीना क़त्अन हराम है मगर अकष़र हवा पर दौड़ने लगे जो ऐसे हराम चीज़ों का फ़ख़्रिया इस्ते'माल करते हैं और अल्लाह से नहीं डरते कि ऐसे कामों का अंजाम बुरा होता है कि मरने के बाद आख़िरत में ये दौलत दोज़ख़ का अंगारा बनकर सामने आएगी। लिहाज़ा फ़िल फ़ौर ऐसे सरमायादारों को ऐसी हरकतों से बाज़ रहना ज़रूरी है। रिवायत मे शहरे मदाइन का ज़िक्र है जो दजला के किनारे बग़दाद से सात फ़र्सख़ की दूरी पर आबाद था। ईरान के बादशाहों की राजधानी का शहर था और उस जगह ऐवान किसरा की मशहूर इमारत थी उसे ख़िलाफ़त हज़रत उ़मर (रज़ि.) में हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) ने फ़तह किया। लफ़्ज़ दहक़ान दाल के कसरा और ज़म्मा दोनों तरह से है। ईरान में ये लफ़्ज़ मोहल्ले के सरदार के लिये इस्तेमाल होता था बाद में बतौरे मुहावरा देहातियों पर बोला जाने लगा।

बाब 28 : चाँदी के बर्तन में पीना हराम है

٢٨- باب آنِيَةِ الْفِضَّةِ

5633. हमसे मुहम्मद बिन मुष़न्ना ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्ने अबी अ़दी ने बयान किया, उनसे इब्ने औ़न ने बयान किया, उनसे मुजाहिद ने और उनसे इब्ने अबी लैला ने बयान किया कि हम हज़रत हुज़ैफ़ह (रज़ि.) के साथ निकले फिर उन्होंने नबी करीम (ﷺ) का ज़िक्र किया कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया था कि सोने और चाँदी के प्याले में न पिया करो और न रेशम व दीबा पहना करो क्योंकि ये चीज़ें उनके लिये दुनिया में हैं और तुम्हारे लिये आख़िरत में हैं। (राजेअ़ : 5426)

٥٦٣٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ عَنِ ابْنِ عَوْنٍ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنِ ابْنِ أَبِي لَيْلَى قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ حُذَيْفَةَ وَذَكَرَ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((لاَ تَشْرَبُوا فِي آنِيَةِ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ، وَلاَ تَلْبَسُوا الْحَرِيرَ وَالدِّيبَاجَ، فَإِنَّهَا لَهُمْ فِي الدُّنْيَا وَلَكُمْ فِي الآخِرَةِ)). [راجع: ٥٤٢٦]

मा'लूम हुआ कि दुनिया में कुफ़्फ़ार सोने और चाँदी के बर्तनों को बड़े फ़ख़्र और तकब्बुर के अंदाज़ में मालदारों के सामने उसमें खाने पीने की चीज़ें पेश करते हैं इसलिये मुसलमानों को बचने का हुक्म दिया गया।

5634. हमसे इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इमाम मालिक बिन अनस ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने, उनसे ज़ैद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुर्रहमान बिन अबीबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने बयान किया और उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतह्हरा हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) ने बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया जो शख़्स चाँदी के बर्तन में कोई चीज़ पीता है तो वो शख़्स अपने पेट में दोज़ख़ की आग भड़का रहा है।

٥٦٣٤- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ حَدَّثَنِي مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ عَنْ نَافِعٍ عَنْ زَيْدِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ الصِّدِّيقِ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((الَّذِي يَشْرَبُ فِي إِنَاءِ الْفِضَّةِ إِنَّمَا يُجَرْجِرُ فِي بَطْنِهِ نَارَ جَهَنَّمَ)).

तश्रीह : लफ़्ज़ युजरजिरु का मस़दर जरजरा है जो ऊँट की आवाज़ पर बोला जाता है। जब ऊँट स़यहान में चिल्लाता है पस मा'लूम हुआ कि चाँदी के बर्तन में पानी पीने वाले के पेट में दोज़ख़ की आग ऊँट जैसी आवाज़ पैदा करेगी। **अल्लाहुम्म अइज़्ना मिन्हा आमीन।**

5635. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे

٥٦٣٥- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ

अबू अवाना ने बयान किया, उनसे अश्अष़ बिन सुलैम ने, उनसे मुआविया बिन सुवैद बिन मुक़र्रिन ने और उनसे ह़ज़रत बरा बिन आज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें सात चीज़ों का हुक्म दिया था और सात चीज़ों से हमको मना किया था। आँह़ज़रत (ﷺ) ने हमें बीमार की अयादत करने, जनाज़े के पीछे चलने, छींकने वाले के जवाब में यरह़मुकल्लाह कहने, दा'वत करने वाले की दा'वत को क़ुबूल करने, सलाम फैलाने, मज़्लूम की मदद करने और क़सम खाने के बाद कफ़्फ़ारा अदा करने का हुक्म फ़र्माया था और आँह़ज़रत (ﷺ) ने हमें सोने की अंगूठी से, चाँदी में पीने या (फ़र्माया) चाँदी के बर्तन में पीने से, मयष़र (ज़ीन या कजावा के ऊपर रेशम का गद्दा) के इस्ते'माल करने से और क़सी (अत्राफ़ मिस्र में तैयार किया जाने वाला एक कपड़ा जिसमें रेशम के धागे भी इस्ते'माल होते थे) के इस्ते'माल करने से और रेशम व दीबा और इस्तिबराक़ पहनने से मना किया था। (राजेअ: 1239)

حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنِ الأَشْعَثِ بْنِ سُلَيْمٍ عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ سُوَيْدِ بْنِ مُقَرِّنٍ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ قَالَ: أَمَرَنَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِسَبْعٍ وَنَهَانَا عَنْ سَبْعٍ أَمَرَنَا بِعِيَادَةِ الْمَرِيضِ وَاتِّبَاعِ الْجَنَازَةِ، وَتَشْمِيتِ الْعَاطِسِ وَإِجَابَةِ الدَّاعِي، وَإِفْشَاءِ السَّلاَمِ وَنَصْرِ الْمَظْلُومِ، وَإِبْرَارِ الْمُقْسِمِ وَنَهَانَا عَنْ خَوَاتِيمِ الذَّهَبِ، وَعَنِ الشُّرْبِ فِي الْفِضَّةِ وَعَنِ الْمَيَاثِرِ، وَالْقَسِّيِّ، وَعَنْ لُبْسِ الْحَرِيرِ وَالدِّيبَاجِ وَالإِسْتَبْرَقِ.

[راجع: ١٢٣٩]

बाब 29 : कटोरों में पीना दुरुस्त है

٢٩- باب الشُّرْبِ فِي الأَقْدَاحِ

5636. मुझसे अ़म्र बिन अ़ब्बास ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रह़मान ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे सालिम अबी नज़्र ने, उनसे उम्मे फ़ज़ल के गुलाम उ़मर ने और उनसे ह़ज़रत उम्मुल फ़ज़ल (रज़ि.) ने कि लोगों ने अ़रफ़ा के दिन नबी करीम (ﷺ) के रोज़े के बारे में शुब्हा किया तो आँह़ज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में दूध का एक कटोरा पेश किया गया और आपने उसे नोश फ़र्माया। (राजेअ: 1658)

٥٦٣٦- حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ عَبَّاسٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ سَالِمٍ أَبِي النَّضْرِ عَنْ عُمَيْرٍ مَوْلَى أُمِّ الْفَضْلِ عَنْ أُمِّ الْفَضْلِ أَنَّهُمْ شَكُّوا فِي صَوْمِ النَّبِيِّ ﷺ يَوْمَ عَرَفَةَ فَبُعِثَ إِلَيْهِ بِقَدَحٍ مِنْ لَبَنٍ فَشَرِبَهُ [راجع: ١٦٥٨]

मा'लूम हुआ कि सोने चाँदी के अलावा कटोरों और प्यालों में पानी व शरबत पीना दुरुस्त है।

बाब 30 : नबी करीम (ﷺ) के प्याले और आपके बर्तन में पीना

٣٠- باب الشُّرْبِ مِنْ قَدَحِ النَّبِيِّ ﷺ وَآنِيَتِهِ

ह़ज़रत अबू बुर्दा (रज़ि.) ने बयान किया कि मुझसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) ने कहा हाँ मैं तुम्हें उस प्याले में पिलाऊँगा जिसमें नबी करीम (ﷺ) ने पिया था।

وَقَالَ أَبُو بُرْدَةَ قَالَ لِي عَبْدُ اللهِ بْنُ سَلاَمٍ: أَلاَ أَسْقِيكَ فِي قَدَحٍ شَرِبَ النَّبِيُّ ﷺ فِيهِ.

तश्रीह : ह़ाफ़िज़ साह़ब फ़र्माते हैं अय तबर्रुकन बिही क़ाल इब्नुल्मुनीर कअन्नहू अराद बिहाज़िहित्तर्जुमति वज़अ तवह्हम मंय्यक़उ फ़ी ख़ियालिही अन अश्रब फ़ी क़दहिन्नबिय्यि (ﷺ) बअ़द वफ़ातिही तसर्रुफ़ फ़ी मिल्किल्ग़ैरि बिग़ैरि इज़्निन फबय्यन अनस्सलफ़ कानू यफ़्अलून ज़ालिक लिअन्नन्नबिय्य (ﷺ)

ला यूरिषु व मा तरकहू फहुव सदक़तुन वल्लज़ी यज़्हरू अन्नस्सदक़तल्मज़्कूरत मिन जिन्सिल्औक़ाफ़िल् मुत्लककति यन्तफ़िउ बिहा मंय्यहताजु इलैहा व तर्क़िरू तहत यदिम्मय्यूंतमिनु अलैहा अल्ख (फ़त्हुल्बारी)

बाब से मुराद ये है कि तबर्रुक के लिये आँहज़रत (ﷺ) के प्याले में पानी पीना। इब्ने मुनीर ने कहा कि हज़रत इमाम बुख़ारी ने ये बाब मुनअक़िद करके इस वहम को दूर किया है जो कुछ लोगों के ख़्याल में वाक़ेअ हुआ कि आँहज़रत (ﷺ) के प्याले में आपकी वफ़ात के बाद पानी पीना जबकि आपकी इजाज़त भी हासिल नहीं है, ये ग़ैर के माल में तसर्रुफ़ करना है लिहाज़ा नाजाइज़ है। हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने इस वहम का दिफ़ाअ फ़र्माया है और बयान किया है कि सलफ़े सालेहीन आपके प्याले में पानी पिया करते थे इसलिये कि आँहज़रत (ﷺ) का तर्का किसी की मिल्कियत में नहीं है बल्कि वो सब सदक़ा है और ज़ाहिर बात ये है कि सदक़ा मज़्कूरा साबिक़ा औक़ाफ़ की क़िस्म से है इससे हर ज़रूरतमंद फ़ायदा उठा सकता है और वो एक दीनदार शख़्स की हिफ़ाज़त में बतौरे अमानत क़ायम रहेगा जैसा कि हज़रत सहल और हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम के पास ऐसे प्याले महफ़ूज़ थे और आपका जुब्बा हज़रत अस्मा बिन्ते अबीबक्र (रज़ि.) की तहवील में था। ये जुम्ला तारीख़ी यादगार हैं जिनको देखने और इस्ते'माल कर लेने से आँहज़रत (ﷺ) की याद ताज़ा हो जाती है और ख़ुशी भी हासिल होती है बरकत से यही मुराद है वरना असल बरकत तो सिर्फ़ अल्लाह पाक ही के हाथ में है **तबारकल्लज़ी बियदिहिल्मुल्कु व हुव अला कुल्लि शैइन क़दीर** (अल् मुल्क : 1)

5637. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, कहा हमसे अबू ग़स्सान ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबू हाज़िम ने बयान किया, उनसे हज़रत सहल बिन सअद (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) से एक अरब औरत का ज़िक्र किया गया फिर आपने हज़रत अबू उसैद साएदी (रज़ि.) को उनके पास उन्हें लाने के लिये किसी को भेजने का हुक्म दिया चुनाँचे उन्होंने भेजा और वो आईं और बनी साएदा के क़िले में उतरीं और आँहज़रत (ﷺ) भी तशरीफ़ लाए और उनके पास गये। आपने देखा कि एक औरत सर झुकाए बैठी है। आँहज़रत (ﷺ) ने जब उनसे बातचीत की तो वो कहने लगीं कि मैं तुमसे अल्लाह की पनाह माँगती हूँ। आँहज़रत (ﷺ) ने उस पर फ़र्माया कि मैंने तुझको दी! लोगों ने बाद में उनसे पूछा। तुम्हें मा'लूम भी है ये कौन थे। उस औरत ने जवाब दिया कि नहीं। लोगों ने कहा कि ये तो रसूलुल्लाह (ﷺ) थे तुमसे निकाह के लिये तशरीफ़ लाए थे। इस पर वो बोलीं कि फिर तो मैं बड़ी बदबख़्त हूँ (कि आँहुज़ूर ﷺ को नाराज़ करके वापस कर दिया) इसी दिन हुज़ूरे अकरम (ﷺ) तशरीफ़ लाए और सक़ीफ़ा बनी साएदा में अपने सहाबा के साथ बैठे फिर फ़र्माया सहल! पानी पिलाओ। मैंने उनके लिये ये प्याला निकाला और उन्हें उसमें पानी पिलाया। हज़रत सहल (रज़ि.) हमारे लिये भी वही प्याला निकालकर लाए और हमने भी उसमें पानी पिया। रावी ने बयान किया कि

٥٦٣٧- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ حَدَّثَنَا أَبُو غَسَّانَ قَالَ حَدَّثَنِي أَبُو حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ذُكِرَ لِلنَّبِيِّ ﷺ امْرَأَةٌ مِنَ الْعَرَبِ، فَأَمَرَ أَبَا أُسَيْدٍ السَّاعِدِيَّ أَنْ يُرْسِلَ إِلَيْهَا، فَأَرْسَلَ إِلَيْهَا فَقَدِمَتْ. فَنَزَلَتْ فِي أُجُمِ بَنِي سَاعِدَةَ، فَخَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ حَتَّى جَاءَهَا فَدَخَلَ عَلَيْهَا، فَإِذَا امْرَأَةٌ مُنَكِّسَةٌ رَأْسَهَا، فَلَمَّا كَلَّمَهَا النَّبِيُّ ﷺ قَالَتْ: أَعُوذُ بِاللهِ مِنْكَ فَقَالَ: ((قَدْ أَعَذْتُكِ مِنِّي))، فَقَالُوا لَهَا: أَتَدْرِينَ مَنْ هَذَا؟ قَالَتْ: لاَ. قَالُوا: هَذَا رَسُولُ اللهِ ﷺ جَاءَ لِيَخْطُبَكِ. قَالَتْ كُنْتُ أَنَا أَشْقَى مِنْ ذَلِكَ. فَأَقْبَلَ النَّبِيُّ ﷺ يَوْمَئِذٍ حَتَّى جَلَسَ فِي سَقِيفَةِ بَنِي سَاعِدَةَ، هُوَ وَأَصْحَابُهُ ثُمَّ قَالَ: اسْقِنَا يَا سَهْلُ، فَخَرَجْتُ لَهُمْ بِهَذَا الْقَدَحِ فَأَسْقَيْتُهُمْ فِيهِ. فَأَخْرَجَ لَنَا سَهْلٌ ذَلِكَ

الْقَدَحَ فَشَرِبْنَا مِنْهُ، قَالَ: ثُمَّ اسْتَوْهَبَهُ عُمَرُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ بَعْدَ ذَلِكَ فَوَهَبَهُ لَهُ. [راجع: ٥٢٦٦]

फिर बाद में ख़लीफ़ा उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रज़ि.) ने उनसे ये मांग लिया था और उन्होंने ये उनको हिबा कर दिया था। (राजेअ : 5266)

तश्रीह : ख़ुद रिवायत से ज़ाहिर है कि इस औरत ने लाइल्मी में ये लफ़्ज़ कहे जिनको सुनकर आँहज़रत (ﷺ) वापस तशरीफ़ ले गये। बाद में जब उसे इल्म हुआ तो उसने अपनी बदबख़्ती पर इज़्हारे अफ़सोस किया। हज़रत सहल बिन सअद के पास नबी करीम (ﷺ) का एक प्याला जिससे आप पिया करते थे महफ़ूज़ था जुम्ला फ़ख़रुज लना सहल में क़ाइल हज़रत अबू हाज़िम रावी हैं जैसा कि मुस्लिम में सराहत मौजूद है। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) उस ज़माने में वाली मदीना थे। हज़रत सहल बिन सअद (रज़ि.) ने वो प्याले आपके हवाले कर दिया था। ये तारीख़ी आसार हैं जिनके बारे में कहा गया है।

तिल्क आसारुना तदुल्लु अलैना फन्ज़ुरू बअदना इलल्आसारि

٥٦٣٨- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ مُدْرِكٍ قَالَ: حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ حَمَّادٍ أَخْبَرَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ عَاصِمٍ الأَحْوَلِ قَالَ: رَأَيْتُ قَدَحَ النَّبِيِّ ﷺ عِنْدَ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، وَكَانَ قَدِ انْصَدَعَ فَسَلْسَلَهُ بِفِضَّةٍ قَالَ : وَهُوَ قَدَحٌ جَيِّدٌ عَرِيضٌ مِنْ نُضَارٍ قَالَ أَنَسٌ : لَقَدْ سَقَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ فِي هَذَا الْقَدَحِ أَكْثَرَ مِنْ كَذَا وَكَذَا. قَالَ : وَقَالَ ابْنُ سِيرِينَ : إِنَّهُ كَانَ فِيهِ حَلْقَةٌ مِنْ حَدِيدٍ فَأَرَادَ أَنَسٌ أَنْ يَجْعَلَ مَكَانَهَا حَلْقَةً مِنْ ذَهَبٍ أَوْ فِضَّةٍ فَقَالَ لَهُ أَبُو طَلْحَةَ: لاَ تُغَيِّرَنَّ شَيْئًا صَنَعَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَتَرَكَهُ. [راجع: ٣١٠٩]

5638. हमसे हसन बिन मुदरिक ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे यह्या बिन हम्माद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अबू अवाना ने ख़बर दी, उनसे आसिम अह्वल ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) का प्याला हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) के पास देखा है वो फट गया था तो हज़रत अनस (रज़ि.) ने उसे चाँदी से जोड़ दिया। फिर हज़रत आसिम ने बयान किया कि वो उम्दह चौड़ा प्याला है। चमकदार लकड़ी का बना हुआ। बयान किया कि हज़रत अनस (रज़ि.) ने बताया कि मैंने इस प्याले से हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को बारहा पिलाया है। रावी ने बयान किया कि इब्ने सीरीन ने कहा कि उस प्याले में लौहे का एक हल्क़ा था। हज़रत अनस (रज़ि.) ने चाहा कि उसकी जगह चाँदी या सोने का हल्क़ा जुड़वा दें लेकिन अबू तलहा (रज़ि.) ने उनसे कहा कि जिसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बनाया है उसमें हर्गिज़ तब्दीली न कर। चुनाँचे उन्होंने ये इरादा छोड़ दिया। (राजेअ : 3109)

तश्रीह : हज़रत आसिम अह्वल और हज़रत अली बिन हसन और हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने बसरा में वो प्याला देखा है और उन तमाम हज़रात ने इसमे पिया है। तफ़्सील के लिये देखो फ़त्हुल बारी

٣١- باب شُرْبِ الْبَرَكَةِ وَالْمَاءِ الْمُبَارَكِ

बाब 30 : नबी करीम (ﷺ) के प्याले और आपके बर्तन में पीना

٥٦٣٩- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنِ الأَعْمَشِ، قَالَ حَدَّثَنِي سَالِمُ بْنُ

5639. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे आ'मश ने बयान किया, उनसे

أَبِي الْجَعْدِ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا هَذَا الْحَدِيثَ قَالَ: قَدْ رَأَيْتُنِي مَعَ النَّبِيِّ ﷺ وَقَدْ حَضَرَتِ الْعَصْرُ وَلَيْسَ مَعَنَا مَاءٌ غَيْرَ فَضْلَةٍ فَجُعِلَ فِي إِنَاءٍ فَأُتِيَ النَّبِيُّ ﷺ بِهِ فَأَدْخَلَ يَدَهُ فِيهِ وَفَرَّجَ أَصَابِعَهُ، ثُمَّ قَالَ : ((حَيَّ عَلَى أَهْلِ الْوَضُوءِ الْبَرَكَةُ مِنَ اللهِ)). فَلَقَدْ رَأَيْتُ الْمَاءَ يَتَفَجَّرُ مِنْ بَيْنِ أَصَابِعِهِ. فَتَوَضَّأَ النَّاسُ وَشَرِبُوا. فَجَعَلْتُ لاَ آلُو مَا جَعَلْتُ فِي بَطْنِي مِنْهُ فَعَلِمْتُ أَنَّهُ بَرَكَةٌ. قُلْتُ لِجَابِرٍ : كَمْ كُنْتُمْ يَوْمَئِذٍ؟ قَالَ أَلْفًا وَأَرْبَعَمِائَةٍ. تَابَعَهُ عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ عَنْ جَابِرٍ وَقَالَ حُصَيْنٌ وَعَمْرُو بْنُ مُرَّةَ عَنْ سَالِمٍ عَنْ جَابِرٍ خَمْسَ عَشْرَةَ مِائَةً وَتَابَعَهُ سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ عَنْ جَابِرٍ.[راجع: ٣٥٧٦]

सालिम बिन अबी अल जअ़दि ने और उनसे ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) के साथ था और अ़स्र की नमाज़ का वक़्त हो गया थोड़े से बचे हुए पानी के सिवा हमारे पास और कोई पानी नहीं था उसे एक बर्तन में रखकर नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत मे लाया गया आँह़ज़रत (ﷺ) ने उसमें अपना हाथ डाला और अपनी उँगलियाँ फैला दीं फिर फ़र्माया आओ वुज़ू कर लो ये अल्लाह की त़रफ़ से बरकत है। मैंने देखा कि पानी आँह़ज़रत (ﷺ) की उँगलियों के दरम्यान से फूट फूटकर निकल रहा था चुनाँचे सब लोगों ने उससे वुज़ू किया और पिया भी। मैंने उसकी परवाह किये बग़ैर कि पेट में कितना पानी जा रहा है ख़ूब पानी पिया क्योंकि मुझे मा'लूम हो गया था कि बरकत का पानी है। मैंने ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) से पूछा आप लोग उस वक़्त कितनी ता'दाद में थे? बतलाया कि एक ह़ज़ार चार सौ। इस रिवायत की मुताबअ़त अ़म्र ने ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) से की है और हुसैन और अ़म्र बिन मुर्रह ने सालिम से बयान किया और उनसे ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) ने कि स़ह़ाबा कि उस वक़्त ता'दाद पन्द्रह सौ थी। इसकी मुताबअ़त सईद बिन मुसय्यिब ने ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) से की है। (राजेअ : 3576)

तश्रीह : इस ह़दीष़ से मुतबर्रक पानी पीना ष़ाबित हुआ। मुअ़जिज़-ए-नबवी की बरकत से ये पानी इस क़द्र बढ़ा कि पन्द्रह सौ अस़्ह़ाबे किराम को सैराब कर गया। और हुसैन की रिवायत को ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने मग़ाज़ी में और अ़म्र बिन मुर्रह की रिवायत को मुस्लिम और इमाम अह़मद बिन ह़ंबल ने वस़्ल किया। क़स्त़लानी ने कहा कि इस मुक़ाम पर स़ह़ीह़ बुख़ारी के तीन रुबअ़ ख़त्म हो गये और आख़िरी चौथा रुबअ़ बाक़ी रह गया है। या अल्लाह! जिस त़रह़ तूने ये तीन रुबअ़ पूरे कराए हैं इस चौथे रुबअ़ को भी मेरी क़लम से पूरा करा दे तेरे लिये कुछ मुश्किल नहीं है। या अल्लाह! मेरी दुआ़ क़ुबूल कर ले और जिन जिन भाइयों ने तेरे प्यारे नबी के कलाम की ख़िदमत की है उनको दुनिया और आख़िरत में बेशुमार बरकतें अ़ता फ़र्मा और हम सबको बख़्श दीजियो। **आमीन या रब्बल्आलमीन** (राज़)

75. किताबुल मरज़ा

किताब बीमारी और उनके इलाज के बारे में

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बाब 1 : बीमारी के कफ़्फ़ारा होने का बयान और अल्लाह तआला ने सूरह निसा में फ़र्माया जो कोई बुरा करेगा उसको बदला मिलेगा

١ - باب مَا جَاءَ فِي كَفَّارَةِ الْمَرَضِ وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿مَنْ يَعْمَلْ سُوءًا يُجْزَ بِهِ﴾ [النساء: ١٢٣]

तश्रीह : हज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने ये आयत इस मुक़ाम पर लाकर गोया मुअतज़िला का रद्द किया है जो कहते हैं हर गुनाह के बदले अगर तौबा न करे तो आख़िरत का अ़ज़ाब लाज़मी है और इसी आयत से दलील लेते हैं। ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने ये इशारा किया कि बदला से ये मुराद हो सकता है कि दुनिया ही में गुनाह के बदले बीमारी, मुसीबत या तकलीफ़ पहुँच जाएगी तो गुनाह का बदला हो गया। इस सूरत में आख़िरत का अ़ज़ाब होना लाज़मी नहीं है। ह़ज़रत इमाम अह़मद बिन ह़ंबल और अ़ब्दुल्लाह बिन हुमैद और ह़ाकिम ने बसनदे सह़ीह़ रिवायत किया है कि जब ये आयत उतरी तो ह़ज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया अब तो अ़ज़ाब से छंटने की कोई शक्ल न रही। आपने फ़र्माया कि ऐ अबूबक्र! अल्लाह तबारक व तआला तुझ पर रह़म करे और तेरी बख़्शिश करे क्या तुझ पर बीमारी नहीं आती, तकलीफ़ नहीं आती, रंज नहीं आती, मुसीबत नहीं आती? उन्होंने कहा क्यूँ नहीं फ़र्माया कि बस यही बदला है।

5640. हमसे अबुल यमान ह़कम बिन नाफ़ेअ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझको उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने ख़बर दी और उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुत़ह्हरा ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जो मुसीबत भी किसी मुसलमान को पहुँचती है अल्लाह तआला उसे उसके गुनाह का कफ़्फ़ारा कर देता है (किसी मुसलमान के) एक कांटा भी अगर जिस्म के किसी ह़िस्सा में चुभ जाए। तो वो भी उस शख़्स के गुनाहों के लिये कफ़्फ़ारा बन जाता है।

٥٦٤٠- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ الْحَكَمُ بْنُ نَافِعٍ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَا مِنْ مُصِيبَةٍ تُصِيبُ الْمُسْلِمَ إِلاَّ كَفَّرَ اللهُ بِهَا عَنْهُ حَتَّى الشَّوْكَةُ يُشَاكُهَا)).

5641,42. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्हों ने कहा हमसे अ़ब्दुल मलिक बिन अ़म्र ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ज़ुहैर बिन मुहम्मद ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन अ़म्र बिन हलहला ने, उनसे अ़ता बिन यसार ने और उनसे ह़ज़रत अबू सईद ख़ुदरी और ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मुसलमान जब भी किसी परेशानी, बीमारी, रंज व मलाल, तकलीफ़ और ग़म में मुब्तला हो जाता है यहाँ तक कि अगर उसे कोई कांटा भी चुभ जाए तो अल्लाह तआ़ला उसे उसके गुनाहों का कफ़्फ़ारा बना देता है।

٥٦٤١، ٥٦٤٢- حدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ عَمْرٍو، حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ مُحَمَّدٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرِو بْنُ حَلْحَلَةَ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَا يُصِيبُ الْمُسْلِمَ مِنْ نَصَبٍ وَلاَ وَصَبٍ وَلاَ هَمٍّ وَلاَ حَزَنٍ وَلاَ أَذًى وَلاَ غَمٍّ حَتَّى الشَّوْكَةَ يُشَاكُهَا إِلاَّ كَفَّرَ اللهُ بِهَا مِنْ خَطَايَاهُ)).

5643. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह़्या ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ने, उनसे स़अ़द ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन कअ़ब ने और उनसे उनके वालिद ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि मोमिन की मिष़ाल पौधे की सबसे पहली निकली हुई हरी शाख़ जैसी है कि हवा उसे कभी झुका देती है और कभी बराबर कर देती है और मुनाफ़िक़ की मिष़ाल स़नूबर के पेड़ जैसी है कि वो सीधा ही खड़ा रहता है और आख़िर एक झोके में कभी उखड़ ही जाता है। और ज़करिया ने बयान किया कि हमसे सअ़द ने बयान किया, उनसे इब्ने कअ़ब ने बयान किया, उनसे उनके वालिद माजिद मुहतरमुल मुक़ाम कअ़ब (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से यही बयान किया।

٥٦٤٣- حدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ سُفْيَانَ عَنْ سَعْدٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنُ كَعْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَثَلُ الْمُؤْمِنِ كَالْخَامَةِ مِنَ الزَّرْعِ تُفَيِّئُهَا الرِّيحُ مَرَّةً وَتَعْدِلُهَا مَرَّةً، وَمَثَلُ الْمُنَافِقِ كَالأَرْزَةِ لاَ تَزَالُ حَتَّى يَكُونَ انْجِعَافُهَا مَرَّةً وَاحِدَةً)) وَقَالَ زَكَرِيَّا حَدَّثَنِي سَعْدٌ حَدَّثَنِي ابْنُ كَعْبٍ عَنْ أَبِيهِ كَعْبٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

5644. हमसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, कहा कि मुझसे मुहम्मद बिन फ़ुलैह ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उनसे बनी आ़मिर बिन लवी के एक मर्द हिलाल बिन अ़ली ने, उनसे अ़ता बिन यसार ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया मोमिन की मिष़ाल पौधे की पहली निकली हुई शाख़ जैसी है कि जब भी हवा चलती है उसे झुका देती है फिर वो सीधा होकर मुसीबत बर्दाश्त करने में कामयाब हो जाता है और बदकार की मिष़ाल स़नूबर के पेड़ जैसी है कि सख़्त होता है और सीधा खड़ा रहता है यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला जब चाहता है उसे उखाड़कर फेंक देता है।

٥٦٤٤- حدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ قَالَ حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ فُلَيْحٍ قَالَ حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ هِلاَلِ بْنِ عَلِيٍّ مِنْ بَنِي عَامِرِ بْنِ لُؤَيٍّ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَثَلُ الْمُؤْمِنِ كَمَثَلِ الْخَامَةِ مِنَ الزَّرْعِ مِنْ حَيْثُ أَتَتْهَا الرِّيحُ كَفَأَتْهَا فَإِذَا اعْتَدَلَتْ تَكَفَّأُ بِالْبَلاَءِ، وَالْفَاجِرُ كَالأَرْزَةِ صَمَّاءَ مُعْتَدِلَةً حَتَّى يَقْصِمَهَا اللهُ إِذَا شَاءَ)).

5645. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुर्रहमान बिन अबी सअ़सअ़ा ने, उन्होंने बयान किया कि मैंने सईद बिन यसार अबुल हुबाब से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह तआ़ला जिसके साथ ख़ैर व भलाई करना चाहता है उसे बीमारी की तकलीफ़ और दीगर मुसीबतों में मुब्तला कर देता है।

٥٦٤٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي صَعْصَعَةَ أَنَّهُ قَالَ: سَمِعْتُ سَعِيدَ بْنَ يَسَارٍ أَبَا الْحُبَابِ يَقُولُ سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَنْ يُرِدِ اللهُ بِهِ خَيْرًا يُصِبْ مِنْهُ)).

तश्रीह : इन सारी अह़ादीष़ के लाने का मक़्सद यही है कि मुसलमान पर त़रह़ त़रह़ की तकालीफ़ और तफ़क्कुरात आती ही रहती हैं लेकिन स़ब्र करके झेलता है नाशुक्री का कोई कलिमा ज़ुबान से नहीं निकालता गो कितनी ही तकलीफ़ हो मगर स़ब्र व शुक्र को नहीं छोड़ता, इन सबसे उसके गुनाह मुआ़फ़ होते रहते हैं और दरजात बढ़ते रहते हैं गोया ये सब आयत **मय्यँअ़मल सूअन युज्ज़ा बिही** (अन निसा : 110)

बाब 2 : बीमारी की सख़्ती (कोई चीज़ नहीं है)

٢- باب شِدَّةِ الْمَرَضِ

5646. हमसे क़बीस़ा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे आ'मश ने (दूसरी सनद) और ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने कहा कि मुझसे बिश्र बिन मुह़म्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, कहा हमको शुअ़बा ने ख़बर दी, उन्हें आ'मश ने, उन्हें अबू वाइल ने, उन्हें मसरूक़ ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने मर्ज़े वफ़ात की तकलीफ़) रसूलुल्लाह (ﷺ) से ज़्यादा किसी में नहीं देखी।

٥٦٤٦- حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الأَعْمَشِ ح وَحَدَّثَنِي بِشْرُ بْنُ مُحَمَّدٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: مَا رَأَيْتُ أَحَدًا أَشَدَّ عَلَيْهِ الْوَجَعُ مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ.

आपको इस क़दर शदीद बुख़ार था कि चादर मुबारक भी बहुत सख़्त गर्म हो गई थी, बार बार ग़शी त़ारी होती और आप बेहोश होकर होश में हो जाते फिर ग़शी त़ारी हो जाती और बवक़्ते होश ज़ुबाने मुबारक से ये अल्फ़ाज़ निकलते **अल्लाहुम्म अल्हिक़्नी बिर्रफ़ीक़िल्आ़ला (ﷺ)**

5647. हमसे मुह़म्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान स़ौरी ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम तैमी ने, उनसे ह़ारिष़ बिन सुवैद ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में आपके मर्ज़ के ज़माने में ह़ाज़िर हुआ आँह़ज़रत (ﷺ) उस वक़्त बड़े तेज़ बुख़ार में थे। मैंने अ़र्ज़ किया आँह़ज़रत (ﷺ) को बड़ा तेज़ बुख़ार है। मैंने ये भी कहा कि ये बुख़ार आँह़ज़रत (ﷺ) को इसलिये इतना तेज़ है कि आपका ष़वाब भी दोगुना है। आपने फ़र्माया कि हाँ जो मुसलमान किसी भी तकलीफ़ में गिरफ़्तार

٥٦٤٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ التَّيْمِيِّ عَنِ الْحَارِثِ بْنِ سُوَيْدٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ فِي مَرَضِهِ وَهُوَ يُوعَكُ وَعْكًا شَدِيدًا وَقُلْتُ: إِنَّكَ لَتُوعَكُ وَعْكًا شَدِيدًا، قُلْتُ: إِنَّ ذَاكَ بِأَنَّ لَكَ أَجْرَيْنِ قَالَ: ((أَجَلْ مَا مِنْ مُسْلِمٍ يُصِيبُهُ

होता है तो अल्लाह तआला उसकी वजह से उसके गुनाह इस तरह झाड़ देता है जैसे पेड़ के पत्ते झड़ जाते हैं।

(दीगर मक़ामात : 5648, 5660, 5661, 5667)

أَذًى إِلاَّ حَاتَّ اللهُ عَنْهُ خَطَايَاهُ كَمَا تَحَاتُّ وَرَقُ الشَّجَرِ)).

[أطرافه في : ٥٦٤٨، ٥٦٦٠، ٥٦٦١، ٥٦٦٧].

और नेक लोगों के दरजात बुलंद होते हैं अल्लाह पाक मुझको और तमाम क़ारेइने बुख़ारी शरीफ़ को बवक़्ते नज़्अ आसानी अता करे और ख़ात्मा बिल ख़ैर नसीब हो। या अल्लाह! मेरी भी यही दुआ है **रब्बि तवफ़्फ़नी मुस्लिमंव्वल्हिक़्नी बिस्सालिहीन आमीन, अल्लाहुम्म अल्हिक़्नी बिर्रफ़ीक़िल्आला बिरहमतिक या अर्हमर्राहिमीन**

बाब 3 : बलाओं में सबसे ज़्यादा आज़माइश अंबिया की होती है उसके बाद दर्जा ब दर्जा अल्लाह के दूसरे बन्दों की होती रहती है।

٣- باب أَشَدُّ النَّاسِ بَلاَءً الأَنْبِيَاءُ ثُمَّ الأَوَّلُ فَالأَوَّلُ

5648. हमसे अब्दान ने बयान किया, उनसे अबू हम्ज़ा ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम तैमी ने, उनसे हारिष़ बिन सुवैद ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ आपको शदीद बुख़ार था मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! आपको बहुत तेज़ बुख़ार है आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया हाँ मुझे तंहा ऐसा बुख़ार होता है जितना तुम जैसे दो आदमी को होता है मैंने अर्ज़ किया ये इसलिये कि आँहज़रत (ﷺ) का ष़वाब भी दोगुना है? फ़र्माया कि हाँ यही बात है, मुसलमान को जो भी तकलीफ़ पहुँचती है कांटा हो या उससे ज़्यादा तकलीफ़ देने वाली कोई चीज़ तो जैसे पेड़ अपने पत्तों को गिराता है इसी तरह अल्लाह पाक उस तकलीफ़ को उसके गुनाहों का कफ़्फ़ारा बना देता है। (राजेअ : 5647)

٥٦٤٨- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ عَنْ أَبِي حَمْزَةَ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ التَّيْمِيِّ عَنِ الْحَارِثِ بْنِ سُوَيْدٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ دَخَلْتُ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ وَهُوَ يُوعَكُ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّكَ تُوعَكُ وَعْكًا شَدِيدًا قَالَ: ((أَجَلْ إِنِّي أُوعَكُ كَمَا يُوعَكُ رَجُلاَنِ مِنْكُمْ)) قُلْتُ: ذَلِكَ بِأَنَّ لَكَ أَجْرَيْنِ، قَالَ : ((أَجَلْ ذَلِكَ كَذَلِكَ مَا مِنْ مُسْلِمٍ يُصِيبُهُ أَذًى شَوْكَةٌ فَمَا فَوْقَهَا إِلاَّ كَفَّرَ اللهُ بِهَا سَيِّئَاتِهِ كَمَا تَحُطُّ الشَّجَرَةُ وَرَقَهَا)). [راجع: ٥٦٤٧]

तश्रीह : बाब का मतलब इस तरह पर निकला कि और पैग़म्बरों को आँहज़रत (ﷺ) पर क़यास किया और जब पैग़म्बरों पर अल्लाह तआला से ज़्यादा क़रीब होने की वजह से परेशानियाँ हुईं तो औलिया अल्लाह में भी यही निस्बत रहेगी जितना क़ुर्बे इलाही ज़्यादा होगा तकालीफ़ व मसाइब ज़्यादा आएँगी। हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) का ये क़ायमकर्दा तर्जुमा ख़ुद एक हदीष़ है जिसे दारमी ने निकाला है हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं **व फ़ी हाज़िहिल्अहादीषि बशारतुन अज़ीमतुन लिकुल्लि मूमिनिन लिअन्नल्आदमी ला यन्फ़क्कु गालिबन मिन अलमिन बिसबबि मरज़िन औहमिन औ नहव ज़ालिक मिम्मा ज़ुक़िर** या'नी इन अहादीष़ में मोमिनों के लिये बड़ी बशारतें हैं इसलिये कि तकालीफ़ व मसाइब और बीमारियाँ दुनिया में अहले ईमान को पहुँचते रहते हैं मगर अल्लाह पाक उन सब पर उनको अज्रो ष़वाब और दरजाते आलिया अता करता है। राक़िमुल हुरूफ़ मुहम्मद दाऊद राज़ साहब की ज़िंदगी भी बेशतर आलाम व तफ़क्कुरात में ही गुज़री है और उम्मीदे क़वी है कि इन सबका अज्र गुनाहों का कफ़्फ़ारा होगा **व कज़ा अर्ज़ु मिर्रहमति रब्बी आमीन**

बाब : 4 बीमार की मिज़ाज पुर्सी का वाजिब होना

٤- باب وُجُوبِ عِيَادَةِ الْمَرِيضِ

5649. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे अबू वाइल ने और उनसे ह़ज़रत अबू मूसा अश्अरी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया भूखे को खाना खिलाओ और मरीज़ की एयादत या'नी मिज़ाजपुर्सी करो और क़ैदी को छुड़ाओ। (राजेअ़ : 3046)

٥٦٤٩- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَطْعِمُوا الْجَائِعَ وَعُودُوا الْمَرِيضَ وَفُكُّوا الْعَانِي)).[راجع: ٣٠٤٦]

ये मुसलमानों के दूसरे मुसलमानों पर निहायत अहम और बहुत ही बड़े हुक़ूक़ हैं जिनकी अदायगी वाजिब व लाज़मी है।

5650. हमसे ह़फ़्स़ बिन उ़मर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा कि मुझे अश्अ़ष़ बिन सुलैम ने ख़बर दी, कहा कि मैंने मुआविया बिन सुवैद बिन मुक़र्रिन से सुना, उनसे ह़ज़रत बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें सात बातों का हुक्म दिया था और सात बातों से मना किया था। हमें आँह़ज़रत (ﷺ) ने सोने की अंगूठी, रेशम, दीबा, इस्तबरक़ (रेशमी कपड़े) पहनने से और क़स्सिय्यी और मयष़रा (रेशमी) कपड़ों की दूसरी तमाम क़िस्में पहनने से मना किया था और आप (ﷺ) ने हमें ये हुक्म दिया था कि हम जनाज़े के पीछे चलें, मरीज़ की मिज़ाज पुर्सी करें और सलाम को फैलाएँ। (राजेअ़ : 1239)

٥٦٥٠- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ : أَخْبَرَنِي أَشْعَثُ بْنُ سُلَيْمٍ قَالَ سَمِعْتُ مُعَاوِيَةَ بْنَ سُوَيْدِ بْنِ مُقَرِّنٍ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: أَمَرَنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ بِسَبْعٍ، وَنَهَانَا عَنْ سَبْعٍ، نَهَانَا عَنْ خَاتَمِ الذَّهَبِ، وَلُبْسِ الْحَرِيرِ، وَالدِّيبَاجِ، وَالإِسْتَبْرَقِ، وَعَنِ الْقَسِّيِّ وَالْمِيثَرَةِ، وَأَمَرَنَا أَنْ نَتْبَعَ الْجَنَائِزَ وَنَعُودَ الْمَرِيضَ وَنُفْشِيَ السَّلاَمَ.
[راجع: ١٢٣٩]

तश्रीह : इस रिवायत में रावी ने बहुत सी बातें छोड़ दी हैं सातवीं बात जो मना है वो चाँदी के बर्तन में खाना और पीना मुराद है। मरीज़ की मिज़ाजपुर्सी करना बहुत बड़ा कारे ष़वाब है जैसा कि मुस्लिम में है। **इन्नल्मुस्लिम इज़ा आद अख़ाहुल्मुस्लिम लम यज़ल फ़ी ख़र्फ़तिल्जन्नति** मुसलमान जब अपने भाई मुसलमान की एयादत करता है उस बीच में वो हमेशा गोया जन्नत के बाग़ों की सैर कर रहा और वहाँ मेवे खा रहा है। **वफ़्फ़नल्लाहु लिमा युहिब्बु व यर्ज़ा आमीन**

बाब 5 : बेहोश की एयादत करना

٥- باب عِيَادَةِ الْمُغْمَى عَلَيْهِ

5651. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे इब्नुल मुंकदिर ने, उन्होंने ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैं एक मर्तबा बीमार पड़ा तो नबी करीम (ﷺ) और ह़ज़रत अबूबक्र सि़द्दीक़ (रज़ि.) पैदल मेरी एयादत को तशरीफ़

٥٦٥١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ ابْنِ الْمُنْكَدِرِ سَمِعَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: مَرِضْتُ مَرَضًا فَأَتَانِي النَّبِيُّ ﷺ يَعُودُنِي

लाए उन बुज़ुर्गों ने देखा कि मुझ पर बेहोशी ग़ालिब है। चुनाँचे आँहज़रत (ﷺ) ने वुज़ू किया और अपने वुज़ू का पानी मुझ पर छिड़का, उससे मुझे होश हुआ तो मैंने देखा कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) तशरीफ़ रखते हैं। मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं अपने माल में क्या करूँ किस तरह उसका फ़ैसला करूँ? आँहज़रत (ﷺ) ने मुझे कोई जवाब नहीं दिया यहाँ तक कि मीराष़ की आयत नाज़िल हुई। (राजेअ़ : 194)

وَأَبُو بَكْرٍ وَهُمَا مَاشِيَانِ فَوَجَدَانِي أُغْمِيَ عَلَيَّ فَتَوَضَّأَ النَّبِيُّ ﷺ ثُمَّ صَبَّ وَضُوءَهُ عَلَيَّ فَأَفَقْتُ فَإِذَا النَّبِيُّ ﷺ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ كَيْفَ أَصْنَعُ فِي مَالِي؟ كَيْفَ أَقْضِي فِي مَالِي؟ فَلَمْ يُجِبْنِي بِشَيْءٍ حَتَّى نَزَلَتْ آيَةُ الْمِيرَاثِ. [راجع: ١٩٤]

या'नी यूसीकुमुल्लाहु फ़ी औलादिकुम (अन् निसा : 11) ये आयत उतरी जिसने औलाद के हुक़ूक़ मुतअ़य्यन कर दिये और किसी को इस बारे में पूछने की ज़रूरत नहीं रही, कोताही करने वालों की ज़िम्मेदारी ख़ुद उन पर है।

बाब 6 : रियाह़ रुक जाने से जिसे मिर्गी का आ़रज़ा हो उसकी फ़ज़ीलत का बयान

٦- باب فَضْلِ مَنْ يُصْرَعُ مِنَ الرِّيحِ

तश्रीह : ह़ाफ़िज़ साह़ब फ़र्माते हैं **इह़बासुर्रीह़ि क़द यकूनु सबबन लिस़्सरइ व हिय इल्लतुन तम्नअ़ल्आजाअर्रईसत मिन इन्फ़िआलिहा मन्अ़न ग़ैर तामिन** या'नी मिर्गी कभी रियाह़ के रुक जाने से होती है और ये ऐसी बीमारी है कि आज़ा-ए-रईसा को उनके काम से बिलकुल रोक देती है, इसीलिये उसमें आदमी अकष़र बेहोश हो जाता है कुछ बार दिमाग़ में रदी बुख़ारात चढ़कर उसे प्रभावित कर देते हैं कभी ये बीमारी जिन्नात और नुफ़ूसे ख़बीष़ा के अ़मल से ही वजूद में आ जाती है। (फ़त्ह़ुल बारी)

5652. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह़्या बिन अबी कष़ीर ने बयान किया, उनसे इमरान अबूबक्र ने बयान किया, उनसे अ़ता बिन अबी रिबाह़ ने बयान किया, कहा कि मुझसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा, तुम्हें मैं एक जन्नती औ़रत को न दिखा दूँ? मैंने अ़र्ज़ किया कि ज़रूर दिखाएँ, कहा कि एक स्याह औ़रत नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में आई और कहा कि मुझे मिर्गी आती है और उसकी वजह से मेरा सतर खुल जाता है। मेरे लिये अल्लाह तआ़ला से दुआ़ कीजिए। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अगर तू चाहे तो स़ब्र कर तुझे जन्नत मिलेगी और अगर चाहे तो मैं तेरे लिये अल्लाह से इस मर्ज़ से नजात की दुआ़ कर दूँ। उसने अ़र्ज़ किया कि मैं स़ब्र करूँगी फिर उसने अ़र्ज़ किया कि मिर्गी के वक़्त मेरा सतर खुल जाता है। आँह़ज़रत (ﷺ) अल्लाह तआ़ला से इसकी दुआ़ कर दें कि सतर न खुला करे। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उसके लिये दुआ़ फ़र्माई।

٥٦٥٢- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ عِمْرَانَ أَبِي بَكْرٍ قَالَ: حَدَّثَنِي عَطَاءُ بْنُ أَبِي رَبَاحٍ قَالَ: قَالَ لِي ابْنُ عَبَّاسٍ: أَلاَ أُرِيكَ امْرَأَةً مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ؟ قُلْتُ بَلَى! قَالَ: هَذِهِ الْمَرْأَةُ السَّوْدَاءُ أَتَتِ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَتْ: إِنِّي أُصْرَعُ وَإِنِّي أَتَكَشَّفُ فَادْعُ اللهَ لِي قَالَ: ((إِنْ شِئْتِ صَبَرْتِ وَلَكِ الْجَنَّةُ، وَإِنْ شِئْتِ دَعَوْتُ اللهَ أَنْ يُعَافِيَكِ)) فَقَالَتْ: أَصْبِرُ، فَقَالَتْ : إِنِّي أَتَكَشَّفُ فَادْعُ اللهَ لِي أَنْ لاَ أَتَكَشَّفَ، فَدَعَا لَهَا.

तश्रीह : बज़्ज़ार की रिवायत में यूँ है कि वो औ़रत कहने लगी मैं शैतान ख़बीष़ से डरती हूँ कहीं मुझको नंगा न करे। आपने फ़र्माया कि तुझको ये डर हो तो का'बा के पर्दे को आकर पकड़ लिया कर। वो जब डरती तो का'बा के पर्दे से लटक जाती मगर ये लाइलाज रही। इमाम इब्ने तैमिया (रह़.) ने कहा है कि जब पच्चीस साल की उ़म्र में मिर्गी का

आ़रज़ा हो तो वो लाइलाज हो जाती है। मौलाना अ़ब्दुल ह़ई मरह़ूम फ़िरंगी मुह़ल्ला जो मशहूर आ़लिम हैं बआ़रज़ा मिर्गी 35 साल की उ़म्र में इंतिक़ाल कर गये। रह़िमहुल्लाह (वह़ीदी)

ह़ाफ़िज़ स़ाह़ब फ़र्माते हैं **व फ़ीहि दलीलुन अ़ला जवाज़िन तर्किल्दावीनि व फ़ीहि अन्न इलाजल्अम्राज़ि कुल्लुहा बिद्दुआ़इ वल्इल्तिजाइ इलल्लाहि व अन्हुजिन व अन्फ़ुसिन मिनल्इलाजि बिल्अक़ाक़ीर व अन्न ताष़ीर ज़ालिक व इन्फ़िआ़लल्बदनि अ़न्हु आ'ज़मु मिन ताष़ीरिल्अदवियतिल्बदनियतिल्खारिकति** (फ़त्हुल्बारी) या'नी इस ह़दीष़ में इस अम्र पर भी दलील है कि दवाओं से इ़लाज तर्क कर देना भी जाइज़ है और ये कि तमाम बीमारियों का इ़लाज दुआ़ओं से और अल्लाह की त़रफ़ रुजूअ़ करना अदवियात से ज़्यादा नफ़ा बख़्श इ़लाज है और बदन अदवियात से ज़्यादा दुआ़ओं का अष़र कुबूल करता है और इसमें शक व शुब्हा की कोई बात ही नहीं है। इसलिये दुआ़एँ मोमिन का आख़िरी हथियार हैं। या अल्लाह! स़मीमे क़ल्ब के साथ दुआ़ है कि मुझको तमाम अम्राज़े क़ल्बी व क़ालिबी से शिफ़ाए कामिला अ़त़ा फ़र्मा आमीन षुम्म आमीन।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ أَخْبَرَنَا مَخْلَدٌ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، أَخْبَرَنِي عَطَاءٌ أَنَّهُ رَأَى أُمَّ زُفَرَ تِلْكَ امْرَأَةٌ طَوِيلَةٌ سَوْدَاءُ عَنْ سِتْرِ الْكَعْبَةِ.

हमसे मुह़म्मद बिन मुंकदिर ने बयान किया, कहा हमको मुख़लद बिन यज़ीद ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने जुरैज ने, कहा मुझको अ़त़ा बिन अबी रिबाह़ ने ख़बर दी कि उन्होंने ह़ज़रत उम्मे ज़फ़र (रज़ि.) उन लम्बी और स्याह ख़ातून को का'बा के पर्दे पर देखा। (ऊपर की ह़दीष़ में इसका ज़िक्र है)

٧- باب فَضْلِ مَنْ ذَهَبَ بَصَرُهُ

बाब 7 : उसका ष़वाब जिसकी बीनाई जाती रहे

٥٦٥٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ الْهَادِ عَنْ عَمْرٍو مَوْلَى الْمُطَّلِبِ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: إِنَّ اللهَ تَعَالَى قَالَ: ((إِذَا ابْتَلَيْتُ عَبْدِي بِحَبِيبَتَيْهِ فَصَبَرَ عَوَّضْتُهُ مِنْهُمَا الْجَنَّةَ)) يُرِيدُ عَيْنَيْهِ. تَابَعَهُ أَشْعَثُ بْنُ جَابِرٍ وَأَبُو ظِلاَلٍ عَنْ أَنَسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

5653. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, कहा कि मुझसे यज़ीद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन हाद ने बयान किया, उनसे मुत़्त़लिब बिन अ़ब्दुल्लाह बिन जज़्ब के ग़ुलाम अ़म्र ने और उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है कि जब मैं अपने किसी बन्दा को उसके दो मह़बूब अंगों (आँखों) के बारे में आज़माता हूँ (या'नी नाबीना कर देता हूँ) और वो इस पर स़ब्र करता है तो उसके बदले में उसे जन्नत देता हूँ।

٨- باب عِيَادَةِ النِّسَاءِ الرِّجَالَ

وَعَادَتْ أُمُّ الدَّرْدَاءِ رَجُلاً مِنْ أَهْلِ الْمَسْجِدِ مِنَ الأَنْصَارِ

बाब 8 : औ़रतें मर्दों की बीमारी में पूछने के लिये

जा सकती हैं। ह़ज़रत उम्मुद दर्दा (रज़ि.) मस्जिद वालों में से एक अंस़ारी की एयादत को आई थीं।

ये ह़ज़रत अबू दर्दा (रज़ि.) की बीवी थीं जो मस्जिदे नबवी में अपने शौहर की मिज़ाजपुर्सी के लिये ह़ाज़िर हुई थीं। ये उम्मे दर्दा (रज़ि.) के नाम से मौसूम थीं। बाप का नाम अबू ह़दरद क़बीला असलम से हैं बड़ी अ़क़्लमंद सुन्नत की इत्तिबाअ़ करने वाली, आ़लिमा फ़ाज़िला ख़ातून थीं। उनका इंतिक़ाल ह़ज़रत अबू दर्दा (रज़ि.) से दो साल पहले मुल्के शाम में बअ़हदे ख़िलाफ़ते उ़ष़्मान (रज़ि.) हो गया था।

5654. हमसे क़ुतैबा ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने, उनसे हिशाम बिन ड़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) हिजरत करके मदीना तशरीफ़ लाए तो अबूबक्र (रज़ि.) और बिलाल (रज़ि.) को बुख़ार हो गया। बयान किया कि फिर मैं उनके पास (एयादत के लिये) गई और पूछा, मुहतरम वालिद बुज़ुर्गवार आपका मिज़ाज कैसा है? बिलाल (रज़ि.) से भी पूछा कि आपका क्या हाल है? बयान किया कि जब हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) को बुख़ार हुआ तो वो ये शे'र पढ़ा करते थे, हर शख़्स अपने घर वालों में सुबह करता है और मौत उसके तस्मे से भी ज़्यादा क़रीब है। और बिलाल (रज़ि.) को जब अफ़ाक़ा होता तो ये शे'र पढ़ते थे, काश मुझे मा'लूम होता कि क्या मैं फिर एक रात वादी में गुज़ार सकूँगा और मेरे चारों तरफ़ इज़्ख़र और जलील (मक्का मुकर्रमा की घास) के जंगल होंगे और क्या मैं कभी मजन्ना (मक्का से चंद मील के फ़ासला पर एक बाज़ार) के पानी पर उतरूँगा और क्या फिर कभी शामा और तुफ़ैल (मक्का के क़रीब दो पहाड़ों) को मैं अपने सामने देख सकूँगा । हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुई और आपको उसकी ख़बर दी आपने दुआ फ़र्माई कि ऐ अल्लाह! हमारे दिल में मदीना की मुहब्बत भी इतनी ही कर दे जितनी मक्का की मुहब्बत है बल्कि उससे भी ज़्यादा और उसकी आबो हवा को हमारे मुवाफ़िक़ कर दे और हमारे लिये उसके मुद्द और साअ में बरकत अता कर, अल्लाह उसका बुख़ार कहीं ओर जगह मुंतक़िल कर दे उसे मुक़ामे जुहफ़ा में भेज दे। (राजेअ : 1889)

٥٦٥٤- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ عَنْ مَالِكٍ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ أَنَّهَا قَالَتْ لَمَّا قَدِمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ الْمَدِينَةَ وُعِكَ أَبُو بَكْرٍ وَبِلاَلٌ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَتْ فَدَخَلْتُ عَلَيْهِمَا قُلْتُ: يَا أَبَتِ كَيْفَ تَجِدُكَ وَيَا بِلاَلُ كَيْفَ تَجِدُكَ؟ قَالَتْ وَكَانَ أَبُو بَكْرٍ إِذَا أَخَذَتْهُ الْحُمَّى يَقُولُ :

كُلُّ امْرِىءٍ مُصَبَّحٌ فِي أَهْلِهِ
وَالْمَوْتُ أَدْنَى مِنْ شِرَاكِ نَعْلِهِ

وَكَانَ بِلاَلٌ إِذَا أَقْلَعَتْ عَنْهُ يَقُولُ :

أَلاَ لَيْتَ شِعْرِي هَلْ أَبِيتَنَّ لَيْلَةً
بِوَادٍ وَحَوْلِي إِذْخِرٌ وَجَلِيلُ
وَهَلْ أَرِدَنْ يَوْمًا مِيَاهَ مَجَنَّةٍ
وَهَلْ تَبْدُوَنْ لِي شَامَةٌ وَطُفَيلُ

قَالَتْ عَائِشَةُ: فَجِئْتُ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَأَخْبَرْتُهُ فَقَالَ: ((اللَّهُمَّ حَبِّبْ إِلَيْنَا الْمَدِينَةَ كَحُبِّنَا مَكَّةَ أَوْ أَشَدَّ اللَّهُمَّ وَصَحِّحْهَا وَبَارِكْ لَنَا فِي مُدِّهَا وَصَاعِهَا وَانْقُلْ حُمَّاهَا فَاجْعَلْهَا بِالْجُحْفَةِ)).[راجع: ١٨٨٩]

तशरीह : हज़रत बिलाल बिन रिबाह (रज़ि.) मशहूर बुज़ुर्ग हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) के आज़ादकर्दा हैं। इस्लाम क़ुबूल करने पर उनको अहले मक्का ने बेहद दुख दिया। उमय्या बिन ख़ल्फ़ उनका आक़ा बहुत ही ज़्यादा सताता था अल्लाह की शान यही उमय्या मलऊन जंगे बद्र में हज़रत बिलाल (रज़ि.) के हाथों क़त्ल हुआ। आख़िरी ज़माना में मुल्के शाम में मुक़ीम हो गये थे और 63 साल की उम्र में सन 20 हिजरी में दमिश्क़ या हलब में इंतिक़ाल फ़र्माया, (रज़ियल्लाहु अन्हु व अरज़ाहु)

बाब 9 : बच्चों की एयादत भी जाइज़ है

٩- باب عِيَادَةِ الصِّبْيَانِ

5655. हमसे हज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि मुझे आसिम ने ख़बर

٥٦٥٥- حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَاصِمٌ قَالَ:

दी, कहा कि मैंने अबू उ़ष्मान से सुना, और उन्होंने उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) की एक स़ाहबज़ादी (ह़ज़रत ज़ैनब रज़ि.) ने आपको कहलवा भेजा। उस वक़्त हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के साथ ह़ज़रत सअ़द (रज़ि.) और हमारा ख़्याल है कि ह़ज़रत उबई बिन कअ़ब (रज़ि.) थे कि मेरी बच्ची बिस्तरे मर्ग पर पड़ी है इसलिये आँह़ज़रत (ﷺ) हमारे यहाँ तशरीफ़ लाएँ। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उन्हें सलाम कहलवाया और फ़र्माया कि अल्लाह तआ़ला को इख़्तियार है जो चाहे दे और जो चाहे ले ले हर चीज़ उसके यहाँ मुतअ़य्यन व मा'लूम है। इसलिये अल्लाह से इस मुस़ीबत पर अज्र की उम्मीदवार रहो और स़ब्र करो। स़ाहबज़ादी ने फिर दोबारा क़सम देकर एक आदमी बुलाने को भेजा। चुनाँचे आप खड़े हुए और हम भी आपके साथ खड़े हो गये फिर बच्ची आँह़ज़रत (ﷺ) की गोद में उठाकर रखी गई और वो जाँकनी के आ़लम में परेशान थी। आपकी आँखों में आंसू आ गये। इस पर ह़ज़रत सअ़द (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! ये क्या है? हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया ये रह़मत है। अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों में से जिसके दिल में चाहता है रखता है और अल्लाह तआ़ला भी अपने उन्हीं बन्दों पर रह़म करता है जो ख़ुद भी रह़म करने वाले होते हैं। (राजेअ़ : 1284)

سَمِعْتُ أَبَا عُثْمَانَ عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ ابْنَةً لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَرْسَلَتْ إِلَيْهِ وَهُوَ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَسَعْدٌ وَأُبَيُّ بْنُ كَعْبٍ نَحْسِبُ أَنَّ ابْنَتِي قَدْ حُضِرَتْ فَاشْهَدْنَا فَأَرْسَلَ إِلَيْهَا السَّلاَمَ وَيَقُولُ: ((إِنَّ للهِ مَا أَخَذَ وَمَا أَعْطَى وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهُ مُسَمًّى فَلْتَحْتَسِبْ وَلْتَصْبِرْ)) فَأَرْسَلَتْ تُقْسِمُ عَلَيْهِ فَقَامَ النَّبِيُّ ﷺ وَقُمْنَا فَرُفِعَ الصَّبِيُّ فِي حِجْرِ النَّبِيِّ ﷺ وَنَفْسُهُ تَقَعْقَعُ فَفَاضَتْ عَيْنَا النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ لَهُ سَعْدٌ مَا هَذَا يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: ((هَذِهِ رَحْمَةٌ وَضَعَهَا اللهُ فِي قُلُوبِ مَنْ شَاءَ مِنْ عِبَادِهِ وَلاَ يَرْحَمُ اللهُ مِنْ عِبَادِهِ إِلاَّ الرُّحَمَاءَ)).

[راجع: ١٢٨٤]

तश्रीह : ह़दीष़ और इस बाब में मुत़ाबक़त ज़ाहिर है आँह़ज़रत (ﷺ) अपनी बेटी ह़ज़रत ज़ैनब (रज़ि.) की बच्ची की एयादत को तशरीफ़ ले गये जो जांकनी के आ़लम में थी जिसे देखकर आपकी आँखों से आंसू जारी हो गये और उनको आपने रह़म से ता'बीर किया।

बाब 10 : गाँव में रहने वालों की एयादत के लिये जाना

١٠- باب عِيَادَةِ الأَعْرَابِ

5656. हमसे मुअ़ल्ला बिन असद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन मुख़्तार ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) एक देहाती के पास उसकी एयादत के लिये तशरीफ़ ले गये। रावी ने बयान किया कि जब हुज़ूरे अकरम (ﷺ) किसी की एयादत को तशरीफ़ ले जाते तो मरीज़ से फ़र्माते कोई फ़िक्र की बात नहीं । इंशाअल्लाह ये मर्ज़ गुनाहों से पाक करने वाला है लेकिन उस देहाती ने आपके उन मुबारक कलिमात के जवाब में कहा कि आप कहते हैं कि ये पाक करने वाला है हर्गिज़ नहीं बल्कि ये बुख़ार एक बूढ़े पर

٥٦٥٦- حَدَّثَنَا مُعَلَّى بْنُ أَسَدٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُخْتَارٍ حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ دَخَلَ عَلَى أَعْرَابِيٍّ يَعُودُهُ قَالَ: وَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا دَخَلَ عَلَى مَرِيضٍ يَعُودُهُ قَالَ لَهُ: ((لاَ بَأْسَ طَهُورٌ إِنْ شَاءَ اللهُ تَعَالَى)). قَالَ قُلْتُ: طَهُورٌ! كَلاَّ بَلْ هِيَ حُمَّى تَفُورُ - أَوْ تَثُورُ - عَلَى

ग़ालिब आ गया है और उसे क़ब्र तक पहुँचा के रहेगा। आपने फ़र्माया कि फिर ऐसा ही होगा। (राजेअ : 3618)

شَيْخٍ كَبِيرٍ تُزِيرُهُ الْقُبُورُ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((فَنَعَمْ إِذًا)). [راجع: ٣٦١٨]

तश्रीह : बूढ़े के मुँह से बजाय कलिमात शुक्र के नाशुक्री का लफ़्ज़ निकला तो आपने भी ऐसा ही फ़र्माया और जो आपने फ़र्माया वही हुआ। एक तरफ़ आँहज़रत (ﷺ) की ख़ुश अख़्लाक़ी देखिए कि आप एक देहाती की एयादत के लिये तशरीफ़ ले गये और आपने अपनी पाकीज़ा दुआओं से उसे नवाज़ा। सच है इन्नका लअला ख़ुलुक़िन अज़ीम।

बाब 11 : मुश्रिक की एयादत भी जाइज़ है

١١- باب عِيَادَةِ الْمُشْرِكِ

5657. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे ष़ाबित ने और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने कि एक यहूदी लड़का (अ़ब्दूस नामी) नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत किया करता था वो बीमार हुआ तो हुज़ूरे अकरम (ﷺ) उसकी मिज़ाजपुर्सी के लिये तशरीफ़ लाए। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि इस्लाम क़ुबूल कर ले चुनाँचे उसने इस्लाम क़ुबूल कर लिया और सईद बिन मुसय्यिब ने बयान किया अपने वालिद से कि जब अबू तालिब की वफ़ात का वक़्त क़रीब हुआ तो आँहज़रत (ﷺ) उनके पास मिज़ाजपुर्सी के लिये तशरीफ़ ले गये। (राजेअ : 1356)

٥٦٥٧- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، أَنَّ غُلاَمًا لِيَهُودَ كَانَ يَخْدُمُ النَّبِيَّ ﷺ فَمَرِضَ فَأَتَاهُ النَّبِيُّ ﷺ يَعُودُهُ فَقَالَ ((أَسْلِمْ)) فَأَسْلَمَ. وَقَالَ سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِيهِ لَمَّا حُضِرَ أَبُو طَالِبٍ جَاءَهُ النَّبِيُّ ﷺ. [راجع: ١٣٥٦]

तश्रीह : दूसरी रिवायत में यूँ है कि उसने अपने बाप की तरफ़ देखा बाप ने कहा कि बेटा अबुल क़ासिम (ﷺ) जो फ़र्मा रहे हैं वो मान ले चुनाँचे वो मुसलमान हो गया। ये हदीष़ ऊपर गुज़र चुकी है हज़रत इमाम बुख़ारी ने इस बाब में इन अहादीष़ को लाकर ये ष़ाबित किया है कि अपने नौकरों और ग़ुलामों तक की अगर वो बीमार हों एयादत करना सुन्नत है।

बाब 12 : कोई शख़्स किसी मरीज़ की एयादत के लिये गया और वहीं नमाज़ का वक़्त हो गया तो वहीं लोगों के साथ बाजमाअ़त नमाज़ अदा करे

١٢- باب إِذَا عَادَ مَرِيضًا فَحَضَرَتِ الصَّلاَةُ فَصَلَّى بِهِمْ جَمَاعَةً

5658. हमसे मुहम्मद बिन मुष़न्ना ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन कष़ीर ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन उ़र्वा ने बयान किया, कहा कि मुझे मेरे वालिद ने ख़बर दी और उन्हें हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि कुछ सहाबा नबी करीम (ﷺ) की आपके एक मर्ज़ के दौरान मिज़ाजपुर्सी करने आए। आँहज़रत (ﷺ) ने उन्हें बैठकर नमाज़ पढ़ाई लेकिन सहाबा खड़े होकर ही नमाज़ पढ़ रहे थे। इसलिये आँहज़रत (ﷺ) ने उन्हें बैठने का इशारा किया। नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि इमाम इसलिये है कि उसकी

٥٦٥٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنِي يَحْيَى حَدَّثَنَا هِشَامٌ، قَالَ : أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ دَخَلَ عَلَيْهِ نَاسٌ يَعُودُونَهُ فِي مَرَضِهِ فَصَلَّى بِهِمْ جَالِسًا فَجَعَلُوا يُصَلُّونَ قِيَامًا فَأَشَارَ إِلَيْهِمْ أَنِ اجْلِسُوا فَلَمَّا فَرَغَ قَالَ : ((إِنَّ الإِمَامَ لَيُؤْتَمُّ بِهِ فَإِذَا رَكَعَ فَارْكَعُوا

وَإِذَا رَفَعَ فَارْفَعُوا وَإِنْ صَلَّى جَالِسًا فَصَلُّوا جُلُوسًا)). قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ قَالَ الْحُمَيْدِيُّ: هَذَا الْحَدِيثُ مَنْسُوخٌ لأَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ آخِرَ مَا صَلَّى صَلَّى قَاعِدًا وَالنَّاسُ خَلْفَهُ قِيَامٌ.

[راجع: ٦٨٨].

इक़्तिदा की जाए पस जब वो रुकूअ़ करे तो तुम भी रुकूअ़ करो, जब वो सर उठाए तो तुम (मुक़्तदी) भी सर उठाओ और अगर वो बैठकर नमाज़ पढ़े तो तुम भी बैठकर पढ़ो। अबू अ़ब्दुल्लाह ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि ह़ज़रत हुमैदी के क़ौल के मुताबिक़ ये ह़दीष़ मन्सूख़ है क्योंकि नबी करीम (ﷺ) ने आख़िर (मर्ज़ुल वफ़ात) में नमाज़ बैठकर पढ़ाई और लोग आपके पीछे खड़े होकर इक़्तिदा कर रहे थे। (राजेअ़ : 688)

तश्रीह : आँह़ज़रत (ﷺ) की मिज़ाजपुर्सी के लिये बहुत स़ह़ाबा ह़ाजिर हो गये उसी दौरान नमाज़ का वक़्त हो गया, इसलिये आपने बह़ालते मर्ज़ ही उनको बाजमाअ़त नमाज़ पढ़ाई और इमाम की इक़्तिदा के तह़त बैठकर नमाज़ पढ़ने का हुक्म फ़र्माया मगर बाद में ये मन्सूख़ हो गया जैसा कि ख़ुद इमाम बुख़ारी (रह़.) ने वज़ाह़त कर दी है बाब और ह़दीष़ मे मुत़ाबक़त ज़ाहिर है।

١٣- باب وَضْعِ الْيَدِ عَلَى الْمَرِيضِ

बाब 13 : मरीज़ के ऊपर हाथ रखना

٥٦٥٩- حَدَّثَنَا الْمَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ أَخْبَرَنَا الْجُعَيْدُ عَنْ عَائِشَةَ بِنْتِ سَعْدٍ أَنَّ أَبَاهَا قَالَ: تَشَكَّيْتُ بِمَكَّةَ شَكْوًا شَدِيدًا فَجَاءَنِي النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَعُودُنِي فَقُلْتُ: يَا نَبِيَّ اللهِ إِنِّي أَتْرُكُ مَالاً وَإِنِّي لَمْ أَتْرُكْ إِلاَّ بِنْتًا وَاحِدَةً فَأُوصِي بِثُلُثَيْ مَالِي وَأَتْرُكُ الثُّلُثَ فَقَالَ: ((لاَ))، فَقُلْتُ فَأُوصِي بِالنِّصْفِ وَأَتْرُكُ النِّصْفَ، قَالَ: ((لاَ)). قُلْتُ فَأُوصِي بِالثُّلُثِ وَأَتْرُكُ لَهَا الثُّلُثَيْنِ قَالَ: ((الثُّلُثُ وَالثُّلُثُ كَثِيرٌ)) ثُمَّ وَضَعَ يَدَهُ عَلَى جَبْهَتِهِ ثُمَّ مَسَحَ يَدَهُ عَلَى وَجْهِي وَبَطْنِي ثُمَّ قَالَ: ((اللَّهُمَّ اشْفِ سَعْدًا وَأَتْمِمْ لَهُ هِجْرَتَهُ)) فَمَا زِلْتُ أَجِدُ بَرْدَهُ عَلَى كَبِدِي فِيمَا يُخَالُ إِلَيَّ حَتَّى السَّاعَةِ.

5659. हमसे मक्की बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमको जुऐद बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने ख़बर दी, उन्हें आइशा बिन्ते सअ़द ने कि उनके वालिद (ह़ज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास़ रज़ि.) ने बयान किया कि मैं मक्का में बहुत सख़्त बीमार पड़ गया तो रसूलुल्लाह (ﷺ) मेरी मिज़ाजपुर्सी के लिये तशरीफ़ लाए। मैंने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी! (अगर वफ़ात हो गई तो) मैं माल छोड़ूँगा और मेरे पास सिवा एक लड़की के और कोई वारिष़ नहीं है। क्या मैं अपने दो तिहाई माल की वस़िय्यत कर दूँ और एक तिहाई छोड़ दूँ। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि नहीं मैंने अ़र्ज़ किया फिर आधे की वस़िय्यत कर दूँ और आधा (अपनी बच्ची के लिये) छोड़ दूँ फ़र्माया कि नहीं फिर मैंने कहा कि एक तिहाई की वस़िय्यत कर दूँ और बाक़ी दो तिहाई लड़की के लिये छोड़ दूँ? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि एक तिहाई कर दो और एक तिहाई भी बहुत है। फिर आँह़ज़रत (ﷺ) ने अपना हाथ उनकी पेशानी पर रखा (ह़ज़रत सअ़द रज़ि. ने बयान किया) और मेरे चेहरे और पेट पर आपने अपना मुबारक हाथ फेरा फिर फ़र्माया ऐ अल्लाह! सअ़द को शिफ़ा अ़त़ा फ़र्मा और इसकी हिजरत को मुकम्मल कर। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के दस्ते मुबारक की ठण्डक अपने जिगर के हिस़्से पर मैं अब तक पा रहा हूँ।

तश्रीह : ह़ज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास़ (रज़ि.) क़ुरैशी अ़शरा मुबश्शरह में से हैं। सतरह साल की उ़म्र मे इस्लाम लाए। तमाम ग़ज़्वात में शरीक रहे, बड़े मुस्तजाबुद् दअ़वात थे। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनके लिये क़ुबूलियते

दुआ की थी। उसकी बरकत से उनकी दुआ क़ुबूल होती थी। यही हैं जिनके लिये हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया था **अरमि या सअद फ़िदाक अबी व उम्मी** सन 55 हिजरी में मुक़ामे अक़ीक़ में वफ़ात पाई। सत्तर साल की उम्र थी मरवान बिन हकम ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। मदीने के क़ब्रिस्तान बक़ीउल ग़रक़द में दफ़न हुए रज़ियल्लाहु अन्हु व अरज़ाहू आमीन।

5660. हमसे क़ुतैबा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे आ'मश ने बयान किया, उनसे इब्राहीम तैमी ने बयान किया, उनसे हारिष़ बिन सुवैद ने बयान किया कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने कहा, मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आपको बुख़ार आया हुआ था मैंने अपने हाथ से आँहज़रत (ﷺ) का जिस्म छुआ और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! आपको तो बड़ा तेज़ बुख़ार है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया हाँ मुझे तुममें के दो आदमियों के बराबर बुख़ार आता है। मैंने अर्ज़ किया ये इसलिये होगा कि आँहज़रत (ﷺ) को दुगुना अज्र मिलता है। आपने फ़र्माया कि हाँ उसके बाद आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि किसी भी मुसलमान को मर्ज़ की तकलीफ़ या कोई और तकलीफ़ होती है तो अल्लाह तआला उसके गुनाहों को इस तरह गिराता है जैसे पेड़ अपने पत्तों को गिरा देता है। (राजेअ : 5647)

٥٦٦٠- حدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ التَّيْمِيِّ عَنِ الْحَارِثِ ابْنِ سُوَيْدٍ قَالَ: قَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْعُودٍ دَخَلْتُ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ وَهُوَ يُوعَكُ فَمَسِسْتُهُ بِيَدِي فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّكَ تُوعَكُ وَعْكًا شَدِيدًا فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَجَلْ إِنِّي أُوعَكُ كَمَا يُوعَكُ رَجُلاَنِ مِنْكُمْ)) فَقُلْتُ ذَلِكَ إِنَّ لَكَ أَجْرَيْنِ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَجَلْ))، ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَا مِنْ مُسْلِمٍ يُصِيبُهُ أَذًى مَرَضٌ فَمَا سِوَاهُ إِلاَّ حَطَّ اللهُ لَهُ سَيِّئَاتِهِ كَمَا تَحُطُّ الشَّجَرَةُ وَرَقَهَا)).

[راجع: ٥٦٤٧]

मा'लूम हुआ कि मुसीबत पहुँचने से बीमारियों में मुब्तला होने से और आफ़तों के आने से इंसान के गुनाह दूर होते हैं अगर इंसान सब्र व शुक्र के साथ सारी तकलीफ़ें सह लेता है।

बाब 14 : एयादत के वक़्त मरीज़ से क्या कहा जाए और मरीज़ क्या जवाब दे

١٤- باب مَا يُقَالُ لِلْمَرِيضِ، وَمَا يُجِيبُ

5661. हमसे क़बीसा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, उनसे आ'मश ने बयान किया, उनसे इब्राहीम तैमी ने, उनसे हारिष़ बिन सुवैद ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में जब आप बीमार थे हाज़िर हुआ। मैंने आपका जिस्म छुआ, आपको तेज़ बुख़ार था। मैंने अर्ज़ किया आपको तो बड़ा तेज़ बुख़ार है ये इसलिये होगा कि आपको दुगुना ष़वाब मिलेगा। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ और किसी मुसलमान को भी जब कोई तकलीफ़ पहुँचती

٥٦٦١- حدَّثَنَا قَبِيصَةُ قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ التَّيْمِيِّ عَنِ الْحَارِثِ بْنِ سُوَيْدٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ فِي مَرَضِهِ فَمَسِسْتُهُ وَهُوَ يُوعَكُ وَعْكًا شَدِيدًا فَقُلْتُ إِنَّكَ لَتُوعَكُ وَعْكًا شَدِيدًا وَذَلِكَ أَنَّ لَكَ أَجْرَيْنِ قَالَ: ((أَجَلْ وَمَا مِنْ مُسْلِمٍ يُصِيبُهُ

أذى إلاَّ حَاتَتْ خَطَايَاهُ عَنْهُ كَمَا تَحَاتُ وَرَقُ الشَّجَرِ)). [راجع: ٥٦٤٧]

है तो उसके गुनाह इस तरह झड़ जाते हैं जैसे पेड़ के पत्ते झड़ जाते हैं। (राजेअ़ : 5647)

बाब और ह़दीष़ में मुताबक़त ज़ाहिर है मरीज़ की हिम्मत अफ़ज़ाई के लिये उसे स़ेह़तमंद होने और रह़मत और बख़्शिश और ष़वाब की बशारत देना मुनासिब है।

٥٦٦٢- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، عَنْ خَالِدٍ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ دَخَلَ عَلَى رَجُلٍ يَعُودُهُ فَقَالَ ﷺ: ((لاَبَأْسَ طَهُورٌ إِنْ شَاءَ اللهُ)) فَقَالَ: كَلاَّ بَلْ هِيَ حُمَّى تَفُورُ عَلَى شَيْخٍ كَبِيرٍ كَيْمَا تُزِيرَهُ الْقُبُورَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((فَنَعَمْ إِذًا)). [راجع: ٣٦١٦]

5662. हमसे इस्ह़ाक़ बिन शाहीन वास्ती ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे ख़ालिद ह़ज़्ज़ाअ ने, उनसे इक्रिमा ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) एक शख़्स़ की एयादत के लिये तशरीफ़ ले गये और उनसे फ़र्माया कि कोई फ़िक्र नहीं अगर अल्लाह ने चाहा। (ये मर्ज़) गुनाहों से पाक करने वाला होगा लेकिन उसने ये जवाब दिया कि हर्गिज़ नहीं ये तो ऐसा बुख़ार है जो एक बूढ़े पर ग़ालिब आ चुका है और उसे क़ब्र तक पहुँचाकर ही रहेगा, इस पर आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर ऐसा ही होगा। (राजेअ़ : 3616)

तश्रीह : बूढ़े को रसूले करीम (ﷺ) की बशारत पर यक़ीन करना ज़रूरी था मगर उसकी ज़ुबान से बरअक्स लफ़्ज़ निकला आँह़ज़रत (ﷺ) ने उसकी मायूसी देखकर फ़र्मा दिया कि फिर तेरे ख़्याल के मुताबिक़ ही होगा। चुनाँचे ऐसा ही हुआ और उसकी मौत आ गई, नाउम्मीदी हर ह़ाल में कुफ़्र है। अल्लाह तआ़ला हर मुसलमान को नाउम्मीदी से बचाए, आमीन।

١٥- باب عِيَادَةِ الْمَرِيضِ رَاكِبًا وَمَاشِيًا وَرِدْفًا عَلَى الْحِمَارِ

बाब 15 : मरीज़ की अ़यादत को सवार होकर या पैदल या गधे पर किसी के पीछे बैठकर जाना हर त़रह जाइज़ दुरुस्त है

٥٦٦٣- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ أَنَّ أُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ رَكِبَ عَلَى حِمَارٍ عَلَى إِكَافٍ عَلَى قَطِيفَةٍ فَدَكِيَّةٍ، وَأَرْدَفَ أُسَامَةَ وَرَاءَهُ يَعُودُ سَعْدَ بْنَ عُبَادَةَ قَبْلَ وَقْعَةِ بَدْرٍ فَسَارَ حَتَّى مَرَّ بِمَجْلِسٍ فِيهِ عَبْدُ اللهِ بْنُ أُبَيٍّ ابْنِ سَلُولَ وَذَلِكَ قَبْلَ أَنْ يُسْلِمَ عَبْدُ اللهِ، وَفِي الْمَجْلِسِ أَخْلاَطٌ مِنَ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُشْرِكِينَ عَبَدَةِ الأَوْثَانِ وَالْيَهُودِ وَفِي الْمَجْلِسِ عَبْدُ اللهِ بْنُ رَوَاحَةَ،

5663. हमसे यह़्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे ड़र्वा ने, उन्हें उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) ने ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) गधे की पालान पर फ़िदक की चादर डालकर उस पर सवार हुए और उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) को अपने पीछे सवार किया। आँह़ज़रत (ﷺ) सअ़द बिन ड़बादा (रज़ि.) की एयादत को तशरीफ़ ले जा रहे थे, ये जंगे बद्र से पहले का वाक़िया है। आँह़ज़रत (ﷺ) रवाना हुए और एक मज्लिस से गुज़रे जिसमें अ़ब्दुल्लाह बिन उबइ इब्ने सलूल भी था। अ़ब्दुल्लाह अभी मुसलमान नहीं हुआ था इस मज्लिस में हर गिरोह के लोग थे मुसलमान भी, मुश्रिकीन भी या'नी बुतपरस्त और यहूदी भी। मज्लिस में अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि.) भी थे। सवारी की गर्द जब मज्लिस तक पहुँची तो

فَلَمَّا غَشِيَتِ الْمَجْلِسَ عَجَاجَةُ الدَّابَّةِ خَمَّرَ عَبْدُ اللهِ بْنُ أُبَيٍّ أَنْفَهُ بِرِدَائِهِ قَالَ: لاَ تُغَبِّرُوا عَلَيْنَا. فَسَلَّمَ النَّبِيُّ ﷺ وَوَقَفَ وَنَزَلَ فَدَعَاهُمْ إِلَى اللهِ فَقَرَأَ عَلَيْهِمُ الْقُرْآنَ فَقَالَ لَهُ عَبْدُ اللهِ بْنُ أُبَيٍّ: يَا أَيُّهَا الْمَرْءُ إِنَّهُ لاَ أَحْسَنَ مِمَّا تَقُولُ إِنْ كَانَ حَقًّا فَلاَ تُؤْذِنَا بِهِ فِي مَجَالِسِنَا وَارْجِعْ إِلَى رَحْلِكَ فَمَنْ جَاءَكَ مِنَّا فَاقْصُصْ عَلَيْهِ قَالَ ابْنُ رَوَاحَةَ: بَلَى يَا رَسُولَ اللهِ. فَاغْشَنَا بِهِ فِي مَجَالِسِنَا فَإِنَّا نُحِبُّ ذَلِكَ فَاسْتَبَّ الْمُسْلِمُونَ وَالْمُشْرِكُونَ وَالْيَهُودُ حَتَّى كَادُوا يَتَثَاوَرُونَ، فَلَمْ يَزَلِ النَّبِيُّ ﷺ يُخَفِّضُهُمْ حَتَّى سَكَتُوا فَرَكِبَ النَّبِيُّ ﷺ دَابَّتَهُ حَتَّى دَخَلَ عَلَى سَعْدِ بْنِ عُبَادَةَ فَقَالَ لَهُ: ((أَيْ سَعْدُ أَلَمْ تَسْمَعْ مَا قَالَ أَبُو حُبَابٍ)) يُرِيدُ عَبْدَ اللهِ بْنَ أُبَيٍّ. قَالَ سَعْدٌ: يَا رَسُولَ اللهِ اعْفُ عَنْهُ وَاصْفَحْ فَلَقَدْ أَعْطَاكَ اللهُ مَا أَعْطَاكَ وَلَقَدِ اجْتَمَعَ أَهْلُ هَذِهِ الْبُحَيْرَةِ أَنْ يُتَوِّجُوهُ فَيُعَصِّبُوهُ فَلَمَّا رَدَّ ذَلِكَ بِالْحَقِّ الَّذِي أَعْطَاكَ اللهُ شَرِقَ بِذَلِكَ فَذَلِكَ الَّذِي فَعَلَ بِهِ مَا رَأَيْتَ.

[راجع: ٢٩٨٧]

अ़ब्दुल्लाह बिन उबइ ने अपनी चादर अपनी नाक पर रख ली और कहा कि हम पर गर्द न उड़ाओ। फिर आँहज़रत (ﷺ) ने उन्हें सलाम किया और सवारी रोककर वहाँ उतर गये फिर आपने उन्हें अल्लाह की त़रफ़ बुलाया और क़ुर्आन मजीद पढ़कर सुनाया। उस पर अ़ब्दुल्लाह बिन उबई ने कहा मियाँ तुम्हारी बातें मेरी समझ में नहीं आतीं अगर ह़क़ हैं तो हमारी मज्लिस में उन्हें बयान करके हमको तकलीफ़ न पहुँचाया करो, अपने घर जाओ वहाँ जो तुम्हारे पास आए उससे बयान करो। इस पर ह़ज़रत इब्ने रवाह़ा (रज़ि.) ने कहा क्यूँ नहीं या रसूलल्लाह! आप हमारी मज्लिसों में ज़रूर तशरीफ़ लाएँ क्योंकि हम इन बातों को पसंद करते हैं। इस पर मुसलमानों, मुश्रिकों और यहूदियों में झगड़े बाज़ी हो गई और क़रीब था कि एक–दूसरे पर ह़मला कर बैठते लेकिन आप उन्हें ख़ामोश करते रहे यहाँ तक कि सब खामोश हो गये फिर आँह़ज़रत (ﷺ) अपनी सवारी पर सवार होकर सअ़द बिन उ़बादा (रज़ि.) के यहाँ तशरीफ़ ले गये और उनसे फ़र्माया सअ़द! तुमने सुना नहीं अबू ह़बाब ने क्या कहा। आपका इशारा अ़ब्दुल्लाह बिन उबइ की त़रफ़ था। इस पर ह़ज़रत सअ़द (रज़ि.) बोले कि या रसूलल्लाह! उसे मुआ़फ़ कर दो और उससे दरगुज़र कीजिए। अल्लाह तआ़ला ने आपको वो नेअ़मत अ़ता की है जो अ़ता फ़र्मानी थी (आपके मदीना तशरीफ़ लाने से पहले) इस बस्ती के लोग उस पर मुत्तफ़िक़ हो गये थे कि उसे ताज पहना दें और अपना सरदार बना लें लेकिन जब अल्लाह तआ़ला ने इस मंसूबा को उस ह़क़ के ज़रिया जो आपको उसने अ़ता फ़र्माया है ख़त्म कर दिया तो वो उस पर बिगड़ गया ये जो कुछ मामला उसने आपके साथ किया है उसी का नतीजा है। (राजेअ़ : 2987)

तशरीह : उस मौक़े पर आँह़ज़रत (ﷺ) गधे पर सवार होकर मज़्कूरा सूरत में तशरीफ़ ले गये थे। बाब और ह़दीष़ में यही मुत़ाबक़त है। उसमें अ़ब्दुल्लाह बिन उबइ मुनाफ़िक़ का ज़िक्र ज़िम्नी त़ौर पर आया है। ये मुनाफ़िक़ आपके मदीना आने से पहले अपनी बादशाही का ख़्वाब देख रहा था जो आपकी तशरीफ़ आवरी से ग़लत़ हो गया, इसीलिये ये बज़ाहिर मुसलमान होकर भी आख़िर वक़्त तक इस्लाम की बैख़ कनी के दर पे रहा।

٥٦٦٤- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَبَّاسٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ مُحَمَّدٍ هُوَ ابْنُ الْمُنْكَدِرِ، عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

5664. हमसे अ़म्र बिन अ़ब्बास ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रह़मान ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे मुह़म्मद ने जो मुंकदिर के बेटे हैं और उनसे ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम

قَالَ: جَاءَنِي النَّبِيُّ ﷺ يَعُودُنِي لَيْسَ بِرَاكِبِ بَغْلٍ وَلاَ بِرْذَوْنٍ. [راجع: ١٩٤]

(ﷺ) मेरी एयादत के लिये तशरीफ़ लाए आप न किसी ख़च्चर पर सवार थे न किसी घोड़े पर। (बल्कि आप पैदल तशरीफ़ लाए थे।) (राजेअ : 194)

١٦- باب مَا رُخِّصَ لِلْمَرِيضِ أَنْ يَقُولَ : إِنِّي وَجِعٌ أَوْ وَارَأْسَاهْ أَوِ اشْتَدَّ بِي الْوَجَعُ وَقَوْلِ أَيُّوبَ عَلَيْهِ السَّلاَم : ﴿أَنِّي مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ﴾

बाब 16 : मरीज़ का यूँ कहना कि मुझे तकलीफ़ है या यूँ कहना कि हाय! मेरा सर दुख रहा है या ये कहना भी इसी क़बील से है कि, ऐ मेरे रब! मुझे सरासर तकालीफ़ ने घेर लिया है और तू ही सबसे ज़्यादा रह्म करने वाला है

٥٦٦٥- حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ ابْنِ أَبِي نَجِيحٍ وَ أَيُّوبَ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي لَيْلَى عَنْ كَعْبِ بْنِ عُجْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: مَرَّ بِي النَّبِيُّ ﷺ وَأَنَا أُوقِدُ تَحْتَ الْقِدْرِ فَقَالَ: ((أَيُؤْذِيكَ هَوَامُّ رَأْسِكَ؟)) قُلْتُ: نَعَمْ. فَدَعَا الْحَلاَّقَ فَحَلَقَهُ ثُمَّ أَمَرَنِي بِالْفِدَاءِ. [راجع: ١٨١٤]

5665. हमसे क़बीसा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी नजीह और अय्यूब ने, उनसे मुजाहिद ने, उनसे अ़ब्दुर्रहमान बिन अबी लैला ने और उनसे कअ़ब बिन उ़ज्रा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) मेरे क़रीब से गुज़रे और मैं हाँडी के नीचे आग सुलगा रहा था। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया क्या तुम्हारे सर की जूएँ तुम्हें तकलीफ़ पहुँचाती हैं। मैंने अ़र्ज़ किया जी हाँ! फिर आपने हज्जाम को बुलवाया और उसने मेरा सर मूँड दिया उसके बाद आँहज़रत (ﷺ) ने मुझे फ़िदया अदा कर देने का हुक्म दिया।

٥٦٦٦- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَبُو زَكَرِيَّاءَ أَخْبَرَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ بِلاَلٍ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ قَالَ : سَمِعْتُ الْقَاسِمَ بْنَ مُحَمَّدٍ قَالَ: قَالَتْ عَائِشَةُ : وَارَأْسَاهْ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((ذَاكِ لَوْ كَانَ وَأَنَا حَيٌّ فَأَسْتَغْفِرُ لَكِ وَأَدْعُو لَكِ)) فَقَالَتْ عَائِشَةُ : وَاثُكْلِيَاهْ وَاللهِ أَنِّي لأَظُنُّكَ تُحِبُّ مَوْتِي وَلَوْ كَانَ ذَلِكَ لَظَلِلْتَ آخِرَ يَوْمِكَ مُعَرِّسًا بِبَعْضِ أَزْوَاجِكَ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((بَلْ أَنَا وَارَأْسَاهْ لَقَدْ هَمَمْتُ أَوْ أَرَدْتُ أَنْ أُرْسِلَ إِلَى أَبِي بَكْرٍ وَابْنِهِ وَأَعْهَدَ أَنْ يَقُولَ

5666. हमसे यह्या बिन यह्या अबू ज़करिया ने बयान किया, कहा हमको सुलैमान बिन बिलाल ने ख़बर दी, उनसे यह्या बिन सईद ने, कि मैंने क़ासिम बिन मुहम्मद से सुना, उन्होंने बयान किया कि (सर के शदीद दर्द की वजह से) आइशा (रज़ि.) ने कहा हाय रे सर! इस पर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया अगर ऐसा मेरी ज़िन्दगी में हो गया (या'नी तुम्हारा इंतिक़ाल हो गया) तो मैं तुम्हारे लिये इस्तिग़फ़ार और दुआ करूँगा। आइशा (रज़ि.) ने कहा अफ़सोस, अल्लाह की क़सम! मेरा ख़्याल है कि आप मेरा मर जाना ही पसंद करते हैं और अगर ऐसा हो गया तो आप तो उसी दिन रात अपनी किसी बीवी के यहाँ गुज़ारेंगे। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया बल्कि मैं ख़ुद दर्दे सर में मुब्तला हूँ। मेरा इरादा होता था कि अबूबक्र (रज़ि.) और उनके बेटे को बुलवा भेजूँ और उन्हें (ख़िलाफ़त की) वसिय्यत कर दूँ। कहीं ऐसा न हो कि मेरे बाद कहने वाले कुछ और कहें (कि ख़िलाफ़त हमारा हक़ है) या आरज़ू करने

वाले किसी और बात की आरज़ू करें (कि हम ख़लीफ़ा हो जाएँ) फिर मैंने अपने जी में कहा (इसकी ज़रूरत ही क्या है) ख़ुद अल्लाह तआला अबूबक्र (रज़ि.) के सिवा और किसी को ख़लीफ़ा न होने देगा न मुसलमान और किसी की ख़िलाफ़त ही क़ुबूल करेंगे। (दीगर मक़ामात : 7217)

الْقَائِلُونَ، أَوْ يَتَمَنَّى الْمُتَمَنُّونَ)). ثُمَّ قُلْتُ يَأْبَى اللهُ وَيَدْفَعُ الْمُؤْمِنُونَ أَوْ يَدْفَعُ اللهُ وَيَأْبَى الْمُؤْمِنُونَ. [طرفه في : ٧٢١٧].

तशरीह : जैसा आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया था वैसा ही हुआ उन्होंने हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ही को ख़लीफ़ा मुन्तख़ब किया तो आँहज़रत (ﷺ) ने साफ़ व सरीह सब लोगों के सामने उनको अपना जानशीन नहीं किया था मगर मंशा-ए-इलाही भी यही था कि अबूबक्र (रज़ि.) ख़लीफ़ा हों उनके बाद उमर (रज़ि.) उनके बाद उष्मान (रज़ि.) और उनके बाद अली (रज़ि.), मंशाए ऐज़दी पूरा हुआ।

5667. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन मुस्लिम ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान आ'मश ने बयान किया, उनसे इब्राहीम तैमी ने, उनसे हारिष बिन सुवैद ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आपको बुख़ार आया हुआ था मैंने आपका जिस्म छूकर अर्ज़ किया कि आँहज़रत (ﷺ) को तो बड़ा तेज़ बुख़ार है। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ तुममें के दो आदमियों के बराबर है। हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) ने अर्ज़ किया कि आँहज़रत (ﷺ) का अज्र भी दोगुना है। कहा हाँ फिर आपने फ़र्माया कि किसी मुसलमान को भी जब किसी मर्ज़ की तकलीफ़ या और कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो अल्लाह उसके गुनाह को इस तरह झाड़ देता है जिस तरह पेड़ अपने पत्तों को झाड़ता है। (राजेअ : 5647)

٥٦٦٧- حَدَّثَنَا مُوسَى حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُسْلِمٍ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ عَنْ إِبْرَاهِيمَ التَّيْمِيِّ عَنِ الْحَارِثِ بْنِ سُوَيْدٍ عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((دَخَلْتُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ وَهُوَ يُوعَكُ فَمَسِسْتُهُ فَقُلْتُ إِنَّكَ لَتُوعَكُ وَعْكًا شَدِيدًا قَالَ: ((أَجَلْ كَمَا يُوعَكُ رَجُلاَنِ مِنْكُمْ)) قَالَ: لَكَ أَجْرَانِ قَالَ: ((نَعَمْ مَا مِنْ مُسْلِمٍ يُصِيبُهُ أَذًى مَرَضٌ فَمَا سِوَاهُ إِلاَّ حَطَّ اللهُ سَيِّئَاتِهِ كَمَا تَحُطُّ الشَّجَرَةُ وَرَقَهَا)).

[راجع: ٥٦٤٧]

5668. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबी सलमा ने बयान किया, कहा हमको ज़ुहरी ने ख़बर दी, उन्हें आमिर बिन सअद बिन अबी वक़्क़ास ने और उनसे उनके वालिद ने कि हमारे यहाँ रसूलुल्लाह (ﷺ) मेरी एयादत के लिये तशरीफ़ लाए मैं हज्जतुल विदाअ के ज़माने में एक सख़्त बीमारी में मुब्तला हो गया था मैंने अर्ज़ किया कि मेरी बीमारी जिस हद को पहुँच चुकी है उसे आँहज़रत (ﷺ) देख रहे हैं, मैं साहिबे दौलत हूँ और मेरी वारिष मेरी सिर्फ़ एक लड़की के सिवा और कोई नहीं तो क्या मैं अपना दो तिहाई माल सदक़ा कर दूँ। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि नहीं। मैंने अर्ज़ किया फिर आधा कर दूँ, आपने

٥٦٦٨- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي سَلَمَةَ أَخْبَرَنَا الزُّهْرِيُّ عَنْ عَامِرِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ أَبِيهِ قَالَ: جَاءَنَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَعُودُنِي مِنْ وَجَعٍ اشْتَدَّ بِي زَمَنَ حَجَّةِ الْوَدَاعِ فَقُلْتُ : بَلَغَ بِي مِنَ الْوَجَعِ مَا تَرَى وَأَنَا ذُو مَالٍ وَلاَ يَرِثُنِي إِلاَّ ابْنَةٌ لِي أَفَأَتَصَدَّقُ بِثُلُثَيْ مَالِي؟ قَالَ : ((لاَ)). قُلْتُ بِالشَّطْرِ قَالَ: ((لاَ)). قُلْتُ

الثُّلُثُ قَالَ: ((الثُّلُثُ كَثِيرٌ إِنَّكَ أَنْ تَدَعَ وَرَثَتَكَ أَغْنِيَاءَ خَيْرٌ مِنْ أَنْ تَذَرَهُمْ عَالَةً يَتَكَفَّفُونَ النَّاسَ وَلَنْ تُنْفِقَ نَفَقَةً تَبْتَغِي بِهَا وَجْهَ اللهِ إِلاَّ أُجِرْتَ عَلَيْهَا حَتَّى مَا تَجْعَلُ فِي فِي امْرَأَتِكَ)).

फ़र्माया कि नहीं। मैंने अर्ज़ किया एक तिहाई कर दूँ। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तिहाई बहुत काफ़ी है अगर तुम अपने वारिषों को ग़नी छोड़कर जाओ तो ये उससे बेहतर है कि उन्हें मुहताज छोड़ो और वो लोगों के सामने हाथ फैलाते फिरें और तुम जो भी ख़र्च करोगे और उससे अल्लाह की ख़ुशनुदी हासिल करना मक़्सूद होगा उस पर भी तुम्हें षवाब मिलेगा। यहाँ तक कि उस लुक़्मे पर भी तुम्हें षवाब मिलेगा जो तुम अपनी बीवी के मुँह में डालते हो।

तश्रीह : मुसलमान का हर काम जो नेक हो षवाब है उसका कारोबार करना भी षवाब है और बीवी व बच्चों को खिलाना पिलाना भी षवाब है **इन्न सलाती व नुसुकी व महयाय व ममाती लिल्लाहि रब्बिल्आलमीन** (अल् अन्आम : 162) का यही मतलब है।

١٧– باب قَوْلِ الْمَرِيضِ : قُومُوا عَنِّي

बाब 17 : मरीज़ लोगों से कहे कि मेरे पास से उठकर चले जाओ

٥٦٦٩– حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ مَعْمَرٍ ح وَحَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: لَمَّا حُضِرَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَفِي الْبَيْتِ رِجَالٌ فِيهِمْ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((هَلُمَّ أَكْتُبْ لَكُمْ كِتَابًا لاَ تَضِلُّوا بَعْدَهُ)) فَقَالَ عُمَرُ: إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَدْ غَلَبَ عَلَيْهِ الْوَجَعُ وَعِنْدَكُمُ الْقُرْآنُ حَسْبُنَا كِتَابُ اللهِ فَاخْتَلَفَ أَهْلُ الْبَيْتِ فَاخْتَصَمُوا، فَكَانَ مِنْهُمْ مَنْ يَقُولُ قَرِّبُوا يَكْتُبْ لَكُمُ النَّبِيُّ ﷺ كِتَابًا لَنْ تَضِلُّوا بَعْدَهُ وَمِنْهُمْ مَنْ يَقُولُ مَا قَالَ عُمَرُ: فَلَمَّا أَكْثَرُوا اللَّغْوَ وَالاخْتِلاَفَ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((قُومُوا)) قَالَ عُبَيْدُ اللهِ: وَكَانَ ابْنُ

5669. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन उर्वा ने बयान किया, उनसे मअमर ने (दूसरी सनद) और मुझसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुर्रज़ाक़ ने बयान किया, कहा हमको मुअमर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने और उनसे हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो घर में कई सहाबा मौजूद थे। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) भी वहीं मौजूद थे। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया लाओ मैं तुम्हारे लिये एक तहरीर लिख देता हूँ ताकि उसके बाद तुम ग़लत राह पर न चलो। हज़रत उमर (रज़ि.) ने उस पर कहा कि आँहज़रत (ﷺ) इस वक़्त सख़्त तकलीफ़ में हैं और तुम्हारे पास क़ुर्आन मजीद तो मौजूद ही है हमारे लिये अल्लाह की किताब काफ़ी है। इस मसले पर घर में मौजूद सहाबा का इख़्तिलाफ़ हो गया और बहष करने लगे। कुछ सहाबा कहते थे कि आँहज़रत (ﷺ) को (लिखने की चीज़ें) दे दो ताकि आँहुज़ूर (ﷺ) ऐसी तहरीर लिख दें जिसके बाद तुम गुमराह न हो सको और कुछ सहाबा वो कहते थे जो हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा था। जब आँहज़रत (ﷺ) के पास इख़्तिलाफ़ और बहष बढ़ गई तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि यहाँ से चले जाओ। हज़रत उबैदुल्लाह ने बयान किया कि हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) कहा करते थे कि

सबसे ज़्यादा अफ़सोस यही है कि उनके इख़्तिलाफ़ और बहष़ की वजह से आँहज़रत (ﷺ) ने वो तह़रीर नहीं लिखी जो आप मुसलमानों के लिये लिखना चाहते थे। (राजेअ़ : 114)

عَبَّاسٍ يَقُولُ: إِنَّ الرَّزِيَّةَ كُلَّ الرَّزِيَّةِ مَا حَالَ بَيْنَ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَبَيْنَ أَنْ يَكْتُبَ لَهُمْ ذَلِكَ الْكِتَابَ مِنْ اخْتِلاَفِهِمْ وَلَغَطِهِمْ.

[راجع: ١١٤]

तश्रीह : अल ख़ैर फ़ीमा वुक़िअ मर्ज़ी इलाही यही थी इस वाक़िये के तीन रोज़ बाद आप बाहयात रहे अगर आपको यही मंज़ूर होता कि वसिय्यतनामा लिखना चाहिये तो उसके बाद किसी वक़्त लिखवा देते मगर बाद में आपने इशारा तक नहीं किया मा'लूम हुआ कि वो एक वक़्ती बात थी इसीलिये बाद में आपने बिलकुल ख़ामोशी इख़्तियार की। ह़ाफ़िज़ स़ाहब ने आदाबे एयादत तह़रीर फ़र्माए हैं कि एयादत को जाने वाला इजाज़त मांगते वक़्त दरवाज़े के सामने न खड़ा हो और नर्मी के साथ कुंडी को खटखटाए और स़ाफ़ लफ़्ज़ों में नाम लेकर अपना तआ़रुफ़ कराए और ऐसे वक़्त में एयादत न करे जब मरीज़ दवा ले रहा हो और ये कि अ़यादत में कम वक़्त स़र्फ़ करे और नज़र नीची रखे और सवालात कम करे और नरमी ज़ाहिर करता हुआ मरीज़ के लिये ब ख़ुलूस दुआ करे और मरीज़ को स़ेहत की उम्मीद दिलाए और स़ब्र व शुक्र के फ़ज़ाइल उसे सुनाए और गिरयाज़ारी से उसे रोकने की कोशिश करे वग़ैरह वग़ैरह (फ़त्हुल बारी)

बाब 18 : मरीज़ बच्चे को किसी बुज़ुर्ग के पास ले जाना कि उसकी स़ेहत के लिये दुआ करें

١٨- باب مَنْ ذَهَبَ بِالصَّبِيِّ الْمَرِيضِ لِيُدْعَى لَهُ

5670. हमसे इब्राहीम बिन ह़म्ज़ा ने बयान किया, कहा हमसे ह़ातिम बिन इस्माईल ने बयान किया, उनसे जुऐद बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया कि मैंने ह़ज़रत साइब बिन यज़ीद (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मुझे मेरी ख़ाला रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में बचपन में ले गईं और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मेरे भांजे को दर्द है। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने मेरे सर पर हाथ फेरा और मेरे लिये बरकत की दुआ की फिर आपने वुज़ू किया और मैंने आपके वुज़ू का पानी पिया और मैं ने आपकी पीठ के पीछे खड़े होकर नुबुव्वत की मुहर आपके दोनों शानों के दरम्यान देखी। ये मुहरे नुबुवत ह़जला उ़रूस की घण्टी जैसी थी। (राजेअ़ : 190)

٥٦٧٠- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ حَمْزَةَ حَدَّثَنَا حَاتِمٌ هُوَ ابْنُ إِسْمَاعِيلَ عَنِ الْجُعَيْدِ قَالَ: سَمِعْتُ السَّائِبَ بْنَ يَزِيدَ يَقُولُ: ذَهَبَتْ بِي خَالَتِي إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ، فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّ ابْنَ أُخْتِي وَجِعٌ فَمَسَحَ رَأْسِي وَدَعَا لِي بِالْبَرَكَةِ ثُمَّ تَوَضَّأَ فَشَرِبْتُ مِنْ وَضُوئِهِ وَقُمْتُ خَلْفَ ظَهْرِهِ فَنَظَرْتُ إِلَى خَاتَمِ النُّبُوَّةِ بَيْنَ كَتِفَيْهِ مِثْلَ زِرِّ الْحَجَلَةِ. [راجع: ١٩٠]

तश्रीह : या जैसे ह़जला एक परिन्दा होता है उसका अण्डा होता है ये मुह्रे नुबुव्वत आपकी ख़ास़ अ़लामते नुबुव्वत थी। (ﷺ)

बाब 19 : मरीज़ का मौत की तमन्ना करना मना है

١٩- باب تَمَنِّي الْمَرِيضِ الْمَوْتَ

5671. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा हमसे ष़ाबित बिनानी ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया किसी तकलीफ़ में अगर कोई

٥٦٧١- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا ثَابِتٌ الْبُنَانِيُّ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لاَ يَتَمَنَّيَنَّ

أَحَدُكُمُ الْمَوْتَ مِنْ ضُرٍّ أَصَابَهُ فَإِنْ كَانَ لاَ بُدَّ فَاعِلاً فَلْيَقُلِ: اللَّهُمَّ أَحْيِنِي مَا كَانَتِ الْحَيَاةُ خَيْرًا لِي وَتَوَفَّنِي إِذَا كَانَتِ الْوَفَاةُ خَيْرًا لِي)).[طرفاه في: ٦٣٥١، ٧٢٣٣].

शख़्स मुब्तला हो तो उसे मौत की तमन्ना नहीं करनी चाहिये और अगर कोई मौत की तमन्ना करने ही लगे तो ये कहना चाहिये, ऐ अल्लाह! जब तक ज़िन्दगी मेरे लिये बेहतर है मुझे ज़िन्दा रख और जब मौत मेरे लिये बेहतर हो तो मुझको उठा ले। (दीगर मक़ामात : 6351, 7233)

मा'लूम हुआ कि जब तक दुनिया में रहे अपनी बेहतरी और भलाई की दुआ करता रहे और बेहतरीन वफ़ात की दुआ मांगे।

٥٦٧٢- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ : حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي خَالِدٍ عَنْ قَيْسِ بْنِ أَبِي حَازِمٍ، قَالَ دَخَلْنَا عَلَى خَبَّابٍ نَعُودُهُ وَقَدِ اكْتَوَى سَبْعَ كَيَّاتٍ فَقَالَ: إِنَّ أَصْحَابَنَا الَّذِينَ سَلَفُوا مَضَوْا وَلَمْ تَنْقُصْهُمُ الدُّنْيَا وَإِنَّا أَصَبْنَا مَا لاَ نَجِدُ لَهُ مَوْضِعًا إِلاَّ التُّرَابَ وَلَوْ لاَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ نَهَانَا أَنْ نَدْعُوَ بِالْمَوْتِ لَدَعَوْتُ بِهِ ثُمَّ أَتَيْنَاهُ مَرَّةً أُخْرَى وَهُوَ يَبْنِي حَائِطًا لَهُ فَقَالَ: إِنَّ الْمُسْلِمَ يُؤْجَرُ فِي كُلِّ شَيْءٍ يُنْفِقُهُ إِلاَّ فِي شَيْءٍ يَجْعَلُهُ فِي هَذَا التُّرَابِ

[أطرافه في: ٦٣٤٩، ٦٣٥٠، ٦٤٣٠، ٦٤٣١، ٧٢٣٤].

5672. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने, उनसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने और उनसे क़ैस बिन अबी ह़ाज़िम ने बयान किया कि हम ख़ब्बाब बिन अरत (रज़ि.) के यहाँ उनकी एयादत को गये उन्होंने अपने पेट में सात दाग़ लगवाए थे फिर उन्होंने कहा कि हमारे साथी जो रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में वफ़ात पा चुके वो यहाँ से इस ह़ाल में रुख़्सत हुए कि दुनिया उनका अज्रो-ष़वाब कुछ न घटा सकी और उनके अ़मल में कोई कमी नहीं हुई और हमने (माल व दौलत) इतनी पाई कि जिसके खर्च करने के लिये हमने मिट्टी के सिवा और कोई मह़ल नहीं पाया (लगे इमारतें बनवाने) और अगर नबी करीम (ﷺ) ने हमें मौत की दुआ़ करने से मना न किया होता तो मैं उसकी दुआ़ करता फिर हम उनकी ख़िदमत में दोबारा ह़ाज़िर हुए तो वो अपनी दीवार बनारहे थे उन्होंने कहा मुसलमान को हर उस चीज़ पर ष़वाब मिलता है जिसे वो ख़र्च करता है मगर इस (कमबख़्त) इमारत में ख़र्च करने का ष़वाब नहीं मिलता। (दीगर मक़ामात : 6349, 6350, 6430, 6431, 7234)

बेफ़ायदा इमारत बनवाना और उन पर पैसा ख़र्च करना बदतरीन फ़िज़ूलख़र्ची है मगर आज अकष़र इसी में मुब्तला हैं। इससे जहाँ तक हो सके मह़फ़ूज़ रहने की कोशिश करे यही बेहतर है।

٥٦٧٣- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ: أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ، قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو عُبَيْدٍ مَوْلَى عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ، أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((لَنْ يُدْخِلَ أَحَدًا عَمَلُهُ الْجَنَّةَ)) قَالُوا: وَلاَ أَنْتَ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: ((وَلاَ أَنَا إِلاَّ أَنْ يَتَغَمَّدَنِي اللهُ

5673. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, कहा हमें अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ (रज़ि.) के ग़ुलाम अबू उ़बैद ने ख़बर दी और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना आपने फ़र्माया किसी शख़्स का अ़मल उसे जन्नत में दाख़िल नहीं कर सकेगा। स़ह़ाबा किराम (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! आपका भी नहीं? आपने फ़र्माया नहीं, मेरा भी नहीं, सिवा उसके कि अल्लाह अपने फ़ज़ल व रह़मत से मुझे नवाज़े इसलिये (अ़मल में)

بفَضْلٍ وَرَحْمَةٍ فَسَدِّدُوا وَقَارِبُوا وَلاَ يَتَمَنَّيَنَّ أَحَدُكُمُ الْمَوْتَ إِمَّا مُحْسِنًا فَلَعَلَّهُ أَنْ يَزْدَادَ خَيْرًا وَإِمَّا مُسِيئًا فَلَعَلَّهُ أَنْ يَسْتَعْتِبَ)). [راجع: ٣٩]

म्यानारवी इख़्तियार करो और क़रीब क़रीब चलो और तुममें कोई शख़्स मौत की तमन्ना न करे क्योंकि या वो नेक होगा तो उम्मीद है कि उसके आमाल में और इज़ाफ़ा हो जाए और अगर वो बुरा है तो मुम्किन है वो तौबा ही कर ले। (राजेअ़ : 39)

٥٦٧٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ عَبَّادِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ الزُّبَيْرِ قَالَ: سَمِعْتُ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ وَهُوَ مُسْتَنِدٌ إِلَيَّ يَقُولُ: ((اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي وَارْحَمْنِي وَأَلْحِقْنِي بِالرَّفِيقِ الأَعْلَى)). [راجع: ٤٤٤٠]

5674. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे अ़ब्बाद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ने बयान किया कि मैंने ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आँह़ज़रत (ﷺ) मेरा सहारा लिये हुए थे (मर्ज़ुल मौत में) और फ़र्मा रहे थे ऐ अल्लाह तआ़ला! मेरी मग़्फ़िरत फ़र्मा मुझ पर रह़म कर और मुझको अच्छे रफ़ीक़ों (फ़रिश्तों और पैग़म्बरों) के साथ मिला दे। (राजेअ़ : 4440)

तश्रीह़ : ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) इस ह़दीष़ को बाब के आख़िर में इसलिये लाए कि मौत की आरज़ू करना उस वक़्त तक नहीं है जब तक मौत की निशानियाँ न पैदा हुई हों लेकिन जब मौत बिलकुल सर पर आन खड़ी हो उस वक़्त दुआ़ करना मना नहीं है।

٢٠- باب دُعَاءِ الْعَائِدِ لِلْمَرِيضِ

बाब 20 : जो शख़्स बीमार की एयादत को जाए वो क्या दुआ़ करे और

وَقَالَتْ عَائِشَةُ بِنْتُ سَعْدٍ عَنْ أَبِيهَا: ((اللَّهُمَّ اشْفِ سَعْدًا)). قاله النبي صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

आइशा ने जो सअ़द बिन अबी वक़्क़ास़ (रज़ि.) की बेटी थी अपने वालिद से रिवायत की कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनके लिये यूँ दुआ़ की कि या अल्लाह! सअ़द को तंदरुस्त कर दे।

٥٦٧٥- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ، كَانَ إِذَا أَتَى مَرِيضًا أَوْ أُتِيَ بِهِ إِلَيْهِ قَالَ: ((أَذْهِبِ الْبَاسَ رَبَّ النَّاسِ اشْفِ وَأَنْتَ الشَّافِي لاَ شِفَاءَ إِلاَّ شِفَاؤُكَ شِفَاءً لاَ يُغَادِرُ سَقَمًا)).

وَقَالَ عَمْرُو بْنُ أَبِي قَيْسٍ وَإِبْرَاهِيمُ بْنُ طَهْمَانَ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ إِبْرَاهِيمَ وَأَبِي الضُّحَى إِذَا أُتِيَ بِالْمَرِيضِ.

5675. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे मसरूक़ ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब किसी मरीज़ के पास तशरीफ़ ले जाते या कोई मरीज़ आपके पास लाया जाता तो आप ये दुआ़ फ़र्माते, ऐ परवरदिगार लोगों के! बीमारी दूर कर दे, ऐ इंसानों के पालने वाले! शिफ़ा अ़ता फ़र्मा, तू ही शिफ़ा देने वाला है। तेरी शिफ़ा के सिवा और कोई शिफ़ा नहीं, ऐसी शिफ़ा दे जिसमें मर्ज़ बिलकुल बाक़ी न रहे। और अ़म्र बिन अबी क़ैस और इब्राहीम बिन त़हमान ने मंसूर से बयान किया, उन्होंने इब्राहीम और अबुज़्ज़ुहा से कि, जब कोई मरीज़ आँह़ज़रत (ﷺ) के पास लाया जाता। (दीगर मक़ामात : 5743, 5744,

5750)

[أطرافه في: ٥٧٤٣، ٥٧٤٤، ٥٧٥٠].

وَقَالَ جَرِيرٌ: عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ أَبِي الضُّحَى وَحْدَهُ وَقَالَ: إِذَا أَتَى مَرِيضًا.

और जरीर बिन अ़ब्दुल ह़मीद ने मंसूर से, उन्होंने अबुज़्ज़ुहा अकेले से यूँ रिवायत किया कि, आप जब किसी बीमार के पास तशरीफ़ ले जाते।

٢١- باب وُضُوءِ الْعَائِدِ لِلْمَرِيضِ

बाब 21 : अ़यादत करने वाले का बीमार के लिये वुज़ू करना

٥٦٧٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ، قَالَ: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا، قَالَ: دَخَلَ عَلَيَّ النَّبِيُّ ﷺ، وَأَنَا مَرِيضٌ فَتَوَضَّأَ وَصَبَّ عَلَيَّ أَوْ قَالَ: ((صُبُّوا عَلَيْهِ)) فَعَقَلْتُ فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ لاَ يَرِثُنِي إِلاَّ كَلاَلَةٌ فَكَيْفَ الْمِيرَاثُ؟ فَنَزَلَتْ آيَةُ الْفَرَائِضِ.

[راجع: ١٩٤]

5676. हमसे मुह़म्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे ग़ुन्दर (मुह़म्मद बिन जा'फ़र) ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे मुह़म्मद बिन मुंकदिर ने, कहा कि मैंने ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) मेरे यहाँ तशरीफ़ लाए मैं बीमार था आँह़ज़रत (ﷺ) ने वुज़ू किया और वुज़ू का पानी मुझ पर डाला या फ़र्माया कि उस पर ये पानी डाल दो उससे मुझे होश आ गया। मैंने अ़र्ज़ किया कि मैं तो कलाला हूँ (जिसके वालिद और औलाद न हो) मेरे तर्के में तक़्सीम कैसे होगी। उस पर मीराष़ की आयत नाज़िल हुई। (राजेअ़ : 194)

यस्तफ़्तूनक कुलिल्लाहु युफ़्तीकुम फ़िल्कलालः (अन् निसा : 176) ऐ पैग़म्बर! लोग आपसे कलाला के बारे में पूछते हैं कहो कि अल्लाह का इसके बारे में ये फ़त्वा है। आँहुज़ूर (ﷺ) को ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) से बहुत मुह़ब्बत थी। सख़्त बीमारी की ह़ालत में ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) को आँह़ज़रत (ﷺ) देखते ही बेताब हो गये, इलाज के त़रीक़े पर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने वुज़ू के बक़िया पानी को ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) पर डालते ही शिफ़ायाबी हो गई, मा'लूम हुआ कि वुज़ू का बचा हुआ पानी मौजिबे शिफ़ा है। एक रोज़ ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) अपने घर की दीवार के साये में बैठे थे रसूलुल्लाह (ﷺ) सामने से गुज़रे ये दौड़कर साथ हो लिये अदब के ख़्याल से पीछे चल रहे थे फ़र्माया पास आ जाओ। उनका हाथ पकड़कर काशाना-ए-अक़्दस की त़रफ़ लाए और पर्दा गिराकर अंदर बुलाया। अंदर से तीन टिकिया और सिरका एक स़ाफ़ कपड़े पर रखकर आया आपने डेढ़ डेढ़ रोटी तक़्सीम की और फ़र्माया कि सिरका बहुत उ़म्दह सालन है। ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) कहते हैं कि उस दिन से सिरका को मैं बहुत मह़बूब रखता हूँ। ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) ज़िंदगी के आख़िरी साल बहुत ही ज़ईफ़ व नातवाँ और आँखों से नाबीना हो गये थे। बउम्र 94 साल सन 74 हिजरी में मदीना में वफ़ात पाई, (रज़ियल्लाहु अ़न्हु)।

٢٢- باب مَنْ دَعَا بِرَفْعِ الْوَبَاءِ وَالْحُمَّى

बाब 22 : जो शख़्स़ वबा और बुख़ार के दूर करने के लिये दुआ़ करे

٥٦٧٧- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ: لَمَّا قَدِمَ

5677. हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा मुझसे इमाम मालिक ने, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आइशा ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) हिजरत करके मदीना तशरीफ़ लाए तो ह़ज़रत अबूबक्र

رَسُولُ اللهِ ﷺ وُعِكَ أَبُو بَكْرٍ وَبِلاَلٌ قَالَتْ: فَدَخَلْتُ عَلَيْهِمَا فَقُلْتُ يَا أَبَتِ كَيْفَ تَجِدُكَ وَيَا بِلاَلُ كَيْفَ تَجِدُكَ؟ قَالَتْ : وَكَانَ أَبُوبَكْرٍ إِذَا أَخَذَتْهُ الْحُمَّى يَقُولُ:

كُلُّ امْرِىءٍ مُصَبَّحٌ فِي أَهْلِهِ
وَالْمَوْتُ أَدْنَى مِنْ شِرَاكِ نَعْلِهِ

وَكَانَ بِلاَلٌ إِذَا أُقْلِعَ عَنْهُ يَرْفَعُ عَقِيرَتَهُ فَيَقُولُ :

أَلاَ لَيْتَ شِعْرِي هَلْ أَبِيتَنَّ لَيْلَةً
بِوَادٍ وَحَوْلِي إِذْخِرٌ وَجَلِيلُ
وَهَلْ أَرِدَنْ يَوْمًا مِيَاهَ مِجَنَّةٍ
وَهَلْ تَبْدُوَنْ لِي شَامَةٌ وَطَفِيلُ

قَالَ قَالَتْ عَائِشَةُ فَجِئْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخْبَرْتُهُ فَقَالَ: ((اللَّهُمَّ حَبِّبْ إِلَيْنَا الْمَدِينَةَ كَحُبِّنَا مَكَّةَ أَوْ أَشَدَّ، وَصَحِّحْهَا وَبَارِكْ لَنَا فِي صَاعِهَا وَمُدِّهَا وَانْقُلْ حُمَّاهَا فَاجْعَلْهَا بِالْجُحْفَةِ)).

[راجع: ١٨٨٩]

और ह़ज़रत बिलाल (रज़ि.) को बुख़ार हो गया। बयान किया कि फिर मैं उनके पास (बीमार पुर्सी के लिये) गई और पूछा कि मुह़तरम वालिद बुज़ुर्गवार! आपका क्या ह़ाल है और ऐ बिलाल (रज़ि .)! आपका क्या ह़ाल है बयान किया कि जब ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) को बुख़ार हुआ तो वो शे'र पढ़ा करते थे।

हर शख़्स अपने घर वालों में सुबह़ करता है
और मौत उसके तस्मे से भी ज़्यादा क़रीब है

और ह़ज़रत बिलाल (रज़ि.) का जब बुख़ार उतरता तो बुलंद आवाज़ से वो ये अश्आर पढ़ते।

काश! मुझे मा'लूम होता कि मैं एक रात वादी (मक्का) में इस त़रह़ गुज़ार सकूँगा कि मेरे चारों त़रफ़ इज़्ख़र और जलील (नामी घास के जंगल) होंगे और क्या कभी फिर मैं मजिन्ना के घाट पर उतर सकूँगा और क्या कभी शामा और तुफ़ैल में अपने सामने देख सकूँगा।

रावी ने बयान किया कि आ़इशा (रज़ि.) ने कहा फिर मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुई और आँह़ज़रत (ﷺ) से उसके बारे में कहा तो आपने ये दुआ़ फ़र्माई ऐ अल्लाह! हमारे दिलों में मदीना की मुह़ब्बत पैदा कर जैसा कि हमें (अपने वत़न) मक्का की मुह़ब्बत थी बल्कि उससे भी ज़्यादा मदीना की मुह़ब्बत अ़त़ा कर और उसकी आबो हवा को स़ेह़त बख़्श बना दे और हमारे लिये उसके स़ाअ़ और मुद्द में बरकत अ़त़ा फ़र्मा और उसके बुख़ार को कहीं और जगह मुंतक़िल कर दे उसे जुह़फ़ा नामी गाँव में भेज दे। (राजेअ़ : 1889)

तशरीह़ : ये दुआ़ आपकी क़ुबूल हुई मदीना की हवा निहायत उ़म्दह़ हो गई और मक़ामे जुह़फ़ा अपनी आबो हवा की ख़राबी में अब तक मशहूर है। वत़न की मुह़ब्बत इंसान के लिये एक फ़ित़री चीज़ है। ह़ज़रत बिलाल (रज़ि.) के अश्आर से उसे समझा जा सकता है आपने मदीना से बुख़ार के दूर होने की दुआ़ फ़र्माई यही बाब से मुत़ाबक़त है। शामा और तुफ़ैल मक्का की दो पहाड़ियाँ हैं। इज़्ख़र व जलील मक्का के जंगलों में पैदा होने वाली दो बूटियाँ हैं और जुह़फ़ा एक पानी के घाट का नाम था। जहाँ अ़रब अपने ऊँटों को पानी पिलाते और वहाँ तफ़्रीह़ात करते थे। वत़न की मुह़ब्बत इंसान का फ़ित़री जज़्बा है ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लैहिस्सलाम) की बाबत मशहूर है कि अकष़र अपने वत़न किन्आ़न को याद फ़र्माया करते थे। दुआ़ है कि अल्लाह पाक हमारे वत़न को भी अमन व आ़फ़ियत का गहवारा बना दे आमीन।

76. किताबुत् तिब्ब

किताब दवा-इलाज के बयान में

بِسۡمِ اللهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

बाब 1 : अल्लाह तआला ने कोई बीमारी ऐसी नहीं उतारी जिसकी दवा भी नाज़िल न की हो

١- باب مَا أَنْزَلَ اللهُ دَاءً إِلاَّ أَنْزَلَ لَهُ شِفَاءً

5678. हमसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू अहमद ज़ुबैरी ने बयान किया, उनसे उमर बिन सईद बिन अबी हुसैन ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे अता बिन अबी रिबाह ने बयान किया और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह तआला ने कोई ऐसी बीमारी नहीं उतारी जिसकी दवा भी नाज़िल न की हो।

٥٦٧٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ الزُّبَيْرِيُّ حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ سَعِيدِ بْنِ أَبِي حُسَيْنٍ حَدَّثَنَا عَطَاءُ بْنُ أَبِي رَبَاحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَا أَنْزَلَ اللهُ دَاءً إِلاَّ أَنْزَلَ لَهُ شِفَاءً)).

हाँ! बुढ़ापा और मौत दो ऐसी बीमारियाँ हैं जिनकी कोई दवा नहीं उतारी गई। लफ़्ज़ अन्ज़ल में बारीक इशारा इस तरफ़ है कि बारिश जो आसमान से नाज़िल होती है उससे भी बहुत बीमारियों के जराषीम पैदा होते हैं और उसके दफ़इया के अषरात भी नाज़िल होते रहते हैं सच फ़र्माया **व जअल्ना मिनल्माइ कुल्ल शैइन हय्यिन** (अल अम्बिया : 30)

बाब 2 : क्या मर्द कभी औरत का या कभी औरत मर्द का इलाज कर सकती है

٢- باب هَلْ يُدَاوِي الرَّجُلُ الْمَرْأَةَ، أَوِ الْمَرْأَةُ الرَّجُلَ؟

5679. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे बिश्र बिन मुफ़ज़्ज़ल ने बयान किया, उनसे ख़ालिद बिन ज़क्वान ने और उनसे रबीअ बिन्ते मअव्विज़ बिन अफ़राअ (रज़ि.) ने बयान किया, उन्होंने कहा हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ ग़ज़्वात में शरीक होती थीं और मुसलमान मुजाहिदों को पानी पिलाती, उनकी ख़िदमत करती और मक़्तूलीन और

٥٦٧٩- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ الْمُفَضَّلِ عَنْ خَالِدِ بْنِ ذَكْوَانَ عَنْ رُبَيِّعَ بِنْتِ مُعَوِّذِ بْنِ عَفْرَاءَ، قَالَتْ: كُنَّا نَغْزُو مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ نَسْقِي الْقَوْمَ وَنَخْدُمُهُمْ وَنَرُدُّ الْقَتْلَى وَالْجَرحَى إِلَى

मज्रूहीन को मदीना मुनव्वरह लाया करती थीं। (राजेअ: 2882)

तश्रीह : बाब का मत़लब उससे निकला कि मस्तूरात जंग व जिहाद में शरीक होकर मजरूह़ीन की तीमारदारी और मरहम पट्टी वग़ैरह की ख़िदमात अंजाम देती थीं पस बाब का मुद्दा षाबित हो गया मगर दरीं ह़ालात भी आ़ज़ाए पर्दा का सतर ज़रूरी है।

मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ फ़र्माते हैं मुसलमानों! देखो तुम वो क़ौम हो कि तुम्हारी आ़ रतें भी जिहाद में जाया करती थीं। मुजाहिदीन के कामकाज ख़िदमत वग़ैरह इ़लाज व मुआ़लिजा में नर्स का काम किया करती थीं। ज़रूरत होती तो हथियार लेकर काफ़िरों से मुक़ाबला भी करती थीं ह़ज़रत ख़ौला बिन्ते अज़्वर (रज़ि.) की बहादुरी मशहूर है कि किस क़दर नस़ारा को उन्होने तीर और तलवार से मारा, बहादुर शेरनी की त़रह़ ह़मला करतीं। ह़ज़रत स़फ़िया बिन्ते अ़ब्दुल मुत्तलिब गुर्ज़ लेकर बनी क़ुरैज़ा के यहूद को मारने के लिये मुस्तैद हो गईं या अब तुम्हारे मर्दों का ये ह़ाल है कि तोप बन्दूक़ की आवाज़ सुनते ही या तलवार की चमक देखते ही उनके औसान ख़त़ा हो जाते हैं। इस ह़दीष़ से ये भी निकला कि शरई पर्दा स़िर्फ़ इस क़दर है कि औ़रत अपने आ़ज़ा जिनका छुपाना ग़ैर मह़रम से फ़र्ज़ है वो छुपाए रखे न ये कि घर से बाहर न निकले। बाब का तर्जुमा का एक जुज़ या'नी मर्द औ़रत की तीमारदारी करे गो ह़दीष़ में बस़राह़त मज़्कूर नहीं है लेकिन दूसरे जुज़ पर क़यास किया गया है क़स्तलानी ने कहा औ़रत जब मर्द का इ़लाज करेगी तो अगर मर्द मह़रम है तो कोई इश्काल ही नहीं है अगर ग़ैर मह़रम है तो जब भी उसे ज़रूरत के वक़्त बक़द्रे एह़तियाज छूना या देखना दुरुस्त है।

बाब 3 : (अल्लाह ने) शिफ़ा तीन चीज़ों में (रखी) है

٣- باب الشِّفَاءُ فِي ثَلاَثٍ

5680. हमसे हुसैन ने बयान किया, कहा हमसे अह़मद बिन मुनीअ़ ने बयान किया, कहा हमसे मरवान बिन शुजाअ़ ने बयान किया, उनसे सालिम अफ़त़स ने बयान किया, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि शिफ़ा तीन चीज़ों में है। शहद के शरबत में, पछना लगवाने में और आग से दाग़ने में लेकिन मैं उम्मत को आग से दाग़कर इलाज करने से मना करता हूँ। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने इस ह़दीष़ को मर्फ़ूअ़न नक़ल किया है और अल्क़ुम्मी ने रिवायत किया, उनसे लैष़ ने, उनसे मुजाहिद ने, उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने शहद और पछना लगवाने के बारे में बयान किया।

(दीगर: 5681)

٥٦٨٠- حَدَّثَنَا الْحُسَيْنُ حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مَنِيعٍ حَدَّثَنَا مَرْوَانُ بْنُ شُجَاعٍ حَدَّثَنَا سَالِمٌ الأَفْطَسُ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: الشِّفَاءُ فِي ثَلاَثٍ : شَرْبَةِ عَسَلٍ وَشَرْطَةِ مِحْجَمٍ وَكَيَّةِ نَارٍ وَأَنْهَى أُمَّتِي عَنِ الْكَيِّ. رَفَعَ الْحَدِيثَ. وَرَوَاهُ الْقُمِّيُّ عَنْ لَيْثٍ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ فِي الْعَسَلِ وَالْحَجْمِ. [طرفه في : ٥٦٨١].

56810 हमसे मुह़म्मद बिन अ़ब्दुर्रह़ीम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको सुरैज बिन यूनुस अबू ह़ारिष़ ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमसे मरवान बिन शुजाअ़ ने बयान किया, उनसे सालिम अफ़त़स ने बयान किया, उनसे सईद बिन जुबैर ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया शिफ़ा तीन चीज़ों में है पछना लगवाने में, शहद पीने में और

٥٦٨١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحِيمِ أَخْبَرَنَا سُرَيْجُ بْنُ يُونُسَ أَبُو الْحَارِثِ حَدَّثَنَا مَرْوَانُ بْنُ شُجَاعٍ عَنْ سَالِمٍ الأَفْطَسِ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الشِّفَاءُ فِي ثَلاَثَةٍ : فِي شَرْطَةِ

आग से दाग़ने में मगर मैं अपनी उम्मत को आग से दाग़ने से मना करता हूँ। (राजेअ : 5680)

مِحْجَمٍ، أَوْ شَرْبَةِ عَسَلٍ، أَوْ كَيَّةٍ بِنَارٍ، وَأَنْهَى أُمَّتِي عَنِ الْكَيِّ)). [راجع: ٥٦٨٠]

तश्रीह : ये मुमानअत तन्ज़ीही है या'नी बेज़रूरत शदीद दाग़ न देना चाहिये क्योंकि उसमें मरीज़ को बहुत तकलीफ़ होती है। दूसरे आग का इस्तेमाल है और आग से अ़ज़ाब देना मना आया है। ह़क़ीक़त में दाग़ देना आख़िरी इलाज है। जब किसी दवा से फ़ायदा न हो उस वक़्त दाग़ दें जैसे दूसरे ह़दीष़ में है कि आख़िरी दवा दाग़ देना है। कहते हैं कि ताऊ़न की बीमारी में भी दाग़ देना बेह़द मुफ़ीद है जहाँ दाना नमूदा निकला हो उसको फ़ौरन आग से जला देना चाहिये। अ़रब में अकष़र ये इलाज मुरव्वज रहा है। शहद दवा और ग़िज़ा दोनों के लिये काम देता है। बलग़म को निकालता है और इसका इस्ते'माल सर्द बीमारियों में बहुत मुफ़ीद है। ख़ालिस़ शहद आँखों में लगाना भी बहुत नफ़ा बख़्श है। ख़ुसूसन सोते वक़्त इसी त़रह़ उसमे सैंकड़ों फ़ायदे हैं।

बाब 4 : शहद के ज़रिये इलाज करना और फ़ज़ाइले शहद में अल्लाह तआ़ला का फ़र्मान कि इसमें (हर मर्ज़ से) लोगों के लिये शिफ़ा है

٤- باب الدَّوَاءِ بِالْعَسَلِ وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى ﴿فِيهِ شِفَاءٌ لِلنَّاسِ﴾

5682. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, कहा कि मुझे हिशाम ने ख़बर दी, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) को शीरनी और शहद बहुत पसंद था। (राजेअ : 4912)

٥٦٨٢- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ قَالَ أَخْبَرَنِي هِشَامٌ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُعْجِبُهُ الْحَلْوَاءُ وَالْعَسَلُ. [راجع: ٤٩١٢]

शहद बड़ी उ़म्दा ग़िज़ा और दवा भी है बाब का मत़लब इस ह़दीष़ से यूँ निकला कि पसंद आना आ़म है शामिल है दवा और ग़िज़ा दोनों को। शहद बलग़म निकालता है और उसका शरबत सर्द बीमारियों में बहुत ही मुफ़ीद है। ख़ालिस़ शहद आँखों में लगाना ख़ुसूसन सोते वक़्त बहुत फ़ायदेमंद है।

5683. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन ग़सील ने बयान किया, उनसे आ़स़िम बिन उ़मैर बिन क़तादा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया और अगर तुम्हारी दवाओं में किसी में भलाई है या ये कहा कि तुम्हारी (इन) दवाओं में भलाई है। तो पछना लगवाने या शहद पीने और आग से दाग़ ने में है अगर वो मर्ज़ के मुत़ाबिक़ हो और मैं आग से दाग़ने को पसंद नहीं करता हूँ।

(दीगर मक़ामात : 5697, 5702, 5704)

٥٦٨٣- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ الْغَسِيلِ عَنْ عَاصِمِ بْنِ عُمَرَ بْنِ قَتَادَةَ قَالَ : سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((إِنْ كَانَ فِي شَيْءٍ مِنْ أَدْوِيَتِكُمْ - أَوْ يَكُونُ فِي شَيْءٍ مِنْ أَدْوِيَتِكُمْ - خَيْرٌ فَفِي شَرْطَةِ مِحْجَمٍ، أَوْ شَرْبَةِ عَسَلٍ، أَوْ لَذْعَةٍ بِنَارٍ، تُوَافِقُ الدَّاءَ وَمَا أُحِبُّ أَنْ أَكْتَوِيَ)).

[أطرافه في : ٥٦٩٧، ٥٧٠٢، ٥٧٠٤].

5684. हमसे अ़य्याश बिन अल वलीद ने बयान किया, कहा

٥٦٨٤- حَدَّثَنَا عَبَّاسُ بْنُ الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا

हमसे अ़ब्दुल आ़ला ने, कहा हमसे सईद ने, उनसे क़तादा ने, उनसे अबुल मुतवक्किल ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने कि एक स़ाहब नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि मेरा भाई पेट की तकलीफ़ में मुब्तला है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उन्हें शहद पिला फिर दूसरी मर्तबा वही स़ह़ाबी ह़ाज़िर हुए। आपने उसे इस मर्तबा भी शहद पिलाने के लिये कहा वो फिर तीसरी मर्तबा आया और अ़र्ज़ किया कि (हुक्म के मुत़ाबिक़) मैंने अ़मल किया (लेकिन शिफ़ा नहीं हुई) आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह तआ़ला सच्चा है और तुम्हारे भाई का पेट झूठा है, उन्हें फिर शहद पिला। चुनाँचे उन्होंने शहद फिर पिलाया और उसी से वो तन्दरुस्त हो गया। (दीगर मक़ामात : 5716)

عَبْدُ الأَعْلَى حَدَّثَنَا سَعِيدٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَبِي الْمُتَوَكِّلِ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ أَنَّ رَجُلاً أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: أَخِي يَشْتَكِي بَطْنَهُ فَقَالَ: ((اسْقِهِ عَسَلاً)) ثُمَّ أَتَاهُ الثَّانِيَةَ فَقَالَ: ((اسْقِهِ عَسَلاً)) ثُمَّ أَتَاهُ الثَّالِثَةَ فَقَالَ: فَعَلْتُ فَقَالَ: ((صَدَقَ اللهُ وَكَذَبَ بَطْنُ أَخِيكَ اسْقِهِ عَسَلاً)) فَسَقَاهُ فَبَرَأَ.

[طرفه في : ٥٧١٦].

तशरीह़ : इस सूरत में इसका मवादे फ़ासिदा निकल गया और वो तन्दरुस्त हो गया। शहद के बेशुमार फ़वाइद में से पेट का साफ़ करना और हाज़मा का दुरुस्त करना भी है जो स़ेह़त के लिये बुनियादी चीज़ है। मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ फ़र्माते हैं कि ये ह़दीष़ होमियोपैथिक डॉक्टरी की अस़ल उसूल है उसमें हमेशा इलाज बिलमुवाफ़िक़ हुआ करता है या'नी मष़लन किसी को दस्त आ रहा है तो और मिस्हल दवा देते हैं। इसी त़रह़ अगर बुख़ार आ रहा हो तो वो दवा देते हैं जिससे बुख़ार पैदा हो ऐसी दवा का रीएक्शन या'नी दूसरा अष़र मरीज़ के मुवाफ़िक़ पड़ता है तो इब्तिदा में मर्ज़ को बढ़ाता है अल्लाह तआ़ला ने अदविया में अ़जब ताष़ीर रखी है। अरण्डी का तैल इसी त़रह़ शहद मिस्हल है पर जब किसी को दस्त आ रहे हों तो यही दवाएँ दोनों आख़िर में क़ब्ज़ कर देती हैं यूनानी और डॉक्टरी में इलाज बिल ज़द किया जाता है इला आख़िरा (वह़ीदी)

बाब 5 : ऊँट के दूध से इलाज करने का बयान

٥- باب الدَّوَاءِ بِأَلْبَانِ الإِبِلِ

5685. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे सलाम बिन मिस्कीन अबुर् रवह़ बस़री ने बयान किया, कहा कि हमसे ष़ाबित ने बयान किया, उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने कि कुछ लोगों को बीमारी थी, उन्होंने कहा या रसूलल्लाह! हमे क़याम की जगह इनायत फ़र्मा दें और हमारे खाने का इंतिज़ाम कर दें फिर जब वो लोग तन्दरुस्त हो गये तो उन्होंने कहा कि मदीना की आबो हवा ख़राब है चुनाँचे आँह़ज़रत (ﷺ) ने मुक़ामे ह़र्रा में ऊँटों के साथ उनके क़याम का इंतिज़ाम कर दिया और फ़र्माया कि उनका दूध पियो जब वो तन्दरुस्त हो गये तो उन्हों ने आपके चरवाहे को क़त्ल कर दिया और ऊँटों को हाँक कर ले गये। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनके पीछे आदमी दौड़ाए और वो पकड़े गये (जैसा कि उन्होंने चरवाहे के साथ किया था) आपने भी वैसा ही किया उनके हाथ पैर कटवा दिया और उनकी आँखों में सलाई फिरवा दी। मैंने

٥٦٨٥- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا سَلاَّمُ بْنُ مِسْكِينٍ أَبُو رَوْحٍ الْبَصْرِيُّ حَدَّثَنَا ثَابِتٌ عَنْ أَنَسٍ أَنَّ نَاسًا كَانَ بِهِمْ سَقَمٌ، قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ آوِنَا وَأَطْعِمْنَا فَلَمَّا صَحُّوا قَالُوا: إِنَّ الْمَدِينَةَ وَخِمَةٌ فَأَنْزَلَهُمُ الْحَرَّةَ فِي ذَوْدٍ لَهُ فَقَالَ: اِشْرَبُوا أَلْبَانَهَا فَلَمَّا صَحُّوا قَتَلُوا رَاعِيَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاسْتَاقُوا ذَوْدَهُ فَبَعَثَ فِي آثَارِهِمْ فَقَطَعَ أَيْدِيَهُمْ وَأَرْجُلَهُمْ وَسَمَرَ أَعْيُنَهُمْ، فَرَأَيْتُ الرَّجُلَ مِنْهُمْ يَكْدِمُ الأَرْضَ بِلِسَانِهِ حَتَّى يَمُوتَ. قَالَ سَلاَّمٌ

فَبَلَغَنِي أَنَّ الْحَجَّاجَ قَالَ لأَنَسٍ: حَدِّثْنِي بِأَشَدِّ عُقُوبَةٍ عَاقَبَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَحَدَّثَهُ بِهَذَا فَبَلَغَ الْحَسَنَ فَقَالَ وَدِدْتُ أَنَّهُ لَمْ يُحَدِّثْهُ بِهَذَا.

[راجع: ٢٣٣]

उनमें से एक शख़्स को देखा कि ज़ुबान से ज़मीन चाटता था और उसी हालत में वो मर गया। सलाम ने बयान किया कि मुझे मा'लूम हुआ कि हज्जाज ने हज़रत अनस (रज़ि.) से कहा तुम मुझसे वो सबसे सख़्त सज़ा बयान करो जो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने किसी को दी हो तो उन्होंने यही वाक़िया बयान किया जब हज़रत इमाम हसन बस़री तक ये बात पहुँची तो उन्होंने कहा काश! वो ये हदीष़ हज्जाज से न बयान करते। (राजेअ : 233)

तश्रीह : उन डाकूओं ने इस्लामी चरवाहे के साथ ऐसा ज़ुल्म किया था। लिहाज़ा अल ऐन बिल ऐन के तहत उनके साथ यही किया गया। हज़रत हसन बस़री ने हज्जाज के बारे में ये इसलिये कहा कि वो अपने मज़ालिम के लिये ऐसी सनद बनाना चाहता था। हालाँकि उसके मज़ालिम स़राहतन नाजाइज़ थे ये सख़्त तरीन सज़ा उनको क़िस़ास़ में दी गई थी। चरवाहे के साथ उन्होंने ऐसा ही किया था लिहाज़ा उनके साथ भी ऐसा किया गया।

٦- بَابُ الدَّوَاءِ بِأَبْوَالِ الإِبِلِ

बाब 6 : ऊँट के पेशाब से इलाज जाइज़ है

٥٦٨٦- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ نَاسًا اجْتَوَوْا فِي الْمَدِينَةِ فَأَمَرَهُمُ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يَلْحَقُوا بِرَاعِيهِ يَعْنِي الإِبِلَ فَيَشْرَبُوا مِنْ أَلْبَانِهَا وَأَبْوَالِهَا فَلَحِقُوا بِرَاعِيهِ فَشَرِبُوا مِنْ أَلْبَانِهَا وَأَبْوَالِهَا حَتَّى صَلَحَتْ أَبْدَانُهُمْ فَقَتَلُوا الرَّاعِيَ وَسَاقُوا الإِبِلَ فَبَلَغَ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَبَعَثَ فِي طَلَبِهِمْ فَجِيءَ بِهِمْ فَقَطَعَ أَيْدِيَهُمْ وَأَرْجُلَهُمْ وَسَمَرَ أَعْيُنَهُمْ، قَالَ قَتَادَةُ: فَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ سِيرِينَ أَنَّ ذَلِكَ كَانَ قَبْلَ أَنْ تَنْزِلَ الْحُدُودُ. [راجع: ٢٣٣]

5686. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने कि (उ़रैना के) कुछ लोगों को मदीना मुनव्वरा की आबो हवा मुवाफ़िक़ नहीं आई थी तो नबी करीम (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि वो आपके चरवाहे के यहाँ चले जाएँ या'नी ऊँटों में और उनका दूध और पेशाब पियें चुनाँचे वो लोग आँहज़रत (ﷺ) के चरवाहे के पास चले गये और ऊँटों का दूध और पेशाब पिया जब वो तन्दरुस्त हो गये तो उन्होंने चरवाहे को क़त्ल कर दिया और ऊँटों को हाँककर ले गये। आपको जब उसका इल्म हुआ तो आपने उन्हें तलाश करने के लिये लोगों को भेजा जब उन्हें लाया गया तो आँहज़रत (ﷺ) के हुक्म से उनके भी हाथ और पैर काट दिये गये और उनकी आँखों में सलाई फेर दी गई (जैसा कि उन्होंने चरवाहे के साथ किया था) क़तादा ने बयान किया कि मुझसे मुहम्मद बिन सीरीन ने बयान किया कि ये हुदूद के नाज़िल होने से पहले का वाक़िया है। (राजेअ : 233)

तश्रीह : ये लोग अस़ल में डाकू और रहज़न थे गो मदीना में आकर मुसलमान हो गये थे मगर उनकी अस़ल ख़स़लत कहाँ जाने वाली थी। मौक़ा पाया तो फिर डाका मारा ख़ून किया ऊँटों को ले गये और बतौरे क़िस़ास़ ये सज़ा दी गई।

٧- بَابُ الْحَبَّةِ السَّوْدَاءِ

बाब 7 : कलौंजी का बयान

तश्रीह : कलौंजी की तासीर गर्म ख़ुश्क है रतूबत ख़ुश्क करती है माद्दा को तैयार मुअ़तदिल बनाती है। क़लौंजी रियाह़ी दर्द सीना जलंदर और खांसी में मुफ़ीद है, इख़्तिलात़ को छांटती है, पेशाब और हैज़ को रोकने वाली है।

5687. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी शैबा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे उ़बैदुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इस्राईल ने बयान किया, उन्होंने उनसे मंसूर ने बयान किया, उनसे ख़ालिद बिन सअ़द ने बयान किया कि हम बाहर गये हुए थे और हमारे साथ ह़ज़रत ग़ालिब बिन अब्जर (रज़ि.) भी थे। वो रास्ते में बीमार पड़ गये फिर जब हम मदीना वापस आए उस वक़्त भी वो बीमार ही थी। ह़ज़रत इब्ने अबी अ़तीक़ उनकी एयादत के लिये तशरीफ़ लाए और हमसे कहा कि इन्हें ये काले दाने (कलौंजी) इस्ते'माल कराओ, इसके पाँच या सात दाने लेकर पीस लो और फिर ज़ैतून के तैल में मिलाकर (नाक के) इस त़रफ़ और उस त़रफ़ इसे क़त़रा क़त़रा करके टपकाओ क्योंकि ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने मुझसे बयान किया कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये कलौंजी हर बीमारी की दवा है सिवा साम के। मैंने अ़र्ज़ किया साम क्या है? फ़र्माया कि मौत है।

٥٦٨٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ خَالِدِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ: خَرَجْنَا وَمَعَنَا غَالِبُ بْنُ أَبْجَرَ فَمَرِضَ فِي الطَّرِيقِ فَقَدِمْنَا الْمَدِينَةَ وَهُوَ مَرِيضٌ فَعَادَهُ ابْنُ أَبِي عَتِيقٍ فَقَالَ لَنَا: عَلَيْكُمْ بِهَذِهِ الْحُبَيْبَةِ السَّوْدَاءِ فَخُذُوا مِنْهَا خَمْسًا أَوْ سَبْعًا فَاسْحَقُوهَا ثُمَّ اقْطُرُوهَا فِي أَنْفِهِ بِقَطَرَاتِ زَيْتٍ فِي هَذَا الْجَانِبِ وَفِي هَذَا الْجَانِبِ فَإِنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا حَدَّثَتْنِي أَنَّهَا سَمِعَتِ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((إِنَّ هَذِهِ الْحَبَّةَ السَّوْدَاءَ شِفَاءٌ مِنْ كُلِّ دَاءٍ إِلاَّ مِنَ السَّامِ)) قُلْتُ: وَمَا السَّامُ؟ قَالَ: ((الْمَوْتُ)).

तशरीह़: मौत अपने वक़्ते मुक़र्ररा पर आनी ज़रूर है इसलिये उसकी कोई दवा नहीं। कलौंजी या'नी काला ज़ीरा फोड़ा फुंसियों में भी बहुत मुफ़ीद है। अज़्वाजे मुत़हहरात में से किसी एक की उँगली में फुंसी निकली हुई थी तो आँह़ुज़ूर (ﷺ) ने पूछा क्या तुम्हारे पास ज़ीरा है तो उन्होंने कहा कि हाँ तो आपने फ़र्माया कि ज़ीरा इस पर रख।

5688. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे अबू सलमा और सईद बिन मुसय्यिब ने ख़बर दी और उन्हें ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने ख़बर दी, उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि स्याह दानों में हर बीमारी की शिफ़ा है सिवा साम के।

इब्ने शिहाब ने कहा कि साम मौत है और स्याह दाना कलौंजी को कहते हैं।

٥٦٨٨- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ وَ سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَخْبَرَهُمَا أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((فِي الْحَبَّةِ السَّوْدَاءِ شِفَاءٌ مِنْ كُلِّ دَاءٍ إِلاَّ السَّامَ)). قَالَ ابْنُ شِهَابٍ : وَالسَّامُ الْمَوْتُ وَالْحَبَّةُ السَّوْدَاءُ الشُّونِيزُ.

तशरीह़: फ़िल वाक़ेअ़ मौत वक़्ते मुक़र्ररा पर आकर ही रहती है ख़्वाह कोई इंसान कुछ तदबीर करे लाख दवाइयाँ इस्ते'माल करे कितना ही सरमायादार कष़ीरुल वसाइल हो मगर उनमें कोई चीज़ ऐसी नहीं है जो मौत को टाल

सके सच है। कुल्लु नफ़्सिन ज़ाइक़तुल मौत!

बाब 8 : मरीज़ के लिये ह़रीरा पकाना

٨- باب التَّلْبِينَةِ لِلْمَرِيضِ

5689. हमसे ह़िब्बान बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्हें यूनुस बिन यज़ीद ने ख़बर दी, उन्हें अक़ील ने, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें उ़र्वा ने कि ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) बीमार के लिये और मय्यत के सोगवारों के लिये तल्बीना (रवा, दूध और शहद मिलाकर दलिया) पकाने का हुक्म देती थीं और फ़र्माती थीं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना आपने फ़र्माया कि तल्बीना मरीज़ के दिल को सुकून पहुँचाता है और ग़म को दूर करता है (क्योंकि इसे पीने के बाद उ़मूमन नींद आ जाती है ये ज़ोदे ह़ज़म भी है।)
(राजेअ़ : 5417)

٥٦٨٩- حَدَّثَنَا حِبَّانُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا يُونُسُ بْنُ يَزِيدَ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا، أَنَّهَا كَانَتْ تَأْمُرُ بِالتَّلْبِينِ لِلْمَرِيضِ وَلِلْمَحْزُونِ عَلَى الْهَالِكِ، وَكَانَتْ تَقُولُ إِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((إِنَّ التَّلْبِينَةَ تُجِمُّ فُؤَادَ الْمَرِيضِ وَتَذْهَبُ بِبَعْضِ الْحُزْنِ)).
[راجع: ٥٤١٧]

5690. हमसे फ़रवा बिन अबी मग़रा ने बयान किया, कहा हमसे अ़ली बिन मिस्हर ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि वो तल्बीना पकाने का हुक्म देती थीं और फ़र्माती थीं कि अगरचे वो (मरीज़ को) नापसंद होता है लेकिन वो इसको फ़ायदा देता है। (राजेअ़ : 5417)

٥٦٩٠- حَدَّثَنَا فَرْوَةُ بْنُ أَبِي الْمَغْرَاءِ حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ أَنَّهَا كَانَتْ تَأْمُرُ بِالتَّلْبِينَةِ وَتَقُولُ هُوَ الْبَغِيضُ النَّافِعُ.
[راجع: ٥٤١٧]

तल्बीना मीठा दलिया जो रवा, घी, मीठा मिलाकर पकाया जाए जिसे ह़रीरा भी कहते हैं।

बाब 9 : नाक में दवा डालना दुरुस्त है

٩- باب السَّعُوطِ

नास लेना भी मुराद है और दीगर दवाएँ नाक में पहुंचाना भी।

5691. हमसे मुअ़ल्ला बिन असद ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब बिन ख़ालिद ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह इब्ने त़ाउस ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने पछना लगवाया और पछना लगाने वाले को उसकी मज़दूरी दी और नाक में दवा डलवाई। (राजेअ़ : 1835)

٥٦٩١- حَدَّثَنَا مُعَلَّى بْنُ أَسَدٍ حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ عَنِ ابْنِ طَاوُسٍ عَنْ أَبِيهِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ احْتَجَمَ وَأَعْطَى الْحَجَّامَ أَجْرَهُ وَاسْتَعَطَ.
[راجع: ١٨٣٥]

मज़दूरी देने का मत़लब ये कि पछना लगाने वाले का पेशा जाइज़ दुरुस्त है इसको इस ख़िदमत पर मज़दूरी ह़ासिल करना जाइज़ है।

बाब 10 : क़ुस्ते हिन्दी और क़ुस्ते बह़री या'नी कूट

١٠- باب السَّعُوطِ بِالْقُسْطِ

الْهِنْدِيُّ وَالْبَحْرِيُّ وَهُوَ الْكُسْتُ مِثْلُ الْكَافُورِ وَالْقَافُورِ. مِثْلُ كُشِطَتْ نُزِعَتْ وَقَرَأَ عَبْدُ اللهِ : قُشِطَتْ

जो समुन्दर से निकलता है उसका नास लेना उसे कुस्त भी कहते हैं जैसे काफ़ूर को क़ाफ़ूर और क़ुर्आन में भी सूरत तक्वीर में कुशित़त और क़ुशित़त दोनों क़िरात हैं। अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने क़ुशित़त से पढ़ा है

٥٦٩٢- حَدَّثَنَا صَدَقَةُ بْنُ الْفَضْلِ أَخْبَرَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ قَالَ: سَمِعْتُ الزُّهْرِيَّ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ عَنْ أُمِّ قَيْسٍ بِنْتِ مِحْصَنٍ قَالَتْ سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((عَلَيْكُمْ بِهَذَا الْعُودِ الْهِنْدِيِّ فَإِنَّ فِيهِ سَبْعَةَ أَشْفِيَةٍ يُسْتَعَطُ بِهِ مِنَ الْعُذْرَةِ وَيُلَدُّ بِهِ مِنْ ذَاتِ الْجَنْبِ)).[أطرافه في : ٥٧١٣، ٥٧١٥، ٥٧١٨].

5692. हमसे स़दक़ा बिन फ़ज़ल ने बयान किया, कहा हमको इब्ने ड़ययना ने ख़बर दी, कहा मैंने ज़ुह्री से सुना, उन्होंने ड़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह से कि ह़ज़रत उम्मे क़ैस बिन्ते मिह़्सन (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना आपने फ़र्माया तुम लोग उस ऊ़द हिन्दी (कुस्त) का इस्ते'माल किया करो क्योंकि उसमें सात बीमारियों का इलाज है। ह़लक़ के दर्द में उसे नाक में डाला जाता है, पसली के दर्द में चबाई जाती है। (दीगर मक़ामात : 5713, 5715, 5718)

٥٦٩٣- وَدَخَلْتُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ بِابْنٍ لِي لَمْ يَأْكُلِ الطَّعَامَ فَبَالَ عَلَيْهِ فَدَعَاهُ بِمَاءٍ فَرَشَّ عَلَيْهِ. [راجع: ٢٢٣]

5693. और मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में अपने एक शीरख़्वार बच्चे को लेकर ह़ाज़िर हुई फिर आँह़ज़रत (ﷺ) के ऊपर उसने पेशाब कर दिया तो आपने पानी मंगवाकर पेशाब की जगह पर छींटा दिया। (राजेअ : 223)

तश्रीह : बच्चा बहुत छोटा शीरख़्वार था इसलिये आँह़ज़रत (ﷺ) ने उसके पेशाब पर सिर्फ़ छींटा देना काफ़ी क़रार दिया। ये भी मा'लूम हुआ कि सीने में ग़लीज़ और फ़ासिद रियाह़ के जमा हो जाने से जो तकलीफ़ होती है ऊ़दे हिन्दी उसमें मुफ़ीद है। स़ाह़िबे ख़्वासुल अदविया लिखते हैं कि क़िस्ते बह़री शीरीं गर्म ख़ुश्क है। दिमाग़ को कुव्वत बख़्शती है आज़ा-ए-रईसा को और बाह और जिगर और पुट्ठों को त़ाक़त देती है। रियाह़ को तह़लील करती है। दिमाग़ी बीमारियों फ़ालिज और लक़्वा और रअ़शा को मुफ़ीद है। पेट के कीड़े मारती है, पेशाब और ह़ैज़ को जारी करती है। बाब में क़िस्ते हिन्दी और बह़री दोनों को मिलाकर नास बनाना और नाक में सूँघना मुराद है। ये एक बूटी की जड़ होती है हिन्दी में इसे कूट कहते हैं।

बाब 11 : किस वक़्त पछना लगवाया जाए ह़ज़रत अबू मूसा (रज़ि.) ने रात के वक़्त पछना लगवाया था

١١- بَابُ أَيِّ سَاعَةٍ يَحْتَجِمُ؟ وَاحْتَجَمَ أَبُو مُوسَى لَيْلاً

तश्रीह : ह़ज़रत इमाम बुख़ारी ने ये बाब लाकर उस त़रफ़ इशारा किया है कि कोई ह़दीष़ इस बाब में स़ह़ीह़ नहीं है और रात दिन में हर वक़्त पछना लगवाना दुरुस्त है।

٥٦٩٤- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: احْتَجَمَ النَّبِيُّ ﷺ وَهُوَ صَائِمٌ.

5694. हमसे अबू मअ़मर ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वारिष़ ने बयान किया, कहा हमसे अय्यूब ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने (एक बार) रोज़ा की

हालत में पछना लगवाया। (राजेअ़ : 1835)

[راجع: ١٨٣٥]

मा'लूम हुआ कि बह़ालते रोज़ा पछना लगवाना जाइज़ है और रात व दिन की उसमें कोई तअ़य्युन नहीं है।

बाब 12 : सफ़र में पछना लगवाना और ह़ालते एह़राम में भी, इसे इब्ने बुहैना ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया है

١٢- باب الْحَجْمِ فِي السَّفَرِ وَالإِحْرَامِ، قَالَهُ ابْنُ بُحَيْنَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ

5695. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़यैना ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने, उनसे त़ाउस और अ़त़ा बिन अबी रिबाह़ ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने पछना लगवाया जबकि आप एह़राम से थे। (राजेअ़ : 1835)

٥٦٩٥- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرٍو، عَنْ طَاوُسٍ وَعَطَاءٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ احْتَجَمَ النَّبِيُّ ﷺ وَهُوَ مُحْرِمٌ.

[راجع: ١٨٣٥]

बवक़्ते ज़रूरत शदीद ह़ालत में एह़राम में पछना लगवाना जाइज़ है उस पर इंजेक्शन लगवाने को भी क़यास किया जा सकता है बशर्तेकि रोज़ा न हो।

बाब 13 : बीमारी की वजह से पछना लगवाना जाइज़ है

١٣- باب الْحِجَامَةِ مِنَ الدَّاءِ

5696. हमसे मुह़म्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको हुमैद त़वील ने ख़बर दी और उन्हें अनस (रज़ि.) ने कि उनसे पछना लगवाने वाले की मज़दूरी के बारे में पूछा गया था। उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने पछना लगवाया था आपको अबू त़यबा (नाफ़ेअ़ या मैसरह) ने पछना लगाया था आपने उन्हें दो स़ाअ़ खजूर मज़दूरी में दी थी और आपने उनके मालिकों (बनू हारिस़ा) से बातचीत की तो उन्होंने उनसे वसूल किये जाने वाले लगान में कमी कर दी थी और आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि (ख़ून के दबाव का) बेहतरीन इलाज जो तुम करते हो वो पछना लगवाना है और उ़मदह दवा ऊ़दे हिन्दी का इस्ते'माल करना है और फ़र्माया अपने बच्चों को उ़ज़्रा (ह़लक़ की बीमारी) में बच्चों को उनका तालू दबाकर तकलीफ़ मत दो बल्कि क़िस्त़ लगा दो उससे वरम जाता रहेगा। (राजेअ़ : 2102)

٥٦٩٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا حُمَيْدٌ الطَّوِيلُ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ سُئِلَ عَنْ أَجْرِ الْحَجَّامِ فَقَالَ: احْتَجَمَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَجَمَهُ أَبُو طَيْبَةَ وَأَعْطَاهُ صَاعَيْنِ مِنْ طَعَامٍ وَكَلَّمَ مَوَالِيَهُ فَخَفَّفُوا عَنْهُ وَقَالَ: ((إِنَّ أَمْثَلَ مَا تَدَاوَيْتُمْ بِهِ الْحِجَامَةُ وَالْقُسْطُ الْبَحْرِيُّ وَقَالَ: لاَ تُعَذِّبُوا صِبْيَانَكُمْ بِالْغَمْزِ مِنَ الْعُذْرَةِ وَعَلَيْكُمْ بِالْقُسْطِ)).

[راجع: ٢١٠٢]

5697. हमसे सईद बिन तलीद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इब्ने वहब ने बयान किया कि मुझे अ़म्र वग़ैरह ने ख़बर दी, उनसे बुकैर ने बयान किया, उनसे आस़िम बिन अ़म्र बिन क़तादा ने बयान किया कि ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह मुक़न्नअ़ बिन सिनान ताबेई की एयादत के लिये तशरीफ़

٥٦٩٧- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ تَلِيدٍ حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي عَمْرٌو وَغَيْرُهُ أَنَّ بُكَيْرًا حَدَّثَهُ أَنَّ عَاصِمَ بْنَ عُمَرَ بْنِ قَتَادَةَ حَدَّثَهُ أَنَّ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَادَ الْمُقَنَّعَ ثُمَّ قَالَ : لاَ أَبْرَحُ حَتَّى

تحتجم فَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((إِنَّ فِيهِ شِفَاءً)). [راجع: ٥٦٨٣]

लाए फिर उनसे कहा कि जब तक तुम पछना न लगवा लोगे मैं यहाँ से नहीं जाऊँगा, मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसमें शिफ़ा है। (राजेअ : 5683)

तश्रीह : ईमान का तक़ाज़ा यही है कि रसूले करीम (ﷺ) के हर इर्शाद पर आमन्ना व सद्दक़ना कहा जाए और बिला चूँ चरा उसे तस्लीम कर लिया जाए इसलिये कि आपने जो कुछ फ़र्माया वो सब अल्लाह की तरफ़ से है और वो बिलकुल सच है पछना लगवाने में शिफ़ा होना ऐसी हक़ीक़त है जिसे आज की डॉक्टरी व हिक्मत ने भी तस्लीम किया है क्योंकि उससे फ़ासिद ख़ून निकलकर सालेह ख़ून जगह ले लेता है जो सेहत के लिये एक तरह की ज़मानत है सदक़ल्लाहु व रसूलुहू।

١٤- بَابُ الْحِجَامَةِ عَلَى الرَّأْسِ

बाब 14 : सर में पछना लगवाना दुरुस्त है

٥٦٩٨- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ حَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ عَنْ عَلْقَمَةَ أَنَّهُ سَمِعَ عَبْدَ الرَّحْمَنِ الأَعْرَجَ أَنَّهُ سَمِعَ عَبْدَ اللهِ ابْنَ بُحَيْنَةَ يُحَدِّثُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ احْتَجَمَ بِلَحْيِ جَمَلٍ مِنْ طَرِيقِ مَكَّةَ، وَهُوَ مُحْرِمٌ فِي وَسَطِ رَأْسِهِ.

5698. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, उनसे अल्क़मा ने, उन्होंने अब्दुर्रहमान अअरज से सुना, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन बुहैना (रज़ि.) से सुना वो बयान करते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मक्का के रास्ते में मक़ामे लह्यि जमल में अपने सर के बीच में पछना लगवाया आँहज़रत (ﷺ) उस वक़्त मुहरिम थे।

٥٦٩٩- وَقَالَ الأَنْصَارِيُّ أَخْبَرَنَا هِشَامُ بْنُ حَسَّانَ حَدَّثَنَا عِكْرِمَةُ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ احْتَجَمَ فِي رَأْسِهِ. [راجع: ١٨٣٥]

5699. और मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अंसारी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको हिशाम बिन हस्सान ने ख़बर दी, उनसे इक्रिमा ने बयान किया और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपने सर में पछना लगवाया। (राजेअ : 1835)

١٥- بَابُ الْحَجْمِ مِنَ الشَّقِيقَةِ وَالصُّدَاعِ

बाब 15 : आधे सर के दर्द या पूरे सर के दर्द में पछना लगवाना जाइज़ है

٥٧٠٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ عَنْ هِشَامٍ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ: احْتَجَمَ النبي صلى الله عليه وسلم فِي رَأْسِهِ وَهُوَ مُحْرِمٌ مِنْ وَجَعٍ كَانَ بِهِ بِمَاءٍ يُقَالُ لَهُ : لَحْيُ جَمَلٍ. [راجع: ١٨٣٥]

5700. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबी अदीने बयान किया, उनसे हिशाम बिन हस्सान ने, उनसे इक्रिमा ने और उनसे हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने हालते एहराम में अपने सर में पछना लगवाया (ये पछना आपने सर के) दर्द की वजह से लगवाया था जो लह्यि जमल नामी पानी के घाट पर आपको हो गया था। (राजेअ : 1835)

٥٧٠١- وقال مُحَمَّدُ بْنُ سَوَاءٍ : أَخْبَرَنَا

5701. और मुहम्मद बिन सवाअ ने बयान किया, कहा

هِشَامٌ عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ، احْتَجَمَ وَهُوَ مُحْرِمٌ فِي رَأْسِهِ مِنْ شَقِيقَةٍ كَانَتْ بِهِ.
[راجع: ١٨٣٥]

हमको हिशाम बिन हस्सान ने ख़बर दी, उन्हें इक्रिमा ने और उन्हें हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एहराम की हालत में अपने सर में पछना लगवाया। आधे सर के दर्द की वजह से जो आपको हो गया था। (राजेअ़ : 1835)

तशरीह : आधे सर के दर्द को आधा सीसी कहते हैं ये बहुत ही तकलीफ़ देने वाला दर्द होता है, उसमें आँहज़रत (ﷺ) ने सर में पछना लगवाया मा'लूम हुआ कि इस दर्द का इलाज यही है जो आपने किया। (ﷺ)

٥٧٠٢- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَبَانٍ حَدَّثَنَا ابْنُ الْغَسِيلِ قَالَ: حَدَّثَنِي عَاصِمُ بْنُ عُمَرَ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((إِنْ كَانَ فِي شَيْءٍ مِنْ أَدْوِيَتِكُمْ خَيْرٌ فَفِي شَرْبَةِ عَسَلٍ، أَوْ شَرْطَةِ مِحْجَمٍ، أَوْ لَذْعَةٍ مِنْ نَارٍ، وَمَا أُحِبُّ أَنْ أَكْتَوِيَ)). [راجع: ٥٦٨٣]

5702. हमसे इस्माईल बिन अबान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुर्रहमान बिन ग़सील ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे आ़सिम बिन उ़मर ने बयान किया, उनसे हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि .) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि अगर तुम्हारी दवाईयों मे कोई भलाई है तो शहद के शरबत में है और पछना लगवाने में है और आग से दाग़ने में है लेकिन मैं आग से दाग़ कर इलाज को पसंद नहीं करता। (राजेअ़ : 5683)

इस हदीष़ से बाब की मुत़ाबक़त यूँ है कि जब पछना लगवाना बेहतरीन इलाज ठहरा तो सर के दर्द में लगाना भी मुफ़ीद होगा। आग से दाग़ने के बारे में नही तन्ज़ीही है क्योंकि दूसरी रिवायत मे कुछ स़ह़ाबा का ये इलाज मज़्कूर है (देखो हदीष़ पेज 671)

١٦- باب الْحَلْقِ مِنَ الأَذَى

बाब 16 : (मुहरिम का) तकलीफ़ की वजह से सर मुँडाना (मष़लन पछना लगवाने में बालों से तकलीफ़ हो)

٥٧٠٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ أَيُّوبَ قَالَ: سَمِعْتُ مُجَاهِدًا عَنِ ابْنِ أَبِي لَيْلَى عَنْ كَعْبِ بْنِ عُجْرَةَ قَالَ: أَتَى عَلَيَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ زَمَنَ الْحُدَيْبِيَةِ وَأَنَا أُوقِدُ تَحْتَ بُرْمَةٍ وَالْقَمْلُ يَتَنَاثَرُ عَنْ رَأْسِي فَقَالَ: ((أَيُؤْذِيكَ هَوَامُّكَ)) قُلْتُ: نَعَمْ. قَالَ: ((فَاحْلِقْ وَصُمْ ثَلاَثَةَ أَيَّامٍ أَوْ أَطْعِمْ سِتَّةً أَوِ انْسُكْ نَسِيكَةً)). قَالَ أَيُّوبُ: لاَ أَدْرِي بِأَيَّتِهِنَّ بَدَأَ.
[راجع: ١٨١٤]

5703. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुख़ितयानी ने बयान किया, कहा कि मैंने मुजाहिद से सुना, उनसे अ़ब्दुर्रहमान बिन अबी लैला ने और उनसे कअ़ब बिन उ़ज्रा (रज़ि.) ने बयान किया कि सुलह हुदैबिया के मौक़े पर नबी करीम (ﷺ) मेरे पास तशरीफ़ लाए मैं एक हाँडी के नीचे आग जला रहा था और जूएँ मेरे सर से गिर रही थी (और मैं एहराम बाँधे हुए था) आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा सर की ये जूएँ तुम्हें तकलीफ़ पहुँचाती हैं? मैंने अ़र्ज़ किया कि जी हाँ। फ़र्माया कि फिर सर मुँडवा लो और (कफ़्फ़ारे के त़ौर पर) तीन दिन के रोज़े रख या छ: मिस्कीनों को खाना खिला या एक क़ुर्बानी कर दे। अय्यूब ने कहा कि मुझे याद नहीं कि (इन तीन चीज़ों में से) किसका ज़िक्र सबसे पहले किया था। (राजेअ़ :1814)

तश्रीह : हालते एहराम में सर मुँडाना जाइज़ नहीं है मगर उस तकलीफ़देह हालत में आपने कअ़ब बिन उ़ज्रा को सर मुँडाने की इजाज़त दे दी और साथ ही कफ़्फ़ारा देने का हुक्म फ़र्माया जिसकी तफ़्सील मज़्कूर हुई।

١٧- باب مَنْ اكْتَوَى أَوْ كَوَى غَيْرَهُ، وَفَضْلِ مَنْ لَمْ يَكْتَوِ

बाब 17 : दाग़ लगवाना या लगाना और जो शख़्स दाग़ न लगवाए उसकी फ़ज़ीलत का बयान

٥٧٠٤- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ هِشَامُ بْنُ عَبْدِ الْمَلِكِ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ سُلَيْمَانَ بْنِ الْغَسِيلِ حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ عُمَرَ بْنِ قَتَادَةَ قَالَ: سَمِعْتُ جَابِرًا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِنْ كَانَ فِي شَيْءٍ مِنْ أَدْوِيَتِكُمْ شِفَاءٌ فَفِي شَرْطَةِ مِحْجَمٍ، أَوْ لَذْعَةٍ بِنَارٍ، وَمَا أُحِبُّ أَنْ أَكْتَوِيَ)).[راجع: ٥٦٨٣]

5704. हमसे अबुल वलीद हिशाम बिन अ़ब्दुल मलिक ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुर्रहमान बिन सुलैमान बिन ग़सील ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे आ़सिम बिन उ़मर बिन क़तादा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (ﷺ) से सुना, उनसे नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर तुम्हारी दवाओं में शिफ़ा है तो पछना लगवाने और आग से दाग़ने में है लेकिन आग से दाग़कर इलाज को मैं पसंद नहीं करता। (राजेअ़ : 5683)

इस हदीष़ से मा'लूम हुआ कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जिसे पसंद न करें उसे किसी मुसलमान को पसंद न करना तक़ाज़ाए मुहब्बत है।

٥٧٠٥- حَدَّثَنَا عِمْرَانُ بْنُ مَيْسَرَةَ حَدَّثَنَا ابْنُ فُضَيْلٍ حَدَّثَنَا حُصَيْنٌ عَنْ عَامِرٍ عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: لاَ رُقْيَةَ إِلاَّ مِنْ عَيْنٍ أَوْ حُمَةٍ فَذَكَرْتُهُ لِسَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ فَقَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ عَبَّاسٍ قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((عُرِضَتْ عَلَيَّ الأُمَمُ فَجَعَلَ النَّبِيُّ وَالنَّبِيَّانِ يَمُرُّونَ مَعَهُمُ الرَّهْطُ وَالنَّبِيُّ لَيْسَ مَعَهُ أَحَدٌ حَتَّى رُفِعَ لِي سَوَادٌ عَظِيمٌ، قُلْتُ: مَا هَذَا؟ أُمَّتِي هَذِهِ؟ قِيلَ: هَذَا مُوسَى وَقَوْمُهُ، قِيلَ: انْظُرْ إِلَى الأُفُقِ فَإِذَا سَوَادٌ يَمْلأُ الأُفُقَ ثُمَّ قِيلَ لِي انْظُرْ هَهُنَا هَهُنَا فِي آفَاقِ السَّمَاءِ فَإِذَا سَوَادٌ قَدْ مَلأَ الأُفُقَ قِيلَ هَذِهِ أُمَّتُكَ، وَيَدْخُلُ الْجَنَّةَ مِنْ هَؤُلاَءِ

5705. हमसे इमरान बिन मैसरह ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन फ़ुज़ैल ने बयान किया, उनसे हुसैन बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे आ़मिर शअ़बी ने और उनसे हज़रत इमरान बिन हुसैन (रज़ि.) ने कहा कि नज़रे बद और ज़हरीले जानवर के काट खाने के सिवा और किसी चीज़ पर झाड़–फूँक सहीह नहीं। (हुसैन ने बयान किया कि) फिर मैंने उसका ज़िक्र सईद बिन जुबैर से किया तो उन्होंने बयान किया कि हमसे हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया मेरे सामने तमाम उम्मतें पेश की गईं एक एक दो दो नबी और उनके साथ उनके मानने वाले गुज़रते रहे और कुछ नबी ऐसे भी थे कि उनके साथ कोई नहीं था आख़िर मेरे सामने एक बड़ी भारी जमाअ़त आई। मैंने पूछा ये कौन हैं? क्या ये मेरी उम्मत के लोग हैं? कहा गया कि ये हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) और उनकी क़ौम है फिर कहा गया कि किनारों की तरफ़ देखो मैंने देखा कि एक बहुत ही अ़ज़ीम जमाअ़त है जो किनारों पर छाई हुई है फिर मुझसे कहा गया कि इधर देखो इधर देखो आसमान के मुख़्तलिफ़ किनारों में। मैंने देखा कि जमाअ़त है तमाम उफ़ुक़ पर छाई हुई

سَبْعُونَ أَلْفًا بِغَيْرِ حِسَابٍ)) ثُمَّ دَخَلَ وَلَمْ يُبَيِّنْ لَهُمْ فَأَفَاضَ الْقَوْمُ، وَقَالُوا نَحْنُ الَّذِينَ آمَنَّا بِاللهِ وَاتَّبَعْنَا رَسُولَهُ فَنَحْنُ هُمْ أَوْ أَوْلاَدُنَا الَّذِينَ وُلِدُوا فِي الإِسْلاَمِ فَإِنَّا وُلِدْنَا فِي الْجَاهِلِيَّةِ فَبَلَغَ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَخَرَجَ، فَقَالَ: ((هُمُ الَّذِينَ لاَ يَسْتَرْقُونَ، وَلاَ يَتَطَيَّرُونَ، وَلاَ يَكْتَوُونَ، وَعَلَى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ)). فَقَالَ عُكَّاشَةُ بْنُ مِحْصَنٍ: أَمِنْهُمْ أَنَا يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: ((نَعَمْ)) فَقَامَ آخَرُ فَقَالَ: أَمِنْهُمْ أَنَا؟ قَالَ: ((سَبَقَكَ بِهَا عُكَّاشَةُ)).

[راجع: ٣٤١٠]

है। कहा गया कि ये आपकी उम्मत है और उसमें से सत्तर हज़ार हिसाब के बग़ैर जन्नत में दाख़िल कर दिये जाएँगे। उसके बाद आप (अपने हुज्रे में) तशरीफ़ ले गये और कुछ तफ़्सील नहीं फ़र्माई लोग उन जन्नतियों के बारे में बह्ष करने लगे और कहने लगे कि हम ही अल्लाह पर ईमान लाए हैं और उसके रसूल की इत्तिबाअ की है, इसलिये हम ही (सहाबा) वो लोग हैं या हमारी वो औलाद हैं जो इस्लाम में पैदा हुए क्योंकि हम जाहिलियत में पैदा हुए थे। ये बातें जब हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को मा'लूम हुईं तो आप बाहर तशरीफ़ लाए और फ़र्माया ये वो लोग होंगे जो झाड़ फूँक नहीं कराते, फ़ाल नहीं देखते और दाग़कर इलाज नहीं करते बल्कि अपने रब पर भरोसा करते हैं। इस पर उक्काशा बिन मिह्सन (रज़ि.) ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या मैं भी उनमें से हूँ आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ। उसके बाद दूसरे सहाबी खड़े हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं भी उनमें से हूँ? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उक्काशा तुमसे बाज़ी ले गये। (राजेअ : 2410)

ख़ालिस अल्लाह पर तवक्कल रखना और इसी अक़ीदे के तहत जाइज़ इलाज कराना भी तवक्कल के मनाफ़ी नहीं है फिर जो लोग ख़ालिस तवक्कल पर क़ायम रहकर कोई जाइज़ इलाज ही न कराएँ वो यक़ीनन इस फ़ज़ीलत के मुस्तहिक़ होंगे। जअलनल्लाहु मिन्हुम आमीन

١٨- باب الإِثْمِدِ وَالْكُحْلِ مِنَ الرَّمَدِ، فِيهِ عَنْ أُمِّ عَطِيَّةَ

اثمد اصفہانی سرمے کا پتھر ہوتا ہے۔

बाब 18 : इष्मिद और सुर्मा लगाना जब आँखें दुखती हों इस बाब में उम्मे अतिया (रज़ि.) से एक हदीष भी मरवी है

٥٧٠٦- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ شُعْبَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي حُمَيْدُ بْنُ نَافِعٍ عَنْ زَيْنَبَ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ امْرَأَةً تُوُفِّيَ زَوْجُهَا فَاشْتَكَتْ عَيْنَهَا فَذَكَرُوهَا لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَذَكَرُوا لَهُ الْكُحْلَ وَأَنَّهُ يَخَافُ عَلَى عَيْنِهَا فَقَالَ: ((لَقَدْ كَانَتْ إِحْدَاكُنَّ

5706. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे शुअबा ने बयान कि कि मुझसे हुमैद बिन नाफ़ेअ ने बयान किया, उनसे हज़रत ज़ैनब (रज़ि.) ने और उनसे हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) ने कि एक औरत के शौहर का इंतिक़ाल हो गया (ज़माना-ए-इद्दत में) उस औरत की आँख दुखने लगी तो लोगों ने उसका ज़िक्र नबी करीम (ﷺ) से किया। उन लोगों ने आँहज़रत (ﷺ) के सामने सुर्मा का ज़िक्र किया और ये कि (अगर सुर्मा आँख में लगाया तो) आँख के बारे में ख़तरा है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि (ज़माना-ए-जाहिलियत में) इद्दत गुज़ारने वाली तुम औरतों

तम्कुसु फ़ी बैतिहा

تَمْكُثُ فِي بَيْتِهَا فِي شَرِّ أَحْلاَسِهَا -أَوْ فِي أَحْلاَسِهَا- فِي شَرِّ بَيْتِهَا فَإِذَا مَرَّ كَلْبٌ رَمَتْ بَعَرَةً، فَلاَ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا)). [راجع: ٥٣٣٦]

के अपने घर में सबसे बदतर कपड़े में पड़ा रहना पड़ता था या (आपने ये फ़र्माया कि) अपने कपड़ों में घर के सबसे बदतर हिस्से में पड़ा रहना पड़ता था फिर जब कोई कुत्ता गुज़रता तो उस पर वो मींगनी फेंककर मारती (तब इद्दत से बाहर होती) पस चार महीने दस दिन तक सुर्मा न लगाओ। (राजेअ़ : 5336)

तश्रीह : बाब का मत़लब यूँ निकला कि आपने इद्दत की वजह से आँख दुखने में सुर्मा लगाने की इजाज़त नहीं दी। अगर इद्दत न हो तो आप आँख के दर्द में सुर्मा लगाने की इजाज़त देते। बाब का यही मत़लब है ज़माना जाहिलियत में औरत शौहर के मर जाने पर फटे पुराने ख़राब कपड़े पहनकर साल भर एक सड़े बदबूदार घर में पड़ी रहती। साल के बाद जब कुत्ता सामने से निकलता तो ऊँट की मींगनी उस पर फेंकती उस वक़्त कहीं इद्दत से बाहर आती। इत्तिफ़ाक़ से अगर कुत्ता न निकलता तो उसके इंतिज़ार में और पड़ी सड़ती रहती। इस्लाम ने इस ग़लत़ रस्म को मिटाकर सिर्फ़ चार महीने और दस दिन की इद्दत क़रार दी और उन दिनों में सुर्मा लगाने की किसी सूरत में इजाज़त नहीं दी।

बाब 19 : जुज़ाम का बयान

١٩- باب الْجُذَامِ

٥٧٠٧- وقال عَفَّانُ حَدَّثَنَا سُلَيْمُ بْنُ حَيَّانَ حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مِينَاءَ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لاَ عَدْوَى، وَلاَ طِيَرَةَ، وَلاَ هَامَةَ، وَلاَ صَفَرَ، وَفِرَّ مِنَ الْمَجْذُومِ كَمَا تَفِرُّ مِنَ الأَسَدِ)). [أطرافه في: ٥٧١٧، ٥٧٥٧، ٥٧٧٠، ٥٧٧٣، ٥٧٧٥].

5707. और अ़फ़्फ़ान बिन मुस्लिम (इमाम बुख़ारी रह. के शैख़) ने कहा (उनको अबू नुऐम ने वस्ल किया) है कि हमसे सुलैम बिन ह़य्यान ने बयान किया, उनसे सईद बिन मीनाअ ने बयान किया, कहा कि मैंने ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया छूत लगना, बदशगूनी लेना, उल्लू का मन्ह़ूस होना और स़फ़र का मन्ह़ूस होना ये सब बेहुदा ख़्यालात हैं अल्बत्ता जुज़ामी शख़्स से ऐसा भागता रह जैसा कि शेर से भागता है। (दीगर मक़ामात : 5717, 5757, 5770, 5773, 5775)

तश्रीह : जुज़ाम (कोढ़) एक ख़राब मशहूर बीमारी है जिसमें ख़ून बिगड़कर सारा जिस्म गलने लग जाता है। आख़िर में हाथ पैर की उँगलियाँ झड़ जाती हैं। हर चंद मर्ज़ को पूरा होना बहुक्मे इलाही है मगर जुज़ामी के साथ ख़लत़ मलत़ और यकजाई उसका सबब है और सबब से परहेज़ करना मुक़्तज़ाए दानिशमंदी है ये तवक्कल के ख़िलाफ़ नहीं है, जब ये ए'तिक़ाद हो कि सबब उस वक़्त अष़र करता है जब मुसब्बबे अस्बाब या'नी परवरदिगार उसमें अष़र दे। कुछ ने कहा आपने पहले फ़र्माया जुज़ामी से भागता रह ये उसके ख़िलाफ़ नहीं है आपका मत़लब ये था कि अकष़र शर्र से डरने वाले कमज़ोर लोग होते हैं उनको जुज़ामी से अलग रहना ही बेहतर है ऐसा न हो कि उनको कोई आरज़ा हो जाए तो इल्लत उसकी जुज़ामी का कुर्ब क़रार दें और शिर्क में गिरफ़्तार हों गोया ये हुक्म अवाम के लिये है और ख़्वास़ को इजाज़त है वो जुज़ामी से कुर्ब रखें तो भी कोई क़बाह़त नहीं है। ह़दीष़ में है कि आपने जुज़ामी के साथ खाना खाया और फ़र्माया **बिस्मिल्लाहि ष़िक़तन बिल्लाहि व तवक्कलन अलैहि** त़ाऊन ज़दा शहरों के लिये भी यही हुक्म है।

अ़ल्लामा इब्ने क़य्यिम ने ज़ादुल मआ़द में लिखा है कि अह़ादीष़ में तअ़दिया की नफ़ी औहामपरस्ती को ख़त्म करने के लिये की गई है। या'नी ये समझना कि बीमारी अड़कर गल जाती है ये ग़लत़ है और बीमारियों में तअ़दिया इस ह़ैष़ियत से क़त़अन नहीं है। अस्लन तअ़दिया का इंकार मक़्सूद नहीं है। अल्लाह तआ़ला ने बहुत सी बीमारियों में तअ़दिया पैदा किया है। इसलिये इस बाब में औहाम परस्ती न करनी चाहिये।

हामा का ए'तिक़ाद अ़रब में इस त़रह़ था कि वो कुछ परिन्दों के बारे में समझते थे कि अगर वो किसी जगह बैठकर बोलने लगे तो वो जगह उजाड़ हो जाती है। शरीअ़त ने उसकी तर्दीद की कि बनना और बिगड़ना किसी परिन्दे की आवाज़ से नहीं होता बल्कि अल्लाह तआ़ला के चाहने से होता है। उल्लू के बारे में आज तक अ़वाम जुहला का यही ख़्याल है। कुछ शहद की मक्खियों के छत्ते के बारे में ऐसा वहम रखते हैं ये सब ख़्यालाते फ़ासिदा हैं मुसलमान को ऐसे ख़्यालाते बात़िला से बचना ज़रूरी है।

बाब 20 : मन्न आँख के लिये शिफ़ा है

٢٠- باب الْمَنُّ شِفَاءٌ لِلْعَيْنِ

मन्न वो ह़लवा जो बग़ैर मेह़नत के बनी इस्राईल को मिलता था ऐसे ही खुम्बी भी ख़ुद ब ख़ुद उगती है जो एक जंगली बूटी है उसकी ख़ासियत बयान हो रही है आँख में उसका अ़र्क़ टपकाना मुफ़ीद है, उसे अ़वाम सांप की छतरी भी कहते हैं उ़मूमन गन्दुम के खेतों में होती है।

5708. हमसे मुह़म्मद बिन मुष़न्ना ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया कहा हमसे शुअ़्बा ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल मलिक बिन उ़मेर ने कहा कि मैंने अ़म्र बिन हुरैष़ से सुना, कहा कि मैंने ह़ज़रत सईद बिन ज़ैद (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि खुम्बी मन्न मे से है और उसका पानी आँख के लिये शिफ़ा है। इसी सनद से शुअ़बा ने बयान किया कि मुझे ह़कम बिन उ़तैबा ने ख़बर दी, उन्हें ह़सन बिन अ़ब्दुल्लाह अ़रनी ने, उन्हें अ़म्र बिन हुरैष़ ने और उन्हें सईद बिन ज़ैद (रज़ि.) ने और उन्हें नबी करीम (ﷺ) ने यही ह़दीष़ बयान की। शुअ़बा ने कहा कि जब ह़कम ने भी मुझसे ये ह़दीष़ बयान कर दी तो फिर अ़ब्दुल मलिक बिन उ़मेर की रिवायत पर मुझको ए'तिमाद हो गया क्योंकि अ़ब्दुल मलिक का ह़ाफ़्ज़ा आख़िर में बिगड़ गया था शुअ़बा को स़िर्फ़ उसकी रिवायत पर भरोसा न रहा। (राजेअ़ : 4478)

٥٧٠٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ قَالَ: سَمِعْتُ عَمْرَو بْنَ حُرَيْثٍ قَالَ: سَمِعْتُ سَعِيدَ بْنَ زَيْدٍ قَالَ : سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: ((الْكَمْأَةُ مِنَ الْمَنِّ وَمَاؤُهَا شِفَاءٌ لِلْعَيْنِ)). قَالَ شُعْبَةُ : وَأَخْبَرَنِي الْحَكَمُ بْنُ عُتَيْبَةَ عَنِ الْحَسَنِ الْعُرَنِيِّ عَنْ عَمْرِو بْنِ حُرَيْثٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ زَيْدٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ شُعْبَةُ : لَمَّا حَدَّثَنِي بِهِ الْحَكَمُ لَمْ أُنْكِرْهُ مِنْ حَدِيثِ عَبْدِ الْمَلِكِ.

[راجع: ٤٤٧٨]

बाब 21 : मरीज़ का ह़लक़ में दवा डालना

٢١- باب اللَّدُودِ

इस त़रह़ कि बीमार के मुँह में एक त़रफ़ लगा दें।

5709,10,11. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह़्या बिन सईद क़त़्त़ान ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, कहा कि मुझसे मूसा बिन अबी आ़इशा ने बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने और ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कि ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) की नअ़श मुबारक को बोसा दिया। (राजेअ़ : 1241, 1242, 4456)

٥٧٠٩، ٥٧١٠، ٥٧١١- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنِي مُوسَى بْنُ أَبِي عَائِشَةَ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ وَعَائِشَةَ أَنَّ أَبَا بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَبَّلَ النَّبِيَّ ﷺ، وَهُوَ مَيِّتٌ.

[راجع: ١٢٤١، ١٢٤٢، ٤٤٥٦]

٥٧١٢- قال : وَقَالَتْ عَائِشَةُ لَدَدْنَاهُ فِي مَرَضِهِ فَجَعَلَ يُشِيرُ إِلَيْنَا أَنْ لاَ تَلُدُّونِي فَقُلْنَا كَرَاهِيَةَ الْمَرِيضِ لِلدَّوَاءِ فَلَمَّا أَفَاقَ قَالَ: ((أَلَمْ أَنْهَكُمْ أَنْ تَلُدُّونِي)) قُلْنَا كَرَاهِيَةُ الْمَرِيضِ لِلدَّوَاءِ فَقَالَ : ((لاَ يَبْقَى فِي الْبَيْتِ أَحَدٌ إِلاَّ لُدَّ)) وَأَنَا أَنْظُرُ إِلاَّ الْعَبَّاسَ فَإِنَّهُ لَمْ يَشْهَدْكُمْ.

[راجع: ٤٤٥٨]

5712. (उबैदुल्लाह ने) बयान किया कि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा हमने आँहज़रत (ﷺ) के मर्ज़ (वफ़ात) में दवा आपके मुँह में डाली तो आपने हमें इशारा किया कि दवा मुँह में न डालो हमने ख़्याल किया कि मरीज़ को दवा से जो नफ़रत होती है उसकी वजह से आँहज़रत (ﷺ) मना फ़र्मा रहे हैं फिर जब आपको होश हुआ तो आपने फ़र्माया क्यूँ मैंने तुम्हें मना नहीं किया था कि दवा मेरे मुँह में न डालो। हमने अ़र्ज़ किया कि ये शायद आपने मरीज़ की दवा से त़बई नफ़रत की वजह से फ़र्माया होगा। इस पर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अब घर में जितने लोग इस वक़्त मौजूद हैं सबके मुँह में दवा डाली जाए और मैं देखता रहूँगा, अल्बत्ता हज़रत अ़ब्बास (रज़ि.) को छोड़ दिया जाए क्योंकि वो मेरे मुँह में डालते वक़्त मौजूद न थे, बाद में आए। (राजेअ़ : 4458)

तश्रीह : हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने अज़्राहे मुहब्बत आँहज़रत (ﷺ) की नअ़श मुबारक को बोसा दिया जिससे ष़ाबित हो गया कि बुज़ुर्ग बा ख़ुदा इंसान को अज़्राहे मुहब्बत बोसा दिया जा सकता है मगर कोई शिर्किया पहलू न होना चाहिये कि बोसा देने वाला समझे कि उस बोसा से मेरी ह़ाजत पूरी हो गई या मेरा फ़लाँ काम हो जाएगा। ये शिर्किया तस़व्वुरात हैं जिनमें अकष़र नावाक़िफ़ लोग गिरफ़्तार हैं आजकल नामो निहाद पीरों मुर्शिदों का यही हाल है।

٥٧١٣- حدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ عَنْ أُمِّ قَيْسٍ قَالَتْ: دَخَلْتُ بِابْنٍ لِي عَلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَقَدْ أَعْلَقْتُ عَلَيْهِ مِنَ الْعُذْرَةِ فَقَالَ: ((عَلَى مَا تَدْغَرْنَ أَوْلاَدَكُنَّ بِهَذَا الْعِلاَقِ؟ عَلَيْكُنَّ بِهَذَا الْعُودِ الْهِنْدِيِّ فَإِنَّ فِيهِ سَبْعَةَ أَشْفِيَةٍ مِنْهَا ذَاتُ الْجَنْبِ يُسْعَطُ مِنَ الْعُذْرَةِ، وَيُلَدُّ مِنْ ذَاتِ الْجَنْبِ)). فَسَمِعْتُ الزُّهْرِيَّ يَقُولُ بَيَّنَ لَنَا اثْنَيْنِ وَلَمْ يُبَيِّنْ لَنَا خَمْسَةً، قُلْتُ لِسُفْيَانَ فَإِنَّ مَعْمَرًا

5713. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने, उनसे ज़ुह्री ने, कहा मुझको उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा ने ख़बर दी और उन्हें उम्मे क़ैस (रज़ि.) ने कि मैं अपने एक लड़के को लेकर रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुई। मैंने उसकी नाक में बत्ती डाली थी, उसका हलक़ दबाया था चूँकि उसको गले के बीमारी हो गई थी आपने फ़र्माया तुम अपने बच्चों को उँगली से हलक़ दबाकर क्यूँ तकलीफ़ देती हो ये ऊ़दे हिन्दी लो इसमे सात बीमारियों की शिफ़ा है इनमें एक ज़ातुल जुनब (पसली का वरम भी है) अगर हलक़ की बीमारी हो तो इसको नाक में डालो अगर ज़ातुल जुनब हो तो ह़लक़ में डालो (लदूद करो) सुफ़यान कहते हैं कि मैंने ज़ुह्री से सुना, आँहज़रत (ﷺ) ने दो बीमारियों को तो बयान किया बाक़ी पाँच बीमारियों को बयान नहीं फ़र्माया। अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने कहा मैंने

يَقُولُ: أَعْلَقْتُ عَلَيْهِ قَالَ: لَمْ يَحْفَظْ أَعْلَقْتُ عَنْهُ حِفَظْتُهُ، مِنْ فِي الزُّهْرِيِّ وَوَصَفَ سُفْيَانُ الْغُلاَمُ يُحَنَّكُ بِالإِصْبَعِ وَأَدْخَلَ سُفْيَانُ فِي حَنَكِهِ إِنَّمَا يَعْنِي رَفْعَ حَنَكِهِ بِإِصْبَعِهِ وَلَمْ يَقُلْ أَعْلِقُوا عَنْهُ شَيْئًا.

[راجع: ٥٦٩٢]

सुफ़यान से कहा मअ़मर तो ज़ुहरी से यूँ नक़ल करता है आलक़्तु अ़लैहि उन्होंने कहा कि मअ़मर ने याद नहीं रखा। मुझे याद है ज़ुहरी ने यूँ कहा था अअ़लक़्तु अ़लैहि और सुफ़यान ने इस तहनीक को बयान किया जो बच्चे को पैदाइश के वक़्त की जाती है सुफ़यान ने उँगली हलक़ में डालकर अपने कोले को उँगली से उठाया तो सुफ़यान ने अअ़लाक़ का मा'नी बच्चे के हलक़ में उँगली डालकर तालू को उठाया उन्होंने ये नहीं कहा आलिक़ू अ़न्हु शैआ।

٢٢- باب

बाब : 22

इसमें कोई तर्जुमा मज़्कूर नहीं है गोया बाब साबिक़ का ततिम्मा है।

٥٧١٤- حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ مُحَمَّدٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ وَيُونُسُ قَالَ الزُّهْرِيُّ: أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنُ عُتْبَةَ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ: لَمَّا ثَقُلَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَاشْتَدَّ بِهِ وَجَعُهُ اسْتَأْذَنَ أَزْوَاجَهُ فِي أَنْ يُمَرَّضَ فِي بَيْتِي فَأَذِنَّ لَهُ فَخَرَجَ بَيْنَ رَجُلَيْنِ تَخُطُّ رِجْلاَهُ فِي الأَرْضِ بَيْنَ عَبَّاسٍ وَآخَرَ فَأَخْبَرْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ فَقَالَ: هَلْ تَدْرِي مَنِ الرَّجُلُ الآخَرُ الَّذِي لَمْ تُسَمِّ عَائِشَةُ؟ قُلْتُ لاَ. قَالَ: هُوَ عَلِيٌّ، قَالَتْ عَائِشَةُ: فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ، بَعْدَمَا دَخَلَ بَيْتَهَا وَاشْتَدَّ بِهِ وَجَعُهُ: ((هَرِيقُوا عَلَيَّ مِنْ سَبْعِ قِرَبٍ لَمْ تُحْلَلْ أَوْكِيَتُهُنَّ لَعَلِّي أَعْهَدُ إِلَى النَّاسِ)) قَالَتْ: فَأَجْلَسْنَاهُ فِي مِخْضَبٍ لِحَفْصَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ ثُمَّ طَفِقْنَا نَصُبُّ عَلَيْهِ مِنْ تِلْكَ الْقِرَبِ حَتَّى جَعَلَ يُشِيرُ إِلَيْنَا أَنْ قَدْ فَعَلْتُنَّ قَالَتْ: وَخَرَجَ إِلَى النَّاسِ فَصَلَّى لَهُمْ وَخَطَبَهُمْ.

5714. हमसे बिश्र बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको मअ़मर और यूनुस ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया कि मुझको उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा ने ख़बर दी और उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतह्हरा हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब (मर्ज़ुल मौत में) रसूलुल्लाह (ﷺ) के लिये चलना फिर ना दुश्वार हो गया और आपकी तकलीफ़ बढ़ गई तो आपने बीमारी के दिन मेरे घर में गुज़ारने की इजाज़त अपनी दूसरी बीवियों से मांगी जब इजाज़त मिल गई तो आँहज़रत (ﷺ) दो अश्ख़ास हज़रत अ़ब्बास (रज़ि.) और एक और साहब के बीच उनका सहारा लेकर बाहर तशरीफ़ लाए, आपके मुबारक क़दम ज़मीन पर घिसट रहे थे। मैंने हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से इसका ज़िक्र किया तो उन्होंने कहा तुम्हें मा'लूम है वो दूसरे साहब कौन थे जिनका आइशा (रज़ि.) ने नाम नहीं बताया। मैंने कहा कि नहीं कहा कि वो अ़ली (रज़ि.) थे। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि उनके हुज्रे में दाख़िल होने के बाद नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जबकि आपका मर्ज़ बढ़ गया था कि मुझ पर सात मश्क डालो जो पानी से लबरेज़ हों। शायद मैं लोगों को कुछ नसीहत कर सकूँ। बयान किया कि फिर आँहज़रत (ﷺ) को हमने एक लगन में बिठाया जो आँहज़रत (ﷺ) की ज़ोजा मुतह्हरा हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) का था और आप पर हुक्म के मुताबिक़ मश्कों से पानी डालने लगे आख़िर आपने हमें इशारा किया कि बस हो चुका। बयान किया कि फिर आँहज़रत (ﷺ)

सहाबा के मज्मअ़े में गये, उन्हें नमाज़ पढ़ाई और उन्हें ख़िताब फ़र्माया। (राजेअ़ : 198)

[راجع: ١٩٨]

बाब 23 : उ़ज़्रा या'नी हलक़ के कव्वे के गिर जाने का इलाज जिसे अ़रबी में सक़ूतुल लिहात कहते हैं

٢٣- باب الْعُذْرَةِ

5715. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने कहा कि मुझे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा ने ख़बर दी कि उम्मे क़ैस बिन्ते मिहसन असदिया ने उन्हें ख़बर दी, उनका ता'ल्लुक़ क़बीला ख़ुज़ैमा की शाख बनी असद से था वो उन इब्तिदाई मुहाजिरात में से थीं जिन्होंने नबी करीम (ﷺ) से बेअ़त की थी। आप उ़क्काशा बिन मिहसन (रज़ि.) की बहन हैं (उन्होंने बयान किया कि) वो रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में अपने एक बेटे को लेकर आईं। उन्होंने अपने लड़के के उ़ज़्रा का इलाज तालू दबाकर किया था आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया आख़िर तुम औ़रतें क्यूँ अपनी औलाद को यूँ तालू दबाकर तकलीफ़ देती हो। तुम्हें चाहिये कि इस मर्ज़ में ऊ़दे हिन्दी का इस्ते'माल किया करो क्योंकि उसमें सात बीमारियों से शिफ़ा है। उनमें एक ज़ातुल जुनब की बीमारी भी है (ऊ़दे हिन्दी से) आँहज़रत (ﷺ) की मुराद कुस्त थी यही उ़दे हिन्दी है। और यूनुस और इस्हाक़ बिन राशिद ने बयान किया और उनसे ज़ुह्री ने इस रिवायत में बजाय अअ़लक़्तु अ़लैह के अ़लक़्तु अ़लैहि नक़ल किया है। (राजेअ़ : 5692)

٥٧١٥- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ أَنَّ أُمَّ قَيْسٍ بِنْتَ مِحْصَنٍ الأَسَدِيَّةَ - أَسَدَ خُزَيْمَةَ- وَكَانَتْ مِنَ الْمُهَاجِرَاتِ الأُوَلِ اللاَّتِي بَايَعْنَ النَّبِيَّ ﷺ وَهْيَ أُخْتُ عُكَّاشَةَ أَخْبَرَتْهُ أَنَّهَا أَتَتْ رَسُولَ اللهِ ﷺ بِابْنٍ لَهَا قَدْ أَعْلَقَتْ عَلَيْهِ مِنَ الْعُذْرَةِ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((عَلَى مَا تَدْغَرْنَ أَوْلاَدَكُنَّ بِهَذَا الْعِلاَقِ؟ عَلَيْكُنَّ بِهَذَا الْعُودِ الْهِنْدِيِّ فَإِنَّ فِيهِ سَبْعَةَ أَشْفِيَةٍ مِنْهَا ذَاتُ الْجَنْبِ)). يُرِيدُ الْكُسْتَ وَهْوَ الْعُودُ الْهِنْدِيُّ. وَقَالَ يُونُسُ وَإِسْحَاقُ بْنُ رَاشِدٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ ((عَلَّقَتْ عَلَيْهِ)).

[راجع: ٥٦٩٢]

और लुग़त की रू से अअ़लक़्तु सहीह है माख़ूज़ अअ़लाक़ से और अअ़लाक़ कहते हैं बच्चे के हलक़ को दबाना और मलना। यूनुस की रिवायत को इमाम मुस्लिम ने और इस्हाक़ की रिवायत को आगे चलकर ख़ुद इमाम बुख़ारी ने वस्ल किया है।

बाब 24 : पेट के आ़रज़े में क्या दवा दी जाए?

٢٤- باب دَوَاءِ الْمَبْطُونِ

5716. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, उनसे अबुल मुतवक्किल ने और उनसे हज़रत अबू सईद (रज़ि.) ने कि एक साहब रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि मेरे भाई को दस्त आ रहे हैं आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उन्हें शहद पिलाओ। उन्होंने पिलाया और फिर वापस आकर कहा कि मैंने उन्हें शहद पिलाया लेकिन उनके दस्तों में कोई कमी नहीं हुई।

٥٧١٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَبِي الْمُتَوَكِّلِ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: إِنَّ أَخِي اسْتَطْلَقَ بَطْنُهُ فَقَالَ: ((اسْقِهِ عَسَلاً)) فَسَقَاهُ فَقَالَ: إِنِّي سَقَيْتُهُ

فَلَمْ يَزِدْهُ إِلاَّ اسْتِطْلاَقًا فَقَالَ: ((صَدَقَ اللهُ وَكَذَبَ بَطْنُ أَخِيكَ)). تَابَعَهُ النَّضْرُ عَنْ شُعْبَةَ.
[راجع: ٥٦٨٤]

आपने उस पर फ़र्माया कि अल्लाह तआला ने सच फ़र्माया और तुम्हारे भाई का पेट झूठा है (आख़िर शहद ही से उसे शिफ़ा हुई) मुहम्मद बिन जा'फ़र के साथ इस हदीष़ को नज़्र बिन शुमैल ने भी शुअ़बा से रिवायत किया है। (राजेअ़ : 5684)

तश्रीह : शहद के बारे में ख़ुद इर्शादे बारी तआला है **फीहि शिफ़ाउल्लिन्नास** (अन नह्ल : 69) या'नी शहद में लोगों के लिये शिफ़ा है क्योंकि ये बेशतर नबातात का क़ीमती निचोड़ है जिसे शहद की मक्खी नबातात के फूलों का रस चूस चूसकर जमा करती है। इस रिवायत में जिस मरीज़ का ज़िक्र है उसे शहद पिलाते पिलाते अज़्ख़ुद दस्त बन्द हो गये। जब पेट का सब फ़ासिद मादा निकल गया तो शहद ने मुकम्मल त़रीक़े से उस शख़्स़ पर अपना अष़र किया। या'नी उसके दस्त रोक दिये यही अस़ल उसूल होम्योपैथिक इलाज की बुनियाद है।

٢٥- باب لاَ صَفَرَ وَهُوَ دَاءٌ يَأْخُذُ الْبَطْنَ

बाब 25 : स़फ़र स़िर्फ़ पेट की एक बीमारी है

कुछ ने कहा कि पेट में कीड़ा पैदा हो जाता है जो अपने ज़हरीले अष़रात से आदमी का रंग ज़र्द कर देता है और आदमी उससे बहुक्मे इलाही हलाक हो जाता है, वल्लाहु आलम बिस्स़वाब।

٥٧١٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ صَالِحٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، قَالَ أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ وَغَيْرُهُ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، قَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لاَ عَدْوَى، وَلاَ صَفَرَ وَلاَ هَامَةَ)) فَقَالَ أَعْرَابِيٌّ: يَا رَسُولَ اللهِ، فَمَا بَالُ إِبِلِي تَكُونُ فِي الرَّمْلِ كَأَنَّهَا الظِّبَاءُ فَيَأْتِي الْبَعِيرُ الأَجْرَبُ فَيَدْخُلُ بَيْنَهَا فَيُجْرِبُهَا؟ فَقَالَ: ((فَمَنْ أَعْدَى الأَوَّلَ؟)). رَوَاهُ الزُّهْرِيُّ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ وَسِنَانِ بْنِ أَبِي سِنَانٍ.
[راجع: ٥٧٠٧]

5717. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे स़ालेह ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्हें अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान वग़ैरह ने ख़बर दी और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया अम्राज़ में छूतछात स़फ़र और उल्लू की नहूसत की कोई अस़ल नहीं उस पर एक अअ़राबी बोला कि या रसूलल्लाह! फिर मेरे ऊँटों को क्या हो गया है कि वो जब तक रेगिस्तान में रहते हैं तो हिरणों की तरह (स़ाफ़ और ख़ूब चिकने) रहते हैं फिर उनमें एक ख़ारिश वाला ऊँट आ जाता है और उनमें घुसकर उन्हें भी ख़ारिश लगा जाता है तो आँहज़रत (ﷺ) ने उस पर फ़र्माया लेकिन ये बताओ कि पहले ऊँट को किसने ख़ारिश लगाई थी? इसकी रिवायत ज़ुहरी ने अबू सलमा और हज़रत सिनान बिना सिनान के वास्ते से की है। (राजेअ़ : 5707)

٢٦- باب ذَاتِ الْجَنْبِ

बाब 26 : ज़ातुल जुनब (निमोनिया) का बयान

ये पसली का वरम होता है जो सल और दक़ की तरह बड़ी मुहलिक बीमारी है इसका इलाज ज़रूरी है।

٥٧١٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ أَخْبَرَنَا عَتَّابُ بْنُ

5718. हमसे मुहम्मद बिन यह्या ने बयान किया, कहा हमको

بَشِيرٍ عَنْ إِسْحَاقَ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ أَنَّ أُمَّ قَيْسٍ بِنْتِ مِحْصَنٍ وَكَانَتْ مِنَ الْمُهَاجِرَاتِ الأُوَلِ اللاَّتِي بَايَعْنَ رَسُولَ اللهِ ﷺ وَهِيَ أُخْتُ عُكَّاشَةَ بْنِ مِحْصَنٍ أَخْبَرَتْهُ أَنَّهَا أَتَتْ رَسُولَ اللهِ ﷺ بِابْنٍ لَهَا وَقَدْ عَلَّقَتْ عَلَيْهِ مِنَ الْعُذْرَةِ فَقَالَ: ((اتَّقُوا اللهَ عَلَى مَا تَدْغَرُونَ أَوْلاَدَكُمْ بِهَذِهِ الأَعْلاَقِ؟ عَلَيْكُمْ بِهَذَا الْعُودِ الْهِنْدِيِّ فَإِنَّ فِيهِ سَبْعَةَ أَشْفِيَةٍ مِنْهَا ذَاتُ الْجَنْبِ)). يُرِيدُ الْكُسْتَ يَعْنِي الْقُسْطَ قَالَ : وَهِيَ لُغَةٌ.

[راجع: ٥٦٩٢]

अ़त्ताब बिन बशीर ने ख़बर दी, उन्हें इस्हाक़ ने, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया कि मुझको उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी कि उम्मे क़ैस बिन्ते मिह़्सन जो उन अगली हिजरत करने वाली औ़रतों में से थीं, जिन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से बेअ़त की थी और वो ह़ज़रत उ़क्काशा बिन मिह़्सन (रज़ि.) की बहन थीं, ख़बर दी कि वो रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में अपने एक बेटे को लेकर ह़ाज़िर हुईं। उन्होंने उस बच्चे का कवा गिरने में तालू दबाकर इलाज किया था। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह से डरो कि तुम अपनी औलाद को इस त़रह़ तालू दबाकर तकलीफ़ पहुँचाती हो ऊ़दे हिन्दी (कूट) उसमें इस्ते'माल करो क्योंकि इसमें सात बीमारियों के लिये शिफ़ा है जिनमें से एक निमोनिया भी है। आँह़ज़रत (ﷺ) की मुराद ऊ़दे हिन्दी से किस्त थी जिसे क़िस्त भी कहते हैं ये भी एक लुग़त है। (राजेअ़: 5692)

ऊ़दे हिन्दी और ऊ़दे बह़री दोनों जड़ें होती हैं उन दोनों को मिलाकर नास बनाना और नाक में डालना ऐसी बीमारियों के लिये बेह़द मुफ़ीद है जैसा कि पहले गुज़र चुका है और ये दोनों दवाएँ पसली के वरम में भी बहुत काम आती हैं।

٥٧١٩، ٥٧٢٠، ٥٧٢١- حَدَّثَنَا عَارِمٌ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ قَالَ : قُرِىءَ عَلَى أَيُّوبَ مِنْ كُتُبِ أَبِي قِلاَبَةَ مِنْهُ مَا حَدَّثَ بِهِ وَمِنْهُ مَا قُرِىءَ عَلَيْهِ وَكَانَ هَذَا فِي الْكِتَابِ عَنْ أَنَسٍ أَنَّ أَبَا طَلْحَةَ وَأَنَسَ بْنَ النَّضْرِ كَوَيَاهُ أَوْكَوَاهُ أَبُو طَلْحَةَ بِيَدِهِ. وَقَالَ عَبَّادُ بْنُ مَنْصُورٍ، عَنْ أَيُّوبَ عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: أَذِنَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لأَهْلِ بَيْتٍ مِنَ الأَنْصَارِ أَنْ يَرْقُوا مِنَ الْحُمَةِ وَالأُذُنِ. قَالَ أَنَسٌ: كُوِيتُ مِنْ ذَاتِ الْجَنْبِ وَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حَيٌّ وَشَهِدَنِي أَبُو طَلْحَةَ وَأَنَسُ بْنُ النَّضْرِ وَزَيْدُ بْنُ ثَابِتٍ وَأَبُو طَلْحَةَ كَوَانِي.

5719,20,21. हमसे आ़रिम ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद ने बयान किया कि अय्यूब सुख़ितयानी के सामने अबू क़िलाबा की लिखी हुई अह़ादीष़ पढ़ी गईं उनमें वो अह़ादीष़ भी थीं जिन्हें (अय्यूब ने अबू क़िलाबा से) बयान किया था और वो भी थीं जो उनके सामने पढ़कर सुनाई गई थीं। उन लिखी हुई अह़ादीष़ के ज़ख़ीरे में अनस (रज़ि.) की ये ह़दीष़ भी थी कि अबू त़लह़ा और अनस बिन नज़र ने अनस (रज़ि.) को दाग़ लगाकर उनका इलाज किया था या अबू त़लह़ा (रज़ि.) ने उनको ख़ुद अपने हाथ से दाग़ा था। और अ़ब्बाद बिन मंसूर ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे अबू क़िलाब ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने क़बीला अंस़ार के कुछ घरानों को ज़हरीले जानवरों के काटने और कान की तकलीफ़ में झाड़ने की इजाज़त दी थी तो अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि ज़ातुल जुनब की बीमारी में मुझे दाग़ा गया था रसूलुल्लाह (ﷺ) की ज़िंदगी में और उस वक़्त अबू त़लह़ा, अनस बिन नज़्र और ज़ैद

बिन ष़ाबित (रज़ि.) मौजूद थे और अबू त़लहा (रज़ि.) ने मुझे दाग़ा था। (राजेअ़ : 5721)

[طرفه في : ٥٧٢١].

दाग़ना अगरचे रसूले करीम (ﷺ) को पसंद नहीं है मगर बह़ालते मजबूरी ऐसे मवाक़ेअ़ पर ह़द्दे जवाज़ की इजाज़त है।

बाब 27 : ज़ख़्मों का ख़ून रोकने के लिये बोरिया जलाकर ज़ख़्म पर लगाना

٢٧- باب حَرْقِ الْحَصِيرِ لِيُسَدَّ بِهِ الدَّمُ

5722. मुझसे सईद बिन ड़फ़ेर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यअ़क़ूब बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने बयान किया, उनसे अबू ह़ाज़िम ने बयान किया, और उनसे सहल बिन सअ़द साएदी (रज़ि.) ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) के सर पर (उहुद के दिन) ख़ूद टूट गया, आपका मुबारक चेहरा ख़ून आलूद हो गया और सामने के दांत टूट गये तो ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ढाल में भर भरकर पानी लाते थे और ह़ज़रत फ़ात़िमा (रज़ि.) आपके चेहरा मुबारक से ख़ून धो रही थीं । फिर जब ह़ज़रत फ़ात़िमा (रज़ि.) ने देखा कि ख़ून पानी से भी ज़्यादा आ रहा है तो उन्होंने एक बोरिया जलाकर रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़ख़्मों पर लगाया और उससे ख़ून रुका। (राजेअ़ : 243)

٥٧٢٢- حَدَّثَنِي سَعِيدُ بْنُ عُفَيْرٍ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْقَارِيُّ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ السَّاعِدِيِّ قَالَ : لَمَّا كُسِرَتْ عَلَى رَأْسِ رَسُولِ اللهِ ﷺ الْبَيْضَةُ وَأُدْمِيَ وَجْهُهُ وَكُسِرَتْ رَبَاعِيَتُهُ وَكَانَ عَلِيٌّ يَخْتَلِفُ بِالْمَاءِ فِي الْمِجَنِّ وَجَاءَتْ فَاطِمَةُ تَغْسِلُ عَنْ وَجْهِهِ الدَّمَ فَلَمَّا رَأَتْ فَاطِمَةُ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا الدَّمَ يَزِيدُ عَلَى الْمَاءِ كَثْرَةً عَمَدَتْ إِلَى حَصِيرٍ فَأَحْرَقَتْهَا وَأَلْصَقَتْهَا عَلَى جُرْحِ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَرَقَأَ الدَّمُ. [راجع: ٢٤٣]

तश्रीह़ : ख़ूद लोहे का सर को ढाँकने वाला कनटोप ये टूटकर चेहरा मुबारक में घुस गया था इस वजह से चेहरा ख़ून आलूद हो गया था उस मौक़े का ये ज़िक्र है बाब और ह़दीष़ में मुत़ाबक़त ज़ाहिर है ये जंगे उहुद का वाक़िया है।

बाब 28 : बुख़ार दोज़ख़ की भाप से है

٢٨- باب الْحُمَّى مِنْ فَيْحِ جَهَنَّمَ

5723. मुझसे यह़्या बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा मुझसे इब्ने वहब ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने ड़मर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया बुख़ार जहन्नम की भाप में से है पस उसकी गर्मी को पानी से बुझाओ। नाफ़ेअ़ ने बयान किया कि अ़ब्दुल्लाह बिन ड़मर (रज़ि.) (को जब बुख़ार आता तो) यूँ दुआ करते कि, ऐ अल्लाह! हमसे इस अ़ज़ाब को दूर कर दे। (राजेअ़ : 3264)

٥٧٢٣- حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ، حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الْحُمَّى مِنْ فَيْحِ جَهَنَّمَ فَأَطْفِئُوهَا بِالْمَاءِ))، قَالَ نَافِعٌ: وَكَانَ عَبْدُ اللهِ يَقُولُ: اكْشِفْ عَنَّا الرِّجْزَ. [راجع: ٣٢٦٤]

तश्रीह़ : ह़रारत की बिना पर दोज़ख़ की भाप से तश्बीह दी गई है व स़दक़ रसूलुल्लाह (ﷺ) बुख़ार पर स़ब्र करना ही ष़वाब है और तंदरुस्ती की दुआ इतना ही दुरुस्त है आँह़ज़रत (ﷺ) बकष़रत दुआ फ़र्माया करते थे **अल्लाहुम्मा इन्न**

अस्अलुकल अफ़ुव्व वल आफ़िया ऐ अल्लाह! मैं तुझसे आफ़ियत के लिये सवाल करता हूँ।

5724. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, उन्होंने कहा उनसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे हिशाम ने बयान किया, उनसे फ़ातिमा बिन्ते मुंज़िर ने बयान किया कि हज़रत अस्मा बिन्ते अबीबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) के यहाँ जब कोई बुख़ार में मुब्तला औरत लाई जाती थी तो उसके लिये दुआ करतीं और उसके गिरेबान में पानी डालतीं वो बयान करती थीं कि रसूले करीम (ﷺ) ने हमें हुक्म दिया था कि बुख़ार को पानी से ठण्डा करो।

٥٧٢٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ هِشَامٍ عَنْ فَاطِمَةَ بِنْتِ الْمُنْذِرِ أَنَّ أَسْمَاءَ بِنْتَ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا كَانَتْ إِذَا أُتِيَتْ بِالْمَرْأَةِ قَدْ حُمَّتْ تَدْعُو لَهَا أَخَذَتِ الْمَاءَ فَصَبَّتْهُ بَيْنَهَا وَبَيْنَ جَيْبِهَا وَقَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَأْمُرُنَا أَنْ نَبْرُدَهَا بِالْمَاءِ.

तश्रीह : एक रिवायत में है ज़मज़म के पानी से ठण्डा करो मुराद वो बुख़ार है जो सफ़रा के जोश से हो उसमें ठण्डे पानी से नहाना या हाथ पैर का धोना भी मुफ़ीद है। इसे आज की डॉक्टरी ने भी तस्लीम किया है शदीद बुख़ार में बर्फ़ का इस्ते'माल भी उसी क़बील से है।

5725. मुझसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम ने बयान किया, कहा कि मेरे वालिदने मुझको ख़बर दी और उन्हें हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया बुख़ार जहन्नम की भाप में से है इसलिये उसे पानी से ठण्डा करो।

(राजेअ : 3263)

٥٧٢٥- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا يَحْيَى حَدَّثَنَا هِشَامٌ أَخْبَرَنَا أَبِي عَنْ عَائِشَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الْحُمَّى مِنْ فَيْحِ جَهَنَّمَ فَأَبْرِدُوهَا بِالْمَاءِ)).

[راجع: ٣٢٦٣]

5726. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे अबुल अह्वस ने बयान किया, कहा हमसे सईद बिन मसरूक़ ने बयान किया, उनसे अबाया बिन रिफ़ाआ ने, उनसे उनके दादा राफ़ेअ बिन ख़दीज ने बयान किया कि मैं ने नबी करीम (ﷺ) से सुना आपने फ़र्माया कि बुख़ार जहन्नम की भाप में से है पस उसे पानी से ठण्डा कर लिया करो। (राजेअ : 3262)

٥٧٢٦- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مَسْرُوقٍ عَنْ عَبَايَةَ بْنِ رِفَاعَةَ عَنْ جَدِّهِ رَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((الْحُمَّى مِنْ فَيْحِ جَهَنَّمَ فَأَبْرِدُوهَا بِالْمَاءِ)).

[راجع: ٣٢٦٢]

तश्रीह : मुरव्वजा (प्रचलित) डॉक्टरी का एक शुअबा इलाज पानी से भी है जो काफ़ी तरक़्क़ी पज़ीर है हमारे रसूलुल्लाह (ﷺ) को अल्लाह पाक ने जमीउल उलूम नाफ़िया का ख़ज़ाना बनाकर मब्ऊष फ़र्माया था चुनाँचे फ़न्ने तिबाबत (मेडिकल) में आपके पेश कर्दा उसूल इस क़द्र जामेअ हैं कि कोई भी अक़्लमंद उनकी तर्दीद नहीं करा सकता।

बाब 29 : जहाँ की आबो हवा नामुवाफ़िक़ हो वहाँ से निकलकर दूसरे मुक़ाम पर जाना दुरुस्त है

٢٩- باب مَنْ خَرَجَ مِنْ أَرْضٍ لاَ تُلاَئِمُهُ

5727. हमसे अब्दुल आला बिन हम्माद ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरेअ ने बयान किया, कहा हमसे सईद ने बयान किया, कहा हमसे क़तादा ने बयान किया और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि क़बीला उक्ल और उरैना के कुछ लोग रसूले करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और इस्लाम के बारे में बातचीत की। उन्होंने कहा कि ऐ अल्लाह के नबी! हम मवेशी वाले हैं हम लोग अहले मदीना की तरह काश्तकार नहीं हैं। मदीना की आबो हवा उन्हें मुवाफ़िक़ नहीं आई थी। चुनाँचे आँहज़रत (ﷺ) ने उनके लिये चंद ऊँटों और एक चरवाहे का हुक्म दिया और आपने फ़र्माया कि वो लोग उन ऊँटों के साथ बाहर चले जाएँ और उनका दूध और पेशाब पियें। वो लोग चले गये लेकिन हर्रा के नज़दीक पहुँचकर वो इस्लाम से मुर्तद हो गये और आँहज़रत (ﷺ) के चरवाहे को क़त्ल कर डाला और ऊँटों को लेकर भाग पड़े जब आँहज़रत (ﷺ) को इसकी ख़बर मिली तो आपने उनकी तलाश में आदमी दौड़ाए फिर आपने उनके बारे में हुक्म दिया और उनकी आँखों में सलाई फेर दी गई, उनके हाथ काट दिये गये और हर्रा के किनारे उन्हें छोड़ दिया गया, वो उसी हालत में मर गये। (राजेअ : 233)

٥٧٢٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى بْنُ حَمَّادٍ يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ حَدَّثَنَا سَعِيدٌ حَدَّثَنَا قَتَادَةُ أَنَّ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ حَدَّثَهُمْ أَنَّ نَاسًا أَوْ رِجَالاً مِنْ عُكْلٍ وَعُرَيْنَةَ قَدِمُوا عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ وَتَكَلَّمُوا بِالإِسْلاَمِ وَقَالُوا: يَا نَبِيَّ اللهِ إِنَّا كُنَّا أَهْلَ ضَرْعٍ وَلَمْ نَكُنْ أَهْلَ رِيفٍ وَاسْتَوْخَمُوا الْمَدِينَةَ فَأَمَرَ لَهُمْ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِذَوْدٍ وَبِرَاعٍ وَأَمَرَهُمْ أَنْ يَخْرُجُوا فِيهِ فَيَشْرَبُوا مِنْ أَلْبَانِهَا وَأَبْوَالِهَا فَانْطَلَقُوا حَتَّى كَانُوا نَاحِيَةَ الْحَرَّةِ كَفَرُوا بَعْدَ إِسْلاَمِ وَقَتَلُوا رَاعِيَ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَاسْتَاقُوا الذَّوْدَ فَبَلَغَ النَّبِيَّ ﷺ فَبَعَثَ الطَّلَبَ فِي آثَارِهِمْ وَأَمَرَ بِهِمْ فَسَمَرُوا أَعْيُنَهُمْ وَقَطَعُوا أَيْدِيَهُمْ وَتُرِكُوا فِي نَاحِيَةِ الْحَرَّةِ حَتَّى مَاتُوا عَلَى حَالِهِمْ.
[راجع: ٢٣٣]

आबो हवा रास न आने पर आपने उन लोगों को मदीना से हर्रा भेज दिया था बाद में वो मुर्तद होकर डाकू बन गये और उन्होंने ऐसी हरकत की जिनकी यही सज़ा मुनासिब थी जो उनको दी गई। हदीष़ से बाब का मतलब ज़ाहिर है हदीष़ और बाब में मुताबक़त वाज़ेह है क्योंकि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनको मदीना की आबो हवा नामुवाफ़िक़ आने की वजह से बाहर जाने का हुक्म दे दिया था।

बाब 30 : ताऊन का बयान

٣٠- باب مَا يُذْكَرُ فِي الطَّاعُونِ

5728. हमसे हफ़्स़ बिन उमर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने, कहा कि मुझे हबीब बिन अबी ष़ाबित ने ख़बर दी, कहा कि मैंने इब्राहीम बिन सअद से सुना, कहा कि मैंने उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) से सुना, वो सअद (रज़ि.) से बयान करते थे कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जब तुम सुन लो कि किसी जगह ताऊन की वबा फैल रही है तो वहाँ मत जाओ लेकिन जब किसी जगह ये वबा फूट पड़े और तुम वहीं मौजूद हो तो उस जगह से निकलो भी मत (हबीब बिन अबी ष़ाबित ने बयाना किया कि मैंने इब्राहीम बिन सअद से) कहा तुमने ख़ुद ये हदीष़ उसामा (रज़ि.) से सुनी है कि उन्होंने सअद (रज़ि.) से बयान

٥٧٢٨- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي حَبِيبُ بْنُ أَبِي ثَابِتٍ قَالَ: سَمِعْتُ إِبْرَاهِيمَ بْنَ سَعْدٍ، قَالَ: سَمِعْتُ أُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ يُحَدِّثُ سَعْدًا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا سَمِعْتُمْ بِالطَّاعُونِ فِي أَرْضٍ فَلاَ تَدْخُلُوهَا وَإِذَا وَقَعَ بِأَرْضٍ وَأَنْتُمْ بِهَا فَلاَ تَخْرُجُوا مِنْهَا)) فَقُلْتُ: أَنْتَ

سَمِعْتَهُ يُحَدِّثُ سَعْدًا وَلاَ يُنْكِرُهُ؟ قَالَ : نَعَمْ. [راجع: ٣٤٧٣]

किया और उन्होंने इसका इंकार नहीं किया? फ़र्माया कि हाँ।
(राजेअ़ : 3473)

तश्रीह : ताऊन को प्लेग भी कहते हैं ये बहुत ही क़दीम बीमारी है और अकष़र किताबों में उसका कुछ न कुछ ज़िक्र मौजूद है। क़स्तलानी ने कहा त़ाऊन एक फुंसी है या वरम जिसमें सख़्त बुख़ार के साथ बहुत ही ज़्यादा जलन होता है अकष़र ये वरम बग़ल और गर्दन में होता है और कभी और मुक़ामों में भी हो जाता है। सूरह तग़ाबून हर रोज़ तिलावत करने में त़ाऊन से मह़फ़ूज़ रहने का अ़मल है। ह़ज़रत मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ मरह़ूम ने त़ाऊन के बारे में अपने ज़ाती मुफ़ीद तजुर्बात तह़रीर फ़र्माए जो शरह़ वह़ीदी में देखे जा सकते हैं। पहले ये मर्ज़ बहुक्मे इलाही अचानक नमूदार होकर वसीअ़ पैमाने पर फैल जाता था तारीख़ में ऐसी बहुत सी तफ़्सीलात मौजूद हैं आजकल अल्लाह के फ़ज़्ल से ये मर्ज़ नहीं है अल्लाह से दुआ करनी चाहिये कि वो हमेशा अपने बन्दों को ऐसे अम्राज़ से मह़फ़ूज़ रखे, आमीन।

٥٧٢٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَبْدِ الْحَمِيدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ زَيْدِ بْنِ الْخَطَّابِ عَنْ عَبْدِ اللهِ، عَبْدِ اللهِ بْنِ الْحَارِثِ بْنِ نَوْفَلٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ خَرَجَ إِلَى الشَّامِ حَتَّى إِذَا كَانَ بِسَرْغَ لَقِيَهُ أُمَرَاءُ الأَجْنَادِ أَبُو عُبَيْدَةَ بْنُ الْجَرَّاحِ وَأَصْحَابُهُ فَأَخْبَرُوهُ أَنَّ الْوَبَاءَ قَدْ وَقَعَ بِأَرْضِ الشَّامِ قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : فَقَالَ عُمَرُ: ادْعُ لِي الْمُهَاجِرِينَ الأَوَّلِينَ فَدَعَاهُمْ فَاسْتَشَارَهُمْ وَأَخْبَرَهُمْ أَنَّ الْوَبَاءَ قَدْ وَقَعَ بِالشَّامِ فَاخْتَلَفُوا، فَقَالَ بَعْضُهُمْ : قَدْ خَرَجْنَا لأَمْرٍ وَلاَ نَرَى أَنْ نَرْجِعَ عَنْهُ. وَقَالَ بَعْضُهُمْ: مَعَكَ بَقِيَّةُ النَّاسِ وَأَصْحَابُ رَسُولِ اللهِ ﷺ، وَلاَ نَرَى أَنْ تُقْدِمَهُمْ عَلَى هَذَا الْوَبَاءِ، فَقَالَ : ارْتَفِعُوا عَنِّي، ثُمَّ قَالَ: ادْعُ لِي الأَنْصَارِ فَدَعَوْتُهُمْ فَاسْتَشَارَهُمْ فَسَلَكُوا سَبِيلَ الْمُهَاجِرِينَ

5729. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें अ़ब्दुल ह़मीद बिन अ़ब्दुर्रह़मान बिन ज़ैद बिन ख़त्ताब ने, उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ारिष़ बिन नौफ़िल ने और उन्हें ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि ह़ज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) शाम तशरीफ़ ले जा रहे थे जब आप मुक़ाम सर्ग़ पर पहुँचे तो आपकी मुलाक़ात फ़ौजों के उम्रा ह़ज़रत अबू उ़बैदह इब्ने जर्राह़ (रज़ि.) और आपके साथियों से हुई। उन लोगों ने अमीरुल मोमिनीन को बताया कि त़ाऊन की वबा शाम में फूट पड़ी है। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि उस पर ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि मेरे पास मुहाजिरीने अव्वलीन को बुला लाओ। आप उन्हें बुला लाए तो ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने उनसे मश्विरा किया और उन्हें बताया कि शाम में त़ाऊन की वबा फूट पड़ी है, मुहाजिरीने अव्वलीन की राय मुख़्तलिफ़ हो गईं। कुछ लोगों ने कहा कि स़ह़ाबा रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथियों की बाक़ी मांदा जमाअ़त आपके साथ है और ये मुनासिब नहीं है कि आप उन्हें उस वबा में डाल दें। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि अच्छा अब आप लोग तशरीफ़ ले जाएँ फिर फ़र्माया कि अंस़ार को बुलाओ। मैं अंस़ार को बुलाकर लाया आपने उनसे भी मश्विरा किया और उन्होंने भी मुहाजिरीन की त़रह़ इख़्तिलाफ़ किया कोई कहने लगा चलो, कोई कहने लगा लौट जाओ। अमीरुल मोमिनीन ने फ़र्माया कि अब आप लोग भी तशरीफ़ ले जाएँ फिर फ़र्माया कि यहाँ पर जो क़ुरैश के बड़े बूढ़े हैं जो फ़तह़े मक्का के वक़्त इस्लाम क़ुबूल करके मदीना आए थे उन्हें बुला लाओ, मैं

وَاخْتَلَفُوا كَاخْتِلاَفِهِمْ، فَقَالَ: ارْتَفِعُوا عَنِّي، ثُمَّ قَالَ: ادْعُ لِي مَنْ كَانَ هَهُنَا مِنْ مَشْيَخَةِ قُرَيْشٍ مِنْ مُهَاجِرَةِ الْفَتْحِ فَدَعَوْتُهُمْ فَلَمْ يَخْتَلِفْ مِنْهُمْ عَلَيْهِ رَجُلاَنِ. فَقَالُوا: نَرَى أَنْ تَرْجِعَ بِالنَّاسِ وَلاَ تُقْدِمَهُمْ عَلَى هَذَا الْوَبَاءِ فَلَمْ فَنَادَى عُمَرُ فِي النَّاسِ إِنِّي مُصَبِّحٌ عَلَى ظَهْرٍ فَأَصْبِحُوا عَلَيْهِ، فَقَالَ أَبُو عُبَيْدَةَ بْنُ الْجَرَّاحِ أَفِرَارًا مِنْ قَدَرِ اللهِ؟ فَقَالَ عُمَرُ: لَوْ غَيْرُكَ قَالَهَا يَا أَبَا عُبَيْدَةَ، نَعَمْ. نَفِرُّ مِنْ قَدَرِ اللهِ إِلَى قَدَرِ اللهِ أَرَأَيْتَ لَوْ كَانَ لَكَ إِبِلٌ هَبَطَتْ وَادِيًا لَهُ عُدْوَتَانِ إِحْدَاهُمَا خَصِبَةٌ وَالأُخْرَى جَدْبَةٌ أَلَيْسَ إِنْ رَعَيْتَ الْخَصِبَةَ رَعَيْتَهَا بِقَدَرِ اللهِ وَإِنْ رَعَيْتَ الْجَدْبَةَ رَعَيْتَهَا بِقَدَرِ اللهِ قَالَ: فَجَاءَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ وَكَانَ مُتَغَيِّبًا فِي بَعْضِ حَاجَتِهِ فَقَالَ: إِنَّ عِنْدِي فِي هَذَا عِلْمًا. سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((إِذَا سَمِعْتُمْ بِهِ بِأَرْضٍ فَلاَ تَقْدَمُوا عَلَيْهِ وَإِذَا وَقَعَ بِأَرْضٍ وَأَنْتُمْ بِهَا فَلاَ تَخْرُجُوا فِرَارًا مِنْهُ)). قَالَ: فَحَمِدَ اللهَ عُمَرُ ثُمَّ انْصَرَفَ. [طرفاه في: ٥٧٣٠، ٦٩٧٣].

उन्हें बुलाकर लाया। उन लोगों में कोई इख़्तिलाफ़े राय पैदा नहीं हुआ सबने कहा कि हमारा ख़याल है कि आप लोगों को साथ लेकर वापस लौट चलें और वबाई मुल्क में लोगों को साथ ले जाकर डालें। ये सुनते ही ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने लोगों में ऐलान करा दिया कि मैं सुबह को ऊँट पर सवार होकर वापस मदीना मुनव्वरह लौट जाऊँगा तुम लोग भी वापस चलो। सुबह को ऐसा ही हुआ ह़ज़रत अबू उ़बैदह इब्ने जर्राह़ (रज़ि.) ने कहा क्या अल्लाह की तक़्दीर से फ़रार इख़्तियार किया जाएगा। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने कहा काश! ये बात किसी और ने कही होती। हाँ हम अल्लाह की तक़्दीर से फ़रार इख़्तियार कर रहे हैं लेकिन अल्लाह ही की तक़्दीर की त़रफ़। क्या तुम्हारे पास ऊँट हों और तुम उन्हें लेकर किसी ऐसी वादी में जाओ जिसके दो किनारे हों एक सर सब्ज़ व शादाब और दूसरा ख़ुश्क। क्या ये वाक़िया नहीं कि अगर तुम सरसब्ज़ किनारे पर चराओगे तो वो भी अल्लाह की तक़्दीर से ही होगा और ख़ुश्क किनारे पर चराओगे तो वो भी अल्लाह की तक़्दीर से ही होगा। बयान किया कि फिर ह़ज़रत अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ (रज़ि.) आ गये वो अपनी किसी ज़रूरत की वजह से उस वक़्त मौजूद नहीं थे उन्होंने बताया कि मेरे पास मसले के बारे में एक इल्म है। मैनें रसूले करीम (ﷺ) से सुना है आपने फ़र्माया कि जब तुम किसी सर ज़मीन में (वबा के बारे में) सुनो तो वहाँ न जाओ और जब ऐसी जगह वबा आ जाए जहाँ तुम ख़ुद मौजूद हो तो वहाँ से मत निकलो। रावी ने बयान किया कि उस पर उ़मर (रज़ि.) ने अल्लाह तआ़ला की ह़म्द की और फिर वापस हो गये। (दीगर मक़ामात : 5730, 6973)

तश्रीह़ : ह़ज़रत उ़मर (रज़ि .) ने ऐसा जवाब दिया जो बहुत ही लाजवाब था या'नी भागना भी बतक़्दीरे इलाही है क्योंकि कोई काम दुनिया में जब तक तक़्दीर में न हो, वाक़ेअ नहीं होता। इस ह़दीष़ से ये निकला कि अगर किसी मुल्क या क़स्बा में वबा वाक़ेअ हो तो वहाँ न जाना बल्कि वहाँ से लौट आना दुरुस्त है और यही आँह़ज़रत (ﷺ) का भी इर्शाद था लेकिन ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) को इसकी ख़बर न थी उनकी राय हमेशा हुक्मे इलाही के मुवाफ़िक़ हुआ करती थी। इस मसले में भी मुवाफ़िक़ हुई। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) साथियों के साथ मदीना की त़रफ़ लौटकर चले। ह़ज़रत अबू उ़बैदह इब्ने जर्राह़ (रज़ि.) कहने लगे क्या अल्लाह की तक़्दीर से भागते हो? ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने कहा अगर ये कलिमा कोई और कहता तो उसको सज़ा देता। ये क़िस्सा त़ाऊ़ने अ़म्वास से ता'ल्लुक़ रखता है ये सन 18 हिजरी का वाक़िया है। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) शाम के मुल्क का सरकारी दौरा करने निकले थे कि त़ाऊ़ने अ़म्वास का ज़िक्र आपके सामने किया गया उस वक़्त मुल्के शाम आपने कई मवाज़िआत में तक़्सीम कर रखा था हर जगह फ़ौज का एक एक सरदार था। ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) और ज़ैद बिन अबी सुफ़यान (रज़ि.) और शुरह़बील बिन ह़स्ना (रज़ि.) और अ़म्र बिन आ़स (रज़ि.) ये सब गवर्नर थे।

5730. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर ने कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) शाम के लिये रवाना हुए जब मुक़ामे सर्ग़ में पहुँचे तो आपको ख़बर मिली कि शाम में त़ाऊ़न की वबा फूट पड़ी है। फिर ह़ज़रत अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ (रज़ि.) ने उनको ख़बर दी कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जब तुम वबा के बारे में सुनो कि वो किसी जगह है तो वहाँ न जाओ और जब किसी ऐसी जगह वबा फूट पड़े जहाँ तुम मौजूद हो तो वहाँ से भी मत भागो। (वबा मे त़ाऊ़न हैज़ा वग़ैरह सब दाख़िल हैं।) (राजेअ़ : 5729)

٥٧٣٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَامِرٍ أَنَّ عُمَرَ خَرَجَ إِلَى الشَّامِ فَلَمَّا كَانَ بِسَرْغَ بَلَغَهُ أَنَّ الْوَبَاءَ قَدْ وَقَعَ بِالشَّامِ فَأَخْبَرَهُ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِذَا سَمِعْتُمْ بِهِ بِأَرْضٍ فَلاَ تَقْدَمُوا عَلَيْهِ، وَإِذَا وَقَعَ بِأَرْضٍ وَأَنْتُمْ بِهَا فَلاَ تَخْرُجُوا فِرَارًا مِنْهُ)).[راجع: ٥٧٢٩]

5731. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें नुऐ़म मुज्मर ने और उन्होंने कहा हमसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया मदीना मुनव्वरह में दज्जाल दाख़िल नहीं हो सकेगा और न त़ाऊ़न आ सकेगा।

(राजेअ़ : 1880)

٥٧٣١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نُعَيْمٍ الْمُجْمِرِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لاَ يَدْخُلُ الْمَدِينَةَ الْمَسِيحُ وَلاَ الطَّاعُونُ)). [راجع: ١٨٨٠]

तश्रीह : दूसरी रिवायत में मक्का का भी ज़िक्र है। अब ये नक़ल, कि सन 747 हिजरी में मदीना मुनव्वरह में त़ाऊ़न आया था स़ह़ीह़ नहीं है। कुछ ने कहा कि किताबुल फ़ितन में ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने त़ाऊ़न के बारे में जो रिवायत नक़ल की है उसमें लफ़्ज़ इंशाअल्लाह नक़ल किया है जिससे मदीना व मक्का में मशिय्यते ऐज़दी पर उन वबाओं के बारे में किया है।

5732. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वाह़िद ने बयान किया, कहा हमसे आ़स़िम ने बयान किया, कहा मुझसे ह़फ़्स़ा बिन्ते सीरीन ने बयान किया, कहा कि मुझसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने पूछा कि यह़्या बिन सीरीन का किस बीमारी में इंतिक़ाल हुआ था। मैंने कहा कि त़ाऊ़न में। बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि त़ाऊ़न हर मुसलमान के लिये शहादत है।

(राजेअ़ : 2830)

٥٧٣٢- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ حَدَّثَنَا عَاصِمٌ حَدَّثَتْنِي حَفْصَةُ بِنْتُ سِيرِينَ قَالَتْ : قَالَ لِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَحْيَى بِمَا مَاتَ؟ قُلْتُ مِنَ الطَّاعُونِ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ ((الطَّاعُونُ شَهَادَةٌ لِكُلِّ مُسْلِمٍ)). [راجع: ٢٨٣٠]

तश्रीह : इमाम अह़मद ने रिवायत किया कि त़ाऊ़न से मरने वाले और शहीद क़यामत के दिन झगड़ेंगे त़ाऊ़न वाले कहेंगे हम भी शहीदों की त़रह़ मारे गये अल्लाह पाक फ़र्माएगा अच्छा उनके ज़ख़्मों को देखो फिर देखेंगे तो उनका ज़ख़्म भी शहीदों की त़रह़ होगा और उनको शहीदों जैसा ष़वाब मिलेगा। इमाम नसाई ने भी उ़क़्बा बिन अ़ब्द से मर्फ़ूअ़न ऐसी ही ह़दीष़ रिवायत की है मगर स़ाह़िब मिश्कात ने किताबुल जनाइज़ में इससे मुख़्तलिफ़ रिवायत भी नक़ल की है, वल्लाहु आलम।

5733. हमसे अबू आ़स़िम ने बयान किया, उनसे इमाम

٥٧٣٣- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ عَنْ مَالِكٍ عَنْ

मालिक ने, उनसे सुमय ने, उनसे अबू स़ालेह़ ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि पेट की बीमारी में या'नी हैज़ा से मरने वाला शहीद है और त़ाऊन की बीमारी में मरने वाला शहीद है। (राजेअ़ : 653)

سُمَيٍّ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الْمَبْطُونُ شَهِيدٌ وَالْمَطْعُونُ شَهِيدٌ)).[راجع: ٦٥٣]

तश्रीह : त़ाऊन एक बड़ी ख़त़रनाक वबाई बीमारी है जिसने बारहा नूए इंसानी को सख़्त तरीन नुक़्सान पहुँचाया है। हिन्दुस्तान में भी इसके ब ारहा ह़मले हुए और लाखों इंसान लुक़्मा-ए-अजल बन गये। इस्लाम में त़ाऊन ज़दा मुसलमान की मौत को शहादत की मौत क़रार दिया गया है त़ाऊन अ़ज़ाबे इलाही है जो कष़रते मआ़सी से दुनिया पर मुसल्लत़ किया जाता है, **अल्लाहुम्म अहफ़िज़्ना मिन्हु।**

बाब 31 : जो शख़्स त़ाऊन में स़ब्र करके वहीं रहे गो उसको त़ाऊन न हो, उसकी फ़ज़ीलत का बयान

٣١- باب أَجْرِ الصَّابِرِ فِي الطَّاعُونِ

5734. हमसे इस्ह़ाक़ बिन राह्वै ने बयान किया, कहा हमको ह़िब्बान ने ख़बर दी, कहा हमसे दाऊद बिन अबिल फ़ुरात ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन बुरैदा ने, उनसे यह़्या बिन अ़मर ने और उन्हें नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुत़ह्हरा आ़इशा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि आपने रसूलुल्लाह (ﷺ) से त़ाऊन के बारे में पूछा। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये एक अ़ज़ाब था अल्लाह तआ़ला जिस पर चाहता उस पर उसको भेजता फिर अल्लाह तआ़ला ने उसे मोमिनीन (उम्मते मुह़म्मदिया के लिये) रह़मत बना दिया अब कोई भी अल्लाह का बन्दा अगर स़ब्र के साथ उस शहर में ठहरा रहे जहाँ त़ाऊन फूट प ड़ी हो और यक़ीन रखता है कि जो कुछ अल्लाह तआ़ला ने उसके लिये लिख दिया है उसके सिवा उसको और कोई नुक़्सान नहीं पहुँच सकता और फिर त़ाऊन में उसका इंतिक़ाल हो जाए तो उसे शहीद जैसा ष़वाब मिलेगा। ह़िब्बान बिन हिलाल के साथ इस ह़दीष़ को नज़्र बिन शुमैल ने भी दाऊद से रिवायत किया है। (राजेअ़ : 3473)

٥٧٣٤- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا حَبَّانُ حَدَّثَنَا دَاوُدُ بْنُ أَبِي الْفُرَاتِ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ بُرَيْدَةَ عَنْ يَحْيَى بْنِ عُمَرَ عَنْ عَائِشَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ أَنَّهَا أَخْبَرَتْنَا أَنَّهَا سَأَلَتْ رَسُولَ اللهِ ﷺ عَنِ الطَّاعُونِ فَأَخْبَرَهَا نَبِيُّ اللهِ صلى الله عليه وسلم: ((أَنَّهُ كَانَ عَذَابًا يَبْعَثُهُ اللهُ عَلَى مَنْ يَشَاءُ، فَجَعَلَهَا اللهُ رَحْمَةً لِلْمُؤْمِنِينَ، فَلَيْسَ مِنْ عَبْدٍ يَقَعُ الطَّاعُونُ فَيَمْكُثُ فِي بَلَدِهِ صَابِرًا يَعْلَمُ أَنَّهُ لَنْ يُصِيبَهُ إِلاَّ مَا كَتَبَ اللهُ لَهُ إِلاَّ كَانَ لَهُ مِثْلُ أَجْرِ الشَّهِيدِ)). تَابَعَهُ النَّضْرُ عَنْ دَاوُدَ. [راجع: ٣٤٧٤]

तश्रीह : इब्ने माजा और बैहक़ी की रिवायत में यूँ है कि त़ाऊन उस वक़्त पैदा होता है जब किसी मुल्क में बदकारी आ़म तौर पर फैल जाती है। मौलाना रूम ने सच कहा है। वज़ ज़िना ख़ीज़द वबा अंदर जिहात। मुसलमान के लिये त़ाऊन की मौत मरना शहादत का दर्जा रखता है। जैसा कि इस ह़दीष़ में ज़िक्र है।

बाब 32 : क़ुर्आन मजीद और मुअ़व्विज़ात पढ़कर मरीज़ पर दम करना

٣٢- بَابُ الرُّقَى بِالْقُرْآنِ وَالْمُعَوِّذَاتِ

तश्रीह : क़स्तलानी ने कहा कि नीचे की रिवायत से दम झाड़ का जवाज़ निकलता है बशर्ते कि अल्लाह के कलाम और उसके अस्मा व सिफ़ात से हो और अ़रबी ज़ुबान में हो उसके मआ़नी मा'लूम हों और बशर्ते कि ये ए'तिक़ाद

न रहे कि दम झाड़ करना बज़ाते ख़ुद मुअष्षिर है बल्कि अल्लाह की तक़्दीर से मुअष्षिर हो सकते हैं। जैसे दवा अल्लाह के हुक्म से मुअष्षिर होती है।

5735. मुझसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम ने ख़बर दी, उन्हें मअ़मर ने, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें उ़र्वा ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) अपने मर्ज़ुल वफ़ात में अपने ऊपर मुअ़व्विज़ात (सूरह फ़लक़ और सूरह नास) का दम किया करते थे। फिर जब आपके लिये दुश्वार हो गया तो मैं उनका दम आप पर किया करती थी और बरकत के लिये आँह़ज़रत (ﷺ) का हाथ आपके जिस्मे मुबारक पर भी फेर लेती थी। फिर मैं ने उसके बारे में पूछा कि आँह़ज़रत (ﷺ) किस त़रह़ दम करते थे, उन्होंने बताया कि अपने हाथ पर दम करके हाथ को चेहरे पर फेरा करते थे। (राजेअ़: 4439)

٥٧٣٥- حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا هِشَامٌ عَنْ مَعْمَرٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ كَانَ يَنْفُثُ عَلَى نَفْسِهِ فِي الْمَرَضِ الَّذِي مَاتَ فِيهِ بِالْمُعَوِّذَاتِ فَلَمَّا ثَقُلَ كُنْتُ أَنْفِثُ عَلَيْهِ بِهِنَّ وَأَمْسَحُ بِيَدِهِ نَفْسِهِ لِبَرَكَتِهَا فَسَأَلْتُ الزُّهْرِيَّ كَيْفَ يَنْفِثُ؟ قَالَ: كَانَ يَنْفِثُ عَلَى يَدَيْهِ ثُمَّ يَمْسَحُ بِهِمَا وَجْهَهُ. [راجع: ٤٤٣٩]

बाब 33 : सूरह फ़ातिह़ा से दम करना, इस बाब में ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से एक रिवायत की है

٣٣- بَابُ الرُّقَى بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ
وَيُذْكَرُ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ

5736. मुझसे मुह़म्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे ग़ुन्दर ने, उनसे शुअ़बा ने, उनसे अबू बिश्र ने, उनसे अबुल मुतवक्किल ने, उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) के चंद स़ह़ाबा ह़ालते सफ़र में अ़रब के एक क़बीला पर गुज़रे। क़बीला वालों ने उनकी ज़ियाफ़त नहीं की कुछ देर के बाद उस क़बीले के सरदार को बिच्छू ने काट लिया, अब क़बीले वालों ने उन स़ह़ाबा से कहा कि आप लोगों के पास कोई दवा या कोई झाड़ने वाला है। स़ह़ाबा ने कहा कि तुम लोगों ने हमें मेहमान नहीं बनाया और अब हम उस वक़्त तक दम नहीं करेंगे जब तक तुम हमारे लिये उसकी मज़दूरी न मुक़र्रर कर दो। चुनाँचे उन लोगों ने चंद बकरियाँ देनी मंज़ूर कर लीं फिर (अबू सईद ख़ुदरी रज़ि.) सूरह फ़ातिह़ा पढ़ने लगे और उस पर दम करने में मुँह का थूक भी उस जगह पर डालने लगे। उससे वो शख़्स़ अच्छा हो गया। चुनाँचे क़बीला वाले बकरियाँ लेकर आए लेकिन स़ह़ाबा ने कहा कि जब तक हम नबी करीम (ﷺ) से न पूछ लें ये बकरियाँ नहीं ले सकते फिर जब आँह़ज़रत (ﷺ) से पूछा तो आप मुस्कुराए और फ़र्माया तुम्हें कैसे मा'लूम हो गया था कि सूरह फ़ातिह़ा से दम भी

٥٧٣٦- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي بِشْرٍ عَنْ أَبِي الْمُتَوَكِّلِ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ نَاسًا مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَتَوْا عَلَى حَيٍّ مِنْ أَحْيَاءِ الْعَرَبِ فَلَمْ يَقْرُوهُمْ فَبَيْنَمَا هُمْ كَذَلِكَ إِذْ لُدِغَ سَيِّدُ أُولَئِكَ فَقَالُوا هَلْ مَعَكُمْ مِنْ دَوَاءٍ أَوْ رَاقٍ؟ فَقَالُوا: إِنَّكُمْ لَمْ تَقْرُونَا وَلاَ نَفْعَلُ حَتَّى تَجْعَلُوا لَنَا جُعْلاً فَجَعَلُوا لَهُمْ قَطِيعًا مِنَ الشَّاءِ فَجَعَلَ يَقْرَأُ بِأُمِّ الْقُرْآنِ وَيَجْمَعُ بُزَاقَهُ وَيَتْفِلُ فَبَرَأَ فَأَتَوْا بِالشَّاءِ فَقَالُوا: لاَ نَأْخُذُهُ حَتَّى نَسْأَلَ النَّبِيَّ ﷺ فَسَأَلُوهُ فَضَحِكَ وَقَالَ: وَمَا أَدْرَاكَ أَنَّهَا رُقْيَةٌ خُذُوهَا وَاضْرِبُوا لِي

किया जा सकता है, उन बकरियों को ले लो और उसमें मेरा भी हिस्सा लगाओ। (राजेअ : 2276)

بِسَهْمٍ)).

[راجع: ٢٢٧٦]

तश्रीह : बहुत से मसाइल और सूरह फ़ातिहा के फ़ज़ाइल के अलावा इस हदीष़ से ये भी निकला कि ता'लीमुल क़ुर्आन पर उजरत लेना भी जाइज़ है मगर निय्यत वक़्त स़र्फ़ करने की उज्रत होनी चाहिये क्योंकि ता'लीमुल क़ुर्आन इतना बड़ा अ़मल है कि उसकी उजरत नहीं हो सकती। ये भी मा'लूम हुआ कि जो मसला मा'लूम न हो वो जानने वालों से मा'लूम कर लेना ज़रूरी है बल्कि तह़क़ीक़ करना लाज़िम है और अंधी तक़्लीद बिलकुल नाजाइज़ है।

बाब 34 : सूरह फ़ातिहा से दम झाड़ करने में (बकरियाँ लेने की) शर्त़ लगाना

٣٤- باب الشَّرْطِ فِي الرُّقْيَةِ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ

5737. हमसे सैदान बिन मुज़ारिब अबू मुहम्मद बाहिली ने बयान किया, कहा हमसे अबू मअ़शर यूसुफ़ बिन यज़ीद अल बरा ने बयान किया, कहा कि मुझसे उ़बैदुल्लाह बिन अख़्नस अबू मालिक ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि चंद स़हाबा एक पानी से गुज़रे जिसके पास के क़बीले में एक बिच्छू का काटा हुआ (लुदैग़ या सुलैम रावी को इन दोनों अल्फ़ाज़ के बारे में शक था) एक शख़्स़ था। क़बीला का एक शख़्स़ उनके पास आया और कहा क्या आप लोगों में कोई दम झाड़ करने वाला है। हमारे क़बीले में एक शख़्स़ को बिच्छू ने काट लिया है चुनाँचे स़हाबा की उस जमाअ़त में से एक स़हाबी उस शख़्स़ के साथ गये और चंद बकरियों की शर्त़ के साथ उस शख़्स़ पर सूरह फ़ातिहा पढ़ी, उससे वो अच्छा हो गया वो स़ाहब शर्त़ के मुत़ाबिक़ बकरियाँ अपने साथियों के पास लाए तो उन्हों ने उसे क़ुबूल कर लेना पसंद नहीं किया और कहा कि अल्लाह की किताब पर तुमने उजरत ले ली। आख़िर जब सब लोग मदीना आए तो अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! उन स़ाहब ने अल्लाह की किताब पर उज्रत ले ली है। आपने फ़र्माया जिन चीज़ों पर तुम उजरत ले सकते हो उनमें सबसे ज़्यादा इसकी मुस्तह़िक़ अल्लाह की किताब ही है।

٥٧٣٧- حدَّثَنِي سِيْدَانُ بْنُ مُضَارِبٍ أَبُو مُحَمَّدٍ الْبَاهِلِيُّ حَدَّثَنَا أَبُو مَعْشَرٍ بصر هُوَ صَدُوقٌ يُوسُفُ بْنُ يَزِيدَ الْبَرَّاءُ قَالَ حَدَّثَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ الأَخْنَسِ أَبُو مَالِكٍ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ نَفَرًا مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ مَرُّوا بِمَاءٍ فِيهِمْ لَدِيغٌ أَوْ سَلِيمٌ فَعَرَضَ لَهُمْ رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ الْمَاءِ فَقَالَ: هَلْ فِيكُمْ مِنْ رَاقٍ؟ إِنَّ فِي الْمَاءِ رَجُلاً لَدِيغًا أَوْ سَلِيمًا فَانْطَلَقَ رَجُلٌ مِنْهُمْ فَقَرَأَ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ عَلَى شَاءٍ فَبَرَأَ فَجَاءَ بِالشَّاءِ إِلَى أَصْحَابِهِ فَكَرِهُوا ذَلِكَ وَقَالُوا أَخَذْتَ عَلَى كِتَابِ اللهِ أَجْرًا؟ حَتَّى قَدِمُوا الْمَدِينَةَ فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ أَخَذَ عَلَى كِتَابِ اللهِ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّ أَحَقَّ مَا أَخَذْتُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا كِتَابُ اللهِ)).

तश्रीह : स़हाबा किराम (रज़ि.) के एह़तियात़ को मुलाह़िज़ा किया जाए कि जब तक आँह़ज़रत (ﷺ) से तह़क़ीक़ न की बकरियों को हाथ नहीं लगाया हर मुसलमान की यही शान होनी चाहिये ख़ास़ त़ौर पर दीन व ईमान के लिये जिस क़द्र एह़तियात़ से काम लिया जाए कम है मगर ऐसा एह़तियात़ करने वाले आज न के बराबर हैं इल्ला माशाअल्लाह। ह़ज़रत मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ फ़र्माते हैं कि इस ह़दीष़ की बिना पर ता'लीमे क़ुर्आन पर उजरत लेना जाइज़ है और आँह़ज़रत (ﷺ) ने

एक औरत का महर ता'लीमे क़ुर्आन पर कर दिया था जैसा कि पहले बयान हो चुका है।

बाब 35 : नज़रे बद लग जाने की सूरत में दम करना

٣٥- باب رُقْيَةِ الْعَيْنِ

5738. हमसे मुहम्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान ने ख़बर दी, कहा कि मुझसे मअ़बद बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा कि मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन शद्दाद से सुना, उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे हुक्म दिया या (आपने इस त़रह़ बयान किया कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने) हुक्म दिया कि नज़रे बद लग जाने पर मुअ़व्वज़तैन से दम कर लिया जाए।

٥٧٣٨- حدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنِي مَعْبَدُ بْنُ خَالِدٍ قَالَ، سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ شَدَّادٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: أَمَرَنِي رَسُولُ اللهِ ﷺ أَوْ أَمَرَ أَنْ يُسْتَرْقَى مِنَ الْعَيْنِ.

मुअ़व्वज़तैन और सूरह फ़ातिह़ा पढ़ना बेहतरीन मुजर्रब दम हैं नीज़ दुआओं में **अऊ़ज़ु बिकलिमातिल्लाहित्ताम्माति मिन शर्रि मा ख़लक़** मुजर्रब दुआ है।

5739. हमसे मुह़म्मद बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे मुह़म्मद बिन वहब बिन अ़तिया दमिश्क़ी ने बयान किया, कहा हमसे मुह़म्मद बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन वलीद ज़ुबैदी ने बयान किया, कहा हमको ज़ुह्री ने ख़बर दी, उन्हें उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने, उन्हें ज़ैनब बिन्ते अबी सलमा (रज़ि.) ने और उनसे ह़ज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने उनके घर में एक लड़की देखी जिसके चेहरे पर (नज़रे बद लगने की वजह से) काले धब्बे पड़ गये थे। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि इस पर दम करा दो क्यों कि इसे नज़रे बद लग गई है। और अ़क़ील ने कहा उनसे ज़ुह्री ने, उन्हें उ़र्वा ने ख़बर दी और उन्होंने उसे नबी करीम (ﷺ) से मुर्सलन रिवायत किया है। मुह़म्मद बिन ह़र्ब के साथ इस ह़दीष़ को अ़ब्दुल्लाह बिन सालिम ने भी ज़ुबैदी से रिवायत किया है।

٥٧٣٩- حدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ وَهْبِ بن عَطِيَّةَ الدِّمَشْقِيُّ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْوَلِيدِ الزُّبَيْدِيُّ أَخْبَرَنَا الزُّهْرِيُّ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ زَيْنَبَ ابْنَةِ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ رَأَى فِي بَيْتِهَا جَارِيَةً فِي وَجْهِهَا سَفْعَةٌ فَقَالَ: ((اسْتَرْقُوا لَهَا فَإِنَّ بِهَا النَّظْرَةَ)). وَقَالَ عُقَيْلٌ: عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنَا عُرْوَةُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. تَابَعَهُ عَبْدُ اللهِ بْنُ سَالِمٍ عَنِ الزُّبَيْدِيِّ.

तश्रीह : इसे ज़ुह्ली ने ज़ुहरियात में वस्ल किया है। मा'लूम हुआ कि नज़रे बद का लग जाना ह़क़ है जैसे कि दूसरी ह़दीष़ में वारिद है। मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ लिखते हैं कि नज़रे बद वाले पर आयत **व इय्यकादुल्लज़ीन कफ़रू लियुज़्लिक़ूनक बिअब्सारिहिम लम्मा समिउ़ज़्ज़िक्र व यक़ूलून इन्नहू लमज्नून** (अल् क़लम : 51)

बाब 36 : नज़रे बद का लगना ह़क़ है

٣٦- باب الْعَيْنُ حَقٌّ

5740. हमसे इस्ह़ाक़ बिन नस्र ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, उनसे मअ़मर ने, उनसे हम्माम ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया नज़रे बद लगना ह़क़ है और आँह़ज़रत (ﷺ) ने जिस्म पर गोदने से मना फ़र्माया। (दीगर : 5944)

٥٧٤٠- حدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ عَنْ مَعْمَرٍ عَنْ هَمَّامٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الْعَيْنُ حَقٌّ)) وَنَهَى عَنِ الْوَشْمِ.

इस ह़दीष़ से उन लोगों का रद्द हुआ जो नज़रे बद का इंकार करते हैं अल्लाह ने इंसानी नज़र में बड़ी ताष़ीर रखी है जैसा कि मुशाहिदात से ष़ाबित हो रहा है इल्म मेस्मरीज़्म की बुनियाद भी सिर्फ़ इंसानी नज़र की ताष़ीर पर है।

बाब 37 : सांप और बिच्छू के काटे पर दम करना जाइज़ है

5741. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वाह़िद ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान शैबानी ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन अस्वद ने और उनके वालिद ने बयान किया कि मैंने ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) से ज़हरीले जानवर के काटने में झाड़ने के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि हर ज़हरीले जानवर के काटने में झाड़ने की नबी करीम (ﷺ) ने इजाज़त दी है।

٣٧- باب رُقْيَةِ الْحَيَّةِ وَالْعَقْرَبِ

٥٧٤١- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ الشَّيْبَانِيُّ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنِ الأَسْوَدِ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: سَأَلْتُ عَائِشَةَ عَنِ الرُّقْيَةِ مِنَ الْحُمَةِ فَقَالَتْ: رَخَّصَ النَّبِيُّ ﷺ الرُّقْيَةَ مِنْ كُلِّ ذِي حُمَةٍ.

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

चौबीसवां पारा

बाब 38 : रसूले करीम (ﷺ) ने बीमारी से शिफ़ा के लिये क्या दुआ पढ़ी है?

٣٨- باب رُقْيَةِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

5742. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वारिष़ बिन सईद ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन सुहैब ने बयान किया कि मैं और ष़ाबित बिनानी ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए, ष़ाबित ने कहा अबू ह़म्ज़ा! (ह़ज़रत अनस बिन मालिक रज़ि. की कुन्नियत) मेरी त़बीअ़त ख़राब हो गई है। ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने कहा फिर क्यूँ न मैं तुम पर वो दुआ पढ़कर दम कर दूँ जिसे रसूलुल्लाह (ﷺ) पढ़ा करते थे। ष़ाबित ने कहा कि ज़रूर कीजिए ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने उस पर ये दुआ पढ़कर दम किया। ऐ अल्लाह! लोगों के रब! तकलीफ़ को दूर कर देने वाले! शिफ़ा अ़ता फ़र्मा, तू ही शिफ़ा देने वाला है तेरे सिवा कोई शिफ़ा देने वाला नहीं, ऐसी शिफ़ा अ़ता कर कि बीमारी बिलकुल बाक़ी न रहे।

٥٧٤٢- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ قَالَ: دَخَلْتُ أَنَا وَثَابِتٌ عَلَى أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ فَقَالَ ثَابِتٌ: يَا أَبَا حَمْزَةَ اشْتَكَيْتُ فَقَالَ أَنَسٌ: أَلاَ أَرْقِيكَ بِرُقْيَةِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: بَلَى، قَالَ: اللَّهُمَّ رَبَّ النَّاسِ مُذْهِبَ الْبَاسِ اشْفِ أَنْتَ الشَّافِي لاَ شَافِيَ إِلاَّ أَنْتَ شِفَاءً لاَ يُغَادِرُ سَقَمًا.

तश्रीह : ह़ज़रत अबू सईद (रज़ि.) कहते हैं कि ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लैहिस्सलाम) रसूले करीम (ﷺ) की ख़िदमत में तशरीफ़ लाए और आँह़ज़रत (ﷺ) की त़बीअ़त उस वक़्त कुछ नासाज़ थी तो ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लैहिस्सलाम) ने इन लफ़्ज़ों से आप पर दम किया। **बिस्मिल्लाहि अर्क़ीक मिन कुल्लि शैइन यूज़ीक मिन शर्रि कुल्लि नफ़्सिन औ ऐ़निन ह़ासिदिन अल्लाहु यश्फ़ीक** (रवाहु मुस्लिम) दम झाड़ करने वालों को ऐसी मस्नून व माष़ूर दुआओं से दम करना चाहिये और ख़ुद साख़्ता दुआओं से परहेज़ करना ज़रूरी है। ये भी मा'लूम हुआ कि मस्नून दुआओं से दम करना कराना भी सुन्नत है और यक़ीनन मस्नून दुआओं से दम करने कराने का बड़ा ज़बरदस्त अष़र होता है।

5743. हमसे अ़म्र बिन अ़ली फ़लास ने बयान किया, कहा हमसे यह़्या बिन सईद क़त्त़ान ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, उनसे सुलैमान आ'मश ने, उनसे मुस्लिम बिन सुबैह़ ने, उनसे मसरूक़ ने और उनसे आ़इशा

٥٧٤٣- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ حَدَّثَنَا يَحْيَى حَدَّثَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ عَنْ مُسْلِمٍ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ

(रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपने घर के कुछ (बीमारों) पर ये दुआ पढ़कर दम करते और अपना दाहिना हाथ फेरते और ये दुआ पढ़ते। ऐ अल्लाह! लोगों के पालने वाले! तकलीफ़ को दूर कर दे इसे शिफ़ा दे दे तू ही शिफ़ा देने वाला है। तेरी शिफ़ा के सिवा कोई शिफ़ा नहीं। ऐसी शिफ़ा (दे) कि किसी क़िस्म की बीमारी बाक़ी न रह जाए। सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया कि मैंने ये दुआ मंसूर बिन मुअतमिर के सामने बयान की तो उन्होंने मुझसे ये इब्राहीम नख़ई से बयान की, उनसे मसरूक़ ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने इसी तरह बयान की। (राजेअ : 5675)

عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ: كَانَ يُعَوِّذُ بَعْضَ أَهْلِهِ يَمْسَحُ بِيَدِهِ الْيُمْنَى وَيَقُولُ: ((اللَّهُمَّ رَبَّ النَّاسِ أَذْهِبِ الْبَاسَ اشْفِهِ وَأَنْتَ الشَّافِي لاَ شِفَاءَ إِلاَّ شِفَاؤُكَ شِفَاءً لاَ يُغَادِرُ سَقَمًا)). قَالَ سُفْيَانُ: حَدَّثْتُ بِهِ مَنْصُورًا، فَحَدَّثَنِي عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَائِشَةَ نَحْوَهُ.

[راجع: ٥٦٧٥]

5744. मुझसे अहमद बिन अबी रजाअ ने बयान किया, कहा हमसे नज़्र बिन शुमैल ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उर्वा ने, उन्हें उनके वालिद ने ख़बर दी और उन्हें ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) दम किया करते थे और ये दुआ पढ़ते थे, तकलीफ़ को दूर कर दे ऐ लोगों के पालनहार! तेरे ही हाथ में शिफ़ा है, तेरे सिवा तकलीफ़ को दूर करने वाला कोई और नहीं है। (राजेअ : 5675)

٥٧٤٤- حَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ أَبِي رَجَاءٍ حَدَّثَنَا النَّضْرُ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَانَ يَرْقِي يَقُولُ: ((امْسَحِ الْبَاسَ رَبَّ النَّاسِ بِيَدِكَ الشِّفَاءُ لاَ كَاشِفَ لَهُ إِلاَّ أَنْتَ)). [راجع: ٥٦٧٥]

ये फ़र्माकर आपने शिर्क की जड़ बुनियाद उखाड़ दी। जब उसके सिवा कोई दर्द दुख तकलीफ़ दूर नहीं कर सकता तो उसके सिवा किसी बुत, देवता या पीर को पुकारना मह़ज़ नादानी व ह़िमाक़त है। इससे क़ुबूरियों को सबक़ लेना चाहिये जो दिन रात अहले क़ुबूर से मदद त़लब करते रहते हैं और मज़ाराते बुज़ुर्गों को क़िब्ला-ए-ह़ाजात समझे बैठे हैं। ह़ालाँकि ख़ुद क़ुर्आन पाक का बयान है, **इन्नल्लज़ीन तदऊन मिन दूनिल्लाहि लंय्यख़्लुक़ू ज़ुबाबन व लविज्तमऊ लहू** (अल् हज्ज : 73) ह़ाजात के लिये जिनको तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो ये सब मिलकर एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकते इस आयत में सारे देवी-देवता, पीरों-वलियों के बारे में कहा गया है जिनको लोग पूजते हैं।

5745. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, कहा कि मुझसे अ़ब्दुरब्बिही बिन सईद ने बयान किया, उनसे अ़म्रह ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) मरीज़ के लिये (कलिमे की उंगली ज़मीन पर लगाकर) ये दुआ पढ़ते थे। अल्लाह के नाम की मदद से हमारी ज़मीन की मिट्टी हममें से किसी के थूक के साथ ताकि हमारा मरीज़ शिफ़ा पा जाए हमारे रब के हुक्म से। (दीगर : 5746)

٥٧٤٥- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ رَبِّهِ بْنُ سَعِيدٍ عَنْ عَمْرَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ كَانَ يَقُولُ لِلْمَرِيضِ: ((بِسْمِ اللهِ تُرْبَةُ أَرْضِنَا بِرِيقَةِ بَعْضِنَا يُشْفَى سَقِيمُنَا بِإِذْنِ رَبِّنَا)). [طرفه في : ٥٧٤٦].

5746. मुझसे स़दक़ा बिन फ़ज़ल ने बयान किया, कहा हमको इब्ने उ़ययना ने ख़बर दी, उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन सईद ने,

٥٧٤٦- حَدَّثَنِي صَدَقَةُ بْنُ الْفَضْلِ أَخْبَرَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ عَبْدِ رَبِّهِ بْنِ سَعِيدٍ

عَنْ عَمْرَةَ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَقُولُ فِي الرُّقْيَةِ: ((تُرْبَةُ أَرْضِنَا وَرِيقَةُ بَعْضِنَا يُشْفَى سَقِيمُنَا بِإِذْنِ رَبِّنَا)).
[راجع: ٥٧٤٥]

उन्हें अम्रह ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) दम करते वक़्त ये दुआ पढ़ा करते थे, हमारी ज़मीन की मिट्टी और हमारा कुछ थूक हमारे रब के हुक्म से हमारे मरीज़ को शिफ़ा हो। (राजेअ : 5745)

तशरीह : नववी ने कहा आँहज़रत (ﷺ) अपना थूक कलिमे की उंगली पर लगाकर उसको ज़मीन पर रखते और ये दुआ पढ़ते फिर वो मिट्टी ज़ख़्म या दर्द के मक़ाम पर लगवाते अल्लाह के हुक्म से शिफ़ा हो जाती थी। हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, **व इन्न हाज़ा मिन बाबित्तबर्रूकि बिअस्माइल्लाहि तआला व आषार रसूलिही व अम्मा वज़्उल्इस्बइ बिल्अर्ज़ि फलअल्लहू ख़ासिय्यतहू फ़ी ज़ालिक औ बिहिक्मति इख़फ़ाइ आषारल्क़ुदरति बिमुबाशरतिल्अस्बाबिल् मुअताद** (फत्ह) या'नी अल्लाह पाक के मुबारक नामों के साथ बरकत हासिल करना और उसके रसूल के आषार के साथ उस पर उँगली रखना पस ये शायद उसकी ख़ासियत की वजह से हो या आषारे क़ुदरत की कोई पोशिदा हिक्मत उसमें हो जो अस्बाबे ज़ाहिरी के साथ मेल रखती हो आषारे रसूल से वो उँगली मुराद है जो आप ज़मीन पर रखकर मिट्टी लगाकर दुआ पढ़ते थे। बनावटी आषार मुराद नहीं हैं।

٣٩- باب النَّفْثِ فِي الرُّقْيَةِ

बाब 39 : दुआ पढ़कर मरीज़ पर फूँक मारना इस तरह कि मुँह से ज़रा सा थूक भी निकले

٥٧٤٧- حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ، عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا سَلَمَةَ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا قَتَادَةَ يَقُولُ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: ((الرُّؤْيَا مِنَ اللهِ وَالْحُلْمُ مِنَ الشَّيْطَانِ، فَإِذَا رَأَى أَحَدُكُمْ شَيْئًا يَكْرَهُهُ فَلْيَنْفُثْ حِينَ يَسْتَيْقِظُ ثَلاَثَ مَرَّاتٍ، وَيَتَعَوَّذْ مِنْ شَرِّهَا فَإِنَّهَا لاَ تَضُرُّهُ)). وَقَالَ أَبُو سَلَمَةَ: وَإِنْ كُنْتُ لأَرَى الرُّؤْيَا أَثْقَلَ عَلَيَّ مِنَ الْجَبَلِ فَمَا هُوَ إِلاَّ أَنْ سَمِعْتُ هَذَا الْحَدِيثَ فَمَا أُبَالِيهَا.
[راجع: ٣٢٩٢]

5747. हमसे ख़ालिद बिन मुख़्लद ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, उनसे यह्या बिन सईद अंसारी ने बयान किया कि मैंने अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ से सुना, कहा कि मैंने हज़रत अबू क़तादा (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि बेशक अच्छा ख़्वाब अल्लाह की तरफ़ से होता है, और हल्म (बुरा ख़्वाब जिसमें घबराहट हो) शैतान की तरफ़ से होता है इसलिये जब तुममें से कोई शख़्स कोई ऐसा ख़्वाब देखे जो बुरा हो तो जागते ही तीन मर्तबा बाईं तरफ़ थू थू करे और उस ख़्वाब की बुराई से अल्लाह की पनाह मांगे, इस तरह ख़्वाब का उसे नुक़्सान नहीं होगा और अबू सलमा ने कहा कि पहले कुछ ख़्वाब मुझ पर पहाड़ से भी ज़्यादा भारी होता था जबसे मैंने ये हदीष सुनी और इस पर अमल करने लगा, अब मुझे कोई परवाह नहीं होती। (राजेअ : 3292)

हदीष की मुताबक़त बाब का तर्जुमा से इस तरह है कि अल्लाह की पनाह चाहना यही मंतर है मंतर में फूँकना थू थू करना भी षाबित हुआ।

٥٧٤٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ الأُوَيْسِيُّ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ عَنْ يُونُسَ عَنِ

5748. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह उवैसी ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, उनसे यूनुस बिन यज़ीद ऐली ने, उनसे इब्ने शिहाब ज़ुह्री ने,

उनसे उर्वा बिन ज़ुबैर ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब अपने बिस्तर पर आराम फ़र्माने के लिये लेटते तो अपनी दोनों हथेलियों पर क़ुल हुवल्लाहु अहद और क़ुल अऊज़ु बिरब्बिन्नास और अल फ़लक़ सब पढ़कर दम करते फिर दोनों हाथों को अपने चेहरे पर और जिस्म के जिस हिस्से तक हाथ पहुँच पाता फेरते। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि फिर जब आप बीमार होते तो आप मुझे इसी तरह करने का हुक्म देते थे। यूनुस ने बयान किया कि मैंने इब्ने शिहाब को भी देखा कि वो जब अपने बिस्तर पर लेटते इसी तरह इनको पढ़कर दम किया करते थे। (राजेअ: 5017)

ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا، قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ إِذَا أَوَى إِلَى فِرَاشِهِ نَفَثَ فِي كَفَّيْهِ بِقُلْ هُوَ اللهُ أَحَدٌ وَبِالْمُعَوِّذَتَيْنِ جَمِيعًا ثُمَّ يَمْسَحُ بِهِمَا وَجْهَهُ وَمَا بَلَغَتْ يَدَاهُ مِنْ جَسَدِهِ قَالَتْ عَائِشَةُ: فَلَمَّا اشْتَكَى كَانَ يَأْمُرُنِي أَنْ أَفْعَلَ ذَلِكَ بِهِ. قَالَ يُونُسُ : كُنْتُ أَرَى ابْنَ شِهَابٍ يَصْنَعُ ذَلِكَ إِذَا أَتَى إِلَى فِرَاشِهِ.[راجع: ٥٠١٧]

इन सूरतों का पढ़कर दम करना मस्नून है। अल्लाह पाक तमाम मुरव्वजा बिदआत व शिर्किया दम झाड़ से बचाकर सुन्नते माषूरा दुआओं को वज़ीफ़ा बनाने की हर मुसलमान को सआदत बख़्शे, आमीन।

5749. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, उनसे अबू बिश्र (जा'फ़र) ने उनसे अबुल मुतवक्किल अली बिन दाऊद ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) के चंद सहाबा (300 नफ़र) एक सफ़र के लिये रवाना हुए जिसे उन्हें तै करना था रास्ते में उन्होंने अरब के एक क़बीले में पड़ाव किया और चाहा कि क़बीले वाले उनकी मेहमानी करें लेकिन उन्होंने इंकार किया। फिर उस क़बीले के सरदार को बिच्छू ने काट लिया उसे अच्छा करने की हर तरह की कोशिश उन्होंने कर डाली लेकिन किसी से कुछ फ़ायदा न हुआ। आख़िर उन्हीं में से किसी ने कहा कि ये लोग जिन्होंने तुम्हारे क़बीले में पड़ाव कर रखा है उनके पास भी चलो मुम्किन है उनमें से किसी के पास कोई मंतर हो। चुनाँचे वो सहाबा के पास आए और कहा लोगों! हमारे सरदार को बिच्छू ने काट लिया है हमने हर तरह की बहुत कोशिश उसके लिये कर डाली लेकिन किसी से कोई फ़ायदा नहीं हुआ क्या तुम लोगों में से किसी के पास उसके लिये कोई मंतर है? सहाबा में से एक साहब (अबू सईद ख़ुदरी रज़ि.) ने कहा कि हाँ! वल्लाह मैं झाड़ना जानता हूँ लेकिन हमने तुमसे कहा था कि तुम हमारी मेहमानी करो (हम मुसाफ़िर हैं) तो तुमने इंकार कर दिया था इसलिये मैं भी उस वक़्त तक नहीं

٥٧٤٩- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ أَبِي بِشْرٍ عَنْ أَبِي الْمُتَوَكِّلِ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ أَنَّ رَهْطًا مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نطَلَقُوا فِي سَفْرَةٍ سَافَرُوهَا حَتَّى نَزَلُوا بِحَيٍّ مِنْ أَحْيَاءِ الْعَرَبِ فَاسْتَضَافُوهُمْ فَأَبَوْا أَنْ يُضَيِّفُوهُمْ فَلُدِغَ سَيِّدُ ذَلِكَ الْحَيِّ فَسَعَوْا لَهُ بِكُلِّ شَيْءٍ لاَ يَنْفَعُهُ شَيْءٌ فَقَالَ بَعْضُهُمْ: لَوْ أَتَيْتُمْ هَؤُلاَءِ الرَّهْطَ الَّذِينَ قَدْ نَزَلُوا بِكُمْ لَعَلَّهُ أَنْ يَكُونَ عِنْدَ بَعْضِهِمْ شَيْءٌ فَأَتَوْهُمْ فَقَالُوا : يَا أَيُّهَا الرَّهْطُ إِنَّ سَيِّدَنَا لُدِغَ فَسَعَيْنَا لَهُ بِكُلِّ شَيْءٍ لاَ يَنْفَعُهُ شَيْءٌ فَهَلْ عِنْدَ أَحَدٍ مِنْكُمْ شَيْءٌ؟ فَقَالَ بَعْضُهُمْ: نَعَمْ. وَاللهِ إِنِّي لَرَاقٍ وَلَكِنْ وَاللهِ لَقَدِ اسْتَضَفْنَاكُمْ فَلَمْ تُضَيِّفُونَا فَمَا أَنَا بِرَاقٍ لَكُمْ حَتَّى تَجْعَلُوا لَنَا جُعْلاً

فَصَالَحُوهُمْ عَلَى قَطِيعٍ مِنَ الْغَنَمِ فَانْطَلَقَ فَجَعَلَ يَتْفِلُ، وَيَقْرَأُ ﴿الْحَمْدُ للهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ﴾، حَتَّى لَكَأَنَّمَا نُشِطَ مِنْ عِقَالٍ فَانْطَلَقَ يَمْشِي مَا بِهِ قَلَبَةٌ قَالَ: فَأَوْفُوهُمْ جُعْلَهُمُ الَّذِي صَالَحُوهُمْ عَلَيْهِ، فَقَالَ بَعْضُهُمْ : اقْسِمُوا، فَقَالَ الَّذِي رَقَى لاَ تَفْعَلُوا، حَتَّى نَأْتِيَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَنَذْكُرَ لَهُ الَّذِي كَانَ فَنَنْظُرَ مَا يَأْمُرُنَا فَقَدِمَا عَلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَذَكَرُوا لَهُ، فَقَالَ: ((وَمَا يُدْرِيكَ أَنَّهَا رُقْيَةٌ أَصَبْتُمْ؟ اقْسِمُوا وَاضْرِبُوا لِي مَعَكُمْ بِسَهْمٍ)).

[راجع: ٢٢٧٦]

झाड़ूँगा जब तक तुम मेरे लिये इसकी मज़दूरी न ठहरा दो। चुनाँचे उन लोगों ने कुछ बकरियों (30) पर मामला कर लिया। अब ये स़हाबी रवाना हुए। ये ज़मीन पर थूकते जाते और अल ह़म्दुलिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन पढ़ते जाते उसकी बरकत से वो ऐसा हो गया जैसे उसकी रस्सी खुल गई हो और वो इस त़रह़ चलने लगा जैसे उसे कोई तकलीफ़ ही न रही हो। बयान किया कि फिर वा'दे के मुत़ाबिक़ क़बीले वालों ने उन स़हाबी की मज़दूरी (30 बकरियाँ) अदा कर दी कुछ लोगों ने कहा कि इनको तक़्सीम कर लो लेकिन जिन्होंने झाड़ा था उन्होंने कहा कि अभी नहीं, पहले हम रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हों पूरी स़ूरते ह़ाला आपके सामने बयान कर दें फिर देखें आँह़ुज़ूर (ﷺ) हमें क्या हुक्म देते हैं। चुनाँचे सब लोग आँह़ज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए तो आपसे उसका ज़िक्र किया, आपने फ़र्माया कि तुम्हें कैसे मा'लूम हो गया था कि इससे दम किया जा सकता है? तुमने बहुत अच्छा किया जाओ इनको तक़्सीम कर लो और मेरा भी अपने साथ एक ह़िस़्स़ा लगाओ। (राजेअ़ : 2276)

तश्रीह : मा'लूम हुआ कि ऐसे मौक़ों पर क़ुर्आन मजीद पढ़ने पढ़ाने पर अपने ईस़ारे वक़्त की मुनासिब उजरत ली जा सकती है। ये भी ज़ाहिर हुआ कि मशकूक उमूर के लिये शरीअ़त की रोशनी में उ़लमा से तह़क़ीक़ कर लेना ज़रूरी है। आयत **फस्अलू अहलज़्ज़िक्रि इन्कुन्तुम ला तअ़लमून** (अन् नह़ल : 43) का यही मत़लब है कि जो बात न जानते हो उसको जानने वालों से पूछ लो जो लोग इस आयत से तक़्लीदे शख़्स़ी निकालते हैं वो इंतिहाई जुर्अत करते हैं ये आयत तो तक़्लीदे शख़्स़ी को काटकर हर मुसलमान को तह़क़ीक़ का हुक्म दे रही है।

٤٠- باب مَسْحِ الرَّاقِي الْوَجَعَ بِيَدِهِ الْيُمْنَى

बाब 40 : बीमार पर दम करते वक़्त दर्द की जगह पर दाहिना हाथ फेरना

٥٧٥٠- حدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ سُفْيَانَ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ مُسْلِمٍ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُعَوِّذُ بَعْضَهُمْ يَمْسَحُهُ بِيَمِينِهِ أَذْهِبِ الْبَاسَ رَبَّ النَّاسِ وَاشْفِ أَنْتَ الشَّافِي لاَ شِفَاءَ إِلاَّ شِفَاءُكَ شِفَاءً لاَ يُغَادِرُ سَقَمًا. فَذَكَرْتُهُ لِمَنْصُورٍ

5750. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे यह़्या बिन सईद क़त़्त़ान ने बयान किया, उनसे सुफ़यान स़ौरी ने, उनसे आ'मश ने, उनसे मुस्लिम बिन अबुस़्स़बीह़ ने, उनसे मसरूक़ ने और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) (अपने घर के) कुछ लोगों पर दम करते वक़्त अपना दाहिना हाथ फेरते (और ये दुआ़ पढ़ते थे) तकलीफ़ को दूर कर दे ऐ लोगों के रब! और शिफ़ा दे, तू ही शिफ़ा देने वाला है, शिफ़ा वही है जो तेरी त़रफ़ से हो ऐसी शिफ़ा की बीमारी ज़रा भी बाक़ी न रह जाए। (सुफ़यान ने

فَحَدَّثَنِي عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا بِنَحْوِهِ.

[راجع: ٥٦٧٥]

कहा कि फिर मैंने ये मंसूर से बयान किया तो उन्होंने मुझसे इब्राहीम नख़ई से बयान किया, उनसे मसरूक़ ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने इसी तरह बयान किया। (राजेअ : 5675)

इस हदीष़ की रोशनी में लफ़्ज़ दस्ते शिफ़ा राइज हुआ है। कुछ हाथों में अल्लाह पाक ये अष़र रख देता है कि वो दम करें या कोई नुस्ख़ा लिखकर दें अल्लाह उनके ज़रिये से शिफ़ा देता है हर हकीम डॉक्टर वेद्य को ये ख़ूबी नहीं मिलती इल्ला माशाअल्लाह।

٤١- باب فِي الْمَرْأَةِ تَرْقِي الرَّجُلَ

٥٧٥١- حدثني عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ الْجُعْفِيُّ حَدَّثَنَا هِشَامٌ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَنْفِثُ عَلَى نَفْسِهِ فِي مَرَضِهِ الَّذِي قُبِضَ فِيهِ بِالْمُعَوِّذَاتِ، فَلَمَّا ثَقُلَ كُنْتُ أَنَا أَنْفِثُ عَلَيْهِ بِهِنَّ وَأَمْسَحُ بِيَدِ نَفْسِهِ لِبَرَكَتِهَا فَسَأَلْتُ ابْنَ شِهَابٍ كَيْفَ كَانَ يَنْفِثُ قَالَ: يَنْفِثُ عَلَى يَدَيْهِ ثُمَّ يَمْسَحُ بِهِمَا وَجْهَهُ.

[راجع: ٤٤٣٩]

बाब 41 : हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद जअ़फ़ी ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन यूसुफ़ स़न्आ़नी ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें उ़र्वा ने और उन्हें ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) अपने मर्ज़े वफ़ात में मुअ़व्वज़ात पढ़कर फूँकते थे फिर जब आपके लिये ये दुश्वार हो गया तो मैं आप पर दम किया करती थी और बरकत के लिये आँह़ज़रत (ﷺ) का हाथ आपके जिस्म पर फेरती थी (मअ़मर ने बयान किया कि) फिर मैंने इब्ने शिहाब से सवाल किया कि आँह़ज़रत (ﷺ) किस तरह दम किया करते थे? उन्होंने बयान किया कि आँह़ज़रत (ﷺ) पहले अपने दोनों हाथों पर फूँक मारते फिर उनको चेहरे पर फेर लेते। (राजेअ : 4439)

इस तरह मुअ़व्विज़ात की ताष़ीर हाथों में अष़र करके फिर चेहरे पर भी ताष़्ष़ुरात पैदा कर देती है जो चेहरे से नुमायाँ होने लगते हैं इसलिये मुअ़व्विज़ात का दम करना और हाथों को चेहरे पर फेरना भी मस्नून है।

٤٢- باب مَنْ لَمْ يَرْقِ

बाब 42 : दम झाड़ न कराने की फ़ज़ीलत

तश्रीह : ह़ाफ़िज़ स़ाहब फ़र्माते हैं **क़ाल इब्नुल्अष़ीर हाज़ा मिन स़िफ़तिल्औलियाइल्मूमिनीन अनिद्दुनिया व अस्बाबिहा व अ़लाइक़िहा व हाउलाइ हुम अख़स़्स़ुलऔलिया व ला यरिदु हाज़ा वुक़ूउ ज़ालिक मिनन्नबिय्यि (ﷺ) फ़िअ़लन व अम्रन लिअन्नहू कान फ़ी आ़ला मक़ामातिज़्ज़मानि व दरजातित्तवक्कुलि फकान ज़ालिक मिन्हु तशरीअ़न व बयानुल्जवाज़** (फ़त्ह) या'नी ये औलिया अल्लाह की स़िफ़त है जो दुनिया और अस्बाब व अ़लाइक़े दुनिया से बिलकुल मुँह मोड़ लेते हैं और ये ख़ास़ुल ख़ास़ औलिया होते हैं। इससे उस पर कोई शुब्हा वारिद नहीं किया जा सकता है कि आँह़ज़रत (ﷺ) से दम झाड़ करना कराना और उसके लिये हुक्म फ़र्माना षाबित है चूँकि आँह़ज़रत (ﷺ) को इरफ़ान और तवक्कल के आ़लातरीन दरजात ह़ास़िल हैं पस आपने शरीअ़त में ऐसे उमूर बतौर जवाज़ के ख़ुद किये और बतलाए।

٥٧٥٢- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا حُصَيْنُ بْنُ نُمَيْرٍ عَنْ حُصَيْنِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ

5752. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे हुसैन बिन नुमैर ने बयान किया, उनसे हुस़ैन बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) एक दिन हमारे पास बाहर

عَنْهُمَا قَالَ: خَرَجَ عَلَيْنَا النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمًا فَقَالَ: ((عُرِضَتْ عَلَيَّ الأُمَمُ فَجَعَلَ يَمُرُّ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَعَهُ الرَّجُلُ وَالنَّبِيُّ مَعَهُ الرَّجُلاَنِ وَالنَّبِيُّ مَعَهُ الرَّهْطُ وَالنَّبِيُّ لَيْسَ مَعَهُ أَحَدٌ وَرَأَيْتُ سَوَادًا كَثِيرًا سَدَّ الأُفُقَ فَرَجَوْتُ أَنْ تَكُونَ أُمَّتِي، فَقِيلَ: هَذَا مُوسَى وَقَوْمُهُ، ثُمَّ قِيلَ لِي انْظُرْ فَرَأَيْتُ سَوَادًا كَثِيرًا سَدَّ الأُفُقَ فَقِيلَ لِي، انْظُرْ هَكَذَا وَهَكَذَا، فَرَأَيْتُ سَوَادًا كَثِيرًا سَدَّ الأُفُقَ فَقِيلَ: هَؤُلاَءِ أُمَّتُكَ وَمَعَ هَؤُلاَءِ سَبْعُونَ أَلْفًا يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ بِغَيْرِ حِسَابٍ)) فَتَفَرَّقَ النَّاسُ وَلَمْ يُبَيِّنْ لَهُمْ فَتَذَاكَرَ أَصْحَابُ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالُوا: أَمَّا نَحْنُ فَوُلِدْنَا فِي الشِّرْكِ وَلَكِنَّا آمَنَّا بِاللهِ وَرَسُولِهِ وَلَكِنْ هَؤُلاَءِ هُمْ أَبْنَاؤُنَا فَبَلَغَ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ((هُمُ الَّذِينَ لاَ يَتَطَيَّرُونَ وَلاَ يَكْتَوُونَ وَلاَ يَسْتَرْقُونَ وَعَلَى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ)). فَقَامَ عُكَاشَةُ بْنُ مِحْصَنٍ فَقَالَ: أَمِنْهُمْ أَنَا يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: ((نَعَمْ)). فَقَامَ آخَرُ فَقَالَ: أَمِنْهُمْ أَنَا؟ فَقَالَ: ((سَبَقَكَ بِهَا عُكَاشَةُ)).

[راجع: ٣٤١٠]

तशरीफ़ लाए और फ़र्माया कि (ख़्वाब मे) मुझ पर तमाम उम्मतें पेश की गईं। कुछ नबी गुज़रते और उनके साथ (उनकी इत्तिबाअ करने वाला) सिर्फ़ एक होता। कुछ गुज़रते और उनके साथ दो होते कुछ के साथ पूरी जमाअत होती और कुछ के साथ कोई भी न होता फिर मैंने एक बड़ी जमाअत देखी जिससे आसमान का किनारा ढंक गया था मैं समझा कि ये मेरी ही उम्मत होगी लेकिन मुझसे कहा गया कि ये ह़ज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) और उनकी उम्मत के लोग हैं फिर मुझसे कहा कि देखो मैंने एक बहुत बड़ी जमाअत देखी जिसने आसमानों का किनारा ढांप लिया है। फिर मुझसे कहा गया कि उधर देखो, उधर देखो, मैंने देखा कि बहुत सी जमाअतें हैं जो तमाम उफ़ुक़ पर मुहीत़ थीं। कहा गया कि ये तुम्हारी उम्मत है और उसमें से सत्तर हज़ार वो लोग होंगे जो बे हिसाब जन्नत में दाख़िल किये जाएँगे फिर स़हाबा मुख़्तलिफ़ जगहों में उठकर चले गये और आँह़ज़रत (ﷺ) ने उसकी वज़ाहत नहीं की कि ये सत्तर हज़ार कौन लोग होंगे। स़हाबा किराम (रज़ि.) ने आपस में उसके बारे में मुज़ाकिरा किया और कहा कि हमारी पैदाइश तो शिर्क में हुई थी अल्बत्ता बाद में हम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान ले आए लेकिन ये सत्तर हज़ार हमारे बेटे होंगे जो पैदाइश ही से मुसलमान हैं। जब रसूलुल्लाह (ﷺ) को ये बात पहुँची तो आपने फ़र्माया कि ये सत्तर हज़ार वो लोग होंगे जो बदफ़ाली नहीं करते, न मंतर से झाड़ फूँक कराते हैं और न दाग़ लगाते हैं बल्कि अपने रब पर भरोसा करते हैं। ये सुनकर ह़ज़रत उ़क्काशा बिन मिह़स़न (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या मैं भी उनमें से हूँ? फ़र्माया कि हाँ। एक दूसरे स़ाहब ह़ज़रत सअ़द बिन उ़बादा (रज़ि.) ने खड़े होकर अ़र्ज़ किया मैं भी उनमें से हूँ? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उ़क्काशा तुमसे बाज़ी ले गए कि तुमसे पहले उ़क्काशा के लिये जो होना था वो हो चुका। (राजेअ : 3410)

तशरीह : ये सत्तर हज़ार बड़े बड़े स़हाबा और औलिया-ए-उम्मत होंगे वरना उम्मते मुह़म्मदिया तो करोड़ों अरबों गुज़र चुकी है और हर वक़्त दुनिया में करोड़ों-करोड़ रहती है। सत्तर हज़ार का उन अरबों में क्या शुमार। बहरह़ाल उम्मते मुह़म्मदी तमाम उम्मतों से ज़्यादा होगी और आप अपनी उम्मत की ये कष़रत देखकर फ़ख़्र करेंगे। या अल्लाह! आपकी

सच्ची उम्मत में हमारा भी हश्र फ़र्माइयो और आपका हौज़े कौषर पर दीदार नसीब कीजियो आमीन या रब्बल आलमीन।

बाब 43 : बदशगुनी लेने का बयान

٤٣- باب الطِّيَرَةِ

जिसे अरबी में तयरह कहते हैं अरब लोग जब किसी काम के लिये बाहर निकलते तो परिन्दा उड़ाते अगर वो दाईं तरफ़ उड़ता तो नेक फ़ाल समझते। अगर बाईं तरफ़ उड़ता तो मन्हूस जानकर वापस लौट आते। जाहिल लोग आजकल भी ऐसे ख़यालाते फ़ासिदा में मुब्तला हैं।

5753. मुझसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे उष्मान बिन उमर ने, कहा कि हमसे यूनुस बिन यज़ीद ऐली ने, उनसे सालिम ने बयान किया और उनसे हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया अम्राज़ में छूतछात की और बदशगुनी की कोई अस़ल नहीं और अगर नहूसत होती तो ये सिर्फ़ तीन चीज़ों में होती है। औरत में, घर में और घोड़े में। (राजेअ: 2099)

٥٧٥٣- حدَّثني عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ عُمَرَ حَدَّثَنَا يُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: لاَ عَدْوَى، وَلاَ طِيَرَةَ، وَالشُّؤْمُ فِي ثَلاَثٍ: فِي الْمَرْأَةِ، وَالدَّارِ، وَالدَّابَّةِ.[راجع: ٢٠٩٩]

तश्रीह : बदशगुनी के बेकार होने पर सब अक़्ल वालों का इत्तिफ़ाक़ है मगर छूत के मामले में कुछ डॉक्टर इख़्तिलाफ़ करते हैं और कहते हैं तजुर्बे से मा'लूम होता है कि कुछ बीमारियाँ छूत वाली होती हैं मषलन जुज़ाम और ताऊन वग़ैरह। हम कहते हैं कि ये तुम्हारा वहम है अगर वो दरहक़ीक़त मुतअद्दी होते तो एक घर के या एक शहर के सब लोग मुब्तला हो जाते मगर ऐसा नहीं होता बल्कि एक घर में ही कुछ लोग बीमार होते और कुछ तन्दुरुस्त रह जाते हैं जैसा कि आम मुशाहिदा है।

5754. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, कहा हमको उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन उत्बा ने ख़बर दी और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि बदशगुनी की कोई अस़ल नहीं अल्बत्ता नेक फ़ाल लेना कुछ बुरा नहीं है। स़हाबा किराम (ﷺ) ने अर्ज़ किया नेक फ़ाल क्या चीज़ है? फ़र्माया कोई ऐसी बात सुनना। (दीगर मक़ामात : 5755)

٥٧٥٤- حدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((لاَ طِيَرَةَ وَخَيْرُهَا الْفَأْلُ)) قَالُوا وَمَا الْفَأْلُ؟ قَالَ: ((الْكَلِمَةُ الصَّالِحَةُ يَسْمَعُهَا أَحَدُكُمْ)).

[طرفه في : ٥٧٥٥].

मषलन बीमार आदमी सलामती तन्दरुस्ती का सुन पाए या लड़ाई पर जाने वाला शख़्स़ रास्ते में किसी ऐसे शख़्स़ से मिले जिसका नाम फ़तह़ ख़ाँ हो उससे फ़ाले नेक लिया जा सकता है कि लड़ाई में फ़तह़ हमारी होगी, इंशाअल्लाह तआला।

बाब 44 : नेक फ़ाल लेना कुछ बुरा नहीं है

٤٤- بَابُ الْفَأْلِ

5755. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको हिशाम बिन यूसुफ़ ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमको मअमर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन उत्बा ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह

٥٧٥٥- حدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ أَخْبَرَنَا هِشَامٌ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، عَنْ أَبِي

(रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया बदशगूनी की कोई अस़ल नहीं और उसमें बेहतर फ़ाल नेक है। लोगों ने पूछा कि नेक फ़ाल किया है या रसूलल्लाह! फ़र्माया कलिम-ए-स़ालिह़ा (नेक बात) जो तुममें से कोई सुने। (राजेअ़ : 5754)

هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((لاَ طِيَرَةَ وَخَيْرُهَا الْفَأْلُ)) قَالَ: وَمَا الفَأْلُ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: ((الْكَلِمَةُ الصَّالِحَةُ يَسْمَعُهَا أَحَدُكُمْ)). [راجع: ٥٧٥٤]

5756. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम दस्तवाई ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया छूत लग जाने की कोई अस़ल नहीं और न बदशगुनी की कोई अस़ल है और मुझे अच्छी फ़ाल पसंद है या'नी कोई कलिमा ख़ैर और नेक बात जो किसी के मुँह से सुनी जाए (जैसा कि ऊपर बयान हुआ।) (दीगर 5776)

٥٧٥٦- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: قَالَ ((لاَ عَدْوَى وَلاَ طِيَرَةَ، وَيُعْجِبُنِي الْفَأْلُ الصَّالِحُ الْكَلِمَةُ الْحَسَنَةُ)). [طرفه في : ٥٧٧٦].

तश्रीह : ह़ाफ़िज़ स़ाह़ब फ़र्माते हैं कि रसूले करीम (ﷺ) के सामने बदशगुनी का ज़िक्र आया तो आपने फ़र्माया कि **फइज़ा राअ अहदुकुम शैअन यक्रहु फलियकुल अल्लाहुम्म ला याती बिल्हसनाति इल्ला अन्त व ला यदफ़ुअस्सय्यिआति इल्ला अन्त व ला हौल व ला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह** (फ़त्ह) या'नी अगर तुममें से कोई ऐसी मकरूह चीज़ देखे तो कहे या अल्लाह! तमाम भलाइयाँ लाने वाला तू ही है और बुराइयों का दूर करने वाला भी तेरे सिवा और कोई नहीं है गुनाहों से बचने की त़ाक़त और नेकी करने की क़ुव्वत और उनका सरचश्मा ऐ अल्लाह! तू ही है।

बाब 45 : उल्लू को मन्हूस समझना गलत है

٤٥- باب لاَ هَامَةَ

5757. हमसे मुह़म्मद बिन ह़कम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे नज़्र बिन शुमैल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इस्राईल ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमको अबू ह़ुस़ैन (उ़ष्मान बिन आ़स़िम असदी) ने ख़बर दी, उन्हें अबू स़ालेह़ ज़क्वान ने और उन्हें ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया छूत लग जाना या बदशगुनी या उल्लू या स़फ़र की नह़ूसत ये कोई चीज़ नहीं है। (राजेअ़ : 5707)

٥٧٥٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْحَكَمِ حَدَّثَنَا النَّضْرُ أَخْبَرَنَا إِسْرَائِيلُ أَخْبَرَنَا أَبُو حُصَيْنٍ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لاَ عَدْوَى، وَلاَ طِيَرَةَ، وَلاَ هَامَةَ، وَلاَ صَفَرَ)). [راجع: ٥٧٠٧]

तश्रीह : उल्लू या'नी बूम एक शिकारी परिन्दा है इसको दिन में नही सूझता तो बेचारा रात को निकलता है। आदमियों के डर से अकष़र जंगल और वीराने में रहता है। अ़रब लोग उल्लू को मनहूस समझते थे। उनका ए'तिक़ाद ये था कि आदमी की रूह़ मरने के बाद उल्लू के क़ालिब में आ जाती है और पुकारती फिरती है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने इस लग़्व ख़्याल का रद्द किया है। स़फ़र पेट का एक कीड़ा है जो भूख के वक़्त पेट को नोचता है, कभी आदमी इसकी वजह से मर जाता है। अ़रब लोग इस बीमारी को मुतअ़द्दी जानते थे। इमाम मुस्लिम ने ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) से स़फ़र के यही मा'नी नक़ल किये हैं। कुछ ने कहा स़फ़र से वो महीना मुराद है जो मुहर्रम के बाद आता है। अ़रब लोग इसे भी मन्हूस समझते थे अब तक हिन्दुस्तान में कुछ लोग तेरह तेज़ी को मन्हूस जानते और उन दिनों में शादी ब्याह नहीं करते।

बाब 46 : कहानत का बयान

٤٦- باب الْكَهَانَةِ

तश्रीह : कहानत की बुराई में सुनन में ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से मरवी है कि **मन अता काहिनन औ अर्राफ़न फ़सद्दक़हू बिमा यक़ूलु फ़क़द कफ़र बिमा उन्ज़िल अला मुहम्मदिन** या'नी जो कोई किसी काहिन या किसी पण्डित के पास किसी ग़ैब की बात को मा'लूम करने गया और फिर उसकी तस्दीक़ की तो उसने उस चीज़ के साथ कुफ़्र किया जो चीज़ अल्लाह के रसूल (ﷺ) पर नाज़िल हुई है या'नी वो मुंकिरे क़ुर्आन हो गया। काहिन अ़रब में वो लोग थे जो आइन्दा की बातें लोगों को बतलाया करते थे और हर एक शख़्स से उसकी क़िस्मत का ह़ाल कहते। यूनान से अ़रब में कहानत आई थी। यूनान में कोई काम बग़ैर काहिन से मश्वरा लिये न करते। कुछ काहिन ये दा'वा करते कि जिन्न उनके ताबेअ़ हैं, वो उनको आइन्दा की बात बतला देते हैं। ऐसे झूठे मक्कार लोग कुछ पण्डितों और कुछ मुल्ला मशाइख़ की शक्ल में आज भी मौजूद हैं मगर अब उनका झूठ फ़रेब अलम नशरह हो गया है फिर भी कुछ सादा मिजाज लोग, मर्द व औरतें उनके बहकाने में आ जाते हैं।

5758. हमसे सईद बिन उ़फ़ैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, कहा कि मुझसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन ख़ालिद ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ (रज़ि.) ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि क़बीला हुज़ैल की दो औरतों के बारे में जिन्होंने झगड़ा किया था यहाँ तक कि उनमें से एक औरत (उम्मे अ़त़ीफ़ बिन्ते मसरूह़) ने दूसरी को पत्थर फेंककर मारा (जिसका नाम मुलैका बिन्ते उ़वैमिर था) वो पत्थर औरत के पेट में जाकर लगा। ये औरत ह़ामला थी इसलिये उसके पेट का बच्चा (पत्थर की चोट से) मर गया। ये मामला दोनों फ़रीक़ नबी करीम (ﷺ) के पास ले गये तो आपने फ़ैसला किया कि औरत के पेट के बच्चे की दियत एक गुलाम या बाँदी आज़ाद करना है जिस औरत पर तावान वाजिब हुआ था उसके वली (ह़मल बिन मालिक बिन नाबग़ा) ने कहा या रसूलल्लाह(ﷺ)! मैं ऐसी चीज़ की दियत कैसे दे दूँ जिसने न खाया न पिया न बोला और न विलादत के वक़्त उसकी आवाज़ ही सुनाई दी? ऐसी सूरत में तो कुछ भी दियत नहीं हो सकती। आपने उस पर फ़र्माया कि ये शख़्स तो काहिनों का भाई मा'लूम होता है। (दीगर मक़ामात : 5759, 5760, 6740, 6904, 6909, 6910)

٥٧٥٨ - حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عُفَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ خَالِدٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَضَى فِي امْرَأَتَيْنِ مِنْ هُذَيْلٍ اقْتَتَلَتَا فَرَمَتْ إِحْدَاهُمَا الأُخْرَى بِحَجَرٍ فَأَصَابَ بَطْنَهَا وَهِيَ حَامِلٌ فَقَتَلَتْ وَلَدَهَا الَّذِي فِي بَطْنِهَا فَاخْتَصَمُوا إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَضَى أَنَّ دِيَةَ مَا فِي بَطْنِهَا غُرَّةٌ عَبْدٌ أَوْ أَمَةٌ فَقَالَ وَلِيُّ الْمَرْأَةِ الَّتِي غَرِمَتْ كَيْفَ أَغْرَمُ يَارَسُولَ اللهِ مَن لاشَرِبَ وَلا أَكَلَ وَلا نَطَقَ وَلا اسْتَهَلَّ فَمِثْلُ ذَلِكَ بَطَلَ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّمَا هَذَا مِنْ إِخْوَانِ الْكُهَّانِ)).

[أطرافه في : ٥٧٥٩، ٥٧٦٠، ٦٧٤٠، ٦٩٠٤، ٦٩٠٩، ٦٩١٠].

तश्रीह : जब ही तू काहिनों की त़रह़ मुसज्जअ़ और मुक़फ़्फ़अ़ फ़िक़रे बोलता है। **व इन्नमा लम युआकिब्हु लिअन्नहू (ﷺ) कान मामूरन बिस्सफ़्हि मिनल्जाहिलीन व फ़िल्हदीषि मिन्हुल्फ़वाइद अयज़न रफ़उल्जनायति लिल्हाकिम वजबद्दियतु लिल्जनीन व लौ ख़रज मैतन** (फ़तह़) या'नी ह़मल बिन मालिक के इस बात को कहने पर आपने उस पर गुस्सा नहीं फ़र्माया इसलिये कि जाहिलों से दरगुज़र करना उसी के लिये आप मामूर थे इस ह़दीष़ में बहुत से फ़वाइद हैं जैसे मुक़द्दमा ह़ाकिम के पास ले जाना और जनीन अगरचे मुर्दा पैदा हुआ हो मगर उसकी दियत का वाजिब होना ये भी मा'लूम हुआ कि उस शख़्स का बयान शाइराना तख़य्युल था ह़क़ीक़त में उसकी कोई असलियत न थी।

5759. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उनसे ह़ज़रत

٥٧٥٩ - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ عَنْ مَالِكٍ عَنِ ابْنِ

شِهَابٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ امْرَأَتَيْنِ رَمَتْ إِحْدَاهُمَا الأُخْرَى بِحَجَرٍ فَطَرَحَتْ جَنِينَهَا فَقَضَى فِيهِ النَّبِيُّ ﷺ بِغُرَّةٍ عَبْدٍ أَوْ أَمَةٍ.

[راجع: ٥٧٥٨]

इमाम मालिक ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अबू सलमा ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि दो औरतें थीं। एक ने दूसरी को पत्थर दे मारा जिससे उसके पेट का ह़मल गिर गया। आँह़ज़रत (ﷺ) ने इस मामले में एक ग़ुलाम या बाँदी दियत में दिये जाने का फ़ैसला किया। (राजेअ़ : 5758)

٥٧٦٠- وَعَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَضَى فِي الْجَنِينِ يُقْتَلُ فِي بَطْنِ أُمِّهِ بِغُرَّةٍ عَبْدٍ أَوْ وَلِيدَةٍ فَقَالَ: الَّذِي قُضِيَ عَلَيْهِ كَيْفَ أَغْرَمُ مَا لاَ أَكَلَ وَلاَ شَرِبَ وَلاَ نَطَقَ وَلاَ اسْتَهَلَّ؟ وَمِثْلُ ذَلِكَ بَطَلَ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّمَا هَذَا مِنْ إِخْوَانِ الْكُهَّانِ)).

[راجع: ٥٧٥٨]

5760. और इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे ह़ज़रत सईद बिन मुसय्यिब ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जनीन जिसे उसकी माँ के पेट में मार डाला गया हो, की दियत के त़ौर पर एक ग़ुलाम या एक बाँदी दिये जाने का फ़ैसला किया था जिसे दियत देनी थी उसने कहा कि ऐसे बच्चे की दियत आख़िर क्यूँ दूँ जिसने न खाया, न पिया, न बोला और न विलादत के वक़्त ही आवाज़ निकाली? ऐसी सूरत में तो दियत नहीं हो सकती। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये शख़्स तो काहिनों का भाई मा'लूम होता है। (राजेअ़ : 5758)

तश्रीह : जो कुछ आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़ैसला फ़र्माया वही बरह़क़ था बाक़ी उस शख़्स की हफ़्वात थीं जिनको आँह़ुज़ूर (ﷺ) ने कहानत से तश्बीह देकर मिष्ले कहानत के बात़िल ठहरा दिया (ﷺ)।

٥٧٦١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْحَارِثِ عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ قَالَ: نَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنْ ثَمَنِ الْكَلْبِ وَمَهْرِ الْبَغِيِّ وَحُلْوَانِ الْكَاهِنِ.

[راجع: ٢٢٣٧]

5761. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान इब्ने उ़यैना ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने, उनसे अबूबक्र बिन अ़ब्दुर्रह़मान बिन ह़ारिष़ ने और उनसे अबू मसऊद (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने कुत्ते की क़ीमत, ज़िना की उजरत और काहिन की कहानत की वजह से मिलने वाले हदिये से मना फ़र्माया है। (राजेअ़ : 2237)

तश्रीह : या'नी एक मोमिन मुसलमान के लिये उनका खाना लेना ह़राम है। कुत्ते की क़ीमत, ज़ानिया औरत की उजरत और काहिनों के तोह़फ़े उनका लेना और खाना सरासर ह़राम है।

٥٧٦٢- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ يَحْيَى بْنِ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا

5762. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें यह्या बिन उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने, उन्हें उ़र्वा ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि कुछ लोगों ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से काहिनों के बारे में पूछा

قَالَتْ: سَأَلَ رَسُولَ اللهِ ﷺ نَاسٌ عَنِ الْكُهَّانِ فَقَالَ: ((لَيْسَ بِشَيْءٍ)) فَقَالُوا يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّهُمْ يُحَدِّثُونَنَا أَحْيَانًا بِشَيْءٍ فَيَكُونُ حَقًّا فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((تِلْكَ الْكَلِمَةُ مِنَ الْحَقِّ يَخْطَفُهَا الْجِنِّيُّ فَيَقُرُّهَا فِي أُذُنِ وَلِيِّهِ فَيَخْلِطُونَ مَعَهَا مِائَةَ كَذْبَةٍ)). قَالَ عَلِيٌّ قَالَ عَبْدُ الرَّزَّاقِ: مُرْسَلٌ. الْكَلِمَةُ مِنَ الْحَقِّ ثُمَّ بَلَغَنِي أَنَّهُ أَسْنَدَهُ بَعْدَهُ. [راجع: ٣٢١٠]

आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसकी कोई बुनियाद नहीं। लोगों ने कहा कि, या रसूलल्लाह (ﷺ)! कुछ औक़ात वो हमें ऐसी चीज़ें भी बताते हैं जो स़हीह़ हो जाती हैं। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये कलिमा ह़क़ होता है। उसे काहिन किसी जिन्नी से सुन लेता है वो जिन्नी अपने दोस्त काहिन के कान में डाल जाता है और फिर ये काहिन उसके साथ सौ झूठ मिलाकर बयान करते हैं। अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया कि अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ इस कलिमे तिल्कल कलिमतु मिनल ह़क़ को मुर्सलन रिवायत करते थे फिर उन्होंने कहा मुझको ये ख़बर पहुँची कि अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने उसके बाद उसको मुस्नदन ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) से रिवायत किया है। (राजेअ़ : 3210)

तश्रीह : क़स्तलानी (रह़.) ने कहा ये कहानत या'नी शैत़ान जो आसमान पर जाकर फ़रिश्तों की बात उड़ा लेते थे, आँह़ज़रत (ﷺ) की बिअ़षत से मौक़ूफ़ हो गई अब आसमान पर इतना शदीद पहरा है कि शैत़ान वहाँ फटकने नहीं पाते न अब वैसे काहिन मौजूद हैं जो शैत़ान से ता'ल्लुक़ रखते थे हमारे ज़माने के काहिन मह़ज़ अटकल पच्चू बात करते हैं।

٤٧- بَابُ السِّحْرِ

बाब 47 : जादू का बयान

और अल्लाह तआ़ला ने सूरह बक़रः में फ़र्माया, लेकिन शैत़ान काफ़िर हो गये वही लोगों को सेह़र या'नी जादू सिखलाते हैं और उस इल्म की भी ता'लीम देते हैं जो मक़ामे बाबिल में दो फ़रिश्तों हारूत और मारूत पर उतारा गया था और वो दोनों किसी को भी इस इल्म की बातें नहीं सिखलाते थे जब तक ये न कह देते देखो अल्लाह ने हमको दुनिया में आज़माइश के लिये भेजा है तो जादू सीखकर काफ़िर मत बन। मगर लोग उन दोनों के इस त़रह़ कह देने पर भी उनसे वो जादू सीख ही लेते जिससे वो मर्द और उसकी बीवी के बीच जुदाई डाल देते हैं और ये जादूगर जादू की वजह से बग़ैर अल्लाह के हुक्म के किसी को नुक़्सान नहीं पहुँचा सकते। ग़र्ज़ वो इल्म सीखते हैं जिससे फ़ायदा तो कुछ नहीं उल्टा नुक़्साान है और यहूदियों को भी मा'लूम है कि जो कोई जादू सीखे उसका आख़िरत में कोई ह़िस्सा न रहा। और सूरह त़ाहा में फ़र्माया कि, जादूगर जहाँ भी जाए कमबख़्त बामुराद नहीं होता। और सूरह अंबिया में फ़र्माया, क्या तुम देख समझकर जादू की पैरवी करते हो, और सूरह त़ाहा में फ़र्माया कि ह़ज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) को उनके जादू की वजह से ऐसा मा'लूम होता था कि वो रस्सियाँ और लाठियाँ सांप की त़रह़ दौड़ रही हैं और सूरह फ़लक़ में फ़र्माया और बदी है उन औ़रतों की जो गिरहों में फूँक मारती हैं। और सूरह मोमिनून में फ़र्माया **फ़इन्ना तस्ह़रून** या'नी फिर तुम पर जादू की मार है।

٥٧٦٣- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: سَحَرَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلٌ مِنْ بَنِي زُرَيْقٍ يُقَالُ لَهُ لَبِيدُ بْنُ

5763. हमसे इब्राहीम बिन मूसा अशअ़री ने बयान किया, कहा हमको ईसा बिन यूनुस ने ख़बर दी, उन्हें हिशाम बिन उ़र्वा ने, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि बनी ज़ुरैक़ के एक शख़्स़ यहूदी लबीद बिन आ़सम ने रसूलुल्लाह (ﷺ) पर जादू कर दिया था और उसकी वजह से आँह़ज़रत (ﷺ) किसी चीज़ के बारे में ख़्याल करते कि आपने वो काम कर लिया है ह़ालाँकि आपने वो काम न

किया होता। एक दिन या (रावी ने बयान किया कि) एक रात आँहज़रत (ﷺ) मेरे यहाँ तशरीफ़ रखते थे और मुसलसल दुआ कर रहे थे फिर आपने फ़र्माया आइशा! तुम्हें मा'लूम है अल्लाह से जो बात में पूछ रहा था, उसने उसका जवाब मुझे दे दिया। मेरे पास दो (फ़रिश्ते हज़रत जिब्रईल व हज़रत मीकाईल अलैहि.) आए। एक मेरे सर की तरफ़ खड़ा हो गया और दूसरा मेरे पैरों की तरफ़। एक ने अपने दूसरे साथी से पूछा इन साहब की बीमारी क्या है? दूसरे ने कहा कि इन पर जादू हुआ है। उसने पूछा किसने जादू किया है? जवाब दिया कि लबीद बिन आसिम ने। पूछा किस चीज़ में? जवाब दिया कि कँघे और सर के बाल में जो नर खजूर के ख़ोशे में रखे हुए हैं। सवाल किया और ये जादू है कहाँ? जवाब दिया कि ज़रवान के कुँए में। फिर आँहज़रत (ﷺ) उस कुँए पर अपने चंद सहाबा के साथ तशरीफ़ ले गये औ जब वापस आए तो फ़र्माया आइशा! उसका पानी ऐसा (सुर्ख़) था जैसे मेहन्दी का निचोड़ होता है और उसके खजूर के पेड़ों के सर (ऊपर का हिस्सा) शैतान के सरों की तरह थे मैंने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! आपने इस जादू को बाहर क्यूँ नहीं कर दिया। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह तआला ने मुझे इससे आफ़ियत दे दी इसलिये मैंने मुनासिब न समझा कि अब मैं ख़्वाह मख़्वाह लोगों में इस बुराई को फैलाऊँ फिर आँहज़रत (ﷺ) ने उस जादू का सामान कँघी बाल ख़ुर्मा का ग़िलाफ़ होते हैं उसी में दफ़न करा दिया। ईसा बिन यूनुस के साथ इस हदीष़ को अबू उसामा और अबू ज़म्रह (अनस बिन अयाज़) और इब्ने अबी ज़िनाद तीनों ने हिशाम से रिवायत किया और लैष़ बिन सअद और अबू सुफ़यान बिन उयैयना ने हिशाम से यूँ रिवायत किया है फ़ी मुश्त व मुशाक़त मुशातत उसे कहते हैं जो बाल कँघी करने में निकलें सर या दाढ़ी के और मुशाक़ा रूई के तार या'नी सूत के तार को कहते हैं। (राजेअ : 3175)

يُعَلِّمَانِ مِنْ أَحَدٍ حَتَّى يَقُولاَ إِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلاَ تَكْفُرْ فَيَتَعَلَّمُونَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُونَ بِهِ بَيْنَ الْمَرْءِ وَزَوْجِهِ وَمَا هُمْ بِضَارِّينَ بِهِ مِنْ أَحَدٍ إِلاَّ بِإِذْنِ اللهِ وَيَتَعَلَّمُونَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلاَ يَنْفَعُهُمْ وَلَقَدْ عَلِمُوا لَمَنِ اشْتَرَاهُ مَا لَهُ فِي الآخِرَةِ مِنْ خَلاَقٍ﴾ وَقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿وَلاَ يُفْلِحُ السَّاحِرُ حَيْثُ أَتَى﴾ وَقَوْلِهِ: ﴿أَفَتَأْتُونَ السِّحْرَ وَأَنْتُمْ تُبْصِرُونَ﴾ وَقَوْلِهِ ﴿يُخَيَّلُ إِلَيْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ أَنَّهَا تَسْعَى﴾ وَقَوْلِهِ: ﴿وَمِنْ شَرِّ النَّفَّاثَاتِ فِي الْعُقَدِ﴾. وَالنَّفَّاثَاتِ: السَّوَاحِرُ، تُسْحَرُونَ: تُعَمَّوْنَ. طَلْعِ نَخْلَةٍ ذَكَرٍ، قَالَ: وَأَيْنَ هُوَ؟ قَالَ فِي بِئْرِ ذَرْوَانَ)) فَأَتَاهَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي نَاسٍ مِنْ أَصْحَابِهِ فَجَاءَ فَقَالَ: ((يَا عَائِشَةُ كَأَنَّ مَاءَهَا نُقَاعَةُ الْحِنَّاءِ وَكَأَنَّ رُؤُوسَ نَخْلِهَا رُؤُوسُ الشَّيَاطِينِ)) قُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ أَفَلاَ اسْتَخْرَجْتَهُ؟ قَالَ: ((قَدْ عَافَانِي اللهُ فَكَرِهْتُ أَنْ أُثَوِّرَ عَلَى النَّاسِ فِيهِ شَرًّا)) فَأَمَرَ بِهَا فَدُفِنَتْ. تَابَعَهُ أَبُو أُسَامَةَ وَأَبُو ضَمْرَةَ وَابْنُ أَبِي الزِّنَادِ عَنْ هِشَامٍ، وَقَالَ اللَّيْثُ وَابْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ هِشَامٍ فِي مُشْطٍ وَمُشَاقَةٍ، يُقَالُ، الْمُشَاطَةُ مَا يَخْرُجُ مِنَ الشَّعَرِ إِذَا مُشِطَ وَالْمُشَاقَةُ مِنْ مُشَاقَةِ الْكِتَّانِ. [راجع: ٣١٧٥]

तशरीह : क़ालन्नववी ख़शिय मिन इख़राजिही व इशाअतिही ज़ररन अलल्मुस्लिमीन मिन तज़क्कुरिस्सिरि व तअल्लुमिही व नहव ज़ालिक व हुव मिन बाबितर्किल्मस्लहति ख़ौफ़ल्मन्सरः (फ़तह) नववी ने कहा

कि आपने उस जादू के निकालने और उसका ज़िक्र फैलाने से एहतिराज़ फ़र्माया ताकि जादू के सिखाने औरउसके ज़िक्र करने से मुसलमानों को नुक़्सान न हो। उसी डर फ़साद की बिना पर मस्लिहत के तहत आपने उसी वक़्त उसका ख़्याल छोड़ दिया।

बाब 48 : शिर्क और जादू गुनाहों में से हैं जो आदमी को तबाह कर देते हैं

٤٨- باب الشِّرْكُ وَالسِّحْرُ مِنَ الْمُوبِقَاتِ

तश्रीह : जादू वो ख़िलाफ़े आदत अम्र है जो शरीर और बदकार शख़्स से सादिर होता है। जुम्हूर का क़ौल यही है कि जादू की हक़ीक़त है। जुम्हूर का ये भी क़ौल है कि जादू का अषर सिर्फ़ तग़य्युर मिज़ाज में होता है लेकिन हक़ीक़त का बदलना कि बेजान जानदार हो जाए और जानदार बेजान हो जाए नामुम्किन है। मुअजिज़ा और करामात और जादू में ये फ़र्क़ है कि जादूगर सुफ़ली आमाल का मुहताज होता है और सामान का मषलन नारियल, गेरू, मुर्दे की हड्डियाँ वग़ैरह इन चीज़ों का और करामात में इस सामान की ज़रूरत नहीं होती और मुअजिज़ा में पैग़म्बरी का दा'वा होता है और इज़्हार और मुक़ाबला मुख़ालिफ़ीन से और करामत को औलिया अल्लाह लोगों से छुपाते हैं दा'वा और मुक़ाबला तो कैसा? चुनाँचे एक बुज़ुर्ग फ़र्माते हैं कि **अल करामतु हैज़ुर्रिजाल** जादू की कई क़िस्में हैं जिनको शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ देहलवी ने तफ़्सीरे अ़ज़ीज़ी में तफ़्सील से बयान किया है **मिस्मरीज़्म** भी जादू की एक क़िस्म है जादू का तोड़ जिस अ़मल से होता है अगर उसमें शिर्किया कुफ़्रिया लफ़्ज़ों का दख़ल नहीं है तो उसमें कोई क़बाहत नहीं है। वहब बिन मुनब्बा से मन्क़ूल है कि सब्ज़ बेरी के सात पत्ते लेकर उनको दो पत्थरों में कुचल दे फिर उन पर पानी डाले और आयतल कुर्सी और चारों क़ुल पढ़े फिर तीन चुल्लू उसके पानी मे से लेकर सहरज़दा को पिला दे और उस पानी से उसे ग़ुस्ल दे इंशाअल्लाह जादू चला जाएगा। (वहीदी)

5764. मुझसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह उवैसी ने बयान किया, कहा मुझसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, उनसे ष़ौर बिन ज़ैद ने, उनसे अबुल ग़ैष़ ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया तबाह कर देने वाली चीज़ अल्लाह के साथ शिर्क करना है इससे बचो और जादू करने-कराने से भी बचो। (राजेअ : 2766)

٥٧٦٤- حَدَّثَنِي عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ عَنْ ثَوْرِ بْنِ زَيْدٍ عَنْ أَبِي الْغَيْثِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ قَالَ: ((اجْتَنِبُوا الْمُوبِقَاتِ الشِّرْكُ بِاللهِ وَالسِّحْرُ)).[راجع: ٢٧٦٦]

तश्रीह : ये दोनों गुनाह ईमान को तबाह कर देते हैं। शिर्क और जादू दोनों गुनाह को रसूले करीम (ﷺ) ने एक ही ख़ाना में ज़िक्र किया जिससे ज़ाहिर है कि दोनों गुनाह किस क़दर ख़तरनाक हैं। ख़ास़ तौर पर शिर्क वो गुनाह है जिसको करने वाला अगर तौबा करके न मरे तो वो हमेशा के लिये जहन्नमी है और जन्नत उस पर सरासर हराम है। शिर्क की तफ़्सीलात मा'लूम करने के लिये किताब अद्दीनुल ख़ालिस़ वग़ैरह का मुतालआ करें।

बाब 49 : जादू का तोड़ करना

٤٩- باب هَلْ يُسْتَخْرَجُ السِّحْرُ؟

हज़रत क़तादा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने सईद बिन मुसय्यिब से कहा एक शख़्स पर अगर जादू हो या उसकी बीवी तक पहुँचने से उसे बाँध दिया गया हो उसका तोड़ करना और जादू के बातिल करने के लिये मंतर करना दुरुस्त है या नहीं? उन्होंने कहा कि इसमें कोई क़बाहत नहीं जादू दूर करने वालों की तो निय्यत बख़ैर होती है और अल्लाह पाक ने उस बात से मना नहीं फ़र्माया जिससे फ़ायदा हो।

وَقَالَ قَتَادَةُ: قُلْتُ لِسَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ رَجُلٌ بِهِ طِبٌّ أَوْ يُؤَخَّذُ عَنِ امْرَأَتِهِ أَيُحَلُّ عَنْهُ أَوْ يُنَشَّرُ؟ قَالَ: لاَ بَأْسَ بِهِ، إِنَّمَا يُرِيدُونَ بِهِ الإِصْلاَحَ فَأَمَّا مَا يَنْفَعُ فَلَمْ يُنْهَ عَنْهُ.

जब तक उस मंत्र में शिर्किया अल्फ़ाज़ न हों। (राज़)

5765. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा कि मैंने सुफ़यान बिन उ़ययना से सुना, कहा कि सबसे पहले ये ह़दीष़ हमसे इब्ने जुरैज ने बयान किया, वो बयान करते थे कि मुझसे ये ह़दीष़ आले उ़र्वा ने उ़र्वा से बयान की, इसलिये मैंने (उ़र्वा के बेटे) हिशाम से इसके बारे में पूछा तो उन्होंने हमसे अपने वालिद (उ़र्वा) से बयान किया कि उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) पर जादू कर दिया गया था और उसका आप पर ये अष़र हुआ था कि आपको ख़्याल होता कि आपने अज़्वाजे मुतह्हरात में से किसी के साथ हमबिस्तरी की है ह़ालाँकि आपने की नहीं होती। सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया कि जादू की ये सबसे सख़्त क़िस्म है जब उसका ये अष़र हो फिर आपने फ़र्माया आ़इशा! तुम्हें मा'लूम है अल्लाह तआ़ला से जो बात मैंने पूछी थी उसका जवाब उसने कब का दे दिया है। मेरे पास दो फ़रिश्ते आए एक मेरे सर के पास खड़ा हो गया और दूसरा मेरे पैरों के पास। जो फ़रिश्ता मेरे सर की त़रफ़ खड़ा था उसने दूसरे से कहा इन स़ाहब का क्या ह़ाल है? दूसरे ने जवाब दिया कि इन पर जादू कर दिया गया है। पूछा कि किसने इन पर जादू किया है? जवाब दिया कि लबीद बिन आ़स़म ने ये यहूदियों के ह़लीफ़ बनी ज़ुरैक़ का एक शख़्स़ था और मुनाफ़िक़ था। सवाल किया कि किस चीज़ में इन पर जादू किया है? जवाब दिया कि कँघे और बाल में। पूछा जादू है कहाँ? जवाब दिया कि नर खजूर के ख़ोशे में जो ज़रवान के कुँए के अंदर रखे हुए पत्थर के नीचे दफ़न है। बयान किया कि फिर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) उस कुँए पर तशरीफ़ ले गये और जादू अंदर से निकाला। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि यही वो कुँआ है जो मुझे ख़्वाब में दिखाया गया था उसका पानी मेहन्दी के अ़र्क़ की त़रह रंगीन था और उसके खजूर के पेड़ों के सर शैत़ानों के सरों जैसे थे। बयान किया कि फिर वो जादू कुँए में से निकाला गया आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने कहा आपने उस जादू का तोड़ क्यूँ नहीं कराया। फ़र्माया हाँ! अल्लाह तआ़ला ने मुझे शिफ़ा दी अब मैं लोगों में एक शोर होना पसंद नहीं करता।
(राजेअ़: 3175)

٥٧٦٥- حدَّثني عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ سَمِعْتُ ابْنَ عُيَيْنَةَ يَقُولُ: أَوَّلُ مَنْ حَدَّثَنَا بِهِ ابْنُ جُرَيْجٍ يَقُولُ: حَدَّثَنِي آلُ عُرْوَةَ عَنْ عُرْوَةَ فَسَأَلْتُ هِشَامًا عَنْهُ فَحَدَّثَنَا عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سُحِرَ حَتَّى كَانَ يَرَى أَنَّهُ يَأْتِي النِّسَاءَ وَلاَ يَأْتِيهِنَّ قَالَ سُفْيَانُ: وَهَذَا أَشَدُّ مَا يَكُونُ مِنَ السِّحْرِ إِذَا كَانَ كَذَا، فَقَالَ: ((يَا عَائِشَةُ أَعَلِمْتِ أَنَّ اللهَ قَدْ أَفْتَانِي فِيمَا اسْتَفْتَيْتُهُ فِيهِ؟ أَتَانِي رَجُلاَنِ فَقَعَدَ أَحَدُهُمَا عِنْدَ رَأْسِي وَالآخَرُ عِنْدَ رِجْلَيَّ فَقَالَ الَّذِي عِنْدَ رَأْسِي لِلآخَرِ، مَا بَالُ الرَّجُلِ؟ قَالَ: مَطْبُوبٌ. قَالَ: وَمَنْ طَبَّهُ؟ قَالَ: لَبِيدُ بْنُ أَعْصَمَ رَجُلٌ مِنْ بَنِي زُرَيْقٍ حَلِيفٌ لِيَهُودَ كَانَ مُنَافِقًا، قَالَ: وَفِيمَ؟ قَالَ: فِي مُشْطٍ وَمُشَاقَةٍ، قَالَ: وَأَيْنَ؟ قَالَ: فِي جُفِّ طَلْعَةٍ ذَكَرٍ تَحْتَ رَعُوفَةٍ فِي بِئْرِ ذَرْوَانَ)). قَالَتْ: فَأَتَى النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْبِئْرَ حَتَّى اسْتَخْرَجَهُ فَقَالَ ((هَذِهِ الْبِئْرُ الَّتِي أُرِيتُهَا وَكَأَنَّ مَاءَهَا نُقَاعَةُ الْحِنَّاءِ وَكَأَنَّ نَخْلَهَا رُؤُوسُ الشَّيَاطِينِ، قَالَ: فَاسْتُخْرِجَ)) قَالَتْ :قُلْتُ أَفَلاَ أَيْ تَنَشَّرْتَ: فَقَالَ: ((أَمَا وَاللهِ فَقَدْ شَفَانِي

وَأَكْرَهُ أَنْ أُثِيرَ عَلَى أَحَدٍ مِنَ النَّاسِ شَرًّا)).

[راجع: ٣١٧٥]

बाब 50 : जादू के बयान में

٥٠- باب السِّحْرِ

अकषर नुस्ख़ों में ये बाब मज़्कूर नहीं है ह़ाफ़िज़ ने कहा वही ठीक है क्योंकि ये बाब एक बार पहले मज़्कूर हो चुका है फिर दोबारा इसका लाना इमाम बुख़ारी (रह़.) की आ़दत के ख़िलाफ़ है।

5766. हमसे उ़बैद बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) पर जादू कर दिया गया था और उसका अषर ये था कि आपको ख़याल होता कि आप कोई चीज़ कर चुके हैं ह़ालाँकि वो चीज़ न की होती एक दिन आँह़ज़रत (ﷺ) मेरे यहाँ तशरीफ़ लाए थे और मुसलसल दुआएँ कर रहे थे फिर फ़र्माया आ़इशा! तुम्हें मा'लूम है अल्लाह तआ़ला से जो बात मैंने पूछी थी उसका जवाब उसने मुझे दे दिया है। मैंने अ़र्ज़ की वो बात क्या है या रसूलल्लाह! आपने फ़र्माया मेरे पास दो फ़रिश्ते (ह़ज़रत जिब्रईल और ह़ज़रत मीकाईल अ़लैहिस्सलाम) आए और एक मेरे सर के पास खड़ा हो गया और दूसरा पैरों की त़रफ़ फिर एक ने अपने दूसरे साथी से कहा इन स़ाह़ब की तकलीफ़ क्या है? दूसरे ने जवाब दिया कि इन पर जादू हुआ है। पूछा किसने इन पर जादू किया है? फ़र्माया बनी ज़ुरैक़ के लबीद बिन आ़स़िम यहूदी ने। पूछा किस चीज़ में? जवाब दिया कि कँघे और बाल में नर खजूर के ख़ोशे में रखा हुआ है। पूछा और वो जादू रखा कहाँ है? जवाब दिया कि ज़रवान के कुँए में। बयान किया कि फिर हुज़ूर अकरम (ﷺ) अपने चंद स़ह़ाबा के साथ उस कुँए पर तशरीफ़ ले गये और उसे देखा वहाँ खजूर के पेड़ भी थे फिर आप वापस ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) के यहाँ तशरीफ़ लाए और फ़र्माया अल्लाह की क़सम उसका पानी मेहन्दी के अ़र्क़ जैसा (लाल) है और उसके खजूर के पेड़ शयात़ीन के सरों जैसे हैं। मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! वो कँघी बाल वग़ैरह ग़िलाफ़ से निकलवाए या नहीं? आपने फ़र्माया नहीं, सुन ले अल्लाह ने तो मुझको शिफ़ा दे दी, तन्दरुस्त कर दिया अब मैं डरा कहीं लोगों में एक

٥٧٦٦- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ، قَالَتْ: سُحِرَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى إِنَّهُ لَيُخَيَّلُ إِلَيْهِ أَنَّهُ يَفْعَلُ الشَّيْءَ وَمَا فَعَلَهُ حَتَّى إِذَا كَانَ ذَاتَ يَوْمٍ وَهُوَ عِنْدِي دَعَا اللهَ وَدَعَاهُ ثُمَّ قَالَ: ((أَشَعَرْتِ يَا عَائِشَةُ أَنَّ اللهَ قَدْ أَفْتَانِي فِيمَا اسْتَفْتَيْتُهُ فِيهِ؟)) قُلْتُ: وَمَا ذَاكَ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: ((جَاءَنِي رَجُلاَنِ فَجَلَسَ أَحَدُهُمَا عِنْدَ رَأْسِي وَالآخَرُ عِنْدَ رِجْلَيَّ ثُمَّ قَالَ أَحَدُهُمَا لِصَاحِبِهِ: مَا وَجَعُ الرَّجُلِ؟ قَالَ: مَطْبُوبٌ، قَالَ: وَمَنْ طَبَّهُ؟ قَالَ: لَبِيدُ بْنُ الأَعْصَمِ الْيَهُودِيُّ مِنْ بَنِي زُرَيْقٍ قَالَ: فِيمَا ذَا؟ قَالَ فِي مُشْطٍ وَمُشَاطَةٍ، وَجُفِّ طَلْعَةٍ ذَكَرٍ، قَالَ: فَأَيْنَ هُوَ؟ قَالَ: فِي بِئْرِ ذِي أَرْوَانَ)). قَالَ: فَذَهَبَ النَّبِيُّ ﷺ فِي أُنَاسٍ مِنْ أَصْحَابِهِ إِلَى الْبِئْرِ فَنَظَرَ إِلَيْهَا وَعَلَيْهَا نَخْلٌ ثُمَّ رَجَعَ إِلَى عَائِشَةَ فَقَالَ: ((وَاللهِ لَكَأَنَّ مَاءَهَا نُقَاعَةُ الْحِنَّاءِ وَلَكَأَنَّ نَخْلَهَا رُؤُوسُ الشَّيَاطِينِ)) قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ أَفَأَخْرَجْتَهُ قَالَ: ((لاَ أَمَّا أَنَا فَقَدْ عَافَانِي

शोर न फैले और आँहज़रत (ﷺ) ने उस सामान के गाड़ देने का हुक्म दिया वो गाड़ दिया गया। (राजेअ : 3175)

الله وَشَفَانِي وَخَشِيتُ أَنْ أُثَوِّرَ عَلَى النَّاسِ مِنْهُ شَرًّا)) وَأَمَرَ بِهَا فَدُفِنَتْ.

[راجع: ٣١٧٥]

तश्रीह : इब्ने सअद की रिवायत में यूँ है कि आपने अली (रज़ि.) और अम्मार (रज़ि.) को उस कुएँ पर भेजा कि जाकर ये जादू का सामान उठा लाएँ। एक रिवायत में है ह़ज़रत जुबैर बियास ज़रक़ी को भेजा उन्होंने ये चीज़ें कुँए में से निकालीं मुम्किन है कि पहले आपने उन लोगों को भेजा हो और बाद में आप ख़ुद भी तशरीफ़ ले गये हों जैसा कि यहाँ मज़्कूर है आँहज़रत (ﷺ) पर जो चंद रोज़ उस जादू का अष्र रहा उसमें ये हिक्मते इलाही थी कि आपका जादूगर न होना सब पर खुल जाए क्योंकि जादूगर का अष्र जादूगर पर नहीं होता। (वह़ीदी)

बाब 51 : इस बयान में कि कुछ तक़रीरें भी जादू भरी होती हैं

٥١- باب إِنَّ مِنَ الْبَيَانِ سِحْرًا

5767. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें ज़ैद बिन असलम ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि दो आदमी पूरब की त़रफ़ (मुल्के इराक़) से (सन 9 हिज्री में) मदीना आए और लोगों को ख़िताब किया लोग उनकी तक़रीर से बहुत मुताष्षिर हुए तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि कुछ तक़रीरें भी जादू भरी होती हैं या ये फ़र्माया कि कुछ तक़रीरें जादू होती है। (राजेअ : 5146)

٥٧٦٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ قَدِمَ رَجُلاَنِ مِنَ الْمَشْرِقِ فَخَطَبَا فَعَجِبَ النَّاسُ لِبَيَانِهِمَا فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّ مِنَ الْبَيَانِ لَسِحْرًا -أَوْ إِنَّ بَعْضَ الْبَيَانِ- سِحْرٌ)). [راجع: ٥١٤٦]

मा'लूम हुआ कि जादू की कुछ न कुछ ह़क़ीक़त ज़रूर है मगर उसका करना कराना इस्लाम में क़त़अन नामुनासिब क़रार दिया गया।

बाब 52 : अज्वा खजूर जादू के लिये बड़ी उ़म्दह दवा है

٥٢- باب الدَّوَاءِ بِالْعَجْوَةِ لِلسِّحْرِ

5768. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे मरवान बिन मुआविया फ़ज़ारी ने बयान किया, कहा हमको हाशिम बिन हाशिम बिन उ़त्बा ने ख़बर दी, कहा हमको आमिर बिन सअ़द ने ख़बर दी और उनसे उनके वालिद (सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जो शख़्स रोज़ाना चंद अज्वा खजूरें खा लिया करे उसे उस दिन रात तक ज़हर और जादू नुक़्सान नहीं पहुँचा सकेंगे। अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी के सिवा दूसरे रावी ने बयान किया कि, सात खजूरें खा लिया करे। (राजेअ : 5445)

٥٧٦٨- حَدَّثَنَا عَلِيٌّ حَدَّثَنَا مَرْوَانُ أَخْبَرَنَا هَاشِمٌ أَخْبَرَنَا عَامِرُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ أَبِيهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنِ اصْطَبَحَ كُلَّ يَوْمٍ تَمَرَاتٍ عَجْوَةً لَمْ يَضُرَّهُ سُمٌّ، وَلاَ سِحْرٌ ذَلِكَ الْيَوْمَ إِلَى اللَّيْلِ)) وَقَالَ غَيْرُهُ : سَبْعَ تَمَرَاتٍ.

راجع: ٥٤٤٥

5769. हमसे इस्ह़ाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अबू उसामा ह़म्माद बिन उसामा ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमसे हाशिम बिन हाशिम ने बयान किया कि मैंने आ़मिर

٥٧٦٩- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ أَخْبَرَنَا أَبُو أُسَامَةَ حَدَّثَنَا هَاشِمُ بْنُ هَاشِمٍ

قَالَ سَمِعْتُ عَامِرَ بْنَ سَعْدٍ سَمِعْتُ سَعْدًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((مَنْ تَصَبَّحَ سَبْعَ تَمَرَاتٍ عَجْوَةٍ لَمْ يَضُرَّهُ ذَلِكَ الْيَوْمَ سُمٌّ وَلاَ سِحْرٌ)). [راجع: ٥٤٤٥]

बिन सअद से सुना, उन्होंने हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना आपने फ़र्माया कि जिस शख़्स ने सुबह के वक़्त सात अज्वा खजूरें खा लीं उस दिन उसे न ज़हर नुक़्सान पहुँचा सकता है और न जादू। (राजेअ : 5445)

ये मदीना शरीफ की ख़ासुल-ख़ास खजूर है जो वहाँ तलाश करने से दस्तयाब हो जाती है **अल्लाहुम्मर्ज़ुक़्ना आमीन** इन रिवायतों से भी जादू की हक़ीक़त पर रोशनी पड़ती है।

٥٣- باب لاَ هَامَةَ

बाब 53 : उल्लू का मन्हूस होना महज़ ग़लत है

٥٧٧٠- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لاَ عَدْوَى، وَلاَ صَفَرَ، وَلاَ هَامَةَ)) فَقَالَ أَعْرَابِيٌّ: يَا رَسُولَ اللهِ فَمَا بَالُ الإِبِلِ تَكُونُ فِي الرَّمْلِ كَأَنَّهَا الظِّبَاءُ فَيُخَالِطُهَا الْبَعِيرُ الأَجْرَبُ فَيُجْرِبُهَا؟ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((فَمَنْ أَعْدَى الأَوَّلَ؟)). [راجع: ٥٧٠٧]

5770. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ ने, उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया छूत लग जाना, स़फ़र की नहूसत और उल्लू की नहूसत कोई चीज़ नहीं। एक देहाती ने कहा कि या रसूलल्लाह! फिर उस ऊँट के बारे में क्या कहा जाएगा जो रेगिस्तान में हिरन की त़रह स़ाफ़ चमकदार होता है लेकिन ख़ारिश वाला ऊँट उसे मिल जाता है और उसे भी ख़ारिश लगा देता है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया लेकिन पहले ऊँट को किसने ख़ारिश लगाई थी? (राजेअ : 5707)

٥٧٧١- وَعَنْ أَبِي سَلَمَةَ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ بَعْدُ يَقُولُ : قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((لاَ يُورِدَنَّ مُمْرِضٌ عَلَى مُصِحٍّ)) وَأَنْكَرَ أَبُو هُرَيْرَةَ حَدِيثَ الأَوَّلِ قُلْنَا أَلَمْ تُحَدِّثْ أَنَّهُ لاَ عَدْوَى؟ فَرَطَنَ بِالْحَبَشِيَّةِ قَالَ أَبُو سَلَمَةَ فَمَا رَأَيْتُهُ نَسِيَ حَدِيثًا غَيْرَهُ. [طرفه في : ٥٧٧٤].

5771. और अबू सलमा से रिवायत है उन्हों ने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना कि उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कोई शख़्स अपने बीमार ऊँटों को किसी के स़ेहतमंद ऊँटों में न ले जाए। हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने पहली ह़दीष़ का इंकार किया। हमने (हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. से) अ़र्ज़ किया कि आप ही ने हमसे ये ह़दीष़ नहीं बयान की है कि छूत ये नहीं होता फिर वो (ग़ुस़्स़े में) ह़ब्शी ज़ुबान बोलने लगे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया कि इस ह़दीष़ के सिवा मैंने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) को और कोई ह़दीष़ भूलते नहीं देखा। (दीगर मक़ामात : 5774)

तश्रीह : रावी का ख़्याल स़ह़ीह़ नहीं है कि हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ह़दीष़ भूल गये इसलिये उन्होंने इंकार किया बल्कि इंकार की वजह शागिर्द का ह़दीष़ को तआरुज़ की शक्ल में पेश करना था। उनको इस पर नाराज़गी

हुई क्योंकि ये दोनों अहादीष़ दो अलग-अलग मज़ामीन पर शामिल हैं और उनमें तआरुज़ का कोई सवाल नहीं। कुछ लोगों ने कहा है कि इन मामलात में आम लोगों के ज़हनों में जो वहम पैदा होता है उसी से बचने के लिये ये हुक्म हदीष़ में है कि तन्दरुस्त जानवरों को बीमार जानवरों से अलग रखो क्योंकि अगर एक साथ रखने में तन्दरुस्त जानवर भी बीमार हो गये तो ये वहम पैदा हो सकता है कि ये सब कुछ उस बीमार जानवर की वजह से हुआ है और इस तरह के ख़्यालात की शरीअत हक़्क़ा ने तर्दीद की है।

बाब 54 : अम्राज़ में छूत लगने की कोई हक़ीक़त नहीं है

٥٤- باب لاَ عَدْوَى

5772. हमसे सईद बिन उफ़ैर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे अब्दुल्लाह बिन वहब ने बयाान किया, उनसे यूनुस बिन यज़ीद ने, उनसे इब्ने शिहाब ने कहा कि मुझे सालिम बिन अब्दुल्लाह और हम्ज़ा ने ख़बर दी और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया छूत लग जाने की कोई हक़ीक़त नहीं है बदशगुनी की कोई अस्ल नहीं। (अगर मुम्किन होती तो) नहूसत तीन चीज़ों में होती; घोड़े में, औरत में और घर में। (राजेअ : 2090)

٥٧٧٢- حدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عُفَيْرٍ قَالَ : حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ عَنْ يُونُسَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، قَالَ: أَخْبَرَنَا سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللهِ وَحَمْزَةُ، أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لاَ عَدْوَى، وَلاَ طِيَرَةَ، إِنَّمَا الشُّؤْمُ فِي ثَلاَثٍ فِي الْفَرَسِ، وَالْمَرْأَةِ، وَالدَّارِ)).
[راجع: ٢٠٩٠]

मगर दरहक़ीक़त उनमें भी नहीं है। इल्ला अंय्यशाअल्लाह

5773. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने खबर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने बयान किया और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया छूत की कोई हक़ीक़त नहीं। (राजेअ : 5707)

٥٧٧٣- حدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لاَ عَدْوَى)).
[راجع: ٥٧٠٧]

5774. अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया, कि मैंने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, उनसे नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि मरीज़ ऊँटों वाला अपने ऊँट तन्दरुस्त ऊँटों वाले के ऊँटों में न छोड़े। (राजेअ : 5771)

٥٧٧٤- قَالَ أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لاَ تُورِدُوا الْمُمْرِضَ عَلَى الْمُصِحِّ)).
[راجع: ٥٧٧١]

5775. और ज़ुह्री से रिवायत है, उन्होंने बयान किया कि मुझे सिनान बिन अबी सिनान दौली ने ख़बर दी और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया छूत कोई चीज़ नहीं है। इस पर एक देहाती ने खड़े होकर

٥٧٧٥- وَعَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي سِنَانُ بْنُ أَبِي سِنَانٍ الدُّؤَلِيُّ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى

पूछा आप (ﷺ) ने देखा होगा एक ऊँट रेगिस्तान में हिरन जैसा साफ़ रहता है लेकिन जब ही एक ख़ारिश वाले ऊँट के पास आ जाता है तो उसे भी खारिश हो जाती है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया लेकिन पहले ऊँट को किसने ख़ारिश लगाई थी। (राजेअ: 5707)

اللهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((لاَ عَدْوَى)) فَقَامَ أَعْرَابِيٌّ فَقَالَ: أَرَأَيْتَ الإِبِلَ تَكُونُ فِي الرِّمَالِ أَمْثَالَ الظِّبَاءِ فَيَأْتِيهَا الْبَعِيرُ الأَجْرَبُ فَتَجْرَبُ؟ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((فَمَنْ أَعْدَى الأَوَّلَ؟)). [راجع: ٥٧٠٧]

तश्रीह : यही इसका षुबूत है कि छूत की कोई ह़क़ीक़त नहीं है। अगर कहें कि उसको किसी और ऊँट से ख़ारिश लगी थी तो उस ऊँट को किससे लगी? आख़िर में तसलसुल लाज़िम आएगा जो मह़ाल है या ये कहना होगा कि एक ऊँट को ख़ुद बख़ुद ख़ारिश पैदा हुई थी आपने ऐसी दलील मन्तक़ी बयान फ़र्माई कि डाक्टरों का लंगड़ा टट्टू उसके सामने चल ही नहीं सकता। अब जो ये देखने में आता है कि कुछ बीमारियाँ जैसे ताऊन (प्लेग), हैज़ा वग़ैरह एक बस्ती से दूसरी बस्ती में फैलती है या एक शख़्स के बाद दूसरे शख़्स को हो जाती हैं तो इससे ये षाबित नहीं होता कि बीमारी मुंतक़िल हुई है बल्कि बहुक्मे इलाही इस दूसरी बस्ती या शख़्स में भी पैदा हुई और इसकी दलील ये है कि एक ही घर में कुछ ताऊन से मरते हैं कुछ नहीं मरते और एक ही शिफ़ाख़ाने में डॉक्टर-नर्स वग़ैरह ताऊन वालों का इलाज करते हैं कि कुछ डॉक्टरों नर्सों को ताऊन हो जाता है कुछ को नहीं होता। अगर छूत लगना होता तो सब ही को हो जाता लिहाज़ा वही ह़क़ है जो मुख़्बिर सादिक़ (ﷺ) ने फ़र्माया मगर वहम की दवा अफ़लातून के पास भी नहीं है। (वह़ीदी)

5776. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने जा'फ़र ने बयान किया, उनसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि मैंने क़तादा से सुना और उन्होंने ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया छूत लगना कोई चीज़ नहीं है और बदशगुनी नहीं है अल्बत्ता नेक फ़ाल मुझे पसंद है। स़हाबा ने अ़र्ज़ किया नेक फ़ाल क्या है? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अच्छी बात मुँह से निकालना या किसी से सुन लेना। (राजेअ: 5756)

٥٧٧٦- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: سَمِعْتُ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((لاَ عَدْوَى وَلاَ طِيَرَةَ، وَيُعْجِبُنِي الْفَأْلُ)) قَالُوا وَمَا الْفَأْلُ؟ قَالَ : ((كَلِمَةٌ طَيِّبَةٌ)). [راجع: ٥٧٥٦]

कोई कलिमा ख़ैर सुन पाना जिससे किसी ख़ैर को मुराद लिया जा सकता हो ये नेक फ़ाली है जिसकी मुमानअ़त नहीं है।

बाब 55 : नबी करीम (ﷺ) को ज़हर दिये जाने के बारे में बयान। इस क़िस्से को उ़र्वा ने ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) से बयान किया, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से नक़ल किया है।

٥٥- باب مَا يُذْكَرُ فِي سُمِّ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، رَوَاهُ عُرْوَةُ عَنْ عَائِشَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

5777. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष बिन सअ़द ने, उनसे सईद बिन अबी सईद ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने, उन्होंने बयान किया कि जब ख़ैबर फ़तह हुआ तो रसूलुल्लाह (ﷺ) को एक बकरी हदिये में पेश

٥٧٧٧- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّهُ قَالَ: لَمَّا فُتِحَتْ خَيْبَرُ أُهْدِيَتْ لِرَسُولِ اللهِ ﷺ شَاةٌ فِيهَا سُمٌّ فَقَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ

اللهِ ﷺ: ((اجْمَعُوا لِي مَنْ كَانَ هَهُنَا مِنَ الْيَهُودِ)). فَجُمِعُوا لَهُ فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنِّي سَائِلُكُمْ عَنْ شَيْءٍ فَهَلْ أَنْتُمْ صَادِقِيَّ عَنْهُ؟)) فَقَالُوا: نَعَمْ يَا أَبَا الْقَاسِمِ، فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَنْ أَبُوكُمْ؟)) قَالُوا: أَبُونَا فُلاَنٌ. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((كَذَبْتُمْ بَلْ أَبُوكُمْ فُلاَنٌ))، فَقَالُوا: صَدَقْتَ وَبَرِرْتَ. فَقَالَ: ((هَلْ أَنْتُمْ صَادِقِيَّ عَنْ شَيْءٍ إِنْ سَأَلْتُكُمْ عَنْهُ؟)) فَقَالُوا: نَعَمْ يَا أَبَا الْقَاسِمِ، وَإِنْ كَذَبْنَاكَ عَرَفْتَ كَذِبَنَا كَمَا عَرَفْتَهُ فِي أَبِينَا، قَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَنْ أَهْلُ النَّارِ؟)) فَقَالُوا: نَكُونُ فِيهَا يَسِيرًا، ثُمَّ تَخْلُفُونَنَا فِيهَا، فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((اخْسَؤُوا، فِيهَا وَاللهِ لاَ نَخْلُفُكُمْ فِيهَا أَبَدًا))، ثُمَّ قَالَ لَهُمْ : ((فَهَلْ أَنْتُمْ صَادِقِيَّ عَنْ شَيْءٍ إِنْ سَأَلْتُكُمْ عَنْهُ؟)) قَالُوا : نَعَمْ. فَقَالَ: ((هَلْ جَعَلْتُمْ فِي هَذِهِ الشَّاةِ سُمًّا؟)) فَقَالُوا: نَعَمْ. فَقَالَ : ((مَا حَمَلَكُمْ

की गई (एक यहूदी औरत ज़ैनब बिन्ते हरष़ ने पेश की थी) जिसमें ज़हर भरा हुआ था, उस पर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि यहाँ पर जितने यहूदी हैं उन्हें मेरे पास जमा करो। चुनाँचे सब आँहज़रत (ﷺ) के पास जमा किये गये। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं तुमसे एक बात पूछूँगा क्या तुम मुझे सहीह सहीह बात बता दोगे? उन्होंने कहा कि हाँ, ऐ अबुल क़ासिम! फिर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया तुम्हारा पर दादा कौन है? उन्होंने कहा कि फ़लाँ। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम झूठ कहते हो तुम्हारा परदादा तो फ़लाँ है। इस पर वो बोले कि आपने सच कहा दुरुस्त फ़र्माया फिर आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया क्या अगर मैं तुमसे कोई बात पूछूँ तो तुम मुझे सच-सच बताओगे? उन्होंने कहा कि हाँ, ऐ अबुल क़ासिम! और अगर हम झूठ बोलें भी तो आप हमारा झूठ पकड़ लेंगे जैसा कि अभी हमारे पर दादा के बारे में आपने हमारा झूठ पकड़ लिया। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया दोज़ख़ वाले कौन लोग हैं? उन्होंने कहा कि कुछ दिन के लिये तो हम उसमें रहेंगे फिर आप लोग हमारी जगह ले लेंगे। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया तुम उसमें ज़िल्लत के साथ पड़े रहोगे, वल्लाह! हम उसमें तुम्हारी जगह कभी नहीं लेंगे। आपने फिर उनसे पूछा क्या अगर मैं तुमसे एक बात पूछूँ तो तुम मुझे उसके बारे में सहीह-सहीह बता दोगे? उन्होंने कहा कि हाँ? आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा क्या तुमने इस बकरी में ज़हर मिलाया था? उन्होंने कहा कि हाँ। आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा कि तुम्हें इस काम पर किस जज़्बे ने आमादा किया था? उन्होंने कहा कि हमारा मक़्सद ये था कि अगर आप झूठे होंगे तो हमें आपसे नजात मिल जाएगी और अगर सच्चे होंगे तो आपको नुक़्सान नहीं पहुँचा सकेंगे।

तश्रीह : यहूदियों का ख़्याल सहीह हुआ कि अल्लाह पाक ने अपने हबीब (ﷺ) को उस ज़हर से बज़रिये वह्य ख़बर कर दिया मगर ज़रा सा आप चख चुके थे जिसका अष़र आख़िर तक रहा। इससे उन लोगों का रद्द होता है जो रसूले करीम (ﷺ) को आलिमुल ग़ैब होने का अक़ीदा रखते हैं। अगर ऐसा होता तो आप उसे अपने हाथ न लगाते मगर बाद में वह्यि से मा'लूम हुआ सच फ़र्माया, **व लौ कुन्तु आलमुल ग़ैब लस्तक्षर्तु मिनल ख़ैरि व मा मस्सनियस्सूउ** (अल आराफ़ : 188) अगर मैं ग़ैब जानता तो बहुत सी भलाइयाँ जमा कर लेता और कभी मुझको बुराई छू नहीं सकती। मा'लूम हुआ कि आपके लिये आलिमुल ग़ैब होने का अक़ीदा बिलकुल बातिल है। दूसरी रिवायत में यूँ है कि वो औरत कहने लगी

जिसने ज़हर मिलाया था कि आपने मेरे भाई, शौहर और क़ौम वालों को क़त्ल कराया मैंने चाहा कि अगर आप सच्चे रसूल हैं तो ये गोश्त ख़ुद आपसे कह देगा और अगर आप दुनियादार बादशाह हैं तो आपसे हमको राहत मिल जाएगी।

बाब 56 : ज़हर पीना या ज़हरीली और ख़ौफ़नाक दवा या नापाक दवा का इस्ते'माल करना

٥٦- باب شُرْبِ السُّمِّ وَالدَّوَاءِ بِهِ وَبِمَا يُخَافُ مِنْهُ

तश्रीह : क़स्तलानी (रह़.) ने कहा शाफ़िइया ने नापाक दवा का इस्ते'माल इलाज के लिये दुरुस्त रखा है। बाब की ह़दीष़ में सिर्फ़ ज़हर का ज़िक्र है इसलिये नापाक दवा से शायद वही मुराद है। (वह़ीदी)

5778. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल वह्हाब ने बयान किया, उन्हों ने कहा हमसे ख़ालिद बिन ह़ारिष़ ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे सुलैमान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने ज़क्वान से सुना, वो ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से ये ह़दीष़ बयान करते थे कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने पहाड़ से अपने आपको गिराकर ख़ुदकुशी कर ली वो जहन्नम की आग में होगा और उसमें हमेशा पड़ा रहेगा और जिसने ज़हर पीकर ख़ुदकुशी कर ली तो वो ज़हर उसके हाथ में होगा और जहन्नम की आग में वो उसे उसी त़रह़ हमेशा पीता रहेगा और जिसने लोहे के किसी हथियार से ख़ुदकुशी कर ली तो उसका हथियार उसके हाथ में होगा और जहन्नम की आग मे हमेशा के लिये वो उसे अपने पेट में मारता रहेगा।

(राजेअ़ : 1365)

٥٧٧٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الْوَهَّابِ حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ الْحَارِثِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سُلَيْمَانَ قَالَ: سَمِعْتُ ذَكْوَانَ يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ تَرَدَّى مِنْ جَبَلٍ فَقَتَلَ نَفْسَهُ فَهُوَ فِي نَارِ جَهَنَّمَ يَتَرَدَّى فِيهِ خَالِدًا مُخَلَّدًا فِيهَا أَبَدًا وَمَنْ تَحَسَّى سُمًّا فَقَتَلَ نَفْسَهُ فَسُمُّهُ فِي يَدِهِ يَتَحَسَّاهُ فِي نَارِ جَهَنَّمَ خَالِدًا مُخَلَّدًا فِيهَا أَبَدًا وَمَنْ قَتَلَ نَفْسَهُ بِحَدِيدَةٍ فَحَدِيدَتُهُ فِي يَدِهِ يَجَأُ بِهَا فِي بَطْنِهِ فِي نَارِ جَهَنَّمَ خَالِدًا مُخَلَّدًا فِيهَا أَبَدًا)). [راجع: ١٣٦٥]

तश्रीह : ख़ुदकुशी करना किसी भी सूरत से हो बदतरीन जुर्म है जिसकी सज़ा इस ह़दीष़ में बयान की गई है। कितने मर्द औरतें इस जुर्म का इर्तिकाब कर डालते हैं जो बहुत बड़ी ग़लती है।

5779. हमसे मुह़म्मद बिन सलाम बैकुन्दी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अह़मद बिन बशीर अबूबक्र ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमको हाशिम बिन हाशिम ने ख़बर दी, कहा कि मुझे आ़मिर बिन सअ़द ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मैंने अपने वालिद से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो शख़्स सुबह़ के वक़्त सात अ़ज्वा खजूरें खा ले उसे उस दिन न ज़हर नुक़्सान कर सकेगा और न जादू। (राजेअ़ : 5445)

٥٧٧٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلاَمٍ حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ بَشِيرٍ أَبُو بَكْرٍ أَخْبَرَنَا هَاشِمُ بْنُ هَاشِمٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَامِرُ بْنُ سَعْدٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي يَقُولُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((مَنِ اصْطَبَحَ بِسَبْعِ تَمَرَاتٍ عَجْوَةٍ، لَمْ يَضُرَّهُ ذَلِكَ الْيَوْمَ سُمٌّ وَلاَ سِحْرٌ)). [راجع: ٥٤٤٥]

ज़हर और जादू की ह़क़ीक़त पर इशारा है ज़हर एक ज़ाहिर चीज़ है और जादू बातिनी चीज़ है मगर ताष़ीर के लिहाज़ से दोनों को एक ही ख़ाने में बयान किया गया। अल्लाह पाक हर मुसलमान मर्द औरत को इन बीमारियों से अपनी पनाह में रखे, आमीन।

बाब 57 : गधी का दूध पीना कैसा है?

5780. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़यैना ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने, उनसे अबू इदरीस ख़ौलानी ने और उनसे अबू ष़अ़्लबा ख़ुश्नी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने हर दांत से खाने वाले दरिन्दे जानवर (के गोश्त) से मना किया। ज़ुह्री ने बयान किया कि मैंने ये ह़दीष़ उस वक़्त तक नहीं सुनी जब तक शाम नहीं आया। (राजेअ़ : 5530)

5781. और लैष़ ने ज़्यादा किया है कहा कि मुझसे यूनुस ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ज़ुह्री ने, कि मैंने अबू इदरीस से पूछा क्या हम (दवा के त़ौर पर) गधी के दूध से वुज़ू कर सकते हैं या उसे पी सकते हैं या दरिन्दे जानवरों के पत्ते इस्ते'माल कर सकते हैं या ऊँट का पेशाब पी सकते हैं। अबू इदरीस ने कहा कि मुसलमान ऊँट के पेशाब को दवा के त़ौर पर इस्ते'माल करते थे और उसमें कोई ह़र्ज नहीं समझते थे। अल्बत्ता गधी के दूध के बारे में हमें रसूलुल्लाह (ﷺ) की ये ह़दीष़ पहुँची है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने उसके गोश्त से मना किया था। उसके दूध के बारे में हमें कोई ह़ुक्म या मुमानअ़त आँह़ज़रत (ﷺ) से मा'लूम नहीं है। अल्बत्ता दरिन्दों के पत्ते के बारे में जो इब्ने शिहाब ने बयान किया कि मुझे अबू इदरीस ख़ौलानी ने ख़बर दी और उन्हें अबू ष़अ़्लबा ख़ुश्नी (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हर दांत वाले शिकारी दरिन्दे का गोश्त खाने से मना किया है। (राजेअ़ : 5530)

٥٧- باب أَلْبَانِ الأُتُنِ

٥٧٨٠- حدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَبِي إِدْرِيسَ الْخَوْلاَنِيِّ عَنْ أَبِي ثَعْلَبَةَ الْخُشَنِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: نَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنْ أَكْلِ كُلِّ ذِي نَابٍ مِنَ السَّبُعِ. قَالَ الزُّهْرِيُّ وَلَمْ أَسْمَعْهُ حَتَّى أَتَيْتُ الشَّامَ.

[راجع: ٥٥٣٠]

٥٧٨١- وزاد اللَّيْثُ قَالَ حَدَّثَنِي يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: وَسَأَلْتُهُ هَلْ نَتَوَضَّأُ أَوْ نَشْرَبُ أَلْبَانَ الأُتُنِ أَوْ مِرَارَةَ السَّبُعِ أَوْ أَبْوَالَ الإِبِلِ؟ قَالَ: قَدْ كَانَ الْمُسْلِمُونَ يَتَدَاوَوْنَ بِهَا فَلاَ يَرَوْنَ بِذَلِكَ بَأْسًا فَأَمَّا أَلْبَانُ الأُتُنِ فَقَدْ بَلَغَنَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ نَهَى عَنْ لُحُومِهَا وَلَمْ يَبْلُغْنَا عَنْ أَلْبَانِهَا أَمْرٌ وَلاَ نَهْيٌ وَأَمَّا مَرَارَةُ السَّبُعِ قَالَ ابْنُ شِهَابٍ: أَخْبَرَنِي أَبُو إِدْرِيسَ الْخَوْلاَنِيُّ أَنَّ أَبَا ثَعْلَبَةَ الْخُشَنِيَّ أَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى عَنْ أَكْلِ كُلِّ ذِي نَابٍ مِنَ السَّبُعِ.

[راجع: ٥٥٣٠]

तश्रीह : पत्ता भी उसी में दाख़िल है वो भी ह़राम होगा। बस जिस चीज़ से शारेह़ ने सुकूत किया वो मुआ़फ़ है जैसे दूसरी ह़दीष़ में है। इसी बिना पर अ़ता, त़ाऊ़स और ज़ुह्री और कई ताबेई़न ने कहा कि गधी का दूध ह़लाल है। जो लोग ह़राम कहते हैं वो ये दलील बयान करते हैं कि दूध गोश्त से पैदा होता है और जब गोश्त खाना ह़राम हो तो दूध भी ह़राम होगा। मैं (वह़ीदुज़्ज़माँ) कहता हूँ कि ये क़यास फ़ासिद है आदमी का गोश्त खाना ह़राम है मगर उसका दूध ह़लाल है। (वह़ीदी)

बाब 58 : जब मक्खी बर्तन में पड़ जाए (जिसमें खाना या पानी हो)

٥٨- باب إِذَا وَقَعَ الذُّبَابُ فِي الإِنَاءِ

٥٧٨٢- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ عُتْبَةَ بْنِ مُسْلِمٍ مَوْلَى بَنِي تَمِيمٍ عَنْ عُبَيْدِ بْنِ حُنَيْنٍ مَوْلَى بَنِي زُرَيْقٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِذَا وَقَعَ الذُّبَابُ فِي إِنَاءِ أَحَدِكُمْ فَلْيَغْمِسْهُ كُلَّهُ، ثُمَّ لِيَطْرَحْهُ فَإِنَّ فِي أَحَدِ جَنَاحَيْهِ شِفَاءً، وَفِي الآخَرِ دَاءً)).[راجع: ٣٣٢٠]

5782. हमसे क़ुतैबा बिन सई दने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इस्माईल बिन जा'फ़र ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे बनी तमीम के मौला उत्बा बिन मुस्लिम ने बयान किया, उनसे बनी ज़ुरैक़ के मौला उबैद बिन हुनैन ने बयान किया कि और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जब मक्खी तुममें से किसी के बर्तन में पड़ जाए तो पूरी मक्खी को बर्तन में डुबो दे और फिर उसे निकाल कर फेंक दे क्योंकि उसके एक पर में शिफ़ा है और दूसरे पर में बीमारी है। (राजेअ : 3320)

तश्रीह : बहुत सी चीज़ें अल्लाह पाक ने इस कष़रत से पैदा की हैं जिनकी अफ़ज़ाइशे नस्ल को देखकर हैरत होती है। ऐसी तमाम चीज़ों की नस्लें इंसान की सेहत के लिये मुज़िर भी हैं और दूसरा पहलू उनमें नफ़ा का भी है। उनमें से एक मक्खी भी है। रसूले करीम (ﷺ) का इर्शादि गिरामी बिलकुल हक़ और सच्चाई पर आधारित है जो सादिक़अल मस्दूक़ हैं। इसमें मक्खी के ज़रर को दूर करने के लिये इलाज बिज़्ज़िद बतलाया गया है। मौजूदा फ़ने हिक्मत में इलाज बिज़्ज़िद को सह़ीह़ तस्लीम किया गया। पस सदक़ रसूलुल्लाह (ﷺ)।

77. किताबुल लिबास

किताब लिबास के बयान में

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बाब : अल्लाह पाक का सूरह आराफ़ में फ़र्माना कि, ऐ रसूल! कह दो कि किसने वो ज़ेब और ज़ीनत की चीज़ें हराम कीं हैं जो उसने बन्दों के लिये (ज़मीन से) पैदा की हैं (या'नी उम्दह उम्दह लिबास), और नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया खाओ और पियो और पहनो और ख़ैरात करो लेकिन फ़िज़ूलख़र्ची न करो और न तकब्बुर करो और हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा जो तेरा जी चाहे बशर्ते कि हलाल हो) खा और जो तेरा

﴿قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِينَةَ اللهِ الَّتِي أَخْرَجَ لِعِبَادِهِ﴾ وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((كُلُوا وَاشْرَبُوا وَالْبَسُوا وَتَصَدَّقُوا فِي غَيْرِ إِسْرَافٍ، وَلاَ مَخِيلَةٍ)). وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: كُلْ مَا شِئْتَ وَالْبَسْ مَا شِئْتَ مَا أَخْطَأَتْكَ اثْنَتَانِ

سرف، أو مخيلة

जी चाहे (मुबाह़ कपड़ों में से) पहन मगर दो बातों से ज़रूर बचो फ़िज़ूलख़र्ची और तकब्बुर से।

तश्रीह : क्योकि यही दोनों चीज़ें इंसान को तबाह व बर्बाद कर देती हैं। माल में फ़िज़ूल ख़र्ची न करो या'नी अपने माल को नाजाइज़ कामों में ख़र्च न करो। ये फ़िज़ूलख़र्ची हर ए'तिबार से नाज़ेबा है। लिहाज़ा हर इंसान पर लाज़िम है कि ए'तिदाल और बीच की राह से काम ले जैसा कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया **अल्इक़्तिसादु जुज़्उम्मिन्नबुव्वह** मियानारवी नुबुव्वत का एक ह़िस्सा है। जब इंसान लिबास में मल्बूस होकर अकड़ता हुआ चले तो ये तकब्बुर में शामिल है क्योंकि एक शख़्स चार जोड़े में तक़ब्बुर करता हुआ चला जा रहा था जो वहीं ज़मीन में धंसा दिया गया जो आज तक धंसता हुआ चला जा रहा है।

5783. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा मुझसे इमाम मालिक ने, उन्होंने नाफ़ेअ़ और अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार और ज़ैद बिन असलम से, उन्होंने ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह तआला उसकी त़रफ़ क़यामत के दिन नज़रे रह़मत नहीं करेगा जो अपना कपड़ा तकब्बुर व गुरूर के सबब से ज़मीन पर घसीटकर चलता है। (राजेअ़ : 3665)

٥٧٨٣- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ وَعَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ وَزَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ يُخْبِرُونَهُ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لاَ يَنْظُرُ اللهُ إِلَى مَنْ جَرَّ ثَوْبَهُ خُيَلاَءَ)).
[راجع: ٣٦٦٥]

तश्रीह : लिबास का फ़िज़ूलख़र्ची ये है कि बेफ़ायदा कपड़ा ख़राब करे एक एक थान के अ़मामे बाँधे, उससे ये भी ज़ाहिर हुआ कि कपड़ा लटकाने में तकब्बुर और गुरूर को बड़ा दख़्ल है ये बहुत ही बुरी आदत है तकब्बुर और गुरूर के साथ कितनी ही नेकी हो लेकिन आदमी नजात नहीं पा सकेगा और आजिज़ी और फ़रोतनी के साथ कितने भी गुनाह हों लेकिन मग़्फ़िरत की उम्मीद है।

बाब 2 : अगर किसी का कपड़ा यूँ ही लटक जाए तकब्बुर की निय्यत न हो तो गुनाहगार न होगा

٢- باب مَنْ جَرَّ إِزَارَهُ مِنْ غَيْرِ خُيَلاَءَ

5784. हमसे अह़मद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुहैर ने बयान किया, कहा हमसे मूसा बिन उ़क़्बा ने, उनसे सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह ने और उनसे उनके वालिद ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जो शख़्स तकब्बुर की वजह से तहमद घसीटता हुआ चलेगा तो अल्लाह पाक उसकी त़रफ़ क़यामत के दिन नज़र भी नहीं करेगा। ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मेरे तहमद का एक ह़िस्सा कभी लटक जाता है मगर ये कि ख़ास़ त़ौर से इसका ख़याल रखा करूँ? आपने फ़र्माया तुम उन लोगों में से नहीं जो ऐसा तकब्बुर से करते हैं।

٥٧٨٤- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ، عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنْ أَبِيهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ جَرَّ ثَوْبَهُ خُيَلاَءَ لَمْ يَنْظُرِ اللهُ إِلَيْهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ)) قَالَ أَبُوبَكْرٍ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّ أَحَدَ شِقَّيْ إِزَارِي يَسْتَرْخِي إِلاَّ أَنْ أَتَعَاهَدَ ذَلِكَ مِنْهُ؟ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَسْتَ مِمَّنْ يَصْنَعُهُ خُيَلاَءَ)).

5785. मुझसे मुह़म्मद बिन सलाम बैकुन्दी ने बयान किया,

٥٧٨٥- حَدَّثَنِي مُحَمَّدٌ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ

कहा हमको अ़ब्दुल आ़ला ने ख़बर दी, उन्हें यूनुस ने, उन्हें इमाम ह़सन बस़री ने और उनसे अबूबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि सूरज ग्रहण हुआ तो हम नबी करीम (ﷺ) के साथ थे। आप जल्दी में कपड़ा घसीटते हुए मस्जिद में तशरीफ़ लाए लोग भी जमा हो गये। आँह़ज़रत (ﷺ) ने दो रकअ़त नमाज़ पढ़ाई, ग्रहण ख़त्म हो गया, तब आप हमारी त़रफ़ मुतवज्जह हुए और फ़र्माया सूरज और चाँद अल्लाह की निशानियों में से दो निशानियाँ हैं इसलिये जब तुम इन निशानियों में से कोई निशानी देखो तो नमाज़ पढ़ो और अल्लाह से दुआ़ करो यहाँ तक कि वो ख़त्म हो जाए। (राजेअ़ : 1040)

الأَعْلَى، عَنْ يُونُسَ، عَنِ الْحَسَنِ، عَنْ أَبِي بَكْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: خُسِفَتِ الشَّمْسُ وَنَحْنُ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ فَقَامَ يَجُرُّ ثَوْبَهُ مُسْتَعْجِلاً، حَتَّى أَتَى الْمَسْجِدَ وَثَابَ النَّاسُ فَصَلَّى رَكْعَتَيْنِ فَجُلِّيَ عَنْهَا ثُمَّ أَقْبَلَ عَلَيْنَا وَقَالَ: ((إِنَّ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ آيَتَانِ مِنْ آيَاتِ اللهِ، فَإِذَا رَأَيْتُمْ مِنْهَا شَيْئًا فَصَلُّوا وَادْعُوا اللهَ حَتَّى يَكْشِفَهَا)).

[راجع: ١٠٤٠]

इस ह़दीष़ में आँह़ज़रत (ﷺ) के अचानक चलने पर चादर घसीटने का ज़िक्र है यही बाब से मुत़ाबक़त है कभी कभार बिला क़स्द ऐसा हो जाए कि चादर तहबन्द ज़मीन पर घिसटने लगे तो कोई गुनाह नहीं है।

बाब 3 : कपड़ा ऊपर उठाना

٣- باب التَّشْمِيرِ فِي الثِّيَابِ

5786. मुझसे इस्ह़ाक़ बिन राह्व ने बयान किया, कहा हमको इब्ने शुमैल ने ख़बर दी, कहा हमको उ़मर बिन अबी ज़ाइदा ने ख़बर दी, कहा हमको औ़न बिन अबी जुहैफ़ा ने ख़बर दी, उनसे उनके वालिद अबू जुहैफ़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर मैंने देखा कि ह़ज़रत बिलाल (रज़ि.) एक नेज़ा लेकर आए और उसे ज़मीन में गाड़ दिया फिर नमाज़ के लिये तक्बीर कही गई। मैंने देखा कि रसूले करीम (ﷺ) एक जोड़ा पहने हुए बाहर तशरीफ़ लाए जिसे आपने समेट रखा था। फिर आपने नेज़ा के सामने खड़े होकर दो रकअ़त नमाज़े ईद पढ़ाई और मैंने देखा कि इंसान और जानवर आँह़ज़रत (ﷺ) के सामने नेज़ के बाहर की त़रफ़ से गुज़र रहे थे। (राजेअ़ : 187)

٥٧٨٦- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ، أَخْبَرَنَا ابْنُ شُمَيْلٍ، أَخْبَرَنَا عُمَرُ بْنُ أَبِي زَائِدَةَ، أَخْبَرَنَا عَوْنُ بْنُ أَبِي جُحَيْفَةَ قَالَ: فَرَأَيْتُ بِلاَلاً جَاءَ بِعَنَزَةٍ فَرَكَزَهَا ثُمَّ أَقَامَ الصَّلاَةَ فَرَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَرَجَ فِي حُلَّةٍ مُشَمِّرًا فَصَلَّى رَكْعَتَيْنِ إِلَى الْعَنَزَةِ وَرَأَيْتُ النَّاسَ وَالدَّوَابَّ يَمُرُّونَ بَيْنَ يَدَيْهِ مِنْ وَرَاءِ الْعَنَزَةِ.

[راجع: ١٨٧]

आँह़ज़रत (ﷺ) ने अपने जोड़े को समेट रखा था ताकि ज़मीन पर ख़ाक आलूद न हो। बाब और ह़दीष़ में यही मुत़ाबक़त है। इमाम के आगे नेज़े का सुतरा गाड़ना भी ष़ाबित हुआ।

बाब 4 : कपड़ा जो टख़नों से नीचे हो (इज़ार हो या कुर्ता या चुग़ा) वो अपने पहनने वाले मर्द को दोज़ख़ में ले जाएगा जबकि वो पहनने वाला मुतकब्बिर हो

٤- باب مَا أَسْفَلَ مِنَ الْكَعْبَيْنِ فَهُوَ فِي النَّارِ

5787. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअ्बा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सईद बिन अबी सईद मक़्बरी ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि तहमद का जो ह़िस़्सा टख़्नों से नीचे लटका हो वो जहन्नम में होगा।

٥٧٨٧- حدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيُّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ: ((مَا أَسْفَلَ مِنَ الْكَعْبَيْنِ مِنَ الإِزَارِ فَفِي النَّارِ)).

वो तहमद वाला ह़िस़्सा जिस्म के साथ दोज़ख़ में जलाया जाएगा। और ये उस तकब्बुर की सज़ा होगी जिसकी वजह से उस शख़्स़ ने वो तहमद टख़्नों से नीचे लटकाया अआज़नल्लाहु आमीन।

बाब 5 : जो कोई तकब्बुर से अपना कपड़ा घसीटता हुआ चले उसकी सज़ा का बयान

٥- باب مَنْ جَرَّ ثَوْبَهُ مِنَ الْخُيَلاَءِ

5788. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें अबुज़्ज़िनाद ने, उन्हें अअ़रज ने और उन्हें ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जो शख़्स़ अपना तहमद ग़ुरूर की वजह से घसीटता है, अल्लाह तआ़ला क़यामत के दिन उसकी त़रफ़ नज़र भी नहीं करेगा।

٥٧٨٨- حدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَالِكٌ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لاَ يَنْظُرُ اللهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِلَى مَنْ جَرَّ إِزَارَهُ بَطَرًا)).

अस़ल बुराई ग़ुरूर, तकब्बुर, घमण्ड है जो अल्लाह को सख़्त नापसंद है ये ग़ुरूर तकब्बुर घमण्ड जिस त़ौर पर भी हो मज़्मूम है।

5789. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ्बा ने बयान किया, कहा हमसे मुह़म्मद बिन ज़ियाद ने बयान किया, कहा कि मैंने ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी या (ये बयान किया कि) अबुल क़ासिम (ﷺ) ने फ़र्माया (बनी इस्राईल में) एक शख़्स़ एक जोड़ा पहनकर घमंड और ग़ुरूर में सरमस्त सर के बालों में कँघी किये हुए अकड़कर इतराता जा रहा था कि अल्लाह तआ़ला ने उसे ज़मीन में धंसा दिया अब वो क़यामत तक उसमें तड़पता रहेगा या धंसता रहेगा।

٥٧٨٩- حدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ زِيَادٍ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ يَقُولُ: قَالَ النَّبِيُّ أَوْ قَالَ أَبُو الْقَاسِمِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((بَيْنَمَا رَجُلٌ يَمْشِي فِي حُلَّةٍ تُعْجِبُهُ نَفْسُهُ مُرَجِّلٌ جُمَّتَهُ إِذْ خَسَفَ اللهُ بِهِ فَهُوَ يَتَجَلْجَلُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ)).

ये क़ारून या हैज़न फ़ारस का रहने वाला शख़्स़ था।

5790. हमसे सईद बिन ड़फ़ैर ने बयान किया, कहा कि मुझसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, कहा कि मुझसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन ख़ालिद ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह ने और उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया एक शख़्स़ ग़ुरूर

٥٧٩٠- حدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عُفَيْرٍ، قَالَ: حَدَّثَنِي اللَّيْثُ قَالَ : حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ خَالِدٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللهِ أَنَّ أَبَاهُ حَدَّثَهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ

ﷺ قَالَ: ((بَيْنَمَا رَجُلٌ يَجُرُّ إِزَارَهُ إِذْ خُسِفَ بِهِ فَهُوَ يَتَجَلْجَلُ فِي الأَرْضِ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ)). تَابَعَهُ يُونُسُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ وَلَمْ يَرْفَعْهُ شُعَيْبٌ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ.

में अपना तहमद घसीटता हुआ चल रहा था कि उसे ज़मीन में धंसा दिया गया और वो उसी तरह क़यामत तक ज़मीन में धंसता चला जाएगा। इसकी मुताबअत यूनुस ने ज़ुह्री से की है, उन्होंने ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से, उसे मर्फ़ूअन नहीं बयान किया।

ये क़ारून बदबख़्त था जिसका ज़िक्र कुर्आन पाक में मौजूद है आजकल भी ऐसे क़ारून घर घर मौजूद हैं, इल्ला माशाअल्लाह। तहमद ज़मीन पर घसीटना एक फ़ैशन बन गया है तो ला'नत हो इस फ़ैशन पर।

حدثّنا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ جَرِيرٍ، أَخْبَرَنَا أَبِي عَنْ عَمِّهِ، جَرِيرِ بْنِ زَيْدٍ قَالَ : كُنْتُ مَعَ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ عَلَى بَابِ دَارِهِ فَقَالَ: سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ نَحْوَهُ.

[راجع: ٣٤٨٥]

मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे वहब बिन जरीर ने बयान किया, कहा मुझको मेरे वालिद ने ख़बर दी, उनसे उनके चचा जरीर बिन ज़ैद ने बयान किया कि मैं सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर के साथ उनके घर के दरवाज़े पर था उन्होंने बयान किया कि मैंने ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से इसी ह़दीष़ की त़रह़ बयान किया। (राजेअ़ : 3485)

٥٧٩١- حدثّنا مَطَرُ بْنُ الْفَضْلِ، حَدَّثَنَا شَبَابَةُ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: لَقِيتُ مُحَارِبَ بْنَ دِثَارٍ عَلَى فَرَسٍ وَهُوَ يَأْتِي مَكَانَهُ الَّذِي يَقْضِي فِيهِ فَسَأَلْتُهُ عَنْ هَذَا الْحَدِيثِ فَحَدَّثَنِي فَقَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَنْ جَرَّ ثَوْبَهُ مَخِيلَةً، لَمْ يَنْظُرِ اللهُ إِلَيْهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ)) فَقُلْتُ لِمُحَارِبٍ: أَذَكَرَ إِزَارَهُ؟ قَالَ: مَا خَصَّ إِزَارًا وَلاَ قَمِيصًا. تَابَعَهُ جَبَلَةُ بْنُ سُحَيْمٍ، وَزَيْدُ بْنُ أَسْلَمَ، وَزَيْدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. وَقَالَ اللَّيْثُ عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ مِثْلَهُ. وَتَابَعَهُ مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ، وَعُمَرُ بْنُ مُحَمَّدٍ، وَقُدَامَةُ بْنُ مُوسَى عَنْ سَالِمٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ

5791. हमसे मत़र बिन फ़ज़ल ने बयान किया, कहा हमसे शबाबा ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा कि मैंने मुहारिब बिन दष़ार क़ाज़ी से मुलाक़ात की, वो घोड़े पर सवार थे और मकाने अ़दालत में आ रहे थे जिसमें वो फ़ैसला किया करते थे। मैंने उनसे यही ह़दीष़ पूछी तो उन्होंने मुझसे बयान किया, कहा कि मैंने ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जो आप अपना कपड़ा ग़ुरूर की वजह से घसीटता हुआ चलेगा, क़यामत के दिन उसकी त़रफ़ अल्लाह तआ़ला नज़र भी नहीं करेगा। (शुअ़बा ने कहा कि) मैंने मह़ारिब से पूछा क्या ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने तहमद का ज़िक्र किया था? उन्होंने फ़र्माया कि तहमद या क़मीस़ किसी की उन्होंने तख़्सीस़ नहीं की थी। मुह़ारिब के साथ इस ह़दीष़ को जब्ला बिन सहीम और ज़ैद बिन असलम और ज़ैद बिन अ़ब्दुल्लाह ने भी ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से रिवायत किया, उन्होंने आँह़ज़रत (ﷺ) से। और लैष़ ने नाफ़ेअ़ से, उन्होंने इब्ने उ़मर (रज़ि.) से ऐसी ही रिवायत की और नाफ़ेअ़ के साथ इसको मूसा बिन उ़क़्बा और उ़मर बिन मुहम्मद और क़ुदामा बिन मूसा ने भी सालिम से, उन्होंने इब्ने उ़मर (रज़ि.) से,

उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) से रिवायत की उसमें यूँ है कि जो शख़्स अपना कपड़ा (तकब्बुर के तौर पर) लटकाए।

عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((مَنْ جرَّ ثَوْبَهُ)).

तश्रीह : जब्ला बिन सुहैम की रिवायत को इमाम नसाई ने और ज़ैद बिन असलम की रिवायत को इमाम मुस्लिम ने वस्ल किया। मूसा की रिवायत ख़ुद उसी किताब में शुरू किताबुल लिबास में और उ़मर बिन मुहम्मद की सहीह मुस्लिम में और क़ुदामा की सहीह अबू अ़वाना में मौसूल है। तहमद हो या क़मीस़ जो भी अज़्राहे तकब्बुर कपड़ा लटकाकर चलेगा उसको बिज़्ज़रूर ये सज़ा मिलेगी सदक़ रसूलुल्लाहि (ﷺ)।

बाब 6 : हाशियादार तहमद पहनना, जिसका किनारा बुना हुआ नहीं होता

उसमें सिर्फ़ ताना होता है और ज़ुहरी, अबूबक्र बिन मुहम्मद, हम्ज़ा बिन अबी उसैद और मुआ़विया बिन अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र से मन्क़ूल है कि उन बुज़ुर्गों ने झालरदार कपड़े पहने हैं।

٦- باب الإِزَارِ الْمُهَدَّبِ وَيُذْكَرُ عَنِ الزُّهْرِيِّ، وَأَبِي بَكْرِ بْنِ مُحَمَّدٍ، وَحَمْزَةَ بْنِ أَبِي أُسَيْدٍ، وَمُعَاوِيَةَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ جَعْفَرٍ: أَنَّهُمْ لَبِسُوا ثِيَابًا مُهَدَّبَةً

5792. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने कहा कि मुझको उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने और उन्हें हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतह्हरा हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रिफ़ाआ़ कुर्ज़ी (रज़ि.) की बीवी रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आईं। मैं भी बैठी हुई थी और आँहज़रत (ﷺ) के पास हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) मौजूद थे। उन्होंने कहा या रसूलल्लाह! मैं रिफ़ाआ़ के निकाह में थी लेकिन उन्होंने मुझे तीन त़लाक़ दे दी हैं (मग़ल्लज़ा)। उसके बाद मैंने अ़ब्दुर्रहमान बिन ज़ुबैर (रज़ि.) से निकाह कर लिया और अल्लाह की क़सम कि उनक साथ या रसूलल्लाह (ﷺ)! सिर्फ़ उस झालर जैसा है। उन्होंने अपनी चादर के झालर को अपने हाथ में लेकर इशारा किया। हज़रत ख़ालिद बिन सईद (रज़ि.) जो दरवाज़े पर खड़े थे और उन्हें अभी अंदर आने की इजाज़त नहीं हुई थी, उसने भी उनकी बात सुनी। बयान किया कि हज़रत ख़ालिद रज़ि. (वहीं से) बोले। अबूबक्र! आप इस औ़रत को रोकते नहीं कि किस त़रह की बात रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने खोलकर बयान करती है लेकिन अल्लाह की क़सम इस बात पर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) का तबस्सुम और बढ़ गया। आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया ग़ालिबन तुम दोबारा रिफ़ाआ़ के पास जाना चाहती हो? लेकिन ऐसा उस वक़्त तक मुम्किन नहीं जब तक वो (तुम्हारे दूसरे शौहर अ़ब्दुर्रहमान बिन ज़ुबैर रज़ि.) तुम्हारा मज़ा न चख लें और तुम उनका मज़ा न चख लो

٥٧٩٢- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ، أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجَ النَّبِيِّ قَالَتْ: جَاءَتِ امْرَأَةُ رِفَاعَةَ الْقُرَظِيِّ رَسُولَ اللهِ ﷺ وَأَنَا جَالِسَةٌ وَعِنْدَهُ أَبُو بَكْرٍ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنِّي كُنْتُ تَحْتَ رِفَاعَةَ فَطَلَّقَنِي فَبَتَّ طَلاَقِي فَتَزَوَّجْتُ بَعْدَهُ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ الزُّبَيْرِ وَإِنَّهُ وَاللهِ مَا مَعَهُ يَا رَسُولَ اللهِ إِلاَّ مِثْلُ هَذِهِ الْهُدْبَةِ وَأَخَذَتْ هُدْبَةً مِنْ جِلْبَابِهَا فَسَمِعَ خَالِدُ بْنُ سَعِيدٍ قَوْلَهَا وَهُوَ بِالْبَابِ، لَمْ يُؤْذَنْ لَهُ قَالَتْ: فَقَالَ خَالِدٌ: يَا أَبَا بَكْرٍ أَلاَ تَنْهَى هَذِهِ عَمَّا تَجْهَرُ بِهِ عِنْدَ رَسُولِ اللهِ ﷺ؟ فَلاَ وَاللهِ مَا يَزِيدُ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَلَى التَّبَسُّمِ فَقَالَ لَهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لَعَلَّكِ تُرِيدِينَ أَنْ تَرْجِعِي إِلَى رِفَاعَةَ، لاَ حَتَّى يَذُوقَ عُسَيْلَتَكِ وَتَذُوقِي عُسَيْلَتَهُ)). فَصَارَ سُنَّةً بَعْدَهُ.

फिर बाद में यही क़ानून बन गया। (राजेअ : 2639)

[راجع: ٢٦٣٩]

तशरीह : औरत ने अपनी झालरदार चादर की तरफ़ इशारा किया। बाब से यही जुमला मुताबक़त रखता है बाक़ी दीगर मसाइल जो इस हदीष़ से निकलते हैं वो भी वाज़ेह हैं। क़ानून ये बना कि जिस औरत को तीन तलाक़ दे दी जाएँ उसका पहले शौहर से फिर निकाह नहीं हो सकता जब तक दूसरे शौहर से सुहबत न करे, फिर वो शौहर ख़ुद अपनी मर्ज़ी से उसे तलाक़ न दे दे, ये शरई हलाला है। फिर ख़ुद इस मक़्सद के तहत फ़र्ज़ी हलाला कराना मौजिबे ला'नत है अल्लाह उन उलमा पर रहम करे जो औरतों को फ़र्ज़ी हलाला कराने का फ़त्वा देते हैं। तीन तलाक़ से तीन तुहर की तलाक़ें मुराद हैं।

बाब 7 : चादर ओढ़ना, हज़रत अनस (रज़ि.) ने कहा कि एक गंवार ने रसूलुल्लाह (ﷺ) की चादर खींची

ये हदीष़ आगे आई है

٧- باب الأَرْدِيَةِ.

وقال أنسٌ : جَبَذ أعْرَابِيٌّ رِدَاءَ النَّبِيِّ ﷺ

5793. हमसे अब्दान ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, कहा हमको यूनुस ने, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें अली बिन हुसैन ने ख़बर दी, उन्हें हुसैन बिन अली (रज़ि.) ने खबर दी कि अली (रज़ि.) ने बयान किया (कि हम्ज़ा रज़ि. ने हुर्मते शराब से पहले शराब के नशे में जब उनकी ऊँटनी ज़िब्ह कर दी और उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) से आकर उसकी शिकायत की तो) आँहज़रत (ﷺ) ने अपनी चादर मंगवाई और उसे ओढ़कर तशरीफ़ ले जाने लगे। मैं और ज़ैद बिन हारिष़ा (रज़ि.) आपके पीछे पीछे थे। आख़िर आप उस घर में पहुँचे जिसमें हम्ज़ा (रज़ि.) थे, आपने अंदर आने की इजाज़त मांगी और उन्होंने आप हज़रात को इजाज़त दी। (राजेअ : 2089)

٥٧٩٣- حدَّثَنَا عَبْدَانُ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ. أَخْبَرَنَا يُونُسُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ. أَخْبَرَنِي عَلِيُّ بْنُ حُسَيْنٍ، أَنَّ حُسَيْنَ بْنَ عَلِيٍّ، أَخْبَرَهُ أَنَّ عَلِيًّا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ فَدَعَا النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِرِدَائِهِ فَارْتَدَى بِهِ ثُمَّ انْطَلَقَ يَمْشِي وَاتَّبَعْتُهُ أَنَا وَزَيْدُ بْنُ حَارِثَةَ حَتَّى جَاءَ الْبَيْتَ الَّذِي فِيهِ حَمْزَةُ فَاسْتَأْذَنَ فَأَذِنُوا لَهُمْ.

[راجع: ٢٠٨٩]

आँहज़रत (ﷺ) हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) के यहाँ चादर ओढ़कर जाने लगे, बाब से यही मुताबक़त है मुफ़स्सल हदीष़ कई जगह ज़िक्र में आ चुकी है।

बाब 8 : क़मीस़ पहनना (कुर्ता क़मीस़ दोनों एक ही हैं) और अल्लाह पाक ने सूरह यूसुफ़ में हज़रत यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) का क़ौल नक़ल किया

है कि, अब तुम मेरी इस क़मीस़ को ले जाओ और इसको मेरे वालिद के चेहरे पर डाल दो तो उनकी आँखें बिफ़ज़्लिही तआला रोशन हो जाएँगी।

٨- باب لُبْسِ الْقَمِيصِ وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى حِكَايَةً عَنْ يُوسُفَ :

﴿اذْهَبُوا بِقَمِيصِي هَذَا فَأَلْقُوهُ عَلَى وَجْهِ أَبِي يَأْتِ بَصِيرًا﴾

5794. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हम्माद बिन सलमा ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुख़्तियानी ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि एक साहब ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मुहरिम

٥٧٩٤- حدَّثَنَا قُتَيْبَةُ. حدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ أَيُّوبَ. عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَجُلاً قَالَ : يَا رَسُولَ اللهِ مَا يَلْبَسُ الْمُحْرِمُ مِنَ الثِّيَابِ؟ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ

((لاَ يَلْبَسُ الْمُحْرِمُ الْقَمِيصَ، وَلاَ السَّرَاوِيلَ، وَلاَ الْبُرْنُسَ وَلاَ الْخُفَّيْنِ، إِلاَّ أَنْ لاَ يَجِدَ النَّعْلَيْنِ فَلْيَلْبَسْ مَا هُوَ أَسْفَلُ مِنَ الْكَعْبَيْنِ)). [راجع: ١٣٤]

किस तरह का कपड़ा पहने। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि महरिम क़मीस़, पाजामा, बरनस (टोपी या सर पर पहनने की कोई चीज़) और मोज़े नहीं पहनेगा अल्बत्ता अगर उसे चप्पल न मिलीं तो मोज़ों ही को टख़्नों तक काटकर पहन ले। वो ही जूती की तरह हो जाएँगे। (राजेअ: 134)

٥٧٩٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، أَخْبَرَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ عَمْرٍو. سَمِعَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : أَتَى النَّبِيُّ ﷺ عَبْدَ اللهِ بْنَ أُبَيٍّ بَعْدَ مَا أُدْخِلَ قَبْرَهُ فَأَمَرَ بِهِ فَأُخْرِجَ وَوُضِعَ عَلَى رُكْبَتَيْهِ وَنَفَثَ عَلَيْهِ مِنْ رِيقِهِ وَأَلْبَسَهُ قَمِيصَهُ وَاللهُ أَعْلَمُ.

5795. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमको इब्ने उ़ययना ने ख़बर दी, उन्हें अ़म्र ने और उन्होंने हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) अ़ब्दुल्लाह बिन उबई (मुनाफ़िक़) के पास जब उसे क़ब्र में दाख़िल किया जा चुका था तशरीफ़ लाए फिर आपके हुक्म से उसकी लाश निकाली गई और हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के घुटनों पर उसे रखा गया आँहज़रत (ﷺ) ने उस पर दम करते हुए अपनी क़मीस़ पहनाई और अल्लाह ही ख़ूब जानने वाला है।

तशरीह: कुछ रिवायतों में आया है कि अ़ब्दुल्लाह बिन उबई ने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के चचा हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) को अपनी क़मीस़ एक मौक़ा पर पहनाई थी। इसलिये उसके बदले के तौर पर आँहज़रत (ﷺ) ने भी उसे अपनी क़मीस़ ऐसे मौक़े पर दी ये सब कुछ आपने उसके बेटे का दिल ख़ुश करने के लिये किया जो सच्चा मुसलमान था, वल्लाहु आलमु बिस्सवाब।

٥٧٩٦- حَدَّثَنَا صَدَقَةُ، أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ، قَالَ: أَخْبَرَنِي نَافِعٌ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ، قَالَ: لَمَّا تُوُفِّيَ عَبْدُ اللهِ بْنُ أُبَيٍّ جَاءَ ابْنُهُ إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ أَعْطِنِي قَمِيصَكَ أُكَفِّنْهُ فِيهِ وَصَلِّ عَلَيْهِ وَاسْتَغْفِرْ لَهُ، فَأَعْطَاهُ قَمِيصَهُ وَقَالَ لَهُ: ((إِذَا فَرَغْتَ مِنْهُ فَآذِنَّا)) فَلَمَّا فَرَغَ آذَنَهُ فَجَاءَ لِيُصَلِّيَ عَلَيْهِ فَجَذَبَهُ عُمَرُ فَقَالَ: أَلَيْسَ قَدْ نَهَاكَ اللهُ أَنْ تُصَلِّيَ عَلَى الْمُنَافِقِينَ؟ فَقَالَ: ﴿اسْتَغْفِرْ لَهُمْ أَوْ لاَ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ إِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِينَ مَرَّةً فَلَنْ يَغْفِرَ اللهُ لَهُمْ﴾ فَنَزَلَتْ: ﴿وَلاَ تُصَلِّ

5796. हमसे स़दक़ा बिन फ़ज़्ल ने बयान किया, कहा हमको यह्या बिन सईद ने ख़बर दी, उनसे उ़बैदुल्लाह ने बयान किया, कहा मुझको नाफ़ेअ़ ने ख़बर दी, उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि जब अ़ब्दुल्लाह बिन उबई की वफ़ात हुई तो उसके लड़के (हज़रत अ़ब्दुल्लाह) जो मुख़्लिस़ और अकाबिर स़हाबा में थे रसूलुल्लाह (ﷺ)! की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! अपनी क़मीस़ मुझे अ़ता फ़र्माइये ताकि मैं अपने बाप को उसका कफ़न दूँ और आप (ﷺ) उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ा दें और उनके लिये दुआ-ए-मग़्फ़िरत करें चुनाँचे आँहज़रत (ﷺ) ने अपनी क़मीस़ उन्हें अ़ता फ़र्माई और फ़र्माया कि नहला धुलाकर मुझे ख़बर देना। चुनाँचे जब नहला धुला लिया तो आँहज़रत (ﷺ) को ख़बर दी आँहुज़ूर (ﷺ) तशरीफ़ लाए ताकि उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाएँ लेकिन हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने आपका (दामन) पकड़ लिया और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या अल्लाह तआ़ला ने आपको

मुनाफ़िक़ीन पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ने से मना नहीं फ़र्माया है? और फ़र्माया है कि उनके लिये मग़्फ़िरत की दुआ करो या मग़्फ़िरत की दुआ न करो अगर तुम सत्तर मर्तबा भी उनके लिये मग़्फ़िरत की दुआ करोगे तब भी अल्लाह उन्हें हर्गिज़ नहीं बख़्शेगा। फिर ये आयत नाज़िल हुई कि, और उनमें से किसी पर भी जो मर गया हो हर्गिज़ नमाज़ न पढ़िये। उसके बाद आँहज़रत (ﷺ) ने उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़नी भी छोड़ दी।

عَلَى أَحَدٍ مِنْهُمْ مَاتَ أَبَدًا﴾ فَتَرَكَ الصَّلاَةَ عَلَيْهِمْ.

तश्रीह : आपने फ़र्माया मुझे अल्लाह पाक ने इख़्तियार दिया है मना नहीं फ़र्माया और मैं सत्तर बार से भी ज़्यादा दुआ करूँगा जब आँहज़रत (ﷺ) की दुआ भी सत्तर बार काफ़िर या मुनाफ़िक़ के लिये फ़ायदा न बख़्शे तो समझ लेना चाहिये कि किसी और आलिम या दुर्वेश की दुआ से काफ़िर या मुनाफ़िक़ क्यूँकर बख़्शा जाएगा और जो ऐसी वैसी हिकायतों पर ए'तिबार करे वो महज़ बेवक़ूफ़ और जाहिल है।

बाब 9 : क़मीस़ का गिरेबान सीने पर या और कहीं मष़लन (कँधे पर) लगाना।

٩- باب جَيْبِ الْقَمِيصِ مِنْ عِنْدِ الصَّدْرِ وَغَيْرِهِ

5797. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू आमिर ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन नाफ़ेअ़ ने बयान किया, उनसे इमाम ह़सन बस़री ने, उनसे त़ाऊस ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बख़ील और स़दक़ा देने वाले की मिष़ाल बयान की कि दो आदमियों जैसी है जो लाहे के जुब्बे हाथ, सीना और ह़लक़ तक पहने हुए हैं। स़दक़ा देने वाला जब भी स़दक़ा करता है तो उसके जुब्बे में कुशादगी हो जाती है और वो उसकी उँगलियों तक बढ़ जाता है और क़दम के निशानात को ढंक लेता है और बख़ील जब भी कभी स़दक़ा का इरादा करता है तो उसका जुब्बा उसे और चिमट जाता है और हर ह़ल्क़ा अपनी जगह पर जम जाता है। ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने देखा कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) इस त़रह अपनी मुबारक उँगलियों से अपने गिरेबान की त़रफ़ इशारा करके बता रहे थे कि तुम देखोगे कि वो उसमें वुस्अ़त पैदा करना चाहेगा लेकिन वुस्अ़त पैदा नहीं होगी। इसकी मुताबअ़त इब्ने त़ाउस ने अपने वालिद से की है और अबुज़्ज़िनाद ने अअ़रज से की। दो जुब्बों के ज़िक्र के साथ और हंज़ला ने बयान किया कि मैंने त़ाउस से सुना, उन्होंने ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा, जुब्बतान और जा'फ़र ने अअ़रज के वास्ते से जुन्नतान का लफ़्ज़ बयान किया है। (राजेअ़ : 1443)

٥٧٩٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ نَافِعٍ، عَنِ الْحَسَنِ، عَنْ طَاوُسٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: ضَرَبَ رَسُولُ اللهِ ﷺ مَثَلَ الْبَخِيلِ وَالْمُتَصَدِّقِ كَمَثَلِ رَجُلَيْنِ عَلَيْهِمَا جُبَّتَانِ مِنْ حَدِيدٍ قَدِ اضْطُرَّتْ أَيْدِيهِمَا إِلَى ثُدِيِّهِمَا وَتَرَاقِيهِمَا فَجَعَلَ الْمُتَصَدِّقُ كُلَّمَا تَصَدَّقَ بِصَدَقَةٍ انْبَسَطَتْ عَنْهُ حَتَّى تَغْشَى أَنَامِلَهُ وَتَعْفُوَ أَثَرَهُ وَجَعَلَ الْبَخِيلُ كُلَّمَا هَمَّ بِصَدَقَةٍ قَلَصَتْ وَأَخَذَتْ كُلُّ حَلْقَةٍ بِمَكَانِهَا، قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: فَأَنَا رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: بِإِصْبَعِهِ هَكَذَا فِي جَيْبِهِ فَلَوْ رَأَيْتَهُ يُوَسِّعُهَا وَلاَ تَتَوَسَّعُ. تَابَعَهُ ابْنُ طَاوُسٍ عَنْ أَبِيهِ، وَأَبُو الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ فِي الْجُبَّتَيْنِ. وَقَالَ حَنْظَلَةُ: سَمِعْتُ طَاوُسًا سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ يَقُولُ: جُبَّتَانِ. وَقَالَ جَعْفَرُ بْنُ رَبِيعَةَ عَنِ الأَعْرَجِ جُنَّتَانِ. [راجع: ١٤٤٣]

तश्रीह : जुब्बतान से दो कुर्ते और जुन्नतान से दो ज़िरहें मुराद हैं अपने गिरेबान की त़रफ़ इशारा करने ही से बाब का मत़लब निकलता है कि आपके कुर्ते का गिरेबान सीने पर था।

बाब 10 : जिसने सफ़र में तंग आस्तीनों का जुब्बा पहना

١٠- باب مَنْ لَبِسَ جُبَّةً ضَيِّقَةَ الْكُمَّيْنِ فِي السَّفَرِ

5798. हमसे क़ैस बिन ह़फ़्स़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल वाह़िद ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे अबुज़्ज़ुह़ा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे मसरूक़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे मुग़ीरह बिन शुअ़बा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) क़ज़ा-ए-ह़ाजत के लिये बाहर तशरीफ़ ले गये फिर वापस आए तो मैं पानी लेकर ह़ाज़िर था। आपने वुज़ू किया आप शामी जुब्बा पहने हुए थे, आपने कुल्ली की और नाक में पानी डाला और अपना चेहरा धोया फिर आप अपनी आस्तीनें चढ़ाने लगे लेकिन वो तंग थी इसलिये आपने अपने हाथ जुब्बा के नीचे से निकाले और उन्हें धोया और सर पर और मोज़ों पर मसह़ किया।

(राजेअ़ : 182)

٥٧٩٨- حَدَّثَنَا قَيْسُ بْنُ حَفْصٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو الضُّحَى قَالَ: حَدَّثَنِي مَسْرُوقٌ، قَالَ: حَدَّثَنِي الْمُغِيرَةُ بْنُ شُعْبَةَ. قَالَ: انْطَلَقَ النَّبِيُّ ﷺ لِحَاجَتِهِ ثُمَّ أَقْبَلَ فَتَلَقَّيْتُهُ بِمَاءٍ فَتَوَضَّأَ وَعَلَيْهِ جُبَّةٌ شَامِيَّةٌ. فَمَضْمَضَ وَاسْتَنْشَقَ وَغَسَلَ وَجْهَهُ فَذَهَبَ يُخْرِجُ يَدَيْهِ مِنْ كُمَّيْهِ فَكَانَا ضَيِّقَيْنِ فَأَخْرَجَ يَدَيْهِ مِنْ تَحْتِ جُبَّةٍ فَغَسَلَهُمَا وَمَسَحَ بِرَأْسِهِ وَعَلَى خُفَّيْهِ.

[راجع: ١٨٢]

तंग आस्तीनों का जुब्बा पहनना भी ष़ाबित हुआ लिबास के बारे में शरीअ़त में बहुत वुस्अ़त है इसलिये कि हर मुल्क और हर क़ौम का लिबास अलग अलग होता है जाइज़ या नाजाइज़ के चंद हुदूद बयान करके उनके लिबास को उनके ह़ालात पर छोड़ दिया गया है।

बाब 11 : लड़ाई में ऊन का जुब्बा पहनना

١١- باب لُبْسِ جُبَّةِ الصُّوفِ فِي الْغَزْوِ

5799. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, कहा हमसे ज़करिया ने बयान किया, उनसे आ़मिर ने, उनसे उ़र्वा बिन मुग़ीरह ने और उनसे उनके वालिद ह़ज़रत मुग़ीरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं एक रात सफ़र में नबी करीम (ﷺ) के साथ था आपने पूछा तुम्हारे पास पानी है? मैंने अ़र्ज़ किया कि जी हाँ। आँह़ज़रत (ﷺ) अपनी सवारी से उतरे और चलते रहे यहाँ तक कि रात की तारीकी में आप छुप गये फिर वापस तशरीफ़ लाए तो मैंने बर्तन का पानी आपको इस्ते'माल कराया आँह़ज़रत (ﷺ) ने अपना चेहरा धोया, हाथ धोये आप ऊन का जुब्बा पहने हुए थे जिसकी आस्तीन चढ़ाना आपके लिये दुश्वार था

٥٧٩٩- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا زَكَرِيَّا، عَنْ عَامِرٍ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الْمُغِيرَةِ، عَنْ أَبِيهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ ذَاتَ لَيْلَةٍ فِي سَفَرٍ فَقَالَ : ((أَمَعَكَ مَاءٌ))؟ قُلْتُ: نَعَمْ. فَنَزَلَ عَنْ رَاحِلَتِهِ فَمَشَى حَتَّى تَوَارَى عَنِّي فِي سَوَادِ اللَّيْلِ. ثُمَّ جَاءَ فَأَفْرَغْتُ عَلَيْهِ الإِدَاوَةَ فَغَسَلَ وَجْهَهُ وَيَدَيْهِ

وَعَلَيْهِ جُبَّةٌ مِنْ صُوفٍ فَلَمْ يَسْتَطِعْ أَنْ يُخْرِجَ ذِرَاعَيْهِ مِنْهَا حَتَّى أَخْرَجَهُمَا مِنْ أَسْفَلِ الْجُبَّةِ فَغَسَلَ ذِرَاعَيْهِ، ثُمَّ مَسَحَ بِرَأْسِهِ، ثُمَّ أَهْوَيْتُ لأَنْزِعَ خُفَّيْهِ فَقَالَ: ((دَعْهُمَا فَإِنِّي أَدْخَلْتُهُمَا طَاهِرَتَيْنِ)) فَمَسَحَ عَلَيْهِمَا)).[راجع: ١٨٢]

चुनाँचे आपने अपने हाथ जुब्बा के नीचे से निकाले और बाज़ुओं को (कोहनियों तक) धोया। फिर सर पर मसह किया फिर मैं बढ़ा कि आँहज़रत (ﷺ) के मोज़े उतार दूँ लेकिन आपने फ़र्माया कि रहने दो मैंने त़हारत के बाद उन्हें पहना था चुनाँचे आपने उन पर मसह किया। (राजेअ : 182)

बाब और ह़दीष़ में मुत़ाबक़त ज़ाहिर है।

١٢- باب الْقَبَاءِ وَفَرُّوجِ حَرِيرٍ.

बाब 12 : क़बा और रेशमी फ़र्रूज के बयान में

وَهُوَ الْقَبَاءُ وَيُقَالُ : هُوَ الَّذِي لَهُ شَقٌّ مِنْ خَلْفِهِ.

फ़र्रूज भी क़बा ही को कहते हैं। कुछ ने कहा कि फ़र्रूज उस क़बा को कहते हैं जिसमें पीछे चाक होता है।

٥٨٠٠- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ. عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ. عَنِ الْمِسْوَرِ بْنِ مَخْرَمَةَ، قَالَ: قَسَمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ أَقْبِيَةً وَلَمْ يُعْطِ مَخْرَمَةَ شَيْئًا فَقَالَ مَخْرَمَةُ يَا بُنَيَّ انْطَلِقْ بِنَا إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَانْطَلَقْتُ مَعَهُ فَقَالَ: ادْخُلْ فَادْعُهُ لِي قَالَ: فَدَعَوْتُهُ لَهُ فَخَرَجَ إِلَيْهِ وَعَلَيْهِ قَبَاءٌ مِنْهَا فَقَالَ: ((خَبَأْتُ هَذَا لَكَ)) قَالَ: فَنَظَرَ إِلَيْهِ فَقَالَ : ((رَضِيَ مَخْرَمَةُ)). [راجع: ٥٨٠٠]

5800. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने और उनसे ह़ज़रत मिस्वर बिन मख़्रमा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने चंद क़बाएँ तक़्सीम कीं और ह़ज़रत मख़्रमा (रज़ि.) को कुछ नहीं दिया तो ह़ज़रत मख़्रमा (रज़ि.) ने कहा बेटे हमें रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास ले चलो चुनाँचे मैं अपने वालिद को साथ लेकर चला, उन्होंने मुझसे कहा कि अंदर जाओ और आँह़ज़रत (ﷺ) से मेरा ज़िक्र कर दो। मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) से ह़ज़रत मख़्रमा (रज़ि.) का ज़िक्र किया तो आप बाहर तशरीफ़ लाए आँह़ज़रत (ﷺ) उन्हीं क़बाओं में से एक क़बा लिये हुए थे। आपने फ़र्माया कि ये मैंने तुम्हारे ही लिये रख छोड़ी थी। मिस्वर ने बयान किया कि मख़्रमा (रज़ि.) ने आँह़ज़रत (ﷺ) की त़रफ़ देखा तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मख़्रमा ख़ुश हो गये। (राजेअ : 5800)

٥٨٠١- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ، عَنْ أَبِي الْخَيْرِ، عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ: أُهْدِيَ لِرَسُولِ اللهِ ﷺ فَرُّوجُ حَرِيرٍ فَلَبِسَهُ، ثُمَّ صَلَّى فِيهِ ثُمَّ انْصَرَفَ فَنَزَعَهُ نَزْعًا شَدِيدًا - كَالْكَارِهِ لَهُ - ثُمَّ

5801. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी ह़बीब ने, उनसे अबुल ख़ैर ने और उनसे ह़ज़रत उ़क़्बा बिन आ़मिर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) को रेशम की फ़र्रूज (क़बा) हदिया में दी गई। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उसे पहना (रेशम मर्दों के लिये हुर्मत के हुक्म से पहले) और उसी को पहने हुए नमाज़ पढ़ी। फिर आपने उसे बड़ी तेज़ी के साथ उतार डाला जैसे आप

قَالَ: ((لاَ يَنْبَغِي هَذَا لِلْمُتَّقِينَ)). تَابَعَهُ عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، عَنِ اللَّيْثِ وَقَالَ غَيْرُهُ: فَرُّوجُ حَرِيرٍ. [راجع: ٣٧٥]

इससे नागवारी महसूस करते हूँ फिर फ़र्माया कि ये मुत्तक़ियों के लिये मुनासिब नहीं है। इस रिवायत की मुताबअ़त अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने की, उनसे लैष़ ने और ग़ैर अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने कहा कि फ़र्रूज हरीर। (राजेअ़ : 375)

तश्रीह : इसमें ये इश्काल पैदा होता है कि ये क़बाएँ रेशमी थीं आपने क्यूँकर पहनी। इसका जवाब ये है कि शायद उस वक़्त तक रेशमी कपड़ा मर्दों के लिये ह़राम न हुआ होगा या आपने उस क़बा को बत़ौरे ह़िफ़ाज़त अपने ऊपर डाल लिया होगा, ये पहनना नहीं है जैसे कोई किसी को देना चाहता हो उसके बाद रेशमी कपड़ा मर्दों पर ह़राम हो गया।

١٣- باب الْبَرَانِسِ

बाब 13 : बरानिस या'नी टोपी पहनना

٥٨٠٢- وقَالَ لِي مُسَدَّدٌ: حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي قَالَ: رَأَيْتُ عَلَى أَنَسٍ بُرْنُسًا أَصْفَرَ مِنْ خَزٍّ.

5802. और कहा मुझसे मुसद्दद ने और कहा हमसे मुअ़तमिर ने कि मैंने अपने बाप से सुना, कहा उन्होंने कि मैंने ह़ज़रत अनस (रज़ि.) पर रेशमी ज़र्द टोपी को देखा।

٥٨٠٣- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، قَالَ : حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ أَنَّ رَجُلاً قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ مَا يَلْبَسُ الْمُحْرِمُ مِنَ الثِّيَابِ؟ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ ((لاَ تَلْبَسُوا الْقُمُصَ، وَلاَ الْعَمَائِمَ، وَلاَ السَّرَاوِيلاَتِ، وَلاَ الْبَرَانِسَ، وَلاَ الْخِفَافَ، إِلاَّ أَحَدٌ لاَ يَجِدُ النَّعْلَيْنِ فَلْيَلْبَسْ خُفَّيْنِ وَلْيَقْطَعْهُمَا أَسْفَلَ مِنَ الْكَعْبَيْنِ، وَلاَ تَلْبَسُوا مِنَ الثِّيَابِ شَيْئًا مَسَّهُ زَعْفَرَانٌ وَلاَ وَرْسٌ)). [راجع: ١٣٤]

5803. हमसे इस्माईल ने बयान किया उन्होंने कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने बयान किया, उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि एक शख़्स़ ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मुह़रिम किस त़रह़ का कपड़ा पहने? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया (मुह़रिम के लिये) कि क़मीस़ न पहनो न अ़मामे न पाजामे, न बुरुंस और न मोज़े अल्बत्ता अगर किसी को चप्पल न मिले तो वो (चमड़े के) मोज़ों को टख़्ने से नीचे तक काटकर उन्हें पहन सकता है और न कोई ऐसा कपड़ा पहनो जिसमें ज़ा'फ़रान या विर्स लगाया गया हो। (राजेअ़ : 134)

١٤- باب السَّرَاوِيلِ

बाब 14 : पाजामा पहनने के बारे में

٥٨٠٤- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَمْرٍو، عَنْ جَابِرِ بْنِ زَيْدٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ لَمْ يَجِدْ إِزَارًا فَلْيَلْبَسْ سَرَاوِيلَ، وَمَنْ لَمْ يَجِدْ نَعْلَيْنِ فَلْيَلْبَسْ خُفَّيْنِ)). [راجع: ١٧٤٠]

5804. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, उनसे अ़म्र ने, उनसे जाबिर बिन ज़ैद ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने (मुह़रिम के बारे में) फ़र्माया जिसे तहमद न मिले वो पाजामा पहने और जिसे चप्पल न मिले वो मोज़े पहनें। (राजेअ़ : 1740)

٥٨٠٥- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ،

5805. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने

कहा हमसे जुवैरिया ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया कि एक स़ाहब ने खड़े होकर अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! एह़राम बाँधने के बाद हमें किस चीज़ के पहनने का हुक्म है? फ़र्माया कि क़मीस़ न पहनो न पाजामे, न अ़मामे, न बुरुंस और न मोज़े पहनो। अल्बत्ता अगर किसी के पास चप्पल न हों तो वो चमड़े के ऐसे मोज़े पहने जो टख़्नों से नीचे हों और कोई ऐसा कपड़ा न पहनो जिसमें ज़ा'फ़रान और विर्स लगा हुआ हो। (राजेअ़ : 134)

حدثنا جويرية، عن نافع عن عبد الله قال قام رجل فقال: يا رسول الله ما تأمرنا أن نلبس إذا أحرمنا؟ قال: ((لا تلبسوا القميص والسراويل والعمائم والبرانس والخفاف. إلا أن يكون رجل ليس له نعلان فليلبس الخفين أسفل من الكعبين. ولا تلبسوا شيئا من الثياب مسه زعفران ولا ورس)). [راجع: ١٣٤]

बाब 15 : अ़मामे के बयान में

١٥- باب الْعَمَائِمِ

5806. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान स़ौरी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने ज़ुह्री से सुना, उन्होंने कहा कि मुझे सालिम ने ख़बर दी, उन्हें उनके वालिद (ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ड़मर रज़ि.) ने ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुहरिम क़मीस़ न पहने, न अ़मामा पहने, न पाजामा, न बुरुंस और न कोई ऐसा कपड़ा पहने जिसमें ज़ा'फ़रान और विर्स लगा हो और न मोज़े पहने अल्बत्ता अगर किसी को चप्पल न मिली तो मोज़ों को टख़्नों के नीचे तक काट दे (फिर पहने)। (राजेअ़ : 134)

٥٨٠٦- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عبدِ الله، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: سَمِعْتُ الزُّهْرِيَّ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَالِمٌ عَنْ أَبِيهِ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لاَ يَلْبَسُ الْمُحْرِمُ الْقَمِيصَ، وَلاَ الْعِمَامَةَ، وَلاَ السَّرَاوِيلَ، وَلاَ الْبُرْنُسَ، وَلاَ ثَوْبًا مَسَّهُ زَعْفَرَانٌ وَلاَ وَرْسٌ وَلاَ الْخُفَّيْنِ، إِلاَّ لِمَنْ لَمْ يَجِدِ النَّعْلَيْنِ فَإِنْ لَمْ يَجِدْهُمَا فَلْيَقْطَعْهُمَا أَسْفَلَ مِنَ الْكَعْبَيْنِ)). [راجع: ١٣٤]

बाब 16 : सर पर कपड़ा डालकर सर छुपाना

١٦- باب التَّقَنُّعِ

और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) बाहर निकले और सरे मुबारक पर एक स्याह पट्टी लगा हुआ अ़मामा था और अनस (रज़ि.) ने बायन किया कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने अपने सर पर चादर का कोना लपेट लिया था।

ये रिवायत आगे मौस़ूलन ज़िक्र होगी।

وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: خَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ وَعَلَيْهِ عِصَابَةٌ دَسْمَاءُ، قَالَ أَنَسٌ: عَصَبَ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى رَأْسِهِ حَاشِيَةَ بُرْدٍ.

5807. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम बिन ड़र्वा ने ख़बर दी, उन्हें मअ़मर ने, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें ड़र्वा ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि बहुत से मुसलमान ह़ब्शा हिजरत करके चले गये और अबूबक्र (रज़ि .) भी हिजरत की तैयारियाँ करने लगे

٥٨٠٧- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى، أَخْبَرَنَا هِشَامٌ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ الله عَنْهَا قَالَتْ: هَاجَرَ إِلَى الْحَبَشَةِ رِجَالٌ مِنَ

الْمُسْلِمِينَ، وَتَجَهَّزَ أَبُو بَكْرٍ مُهَاجِرًا فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((عَلَى رِسْلِكَ فَإِنِّي أَرْجُو أَنْ يُؤْذَنَ لِي)) فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: أَوَ تَرْجُوهُ بِأَبِي أَنْتَ؟ قَالَ: ((نَعَمْ)) فَحَبَسَ أَبُو بَكْرٍ نَفْسَهُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ لِصُحْبَتِهِ وَعَلَفَ رَاحِلَتَيْنِ كَانَتَا عِنْدَهُ وَرَقَ السَّمُرِ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ قَالَ عُرْوَةُ: قَالَتْ عَائِشَةُ فَبَيْنَمَا نَحْنُ يَوْمًا جُلُوسٌ فِي بَيْتِنَا فِي نَحْرِ الظَّهِيرَةِ فَقَالَ قَائِلٌ لأَبِي بَكْرٍ: هَذَا رَسُولُ اللهِ ﷺ مُقْبِلاً مُتَقَنِّعًا فِي سَاعَةٍ لَمْ يَكُنْ يَأْتِينَا فِيهَا قَالَ أَبُوبَكْرٍ: فِدًا لَهُ بِأَبِي وَأُمِّي وَاللهِ إِنْ جَاءَ بِهِ فِي هَذِهِ السَّاعَةِ إِلاَّ لأَمْرٍ فَجَاءَ النَّبِيُّ ﷺ فَاسْتَأْذَنَ فَأَذِنَ لَهُ فَدَخَلَ فَقَالَ حِينَ دَخَلَ لأَبِي بَكْرٍ: ((أَخْرِجْ مَنْ عِنْدَكَ)). قَالَ: إِنَّمَا هُمْ أَهْلُكَ بِأَبِي أَنْتَ يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ: ((فَإِنِّي قَدْ أُذِنَ لِي فِي الْخُرُوجِ)) قَالَ: فَالصُّحْبَةَ بِأَبِي أَنْتَ يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ: ((نَعَمْ)) فَخُذْ بِأَبِي أَنْتَ يَا رَسُولَ اللهِ إِحْدَى رَاحِلَتَيَّ هَاتَيْنِ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((بِالثَّمَنِ)) قَالَتْ: فَجَهَّزْنَاهُمَا أَحَثَّ الْجَهَازِ وَوَضَعْنَا لَهُمَا سُفْرَةً فِي جِرَابٍ فَقَطَعَتْ أَسْمَاءُ بِنْتُ أَبِي بَكْرٍ قِطْعَةً مِنْ نِطَاقِهَا فَأَوْكَأَتْ بِهِ الْجِرَابَ وَلِذَلِكَ كَانَتْ تُسَمَّى ذَاتَ النِّطَاقِ، ثُمَّ لَحِقَ النَّبِيُّ ﷺ وَأَبُو بَكْرٍ بِغَارٍ فِي جَبَلٍ يُقَالُ لَهُ: ثَوْرٌ، فَمَكَثَ فِيهِ ثَلاَثَ لَيَالٍ يَبِيتُ عِنْدَهُمَا عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي بَكْرٍ وَهُوَ

लेकिन नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि अभी ठहर जाओ क्योंकि मुझे भी उम्मीद है कि मुझे (हिजरत की) इजाज़त दी जाएगी। अबूबक्र (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया गया आपको भी उम्मीद है? मेरा बाप आप पर क़ुर्बान। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ। चुनाँचे अबूबक्र (रज़ि.) आँहज़रत (ﷺ) के साथ रहने के ख़याल से रुक गये और अपनी दो ऊँटनियों को बबूल के पत्ते खिलाकर चार महीने तक उन्हें ख़ूब तैयार करते रहे। उ़र्वा ने बयान किया कि आ़इशा (रज़ि.) ने कहा हम एक दिन दोपहर के वक़्त अपने घर में बैठे हुए थे कि एक शख़्स ने अबूबक्र (रज़ि.) से कहा रसूलुल्लाह (ﷺ) सर ढंके हुए तशरीफ़ ला रहे हैं । उस वक़्त उ़मूमन आँहज़रत (ﷺ) हमारे यहाँ तशरीफ़ नहीं लाते थे। अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा मेरे माँ-बाप आँहुज़ूर (ﷺ) पर क़ुर्बान हों, आँहुज़ूर (ﷺ) ऐसे वक़्त किसी वजह ही से तशरीफ़ ला सकते हैं। आँहुज़ूर (ﷺ) ने मकान पर पहुँचकर इजाज़त चाही और अबूबक्र स़िद्दीक़ (रज़ि.) ने आपको इजाज़त दी। आँहुज़ूर (ﷺ) अंदर तशरीफ़ लाए और अंदर दाख़िल होते ही अबूबक्र (रज़ि.) से फ़र्माया कि जो लोग तुम्हारे पास इस वक़्त हैं उन्हें उठा दो। अबूबक्र स़िद्दीक़ (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया कि मेरा बाप आप पर क़ुर्बान हो या रसूलल्लाह (ﷺ)! ये सब आपके घर ही के अफ़राद हैं। आँहुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुझे हिजरत की इजाज़त मिल गई है। अबूबक्र स़िद्दीक़ (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया कि फिर रसूलुल्लाह! मुझे रिफ़ाक़त का शर्फ़ ह़ासिल रहेगा? आपने फ़र्माया कि हाँ। अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मेरे बाप आप पर क़ुर्बान हों उन दो ऊँटनियों में से एक आप ले लें। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया लेकिन क़ीमत से। आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर हमने बहुत जल्दी जल्दी सामाने सफ़र तैयार किया और सफ़र का नाश्ता एक थैले में रखा। अस्मा बिन्ते अबीबक्र (रज़ि.) ने अपने पटके के एक टुकड़े से थैले का मुँह को बाँधा। इसी वजह से उन्हें ज़ातुन्नताक़ैन (दो पटके वाली) कहने लगे। फिर आँहज़रत (ﷺ) और अबूबक्र स़िद्दीक़ (रज़ि.) ष़ौर नामी पहाड़ की एक ग़ार में जाकर छुप गये और तीन दिन तक उसी में ठहरे रहे। अ़ब्दुल्लाह बिन अबीबक्र (रज़ि.) रात आप ह़ज़रात के पास ही गुज़ारते थे। वो नौजवान

غُلَامٌ شَابٌّ لَقِنٌ ثَقِفٌ فَيَرْحَلُ مِنْ عِنْدِهِمَا سَحَرًا فَيُصْبِحُ مَعَ قُرَيْشٍ بِمَكَّةَ كَبَائِتٍ فَلاَ يَسْمَعُ أَمْرًا يُكَادَانِ بِهِ إِلاَّ وَعَاهُ حَتَّى يَأْتِيَهُمَا بِخَبَرِ ذَلِكَ حِينَ يَخْتَلِطُ الظَّلاَمُ وَيَرْعَى عَلَيْهِمَا عَامِرُ بْنُ فُهَيْرَةَ مَوْلَى أَبِي بَكْرٍ مِنْحَةً مِنْ غَنَمٍ فَيُرِيحُهَا عَلَيْهِمَا حِينَ تَذْهَبُ سَاعَةٌ مِنَ الْعِشَاءِ فَيَبِيتَانِ فِي رِسْلِهَا حَتَّى يَنْعِقَ بِهَا عَامِرُ بْنُ فُهَيْرَةَ بِغَلَسٍ يَفْعَلُ ذَلِكَ كُلَّ لَيْلَةٍ مِنْ تِلْكَ اللَّيَالِي الثَّلاَثِ. [راجع: ٤٧٦]

ज़हीन और समझदार थे। सुबह तड़के में वहाँ से चल देते थे और सुबह होते होते मक्का के क़ुरैश में पहुँच जाते थे। जैसे रात में मक्का ही में रहे हों। मक्का मुकर्रमा में जो बात भी इन हज़रात के ख़िलाफ़ होती उसे महफ़ूज़ रखते और ज्यों ही रात का अंधेरा छा जाता ग़ारे ष़ौर में इन हज़रात के पास पहुँचकर तमाम तफ़्सीलात की ख़बर देते। अबूबक्र (रज़ि.) के मौला आमिर बिन फ़ुहैरा (रज़ि.) दूध देने वाली बकरियाँ चराते थे और जब रात का एक हिस्सा गुज़र जाता तो उन बकरियों को ग़ारे ष़ौर की तरफ़ हाँक लाते थे। आप हज़रात बकरियों के दूध पर रात गुज़ारते और सुबह की पौ फटते ही आमिर बिन फ़ुहैरा (रज़ि.) वहाँ से रवाना हो जाते। इन तीन रातों में उन्होंने हर रात ऐसा ही किया। (राजेअ : 476)

तश्रीह : बाब और हदीष़ में ये मुताबक़त है कि आँहज़रत (ﷺ) सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) के घर सर ढाँककर तशरीफ़ लाए। रूमाल से सर ढाँकने का ये रिवाज अरबों में आज तक मौजूद है, वहाँ की गर्म आबो हवा के लिये ये अमल ज़रूरी है। इस हदीष़ में हिजरत के बारे में कई उमूर बयान किये गये हैं जिनकी मज़ीद तफ़्सीलात वाक़िया-ए-हिजरत में इस हदीष़ के ज़ेल में मुलाहिज़ा की जा सकती हैं।

١٧ - باب الْمِغْفَرِ

बाब 17 : ख़ूद का बयान

٥٨٠٨ - حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا مَالِكٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ دَخَلَ مَكَّةَ عَامَ الْفَتْحِ وَعَلَى رَأْسِهِ الْمِغْفَرُ. [راجع: ١٨٤٦]

5808. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे ज़ुहरी ने और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) फ़तहे मक्का के साल (मक्का मुकर्रमा में) दाख़िल हुए तो आपके सर पर ख़ूद थी।

तश्रीह : इस हदीष़ से ये निकला कि अगर हज्ज या उमरे की निय्यत से न हो और आदमी किसी काम काज या तिजारत के लिये मक्का शरीफ़ में जाए तो बग़ैर एहराम के भी दाख़िल हो सकता है।

١٨ - باب الْبُرُودِ وَالْحِبَرِ الشَّمْلَةِ

बाब 18 : धारीदार चादरों, यमनी चादरों और कमलियों का बयान

وَقَالَ خَبَّابٌ: شَكَوْنَا إِلَى النَّبِيِّ ﷺ وَهُوَ مُتَوَسِّدٌ بُرْدَةً لَهُ.

और हज़रत ख़ब्बाब बिन अरत (रज़ि.) ने कहा कि हमने नबी करीम (ﷺ) से (मुश्रिकीने मक्का के मज़ालिम की) शिकायत की उस वक़्त आप अपनी एक चादर पर टेक लगाए हुए थे।

मा'लूम हुआ कि ऐसे मौक़ों पर चादरों या कमलियों वग़ैरह का इस्ते'माल दुरुस्त है।

٥٨٠٩ - حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ،

5809. हमसे इस्माईल बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा

قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ كُنْتُ أَمْشِي مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَعَلَيْهِ بُرْدٌ نَجْرَانِيٌّ غَلِيظُ الْحَاشِيَةِ فَأَدْرَكَهُ أَعْرَابِيٌّ فَجَبَذَهُ بِرِدَائِهِ جَبْذَةً شَدِيدَةً، حَتَّى نَظَرْتُ إِلَى صَفْحَةِ عَاتِقِ رَسُولِ اللهِ ﷺ قَدْ أَثَّرَتْ بِهَا حَاشِيَةُ الْبُرْدِ مِنْ شِدَّةِ جَبْذَتِهِ، ثُمَّ قَالَ: يَا مُحَمَّدُ مُرْ لِي مِنْ مَالِ اللهِ الَّذِي عِنْدَكَ؟ فَالْتَفَتَ إِلَيْهِ رَسُولُ اللهِ ﷺ ثُمَّ ضَحِكَ، ثُمَّ أَمَرَ لَهُ بِعَطَاءٍ.

[راجع: ٣١٤٩]

कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे इस्हाक़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबी त़लहा ने और उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ चल रहा था। आँह़ज़रत (ﷺ) के जिस्मे मुबारक पर (यमन के) नजरान की बनी हुई मोटे ह़ाशिये की एक चादर थी। इतने में एक देहाती आ गया और उसने आँह़ज़रत (ﷺ) की चादर को पकड़कर इतनी ज़ोर से खींचा कि मैंने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के मूंढे पर देखा कि उसके ज़ोर से खींचने की वजह से निशान पड़ गया था। फिर उनसे कहा ऐ मुह़म्मद (ﷺ)! मुझे इस माल में से दिये जाने का हुक्म कीजिए जो अल्लाह का माल आपके पास है। आँह़ज़रत (ﷺ) उसकी त़रफ़ मुतवज्जह हुए और मुस्कुराए और आपने उसे दिये जाने का हुक्म फ़र्माया। (राजेअ़ : 3149)

तश्रीह़ : आँहुज़ूर (ﷺ) के अख़्लाक़े फ़ाज़िला ऐसे थे कि उस गंवार की उस ह़रकत का आपने कोई ख़्याल नहीं फ़र्माया बल्कि हंसकर टाल दिया और उसे ख़ैरात भी मर्ह़मत फ़र्मा दी। फ़िदा रूही (ﷺ)। उस वक़्त जिस्मे मुबारक पर चादर थी। बाब और ह़दीष़ में यही मुत़ाबक़त है।

٥٨١٠- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ: جَاءَتِ امْرَأَةٌ بِبُرْدَةٍ قَالَ سَهْلٌ: هَلْ تَدْرُونَ مَا الْبُرْدَةُ؟ قَالَ: نَعَمْ، هِيَ الشَّمْلَةُ مَنْسُوجٌ فِي حَاشِيَتِهَا. قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنِّي نَسَجْتُ هَذِهِ بِيَدِي أَكْسُوكَهَا فَأَخَذَهَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُحْتَاجًا إِلَيْهَا، فَخَرَجَ إِلَيْنَا وَإِنَّهَا لإِزَارُهُ فَجَسَّهَا رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اكْسُنِيهَا؟ قَالَ: ((نَعَمْ))، فَجَلَسَ مَا شَاءَ اللهُ فِي الْمَجْلِسِ ثُمَّ رَجَعَ فَطَوَاهَا ثُمَّ أَرْسَلَ بِهَا إِلَيْهِ فَقَالَ لَهُ

5810. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे यअ़क़ूब बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने बयान किया, उनसे अबू ह़ाज़िम ने और उनसे ह़ज़रत सहल बिन सअ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि एक औ़रत एक चादर लेकर आई (जो उसने ख़ुद बुनी थी) ह़ज़रत सहल (रज़ि.) ने कहा तुम्हें मा'लूम है वो पर्दा क्या था? फिर बतलाया कि ये एक अदना चादर थी जिसके किनारों पर ह़ाशिया होता है। उन ख़ातून ने ह़ाज़िर होकर अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! ये चादर मैंने ख़ास़ आपके ओढ़ने के लिये बुनी है। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने वो चादर उनसे इस त़रह़ ली गोया आपको इसकी ज़रूरत है। फिर आँह़ज़रत (ﷺ) उसे तहमद के त़ौर पर पहनकर हमारे पास तशरीफ़ लाए। जमाअ़ते स़ह़ाबा मे से एक स़ाह़ब (अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़) ने उस चादर को छुआ और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! ये मुझे इनायत कर दीजिए। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अच्छा। जितनी देर अल्लाह ने चाहा आप (ﷺ) मज्लिस में बैठे रहे फिर तशरीफ़ ले गये और उस चादर को लपेटकर उन स़ाह़ब के पास भिजवा दिया। स़ह़ाबा ने उस पर उनसे कहा तुमने अच्छी बात नहीं की कि आँह़ज़रत (ﷺ) से वो चादर मांग ली। तुम्हें मा'लूम है कि

الْقَوْمُ: مَا أَحْسَنْتَ سَأَلْتَهَا إِيَّاهُ وَقَدْ عَرَفْتَ أَنَّهُ لاَ يَرُدُّ سَائِلاً؟ فَقَالَ: الرَّجُلُ: وَاللهِ مَا سَأَلْتُهَا إِلاَّ لِتَكُونَ كَفَنِي يَوْمَ أَمُوتُ، قَالَ سَهْلٌ : فَكَانَتْ كَفَنَهُ.

[راجع: ١٢٧٧]

आँहज़रत (ﷺ) कभी किसी साइल को महरूम नहीं करते। उन साहब ने कहा अल्लाह की क़सम मैंने तो सिर्फ़ आँहज़रत (ﷺ) से ये इसलिये मांगी है कि जब मैं मरूँ तो ये मेरा कफ़न हो। हज़रत सहल (रज़ि.) ने बयान किया चुनाँचे वो चादर इस सहाबी के कफ़न ही में इस्ते'माल हुई। (राजेअ : 1277)

तश्रीह : ये हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) थे इस हदीष़ से निकला कि कफ़न के लिये बुज़ुर्गों का इस्तेमाल किया हुआ लिबास ले लेना जाइज़ है। वो ख़ातून किस क़दर ख़ुशनसीब थी जिसने अपने हाथों से आँहज़रत (ﷺ) के लिये वो ऊनी चादर बेहतरीन शक्ल में तैयार की और आपने उसे बख़ुशी क़ुबूल कर लिया फिर हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) भी कैसे ख़ुशनसीब हैं जिनको ये चादर कफ़न के लिये नसीब हुई चूँकि इस हदीष़ में आपके लिये ऊनी चादर का ज़िक्र है बाब से यही मुताबक़त है।

٥٨١١- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : حَدَّثَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((يَدْخُلُ الْجَنَّةَ مِنْ أُمَّتِي زُمْرَةٌ هِيَ سَبْعُونَ أَلْفًا تُضِيءُ وُجُوهُهُمْ إِضَاءَةَ الْقَمَرِ)) فَقَامَ عُكَّاشَةُ بْنُ مِحْصَنٍ الأَسَدِيُّ يَرْفَعُ نَمِرَةً عَلَيْهِ قَالَ: ادْعُ اللهَ لِي يَا رَسُولَ اللهِ أَنْ يَجْعَلَنِي مِنْهُمْ فَقَالَ: ((اللَّهُمَّ اجْعَلْهُ مِنْهُمْ)) ثُمَّ قَامَ رَجُلٌ مِنَ الأَنْصَارِ فَقَالَ : يَا رَسُولَ اللهِ أُدْعُ اللهَ أَنْ يَجْعَلَنِي مِنْهُمْ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((سَبَقَكَ عُكَّاشَةُ)).

[طرفه في : ٦٥٤٢].

5811. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, कहा मुझसे हज़रत सईद बिन मुसय्यिब ने बयान किया और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया मेरी उम्मत में से जन्नत में सत्तर हज़ार की एक जमाअत दाख़िल होगी उनके चेहरे चाँद की तरह चमक रहे होंगे। हज़रत उक्काशा बिन मिहसन असदी (रज़ि.) अपनी धारीदार चादर सम्भालते हुए उठे और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मेरे लिये भी दुआ कीजिए कि अल्लाह तआला मुझे भी उन्हीं में से बना दे। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ऐ अल्लाह! उक्काशा को भी उन्हीं में शामिल कर दे। उसके बाद क़बीला अंसार के एक सहाबी सअद बिन उबादा (रज़ि.) खड़े हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! दुआ फ़र्माएँ कि अल्लाह तआला मुझे भी उनमें से बना दे। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुमसे पहले उक्काशा दुआ करा चुका। अब उसका वक़्त नहीं रहा।

तश्रीह : इस रिवायत का मतलब दूसरी रिवायत से वाज़ेह होता है उसमें यूँ है कि पहले उक्काशा खड़े हुए कहने लगे या रसूलल्लाह (ﷺ)! दुआ कर दीजिए अल्लाह तआला मुझको उन सत्तर हज़ार में से कर दे। आपने दुआ फ़र्माई फिर हज़रत सअद बिन उबादा (रज़ि.) खड़े हुए उन्होंने कहा कि मेरे लिये भी दुआ फ़र्माइये। उस वक़्त आपने फ़र्माया कि तुमसे पहले उक्काशा के लिये दुआ क़ुबूल हो चुकी। मतलब ये था कि दुआ की क़ुबूलियत की घड़ी निकल चुकी ये कामयाबी उक्काशा की क़िस्मत में थी उनको हासिल हो चुकी।

5812. हमसे अ़म्र बिन आ़सिम ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम बिन यह्या ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया। क़तादा ने बयान किया कि मैंने अनस (रज़ि.) से पूछा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) को किस तरह का कपड़ा ज़्यादा पसंद था बयान किया कि ह़िबरा की सब्ज़ यमनी चादर। (5813)

٥٨١٢- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَاصِمٍ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ قَالَ : قُلْتُ لَهُ أَيُّ الثِّيَابِ كَانَ أَحَبَّ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ؟ قَالَ الْحِبَرَةُ. [طرفه في : ٥٨١٣].

क्योंकि वो मेल ख़ोरी और बहुत मज़बूत होती है।

5813. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबिल अस्वद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुआ़ज़ दस्तवाई ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) को तमाम कपड़ों में यमनी सब्ज़ चादर पहनना बहुत पसंद थी। (राजेअ़ : 5182)

٥٨١٣- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي الأَسْوَدِ، حَدَّثَنَا مُعَاذٌ، قَالَ : حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ أَحَبُّ الثِّيَابِ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ أَنْ يَلْبَسَهَا الْحِبَرَةُ.[راجع: ٥٨١٢]

5814. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्होंने कहा कि मुझे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ (रज़ि.) ने ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुत़ह्हरा ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने उन्हें ख़बर दी कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) की वफ़ात हुई तो आपकी नअ़श मुबारक पर एक सब्ज़ यमनी चादर डाल दी गई थी।

٥٨١٤- حَدَّثَنِي أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ، أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ أَخْبَرَتْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ حِينَ تُوُفِّيَ سُجِّيَ بِبُرْدٍ حِبَرَةٍ.

तश्रीह : यही सब्ज़ (हरा) रंग था जो आ़म इस्लाम में आज तक मक़्बूल है। तमाम अह़ादीष़े बाब में किसी न किसी ह़ालत में आँह़ज़रत (ﷺ) का मुख़्तलिफ़ औक़ात में मुख़्तलिफ़ रंगों की चादरों का इस्ते'माल का ज़िक्र है। बाब और अह़ादीष़े मज़्कूरा में यही मुत़ाबक़त है आगे और तफ़्सीली ज़िक्र आ रहा है।

बाब 19 : कमलियों और ऊनी ह़ाशियेदार चादरों के बयान में

١٩- باب الأَكْسِيَةِ وَالْخَمَائِصِ

कुसाअ ऊनी कमली अगर वो सिर्फ़ पाँच हाथ की हो तो ऐसी चादरों को ख़मीस़ा कहते हैं।

5815,16. मुझसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया कि मुझे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा ने ख़बर दी, उनसे ह़ज़रत आइशा और ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) पर जब आख़िरी मर्ज़ त़ारी हुआ

٥٨١٥، ٥٨١٦- حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ، أَنَّ عَائِشَةَ وَعَبْدَ اللهِ بْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ قَالاَ: لَمَّا نَزَلَ بِرَسُولِ اللهِ ﷺ طَفِقَ يَطْرَحُ خَمِيصَةً لَهُ

عَلَى وَجْهِهِ فَإِذَا اغْتَمَّ كَشَفَهَا عَنْ وَجْهِهِ فَقَالَ: وَهُوَ كَذَلِكَ ((لَعْنَةُ اللهِ عَلَى الْيَهُودِ وَالنَّصَارَى اتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَائِهِمْ مَسَاجِدَ))، يُحَذِّرُ مَا صَنَعُوا.

[راجع: ٤٣٥، ٤٣٦]

तो आप अपनी कमली चेहरा-ए-मुबारक पर डालते थे और जब सांस घुटने लगता तो चेहरा खोल लेते और उसी ह़ालत में फ़र्माते, यहूद व नस़ारा अल्लाह तआला की रहमत से दूर हो गये कि उन्होंने अपने अंबिया की क़ब्रों को सज्दागाह बना लिया। आँह़ज़रत (ﷺ) उनके अ़मले बद से (मुसलमानों को) डरा रहे थे। (राजेअ़ : 435,436)

तश्रीह : यहूद व नस़ारा से बढ़कर कमबख़्त वो मुसलमान हैं जिन्होंने बुज़ुर्गों और दुर्वेशों की क़ब्रों को मुज़य्यन करके दुकानों की शक्ल दे रखी है और वहाँ लोगों से सज्दा कराते हैं और उ़र्स करते हैं वहाँ अ़र्ज़िया लटकाते नियाज़ें चढ़ाते हैं। ये लोग क़ब्र के बाहर से ये काम करते हैं और वो बुज़ुर्ग क़ब्रों के अंदर से उन पर ला'नत करते हैं क्योंकि ये सब बुज़ुर्ग आँह़ज़रत (ﷺ) का तरीक़ा अपनाने वालों और आपकी मर्ज़ी पर चलने वाले थे। यही क़ब्रों के पुजारी अल्लाह के नज़दीक मुश्रिक और मल्ऊन हैं ख़्वाह ये कैसे ही नमाज़ी व ह़ाजी हों ।

हर्गिज़ तू अज़ाँ क़ौम नबाशी कि फ़रेबन्द   ह़क़ राबा सजूदे व नबी राबा दरूदे

٥٨١٧- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: صَلَّى رَسُولُ اللهِ ﷺ فِي خَمِيصَةٍ لَهُ لَهَا أَعْلاَمٌ فَنَظَرَ إِلَى أَعْلاَمِهَا نَظْرَةً فَلَمَّا سَلَّمَ قَالَ: ((اذْهَبُوا بِخَمِيصَتِي هَذِهِ إِلَى أَبِي جَهْمٍ فَإِنَّهَا أَلْهَتْنِي آنِفًا عَنْ صَلاَتِي وَائْتُونِي بِأَنْبِجَانِيَّةِ أَبِي جَهْمٍ)) بْنُ حُذَيْفَةَ بْنِ غَانِمٍ مِنْ بَنِي عَدِيِّ بْنِ كَعْبٍ.

[راجع: ٣٧٣]

5817. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपनी एक नक़्शी चादर में नमाज़ पढ़ी और उसके नक़्श व निगार पर नमाज़ ही में एक नज़र डाली। फिर सलाम फेरकर फ़र्माया कि मेरी ये चादर अबू जहम को वापस दे दो। उसने अभी मुझे मेरी नमाज़ से ग़ाफ़िल कर दिया था और अबू जहम की सादी चादर लेते आओ। ये अबू जहम बिन हुज़ैफ़ा बिन ग़ानिम बनी अ़दी बिन कअ़ब क़बीले में से थे। (राजेअ़ : 373)

٥٨١٨- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ، عَنْ حُمَيْدِ بْنِ هِلاَلٍ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ قَالَ: أَخْرَجَتْ إِلَيْنَا عَائِشَةُ كِسَاءً وَإِزَارًا غَلِيظًا فَقَالَتْ: قُبِضَ رُوحُ النَّبِيِّ ﷺ فِي هَذَيْنِ.

5818. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन अ़लिया ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुख़्तियानी ने बयान किया, उनसे हुमैद बिन हिलाल ने और उनसे अबू बुर्दा ने बयान किया कि ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने हमे एक मोटी कमली (कुसा)और एक मोटी इज़ार निकाल कर दिखाई और कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की रूह इन ही दो कपड़ों में क़ब्ज़ हुई थी।

٢٠- باب اشْتِمَالِ الصَّمَّاءِ

बाब 20 : इश्तिमाले स़म्मा का बयान

एक ही कपड़े को इस त़रह़ लपेट लेना कि हाथ या पैर बाहर न निकल सकें, उसे अ़रबी में इश्तिमालुस़्स़म्मा कहते हैं।

5819. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वह्हाब बिन अ़ब्दुल मजीद ष़क़फ़ी ने बयान किया, कहा हमसे उ़बैदुल्लाह उ़मरी ने बयान किया, उनसे ख़ुबैब बिन अ़ब्दुर्रहमान ने, उनसे ह़फ़्स़ बिन आ़स़िम ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने बेअ़ मुलामसा और मुनाबज़ा से मना किया और दो वक़्त नमाज़ों से भी आपने मना फ़र्माया नमाज़ फ़ज्र के बाद सूरज बुलंद होने तक और अ़स्र के बाद सूरज ग़ुरूब होने तक और उससे मना फ़र्माया कि कोई शख़्स़ सिर्फ़ एक कपड़ा जिस्म पर लपेटकर और घुटने ऊपर उठाकर इस त़रह़ बैठ जाए कि उसकी शर्मगाह पर आसमान व ज़मीन के दरम्यान कोई चीज़ न हो। और इश्तिमालुस़्स़म्माइ से मना फ़र्माया। (राजेअ़ : 368)

٥٨١٩- حدَّثني مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ، عَنْ خُبَيْبٍ، عَنْ حَفْصِ بْنِ عَاصِمٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: نَهَى النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم عَنِ الْمُلاَمَسَةِ وَالْمُنَابَذَةِ، وَعَنْ صَلاَتَيْنِ بَعْدَ الْفَجْرِ، حَتَّى تَرْتَفِعَ الشَّمْسُ وَبَعْدَ الْعَصْرِ حَتَّى تَغِيبَ الشَّمْسُ وَأَنْ يَحْتَبِيَ بِالثَّوْبِ الْوَاحِدِ لَيْسَ عَلَى فَرْجِهِ مِنْهُ شَيْءٌ بَيْنَهُ وَبَيْنَ السَّمَاءِ، وَأَنْ يَشْتَمِلَ الصَّمَّاءَ. [راجع: ٣٦٨]

तशरीह़ : स़म्मा इस त़रह़ चादर ओढ़ने को कहते हैं कि चादर को दाहिनी त़रफ़ से लेकर बाएँ शाने पर डालाा जाए और फिर वही किनारा पीछे से लेकर दाहिने शाने पर डाल लिया जाए और इस त़रह़ चादर में दोनों शानों को लपेट लिया जाए। इश्तिमाले स़म्माइ का मफ़्हूम ये है कि सिर्फ़ जिस्म पर एक चादर हो और उसके सिवा कोई दूसरा कपड़ा न हो। इस सूरत में बैठते वक़्त एक किनारा उठाना पड़ता था और उससे शर्मगाह खुल जाती थी। बेअ़े मुलामसा ये है कि जिस कपड़े को ख़रीदना हो बस उसे छू ले रात को या दिन को और उलट कर न देखने की शर्त़ हुई हो और बेअ़ मुनाबज़ा ये है कि एक–दूसरे की त़रफ़ अपना कपड़ा फेंक दे बस बेअ़ पूरी हो गई (यही शर्त़ हुई हो)। ये दोनों शक्ल धोखे से ख़ाली नहीं इसीलिये मना किया गया।

5820. हमसे यह़्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे यूनुस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्हें आ़मिर बिन सअ़द ने ख़बर दी और उनसे ह़ज़रत अबू सई़द ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दो त़रह़ के पहनावे और दो त़रह़ की ख़रीदा व फ़रोख़्त से मना किया। ख़रीद व फ़रोख़्त में मुलामसा और मुनाबज़ा से मना किया। मुलामिसा की सूरत ये थी कि एक शख़्स़ (ख़रीददार) दूसरे (बेचने वाले) के कपड़े को रात या दिन में किसी भी वक़्त बस छू देता (और देखे बग़ैर सिर्फ़ छूने से बेअ़ हो जाती) सिर्फ़ छूना ही काफ़ी था खोलकर देखा नहीं जाता था। मुनाबज़ा की सूरत ये थी कि एक शख़्स़ अपनी मिल्कियत का कपड़ा दूसरे की त़रफ़ फेंकता और दूसरा अपना कपड़ा फेंकता और बग़ैर देखे और बग़ैर बाहमी रज़ामन्दी के सिर्फ़ उसी से बैअ़ हो जाती और दो कपड़े (जिनसे आँहुज़ूर ﷺ ने मना किया उन्हीं में से एक)

٥٨٢٠- حدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يُونُسَ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَامِرُ بْنُ سَعْدٍ أَنَّ أَبَا سَعِيدٍ الْخُدْرِيَّ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ لِبْسَتَيْنِ وَعَنْ بَيْعَتَيْنِ، نَهَى عَنِ الْمُلاَمَسَةِ وَالْمُنَابَذَةِ فِي الْبَيْعِ وَالْمُلاَمَسَةُ لَمْسُ الرَّجُلِ ثَوْبَ الآخَرِ بِيَدِهِ بِاللَّيْلِ أَوْ بِالنَّهَارِ، وَلاَ يُقَلِّبُهُ إِلاَّ بِذَاكَ وَالْمُنَابَذَةُ أَنْ يَنْبِذَ الرَّجُلُ إِلَى الرَّجُلِ بِثَوْبِهِ وَيَنْبِذَ الآخَرُ ثَوْبَهُ وَيَكُونُ ذَلِكَ بَيْعَهُمَا عَنْ غَيْرِ نَظَرٍ وَلاَ تَرَاضٍ،

इश्तिमाले स़म्मा है। स़म्मा की सूरत ये थी कि अपना कपड़ा (एक चादर) अपने एक शाने पर इस त़रह डाला जाता कि एक किनारे से (शर्मगाह) खुल जाती और कोई दूसरा कपड़ा वहाँ नहीं होता था। दूसरे पहनावे का त़रीक़ा ये था कि बैठकर अपने एक कपड़े से कमर और पिण्डली बाँध लेते थे और शर्मगाह पर कोई कपड़ा नहीं होता था। (राजेअ़ : 367)

وَاللِّبْسَتَانِ اشْتِمَالُ الصَّمَّاءِ، وَالصَّمَّاءُ أَنْ يَجْعَلَ ثَوْبَهُ عَلَى أَحَدِ عَاتِقَيْهِ فَيَبْدُوَ أَحَدُ شِقَّيْهِ لَيْسَ عَلَيْهِ ثَوْبٌ، وَاللِّبْسَةُ الأُخْرَى احْتِبَاؤُهُ بِثَوْبِهِ وَهُوَ جَالِسٌ لَيْسَ عَلَى فَرْجِهِ مِنْهُ شَيْءٌ.
[راجع: ٣٦٧]

बाब 21 : एक कपड़े में गोट मारकर बैठना

٢١- باب الاحْتِبَاءِ فِي ثَوْبٍ وَاحِدٍ

5821. हमसे इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अअ़रज ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने दो त़रह के पहनावे से मना किया ये कि कोई शख़्स़ एक ही कपड़े से अपनी कमर और पिण्डली को मिलाकर बाँध ले और शर्मगाह पर कोई दूसरा कपड़ा न हो और ये कि कोई शख़्स़ एक कपड़े को इस त़रह जिस्म पर लपेटे कि एक त़रफ़ कपड़े का कोई ह़िस़्सा न हो और आपने मुलामसा और मुनाबज़ा से मना फ़र्माया। (राजेअ़ : 368)

٥٨٢١- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللهِ ﷺ عَنْ لِبْسَتَيْنِ: أَنْ يَحْتَبِيَ الرَّجُلُ فِي الثَّوْبِ الْوَاحِدِ لَيْسَ عَلَى فَرْجِهِ مِنْهُ شَيْءٌ، وَأَنْ يَشْتَمِلَ بِالثَّوْبِ الْوَاحِدِ لَيْسَ عَلَى أَحَدِ شِقَّيْهِ، وَعَنِ الْمُلاَمَسَةِ وَالْمُنَابَذَةِ. [راجع: ٣٦٨]

तश्रीह : अ़रब जाहिलियत में मज्लिस में बैठने का ये भी एक त़रीक़ा था। बैठने की इस सूरत में अ़मूमन शर्मगाह खुल जाया करती थी क्योंकि जिस्म पर कपड़ा स़िर्फ़ एक ही चादर की सूरत में होता था और उसी से कमर और पिण्डली में और कमर लपेटकर दोनों को एक साथ बाँध लेते थे। ये सूरत ऐसी होती थी कि शर्मगाह की सतर का एहतिमाम बिलकुल बाक़ी नहीं रहता था और बैठनेवाला बेदस्त व पा अपनी उसी सूरत पर बैठने पर मजबूर था।

5822. मुझसे मुह़म्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको मुख़लद ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमको इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मुझे इब्ने शिहाब ने ख़बर दी, उन्होंने कहा, हमें उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह ने और उन्हें ह़ज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि .) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने इश्तिमाले स़म्मा से मना फ़र्माया और उससे भी कि कोई शख़्स़ एक कपड़े से पिण्डली और कमर को मिला के और शर्मगाह पर कोई दूसरा कपड़ा न हो। (राजेअ़ : 367)

٥٨٢٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ: أَخْبَرَنِي مَخْلَدٌ، أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي ابْنُ شِهَابٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ نَهَى عَنِ اشْتِمَالِ الصَّمَّاءِ وَأَنْ يَحْتَبِيَ الرَّجُلُ فِي ثَوْبٍ وَاحِدٍ لَيْسَ عَلَى فَرْجِهِ مِنْهُ شَيْءٌ. [راجع: ٣٦٧]

बाब 22 : काली कमली का बयान

٢٢- باب الْخَمِيصَةِ السَّوْدَاءِ

5823. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे इस्हाक़ बिन सईद ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे सईद बिन फ़लाँ या'नी अम्र बिन सईद बिन आस ने और उनसे उम्मे ख़ालिद (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में कुछ कपड़े लाए गये जिसमें एक छोटी काली कमली भी थी। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया तुम्हारा क्या ख़्याल है ये चादर किसे दी जाए? सहाबा किराम (रज़ि.) ख़ामोश रहे फिर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया उम्मे ख़ालिद को मेरे पास बुला लाओ। उन्हें गोद में उठाकर लाया गया (क्योंकि बच्ची थीं) और आँहज़रत (ﷺ) ने वो चादर अपने हाथ में ली और उन्हें पहनाया और दुआ दी कि जीती रहो। उस चादर में हरे और ज़र्द नक़्श व निगार थे। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उम्मे ख़ालिद! ये नक़्श व निगार सिनाह हैं। सनाह हब्शी ज़ुबान में ख़ूब अच्छे के मा'नी में आता है। (राजेअ: 3071)

٥٨٢٣- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ أَبِيهِ سَعِيدِ ابْنِ فُلاَنٍ - هُوَ عَمْرُو - بْنِ سَعِيدِ بْنِ الْعَاصِ، عَنْ أُمِّ خَالِدٍ بِنْتِ خَالِدٍ: أُتِيَ النَّبِيُّ ﷺ بِثِيَابٍ فِيهَا خَمِيصَةٌ سَوْدَاءُ صَغِيرَةٌ. فَقَالَ: ((مَنْ تَرَوْنَ نَكْسُو هَذِهِ؟)) فَسَكَتَ الْقَوْمُ قَالَ: ((ائْتُونِي بِأُمِّ خَالِدٍ)) فَأُتِيَ بِهَا تُحْمَلُ فَأَخَذَ الْخَمِيصَةَ بِيَدِهِ فَأَلْبَسَهَا وَقَالَ: ((أَبْلِي وَأَخْلِقِي)) وَكَانَ فِيهَا عَلَمٌ أَخْضَرُ أَوْ أَصْفَرُ فَقَالَ : ((يَا أُمَّ خَالِدٍ هَذَا سَنَاهْ)) وَسَنَاهْ بِالْحَبَشِيَّةِ، حَسَنٌ.[راجع: ٣٠٧١]

उम्मे ख़ालिद हब्श ही में पैदा हुई थीं वो हब्शी ज़ुबान जानने लगी थीं, लिहाज़ा आँहज़रत (ﷺ) ने उससे ख़ुश होकर हब्शी ज़ुबान ही में उस कपड़े की ता'रीफ़ फ़र्माई।

5824. मुझसे मुहम्मद बिन मुष़न्ना ने बयान किया, कहा कि मुझसे इब्ने अबी अदी ने बयान किया, उनसे इब्ने औन ने, उनसे मुहम्मद ने और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि जब हज़रत उम्मे सुलैम (रज़ि.) के यहाँ बच्चा पैदा हुआ तो उन्होंने मुझसे कहा कि अनस इस बच्चे को देखते रहो कोई चीज़ इसके पेट में न जाए और जाकर नबी करीम (ﷺ) को अपने साथ लाओ ताकि आँहज़रत (ﷺ) अपना झूठा इसके मुँह में डालें। चुनाँचे मैं आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ आँहज़रत (ﷺ) उस वक़्त एक बाग़ में थे और आपके जिस्म पर क़बीला बनी हुरैष़ की बनी हुई चादर (ख़मीस़त हुरैष़िय्या) थी और आप उस सवारी पर निशान लगा रहे थे जिस पर आप फ़तहे मक्का के मौक़े पर सवार थे। (राजेअ: 1502)

٥٨٢٤- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، قَالَ حَدَّثَنِي ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، عَنِ ابْنِ عَوْنٍ، عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: لَمَّا وَلَدَتْ أُمُّ سُلَيْمٍ قَالَتْ لِي: يَا أَنَسُ انْظُرْ هَذَا الْغُلاَمَ فَلاَ يُصِيبَنَّ شَيْئًا حَتَّى تَغْدُوَ بِهِ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُحَنِّكُهُ، فَغَدَوْتُ بِهِ، فَإِذَا هُوَ فِي حَائِطٍ وَعَلَيْهِ خَمِيصَةٌ حُرَيْثِيَّةٌ، وَهُوَ يَسِمُ الظَّهْرَ الَّذِي قَدِمَ عَلَيْهِ فِي الْفَتْحِ.

[راجع: ١٥٠٢]

तश्रीह : हुरैष़ी निस्बत है हुरैष़ की तरफ़। शायद उसने ये कमलियाँ बनाना शुरू की होंगी कुछ रिवायतों में ख़ैबरी है। कुछ में जूनी ये बनी अल जून की तरफ़ निस्बत है। हाफ़िज़ ने कहा जूनी कमली अकष़र यहाँ होती है, इसी से तर्जुम-ए-बाब की मुताबक़त हो गई। काली कमली रखने ओढ़ने के बहुत से फ़वाइद हैं और सबसे बड़ा फ़ायदा ये कि ऐसी कमली रखने से रसूले करीम (ﷺ) की याद ताज़ा होती है जो हमारे लिये सबसे बड़ी सआदत है **अल्लाहुम्मर्ज़ुक्ना आमीन हरीषि** हरीष हुरैष़ी हुरैष़ नामी कपड़ा बनाने वाले की तरफ़ निस्बत है।

बाब 23 : सब्ज़ रंग के कपड़े पहनना

5825.हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वह्हाब बिन अ़ब्दुल मजीद स़क़फ़ी ने, कहा हमको अय्यूब सुख़्तियानी ने ख़बर दी, उन्हें इक्रिमा ने और उन्हें रिफ़ाआ (रज़ि.) ने कि उन्होंने अपनी बीवी को त़लाक़ दे दी थी। फिर उनसे अ़ब्दुर्रहमान बिन ज़ुबैर क़ुर्ज़ी (रज़ि.) ने निकाह कर लिया था। आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि कि वो ख़ातून सब्ज़ ओढ़नी ओढ़े हुए थीं, उन्होंने आइशा (रज़ि.) से (अपने शौहर की) शिकायत की और अपने जिस्म पर सब्ज़ निशानात (चोट के) दिखाए। फिर जब रसूलुल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ लाए तो (जैसा कि आदत है) इक्रिमा ने बयान किया कि औरतें आपस में एक दूसरे की मदद करती हैं। आइशा (रज़ि.) ने (आँहज़रत ﷺ से) कहा कि किसी ईमान वाली औरत का मैंने इससे ज़्यादा बुरा ह़ाल नहीं देखा उनका जिस्म उनके कपड़े से भी ज़्यादा बुरा हो गया है। बयान किया कि उनके शौहर ने भी सुन लिया था कि बीवी हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के पास गई हैं चुनाँचे वो भी आ गये और उनके साथ उनके दो बच्चे उनसे पहली बीवी के थे उनकी बीवी ने कहा अल्लाह की क़सम! मुझे इनसे कोई और शिकायत नहीं अल्बत्ता इनके साथ इससे ज़्यादा और कुछ नहीं जिससे मेरा कुछ नहीं होता। उन्होंने अपने कपड़े का पल्लू पकड़कर इशारा किया (या'नी उनके शौहर कमज़ोर हैं) इस पर उनके शौहर ने कहा या रसूलल्लाह! वल्लाह ये झूठ बोलती है, मैं तो इसको (जिमाअ़ के वक़्त) चमड़े की त़रह उधेड़कर रख देता हूँ मगर ये शरीर है ये मुझे पसंद नहीं करती और रिफ़ाआ के यहाँ दोबारा जाना चाहती है। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने उस पर फ़र्माया कि अगर ये बात है तो तुम्हारे लिये वो (रिफ़ाआ) उस वक़्त तक ह़लाल नहीं होंगे जब तक ये (अ़ब्दुर्रहमान दूसरे शौहर) तुम्हारा मज़ा न चख लें। बयान किया कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने अ़ब्दुर्रहमान के साथ दो बच्चे भी देखे तो दरयाफ़्त किया क्या ये तुम्हारे बच्चे हैं? उन्होंने अ़र्ज़ किया जी हाँ। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अच्छा, इस वजह से तुम ये बातें सोचती हो। अल्लाह

٢٣- باب الثِّيَابِ الْخُضْرِ

٥٨٢٥- حدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ، أَخْبَرَنَا أَيُّوبُ، عَنْ عِكْرِمَةَ أَنَّ رِفَاعَةَ طَلَّقَ امْرَأَتَهُ فَتَزَوَّجَهَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ الزَّبِيرِ الْقُرَظِيُّ قَالَتْ عَائِشَةُ: وَعَلَيْهَا خِمَارٌ أَخْضَرُ فَشَكَتْ إِلَيْهَا وَأَرَتْهَا خُضْرَةً بِجِلْدِهَا، فَلَمَّا جَاءَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَالنِّسَاءُ يَنْصُرُ بَعْضُهُنَّ بَعْضًا قَالَتْ عَائِشَةُ : مَا رَأَيْتُ مِثْلَ مَا يَلْقَى الْمُؤْمِنَاتُ لَجِلْدُهَا أَشَدُّ خُضْرَةً مِنْ ثَوْبِهَا، قَالَ: وَسَمِعَ أَنَّهَا قَدْ أَتَتْ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَجَاءَ وَمَعَهُ ابْنَانِ لَهُ مِنْ غَيْرِهَا قَالَتْ: وَاللهِ مَا لِي إِلَيْهِ مِنْ ذَنْبٍ إِلاَّ أَنَّ مَا مَعَهُ لَيْسَ بِأَغْنَى عَنِّي مِنْ هَذِهِ، وَأَخَذَتْ هُدْبَةً مِنْ ثَوْبِهَا فَقَالَ: كَذَبَتْ وَاللهِ يَا رَسُولَ اللهِ إِنِّي لأَنْفُضُهَا نَفْضَ الأَدِيمِ، وَلَكِنَّهَا نَاشِزٌ تُرِيدُ رِفَاعَةَ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((فَإِنْ كَانَ ذَلِكِ لَمْ تَحِلِّي لَهُ أَوْ لَمْ تَصْلُحِي لَهُ حَتَّى يَذُوقَ مِنْ عُسَيْلَتِكِ)) قَالَ: وَأَبْصَرَ مَعَهُ ابْنَيْنِ فَقَالَ: ((بَنُوكَ هَؤُلاَءِ)) قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: ((هَذَا الَّذِي تَزْعُمِينَ مَا تَزْعُمِينَ؟ فَوَاللهِ لَهُمْ أَشْبَهُ بِهِ مِنَ الْغُرَابِ بِالْغُرَابِ)).

[راجع: ٢٦٣٩]

की क़सम ये बच्चे इनसे उतने ही मुशाबेह हैं जितना कि कव्वा कव्वे से मुशाबेह होता है। (राजेअ : 2639)

तश्रीह : वो ख़ातून हरे रंग की ओढ़नी ओढ़े हुए थी यही बाब से मुताबक़त है। उस औरत ने अपने शौहर के नामर्द होने की शिकायत की थी जिसके जवाब के लिये शौहर अ़ब्दुर्रहमान बिन ज़ुबैर अपने दोनों बच्चों को साथ लाए थे। आँहज़रत (ﷺ) ने बच्चों के बारे में हज़रत अ़ब्दुर्रहमान की तस्दीक़ की और औरत की ग़लत बयानी महसूस फ़र्माकर वो फ़र्माया जो यहाँ मज़्कूर है। मसला यही है कि मुतल्लक़ा बाइना औरत पहले शौहर के निकाह में दोबारा उस वक़्त तक नहीं जा सकती जब तक वो दूसरा शौहर उससे ख़ूब जिमाअ़ न कर ले और फिर अपनी मर्ज़ी से उसे तलाक़ दे इसके सिवा और कोई सूरत नहीं है।

बाब 24 : सफ़ेद कपड़े पहनना

٢٤- باب الثِّيَابِ الْبِيضِ

5826. हमसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम हंज़ली ने बयान किया, कहा हमको मुहम्मद बिन बिश्र ने ख़बर दी, कहा हमसे मअ़मर ने बयान किया, उनसे सअ़द बिन इब्राहीम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे सअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) ने बयान किया कि जंगे उहुद के मौक़े पर मैं ने नबी करीम (ﷺ) के दाएँ बाएँ दो आदमियों को (जो फ़रिश्ते थे) देखा वो सफ़ेद कपड़े पहने हुए थे मैंने उन्हें न उससे पहले देखा और न उसके बाद कभी देखा। (राजेअ : 4054)

٥٨٢٦- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الْحَنْظَلِيُّ، أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بِشْرٍ. حَدَّثَنَا مِسْعَرٌ عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ سَعْدٍ قَالَ: رَأَيْتُ بِشِمَالِ النَّبِيِّ ﷺ وَيَمِينِهِ رَجُلَيْنِ عَلَيْهِمَا ثِيَابٌ بِيضٌ يَوْمَ أُحُدٍ مَا رَأَيْتُهُمَا قَبْلُ وَلاَ بَعْدُ.

[راجع: ٤٠٥٤]

गोया फ़रिश्तों का सफ़ेद कपड़ों में नज़र आना, इस चीज़ का षुबूत है कि सफ़ेद कपड़े का लिबास अल्लाह के नज़दीक महबूब है।

5827. हमसे अबू मअ़मर ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वारिष़ ने बयान किया, उनसे हुसैन ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन बुरैदा ने, उनसे यह्या बिन यअ़मुर ने बयान किया, उनसे अबू अस्वद देली ने बयान किया और उनसे हज़रत अबू ज़र्र (रज़ि.) ने बयान किया, उन्होंने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो जिस्म मुबारक पर सफ़ेद कपड़ा था और आप सो रहे थे फिर दोबारा हाज़िर हुआ तो आप बेदार हो चुके थे फिर आपने फ़र्माया जिस बन्दे ने भी कलिमा ला इलाहा इल्लल्लाह (अल्लाह के सिवा कोई इलाह नहीं) और फिर वो उसी पर मरा तो जन्नत में जाएगा। मैंने अ़र्ज़ किया चाहे उसने ज़िना किया हो, चाहे उसने चोरी की हो, आपने फ़र्माया कि चाहे उसने ज़िना किया हो चाहे उसने चोरी की हो, मैंने फिर अ़र्ज़ किया चाहे उसने ज़िना किया हो चाहे उसने चोरी की हो।

٥٨٢٧- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، عَنِ الْحُسَيْنِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ بُرَيْدَةَ، عَنْ يَحْيَى بْنِ يَعْمَرَ حَدَّثَهُ أَنَّ أَبَا الأَسْوَدِ الدِّيلِيَّ حَدَّثَهُ أَنَّ أَبَا ذَرٍّ حَدَّثَهُ قَالَ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعَلَيْهِ ثَوْبٌ أَبْيَضُ وَهُوَ نَائِمٌ ثُمَّ أَتَيْتُهُ وَقَدِ اسْتَيْقَظَ فَقَالَ: ((مَا مِنْ عَبْدٍ قَالَ : لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ ثُمَّ مَاتَ عَلَى ذَلِكَ إِلاَّ دَخَلَ الْجَنَّةَ)) قُلْتُ : وَإِنْ زَنَى وَإِنْ سَرَقَ؟ قَالَ: ((وَإِنْ زَنَى وَإِنْ سَرَقَ)) قُلْتُ : وَإِنْ زَنَى وَإِنْ سَرَقَ؟ قَالَ: ((وَإِنْ زَنَى وَإِنْ

سَرَق)) قُلْتُ: وَإِنْ زَنَى وَإِنْ سَرَق؟ قَالَ: ((وَإِنْ زَنَى وَإِنْ سَرَق عَلَى رَغْمِ أَنْفِ أَبِي ذَرٍّ)) وَكَانَ أَبُو ذَرٍّ إِذَا حَدَّثَ بِهٰذَا قَالَ: وَإِنْ رَغِمَ أَنْفُ أَبِي ذَرٍّ. قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ: هذا عِنْدَ الْمَوْتِ أَوْ قَبْلَهُ إِذَا تَابَ وَنَدِمَ وقَالَ: لاَ إِلٰهَ إِلاَّ اللهُ غُفِرَ لَهُ.
[راجع: ١٢٣٧]

फ़र्माया चाहे उसने ज़िना किया हो चाहे उसने चोरी की हो। मैंने (हैरत की वजह से फिर) अ़र्ज़ किया चाहे उसने ज़िना किया हो या उसने चोरी की हो। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया चाहे उसने ज़िना किया हो चाहे उसने चोरी की हो। अबू ज़र्र की नाक ख़ाक आलूदा हो। हज़रत अबू ज़र्र (रज़ि.) बाद में जब भी ये हदीष़ बयान करते तो आँहज़रत (ﷺ) के अल्फ़ाज़ अबू ज़र्र के अ़ला रग़िम (व इन रग़िम अन्फ़ अबी ज़र) ज़रूर बयान करते। अबू अ़ब्दुल्लाह हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा ये सूरत कि (सिर्फ़ कलिमे से जन्नत में दाख़िल होगा) ये उस वक़्त होगी जब मौत के वक़्त या उससे पहले (गुनाहों से) तौबा की और कहा कि ला इलाहा इल्लल्लाह उसकी मग़्फ़िरत हो जाएगी। (राजेअ़: 1237)

तश्रीह : तौबा की शर्त हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने उनके लिये बयान की है जो उन गुनाहों को गुनाह न जानकर करें ऐसे लोग बग़ैर तौबा किये हर्गिज़ नहीं बख़्शे जाएँगे हाँ अगर गुनाह जानकर नादिम होकर मरा अगरचे तौबा न की फिर भी कलिमा की बरकत से बख़्शिश की उम्मीद है। चाहे सज़ा के बाद ही हो क्योंकि अ़सल बुनियाद नजात कलिमा तय्यिबा ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर् रसूलुल्लाह पढ़ना और उसके मुताबिक़ अ़मल व अ़क़ीदा दुरुस्त होना है। महज़ तोते की तरह कलिमा पढ़ लेना भी काफ़ी नहीं है।

٢٥- باب لُبْسِ الْحَرِيْرِ إفْتِرَاشِهِ لِلرِّجَالِ وَقَدْرِ مَا يَجُوزُ مِنْهُ

बाब 25 : रेशम पहनना और मर्दों का उसे अपने लिये बिछाना और किस ह़द तक उसका इस्ते'माल जाइज़ है

٥٨٢٨- حَدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا عُثْمَانَ النَّهْدِيَّ قَالَ: أَتَانَا كِتَابُ عُمَرَ، وَنحن مَعَ عُتْبَةَ بْنِ فَرْقَدٍ بِأَذْرَبِيجَانَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ نَهَى عَنِ الْحَرِيرِ، إِلاَّ هَكَذَا وَأَشَارَ بِإِصْبَعَيْهِ اللَّتَيْنِ تَلِيَانِ الإِبْهَامَ قَالَ: فِيمَا عَلِمْنَا أَنَّه يَعْنِي الأَعْلاَمَ.[أطرافه في: ٥٨٢٩، ٥٨٣٠، ٥٨٣٤، ٥٨٣٥].

5828. हमसे आदम ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने, कहा हमसे क़तादा ने, कहा कि मैंने अबू ड़ष्मान नहदी से सुना कि हमारे पास ड़मर (रज़ि.) का मक्तूब आया हम उस वक़्त ड़त्बा बिन फ़रक़द (रज़ि.) के साथ आज़र बैजान में थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने रेशम के इस्ते'माल से (मर्दों को) मना किया है सिवा इतने के और आँहज़रत (ﷺ) ने अंगूठे के क़रीब की अपनी दोनों उँगलियों के इशारे से इसकी मिक़्दार बताई। अबू ड़ष्मान नहदी ने बयान किया कि हमारी समझ में आँहुज़ूर (ﷺ) की मुराद इससे (कपड़े वग़ैरह पर रेशम के) फूल बूटे बनाने से थी। (दीगर मक़ामात : 5829, 5830, 5834, 5835)

٥٨٢٩- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا عَاصِمٌ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ، قَالَ: كَتَبَ إِلَيْنَا عُمَرُ وَنَحْنُ بِأَذْرَبِيجَانَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ نَهَى عَنْ لُبْسِ الْحَرِيرِ إِلاَّ هَكَذَا

5829. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुहैर ने बयान किया, उनसे आ़सिम ने बयान किया, उनसे अबू ड़ष्मान ने बयान किया कि हमें हज़रत ड़मर (रज़ि.) ने लिखा उस वक़्त हम आज़र बैजान में थे कि नबी करीम (ﷺ) ने रेशम पहनने से मना फ़र्माया था सिवा इतने के और इसकी वज़ाहत नबी करीम (ﷺ) ने दो उँगलियों के इशारे से की थी।

وَصَفَ لَنَا النَّبِيُّ ﷺ إِصْبَعَيْهِ وَرَفَعَ زُهَيْرٌ الْوُسْطَى وَالسَّبَّابَةَ. [راجع: ٥٨٢٨]

ज़ुहैर (रावी ह़दीष़) ने बीच की और शहादत की उँगलियाँ उठाकर बताया। (राजेअ़ : 5828)

٥٨٣٠- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنِ التَّيْمِيِّ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ قَالَ: كُنَّا مَعَ عُتْبَةَ فَكَتَبَ إِلَيْهِ عُمَرُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((لاَ يَلْبَسُ الْحَرِيرَ فِي الدُّنْيَا إِلاَّ مَنْ لَمْ يَلْبَسْ مِنْهُ شَيْءٌ فِي الآخِرَةِ)). [راجع: ٥٨٢٨]

5830. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह़्या ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे तैमी ने बयान किया, और उनसे अबू उ़ष़्मान ने बयान किया कि हम ह़ज़रत उ़त्बा (रज़ि.) के साथ थे। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने उन्हें लिखा कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया दुनिया में रेशम जो शख़्स़ भी पहनेगा उसे आख़िरत में नहीं पहनाया जाएगा। (राजेअ़ : 5828)

٠٠٠٠- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ، حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا أَبُو عُثْمَانَ وَأَشَارَ أَبُو عُثْمَانَ بِإِصْبَعَيْهِ الْمُسَبِّحَةِ وَالْوُسْطَى.

हमसे ह़सन बिन उ़मर ने बयान किया, कहा हमसे मुअ़्तमर ने, कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, उनसे अबू उ़ष़्मान ने बयान किया और अबू उ़ष़्मान ने अपनी दो उँगलियों, शहादत और दरमियानी उँगलियों से इशारा किया।

٥٨٣١- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنِ الْحَكَمِ، عَنِ ابْنِ أَبِي لَيْلَى قَالَ: كَانَ حُذَيْفَةُ بِالْمَدَائِنِ فَاسْتَسْقَى فَأَتَاهُ دِهْقَانٌ بِمَاءٍ فِي إِنَاءٍ مِنْ فِضَّةٍ فَرَمَاهُ بِهِ وَقَالَ : إِنِّي لَمْ أَرْمِهِ إِلاَّ أَنِّي نَهَيْتُهُ فَلَمْ يَنْتَهِ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: الذَّهَبُ وَالْفِضَّةُ وَالْحَرِيرُ وَالدِّيبَاجُ هِيَ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا وَلَكُمْ فِي الآخِرَةِ. [راجع: ٥٤٢٦]

5831. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़्बा ने बयान किया, उनसे ह़कम ने, उनसे इब्ने अबी लैला ने बयान किया कि ह़ज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) मदायन में थे। उन्होंने पानी मांगा। एक देहाती चाँदी के बर्तन में पानी लाया। उन्होंने उसे फेंक दिया और कहा कि मैंने सिर्फ़ उसे इसलिये फेंका है कि मैं इस शख़्स़ को मना कर चुका हूँ (कि चाँदी के बर्तन में मुझे खाना और पानी न दिया करो) लेकिन वो नहीं माना। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया है कि सोना, चाँदी, रेशम और दीबा (कुफ़्फ़ार) के लिये दुनिया में है और तुम्हारे (मुसलमानों) के लिये आख़िरत में। (राजेअ़ : 5426)

٥٨٣٢- حَدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ صُهَيْبٍ، قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ قَالَ شُعْبَةُ: فَقُلْتُ: أَعَنِ النَّبِيِّ ﷺ، فَقَالَ: شَدِيدًا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((مَنْ لَبِسَ الْحَرِيرَ فِي الدُّنْيَا فَلَنْ يَلْبَسَهُ فِي الآخِرَةِ)).

5832. हमसे आदम ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़्बा ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन सुहैब ने बयान किया, कहा कि मैंने ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना। शुअ़्बा ने बयान किया कि इस पर मैंने पूछा क्या ये रिवायत नबी करीम (ﷺ) से है? अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने बयान किया कि क़त़्अ़न नबी करीम (ﷺ) से मरवी है। आपने फ़र्माया कि जो मर्द रेशमी लिबास दुनिया में पहनेगा वो आख़िरत में उसे हर्गिज़ नहीं पहन सकेगा।

٥٨٣٣- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ ثَابِتٍ قَالَ:

5833. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे ष़ाबित ने बयान किया

कि मैंने इब्ने ज़ुबैर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने ख़ुत्बा देते हुए कहा कि हज़रत मुहम्मद (रज़ि.) ने फ़र्माया कि जिस मर्द ने दुनिया में रेशम पहना वो आख़िरत में उसे नहीं पहन सकेगा।

سمعت ابن الزبير يخطب يقول: قال محمد ﷺ: ((من لبس الحرير في الدنيا لم يلبسه في الآخرة)).

5834. हमसे अ़ली बिन जअ़द ने बयान किया, कहा हमको शुअ़बा ने ख़बर दी, उन्हें अबू ज़ुब्यान ख़लीफ़ा बिन कअ़ब ने, कहा कि मैंने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) से सुना, कहा कि मैंने हज़रत उ़मर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जिस मर्द ने दुनिया में रेशम पहना वो उसे आख़िरत में नहीं पहन सकेगा। और हमसे अबू मअ़मर ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल वारिष़ ने बयान किया, उनसे यज़ीद ने कि मुआ़ज़ा ने बयान किया कि मुझे उम्मे अ़म्र बिन्ते अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने हज़रत उ़मर फ़ारूक़ (रज़ि.) से सुना और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना। (राजेअ़ : 5828)

٥٨٣٤ - حدثنا علي بن الجعد، أخبرنا شعبة عن أبي ذبيان خليفة بن كعب قال: سمعت ابن الزبير يقول: سمعت عمر يقول: قال النبي ﷺ: ((من لبس الحرير في الدنيا لم يلبسه في الآخرة)). وقال لنا أبو معمر، حدثنا عبد الوارث، عن يزيد قالت معاذة: أخبرتني أم عمرو بنت عبد الله سمعت عبد الله بن الزبير سمع عمر سمع النبي ﷺ. [راجع: ٥٨٢٨]

5835. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे उ़ष्मान बिन उ़मर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ली बिन मुबारक ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह्या बिन अबी कष़ीर ने बयान किया, उनसे इ़मरान बिन हित़्तान ने बयान किया कि मैंने हज़रत आ़इशा (रज़ि.) से रेशम के बारे में पूछा तो उन्होंने बतलाया कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) के पास जाओ और उनसे पूछो। बयान किया कि मैंने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से पूछा तो उन्होंने बयान किया कि मुझे अबू हफ़्स या'नी हज़रत उ़मर बिन ख़त़्ताब (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया दुनिया में रेशम तो वही मर्द पहनेगा जिसका आख़िरत में कोई हिस्सा न हो। मैंने उस पर कहा कि सच कहा और अबू हफ़्स रसूले करीम (ﷺ) की त़रफ़ कोई झूठी बात निस्बत नहीं कर सकते और अ़ब्दुल्लाह बिन रजाअ ने बयान किया कि हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे यह्या ने और उनसे इ़मरान ने और पूरी ह़दीष़ बयान की। (राजेअ़ : 5828)

٥٨٣٥ - حدثني محمد بن بشار، حدثنا عثمان بن عمر، حدثنا علي بن المبارك، عن يحيى بن أبي كثير، عن عمران بن حطان، قال: سألت عائشة عن الحرير فقالت: ائت ابن عباس فسله قال: فسألته فقال: سل ابن عمر قال: فسألت ابن عمر فقال: أخبرني أبو حفص يعني عمر بن الخطاب، أن رسول الله ﷺ قال: ((إنما يلبس الحرير في الدنيا من لا خلاق له في الآخرة)). فقلت: صدق وما كذب أبو حفص على رسول الله ﷺ. وقال عبد الله بن رجاء، حدثنا حرب، عن يحيى حدثني عمران وقص الحديث. [راجع: ٥٨٢٨]

बाब 26 : बग़ैर पहने रेशम सिर्फ़ छूना जाइज़ है। और इस बारे में ज़ुबैदी से रिवायत है कि उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जो ऊपर मज़्कूर है

٢٦- باب مَسِّ الْحَرِيرِ مِنْ غَيْرِ لُبْسٍ.
وَيُرْوَى فِيهِ عَنِ الزُّبَيْدِيِّ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَنَسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ

5836. हमसे उ़बैदुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, उनसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया और उनसे बराअ (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) को रेशम का एक कपड़ा हदिये में पेश हुआ तो हम उसे छूने लगे और उसकी (नर्मी व मुलायमत पर) हैरतज़दा हो गये तो आपने फ़र्माया कि क्या तुम्हें इस पर हैरत है। हमने अ़र्ज़ किया जी हाँ फ़र्माया जन्नत में सअ़द बिन मुआ़ज़ के रूमाल इससे भी अच्छे हैं। (राजेअ़ : 3249)

٥٨٣٦- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى، عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنِ الْبَرَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: أُهْدِيَ لِلنَّبِيِّ ﷺ ثَوْبُ حَرِيرٍ فَجَعَلْنَا نَلْمَسُهُ وَنَتَعَجَّبُ مِنْهُ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَتَعْجَبُونَ مِنْ هَذَا؟)) قُلْنَا: نَعَمْ. قَالَ: ((مَنَادِيلُ سَعْدِ بْنِ مُعَاذٍ فِي الْجَنَّةِ خَيْرٌ مِنْ هَذَا)). [راجع: ٣٢٤٩]

बाब 27 : मर्द के लिये रेशम का कपड़ा बतौरे फ़र्श बिछाना मना है, उ़बैदह ने कहा कि ये बिछाना भी पहनने जैसा है

٢٧- باب افْتِرَاشِ الْحَرِيرِ
وَقَالَ عُبَيْدَةُ : هُوَ كَلُبْسِهِ.

5837. हमसे अ़ली ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे वहब बिन जरीर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे उनके वालिद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने इब्ने अबी नजीह से सुना, उन्होंने मुजाहिद से, उन्होंने इब्ने अबी लैला से और उनसे हज़रत हुज़ैफ़ह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने हमें सोने और चाँदी के बर्तन में पीने और खाने से मना फ़र्माया था और रेशम और दीबाज पहनने और उस पर बैठने से मना किया था। (राजेअ़ : 5426)

٥٨٣٧- حَدَّثَنَا عَلِيٌّ، حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ جَرِيرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ أَبِي نَجِيحٍ، عَنْ مُجَاهِدٍ عَنِ ابْنِ أَبِي لَيْلَى، عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ نَهَانَا النَّبِيُّ ﷺ أَنْ نَشْرَبَ فِي آنِيَةِ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ، وَأَنْ نَأْكُلَ فِيهَا وَعَنْ لُبْسِ الْحَرِيرِ وَالدِّيبَاجِ وَأَنْ نَجْلِسَ عَلَيْهِ. [راجع: ٥٤٢٦]

मा'लूम हुआ कि रेशमी फ़र्श व फ़ुरूश का इस्ते'माल भी मर्दों के लिये नाजाइज़ है।

बाब 28 : मिस्र का रेशमी कपड़ा पहनना मर्द के लिये कैसा है?

٢٨- باب لُبْسِ الْقَسِّيِّ

आ़सिम इब्ने कुलैब ने बयान किया, उनसे अबू बुर्दा ने बयान किया कि मैंने हज़रत अ़ली (रज़ि.) से पूछा क़स्सिय्यह क्या चीज़ है? बतलाया कि ये कपड़ा था जो हमारे यहाँ (हिजाज़

وَقَالَ عَاصِمٌ: عَنْ أَبِي بُرْدَةَ قَالَ: قُلْتُ لِعَلِيٍّ مَا الْقَسِّيَّةُ؟ قَالَ : ثِيَابٌ أَتَتْنَا مِنَ الشَّامِ أَوْ مِنْ مِصْرَ، مُضَلَّعَةٌ فِيهَا حَرِيرٌ

فِيهَا أَمْثَالُ الأُتْرُنْجِ وَالْمِيثَرَةُ كَانَتِ النِّسَاءُ تَصْنَعُهُ لِبُعُولَتِهِنَّ مِثْلَ الْقَطَائِفِ: يُصَفِّرْنَهَا. وَقَالَ جَرِيرٌ عَنْ زَيْدٍ فِي حَدِيثِهِ: الْقِسِّيَّةُ ثِيَابٌ مُضَلَّعَةٌ يُجَاءُ بِهَا مِنْ مِصْرَ فِيهَا الْحَرِيرُ وَالْمِيثَرَةُ جُلُودُ السِّبَاعِ. قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ: عَاصِمٌ أَكْثَرُ وَأَصَحُّ فِي الْمِيثَرَةِ.

में) शाम या मिस्र से आता था उस पर चौड़ी रेशमी धारियाँ पड़ी होती थीं और उस पर तरंज जैसे नक़्शो निगार बने हुए थे और मीष़रह् ज़ीनपोश वो कपड़ा कहलाता है जिसे औरतें रेशम से अपने शौहरों के लिये बनाती थीं। ये झालरदार चादर की त़रह होती थी वो उसे ज़र्द रंग से रंग देती थीं जैसे ओढ़ने के रूमाल होते हैं और जरीर ने बयान किया कि उनसे ज़ैद ने बयान किया कि क़िस्सिय्या वो चौख़ाने कपड़े होते थे जो मिस्र से मंगवाये जाते थे और उसमें रेशम मिला हुआ होता था और मीष़रह् दरिन्दों के चमड़े के ज़ीनपोश। ह़ज़रत अबू अ़ब्दुल्लाह इमाम बुख़ारी (रह़.) ने कहा कि मीष़रह् की तफ़्सीर में आ़स़िम की रिवायत ज़्यादा त़रीक़े और स़ेह़त के ए'तिबार से बढ़ी हुई है।

٥٨٣٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَشْعَثَ بْنِ أَبِي الشَّعْثَاءِ، حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ سُوَيْدِ بْنِ مُقَرِّنٍ عَنِ ابْنِ عَازِبٍ قَالَ نَهَانَا النَّبِيُّ ﷺ عَنِ الْمَيَاثِرِ الْحُمْرِ وَعَنِ الْقَسِّيِّ.
[راجع: ١٢٣٩]

5838. हमसे मुह़म्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, कहा हमको सुफ़यान ने ख़बर दी, उन्हें अश्अ़ष़ बिन अबी शअ़शाअ ने, उनसे मुआ़विया बिन सुवैद बिन मुक़र्रिन ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत इब्ने आ़ज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने हमें सुर्ख़ मीष़रह् और क़स्सिय्यि के पहनने से मना फ़र्माया है। (राजेअ़: 1239)

तशरीह़ : क़स्त़लानी ने कहा कि अकष़र उ़लमा के नज़दीक ज़ीनपोश वही मना है जिसमें ख़ालिस़ रेशम हो या रेशम ज़्यादा हो सूत कम हो। अगर दोनों आधे आधे हों तो ऐसे कपड़ों का इस्ते'माल दुरुस्त रखा है क्योंकि उसे ह़रीर नहीं कह सकते आजकल टसर वग़ैरह का यही ह़ाल है।

٢٩- باب مَا يُرَخَّصُ لِلرِّجَالِ مِنَ الْحَرِيرِ لِلْحِكَّةِ

बाब 29 : ख़ारिश की वजह से मर्दों को रेशमी कपड़े के इस्ते'माल की इजाज़त है

٥٨٣٩- حَدَّثَنِي مُحَمَّدٌ، أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ قَالَ: رَخَّصَ النَّبِيُّ ﷺ لِلزُّبَيْرِ، وَعَبْدِ الرَّحْمَنِ فِي لُبْسِ الْحَرِيرِ لِحِكَّةٍ بِهِمَا. [راجع: ٢٩١٩]

5839. मुझसे मुह़म्मद ने बयान किया, कहा हमको शुअ़बा ने ख़बर दी, उन्हें क़तादा ने और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने ह़ज़रत ज़ुबैर और ह़ज़रत अ़ब्दुर्रह़मान (रज़ि.) को, क्योंकि उन्हें ख़ारिश हो गई थी, रेशम पहनने की इजाज़त दी थी। (राजेअ़ : 2919)

मा'लूम हुआ कि ऐसी शदीद तकलीफ़ के इ़लाज के लिये रेशम पहनने की इजाज़त है।

٣٠- باب الْحَرِيرِ لِلنِّسَاءِ

बाब 30 : रेशम औ़रतों के लिये जाइज़ है

5840. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया (दूसरी सनद) और ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने कहा कि मुझसे मुह़म्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे ग़ुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल मलिक बिन मैसरह ने और उनसे ज़ैद बिन वहब ने कि ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने मुझे रेशमी धारियों वाला एक जोड़ा हुल्ला इनायत फ़र्माया। मैं उसे पहनकर निकला तो मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) के चेहरा-ए-मुबारक पर ग़ुस़्सा के आस़ार देखे। चुनाँचे मैंने उसके टुकड़े करके अपनी अ़ज़ीज़ औरतों में बांट दिये। (राजेअ़ : 2614)

٥٨٤٠- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ ح، وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ مَيْسَرَةَ، عَنْ زَيْدِ بْنِ وَهْبٍ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَسَانِي النَّبِيُّ ﷺ حُلَّةً سِيَرَاءَ فَخَرَجْتُ فِيهَا فَرَأَيْتُ الْغَضَبَ فِي وَجْهِهِ فَشَقَقْتُهَا بَيْنَ نِسَائِي. [راجع: ٢٦١٤]

5841. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा कि मुझसे जुवैरिया ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने, उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने रेशमी धारियों वाला एक जोड़ा फ़रोख़्त होते देखा तो अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! बेहतर है कि आप इसे ख़रीद लें और वफ़ूद से मुलाक़ात के वक़्त और जुम्अ़े के दिन इसे ज़ेबतन किया करें। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि इसे वो पहनता है जिसका (आख़िरत में) कोई ह़िस़्सा नहीं होता। इसके बाद हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने ख़ुद ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) के पास रेशम की धारियों वाला एक जोड़ा हुल्ला भेजा, हदिया के त़ौर पर। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया आपने मुझे ये जोड़ा हुल्ला इनायत फ़र्माया है ह़ालाँकि मैं ख़ुद आपसे इसके बारे में वो बात सुन चुका हूँ जो आपने फ़र्माई थी। आपने फ़र्माया कि मैंने तुम्हें ये कपड़ा इसलिये दिया है कि तुम इसे बेच दो या (औरतों वग़ैरह में से) किसी को पहना दो। (राजेअ़ : 886)

٥٨٤١- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، قَالَ: حَدَّثَنِي جُوَيْرِيَةُ، عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ أَنَّ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ رَأَى حُلَّةَ سِيَرَاءَ تُبَاعُ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ لَوِ ابْتَعْتَهَا تَلْبَسُهَا لِلْوَفْدِ إِذَا أَتَوْكَ، وَالْجُمُعَةِ قَالَ: ((إِنَّمَا يَلْبَسُ هَذِهِ مَنْ لاَ خَلاَقَ لَهُ))، وَأَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعَثَ بَعْدَ ذَلِكَ إِلَى عُمَرَ حُلَّةَ سِيَرَاءَ حَرِيرٍ كَسَاهَا إِيَّاهُ فَقَالَ عُمَرُ: كَسَوْتَنِيهَا وَقَدْ سَمِعْتُكَ تَقُولُ فِيهَا مَا قُلْتَ فَقَالَ: ((إِنَّمَا بَعَثْتُ إِلَيْكَ لِتَبِيعَهَا أَوْ تَكْسُوهَا)). [راجع: ٨٨٦]

5842. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, उन्हें ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने ख़बर दी कि उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) की स़ाहबज़ादी उम्मे कुल्सुम (रज़ि .) को ज़र्द धारी और रेशमी जोड़ा पहने देखा।

٥٨٤٢- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، قَالَ: أَخْبَرَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ، أَنَّهُ رَأَى عَلَى أُمِّ كُلْثُومٍ بِنْتِ رَسُولِ اللهِ ﷺ بُرْدَ حَرِيرٍ سِيَرَاءَ.

बाब 31 : इस बयान में कि आँह़ज़रत (ﷺ) किसी लिबास या फ़र्श के पाबन्द न थे जैसा मिल जाता उसी पर क़नाअ़त करते

٣١- باب مَا كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَتَجَوَّزُ مِنَ اللِّبَاسِ وَالْبُسْطِ

या'नी आपके मिज़ाज में ख़्वाह मख़्वाह तकल्लुफ़ न था। बाब का मज़्मून यहाँ से निकलता है कि ऐसे बोरिये पर आराम फ़र्मा रहे थे जिसका निशान आपके पहलू पर पड़ रहा था और चमड़े का तकिया सर के नीचे था जिसमें खजूर की छाल भरी हुई थी। वो सुन्नत पे अ़मल करने का दावा करने वाले ग़ौर करें जिनकी ज़िंदगी शाहाना ठाठ बाट से गुज़रती है और ज़रा ज़रा सी बातों पर सुन्नत का लैबल लगाकर लोगों से लड़ते झगड़ते रहते हैं। अल्लाह हर मुसलमान को सुन्नते नबवी पर अ़मल की तौफ़ीक़ बख़्शे।

5843. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने, उनसे यह्या बिन सईद ने, उनसे उ़बैद बिन हुनैन ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं उ़मर (रज़ि.) से उन औ़रतों के बारे में जिन्होंने नबी करीम (ﷺ) के मामले में इत्तिफ़ाक़ कर लिया था, पूछने का इरादा करता रहा लेकिन उनका रुअ़ब सामने आ जाता था। (एक दिन (मक्का के रास्ते में) एक मंज़िल पर क़याम किया और पीलू के पेड़ों में (वो क़ज़ा-ए-ह़ाजत के लिए) तशरीफ़ ले गये। जब क़ज़ा-ए-ह़ाजत से फ़ारिग़ होकर वापस तशरीफ़ लाए तो मैंने पूछा उन्होंने बतलाया कि आ़इशा और ह़फ़्सा (रज़ि .) हैं फिर कहा कि जाहिलियत में हम औ़रतों को कोई हैषियत नहीं देते थे। जब इस्लाम आया और अल्लाह तआ़ला ने उनका ज़िक्र किया (और उनके हुक़ूक़) मर्दों पर बताए तब हमने जाना कि उनके भी हम पर कुछ हुक़ूक़ हैं लेकिन अब भी हम अपने मामलात में उनका दख़ील बनना पसंद नहीं करते थे। मेरे और मेरी बीवी में कुछ बातचीत हो गई और उसने तेज़-तुंद जवाब मुझे दिया तो मैंने उससे कहा अच्छा अब नौबत यहाँ तक पहुँच गई। उसने कहा तुम मुझे ये कहते हो और तुम्हारी बेटी नबी करीम (ﷺ) को भी तकलीफ़ पहुँचाती है। मैं (अपनी बेटी उम्मुल मोमिनीन) ह़फ़्सा के पास आया और उससे कहा मैं तुझे (इस बात के लिये) तम्बीह करता हूँ कि तू अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़र्मानी करे। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को तकलीफ़ पहुँचाने के इस मामले में सबसे पहले मैं ही ह़फ़्सा के यहाँ गया फिर मैं ह़ज़रत उम्मे सलमा के पास आया और उनसे भी यही बात कही लेकिन उन्होंने कहा कि हैरत है तुम पर उ़मर! तुम हमारे तमाम मामलात में दख़ील हो गये हो। सिर्फ़ रसूलुल्लाह (ﷺ) और आपकी अज़्वाज के मामलात में दख़ल देना बाक़ी था (सो अब वो भी शुरू कर दिया)। उन्होंने मेरी बात रद्द कर दी। क़बीला अंसार के एक स़हाबी थे जब वो हुज़ूर अकरम (ﷺ) की सुह़बत में मौजूद न होते और मैं ह़ाज़िर होता तो तमाम ख़बरें उनसे आकर बयान करता था और जब मैं

٥٨٤٣- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ عُبَيْدِ بْنِ حُنَيْنٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: لَبِثْتُ سَنَةً وَأَنَا أُرِيدُ أَنْ أَسْأَلَ عُمَرَ عَنِ الْمَرْأَتَيْنِ اللَّتَيْنِ تَظَاهَرَتَا عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَجَعَلْتُ أَهَابُهُ فَنَزَلَ يَوْمًا مَنْزِلاً فَدَخَلَ الأَرَاكَ فَلَمَّا خَرَجَ سَأَلْتُهُ فَقَالَ: عَائِشَةُ وَحَفْصَةُ ثُمَّ قَالَ: كُنَّا فِي الْجَاهِلِيَّةِ لاَ نَعُدُّ النِّسَاءَ شَيْئًا فَلَمَّا جَاءَ الإِسْلاَمُ وَذَكَرَهُنَّ اللهُ رَأَيْنَا لَهُنَّ بِذَلِكَ عَلَيْنَا حَقًّا مِنْ غَيْرِ أَنْ نُدْخِلَهُنَّ فِي شَيْءٍ مِنْ أُمُورِنَا، وَكَانَ بَيْنِي وَبَيْنَ امْرَأَتِي كَلاَمٌ، فَأَغْلَظَتْ لِي فَقُلْتُ لَهَا: وَإِنَّكِ لَهُنَاكِ قَالَتْ: تَقُولُ هَذَا لِي وَابْنَتُكَ تُؤْذِي النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَتَيْتُ حَفْصَةَ فَقُلْتُ لَهَا: إِنِّي أُحَذِّرُكِ أَنْ تَعْصِي اللهَ وَرَسُولَهُ، وَتَقَدَّمْتُ إِلَيْهَا فِي أَذَاهُ فَأَتَيْتُ أُمَّ سَلَمَةَ فقلت لها. فقالت أَعْجَبُ منك يا عُمَرُ قد دخلت فى أمورنا فَلَمْ يَبْقَ إِلاَّ أن تَدْخُلِ بَيْنَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَزْوَاجِهِ، فَرَدَّدَتْ وَكَانَ رَجُلٌ مِنَ الأَنْصَارِ إِذَا غَابَ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى

اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَشَهِدْتُهُ أَتَيْتُهُ بِمَا يَكُونُ، وَإِذَا غِبْتُ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَشَهِدَ أَتَانِي بِمَا يَكُونُ مِنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَكَانَ مَنْ حَوْلَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَدِ اسْتَقَامَ لَهُ، فَلَمْ يَبْقَ إِلاَّ مَلِكُ غَسَّانَ بِالشَّامِ كُنَّا نَخَافُ أَنْ يَأْتِيَنَا، فَمَا شَعَرْتُ إِلاَّ بِالأَنْصَارِيِّ وَهُوَ يَقُولُ: إِنَّهُ قَدْ حَدَثَ أَمْرٌ، قُلْتُ لَهُ: وَمَا هُوَ أَجَاءَ الْغَسَّانِيُّ؟ قَالَ: أَعْظَمُ مِنْ ذَاكَ، طَلَّقَ رَسُولُ اللهِ ﷺ نِسَاءَهُ فَجِئْتُ فَإِذَا الْبُكَاءُ فِي حُجَرِهِنَّ كُلِّهَا وَإِذَا النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَدْ صَعِدَ فِي مَشْرُبَةٍ لَهُ وَعَلَى بَابِ الْمَشْرُبَةِ وَصِيفٌ فَأَتَيْتُهُ فَقُلْتُ: اسْتَأْذِنْ لِي، فَدَخَلْتُ فَإِذَا النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى حَصِيرٍ قَدْ أَثَّرَ فِي جَنْبِهِ وَتَحْتَ رَأْسِهِ مِرْفَقَةٌ مِنْ أَدَمٍ حَشْوُهَا لِيفٌ، وَإِذَا أُهُبٌ مُعَلَّقَةٌ، وَقَرَظٌ فَذَكَرْتُ الَّذِي قُلْتُ لِحَفْصَةَ وَأُمِّ سَلَمَةَ وَالَّذِي رَدَّتْ عَلَيَّ أُمُّ سَلَمَةَ، فَضَحِكَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَبِثَ تِسْعًا وَعِشْرِينَ لَيْلَةً ثُمَّ نَزَلَ.

[راجع: ٨٩]

आँहज़रत (ﷺ) की सुहबत से ग़ैर हाज़िर होता और वो मौजूद होते तो वो आँहज़रत (ﷺ) के बारे में तमाम ख़बरें मुझे आकर सुनाते थे। आपके चारों तरफ़ जितने (बादशाह वग़ैरह) थे उन सबसे आपके ता'ल्लुक़ात ठीक थे। सिर्फ़ शाम के मुल्क ग़स्सान का हमें डर रहता था कि वो कहीं हम पर हमला न कर दे। मैंने जो होश व हवास दुरुस्त किये तो वही अंसारी सहाबी थे और कह रहे थे कि एक हादष़ा हो गया। मैंने कहा क्या बात हुई क्या ग़स्सान चढ़ आया है? उन्होंने कहा कि इससे भी बड़ा हादष़ा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपनी अज़्वाज को तलाक़ दे दी। मैं जब (मदीना) हाज़िर हुआ तो तमाम अज़्वाज के हुज्रों से रोने की आवाज़ आ रही थी। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) अपने बालाख़ाने पर चले गये थे और बालाख़ाने के दरवाज़े पर एक नौजवान पहरेदार मौजूद था मैंने उसके पास पहुँचकर उससे कहा कि मेरे लिये हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से अंदर हाज़िर होने की इजाज़त मांग लो फिर मैं अंदर गया तो आप एक चटाई पर तशरीफ़ रखते थे जिसके निशानात आपके पहलू पर पड़े हुए थे और आपके सर के नीचे एक छोटा सा चमड़े का तकिया था। जिसमें खजूर की छाल भरी हुई थी। चंद कच्ची खालें लटक रही थीं और बबूल के पत्ते थे। मैंने आँहज़रत (ﷺ) से अपनी उन बातों का ज़िक्र किया जो मैंने हफ़्सा और उम्मे सलमा से कही थीं और वो भी जो उम्मे सलमा ने मेरी बात रद्द करते हुए कहा था। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) उस पर मुस्कुरा दिये। आपने इस बाला ख़ाने में उन्तीस दिन तक क़याम किया फिर आप वहाँ से नीचे उतर आए। (राजेअ : 89)

तश्रीह : आँहज़रत (ﷺ) इस वाक़िये में एक चटाई पर तशरीफ़ फ़र्मा थे चटाई भी ऐसी कि जिस्मे मुबारक पर उसके निशानात अयाँ थे इसी से बाब का मज़्मून निकलता है कि आपके बिस्तर का ये हाल था चमड़े का तकिया जिसमें ख़जूर की छाल भरी हुई थी। चंद कच्ची खालें लटक रही थीं जिनकी दबाग़त के लिये कुछ बबूल के पत्ते रखे हुए थे जो जी सारी दुनिया को तर्के दुनिया का सबक़ देने के लिये मब्ऊष़ हुआ उसकी पाकीज़ा ज़िंदगी ऐसी सादा होनी चाहिये। सल्लल्लाहु अल्फ़ अल्फ़ मर्रतिन बिअददि कुल्लि ज़र्रतिन आमीन।

5844. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हिशाम बिन यूसुफ़ स़न्आनी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको मअ़मर बिन राशिद ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने ख़बर दी, उन्हें हिन्दा बिन्ते हारिष़ ने ख़बर दी और उनसे ह़ज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) रात के वक़्त बेदार हुए और कहा अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं कैसी कैसी बलाएँ इस रात में नाज़िल हो रही हैं और क्या क्या रह़मतें उसके ख़ज़ानों से उतर रही हैं। कोई है जो उन हुज्रों वालियों को बेदार कर दे। देखो बहुत सी दुनिया में पहनने ओढ़ने वालियाँ आख़िरत में नंगी होंगी। ज़ुहरी ने बयान किया कि हिन्दा अपनी आस्तीनों में उँगलियों के बीच घुँडियाँ लगाती थीं। ताकि स़िर्फ़ उँगलियाँ खुलें उससे आगे न खुले। (राजेअ़: 115)

٥٨٤٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَتْنِي هِنْدُ بِنْتُ الْحَارِثِ، عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: اسْتَيْقَظَ النَّبِيُّ ﷺ مِنَ اللَّيْلِ وَهُوَ يَقُولُ: ((لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ مَاذَا أُنْزِلَ اللَّيْلَةَ مِنَ الْفِتَنِ؟ مَاذَا أُنْزِلَ مِنَ الْخَزَائِنِ؟ مَنْ يُوقِظُ صَوَاحِبَ الْحُجُرَاتِ؟ كَمْ مِنْ كَاسِيَةٍ فِي الدُّنْيَا عَارِيَةٍ يَوْمَ الْقِيَامَةِ؟)). قَالَ الزُّهْرِيُّ: وَكَانَتْ هِنْدٌ لَهَا أَزْرَارٌ فِي كُمَّيْهَا بَيْنَ أَصَابِعِهَا.

[راجع: ١١٥]

तश्रीह़ : मत़लब ये है कि हिन्दा को अपना जिस्म छुपाने का बड़ा ख़्याल रहता था। इस ह़दीष़ की मुत़ाबक़त बाब के तर्जुमा से इस त़रह़ है कि इसमें बारीक और उ़म्दह़ कपड़ों की मज़म्मत है जो औ़रतें बारीक कपड़े पहनती हैं और अपना जिस्म औरों को दिखलाती हैं वो आख़िरत में नंगी होंगी यही सज़ा उनको दी जाएगी।

बाब 32 : जो शख़्स़ नया कपड़ा पहने उसे क्या दुआ़ दी जाए

٣٢- باب مَا يُدْعَى لِمَنْ لَبِسَ ثَوْبًا جَدِيدًا

5845. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे इस्ह़ाक़ बिन सईद बिन अ़म्र बिन सईद बिन आ़स़ ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, कहा कि मुझसे उम्मे ख़ालिद बिन्ते ख़ालिद (रज़ि.) ने बयान किया, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास कुछ कपड़े आए जिनमें एक काली चादर भी थी। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम्हारा क्या ख़्याल है, किसे ये चादर दी जाए। स़ह़ाबा किराम (रज़ि.) ख़ामोश रहे फिर आपने फ़र्माया उम्मे ख़ालिद (रज़ि.) को बुला लाओ। चुनाँचे मुझे आँह़ज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में लाया गया और मुझे वो चादर आँह़ज़रत (ﷺ) ने अपने हाथ से इनायत फ़र्माई और फ़र्माया देर तक जीती रहो। दो मर्तबा आपने फ़र्माया फिर आप उस चादर के नक़्शो निगार को देखने लगे और अपने हाथ से मेरी त़रफ़ इशारा करके फ़र्माया उम्मे ख़ालिद! सनाह़ सनाह़ ये ह़ब्शी ज़ुबान का लफ़्ज़ है या'नी वाह़! क्या ज़ेब देती है। इस्ह़ाक़ बिन सईद ने

٥٨٤٥- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ سَعِيدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ سَعِيدِ بْنِ الْعَاصِ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي قَالَ: حَدَّثَتْنِي أُمُّ خَالِدٍ بِنْتُ خَالِدٍ، قَالَتْ: أُتِيَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِثِيَابٍ فِيهَا خَمِيصَةٌ سَوْدَاءُ، قَالَ: ((مَنْ تَرَوْنَ نَكْسُوهَا هَذِهِ الْخَمِيصَةَ)). فَأُسْكِتَ الْقَوْمُ قَالَ: ((ائْتُونِي بِأُمِّ خَالِدٍ)) فَأُتِيَ بِي النَّبِيُّ ﷺ فَأَلْبَسَنِيهَا بِيَدِهِ وَقَالَ: ((أَبْلِي وَأَخْلِقِي)) مَرَّتَيْنِ فَجَعَلَ يَنْظُرُ إِلَى عَلَمِ الْخَمِيصَةِ وَيُشِيرُ بِيَدِهِ إِلَيَّ وَيَقُولُ: ((يَا أُمَّ خَالِدٍ هَذَا سَنَا)) وَالسَّنَا بِلِسَانِ

الْحَبَشَةِ: الْحَسَنُ. قَالَ: إِسْحَاقُ: حَدَّثَتْنِي امْرَأَةٌ مِنْ أَهْلِي أَنَّهَا رَأَتْهُ عَلَى أُمِّ خَالِدٍ. [راجع: ٣٠٧١]

बयान किया कि मुझसे मेरे घर की एक औरत ने बयान किया कि उन्होंने वो चादर हज़रत उम्मे ख़ालिद (रज़ि.) के पास देखी थी। (राजेअ: 2071)

तश्रीह : नया कपड़ा पहनने वाले को ये दुआ देना मस्नून है कि अल्लाह तुमको ये कपड़ा मुबारक करे तुम ये कपड़ा ख़ूब पुराना करके फाड़ो या'नी तुम्हारी उम्र दराज़ हो।

٣٣- باب النَّهْيِ عَنِ التَّزَعْفُرِ لِلرِّجَالِ

बाब 33 : मर्दों के लिये ज़ा'फ़रान के रंग का इस्ते'माल मना है (या'नी बदन या कपड़े को ज़ा'फ़रान से रंगना)

٥٨٤٦- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ، عَنْ أَنَسٍ قَالَ: نَهَى النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يَتَزَعْفَرَ الرَّجُلُ.

5846. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वारिष़ बिन सईद ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने इससे मना किया कि कोई मर्द ज़ा'फ़रान के रंग का इस्ते'माल करे।

तश्रीह : अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन रुफ़ेअ़ मशहूर आ़लिम षिक़ह ताबेईन में से हैं हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) के शागिर्द हैं। 71 साल की उम्र पाई। हदीष़ और बाब का मतलब वाज़ेह है।

٣٤- باب الثَّوْبِ الْمُزَعْفَرِ

बाब 34 : ज़ा'फ़रान से रंगा हुआ कपड़ा पहनना मर्दों के लिये सख़्त मना है

٥٨٤٧- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: نَهَى النَّبِيُّ ﷺ أَنْ يَلْبَسَ الْمُحْرِمُ ثَوْبًا مَصْبُوغًا بِوَرْسٍ أَوْ بِزَعْفَرَانٍ. [راجع: ١٣٤]

5847. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़यैना ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया और उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने मना किया था कि कोई मुहरिम विर्स या ज़ा'फ़रान से रंगा हो कपड़ा पहने। (राजेअ: 134)

विर्स एक ख़ुश्बूदार रंगीन घास होती है।

٣٥- باب الثَّوْبِ الأَحْمَرِ

बाब 35 : सुर्ख़ कपड़ा पहनने के बयान में

٥٨٤٨- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، سَمِعَ الْبَرَاءَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ كَانَ النَّبِيُّ ﷺ مَرْبُوعًا وَقَدْ رَأَيْتُهُ فِي حُلَّةٍ حَمْرَاءَ مَا رَأَيْتُ شَيْئًا أَحْسَنَ مِنْهُ.

5848. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने और उन्होंने हज़रत बरा (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) मियाना क़द थे और मैंने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को सुर्ख़ जोड़े में देखा आपसे ज़्यादा ख़ूबसूरत कोई चीज़ मैंने

नहीं देखी। (राजेअ़ : 3551) [راجع: ٣٥٥١]

तश्रीह : इमाम शाफ़िई (रह़.) और एक जमाअ़ते सहाबा और ताबेईन का ये क़ौल है कि सुर्ख़ कपड़ा पहनना मर्द के लिये दुरुस्त है। कुछ ने नाजाइज़ कहा है। बैहक़ी ने कहा कि सह़ीह़ ये है कि कसिम का सुर्ख़ रंग मर्दों के लिये नाजाइज़ है। इमाम शौकानी ने अहले ह़दीष़ का मज़हब ये क़रार दिया है कि कसिम के अलावा दूसरा सुर्ख़ रंग मर्दों के लिये दुरुस्त है और यही सह़ीह़ है ह़दीष़ में मज़्कूर सुर्ख़ जोड़े से ये मुराद है कि उसमें सुर्ख़ धारियाँ थीं।

बाब 36 : सुर्ख़ ज़ीनपोश का क्या हुक्म है?

٣٦- باب الْمِيثَرَةِ الْحَمْرَاءِ

क़स्तलानी (रह़.) ने कहा सुर्ख़ ज़ीनपोश से वही मुराद है जो रेशमी हो।

5849. हमसे क़बीसा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अश्अ़ष़ ने, उनसे मुआविया बिन सुवैद बिन मुक़र्रिन ने और उसे ह़ज़रत बरा (रज़ि.) ने बयान किया कि हमें रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सात चीज़ों का हुक्म दिया था। बीमार की अ़यादत का, जनाज़ा के पीछे चलने का, छींकने वाले का जवाब (यरह़मुकल्लाह से) देने का और आँह़ज़रत (ﷺ) ने हमें रेशम, दीबा, क़स्सिय्यि, इस्तब्रक़ और सुर्ख़ ज़ीन पोशों के इस्ते'माल से भी मना किया था। (राजेअ़ : 1239)

٥٨٤٩- حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَشْعَثَ، عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ سُوَيْدِ بْنِ مُقَرِّنٍ عَنِ الْبَرَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: أَمَرَنَا النَّبِيُّ ﷺ بِسَبْعٍ: عِيَادَةِ الْمَرِيضِ، وَاتِّبَاعِ الْجَنَائِزِ، وَتَشْمِيتِ الْعَاطِسِ، وَنَهَانَا عَنْ لُبْسِ الْحَرِيرِ وَالدِّيبَاجِ، وَالْقَسِّيِّ، وَالإِسْتَبْرَقِ، وَالْمَيَاثِرِ الْحُمْرِ. [راجع: ١٢٣٩]

तश्रीह : चार बातें इस रिवायत में वो मज़्कूर नहीं जिनके करने का आपने हुक्म फ़र्माया वो ये हैं दा'वत क़ुबूल करना, सलाम को फैलाना, मज़्लूम की मदद करना, क़सम को सच्चा करना। इसी त़रह़ सात काम जो मना हैं उनमें से यहाँ पाँच मज़्कूर हैं वो ये हैं सोने की अंगूठी पहनना, चाँदी के बर्तनों में खाना।

बाब 37 : साफ़ चमड़े की जूती पहनना

٣٧- باب النِّعَالِ السِّبْتِيَّةِ وَغَيْرِهَا

जिस पर से बाल निकाल लिये गये हों या'नी तरी के जूता पहनना।

5850. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद ने बयान किया, उनसे सईद बिन अबी मस्लमा ने, उन्होंने कहा मैंने ह़ज़रत अनस (रज़ि.) से पूछा क्या नबी करीम जूते पहने हुए नमाज़ पढ़ते थे तो उन्होंने कहा कि हाँ। (राजेअ़ : 3060)

٥٨٥٠- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ سَعِيدٍ أَبِي مَسْلَمَةَ قَالَ سَأَلْتُ أَنَسًا أَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُصَلِّي فِي نَعْلَيْهِ؟ قَالَ : نَعَمْ. [راجع: ٣٠٦٠]

तश्रीह : इस रिवायत की तत्बीक़ बाब का तर्जुमा से मुश्किल है मगर ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने अपनी आ़दत के मुवाफ़िक़ इससे इस्तिदलाल किया क्योंकि जूती आ़म त़ौर पर दोनों त़रह़ की जूती को शामिल है या'नी उस चमड़े की जूती को जिस पर बाल हों और उसको भी जिसके बाल निकाल दिये गये हों। पाक साफ़ सुथरी जूतियों में नमाज़ पढ़ना बिला शक जाइज़ दुरुस्त है और आँह़ज़रत (ﷺ) का अकष़र ये मा'मूल था।

5851. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा क़अ़म्बी ने बयान

٥٨٥١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ،

عَنْ مَالِكٍ، عَنْ سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ عُبَيْدِ بْنِ جُرَيْجٍ، أَنَّهُ قَالَ لِعَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: رَأَيْتُكَ تَصْنَعُ أَرْبَعًا لَمْ أَرَ أَحَدًا مِنْ أَصْحَابِكَ يَصْنَعُهَا قَالَ: مَا هِيَ يَا ابْنَ جُرَيْجٍ؟ قَالَ : رَأَيْتُكَ لاَ تَمَسُّ مِنَ الأَرْكَانِ إِلاَّ الْيَمَانِيَيْنِ، وَرَأَيْتُكَ تَلْبَسُ النِّعَالَ السِّبْتِيَّةَ، وَرَأَيْتُكَ تَصْبُغُ بِالصُّفْرَةِ، وَرَأَيْتُكَ إِذَا كُنْتَ بِمَكَّةَ أَهَلَّ النَّاسُ إِذَا رَأَوُا الْهِلاَلَ، وَلَمْ تُهِلَّ أَنْتَ حَتَّى كَانَ يَوْمُ التَّرْوِيَةِ، فَقَالَ لَهُ عَبْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ: أَمَّا الأَرْكَانُ فَإِنِّي لَمْ أَرَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَمَسُّ إِلاَّ الْيَمَانِيَيْنِ، وَأَمَّا النِّعَالُ السِّبْتِيَّةُ، فَإِنِّي رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَلْبَسُ النِّعَالَ الَّتِي لَيْسَ فِيهَا شَعَرٌ وَيَتَوَضَّأُ فِيهَا، فَأَنَا أُحِبُّ أَنْ أَلْبَسَهَا، وَأَمَّا الصُّفْرَةُ فَإِنِّي رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَصْبُغُ بِهَا، فَأَنَا أُحِبُّ أَنْ أَصْبُغَ بِهَا، وَأَمَّا الْهِلاَلُ فَإِنِّي لَمْ أَرَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُهِلُّ حَتَّى تَنْبَعِثَ بِهِ رَاحِلَتُهُ.

[راجع: ١٦٦]

किया, उनसे इमाम मालिक ने, उनसे सईद मक़्बरी ने, उनसे उबैद बिन जुरैज ने कि उन्होंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से अर्ज़ किया कि मैं आपको चार ऐसी चीज़ें करते देखता हूँ जो मैंने आपके किसी साथी को करते नहीं देखा। हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) ने कहा इब्ने जुरैज! वो क्या चीज़ें हैं? उन्होंने कहा कि मैंने आपको देखा है कि आप (ख़ाना–ए–का'बा के) किसी कोने को तवाफ़ में हाथ नहीं लगाते सिर्फ़ दो अरकान यमानी (या'नी सिर्फ़ रुक्ने यमानी और हज्रे अस्वद) को छूते हैं और मैंने आपको देखा है कि आप साफ़ ज़ीन के चमड़े का जूता पहनते हैं और मैंने आपको देखा कि आप अपना कपड़ा ज़र्द रंग से रंगते हैं या ज़र्द ख़िज़ाब लगाते हैं और मैंने आपको देखा कि जब मक्का में होते हैं तो सब लोग तो ज़िलहिज्ज का चाँद देखकर एहराम बाँध लेते हैं लेकिन आप एहराम नहीं बाँधते बल्कि तरविया के दिन (8 ज़िलहिज्ज को) एहराम बाँधते हैं। उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कहा कि ख़ाना–ए–का'बा के अरकान के बारे में जो तुमने कहा तो मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को हमेशा सिर्फ़ हज्रे अस्वद और रुक्ने यमानी को छूते देखा, साफ़ तरी के चमड़े के जूतों के बारे में जो तुमने पूछा तो मैंने देखा है कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) उसी चमड़े का जूता पहनते थे जिसमें बाल नहीं होते थे और आप उसको पहने हुए वुज़ू करते थे इसलिये मैं भी पसंद करता हूँ कि ऐसा ही जूता इस्ते'माल करूँ। ज़र्द रंग के बारे में तुमने जो कहा है तो मैंने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को उससे ख़िज़ाब करते या कपड़े रंगते देखा है इसलिये मैं भी इस ज़र्द रंग को पसंद करता हूँ और रहा एहराम बाँधने का मसला तो मैंने आँहज़रत (ﷺ) को देखा कि आप उसी वक़्त एहराम बाँधते जब ऊँट पर सवार होकर जाने लगते। (राजेअ : 166)

तश्रीह : सहीह ये है कि आँहज़रत (ﷺ) ने ज़र्द रंग का ख़िज़ाब दाढ़ी में नहीं किया लेकिन आप ज़र्द ख़ुश्बू लगाया करते थे। उसकी ज़र्दी शायद बालों में भी लग जाती हो मा'लूम हुआ कि ज़र्द रंग का इस्ते'माल मर्दों को भी दुरुस्त है बशर्ते कि ज़ा'फ़रान का ज़र्द रंग न हो। एहरामे हज्ज 8 ज़िलहिज्ज को बाँधना मस्नून है। हज्जे क़िरान वाले इससे मुस्तष्ना (अलग) हैं।

इस्लाह : इस रिवायत में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) का रुक्ने यमानी को छूना मज़्कूर है और रुक्ने यमानी को सिर्फ़ छूना ही चाहिये। चूमना, बोसा देना सिर्फ़ हज्रे अस्वद के लिये है। हमारे मुहतरम बुज़ुर्ग (हज़रत हाजी मुहम्मद सिद्दीक़

साहब कराची वाले मुराद है) ने तवज्जह दिलाई है कि मैंने किसी जगह रुक्ने यमानी के लिये भी चूमना लिख दिया है अल्लाह मेरे सह्व (भूल) को मुआफ़ करे किसी भाई को इस बुख़ारी शरीफ़ में किसी जगह मेरे क़लम से अगर रुक्ने यमानी को बोसा देने का लफ़्ज़ नज़र आए तो उसकी इस्लाह करके वहाँ सिर्फ़ रुक्ने यमानी को हाथ लगाना दर्ज कर लें। (राज़)

٥٨٥٢- حدَّثنا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُف. أخبرنا مالِكٌ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينارٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: نَهى رَسُولُ اللهِ ﷺ أَنْ يَلْبَسَ الْمُحْرِمُ ثَوْبًا مَصْبُوغًا بِزَعْفرانٍ، أَوْ وَرْسٍ، وقَالَ: ((مَنْ لَمْ يَجِدْ نَعْلَيْنِ فَلْيَلْبَسْ خُفَّيْنِ وَلْيَقْطَعْهُمَا أَسْفَلَ مِنَ الْكَعْبَيْنِ)). [راجع: ١٣٤]

5852. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमें अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने मुह़रिम को ज़ा'फ़रान या विर्स से रंगा हुआ कपड़ा पहनने से मना किया था और आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया जिसे जूते न मिलें वो मोज़े ही पहन लें लेकिन उनको टख़ने के नीचे तक काट दें। (राजेअ़ : 134)

٥٨٥٣- حدَّثنا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُف. حدَّثَنَا سُفْيانُ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينارٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ زَيْدٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ لَمْ يَكُنْ لَهُ إِزَارٌ فَلْيَلْبَسِ السَّرَاوِيلَ، وَمَنْ لَمْ يَكُنْ لَهُ نَعْلاَنِ فَلْيَلْبَسْ خُفَّيْنِ)). [راجع: ١٧٤٠]

5853. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ फ़रयाबी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने, उनसे जाबिर बिन ज़ैद ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जिसके पास एह़राम बाँधने के लिये तहबन्द न हो वो पाजामा पहन ले (उसका काटना ज़रूरी नहीं है) और जिसके पास जूते न हों वो मोज़े ही पहन ले लेकिन टख़्नों के नीचे तक उनको काट डाले जैसा कि ऊपर की ह़दीष़ में है। (राजेअ़ : 1740)

٣٨- باب يَبْدَأُ بِالنَّعْلِ الْيُمْنَى

बाब 38 : इस बयान में कि पहनते वक़्त दाएँ पैर में जूता पहने

٥٨٥٤- حدَّثنا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ، حدَّثَنَا شُعْبَةُ، قَالَ: أَخْبَرَنِي أَشْعَثُ بْنُ سُلَيْمٍ، سَمِعْتُ أَبِي يُحَدِّثُ عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُحِبُّ التَّيَمُّنَ فِي طُهُورِهِ وَتَرَجُّلِهِ وَتَنَعُّلِهِ. [راجع: ١٦٧]

5854. हमसे ह़ज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे अश्अ़ष़ बिन सुलैम ने ख़बर दी कि मैंने अपने वालिद से सुना, वो मसरूक़ से बयान करते थे और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) त़हारत में कँघा करने में और जूता पहनने में दाहिनी त़रफ़ से शुरू करने को पसंद करते थे। (राजेअ़ : 167)

तश्रीह : एक रिवायत में इतना ज़्यादा है कि हर काम में आप दाएँ त़रफ़ को पसंद करते मगर कुछ काम अलग है जैसे जूता उतारना, मस्जिद से बाहर निकलना या पाख़ाना जाना वग़ैरह वग़ैरह उनसे पहले बायाँ पैर इस्ते'माल करना है। इस्लाम में दाएँ और बाएँ में काफ़ी इम्तियाज़ बरता गया है। क़ुर्आन मजीद ने अहले जन्नत को अस्ह़ाबुल यमीन या'नी दाएँ

तरफ़ वाले और अहले जहन्नम को अस्हाबुश्शिमाल बाईं तरफ़ वाले कहा है। दुआ है कि अल्लाह तआला न सिर्फ़ मुझको बल्कि तमाम क़ारेईने बुख़ारी शरीफ़ को रोज़े महशर अस्हाबुल यमीन में दाख़िला नसीब फ़र्माए, आमीन।

बाब 39 : इस बयान में कि पहले बाएँ पैर का जूता उतारे बाद में दाएँ पैर का

٣٩- باب يَنْزِعُ نَعْلَ الْيُسْرَى

5855. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अअरज ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जब तुममें से कोई शख़्स जूता पहने तो दाएँ तरफ़ से शुरू करे और जब उतारे तो बाएँ तरफ़ से उतारे ताकि दाहिनी जानिब पहनने में अव्वल हो और उतारने में आख़िर हो।

٥٨٥٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، أَنَّ رَسُول

ये इस्लामी आदाब हैं जो बेशुमार फ़वाइद पर मुश्तमिल हैं। दाएँ और बाएँ का इम्तियाज़ हिदायते शरई के मुताबिक़ मल्हूज़ रखना बहुत ज़रूरी है। **अह़्सनुल हदयि हदयु मुहम्मद (ﷺ)** का यही मतलब है कि बेहतरीन तर्ज़े ज़िन्दगी वो है जिसका नमूना जनाबे रसूले करीम (ﷺ) ने पेश किया है।

बाब 40 : इस बारे में कि सिर्फ़ एक पैर में जूता हो, दूसरा पैर नंगा हो इस तरह चलना मना है

٤٠- باب لاَ يَمْشِي فِي نَعْلٍ وَاحِدٍ

5856. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अअरज ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया तुममें कोई शख़्स सिर्फ़ एक पैर में जूता पहनकर न चले या दोनों पैर नंगा रखे या दोनों में जूता पहने।

٥٨٥٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لاَ يَمْشِي أَحَدُكُمْ فِي نَعْلٍ وَاحِدَةٍ لِيُحْفِهِمَا أَوْ لِيُنْعِلْهُمَا جَمِيعًا)).

तश्रीह : इसमें बड़ी ह़िक्मत है अव्वल तो ये बदनुमाई है कि एक पैर में जूता हो दूसरा नंगा हो। दूसरे उसमें पैर ऊँचे नीचे होकर मोच आ जाने का भी ख़तरा है। कांटा लग जाने का ख़तरा अलग है बहरहाल फ़र्माने रसूले पाक (ﷺ) ह़िक्मत से ख़ाली नहीं है। **फ़ेअलुल हकीम ला यख़्लू अनिल ह़िक्मत।**

बाब 41 : हर चप्पल में दो दो तस्मे होना और एक तस्मा भी काफ़ी है

٤١- باب قِبَالاَنِ فِي نَعْلٍ وَمَنْ رَأَى قِبَالاً وَاحِدًا وَاسِعًا

5857. हमसे हज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा

٥٨٥٧- حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ،

हमसे हम्माम ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के चप्पल में दो तस्मे थे।

حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، عَنْ قَتَادَةَ، حَدَّثَنَا أَنَسٌ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ نَعْلَ النَّبِيِّ ﷺ كَانَ لَهَا قِبَالاَنِ.

5858. मुझे मुह़म्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा हमको ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें ईसा बिन त़ह्मान ने ख़बर दी, बयान किया कि ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) दो जूते लेकर हमारे पास बाहर आए जिसमें दो तस्मे लगे हुए थे। ष़ाबित बिनानी ने कहा कि ये नबी करीम (ﷺ) के जूते हैं। (राजेअ़ : 5857)

٥٨٥٨- حَدَّثَنِي مُحَمَّدٌ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا عِيسَى بْنُ طَهْمَانَ قَالَ: خَرَجَ إِلَيْنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ بِنَعْلَيْنِ لَهُمَا قِبَالاَنِ فَقَالَ ثَابِتٌ الْبُنَانِيُّ: هَذِهِ نَعْلُ النَّبِيِّ ﷺ.

[راجع: ٥٨٥٧]

तश्रीह़ : इसी आख़िरी जुम्ले से बाब का दूसरा मज़्मून ष़ाबित हुआ। ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक उ़लमा-ए-रब्बानिय्यीन में से हैं। इमाम फ़क़ीह, ह़ाफ़िज़े ह़दीष़, ज़ाहिद, परहेज़गार, सख़ी पुख़्ता कार थे। अल्लाह तआ़ला ने ख़स्लतों में से ऐसी कोई ख़सलत नहीं पैदा की जो ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक को न अ़ता की हो। बग़दाद में दर्से ह़दीष़ दिया, सन 118 हिज्री में पैदा हुए, सन 181 हिज्री में वफ़ात पाई। **रब्बि तवफ़्फ़नी मुस्लिमन व अल्हिक़्नी बिस्सालिह़ीन आमीन**

बाब 42. लाल चमड़े का ख़ैमा बनाना

٤٢- باب الْقُبَّةِ الْحَمْرَاءِ مِنْ أَدَمٍ

5859. हमसे मुह़म्मद बिन अ़रअ़रह ने बयान किया, कहा कि मुझसे उ़मर बिन अबी ज़ाइदा ने बयान किया, उनसे औ़न बिन अबी जुहैफ़ा ने और उनसे उनके वालिद वहब बिन अ़ब्दुल्लाह सवाई (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं (ह़ज्जतुल विदाअ़ के मौक़े पर) ख़िदमते नबवी में ह़ाज़िर हुआ तो आप चमड़े के एक सुर्ख़ ख़ैमा में तशरीफ़ रखे हुए थे और मैंने ह़ज़रत बिलाल (रज़ि.) को देखा कि आँह़ज़रत (ﷺ) के वुज़ू का पानी लिये हुए हैं और स़ह़ाबा किराम (रज़ि.) आँह़ज़रत (ﷺ) के वुज़ू के पानी को ले लेने में एक–दूसरे के आगे बढ़ने की कोशिश कर रहे हैं। अगर किसी को कुछ पानी मिल जाता है तो वो उसे अपने बदन पर लगा लेता है और जिसे कुछ नहीं मिलता वो अपन साथी के हाथ पर तरी ही लगाने की कोशिश करता है। (राजेअ़ : 187)

٥٨٥٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَرْعَرَةَ، قَالَ: حَدَّثَنِي عُمَرُ بْنُ أَبِي زَائِدَةَ، عَنْ عَوْنِ بْنِ أَبِي جُحَيْفَةَ، عَنْ أَبِيهِ قَالَ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ فِي قُبَّةٍ حَمْرَاءَ مِنْ أَدَمٍ، وَرَأَيْتُ بِلاَلاً أَخَذَ وَضُوءَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَالنَّاسُ يَبْتَدِرُونَ الْوَضُوءَ، فَمَنْ أَصَابَ مِنْهُ شَيْئًا تَمَسَّحَ بِهِ، وَمَنْ لَمْ يُصِبْ مِنْهُ شَيْئًا أَخَذَ مِنْ بَلَلِ يَدِ صَاحِبِهِ.

[راجع: ١٨٧]

तश्रीह़ : इससे अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि स़ह़ाबा किराम (रज़ि.) के दिलों में रसूलुल्लाह (ﷺ) की मुह़ब्बत व अ़क़ीदत किस दर्जे थी। आपके वुज़ू के गिरे हुए पानी को वो किस सबक़त के साथ ह़ासिल करने की कोशिश करते थे। रज़ियल्लाहु अ़न्हुम अज्मईन। बयान में सुर्ख़ ख़ैमे का ज़िक्र आया है यही बाब से मुत़ाबक़त है।

5860. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने और उन्हें ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने ख़बर दी, (दूसरी सनद) और लैष़

٥٨٦٠- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِي أَنَسُ بْنُ

बिन सअ़द ने कहा कि मुझसे यूनुस ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने कहा कि मुझको ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) ने अंसार को बुलवाया और उन्हें लाल चमड़े के एक ख़ैमे में जमा किया। (राजेअ़ : 3146)

مالِكٍ ح. وَقَالَ اللَّيْثُ، حَدَّثَنِي يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، قَالَ: أَخْبَرَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، قَالَ: أَرْسَلَ النَّبِيُّ ﷺ إِلَى الأَنْصَارِ، وَجَمَعَهُمْ فِي قُبَّةٍ مِنْ أَدَمٍ. [راجع: ٣١٤٦]

तश्रीह : ये वो क़िस्सा है जो ग़ज़्वा-ए-ताइफ़ में गुज़र चुका है जब अंसार ने कहा था कि माले ग़नीमत क़ुरैश के लोगों को दे रहे हैं हमको नहीं देते हालाँकि अभी तक हमारी तलवारों से क़ुरैश का ख़ून टपक रहा है जिसके जवाब में आप (ﷺ) ने फ़र्माया था कि क्या तुम लोग इस पर ख़ुश नहीं हो कि और लोग ऊँट और घोड़े लेकर जाएँगे और तुम मुझको लेकर मदीना लौटोगे या तुम तो ख़ज़ाना कौनैन के मालिक हो। इस पर अंसार ने अपनी दिली रज़ामन्दी का इज़्हार करके आपको मुत्मइन कर दिया था। रज़ियल्लाह अ़न्हुम व रज़ अ़न्ह आमीन। यहाँ भी सुर्ख़ ख़ैमे का ज़िक्र है। यही बाब की वजह मुताबक़त है।

बाब 43 : बोरे या उसी जैसी किसी ह़क़ीर चीज़ पर बठना

٤٣- بَابُ الْجُلُوسِ عَلَى الْحَصِيرِ وَنَحْوِهِ

5861. मुझसे मुहम्मद बिन अबीबक्र ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुअ़तमिर ने बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह ने बयान किया, उनसे सईद बिन अबी सईद ने बयान किया, उनसे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) रात में चटाई का घेरा बना लेते थे और उन घेरे में नमाज़ पढ़ते थे और उसी चटाई को दिन में बिछाते थे और उस पर बैठते थे फिर लोग (रात की नमाज़ के वक़्त) नबी करीम (ﷺ) के पास जमा होने लगे और आँह़ज़रत (ﷺ) की नमाज़ की इक़्तिदा करने लगे जब मज्मअ़ ज़्यादा बढ़ गया तो आँह़ज़रत (ﷺ) मुतवज्जह हुए और फ़र्माया लोगों! अ़मल उतने ही किया करो जितनी कि तुममें ताक़त हो क्योंकि अल्लाह तआ़ला नहीं थकता जब तक तुम (अ़मल से) न थक जाओ और अल्लाह की बारगाह में सबसे ज़्यादा पसंद वो अ़मल है जिसे पाबन्दी से हमेशा किया जाए, ख़्वाह वो कम ही हो। (राजेअ़ : 729)

٥٨٦١- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا، أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَحْتَجِرُ حَصِيرًا بِاللَّيْلِ، فَيُصَلِّي وَيَبْسُطُهُ بِالنَّهَارِ، فَيَجْلِسُ عَلَيْهِ فَجَعَلَ النَّاسُ يَثُوبُونَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَيُصَلُّونَ بِصَلاَتِهِ، حَتَّى كَثُرُوا فَأَقْبَلَ فَقَالَ: ((يَا أَيُّهَا النَّاسُ خُذُوا مِنَ الأَعْمَالِ مَا تُطِيقُونَ فَإِنَّ اللهَ لاَ يَمَلُّ حَتَّى تَمَلُّوا وَإِنَّ أَحَبَّ الأَعْمَالِ إِلَى اللهِ مَا دَامَ وَإِنْ قَلَّ)). [راجع: ٧٢٩]

तश्रीह : बेहतरीन अ़मल वो है जिस पर हमेशगी की जाए मष़लन तहज्जुद या और कोई नफ़्ली नमाज़ है ख़्वाह रकआ़त कम ही हों मगर हमेशगी करने से कुछ ख़ैरो-बरकत ह़ासिल होती है। आज किया कल छोड़ दिया ऐसा अ़मल अल्लाह तआ़ला के पास कोई वज़न नहीं रखता। ये हुक्म नफ़्ल इ़बादत के लिये है। फ़राइज़ पर तो मुह़ाफ़िज़त करना लाज़िम ही है। रिवायत में चटाई का ज़िक्र आया है वजहे मुताबक़त बाब और ह़दीष़ में यही है।

बाब 44 : अगर किसी कपड़े में सोने की घुण्डी या तक्मा लगा हो

٤٤- بَابُ الْمُزَرَّرِ بِالذَّهَبِ

5862. और लैष़ बिन सअ़द ने कहा कि मुझसे इब्ने अबी मुलैका ने बयान किया, उनसे ह़ज़रत मिस्वर बिन मख़्रमा (रज़ि.) ने कि उनसे उनके वालिद ह़ज़रत मख़्रमा (रज़ि.) ने कहा बेटे मुझे मा'लूम हुआ है कि नबी करीम (ﷺ) के पास कुछ क़बाएँ आई हैं और आप (ﷺ) उन्हें तक़्सीम फ़र्मा रहे हैं। हमें भी आँह़ज़रत (ﷺ) के पास ले चलो। चुनाँचे हम गये और आँह़ज़रत (ﷺ) को आपके घर ही में पाया। वालिद ने मुझसे कहा बेटे मेरा नाम लेकर आँह़ज़रत (ﷺ) को बुलाओ। मैंने उसे बहुत बड़ी तौहीन आमेज़ बात समझा (कि आँह़ज़रत ﷺ को अपने वालिद के लिये बुलाकर तकलीफ़ दूँ) चुनाँचे मैं ने वालिद स़ाहब से कहा कि मैं आपके लिये आँह़ज़रत (ﷺ) को बुलाऊँ? उन्होंने कहा कि बेटे हाँ। आप (ﷺ) कोई जाबिर स़िफ़त इंसान नहीं हैं। चुनाँचे मैंने बुलाया तो आँह़ज़रत (ﷺ) बाहर तशरीफ़ ले आए। आपके ऊपर दीबा की एक क़बा थी जिसमें सोने की घुण्डियाँ लगी हुई थीं। आपने फ़र्माया, मख़्रमा उसे मैंने तुम्हारे लिये छुपा के रखा हुआ था। चुनाँचे आपने वो क़बा उन्हें इनायत फ़र्मा दी। (राजेअ़ : 2599)

٥٨٦٢- وقال اللَّيْثُ: حَدَّثَنِي ابْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ، عَنِ الْمِسْوَرِ بْنِ مَخْرَمَةَ، أَنَّ أَبَاهُ مَخْرَمَةَ قَالَ لَهُ: يَا بُنَيَّ إِنَّهُ بَلَغَنِي أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَدِمَتْ عَلَيْهِ أَقْبِيَةٌ فَهُوَ يَقْسِمُهَا، فَاذْهَبْ بِنَا إِلَيْهِ فَذَهَبْنَا فَوَجَدْنَا النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي مَنْزِلِهِ فَقَالَ لِي: يَا بُنَيَّ ادْعُ لِي النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَعْظَمْتُ ذَلِكَ، فَقُلْتُ: أَدْعُو لَكَ رَسُولَ اللهِ فَقَالَ : يَا بُنَيَّ إِنَّهُ لَيْسَ بِجَبَّارٍ. فَدَعَوْتُهُ فَخَرَجَ وَعَلَيْهِ قَبَاءٌ مِنْ دِيبَاجٍ مُزَرَّرٌ بِالذَّهَبِ فَقَالَ ((يَا مَخْرَمَةُ هَذَا خَبَّأْنَاهُ لَكَ)) فَأَعْطَاهُ إِيَّاهُ)).

[راجع: ٢٥٩٩]

बाब 45 : सोने की अंगूठियाँ मर्द को पहनना कैसा है?

٤٥- باب خَوَاتِيمِ الذَّهَبِ

5863. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा हमसे अश्अ़ष़ बिन सुलैम ने कहा कि मैंने मुआ़विया बिन सुवैद बिन मुक़र्रिन से सुना, उन्होंने कहा कि मैंने ह़ज़रत बरा बिन आ़ज़िब (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने हमें सात चीज़ों से रोका था। आप (ﷺ) ने हमें सोने की अंगूठी से या रावी ने कहा कि सोने के छल्ले से, रेशम से, इस्तब्रक़ से, दीबा से, सुर्ख़ मैष़रा से, क़सी से और चाँदी के बर्तन से मना किया था और हमें आपने सात चीज़ों या'नी बीमार की मिज़ाज पुर्सी करने, जनाज़ा के पीछे चलने, छींकने वाले का जवाब देने, सलाम के जवाब देने, दा'वत करने वाले की दा'वत क़ुबूल करने (किसी बात पर) क़सम खा लेने वाले की क़सम पूरी कराने और मज़्लूम की मदद करने का हुक्म फ़र्माया था।

٥٨٦٣- حَدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، حَدَّثَنَا أَشْعَثُ بْنُ سُلَيْمٍ، قَالَ: سَمِعْتُ مُعَاوِيَةَ بْنَ سُوَيْدِ بْنِ مُقَرِّنٍ قَالَ: سَمِعْتُ الْبَرَاءَ بْنَ عَازِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ نَهَانَا النَّبِيُّ ﷺ عَنْ سَبْعٍ: نَهَى عَنْ خَاتَمِ الذَّهَبِ، أَوْ قَالَ حَلْقَةِ الذَّهَبِ. وَعَنِ الْحَرِيرِ وَالإِسْتَبْرَقِ وَالدِّيبَاجِ، وَالْمِيثَرَةِ الْحَمْرَاءِ، وَالْقَسِّيِّ، وَآنِيَةِ الْفِضَّةِ، وَأَمَرَنَا بِسَبْعٍ: بِعِيَادَةِ الْمَرِيضِ، وَاتِّبَاعِ الْجَنَائِزِ، وَتَشْمِيتِ الْعَاطِسِ، وَرَدِّ السَّلاَمِ، وَإِجَابَةِ الدَّاعِي، وَإِبْرَارِ الْمُقْسِمِ، وَنَصْرِ الْمَظْلُومِ.

(राजेअ: 1239)

[راجع: ١٢٣٩]

5864. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे ग़ुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, उनसे नज़्र बिन अनस ने, उनसे बशीर बिन नुहैक ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने सोने की अंगूठी के पहनने से मर्दों को मना किया था। और अम्र ने बयान किया, कहा हमको शुअबा ने ख़बर दी, उन्हें क़तादा ने, उन्होंने नज़्र से सुना और उन्होंने बशीर से सुना। आगे इसी तरह रिवायत बयान की।

٥٨٦٤- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنِ النَّضْرِ بْنِ أَنَسٍ، عَنْ بَشِيرِ بْنِ نَهِيكٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ نَهَى عَنْ خَاتَمِ الذَّهَبِ. وَقَالَ عَمْرٌو: أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ سَمِعَ النَّضْرَ سَمِعَ بَشِيرًا مِثْلَهُ.

इस रिवायत से वाज़ेह है कि सोने की अंगूठी का इस्ते'माल मर्दों के लिये क़त्अन हराम है, जो शख़्स हलाल जाने उस पर कुफ़्र आइद होता है लेकिन औरतों के लिये सोने का इस्ते'माल करना जाइज़ है।

5865. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन अबी कष़ीर ने बयान किया, उनसे उबैदुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे नाफ़ेअ ने बयान किया और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सोने की एक अंगूठी बनवाई और उसका नगीना हथेली की जानिब रखा फिर कुछ दूसरे लोगों ने भी इसी तरह की अंगूठियाँ बनवा लीं। आख़िर आँहज़रत (ﷺ) ने उसे फेंक दिया और चाँदी की अंगूठी बनवा ली। (दीगर मक़ामात : 5866, 5867, 5873, 5951, 7298)

٥٨٦٥- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ قَالَ : حَدَّثَنِي نَافِعٌ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ اتَّخَذَ خَاتَمًا مِنْ ذَهَبٍ وَجَعَلَ فَصَّهُ مِمَّا يَلِي كَفَّهُ فَاتَّخَذَهُ النَّاسُ فَرَمَى بِهِ وَاتَّخَذَ خَاتَمًا مِنْ وَرِقٍ أَوْ فِضَّةٍ.

[أطرافه في : ٥٨٦٦، ٥٨٦٧، ٥٨٧٣، ٥٩٥١، ٧٢٩٨].

तश्रीह : सोने का इस्ते'माल मर्दों के लिये क़त्अन हराम है जिसे हलाल जानने वाले पर कुफ़्र आइद हो जाता है। औरतों के लिये सोने की इजाज़त है। आपने ये अंगूठी सोने की हुर्मत से पहले बनवाई थी बाद में हुर्मत नाज़िल होने पर उसे फेंक दिया गया या'नी आपने अपनी उँगली से उसे उतार दिया।

बाब 46 : मर्द को चाँदी की अंगूठी पहनना

٤٦- باب خَاتَمِ الْفِضَّةِ

5866. हमसे यूसुफ़ बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, कहा हमसे उबैदुल्लाह ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सोने या चाँदी की अंगूठी बनवाई और उसका नगीना हथेली की तरफ़ रखा और उस पर मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह के अल्फ़ाज़ खुदवाए फिर दूसरे लोगों ने भी

٥٨٦٦- حَدَّثَنَا يُوسُفُ بْنُ مُوسَى، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ، عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ اتَّخَذَ خَاتَمًا مِنْ ذَهَبٍ أَوْ فِضَّةٍ، وَجَعَلَ فَصَّهُ مِمَّا يَلِي كَفَّهُ وَنَقَشَ

उसी त़रह़ की अंगूठियाँ बनवा लीं। जब आँह़ज़रत (ﷺ) ने देखा कि कुछ दूसरे लोगों ने भी इस त़रह़ की अंगूठियाँ बनवा ली हैं तो आपने उसे फेंक दिया और फ़र्माया कि अब मैं उसे कभी नहीं पहनूँगा। फिर आपने चाँदी की अंगूठी बनवाई और दूसरे लोगों ने भी चाँदी की अंगूठियाँ बनवा लीं। ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि आँह़ज़रत (ﷺ) के बाद उस अंगूठी को ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने पहना फिर ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने और फिर ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) ने पहना। आख़िर ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) के अ़हदे ख़िलाफ़त में वो अंगूठी उरैस के कुँए में गिर गई। (राजेअ़ : 5865)

فِيهِ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَاتَّخَذَ النَّاسُ مِثْلَهُ فَلَمَّا رَآهُمْ قَدِ اتَّخَذُوهَا رَمَى بِهِ، وَقَالَ: ((لاَ أَلْبَسُهُ أَبَدًا)) ثُمَّ اتَّخَذَ خَاتَمًا مِنْ فِضَّةٍ فَاتَّخَذَ النَّاسُ خَوَاتِيمَ الْفِضَّةِ قَالَ ابْنُ عُمَرَ: فَلَبِسَ الْخَاتَمَ بَعْدَ النَّبِيِّ ﷺ أَبُوبَكْرٍ. ثُمَّ عُمَرُ، ثُمَّ عُثْمَانُ حَتَّى وَقَعَ مِنْ عُثْمَانَ فِي بِئْرِ أَرِيسَ.
[راجع: ٥٨٦٥]

और बावजूद तमाम कोशिशों के मिल न सकी।

बाब 47

मज़्मूने साबिक़ा की मज़ीद तश्रीह।

5867. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) (ह़ुर्मत से पहले) सोने की अंगूठी पहनते थे फिर ह़ुर्मत का ह़ुक्म आने पर आपने उसे फेंक दिया और फ़र्माया कि मैं अब इसे कभी नहीं पहनूँगा और लोगों ने भी अपनी अंगूठियाँ फेंक दीं। (राजेअ़ : 5865)

٥٨٦٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، عَنْ مَالِكٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَلْبَسُ خَاتَمًا مِنْ ذَهَبٍ فَنَبَذَهُ فَقَالَ: ((لاَ أَلْبَسُهُ أَبَدًا)) فَنَبَذَ النَّاسُ خَوَاتِيمَهُمْ. [راجع: ٥٨٦٥]

और चाँदी की अंगूठियाँ बना लीं जिनकी अब मर्दों के लिये भी आ़म इजाज़त है।

5868. हमसे यह़्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उन्होंने कहा उनसे यूनुस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्होंने कहा कि मुझसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) के हाथ में एक दिन चाँदी की अंगूठी देखी फिर दूसरे लोगों ने भी चाँदी की अंगूठी देखी फिर दूसरे लोगों ने भी चाँदी की अंगूठियाँ बनवानी शुरू कर दीं और पहनने लगे तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने अपनी अंगूठी फेंक दीं और दूसरे लोगों ने भी अपनी अंगूठियाँ फेंक दी। इस रिवायत की मुताबअ़त इब्राहीम बिन सअ़द, ज़ियाद और शुऐ़ब ने ज़ुह्री से की है और इब्ने मुसाफ़िर ने ज़ुह्री से बयान किया कि मेरा ख़्याल है कि ख़ातिमन मिन्

٥٨٦٨- حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ يُونُسَ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ رَأَى فِي يَدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ خَاتَمًا مِنْ وَرِقٍ يَوْمًا وَاحِدًا ثُمَّ إِنَّ النَّاسَ اصْطَنَعُوا الْخَوَاتِيمَ مِنْ وَرِقٍ وَلَبِسُوهَا، فَطَرَحَ رَسُولُ اللهِ ﷺ خَاتَمَهُ فَطَرَحَ النَّاسُ خَوَاتِيمَهُمْ. تَابَعَهُ إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، وَزِيَادٌ وَشُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ. وَقَالَ ابْنُ مُسَافِرٍ

वरक़ बयान किया।

عَنِ الزُّهْرِيِّ: أُرَى خَاتِمًا مِنْ وَرِق.

तशरीह : यहाँ नासिख़ीन से नक़ल करने में ग़लती हुई है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने हुर्मत से पहले सोने की अंगूठी बनाई थी और बाद में हुर्मत मा'लूम होने से पहले उसी अंगूठी को आपने उतार दिया था और उसके बजाय चाँदी की अंगूठी का इस्ते'माल शुरू किया था। यहाँ के बयान से मा'लूम होता है कि पहले चाँदी की अंगूठी बनवाई थी और उसको आपने उतार दिया था ह़ालाँकि ये वाक़िया के ख़िलाफ़ है। रिवायत में मज़्कूर ज़ुहरी अपने दादा ह़ज़रत ज़ुहरा बिन किलाब की त़रफ़ मन्सूब हैं। कुन्नियत अबूबक्र नाम मुह़म्मद, अ़ब्दुल्लाह बिन शिहाब के बेटे बहुत बड़े फ़क़ीह और मुह़द्दिष़ हैं। रमज़ान सन 124 हिज्री में वफ़ात पाई। रह़िमहुल्लाहु तआ़ला।

बाब 48 : अंगूठी में नगीना लगाना दुरुस्त है

٤٨- باب فَصِّ الْخَاتَمِ

5869. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, कहा हमको यज़ीद बिन ज़ुरैअ़ ने ख़बर दी, कहा हमको हुमैद ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि ह़ज़रत अनस (रज़ि.) से पूछा गया क्या नबी करीम (ﷺ) ने अंगूठी बनवाई थी। उन्होंने बयान किया कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने एक रात इशा की नमाज़ आधी रात में पढ़ाई। फिर चेहरा मुबारक हमारी त़रफ़ किया, जैसे अब भी मैं आँह़ज़रत (ﷺ) की अंगूठी की चमक देख रहा हूँ। फ़र्माया कि बहुत से लोग नमाज़ पढ़कर सो चुके होंगे लेकिन तुम उस वक़्त भी नमाज़ में हो जब तक तुम नमाज़ का इंतिज़ार करते रहे हो। (राजेअ़ : 572)

٥٨٦٩- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ، أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، أَخْبَرَنَا حُمَيْدٌ قَالَ: سُئِلَ أَنَسٌ هَلِ اتَّخَذَ النَّبِيُّ ﷺ خَاتَمًا؟ قَالَ: أَخَّرَ لَيْلَةً صَلاَةَ الْعِشَاءِ إِلَى شَطْرِ اللَّيْلِ ثُمَّ أَقْبَلَ عَلَيْنَا بِوَجْهِهِ فَكَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى وَبِيصِ خَاتَمِهِ قَالَ: ((إِنَّ النَّاسَ قَدْ صَلَّوْا وَنَامُوا وَإِنَّكُمْ لَمْ تَزَالُوا فِي صَلاَةٍ مَا انْتَظَرْتُمُوهَا)). [راجع: ٥٧٢]

ह़दीष़ में अंगूठी का ज़िक्र है बाब से यही मुत़ाबक़त है अंगूठी की चमक से उसके नगीने की चमक मुराद है जैसा कि नीचे की ह़दीष़ में है।

5870. हमसे इस्ह़ाक़ ने बयान किया, कहा हमको मुअ़तमिर ने ख़बर दी, कहा कि मैंने हुमैद से सुना, वो ह़ज़रत अनस (रज़ि.) से बयान करते थे कि नबी करीम (ﷺ) की अंगूठी चाँदी की थी और उसका नगीना भी उसी का था और यह्या बिन अय्यूब ने बयान किया कि मुझसे हुमैद ने बयान किया, उन्होंने ह़ज़रत अनस (रज़ि.) से सुना, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से इसी त़रह़ बयान किया। (राजेअ़ : 65)

٥٨٧٠- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ، أَخْبَرَنَا مُعْتَمِرٌ، قَالَ: سَمِعْتُ حُمَيْدًا يُحَدِّثُ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ كَانَ خَاتَمُهُ مِنْ فِضَّةٍ وَكَانَ فَصُّهُ مِنْهُ. وَقَالَ يَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ: حَدَّثَنِي حُمَيْدٌ سَمِعَ أَنَسًا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. [راجع: ٦٥]

इसमें अंगूठी और उसके नगीने का ज़िक्र है। ह़दीष़ और बाब में यही वजहे मुत़ाबक़त है।

बाब 49 : लोहे की अंगूठी का बयान

٤٩- باب خَاتَمِ الْحَدِيدِ

5871. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबी ह़ाज़िम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उन्होंने ह़ज़रत सहल (रज़ि.) से सुना,

٥٨٧١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ أَبِيهِ

उन्होंने बयान किया कि एक औरत नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुई और अ़र्ज़ किया कि मैं अपने आपको हिबा करने आई हूँ, देर तक वो औरत खड़ी रही। आँहज़रत (ﷺ) ने उन्हें देखा और फिर सर झुका लिया जब देर तक वो वहीं खड़ी रहीं तो एक साहब ने उठकर अ़र्ज़ किया अगर आँहज़रत (ﷺ) को इनकी ज़रूरत नहीं है तो इनका निकाह मुझसे कर दें। आपने फ़र्माया तुम्हारे पास कोई चीज़ है जो महर में इन्हें दे सको, उन्होंने कहा कि नहीं। आपने फ़र्माया कि देख लो। वो गये और वापस आकर अ़र्ज़ किया कि वल्लाह! मुझे कुछ नहीं मिला। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जाओ तलाश करो, लोहे की एक अंगूठी ही सही। वो गये और वापस आकर अ़र्ज़ किया कि अल्लाह की क़सम मुझे लोहे की एक अंगूठी भी नहीं मिली। वो एक तहमद पहने हुए थे और उनके जिस्म पर (कुर्ते की जगह) चादर भी नहीं थी। उन्होंने अ़र्ज़ किया कि मैं इन्हें अपना तहमद महर मे दे दूँगा। आपने फ़र्माया कि अगर तुम्हारा तहमद ये पहन लेंगी तो तुम्हारे लिये कुछ बाक़ी नहीं रहेगा और अगर तुम उसे पहन लोगे तो इनके लिये कुछ नहीं रहेगा। वो साहब उसके बाद एक तरफ़ बैठ गये फिर जब आँहज़रत (ﷺ) ने उन्हें जाते देखा तो आपने उन्हें बुलवाया और फ़र्माया तुम्हें क़ुर्आन कितना याद है? उन्होंने अ़र्ज़ किया कि फ़लाँ फ़लाँ सूरतें। उन्होंने सूरतों को शुमार किया। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जा मैंने इस औरत को तुम्हारे निकाह में उस क़ुर्आन के बदले में दे दिया जो तुम्हें याद है। (राजेअ़: 231)

أَنَّهُ سَمِعَ سَهْلاً يَقُولُ: جَاءَتِ امْرَأَةٌ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَتْ: جِئْتُ أَهَبُ نَفْسِي، فَقَامَتْ طَوِيلاً فَنَظَرَ وَصَوَّبَ فَلَمَّا طَالَ مَقَامُهَا فَقَالَ رَجُلٌ: زَوِّجْنِيهَا إِنْ لَمْ يَكُنْ لَكَ بِهَا حَاجَةٌ، قَالَ: ((عِنْدَكَ شَيْءٌ تُصْدِقُهَا؟)) قَالَ: لاَ. قَالَ: ((انْظُرْ)). فَذَهَبَ ثُمَّ رَجَعَ فَقَالَ: وَاللَّهِ إِنْ وَجَدْتُ شَيْئًا قَالَ: ((اذْهَبْ فَالْتَمِسْ وَلَوْ خَاتَمًا مِنْ حَدِيدٍ)). فَذَهَبَ ثُمَّ رَجَعَ قَالَ: لاَ وَاللَّهِ وَلاَ خَاتَمًا مِنْ حَدِيدٍ. وَعَلَيْهِ إِزَارٌ مَا عَلَيْهِ رِدَاءٌ، فَقَالَ : أُصْدِقُهَا إِزَارِي فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِزَارُكَ إِنْ لَبِسَتْهُ لَمْ يَكُنْ عَلَيْكَ مِنْهُ شَيْءٌ وَإِنْ لَبِسْتَهُ لَمْ يَكُنْ عَلَيْهَا مِنْهُ شَيْءٌ)) فَتَنَحَّى الرَّجُلُ فَجَلَسَ فَرَآهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُوَلِّيًا فَأَمَرَ بِهِ فَدُعِيَ فَقَالَ: ((مَا مَعَكَ مِنَ الْقُرْآنِ؟)) قَالَ: سُورَةُ كَذَا وَكَذَا لِسُوَرٍ عَدَّدَهَا قَالَ: ((قَدْ مَلَّكْتُكَهَا بِمَا مَعَكَ مِنَ الْقُرْآنِ)).

[راجع: ٢٣١٠]

तश्रीह : उन हालात में आँहज़रत (ﷺ) ने उस मर्द की हाजत साथ ही इंतिहाई नादारी देखकर आख़िर में क़ुर्आन मजीद की जो सूरतें उसे याद थीं वो सूरतें उस औरत को याद करा देने ही को महर क़रार दे दिया। ऐसे हालात में और हो भी क्या सकता था। इन हालात में अब भी यही हुक्म है, उस शख़्स से आँहज़रत (ﷺ) ने लोहे की अंगूठी का ज़िक्र फ़र्माया था इस वजह से इस हदीष़ को इस बाब में लाया गया है।

बाब 50 : अंगूठी पर नक़्श करना

٥٠- باب نَقْشِ الْخَاتَمِ

5872. हमसे अ़ब्दुल आ़ला बिन हम्माद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरेअ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सईद बिन अबी उ़रूबा ने बयान किया, उनसे

٥٨٧٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، حَدَّثَنَا سَعِيدٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ

अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने अ़जम के कुछ लोगों (शाहाने अ़जम) के पास ख़त्त लिखना चाहा तो आपसे कहा गया कि अ़जम के लोग कोई ख़त्त उस वक़्त तक नहीं क़ुबूल करते जब तक उस पर महर न लगी हुई हो। चुनाँचे आँहज़रत (ﷺ) ने चाँदी की एक अंगूठी बनवाई। जिस पर ये लिखा हुआ (नक़्श) था मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह गोया इस वक़्त आँहज़रत (ﷺ) की अंगूठी या आपकी हथैली में उसकी चमक देख रहा हूँ। (राजेअ़ : 65)

أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ نَبِيَّ اللهِ ﷺ أَرَادَ أَنْ يَكْتُبَ إِلَى رَهْطٍ - أَوْ أُنَاسٍ - مِنَ الأَعَاجِمِ، فَقِيلَ لَهُ: إِنَّهُمْ لاَ يَقْبَلُونَ كِتَابًا إِلاَّ عَلَيْهِ خَاتَمٌ، فَاتَّخَذَ النَّبِيُّ ﷺ خَاتَمًا مِنْ فِضَّةٍ نَقْشُهُ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَكَأَنِّي بِوَبِيصِ - أَوْ بِبَصِيصِ - الْخَاتَمِ فِي إِصْبَعِ النَّبِيِّ ﷺ أَوْ فِي كَفِّهِ.

[راجع: ٦٥]

बाब और ह़दीष़ में मुत़ाबक़त ज़ाहिर है कि आँह़ज़रत (ﷺ) की अंगूठी पर नक़्श था।

5873. हमसे मुहम्मद बिन सलाम बैकुन्दी ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन नुमैर ने ख़बर दी, उन्हें उ़बैदुल्लाह बिन उ़मरी ने, उन्हें नाफ़ेअ़ ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने चाँदी की एक अंगूठी बनवाई। वो अंगूठी आपके हाथ में वफ़ात तक रही। फिर आपके बाद ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के हाथ में, उसके बाद ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) के हाथ में, उसके बाद ह़ज़रत उ़ष़्मान (रज़ि.) के हाथ में रहती थी लेकिन उनके ज़माने में वो उरैस के कुँए में गिर गई उसका नक़्श मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह था। (राजेअ़ : 5765)

٥٨٧٣- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ سَلاَمٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ نُمَيْرٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ، عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: اتَّخَذَ رَسُولُ اللهِ ﷺ خَاتَمًا مِنْ وَرِقٍ وَكَانَ فِي يَدِهِ ثُمَّ كَانَ، بَعْدُ فِي يَدِ أَبِي بَكْرٍ ثُمَّ كَانَ بَعْدُ فِي يَدِ عُمَرَ، ثُمَّ كَانَ بَعْدُ فِي يَدِ عُثْمَانَ حَتَّى وَقَعَ بَعْدُ فِي بِئْرِ أَرِيسٍ نَقْشُهُ : مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللهِ.

[راجع: ٥٧٦٥]

फिर उस कुँए में बहुत तलाश करने के बावजूद वो अंगूठी न मिल सकी। मा'लूम हुआ कि अंगूठी के नगीने पर अपना नाम नक़्श कराना जाइज़ दुरुस्त है बाब का यही मफ़्हूम है।

बाब 51 : अंगूठी छुँगलिया में पहननी चाहिये

٥١- باب الْخَاتَمِ فِي الْخِنْصَرِ

5874. हमसे अबू मअ़मर ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वारिष़ बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन सुहैब ने बयान किया, उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक अंगूठी बनवाई और फ़र्माया कि हमने एक अंगूठी बनवाई है उस पर लफ़्ज़ (मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह) नक़्श कराया है इसलिये अंगूठी पर कोई शख़्स ये नक़्श न कराए। अनस ने बयान किया कि जैसे उस अंगूठी की चमक आँह़ज़रत (ﷺ) की छँगलिया में

٥٨٧٤- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ صُهَيْبٍ، عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: صَنَعَ النَّبِيُّ ﷺ خَاتَمًا قَالَ: ((إِنَّا اتَّخَذْنَا خَاتَمًا وَنَقَشْنَا فِيهِ نَقْشًا فَلاَ يَنْقُشْ عَلَيْهِ أَحَدٌ)) قَالَ: فَإِنِّي لأَرَى بَرِيقَهُ فِي خِنْصَرِهِ.

अब भी देख रहा हूँ। (राजेअ : 65)

[راجع: ٦٥]

ये हुक्म ह़याते नबवी में नाफ़िज़ था कि कोई दूसरा शख़्स़ आपके नामे मुबारक से किसी को धोखा न दे सके। अब ये ख़त़रा नहीं है इसलिये कलिमा ला ला इलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह भी नक़्श कराया जा सकता है।

बाब 52 : अंगूठी किसी ज़रूरत से मष़लन महर करने के लिये या अहले किताब वग़ैरह को ख़ुत़ूत़ लिखने के लिये बनाना

٥٢- باب اتِّخَاذِ الْخَاتَمِ لِيُخْتَمَ بِهِ الشَّيْءُ، أَوْ لِيُكْتَبَ بِهِ إِلَى أَهْلِ الْكِتَابِ وَغَيْرِهِمْ.

5875. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि जब नबी करीम (ﷺ) ने रोम (के बादशाह को) ख़त़ लिखना चाहा तो आपसे कहा गया कि अगर आपके ख़त़ पर मुहर न हुई तो वो ख़त़ नहीं पढ़ते। चुनाँचे आपने चाँदी की एक अंगूठी बनवाई उस पर लफ़्ज़ मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह नक्श कराया। जैसे आँह़ज़रत (ﷺ) के हाथ में उसकी सफ़ेदी अब भी मैं देख रहा हूँ। (राजेअ : 65)

٥٨٧٥- حَدَّثَنَا آدَمُ بْنُ أَبِي إِيَاسٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : لَمَّا أَرَادَ النَّبِيُّ ﷺ أَنْ يَكْتُبَ إِلَى الرُّومِ قِيلَ لَهُ: إِنَّهُمْ لَنْ يَقْرَؤُوا كِتَابَكَ إِذَا لَمْ يَكُنْ مَخْتُومًا فَاتَّخَذَ خَاتَمًا مِنْ فِضَّةٍ وَنَقْشُهُ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَكَأَنَّمَا أَنْظُرُ إِلَى بَيَاضِهِ فِي يَدِهِ.

[راجع: ٦٥]

बाब 53 : अंगूठी का नगीना अंदर हथेली की त़रफ़ रखना

٥٣- باب مَنْ جَعَلَ فَصَّ الْخَاتَمِ فِي بَطْنِ كَفِّهِ

5876. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे जुवेरिया ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने पहले एक सोने की अंगूठी बनवाई और पहनने में आप उसका रंग अंदर की त़रफ़ रखते थे। आपकी देखा देखी लोगों ने भी सोने की अंगूठियाँ बना लीं तो हुज़ूरे अकरम (ﷺ) मिम्बर पर तशरीफ़ लाए और अल्लाह की ह़म्दो ष़ना की और फ़र्माया मैंने भी सोने की अंगूठी बनवाई थी (हुर्मत नाज़िल होने के बाद) आपने फ़र्माया कि अब मैं इसे नहीं पहनूँगा। फिर आपने वो अंगूठी फेंक दी और लोगों ने भी अपनी सोने की अंगूठियों को फेंक दिया। जुवैरिया ने बयान किया कि मुझे यही याद है कि नाफ़ेअ ने, दाहिने हाथ में बयान किया। (राजेअ : 5865)

٥٨٧٦- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ، عَنْ نَافِعٍ أَنَّ عَبْدَ اللهِ حَدَّثَهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ اصْطَنَعَ خَاتَمًا مِنْ ذَهَبٍ وَيَجْعَلُ فَصَّهُ فِي بَطْنِ كَفِّهِ إِذَا لَبِسَهُ فَاصْطَنَعَ النَّاسُ خَوَاتِيمَ مِنْ ذَهَبٍ فَرَقِيَ الْمِنْبَرَ فَحَمِدَ اللهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ فَقَالَ: ((إِنِّي كُنْتُ اصْطَنَعْتُهُ، وَإِنِّي لاَ أَلْبَسُهُ)) فَنَبَذَهُ فَنَبَذَ النَّاسُ. قَالَ جُوَيْرِيَةُ : وَلاَ أَحْسِبُهُ إِلاَّ قَالَ : فِي يَدِهِ الْيُمْنَى.

[راجع: ٥٨٦٥]

तश्रीह : कि आप अंगूठी पहनते थे। बाब और ह़दीष़ में मुताबक़त ज़ाहिर है। नाफ़ेअ़ बिन सर्जिस ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) के आज़ादकर्दा हैं, ह़दीष़ के बहुत ही बड़े फ़ाज़िल हैं और इमाम मालिक कहते हैं कि जब मैं नाफ़ेअ़ के वास्ते से ह़दीष़ सुन लेताहूँ तो बिलकुल बेफ़िक्र हो जाता हूँ। मोत्ता में ज़्यादातर रिवायात ह़ज़रत नाफ़ेअ़ ही के वास्ते से मरवी हैं।

बाब 54 : आँह़ज़रत (ﷺ) का ये फ़र्माना कि कोई शख़्स अपनी अंगूठी पर लफ़्ज़ मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह का नक़्श न खुदवाए

٥٤- باب قولِ النَّبِيِّ ﷺ ((لاَ يَنْقُشْ عَلَى خَاتَمِهِ))

5877. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैदने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन सुहैब ने और उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने चाँदी की एक अंगूठी बनवाई और उस पर ये नक़्श खुदवाया मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह। और लोगों से कह दिया कि मैंने चाँदी की एक अंगूठी बनवाकर उस पर मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह नक़्श करवाया है। इसलिये अब कोई शख़्स ये नक़्श अपनी अंगूठी पर न खुदवाए। (राजेअ़ : 65)

٥٨٧٧- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ صُهَيْبٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ اتَّخَذَ خَاتَمًا مِنْ فِضَّةٍ وَنَقَشَ فِيهِ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَقَالَ: ((إِنِّي اتَّخَذْتُ خَاتَمًا مِنْ وَرِقٍ وَنَقَشْتُ فِيهِ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللهِ فَلاَ يَنْقُشَنَّ أَحَدٌ عَلَى نَقْشِهِ)). [راجع: ٦٥]

इस ह़दीष़ से मा'लूम हुआ कि मर्द चाँदी की अंगूठी पहन सकते हैं और सोने की अंगूठी औ़रतें पहन सकती हैं।

बाब 55 : अंगूठी का कन्दा तीन सत़रों में करना

٥٥- باب هَلْ يُجْعَلُ نَقْشُ الْخَاتَمِ ثَلاَثَةَ أَسْطُرٍ؟

5878. मुझसे मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह अंसारी ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे वालिद अ़ब्दुल्लाह बिन मुष़न्ना ने बयान किया, उनसे ष़ुमामा बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अनस ने और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने कि ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) जब ख़लीफ़ा हुए तो उन्होंने मुझको ज़कात के मसाइल लिखवा दिये और अंगूठी (मुहर) का नक़्श तीन सत़रों में था एक सत़र में मुह़म्मद दूसरी सत़र में रसूल और तीसरी सत़र में अल्लाह। (राजेअ़ : 1448)

٥٨٧٨- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الأَنْصَارِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ ثُمَامَةَ، عَنْ أَنَسٍ أَنَّ أَبَا بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ لَمَّا اسْتُخْلِفَ كَتَبَ لَهُ وَكَانَ نَقْشُ الْخَاتَمِ ثَلاَثَةَ أَسْطُرٍ: مُحَمَّدٌ سَطْرٌ وَرَسُولُ سَطْرٌ وَاللهُ سَطْرٌ. [راجع: ١٤٤٨]

5879. ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने कहा कि मुझसे इमाम अह़मद बिन ह़ंबल ने इतना और रिवायत किया, कहा मुझसे मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह अंसारी ने, कहा कि मुझसे मेरे वालिद ने, उनसे ष़ुमामा बिन अ़ब्दुल्लाह ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) की अंगूठी वफ़ात तक

٥٨٧٩- قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ: وَزَادَنِي أَحْمَدُ، حَدَّثَنَا الأَنْصَارِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ ثُمَامَةَ عَنْ أَنَسٍ، قَالَ: كَانَ خَاتَمُ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي يَدِهِ، وَفِي

يَدِ أَبِي بَكْرٍ بَعْدَهُ وَفِي يَدِ عُمَرَ بَعْدَ أَبِي بَكْرٍ، فَلَمَّا كَانَ عُثْمَانُ جَلَسَ عَلَى بِئْرِ أَرِيسٍ قَالَ: فَأَخْرَجَ الْخَاتَمَ فَجَعَلَ يَعْبَثُ بِهِ، فَسَقَطَ قَالَ: فَاخْتَلَفْنَا ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ مَعَ عُثْمَانَ فَنَنْزَحُ الْبِئْرَ فَلَمْ نَجِدْهُ.

आपके हाथ में रही। आपके बाद अबूबक्र (रज़ि.) के हाथ में और अबूबक्र (रज़ि.) के बाद उ़मर (रज़ि.) के हाथ में रही फिर जब उ़ष्मान (रज़ि.) की ख़िलाफ़त का ज़माना आया तो वो उरैस के कुँए पर एक मर्तबा बैठे, बयान किया कि फिर अंगूठी निकाली और उसे उलटने पलटने लगे कि इतने में वो (कुँए में) गिर गई। अनस (रज़ि .) ने बयान किया कि फिर उ़ष्मान (रज़ि.) के साथ हम तीन दिन तक उसे ढूँढते रहे और कुएँ का सारा पानी खींच डाला लेकिन वो अंगूठी नहीं मिली।

तश्रीह़ : तीन सत़रों (लाइनों) में नक़्शे मुबारक इस त़रह़ से था मुह़म्मद रसूलुल्लाह ह़दीष़ और बाब में यही मुत़ाबक़त है।

٥٦- باب الْخَاتَمِ لِلنِّسَاءِ.

وَكَانَ عَلَى عَائِشَةَ خَوَاتِيمُ ذَهَبٍ.

बाब 56 : औ़रतों के लिये (सोने की) अंगूठी पहनना जाइज़ है और ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) के पास सोने की अंगूठियाँ थीं

٥٨٨٠- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ، أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، أَخْبَرَنَا الْحَسَنُ بْنُ مُسْلِمٍ، عَنْ طَاوُسٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا شَهِدْتُ الْعِيدَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فَصَلَّى قَبْلَ الْخُطْبَةِ. قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ: وَزَادَ ابْنُ وَهْبٍ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ فَأَتَى النِّسَاءَ فَأَمَرَهُنَّ بِالصَّدَقَةِ، فَجَعَلْنَ يُلْقِينَ الْفَتَخَ وَالْخَوَاتِيمَ فِي ثَوْبِ بِلَالٍ. [راجع: ٩٨]

5880. हमसे अबू आ़सिम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमको ह़सन बिन मुस्लिम ने ख़बर दी, उन्हें त़ाऊस ने और उन्हें ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि मैं ईदुल फ़ित्र की नमाज़ में रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ मौजूद था। आँह़ज़रत (ﷺ) ने ख़ुत्बा से पहले नमाज़ पढ़ाई और इब्ने वहब ने जुरैज से ये लफ़्ज़ बढ़ाए कि फिर आँह़ज़रत (ﷺ) औ़रतों के मज्मअ़े की त़रफ़ गये (और स़दक़ा की तरग़ीब दिलाई) तो औ़रतें ह़ज़रत बिलाल (रज़ि.) के कपड़े में छल्लेदार अंगूठियाँ डालने लगीं। (राजेअ़ : 98)

ष़ाबित हुआ कि अ़हदे रिसालत में औ़रतों मे अंगूठी पहनने का आ़म दस्तूर था।

٥٧- باب الْقَلَائِدِ وَالسِّخَابِ لِلنِّسَاءِ، يَعْنِي: قِلَادَةً مِنْ طِيبٍ وَسُكٍّ

बाब 57 : ज़ेवर के हार और ख़ुश्बू या मश्क के हार औ़रतें पहन सकती हैं

٥٨٨١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَرْعَرَةَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَدِيِّ بْنِ ثَابِتٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: خَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ يَوْمَ عِيدٍ فَصَلَّى رَكْعَتَيْنِ لَمْ يُصَلِّ قَبْلُ وَلَا بَعْدُ ثُمَّ

5881. हमसे मुह़म्मद बिन अ़रअ़रा ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अ़दी बिन ष़ाबित ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ईदुल फ़ित्र के दिन (आबादी से बाहर) गये और दो रकअ़त नमाज़ पढ़ाई आपने उससे पहले और उसके बाद कोई दूसरी नफ़्ल नमाज़ नहीं पढ़ी फिर आप औ़रतों के मज्मअ़े की त़रफ़ आए और उन्हें

أتى النِّسَاءَ فَأَمَرَهُنَّ بِالصَّدَقَةِ فَجَعَلَتِ الْمَرْأَةُ تَصَدَّقُ بِخُرْصِهَا وَسِخَابِهَا.

[راجع: ٩٨]

सदक़ा का हुक्म दिया। चुनाँचे औरतें अपनी बालियाँ और ख़ुश्बू और मश्क के हार सदक़ा में देने लगीं।
(राजेअ : 98)

तशरीह : मा'लूम हुआ कि ईदगाह में औरतों का जाना अहदे नबवी में आम तौर पर मा'मूल था बल्कि आपने इस क़दर ताकीद की थी कि हैज़ वाली भी निकलीं जो सिर्फ़ दुआ में शरीक हों। तअ़ज्जुब है उन लोगों पर जो आज उसको मअ़यूब जानते हैं हालाँकि आजकल क़दम क़दम पर पुलिस का इंतिज़ाम होता है और कोई बदमज़्गी नहीं होती फिर भी कुछ लोग मुख़्तलिफ़ हीलों बहानों से इसकी तावील करते रहते और लोगों को औरतों को रोकने का हुक्म करते रहते हैं। रिवायत में औरतों का सदक़ा में बालियाँ और हार देना मज़्कूर है यही बाब से मुनासबत है।

٥٨- باب اسْتِعَارَةِ الْقَلاَئِدِ

बाब 58 : एक औरत का किसी दूसरी औरत से हार आरियतन लेना

٥٨٨٢- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا عَبْدَةُ، حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: هَلَكَتْ قِلاَدَةٌ لأَسْمَاءَ فَبَعَثَ النَّبِيُّ ﷺ فِي طَلَبِهَا رِجَالاً فَحَضَرَتِ الصَّلاَةُ وَلَيْسُوا عَلَى وُضُوءٍ، وَلَمْ يَجِدُوا مَاءً فَصَلَّوْا وَهُمْ عَلَى غَيْرِ وُضُوءٍ، فَذَكَرُوا ذَلِكَ لِلنَّبِيِّ ﷺ فَأَنْزَلَ اللهُ آيَةَ التَّيَمُّمِ. زَادَ ابْنُ نُمَيْرٍ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ : اسْتَعَارَتْ مِنْ أَسْمَاءَ.

[راجع: ٣٣٤]

5882. हमसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे अब्दह बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन उर्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि हज़रत अस्मा (रज़ि.) का हार (जो उम्मुल मोमिनीन रज़ि. ने आरियत पर लिया था) गुम हो गया तो आँहज़रत (ﷺ) ने उसे तलाश करने के लिये चंद सहाबा को भेजा उसी दौरान में नमाज़ का वक़्त हो गया और लोग बिला वुज़ू थे चूँकि पानी भी मौजूद नहीं था, इसलिये सबने बिला वुज़ू नमाज़ पढ़ी फिर आँहज़रत (ﷺ) से उसका ज़िक्र किया तो तयम्मुम की आयत नाज़िल हुई। इब्ने नुमैर ने ये इज़ाफ़ा किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि वो हार उन्होंने हज़रत अस्मा से आरियतन लिया था। (राजेअ : 334)

٥٩- باب الْقُرْطِ لِلنِّسَاءِ

बाब 59 : औरतों के लिये बालियाँ पहनने का बयान

बाली से मुराद कान का ज़ेवर है जो मुख़्तलिफ़ अक़्साम के औरतें कानों में इस्ते'माल करती रहती हैं।

وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: أَمَرَهُنَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالصَّدَقَةِ فَرَأَيْتُهُنَّ يَهْوِينَ إِلَى آذَانِهِنَّ وَحُلُوقِهِنَّ

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) ने औरतों को सदक़ा का हुक्म फ़र्माया तो मैंने देखा कि उनके हाथ अपने कानों और हलक़ की तरफ़ बढ़ने लगे।

٥٨٨٣- حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَدِيٌّ قَالَ: سَمِعْتُ سَعِيداً عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ

5883. हमसे हज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि मुझे अदी बिन साबित ने ख़बर दी, कहा कि मैंने सईद बिन जुबैर से सुना और उन्होंने

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) ने ईद के दिन दो रकअतें पढ़ाईं न उसके पहले कोई नमाज़ पढ़ी और न उसके बाद फिर आप औरतों की तरफ़ तशरीफ़ लाए, आपके साथ हज़रत बिलाल (रज़ि.) थे। आपने औरतो को सदक़ा का हुक्म फ़र्माया तो वो अपनी बालियाँ हज़रत बिलाल (रज़ि.) की झोली में डालने लगीं। (राजेअ : 98)

عنهما أن النبي ﷺ صلى يوم العيد ركعتين لم يصل قبلها ولا بعدها، ثم أتى النساء ومعه بلال فأمرهن بالصدقة فجعلت المرأة تلقي قرطها. [راجع: ٩٨]

हदीष़ में बालियाँ सदक़ा में देने का ज़िक्र है यही बाब से मुनासबत है ये भी मा'लूम हुआ कि अहदे नबवी में मस्तूरात नमाज़े ईद में आम मुसलमानों के साथ ईदगाह में शिर्कत किया करती थीं।

बाब 60 : बच्चों के गलों में हार लटकाना जाइज़ है

٦٠- باب السخاب للصبيان

5884. मुझसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम हंज़ली ने बयान किया, कहा हमको यह्या बिन आदम ने ख़बर दी, कहा हमसे वरक़ा बिन उमर ने बयान किया, उनसे उबैदुल्लाह बिन अबी यज़ीद ने, उनसे नाफ़ेअ बिन जुबैर ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं मदीना के बाज़ारों में से एक बाज़ार में रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ था। आँहज़रत (ﷺ) वापस हुए तो मैं फिर आपके साथ वापस हुआ। फिर आपने फ़र्माया बच्चा कहाँ है। ये आपने तीन बार फ़र्माया। हसन बिन अली को बुलाओ। हसन बिन अली (रज़ि.) आ रहे थे और उनकी गर्दन में (ख़ुश्बूदार लौंग वग़ैरह का) हार पड़ा था। आँहज़रत (ﷺ) ने अपना हाथ इस तरह फैला या कि (आप हज़रत हसन रज़ि. को गले से लगाने के लिये) और हज़रत हसन (रज़ि.) ने भी अपना हाथ फैलाया और वो आँहज़रत (ﷺ) से लिपट गये। फिर आपने फ़र्माया ऐ अल्लाह! मैं इससे मुहब्बत करता हूँ तू भी इससे मुहब्बत कर और उनसे भी मुहब्बत कर जो इससे मुहब्बत रखें। हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) के इस इर्शाद के बाद कोई शख़्स भी हज़रत हसन बिन अली (रज़ि.) से ज़्यादा मुझे प्यारा नहीं था। (राजेअ : 2122)

٥٨٨٤- حدثني إسحاق بن إبراهيم الحنظلي، أخبرنا يحيى بن آدم، حدثنا ورقاء بن عمر، عن عبيد الله بن أبي يزيد، عن نافع بن جبير، عن أبي هريرة رضي الله عنه قال: كنت مع رسول الله ﷺ في سوق من أسواق المدينة، فانصرف فانصرفت فقال: ((أين لكع؟)) ثلاثا ((ادع الحسن بن علي)) فقام الحسن بن علي يمشي وفي عنقه السخاب فقال النبي ﷺ بيده هكذا، فقال الحسن، بيده هكذا، فالتزمه فقال: ((اللهم إني أحبه فأحبه وأحب من يحبه)) قال أبو هريرة : فما كان أحد أحب إلي من الحسن بن علي بعد ما قال رسول الله ﷺ ما قال. [راجع: ٢١٢٢]

तश्रीह : फ़िल वाक़ेअ आले रसूल (ﷺ) से मुहब्बत रखना शाने ईमान है। या अल्लाह! मेरे दिल में भी तेरे प्यारे रसूल (ﷺ) और आपके आल व औलाद से मुहब्बत पैदा कर।

वमिन् मज़हबी हुब्बुन् नबिय्यि व आलिही वन् नासु फ़ीमा यअशिक़ून मज़ाहिबि

हज़रत हसन (रज़ि.) के गले में हार था इसी से बाब का मज़्मून निकलता है नाबालिग़ बच्चों को ऐसे हार वग़ैरह पहना देना जाइज़ है।

बाब 61 : औरतों का चाल-ढाल इख़्तियार करने

٦١- باب المتشبهين بالنساء

वाले मर्द और मर्दों की चाल-ढाल इख़्तियार करने वाली औरतें अल्लाह के नज़दीक मल्ऊन हैं

وَالْمُتَشَبِّهَاتِ بِالرِّجَالِ

5885. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे ग़ुन्दर ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, उनसे इक्रिमा ने और उनसे हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने उन मर्दों पर लअनत भेजी जो औरतों जैसा चाल चलन इख़्तियार करें और उन औरतों पर ला'नत भेजी जो मर्दों जैसा चाल चलन इख़्तियार करें। ग़ुन्दर के साथ इस हदीष़ को अ़म्र बिन मरज़ूक़ ने भी शुअ़बा से रिवायत किया। (दीगर मक़ामात : 5886, 6834)

जिसे अबू नुऐम ने मुस्तख़्रज में वस्ल किया।

٥٨٨٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: لَعَنَ رَسُولُ اللهِ ﷺ الْمُتَشَبِّهِينَ مِنَ الرِّجَالِ بِالنِّسَاءِ وَالْمُتَشَبِّهَاتِ مِنَ النِّسَاءِ بِالرِّجَالِ. تَابَعَهُ عَمْرٌو أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ.

[طرفاه في ٥٨٨٦، ٦٨٣٤].

तश्रीह : आज इस फ़ैशन के ज़माने में घर-घर में यही मामला नज़र आ रहा है। ख़ास तौर पर कॉलेजज़दा लड़के लड़कियाँ इन बीमारियों में उमूमन मुब्तला हैं और एक जदीद ला'नती हिप्पीइज़्म रिवाज पकड़ रहा है जिसमें लड़के और लड़कियाँ अजीबो-ग़रीब शक्ल व सूरत बनाकर बिलकुल होनक़ बने हुए नज़र आते हैं शरीअ़ते इस्लामी में इन तकल्लुफ़ात के लिये कोई गुंजाइश नहीं है।

बाब 62 : ज़नानों और हिजड़ों को जो औरतों की चाल-ढाल इख़्तियार करते हैं घर से निकाल देना

٦٢- باب إِخْرَاجِ الْمُتَشَبِّهِينَ بِالنِّسَاءِ مِنَ الْبُيُوتِ

5886. हमसे मुआ़ज़ बिन फ़ुज़ाला ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम दस्तवाई ने, उनसे यह्या बिन अबी कष़ीर ने, उनसे इक्रिमा ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुख़न्नष़ मर्दों पर और मर्दों की चाल चलन इख़्तियार करने वाली औरतों पर ला'नत भेजी और फ़र्माया कि इन ज़नाना बनने वाले मर्दों को अपने घरों से बाहर निकाल दो। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़लाँ हिजड़े को निकाला था और उ़मर (रज़ि.) ने फ़लाँ हिजड़े को निकाला था।

٥٨٨٦- حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ فَضَالَةَ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ يَحْيَى، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: لَعَنَ النَّبِيُّ ﷺ الْمُخَنَّثِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالْمُتَرَجِّلاَتِ مِنَ النِّسَاءِ وَقَالَ: ((أَخْرِجُوهُمْ مِنْ بُيُوتِكُمْ)) قَالَ: فَأَخْرَجَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فُلاَنًا وَأَخْرَجَ عُمَرُ فُلاَنًا.

5887. हमसे मालिक बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुहैर ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन उ़र्वा ने बयान किया, उन्हें उ़र्वा ने ख़बर दी, उन्हें ज़ैनब बिन्ते अबी सलमा (रज़ि.) ने ख़बर दी और उन्हें हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) उनके पास तशरीफ़

٥٨٨٧- حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ، أَنَّ عُرْوَةَ أَخْبَرَهُ أَنَّ زَيْنَبَ ابْنَةَ أَبِي سَلَمَةَ أَخْبَرَتْهُ أَنَّ أُمَّ سَلَمَةَ أَخْبَرَتْهَا أَنَّ النَّبِيَّ

صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ عِنْدَهَا وَفِي الْبَيْتِ مُخَنَّثٌ فَقَالَ لِعَبْدِ اللهِ أَخِي أُمِّ سَلَمَةَ : يَا عَبْدَ اللهِ إِنْ فَتَحَ لَكُمْ غَدًا الطَّائِفُ فَإِنِّي أَدُلُّكَ عَلَى بِنْتِ غَيْلاَنَ فَإِنَّهَا تُقْبِلُ بِأَرْبَعٍ وَتُدْبِرُ بِثَمَانٍ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((لاَ يَدْخُلَنَّ هَؤُلاَءِ عَلَيْكُنَّ)). قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ: تُقْبِلُ بِأَرْبَعٍ وَتُدْبِرُ يَعْنِي أَرْبَعَ عُكَنِ بَطْنِهَا فَهِيَ تُقْبِلُ بِهِنَّ، وَقَوْلِهِ وَتُدْبِرُ بِثَمَانٍ: يَعْنِي أَطْرَافَ هَذِهِ الْعُكَنِ الأَرْبَعِ لأَنَّهَا مُحِيطَةٌ بِالْجَنْبَيْنِ حَتَّى لَحِقَتْ، وَإِنَّمَا قَالَ بِثَمَانٍ: وَلَمْ يَقُلْ بِثَمَانِيَةٍ وَوَاحِدُ الأَطْرَافِ وَهُوَ ذَكَرٌ لأَنَّهُ لَمْ يَقُلْ بِثَمَانِيَةِ أَطْرَافٍ.

[راجع: ٤٣٢٤]

रखते थे। घर में एक मुख़न्नष़ भी था, उसने उम्मे सलमा (रज़ि.) के भाई अ़ब्दुल्लाह से कहा अ़ब्दुल्लाह! अगर कल तुम्हें त़ाइफ़ पर फ़तह ह़ासिल हो जाए तो मैं तुम्हें बिन्ते ग़ीलान (बादिया नामी) को दिखलाऊँगा वो जब सामने आती है तो (उसके मोटापे की वजह से) चार सलवटें दिखाई देती हैं और जब पीठ फेरती है तो आठ सलवटें दिखई देती हैं। नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अब ये शख़्स़ तुम लोगों के पास न आया करे। अबू अ़ब्दुल्लाह (ह़ज़रत इमाम बुख़ारी रह.) ने कहा कि सामने से चार सलवटों का मत़लब ये है कि (मोटे होने की वजह से) उसके पेट मे चार सलवटें पड़ी होती हैं और जब वो सामने आती है तो वो दिखाई देती हैं और आठ सलवटों से पीछे फिरती है का मफ़्हूम है (आगे की) उन चारों सलवटों के किनारे क्योंकि ये दोनों पहलुओं को घेरे हुए होते हैं और फिर वो मिल जाती हैं और ह़दीष़ में बिष़मान का लफ़्ज़ है ह़ालाँकि अज़्रूए क़ायदा नह्व के बिष़मानिया होना था क्योंकि मुराद आठ अत़्राफ़ या'नी किनारे हैं और अत़्राफ़ त़रफ़ुन की जमा है और त़रफ़ुन का लफ़्ज़ मुज़क्कर है। मगर चूँकि अत़्राफ़ का लफ़्ज़ मज़्कूर न था इसलिये बिष़मान भी कहना दुरुस्त हुआ। (राजेअ़ : 4324)

क्योंकि जब मुमय्यज़ की तमीज़ मज़्कूर न हो तो अ़दद में तज़्कीर व तानीष़ दोनों दुरुस्त हैं।

٦٣- باب قَصِّ الشَّارِبِ

बाब 63 : मूँछों का कतरवाना

وَكَانَ ابْنُ عُمَرَ يُحْفِي شَارِبَهُ حَتَّى يُنْظَرَ إِلَى بَيَاضِ الْجِلْدِ، وَيَأْخُذُ هَذَيْنِ يَعْنِي بَيْنَ الشَّارِبِ وَاللِّحْيَةِ.

और ह़ज़रत उ़मर (या इब्ने उ़मर) (रज़ि.) इतनी मूँछ कतरते थे कि खाल की सपेदी दिखलाई देती और मूँछ और दाढ़ी के बीच में (ठुड्डी पर) जो बाल होते या'नी मुत्तफ़िक़ा उस के बाल कतरवा डालते।

٥٨٨٨- حَدَّثَنَا الْمَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ حَنْظَلَةَ، عَنْ نَافِعٍ قَالَ أَصْحَابُنَا عَنِ الْمَكِّيِّ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مِنَ الْفِطْرَةِ قَصُّ الشَّارِبِ)).

[طرفه في : ٥٨٩٠].

5888. हमसे मक्की बिन इब्राहीम ने बयान किया, उनसे ह़ंज़ाला बिन अबी हानी ने, उनसे नाफ़ेअ़ ने बयान किया, (मुस़न्निफ़ ह़ज़रत इमाम बुख़ारी रह. ने) कहा कि इस ह़दीष़ को हमारे अस़्ह़ाब ने मक्की से रिवायत किया, उन्होंने बह़वाला इब्ने उ़मर (रज़ि.) कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मूँछ के बाल कतरवाना पैदाइशी सुन्नत है। (त़रफ़ फ़ी : 5890)

क्योंकि मूँछ बढ़ाने से आदमी बदसूरत और मुहीब हो जाता है जैसे रीछ की शक्ल और खाना खाते वक़्त तमाम मूँछ के बाल

खाने में मिल जाते हैं और ये एक तरह की ग़लाज़त है मगर आजकल फ़ैशन परस्तों ने उसी रीछ के फ़ैशन को अपनाकर अपना हुलिया दरिन्दों से मिला दिया है।

5889. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया कि ज़ुहरी ने हमसे बयान किया (सुफ़यान ने कहा) हमसे ज़ुहरी ने सईद बिन मुसय्यिब से बयान किया और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने (नबी करीम ﷺ से) रिवायत किया कि पाँच चीज़ें (फ़र्माया कि) पाँच चीज़ें ख़त्ना कराना, मूए ज़ेरे नाफ़ मूँडना, बग़ल के बाल नोचना, नाख़ुन तरशवाना और मूँछ कम कराना पैदाइशी सुन्नतों में से हैं। (दीगर मक़ामात : 5891, 6297)

٥٨٨٩- حَدَّثَنَا عَلِيٌّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، قَالَ الزُّهْرِيُّ : حَدَّثَنَا عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رِوَايَةً الْفِطْرَةُ خَمْسٌ أَوْ خَمْسٌ مِنَ الْفِطْرَةِ: الْخِتَانُ، وَالاِسْتِحْدَادُ، وَنَتْفُ الإِبْطِ، وَتَقْلِيمُ الأَظْفَارِ، وَقَصُّ الشَّارِبِ.[طرفاه في : ٥٨٩١، ٦٢٩٧].

तश्रीह : मूँछ इतनी कम कराना कि होंठ के किनारे खुल जाएँ यही सुन्नत है और अहले ह़दीष़ ने इसी को इख़्तियार किया है दीगर ख़स़ाले फ़ित़रत यही है हर एक के फ़वाइद बहुत कुछ हैं जिनकी तफ़्सील के लिये दफ़ातिर की ज़रूरत है।

बाब 64 : नाख़ुन तरशवाने का बयान

٦٤- باب تَقْلِيمِ الأَظْفَارِ

तश्रीह : नबवी ने कहा नाख़ुन तरशवाने में मुस्तह़ब ये है कि दाएँ हाथ के कलिमे की उँगली से शुरू करके छुँगलिया तक कतराये उसके बाद अंगूठा; बाईं हाथ में छुँगलिया से शुरू करे अंगूठे तक कतराए और पैरों में दाईं छुँगलिया से अंगूठे तक कतराए और बाईं में अंगूठे से छुँगलिया तक, नववी के इस क़ौल की कोई सनद मा'लूम नहीं हुई। अल्बत्ता ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) की ह़दीष़ से दाईं त़रफ़ से शुरू करने की सनद ले सकते हैं और कलिमे की उँगली से शुरू करना इसलिये मुस्तह़ब हो सकता है कि वो सब उँगलियों से बेहतर है। तशह्हुद में इससे इशारा करते हैं। इब्ने दक़ीक़ुल ईद ने कहा कि ख़ास़ जुमेरात के दिन नाख़ुन काटने की कोई ह़दीष़ स़ह़ीह़ नहीं हुई।

5890. हमसे अह़मद बिन अबी रजाअ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इस्ह़ाक़ बिन सुलैमान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने ह़ंज़ला से सुना, उन्होंने नाफ़ेअ से बयान किया और उन्होंने ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से रिवायत किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया मूए ज़ेरे नाफ़ मूँडना, नाख़ुन तरशवाना और मूँछ कतराना पैदाइशी सुन्नतें हैं। (राजेअ़ : 5888)

٥٨٩٠- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ أَبِي رَجَاءٍ، حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ سُلَيْمَانَ، قَالَ : سَمِعْتُ حَنْظَلَةَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((مِنَ الْفِطْرَةِ حَلْقُ الْعَانَةِ، وَتَقْلِيمُ الأَظْفَارِ، وَقَصُّ الشَّارِبِ)). [راجع: ٥٨٨٨]

5891. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे सईद बिन मुसय्यब ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना आपने फ़र्माया कि पाँच चीज़ें ख़त्ना कराना, ज़ेरे नाफ़ मूँडना, मूँछ कतराना, नाख़ुन तरशवाना और बग़ल के बाल नोचना पैदाइशी सुन्नतें हैं।

٥٨٩١- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ شِهَابٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ:((الْفِطْرَةُ خَمْسٌ: الْخِتَانُ، وَالاِسْتِحْدَادُ، وَقَصُّ الشَّارِبِ، وَتَقْلِيمُ الأَظْفَارِ، وَنَتْفُ الآبَاطِ)).

(राजेअ़ : 5889)

[راجع: ٥٨٨٩]

तश्रीह : उनके ख़िलाफ़ करना फ़ित्रत से बग़ावत करना है जिसकी सज़ा दुनिया और आख़िरत दोनों जगह मिलती है मगर जिसने फ़ित्रत को अपनाया वो भलाई ही भलाई में रहेगा।

5892. हमसे मुहम्मद बिन मिन्हाल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ़ ने, उन्होंने कहा हमसे इ़मर बिन मुहम्मद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन इ़मर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम मुश्रिकीन के ख़िलाफ़ करो, दाढ़ी छोड़ दो और मूँछें कतरवाओ।

अ़ब्दुल्लाह बिन इ़मर (रज़ि.) जब हज्ज या इ़म्रह करते तो अपनी दाढ़ी (हाथ से) पकड़ लेते और (मुट्ठी) से जो बाल ज़्यादा होते उन्हें कतरवा देते। (दीगर मक़ामात : 5893)

٥٨٩٢- حدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مِنْهَالٍ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ زَيْدٍ، عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((خَالِفُوا الْمُشْرِكِينَ وَوَفِّرُوا اللِّحَى، وَأَحْفُوا الشَّوَارِبَ)). وَكَانَ ابْنُ عُمَرَ إِذَا حَجَّ أَوْ اعْتَمَرَ قَبَضَ عَلَى لِحْيَتِهِ فَمَا فَضَلَ أَخَذَهُ.

[طرفه في : ٥٨٩٣].

कुछ लोगों ने इससे दाढ़ी कटवाने की दलील ली है जो सह़ीह़ नहीं है। अव्वल तो ये ख़ास़ ह़ज्ज के बारे में है। दूसरे एक सह़ाबी का फ़ेअ़ल है जो सह़ीह़ ह़दीष़ के मुक़ाबले पर हुज्जत नहीं है लिहाज़ा सह़ीह़ यही हुआ कि दाढ़ी के बाल न कटवाए जाएँ, वल्लाहु आ़लम बिस़्स़वाब।

बाब 65 : दाढ़ी का छोड़ देना

٦٥- باب إِعْفَاءِ اللِّحَى

बिलकुल क़ैंची न लगाना

5893. मुझसे मुहम्मद ने ह़दीष़ बयान की, उन्होंने कहा हमें अ़ब्दह ने ख़बर दी, उन्हें उ़बैदुल्लाह बिन इ़मर ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ़ ने और उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन इ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मूँछें ख़ूब कतरवा लिया करो और दाढ़ी को बढ़ाओ। (राजेअ़ : 5892)

٥٨٩٣- حدَّثَنِي مُحَمَّدٌ أَخْبَرَنَا عَبْدَةُ، أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ، عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((انْهَكُوا الشَّوَارِبَ وَأَعْفُوا اللِّحَى)). [راجع: ٥٨٩٢]

तश्रीह : दाढ़ी रखना तमाम अंबिया-ए-किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) की सुन्नत है। मुबारक हैं जो लोग अपना हुलिया सुन्नते नबवी के मुताबिक़ बनाएँ। आज की दुनिया में मर्दों को दाढ़ी से इस क़दर नफ़रत हो गई है कि बड़ी ता'दाद में यही आ़दत जड़ पकड़ चुकी है ह़ालाँकि ह़िक्मत और साइंस की रू से भी मर्दों के लिये दाढ़ी का रखना बहुत ही मुफ़ीद है कुतुबे मुता'ल्लिक़ा मुलाह़िज़ा हों। मोमिनों के लिये यही काफ़ी है कि उनके मह़बूब रसूले करीम (ﷺ) की सुन्नत है।

बाब 66 : बुढ़ापे का बयान

٦٦- باب مَا يُذْكَرُ فِي الشَّيْبِ

5894. हमसे मुअ़ल्ला बिन असद ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुख़्तियानी ने, उनसे मुहम्मद बिन सीरीन ने बयान किया कि मैंने हज़रत अनस

٥٨٩٤- حدَّثَنَا مُعَلَّى بْنُ أَسَدٍ، حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ

(रज़ि.) से पूछा क्या नबी करीम (ﷺ) ने ख़िज़ाब इस्ते'माल किया था। बोले कि आँहज़रत (ﷺ) के बाल ही बहुत कम सफ़ेद हुए थे। (राजेअ : 3550)

سِيرِينَ، قَالَ: سَأَلْتُ أَنَسًا أَخَضَبَ النَّبِيُّ ﷺ؟ قَالَ: قَالَ: لَمْ يَبْلُغِ الشَّيْبَ إِلاَّ قَلِيلاً. [راجع: ٣٥٥٠]

19 या 20 या 15.....नामुकम्मल

5895. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे षाबित ने बयान किया कि हज़रत अनस (रज़ि.) से नबी करीम (ﷺ) के ख़िज़ाब के बारे म सवाल किया गया तो अहवल ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) को ख़िज़ाब की नौबत ही नहीं आई थी अगर मैं आपकी दाढ़ी के सफ़ेद बाल गिनना चाहता तो गिन सकता था। (राजेअ : 3550)

٥٨٩٥- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ ثَابِتٍ قَالَ: سُئِلَ أَنَسٌ عَنْ خِضَابِ النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: إِنَّهُ لَمْ يَبْلُغْ مَا يَخْضِبُ لَوْ شِئْتُ أَنْ أَعُدَّ شَمَطَاتِهِ فِي لِحْيَتِهِ. [راجع: ٣٥٥٠]

5896. हमसे मालिक बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे उ़ष्मान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन मौहब ने बयान किया कि मेरे घर वालों ने हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) के पास पानी का एक प्याला लेकर भेजा (रावी हदीष़) इस्राईल रावी ने तीन उँगलियाँ बंद कर लीं या'नी वो इतनी छोटी प्याली थी उस प्याली में बालों का एक गुच्छा था जिसमें नबी करीम (ﷺ) के बालों में से कुछ बाल थे। उ़ष्मान ने कहा जब किसी शख़्स को नज़र लग जाती या और कोई बीमारी होती तो वो अपना बर्तन पानी का बीबी हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) के पास भेज देता। (वो उसमें आँहज़रत ﷺ के बाल डुबो देतीं) उ़ष्मान ने कहा कि मैंने नल्की को देखा (जिसमें मूए मुबारक रखे हुए थे) तो सुर्ख़ सुर्ख़ बाल दिखाई दिये। (दीगर मक़ामात : 5897, 5898)

٥٨٩٦- حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ، عَنْ عُثْمَانَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَوْهَبٍ، قَالَ: أَرْسَلَنِي أَهْلِي إِلَى أُمِّ سَلَمَةَ بِقَدَحٍ مِنْ مَاءٍ، وَقَبَضَ إِسْرَائِيلُ ثَلاَثَ أَصَابِعَ مِنْ قُصَّةٍ فِيهَا شَعَرٌ مِنْ شَعَرِ النَّبِيِّ وَكَانَ إِذَا أَصَابَ الإِنْسَانَ عَيْنٌ أَوْ شَيْءٌ بَعَثَ إِلَيْهَا مِخْضَبَهُ، فَاطَّلَعْتُ فِي الْجُلْجُلِ فَرَأَيْتُ شَعَرَاتٍ حُمْرًا. [طرفاه في : ٥٨٩٧، ٥٨٩٨].

तश्रीह : बाब का तर्जुमा यहीं से निकलता है बुढ़ापे में पहले बाल सुर्ख़ होते हैं फिर सफ़ेद हो जाते हैं। इस हदीष़ से ये भी निकला कि अगर फ़िल वाक़ेअ मूए मुबारक हों तो उनसे बरकत लेना जाइज़ है मगर ए'तिक़ाद यही रहना चाहिये कि ये बरकत भी अल्लाह के ही हुक्म से मिलेगी बग़ैर हुक्मे इलाही कुछ भी नहीं होता, **तबारकल्लज़ी बियदिहिल्मुल्कु** (अल् मुल्क : 1)

5897. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सलाम बिन अबी मुतीअ ने बयान किया, उनसे उ़ष्मान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन मौहब ने कि मैं हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो उन्होंने हमें नबी करीम (ﷺ) के चंद बाल निकाल कर दिखाए जिन पर ख़िज़ाब लगा हुआ था। (राजेअ : 5896)

٥٨٩٧- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا سَلاَّمٌ، عَنْ عُثْمَانَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَوْهَبٍ، قَالَ: دَخَلْتُ عَلَى أُمِّ سَلَمَةَ فَأَخْرَجَتْ إِلَيْنَا شَعَرًا مِنْ شَعَرِ النَّبِيِّ ﷺ مَخْضُوبًا. [راجع: ٥٨٩٦]

5898. और हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, उनसे नसीर बिन अबी अश्अष ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मौहब ने कि ह़ज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) ने उन्हें नबी करीम (ﷺ) का बाल दिखाया जो सुर्ख़ था। (राजेअ़ : 5896)

٥٨٩٨- وقال لَنا أَبُو نُعَيْم: حَدَّثَنَا نَصِيرُ بْنُ الأَشْعَثِ، عَنِ ابْنِ مَوْهَبٍ أَنَّ أُمَّ سَلَمَةَ أَرَتْهُ شَعَرَ النَّبِيِّ ﷺ أَحْمَرَ.
[راجع: ٥٨٩٦]

तश्रीह : यूनुस की रिवायत में इतना ज़्यादा है कि उन पर मेहन्दी और वस्म का ख़िज़ाब था। इमाम अह़मद की रिवायत में भी यूँ ही है लेकिन इमाम मुस्लिम ने ह़ज़रत अनस (रज़ि.) से रिवायत किया कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने ख़िज़ाब नहीं किया अल्बत्ता ह़ज़रत अबूबक्र और ह़ज़रत उ़मर ने ख़िज़ाब किया (रज़ि.) कहते हैं कि आँह़ज़रत (ﷺ) के बाल सुर्ख़ इसलिये मा'लूम हुए कि आप उन पर ज़र्द ख़ुश्बू लगाया करते थे। (वह़ीदी)

बाब 67 : ख़िज़ाब का बयान

٦٧- باب الْخِضَابِ

5899. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान षौरी ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुह्री ने बयान किया, उनसे अबू सलमा और सुलैमान बिन यसार ने और उनसे ह़ज़रत अ़बू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि यहूद व नसारा ख़िज़ाब नहीं लगाते तुम उनके ख़िलाफ़ करो या'नी ख़िज़ाब किया करो। (राजेअ़ : 3462)

٥٨٩٩- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، وَسُلَيْمَانَ ابْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّ الْيَهُودَ وَالنَّصَارَى لاَ يَصْبَغُونَ فَخَالِفُوهُمْ)).
[راجع: ٣٤٦٢]

तश्रीह : लाल या ज़र्द ख़िज़ाब करना या मेहन्दी और वस्म का ख़िज़ाब जिससे बालों में कालिख और सुर्ख़ी आती है जाइज़ है लेकिन बिलकुल काला ख़िज़ाब करना मम्नूअ़ है, कहते हैं काला ख़िज़ाब पहले फ़िरऔन ने किया था। ह़ज़रत ह़सन (रज़ि.) और ह़ज़रात शैख़ैन मेहन्दी और वस्म का ख़िज़ाब किया करते थे। ह़दीष से ये भी ज़ाहिर हुआ कि इस्लाम की क़ौमियत एक मुस्तक़िल चीज़ है जो मुसलमान की ख़ास वज़अ़ क़त़अ़ शक्ल सूरत लिबास वग़ैरह में दाख़िल है। यहूदियों वग़ैरह की मुख़ालफ़त करने का मफ़्हूम यही है।

बाब 68 : घुँघराले बालों का बयान

٦٨- باب الْجَعْدِ

5900. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक बिन अनस ने बयान किया, उनसे रबीआ बिन अबी अ़ब्दुर्रह़मान ने और उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने, उन्होंने उनसे सुना कि वो बयान कर रहे थे कि रसूले करीम (ﷺ) बहुत लम्बे नहीं थे और न आप छोटे क़द के ही थे (बल्कि आपका बीच वाला क़द था) न आप बिलकुल सफ़ेद भूरे थे और न गन्दुमी रंग के थे, आपके बाल घुँघराले उलझे हुए नहीं थे और न बिलकुल सीधे लटके हुए थे। अल्लाह तआ़ला ने आपको चालीस साल की उ़म्र में रसूल बनाया दस साल आपने (नुबुव्वत के बाद) मक्का मुकर्रमा में क़याम किया और दस साल मदीना

٥٩٠٠- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ، عَنْ رَبِيعَةَ بْنِ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَهُ يَقُولُ: كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لَيْسَ بِالطَّوِيلِ الْبَائِنِ وَلاَ بِالْقَصِيرِ، وَلَيْسَ بِالأَبْيَضِ الأَمْهَقِ وَلَيْسَ بِالآدَمِ وَلَيْسَ بِالْجَعْدِ الْقَطَطِ وَلاَ بِالسَّبْطِ بَعَثَهُ اللهُ عَلَى رَأْسِ أَرْبَعِينَ سَنَةً، فَأَقَامَ بِمَكَّةَ عَشْرَ سِنِينَ

وَبِالْمَدِينَةِ عَشْرَ سِنِينَ وَتَوَفَّاهُ اللهُ عَلَى رَأْسِ سِتِّينَ سَنَةً وَلَيْسَ فِي رَأْسِهِ وَلِحْيَتِهِ عِشْرُونَ شَعَرَةً بَيْضَاءَ. [راجع: ٣٥٤٧]

मुनव्वरा में और तक़रीबन साठ साल की उम्र में अल्लाह तआला ने आपको वफ़ात दी। वफ़ात के वक़्त आपके सर और दाढ़ी में बीस बाल भी सफ़ेद नहीं थे। (राजेअ : 3547)

٥٩٠١- حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، قَالَ: سَمِعْتُ الْبَرَاءَ يَقُولُ: مَا رَأَيْتُ أَحَدًا أَحْسَنَ فِي حُلَّةٍ حَمْرَاءَ مِنَ النَّبِيِّ ﷺ. قَالَ بَعْضُ أَصْحَابِي: عَنْ مَالِكٍ إِنَّ جُمَّتَهُ لَتَضْرِبُ قَرِيبًا مِنْ مَنْكِبَيْهِ. قَالَ أَبُو إِسْحَاقَ: سَمِعْتُهُ يُحَدِّثُهُ غَيْرَ مَرَّةٍ مَا حَدَّثَ بِهِ قَطُّ إِلاَّ ضَحِكَ. تَابَعَهُ شُعْبَةُ شَعَرُهُ يَبْلُغُ شَحْمَةَ أُذُنِهِ. [راجع: ٣٥٥١]

5901. हमसे मालिक बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे इस्राईल ने, उनसे अबू इस्हाक़ ने, कहा मैंने बराअ (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने सुर्ख़ हुल्ला में नबी करीम (ﷺ) से ज़्यादा किसी को ख़ूबसूरत नहीं देखा (इमाम बुख़ारी रह. ने कहा कि) मुझसे मेरे कुछ अस्हाब ने इमाम मालिक से बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) के सर के बाल शाना-ए-मुबारक के क़रीब तक थे। अबू इस्हाक़ ने बयान किया कि मैंने बराअ (रज़ि.) को एक मर्तबा से ज़्यादा ये हदीष़ बयान करते सुना जब भी वो ये हदीष़ बयान करते तो मुस्कुराते। इस रिवायत की मुताबअ़त शुअ़बा ने की कि आँहज़रत (ﷺ) के बाल आपके कानों की लौ तक थे। (राजेअ : 3551)

٥٩٠٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَالِكٌ، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((أُرَانِي اللَّيْلَةَ عِنْدَ الْكَعْبَةِ فَرَأَيْتُ رَجُلاً آدَمَ كَأَحْسَنِ مَا أَنْتَ رَاءٍ مِنْ أُدْمِ الرِّجَالِ، لَهُ لِمَّةٌ كَأَحْسَنِ مَا أَنْتَ رَاءٍ مِنَ اللِّمَمِ قَدْ رَجَّلَهَا فَهِيَ تَقْطُرُ مَاءً مُتَّكِئًا عَلَى رَجُلَيْنِ - أَوْ عَلَى عَوَاتِقِ رَجُلَيْنِ - يَطُوفُ بِالْبَيْتِ فَسَأَلْتُ مَنْ هَذَا ؟ فَقِيلَ: الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ، وَإِذَا أَنَا بِرَجُلٍ جَعْدٍ قَطَطٍ أَعْوَرِ الْعَيْنِ الْيُمْنَى كَأَنَّهَا عِنَبَةٌ طَافِيَةٌ فَسَأَلْتُ مَنْ هَذَا؟ فَقِيلَ: الْمَسِيحُ الدَّجَّالُ)). [راجع: ٣٤٤٠]

5902. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ ने और उन्हें हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया रात का'बा के पास मुझे दिखाया गया, मैंने देखा कि एक स़ाहब हैं गंदुमी रंग, गंदुमी रंग के लोगों में सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत, उनके शानों तक लम्बे लम्बे बाल हैं ऐसे बाल वाले लोगों में सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत, उन्होंने बालों में कँघा कर रखा है और उसकी वजह से सर से पानी टपक रहा है। दो आदमियों का सहारा लिये हुए हैं या दो आदमियों के शानों का सहारा लिये हुए हैं और ख़ाना का'बा का तवाफ़ कर रहे हैं, मैंने पूछा कि ये कौन बुज़ुर्ग हैं तो मुझे बताया गया कि ये हज़रत ईसा इब्ने मरयम (अलैहिस्सलाम) हैं फिर अचानक मैंने एक उलझे हुए घुँघराले बाल वाले शख़्स़ को देखा, दाईं आँख से काना था गोया अंगूर है जो उभरा हुआ है। मैंने पूछा ये काना कौन है? मुझे बताया गया कि ये मसीह दज्जाल है। (राजेअ : 3440)

तश्रीह : ये सारे मनाज़िर आपने ख़्वाब में देखे हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) को घुँघराले बालों वाला देखा इसी से बाब का मक़्सद ष़ाबित होता है।

5903. हमसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमको हब्बान ने ख़बर दी, कहा हमसे हम्माम बिन यह्या ने बयान किया, कहा हमसे क़तादा ने और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के बाल मूँढ़ों तक पहुँचते थे। (दीगर मक़ामात : 5904)

٥٩٠٣- حدَّثنَا إسْحَاقُ، أخْبَرَنَا حَبَّانُ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، حَدَّثَنَا أنَسٌ أنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَضْرِبُ شَعْرُهُ مَنْكِبَيْهِ.

[طرفه في : ٥٩٠٤].

5904. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) के (सर के) बाल मूँढों तक पहुँचते थे। (राजेअ : 5903)

٥٩٠٤- حدَّثَنِي مُوسَى بْنُ إسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أنَسٍ كَانَ يَضْرِبُ شَعَرُ رَأْسِ النَّبِيِّ ﷺ مَنْكِبَيْهِ.

[راجع: ٥٩٠٣]

5905. मुझसे अम्र बिन अली ने बयान किया, कहा हमसे वहब बिन जरीर ने, कहा मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उनसे क़तादा ने बयान किया मैंने हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से रसूलुल्लाह (ﷺ) के बालों के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि आपके बाल दरम्याना थे, न बिलकुल सीधी लटके हुए और न घुँघराले और वो कानों और मूँढ़ों के बीच तक थे। (दीगर मक़ामात : 5906)

٥٩٠٥- حدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ جَرِيرٍ، قَالَ: حَدَّثَنِي أبِي عَنْ قَتَادَةَ سَألْتُ أنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنْ شَعَرِ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: كَانَ شَعَرُ رَسُولِ اللهِ ﷺ رَجِلاً لَيْسَ بِالسَّبِطِ وَلاَ الْجَعْدِ بَيْنَ أُذُنَيْهِ وَعَاتِقِهِ.

[طرفه في : ٥٩٠٦].

5906. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के हाथ भरे हुए थे मैंने आँहज़रत (ﷺ) के बाद आप जैसा (ख़ूबसूरत कोई आदमी) नहीं देखा आपके सर के बाल म्याना थे न घुँघराले और न बिलकुल सीधे लटके हुए। (राजेअ : 5905)

٥٩٠٦- حدَّثَنَا مُسْلِمٌ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أنَسٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ ضَخْمَ الْيَدَيْنِ لَمْ أرَ بَعْدَهُ، مِثْلَهُ وَكَانَ شَعَرُ النَّبِيِّ ﷺ رَجِلاً لاَ جَعْدًا وَلاَ سَبِطًا.

[راجع: ٥٩٠٥]

5907. हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन हाज़िम ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के हाथ और पैर भरे हुए थे। चेहरा हसीन व जमील था, मैं ने आप जैसा ख़ूबसूरत कोई न पहले देखा और न बाद में, आपकी हथेलियाँ कुशादा थीं।

(दीगर मक़ामात : 5908, 5910, 5911)

٥٩٠٧- حدَّثَنَا أبُو النُّعْمَانِ، حَدَّثَنَا جَرِيرُ بْنُ حَازِمٍ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ ضَخْمَ الْيَدَيْنِ وَالْقَدَمَيْنِ حَسَنَ الْوَجْهِ لَمْ أرَ قَبْلَهُ وَلاَ بَعْدَهُ مِثْلَهُ وَكَانَ بَسِطَ الْكَفَّيْنِ.

[أطرافه في : ٥٩٠٨، ٥٩١٠، ٥٩١١].

5908,09. हमसे अम्र बिन अली ने बयान किया, कहा

٥٩٠٨، ٥٩٠٩- حدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ

हमसे मुआज़ बिन हानी ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम बिन यह्या ने बयान किया, कहा हमसे क़तादा ने बयान किया और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने या एक आदमी ने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से कि उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) भरे हुए क़दमों वाले थे। निहायत ही हसीन व जमील। आप जैसा ख़ूबसूरत मैंने आपके बाद किसी को नहीं देखा। (राजेअ : 5907)

عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ هَانِيءٍ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ - أَوْ عَنْ رَجُلٍ - عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ : كَانَ النَّبِيُّ ﷺ ضَخْمَ الْقَدَمَيْنِ حَسَنَ الْوَجْهِ لَمْ أَرَ بَعْدَهُ مِثْلَهُ.[راجع: ٥٩٠٧]

5910. और हिशाम ने बयान किया, उनसे मअ़मर ने, उनसे क़तादा ने और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) के क़दम और हथेलियाँ भरी हुई और गुदाज़ थीं। (राजेअ : 5907)

٥٩١٠- وقال هِشَامٌ عَنْ مَعْمَرٍ: عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ كَانَ النَّبِيُّ ﷺ الشَّثْنَ الْقَدَمَيْنِ وَالْكَفَّيْنِ.[راجع: ٥٩٠٧]

5911,12. और अबू हिलाल ने बयान किया, उनसे क़तादा ने बयान किया और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) या हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) की हथेलियाँ और क़दम भरे हुए थे आप जैसा फिर मैंने कोई ख़ूबसूरत आदमी नहीं देखा। (राजेअ : 5907)

٥٩١١، ٥٩١٢- وقال أَبُو هِلاَلٍ: حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، عَنْ أَنَسٍ، أَوْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ - كَانَ النَّبِيُّ ﷺ ضَخْمَ الْكَفَّيْنِ وَالْقَدَمَيْنِ لَمْ أَرَ بَعْدَهُ شَبِيهًا لَهُ.

[راجع: ٥٩٠٧]

5913. हमसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, कहा कि मुझसे इब्ने अबी अ़दी ने बयान किया, उनसे इब्ने औ़न ने और उनसे मुजाहिद ने बयान किया कि हम हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) के पास बैठे हुए थे। लोगों ने दज्जाल का ज़िक्र किया और किसी ने कहा कि उसकी दोनों आँखों के दरम्यान लफ़्ज़ काफ़िर लिखा होगा। इस पर हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि रसूले करीम (ﷺ) को ये फ़र्माते हुए मैंने तो नहीं सुना अल्बत्ता आपने ये फ़र्माया था कि अगर तुम्हें हज़रत इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) को देखना हो तो अपने स़ाहब (ख़ुद आँहज़रत ﷺ) को देखो (कि आप बिलकुल उनके हमशक्ल हैं) और हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) गंदुमी रंग के हैं बाल घुँघराले जैसे इस वक़्त भी मैं उन्हें देख रहा हूँ कि वो इस नाले वादी अज़्रक़ नामी में लब्बैक कहते हुए उतर रहे हैं उनके सुर्ख़ ऊँट की नकेल की रस्सी खजूर की छाल की है। (राजेअ : 1555)

٥٩١٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، عَنِ ابْنِ عَوْنٍ عَنْ مُجَاهِدٍ، قَالَ: كُنَّا عِنْدَ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا فَذَكَرُوا الدَّجَّالَ فَقَالَ: إِنَّهُ مَكْتُوبٌ بَيْنَ عَيْنَيْهِ كَافِرٌ، وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ لَمْ أَسْمَعْهُ قَالَ ذَاكَ، وَلَكِنَّهُ قَالَ: ((أَمَّا إِبْرَاهِيمُ فَانْظُرُوا إِلَى صَاحِبِكُمْ، وَأَمَّا مُوسَى فَرَجُلٌ آدَمُ جَعْدٌ عَلَى جَمَلٍ أَحْمَرَ مَخْطُومٍ بِخُلْبَةٍ، كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَيْهِ إِذَ انْحَدَرَ فِي الْوَادِي يُلَبِّي)).

[راجع: ١٥٥٥]

बाब 69 : ख़त्मी (या गूँद वग़ैरह) से बालों को जमाना

٦٩- باب التَّلْبِيدِ

5914. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने कहा कि मुझे सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि जो शख़्स सर के बालों को गूँद ले (वो ह़ज या उ़मरे से फ़ारिग़ होकर सर मुँडाए) और जैसे एह़राम में बालों को जमा लेते हैं ग़ैर एह़राम में न जमाओ और ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) कहते थे मैंने तो आँह़ज़रत (ﷺ) को बाल जमाते देखा। (राजेअ़ : 1540)

٥٩١٤- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ قَالَ: سَمِعْتُ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: مَنْ ضَفَرَ فَلْيَحْلِقْ، وَلاَ تَشَبَّهُوا بِالتَّلْبِيدِ، وَكَانَ ابْنُ عُمَرَ يَقُولُ: لَقَدْ رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ مُلَبِّدًا. [راجع: ١٥٤٠]

तश्रीह : ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने गोया आँह़ज़रत (ﷺ) का वाक़िया बयान करके अपने वालिद का रद्द किया कि उन्होंने तल्बीद से मना किया ह़ालाँकि आँह़ज़रत (ﷺ) ने तल्बीद की, बहरह़ाल ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) का ये मत़लब न था बल्कि उनका मत़लब ये है कि ग़ैर एह़राम वालों की मुशाबिहत करके तल्बीद न करो।

5915. मुझसे ह़ब्बान बिन मूसा और अह़मद बिन मुह़म्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमें अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमको यूनुस ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें सालिम ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूले करीम (ﷺ) से सुना, आपने अपना बाल जमा लिये थे और एह़राम के वक़्त यूँ आप लब्बैक कह रहे थे। लब्बैक अल्लाहुम्म लब्बैक, लब्बैक ला शरीक लक लब्बैक इन्नल्हम्द वन्निअ़मत लक वल्मुल्क ला शरीक लक इन कलिमात के ऊपर और कुछ आप नहीं बढ़ाते थे। (राजेअ़ : 1540)

٥٩١٥- حَدَّثَنِي حِبَّانُ بْنُ مُوسَى، وَأَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ، قَالاَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ قَالَ أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَالِمٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يُهِلُّ مُلَبِّدًا يَقُولُ: ((لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ لَبَّيْكَ، لَبَّيْكَ لاَ شَرِيكَ لَكَ لَبَّيْكَ، إِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ، لاَ شَرِيكَ لَكَ)) لاَ يَزِيدُ عَلَى هَؤُلاَءِ الْكَلِمَاتِ. [راجع: ١٥٤٠]

5916. मुझसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने, उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुत़ह्हरा ह़ज़रत ह़फ़्सा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या बात है कि लोग उ़मरह करके एह़राम खोल चुके हैं ह़ालाँकि आपने एह़राम नहीं खोला। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया क्योंकि मैंने अपने सर के बाल जमा लिये हैं और अपनी हदी (क़ुर्बानी के जानवर) के गले में क़लादा डाल दिया है। इसलिये जब तक मेरी क़ुर्बानी का नह़र न हो ले मैं एह़राम नहीं खोल सकता। (राजेअ़ : 1566)

٥٩١٦- حَدَّثَنِي إِسْمَاعِيلُ، قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ، عَنْ حَفْصَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ: قُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ مَا شَأْنُ النَّاسِ حَلُّوا بِعُمْرَةٍ وَلَمْ تَحْلِلْ أَنْتَ مِنْ عُمْرَتِكَ؟ قَالَ: ((إِنِّي لَبَّدْتُ رَأْسِي، وَقَلَّدْتُ هَدْيِي فَلاَ أَحِلُّ حَتَّى أَنْحَرَ)). [راجع: ١٥٦٦]

रिवायत में बाल जमाने का ज़िक्र है यही बाब से मुताबक़त है।

बाब 70 : (सर में बीचों बीच बालों में) मांग निकालना

٧٠- باب الْفَرْقِ

5917. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शिहाब ने बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) को अगर किसी मसले में कोई हुक्म मा'लूम न होता तो आप उसमें अहले किताब के अ़मल को अपनाते थे। अहले किताब अपने सर के बाल लटकाए रखते और मुश्रिकीन मांग निकालते थे। चुनाँचे आँहज़रत (ﷺ) भी (अहले किताब की ता'बीर में) पहले सर के बाल पेशानी की त़रफ़ लटकाते लेकिन बाद में आप बीच में से मांग निकालने लगे। (राजेअ़ : 3558)

٥٩١٧- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ شِهَابٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُحِبُّ مُوَافَقَةَ أَهْلِ الْكِتَابِ فِيمَا لَمْ يُؤْمَرْ فِيهِ، وَكَانَ أَهْلُ الْكِتَابِ يَسْدِلُونَ أَشْعَارَهُمْ، وَكَانَ الْمُشْرِكُونَ يَفْرُقُونَ رُؤُوسَهُمْ فَسَدَلَ النَّبِيُّ ﷺ نَاصِيَتَهُ ثُمَّ فَرَقَ بَعْدُ. [راجع: ٣٥٥٨]

तश्रीह : ठिकाने से सर के बाल मस्नून त़रीक़ा पर रखना हर त़रह से बेहतर है मगर आजकल जो फ़ैशन की वबा चली है ख़ास़ त़ौर पर हिप्पी टाइप बाल रखकर सूरत को बिगाड़ने का जो फ़ैशन चल पड़ा है ये ह़द दर्जा गुनाह और ख़िल्क़त इलाही को बिगाड़ना और कुफ़्फ़ार के साथ मुशाबिहत रखना है। नौजवान इस्लाम को ऐसी ग़लत़ रविश के ख़िलाफ़ जिहाद की सख़्त ज़रूरत है। ऐसा फ़ैशन ख़ुद ग़ैरों की नज़र में भी मअ़यूब है, इसलिये मुसलमानों को हर्गिज़ इसे इख़्तियार न करना चाहिये।

5918. हमसे अबुल वलीद और अ़ब्दुल्लाह बिन रजाअ ने बयान किया, उन दोनों ने कहा कि हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे ह़कम बिन उ़तैबा ने, उनसे इब्राहीम नख़ई ने, उनसे अस्वद ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया जैसे मैं अब भी आँह़ज़रत (ﷺ) की मांग में एह़राम की ह़ालत में ख़ुश्बू की चमक देख रही हूँ। ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन रजाअ ने (अपनी रिवायत में) मफ़्रिक़िन् नबिय्यि (ﷺ) (वाह़िद के स़ैग़ा के साथ) बयान किया या'नी मांगों की जगह स़िर्फ़ लफ़्ज़ मांग इस्ते'माल किया।

٥٩١٨- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ، وَعَبْدُ اللهِ بْنُ رَجَاءٍ، قَالاَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ: عَنِ الْحَكَمِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنِ الأَسْوَدِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى وَبِيصِ الطِّيبِ فِي مَفَارِقِ النَّبِيِّ ﷺ وَهُوَ مُحْرِمٌ. قَالَ عَبْدُ اللهِ: فِي مَفْرِقِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

दोनों अह़ादीष़ में बाब की मुताबक़त ज़ाहिर है।

बाब 71 : गेसुओं के बयान में

٧١- باب الذَّوَائِبِ

या'नी बालों की लटें।

5919. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे फ़ज़ल बिन अ़म्बसा ने बयान किया, कहा हमको हुशैम बिन बशीर ने ख़बर दी, कहा हमको अबुल बिश्र जा'फ़र

٥٩١٩- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا الْفَضْلُ بْنُ عَنْبَسَةَ، أَخْبَرَنَا هُشَيْمٌ، أَخْبَرَنَا

ने ख़बर दी, (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा और हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने कहा कि हमसे हुशैम ने बयान किया, उनसे अबुल बिश्र ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने एक रात अपनी ख़ाला उम्मुल मोमिनीन मैमूना बिन्ते हारिष़ (रज़ि.) के घर गुज़ारी, रसूलुल्लाह (ﷺ) के लिये उस रात उन्हीं के यहाँ बारी थी। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) रात की नमाज़ पढ़ने खड़े हुए तो मैं भी आपके बाईं त़रफ़ खड़ा हो गया। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि उस पर आँहज़रत (ﷺ) ने मेरे सर के बालों की एक लट पकड़ी और मुझे अपनी दाहिनी त़रफ़ कर दिया।

أَبُو بِشْرٍ. وحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، عَنْ أَبِي بِشْرٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: بِتُّ لَيْلَةً عِنْدَ مَيْمُونَةَ بِنْتِ الْحَارِثِ، خَالَتِي وَكَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عِنْدَهَا فِي لَيْلَتِهَا قَالَ: فَقَامَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّي مِنَ اللَّيْلِ، فَقُمْتُ عَنْ يَسَارِهِ قَالَ: فَأَخَذَ بِذُؤَابَتِي فَجَعَلَنِي عَنْ يَمِينِهِ.

हमसे अ़म्र बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे हुशैम ने बयान किया, कहा हमको अबू बिश्र ने ख़बर दी, फिर यही ह़दीष़ नकल की उसमें यूँ है कि मेरी चोटी पकड़कर या मेरा सर पकड़कर आपने मुझे अपने दाहिने त़रफ़ कर दिया। (राजेअ़ : 117)

حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، أَخْبَرَنَا أَبُو بِشْرٍ، بِهَذَا وَقَالَ : بِذُؤَابَتِي أَوْ بِرَأْسِي. [راجع: ١١٧]

तश्रीह : मा'लूम हुआ कि ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) गीसू वाले थे। बाब और ह़दीष़ में यही मुत़ाबक़त है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) के बाल पकड़कर दाईं त़रफ़ खड़ा कर दिया। इसलिये कि उनका बाईं त़रफ़ खड़ा होना ग़लत़ था। ऐसी ह़ालत में मुक़्तदी को इमाम के दाईं त़रफ़ खड़ा होना चाहिये। बिदअ़ती क़ब्र परस्त पीरज़ादों का सज्जादानशीनों की त़रह़ गेसू रखकर उनको काँधों से भी नीचे तक लटकाना और रियाकारी के लिये अपने को पीर दुर्वेश ज़ाहिर करना ये वो बदतरीन ह़रकत है जिससे अहले इस्लाम को सख़्त परहेज़ की ज़रूरत है। बल्कि ऐसे पीरों और फ़क़ीरों और मक्कारों के जाल में हर्गिज़ न आना चाहिये।

ऐ बसा इब्लीस आदम रूए हस्त   पस बहर दस्ते न बायद दादे दस्त

बाब 72 : क़ज़अ़ या'नी कुछ सर मुँडाना कुछ बाल रखने के बयान में

٧٢- باب الْقَزَعِ

इसी को अ़रबी में क़ज़अ़ कहते हैं। क़स्त़लानी ने कहा ये मर्द और औ़रत और लड़के सबके लिये मकरूह है इसमें यहूद की मुशाबिहत है।

5920. मुझसे मुह़म्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा कि मुझे मुख़लद बिन यज़ीद ने ख़बर दी, कहा कि मुझे इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, कहा कि मुझे उ़बैदुल्लाह बिन ह़फ़्स़ ने ख़बर दी, उन्हें अ़म्र बिन नाफ़ेअ़ ने ख़बर दी, उन्हें ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) के गुलाम नाफ़ेअ़ ने कि उन्होंने ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि मैंने रसूले करीम (ﷺ) से सुना है आपने क़ज़अ़ से मना फ़र्माया। उ़बैदुल्लाह कहते हैं कि मैंने नाफ़ेअ़ से पूछा कि क़ज़अ़ क्या है? फिर उ़बैदुल्लाह ने

٥٩٢٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ، قَالَ: أَخْبَرَنِي مَخْلَدٌ، قَالَ: أَخْبَرَنِي ابْنُ جُرَيْجٍ، قَالَ أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ حَفْصٍ، أَنَّ عُمَرَ بْنَ نَافِعٍ أَخْبَرَهُ عَنْ نَافِعٍ مَوْلَى عَبْدِ اللهِ أَنَّهُ سَمِعَ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَنْهَى عَنِ الْقَزَعِ؟ قَالَ عُبَيْدُ اللهِ: قُلْتُ

हमें इशारे से बताया कि नाफ़ेअ ने कहा कि बच्चे का सर मुँडाते वक़्त कुछ बाल यहाँ छोड़ दे और कुछ बाल वहाँ छोड़ दे। (तो उसे क़ज़अ कहते हैं) इसे उबैदुल्लाह ने पेशानी और सर के दोनों किनारों की तरफ़ इशारा करके हमें उसकी सूरत बताई। उबैदुल्लाह ने इसकी तफ़्सीर यूँ बयान की या'नी पेशानी पर कुछ बाल छोड़ दिये जाएँ और सर के दोनों कोनों पर कुछ बाल छोड़ दिये जाएँ फिर उबैदुल्लाह से पूछा गया कि इसमें लड़का और लड़की दोनों का एक ही हुक्म है? फ़र्माया कि मुझे मा'लूम नहीं। नाफ़ेअ ने सिर्फ़ लड़के का लफ़्ज़ कहा था। उबैदुल्लाह ने बयान किया कि मैंने अमर बिन नाफ़ेअ से दो बार इसके बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि लड़के की कनपट्टी या गुद्दी पर चोटी के बाल अगर छोड़ दिये जाएँ तो कोई हर्ज नहीं है लेकिन क़ज़अ ये है कि पेशानी पर बाल छोड़ दिये जाएँ और बाक़ी सब मुँडवाए जाएँ इसी तरह सर के इस जानिब में और उस जानिब में। (दीगर मक़ामात : 5921)

बाल छोड़ने को क़ज़अ कहते हैं।

وَمَا الْقَزَعُ؟ فَأَشَارَ لَنَا عُبَيْدُ اللهِ قَالَ: إِذَا حَلَقَ الصَّبِيَّ وَتَرَكَ هَهُنَا شَعْرَةً وَهَهُنَا وَهَهُنَا فَأَشَارَ لَنَا عُبَيْدُ اللهِ إِلَى نَاصِيَتِهِ، وَجَانِبَيْ رَأْسِهِ قِيلَ لِعُبَيْدِ اللهِ. فَالْجَارِيَةُ وَالْغُلاَمُ قَالَ: لاَ أَدْرِي هَكَذَا قَالَ الصَّبِيِّ قَالَ عُبَيْدُ اللهِ: وَعَاوَدْتُهُ فَقَالَ : أَمَّا الْقُصَّةُ وَالْقَفَا لِلْغُلاَمِ، فَلاَ بَأْسَ بِهِمَا وَلَكِنِ الْقَزَعُ أَنْ يُتْرَكَ بِنَاصِيَتِهِ شَعْرٌ وَلَيْسَ فِي رَأْسِهِ غَيْرُهُ، وَكَذَلِكَ شِقُّ رَأْسِهِ هَذَا و هَذَا.
[طرفه في: ٥٩٢١].

5921. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन मुषन्ना बिन अब्दुल्लाह बिन अनस बिन मालिक ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने क़ज़अ से मना किया था। (राजेअ : 5920)

٥٩٢١- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُثَنَّى بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ دِينَارٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ نَهَى عَنِ الْقَزَعِ.[راجع: ٥٩٢٠]

बाब 73 : औरत का अपने हाथ से अपने शौहर को ख़ुश्बू लगाना

٧٣- باب تَطْيِيبِ الْمَرْأَةِ زَوْجَهَا بِيَدَيْهَا

5922. मुझसे अहमद बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको यह्या बिन सईद अंसारी ने ख़बर दी, उन्हें अब्दुर्रहमान बिन क़ासिम ने ख़बर दी, उन्हें उनके वालिद क़ासिम बिन मुहम्मद ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) को आपके एहराम में रहने के लिये अपने हाथ से ख़ुश्बू लगाई और मैंने इसी तरह (दसवीं तारीख़ को) मिना में तवाफ़े ज़ियारत करने से पहले अपने

٥٩٢٢- حَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ الْقَاسِمِ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: طَيَّبْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِيَدِي لِحُرْمِهِ وَطَيَّبْتُهُ بِمِنًى قَبْلَ أَنْ يُفِيضَ.

हाथ से आपको ख़ुश्बू लगाई। (राजेअ : 1539)

[راجع: ١٥٣٩]

बाब 74 : सर और दाढ़ी में ख़ुश्बू लगाना

٧٤- باب الطِّيبِ فِي الرَّأْسِ وَاللِّحْيَةِ

5923. हमसे इस्हाक़ बिन नस्र ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन आदम ने बयान किया, कहा हमसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने, उन्हें अ़ब्दुर्रहमान बिन अस्वद ने, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) को सबसे उम्दह ख़ुश्बू लगाया करती थी। यहाँ तक कि ख़ुश्बू की चमक मैं आपके सर और दाढ़ी में देखती थी।

٥٩٢٣- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ، حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الأَسْوَدِ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ : كُنْتُ أُطَيِّبُ رَسُولَ اللهِ ﷺ بِأَطْيَبِ مَا يَجِدُ حَتَّى أَجِدَ وَبِيصَ الطِّيبِ فِي رَأْسِهِ وَلِحْيَتِهِ.

आँह़ज़रत (ﷺ) को ख़ुश्बू बहुत ही महबूब थी। इसलिये कि आलमे बाला से आपका ता'ल्लुक़ हर वक़्त रहता था ख़ास़ तौर पर ह़ज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) बकष़रत ह़ाज़िर होते रहते थे इसलिये आपका पाक साफ़ मुअत्तर रहना ज़रूरी था। (ﷺ)

बाब 75 : कँघा करना

٧٥- باب الامْتِشَاطِ

5924. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबी ज़िब ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने, उनसे सहल बिन सअ़द (रज़ि.) ने कि एक स़ाहब ने नबी करीम (ﷺ) के दीवार के एक सूराख़ से घर के अंदर देखा आँह़ज़रत (ﷺ) उस वक़्त अपना सर कँघे से खुजला रहे थे फिर आपने फ़र्माया कि अगर मुझे मा'लूम होता कि तुम झांक रहे हो तो मैं तुम्हारी आँख फोड़ देता अरे इजाज़त लेना तो उसके लिये है कि आदमी की नज़र (किसी के) सतर पर न पड़े। (दीगर मक़ामात : 6241, 6901)

٥٩٢٤- حَدَّثَنَا آدَمُ بْنُ أَبِي إِيَاسٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ أَنَّ رَجُلاً اطَّلَعَ مِنْ جُحْرٍ فِي دَارِ النَّبِيِّ ﷺ وَالنَّبِيُّ ﷺ يَحُكُّ رَأْسَهُ بِالْمِدْرَى فَقَالَ : ((لَوْ عَلِمْتُ أَنَّكَ تَنْظُرُ لَطَعَنْتُ بِهَا فِي عَيْنِكَ إِنَّمَا جُعِلَ الإِذْنُ مِنْ قِبَلِ الأَبْصَارِ)).[طرفاه في : ٦٢٤١، ٦٩٠١].

तश्रीह : जब बग़ैर इजाज़त देख लिया तो फिर इजाज़न की क्या ज़रूरत रही। इस ह़दीष़ से ये निकला कि अगर कोई शख़्स़ किसी के घर में झांके और घर वाला कुछ फेंककर उसकी आँख फोड़ दे तो घर वाले को कुछ तावान न देना होगा मगर ये दौरे इस्लाम की बातें हैं इंफ़िरादी तौर पर किसी का ऐसा करना अपने आपको हलाकत में डालना है।

बाब 76 : ह़ाइज़ा औरत अपने शौहर के सर में कँघी कर सकती है

٧٦- باب تَرْجِيلِ الْحَائِضِ زَوْجَهَا

5925. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने ख़बर दी, उन्हें उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने और उनसे उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं ह़ालते हैज़ के बावजूद आँह़ज़रत (ﷺ) के सर में कँघी करती थी।

٥٩٢٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَالِكٌ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كُنْتُ أُرَجِّلُ رَأْسَ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَأَنَا حَائِضٌ.

हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने इसी तरह ये ह़दीष़ बयान की। (राजेअ़ : 295)

- حدثنا عَبْدُ الله بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَالِكٌ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ مِثْلَهُ. [راجع: ٢٩٥]

बाब 77 : बालों में कँघा करना

٧٧- باب التَّرْجِيلِ والتيمن فيه

5926. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अश्अ़ष़ बिन सुलैम ने, उनसे उनके वालिद ने, उनसे मसरूक़ ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) हर काम में जहाँ तक मुम्किन होता दाहिनी तरफ़ से शुरू करने को पसंद करते थे, कँघा करने और वुज़ू करने में भी। (राजेअ़ : 168)

आप दाईं तरफ़ से शुरू करते थे।

٥٩٢٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَشْعَثَ بْنَ سُلَيْمٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ عَائِشَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ كَانَ يُعْجِبُهُ التَّيَمُّنُ مَا اسْتَطَاعَ فِي تَرَجُّلِهِ وَوُضُوئِهِ.[راجع: ١٦٨]

बाब 78 : मुश्क का बयान

٧٨- باب مَا يُذْكَرُ فِي الْمِسْكِ

इसका पाक होना।

5927. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद ह़म्दानी ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें सईद बिन मुसय्यब ने और उन्हें ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया (कि अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया) इब्ने आदम का हर अ़मल उसका है सिवा रोज़े के कि ये मेरा है और मैं ख़ुद इसका बदला दूँगा और रोज़ेदार के मुँह की ख़ुश्बू अल्लाह के नज़दीक मुश्क की ख़ुश्बू से भी बढ़कर है। (राजेअ़ : 1893)

٥٩٢٧- حَدَّثَنِي عَبْدُ الله بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنِ ابْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ الله عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((كُلُّ عَمَلِ ابْنِ آدَمَ لَهُ إِلاَّ الصَّوْمَ فَإِنَّهُ لِي وَأَنَا أَجْزِي بِهِ، وَلَخُلُوفُ فَمِ الصَّائِمِ أَطْيَبُ عِنْدَ الله مِنْ رِيحِ الْمِسْكِ)).[راجع: ١٨٩٤]

तश्रीह : रोज़ा ऐसा अ़मल है कि आदमी इसमें ख़ालिस़ अल्लाह के डर से खाने–पीने और शह्वतरानी से बाज़ रहता है और दूसरा कोई आदमी इस पर मुत्तलअ़ नहीं हो सकता इसलिये इसका ष़वाब भी बड़ा है ऐसे पाक अ़मल की तश्बीह मुश्क से दी गई यही मुश्क के पाक होने की दलील है। मुज्तहिदे आ़ज़म इमाम बुख़ारी (रह़.) का ये इज्तिहाद बिलकुल दुरुस्त है।

बाब 79 : ख़ुश्बू लगाना मुस्तह़ब है

٧٩- باب مَا يُسْتَحَبُّ مِنَ الطِّيب

5928. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने बयान किया, उनसे उ़ष्मान बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं रसूले करीम (ﷺ) को आपके एह़राम के वक़्त उ़म्दह से उ़म्दह ख़ुश्बू जो

٥٩٢٨- حَدَّثَنَا مُوسَى، حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ بنِ عُثْمَانَ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ الله عَنْهَا قَالَتْ: كُنْتُ أُطَيِّبُ النَّبِيَّ ﷺ عِنْدَ إِحْرَامِهِ بِأَطْيَبِ

मिल सकती थी, वो लगाती थी। (राजेअ : 1539)

مَا أَجِدُ.[راجع: ١٥٣٩]

बाब 80 : ख़ुश्बू का फेर देना मना है

٨٠- باب مَنْ لَمْ يَرُدَّ الطِّيبَ

5929. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे उ़र्वा बिन षाबित अंसारी ने बयान किया, कहा कि मुझसे षुमामा बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने कि (जब उनको) ख़ुश्बू (हदिया की जाती तो) आप वो वापस नहीं किया करते थे और कहते कि नबी करीम (ﷺ) भी ख़ुश्बू को वापस नहीं किया करते थे। (राजेअ : 2582)

٥٩٢٩- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا عَزْرَةُ بْنُ ثَابِتٍ الأَنْصَارِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنِي ثُمَامَةُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ كَانَ لاَ يَرُدُّ الطِّيبَ وَزَعَمَ أَنَّ النَّبِيَّ كَانَ لاَ يَرُدُّ الطِّيبَ. [راجع: ٢٥٨٢]

बाब 81 : ज़रीरा का बयान

٨١- باب الذَّرِيرَةِ

जो एक क़िस्म की मुरक्कब ख़ुश्बू होती है

5930. हमसे उ़ष्मान बिन हुशैम ने बयान किया या मुहम्मद बिन यह्या दैली ने, उन्हें उ़ष्मान बिन हुशैम ने (इमाम बुख़ारी रह. को शक है) उनसे इब्ने जुरैज ने उन्होंने कहा मुझको उ़मर बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने ख़बर दी, उन्होंने उ़र्वा और क़ासिम दोनों से सुना, वो दोनों उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) से नक़ल करते थे कि उन्होंने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को हज्जतुल विदाअ़ के मौक़े पर एह़राम खोलने और एह़राम बाँधने के वक़्त अपने हाथ से ज़रीरा (एक क़िस्म की मुरक्कब) ख़ुश्बू लगाई थी। (राजेअ : 1539)

٥٩٣٠- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ الْهَيْثَمِ أَوْ مُحَمَّدٌ عَنْهُ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، أَخْبَرَنِي عُمَرُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُرْوَةَ، سَمِعَ عُرْوَةَ وَالْقَاسِمَ يُخْبِرَانِ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: طَيَّبْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ بِيَدَيَّ بِذَرِيرَةٍ فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ لِلْحِلِّ وَالإِحْرَامِ.
[راجع: ١٥٣٩]

बाब 82 : हुस्न के लिये जो औरतें दांत कुशादा कराएँ

٨٢- باب الْمُتَفَلِّجَاتِ لِلْحُسْنِ

5931. हमसे उ़ष्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन अ़ब्दुल ह़मीद ने बयान किया, उनसे मंसूर बिन मुअ़तमिर ने, उनसे इब्राहीम नख़ई ने, उनसे अ़ल्क़मा ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने कि अल्लाह तआ़ला ने हुस्न के लिये गोदने वालियों, गुदवाने वालियों पर और चेहरे के बाल उखाड़ने वालियों पर और दांतों के दरम्यान कुशादगी पैदा करने वालियों पर, जो अल्लाह की ख़िल्क़त को बदलें उन सब पर ला'नत भेजी है, मैं भी क्यूँ न उन लोगों पर ला'नत करूँ जिन पर रसूले करीम (ﷺ) ने ला'नत की है और

٥٩٣١- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَلْقَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ، لَعَنَ اللهُ الْوَاشِمَاتِ وَالْمُسْتَوْشِمَاتِ وَالْمُتَنَمِّصَاتِ وَالْمُتَفَلِّجَاتِ لِلْحُسْنِ الْمُغَيِّرَاتِ خَلْقَ اللهِ تَعَالَى، مَا لِي لاَ أَلْعَنُ مَنْ لَعَنَ النَّبِيُّ ﷺ وَهُوَ فِي كِتَابِ اللهِ: ﴿وَمَا آتَاكُمُ

इसकी दलील कि आँहज़रत (ﷺ) की सुन्नत ख़ुद क़ुर्आन मजीद में मौजूद है। आयत व मा आताकुमुर्रसूलु फखुज़ूहु है। (राजेअ: 4886)

الرَّسُولُ فَخُذُوهُ - إلى - فانتهوا﴾.
[راجع: ٤٨٨٦]

तश्रीह : अल्लाह तआला ने इस आयते मज़्कूरा में फ़र्माया कि जो हुक्म रसूलुल्लाह (ﷺ) तुमको दें तो तुम उसे तस्लीम कर लो और जिससे रोकें उससे बाज़ रहो। इस आयत से मा'लूम हुआ कि इर्शादाते नबवी को जिनका दूसरा नाम हदीष़ है तस्लीम करना फ़र्ज़ है। इससे गिरोहे मुंकिरीने हदीषे नबवी का रद्द हुआ जो हदीषे नबवी का इंकार करके क़ुर्आन को अपनी ख़्वाहिश के मुताबिक़ बनाना चाहते हैं, अल्लाह उस गुमराह फ़िर्क़े से महफ़ूज़ रखे। इस दौरे आज़ादी में ऐसे लोगों ने काफ़ी फ़ित्ना बरपा किया हुआ है जो आम्मतुल मुस्लिमीन के ईमानों पर डाका डालते रहते हैं, उनमें कुछ लोग तीन वक़्त की नमाज़ कुछ दो वक़्त की नमाज़ों के क़ाइल हैं और नमाज़ को अपनी ख़्वाहिश के मुताबिक़ ग़लत सलत ढाल लिया है हदाहुमुल्लाह।

बाब 83 : बालों में अलग से बनावटी चुटिया लगाना और दूसरे बाल जोड़ना

٨٣- باب وَصْلِ فِي الشَّعْرِ

5932. हमसे इस्माईल बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे हुमैद बिन अब्दुर्रहमान बिन औफ़ और उन्होंने हज़रत मुआविया बिन अबी सुफ़यान (रज़ि.) से हज्ज के साल में सुना वो मदीना मुनव्वरह में मिम्बर पर ये फ़र्मा रहे थे उन्होंने बालों की एक चोटी जो उनके चौकीदार के हाथ में थी लेकर कहा कहाँ हैं तुम्हारे उलमा मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है आप (ﷺ) इस तरह बाल बनाने से मना कर रहे थे और फ़र्मा रहे थे कि बनी इस्राईल उस वक़्त तबाह हो गये जब उनकी औरतों ने इस तरह अपने बाल संवारने शुरू कर दिये। (राजेअ: 3468)

٥٩٣٢- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ حُمَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ أَنَّهُ سَمِعَ مُعَاوِيَةَ بْنَ أَبِي سُفْيَانَ عَامَ حَجَّ وَهُوَ عَلَى الْمِنْبَرِ وَهُوَ يَقُولُ : وَتَنَاوَلَ قُصَّةً مِنْ شَعَرٍ كَانَتْ بِيَدِ حَرَسِيٍّ أَيْنَ عُلَمَاؤُكُمْ؟ سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَنْهَى عَنْ مِثْلِ هَذِهِ وَيَقُولُ: ((إِنَّمَا هَلَكَتْ بَنُو إِسْرَائِيلَ حِينَ اتَّخَذَ هَذِهِ نِسَاؤُهُمْ)).[راجع: ٣٤٦٨]

5933. और इब्ने अबी शैबा ने बयान किया, उनसे यूनुस बिन मुहम्मद ने बयान किया, उनसे फुलैह ने बयान किया, उनसे ज़ैद बिन असलम ने, उनसे अता बिन यसार ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया सर के क़ुदरती बालों में मस्नूई बाल लगाने वालियों पर और लगवाने वालियों पर और गोदने वालियों पर और गुदवाने वालियों पर अल्लाह ने ला'नत भेजी है।

٥٩٣٣- وقال ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ : حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا فُلَيْحٌ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَعَنَ اللهُ الْوَاصِلَةَ وَالْمُسْتَوْصِلَةَ، وَالْوَاشِمَةَ وَالْمُسْتَوْشِمَةَ)).

5934. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अम्र बिन मुर्रह ने बयान किया कि मैंने हसन बिन मुस्लिम बिन यन्नाक़ से सुना, वो

٥٩٣٤- حَدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ قَالَ: سَمِعْتُ الْحَسَنَ بْنَ

सफ़िया बिन्ते शैबा से बयान करते थे और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि अंसार की एक लड़की ने शादी की। उसके बाद वो बीमार हो गई और उसके सर के बाल झड़ गये, उसके घर वालों ने चाहा कि उसके बालों में मस्नूई बाल लगा दें। इसलिये उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से इसके बारे में पूछा। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह तआला ने मस्नूई बाल जोड़ने वाली और जुड़वाने वाली दोनों पर ला'नत भेजी है। शुअबा के साथ इस हदीष को मुहम्मद बिन इस्हाक़ ने भी अबान बिन सालेह से, उन्होंने हसन बिन मुस्लिम से, उन्होंने सफ़िया से, उन्होंने हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत किया है। (राजेअ : 5205)

5935. मुझसे अहमद बिन मिक़्दाम ने बयान किया, कहा हमसे फ़ुज़ैल बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा हमसे मंसूर बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरी वालिदा सफ़िया बिन्ते शैबा ने बयान किया, उनसे हज़रत अस्मा बिन्ते अबीबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि एक ख़ातून नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुई और कहा कि मैंने अपनी लड़की की शादी की है उसके बाद वो बीमार हो गई और उसके सर के बाल झड़ गये और उसका शौहर मुझ पर उसके मामले में ज़ोर देता है। क्या मैं उसके सर में मस्नूई बाल लगा दूँ? इस पर आँहज़रत (ﷺ) ने मस्नूई बाल जोड़ने वालियों और जुड़वाने वालियों को बुरा कहा। उन पर ला'नत भेजी।

(दीगर मक़ामात : 5936, 5941)

5936. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उर्वा ने, उनसे उनकी बीवी फ़ातिमा ने, उनसे अस्मा बिन्ते अबीबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने मस्नूई बाल लगाने वाली और लगवाने वाली पर ला'नत भेजी है। (राजेअ : 5935)

5937. हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा हमको हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको उबैदुल्लाह उमरी ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ ने और उन्हें हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने

مُسْلِمِ بْنِ يَنَّاقٍ، يُحَدِّثُ عَنْ صَفِيَّةَ بِنْتِ شَيْبَةَ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ جَارِيَةً مِنَ الأَنْصَارِ تَزَوَّجَتْ وَأَنَّهَا مَرِضَتْ فَتَمَعَّطَ شَعْرُهَا، فَأَرَادُوا أَنْ يَصِلُوهَا فَسَأَلُوا النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: ((لَعَنَ اللهُ الْوَاصِلَةَ وَالْمُسْتَوْصِلَةَ)).

تَابَعَهُ ابْنُ إِسْحَاقَ، عَنْ أَبَانَ بْنِ صَالِحٍ، عَنِ الْحَسَنِ، عَنْ صَفِيَّةَ عَنْ عَائِشَةَ.

[راجع: ٥٢٠٥]

٥٩٣٥- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ الْمِقْدَامِ، حَدَّثَنَا فُضَيْلُ بْنُ سُلَيْمَانَ، حَدَّثَنَا مَنْصُورُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ حَدَّثَتْنِي أُمِّي عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ امْرَأَةً جَاءَتْ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَتْ: إِنِّي أَنْكَحْتُ ابْنَتِي ثُمَّ أَصَابَهَا شَكْوَى فَتَمَرَّقَ رَأْسُهَا وَزَوْجُهَا يَسْتَحِثُّنِي بِهَا أَفَأَصِلُ رَأْسَهَا؟ فَسَبَّ رَسُولُ اللهِ ﷺ الْوَاصِلَةَ وَالْمُسْتَوْصِلَةَ.

[طرفاه في : ٥٩٣٦، ٥٩٤١].

٥٩٣٦- حَدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنِ امْرَأَتِهِ فَاطِمَةَ عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ قَالَتْ: لَعَنَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْوَاصِلَةَ وَالْمُسْتَوْصِلَةَ. [راجع: ٥٩٣٥]

٥٩٣٧- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللهِ، عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ

رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لَعَنَ اللهُ الْوَاصِلَةَ وَالْمُسْتَوْصِلَةَ، وَالْوَاشِمَةَ وَالْمُسْتَوْشِمَةَ)). قَالَ نَافِعٌ : الْوَشْمُ فِي اللِّثَةِ.

[أطرافه في: ٥٩٤٠، ٥٩٤٢، ٥٩٤٧].

फ़र्माया अल्लाह ने मस्नूई बाल जोड़ने वालियों पर, जुड़वाने वालियों पर, गोदने वालियों पर और गुदवाने वालियों पर ला'नत भेजी है। नाफ़ेअ़ ने कहा कि, गोदना कभी मसूड़े पर भी गोदा जाता है। (दीगर मक़ामात : 5940, 5942, 5947)

٥٩٣٨- حَدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ مُرَّةَ سَمِعْتُ سَعِيدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ قَالَ: قَدِمَ مُعَاوِيَةُ الْمَدِينَةَ آخِرَ قَدْمَةٍ قَدِمَهَا فَخَطَبَنَا فَأَخْرَجَ كُبَّةً مِنْ شَعَرٍ قَالَ: مَا كُنْتُ أَرَى أَحَدًا يَفْعَلُ هَذَا غَيْرَ الْيَهُودِ إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ سَمَّاهُ الزُّورَ يَعْنِي الْوَاصِلَةَ فِي الشَّعَرِ. [راجع: ٣٤٦٨]

5938. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा हमसे अ़म्र बिन मुर्रह ने बयान किया कि मैंने सईद बिन मुसय्यब से सुना, उन्होंने बयान किया कि ह़ज़रत मुआविया (रज़ि.) आख़िरी मर्तबा मदीना मुनव्वरह तशरीफ़ लाए और हमें ख़ुत्बा दिया। आपने बालों का एक गुच्छा निकाल के कहा कि ये यहूदियों के सिवा और कोई नहीं करता था। नबी करीम (ﷺ) इसे ज़ूर या'नी फ़रेबी फ़र्माया या'नी जो बालों में जोड़ लगाए तो ऐसा आदमी मर्द हो या औ़रत वो मक्कार है जो अपने मकर व फ़रेब पर इस त़ौर पर पर्दा डालता है। (राजेअ़ : 3468)

٨٤- بَابُ الْمُتَنَمِّصَاتِ

बाब 84 : चेहरे पर से रूएँ उखाड़ने वालियों का बयान

٥٩٣٩- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَلْقَمَةَ قَالَ: لَعَنَ عَبْدُ اللهِ الْوَاشِمَاتِ وَالْمُتَنَمِّصَاتِ، وَالْمُتَفَلِّجَاتِ لِلْحُسْنِ الْمُغَيِّرَاتِ خَلْقَ اللهِ فَقَالَتْ أُمُّ يَعْقُوبَ : مَا هَذَا؟ قَالَ عَبْدُ اللهِ: وَمَا لِي لاَ أَلْعَنُ مَنْ لَعَنَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَفِي كِتَابِ اللهِ قَالَتْ: وَاللهِ لَقَدْ قَرَأْتُ مَا بَيْنَ اللَّوْحَيْنِ فَمَا وَجَدْتُهُ قَالَ: وَاللهِ لَئِنْ قَرَأْتِيهِ لَقَدْ وَجَدْتِيهِ ﴿وَمَا آتَاكُمُ الرَّسُولُ فَخُذُوهُ، وَمَا نَهَاكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوا﴾.

[راجع: ٤٨٨٦]

5939. हमसे इस्ह़ाक़ बिन इब्राहीम बिन राहवै ने बयान किया, कहा हमको जरीर ने ख़बर दी, उन्हें मंसूर ने, उन्हें इब्राहीम नख़ई ने और उनसे अ़ल्क़मा ने कि अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने ख़ूबसूरती के लिये गोदने वालियों, चेहरे के बाल उखाड़ने वालियों और सामने के दांतों के दरम्यान कुशादगी पैदा करने वालियों जो अल्लाह की पैदाइश में तब्दीली करती हैं, उन सब पर ला'नत भेजी तो उम्मे यअ़क़ूब ने कहा कि ये क्या बात हुई। अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने कहा आख़िर मैं क्यूँ न उन पर ला'नत भेजूँ जिन पर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ला'नत भेजी है और किताबुल्लाह में उस पर ला'नत मौजूद है। उम्मे यअ़क़ूब ने कहा कि अल्लाह की क़सम मैंने पूरा क़ुर्आन मजीद पढ़ डाला और कहीं भी ऐसी कोई आयत मुझे नहीं मिली। अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने कहा अल्लाह की क़सम अगर तुमने पढ़ा होता तो तुम्हें ज़रूर मिल जाता क्या तुमको ये आयत मा'लूम नहीं वमा आताकुमुर्रसूलु फ़ख़ुज़ूहु वमा नहाकुम अ़न्हु फ़न्तहू या'नी और जो कुछ रसूल तुम्हें दें उसे ले लो और जिससे भी तुम्हें मना करें उससे रुक जाओ। (राजेअ़ : 4886)

बाब 85 : जिस औरत के बालों में दूसरे के बाल जोड़े जाएँ

٨٥- باب الْمَوْصُولَةِ

5940. मुझसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, उनसे अ़ब्दह ने बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने बनावटी बाल जोड़ने वाली और जुड़वाने वाली, गोदने वाली और गुदवाने वाली पर ला'नत भेजी है। (राजेअ़ : 5937)

٥٩٤٠- حدَّثَنِي مُحَمَّدٌ، حَدَّثَنَا عَبْدَةُ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ، عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: لَعَنَ النَّبِيُّ ﷺ الْوَاصِلَةَ وَالْمُسْتَوْصِلَةَ، وَالْوَاشِمَةَ وَالْمُسْتَوْشِمَةَ. [راجع: ٥٩٣٧]

5941. हमसे इमाम हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने बयान किया, उन्होंने फ़ातिमा बिन्ते मुंज़िर से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने अस्मा बिन्ते अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि एक औरत ने नबी करीम (ﷺ) से पूछा कि या रसूलल्लाह! मेरी लड़की को ख़सरे का बुख़ार हो गया और उससे उसके बाल झड़ गये। मैं उसकी शादी भी कर चुकी हूँ तो क्या उसके सर में बनावटी बाल लगा दूँ? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह ने बनावटी बाल लगाने वाली और जिसके लगाया जाए, दोनों पर ला'नत भेजी है। (राजेअ़ : 5935)

٥٩٤١- حدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، أَنَّهُ سَمِعَ فَاطِمَةَ بِنْتَ الْمُنْذِرِ تَقُولُ: سَمِعْتُ أَسْمَاءَ قَالَتْ سَأَلَتِ امْرَأَةٌ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّ ابْنَتِي أَصَابَتْهَا الْحَصْبَةُ فَأَمَّرَقَ شَعَرُهَا، وَإِنِّي زَوَّجْتُهَا أَفَأَصِلُ فِيهِ؟ فَقَالَ: ((لَعَنَ اللهُ الْوَاصِلَةَ وَالْمَوْصُولَةَ)). [راجع: ٥٩٣٥]

आजकल तो मस्नूई दाढ़ियाँ तक चल गई हैं कुछ मुल्कों में इमाम, ख़तीब ये इस्ते'माल करते सुने गये हैं ऐसे लोगों की जिस क़दर मज़म्मत की जाए कम है जो अहकामे इस्लाम की इस क़द्र तहक़ीर करते हैं।

5942. मुझसे यूनुस बिन मूसा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे फ़ज़ल बिन दुकैन ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सख़रु बिन जुवेरिया ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, या (रावी ने इस त़रह बयान किया कि) नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया गोदने वाली, गुदवाने वाली, बनावटी बाल जोड़ने वाली और जुड़वाने वाली या'नी आँहज़रत (ﷺ) ने उन सब पर ला'नत भेजी है। (राजेअ़ : 5937)

٥٩٤٢- حدَّثَنِي يُوسُفُ بْنُ مُوسَى، حَدَّثَنَا الْفَضْلُ بْنُ دُكَيْنٍ، حَدَّثَنَا صَخْرُ بْنُ جُوَيْرِيَةَ، عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ أَوْ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((الْوَاشِمَةَ وَالْمُسْتَوْشِمَةَ وَالْوَاصِلَةُ وَالْمُسْتَوْصِلَةُ)) يَعْنِي لَعَنَ النَّبِيُّ ﷺ. [راجع: ٥٩٣٧]

5943. मुझसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको सुफ़यान बिन उ़ययना ने ख़बर दी, उन्हें मंसूर ने, उन्हें इब्राहीम

٥٩٤٣- حدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، عَنْ

मَنْصُورٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَلْقَمَةَ عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: لَعَنَ اللهُ الْوَاشِمَاتِ وَ الْمُسْتَوْشِمَاتِ وَالْمُتَنَمِّصَاتِ وَالْمُتَفَلِّجَاتِ لِلْحُسْنِ الْمُغَيِّرَاتِ خَلْقَ اللهِ مَا لِي لاَ أَلْعَنُ مَنْ لَعَنَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ هُوَ فِي كِتَابِ اللهِ؟ [راجع: ٤٨٨٦]

नख़ई ने, उन्हें अ़ल्क़मा ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि अल्लाह तआ़ला ने गोदने वालियों पर और गुदवाने वालियों पर और चेहरे के बाल उखाड़ने वालियों पर और ख़ूबसूरती पैदा करने के लिये सामने के दांतों के दरम्यान कुशादगी करने वालियों पर जो अल्लाह की पैदाइश में तब्दीली करती हैं, ला'नत भेजी है फिर मैं क्यूँ न उन पर ला'नत भेजूँ जिन पर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ला'नत भेजी है और वो अल्लाह की किताब में भी मौजूद है। (राजेअ़ : 4886)

यहाँ बस आयत **व मा आताकुमुर्रसूलु फ़ख़ुज़ूहु व मा नहाकुम अ़न्हु फन्तहू** (अल् ह़श्र : 7) की त़रफ़ इशारा है।

बाब 86 : गोदने वाली के बारे में

٨٦- باب الْوَاشِمَةِ

٥٩٤٤- حَدَّثَنِي يَحْيَى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنْ هَمَّامٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((الْعَيْنُ حَقٌّ)). وَنَهَى عَنِ الْوَشْمِ.

5944. मुझसे यह्या बिन अबी बिश्र ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, उनसे मअ़मर ने, उनसे हम्माम ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया नज़र लग जाना ह़क़ है और आँह़ज़रत (ﷺ) ने गोदने से मना फ़र्माया।

तश्रीह : जो लोग नज़र लगने को ग़लत़ जानते हैं वो बेवक़ूफ़ हैं उनको ये मा'लूम नहीं कि नज़र में अल्लाह तआ़ला ने बड़े बड़े अष़र रखे हैं। मेस्मरिज़्म (सम्मोहन) का जादू स़िर्फ़ नज़र के अष़र से होता है जो अल्लाह और उसके रसूल ने फ़र्माया वही ह़क़ है। अब जिस क़दर फ़ल्सफ़ा की तरक़्क़ी होती जाती है उसी क़दर मा'लूम होता जाता है कि क़ुर्आन व ह़दीष़ में जो चौदह सौ बरस पहले लाया गया था वो बरह़क़ है। देखो अगले ह़कीम ये समझते थे कि तारे आसमान में गड़े होते हैं और क़ुर्आन मजीद की इस आयत **कुल्लुन फ़ी फ़लकिय्यस्बह़ून** (अल् अम्बिया : 33) की तावील करते थे अब नये फ़ल्सफ़े से मा'लूम हुआ कि उन ह़कीमों का ख़्याल ग़लत़ था तारे खुली फ़िज़ा में फिर रहे हैं इसी त़रह़ से **व अर्सल्नर्रियाह लवाक़िअ़** (अल् ह़िज्र : 22) का मत़लब अगले ह़कीम नहीं समझते थे, अब मा'लूम हुआ कि हवा में नर पेड़ का मादा उड़कर मादा पेड़ में जाता है गोया हवाएँ मादा पेड़ों को ह़ामला बनाती हैं। लवाक़िह़ के यही मा'नी हैं ह़ामला करने वालियाँ। क़ुर्आन में शराब क़लील व कष़ीर को ह़राम कर दिया गया उसको रिज्स फ़र्माया (अगले ह़कीम कहते थे थोड़ी शराब को क्यूँ ह़राम किया इससे नशा नहीं होता बल्कि कुव्वत होती है अब ये ग़लत़ निकली क्योंकि थोड़ी शराब पीते ही आदमी को अपने ऊपर क़ुदरत नहीं रहती वो ज़्यादा पी लेता है और अपने तईं ख़राब करता है। क़ुर्आन मजीद में चार बीवियों तक की और ज़रूरत के वक़्त त़लाक़ देने की इजाज़त हुई अब तमाम मुल्क के अ़क़्ल वाले तस्लीम करते जाते हैं कि क़ुर्आन मजीद में जो हुक्म दिया गया वही क़रीन-ए-मस्लिह़त है और चाहते हैं कि अपनी अपनी क़ौमों में इसी को रिवाज दें। **व क़ुस्स अ़ला हाज़ा**। (अज़ ह़ज़रत मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ स़ाह़ब रह़.)

حَدَّثَنَا ابْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ مَهْدِيٍّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ : ذَكَرْتُ لِعَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَابِسٍ، حَدِيثَ مَنْصُورٍ عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَلْقَمَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ فَقَالَ : سَمِعْتُهُ

मुझसे मुह़म्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने मह्दी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, कहा कि मैंने अ़ब्दुर्रह़मान बिन आ़बिस से मंस़ूर की ह़दीष़ ज़िक्र की जो वो इब्राहीम से बयान करते थे कि उनसे अ़ल्क़मा ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने

बयान किया तो अ़ब्दुर्रह़मान ने कहा कि मैंने भी मंसूर की ह़दीष़ की त़रह़ उम्मे यअ़क़ूब से सुना है वो अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) से बयान करती थीं। (राजेअ़ : 5740)

مِنْ أُمِّ يَعْقُوبَ عَنْ عَبْدِ اللهِ مِثْلَ حَدِيثِ مَنْصُورٍ. [راجع: ٥٧٤٠]

5945. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे औ़न बिन अबी जुहैफ़ा ने बयान किया कि मैंने अपने वालिद (अबू जुहैफ़ा रज़ि.) को देखा, उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने ख़ून की क़ीमत, कुत्ते की क़ीमत खाने से मना किया और सूद लेने वाले और देने वाले, गोदने वाली और गुदवाने वाली (पर ला'नत भेजी)। (राजेअ़ : 2086)

٥٩٤٥- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَوْنِ بْنِ أَبِي جُحَيْفَةَ، قَالَ: رَأَيْتُ أَبِي فَقَالَ: إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ نَهَى عَنْ ثَمَنِ الدَّمِ، وَثَمَنِ الْكَلْبِ، وَآكِلِ الرِّبَا وَمُوكِلِهِ، وَالْوَاشِمَةِ وَالْمُسْتَوْشِمَةِ. [راجع: ٢٠٨٦]

बाब 87 : गुदवाने वाली औ़रत की बुराई का बयान

٨٧- باب الْمُسْتَوْشِمَةِ

5946. हमसे ज़ुहैर बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे अ़म्मारा ने, उनसे अबू ज़रआ़ ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि उ़मर (रज़ि.) के पास एक औ़रत लाई गई जो गोदने का काम करती थी। उ़मर (रज़ि.) खड़े हो गये (और उस वक़्त मौजूद स़ह़ाबा से) कहा मैं तुम्हें अल्लाह का वास्ता देता हूँ किसी ने कुछ नबी करीम (ﷺ) से गोदने के बारे में सुना है। अबू हुरैरह (रज़ि .) ने कहा कि मैंने खड़े होकर अ़र्ज़ किया अमीरुल मोमिनीन! मैंने सुना है। उ़मर (रज़ि.) ने पूछा क्या सुना है? अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना है कि गोदने का काम न करो और न गुदवाओ।

٥٩٤٦- حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ عُمَارَةَ، عَنْ أَبِي زُرْعَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: أُتِيَ عُمَرُ بِامْرَأَةٍ تَشِمُ فَقَامَ فَقَالَ: أَنْشُدُكُمْ بِاللهِ مَنْ سَمِعَ مِنَ النَّبِيِّ ﷺ فِي الْوَشْمِ فَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: فَقُمْتُ فَقُلْتُ: يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ أَنَا سَمِعْتُ. قَالَ: مَا سَمِعْتَ؟ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ يَقُولُ: ((لاَ تَشِمْنَ وَلاَ تَسْتَوْشِمْنَ)).

5947. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह़्या बिन सईद ने बयान किया, उन्हें उ़बैदुल्लाह ने ख़बर दी, कहा मुझको ख़बर दी नाफ़ेअ़ ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने बनावटी बाल लगाने वाली और लगवाने वाली और गोदने वाली और गुदवाने वाली पर ला'नत भेजी है। (राजेअ़ : 5937)

٥٩٤٧- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ، أَخْبَرَنِي نَافِعٌ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: لَعَنَ النَّبِيُّ ﷺ الْوَاصِلَةَ وَالْمُسْتَوْصِلَةَ وَالْوَاشِمَةَ وَالْمُسْتَوْشِمَةَ. [راجع: ٥٩٣٧]

5948. हमसे मुह़म्मद बिन मुष़न्ना ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रह़मान ने बयान किया, उनसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने, उनसे मंसूर ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अ़ल्क़मा ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने कि गोदने वालियों

٥٩٤٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَلْقَمَةَ عَنْ عَبْدِ

الله رَضِيَ الله عَنْهُ لَعَنَ الله الْوَاشِمَاتِ وَالْمُسْتَوْشِمَاتِ وَالْمُتَنَمِّصَاتِ وَالْمُتَفَلِّجَاتِ لِلْحُسْنِ الْمُغَيِّرَاتِ خَلْقَ الله. مَا لِي لاَ أَلْعَنُ مَنْ لَعَنَ رَسُولُ الله ﷺ وَهُوَ فِي كِتَابِ الله.[راجع: ٤٨٤٦]

पर और गुदवाने वालियों पर, बाल उखाड़ने वालियों पर और ख़ूबसूरती के लिये दांतों के दरम्यान कुशादगी करने वालियों पर जो अल्लाह की पैदाइश में तब्दीली करती हैं, अल्लाह तआ़ला ने ला'नत भेजी है फिर मैं भी क्यूँ न उन पर ला'नत भेजूँ जिन पर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ला'नत भेजी है और वो किताबुल्लाह में भी मौजूद है। (राजेअ़ : 4846)

तश्रीह : आयत शरीफ़ **वमा आताकुमुर्रसूलु फ़ख़ुज़ूहु वमा नहाकुम अ़न्हु फ़न्तहू** (अल ह़श्र : 7) की त़रफ़ इशारा है कि जो कुछ रसूलुल्लाह (ﷺ) तुमको हुक्म फ़र्माएँ उसे बजा लाओ और जिससे मना करें उससे रुक जाओ उसके तह्त इज्माली त़ौर पर सारे अवामिर और नवाही दाख़िल हैं आज का फ़ैशन जो मर्दों और औ़रतों ने अपनाया है जो उ़र्यानियत (नंगेपन) का मरक़ज़ (केन्द्र) है वो सब इस ला'नत के तह्त दाख़िल है।

सनद में मज़्कूर अ़ल्क़मा बिन वक़्क़ास़ लैष़ी हैं जो आँह़ज़रत (ﷺ) के अ़हदे मुबारक में पैदा हुए और ग़ज़्वा-ए-ख़ंदक़ में शरीक हुए, अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान के अ़हद में वफ़ात पाई रह़िमहुल्लाहु तआ़ला।

किताबुल्लाह में मज़्कूर होने से वो आयत मुराद है जिसमें है **वमा आताकुमुर्रसूलु फ़ख़ुज़ूहु वमा नहाकुम अ़न्हु फ़न्तहू** या'नी जो रसूले करीम (ﷺ) जो हिदायत तुमको दें उसे क़ुबूल कर लो और जिन कामों से आप मना करें उनसे रुक जाओ। इसमें तमाम अवामिर और नवाही दाख़िल हैं ह़दीष़ में मज़्कूरा नवाही भी इसी आयत के तह्त हैं।

बाब 88 : तस्वीरें बनाने के बयान में

٨٨- باب التَّصَاوِيرِ

٥٩٤٩- حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ : حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُبَيْدِ الله بْنِ عَبْدِ الله بْنِ عُتْبَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، عَنْ أَبِي طَلْحَةَ رَضِيَ الله عَنْهُمْ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لاَ تَدْخُلُ الْمَلاَئِكَةُ بَيْتًا فِيهِ كَلْبٌ وَلاَ تَصَاوِيرُ)). وَقَالَ اللَّيْثُ: حَدَّثَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ الله سَمِعَ ابْنَ عَبَّاسٍ سَمِعْتُ أَبَا طَلْحَةَ سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ.[راجع: ٣٢٢٥]

5949. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबी ज़िब ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने, उनसे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा ने, उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने और उनसे ह़ज़रत अबू त़लहा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया रह़मत के फ़रिश्ते उस घर में दाख़िल नहीं होते जिसमें कुत्ता या मूरतें हों। और लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे यूनुस बिन यज़ीद ने, उनसे इब्ने शिहाब ने कहा कि मुझको उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा ने ख़बर दी। उन्होंने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से सुना, वो कहते थे कि मैंने अबू त़लहा (रज़ि.) से सुना, फिर उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से यही ह़दीष़ नक़ल की है। (राजेअ़ : 3225)

तश्रीह : कुछ ने कहा फ़रिश्तों से ह़ज़रत जिब्रईल व ह़ज़रत मीकाईल (अ़लैहिस्सलाम) मुराद हैं मगर उस सूरत में ये अम्र ख़ास़ होगा आँह़ज़रत (ﷺ) की ह़याते मुबारका से क्योंकि आपकी वफ़ात पर वह्य उतरना मौक़ूफ़ हो गया और उन फ़रिश्तों का आना भी। वो फ़रिश्ते मुराद नहीं हैं जो हर आदमी पर मुअ़य्यन हैं या जो फ़रिश्ते मामूर-बकारे हुक्मे इलाही से भेजे जाते हैं। मूरत से मुराद जानदार की मूरत है। एक नेचरी स़ाह़ब ने मुझसे ए'तिराज़ किया कि जब कुत्ता रखने से फ़रिश्ते पास नहीं आते तो हम एक कुत्ता हमेशा अपने पास रखेंगे ताकि मौत का फ़रिश्ता हमारे पास आ ही न सके। मैंने उनको जवाब दिया अगर तुम ऐसा ही करोगे तो तुम्हारी जान निकालने के लिये फ़रिश्ता आएगा जो कुत्तों की जान निकालता है,

उस पर वो लाजवाब हो गये। लैष़ बिन सअ़द की रिवायत को अबू नुऐ़म ने मुस्तख़रज में वस्ल किया है।

बाब 89 : मूरतें बनाने वालों पर क़यामत के दिन सबसे ज़्यादा अ़ज़ाब होगा

٨٩- باب عَذَابِ الْمُصَوِّرِينَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

5950. हमसे हुमैदी अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे आ'मश ने बयान किया और उनसे मुस्लिम बिन स़बीहा ने बयान किया कि हमसे मसरूक़ बिन अज्दअ़ के साथ यसार बिन नुमैर के घर में थे। मसरूक़ ने उनके घर के सायबान में तस्वीरें देखीं तो कहा कि मैंने ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) से सुना है, उन्होंने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह के पास क़यामत के दिन तस्वीर बनाने वालों को सख़्त से सख़्ततर अ़ज़ाब होगा।

٥٩٥٠- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، قَالَ: حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ مُسْلِمٍ قَالَ: كُنَّا مَعَ مَسْرُوقٍ فِي دَارِ يَسَارِ بْنِ نُمَيْرٍ فَرَأَى فِي صُفَّتِهِ تَمَاثِيلَ، فَقَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ، قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((إِنَّ أَشَدَّ النَّاسِ عَذَابًا عِنْدَ اللهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ الْمُصَوِّرُونَ)).

5951. हमसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अनस बिन अ़याज़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे उ़बैदुल्लाह उ़मरी ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने बयान किया और उन्हें ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जो लोग ये मूरतें बनाते हैं उन्हें क़यामत के दिन अ़ज़ाब किया जाएगा और उनसे कहा जाएगा कि जिसको तुमने बनाया है अब उसमें जान भी डालो।

(दीगर मक़ामात : 7558)

٥٩٥١- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ، حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ عِيَاضٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ، عَنْ نَافِعٍ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ الَّذِينَ يَصْنَعُونَ هَذِهِ الصُّوَرَ يُعَذَّبُونَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، يُقَالُ لَهُمْ: أَحْيُوا مَا خَلَقْتُمْ)). [طرفه في : ٧٥٥٨].

तश्रीह़ : मुराद वो मूरतें हैं जो पूजने के लिये बनाई जाएँ ऐसी मूरतें बनाने वाले तो काफ़िर हैं वो हमेशा दोज़ख़ में रहेंगे अगर पूजने के लिये न बनाएँ तब भी जानदार की मूरत बनाना कबीरा गुनाह है, उसको सख़्त अ़ज़ाब होगा बेजान चीज़ों की तस्वीर बनाना ह़राम नहीं है मगर जानदार का फ़ोटो खींचना भी नाजाइज़ है।

बाब 90 : तस्वीरों को तोड़ने के बयान में

٩٠- باب نَقْضِ الصُّوَرِ

5952. हमसे मुआ़ज़ बिन फ़ुज़ाला ने बयान किया, उनसे हिशाम दस्तवाई ने बयान किया, उनसे यह़्या बिन अबी कष़ीर ने, उनसे इ़मरान बिन ह़त्तान ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) को अपने घर में जब भी कोई चीज़ ऐसी मिलती जिस पर स़लीब की मूरत बनी हो (जैसे नस़ारा रखते हैं) तो उसको तोड़ डालते।

٥٩٥٢- حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ فَضَالَةَ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ يَحْيَى، عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حِطَّانَ، أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا حَدَّثَتْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ لَمْ يَكُنْ يَتْرُكُ فِي بَيْتِهِ شَيْئًا فِيهِ تَصَالِيبُ إِلاَّ نَقَضَهُ.

तश्रीह : ह़ालाँकि स़लीब जानदार चीज़ नहीं है मगर नस़ारा ख़ुसूसन रोमन कैथोलिक स़लीब की परस्तिश करते हैं। इसलिये आँह़ज़रत (ﷺ) उसको जहाँ पाते तोड़ डालते, अल्लाह के सिवा जो चीज़ पूजी जाए उसका यही हुक्म है, उसको तोड़– फोड़कर बराबर कर देना चाहिये ताकि दुनिया में शिर्क न फैले। स़लीब पर ता'ज़िये को भी क़यास करना चाहिये। स़लीब तो एक पैग़म्बर के वाक़िये की तस्वीर है और ता'ज़िये में तो ये बात भी नहीं है वो सिर्फ़ एक मक़्बरा की मिष्ल होती है लेकिन अ़वाम उसकी परस्तिश करते हैं, उसके सामने झुकते हैं, उस पर नज़्र व नियाज़ चढ़ाते हैं, इसी त़रह़ सद्दे, अ़लम वग़ैरह उन सबका तोड़ फेंकना ज़रूरी है। इस्लामी शरीअ़त में अल्लाह के सिवा किसी की पूजा जाइज़ नहीं है। जिन बुज़ुर्गों और औलिया की क़ुबूर मिष्ले मसाजिद बनाकर परस्तिशगाह बनी हुई हैं उनके लिये भी यही हुक्म है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने अ़ली (रज़ि.) को हुक्म दिया था कि जो बुलंद क़ब्र देखें उसको बराबर कर दें। ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने अपने ज़माने में अबुल सियाज असदी को भी यही हुक्म दिया था।

5953. हमसे मूसा ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वाहिद ने, कहा हमसे अ़म्मारा ने, कहा हमसे अबू ज़ुरआ़ ने, कहा कि मैं अबू हुरैरह (रज़ि.) के साथ मदीना मुनव्वरह में (मरवान बिन ह़कम के घर में) गया तो उन्होंने छत पर एक मुस़व्विर को देखा जो तस्वीर बना रहा था, उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है, आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि (अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़र्माता है) उस शख़्स़ से बढ़कर ज़ालिम और कौन होगा जो मेरी मख़्लूक़ की त़रह पैदा करने चला है अगर उसे यही घमण्ड है तो उसे चाहिये कि एक दाना पैदा करे, एक चींटी पैदा करे। फिर उन्होंने पानी का एक त़श्त मंगवाया और अपने हाथ उसमें धोये। जब बग़ल धोने लगे तो मैंने अ़र्ज़ किया अबू हुरैरह! क्या (बग़ल तक धोने के बारे में) तुमने रसूलुल्लाह (ﷺ) से कुछ सुना है उन्होंने कहा मैंने जहाँ तक ज़ेवर पहना जा सकता है वहाँ तक धोया है। (दीगर मक़ामात : 7559)

٥٩٥٣- حَدَّثَنَا مُوسَى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ، حَدَّثَنَا عُمَارَةُ حَدَّثَنَا أَبُو زُرْعَةَ قَالَ: دَخَلْتُ مَعَ أَبِي هُرَيْرَةَ دَارًا بِالْمَدِينَةِ فَرَأَى أَعْلاَهَا مُصَوِّرًا يُصَوِّرُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: ((وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذَهَبَ يَخْلُقُ كَخَلْقِي، فَلْيَخْلُقُوا حَبَّةً وَلْيَخْلُقُوا ذَرَّةً))، ثُمَّ دَعَا بِتَوْرٍ مِنْ مَاءٍ فَغَسَلَ يَدَيْهِ حَتَّى بَلَغَ إِبْطَهُ فَقُلْتُ: يَا أَبَا هُرَيْرَةَ أَشَيْءٌ سَمِعْتَهُ مِنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مُنْتَهَى الْحِلْيَةِ.

[طرفه في : ٧٥٥٩].

तश्रीह : ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने गोया इस ह़दीष़ से ये इस्तिम्बात़ किया जिसमें ये है कि क़यामत के दिन मेरी उम्मत के लोग सफ़ेद पेशानी, सफ़ेद हाथ–पैर वुज़ू की वजह से उठेंगे तो जहाँ तक वुज़ू में आज़ा ज़्यादा धोये जाएँगे वहीं तक सफ़ेदी पहुँचेगी या इस आयत से इस्तिम्बात़ किया **युहल्लौन फ़ीहा असाविर मिन ज़हब** (अल् कहफ़ : 31) या'नी जन्नत में अहले जन्नत को सोने के कड़े पहनाए जाएँगे। ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) का नाम अ़ब्दुर्रह़मान बिन स़ख़्र है। ग़ज़्व-ए-ख़ैबर के साल इस्लाम लाए, ख़िदमते नबवी में हर वक़्त ह़ाज़िर रहते। मदीना में सन 59 हिजरी बउ़म्र 75 साल वफ़ात पाई। 5274 अह़ादीष़े नबवी के ह़ाफ़िज़ थे।

बाब 91 : अगर मूरतें पैरों के तले रौंदी जाएँ तो उनके रौंदनें में कोई क़बाहत नहीं है

٩١- باب مَا وُطِئَ مِنَ التَّصَاوِيرِ

5954. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, कहा कि मैंने अ़ब्दुर्रह़मान बिन क़ासिम से सुना, उन दिनों मदीना

٥٩٥٤- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ الرَّحْمنِ

بْنَ الْقَاسِمِ وَمَا بِالْمَدِينَةِ يَوْمَئِذٍ أَفْضَلُ مِنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي، قَالَ: سَمِعْتُ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَدِمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ مِنْ سَفَرٍ وَقَدْ سَتَرْتُ بِقِرَامٍ لِي عَلَى سَهْوَةٍ لِي فِيهَا تَمَاثِيلُ، فَلَمَّا رَآهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ هَتَكَهُ وَقَالَ: ((أَشَدُّ النَّاسِ عَذَابًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ الَّذِينَ يُضَاهُونَ بِخَلْقِ اللهِ)). قَالَتْ: فَجَعَلْنَاهُ وِسَادَةً، أَوْ وِسَادَتَيْنِ. [راجع: ٢٤٧٩]

मुनव्वरह में उनसे बढ़कर आलिम फ़ाज़िल नेक कोई आदमी नहीं था, उन्होंने बयान किया कि मैंने अपने वालिद (क़ासिम बिन अबीबक्र) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) से सुना कि रसूले करीम (ﷺ) सफ़र (ग़ज़्व-ए-तबूक) से तशरीफ़ लाए तो मैंने अपने घर के साइबान पर एक पर्दा लटका दिया था, उस पर तस्वीरें थीं जब आपने देखा तो उसे खींच के फेंक दिया और फ़र्माया कि क़यामत के दिन सबसे ज़्यादा सख़्त अ़ज़ाब में वो लोग गिरफ़्तार होंगे जो अल्लाह की मख़्लूक़ की त़रह ख़ुद भी बनाते हैं। ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर मैंने फाड़कर उस पर्दा की एक या दो तोशक बना लीं। (राजेअ़ : 2479)

तश्रीह : या एक या दो तकिये बना लिये दूसरी रिवायत में इतना ज़्यादा है कि हम उन पर बैठा करते थे। मुस्लिम की रिवायत में है कि आँह़ज़रत (ﷺ) उन पर आराम फ़र्माया करते थे, बाब का मत़लब इसी से ज़ाहिर है। ह़ज़रत अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ह़ज़रत इमाम बुख़ारी के उस्ताद मुह़्तरम ह़ाफ़िज़ ह़दीष़ हैं। इमाम नसाई ने सच कहा कि उनकी पैदाइश ही ख़िदमते ह़दीष़ के लिये हुई थी। ज़ीक़अ़दा सन 232 हिजरी में बउ़म्र 73 साल इंतिक़ाल फ़र्माया। (रह़िमहुल्लाह)

٥٩٥٥- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ دَاوُدَ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: قَدِمَ النَّبِيُّ ﷺ مِنْ سَفَرٍ وَعَلَّقْتُ دُرْنُوكًا فِيهِ تَمَاثِيلُ، فَأَمَرَنِي أَنْ أَنْزِعَهُ فَنَزَعْتُهُ.[راجع: ٢٤٧٩]

5955. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन दाऊद ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) सफ़र से आए और मैंने पर्दा लटका रखा था जिसमें तस्वीरें थीं, आँह़ज़रत (ﷺ) ने मुझे उसके उतार लेने का हुक्म दिया तो मैंने उसे उतार लिया। (राजेअ़ : 2479)

٥٩٥٦- وَكُنْتُ أَغْتَسِلُ أَنَا وَالنَّبِيُّ ﷺ مِنْ إِنَاءٍ وَاحِدٍ.[راجع: ٢٥٠]

5956. और मैं और नबी करीम (ﷺ) एक ही बर्तन में ग़ुस्ले जनाबत किया करते थे। (राजेअ़ : 250)

अल्लाह पाक ने मियाँ—बीवी के बारे में फ़र्माया **हुन्न लिबासुल्लकुम व अन्तुम लिबासुल्लहुन्न** (अल् बक़र : 187) वो तुम्हारा लिबास हैं और तुम उनके लिबास हो जब औ़रत मर्द के इख़्तिलात़ की कैफ़ियत ये है तो मियाँ—बीवी के एक बर्तन से मिलकर ग़ुस्ल कर लेना कौनसी तअ़ज्जुब की बात है।

٩٢- باب مَنْ كَرِهَ الْقُعُودَ عَلَى الصُّوَرِ

बाब 92 : उस शख़्स की दलील जिसने तौशक और तकिया और फ़र्श पर जब उस पर तस्वीरें बनी हुई हों बैठना मकरूह रखा है

तश्रीह : बज़ाहिर बाब की ह़दीष़ अगली ह़दीष़ के मुख़ालिफ़ है और मुम्किन है कि अगली ह़दीष़ में जब ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने उसे फाड़कर गद्दा बना डाला तो तस्वीरें भी फट गई होंगी। इसलिये आँह़ज़रत (ﷺ) उस पर बैठते हों आपने इंकार न किया हो।

٥٩٥٧- حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ،

5957. हमसे ह़ज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा

حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ الْقَاسِمِ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا، أَنَّهَا اشْتَرَتْ نُمْرُقَةً فِيهَا تَصَاوِيرُ فَقَامَ النَّبِيُّ ﷺ بِالْبَابِ فَلَمْ يَدْخُلْ، فَقُلْتُ: أَتُوبُ إِلَى اللهِ مِمَّا أَذْنَبْتُ؟ قَالَ: ((مَا هَذِهِ النُّمْرُقَةُ؟)) قُلْتُ: لِتَجْلِسَ عَلَيْهَا وَتَوَسَّدَهَا قَالَ: ((إِنَّ أَصْحَابَ هَذِهِ الصُّوَرِ يُعَذَّبُونَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، يُقَالُ لَهُمْ : أَحْيُوا مَا خَلَقْتُمْ وَإِنَّ الْمَلاَئِكَةَ لاَ تَدْخُلُ بَيْتًا فِيهِ الصُّوَرُ)).

[راجع: ٢١٠٥]

हमसे जुवैरिया ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने, उनसे क़ासिम बिन मुहम्मद ने, और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि उन्होंने एक गद्दा ख़रीदा जिस पर तस्वीरें थीं। रसूलुल्लाह (ﷺ) (उसे देखकर) दरवाज़े पर खड़े हो गये और अंदर तशरीफ़ न लाए। मैंने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैंने जो ग़लती की है उससे मैं अल्लाह से मुआफ़ी मांगती हूँ। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये गद्दा किस लिये है? मैंने अर्ज़ किया कि आपके बैठने और उस पर टेक लगाने के लिये है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उन मूरत के बनाने वालों को क़यामत के दिन अ़ज़ाब दिया जाएगा और उनसे कहा जाएगा कि जो तुमने पैदा किया है उसे ज़िन्दा भी करके दिखाओ और फ़रिश्ते उस घर में दाख़िल नहीं होते जिसमें मूरत हो। (राजेअ : 2105)

٥٩٥٨- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ بُكَيْرٍ، عَنْ بُسْرِ بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ زَيْدِ بْنِ خَالِدٍ، عَنْ أَبِي طَلْحَةَ صَاحِبِ رَسُولِ اللهِ ﷺ قَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((إِنَّ الْمَلاَئِكَةَ لاَ تَدْخُلُ بَيْتًا فِيهِ صُورَةٌ)) قَالَ بُسْرٌ: ثُمَّ اشْتَكَى زَيْدٌ فَعُدْنَاهُ فَإِذَا عَلَى بَابِهِ سِتْرٌ فِيهِ صُورَةٌ، فَقُلْتُ لِعُبَيْدِ اللهِ رَبِيبِ مَيْمُونَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَلَمْ يُخْبِرْنَا زَيْدٌ عَنِ الصُّوَرِ يَوْمَ الأَوَّلِ؟ فَقَالَ عُبَيْدُ اللهِ : أَلَمْ تَسْمَعْهُ حِينَ قَالَ: إِلاَّ رَقْمًا فِي ثَوْبٍ. وَقَالَ ابْنُ وَهْبٍ: أَخْبَرَنَا عَمْرٌو هُوَ ابْنُ الْحَارِثِ، حَدَّثَهُ بُكَيْرٌ حَدَّثَهُ بُسْرٌ حَدَّثَهُ زَيْدٌ حَدَّثَهُ أَبُو طَلْحَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

[راجع: ٣٢٢٥]

5958. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे बुकैर बिन अ़ब्दुल्लाह ने, उनसे बुस्र बिन सईद ने और उनसे ज़ैद बिन ख़ालिद (रज़ि.) ने और उनसे रसूलुल्लाह (ﷺ) के सहाबी अबू तलहा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया फ़रिश्ते उस घर में नहीं दाख़िल होते जिसमें तस्वीरें हों। बुस्र ने बयान किया कि (इस हदीष़ को रिवायत करने के बाद) फिर ज़ैद (रज़ि.) बीमार पड़े तो हम उनकी मिज़ाजपुर्सी के लिये गये। हमने देखा कि उनके दरवाज़े पर एक पर्दा पड़ा हुआ है जिस पर तस्वीर है। मैंने उम्मुल मोमिनीन मैमूना (रज़ि.) के रबीब उ़बैदुल्लाह बिन अस्वद से कहा क्या ज़ैद बिन ख़ालिद (रज़ि.) ने हमें इससे पहले एक बार तस्वीरों के बारे में हदीष़ सुनाई थी। उ़बैदुल्लाह ने कहा कि क्या तुमने सुना नहीं था, हदीष़ बयान करते हुए उन्होंने ये भी कहा था कि जो मूरत कपड़े में हो वो जाइज़ है (बशर्ते कि ग़ैर जानदार की हो) और अ़ब्दुल्लाह बिन वहब ने कहा, उन्हें अ़म्र ने ख़बर दी वो इब्ने हारिष़ हैं, उनसे बुकैर ने बयान किया, उनसे बुस्र ने बयान किया, उनसे ज़ैद ने बयान किया, उनसे हज़रत अबू तलहा (रज़ि.) ने बयान किया और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने बयान फ़र्माया जैसा कि ऊपर मज़्कूर हुआ। (राजेअ : 3225)

तश्रीह : अ़ब्दुल्लाह बिन वहब की रिवायत बाब बदउल ख़ल्क़ में मौसूलन गुज़र चुकी है। नववी ने कहा अह़ादीष़ में जमा करना ज़रूरी है इसलिये इस ह़दीष़ में जिसमें इल्ला रक़्क़म फ़ी ष़ौबिन है ये मा'नी करेंगे कि कपड़े की वो नक़्शी तस्वीरें जाइज़ हैं जो ग़ैर जानदार की हों जैसे पेड़ वग़ैरह बल्कि जानदार की तस्वीर तो मुत़लक़न जाइज़ है ख़्वाह कपड़े या काग़ज़ में मन्क़ूस हो या मुजस्सम हो फिर ख़ास नक़्श का इस्तिष़्ना क़ौल हैं एक ये कि मुत़लक़न जाइज़ है दूसरे ये कि मुत़लक़न मना है और ज़ी रूह़ तस्वीरों के लिये वो जिस त़रह़ भी तैयार की जाएँ यही क़ौल राजेह़ है। तीसरा क़ौल ये कि अगर गर्दन तक की हो या इतने बदन की जिससे वो ज़ी रूह़ जी नहीं सकता तो जाइज़ है वरना नहीं। चौथे ये कि अगर फ़र्श या तकिया पर हो जिसमें उसकी अहानत होती है तो जाइज़ है और अगर मुअ़ल्लक़ हो (जैसे कि आजकल फ़ोटो बत़ौरे बरकत व हुस्न लटकाए जाते हैं) तो ये हर्गिज़ जाइज़ नहीं है लेकिन लड़कियाँ जो गुड़िया बनाकर खेलती हैं वो बिल इत्तिफ़ाक़ दुरुस्त हैं। (वह़ीदी)

बाब 93 : जहाँ तस्वीर हो वहाँ नमाज़ पढ़नी मकरूह है

٩٣- باب كَرَاهِيَةِ الصَّلاَةِ فِي التَّصَاوِيرِ

5959. हमसे इमरान बिन मैसरह ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वारिष़ ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन सुहैब ने और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) के पास एक पर्दा था। उसे उन्होंने घर के एक किनारे पर लटका दिया था तो नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये पर्दा निकाल डाल, इसकी मूरत इस नमाज़ में मेरे सामने आती हैं। और दिल उचाट होता है। (राजेअ : 374)

٥٩٥٩- حَدَّثَنَا عِمْرَانُ بْنُ مَيْسَرَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ صُهَيْبٍ، عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ قِرَامٌ لِعَائِشَةَ سَتَرَتْ بِهِ جَانِبَ بَيْتِهَا فَقَالَ لَهَا النَّبِيُّ ﷺ: ((أَمِيطِي عَنِّي فَإِنَّهُ لاَ تَزَالُ تَصَاوِيرُهُ تَعْرِضُ لِي فِي صَلاَتِي)).

[راجع: ٣٧٤]

बाब 94 : फ़रिश्ते उस घर में नहीं जाते जिसमें मूरतें हों

٩٤- باب لاَ تَدْخُلُ الْمَلاَئِكَةُ بَيْتًا فِيهِ صُورَةٌ

5960. हमसे यह्या बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा कि मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन वहब ने, कहा कि मुझसे उ़मर बिन मुह़म्मद ने बयान किया, उनसे सालिम ने और उनसे उनके वालिद (इब्ने उ़मर रज़ि.) ने बयान किया कि एक वक़्त पर जिब्रईल (अ़लैहिस्सलाम) ने नबी करीम (ﷺ) के यहाँ आने का वा'दा किया लेकिन आने में देर हुई। उस वक़्त पर नहीं आए तो आँह़ज़रत (ﷺ) सख़्त परेशान हुए फिर आप बाहर निकले तो जिब्रईल (अ़लैहिस्सलाम) से मुलाक़ात हुई। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनसे शिकायत की तो उन्होंने कहा कि हम (फ़रिश्ते) किसी ऐसे घर में नहीं जाते जिसमें मूरत या कुत्ता हो। (राजेअ : 3227)

٥٩٦٠- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ، قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ قَالَ: حَدَّثَنِي عُمَرُ هُوَ ابْنُ مُحَمَّدٍ، عَنْ سَالِمٍ، عَنْ أَبِيهِ قَالَ: وَعَدَ النَّبِيَّ ﷺ جِبْرِيلُ فَرَاثَ عَلَيْهِ حَتَّى اشْتَدَّ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ فَخَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ فَلَقِيَهُ فَشَكَا إِلَيْهِ مَا وَجَدَ فَقَالَ لَهُ: ((إِنَّا لاَ نَدْخُلُ بَيْتًا فِيهِ صُورَةٌ وَلاَ كَلْبٌ)).

[راجع: ٣٢٢٧]

तश्रीह : दूसरी रिवायत में यूँ है जब वक़्त गुज़र गया और ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लैहिस्सलाम) न आए तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह का वा'दा ख़िलाफ़ नहीं हो सकता न उसके फ़रिश्तों का फिर देखा तो चारपाई के तले एक कुत्ते का पिल्ला पड़ा हुआ था। आपने फ़र्माया ऐ आ़इशा! ये पिल्ला कब आया उन्होंने कहा कि मुझको अल्लाह की क़सम ख़बर नहीं आख़िर उसे वहाँ से निकाला।

बाब 95 : जिस घर में मूरतें हों वहाँ न जाना

٩٥- باب مَنْ لَمْ يَدْخُلْ بَيْتًا فِيهِ صُورَةٌ

5961. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने, उनसे नाफ़ेअ ने, उनसे क़ासिम बिन मुहम्मद ने और उन्हें नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतह्हरा ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि उन्होने एक गद्दा ख़रीदा जिसमें मूरतें थीं जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उसे देखा तो आप दरवाज़े पर खड़े हो गये और अंदर नहीं आए। मैं आपके चेहरे से नाराज़गी पहचान गई। मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैं अल्लाह से उसके रसूल के सामने तौबा करती हूँ, मैंने क्या ग़लती की है? आपने फ़र्माया ये गद्दा कैसा है? मैंने अ़र्ज़ किया कि मैंने ही इसे ख़रीदा है ताकि आप उस पर बैठें और टेक लगाएँ। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उन मूरतों के बनाने वालों को क़यामत के दिन अ़ज़ाब दिया जाएगा और उनसे कहा जाएगा कि जो तुमने पैदा किया है अब उनमें जान भी डालो और आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिस घर में मूरत होती है उसमें (रह़मत के) फ़रिश्ते नहीं दाख़िल होते। (राजेअ़ : 2105)

٥٩٦١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ الْقَاسِمِ بْنِ مُحَمَّدٍ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهَا أَخْبَرَتْهُ أَنَّهَا اشْتَرَتْ نُمْرُقَةً فِيهَا تَصَاوِيرُ، فَلَمَّا رَآهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ قَامَ عَلَى الْبَابِ فَلَمْ يَدْخُلْ فَعَرَفْتُ فِي وَجْهِهِ الْكَرَاهِيَةَ قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ أَتُوبُ إِلَى اللهِ وَإِلَى رَسُولِهِ مَاذَا أَذْنَبْتُ؟ قَالَ: ((مَا بَالُ هَذِهِ النُّمْرُقَةِ؟)) فَقَالَتْ: اشْتَرَيْتُهَا لِتَقْعُدَ عَلَيْهَا وَتَوَسَّدَهَا فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّ أَصْحَابَ هَذِهِ الصُّوَرِ يُعَذَّبُونَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَيُقَالُ لَهُمْ: أَحْيُوا مَا خَلَقْتُمْ)) وَقَالَ: ((إِنَّ الْبَيْتَ الَّذِي فِيهِ الصُّوَرُ لاَ تَدْخُلُهُ الْمَلاَئِكَةُ)). [راجع: ٢١٠٥]

तश्रीह : बाब और ह़दीष़ में मुत़ाबक़त ज़ाहिर है कि फ़रिश्ते जानदार चीज़ों की मूरतों वाले घर में दाख़िल नहीं होते। बज़ाहिर ये उस ह़दीष़ के ख़िलाफ़ है जिसमें ये है कि ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने घर में एक पर्दा लटकाया था उसमें मूरतें थीं आँह़ज़रत (ﷺ) उधर नमाज़ पढ़ रहे थे और तत़्बीक़ यूँ हो सकती है कि शायद पर्दा पर बेजान चीज़ों की मूरतें हों और बाब की ह़दीष़ का ता'ल्लुक़ जानदार की मूरतों से है।

बाब 96 : मूरत बनाने वाले पर ला'नत होना

٩٦- باب مَنْ لَعَنَ الْمُصَوِّرَ

5962. हमसे मुह़म्मद बिन मुष़न्ना ने बयान किया, कहा कि मुझसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे औ़न बिन अबी जुहैफ़ा ने और उनसे उनके वालिद (वहब बिन अ़ब्दुल्लाह) ने कि उन्होंने एक ग़ुलाम ख़रीदा जो पछना लगाता था फिर फ़र्माया कि नबी करीम

٥٩٦٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، قَالَ حَدَّثَنِي غُنْدَرٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَوْنِ بْنِ أَبِي جُحَيْفَةَ، عَنْ أَبِيهِ أَنَّهُ اشْتَرَى غُلاَمًا حَجَّامًا فَقَالَ: إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ نَهَى عَنْ ثَمَنِ

(ﷺ) ने ख़ून निकालने की उजरत, कुत्ते की क़ीमत और ज़ानिया की कमाई खाने से मना किया है और आपने सूद लेने वाले, देने वाले, गोदने वाली, गुदवाने वाली और मूरत बनाने वाले पर ला'नत भेजी है। (राजेअ : 2086)

الدَّمِ وَثَمَنِ الْكَلْبِ، وَكَسْبِ الْبَغِيِّ وَلَعَنَ آكِلَ الرِّبَا وَمُوكِلَهُ وَالْوَاشِمَةَ وَالْمُسْتَوْشِمَةَ وَالْمُصَوِّرَ. [راجع: ٢٠٨٦]

बाब 97 : जो मूरत बनाएगा उस पर क़यामत के दिन ज़ोर डाला जाएगा कि उसे ज़िन्दा भी करे हालाँकि वो ज़िन्दा नहीं कर सकता है

٩٧- باب مَنْ صَوَّرَ صُورَةً كُلِّفَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَنْ يَنْفُخَ فِيهَا الرُّوحَ، وَلَيْسَ بِنَافِخٍ

5963. हमसे अय्याश बिन वलीद ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल आला ने बयान किया, कहा हमसे सईद बिन अबी उरूबा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने नज़्र बिन मालिक से सुना, वो क़तादा से बयान करते थे कि मैं इब्ने अब्बास (रज़ि.) के पास था लोग उनसे मुख़्तलिफ़ मसाइल पूछ रहे थे। जब तक उनसे ख़ास तौर से पूछा न जाता वो नबी करीम (ﷺ) का हवाला नहीं देते थे फिर उन्होंने कहा कि मैंने हज़रत मुहम्मद (ﷺ) से सुना है आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो शख़्स दुनिया में मूरत बनाएगा क़यामत के दिन उस पर ज़ोर डाला जाएगा कि उसे वो ज़िन्दा भी करे हालाँकि वो उसे ज़िन्दा नहीं कर सकता। (राजेअ : 2225)

٥٩٦٣- حَدَّثَنَا عَيَّاشُ بْنُ الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى، حَدَّثَنَا سَعِيدٌ قَالَ: سَمِعْتُ النَّضْرَ بْنَ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، يُحَدِّثُ قَتَادَةَ قَالَ: كُنْتُ عِنْدَ ابْنِ عَبَّاسٍ وَهُمْ يَسْأَلُونَهُ وَلاَ يَذْكُرُ النَّبِيَّ ﷺ حَتَّى سُئِلَ، فَقَالَ: سَمِعْتُ مُحَمَّدًا ﷺ يَقُولُ: ((مَنْ صَوَّرَ صُورَةً فِي الدُّنْيَا كُلِّفَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَنْ يَنْفُخَ فِيهَا الرُّوحَ وَلَيْسَ بِنَافِخٍ)). [راجع: ٢٢٢٥]

बाब 98 : जानवर पर किसी को अपने पीछे बिठा लेना

٩٨- باب الإِرْتِدَافِ عَلَى الدَّابَّةِ

5964. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू सफ़्वान ने बयान किया, उनसे यूनुस बिन यज़ीद ऐली ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उर्वा ने और उनसे हज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) एक गधे पर सवार हुए जिस पर फ़िदक की बनी हुई कमली पड़ी हुई थी आपने हज़रत उसामा (रज़ि.) को उसी पर अपने पीछे बिठा लिया।

٥٩٦٤- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو صَفْوَانَ، عَنْ يُونُسَ بْنِ يَزِيدَ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ رَكِبَ عَلَى حِمَارٍ عَلَى إِكَافٍ عَلَيْهِ قَطِيفَةٌ فَدَكِيَّةٌ وَأَرْدَفَ أُسَامَةَ وَرَاءَهُ.

तश्रीह : इसमें इशारा है कि जब आदमी अपनी सवारी पर बैठे तो गोया वो सवारी का लिबास बन जाता है। अगर जानवर ताक़तवर हो तो दो या तीन तक एक जानवर पर सवारी कर सकते हैं मगर कमज़ोर पर नहीं।

बाब 99 : एक सवारी जानवर पर तीन आदमियों का सवार होना

٩٩- باب الثَّلاَثَةِ عَلَى الدَّابَّةِ

5965. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन

٥٩٦٥- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ

بْنُ زُرَيْعٍ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ، عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: لَمَّا قَدِمَ النَّبِيُّ ﷺ مَكَّةَ اسْتَقْبَلَهُ أُغَيْلِمَةُ بَنِي عَبْدِ الْمُطَّلِبِ فَحَمَلَ وَاحِدًا بَيْنَ يَدَيْهِ وَالآخَرَ خَلْفَهُ. [راجع: ١٧٩٨]

ज़ुरैअ ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद हज़्ज़ाअ ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने और उनसे हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जब नबी करीम (ﷺ) मक्का मुकर्रमा तशरीफ़ लाए (फ़तह मक्का के मौक़े पर) तो बनी अ़ब्दुल मुत्तलिब की औलाद ने (जो मक्का में थी) आपका इस्तिक़्बाल किया, (ये सब बच्चे ही थे) आपने अज़्राहे मुहब्बत एक बच्चे को अपने सामने और एक को अपने पीछे बिठा लिया। (राजेअ : 1798)

तश्रीह : उस वक़्त आप ऊँट पर सवार थे जिस ह़दीष़ में तीन आदमियों का एक सवारी पर बैठना मना आया है वो ह़दीष़ ज़ईफ़ है या महमूल है उस हालत पर जब जानवर कमज़ोर व नातवाँ हो। नववी ने कहा कि जब जानवर ताक़त वाला हो तो अकष़र उलमा के नज़दीक उस पर तीन आदमियों का सवार होना दुरुस्त है जिन दो बच्चों को आपने सवारी पर बिठाया था वो अ़ब्बास (रज़ि.) के बेटे फ़ज़ल और क़ुषम थे।

١٠٠- باب حَمْلِ صَاحِبِ الدَّابَّةِ غَيْرَهُ بَيْنَ يَدَيْهِ

बाब 100 : जानवर के मालिक का दूसरे को सवारी पर अपने आगे बिठाना जाइज़ है कुछ ने कहा है कि जानवर के मालिक को जानवर पर

وَقَالَ بَعْضُهُمْ: صَاحِبُ الدَّابَّةِ أَحَقُّ بِصَدْرِ الدَّابَّةِ إِلاَّ أَنْ يَأْذَنَ لَهُ.

आगे बैठने का ज़्यादा ह़क़ है। अल्बत्ता अगर वो किसी दूसरे को (आगे बैठने की) इजाज़त दे तो जाइज़ है।

٥٩٦٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ قَالَ: حَدَّثَنَا أَيُّوبُ قَالَ: ذُكِرَ الأَشَرُّ الثَّلاَثَةِ عِنْدَ عِكْرِمَةَ فَقَالَ: قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ أَتَى رَسُولُ اللهِ ﷺ، وَقَدْ حَمَلَ قُثَمَ بَيْنَ يَدَيْهِ وَالْفَضْلَ خَلْفَهُ، أَوْ قُثَمَ خَلْفَهُ وَالْفَضْلَ بَيْنَ يَدَيْهِ فَأَيُّهُمْ شَرٌّ أَوْ أَيُّهُمْ خَيْرٌ؟ [راجع: ١٧٩٨]

5966. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वह्हाब ने, कहा हमसे अय्यूब सुख़्तियानी ने कि इक्रिमा के सामने ये ज़िक्र आया कि तीन आदमी जो एक जानवर पर चढ़ें उनमें कौन बहुत बुरा है। उन्होंने बयान किया कि इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) (मक्का मुकर्रमा) तशरीफ़ लाए तो आप क़ुषमा बिन अ़ब्बास (रज़ि.) को अपनी सवारी पर आगे और फ़ज़ल बिन अ़ब्बास (रज़ि.) को पीछे बिठाए हुए थे। या क़ुषमा पीछे थे और फ़ज़ल आगे थे (रज़ि.)। अब तुम उनमें से किसे बुरा कहोगे और किसे अच्छा। (राजेअ : 1798)

तश्रीह : ये कहना कि आगे वाला बुरा है या बीच वाला या पीछे वाला ये सब ग़लत है। एक सवारी पर तीन आदमियों को एक साथ बिठाने की मुमानअ़त सिर्फ़ इस वजह से है कि जानवर पर उसकी ताक़त से ज़्यादा बोझ न हो। अब ये हालत पर मौक़ूफ़ है कि किस जानवर पर कितने आदमी बैठ सकते हैं। अगर कोई जानवर एक शख़्स का भी बोझ नहीं उठा सकता तो एक का बैठना भी उस पर मना है।

١٠١- باب إِرْدَافِ الرَّجُلِ خَلْفَ الرَّجُلِ

बाब 101 : एक मर्द दूसरे मर्द के पीछे एक सवारी पर बैठ सकता है

٥٩٦٧- حَدَّثَنَا هُدْبَةُ بْنُ خَالِدٍ قَالَ: حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا قَتَادَةُ قَالَ: حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ، عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ

5967. हमसे हदबा बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम बिन यह्या ने बयान किया, कहा हमसे क़तादा ने बयान किया, कहा हमसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान

رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : بَيْنَا أَنَا رَدِيفُ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَيْسَ بَيْنِي وَبَيْنَهُ إِلاَّ آخِرَةُ الرَّحْلِ فَقَالَ ((يَا مُعَاذُ))، قُلْتُ : لَبَّيْكَ رَسُولَ اللهِ وَسَعْدَيْكَ ثُمَّ سَارَ سَاعَةً ثُمَّ قَالَ: ((يَا مُعَاذُ)) قُلْتُ : لَبَّيْكَ رَسُولَ اللهِ وَسَعْدَيْكَ ثُمَّ سَارَ سَاعَةً ثُمَّ قَالَ : ((يَا مُعَاذُ)) قُلْتُ: لَبَّيْكَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَسَعْدَيْكَ قَالَ: ((هَلْ تَدْرِي مَا حَقُّ اللهِ عَلَى عِبَادِهِ؟)) قُلْتُ: اللهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ، قَالَ: ((حَقُّ اللهِ عَلَى عِبَادِهِ أَنْ يَعْبُدُوهُ، وَلاَ يُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا)) ثُمَّ سَارَ سَاعَةً، ثُمَّ قَالَ : ((يَا مُعَاذُ بْنَ جَبَلٍ)) قُلْتُ: لَبَّيْكَ رَسُولَ اللهِ وَسَعْدَيْكَ فَقَالَ: ((هَلْ تَدْرِي مَا حَقُّ الْعِبَادِ عَلَى اللهِ إِذَا فَعَلُوهُ؟)) قُلْتُ: اللهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ قَالَ: ((حَقُّ الْعِبَادِ عَلَى اللهِ أَنْ لاَ يُعَذِّبَهُمْ)).

[راجع: ٢٨٥٦]

किया, उनसे हज़रत मुआज़ बिन जबल (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) की सवारी पर आपके पीछे बैठा हुआ था और मेरे और आँहज़रत (ﷺ) के दरम्यान कजाव की पिछली लकड़ी के सिवा और कोई चीज़ हाइल नहीं थी। उसी हालत में आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया या मुआज़! मैं बोला या रसूलल्लाह (ﷺ)! हाज़िर हूँ, आपकी इताअत और फ़र्मांबरदारी के लिये तैयार हूँ। फिर आप थोड़ी देर तक चलते रहे। उसके बाद फ़र्माया या मुआज़! मैं बोला, या रसूलल्लाह! हाज़िर हूँ आपकी इताअत के लिये तैयार हूँ। फिर आप थोड़ी देर चलते रहे उसके बाद फ़र्माया, या मुआज़! मैंने अर्ज़ किया हाज़िर हूँ, या रसूलल्लाह! आपकी इताअत के लिये तैयार हूँ। उसके बाद आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया तुम्हें मा'लूम है अल्लाह के अपने बन्दों पर क्या हक़ हैं? मैंने अर्ज़ किया अल्लाह और उसके रसूल ही को ज़्यादा इल्म है। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह तआला के बन्दों पर हक़ ये हैं कि बन्दे ख़ास उसकी ही इबादत करें और उसके साथ किसी को शरीक न बनाएँ फिर आप थोड़ी देर चलते रहे। उसके बाद फ़र्माया मुआज़! मैंने अर्ज़ किया हाज़िर हूँ या रसूलल्लाह! आपकी इताअत के लिये तैयार हूँ। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया तुम्हें मा'लूम है बन्दों का अल्लाह पर क्या हक़ है जबकि वो ये काम कर लें? मैंने अर्ज़ किया अल्लाह और उसके रसूल को ज़्यादा इल्म है। फ़र्माया कि फिर बन्दों का अल्लाह पर हक़ है कि वो उन्हें अज़ाब न दे। (राजेअ : 2956)

तश्रीह : हक़ से अल्लाह की सुन्नतमुराद है या'नी अल्लाह ने यही क़ानून बना दिया है कि अहले तौहीद बख़्शे जाएँ ख़्वाह जल्द या देर से और अहले शिर्क दाख़िले जहन्नम किये जाएँ और उसमें हमेशा हमेशा जलते रहें। इसलिये मुश्रिकीन पर जन्नत क़त्अन हराम कर दी गई है कितने नामो–निहाद मुसलमान भी अफ़आले शिर्किया में गिरफ़्तार हैं वो भी इसी क़ानून के तहत होंगे।

١٠٢ – باب إِرْدَافِ الْمَرْأَةِ خَلْفَ الرَّجُلِ

बाब 102 : जानवर पर औरत का मर्द के पीछे बैठना जाइज़ है

٥٩٦٨ – حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ صَبَّاحٍ، قَالَ : حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ عَبَّادٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، قَالَ: أَخْبَرَنِي يَحْيَى بْنُ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ : سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ

5968. हमसे हसन बिन मुहम्मद बिन सब्बाह ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन अब्बाद ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उन्हें यह्या बिन अबी इस्हाक़ ने ख़बर दी, कहा कि मैंने हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ ख़ैबर से

वापस आ रहे थे और मैं हज़रत अबू तलहा (रज़ि.) की सवारी पर आपके पीछे बैठा हुआ था और वो चल रहे थे। आँहज़रत (ﷺ) की एक बीवी हज़रत सफ़िया (रज़ि.) आँहज़रत (ﷺ) की सवार पर आपके पीछे थीं कि अचानक ऊँटनी ने ठोकर खाई, मैंने कहा औरत की ख़बरगीरी करो फिर मैं उतर पड़ा। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया ये तुम्हारी माँ हैं फिर मैंने कजावा मज़बूत बाँधा और आँहज़रत (ﷺ) सवार हो गये फिर जब मदीना मुनव्वरह के क़रीब हुए या (रावी ने बयान किया कि) मदीना मुनव्वरह देखा तो फ़र्माया हम वापस होने वाले हैं अल्लाह तआला की तरफ़ रुजूअ होने वाले हैं, उसी को पूजने वाले हैं, अपने मालिक की ता'रीफ़ करने वाले हैं। (राजेअ : 371)

رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، قَالَ: أَقْبَلْنَا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ مِنْ خَيْبَرَ وَإِنِّي لَرَدِيفُ أَبِي طَلْحَةَ وَهُوَ يَسِيرُ، وَبَعْضُ نِسَاءِ رَسُولِ اللهِ ﷺ رَدِيفُ رَسُولِ اللهِ ﷺ إِذْ عَثَرَتِ النَّاقَةُ فَقُلْتُ الْمَرْأَةَ، فَنَزَلْتُ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّهَا أُمُّكُمْ)) فَشَدَدْتُ الرَّحْلَ وَرَكِبَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَلَمَّا دَنَا أَوْ رَأَى الْمَدِينَةَ قَالَ: ((آيِبُونَ تَائِبُونَ عَابِدُونَ لِرَبِّنَا حَامِدُونَ)). [راجع: ٣٧١]

बाब 103 : चित्त लेटकर एक पैर को दूसरे पैर पर रखना

١٠٣- باب الإِسْتِلْقَاءِ، وَوَضْعِ الرِّجْلِ عَلَى الأُخْرَى

कुछ ने इसे मकरूह समझा है इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये बाब लाकर उनका रद्द किया है और मुख़ालफ़त की हदीष़ जो सहीह मुस्लिम में है, मन्सूख़ है

5969. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे अब्बाद बिन तमीम ने, उनसे उनके चचा (अब्दुल्लाह बिन ज़ैद अंसारी रज़ि.) ने कि उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को मस्जिद में (चित्त) लेटे हुए देखा कि आप एक पैर को दूसरे पैर पर उठाकर रखे हुए थे। (राजेअ : 475)

٥٩٦٩- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، قَالَ: حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ شِهَابٍ عَنْ عَبَّادِ بْنِ تَمِيمٍ، عَنْ عَمِّهِ أَنَّهُ أَبْصَرَ النَّبِيَّ ﷺ يَضْطَجِعُ فِي الْمَسْجِدِ رَافِعًا إِحْدَى رِجْلَيْهِ عَلَى الأُخْرَى. [راجع: ٤٧٥]

78. किताबुल अदब

किताब अख़लाक़ के बयान में

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

लोगों के साथ हुस्ने मुआशरत और आदाब के तरीक़े मुराद हैं।

बाब 1 : एहसान और रिश्ते-नाते की फ़ज़ीलत

١- باب الْبِرِّ وَالصِّلَةِ وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى : ﴿وَوَصَّيْنَا الإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا﴾ [العنكبوت : ٨]

और अल्लाह पाक ने (सूरह लुक़्मान और अह़क़ाफ़ वग़ैरह में) फ़र्माया कि मैंने इंसान को उसके वालिदैन के साथ नेक सुलूक करने का हुक्म दिया है। (अल अन्कबूत : 8)

तश्रीह : क़ुर्आन मजीद की ऐसी बहुत सी आयतें हैं जिनमें इबादते इलाही के साथ वालिदैन के साथ भी नेक सुलूक करने का हुक्म फ़र्माया गया है जिसका मतलब ये है कि अल्लाह के बाद बन्दों में सबसे बड़ा ह़क़ वालिदैन का है। जन्नत को वालिदैन के क़दमों के तले बताया गया है और वालिदैन को सताना, उनकी नाफ़र्मानी करना, उनकी ख़िदमत से जी चुराना कबीरा गुनाह है। रसूले करीम (ﷺ) ने अपने वसिय्यतनामे में जो आपने ह़ज़रत मुआज़ बिन जबल (रज़ि.) को फ़र्माया था और ख़ास तौर पर हुक्म दिया थ **व ला तअक़न्न वालिदयक व इन अमराक अन्तखरूज मिन अहलिक व मालिक**.और माँ—बाप की नाफ़र्मानी न करो अगरचे वो तुमको तुम्हारे अहलो—अयाल से या तुम्हारे माल से तुमको जुदा कर दें।

5970. हमसे अबुल वलीद हिशाम ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने, उन्होंने कहा कि मुझे वलीद बिन अयज़ार ने ख़बर दी, कहा कि मैंने अबू अम्र शैबानी से सुना, कहा कि हमें इस घर वाले ने ख़बर दी और उन्होंने अपने हाथ से अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) के घर की तरफ़ इशारा किया, उन्होंने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से पूछा अल्लाह तआला के नज़दीक कौनसा अमल सबसे ज़्यादा पसंद है? आपने फ़र्माया कि वक़्त पर नमाज़ पढ़ना। पूछा कि फिर कौनसा? फ़र्माया कि वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक करना, पूछा फिर कौनसा? फ़र्माया कि अल्लाह केरास्ते में जिहाद करना। अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने मुझसे इन कामों के बारे में बयान किया और अगर मैं इसी तरह सवाल करता रहता तो आप जवाब देते रहते। (राजेअ : 527)

٥٩٧٠- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ، قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، قَالَ الْوَلِيدُ بْنُ عَيْزَارٍ، أَخْبَرَنِي قَالَ سَمِعْتُ أَبَا عَمْرٍو الشَّيْبَانِيَّ يَقُولُ : أَخْبَرَنَا صَاحِبُ هَذِهِ الدَّارِ وَأَوْمَأَ بِيَدِهِ إِلَى دَارِ عَبْدِ اللهِ قَالَ: سَأَلْتُ النَّبِيَّ ﷺ: أَيُّ الْعَمَلِ أَحَبُّ إِلَى اللهِ عَزَّ وَجَلَّ؟ قَالَ: ((الصَّلاَةُ عَلَى وَقْتِهَا)) قَالَ: ثُمَّ أَيٌّ؟ قَالَ: ((ثُمَّ بِرُّ الْوَالِدَيْنِ)) قَالَ: ثُمَّ أَيٌّ؟ قَالَ: ((الْجِهَادُ فِي سَبِيلِ اللهِ)) قَالَ: حَدَّثَنِي بِهِنَّ وَلَوِ اسْتَزَدْتُهُ لَزَادَنِي. [راجع: ٥٢٧]

बाब 2 : रिश्तेवालों में अच्छे सुलूक का सबसे ज़्यादा ह़क़दार कौन है?

٢- باب مَنْ أَحَقُّ النَّاسِ بِحُسْنِ الصُّحْبَةِ؟

5971. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे अम्मारा बिन क़अक़ाअ बिन शुब्रुमा ने, उनसे अबू ज़ुरआ ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि एक सहाबी रसूले करीम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! मेरे अच्छे सुलूक का सबसे ज़्यादा ह़क़दार कौन है? फ़र्माया कि

٥٩٧١- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ عُمَارَةَ بْنِ الْقَعْقَاعِ بْنِ شُبْرُمَةَ عَنْ أَبِي زُرْعَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ مَنْ أَحَقُّ بِحُسْنِ صَحَابَتِي؟ قَالَ: ((أُمُّكَ)) قَالَ: ثُمَّ مَنْ؟

तुम्हारी माँ है। पूछा उसके बाद कौन है? फ़र्माया कि तुम्हारी माँ है। उन्होंने फिर पूछा उसके बाद कौन है? आँहज़रत ने फ़र्माया कि तुम्हारी माँ है। उन्हों ने पूछा उसके बाद कौन है? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया फिर तुम्हारा बाप है। इब्ने शुब्रुमा और यह्या बिन अय्यूब ने बयान किया, कहा हमसे अबू ज़ुरआ ने इसी के मुताबिक़ बयान किया।

قَالَ: ((أُمُّكَ)) قَالَ: ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ: ((أُمُّكَ)) قَالَ: ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ: ((ثُمَّ أَبُوكَ)). وَقَالَ ابْنُ شُبْرُمَةَ وَيَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ: حَدَّثَنَا أَبُو زُرْعَةَ. مِثْلَهُ.

मा'लूम हुआ कि माँ का दर्जा बाप से तीन हिस्से ज़्यादा है क्योंकि सिन्फ़े नाज़ुक है, उसे अपने जवान बेटे का सहारा है लिहाज़ा वो बहुत ही बड़ा हक़ रखती है।

बाब 3 : वालिदैन की इजाज़त के बग़ैर किसी को जिहाद के लिये न जाना चाहिये

٣- باب لاَ يُجَاهِدُ إِلاَّ بِإِذْنِ الأَبَوَيْنِ

5972. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे सुफ़यान और शुअबा ने बयान किया कि हमसे हबीब ने बयान किया (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा और हमसे मुहम्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान ने ख़बर दी, उन्हें हबीब ने, उन्हें अबू अब्बास ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र ने बयान किया कि एक सहाबी ने नबी करीम (ﷺ) से पूछा क्या मैं भी जिहाद में शरीक हो जाऊँ। आँहज़रत (ﷺ) ने दरयाफ़्त किया तुम्हारे माँ–बाप मौजूद हैं उन्होंने कहा कि हाँ मौजूद हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर उन्हीं में जिहाद करो। (राजेअ : 3004)

٥٩٧٢- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ سُفْيَانَ وَشُعْبَةَ قَالاَ : حَدَّثَنَا حَبِيبٌ ح قَالَ: وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ حَبِيبٍ عَنْ أَبِي الْعَبَّاسِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو، قَالَ: قَالَ رَجُلٌ لِلنَّبِيِّ ﷺ: أُجَاهِدُ؟ قَالَ: ((أَلَكَ أَبَوَانِ؟)) قَالَ : نَعَمْ. قَالَ : ((فَفِيهِمَا فَجَاهِدْ)).

[راجع: ٣٠٠٤]

तश्रीह : या'नी उन्हीं की ख़िदमत में कोशिश करते रहो तुमको इससे जिहाद का ष़वाब मिलेगा। मुराद वही जिहाद है जो फ़र्ज़े किफ़ाया है क्योंकि फ़र्ज़े किफ़ाया दूसरे लोगों के अदा करने से अदा हो जाएगा मगर उसके माँ–बाप की ख़िदमत उसके सिवा कौन करेगा। अगर जिहाद फ़र्ज़े ऐन हो जाए उस वक़्त वालिदैन की इजाज़त ज़रूरी नहीं है।

बाब 4 : कोई शख़्स अपने माँ–बाप को गाली न दे

٤- باب لاَ يَسُبُّ الرَّجُلُ وَالِدَيْهِ

या'नी गाली न दिलवाए कि वो किसी के माँ–बाप को गाली दे और उसके जवाब में अपने माँ–बाप को गाली सुने।

5973. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे हुमैद बिन अ़ब्दुर्रहमान ने और उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया यक़ीनन सबसे बड़े गुनाहों में से ये है कि कोई शख़्स अपने वालिदैन पर ला'नत भेजे। पूछा गया या रसूलल्लाह (ﷺ)! कोई शख़्स अपने ही वालिदैन पर कैसे ला'नत भेजेगा? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि वो शख़्स दूसरे के बाप को बुरा

٥٩٧٣- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ ((إِنَّ مِنْ أَكْبَرِ الْكَبَائِرِ أَنْ يَلْعَنَ الرَّجُلُ وَالِدَيْهِ)). قِيلَ يَا رَسُولَ اللهِ وَكَيْفَ يَلْعَنُ

الرَّجُلُ وَالِدَيْهِ؟ قَالَ: ((يَسُبُّ الرَّجُلُ أَبَا الرَّجُلِ، فَيَسُبُّ أَبَاهُ وَيَسُبُّ أُمَّهُ)).

भला कहेगा तो दूसरा भी उसके बाप को और उसकी माँ को बुरा भला कहेगा।

इसीलिये लिये कहा गया है,

बद न बोले ज़ेर गर्दूं गर कोई मेरी सुने　　है ये गुम्बद की सदा जैसी कहे वैसी सुने

٥- باب إِجَابَةِ دُعَاءِ مَنْ بَرَّ وَالِدَيْهِ

बाब 5 : जिस शख़्स ने अपने वालिदैन के साथ नेक सुलूक किया उसकी दुआ क़ुबूल होती है

٥٩٧٤- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ عُقْبَةَ، قَالَ: أَخْبَرَنِي نَافِعٌ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ قَالَ: ((بَيْنَمَا ثَلاَثَةُ نَفَرٍ يَتَمَاشَوْنَ أَخَذَهُمُ الْمَطَرُ، فَمَالُوا إِلَى غَارٍ فِي الْجَبَلِ فَانْحَطَّتْ عَلَى فَمِ غَارِهِمْ صَخْرَةٌ مِنَ الْجَبَلِ، فَأَطْبَقَتْ عَلَيْهِمْ فَقَالَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ: انْظُرُوا أَعْمَالاً عَمِلْتُمُوهَا للهِ صَالِحَةً فَادْعُوا اللهَ بِهَا لَعَلَّهُ يَفْرُجُهَا فَقَالَ أَحَدُهُمْ: اللَّهُمَّ إِنَّهُ كَانَ لِي وَالِدَانِ شَيْخَانِ كَبِيرَانِ وَلِي صِبْيَةٌ صِغَارٌ كُنْتُ أَرْعَى عَلَيْهِمْ، فَإِذَا رُحْتُ عَلَيْهِمْ فَحَلَبْتُ بَدَأْتُ بِوَالِدَيَّ أَسْقِيهِمَا قَبْلَ وَلَدِي وَإِنَّهُ نَأَى بِي الشَّجَرُ فَمَا أَتَيْتُ حَتَّى أَمْسَيْتُ، فَوَجَدْتُهُمَا قَدْ نَامَا فَحَلَبْتُ كَمَا كُنْتُ أَحْلُبُ فَجِئْتُ بِالْحِلاَبِ، فَقُمْتُ عِنْدَ رُؤُوسِهِمَا أَكْرَهُ أَنْ أُوقِظَهُمَا مِنْ نَوْمِهِمَا، وَأَكْرَهُ أَنْ أَبْدَأَ بِالصِّبْيَةِ قَبْلَهُمَا، وَالصِّبْيَةُ يَتَضَاغَوْنَ عِنْدَ قَدَمَيَّ فَلَمْ يَزَلْ ذَلِكَ دَأْبِي وَدَأْبَهُمْ حَتَّى طَلَعَ الْفَجْرُ فَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ

5974. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन इब्राहीम बिन उ़क़्बा ने बयान किया, कहा कि मुझे नाफ़ेअ ने ख़बर दी, उन्हें ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया तीन आदमी चल रहे थे कि बारिश ने उन्हें आ लिया और उन्होंने मुड़कर पहाड़ की ग़ार में पनाह ली। उसके बाद उनके ग़ार के मुँह पर पहाड़ की एक चट्टान गिरी और उसका मुँह बंद हो गया। अब उनमें से एक ने दूसरे से कहा कि तुमने जो नेक काम किये हैं उनमें ऐसे काम को ध्यान में लाओ जो तुमने ख़ालिस़ अल्लाह के लिये किया हो ताकि अल्लाह से उसके ज़रिये दुआ करो मुम्किन है वो ग़ार को खोल दे। उस पर उनमें से एक ने कहा ऐ अल्लाह! मेरे वालिदैन थे और बहुत बूढ़े थे और मेरे छोटे छोटे बच्चे भी थे। मैं उनके लिये बकरियाँ चराता था और वापस आकर दूध निकालता तो सबसे पहले अपने वालिदैन को पिलाता था अपने बच्चों से भी पहले। एक दिन चारे की तलाश ने मुझे बहुत दूर ले जा डाला चुनाँचे मैं रात गये वापस आया। मैंने देखा कि मेरे वालिदैन सो चुके हैं । मैंने मा'मूल के मुताबिक़ दूध निकाला फिर मैं दुहा हुआ दूध लेकर आया और उनके सिरहाने खड़ा हो गया। मैं ये गवारा नहीं कर सकता था कि उन्हें सोने में जगाऊँ और ये भी मुझसे नहीं हो सकता था कि वालिदैन से पहले बच्चों को पिलाऊँ। बच्चे भूख से मेरे क़दमों पर लोट रहे थे और इसी कश्मकश में सुबह हो गई। पस ऐ अल्लाह! अगर तेरे इल्म में भी ये काम मैंने सिर्फ़ तेरी रज़ा हासिल करने के लिये किया था तो हमारे लिये कुशादगी पैदा कर दे कि हम आसमान देख सकें। अल्लाह तआला ने (दुआ क़ुबूल की और) उनके लिये इतनी कुशादगी पैदा कर दी कि

أَنِّي فَعَلْتُ ذَلِكَ ابْتِغَاءَ وَجْهِكَ فَافْرُجْ لَنَا فُرْجَةً نَرَى مِنْهَا السَّمَاءَ، فَفَرَجَ اللهُ لَهُمْ فُرْجَةً حَتَّى يَرَوْنَ مِنْهَا السَّمَاءَ، وَقَالَ الثَّانِي: اللَّهُمَّ إِنَّهُ كَانَتْ لِي ابْنَةُ عَمٍّ أُحِبُّهَا كَأَشَدِّ مَا يُحِبُّ الرِّجَالُ النِّسَاءَ، فَطَلَبْتُ إِلَيْهَا نَفْسَهَا فَأَبَتْ حَتَّى آتِيَهَا بِمِائَةِ دِينَارٍ فَسَعَيْتُ حَتَّى جَمَعْتُ مِائَةَ دِينَارٍ فَلَقِيتُهَا بِهَا فَلَمَّا قَعَدْتُ بَيْنَ رِجْلَيْهَا قَالَتْ: يَا عَبْدَ اللهِ اتَّقِ اللهَ وَلاَ تَفْتَحِ الْخَاتَمَ فَقُمْتُ عَنْهَا، اللَّهُمَّ فَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنِّي قَدْ فَعَلْتُ ذَلِكَ ابْتِغَاءَ وَجْهِكَ فَافْرُجْ لَنَا مِنْهَا، فَفَرَجَ لَهُمْ فُرْجَةً وَقَالَ الآخَرُ: اللَّهُمَّ إِنِّي كُنْتُ اسْتَأْجَرْتُ أَجِيرًا بِفَرَقِ أَرُزٍّ فَلَمَّا قَضَى عَمَلَهُ قَالَ: أَعْطِنِي حَقِّي فَعَرَضْتُ عَلَيْهِ حَقَّهُ، فَتَرَكَهُ وَرَغِبَ عَنْهُ فَلَمْ أَزَلْ أَزْرَعُهُ حَتَّى جَمَعْتُ مِنْهُ بَقَرًا وَرَاعِيَهَا فَجَاءَنِي فَقَالَ: اتَّقِ اللهَ وَلاَ تَظْلِمْنِي وَأَعْطِنِي حَقِّي، فَقُلْتُ: اذْهَبْ إِلَى ذَلِكَ الْبَقَرِ وَرَاعِيهَا فَقَالَ: اتَّقِ اللهَ وَلاَ تَهْزَأْ بِي فَقُلْتُ: إِنِّي لاَ أَهْزَأُ بِكَ، فَخُذْ ذَلِكَ الْبَقَرَ وَرَاعِيَهَا فَأَخَذَهُ فَانْطَلَقَ بِهَا، فَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنِّي فَعَلْتُ ذَلِكَ ابْتِغَاءَ وَجْهِكَ فَافْرُجْ مَا بَقِيَ فَفَرَجَ اللهُ عَنْهُمْ)).

[راجع: ٢٢١٥]

वो आसमान देख सकते थे। दूसरे शख़्स ने कहा ऐ अल्लाह! मेरी एक चचाज़ाद बहन थी और मैं उससे मुहब्बत करता था, वो इंतिहाई मुहब्बत जो एक मर्द एक औरत से कर सकता है। मैंने उससे उसे मांगा तो उसने इंकार किया और सिर्फ़ इस शर्त पर राज़ी हुई कि मैं उसे सौ दीनार दूँ। मैंने दौड़ धूप की और सौ दीनार जमा कर लाया फिर उसके पास उन्हें लेकर गया फिर जब मैं उसके दोनों पैरों के बीच में बैठ गया तो उसने कहा कि ऐ अल्लाह के बन्दे! अल्लाह से डर और मुह्र को मत तोड़। मैं ये सुनकर खड़ा हो गया (और ज़िना से बाज़ रहा) पस अगर तेरे इल्म में भी मैंने ये काम तेरी रज़ा व ख़ुशनूदी हासिल करने के लिये किया था तू हमारे लिये कुछ और कुशादगी (चट्टान को हटाकर) पैदा कर दे। चुनाँचे उनके लिये थोड़ी सी और कुशादगी हो गई। तीसरे शख़्स ने कहा ऐ अल्लाह! मैंने एक मज़दूर एक फ़रक़ चावल की मज़दूरी पर रखा था उसने अपना काम पूरा करके कहा कि मेरी मज़दूरी दो। मैंने उसकी मज़दूरी दे दी लेकिन वो छोड़कर चला गया और उसके साथ बे-तवज्जही की। मैं उसके उस बचे हुए धान को बोता रहा और इस तरह मैंने उससे एक गाय और उसका चरवाहा कर लिया (फिर जब वो आया तो) मैंने उससे कहा कि ये गाय और चरवाहा ले जाओ। उसने कहा अल्लाह से डरो और मेरे साथ मज़ाक़ न करो। मैंने कहा कि मैं तुम्हारे साथ मज़ाक़ नहीं करता। इस गाय और चरवाहे को ले जाओ। चुनाँचे वो उन्हें लेकर चला गया। पस अगर तेरे इल्म में भी मैंने ये काम तेरी रज़ा व ख़ुशनूदी हासिल करने के लिये किया था तो (चट्टान की वजह से ग़ार से निकलने में जो रुकावट बाक़ी रह गई है उसे भी खोल दे। चुनाँचे अल्लाह तआला ने उनके लिये पूरी तरह कुशादगी कर दी जिससे वो बाहर आ गये। (राजेअ : 2215)

तश्रीह : इस हदीष से नेक कामों को बवक़्ते दुआ बतौर वसीला पेश करना जाइज़ षाबित हुआ। आयत **वब्तग़ू इलैहिल्वसीलत** (अल माइदाः 35) का यही मतलब है। नेक लोगों का वसीला ये है कि वो ज़िन्दा हों तो उनसे दुआ कराई जाए, मुर्दों का वसीला बिलकुल बेषुबूत चीज़ है जिससे परहेज़ करना फ़र्ज़ है।

बाब 6 : वालिदैन की नाफ़र्मानी बहुत ही बड़े गुनाहों में से है

٦- باب عُقُوقُ الْوَالِدَيْنِ مِنَ الْكَبَائِرِ

5975. हमसे सअद बिन ह़फ़्स़ ने बयान किया, कहा हमसे शैबान ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे मुसय्यिब ने, उनसे वर्राद ने और उनसे ह़ज़रत मुग़ीरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह ने तुम पर माँ की नाफ़र्मानी ह़राम क़रार दी है और (वालिदैन के ह़ुक़ूक़) न देना और नाह़क़ उनसे मुतालबात करना भी ह़राम क़रार दिया है, लड़कियों को ज़िन्दा दफ़न करना (भी ह़राम क़रार दिया है) और क़ील व क़ाल (फ़िज़ूल बातें) ज़्यादा सवाल और माल की बर्बादी को भी नापसंद किया है। (राजेअ : 844)

٥٩٧٥- حَدَّثَنَا سَعْدُ بْنُ حَفْصٍ، حَدَّثَنَا شَيْبَانُ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ وَرَّادٍ عَنِ الْمُغِيرَةِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ اللهَ حَرَّمَ عَلَيْكُمْ عُقُوقَ الأُمَّهَاتِ، وَمَنْعَ وَهَاتِ وَوَأْدَ الْبَنَاتِ وَكَرِهَ لَكُمْ قِيلَ وَقَالَ وَكَثْرَةَ السُّؤَالِ وَإِضَاعَةَ الْمَالِ)). [راجع: ٨٤٤]

5976. मुझसे इस्ह़ाक़ बिन शाहीन वास्ती ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद वास्ती ने बयान किया, उनसे जरीरी ने, उनसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबीबक्र ने और उनसे उनके वालिद (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, क्या मैं तुम्हें सबसे बड़ा गुनाह न बताऊँ? हमने अ़र्ज़ किया ज़रूर बताइये या रसूलल्लाह! आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह के साथ शिर्क करना और वालिदैन की नाफ़र्मानी करना। आँह़ज़रत (ﷺ) उस वक़्त टेक लगाए हुए थे अब आप (ﷺ) सीधे बैठ गये और फ़र्माया आगाह हो जाओ झूठी बात भी और झूठी गवाही भी (सबसे बड़े गुनाह हैं) आगाह हो जाओ झूठी बात भी और झूठी गवाही भी। आँह़ज़रत (ﷺ) उसे मुसलसल दुहराते रहे और मैंने सोचा कि आँह़ज़रत (ﷺ) ख़ामोश नहीं होंगे। (राजेअ : 2654)

٥٩٧٦- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ الْوَاسِطِيُّ، عَنِ الْجُرَيْرِيِّ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي بَكْرَةَ، عَنْ أَبِيهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَلاَ أُنَبِّئُكُمْ بِأَكْبَرِ الْكَبَائِرِ؟)) قُلْنَا: بَلَى يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ: ((الإِشْرَاكُ بِاللهِ، وَعُقُوقُ الْوَالِدَيْنِ))، وَكَانَ مُتَّكِئًا فَجَلَسَ فَقَالَ: ((أَلاَ وَقَوْلُ الزُّورِ وَشَهَادَةُ الزُّورِ، أَلاَ وَقَوْلُ الزُّورِ وَشَهَادَةُ الزُّورِ)). فَمَا زَالَ يَقُولُهَا حَتَّى قُلْتُ: لاَ يَسْكُتُ. [راجع: ٢٦٥٤]

5977. मुझसे मुह़म्मद बिन वलीद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुह़म्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे उ़बैदुल्लाह बिन अबीबक्र ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने कबाइर का ज़िक्र किया या (उन्होंने कहा कि) आँह़ज़रत (ﷺ) से कबाइर के बारे में पूछा गया तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह के साथ शिर्क करना, किसी की (नाह़क़) जान लेना, वालिदैन की नाफ़र्मानी करना

٥٩٧٧- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، حَدَّثَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ أَبِي بَكْرٍ، قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ذَكَرَ رَسُولُ اللهِ ﷺ الْكَبَائِرَ أَوْ سُئِلَ عَنِ الْكَبَائِرِ فَقَالَ: ((الشِّرْكُ بِاللهِ، وَقَتْلُ النَّفْسِ، وَعُقُوقُ الْوَالِدَيْنِ)) فَقَالَ:

((أَلاَ أُنَبِّئُكُمْ بِأَكْبَرِ الْكَبَائِرِ؟)) قَالَ: ((قَوْلُ الزُّورِ - أَوْ قَالَ - شَهَادَةُ الزُّورِ))، قَالَ شُعْبَةُ: وَأَكْثَرُ ظَنِّي أَنَّهُ قَالَ: ((شَهَادَةُ الزُّورِ)).

फिर फ़र्माया क्या मैं तुम्हें सबसे बड़ा गुनाह न बता दूँ? फ़र्माया कि झूठी बात या फ़र्माया कि झूठी शहादत (सबसे बड़ा गुनाह है) शुअ़बा ने बयान किया कि मेरा ग़ालिबन गुमान ये है कि आँहज़रत (ﷺ) ने झूठी गवाही फ़र्माया था।

٧- باب صِلَةِ لِلْوَالِدِ الْمُشْرِكِ

बाब 7 : वालिद काफ़िर या मुश्रिक हो तब भी उसके साथ नेक सुलूक़ करना

٥٩٧٨- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ أَخْبَرَنِي أَبِي أَخْبَرَتْنِي أَسْمَاءُ ابْنَةُ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَتْ: أَتَتْنِي أُمِّي رَاغِبَةً فِي عَهْدِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَسَأَلْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ آصِلُهَا؟ قَالَ: ((نَعَمْ)). قَالَ ابْنُ عُيَيْنَةَ: فَأَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى فِيهَا: ﴿لاَ يَنْهَاكُمُ اللهُ عَنِ الَّذِينَ لَمْ يُقَاتِلُوكُمْ فِي الدِّينِ﴾.
[راجع: ٢٦٢٠]

5978. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन इ़र्वा ने बयान किया, कहा मुझको मेरे वालिद ने ख़बर दी, उन्हें अस्मा बिन्ते अबीबक्र (रज़ि.) ने ख़बर दी कि मेरी वालिदा नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में मेरे पास आईं, वो इस्लाम से मुंकिर थीं। मैंने आँहज़रत (ﷺ) से पूछा क्या मैं इसके साथ स़िलारहमी कर सकती हूँ? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ। उसके बाद अल्लाह तआ़ला ने ये आयत नाज़िल की ला यन्हाकुमुल्लाहु अ़निल्लज़ीन लम युक़ातिलूकुम फ़िद्दीन या'नी अल्लाह पाक तुमको उन लोगों के साथ नेक सुलूक़ करने से मना नहीं करता जो तुमसे हमारे दीन के बारे में कोई लड़ाई झगड़ा नहीं करते। (राजेअ़ : 2620)

तश्रीह : ये क़ुर्आन पाक की वो ज़बरदस्त आयते करीमा है जो मुसलमानों और ग़ैर मुसलमानों के बाहमी ता'ल्लुक़ात को जोड़ती है और बाहमी झगड़ों को कलअ़दम (निरस्त) क़रार देती है। मुसलमानों की जंगें जारिह़ाना नहीं बल्कि सिर्फ़ मुदाफ़िआ़ना (बचाव के लिये) होती है। स़ाफ़ इर्शादे बारी है **व इन्जनहू लिस्सल्मि फज्नह लहा** (अल अन्फ़ाल : 61) अगर तुम्हारे मुख़ालिफ़ीन तुमसे बजाय जंग के सुलह़ के ख़्वाहाँ हों तो तुम भी फ़ौरन सुलह़ के लिये झुक जाओ क्योंकि अल्लाह के यहाँ जंग बहरह़ाल नापसंद है।

٨- باب صِلَةِ الْمَرْأَةِ أُمَّهَا وَلَهَا زَوْجٌ

बाब 8 : अगर शौहर वाली मुसलमान औ़रत अपनी काफ़िर माँ के साथ नेक सुलूक़ करे

٥٩٧٩- وَقَالَ اللَّيْثُ : حَدَّثَنِي هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ أَسْمَاءَ قَالَتْ: قَدِمَتْ أُمِّي وَهْيَ مُشْرِكَةٌ فِي عَهْدِ قُرَيْشٍ، وَمُدَّتِهِمْ إِذْ عَاهَدُوا النَّبِيَّ ﷺ مَعَ أَبِيهَا

5979. और लैष़ ने बयान किया कि मुझसे हिशाम ने बयान किया, उनसे इ़र्वा ने और उनसे ह़ज़रत अस्मा (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरी वालिदा मुश्रिका थीं वो नबी करीम (ﷺ) के क़ुरैश के साथ स़ुलह़ के ज़माने में अपने वालिद के साथ (मदीना मुनव्वरह़) आईं। मैंने आँहज़रत (ﷺ) से उनके बारे में पूछा कि मेरी वालिदा आई हैं और वो इस्लाम से अलग हैं

(क्या मैं इनके साथ सिलारहमी कर सकती हूँ?) आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ अपनी वालिदा के साथ सिलारहमी करो। (राजेअ : 2620)

فاستفتيت النبي فقلت: إن أمي قدمت وهي راغبة قال: ((نعم صلي أمك)).
[راجع: ٢٦٢٠]

5980. हमसे यह्या ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे अक़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने और उन्हें हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने ख़बर दी और उन्हें हज़रत अबू सुफ़यान (रज़ि.) ने ख़बर दी कि हिरक़्ल ने उन्हें बुला भेजा तो उन्होंने उसे बताया कि वो या'नी नबी करीम (ﷺ) हमें नमाज़, सदक़ा, पाकदामनी और सिलारहमी का हुक्म फ़र्माते हैं। (राजेअ : 7)

٥٩٨٠- حدثنا يحيى، حدثنا الليث، عن عقيل، عن ابن شهاب، عن عبيد الله بن عبد الله أن عبد الله بن عباس أخبره أن أبا سفيان أخبره أن هرقل أرسل إليه فقال: فما يأمركم يعني النبي ﷺ؟ فقال: يأمرنا بالصلاة، والصدقة، والعفاف، والصلة. [راجع: ٧]

बाब 9 : काफ़िर व मुश्रिक भाई के साथ अच्छा सुलूक करना

٩- باب صلة الأخ المشرك

5981. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन मुस्लिम ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया, कहा कि मैंने अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि उमर (रज़ि.) ने सियरा का (एक रेशमी) हुल्ला बिकते देखा तो अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! आप इस ख़रीद लें और जुम्अे के दिन और जब आपके पास वफ़ूद आएँ तो इसे पहना करें। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसे तो वही पहन सकता है जिसका (आख़िरत में) कोई हिस्सा न हो। उसके बाद आँहज़रत (ﷺ) के पास इसी क़िस्म के कई हुल्ले आए तो आँहज़रत (ﷺ) ने उसमें से एक हुल्ला उमर (रज़ि.)के लिये भेजा। उमर (रज़ि.) ने अर्ज़ किया कि मैं उसे कैसे पहन सकता हूँ जबकि आँहज़रत (ﷺ) इसके बारे में पहले मुमानअत फ़र्मा चुके हैं? हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैंने उसे तुम्हें पहनने के लिये नहीं दिया बल्कि इसलिये दिया है कि तुम उसे बेच दो या किसी दूसरे को पहना दो चुनाँचे उमर (रज़ि.) ने वो हुल्ला अपने एक भाई को भेज दिया जो मक्का मुकर्रमा में थे और इस्लाम नहीं लाए थे। (राजेअ : 886)

٥٩٨١- حدثنا موسى بن إسماعيل، حدثنا عبد العزيز بن مسلم، حدثنا عبد الله بن دينار قال: سمعت ابن عمر رضي الله عنهما يقول: رأى عمر حلة سيراء تباع فقال: يا رسول الله ابتع هذه والبسها يوم الجمعة وإذا جاءك الوفود؟ قال: ((إنما يلبس هذه، من لا خلاق له)) فأتي النبي ﷺ منها بحلل فأرسل إلى عمر بحلة فقال: كيف ألبسها وقد قلت فيها ما قلت؟ قال: ((إني لم أعطكها لتلبسها، ولكن تبيعها أو تكسوها)) فأرسل بها عمر إلى أخ له من أهل مكة قبل أن يسلم.
[راجع: ٨٨٦]

तश्रीह : हज़रत उमर (रज़ि.) ने अपने मुश्रिक भाई को वो हुल्ला भेज दिया। इससे बाब का मतलब निकलता है कि मुश्रिक भाई के साथ भी सिलारहमी की जा सकती है। इस्लाम नेकी में उमूमियत का सबक़ देता है जो उसके दीने फ़ित्रत होने की दलील है वो जानवरों तक के साथ भी नेकी की ता'लीम देता है।

बाब 10 : नाते वालों से सिलारहमी की फ़ज़ीलत

١٠- باب فَضْلِ صِلَةِ الرَّحِمِ

5982. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि मुझे इब्ने उ़ष्मान ने ख़बर दी, कहा कि मैंने मूसा बिन त़लहा से सुना और उनसे ह़ज़रत अबू अय्यूब (रज़ि.) ने बयान किया, कहा गया कि या रसूलल्लाह! कोई ऐसा अ़मल बताएँ जो मुझे जन्नत में ले जाए। (राजेअ़ : 1396)

٥٩٨٢- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، قَالَ: أَخْبَرَنِي ابْنُ عُثْمَانَ، سَمِعْتُ مُوسَى بْنِ طَلْحَةَ عَنْ أَبِي أَيُّوبَ قَالَ : قِيلَ يَا رَسُولَ اللهِ أَخْبِرْنِي بِعَمَلٍ يُدْخِلُنِي الْجَنَّةَ ح. [راجع: ١٣٩٦]

5983. (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी (रह़.) ने कहा कि मुझसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन बिश्र ने बयान किया, उनसे बहज़ बिन असद बस़री ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे इब्ने उ़ष्मान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन मोहब और उनके वालिद उ़ष्मान बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया कि उन्होंने मूसा बिन त़लहा से सुना और उन्होंने ह़ज़रत अबू अय्यूब अंसारी (रज़ि.) से कि एक स़ाहब ने कहा या रसूलल्लाह! कोई ऐसा अ़मल बतलाएँ जो मुझे जन्नत में ले जाए। उस पर लोगों ने कहा कि इसे क्या हो गया है, इसे क्या हो गया है, हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि क्यूँ हो क्या गया है अजी इसको ज़रूरत है बेचारा इसलिये पूछता है। उसके बाद आपने उनसे फ़र्माया कि अल्लाह की इबादत कर और उसके साथ किसी और को शरीक न कर, नमाज़ क़ायम कर, ज़कात देते रहो और सिलारहमी करते रहो। (बस ये आ़माल तुझको जन्नत में ले जाएँगे) चल अब नकील छोड़ दे। रावी ने कहा शायद उस वक़्त आँह़ज़रत (ﷺ) अपनी ऊँटनी पर सवार थे। (राजेअ़ : 1396)

٥٩٨٣- حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ، حَدَّثَنَا بَهْزٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، حَدَّثَنَا ابْنُ بنِ عُثْمَانَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَوْهَبٍ، وَأَبُوهُ عُثْمَانُ بْنُ عَبْدِ اللهِ أَنَّهُمَا سَمِعَا مُوسَى بْنَ طَلْحَةَ عَنْ أَبِي أَيُّوبَ الأَنْصَارِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَجُلاً قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ أَخْبِرْنِي بِعَمَلٍ يُدْخِلُنِي الْجَنَّةَ؟ فَقَالَ ((الْقَوْمُ: مَالَهُ مَالَهُ؟)) فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَرَبٌ مَالَهُ)) فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((تَعْبُدُ اللهَ لاَ تُشْرِكُ بِهِ شَيْئًا وَتُقِيمُ الصَّلاَةَ وَتُؤْتِي الزَّكَاةَ وَتَصِلُ الرَّحِمَ ذَرْهَا)) قَالَ: كَأَنَّهُ كَانَ عَلَى رَاحِلَتِهِ. [راجع: ١٣٩٦]

तशरीह़ : मा'लूम हुआ कि जन्नत ह़ासिल करने के लिये हुक़ूक़ुल्लाह की अदायगी के साथ हुक़ूक़ुल इबाद की अदायगी भी ज़रूरी है वरना जन्नत का ख़्वाब देखने वालों के लिये जन्नत ही एक ख़्वाब बनकर रह जाएगी।

बाब 11 : क़त़्अ रह़मी करने वाले का गुनाह

١١- باب إِثْمِ الْقَاطِعِ

5984. हमसे यह़्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे मुह़म्मद बिन जुबैर बिन मुत़्इम ने बयान किया और उन्हें उनके वालिद जुबैर बिन मुत़्इम (रज़ि.) ने ख़बर दी, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि क़त़्अ रह़मी करने वाला जन्नत में नहीं जाएगा।

٥٩٨٤- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَنَّ مُحَمَّدَ بْنَ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ قَالَ: إِنَّ جُبَيْرَ بْنَ مُطْعِمٍ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ : ((لاَ يَدْخُلُ الْجَنَّةَ قَاطِعٌ)).

बाब 12 : नाते वालों से नेक सुलूक़ करना रिज़्क़ में फ़राख़ी का ज़रिया बनता है

١٢- باب مَنْ بُسِطَ لَهُ فِي الرِّزْقِ بِصِلَةِ الرَّحِمِ

5985. मुझसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुहम्मद बिन मअ़न ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सईद बिन अबी सईद ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिसे पसंद है कि उसकी रोज़ी में फ़राख़ी हो और उसकी उ़म्र दराज़ की जाए तो वो स़िलारह़मी किया करे।

٥٩٨٥- حدَّثني إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مَعْنٍ، قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((مَنْ سَرَّهُ أَنْ يُبْسَطَ لَهُ فِي رِزْقِهِ وَأَنْ يُنْسَأَ لَهُ فِي أَثَرِهِ فَلْيَصِلْ رَحِمَهُ)).

इस अ़मल से रिश्तेदारों की नेक दुआएँ उसे ह़ासिल होकर बरकतों का सबब होंगी।

5986. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, कहा कि मुझे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जो चाहता हो कि उसके रिज़्क़ में फ़राख़ी हो और उसकी उ़म्र दराज़ हो तो वो स़िलारह़मी किया करे। (राजेअ़ : 2067)

٥٩٨٦- حدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((مَنْ أَحَبَّ أَنْ يُبْسَطَ لَهُ فِي رِزْقِهِ، وَيُنْسَأَ لَهُ فِي أَثَرِهِ فَلْيَصِلْ رَحِمَهُ)). [راجع: ٢٠٦٧]

बाब 13 : जो शख़्स नाता जोड़ेगा अल्लाह तआ़ला भी उससे मिलाप रखेगा

١٣- باب مَنْ وَصَلَ وَصَلَهُ اللهُ

5987. मुझसे बिश्र बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, कहा हमको मुआविया बिन अबी मुज़र्रिद ने ख़बर दी, कहा कि मैंने अपने चचा सईद बिन यसार से सुना, वो ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से बयान करते थे कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह तआ़ला ने मख़्लूक़ पैदा की और जब उससे फ़राग़त हुई तो रह़म ने अ़र्ज़ किया कि ये उस शख़्स की जगह है जो क़त्अ़ रह़मी से तेरी पनाह मांगे। अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया कि हाँ क्या तुम इस पर राज़ी नहीं कि मैं उससे जोड़ूँगा जो तुमसे अपने आपको जोड़े और उससे तोड़ लूँगा जो तुमसे अपने आपको तोड़ ले? रह़म ने कहा क्यूँ नहीं, ऐ रब! अल्लाह

٥٩٨٧- حدَّثني بِشْرُ بْنُ مُحَمَّدٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ أَبِي مُزَرِّدٍ، قَالَ: سَمِعْتُ عَمِّي سَعِيدَ بْنَ يَسَارٍ يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ اللهَ خَلَقَ الْخَلْقَ حَتَّى إِذَا فَرَغَ مِنْ خَلْقِهِ قَالَتِ الرَّحِمُ: هَذَا مَقَامُ الْعَائِذِ بِكَ مِنَ الْقَطِيعَةِ قَالَ: نَعَمْ أَمَا تَرْضَيْنَ أَنْ أَصِلَ مَنْ وَصَلَكِ وَأَقْطَعَ مَنْ قَطَعَكِ؟ قَالَتْ:

तआला ने फ़र्माया कि पस ये तुझको दिया। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उसके बाद फ़र्माया कि अगर तुम्हारा जी चाहे तो ये आयत पढ़ लो। फ़हल असैतुम इन तवल्लैतुम अन तुफ़्सिदू फ़िल अर्ज़ि व तुक़त्तिऊ अर्हामकुम (सूरह मुहम्मद) या'नी कुछ अजीब नहीं कि अगर तुमको हुकूमत मिल जाए तो तुम मुल्क में फ़साद बर्पा करो और रिश्ते नाते तोड़ डालो। (राजेअ: 4030)

بَلَى يَا رَبِّ، قَالَ : فَهُوَ لَكِ)) قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((فَاقْرَؤُوا إِنْ شِئْتُمْ ﴿فَهَلْ عَسَيْتُمْ إِنْ تَوَلَّيْتُمْ أَنْ تُفْسِدُوا فِي الأَرْضِ وَتُقَطِّعُوا أَرْحَامَكُمْ﴾)).

[راجع: ٤٠٣٠]

5988. हमसे ख़ालिद बिन मुख़्लद ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन दीनार ने, उनसे अबू सालेह ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया रहिम का ता'ल्लुक़ रहमान से जुड़ा हुआ है पस जो कोई उससे अपने आपको जोड़ता है अल्लाह पाक ने फ़र्माया कि मैं भी उसको अपने से जोड़ लेता हूँ और जो कोई इसे तोड़ता है मैं भी अपने आपको उससे तोड़ लेता हूँ।

٥٩٨٨- حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ دِينَارٍ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ الرَّحِمَ شِجْنَةٌ مِنَ الرَّحْمَنِ، فَقَالَ اللهُ: مَنْ وَصَلَكِ وَصَلْتُهُ وَمَنْ قَطَعَكِ قَطَعْتُهُ)).

5989. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुलैमान बिन बिलाल ने, उन्होंने कहा मुझको मुआविया बिन अबी मुज़र्रिद ने ख़बर दी, उन्होंने यज़ीद बिन रूमान से, उन्होंने उर्वा से, उन्होंने उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) से कि आप (ﷺ) ने फ़र्माया रहिम (रिश्तेदारी रहमान से मिली हुई) शाख़ है जो शख़्स उससे मिले मैं उससे मिलता हूँ और जो उससे क़त्अ ता'ल्लुक़ करे मैं उससे क़त्अ ता'ल्लुक़ करता हूँ।

٥٩٨٩- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ بِلاَلٍ، قَالَ : أَخْبَرَنِي مُعَاوِيَةُ بْنُ أَبِي مُزَرِّدٍ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ رُومَانَ عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الرَّحِمُ شِجْنَةٌ فَمَنْ وَصَلَهَا وَصَلْتُه وَمَنْ قَطَعَهَا قَطَعْتُهُ)).

इस हदीष से साफ़ ज़ाहिर हुआ कि रहम को क़त्अ करने वाला (काटने वाला) अल्लाह तआला से ता'ल्लुक़ तोड़ने वाला माना गया है। बहुत से नामो-निहाद दीनदार अपने गुनाहगार भाइयों से बिलकुल ग़ैर मुता'ल्लिक़ हो जाते हैं और उसे तक़्वा जानते हैं जो बिलकुल ख़्याले बातिल है।

बाब 14 : आँहज़रत (ﷺ) का ये फ़र्माना नाते अगर क़ायम रखकर तरो ताज़ा रखा जाए (या'नी नाता की रिआयत की जाए) तो दूसरा भी नाता को तरोताज़ा रखेगा

١٤- باب يَبُلُّ الرَّحِمَ بِبَلاَلِهَا

तश्रीह : मतलब ये कि नाता परवरी दोनों तरफ़ से होनी चाहिये अगर वो नातादारी का ख़्याल रखेंगे तो मैं भी उसका ख़्याल रखूँगा।

5990. हमसे अम्र बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने बयान किया, उनसे क़ैस बिन अबी

٥٩٩٠- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَبَّاسٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي خَالِدٍ، عَنْ قَيْسِ بْنِ أَبِي

حَازِمٍ، أَنَّ عَمْرَو بْنَ الْعَاصِ قَالَ : سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ جِهَارًا غَيْرَ سِرٍّ يَقُولُ: ((إِنَّ آلَ أَبِي))، قَالَ عَمْرٌو فِي كِتَابِ مُحَمَّدِ بْنِ جَعْفَرٍ: ((بَيَاضٌ ((لَيْسُوا بِأَوْلِيَائِي إِنَّمَا وَلِيِّي اللهُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِينَ)). زَادَ عَنْبَسَةُ بْنُ عَبْدِ الْوَاحِدِ عَنْ بَيَانٍ، عَنْ قَيْسٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ، قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ ((وَلَكِنْ لَهُمْ رَحِمٌ أَبُلُّهَا بِبِلاَلِهَا)) يَعْنِي أَصِلُهَا بِصِلَتِهَا. قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ : بِبَلاَهَا كَذَا وَقَعَ وَبِبِلاَلِهَا أَجْوَدُ وَأَصَحُّ وَبِبَلاَهَا لاَ أَعْرِفُ لَهُ وَجْهًا.

हाज़िम ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन आ़स़ (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना कि फ़लाँ की औलाद (या'नी अबू सुफ़यान बिन ह़कम बिन आ़स़ या अबू लहब की) ये अ़म्र बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि मुहम्मद बिन जा'फ़र की किताब में इस वहम पर सफ़ेद जगह ख़ाली थी (या'नी तहरीर न थी) मेरे अ़ज़ीज़ नहीं हैं (गो उनसे नसबी रिश्ता है) मेरा वली तो अल्लाह है और मेरे अ़ज़ीज़ तो वली हैं जो मुसलमानों में नेक और परहेज़गार हैं (गो उनसे नसबी रिश्ता भी न हो) अ़म्बसा बिन अ़ब्दुल वाहिद ने बयान बिन बिश्र से, उन्होंने क़ैस से, उन्होंने अ़म्र बिन आ़स़ से इतना बढ़ाया है कि मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि अल्बत्ता उनसे मेरा रिश्ते नाते है अगर वो तर रखेंगे तो मैं भी तर रखूँगा या'नी वो नाता जोड़ेंगे तो मैं भी जोड़ूँगा।

क्योंकि ताली दोनों हाथों से बजती है।

١٥- باب لَيْسَ الْوَاصِلُ بِالْمُكَافِىءِ

बाब 15 : नाते जोड़ने के ये मा'नी नहीं हैं कि सिर्फ़ बदला अदा कर दे

बल्कि बुराई करने वाले से भलाई करे।

٥٩٩١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الأَعْمَشِ، وَالْحَسَنِ بْنِ عَمْرٍو، وَفِطْرٍ، عَنْ مُجَاهِدٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ سُفْيَانُ : لَمْ يَرْفَعْهُ الأَعْمَشُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ وَرَفَعَهُ الْحَسَنُ وَفِطْرٌ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ ((لَيْسَ الْوَاصِلُ بِالْمُكَافِىءِ، وَلَكِنِ الْوَاصِلُ الَّذِي إِذَا قُطِعَتْ رَحِمُهُ وَصَلَهَا)).

5991. हमसे मुहम्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान ष़ौरी ने ख़बर दी, उन्हें आ'मश और ह़सन बिन अ़म्र और फ़ित्र बिन ख़लीफ़ा ने, उनसे मुजाहिद बिन जुबैर ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़ि.) ने सुफ़यान से, कहा कि आ'मश ने ये ह़दीष़ नबी करीम (ﷺ) तक मर्फ़ूअ़ नहीं बयान की लेकिन ह़सन और फ़ित्र ने नबी करीम (ﷺ) से मर्फ़ूअ़न बयान किया फ़र्माया कि किसी काम का बदला देना स़िलारह़मी नहीं है बल्कि स़िलारह़मी करने वाला वो है कि जब उसके साथ स़िलारह़मी का मामला न किया जा रहा हो तब भी वो स़िलारह़मी करे।

तश्रीह : कमाल उसका नाम जो ह़दीष़ में मज़्कूर हुआ। रिश्तेदार अगर न मिले तो तुम उससे मिलने में आगे बढ़ो बाद में वो तुम्हारा वली ह़मीम, गाढ़ा दोस्त बन जाएगा जैसे कि तजुर्बा शाहिद है। ह़ज़रत आ'मश बिन सुलैमान सन 60 हिजरी में सरज़मीने रै में पैदा हुए फिर कूफ़ा में लाए गये इल्मे ह़दीष़ में बहुत मशहूर हैं। अकष़र कूफ़ियों की रिवायत का मदार उन ही पर है। सन 128 हिजरी में फ़ौत हुए, रह़िमहुल्लाहु तआ़ला आमीन।

बाब 16 : जिसने कुफ़्र की हालत में स़िलारहमी की और फिर इस्लाम लाया तो उसका ष़वाब क़ायम रहेगा

١٦- باب مَنْ وَصَلَ رَحِمَهُ فِي الشِّرْكِ ثُمَّ أَسْلَمَ

5992. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्‌री ने कहा कि मुझे ड़र्वा बिन ज़ुबैर ने ख़बर दी और उन्हें हकीम बिन हिज़ाम ने ख़बर दी, उन्होंने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! आँहज़रत (ﷺ) का उन कामों के बारे में क्या ख़्याल है जिन्हें मैं इबादत समझकर ज़माना-ए-जाहिलियत में करता था मष़लन स़िलारहमी, गुलाम की आज़ादी, स़दक़ा, क्या मुझ उन पर ष़वाब मिलेगा? हज़रत हकीम (रज़ि.) ने बयान किया कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया है तुम उन तमाम आमाले बख़ैर के साथ इस्लाम लाए हो जो पहले कर चुके हो। और कुछ ने अबुल यमान से बजाय अतहन्नषु के अतहन्नतु (ताअ के साथ) रिवायत किया है और मअ़मर और स़ालेह और इब्ने मुसाफ़िर ने भी अतहन्नतु रिवायत किया है। इब्ने इस्हाक़ ने कहा अतहन्नषु तहन्नष़ से निकला है इसके मा'नी मिष़्ल और इबादत करना। हिशाम ने भी अपने वालिद ड़र्वा से उन लोगों की मुताबअ़त की है। (राजेअ़ : 1436)

٥٩٩٢- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ، أَنَّ حَكِيمَ بْنَ حِزَامٍ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ أَرَأَيْتَ أُمُورًا كُنْتُ أَتَحَنَّثُ بِهَا فِي الْجَاهِلِيَّةِ مِنْ صِلَةٍ وَعَتَاقَةٍ وَصَدَقَةٍ هَلْ لِي فِيهَا مِنْ أَجْرٍ؟ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَسْلَمْتَ عَلَى مَا سَلَفَ مِنْ خَيْرٍ)) وَيُقَالُ أَيْضًا عَنْ أَبِي الْيَمَانِ أَتَحَنَّتُ؟ وَقَالَ مَعْمَرٌ وَصَالِحٌ وَابْنُ الْمُسَافِرِ: أَتَحَنَّتُ؟ وَقَالَ ابْنُ إِسْحَاقَ: التَّحَنُّثُ: التَّبَرُّرُ، وَتَابَعَهُمْ هِشَامٌ عَنْ أَبِيهِ.

[راجع: ١٤٣٦]

तश्रीह : हज़रत हकीम बिन हिज़ाम क़ुरैशी उमवी हज़रत ख़दीजा के भतीजे हैं और वाक़िया फ़ील से सवा साल पहले पैदा हुए। कुफ़्र और इस्लाम दोनों ज़मानों में मुअ़ज़्ज़ज़ बनकर रहे। सन 54 हिजरी में बड़म्र 120 साल वफ़ात पाई। कुफ़्र और इस्लाम दोनों में साठ साठ साल हुए। बहुत ही आ़क़िल फ़ाज़िल परहेज़गार थे। रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अरज़ाहु आमीन।

बाब 17 : दूसरे के बच्चे को छोड़ देना कि वो खेले और उसको बोसा देना या उससे हंसना

١٧- باب مَنْ تَرَكَ صَبِيَّةَ غَيْرِهِ حَتَّى تَلْعَبَ بِهِ، أَوْ قَبَّلَهَا أَوْ مَازَحَهَا

बाब की हदीष़ में बोसा का ज़िक्र नहीं है मगर हज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने शायद दूसरी रिवायतों की त़रफ़ इशारा किया या मिज़ाज पर बोसा को क़यास किया है।

5993. हमसे ह़िब्बान बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें ख़ालिद बिन सईद ने, उन्हें उनके वालिद ने, उनसे हज़रत उम्मे ख़ालिद बिन्ते सईद (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में अपने वालिद के साथ हाज़िर हुई। मैं एक ज़र्द क़मीस़ पहने हुए थी। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि सनः सनः अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने कहा कि ये ह़ब्शी ज़ुबान में अच्छा के मा'नी में है। उम्मे ख़ालिद ने बयान किया कि फिर मैं

٥٩٩٣- حَدَّثَنَا حِبَّانُ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، عَنْ خَالِدِ بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ أُمِّ خَالِدٍ بِنْتِ سَعِيدٍ، قَالَتْ: أَتَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ مَعَ أَبِي وَعَلَيَّ قَمِيصٌ أَصْفَرُ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((سَنَهْ سَنَهْ)) قَالَ عَبْدُ اللهِ: وَهِيَ بِالْحَبَشِيَّةِ حَسَنَةٌ، قَالَتْ: فَذَهَبْتُ أَلْعَبُ

بِخَاتَمِ النُّبُوَّةِ فَزَبَرَنِي أَبِي قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((دَعْهَا)) ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ ((أَبْلِي وَأَخْلِقِي، ثُمَّ أَبْلِي وَأَخْلِقِي، ثُمَّ أَبْلِي وَأَخْلِقِي)). قَالَ عَبْدُ اللهِ : فَبَقِيَتْ حَتَّى ذَكَرَ يَعْنِي مِنْ بَقَائِهَا.

[راجع: ٣٠٧١]

आँहज़रत (ﷺ) की ख़ातमे नुबुव्वत से खेलने लगी तो मेरे वालिद ने मुझे डांटा लेकिन आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसे खेलने दो फिर आपने फ़र्माया कि तुम एक ज़माना तक ज़िन्दा रहोगी अल्लाह तआ़ला तुम्हारी उ़म्र ख़ूब लम्बी करे, तुम्हारी ज़िंदगी दराज़ हो। अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया चुनाँचे उन्होंने बहुत ही लम्बी उ़म्र पाई और उनकी लम्बी उ़म्र के चर्चे होने लगे। (राजेअ़ : 3071)

तश्रीह : ह़ज़रत उम्मे ख़ालिद, ख़ालिद बिन सईद बिन आ़स़ अम्वी की माँ हैं। ह़ब्श में पैदा हुई फिर मदीना लाई गई बुलूग़त के बाद ह़ज़रत ज़ुबैर बिन अ़वाम से उनकी पहली शादी हुई (रज़ि.)।

बाब 18 : बच्चे के साथ रहम व शफ़क़त करना, उसे बोसा देना और गले से लगाना

١٨- باب رَحْمَةِ الْوَلَدِ وَتَقْبِيلِهِ وَمُعَانَقَتِهِ

وَقَالَ ثَابِتٌ : عَنْ أَنَسٍ أَخَذَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِبْرَاهِيمَ فَقَبَّلَهُ وَشَمَّهُ

ष़ाबित (रज़ि.) ने ह़ज़रत अनस (रज़ि.) से बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने (अपने स़ाह़बज़ादे) ह़ज़रत इब्राहीम (रज़ि.) को गोद में लिया और उन्हें बोसा दिया और उसे सूँघा

ये अष़र ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने किताबुल जनाइज़ में वस्ल किया है।

٥٩٩٤- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا مَهْدِيٌّ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي يَعْقُوبَ، عَنِ ابْنِ أَبِي نُعْمٍ قَالَ: كُنْتُ شَاهِدًا لاِبْنِ عُمَرَ وَسَأَلَهُ رَجُلٌ عَنْ دَمِ الْبَعُوضِ فَقَالَ: مِمَّنْ أَنْتَ؟ فَقَالَ: مِنْ أَهْلِ الْعِرَاقِ قَالَ: انْظُرُوا إِلَى هَذَا يَسْأَلُنِي عَنْ دَمِ الْبَعُوضِ، وَقَدْ قَتَلُوا ابْنَ النَّبِيِّ ﷺ، وَسَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: ((هُمَا رَيْحَانَتَايَ مِنَ الدُّنْيَا)).

[راجع: ٣٧٥٣]

5994. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे मह्दी ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने यअ़क़ूब ने बयान किया, उनसे अबू नुअ़म ने बयान किया कि मैं ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) की ख़िदमत में मौजूद था उनसे एक शख़्स़ ने (ह़ालते एह़राम में) मच्छर के मारने के बारे में पूछा (कि उसका क्या कफ़्फ़ारा होगा) ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने दरयाफ़्त फ़र्माया कि तुम कहाँ के हो? उसने बताया कि इराक़ का, फ़र्माया कि इस शख़्स़ को देखो, (मच्छर की जान लेने के तावान का मसला पूछता है) ह़ालाँकि इसके मुल्क वालों ने रसूलुल्लाह (ﷺ) के नवासे को (बेतकल्लुफ़ क़त्ल कर डाला) मैंने आँहज़रत (ﷺ) से सुना आप फ़र्मा रहे थे कि ये दोनों (ह़ज़रत ह़सन और ह़ज़रत ह़ुसैन रज़ि.) दुनिया में मेरे दो फूल हैं। (राजेअ़ : 3753)

तश्रीह : ह़ज़रत ह़ुसैन (रज़ि.) को शहीद करने वाले बेशतर कूफ़ा के बाशिन्दे थे जिन्होंने बार बार ख़ुतूत लिख लिखकर ह़ज़रत ह़ुसैन (रज़ि.) को कूफ़ा बुलाया था और अपनी वफ़ादारी का यक़ीन दिलाया था मगर वक़्त आने पर वो सब दुश्मनों से मिल गये और मैदाने करबला में वो सब कुछ हुआ जो दुनिया को मा'लूम है, सच है,

अ तर्जु उम्मतुन क़तलत ह़ुसैना	शफ़ाअ़त जद्दिही यौमल्हिसाब

5995. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, कहा मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबीबक्र ने बयान किया, उन्हें उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने ख़बर दी और उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरे यहाँ एक औ़रत आई उसके साथ दो बच्चियाँ थीं, वो मांगने आई थी। मेरे पास से सिवा एक खजूर के उसे और कुछ न मिला। मैंने उसे वो खजूर दे दी और उसने वो खजूर अपनी दोनों लड़कियों को तक़्सीम कर दी। फिर उठकर चली गई उसके बाद हुज़ूरे अकरम (ﷺ) तशरीफ़ लाए तो मैंने आपसे उसका ज़िक्र किया तो आपने फ़र्माया कि जो शख़्स भी इस त़रह की लड़कियों की परवरिश करेगा और उनके साथ अच्छा सुलूक करेगा तो ये उसके लिये जहन्नम से पर्दा बन जाएँगी। (राजेअ़ : 1418)

٥٩٩٥- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي بَكْرٍ أَنَّ عُرْوَةَ بْنَ الزُّبَيْرِ أَخْبَرَهُ أَنَّ عَائِشَةَ زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ حَدَّثَتْنَا قَالَتْ: جَاءَتْنِي امْرَأَةٌ مَعَهَا ابْنَتَانِ تَسْأَلُنِي فَلَمْ تَجِدْ عِنْدِي غَيْرَ تَمْرَةٍ وَاحِدَةٍ فَأَعْطَيْتُهَا فَقَسَمَتْهَا بَيْنَ ابْنَتَيْهَا ثُمَّ قَامَتْ فَخَرَجَتْ فَدَخَلَ النَّبِيُّ ﷺ فَحَدَّثْتُهُ فَقَالَ: ((مَنْ يَلِي مِنْ هَذِهِ الْبَنَاتِ شَيْئًا فَأَحْسَنَ إِلَيْهِنَّ كُنَّ لَهُ سِتْرًا مِنَ النَّارِ)).
[راجع: ١٤١٨]

तशरीह़ : इस ह़दीष़ से बच्चियों का पालना मुह़ब्बत शफ़क़त से उनको रखना बहुत बड़ा नेक काम ष़ाबित हुआ जो ऐसा करने वाले को दोज़ख़ से दूर कर देगा।

5996. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, कहा हमसे सईद मक़्बरी ने बयान किया, कहा हमसे अ़म्र बिन सुलैम ने बयान किया, कहा हमसे अबू क़तादा (रज़ि.) ने बयान किया, कहा कि नबी करीम (ﷺ) बाहर तशरीफ़ लाए और उमामा बिन्ते अबी अल आ़स़ (जो बच्ची थीं) वो आपके शाना-ए-मुबारक पर थीं फिर आँह़ज़रत (ﷺ) ने नमाज़ पढ़ी जब आप रुकूअ़ करते तो उन्हें उतार देते और जब खड़े होते तो फिर उठा लेते। (राजेअ़ : 516)

٥٩٩٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، حَدَّثَنَا سَعِيدٌ الْمَقْبُرِيُّ، حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ سُلَيْمٍ، حَدَّثَنَا أَبُو قَتَادَةَ قَالَ: خَرَجَ عَلَيْنَا النَّبِيُّ ﷺ وَأُمَامَةُ بِنْتُ أَبِي الْعَاصِ عَلَى عَاتِقِهِ فَصَلَّى، فَإِذَا رَكَعَ وَضَعَهَا، وَإِذَا رَفَعَ رَفَعَهَا. [راجع: ٥١٦]

इसमें आँह़ज़रत (ﷺ) की कमाले शफ़क़त का बयान है जो आपने एक मा'सूम बच्ची पर फ़र्माई ये आपके ख़स़ाइस़ में से है। (ﷺ)

5997. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने ख़बर दी, उनसे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ह़सन बिन अ़ली (रज़ि.) को बोसा दिया। आँह़ज़रत (ﷺ) के पास ह़ज़रत अक़्रअ़ बिन ह़ाबिस (रज़ि.) बैठे हुए थे। ह़ज़रत अक़्रअ़ (रज़ि.) ने उस पर कहा कि मेरे दस लड़के हैं और मैंने उनमें से किसी को बोसा नहीं दिया। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनकी

٥٩٩٧- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، حَدَّثَنَا أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَبَّلَ رَسُولُ اللهِ ﷺ الْحَسَنَ بْنَ عَلِيٍّ وَعِنْدَهُ الأَقْرَعُ بْنُ حَابِسٍ التَّمِيمِيُّ جَالِسًا فَقَالَ الأَقْرَعُ: إِنَّ لِي عَشَرَةً مِنَ الْوَلَدِ مَا قَبَّلْتُ مِنْهُمْ أَحَدًا، فَنَظَرَ إِلَيْهِ

तरफ़ देखा और फ़र्माया कि जो अल्लाह की मख़्लूक़ पर रहम नहीं करता उस पर भी रहम नहीं किया जाता।

رَسُولُ اللهِ ﷺ، ثُمَّ قَالَ : ((مَنْ لاَ يَرْحَمُ لاَ يُرْحَمُ)).

मज़ीद तशरीह नीचे वाली हदीष़ में आ रही है।

5998. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उ़र्वा ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि एक देहाती नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ और कहा आप लोग बच्चों को बोसा देते हैं, हम तो उन्हें बोसा नहीं देते। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अगर अल्लाह ने तुम्हारे दिल से रहम निकाल दिया है तो मैं क्या कर सकता हूँ?

٥٩٩٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَ: جَاءَ أَعْرَابِيٌّ إِلَى النَّبِيِّ فَقَالَ: تُقَبِّلُونَ الصِّبْيَانَ فَمَا نُقَبِّلُهُمْ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَوْ أَمْلِكُ لَكَ إِنْ نَزَعَ اللهُ مِنْ قَلْبِكَ الرَّحْمَةَ)).

5999. हमसे इब्ने अबी मरयम ने बयान किया, कहा हमसे अबू ग़स्सान ने, कहा कि मुझसे ज़ैद बिन असलम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के पास कुछ क़ैदी आए क़ैदियों में एक औ़रत थी जिसका पिस्तान दूध से भरा हुआ था और वो दौड़ रही थी, इतने में एक बच्चा उसको क़ैदियों में मिला उसने झट अपने पेट से लगा लिया और उसको दूध पिलाने लगी। हमसे हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि क्या तुम ख़याल कर सकते हो कि ये औ़रत अपने बच्चे को आग में डाल सकती है हमने अ़र्ज़ किया कि नहीं जब तक इसको क़ुदरत होगी ये अपने बच्चे को आग में नहीं फेंक सकती। आँह़ज़रत (ﷺ) ने इस पर फ़र्माया कि अल्लाह अपने बन्दों पर इससे भी ज़्यादा रहम करने वाला है। जितना ये औ़रत अपने बच्चे पर मेहरबान हो सकती है।

٥٩٩٩- حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي مَرْيَمَ، حَدَّثَنَا أَبُو غَسَّانَ قَالَ: حَدَّثَنِي زَيْدُ بْنُ أَسْلَمَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَدِمَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ سَبْيٌ فَإِذَا امْرَأَةٌ مِنَ السَّبْيِ تَحْلُبُ ثَدْيَهَا تَسْقِي إِذَا وَجَدَتْ صَبِيًّا فِي السَّبْيِ أَخَذَتْهُ فَأَلْصَقَتْهُ بِبَطْنِهَا وَأَرْضَعَتْهُ فَقَالَ لَنَا النَّبِيُّ ﷺ ((أَتُرَوْنَ هَذِهِ طَارِحَةً وَلَدَهَا فِي النَّارِ؟)) قُلْنَا لاَ وَهِيَ تَقْدِرُ عَلَى أَنْ لاَ تَطْرَحَهُ فَقَالَ: ((اللهُ أَرْحَمُ بِعِبَادِهِ مِنْ هَذِهِ بِوَلَدِهَا)).

तश्रीह : ग़ालिबन ये उस औ़रत का गुमशुदा बच्चा था जो उसे मिल गया और उसको उसने इस मुहब्बत के साथ अपने पेट से चिमटा लिया।

बाब 19 : अल्लाह तआ़ला ने अपनी रहमत के सौ ह़िस्से बनाए हैं

١٩- باب جَعَلَ اللهُ الرَّحْمَةَ مِائَةَ جُزْءٍ

6000. हमसे ह़कम बिन नाफ़ेअ़ ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, कहा हमको सईद बिन मुसय्यिब ने ख़बर दी कि ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूले करीम (ﷺ) से सुना, आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह ने रहमत के सौ ह़िस्से बनाए और अपने

٦٠٠٠- حَدَّثَنَا الْحَكَمُ بْنُ نَافِعٍ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، أَخْبَرَنَا سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((جَعَلَ اللهُ

الرَّحْمَةَ مِائَةَ جُزْءٍ، فَأَمْسَكَ عِنْدَهُ تِسْعَةً وَتِسْعِينَ جُزْءًا، وَأَنْزَلَ فِي الأَرْضِ جُزْءًا وَاحِدًا، فَمِنْ ذَلِكَ الْجُزْءِ يَتَرَاحَمُ الْخَلْقُ حَتَّى تَرْفَعَ الْفَرَسُ حَافِرَهَا عَنْ وَلَدِهَا خَشْيَةَ أَنْ تُصِيبَهُ)). [طرفه في : ٦٤٦٩].

पास उनमें से निन्नानवे (99) हिस्से रखे सिर्फ़ एक हिस्सा ज़मीन पर उतारा और उसी की वजह से तुम देखते हो कि मख़्लूक़ एक–दूसरे पर रह्म करती है, यहाँ तक कि घोड़ी भी अपने बच्चे को अपने सम नहीं लगने देती बल्कि सुमूँ को उठा लेती है कि कहीं उससे उस बच्चे को तकलीफ़ न पहुँचे। (दीगर मक़ामात : 6469)

तश्रीह : घोड़ी का अपने बच्चे पर इस दर्जा रह्म करना भी क़ुदरत का एक करिश्मा है मगर कितने लोग दुनिया में ऐसे हैं कि वो रह्म व करम करना मुत्लक़ नहीं जानते बल्कि हर वक़्त ज़ुल्म पर अड़े रहते हैं उनको याद रखना चाहिये कि जल्द ही वो अपने मज़ालिम की सज़ा भुगतेंगे क़ानूने क़ुदरत यही है **फ़कुतिअ दाबिरुल्क़ौमिल्लज़ीन ज़लमू वल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्आलमीन** (अल अन्आम : 45)

٢٠- باب قَتْلِ الْوَلَدِ خَشْيَةَ أَنْ يَأْكُلَ مَعَهُ

٦٠٠١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُرَحْبِيلَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ : قُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ أَيُّ الذَّنْبِ أَعْظَمُ؟ قَالَ ((أَنْ تَجْعَلَ للهِ نِدًّا وَهُوَ خَلَقَكَ)) ثُمَّ قَالَ أَيٌّ؟ قَالَ : ((أَنْ تَقْتُلَ وَلَدَكَ خَشْيَةَ أَنْ يَأْكُلَ مَعَكَ)) قَالَ : ثُمَّ أَيٌّ؟ قَالَ: ((أَنْ تُزَانِيَ حَلِيلَةَ جَارِكَ)) وَأَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى تَصْدِيقَ قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ﴿وَالَّذِينَ لاَ يَدْعُونَ مَعَ اللهِ إِلَهًا آخَرَ﴾. [الفرقان: ٦٨].
[راجع: ٤٤٧٧]

6001. हमसे मुहम्मद बिन कषीर ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान षौरी ने ख़बर दी, उन्हें मंसूर बिन मुअतमिर ने, उन्हें अबू वाइल ने, उन्हें अम्र बिन शुरहबील ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने कहा या रसूलल्लाह! कौनसा गुनाह सबसे बड़ा है? फ़र्माया कि तुम अल्लाह तआला का किसी को शरीक बनाओ हालाँकि उसी ने तुम्हें पैदा किया है। उन्होंने कहा फिर उसके बाद फ़र्माया ये कि तुम अपने लड़के को इस डर से क़त्ल करो कि अगर ज़िन्दा रहा तो तुम्हारी रोज़ी में शरीक होगा। उन्होंने कहा उसके बाद आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ये कि तुम अपने पड़ौसी की बीवी से ज़िना करो। चुनाँचे अल्लाह तआला ने भी आँहज़रत (ﷺ) के इस इर्शाद की ताईद में ये आयत वल्लज़ीन ला यदऊना मअल्लाहि इलाहन आख़र अल्अख़, नाज़िल की कि, और वो लोग जो अल्लाह के सिवा किसी दूसरे मा'बूद को नहीं पुकारते और न वो नाहक़ किसी का क़त्ल करते हैं और न वो ज़िना करते हैं। (राजेअ : 4477)

तश्रीह : मा'लूम हुआ कि शिर्क अकबरुल कबाइर है और दूसरे मज़्कूरा कबीरा गुनाह हैं अगर उनका मुर्तकिब बग़ैर तौबा मर जाए तो उसे दोज़ख़ में पहुँचा देते हैं शिर्क की हालत में मरने वाला हमेशा के लिये दोज़ख़ी है ख़्वाह वो नामो–निहाद मुसलमान ही हों क्योंकि क़ब्रों को सज्दा करता है, मुर्दों को पुकारता और उनसे हाजात तलब करता है तो वो काहे का मुसलमान है वो मुसलमान भी मुश्रिक है।

٢١- باب وَضْعِ الصَّبِيِّ فِي الْحِجْرِ

बाब 21 : बच्चे को गोद में बिठा लेना

٦٠٠٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى،

6002. हमसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, कहा

हमसे यह्या बिन सईद ने बयान किया, उनसे हिशाम ने बयान किया, कहा मुझको मेरे वालिद ड़र्वा ने ख़बर दी और उन्हें हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने एक बच्चे (अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर) को अपनी गोद में बिठाया और खजूर चबाकर उसके मुँह में दी, उसने आप पर पेशाब कर दिया आपने पानी मंगवाकर उस पर बहा दिया। (राजेअ : 222)

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ هِشَامٍ، قَالَ : أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ وَضَعَ صَبِيًّا فِي حِجْرِهِ يُحَنِّكُهُ فَبَالَ عَلَيْهِ فَدَعَا بِمَاءٍ فَأَتْبَعَهُ. [راجع: ٢٢٢]

बाब 22 : बच्चे को रान पर बिठाना

٢٢- باب وَضْعِ الصَّبِيِّ عَلَى الْفَخِذِ

6003. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे आरिम मुहम्मद बिन फ़ज़ल ने बयान किया, कहा हमसे मुअतमिर बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा कि उनसे उनके वालिद ने बयान किया, कहा कि मैंने अबू तमीमा से सुना, वो अबू उ़ष्मान नह्दी से बयान करते थे और अबू उ़ष्मान नह्दी ने कहा कि उनसे हज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) मुझे अपनी एक रान पर बिठाते थे और हज़रत हसन (रज़ि.) को दूसरी रान पर बिठाते थे। फिर दोनों को मिलाते और फ़र्माते, ऐ अल्लाह! इन दोनों पर रहम कर कि मैं भी इन पर रहम करता हूँ और अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया कि हमसे यह्या ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान तैमी ने बयान किया, उनसे अबू उ़ष्मान नह्दी ने इसी हदीष को बयान किया। सुलैमान तैमी ने कहा जब अबू तमीमा ने ये हदीष मुझसे बयान की अबू उ़ष्मान नह्दी से तो मेरे दिल में शक पैदा हुआ। मैंने अबू उ़ष्मान से बहुत सी अहादीष सुनी हैं पर ये हदीष क्यूँ नहीं सुनी फिर मैंने अपनी अहादीष की किताब देखी तो उसमें ये हदीष अबू उ़ष्मान नह्दी से लिखी हुई थी। (राजेअ : 3735)

٦٠٠٣- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا عَارِمٌ، حَدَّثَنَا الْمُعْتَمِرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، يُحَدِّثُ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا تَمِيمَةَ يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي عُثْمَانَ النَّهْدِيِّ يُحَدِّثُهُ أَبُو عُثْمَانَ، عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَأْخُذُنِي فَيُقْعِدُنِي عَلَى فَخِذِهِ وَيُقْعِدُ الْحَسَنَ عَلَى فَخِذِهِ الأُخْرَى ثُمَّ يَضُمُّهُمَا ثُمَّ يَقُولُ: ((اللَّهُمَّ ارْحَمْهُمَا فَإِنِّي أَرْحَمُهُمَا)). وَعَنْ عَلِيٍّ قَالَ : حَدَّثَنَا يَحْيَى، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ، قَالَ التَّيْمِيُّ : فَوَقَعَ فِي قَلْبِي مِنْهُ شَيْءٌ، قُلْتُ: حَدَّثْتُ بِهِ كَذَا وَكَذَا، فَلَمْ أَسْمَعْهُ مِنْ أَبِي عُثْمَانَ فَنَظَرْتُ فَوَجَدْتُهُ عِنْدِي مَكْتُوبًا فِيمَا سَمِعْتُ. [راجع: ٣٧٣٥]

तश्रीह : उस वक़्त मेरा शक दूर हो गया। हज़रत उसामा की माँ का नाम उम्मे ऐमन है जो आप (ﷺ) के वालिद हज़रत अब्दुल्लाह की आज़ादकर्दा लौण्डी थी और उसने आँहज़रत (ﷺ) की परवरिश में बड़ा हिस्सा भी लिया था। उसामा आपके आज़ादकर्दा गुलाम ज़ैद के बेटे थे। बहुत ही महबूब मिष्ल बेटे के थे वफ़ाते नबवी के वक़्त इनकी उ़म्र बीस साल की थी। सन 54 हिजरी में वफ़ात पाई, (रज़ियल्लाहु अन्हु)

बाब 23 : सुहबत का हक़ याद रखना ईमान की निशानी है

٢٣- باب حُسْنُ الْعَهْدِ مِنَ الإِيمَانِ

तश्रीह : या'नी जिस शख़्स से बहुत दिनों तक दोस्ती रही हो वा'जअ़दार आदमी को उसका ख़्याल हमेशा रखना चाहिये उसके मरने के बाद उसके अ़ज़ीज़ों से भी सुलूक़ करते रहना चाहिये। ये बहुत ही बड़ी दलील है। आँहज़रत (ﷺ)

इंतिक़ाल के बाद भी हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) को न सिर्फ़ याद रखते बल्कि उनकी सहेलियों को तोहफ़े तहाइफ़ भेजा करते थे। हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) चालीस साल की उम्र में आँहज़रत (ﷺ) के निकाह में आईं और आपकी उम्र शरीफ़ उस वक़्त 25 साल की थी। आपने हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) की ज़िंदगी तक किसी और औरत से शादी नहीं की। आँहज़रत (ﷺ) की सारी औलाद सिवाए इब्राहीम के हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) ही के बतन से है। नुबुव्वत के दसवें बरस 65 साल की उम्र में इंतिक़ाल हुआ, (रज़ियल्लाहु अन्हा)

6004. हमसे उबैद बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उर्वा ने, उनसे उनके वालिद उर्वा ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मुझे किसी औरत पर इतना रश्क नहीं आता था जितना हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) पर आता था हालाँकि वो आँहज़रत (ﷺ) की मुझसे शादी से तीन साल पहले वफ़ात पा चुकी थीं। (रश्क की वजह ये थी) कि आँहज़रत (ﷺ) को मैं बहुत ज़्यादा से उनका ज़िक्र करते सुनती थी और आँहज़रत (ﷺ) को उनके रब ने हुक्म दिया था कि हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) को जन्नत में एक ख़ोलदार मोतियों के घर की ख़ुशख़बरी सुना दें। आँहज़रत (ﷺ) कभी बकरी ज़िब्ह करते फिर उसमें से हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) की सहेलियों को हिस्सा भेजते थे। (राजेअ: 3816)

٦٠٠٤- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: مَا غِرْتُ عَلَى امْرَأَةٍ مَا غِرْتُ عَلَى خَدِيجَةَ وَلَقَدْ هَلَكَتْ قَبْلَ أَنْ يَتَزَوَّجَنِي بِثَلاَثِ سِنِينَ لِمَا كُنْتُ أَسْمَعُهُ يَذْكُرُهَا، وَلَقَدْ أَمَرَهُ رَبُّهُ أَنْ يُبَشِّرَهَا بِبَيْتٍ فِي الْجَنَّةِ مِنْ قَصَبٍ، وَإِنْ كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لَيَذْبَحُ الشَّاةَ ثُمَّ يُهْدِي فِي خُلَّتِهَا مِنْهَا.
[راجع: ٣٨١٦]

बाब 24 : यतीम की परवरिश करने वाले की फ़ज़ीलत का बयान

٢٤- باب فَضْلِ مَنْ يَعُولُ يَتِيمًا

6005. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल वह्हाब ने बयान किया, कहा कि मुझसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबी हाज़िम ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, कहा कि मैंने हज़रत सहल बिन सअ़द (रज़ि.) से सुना, उनसे नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं और यतीम की परवरिश करने वाला जन्नत में इस तरह होंगे और आपने शहादत और बीच की उँगलियों के इशारे से (क़ुर्ब को) बताया। (राजेअ: 5304)

٦٠٠٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الْوَهَّابِ، قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي حَازِمٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي قَالَ: سَمِعْتُ سَهْلَ بْنَ سَعْدٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((أَنَا وَكَافِلُ الْيَتِيمِ فِي الْجَنَّةِ هَكَذَا))، وَقَالَ بِإِصْبَعَيْهِ السَّبَّابَةِ وَالْوُسْطَى.[راجع: ٥٣٠٤]

यतामा और बेवा औरतों की ख़बरगीरी करना बहुत ही बड़ी इबादत है इसमें जिहाद के बराबर षवाब मिलता है। हज़रत सहल बिन सअ़द साएदी अंसारी हैं उनका नाम हज़्न था आँहज़रत (ﷺ) ने उसे हटाकर सहल नाम रखा। सन 91 हिजरी में मदीना में फ़ौत हुए ये मदीना में आख़िरी सहाबी हैं, (रज़ियल्लाहु अ़न्हु)

बाब 25 : बेवा औरतों की परवरिश करने वाले का षवाब

٢٥- باب السَّاعِي عَلَى الأَرْمَلَةِ

6006. हमसे इस्माईल बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे सफ़्वान बिन सुलैम ताबेई इस हदीष को मुर्सलन रिवायत करते थे कि

٦٠٠٦- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ صَفْوَانَ بْنِ سُلَيْمٍ يَرْفَعُهُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((السَّاعِي عَلَى

الأَرْمَلَةِ وَالْمِسْكِينِ، كَالْمُجَاهِدِ فِي سَبِيلِ اللهِ - أَوْ كَالَّذِي يَصُومُ النَّهَارَ وَيَقُومُ اللَّيْلَ)). [راجع: ٥٣٥٣]

आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया बेवाओं और मिस्कीनों के लिये कोशिश करने वाला अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाले की तरह है या उस शख़्स की तरह है जो दिन में रोज़े रखता है और रात को इबादत करता है। (राजेअ़ : 5353)

तश्रीह : हज़रत सफ़्वान बिन सुलैम मशहूर ताबेई हैं बहुत ही नेक बन्दे थे। बादशाह तक का हदिया क़ुबूल नहीं करते थे। कष़रते सुजूद से माथा घिस गया था। सन 132 हिजरी में मदीना में फ़ौत हो गये। रह़िमहुल्लाहु तआ़ला

حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ ثَوْرِ بْنِ زَيْدٍ الدِّيلِيِّ، عَنْ أَبِي الْغَيْثِ مَوْلَى ابْنِ مُطِيعٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ مِثْلَهُ.

हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे ष़ौर बिन ज़ैद दैली ने, उनसे इब्ने मुतीअ़ के मौला अबुल ग़ैष़ ने, उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने इसी तरह फ़र्माया।

बाब 26 : मिस्कीन और मुहताजों की परवरिश करने वाला

٢٦- باب السَّاعِي عَلَى الْمِسْكِينِ

٦٠٠٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، حَدَّثَنَا مَالِكٌ، عَنْ ثَوْرِ بْنِ زَيْدٍ، عَنْ أَبِي الْغَيْثِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((السَّاعِي عَلَى الأَرْمَلَةِ وَالْمِسْكِينِ، كَالْمُجَاهِدِ فِي سَبِيلِ اللهِ))، وَأَحْسِبُهُ قَالَ: يَشُكُّ الْقَعْنَبِيُّ: ((كَالْقَائِمِ لاَ يَفْتُرُ وَكَالصَّائِمِ لاَ يُفْطِرُ)). [راجع: ٥٣٥٣]

6007. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे ष़ौर बिन ज़ैद ने, उनसे अबुल ग़ैष़ ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया बेवाओं और मिस्कीनों के लिये कोशिश करने वाला अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाले की तरह है। अ़ब्दुल्लाह क़अ़म्बी को इसमें शक है। इमाम मालिक ने इस हदीष़ में ये भी कहा था, उस शख़्स के बराबर ष़वाब मिलता है जो नमाज़ में खड़ा रहता है थकता ही नहीं और उस शख़्स के बराबर जो रोज़े बराबर रखे चला जाता है। इफ़्तार ही नहीं करता है। (राजेअ़ : 5353)

बाब 27 : इंसानों और जानवरों सब पर रहम करना

٢٧- باب رَحْمَةِ النَّاسِ بِالْبَهَائِمِ

٦٠٠٨- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ، عَنْ أَبِي سُلَيْمَانَ مَالِكِ بْنِ الْحُوَيْرِثِ قَالَ: أَتَيْنَا النَّبِيَّ ﷺ وَنَحْنُ شَبَبَةٌ مُتَقَارِبُونَ فَأَقَمْنَا عِنْدَهُ عِشْرِينَ لَيْلَةً فَظَنَّ أَنَّا اشْتَقْنَا أَهْلَنَا وَسَأَلَنَا عَمَّنْ تَرَكْنَا فِي أَهْلِنَا فَأَخْبَرْنَاهُ، وَكَانَ رَفِيقًا رَحِيمًا فَقَالَ: ((ارْجِعُوا إِلَى أَهْلِيكُمْ فَعَلِّمُوهُمْ وَمُرُوهُمْ

6008. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन उलय्या ने बयान किया, कहा हमसे अय्यूब सुख़्तिया'नी ने बयान किया, उनसे अबू क़िलाबा ने, उनसे अबू सुलैमान मालिक बिन हुवेरिष़ (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में मदीना हाज़िर हुए और हम सब नौजवान और हमउम्र थे। हम आँहज़रत (ﷺ) के साथ बीस दिनों तक रहे। फिर आँहज़रत (ﷺ) को ख़्याल हुआ कि हमें अपने घर के लोग याद आ रहे होंगे और आँहज़रत (ﷺ) ने हमसे उनके बारे में पूछा जिन्हें हम अपने घरों पर छोड़ आए थे हमने आँहज़रत (ﷺ) को सारा हाल सुना दिया। आप बड़े ही नर्म ख़ू

وَصَلُّوا كَمَا رَأَيْتُمُونِي أُصَلِّي وَإِذَا حَضَرَتِ الصَّلاَةُ فَلْيُؤَذِّنْ لَكُمْ أَحَدُكُمْ، ثُمَّ لِيَؤُمَّكُمْ أَكْبَرُكُمْ)). [راجع: ٦٢٨]

और बड़े ही रहम करने वाले थे। आपने फ़र्माया कि तुम अपने घरों को वापस जाओ और अपने मुल्क वालों को दीन सिखाओ और बताओ और तुम इस तरह नमाज़ पढ़ो जिस तरह तुमने मुझे नमाज़ पढ़ते देखा है और जब नमाज़ का वक़्त आ जाए तो तुममें से एक शख़्स तुम्हारे लिये अज़ान दे फिर जो तुममें बड़ा हो वो इमामत कराए। (राजेअ : 628)

बड़ा बशर्ते कि इल्म व अमल में भी बड़ा हो वरना कोई छोटा अगर सबसे बड़ा आलिम है तो वही इमामत का हक़दार है।

٦٠٠٩- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ سُمَيٍّ مَوْلَى أَبِي بَكْرٍ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ السَّمَّانِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((بَيْنَمَا رَجُلٌ يَمْشِي بِطَرِيقٍ اشْتَدَّ عَلَيْهِ الْعَطَشُ، فَوَجَدَ بِئْرًا فَنَزَلَ فِيهَا فَشَرِبَ ثُمَّ خَرَجَ فَإِذَا كَلْبٌ يَلْهَثُ يَأْكُلُ الثَّرَى مِنَ الْعَطَشِ، فَقَالَ الرَّجُلُ : لَقَدْ بَلَغَ هَذَا الْكَلْبَ مِنَ الْعَطَشِ مِثْلُ الَّذِي كَانَ بَلَغَ بِي، فَنَزَلَ الْبِئْرَ فَمَلأَ خُفَّهُ ثُمَّ أَمْسَكَهُ بِفِيهِ فَسَقَى الْكَلْبَ، فَشَكَرَ اللهُ لَهُ فَغَفَرَ لَهُ))، قَالُوا يَا رَسُولَ اللهِ وَإِنَّ لَنَا فِي الْبَهَائِمِ أَجْرًا؟ فَقَالَ : ((فِي كُلِّ ذَاتِ كَبِدٍ رَطْبَةٍ أَجْرٌ)). [راجع: ١٧٣]

6009. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अबूबक्र के ग़ुलाम सुमय ने, उनसे अबू स़ालेह सिमान ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया एक शख़्स रास्ते में चल रहा था कि उसे शिद्दत की प्यास लगी उसे एक कुँआ मिला और उसने उसमें उतरकर पानी पिया। जब बाहर निकला तो वहाँ एक कुत्ता देखा जो हाँप रहा था और प्यास की वजह से तरी को चाट रहा था। उस शख़्स ने कहा कि ये कुत्ता भी उतना ही ज़्यादा प्यासा मा'लूम हो रहा है जितना मैं था। चुनाँचे वो फिर कुँए में उतरा और अपने जूते में पानी भरा और मुँह से पकड़कर ऊपर लाया और कुत्ते को पानी पिलाया। अल्लाह तआला ने उसके इस अमल को पसंद किया और उसकी मग़्फ़िरत कर दी। स़हाबा किराम ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! क्या हमें जानवरों के साथ नेकी करने मे भी ष़वाब मिलता है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम्हें हर ताज़ा कलेजे वाले पर नेकी करने में ष़वाब मिलता है। (राजेअ : 173)

तश्रीह : अल्लाह की रहमत का करिश्मा है कि सिर्फ़ कुत्ते को पानी पिलाने से वो शख़्स मग़्फ़िरत का ह़क़दार हो गया इसीलिये कहा गया है कि ह़क़ीर सी नेकी को भी छोटा न जानना चाहिये न मा'लूम अल्लाह पाक किस नेकी से ख़ुश हो जाए और वो सब गुनाह मुआफ़ कर दे।

٦٠١٠- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: قَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فِي صَلاَةٍ وَقُمْنَا مَعَهُ فَقَالَ أَعْرَابِيٌّ وَهُوَ فِي الصَّلاَةِ : اللَّهُمَّ ارْحَمْنِي وَمُحَمَّدًا وَلاَ تَرْحَمْ مَعَنَا أَحَدًا،

6010. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, कहा कि मुझे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान ने ख़बर दी और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) एक नमाज़ के लिये खड़े हुए और हम भी आँह़ज़रत (ﷺ) के साथ खड़े हुए। नमाज़ पढ़ते ही एक देहाती ने कहा ऐ अल्लाह! मुझ पर रहम कर और मुहम्मद (ﷺ) पर और हमारे साथ किसी और पर

रह़म न कर। जब मुह़म्मद (ﷺ) ने सलाम फेरा तो देहाती से फ़र्माया कि तुमने एक वसीअ़ चीज़ को तंग कर दिया आपकी मुराद अल्लाह की रह़मत से थी।

فَلَمَّا سَلَّمَ النَّبِيُّ قَالَ لِلأَعْرَابِيِّ: ((لَقَدْ حَجَّرْتَ وَاسِعًا)). يُرِيدُ رَحْمَةَ اللهِ.

उस देहाती की दुआ़ ग़ैर मुनासिब थी कि उसने रह़मते इलाही को मख़्सूस कर दिया जो आ़म है।

6011. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, कहा हमसे ज़करिया ने बयान किया, उनसे आ़मिर ने कहा कि मैं ने उन्हें ये कहते सुना है कि मैंने नोअ़मान बिन बशीर से सुना, वो बयान करते थे कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया तुम मोमिनों को आपस में एक—दूसरे के साथ लुत़्फ़ व नर्म ख़ूई में एक जिस्म जैसा पाओगे कि जब उसका कोई टुकड़ा भी तकलीफ़ में होता है, तो सारा जिस्म तकलीफ़ में होता है। ऐसी कि नींद उड़ जाती है और जिस्म बुख़ार में मुब्तला हो जाता है।

٦٠١١– حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا زَكَرِيَّا، عَنْ عَامِرٍ قَالَ: سَمِعْتُهُ يَقُولُ: سَمِعْتُ النُّعْمَانَ بْنَ بَشِيرٍ يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((تَرَى الْمُؤْمِنِينَ فِي تَرَاحُمِهِمْ وَتَوَادِّهِمْ وَتَعَاطُفِهِمْ كَمَثَلِ الْجَسَدِ إِذَا اشْتَكَى عُضْوًا تَدَاعَى لَهُ سَائِرُ جَسَدِهِ بِالسَّهَرِ وَالْحُمَّى)).

मुसलमानों की यँही शान होनी चाहिये मगर आज ये चीज़ बिलकुल नायाब ह।

नहीं दस्तयाब अब दो ऐसे मुसलमाँ कि हो एक को देखकर एक शादाँ

6012. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अगर कोई मुसलमान किसी पेड़ का पौधा लगाता है और उस पेड़ से कोई इंसान या जानवर खाता है तो लगाने वाले के लिये वो स़दक़ा होता है। (राजेअ़ : 2320)

٦٠١٢– حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، عَنِ النَّبِيِّ قَالَ: ((مَا مِنْ مُسْلِمٍ غَرَسَ غَرْسًا فَأَكَلَ مِنْهُ إِنْسَانٌ أَوْ دَابَّةٌ إِلاَّ كَانَ لَهُ صَدَقَةٌ)). [راجع: ٢٣٢٠]

इसमें ज़राअ़त (खेती) करने वालों के लिये बहुत ही बड़ी बशारत है नेज़ बाग़बानों के लिये भी ख़ुशख़बरी है दुआ है कि अल्लाह पाक इस बशारत का ह़क़दार हम सबको बनाए। आमीन

6013. हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, उनसे आ'मश ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे ज़ैद बिन वहब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जो रह़म नहीं करता उस पर रह़म नहीं किया जाता। (दीगर मक़ामात : 7376)

٦٠١٣– حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، قَالَ: حَدَّثَنِي زَيْدُ بْنُ وَهْبٍ قَالَ: سَمِعْتُ جَرِيرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ لاَ يَرْحَمُ لاَ يُرْحَمُ)). [طرفه في: ٧٣٧٦].

इस हाथ से दे उस हाथ से ले यहाँ सौदा नक़दा नक़दी है।

बाब 28 : पड़ौसी के हुक़ूक़ का बयान और अल्लाह तआ़ला का सूरह निसा में

٢٨– باب الْوَصَاةِ بِالْجَارِ وَقَوْلِ

अल्लाह तआला का फ़र्मान और अल्लाह की इबादत करो और उसके साथ किसी को शरीक न ठहराओ और वालिदैन के साथ नेक सुलूक़ करो। इर्शाद मुख़्तालन फ़ख़ूरा तक।

اللہ تعالٰی: ﴿وَاعْبُدُوا اللهَ وَلَا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا، وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا - إِلَى قَوْلِهِ - مُخْتَالًا فَخُورًا﴾

6014. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे यह्या बिन सईद ने कहा कि मुझे अबूबक्र बिन मुहम्मद ने ख़बर दी, उन्हें अम्र ने और उन्हें हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) मुझे पड़ौसी के बारे में बार बार इस तरह वसिय्यत करते रहे कि मुझे ख़्याल गुज़रा कि शायद पड़ौसी को विराष़त में शरीक न कर दें।

٦٠١٤- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَبِي أُوَيْسٍ، قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُوبَكْرِ بْنِ مُحَمَّدٍ، عَنْ عَمْرَةَ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَا زَالَ جِبْرِيلُ يُوصِينِي بِالْجَارِ حَتَّى ظَنَنْتُ أَنَّهُ سَيُوَرِّثُهُ)).

पड़ौसी का बहुत ही बड़ा हक़ है मगर बहुत कम लोग इस मसले पर अमल करते हैं।

6015. हमसे मुहम्मद बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ ने बयान किया, उनसे उमर बिन मुहम्मद ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) मुझे इस तरह बार बार पड़ौसी के हक़ में वसिय्यत करते रहे कि मुझे ख़्याल गुज़रा कि शायद पड़ौसी को विराष़त में शरीक न कर दें।

٦٠١٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مِنْهَالٍ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَا زَالَ جِبْرِيلُ يُوصِينِي بِالْجَارِ حَتَّى ظَنَنْتُ أَنَّهُ سَيُوَرِّثُهُ)).

बाब 29 : उस शख़्स का गुनाह जिसका पड़ौसी उसके शर से अमन में न रहता हो. क़ुर्आन मजीद में जो लफ़्ज़ यूबिक़ुहुन्ना है इसके मा'नी उनको हलाक कर डाले. मवबिक़ा के मा'नी हलाकत.

٢٩- باب إِثْمِ مَنْ لاَ يَأْمَنُ جَارُهُ بَوَائِقَهُ

يُوبِقْهُنَّ: يُهْلِكْهُنَّ. مَوْبِقًا: مَهْلِكًا.

6016. हमसे आसिम बिन अली ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्ने अबी ज़िब ने बयान किया, उनसे सईद ने बयान किया, उनसे अबू शुरैह ने बयान किया और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने बयान किया वल्लाह! वो ईमान वाला नहीं, वल्लाह! वो ईमान वाला नहीं। वल्लाह! वो ईमान वाला नहीं। अर्ज़ किया गया कौन या रसूलल्लाह? फ़र्माया वो जिसके शर्र (बुराई) से उसका पड़ौसी महफ़ूज़ न हो। इस हदीष़ को शबाबा और असद बिन मूसा ने भी रिवायत किया है और हुमैद बिन अस्वद और उष़्मान बिन उमर और अबूबक्र बिन अय्याश और शुऐब बिन इस्हाक़ ने इस हदीष़ को इब्ने अबी

٦٠١٦- حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ، عَنْ سَعِيدٍ، عَنْ أَبِي شُرَيْحٍ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((وَاللهِ لاَ يُؤْمِنُ وَاللهِ لاَ يُؤْمِنُ وَاللهِ لاَ يُؤْمِنُ)) قِيلَ وَمَنْ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: ((الَّذِي لاَ يَأْمَنُ جَارُهُ بَوَائِقَهُ)) تَابَعَهُ شَبَابَةُ وَأَسَدُ بْنُ مُوسَى. وَقَالَ حُمَيْدُ بْنُ الأَسْوَدِ: وَعُثْمَانُ بْنُ عُمَرَ وَأَبُوبَكْرِ بْنُ عَيَّاشٍ وَشُعَيْبُ بْنُ إِسْحَاقَ

ज़िब से यूँ रिवायत किया है, उन्होंने मक़्बरी से, उन्होंने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से।

عَنِ ابْنِ أَبِي ذِئْبٍ عَنِ الْمَقْبُرِيِّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ.

बाब 30 : कोई औरत अपनी पड़ौसन के लिये किसी चीज़ के देने को हक़ीर न समझे

٣٠- باب لاَ تَحْقِرَنَّ جَارَةٌ لِجَارَتِهَا

6017. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, कहा हमसे सईद ने बयान किया वो सईद मक़्बरी हैं, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) फ़र्माया करते थे कि ऐ मुसलमान औरतों! तुममें कोई औरत अपनी किसी पड़ौसन के लिये किसी भी चीज़ को (हदिया में) देने के लिये हक़ीर न समझे ख़्वाह बकरी का पाया ही क्यूँ न हो। (राजेअ: 2566)

٦٠١٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، حَدَّثَنَا سَعِيدٌ هُوَ الْمَقْبُرِيُّ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَقُولُ ((يَا نِسَاءَ الْمُسْلِمَاتِ لاَ تَحْقِرَنَّ جَارَةٌ لِجَارَتِهَا، وَلَوْ فِرْسِنَ شَاةٍ)). [راجع: ٢٥٦٦]

बाब 31 : जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो वो अपने पड़ौसी को तकलीफ़ न पहुँचाए

٣١- باب مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ فَلاَ يُؤْذِ جَارَهُ

6018. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबुल अहवस़ ने बयान किया, उनसे अबू हुसैन ने, उनसे अबू स़ालेह ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह ने फ़र्माया जो कोई अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो वो अपने पड़ौसी को तकलीफ़ न पहुँचाए और जो कोई अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो वो अपने मेहमान की इ़ज़्ज़त करे और जो कोई अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो वो अच्छी बात ज़ुबान से निकाले वरना ख़ामोश रहे। (राजेअ: 5185)

٦٠١٨- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، عَنْ أَبِي حَصِينٍ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ، فَلاَ يُؤْذِ جَارَهُ وَمَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ فَلْيُكْرِمْ ضَيْفَهُ، وَمَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ فَلْيَقُلْ خَيْرًا أَوْ لِيَصْمُتْ)). [راجع: ٥١٨٥]

मा'लूम हुआ कि ईमान का तक़ाज़ा है कि पड़ौसी को दुख न दिया जाए। मेहमान की इ़ज़्ज़त की जाए, ज़ुबान को क़ाबू में रखा जाए, वरना ईमान की ख़ैर मनानी चाहिये।

6019. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे सईद मक़्बरी ने बयान किया, उनसे अबू शुरैह़ अ़दवी (रज़ि.) ने बयान किया उन्होंने कहा कि मेरे कानों ने सुना और मेरी आँखों ने देखा जब रसूलुल्लाह (ﷺ) बातचीत फ़र्मा रहे

٦٠١٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، قَالَ حَدَّثَنِي سَعِيدٌ الْمَقْبُرِيُّ، عَنْ أَبِي شُرَيْحٍ الْعَدَوِيِّ قَالَ: سَمِعَتْ أُذُنَايَ، وَأَبْصَرَتْ عَيْنَايَ حِينَ

थे। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो शख़्स अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो वो अपने पड़ौसी का इकराम करे और जो शख़्स अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो वो अपने मेहमान की दस्तूर के मुवाफ़िक़ हर तरह से इज़्ज़त करे। पूछा या रसूलल्लाह! दस्तूर के मुवाफ़िक़ कब तक है। फ़र्माया एक दिन और एक रात और मेज़बानी तीन दिन की है और जो उसके बाद हो वो उसके लिये सदक़ा है और जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो वो बेहतर बात कहे या ख़ामोश रहे। (दीगर मक़ामात : 6135, 6476)

تَكَلَّمَ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: ((مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ فَلْيُكْرِمْ جَارَهُ، وَمَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ فَلْيُكْرِمْ ضَيْفَهُ جَائِزَتَهُ)) قِيلَ وَمَا جَائِزَتُهُ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: ((يَوْمٌ وَلَيْلَةٌ وَالضِّيَافَةُ ثَلاَثَةُ أَيَّامٍ، فَمَا كَانَ وَرَاءَ ذَلِكَ فَهُوَ صَدَقَةٌ عَلَيْهِ، وَمَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ فَلْيَقُلْ خَيْرًا، أَوْ لِيَصْمُتْ)).

[طرفاه في :٦١٣٥، ٦٤٧٦].

बाब 32 : पड़ौसियों में कौनसा पड़ौसी मुक़द्दम है

٣٢- باب حَقِّ الْجِوَارِ فِي قُرْبِ الأَبْوَابِ

6020. हमसे हज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि मुझे अबू इमरान ने ख़बर दी, कहा कि मैंने तलहा से सुना और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मेरी दो पड़ौसनें हैं (अगर हदिया एक हो तो) मैं उनमें से किसके पास हदिया भेजूँ? फ़र्माया जिसका दरवाज़ा तुमसे (तुम्हारे दरवाज़े से) ज़्यादा क़रीब हो। (राजेअ : 2259)

٦٠٢٠- حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو عِمْرَانَ قَالَ: سَمِعْتُ طَلْحَةَ، عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: قُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّ لِي جَارَيْنِ فَإِلَى أَيِّهِمَا أُهْدِي قَالَ : ((إِلَى أَقْرَبِهِمَا مِنْكِ بَابًا)). [راجع: ٢٢٥٩]

बाब 33 : हर नेक काम सदक़ा है

٣٣- باب كُلُّ مَعْرُوفٍ صَدَقَةٌ

6012. हमसे अली बिन अय्याश ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू ग़स्सान ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे मुहम्मद बिन मुंकदिर ने बयान किया, उनसे हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया हर नेक काम सदक़ा है।

٦٠٢١- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَيَّاشٍ، حَدَّثَنَا أَبُو غَسَّانَ قَالَ: حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُنْكَدِرِ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((كُلُّ مَعْرُوفٍ صَدَقَةٌ)).

6022. हमसे आदम ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने, उनसे सईद बिन अबी बुर्दा बिन अबी मूसा अशअरी ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे उनके दादा (अबू मूसा अशअरी रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने

٦٠٢٢- حَدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي بُرْدَةَ بْنِ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ قَالَ: قَالَ

फ़र्माया हर मुसलमान पर स़दक़ा करना ज़रूरी है। स़हाबा किराम ने अ़र्ज़ किया अगर कोई चीज़ किसी को (स़दक़ा के लिये) जो मयस्सर न हो। आपने फ़र्माया फिर अपने हाथ से काम करे और उससे ख़ुद को भी फ़ायदा पहुँचाए और स़दक़ा भी करे। स़हाबा किराम ने अ़र्ज़ की अगर उसमें उसकी त़ाक़त न हो या कहा कि न कर सके। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर किसी ह़ाजतमंद परेशानह़ाल की मदद करे। स़हाबा किराम ने अ़र्ज़ किया अगर वो ये भी न कर सके। फ़र्माया कि फिर भलाई की त़रफ़ लोगों को रग़बत दिलाए या अम्र बिल मअरूफ़ का करना। अ़र्ज़ किया और अगर ये भी न कर सके। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर बुराई से रुका रहे कि ये भी उसके लिये स़दक़ा है। (राजेअ़ : 1445)

النَّبِيُّ ﷺ: ((عَلَى كُلِّ مُسْلِمٍ صَدَقَةٌ)) قَالُوا: فَإِنْ لَمْ يَجِدْ؟ قَالَ: ((فَيَعْمَلُ بِيَدَيْهِ فَيَنْفَعُ نَفْسَهُ وَيَتَصَدَّقُ)) قَالُوا: فَإِنْ لَمْ يَسْتَطِعْ أَوْ لَمْ يَفْعَلْ؟ قَالَ: ((فَيُعِينُ ذَا الْحَاجَةِ الْمَلْهُوفَ)) قَالُوا: فَإِنْ لَمْ يَفْعَلْ قَالَ: ((فَيَأْمُرُ بِالْخَيْرِ أَوْ قَالَ: بِالْمَعْرُوفِ)) قَالَ : فَإِنْ لَمْ يَفْعَلْ؟ قَالَ: ((فَيُمْسِكُ عَنِ الشَّرِّ فَإِنَّهُ لَهُ صَدَقَةٌ)). [راجع: ١٤٤٥]

बाब 34 : ख़ुशकलामी का स़वाब

٣٤- باب طِيبِ الْكَلاَمِ

और ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि नेक बात करने में भी स़वाब मिलता है।

وَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((الْكَلِمَةُ الطَّيِّبَةُ صَدَقَةٌ)).

6023. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने, कहा कि मुझे अ़म्र ने ख़बर दी, उन्हें ख़ैस़मा ने और उनसे अ़दी बिन ह़ातिम (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने जहन्नम का ज़िक्र किया और उससे पनाह मांगी और चेहरे से एअ़राज़ व नागवारी का इज़्हार किया। फिर आँह़ज़रत (ﷺ) ने जहन्नम का ज़िक्र किया और उससे पनाह मांगी और चेहरे से एअ़राज़ व नागवारी का इज़्हार किया। शुअ़बा ने बयान किया कि दो मर्तबा आँह़ज़रत (ﷺ) के जहन्नम से पनाह मांगने के सिलसिले में मुझे कोई शक नहीं है। फिर आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जहन्नम से बचो। ख़्वाह आधी खजूर ही (किसी को) स़दक़ा करके हो सके और अगर किसी को ये भी मयस्सर न हो तो अच्छी बात करके ही। (राजेअ़ : 1413)

जहन्नम से नजात ह़ासिल करे।

٦٠٢٣- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، قَالَ: أَخْبَرَنِي عَمْرٌو، عَنْ خَيْثَمَةَ، عَنْ عَدِيِّ بْنِ حَاتِمٍ قَالَ : ذَكَرَ النَّبِيُّ ﷺ: النَّارَ فَتَعَوَّذَ مِنْهَا وَأَشَاحَ بِوَجْهِهِ ثُمَّ ذَكَرَ النَّارَ فَتَعَوَّذَ مِنْهَا وَأَشَاحَ بِوَجْهِهِ، قَالَ شُعْبَةُ: أَمَّا مَرَّتَيْنِ فَلاَ أَشُكُّ ثُمَّ قَالَ: ((اتَّقُوا النَّارَ وَلَوْ بِشِقِّ تَمْرَةٍ، فَإِنْ لَمْ تَجِدْ فَبِكَلِمَةٍ طَيِّبَةٍ)). [راجع: ١٤١٣]

बाब 35 : बाब हर काम में नरमी और उम्दा अख़लाक़ अच्छी चीज़ है

٣٥- باب الرِّفْقِ فِي الأَمْرِ كُلِّهِ

6024. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्राहीम बिन सईद ने बयान किया, उनसे

٦٠٢٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ صَالِحٍ، عَنْ

ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ: دَخَلَ رَهْطٌ مِنَ الْيَهُودِ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالُوا: السَّامُ عَلَيْكُمْ قَالَتْ عَائِشَةُ: فَفَهِمْتُهَا فَقُلْتُ: وَعَلَيْكُمْ السَّامُ وَاللَّعْنَةُ، قَالَتْ: فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَهْلاً يَا عَائِشَةُ إِنَّ اللهَ يُحِبُّ الرِّفْقَ فِي الأَمْرِ كُلِّهِ)). فَقُلْتُ : يَا رَسُولَ اللهِ أَوَلَمْ تَسْمَعْ مَا قَالُوا؟ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((قَدْ قُلْتُ وَعَلَيْكُمْ)).

[راجع: ٢٩٣٥]

सालेह ने, उनसे इब्ने शिहाब ने और उनसे उर्वा बिन ज़ुबैर ने कि नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि कुछ यहूदी रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आए और कहा अस्सामु अलैकुम (तुम्हें मौत आए) मैं उसका माना समझ गई और मैंने उनका जवाब दिया कि व अलैकुमुस्सामु वल्लअनतु (या'नी तुम्हें मौत आए और ला'नत हो) बयान किया कि उस पर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया ठहरो, ऐ आइशा! अल्लाह तआला तमाम मामलात में नर्मी और मुलाइमत को पसंद करता है। मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या आपने सुना नहीं उन्होंने क्या कहा था। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैंने उसका जवाब दे दिया था कि व अलैकुम (और तुम्हें भी) (राजेअ : 2935)

٦٠٢٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الْوَهَّابِ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ أَنَّ أَعْرَابِيًّا بَالَ فِي الْمَسْجِدِ فَقَامُوا إِلَيْهِ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لاَ تُزْرِمُوهُ)) ثُمَّ دَعَا بِدَلْوٍ مِنْ مَاءٍ فَصُبَّ عَلَيْهِ.

6025. हमसे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल वह्हाब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे षाबित ने और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कहा कि एक देहाती ने मस्जिद में पेशाब कर दिया था। सहाबा किराम उनकी तरफ़ दौड़े लेकिन रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया उसके पेशाब को मत रोको। फिर आपने पानी का डोल मंगवाया और वो पेशाब की जगह पर बहा दिया गया।

तश्रीह : अख़्लाक़े मुहम्मदी का एक नमूना इस हदीष से ही ज़ाहिर है कि देहाती ने मस्जिद के कोने में पेशाब कर दिया मगर आपने उसे रोकने के बजाय उस पर पानी डलवा दिया बाद में बड़ी नर्मी से उसे समझा दिया। (ﷺ)

٣٦- باب تَعَاوُنِ الْمُؤْمِنِينَ بَعْضِهِمْ بَعْضًا

बाब 36 : एक मुसलमान को दूसरे मुसलमान की मदद करना

٦٠٢٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، بُرَيْدِ بْنِ أَبِي بُرْدَةَ قَالَ: أَخْبَرَنِي جَدِّي أَبُو بُرْدَةَ، عَنْ أَبِيهِ أَبِي مُوسَى عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الْمُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِ كَالْبُنْيَانِ، يَشُدُّ بَعْضُهُ بَعْضًا)) ثُمَّ شَبَّكَ بَيْنَ أَصَابِعِهِ. [راجع: ٤٨١]

6026. हमसे मुहम्मद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अबू बुर्दा बुरैद बिन अबी बुर्दा ने कहा कि मुझे मेरे दादा अबू बुर्दा ने ख़बर दी, उनसे उनके वालिद अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया एक मोमिन दूसरे मोमिन के लिये इस तरह है जैसे इमारत कि उसका एक हिस्सा दूसरे हिस्से को थामे रहता है (गिरने नहीं देता) फिर आपने अपनी उँगलियों को क़ैंची की तरह कर लिया। (राजेअ : 481)

٦٠٢٧- وَكَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَالِسًا إِذْ جَاءَ رَجُلٌ يَسْأَلُ أَوْ طَالِبُ حَاجَةٍ أَقْبَلَ عَلَيْنَا بِوَجْهِهِ فَقَالَ: ((اشْفَعُوا فَلْتُؤْجَرُوا، وَلْيَقْضِ اللهُ عَلَى لِسَانِ نَبِيِّهِ مَا شَاءَ)).

[راجع: ١٤٣٢]

6027. और ऐसा हुआ कि आँहुज़ूर (ﷺ) उस वक़्त बैठे हुए थे कि एक स़ाहब ने आकर सवाल किया या वो कोई ज़रूरत पूरी करानी चाही। आँह़ज़रत (ﷺ) हमारी त़रफ़ मुत़वज्जह हुए और फ़र्माया कि तुम ख़ामोश क्यूँ बैठे रहते हो बल्कि उसकी सिफ़ारिश करो ताकि तुम्हें भी अज्र मिले और अल्लाह जो चाहेगा अपने नबी की ज़ुबान पर जारी करेगा (तुम अपना ष़वाब क्यूँ खोओ)। (राजेअ़ : 1432)

तश्रीह : ह़ज़रत अबू मूसा अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस अशअ़री मक्का में मुसलमान हुए। हिजरते ह़ब्शा में शिर्कत की, फ़तहे ख़ैबर के वक़्त ख़िदमते नबवी में ह़ाज़िर हुए। ह़ज़रत उ़मर फ़ारूक़ (रज़ि.) ने सन 20 हिजरी में उनको बस़रा का ह़ाकिम बनाया, ख़िलाफ़ते उ़ष्मानी में वहाँ से मअ़ज़ूल होकर कूफ़ा जाकर मुक़ीम हो गये थे, सन 52 हिजरी में मक्का में वफ़ात पाई।

अल्हम्दुलिल्लाहि कि आज 14 शाबान सन 1395 हिजरी को बवक़्ते चाश्त इस पारे की तस्वीद से फ़ारिग़ हुआ।

अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन!

राक़िम ख़ादिमे नबवी। मुह़म्मद दाऊद राज़ बिन अ़ब्दुल्लाह अस् सलफ़ी अद् देहलवी मुक़ीम मस्जिदे अहले ह़दीष़, अजमेरी गेट देहली.

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पच्चीसवां पारा

बाब 37

٣٧- باب

अल्लाह तआ़ला का सूरह निसा में फ़र्मान कि जो कोई सिफ़ारिश करे नेक काम के लिये उसको भी उसमें से ष़वाब का एक ह़िस्सा मिलेगा और जो कोई सिफ़ारिश करे बुरे काम में उसको भी एक ह़िस्से उसके अ़ज़ाब से मिलेगा और हर चीज़ पर अल्लाह निगाहबान है। किफ़लुन के मा'नी इस आयत में ह़िस्से के हैं, ह़ज़रत अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) ने कहा कि ह़ब्शी ज़ुबान में कफ़लैन के मा'नी दो अज्र के हैं।

قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿مَنْ يَشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَكُنْ لَهُ نَصِيبٌ مِنْهَا وَمَنْ يَشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَكُنْ لَهُ كِفْلٌ مِنْهَا وَكَانَ اللهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ مُقِيتًا﴾ [النساء : ٨٥] كِفْلٌ : نَصِيبٌ : قَالَ أَبُو مُوسَى كِفْلَيْنِ : أَجْرَيْنِ بِالْحَبَشِيَّةِ.

शफ़ाअ़ते ह़स्ना से मोमिनों के लिये दुआए ख़ैर और सय्यिअतन से बद् दुआ करना भी मुराद है। मुजाहिद वग़ैरह ने कहा है कि ये आयत लोगों की बाहमी शफ़ाअ़त करने के बारे में नाज़िल हुई। इब्ने आ़दिल ने कहा है कि अकष़र लफ़्ज़ क़फ़ल का इस्ते'माल बुराई की जगह में होता है और लफ़्ज़ नसीब का इस्ते'माल भलाई की जगह में होता है।

6028. हमसे मुहम्मद बिन अ़लाअ ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे बुरैद ने, उनसे अबू बुर्दा ने और उनसे ह़ज़रत अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) ने कि नबी करीम बाब के पास जब कोई मांगने वाला या ज़रूरतमंद आता तो आप फ़र्माते कि लोगों! तुम सिफ़ारिश करो ताकि तुम्हें भी ष़वाब मिले और अल्लाह अपने नबी की ज़ुबान पर जो चाहेगा फ़ैसला कराएगा। (राजेअ़ : 1432)

٦٠٢٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ بُرَيْدٍ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ إِذَا أَتَاهُ السَّائِلُ أَوْ صَاحِبُ الْحَاجَةِ قَالَ: ((اشْفَعُوا فَلْتُؤْجَرُوا، وَلْيَقْضِ اللهُ عَلَى لِسَانِ رَسُولِهِ مَا شَاءَ)).[راجع: ١٤٣٢]

तश्रीह : आयत और ह़दीष़ में नेक काम की सिफ़ारिश करने की तर्ग़ीब है, होगा वही जो अल्लाह तआ़ला को मंज़ूर है मगर सिफ़ारिश करने वाले को अज्र ज़रूर मिल जाएगा। दूसरी रिवायत में ये मज़्मून यूँ अदा हुआ है, **अद्दालु अ़लल्ख़ैरि कफ़ाइलिही** ख़ैर (भलाई) के लिये रग़बत दिलाने **वाले को** भी उतना ही ष़वाब मिलेगा जितना उसके करने वाले को मिलेगा। काश ख़्वास़ अगर उस पर तवज्जह दें तो बहुत से **दीनी उमूर और** इमदादी काम अंजाम दिये जा सकते हैं। मगर

बहुत कम ख़्वास़ इस पर तवज्जह देते हैं। या अल्लाह! तेरी मदद और नुस़रत के भरोसे से बुख़ारी शरीफ़ के इस पारे नम्बर 25 की तस्वीद के लिये क़लम हाथ में ली है। परवरदिगार अपनी मेहरबानी से इसको भी पूरा करने की सआदत अ़ता फ़र्मा और इसकी इशाअ़त के लिये ग़ैब से मदद कर ताकि मैं उसे इशाअ़त में लाकर तेरे ह़बीब ह़ज़रत सय्यदना मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह (ﷺ) के इर्शादाते गिरामी की तब्लीग़ व इशाअ़त का ष़वाबे अ़ज़ीम ह़ास़िल कर सकूँ आमीन या रब्बल आ़लमीन (नाचीज़ मुह़म्मद दाऊद राज़ नज़ीलुल ह़ाल जामेअ़ अहले ह़दीष़ बंगलूर 15 रमज़ानुल मुबारक 1395 हिजरी)

बाब 38 : आँह़ज़रत (ﷺ) सख़्तगो और बदज़ुबान न थे. और न ही फ़ाह़िश बकने वाले और मुतफ़ह़्ह़िश लोगों को हंसाने के लिये बदज़ुबानी करने वाला बेह़याई की बातें करने वाल

٣٨- باب لَمْ يَكُنِ النَّبِيُّ ﷺ فَاحِشًا وَلاَ مُتَفَحِّشًا

6029. हमसे ह़फ़्स़ बिन उ़मर बिन ह़ारिष़ अबू अ़म्र ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा बिन ह़ज्जाज ने बयान किया, उनसे सुलैमान ने, उन्होंने अबू वाइल शक़ीक़ बिन सलमा से सुना, उन्होंने मसरूक़ से सुना, उन्होंने बयान किया कि उ़मर (रज़ि.) ने कहा (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे शक़ीक़ बिन सलमा ने और उनसे मसरूक़ ने बयान किया कि जब मुआ़विया (रज़ि.) के साथ अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स़ कूफ़ा तशरीफ़ लाए तो हम उनकी ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए। उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) का ज़िक्र किया और बतलाया कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) बदगो न थे और न आप बदज़ुबान थे और उन्होंने ये भी बयान किया कि आपने फ़र्माया कि तुममें सबसे बेहतर वो आदमी है, जिसके अख़्लाक़ सबसे अच्छे हों। (राजेअ़ : 3559)

٦٠٢٩- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سُلَيْمَانَ، قَالَ سَمِعْتُ أَبَا وَائِلٍ، سَمِعْتُ مَسْرُوقًا قَالَ : قَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ عَمْرٍو ح وَحَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ شَقِيقِ بْنِ سَلَمَةَ، عَنْ مَسْرُوقٍ قَالَ: دَخَلْنَا عَلَى عَبْدِ اللهِ بْنُ عَمْرٍو حِينَ قَدِمَ مَعَ مُعَاوِيَةَ إِلَى الْكُوفَةِ فَذَكَرَ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقَالَ: لَمْ يَكُنْ فَاحِشًا وَلاَ مُتَفَحِّشًا، وَقَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّ مِنْ أَخْيَرِكُمْ أَحْسَنَكُمْ خُلُقًا)). [راجع: ٣٥٥٩]

6030. हमसे मुह़म्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल वह्हाब ष़क़फ़ी ने ख़बर दी, उन्हें अय्यूब सुख़ितयानी ने, उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन अबी मुलैका ने और उन्हें ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कि कुछ यहूदी रसूलुल्लाह (ﷺ) के यहाँ आए और कहा, अस्सामु अ़लैकुम (तुम पर मौत आए) उस पर ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कहा कि तुम पर भी मौत आए और अल्लाह की तुम पर ला'नत हो और उसका ग़ज़ब तुम पर नाज़िल हो। लेकिन आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया (ठहरो) आ़इशा (रज़ि.)! तुम्हें नर्मख़ूई इख़्तियार करनी चाहिये सख़्ती और बदज़ुबानी से बचना चाहिये। ह़ज़रत आ़इशा

٦٠٣٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلاَمٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ يَهُودَ أَتَوُا النَّبِيَّ ﷺ فَقَالُوا: السَّامُ عَلَيْكُمْ فَقَالَتْ عَائِشَةُ: عَلَيْكُمْ وَلَعَنَكُمُ اللهُ وَغَضِبَ اللهُ عَلَيْكُمْ، قَالَ: ((مَهْلاً يَا عَائِشَةُ عَلَيْكِ بِالرِّفْقِ وَإِيَّاكِ وَالْعُنْفَ وَالْفُحْشَ)) قَالَتْ : أَوَ لَمْ تَسْمَعْ مَا قَالُوا؟

قَالَ: ((أَوَلَمْ تَسْمَعِي مَا قُلْتُ؟ رَدَدْتُ عَلَيْهِمْ فَيُسْتَجَابُ لِي فِيهِمْ وَلاَ يُسْتَجَابُ لَهُمْ فِيَّ)). [راجع: ٢٩٣٥]

(रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया, हुज़ूर आपने उनकी बात नहीं सुनी। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया तुमने उन्हें मेरा जवाब नहीं सुना, मैंने उनकी बात उन्हीं पर लौटा दी और उनके ह़क़ में मेरी बद् दुआ़ क़ुबूल हो जाएगी। लेकिन मेरे ह़क़ में उनकी बद्दुआ क़ुबूल ही न होगी। (राजेअ़ : 2935)

पैग़म्बरे इस्लाम (ﷺ) से अ़दावत यहूदियों की फ़ित्रते ष़ानिया थी और आज तक है जैसा कि ज़ाहिर है।

٦٠٣١- حَدَّثَنَا أَصْبَغُ قَالَ : أَخْبَرَنِي ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنَا أَبُو يَحْيَى هُوَ فُلَيْحُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ هِلاَلِ بْنِ أُسَامَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: لَمْ يَكُنِ النَّبِيُّ ﷺ سَبَّابًا وَلاَ فَحَّاشًا وَلاَ لَعَّانًا، كَانَ يَقُولُ لأَحَدِنَا عِنْدَ الْمَعْتَبَةِ : ((مَا لَهُ تَرِبَ جَبِينُهُ؟)). [طرفه في :٦٠٤٦].

6031. हमसे अस्बग़ बिन फ़ुर्ज ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे अ़ब्दुल्लाह बिन वहब ने ख़बर दी उन्होंने कहा हमको अबू यह्या फ़ुलैह़ बिन सुलैमान ने ख़बर दी, उन्हें बिलाल बिन उसामा ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) न गाली देते थे, न बद-गो थे और न बद-ख़ू थे और न ला'नत मलामत करते थे। अगर हममें से किसी पर नाराज़ होते इतना फ़र्माते इसे क्या हो गया है, इसकी पेशानी में ख़ाक लगे। (दीगर मक़ामात : 6046)

तश्रीह़ : क़ालल्ख़त्ताबी हाज़हुआउ यहतमिलु वज्हैनि अंय्युजर्र बिवज्हिही फ़युस़ीबुत्तुराबु जबीनहू वज़्जिक्रू अंय्यकून लहू दुआउन बित्ताअति फ़युस़ल्ली फयत्रबु जबीनहू व क़ालद्दाऊदी हाज़िही कलिमतुन जरत अ़ला लिसानिल्अ़रबि व ला युरादु ह़क़ीक़तुहा (ऐनी)। ये दुआ़ ये अन्देशा भी रखती है कि वो शख़्स़ चेहरे के बल खींचा जाए और उसकी पेशानी को मिट्टी लगे या उसके ह़क़ में नेक दुआ़ भी हो सकती है कि वो नमाज़ पढ़े और नमाज़ में बह़ालते सज्दा उसकी पेशानी को मिट्टी लगे। दाऊदी ने कहा कि ये ऐसा कलिमा है जो अहले अ़रब की ज़ुबान पर उ़मूमन जारी रहता है और उसकी ह़क़ीक़त मुराद नहीं ली जाया करती।

٦٠٣٢- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عِيسَى، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَوَاءٍ، حَدَّثَنَا رَوْحُ بْنُ الْقَاسِمِ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ رَجُلاً اسْتَأْذَنَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ فَلَمَّا رَآهُ قَالَ: بِئْسَ أَخُو الْعَشِيرَةِ، أَوْبِئْسَ ابْنُ الْعَشِيرَةِ فَلَمَّا جَلَسَ تَطَلَّقَ النَّبِيُّ ﷺ فِي وَجْهِهِ وَانْبَسَطَ إِلَيْهِ فَلَمَّا انْطَلَقَ الرَّجُلُ قَالَتْ لَهُ عَائِشَةُ: يَا رَسُولَ اللهِ حِينَ رَأَيْتَ الرَّجُلَ قُلْتَ لَهُ كَذَا وَكَذَا ثُمَّ تَطَلَّقْتَ فِي وَجْهِهِ وَانْبَسَطْتَ إِلَيْهِ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ ((يَا عَائِشَةُ مَتَى عَهِدْتِنِي فَحَّاشًا؟ إِنَّ شَرَّ

6032. हमसे अ़म्र बिन ईसा ने बयान किया, कहा हमसे मुह़म्मद बिन सुवाअ ने बयान किया, कहा हमसे रौह़ इब्ने क़ासिम ने बयान किया, उनसे मुह़म्मद बिन मुंकदिर ने, उनसे उ़र्वा ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से एक शख़्स़ ने अंदर आने की इजाज़त चाही। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उसे देखकर फ़र्माया कि बुरा है फ़लाँ क़बीले का भाई या (आप ﷺ ने फ़र्माया) कि बुरा है फ़लाँ क़बीले का बेटा। फिर जब वो आँह़ज़रत (ﷺ) के पास आ बैठा तो आप उसके साथ बहुत ख़ुशअख़्लाक़ी के साथ पेश आए। वो शख़्स़ जब चला गया तो ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने आपसे अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! जब आपने उसे देखा था तो उसके बारे में ये कलिमात फ़र्माए थे, जब आप उससे मिले तो बहुत ही ख़ंदा पेशानी से मिले। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ऐ आ़इशा! तुमने मुझे बदगो कब पाया। अल्लाह के यहाँ क़यामत के दिन वो

लोग बदतरीन होंगे जिनकी बुराई के डर से लोग उससे मिलना छोड़ दें। (दीगर मक़ामात : 6054, 6131)

النَّاسِ عِنْدَ اللهِ مَنْزِلَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَنْ تَرَكَهُ النَّاسُ اتِّقَاءَ شَرِّهِ)).

[طرفاه في :٦٠٥٤، ٦١٣١].

तश्रीह : इन तमाम अहादीष़ में रसूले करीम (ﷺ) की ख़ुश-अख़्लाक़ी का ज़िक्र है जिसका ता'ल्लुक़ न सिर्फ़ मुसलमानों बल्कि यहूदियों के साथ भी यक्साँ था। आपने ख़ास़ दुश्मनों के साथ भी बदख़ुल्क़ी को पसंद नहीं फ़र्माया जैसा कि ह़दीष़े आइशा (रज़ि.) से ज़ाहिर है। यही आपका हथियार था जिससे सारा अरब आपके ज़ेरे नगीं हो गया। मगर स़द अफ़सोस कि मुसलमानों ने गोया ख़ुश अख़्लाक़ को बिलकुल फ़रामोश कर दिया इल्ला माशाअल्लाह। यही वजह है कि आज मुसलमानों में ख़ुद आपस ही में इस क़दर आपसी तनाव रहती है कि अल्लाह की पनाह, काश! मुसलमान इन अहादीष़े पाक का बग़ौर मुतालआ करें, ये आने वाला शख़्स़ बाद में मुर्तद हो गया था और ह़ज़रत अबूबक्र के ज़माने में क़ैदी होकर आया था। इस त़रह़ इसके बारे में हुज़ूर (ﷺ) की पेशीनगोई स़ह़ीह़ ष़ाबित हुई।

बाब 39 : ख़ुशख़ल्क़ी और सख़ावत का बयान और बुख़्ल का बुरा व नापसंदीदा होना

٣٩- باب حُسْنِ الْخُلُقِ وَالسَّخَاءِ وَمَا يُكْرَهُ مِنَ الْبُخْلِ

अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) सबसे ज़्यादा सख़ी थे और रमज़ान के महीने में तो और सब दिनों से ज़्यादा सख़ावत करते थे। जब अबू ज़र्र ग़िफ़ारी (रज़ि.) को हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की पैग़म्बरी की ख़बर मिली तो उन्होंने अपने भाई अनस से कहा कि वादी मक्का की त़रफ़ जाओ और उस शख़्स़ की बातें सुनकर आ। जब वो वापस आए तो अबू ज़र्र से कहा कि मैंने देखा कि वो स़ाह़ब तो अच्छे अख़्लाक़ का हुक्म देते हैं।

وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ أَجْوَدَ النَّاسِ، وَأَجْوَدُ مَا يَكُونُ فِي رَمَضَانَ وَقَالَ أَبُو ذَرٍّ لَمَّا بَلَغَهُ مَبْعَثُ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ لأَخِيهِ: ارْكَبْ إِلَى هَذَا الْوَادِي فَاسْمَعْ مِنْ قَوْلِهِ، فَرَجَعَ فَقَالَ: رَأَيْتُهُ يَأْمُرُ بِمَكَارِمِ الأَخْلاَقِ.

6033. हमसे अ़म्र बिन औ़न ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे ष़ाबित ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत सबसे ज़्यादा सख़ी और सबसे ज़्यादा बहादुर थे। एक रात मदीना वाले (शहर के बाहर शोर सुनकर) घबरा गये (कि शायद दुश्मन ने ह़मला किया है) सब लोग उस शोर की त़रफ़ बढ़े। लेकिन आँह़ज़रत (ﷺ) आवाज़ की त़रफ़ बढ़ने वालों में सबसे आगे थे और फ़र्माते जाते थे कि कोई डर की बात नहीं, कोई डर की बात नहीं। आँह़ज़रत (ﷺ) उस वक़्त अबू त़लह़ा के (मन्दूब नामी) घोड़े की नंगी पीठ पर सवार थे, उस पर कोई ज़ीन नहीं थी और गले में तलवार लटक रही थी। आपने फ़र्माया कि मैंने इस घोड़े को समुन्दर पाया। या फ़र्माया

٦٠٣٣- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَوْنٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، هُوَ ابْنُ زَيْدٍ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ أَحْسَنَ النَّاسِ وَأَجْوَدَ النَّاسِ وَأَشْجَعَ النَّاسِ، وَلَقَدْ فَزِعَ أَهْلُ الْمَدِينَةِ ذَاتَ لَيْلَةٍ فَانْطَلَقَ النَّاسُ قِبَلَ الصَّوْتِ، فَاسْتَقْبَلَهُمُ النَّبِيُّ ﷺ قَدْ سَبَقَ النَّاسَ إِلَى الصَّوْتِ وَهُوَ يَقُولُ: ((لَنْ تُرَاعُوا لَنْ تُرَاعُوا)) وَهُوَ عَلَى فَرَسٍ لأَبِي طَلْحَةَ عُرْيٍ مَا عَلَيْهِ سَرْجٌ فِي عُنُقِهِ سَيْفٌ فَقَالَ: ((لَقَدْ وَجَدْتُهُ بَحْرًا أَوْ إِنَّهُ لَبَحْرٌ)).

कि ये तेज़ दौड़ने में समन्दर की त़रह था। (राजेअ : 2627) [راجع: ٢٦٢٧]

तश्रीह : उसूले फ़ज़ाइल जो आदमी को कसब और रियाज़त और मेह़नत से ह़ासिल हो सकते हैं। तीन हैं, इफ़्फ़त और शुजाअ़त और सख़ावत और ह़ुस्न व जमाल ये फ़ज़ीलते वहबी है तो आपकी ज़ात में ये तमाम चीज़ें फ़ित़री और कसबी थी। बेशक जिसका नामे-नामी ही मुह़म्मद हो (ﷺ) उसे औसा़फ़े मह़मूद का मज्मूआ़ होना ही चाहिये। आप सर से पैर तक औसा़फ़े ह़मीदा व अख़्लाक़े फ़ाज़िला के जामेअ़ थे, शुजाअ़त और सख़ावत में इस क़दर बढ़े हुए कि आपकी नज़ीर कोई शख़्स औलादे आदम में पैदा नहीं हुआ सच है,

हुस्ने यूसुफ़ दमे ईसा यदे बयज़ा दारी   आँचे ख़ूबाँ हमा दारद तू तंहादारी

• ह़ज़रत अबू त़लह़ा का नाम ज़ैद बिन सहल अंसा़री है। ये ह़ज़रत अनस (रज़ि.) की माँ के शौहर हैं।

6034. हमसे मुह़म्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान ने ख़बर दी, उनसे इब्ने मुंकदिर ने बयान किया, उन्होंने ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि कभी ऐसा नहीं हुआ कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से किसी ने कोई चीज़ मांगी हो और आपने उसके देने से इंकार किया हो।

٦٠٣٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، عَنِ ابْنِ الْمُنْكَدِرِ قَالَ: سَمِعْتُ جَابِرًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: مَا سُئِلَ النَّبِيُّ ﷺ عَنْ شَيْءٍ قَطُّ فَقَالَ: لاَ.

ये आपकी मुरव्वत का ह़ाल था बल्कि अगर होती तो उस वक़्त दे दिया वरना उससे वा'दा करते कि अन्क़रीब तुझको ये दे दूँगा (ﷺ)। **व ला यल्ज़िमु मिन ज़ालिक अंल्ला यकूलहा इतिजारन कमा फ़ी क़ौलिही तआ़ला कुल्तु ला अजिदु मा अहमिलुकुम अ़लैहि** (फ़त्ह) या'नी इससे ये लाज़िम नहीं आता कि आपने न होने की सूरत में मअ़ज़रत के तौर पर भी ऐसा न फ़र्माते जैसा कि आयते मज़्कूरा में है कि आपने एक मौक़ा पर कुछ लोगों से फ़र्माया था कि मेरे पास इस वक़्त तुम्हारी सवारी का जानवर नहीं है।

6035. हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स़ बिन ग़याष़ ने बयान किया, कहा मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, कहा मुझसे शफ़ीक़ ने बयान किया, उनसे मसरूक़ ने बयान किया कि हम अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र के पास बैठे हुए थे, वो हमसे बातें कर रहे थे उसी दौरान उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) न बदगो थे न बदज़ुबानी करते थे (कि मुँह से गालियाँ निकालें) बल्कि आप फ़र्माया करते थे कि तुममें सबसे ज़्यादा बेहतर वो है जिसके अख़्लाक़ सबसे अच्छे हों। (राजेअ़ : 2359)

٦٠٣٥- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ قَالَ: حَدَّثَنِي شَقِيقٌ، عَنْ مَسْرُوقٍ قَالَ: كُنَّا جُلُوسًا مَعَ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو يُحَدِّثُنَا إِذْ قَالَ: لَمْ يَكُنْ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَاحِشًا وَلاَ مُتَفَحِّشًا وَإِنَّهُ يَقُولُ: ((إِنَّ خِيَارَكُمْ أَحَاسِنُكُمْ أَخْلاَقًا)). [راجع: ٢٣٥٩]

6036. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, कहा हमसे अबू ग़स्सान (मुह़म्मद बिन मुत़रफ़) ने बयान किया कि कहा मुझसे अबू ह़ाज़िम ने बयान किया, उनसे सहल बिन सअ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि एक ख़ातून नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में बुर्दा लेकर आईं फिर ह़ज़रत सहल ने मौजूदा लोगों से कहा तुम्हें मा'लूम है कि बुर्दा क्या चीज़ है? लोगों ने कहा कि बुर्दा शम्ला को कहते हैं। सहल (रज़ि.) ने कहा कि लुँगी जिसमें ह़ाशिया बना हुआ होता है तो उस ख़ातून ने अ़र्ज़ किया

٦٠٣٦- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ، حَدَّثَنَا أَبُو غَسَّانَ، قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو حَازِمٍ، عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ، قَالَ: جَاءَتْ امْرَأَةٌ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ بِبُرْدَةٍ فَقَالَ سَهْلٌ لِلْقَوْمِ: أَتَدْرُونَ مَا الْبُرْدَةُ؟ فَقَالَ الْقَوْمُ: هِيَ شَمْلَةٌ فَقَالَ سَهْلٌ: حَدَّثَنِي أَبُو حَازِمٍ عَنْ سَهْلٍ

ن سَعْدٍ قَالَ جَاءَتْ إِمْرَأَةٌ إِلَى
يِّ ﷺ بِبُرْدَةٍ فَقَالَ سَهْلٌ لِلْقَوْمِ أَتَدْرُوْنَ
مَا الْبُرْدَةُ؟ فَقَالَ الْقَوْمُ هِيَ شَمْلَةٌ فَقَالَ
سَهْلٌ هِيَ شَمْلَةٌ مَنْسُوجَةٌ فِيهَا حَاشِيَتُهَا
فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ أَكْسُوكَ هَذِهِ؟
فَأَخَذَهَا النَّبِيُّ ﷺ مُحْتَاجًا إِلَيْهَا فَلَبِسَهَا
فَرَآهَا عَلَيْهِ رَجُلٌ مِنَ الصَّحَابَةِ فَقَالَ: يَا
رَسُولَ اللهِ مَا أَحْسَنَ هَذِهِ فَاكْسُنِيهَا؟
فَقَالَ: ((نَعَمْ)) فَلَمَّا قَامَ النَّبِيُّ ﷺ لاَمَهُ
أَصْحَابُهُ قَالُوا: مَا أَحْسَنْتَ حِينَ رَأَيْتَ
النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَخَذَهَا
مُحْتَاجًا إِلَيْهَا ثُمَّ سَأَلْتَهُ إِيَّاهَا وَقَدْ عَرَفْتَ
أَنَّهُ لاَ يُسْأَلُ شَيْئًا فَيَمْنَعَهُ فَقَالَ: رَجَوْتُ
بَرَكَتَهَا حِينَ لَبِسَهَا النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ
وَسَلَّمَ لَعَلِّي أُكَفَّنُ فِيهَا.

[راجع: ١٢٧٧]

कि या रसूलल्लाह! मैं ये लुँगी आपके पहनने के लिये लाई हूँ। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने वो लुँगी उनसे क़ुबूल कर ली। उस वक़्त आपको उसकी ज़रूरत भी थी फिर आपने पहन लिया। सहाबा में से एक सहाबी अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) के बदन पर वो लुँगी देखी तो अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! ये बड़ी उम्दह लुँगी है, आप मुझे इसको इनायत कर दीजिए। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ले लो, जब आँहज़रत (ﷺ) वहाँ से उठकर तशरीफ़ ले गये तो अंदर जाकर वो लुँगी बदलकर तह करके अ़ब्दुर्रहमान को भेज दी तो लोगों ने उन साहब को मलामत से कहा कि तुमने आँहज़रत (ﷺ) से लुँगी मांगकर अच्छा नहीं किया। तुमने देख लिया था कि आँहज़रत (ﷺ) ने उसे इस तरह क़ुबूल किया था गोया आपको इसकी ज़रूरत थी। उसके बावजूद तुमने लुँगी आँहज़रत (ﷺ) से मांगी, हालाँकि तुम्हें मा'लूम है कि आँहज़रत (ﷺ) से जब भी कोई चीज़ मांगी जाती है तो आप इंकार नहीं करते। उस सहाबी ने अ़र्ज़ किया कि मैं तो सिर्फ़ इसकी बरकत का उम्मीदवार हूँ कि आँहज़रत (ﷺ) उसे पहन चुके थे मेरी ग़र्ज़ ये थी कि मैं इस लुँगी में कफ़न दिया जाऊँगा। (राजेअ़ : 1277)

तश्रीह : ये बहुत बड़े रईसुत तुज्जार बुज़ुर्ग सहाबी हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ थे, उन्होंने उस लुँगी का सवाल अपना कफ़न बनाने के लिये किया था, चुनाँचे ये उसी कफ़न में दफ़न हुए। मा'लूम हुआ कि जो सच्चे बुज़ुर्गाने दीन अल्लाह वाले हो उनके मल्बूसात से इस तौर पर बरकत हासिल करना दुरुस्त है। अल्लाहुम्मर्ज़ुक़्ना, आमीन।

٦٠٣٧- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا
شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي حُمَيْدُ
بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ
رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((يَتَقَارَبُ الزَّمَانُ وَيَنْقُصُ
الْعَمَلُ، وَيُلْقَى الشُّحُّ، وَيَكْثُرُ الْهَرْجُ))
قَالُوا وَمَا الْهَرْجُ؟ قَالَ: ((الْقَتْلُ، الْقَتْلُ)).

[راجع: ٨٥]

6037. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने कहा कि मुझे हुमैद बिन अ़ब्दुर्रहमान ने ख़बर दी और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया ज़माना जल्दी जल्दी गुज़रेगा और दीन का इल्म दुनिया में कम हो जाएगा और दिलों में बख़ीली समा जाएगी और लड़ाई बढ़ जाएगी। सहाबा (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया हर्ज क्या होता है? फ़र्माया क़त्ल, ख़ूँरेज़ी। (राजेअ़ : 85)

मुराद ये कि एक हुकूमत दूसरी हुकूमत पर चढ़ेगी, लड़ाईयों का मैदान गर्म होगा और लोग दुनियावी धंधों में फंसकर क़ुर्आन व हदीष़ का इल्म हासिल करना छोड़ देंगे। हर शख़्स को दौलत जोड़ने का ख़्याल होगा और बस।

6038. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने सलाम बिन मिस्कीन से सुना, कहा कि मैंने ष़ाबित से सुना, कहा कि हमसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) की दस साल तक ख़िदमत की लेकिन आपने कभी मुझे उफ़ तक नहीं कहा और न कभी ये कहा कि फ़लाँ काम क्यूँ किया और फ़लाँ काम क्यूँ नहीं किया। (राजेअ़ : 2768)

٦٠٣٨- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، سَمِعَ سَلاَمَ بْنَ مِسْكِينٍ قَالَ: سَمِعْتُ ثَابِتًا يَقُولُ: حَدَّثَنَا أَنَسٌ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: خَدَمْتُ النَّبِيَّ ﷺ عَشْرَ سِنِينَ فَمَا قَالَ لِي أُفٍّ وَلاَ لِمَ صَنَعْتَ وَلاَ مالاً صَنَعْتَ؟. [راجع: ٢٧٦٨]

तश्रीह : दस साल की मुद्दत काफ़ी त़वील होती है मगर इस सारी मुद्दत में ह़ज़रत अनस (रज़ि.) को आँह़ज़रत (ﷺ) ने कभी भी नहीं डांटा न धमकाया न कभी आपने उनसे सख़्त कलामी फ़र्माई। ये आपके हुस्ने अख़्लाक़ की दलील है और ह़क़ीक़त है कि आपसे ज़्यादा दुनिया में कोई शख़्स नर्मदिल ख़ुशअख़्लाक़ पैदा नहीं हुआ। अल्लाह पाक उस प्यारे रसूल पर हज़ारहा हज़ार दरूदो—सलाम नाज़िल फ़र्माए, आमीन ष़ुम्म आमीन।

बाब 40 : आदमी अपने घर में क्या करता रहे

٤٠- باب كَيْفَ يَكُونُ الرَّجُلُ فِي أَهْلِهِ؟

6039. हमसे ह़फ़्स़ बिन उ़मर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे ह़कम ने, उनसे इब्राहीम नख़ई ने, उनसे अस्वद ने बयान किया कि मैंने ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) से पूछा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपने घर में क्या करते थे? फ़र्माया आँह़ज़रत (ﷺ) अपने घर के काम काज करते और जब नमाज़ का वक़्त हो जाता तो नमाज़ के लिये मस्जिद तशरीफ ले जाते थे। (राजेअ़ : 676)

٦٠٣٩- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنِ الْحَكَمِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنِ الأَسْوَدِ قَالَ: سَأَلْتُ عَائِشَةَ مَا كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَصْنَعُ فِي أَهْلِهِ؟ قَالَتْ: كَانَ مَهْنَةَ أَهْلِهِ، فَإِذَا حَضَرَتِ الصَّلاَةُ قَامَ إِلَى الصَّلاَةِ. [راجع: ٦٧٦]

तश्रीह : दूसरी रिवायत में है कि आप बाज़ार से सौदा ले आते और अपना जूता आप टाँक लेते गोया उम्मत के लिये आप सबक़ दे रहे थे कि आप काज महा काज, इंसान का रवैया होना चाहिये। **अल्मिहनतु बिकस्रिल्मीम व फत्हिहा व उन्किर इल्ला लिमअल्कस्रि व फस्सरहा बिख़िदमति अहलिही** (फ़त्हुल्बारी) या'नी लफ़्ज़े महना मीम के ज़ेर और ज़बर दोनों के साथ जाइज़ है और घर वालों की ख़िदमत पर ये लफ़्ज़ बोला जाता है।

बाब 41 : नेक आदमी की मुह़ब्बत अल्लाह पाक लोगों के दिलों में डाल देता है।

٤١- باب الْمِقَةِ مِنَ اللهِ

6040. हमसे अ़म्र बिन अ़ली ने बयान किया, कहा हमसे अबू आ़सिम ने, उनसे इब्ने जुरैज ने, कहा मुझको मूसा बिन उ़क़्बा ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ़ ने और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जब अल्लाह किसी बन्दे से

٦٠٤٠- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ

عَنِ النَّبِيِّ قَالَ: ((إِذَا أَحَبَّ اللهُ عَبْدًا نَادَى جِبْرِيلَ إِنَّ اللهَ يُحِبُّ فُلاَنًا فَأَحِبَّهُ، فَيُحِبُّهُ جِبْرِيلُ فَيُنَادِي جِبْرِيلُ فِي أَهْلِ السَّمَاءِ: إِنَّ اللهَ يُحِبُّ فُلاَنًا فَأَحِبُّوهُ، فَيُحِبُّهُ أَهْلُ السَّمَاءِ ثُمَّ يُوضَعُ لَهُ الْقَبُولُ فِي أَهْلِ الأَرْضِ)). [راجع: ٣٢٠٩]

मुहब्बत करता है तो जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) को आवाज़ देता है कि अल्लाह फ़लाँ बन्दे से मुहब्बत करता है तुम भी उससे मुहब्बत करो। जिब्रईल (अलैहि.) भी उससे मुहब्बत करने लगते हैं, फिर वो तमाम आसमान वालों में आवाज़ देते हैं कि अल्लाह फ़लाँ बन्दे से मुहब्बत करता है। तुम भी उससे मुहब्बत करो। फिर तमाम आसमान वाले उससे मुहब्बत करने लगते हैं उसके बाद वो ज़मीन में भी (बंदगाने अल्लाह का) मक़्बूल और महबूब बन जाता है। (राजेअ: 3209)

तश्रीह : यहाँ सिर्फ़ निदा का लफ़्ज़ है इसलिये यहाँ तावील भी नहीं चल सकती जो मुअतज़िला वग़ैरह ने की है कि अल्लाह तआला ने मूसा (अलैहिस्सलाम) से कलाम करने में पेड़ में कलाम करने की कुव्वत पैदा कर दी थी पस उन लोगों का मज़हब बातिल हुआ जो कहते हैं कि अल्लाह के कलाम में हर्फ़ और आवाज़ नहीं है गोया अल्लाह उनके नज़दीक गूँगा है। **अस्तग़फ़िरुल्लाह व नऊज़ु बिल्लाह मिन हाज़िहिल्ख़ुराफ़ाति**। रिवायत में अल्लाह के मुक़र्रबों के लिये आम मुहब्बत का ज़िक्र है मगर ये मुहब्बत अल्लाह के बन्दों ही के दिलों में पैदा होती है। अबू जहल और अबू लहब जैसे बदबख़्त फिर भी महरूम रह जाते हैं।

बाब 42 : अल्लाह की मुहब्बत रखने की फ़ज़ीलत

٤٢- باب الْحُبِّ فِي اللهِ

٦٠٤١- حَدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لاَ يَجِدُ أَحَدٌ حَلاَوَةَ الإِيمَانِ حَتَّى يُحِبَّ الْمَرْءَ لاَ يُحِبُّهُ إِلاَّ للهِ، وَحَتَّى أَنْ يُقْذَفَ فِي النَّارِ أَحَبُّ إِلَيْهِ مِنْ أَنْ يَرْجِعَ إِلَى الْكُفْرِ بَعْدَ إِذْ أَنْقَذَهُ اللهُ وَحَتَّى يَكُونَ اللهُ وَرَسُولُهُ أَحَبَّ إِلَيْهِ مِمَّا سِوَاهُمَا)). [راجع: ١٦]

6041. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कोई शख़्स ईमान की हलावत (मिठास) उस वक़्त तक नहीं पा सकता जब तक वो अगर किसी शख़्स से मुहब्बत करता है तो सिर्फ़ अल्लाह के लिये करे और उसको आग में डाला जाना अच्छा लगे पर ईमान के बाद जब अल्लाह ने उसे कुफ़्र से छुड़ा दिया फिर काफ़िर हो जाना उसे पसंद न हो और जब तक अल्लाह और उसके रसूल से उसे उनके सिवा दूसरी तमाम चीज़ों के मुक़ाबले में ज़्यादा मुहब्बत न हो। (राजेअ: 16)

तश्रीह : इस हदीष़ से मुक़ल्लिदीने जामेदीन को नसीहत लेनी चाहिये जब तक अल्लाह और रसूल (ﷺ) की मुहब्बत तमाम जहानों के लोगों से ज़्यादा न हो। ईमान पूरा नहीं हो सकता। अल्लाह और रसूल (ﷺ) की मुहब्बत तमाम जहान से ज़्यादा होनी चाहिये। वो ये है कि अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) के इर्शाद पर जान व माल क़ुर्बान करे, जहाँ क़ुर्आन की आयत या हदीष़े सहीहा मिल जाए, बस अब किसी इमाम या मुज्तहिद का क़ौल न ढूँढ़े। अल्लाह और रसूल (ﷺ) के इर्शाद को सब पर मुक़द्दम रखे। तब जाकर ईमाने कामिल हासिल होगा। अल्लाहुम्मर्ज़ुक़्ना, आमीन

हत्ता यकूनल्लाहु व रसूलुहु (अल्ख) मअनाहू अन्न मनिस्तक्मलल्ईमान अलिम अन्न हक़्क़ल्लाहि व रसूलिहि अकदु अलैहि मिन हक़्क़ि अबीहि व उम्मिही व वलदिही व जमीइन्नासि अल्ख (फ़त्हुल्बारी) अल्लाह व रसूल (ﷺ) की मुहब्बत का मतलब ये है कि जिसने ईमान कामिल कर लिया वो जान गया कि अल्लाह और रसूल की

मुहब्बत का हक़ उसके ज़िम्मे उसके बाप और माँ और औलाद और बीवी और सब लोगों के हुक़ूक़ से बहुत ही ज़्यादा बढ़कर है और अल्लाह व रसूल की मुहब्बत की अलामत ये है कि शरीअते इस्लामी की हिमायत की जाए और उसकी मुख़ालफ़त करने वालों को जवाब दिया जाए और अल्लाह के रसूल (ﷺ) के अख़्लाक़े फ़ाज़िला जैसे अख़्लाक़ पैदा किये जाएँ।

बाब 43 : अल्लाह तआला का सूरह हुजुरात में फ़र्माना कि, ऐ ईमान वालों!

कोई क़ौम किसी दूसरी क़ौम का मज़ाक़ न बनाए उसे हक़ीर न जाना जाए क्या मा'लूम शायद वो उनसे ज़्यादा अल्लाह के नज़दीक बेहतर हो। फ़उलाइका हुमुज़्ज़ालिमून तक।

٤٣- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لاَ يَسْخَرْ قَوْمٌ مِنْ قَوْمٍ عَسَى أَنْ يَكُونُوا خَيْرًا مِنْهُمْ - إِلَى قَوْلِهِ - فَأُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ﴾

6042. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उयैना ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उर्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन ज़म्आ (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने किसी की हवा ख़ारिज होने पर हंसने से मना किया और आपने ये भी फ़र्माया कि तुममें से किस तरह एक शख़्स अपनी बीवी को ज़ोर से मारता है जैसे ऊँट, हालाँकि उसकी पूरी उम्मीद है कि शाम में उसे वो गले लगाएगा। और सौरी, वुहैब और अबू मुआविया ने हिशाम से बयान किया कि (जानवर की तरह) के बजाय लफ़्ज़ गुलाम की तरह का इस्ते'माल किया। (राजेअ : 3377)

٦٠٤٢- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ زَمْعَةَ قَالَ: نَهَى النَّبِيُّ ﷺ أَنْ يَضْحَكَ الرَّجُلُ مِمَّا يَخْرُجُ مِنَ الأَنْفُسِ وَقَالَ: ((لِمَ يَضْرِبُ أَحَدُكُمُ امْرَأَتَهُ ضَرْبَ الْفَحْلِ، ثُمَّ لَعَلَّهُ يُعَانِقُهَا)) وَقَالَ الثَّوْرِيُّ : وَوُهَيْبٌ، وَأَبُو مُعَاوِيَةَ عَنْ هِشَامٍ ((جَلْدَ الْعَبْدِ)). [راجع: ٣٣٧٧]

गूज़ आना एक फ़ित्री अम्र है जो हर इंसान के लिये लाज़िम है, फिर हंसना इंतिहाई बेवक़ूफ़ी है। अक्सर छोटे लोगों की ये आदत होती है कि दूसरे के गूज़ की आवाज़ सुनकर हंसते और मज़ाक़ बना लेते हैं। ये हरकत इंतिहाई बुरी है। ऐसे ही अपनी औरत को जानवरों की तरह बेतहाशा मारना किसी बद अक़्ल ही का काम हो सकता है।

6043. मुझसे मुहम्मद बिन मुसन्ना ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यज़ीद बिन हारून ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको आसिम बिन मुहम्मद बिन ज़ैद ने ख़बर दी, उन्होंने कहा मुझे मेरे वालिद और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने (हज्जतुल विदा) के मौक़े पर मिना में फ़र्माया तुम जानते हो ये कौनसा दिन है? सहाबा बोले अल्लाह और उसके रसूल को ज़्यादा इल्म है। फ़र्माया तो ये हुर्मत वाला दिन है, तुम जानते हो ये कौनसा शहर है? सहाबा बोले अल्लाह और उसके रसूल को ज़्यादा इल्म है, फ़र्माया ये हुर्मत वाला शहर है। तुम जानते हो ये कौनसा महीना है? सहाबा बोले अल्लाह और उसके रसूल को ज़्यादा इल्म है फ़र्माया ये हुर्मत वाला महीना है। फिर फ़र्माया बिला शुब्हा अल्लाह ने तुम पर तुम्हारा (एक दूसरे

٦٠٤٣- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، أَخْبَرَنَا عَاصِمُ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ زَيْدٍ، عن أَبِيهِ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ بِمِنًى: ((أَتَدْرُونَ أَيُّ يَوْمٍ هَذَا؟)) قَالُوا: اللهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ. قَالَ: ((فَإِنَّ هَذَا يَوْمٌ حَرَامٌ، أَتَدْرُونَ أَيُّ بَلَدٍ هَذَا؟)) قَالُوا: اللهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ. قَالَ: ((بَلَدٌ حَرَامٌ أَتَدْرُونَ أَيُّ شَهْرٍ هَذَا؟)) قَالُوا: اللهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ، قَالَ: ((شَهْرٌ حَرَامٌ قَالَ: فَإِنَّ اللهَ حَرَّمَ عَلَيْكُمْ دِمَاءَكُمْ وَأَمْوَالَكُمْ

का) ख़ून, माल और इज़्ज़त उसी तरह हराम किया है जैसे इस दिन को उसने तुम्हारे इस महीने में और तुम्हारे इस शहर में हुर्मत वाला बनाया है। (राजेअ: 1742)

وَأَعْرَاضَكُمْ كَحُرْمَةِ يَوْمِكُمْ هَذَا فِي شَهْرِكُمْ هَذَا فِي بَلَدِكُمْ هَذَا)).

[راجع: ١٧٤٢]

तश्रीह: हदीष का मज़्मून किसी मज़ीद तश्रीह का मुहताज नहीं है। एक मोमिन की इ़ज़्ज़त फ़िल वाक़ेअ बड़ी अहम चीज़ है गोया उसकी इ़ज़्ज़त और हुर्मत मक्का शहर की बेइ़ज़्ज़ती करने के बराबर है। मोमिन का ख़ून नाहक़ का'बा शरीफ़ के ढहा देने के बराबर है मगर कितने लोग हैं जो इन चीज़ों का ख़्याल रखते हैं। इस हदीष की रोशनी में अहले इस्लाम की बाहमी हालत पर सद दर्जा अफ़सोस होता है। इस मुक़ाम पर बुख़ारी शरीफ़ का मुतालआ फ़र्माने वाले नेक दिल मुसलमानों को ये भी याद रखना चाहिये कि हज़रत उमर (रज़ि.) ने का'बा शरीफ़ के सामने खड़े होकर फ़र्माया था कि बेशक का'बा एक मुअज़्ज़ज़ घर है उसकी तक़्दीस में कोई शुब्हा नहीं; मगर एक मोमिन व मुसलमान की इ़ज़्ज़त व हुर्मत भी बहुत बड़ी चीज़ है और किसी मुसलमान की बेइ़ज़्ज़ती करने वाला का'बा शरीफ़ को ढहा देने वाले के बराबर है। क़ुर्आन पाक में अल्लाह ने फ़र्माया, **इन्नल्मूमिनून इख़्वतुन फ़अस्लिहू बैन अख़्वैकुम** मुसलमान मोमिन आपस में भाई भाई हैं। पस आपस में अगर कुछ नाचाक़ी भी हो जाए तो उनकी सुलह सफ़ाई करा दिया करो। एक हदीष में आपस की सुलह सफ़ाई करा देने को नफ़्ल नमाज़ों और रोज़ों से भी बढ़कर नेक अमल बतलाया गया है। पस मुतालआ फ़र्माने वाले भाईयों-बहनों का अहमतरीन फ़र्ज़ है कि वो आपस में मेल-मुहब्बत रखें और अगर आपस में कुछ नाराज़गी भी पैदा हो जाए तो उसे रफ़ा दफ़ा कर दिया करें मोमिन जन्नती बन्दों की क़ुर्आन में ये अलामत बतलाई गई है कि वो ग़ुस्से को पी जाने वाले और लोगों से उनकी ग़लितयों को मुआफ़ कर देने वाले हुआ करते हैं। नमाज़, रोज़ा के मसाइल पर तवज्जह देना जितना ज़रूरी है उतना ही ज़रूरी ये भी है कि ऐसे मसाइल पर भी तवज्जह दी जाए और आपस में ज़्यादा से ज़्यादा मेल-मुहब्बत, उख़ुव्वत, भाईचारा बढ़ाया जाए। हसद, कीना दिलों में रखना सच्चे मुसलमानों की शान नहीं।

यही मक़्सूदे फ़ित़रत है यही रम्ज़े मुसलमानी
उख़ुव्वत की जहाँगीरी, मुहब्बत की फ़रावानी

बाब 44 : गाली देने और ला'नत करने की मुमानअत

٤٤- بَابُ مَا يُنْهَى مِنَ السِّبَابِ وَاللَّعْنِ

6044. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे मंसूर ने बयान किया, कहा मैंने अबू वाइल से सुना और वो अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) से बयान करते थे कि उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया मुसलमान को गाली देना गुनाह है और उसको क़त्ल करना कुफ़्र है। ग़ुन्दर ने शुअबा से रिवायत करने में सुलैमान की मुताबअत की है। (राजेअ 48)

٦٠٤٤- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ مَنْصُورٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا وَائِلٍ يُحَدِّثُ عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ ((سِبَابُ الْمُسْلِمِ فُسُوقٌ، وَقِتَالُهُ كُفْرٌ)) تَابَعَهُ غُنْدَرٌ عَنْ شُعْبَةَ.

[راجع: ٤٨]

6045. हमसे अबू मअ़मर अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल वारिष ने बयान किया, उनसे हुसैन बिन ज़क्वान मुअ़ल्लिम ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन बुरैदा ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे यह्या बिन यअ़मर ने बयान किया, उनसे अबुल अस्वद दैली ने बयान किया और उनसे हज़रत अबू ज़र्र ग़िफ़ारी (रज़ि.) ने कि

٦٠٤٥- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، عَنِ الْحُسَيْنِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ بُرَيْدَةَ، حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ يَعْمَرَ أَنَّ أَبَا الأَسْوَدِ الدِّيلِيَّ حَدَّثَهُ، عَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ

الله عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((لاَ يَرْمِي رَجُلٌ رَجُلاً بِالْفُسُوقِ، وَلاَ يَرْمِيهِ بِالْكُفْرِ إِلاَّ ارْتَدَّتْ عَلَيْهِ إِنْ لَمْ يَكُنْ صَاحِبُهُ كَذَلِكَ)). [راجع: ٣٥٠٨]

उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर कोई शख़्स किसी शख़्स को काफ़िर या फ़ासिक़ कहे और वो दरहक़ीक़त काफ़िर या फ़ासिक़ न हो तो ख़ुद कहने वाला फ़ासिक़ और काफ़िर हो जाएगा। (राजेअ : 3508)

٦٠٤٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِنَانٍ، حَدَّثَنَا فُلَيْحُ بْنُ سُلَيْمَانَ حَدَّثَنَا هِلاَلُ بْنُ عَلِيٍّ، عَنْ أَنَسٍ قَالَ: لَمْ يَكُنْ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَاحِشًا وَلاَ لَعَّانًا وَلاَ سَبَّابًا كَانَ يَقُولُ عِنْدَ الْمَعْتَبَةِ ((مَا لَهُ تَرِبَ جَبِينُهُ؟)). [راجع: ٦٠٣١]

6064. हमसे मुहम्मद बिन सिनान ने बयान किया, कहा हमसे फ़ुलैह बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा हमसे हिलाल बिन अ़ली ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़ुह़्शगो नहीं थे, न आप ला'नत मलामत करने वाले थे और न गाली देते थे, आपको बहुत ग़ुस्सा आता तो सिर्फ़ इतना कह देते, उसे क्या हो गया है, उसकी पेशानी में ख़ाक लगे। (राजेअ : 6031)

आपका ये फ़र्माना भी बतरीक़े बद् दुआ के अष़र न करता क्योंकि आपने अल्लाह पाक से ये अ़र्ज़ कर लिया था। या रब! अगर मैं किसी को बुरा कह दूँ तो उसके लिये उसमें बेहतरी ही कीजियो।

٦٠٤٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ أَنَّ ثَابِتَ بْنَ الضَّحَّاكِ وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ الشَّجَرَةِ حَدَّثَهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((مَنْ حَلَفَ عَلَى مِلَّةٍ غَيْرِ الإِسْلاَمِ فَهُوَ كَمَا قَالَ، وَلَيْسَ عَلَى ابْنِ آدَمَ نَذْرٌ فِيمَا لاَ يَمْلِكُ، وَمَنْ قَتَلَ نَفْسَهُ بِشَيْءٍ فِي الدُّنْيَا عُذِّبَ بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، وَمَنْ لَعَنَ مُؤْمِنًا فَهُوَ كَقَتْلِهِ، وَمَنْ قَذَفَ مُؤْمِنًا بِكُفْرٍ فَهُوَ كَقَتْلِهِ)). [راجع: ١٣٦٣]

6047. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे उ़ष्मान बिन उ़मर ने, कहा हमसे अ़ली बिन मुबारक ने बयान किया, उनसे यह्या बिन अबी कष़ीर ने, उनसे अबू क़िलाबा ने कि ष़ाबित बिन ज़ह्हाक (रज़ि.) अस्हाबे शजर (बेअ़ते रिज़्वान करने वालों) में से थे, उन्होंने उनसे बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जो इस्लाम के सिवा किसी और मज़हब पर क़सम खाए (कि अगर मैंने फ़लाँ काम किया तो मैं नस़रानी हूँ, यहूदी हूँ) तो वो ऐसा हो जाएगा जैसे कि उसने कहा और किसी इंसान पर उन चीज़ों की नज़्र स़हीह़ नहीं होती जो उसके इख़्तियार में न हों और जिसने दुनिया में किसी चीज़ से ख़ुदकुशी कर ली उसे उसी चीज़ से आख़िरत में अ़ज़ाब होगा और जिसने किसी मुसलमान पर ला'नत भेजी तो ये उसके ख़ून करने के बराबर है और जो शख़्स किसी मुसलमान को काफ़िर कहे तो वो ऐसा है जैसे उसका ख़ून किया। (राजेअ : 1363)

तश्रीह : ह़ज़रत ष़ाबित बिन ज़ह्हाक उन बुज़ुर्गों में से हैं जिन्होंने सुलह़ हुदैबिया के मौक़े पर एक पेड़ के नीचे रसूले करीम (ﷺ) के दस्ते मुबारक पर जिहाद की बेअ़त की थी जिसका ज़िक्र सूरह फ़तह़ में है कि अल्लाह उन मोमिनों से राज़ी हो गया जो पेड़ के नीचे ब-रज़ा व रग़्बत जिहाद की बेअ़त आँह़ज़रत (ﷺ) के दस्ते मुबारक पर कर रहे थे ह़दीष़ का मज़्मून ज़ाहिर है।

6048. हमसे ड़मर बिन ह़फ़्स़ बिन ग़यास़ ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, कहा कि मुझसे ड़दी बिन स़ाबित ने बयान किया कि मैंने सुलैमान बिन सुर्द से सुना वो नबी करीम (ﷺ) के स़हाबी हैं, उन्होंने कहा कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के सामने दो आदमियों ने आपस में गाली-गलूच की एक स़ाहब को गुस़्सा आ गया और बहुत ज़्यादा आया, उनका चेहरा फूल गया और रंग बदल गया। आँह़ज़रत (ﷺ) ने (उस वक़्त फ़र्माया कि मुझे एक कलिमा मा'लूम है कि अगर ये गुस़्सा करने वाला शख़्स़) उसे कह ले तो इसका गुस़्सा दूर हो जाएगा। चुनाँचे एक स़ाहब ने जाकर गुस़्सा होने वाले को आँह़ज़रत (ﷺ) का इर्शाद सुनाया और कहा शैत़ान से अल्लाह की पनाह माँग वो कहने लगा क्या मुझको दीवाना बनाया है क्या मुझको कोई रोग हो गया है जा अपना रास्ता ले। (राजेअ़ : 3282)

٦٠٤٨- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، حَدَّثَنِي عَدِيُّ بْنُ ثَابِتٍ، قَالَ: سَمِعْتُ سُلَيْمَانَ بْنَ صُرَدٍ رَجُلاً مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اسْتَبَّ رَجُلاَنِ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ فَغَضِبَ أَحَدُهُمَا فَاشْتَدَّ غَضَبُهُ حَتَّى انْتَفَخَ وَجْهُهُ وَتَغَيَّرَ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنِّي لأَعْلَمُ كَلِمَةً لَوْ قَالَهَا لَذَهَبَ عَنْهُ الَّذِي يَجِدُ)) فَانْطَلَقَ إِلَيْهِ الرَّجُلُ فَأَخْبَرَهُ بِقَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ وَقَالَ: ((تَعَوَّذْ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطَانِ)) فَقَالَ: أَتُرَى بِي بَأْسٌ؟ أَمَجْنُونٌ أَنَا اذْهَبْ؟.

[راجع: ٣٢٨٢]

ये शख़्स़ मुनाफ़िक़ था या काफ़िर था जिसने ऐसा गुस्ताख़ाना जवाब दिया या कोई अक्खड़ बदवी था वो कलिमा जो आप बतलाना चाहते थे वो **अल्लाहुम्म इन्नी अऊ़ज़ुबिक मिनश्शैत़ानिर्रजीम** था। (क़स्तलानी)

6049. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे बिश्र बिन मुफ़ज़्ज़ल ने बयान किया, उनसे हुमैद ने बयान किया, उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि मुझसे ड़बादा बिन स़ामित (रज़ि.) ने कहा, नबी करीम (ﷺ) लोगों को लैलतुल क़द्र की बशारत देने के लिये हुज्रे से बाहर तशरीफ़ लाए, लेकिन मुसलमानों के दो आदमी उस वक़्त आपस में किसी बात पर लड़ने लगे। आपने फ़र्माया कि मैं तुम्हें (लैलतुल क़द्र) के बारे में बताने के लिये निकला था लेकिन फ़लाँ फ़लाँ आपस में लड़ने लगे और (मेरे इल्म से) वो उठा ली गई। मुम्किन है कि यही तुम्हारे लिये अच्छा हो। अब तुम उसे 29 रमज़ान और 27 रमज़ान और 25 रमज़ान की रातों में तलाश करो। (राजेअ़ : 49)

٦٠٤٩- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ الْمُفَضَّلِ، عَنْ حُمَيْدٍ، قَالَ : قَالَ أَنَسٌ حَدَّثَنِي عُبَادَةُ بْنُ الصَّامِتِ، قَالَ : خَرَجَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لِيُخْبِرَ النَّاسَ بِلَيْلَةِ الْقَدْرِ فَتَلاَحَى رَجُلاَنِ مِنَ الْمُسْلِمِينَ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((خَرَجْتُ لأُخْبِرَكُمْ فَتَلاَحَى فُلاَنٌ وَفُلاَنٌ وَإِنَّهَا رُفِعَتْ وَعَسَى أَنْ يَكُونَ خَيْرًا لَكُمْ فَالْتَمِسُوهَا فِي التَّاسِعَةِ وَالسَّابِعَةِ وَالْخَامِسَةِ)). [راجع: ٤٩]

उनके ड़लावा दीगर त़ाक़ रातों में कभी कभी लैलतुल क़द्र का इम्कान हो सकता है जैसा कि दूसरी रिवायात में आया है।

6050. मुझसे ड़मर बिन ह़फ़्स़ बिन ग़यास़ ने बयान किया, कहा मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे मअ़रूर ने और उनसे ह़ज़रत अबू ज़र्र (रज़ि.) ने, मअ़रूर ने बयान किया कि मैंने अबू ज़र्र (रज़ि.)

٦٠٥٠- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ عَنِ الْمَعْرُورِ، عَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ : رَأَيْتُ عَلَيْهِ بُرْدًا وَعَلَى غُلاَمِهِ بُرْدًا، فَقُلْتُ

لَوْ أَخَذْتَ هَذَا فَلَبِسْتَهُ كَانَتْ حُلَّةً فَأَعْطَيْتَهُ ثَوْبًا آخَرَ فَقَالَ كَانَ بَيْنِي وَبَيْنَ رَجُلٍ كَلَامٌ وَكَانَتْ أُمُّهُ أَعْجَمِيَّةً فَنِلْتُ مِنْهَا فَذَكَرَنِي إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لِي: ((أَسَابَبْتَ فُلاَنًا؟)) قُلْتُ: نَعَمْ، قَالَ: ((أَفَنِلْتَ مِنْ أُمِّهِ؟)) قُلْتُ: نَعَمْ. قَالَ: ((إِنَّكَ امْرُؤٌ فِيكَ جَاهِلِيَّةٌ)) قُلْتُ : عَلَى حِينِ سَاعَتِي هَذِهِ مِنْ كِبَرِ السِّنِّ قَالَ: ((نَعَمْ هُمْ إِخْوَانُكُمْ، جَعَلَهُمُ اللهُ تَحْتَ أَيْدِيكُمْ، فَمَنْ جَعَلَ اللهُ أَخَاهُ تَحْتَ يَدِهِ فَلْيُطْعِمْهُ مِمَّا يَأْكُلُ وَلْيُلْبِسْهُ مِمَّا يَلْبَسُ، وَلاَ يُكَلِّفُهُ مِنَ الْعَمَلِ مَا يَغْلِبُهُ، فَإِنْ كَلَّفَهُ مَا يَغْلِبُهُ فَلْيُعِنْهُ عَلَيْهِ)).

[راجع: ٣٠]

के जिस्म पर एक चादर देखी और उनके ग़ुलाम के जिस्म पर भी एक वैसी ही चादर थी, मैंने अ़र्ज़ किया अगर अपने ग़ुलाम की चादर ले लें और उसे भी पहन लें तो एक रंग का जोड़ा हो जाए ग़ुलाम को दूसरा कपड़ा दे दें। ह़ज़रत अबू ज़र्र (रज़ि.) ने उस पर कहा कि मुझमें और एक स़ाह़ब (बिलाल रज़ि.) में तकरार हो गई थी तो उनकी माँ अ़ज्मी थीं, मैंने उस बारे में उनको त़ाना दे दिया उन्होंने जाकर ये बात नबी करीम (ﷺ) से कह दी। आँह़ज़रत (ﷺ) ने मुझसे पूछा क्या तुमने इससे झगड़ा किया है? मैंने अ़र्ज़ किया जी हाँ। पूछा क्या तुमने इसे इसकी माँ की वजह से त़ाना दिया है? मैंने अ़र्ज़ किया जी हाँ। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम्हारे अंदर अभी जाहिलियत की बू बाक़ी है। मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या इस बुढ़ापे में भी? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ याद रखो ये (ग़ुलाम भी) तुम्हारे भाई हैं, अल्लाह तआ़ला ने उन्हें तुम्हारी मातह़ती में दिया है, पस अल्लाह तआ़ला जिसकी मातह़ती में भी उसके भाई को रखे उसे चाहिये कि जो वो खाए उसे भी खिलाए और जो वो पहने उसे भी पहनाए और उसे ऐसा काम करने के लिये न कहे, जो उसके बस में न हो अगर उसे कोई ऐसा काम करने के लिये कहना ही पड़े तो उस काम में उसकी मदद करे। (राजेअ़ : 30)

इसके बाद ह़ज़रत अबू ज़र्र (रज़ि.) ने ताह़यात ये अ़मल बना लिया कि जो ख़ुद पहनते वही अपने ग़ुलामों को पहनाते जिसका एक नमूना यहाँ मज़्कूर है ऐसे लोग आजकल कहाँ हैं जो अपने नौकरों ख़ादिमों के साथ ऐसा बर्ताव करें इल्ला माशाअल्लाह।

٤٥- باب مَا يَجُوزُ مِنْ ذِكْرِ النَّاسِ نَحْوَ قَوْلِهِمُ الطَّوِيلُ وَالْقَصِيرُ

وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَا يَقُولُ ذُو الْيَدَيْنِ)) وَمَا لاَ يُرَادُ بِهِ شَيْنُ الرَّجُلِ)).

बाब 45 : किसी आदमी की निस्बत ये कहना कि लम्बा या ठिगना है बशर्ते कि उसकी तह़क़ीर की निय्यत न हो ग़ीबत नहीं है और

आँह़ज़रत (ﷺ) ने ख़ुद फ़र्माया ज़ुलयदैन या'नी लम्बे हाथों वाला क्या कहता है, इस त़रह़ हर बात जिससे ऐ़ब बयान करना मक़्सूद न हो जाइज़ है।

٦٠٥١- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: صَلَّى بِنَا النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الظُّهْرَ رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ سَلَّمَ ثُمَّ قَامَ إِلَى

6051. हमसे ह़फ़्स़ बिन उ़मर ह़ौज़ी ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे मुह़म्मद बिन सीरीन ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने हमें ज़ुहर

की नमाज़ दो रकअत पढ़ाई और सलाम फेर दिया उसके बाद आप मस्जिद के आगे के हिस्से या'नी दालान में एक लकड़ी पर सहारा लेकर खड़े हो गये और उस पर अपना हाथ रखा, हाज़िरीन में हज़रत अबूबक्र और उमर भी मौजूद थे मगर आपके दबदबे की वजह से कुछ बोल न सके और जल्दबाज़ लोग मस्जिद से बाहर निकल गये। आपस में सहाबा ने कहा कि शायद नमाज़ में रकआत कम हो गईं हैं इसीलिये आँहज़रत (ﷺ) ने ज़ुहर की नमाज़ चार के बजाय सिर्फ़ दो ही रकआत पढ़ाईं हैं। हाज़िरीन में एक सहाबी थे जिन्हें आप ज़ुलयदैन (लम्बे हाथों वाला) कहकर पुकारा करते थे, उन्होंने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी! नमाज़ की रकआत कम हो गईं हैं या आप भूल गये हैं? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, न मैं भूला हूँ और न नमाज़ की रकआत कम हुईं हैं। सहाबा ने अ़र्ज़ किया नहीं या रसूलल्लाह! आप भूल गये हैं, चुनाँचे आपने याद करके फ़र्माया कि ज़ुलयदैन ने सहीह कहा है। फिर आप खड़े हुए और दो रकआत और पढ़ाईं, फिर सलाम फेरा और तक्बीर कहकर सज्दा (सह्व) में गये, नमाज़ के सज्दे की तरह बल्कि उससे भी ज़्यादा लम्बा सज्दा किया, फिर सर उठाया और तक्बीर कहकर फिर सज्दे में गये पहले सज्दा की तरह या उससे भी लम्बा। फिर सर उठाया और तक्बीर कही। (राजेअ : 482)

خَشَبَةٍ فِي مَقْدَمِ الْمَسْجِدِ وَوَضَعَ يَدَهُ عَلَيْهَا وَفِي الْقَوْمِ أَبُوبَكْرٍ وَعُمَرُ فَهَابَا أَنْ يُكَلِّمَاهُ وَخَرَجَ سَرَعَانُ النَّاسِ فَقَالُوا: قُصِرَتِ الصَّلاَةُ وَفِي الْقَوْمِ رَجُلٌ كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَدْعُوهُ ذَا الْيَدَيْنِ فَقَالَ: يَا نَبِيَّ اللهِ أَنَسِيتَ أَمْ قُصِرَتْ؟ فَقَالَ: ((لَمْ أَنْسَ وَلَمْ تُقْصَرْ)) قَالَ: بَلْ نَسِيتَ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: ((صَدَقَ ذُو الْيَدَيْنِ)) فَقَامَ فَصَلَّى رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ سَلَّمَ، ثُمَّ كَبَّرَ فَسَجَدَ مِثْلَ سُجُودِهِ أَوْ أَطْوَلَ ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ وَكَبَّرَ ثُمَّ وَضَعَ مِثْلَ سُجُودِهِ أَوْ أَطْوَلَ ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ وَكَبَّرَ.

[راجع: ٤٨٢]

बस उसके बाद क़अदा नहीं किया न दूसरा सलाम फेरा जैसा कि कुछ लोग किया करते हैं इस हदीष से ये भी निकलता है कि भूले से अगर नमाज़ में बात कर ले या ये समझकर नमाज़ पूरी हो गई तो नमाज़ फ़ासिद नहीं होती मगर कुछ लोग उसके भी ख़िलाफ़ करते हैं । हदीष में एक शख़्स को लम्बे हाथों वाला कहा गया सो ऐसा ज़िक्र जाइज़ है बशर्ते कि उसकी तहक़ीर करना मक़्सूद न हो अगर कोई कहे कि ज़ुलयदैन हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर (रज़ि.) से ज़्यादा बहादुर हो गया ये क्यूँकर हो सकता है उसका जवाब ये है कि ज़ुलयदैन एक आम आदमी था ऐसे लोग बेतकल्लुफ़ी बरत जाते हैं। लेकिन मुक़र्रब लोग बहुत डरते हैं यही वजह है कि आँहज़रत (ﷺ) सब लोगों से ज़्यादा अल्लाह से डरते और सबसे ज़्यादा इबादत करने वाले और बड़ी मेहनत उठाने वाले थे। (ﷺ)

बाब 46 : ग़ीबत के बयान में

और अल्लाह तआला का फ़र्माना, और तुममें कुछ कुछ की ग़ीबत न करे क्या तुममें कोई चाहता है कि अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाए, तुम उसे नापसंद करोगे और अल्लाह से डरो, यक़ीनन अल्लाह तौबा क़ुबूल करने वाला रहम करने वाला है। (अल हुजुरात : 12)

٤٦- باب الْغِيبَةِ

وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى : ﴿وَلاَ يَغْتَبْ بَعْضُكُمْ بَعْضًا أَيُحِبُّ أَحَدُكُمْ أَنْ يَأْكُلَ لَحْمَ أَخِيهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوهُ وَاتَّقُوا اللهَ إِنَّ اللهَ تَوَّابٌ رَحِيمٌ﴾ [الحجرات : ١٢].

तश्रीह : ग़ीबत ये कि पीठ पीछे किसी भाई की ऐसी ऐबजोई करे जो उसको नागवार हो ये ग़ीबत करना बदतरीन गुनाह है **क़ाल इब्नुल अष़ीर फ़िन् नहायति ग़ीबत इन तज़्किरल इंसान फ़ी ग़ीबतही बिसूइन व इन काना फ़ीही** (फ़त्ह)

६٠٥٢- حدَّثنَا يَحْيَى، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنِ الأَعْمَشِ قَالَ: سَمِعْتُ مُجَاهِدًا يُحَدِّثُ عَنْ طَاوُسٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: مَرَّ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَلَى قَبْرَيْنِ فَقَالَ: ((إِنَّهُمَا لَيُعَذَّبَانِ، وَمَا يُعَذَّبَانِ فِي كَبِيرٍ أَمَّا هَذَا فَكَانَ لاَ يَسْتَتِرُ مِنْ بَوْلِهِ، وَأَمَّا هَذَا فَكَانَ يَمْشِي بِالنَّمِيمَةِ)) ثُمَّ دَعَا بِعَسِيبٍ رَطْبٍ فَشَقَّهُ بِاثْنَيْنِ فَغَرَسَ عَلَى هَذَا وَاحِدًا وَعَلَى هَذَا وَاحِدًا، ثُمَّ قَالَ: ((لَعَلَّهُ يُخَفِّفُ عَنْهُمَا مَا لَمْ يَيْبَسَا)).

[راجع: ٢١٦]

6052. हमसे यह्या बिन मूसा बल्ख़ी ने बयान किया, कहा हमसे वकीअ ने बयान किया, उनसे आ'मश ने बयान किया, उन्होंने मुजाहिद से सुना, वो ताउस से बयान करते थे और वो हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) दो क़ब्रों के पास से गुज़रे और फ़र्माया कि उन दोनों क़ब्रों के मुर्दों को अज़ाब हो रहा है और ये किसी बड़े गुनाह की वजह से अज़ाब में गिरफ़्तार नहीं हैं बल्कि ये (एक क़ब्र का मुर्दा) अपने पेशाब की छींटों से नहीं बचता था (या पेशाब करते वक़्त पर्दा नहीं करता था) और ये (दूसरी क़ब्र वाला मुर्दा) चुग़लख़ोर था, फिर आपने एक हरी शाख़ मंगाई और उसे दो टुकड़ों में फाड़कर दोनों क़ब्रों पर गाड़ दिया उसके बाद फ़र्माया कि जब तक ये शाख़ें सूख न जाएँ उस वक़्त तक शायद इन दोनों का अज़ाब हल्का रहे।(राजेअ : 216)

तश्रीह : ये टहनी गाड़ने का अमल आपके साथ ख़ास था। इसलिये कि आपको क़ब्र वालों का सहीह हाल मा'लूम हो गया था और ये मा'लूम होना भी आप ही के साथ ख़ास था। आज कोई नहीं जान सकता कि क़ब्र वाला किस हाल में है, लिहाज़ा कोई अगर टहनी गाड़े तो वो बेकार है, वल्लाहु आलम बिस्सवाब।

٤٧- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ خَيْرُ دُورِ الأَنْصَارِ

बाब : 47 नबी करीम (ﷺ) का फ़र्माना अंसार के सब घरों में फ़लाना घराना बेहतर है

इस बाब से हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) की ग़र्ज़ ये है कि किसी शख़्स की या क़ौम की फ़ज़ीलत बयान करना उसको दूसरे अश्ख़ास या अक़्वाम पर तरजीह देना ग़ीबत में दाख़िल नहीं है।

٦٠٥٣- حدَّثنَا قَبِيصَةُ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي أُسَيْدٍ السَّاعِدِيِّ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((خَيْرُ دُورِ الأَنْصَارِ بَنُو النَّجَّارِ)).

[راجع: ٣٧٨٩]

6053. हमसे क़ुबैसा बिन उक़्बा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अबू सलमा ने और उनसे हज़रत अबू उसैद साएदी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, क़बीला अंसार में सबसे बेहतर घराना बनू नज्जार का घराना है। (राजेअ : 3789)

٤٨- باب مَا يَجُوزُ مِنْ اغْتِيَابِ أَهْلِ الْفَسَادِ وَالرِّيَبِ

बाब 48 : मुफ़्सिद और शरीर लोगों की या जिन पर गुमाने ग़ालिब बुराई का हो, उनकी ग़ीबत दुरुस्त होना

ताकि दूसरे मुसलमान उनके बुराई से बचे रहें।

6054. हमसे स़दक़ा बिन फ़ज़ल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको सुफ़यान बिन उ़यैना ने ख़बर दी, उन्होंने मुहम्मद बिन मुंकदिर से सुना, उन्होंने उ़र्वा बिन ज़ुबैर से सुना और उन्हें उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) ने ख़बर दी, उन्होंने बयान किया कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से अंदर आने की इजाज़त चाही तो आपने फ़र्माया कि उसे इजाज़त दे दो, फ़लाँ क़बीले का ये बुरा आदमी है। जब वो शख़्स अंदर आया तो आपने उसके साथ बड़ी नर्मी से बातचीत की, मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! आपको उसके बारे में जो कुछ कहना था वो इर्शाद फ़र्माया और फिर उसके साथ नर्म बातचीत की। आपने फ़र्माया, आइशा (रज़ि.)! वो आदमी है बदतरीन जिसे उसकी बदकलामी के डर से लोग छोड़ दें। (राजेअ़ : 6032)

٦٠٥٤- حدَّثَنَا صَدَقَةُ بْنُ الْفَضْلِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ، سَمِعْتُ ابْنَ الْمُنْكَدِرِ سَمِعَ عُرْوَةَ بْنَ الزُّبَيْرِ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ الله عَنْهَا أَخْبَرَتْهُ قَالَتْ: اسْتَأْذَنَ رَجُلٌ عَلَى رَسُولِ الله ﷺ فَقَالَ: ((ائْذَنُوا لَهُ بِئْسَ أَخُو الْعَشِيرَةِ، أَوِ ابْنُ الْعَشِيرَةِ)) فَلَمَّا دَخَلَ أَلاَنَ لَهُ الْكَلاَمَ قُلْتُ: يَا رَسُولَ الله قُلْتَ الَّذِي قُلْتَ: ثُمَّ أَلَنْتَ لَهُ الْكَلاَمَ؟ قَالَ : ((أَيْ عَائِشَةُ إِنَّ شَرَّ النَّاسِ مَنْ تَرَكَهُ النَّاسُ، أَوْ وَدَعَهُ النَّاسُ اتِّقَاءَ فُحْشِهِ)). [راجع: ٦٠٣٢]

ये ह़क़ीक़त थी कि वो बुरा आदमी है मगर मैं तो बुरा नहीं हूँ मुझे तो अपनी नेक आ़दत के मुताबिक़ हर बुरे भले आदमी के साथ नेक ख़ू, ही बरतनी होगी। स़दक़ रसूलुल्लाहि (ﷺ)।

बाब 49 : चुग़लख़ोरी करना कबीरा गुनाहों में से है

٤٩- باب النَّمِيمَةُ مِنَ الْكَبَائِرِ

तश्रीह : व हिय नक़्लुन मक्रूहुन बिक़स्दिल्इफ़्सादि (अल्ख) (क़स्तलानी) या'नी फ़साद कराने के लिए किसी की बुराई किसी और के सामने नक़ल करना। चुग़लख़ोर एक साअ़त में इतना फ़साद फैला सकता है कि कोई जादूगर इतना फ़साद एक महीने में भी नहीं करा सकता, इसलिये ये कबीरा गुनाह है।

6055. हमसे मुह़म्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमको उ़बैदह बिन अ़ब्दुर्रहमान ने ख़बर दी, उन्हें मंसूर बिन मअ़मर ने, उन्हें मुजाहिद ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) मदीना मुनव्वरह के किसी बाग़ से तशरीफ़ लाए तो आपने दो (मुर्दा) इंसानों की आवाज़ सुनी जिन्हें उनकी क़ब्रों में अ़ज़ाब दिया जा रहा था फिर आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया उन्हें अ़ज़ाब हो रहा है और किसी बड़े गुनाह की वजह से उन्हें अ़ज़ाब नहीं हो रहा है। उनमें से एक शख़्स पेशाब के छींटो से नहीं बचता था और दूसरा चुग़लख़ोर था। फिर आपने खजूर की एक हरी शाख़ मंगवाई और उसे दो हिस़्सों में तोड़ा और एक टुकड़ा एक की क़ब्र पर और दूसरा दूसरी की क़ब्र पर गाड़ दिया। फिर फ़र्माया शायद कि उनके

٦٠٥٥- حدَّثَنَا ابْنُ سَلاَمٍ، أَخْبَرَنَا عَبِيدَةُ بْنُ حُمَيْدٍ أَبُو عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ مُجَاهِدٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: خَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ مِنْ بَعْضِ حِيطَانِ الْمَدِينَةِ فَسَمِعَ صَوْتَ إِنْسَانَيْنِ يُعَذَّبَانِ فِي قُبُورِهِمَا فَقَالَ ((يُعَذَّبَانِ وَمَا يُعَذَّبَانِ فِي كَبِيرَةٍ، وَإِنَّهُ لَكَبِيرٌ كَانَ أَحَدُهُمَا لاَ يَسْتَتِرُ مِنَ الْبَوْلِ، وَكَانَ الآخَرُ يَمْشِي بِالنَّمِيمَةِ)) ثُمَّ دَعَا بِجَرِيدَةٍ فَكَسَرَهَا بِكِسْرَتَيْنِ أَوْ ثِنْتَيْنِ فَجَعَلَ كِسْرَةً فِي قَبْرِ هَذَا وَكِسْرَةً فِي قَبْرِ

अ़ज़ाब में उस वक़्त तक के लिये कमी कर दी जाए, जब तक ये सूख न जाएँ। (राजेअ : 216)

هَذَا فَقَالَ: ((لَعَلَّهُ يُخَفَّفُ عَنْهُمَا مَا لَمْ يَيْبَسَا)). [راجع: ٢١٦]

तश्रीह : इस रिवायत में बड़े गुनाह से वो गुनाह मुराद हैं जिन पर ह़द मुक़र्रर है, जैसे ज़िना, चोरी वग़ैरह इसलिये बाब का तर्जुमा के ख़िलाफ़ न होगा। बाब का तर्जुमा में कबीरा से लग़वी मा'नी बड़ा गुनाह मुराद है कहते हैं कि हरा पेड़ या हरी टहनी अल्लाह की तस्बीह़ करती है उसकी बरकत से स़ाहिबे क़ब्र पर तख़्फ़ीफ़ हो जाती है कुछ कहते हैं कि ये आप ही की ख़ुसूसियत थी और किसी के लिये ये नहीं है।

बाब 50 : चुग़लख़ोरी की बुराई का बयान और अल्लाह तआला ने सूरह नून में,

٥٠- باب مَا يُكْرَهُ مِنَ النَّمِيمَةِ وَقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿هَمَّازٍ مَشَّاءٍ بِنَمِيمٍ﴾ - ﴿وَيْلٌ لِكُلِّ هُمَزَةٍ لُمَزَةٍ﴾ يَهْمِزُ وَيَلْمِزُ يَعِيبُ.

फ़र्माया, ऐबज, चुग़लख़ोर और सूरह हुमज़ा में फ़र्माया हर ऐबज् आवाज़ कसने वाले की ख़राबी है, यह्मिज़ु व यल्मिज़ु और युईबु सबके मा'नी एक हैं या'नी ऐब बयान करता है ता'ने मारता है।

6056. हमसे अबू नुऐम (फ़ज़ल बिन दुकैन) ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, उनसे मंसूर बिन मअ़मर ने, उनसे इब्राहीम नख़ई ने, उनसे हम्माम बिन ह़ारिष़ ने बयान किया कि हम ह़ज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) के पास मौजूद थे, उनसे कहा गया कि एक शख़्स ऐसा है जो यहाँ की बातें ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) से जा लगाता है। उस पर ह़ज़रत हुज़ैफ़ह (रज़ि.) ने कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना है आपने बतलाया कि जन्नत में चुग़लख़ोर नहीं जाएगा।

٦٠٥٦- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ هَمَّامٍ قَالَ: كُنَّا مَعَ حُذَيْفَةَ فَقِيلَ لَهُ إِنَّ رَجُلاً يَرْفَعُ الْحَدِيثَ إِلَى عُثْمَانَ فَقَالَ حُذَيْفَةُ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((لاَ يَدْخُلُ الْجَنَّةَ قَتَّاتٌ)).

तश्रीह : वो शख़्स झूठी बातें ह़ज़रत उ़ष्मान तक पहुँचाया करता था। उस पर ह़ज़रत हुज़ैफ़ह (रज़ि.) ने ये ह़दीष़ उनको सुनाई। क़ाज़ी अयाज़ ने कहा कि क़त्तात और नम्माम का एक ही मा'नी है कुछ ने फ़र्क़ किया कि नम्माम तो वो है कि जो क़ज़िया के वक़्त मौजूद हो फिर जाकर दूसरों के सामने उसकी चुग़ली करे और क़त्तात वो है जो बग़ैर देखे मह़ज़ सुनकर चुग़लख़ोरी करे, बहरह़ाल क़त्तात और नम्माम दोनों ह़दीष़े बाला की वई़द में दाख़िल हैं। **व क़ालल्लैषु अल्मज़तु मंय्यग्ताबक बिल्ग़ैबि वल्लुमज़तु मंय्यगताबक फ़ी वज्हिक** या'नी हुमज़ा वो लोग जो पीठ पीछे तेरी बुराई करे और लुमज़ा वो जो सामने बुराई करें (फ़तह़)

बाब 51 : अल्लाह तआला का सूरह ह़ज्ज में फ़र्माना, और ऐ ईमानवालो! झूठ बात बोलने से परहेज़ करते रहो

٥١- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى : ﴿وَاجْتَنِبُوا قَوْلَ الزُّورِ﴾

6057. हमसे अह़मद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबी ज़िब ने बयान किया, उनसे सई़द मक़्बरी ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जो शख़्स (रोज़ा की ह़ालत में) झूठ बात करना और फ़रेब करना और जिहालत की बातों को न छोड़े तो अल्लाह को उसकी कोई ज़रूरत नहीं कि वो अपना खाना पीना छोड़े।

٦٠٥٧- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ، عَنِ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ لَمْ يَدَعْ قَوْلَ الزُّورِ وَالْعَمَلَ بِهِ وَالْجَهْلَ

अह़मद बिन यूनुस ने कहा ये ह़दीष़ मैंने सुनी तो थी मगर मैं इसकी सनद भूल गया था जो मुझको एक शख़्स़ (इब्ने अबी ज़िब) ने बतला दी। (राजेअ़ : 1903)

فَلَيْسَ للهِ حَاجَةٌ أَنْ يَدَعَ طَعَامَهُ وَشَرَابَهُ)) قَالَ أَحْمَدُ : أَفْهَمَنِي رَجُلٌ إِسْنَادَهُ.

[راجع: ١٩٠٣]

तश्रीह़ : या'नी जब झूठ फ़रेब बुरी बातें न छोड़ें तो रोज़ा मह़ज़ फ़ाक़ा होगा, अल्लाह को हमारी फ़ाक़ाकशी की ज़रूरत नहीं है वो तो ये जानता है कि हम रोज़ा रखकर बुरी बातों और बुरी आदतों से परहेज़ करें और नफ़्सानी ख़्वाहिशों को अ़क़्ले सलीम और शरअ़े मुस्तक़ीम के ताबेअ़ कर दें।

बाब 52 : मुँह देखी बात करने वाले (दोग़ले) के बारे में

٥٢- باب مَا قِيلَ فِي ذِي الْوَجْهَيْنِ

6058. हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स़ बिन ग़याष़ ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, कहा हमसे अबू स़ालेह़ ने बयान किया, उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, तुम क़यामत के दिन अल्लाह के यहाँ उस शख़्स़ को सबसे बदतर पाओगे जो कुछ लोगों के सामने एक रुख़ से आता है और दूसरों के सामने दूसरे रुख़ से जाता है। (राजेअ़ : 3494)

٦٠٥٨- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، حَدَّثَنَا أَبُو صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((تَجِدُ مِنْ شَرِّ النَّاسِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عِنْدَ اللهِ ذَا الْوَجْهَيْنِ، الَّذِي يَأْتِي هَؤُلاَءِ بِوَجْهٍ، وَهَؤُلاَءِ بِوَجْهٍ)).

[راجع: ٣٤٩٤]

तश्रीह़ : हर जगह लगी लपटी बात कहता है। दो रुख़ा आदमी वो है कि हर फ़रीक़ से मिला रहे, जिसकी सुह़बत में जाए उनकी सी कहे। या'नी रकाबी मज़्हब वाला (बा मुसलमान अल्लाह अल्लाह बा ब्रहमण राम राम) क़ालल्क़ुर्तुबी इन्नमा कान ज़ुल्वज्हैनि शर्रुन्नासि लिअन्न हालहू हालुल्मुनाफ़िक़ (फतह) या'नी मुँह देखी बात करने वाला बदतरीन आदमी है इसलिये कि उसका मुनाफ़िक़ जैसा ह़ाल है।

बाब 53 : अगर कोई शख़्स़ दूसरे शख़्स़ की बातचीत जो उसने किसी की निस्बत की हो उससे बयान करे

٥٣- باب مَنْ أَخْبَرَ صَاحِبَهُ بِمَا يُقَالُ فِيهِ

तश्रीह़ : अरादल्बुख़ारी बित्तर्जुमति बयान जवाज़िन्नक़्लि अ़ला वज्हिन्नसीहति लिकौनिन्नबिय्यि (ﷺ) लम युन्किर अ़ला इब्नि मस्ऊ़द नक़लहू मा नक़ल कुल्लु अक़ीबिन मिम्महुलिल्मन्क़ूलि अ़न्हु षुम्म हुकिम अ़न्हु ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) के तर्जुमे बाब से ख़ैर ख़्वाही के त़ौर पर ऐसी बात को नक़ल करने का जवाज़ ष़ाबित करना है, जैसा कि ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) का नक़ल करना यहाँ मज़्कूर है।

6059. हमसे मुह़म्मद बिन यूसुफ़ फ़रयाबी ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान ष़ौरी ने ख़बर दी, उन्हें आ'मश ने, उन्हें अबू वाइल ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने कुछ माल तक़्सीम किया तो अंस़ार में से एक शख़्स़ ने कहा कि अल्लाह की क़सम! मुह़म्मद (ﷺ) को इस तक़्सीम से अल्लाह की रज़ा मक़्सूद न थी। मैंने

٦٠٥٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَسَمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ قِسْمَةً فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الأَنْصَارِ: وَاللهِ مَا أَرَادَ مُحَمَّدٌ

आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होकर उस शख़्स की ये बात आपको सुनाई तो आँहज़रत (ﷺ) के चेहरे का रंग बदल गया और आपने फ़र्माया अल्लाह मूसा (अलैहिस्सलाम) पर रहम करे, उन्हें इससे भी ज़्यादा तकलीफ़ दी गई, लेकिन उन्होंने सब्र किया। (राजेअ : 3150)

بِهَذَا وَجْهَ اللهِ، فَأَتَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَأَخْبَرْتُهُ فَتَمَعَّرَ وَجْهُهُ وَقَالَ: ((رَحِمَ اللهُ مُوسَى لَقَدْ أُوذِيَ بِأَكْثَرَ مِنْ هَذَا فَصَبَرَ)). [راجع: ٣١٥٠]

ये ए'तिराज़ करने वाला मुनाफ़िक़ था और उसका नाम मुअत्तब बिन क़ुशैर था, उसने आँहज़रत की दयानत-अमानत पर हमला किया हालाँकि आपसे बढ़कर अमीन व दयानतदार इंसान कोई दुनिया में पैदा ही नहीं हुआ जिसकी अमानत के कुफ़्फ़ारे मक्का भी क़ाइल थे जो आपको सादिक़ और अमीन के नाम से पुकारा करते थे।

बाब 54 : किसी की ता'रीफ़ में मुबालग़ा करना मना है

٥٤- باب مَا يُكْرَهُ مِنَ التَّمَادُحِ

तश्रीह : कमादह महुन से तफ़ाउल का मसदर है जो दो आदमियों का एक दूसरी की जाव बेजा ता'रीफ़ करने पर बोला जाता है, मन तुरा हाजी बगोयम तु मुरा नाजी बगो। शरीअत ने ऐसी मदह (ता'रीफ़) से रोका है।

6060. हमसे मुहम्मद बिन सब्बाह ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन ज़करिया ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे बुरैद बिन अब्दुल्लाह बिन अबी बुर्दा ने बयान किया, उनसे अबू बुर्दा ने और उनसे हज़रत अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने सुना कि एक शख़्स दूसरे शख़्स की ता'रीफ़ कर रहा है और ता'रीफ़ में बहुत मुबालिग़ा से काम ले रहा था तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया तुमने इसे हलाक कर दिया या (ये फ़र्माया कि) तुमने इस शख़्स की कमर तोड़ दी। (राजेअ : 2663)

٦٠٦٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ صَبَّاحٍ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ زَكَرِيَّا، حَدَّثَنَا بُرَيْدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي بُرْدَةَ، عن ابى بردة عَنْ أَبِي مُوسَى، قَالَ: سَمِعَ النَّبِيُّ ﷺ رَجُلاً يُثْنِي عَلَى رَجُلٍ وَيُطْرِيهِ فِي الْمِدْحَةِ فَقَالَ: ((أَهْلَكْتُمْ - أَوْ قَطَعْتُمْ - ظَهْرَ الرَّجُلِ)). [راجع: ٢٦٦٣]

तश्रीह : हाफ़िज़ ने कहा मुझको उन दोनों शख़्सों के नाम मा'लूम नहीं हुए लेकिन इमाम अहमद और बुख़ारी (रह.) रिवायत अदबुल मुफ़रद से मा'लूम होता है कि ता'रीफ़ करने वाला मिहजन बिन अवरह था और जिसकी ता'रीफ़ की थी शायद वो अब्दुल्लाह बिन जुल्बजादैन होगा। (वहीदी)

6061. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे ख़ालिद ने, उनसे अब्दुर्रहमान बिन अबीबक्र ने, उनसे उनके वालिद ने कि नबी करीम (ﷺ) की मज्लिस में एक शख़्स का ज़िक्र आया तो एक- दूसरे शख़्स ने उनकी मुबालिग़ा से ता'रीफ़ की तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अफ़सोस तुमने अपने साथी की गर्दन तोड़ दी। आँहज़रत (ﷺ) ने ये जुम्ला कई बार फ़र्माया, अगर तुम्हारे लिये किसी की ता'रीफ़ करनी ज़रूरी हो तो ये कहना चाहिये कि मैं इसके बारे मे ऐसा ख़्याल करता हूँ, बाक़ी इल्म अल्लाह को है वो ऐसा है। अगर उसको ये मा'लूम हो कि वो ऐसा ही है और यूँ न

٦٠٦١- حَدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ خَالِدٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي بَكْرَةَ، عَنْ أَبِيهِ أَنَّ رَجُلاً ذُكِرَ عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَثْنَى عَلَيْهِ رَجُلٌ خَيْرًا فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((وَيْحَكَ قَطَعْتَ عُنُقَ صَاحِبِكَ)) يَقُولُهُ مِرَارًا: ((إِنْ كَانَ أَحَدُكُمْ مَادِحًا لاَ مَحَالَةَ فَلْيَقُلْ: أَحْسِبُ كَذَا وَكَذَا إِنْ كَانَ يُرَى أَنَّهُ كَذَلِكَ

وَحَسِيبُهُ اللهُ، وَلاَ يُزَكِّي عَلَى اللهِ أَحَدًا)) قَالَ وُهَيْبٌ، عَنْ خَالِدٍ وَيْلَكَ. [راجع: ٢١٦٢]

कहे कि वो अल्लाह के नज़दीक अच्छा ही है। और वुहैब ने इसी सनद के साथ ख़ालिद से यूँ रिवायत की, अरे तेरी ख़राबी तूने इसकी गर्दन काट डाली या'नी लफ़्ज़ वयहक के बजाय लफ़्ज़ वयलक बयान किया। (राजेअ़ : 2162)

तश्रीह : लफ़्ज़ वयहक रहमत का कलिमा है और वयलक अ़ज़ाब का कलिमा, मतलब ये होगा कि जिसके लिये वयहक बोला जाए तो मा'नी ये होगा कि अफ़सोस तुझ पर रहम करे और जिस पर लफ़्ज़ वयलक बोलेंगे तो मा'नी ये होगा कि अफ़सोस तुझ पर अ़ज़ाब करे। ता'रीफ़ में, इसी तरह बुराई में मुबालिग़ा करना, बेहूदा शाइरों और ख़ुशामदी लोगों का काम है ऐसी ता'रीफ़ से वो शख़्स जिसकी ता'रीफ़ करो फूलकर मग़रूर बन जाता है और जहल मुरक्कब में गिरफ़्तार होकर रह जाता है।

٥٥- باب مَنْ أَثْنَى عَلَى أَخِيهِ بِمَا يَعْلَمُ

बाब 55 : अगर किसी को अपने किसी भाई मुसलमान का जितना हाल मा'लूम हो उतनी ही (बिला मुबालिग़ा) ता'रीफ़ करे तो ये जाइज़ है

وَقَالَ سَعْدٌ: مَا سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ لأَحَدٍ يَمْشِي عَلَى الأَرْضِ إِنَّهُ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ إِلاَّ لِعَبْدِ اللهِ بْنِ سَلاَمٍ

सअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) ने कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) को किसी शख़्स के बारे में जो ज़मीन पर चलता फिरता हो, ये कहते नहीं सुना कि ये जन्नती है सिवा अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) के।

तश्रीह : आपसे ऐसी बशारत तो बहुत से लोगों के लिये ष़ाबित है कुछ लोगों ने कहा कि यहूद में ये बशारत सिवाय हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम के और किसी को नहीं दी वरना अ़शरा मुबश्शरह और बहुत स़हाबा के लिये आपकी बशारतें मौजूद हैं। सिर्फ़ हज़रत सि़द्दीक़े अकबर व उ़मर फ़ारूक़ व उ़ष्मान ग़नी व हज़रत अ़ली (रज़ियल्लाहु अ़न्हुम) को आपने बारहा फ़र्माया कि तुम जन्नती हो। अ़शरा मुबश्शरह मशहूर हैं।

٦٠٦٢- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ، عَنْ سَالِمٍ، عَنْ أَبِيهِ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ حِينَ ذَكَرَ فِي الإِزَارِ مَا ذَكَرَ قَالَ أَبُوبَكْرٍ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّ إِزَارِي يَسْقُطُ مِنْ أَحَدِ شِقَّيْهِ قَالَ: ((إِنَّكَ لَسْتَ مِنْهُمْ)). [راجع: ٣٦٦٥]

6062. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, कहा हमसे मूसा बिन उ़क़्बा ने बयान किया, उनसे सालिम ने और उनसे उनके वालिद अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) को इज़ार लटकाने के बारे में जो कुछ फ़र्माना था जब आपने फ़र्माया तो अबूबक्र (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! मेरा तहमद एक तरफ़ से लटकने लगता है, तो आपने फ़र्माया कि तुम उन तकब्बुर करने वालों में से नहीं हो। (राजेअ़ : 3665)

तश्रीह : टख़्नों से नीचे तहबन्द पाजामा लटकाना मर्द के लिये बुरा है क्योंकि ये तकब्बुर की निशानी है। गाहे किसी का तहबन्द यूँ ही बग़ैर ख़्याले तकब्बुर के लटक जाए तो अलग बात है मगर इस आदत से बचना लाज़िम है।

٥٦- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى:

﴿إِنَّ اللهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالإِحْسَانِ وَإِيتَاءِ

बाब 56 : अल्लाह तआ़ला का सूरह नह़ल में फ़र्माना, अल्लाह तआ़ला तुम्हें

इंसाफ़ और एहसान और रिश्तेदारों को देने का हुक्म देता है और

ذِي الْقُرْبَى وَيَنْهَى عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ﴾ وَقَوْلِهِ: ﴿إِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلَى أَنْفُسِكُمْ﴾ وَقَوْلِهِ: ﴿ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ لَيَنْصُرَنَّهُ اللهُ﴾ وَتَرْكِ إِثَارَةِ الشَّرِّ عَلَى مُسْلِمٍ أَوْ كَافِرٍ.

तुम्हें फ़ुहश, मुन्कर और बग़ावत से रोकता है वो तुम्हें नसीहत करता है, शायद कि तुम नसीहत हासिल करो, और अल्लाह तआला का सूरह यूनुस में फ़र्मान, बिला शुब्हा तुम्हारी सरकशी और ज़ुल्म तुम्हारे ही जानों पर आएगी, और अल्लाह तआला का सूरह हज्ज में फ़र्मान, फिर उस पर ज़ुल्म किया गया तो अल्लाह उसकी यक़ीनन मदद करेगा। और इस बाब में फ़साद भड़काने की बुराई का भी बयान है मुसलमान पर हो या क़ाफ़िर पर।

तशरीह: ये मतलब हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने जादू की नीचे की हदीष़ से निकाला कि आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत आइशा (रज़ि.) के जवाब में फ़र्माया था कि अल्लाह ने अब मुझको तो तंदुरुस्त कर दिया। अब मैंने फ़साद भड़काना और शोर फैलाना मुनासिब न समझा क्योंकि लुबैद बिन आस़म ने जादू किया था वो काफ़िर था मैं उसे शोहरत दूँ तो ख़तरा है कि लोग लुबैद को पकड़ें सज़ा दें ख़्वाह मख़्वाह शोरिश पैदा हो। इससे आँहज़रत (ﷺ) की अमनपसंदी ज़ाहिर है।

٦٠٦٣- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : مَكَثَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَذَا وَكَذَا يُخَيَّلُ إِلَيْهِ أَنَّهُ يَأْتِي أَهْلَهُ وَلاَ يَأْتِي قَالَتْ عَائِشَةُ: فَقَالَ لِي ذَاتَ يَوْمٍ: ((يَا عَائِشَةُ إِنَّ اللهَ تَعَالَى أَفْتَانِي فِي أَمْرٍ اسْتَفْتَيْتُهُ فِيهِ، أَتَانِي رَجُلاَنِ فَجَلَسَ أَحَدُهُمَا عِنْدَ رِجْلَيَّ، وَالآخَرُ عِنْدَ رَأْسِي فَقَالَ الَّذِي عِنْدَ رِجْلَيَّ لِلَّذِي عِنْدَ رَأْسِي: مَا بَالُ الرَّجُلِ؟ قَالَ: مَطْبُوبٌ، يَعْنِي مَسْحُورًا، قَالَ: وَمَنْ طَبَّهُ؟ قَالَ: لَبِيدُ بْنُ أَعْصَمَ، قَالَ: وَفِيمَ؟ قَالَ: فِي جُفِّ طَلْعَةٍ ذَكَرٍ فِي مُشْطٍ وَمُشَاطَةٍ تَحْتَ رَعُوفَةٍ فِي بِئْرِ ذَرْوَانَ))، فَجَاءَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ((هَذِهِ الْبِئْرُ الَّتِي أُرِيتُهَا كَأَنَّ رُؤُوسَ نَخْلِهَا رُؤُوسُ الشَّيَاطِينِ، وَكَأَنَّ مَاءَهَا نُقَاعَةُ

6063. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन उ़र्वा ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) इतने इतने दिनों तक इस हाल में रहे कि आपको ख़याल होता था कि जैसे आप अपनी बीवी के पास जा रहे हैं हालाँकि ऐसा नहीं था। हज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर आँहज़रत (ﷺ) ने मुझसे एक दिन फ़र्माया, आ़इशा! मैंने अल्लाह तआला से एक मामला में सवाल किया था और उसने वो बात मुझे बतला दी, दो फ़रिश्ते मेरे पास आए, एक मेरे पैरों के पास बैठ गया और दूसरा सर के पास बैठ गया। उसने उससे कहा कि जो मेरे सर के पास था इन स़ाहब (आँहज़रत ﷺ) का क्या हाल है? दूसरे ने जवाब दिया कि इन पर जादू कर दिया गया है। पूछा कि किसने इन पर जादू किया है? जवाब दिया कि लुबैद बिन आ़स़म ने। पूछा, किस चीज़ में किया है? जवाब दिया कि नर खजूर के ख़ोशे के ग़िलाफ़ में, उसके अंदर कँघी है और कत्तान के तार हैं और ये ज़रवान के कुएँ में एक चट्टान के नीचे दबा दिया है। उसके बाद आँहज़रत (ﷺ) तशरीफ़ ले गये और फ़र्माया कि यही वो कुआँ है जो मुझे ख़्वाब में दिखलाया गया था, उसके बाग़ के पेड़ों के पत्ते सांपों के फन जैसे डरावने मा'लूम होते हैं और इसका पानी मेहन्दी के

الْحِنَّاءِ)) فَأَمَرَ بِهِ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأُخْرِجَ قَالَتْ عَائِشَةُ : فَقُلْتُ : يَا رَسُولَ اللهِ فَهَلاَّ تَعْنِي تَنَشَّرْتَ؟ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَمَّا اللهُ فَقَدْ شَفَانِي، وَأَمَّا أَنَا فَأَكْرَهُ أَنْ أُثِيرَ عَلَى النَّاسِ شَرًّا)) قَالَتْ : وَلَبِيدُ بْنُ أَعْصَمَ رَجُلٌ مِنْ بَنِي زُرَيْقٍ حَلِيفٌ لِيَهُودَ.

[راجع: ٣١٧٥]

निचोड़े हुए पानी की त़रह़ सुर्ख़ था। फिर आँह़ज़रत (ﷺ) के हुक्म से वो जादू निकाला गया। ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! फिर क्यूँ नहीं, उनकी मुराद ये थी कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने इस वाक़िये को शोहरत क्यूँ न दी। इस पर आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुझे अल्लाह ने शिफ़ा दे दी है और मैं उन लोगों में ख़्वाह मख़्वाह बुराई के फैलाने को पसंद नहीं करता। आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि लुबैद बिन आ़सम यहूद के ह़लीफ़ बनी ज़ुरैक़ से ता'ल्लुक़ रखता था। (राजेअ़ : 3175)

अस़ल में कत्तान अलसी को कहते हैं इसके पेड़ का पोस्त लेकर उसमें रेशम की त़रह़ का तार निकालते हैं यहाँ वही तार मुराद हैं) बाब के आख़िरी जुम्ले का मक़्स़द इसी से निकलता है कि आपने एक काफ़िर के ऊपर ह़क़ीक़त के बावजूद बुराई को नहीं लादा बल्कि स़ब्र व शुक्र से काम लिया और उस बुराई को दबा दिया। शोरिश को बन्द कर दिया। (ﷺ)

٥٧- بَابُ مَا يُنْهَى عَنِ التَّحَاسُدِ وَالتَّدَابُرِ

وَقَوْلِهِ تَعَالَى ﴿وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ﴾

बाब 57 : ह़सद और पीठ पीछे बुराई की मुमानअ़त और अल्लाह तआ़ला का सूरह फ़लक़ में फ़र्मान, और ह़सद करने वाले की बुराई से तेरी पनाह चाहता हूँ या अल्लाह जब वो ह़सद करे

तह़ासुद और तदाबुर दोनों जानिब से हो या एक की त़रफ़ से हर ह़ाल बुरा है आयत का मफ़्हूम यही है और इसलिये यहाँ इमाम आ़ली मुक़ाम ने एक आयत को नक़ल किया है। (फ़तह़)

٦٠٦٤- حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ مُحَمَّدٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِيَّاكُمْ وَالظَّنَّ، فَإِنَّ الظَّنَّ أَكْذَبُ الْحَدِيثِ، وَلاَ تَحَسَّسُوا وَلاَ تَجَسَّسُوا وَلاَ تَحَاسَدُوا، وَلاَ تَدَابَرُوا وَلاَ تَبَاغَضُوا وَكُونُوا عِبَادَ اللهِ إِخْوَانًا)).

[راجع: ٥١٤٣]

6064. हमसे बिश्र बिन मुह़म्मद ने बयान किया, कहा हमको ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें हम्माम बिन मुनब्बा ने ख़बर दी और उन्हें ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया बदगुमानी से बचते रहो क्योंकि बदगुमानी की बातें अकष़र झूठी होती हैं, लोगों के ड़यूब तलाश करने के पीछे न पड़ो, आपस में ह़सद न करो, किसी की पीठ पीछे बुराई न करो, बुग़्ज़ न रखो, बल्कि सब अल्लाह के बन्दे आपस में भाई भाई बनकर रहो। (राजेअ़ : 5143)

तश्रीह : अल्लाह पाक हर मुसलमान को इस इर्शादे नबवी पर अ़मल की तौफ़ीक़ बख़्शे, आमीन। **तहस्ससू** और **तजस्ससू** दोनों में एक ता ह़ज़फ़ हो गई है, ख़त्ताबी ने इसका मत्‌लब बताया कि लोगों के ड़यूब की तलाश न करो, तहस्ससू का माद्दा ह़ासहू है मुत्लक़ तलाश के लिये भी ये इस्ते'माल किया जाता है जैसे आयत सूरह यूसुफ़ में ह़ज़रत यअ़क़ूब (अ़लैहि.) का क़ौल नक़ल हुआ है, **इज़्हब फतहस्ससू मिन यूसुफ़ व अखीहि** (यूसुफ़ : 87) जाओ यूसुफ़

और उसके भाई को तलाश करो। ज़न से बदगुमानी मुराद है या'नी बग़ैर तहक़ीक़ किये दिल में बदगुमानी बिठा लेना ये सच्चे मुसलमान का शैवा नहीं है।

6065. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया आपस में बुग़्ज़ न रखो, हसद न करो, पीठ पीछे किसी की बुराई न करो, बल्कि अल्लाह के बन्दे आपस में भाई भाई बनकर रहो और किसी मुसलमान के लिये जाइज़ नहीं कि एक भाई किसी भाई से तीन दिन से ज़्यादा सलाम कलाम छोड़कर रहे। (दीगर मक़ामात : 6076)

٦٠٦٥- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : حَدَّثَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لاَ تَبَاغَضُوا وَلاَ تَحَاسَدُوا وَلاَ تَدَابَرُوا وَكُونُوا عِبَادَ اللهِ إِخْوَانًا، وَلاَ يَحِلُّ لِمُسْلِمٍ أَنْ يَهْجُرَ أَخَاهُ فَوْقَ ثَلاَثَةِ أَيَّامٍ)). [طرفه في :٦٠٧٦].

तश्रीह : अल्लाह के महबूब रसूलुल्लाह (ﷺ) का ये वो मुक़द्दस वाज़ है, जो इस क़ाबिल है कि हर वक़्त याद रखा जाए और उस पर अमल किया जाए इस सूरत में यक़ीनन उम्मत का बेड़ा पार हो सकेगा। अल्लाह सबको ऐसी हिम्मत अता करे, आमीन।

बाब 58 : सूरह हुजुरात में अल्लाह का फ़र्मान ऐ ईमानवालों! बहुत सी बदगुमानियों से बचो, बेशक कुछ बदगुमानियाँ गुनाह होती हैं और किसी के उ़यूब की ढूँढ टटोल न करो। आख़िर आयत तक

٥٨- باب

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اجْتَنِبُوا كَثِيرًا مِنَ الظَّنِّ إِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ إِثْمٌ وَلاَ تَجَسَّسُوا﴾

6066. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक (रह.) ने ख़बर दी, अबुज़्ज़िनाद ने, उन्हें अअ़रज ने और उन्हें हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, **बदगुमानी से बचते रहो, बदगुमानी अकष़र तहक़ीक़ के बाद झूठी बात ष़ाबित होती है और किसी के उ़यूब तलाशने के पीछे न पड़ो, किसी का ऐ़ब ख़्वाह मख़्वाह मत टटोलो और किसी के भाव पर भाव न बढ़ाओ और हसद न करो, बुग़्ज़ न रखो, किसी की पीठ पीछे बुराई न करो बल्कि सब अल्लाह के बन्दे आपस में भाई भाई बनकर रहो।** (राजेअ़ : 5143)

٦٠٦٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَالِكٌ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِيَّاكُمْ وَالظَّنَّ، فَإِنَّ الظَّنَّ أَكْذَبُ الْحَدِيثِ، وَلاَ تَحَسَّسُوا وَلاَ تَجَسَّسُوا وَلاَ تَنَاجَشُوا، وَلاَ تَحَاسَدُوا وَلاَ تَبَاغَضُوا، وَلاَ تَدَابَرُوا، وَكُونُوا عِبَادَ اللهِ إِخْوَانًا)). [راجع: ٥١٤٣]

नजिश ये है कि एक चीज़ का ख़रीदना मंज़ूर न हो लेकिन दूसरे को धोखा देने के लिये झूठ से उसकी क़ीमत बढ़ाए। इसी तरह कोई भाई किसी चीज़ का भाव कर रहा है तो तुम उसमें दख़ल अंदाज़ी न करो।

बाब 59 : गुमान से कोई बात कहना

٥٩- باب مَا يَكُونُ مِنَ الظَّنِّ

6067. हमसे सईद बिन ऊ़फ़ैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने

٦٠٦٧- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عُفَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ

शिहाब ने, उनसे उ़र्वा ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मैं गुमान करता हूँ कि फ़लाँ और फ़लाँ हमारे दीन की कोई बात नहीं जानते हैं। लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया कि ये दोनों आदमी मुनाफ़िक़ थे। (दीगर मक़ामात : 6068)

عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَا أَظُنُّ فُلاَنًا وَفُلاَنًا يَعْرِفَانِ مِنْ دِينِنَا شَيْئًا)). قَالَ اللَّيْثُ: كَانَا رَجُلَيْنِ مِنَ الْمُنَافِقِينَ. [طرفه في : ٦٠٦٨].

ह़ाफ़िज़ ने कहा कि उन दोनों के नाम मुझको मा'लूम नहीं हुए।

6068. हमसे यह़्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने यही ह़दीष़ नक़ल की और (उसमें यूँ है कि) ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि एक दिन नबी करीम (ﷺ) मेरे यहाँ तशरीफ़ लाए और फ़र्माया, आ़इशा मैं गुमान करता हूँ कि फ़लाँ फ़लाँ लोग हम जिस दीन पर हैं उसको नहीं पहचानते। (राजेअ़ : 6067)

٦٠٦٨ - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ بِهَذَا، وَقَالَتْ : دَخَلَ عَلَيَّ النَّبِيُّ ﷺ يَوْمًا وَقَالَ: ((يَا عَائِشَةُ مَا أَظُنُّ فُلاَنًا وَفُلاَنًا يَعْرِفَانِ دِينَنَا الَّذِي نَحْنُ عَلَيْهِ)). [راجع: ٦٠٦٧]

ज़माना-ए-नबवी में मुनाफ़िक़ीन की एक जमाअ़त बहुत ही ख़तरनाक थी जो ऊपर से मुसलमान बनते और दिल से हर वक़्त मुसलमान का बुरा चाहते। ऐसे बदबख़्तों ने हमेशा इस्लाम को बहुत नुक़्सान पहुँचाया है, ऐसे लोग आजकल भी बहुत हैं इल्ला माशाअल्लाह।

बाब 60 : मोमिन के किसी ऐ़ब को छुपाना

٦٠ - باب سَتْرِ الْمُؤْمِنِ عَلَى نَفْسِهِ

6069. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने, उनसे उनके भतीजे इब्ने शिहाब ने, उनसे इब्ने शिहाब (मुहम्मद बिन मुस्लिम) ने, उनसे सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया कि मैंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया मेरी तमाम उम्मत को मुआ़फ़ किया जाएगा सिवा गुनाहों का खुल्लम खुल्ला करने वालों के और गुनाहों को खुल्लम खुल्ला करने में ये भी शामिल है कि एक शख़्स रात को कोई (गुनाह का) काम करे और उसके बावजूद कि अल्लाह ने उसके गुनाह को छुपा दिया है मगर सुबह़ होने पर वो कहने लगे कि ऐ फ़लाँ! मैंने कल रात फ़लाँ फ़लाँ बुरा काम किया था। रात गुज़र गई थी और उसके रब ने उसका गुनाह छुपाए रखा, लेकिन जब सुबह़ हुई तो वो ख़ुद अल्लाह के पर्दे को खोलने लगा।

٦٠٦٩ - حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، عَنِ ابْنِ أَخِي ابْنِ شِهَابٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللهِ قَالَ : سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ يَقُولُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((كُلُّ أُمَّتِي مُعَافًى، إِلاَّ الْمُجَاهِرِينَ وَإِنَّ مِنَ الْمَجَانَةِ أَنْ يَعْمَلَ الرَّجُلُ بِاللَّيْلِ عَمَلاً، ثُمَّ يُصْبِحَ وَقَدْ سَتَرَهُ اللهُ فَيَقُولَ: يَا فُلاَنُ عَمِلْتُ الْبَارِحَةَ كَذَا وَكَذَا و قَدْ بَاتَ يَسْتُرُهُ رَبُّهُ وَيُصْبِحُ يَكْشِفُ سِتْرَ اللهِ عَنْهُ)).

6070. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़वाना ने, उन्होंने क़तादा से, उन्होंने स़फ़्वान बिन मुह़रिज़ से, एक शख़्स ने इब्ने उ़मर (रज़ि.) से पूछा तुमने आँह़ज़रत (ﷺ)

٦٠٧٠ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ صَفْوَانَ بْنِ مُحْرِزٍ أَنَّ رَجُلاً سَأَلَ ابْنَ عُمَرَ كَيْفَ سَمِعْتَ

رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ فِي النَّجْوَى؟ قَالَ: ((يَدْنُو أَحَدُكُمْ مِنْ رَبِّهِ حَتَّى يَضَعَ كَنَفَهُ عَلَيْهِ فَيَقُولُ : عَلِمْتَ كَذَا وَكَذَا فَيَقُولُ: نَعَمْ. فَيُقَرِّرُهُ ثُمَّ يَقُولُ: إِنِّي سَتَرْتُ عَلَيْكَ فِي الدُّنْيَا فَأَنَا أَغْفِرُهَا لَكَ الْيَوْمَ)).

[راجع: ٢٤٤١]

से कानाफूसी के बाब में क्या सुना है? (या'नी सरगोशी के बाब में) उन्होंने कहा आँहज़रत (ﷺ) फ़र्माते थे (क़यामत के दिन तुम मुसलमानों) में से एक शख़्स (जो गुनाहगार होगा) अपने परवरदिगार से नज़दीक हो जाएगा। परवरदिगार अपना बाज़ू उस पर रख देगा और फ़र्माएगा तूने (फ़ला दिन दुनिया में) ये ये बुरे काम किये थे, वो अ़र्ज़ करेगा। बेशक (परवरदिगार मुझसे ख़ताएँ हुई हैं पर तू ग़फ़ूरुर्रहीम है) ग़र्ज़ (सारे गुनाहों का) उससे (पहले) इक़रार करा लेगा फिर फ़र्माएगा देख मैंने दुनिया में तेरे गुनाह छुपाए रखे तो आज मैं उनके गुनाहों को बख़्श देता हूँ। (राजेअ़ : 2441)

तश्रीह : अल्लाह का एक नाम सित्तीर भी है, या'नी गुनाहों का छुपा लेने वाला, दुनिया और आख़िरत में वो बहुत से बन्दों के गुनाहों को छुपा लेता है। बिऔनिल्लाहि मिन्हुम, आमीन।

मषल मशहूर है कि एक तो चोरी करे ऊपर से सीना ज़ोरी करे। अगर आदमी से कोई गुनाह सरज़द हो जाए तो उसे छुपा कर रखे, शर्मिन्दा हो, अल्लाह से तौबा करे, न ये कि एक एक से कहता फिरे कि मैंने फ़लाँ गुनाह किया है, ये तो बेहयाई और बेबाकी है।

ये ह़दीष भी उन अह़ादीष में से है। इसमें अल्लाह के लिये कतिफ़ बाज़ू षाबित किया गया है, जैसे समअ़ और बस़र और यद और ऐन और वज्ह वग़ैरह। अहले ह़दीष इसकी तावील नहीं करते और यही मसलक ह़क़ है, तावील करने वाले कहते हैं कि कतिफ़ से ह़िजाबे रह़मत मुराद है या'नी अल्लाह उसे अपने साये आतिफ़त में छुपा लेगा मगर ये तावील करना ठीक नहीं है, कतिफ़ के मा'नी बाज़ू के हैं।

बाब 61 : ग़ुरूर, घमण्ड और तकब्बुर की बुराई

٦١- باب الْكِبْرِ

وَقَالَ مُجَاهِدٌ ﴿ثَانِي عِطْفِهِ﴾ مُسْتَكْبِرًا فِي نَفْسِهِ. عِطْفِهِ. رَقَبَتِهِ.

और मुजाहिद ने कहा कि (सूरह ह़िज्र में) षानी इत्फ़िही से मग़रूर मुराद है, इत्फ़िही या'नी घमण्ड से गर्दन मोड़ने वाले।

٦٠٧١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا مَعْبَدُ بْنُ خَالِدٍ الْقَيْسِيُّ، عَنْ حَارِثَةَ بْنِ وَهْبٍ الْخُزَاعِيِّ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((أَلاَ أُخْبِرُكُمْ بِأَهْلِ الْجَنَّةِ كُلُّ ضَعِيفٍ مُتَضَاعِفٍ، لَوْ أَقْسَمَ عَلَى اللهِ لأَبَرَّهُ أَلاَ أُخْبِرُكُمْ بِأَهْلِ النَّارِ؟ كُلُّ عُتُلٍّ جَوَّاظٍ مُسْتَكْبِرٍ)). [راجع: ٤٩١٨]

6071. हमसे मुह़म्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको सुफ़यान बिन उ़ययना ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमसे मअ़बद बिन ख़ालिद ने बयान किया, उनसे ह़ारिषा बिन वहब ख़ुज़ाई (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया क्या मैं तुम्हें जन्नत वालों की ख़बर न दूँ। हर कमज़ोर व तवाजोअ़ करने वाला अगर वो (अल्लाह का नाम लेकर) क़सम खा ले तो अल्लाह की क़सम को पूरी कर दे। क्या मैं तुम्हें दोज़ख़ वालों की ख़बर न दूँ। हर तुंदख़ू, अकड़कर चलने वाला और मुतकब्बिर। (राजेअ़ : 4918)

٦٠٧٢- وَقَالَ مُحَمَّدُ بْنُ عِيسَى: حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، أَخْبَرَنَا حُمَيْدٌ الطَّوِيلُ، حَدَّثَنَا أَنَسُ

6072. और मुह़म्मद बिन ईसा ने बयान किया कि हमसे हुशैम ने बयान किया, कहा हमको हुमैद त़वील ने ख़बर दी,

कहा हमसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) के अख़्लाक़े फ़ाज़िला का ये ह़ाल था कि एक लौण्डी मदीना की लौण्डियों मे से आपका हाथ पकड़ लेती और अपने किसी भी काम के लिये जहाँ चाहती आपको ले जाती थी। (राजेअ़ : 3503)

بْنُ مَالِكٍ قَالَ: كَانَتِ الأَمَةُ مِنْ إِمَاءِ أَهْلِ الْمَدِينَةِ لَتَأْخُذُ بِيَدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَتَنْطَلِقُ بِهِ حَيْثُ شَاءَتْ. [راجع: ٣٥٠٣]

आप उसके साथ चले जाते इंकार न करते।

बाब 62 : तर्के मुलाक़ात करने का बयान और रसूलुल्लाह (ﷺ) का ये फ़र्मान,

٦٢- باب الْهِجْرَةِ

कि किसी शख़्स के लिये ये जाइज़ नहीं कि अपने किसी मुसलमान भाई को तीन रात से ज़्यादा छोड़े रखे। (उसमें मिलाप करने की ताकीद है)

وَقَوْلِ رَسُولِ اللهِ ﷺ: ((لاَ يَحِلُّ لِرَجُلٍ أَنْ يَهْجُرَ أَخَاهُ فَوْقَ ثَلاَثٍ)).

तश्रीह : यहाँ दुनियावी झगड़ों की बिना पर मुलाक़ात को छोड़ना मुराद है। वैसे फ़ुस्साक़ फ़ुज्जार और अहले बिदअ़त से तर्के मुलाक़ात करना जब तक वो तौबा न करें दुरुस्त है। सुल्तानुल मशाइख़ ह़ज़रत निज़ामुद्दीन औलिया देहलवी ह़ज़रत मौलाना ज़ियाउद्दीन सनामी की अ़यादत को गये जो सख़्त बीमार थे और इत्तिलाअ़ कराई। मौलाना ने फ़र्माया कि मैं बिदअ़ती फ़क़ीरों से नहीं मिलता हूँ चूँकि ह़ज़रत सुल्तानुल मशाइख़ कभी-कभी सिमाअ़ में शरीक रहते और मौलाना उसको बिदअ़त और नाजाइज़ समझते थे। ह़ज़रत सुल्तानुल मशाइख़ ने कहा मौलाना से अ़र्ज़ करो मैंने सिमाअ़ से तौबा कर ली है। ये सुनते ही मौलाना ने फ़र्माया मेरे सर का अ़मामा उतारकर बिछा दो और सुल्ताने मशाइख़ से कहो कि उस पर पैर रखते हुए तशरीफ़ लावें मा'लूम हुआ कि अल्लाह वाले उ़लमा-ए-दीन ने हमेशा बिदअ़तियों से तर्के मुलाक़ात किया है और ह़दीष़ **अल्हुब्बु लिल्लाहि वल्बुग़्ज़ू लिल्लाहि** का यही मफ़्हूम है। वल्लाहु आ़लम (वह़ीदी)

6075, 6073. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने, कहा मुझसे औ़फ़ बिन मालिक बिन तुफ़ैल ने बयान किया, वो रसूलुल्लाह (ﷺ) की ज़ोजा मुत़ह्हरा आ़इशा (रज़ि.) के मादरी भतीजे थे, उन्होंने कहा कि आ़इशा (रज़ि.) ने कोई चीज़ भेजी या ख़ैरात की तो अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर जो उनके भांजे थे कहने लगे कि आ़इशा (रज़ि.) को ऐसे मामलों से बाज़ रहना चाहिये नहीं तो अल्लाह की क़सम मैं उनके लिये ह़िज्र का हुक्म जारी कर दूँगा। उम्मुल मोमिनीन ने कहा क्या उसने ये अल्फ़ाज़ कहे हैं? लोगों ने बताया कि जी हाँ। फ़र्माया फिर मैं अल्लाह से नज़्र करती हूँ कि इब्ने ज़ुबैर (रज़ि.) से अब कभी नहीं बोलूँगी। उसके बाद जब उनके क़त्अ ता'ल्लुक़ पर अ़र्सा गुज़र गया। तो अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) के लिये उनसे सिफ़ारिश की गई (कि उन्हें मुआ़फ़ फ़र्मा दें) उम्मुल मोमिनीन ने कहा हर्गिज़ नहीं अल्लाह की क़सम उसके बारे में कोई सिफ़ारिश नहीं मानूँगी और अपनी नज़्र नहीं तोड़ूँगी।

٦٠٧٣، ٦٠٧٤، ٦٠٧٥- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: حَدَّثَنَا عَوْفُ بْنُ مَالِكِ بْنِ الطُّفَيْلِ هُوَ ابْنُ الْحَارِثِ وَهُوَ ابْنُ أَخِي عَائِشَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لأُمِّهَا أَنَّ عَائِشَةَ حُدِّثَتْ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ الزُّبَيْرِ قَالَ فِي بَيْعٍ أَوْ عَطَاءٍ أَعْطَتْهُ عَائِشَةُ، وَاللهِ لَتَنْتَهِيَنَّ عَائِشَةُ أَوْ لأَحْجُرَنَّ عَلَيْهَا فَقَالَتْ : أَهُوَ قَالَ هَذَا؟ قَالُوا: نَعَمْ. قَالَتْ : هُوَ للهِ عَلَيَّ نَذْرٌ أَنْ لاَ أُكَلِّمَ ابْنَ الزُّبَيْرِ أَبَدًا فَاسْتَشْفَعَ ابْنُ الزُّبَيْرِ إِلَيْهَا حِينَ طَالَتِ الْهِجْرَةُ، فَقَالَتْ : لاَ وَاللهِ لاَ أُشَفِّعُ فِيهِ أَبَدًا، وَلاَ أَتَحَنَّثُ إِلَى نَذْرِي فَلَمَّا طَالَ ذَلِكَ عَلَى

ابْنِ الزُّبَيْرِ كَلَّمَ الْمِسْوَرَ بْنَ مَخْرَمَةَ، وَعَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنَ الأَسْوَدِ عَبْدِ يَغُوثَ، وَهُمَا مِنْ بَنِي زُهْرَةَ وَقَالَ لَهُمَا: أَنْشُدُكُمَا بِاللهِ لَمَّا أَدْخَلْتُمَانِي عَلَى عَائِشَةَ فَإِنَّهَا لاَ يَحِلُّ لَهَا أَنْ تَنْذِرَ قَطِيعَتِي فَأَقْبَلَ بِهِ الْمِسْوَرُ وَعَبْدُ الرَّحْمَنِ مُشْتَمِلَيْنِ بِأَرْدِيَتِهِمَا حَتَّى اسْتَأْذَنَا عَلَى عَائِشَةَ فَقَالاَ: السَّلاَمُ عَلَيْكِ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ، أَنَدْخُلُ؟ قَالَتْ عَائِشَةُ: ادْخُلُوا، قَالُوا: كُلُّنَا قَالَتْ: نَعَمْ ادْخُلُوا كُلُّكُمْ، وَلاَ تَعْلَمُ أَنَّ مَعَهُمَا ابْنَ الزُّبَيْرِ، فَلَمَّا دَخَلُوا دَخَلَ ابْنُ الزُّبَيْرِ الْحِجَابَ فَاعْتَنَقَ عَائِشَةَ وَطَفِقَ يُنَاشِدُهَا وَيَبْكِي، وَطَفِقَ الْمِسْوَرُ وَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ يُنَاشِدَانِهَا إِلاَّ مَا كَلَّمَتْهُ، وَقَبِلَتْ مِنْهُ وَيَقُولاَنِ : إِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى عَمَّا قَدْ عَلِمْتِ مِنَ الْهِجْرَةِ، فَإِنَّهُ لاَ يَحِلُّ لِمُسْلِمٍ أَنْ يَهْجُرَ أَخَاهُ فَوْقَ ثَلاَثِ لَيَالٍ، فَلَمَّا أَكْثَرُوا عَلَى عَائِشَةَ مِنَ التَّذْكِرَةِ وَالتَّحْرِيجِ طَفِقَتْ تُذَكِّرُهُمَا وَتَبْكِي وَتَقُولُ: إِنِّي نَذَرْتُ، وَالنَّذْرُ شَدِيدٌ فَلَمْ يَزَالاَ بِهَا حَتَّى كَلَّمَتِ ابْنَ الزُّبَيْرِ وَأَعْتَقَتْ فِي نَذْرِهَا ذَلِكَ أَرْبَعِينَ رَقَبَةً، وَكَانَتْ تَذْكُرُ نَذْرَهَا بَعْدَ ذَلِكَ فَتَبْكِي حَتَّى تَبُلَّ دُمُوعُهَا خِمَارَهَا.

जब ये क़त्अ ता'ल्लुक़ अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) के लिये बहुत तकलीफ़देह हो गया तो उन्हों ने मिस्वर बिन मख़रमा और अ़ब्दुर्रहमान बिन अस्वद बिन अ़ब्दे यग़ूष़ (रज़ि.) से इस सिलसिले में बात की वो दोनों बनी ज़ुहरा से ता'ल्लुक़ रखते थे। उन्होंने उनसे कहा कि मैं तुम्हें अल्लाह का वास्ता देता हूँ किसी तरह तुम लोग मुझे आइशा (रज़ि.) के हुज्रे में दाख़िल करा दो क्योंकि उनके लिये ये जाइज़ नहीं कि मेरे साथ सिलारहमी को तोड़ने की क़सम खाएँ चुनाँचे मिस्वर और अ़ब्दुर्रहमान दोनों अपनी चादरों में लिपटे हुए अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) को उसमें साथ लेकर आए और आइशा (रज़ि.) से अंदर आने की इजाज़त चाही और अ़र्ज़ की अस्सलामुअलैकुम व रह़मतुल्लाहि व बरकातुहू, क्या हम अंदर आ सकते हैं ? आइशा (रज़ि.) ने कहा आ जाओ। उन्होंने अ़र्ज़ किया हम सब? कहा हाँ! सब आ जाओ। उम्मुल मोमिनीन को इसका इल्म नहीं था कि अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) भी उनके साथ हैं। जब ये अंदर गये तो अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) पर्दा हटाकर अंदर चले गये और उम्मुल मोमिनीन (रज़ि.) से लिपटकर अल्लाह का वास्ता देने लगे और रोने लगे (कि मुआ़फ़ कर दें, ये उम्मुल मोमिनीन के भांजे थे) मिस्वर और अ़ब्दुर्रहमान भी उम्मुल मोमिनीन को अल्लाह का वास्ता देने लगे कि अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) से बोलें और उन्हें मुआ़फ़ कर दें? उन ह़ज़रात ने ये भी अ़र्ज़ किया कि जैस कि तुमको मा'लूम है नबी (ﷺ) ने ता'ल्लुक़ तोड़ने से मना किया है कि किसी मुसलमान के लिये जाइज़ नहीं कि किसी अपने भाई से तीन दिन से ज़्यादा वाली ह़दीष़ याद दिलाने लगे और ये कि उसमें नुक़्सान है तो उम्मुल मोमिनीन भी उन्हें याद दिलाने लगीं और रोने लगीं और फ़र्माने लगीं कि मैंने तो क़सम खा ली है? और क़सम का मामला सख़्त है लेकिन ये बुज़ुर्ग लोग बराबर कोशिश करते रहे, यहाँ तक कि उम्मुल मोमिनीन ने अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) से बात कर ली और अपनी क़सम (तोड़ने) की वजह से चालीस ग़ुलाम आज़ाद किये। उसके बाद जब भी आप ये क़सम याद करतीं तो रोने लगतीं और आपका दुपट्टा आंसओं से तर हो जाता।

तश्रीह: (ह़िज्र के मा'नी ये कि ह़ाकिम किसी शख़्स को कम अ़क़्ल या नाक़ाबिल समझकर ये हुक्म दे दे कि उसका कोई तसर्रुफ़ बेअ़ हिबा वग़ैरह नाफ़िज़ न होगा) इसी ह़दीष़ से बहुत से मसाइल का ष़ुबूत निकलता है और ये

भी कि आँहज़रत (ﷺ) की अज़्वाजे मुतह्हरात पर्दे के साथ ग़ैर महरम मर्दों से बवक़्ते ज़रूरत बात कर लेती थीं और पर्दे के साथ उन लोगों को घर में बुला लेती थीं। ये भी षाबित हुआ कि दो बिगड़े हुए दिलों को जोड़ने के लिये हर मुनासिब तदबीर करनी चाहिये और ये भी कि ग़लत क़सम को कफ़्फ़ारा अदा करके तोड़ना ही ज़रूरी है वग़ैरह वग़ैरह **फहिज्रतुहा मिन्हु कानत तादीबल्लहू व हाज़ा मिम बाबि इबाहतिल्हिज्रानि लिमन अ़सा** में हज़रत आइशा (रज़ि.) का ये तर्के ता'ल्लुक़ अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) के लिये ता'लीम व तादीब के लिये था और गुनहगारों से ऐसा तर्के ता'ल्लुक़ मुबाह है।

٦٠٧٦- حدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَالِكٌ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لاَ تَبَاغَضُوا وَلاَ تَحَاسَدُوا وَلاَ تَدَابَرُوا وَكُونُوا عِبَادَ اللهِ إِخْوَانًا، وَلاَ يَحِلُّ لِمُسْلِمٍ أَنْ يَهْجُرَ أَخَاهُ فَوْقَ ثَلاَثِ لَيَالٍ)).

[راجع: ٦٠٦٥]

6076. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा उन्हें इमाम मालिक (रज़ि.) ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, आपस में बुग़्ज़ न रखो और एक दूसरे से हसद न करो, पीठ पीछे किसी की बुराई न करो, बल्कि अल्लाह के बन्दे और आपस में भाई भाई बनकर रहो और किसी मुसलमान के लिये ज़ाइज़ नहीं कि किसी भाई से तीन दिन से ज़्यादा तक बातचीत बन्द करे। (राजेअ़ : 6065)

٦٠٧٧- حدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَالِكٌ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَزِيدَ اللَّيْثِيِّ، عَنْ أَبِي أَيُّوبَ الأَنْصَارِيِّ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لاَ يَحِلُّ لِرَجُلٍ أَنْ يَهْجُرَ أَخَاهُ فَوْقَ ثَلاَثٍ، يَلْتَقِيَانِ فَيُعْرِضُ هَذَا وَيُعْرِضُ هَذَا وَخَيْرُهُمَا الَّذِي يَبْدَأُ بِالسَّلاَمِ)).

[طرفه في: ٦٢٣٧].

6077. हमसे अ़ब्दुर्रहमान बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक (रज़ि.) ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें अ़ता बिन यज़ीद लैषी ने और उन्हें हज़रत अबू अय्यूब अंसारी (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया किसी शख़्स के लिये जाइज़ नहीं कि अपने किसी भाई से तीन दिन से ज़्यादा के लिये मुलाक़ात छोड़े, इस तरह कि जब दोनों का सामना हो जाए तो ये भी मुँह फेर ले और वो भी मुँह फेर ले और उन दोनों में बेहतर वो है जो सलाम में पहल करे। (दीगर मक़ामात : 6237)

तश्रीह : इसके बाद अगर वो फ़रीक़े षानी बातचीत न करे सलाम का जवाब न दे तो वो गुनाहगार रहेगा और ये शख़्स गुनाह से बच जाएगा। क़ुर्आन की आयत **इदफ़अ़ बिल्लती हिय अहसनु** का यही मतलब है कि बाहमी नाचाक़ी को भले तरीक़े पर ख़त्म कर देना ही बेहतर है। अल्लाह पाक हर मुसलमान को ये आयत याद रखने की तौफ़ीक़ दे।

٦٣- باب مَا يَجُوزُ مِنَ الْهِجْرَانِ لِمَنْ عَصَى

बाब 63 : नाफ़र्मानी करने वाले से ता'ल्लुक़ तोड़ने का जवाज़

وَقَالَ كَعْبٌ حِينَ تَخَلَّفَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ وَنَهَى النَّبِيُّ ﷺ الْمُسْلِمِينَ عَنْ كَلاَمِنَا وَذَكَرَ خَمْسِينَ لَيْلَةً.

हज़रत कअ़ब (रज़ि.) ने बयान किया कि जब वो नबी करीम (ﷺ) के साथ (ग़ज़्वा-ए-तबूक़ में) शरीक नहीं हुए थे तो नबी करीम (ﷺ) ने हमसे बातचीत करने से मुसलमानों को रोक दिया था और आपने पचास दिन का तज़्किरा किया।

अगर कोई शख़्स गुनाह का मुर्तकिब हो तो (तौबा करने तक) उसकी मुलाक़ात छोड़ देना जाइज़ है।

6078. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमको अब्दह बिन सुलैमान ने ख़बर दी, उन्हे हिशाम बिन उर्वा ने, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया मैं तुम्हारी नाराज़गी और ख़ुशी को ख़ूब पहचानता हूँ। उम्मुल मोमिनीन ने बयान किया कि मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! आप किस तरह से पहचानते हैं? फ़र्माया कि जब तुम ख़ुश होती हो कहती हो, हाँ मुहम्मद के रब की क़सम! और जब नाराज़ होती हो तो कहती हो नहीं, इब्राहीम के रब की क़सम! बयान किया कि मैंने अर्ज़ किया, जी हाँ! आपका फ़र्माना बिलकुल सहीह है। मैं सिर्फ़ आपका नाम लेना छोड़ देती हूँ। (राजेअ : 5228)

٦٠٧٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدَةُ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنِّي لأَعْرِفُ غَضَبَكِ وَرِضَاكِ)). قَالَتْ: قُلْتُ وَكَيْفَ تَعْرِفُ ذَاكَ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: ((إِنَّكِ إِذَا كُنْتِ رَاضِيَةً قُلْتِ: بَلَى وَرَبِّ مُحَمَّدٍ، وَإِذَا كُنْتِ سَاخِطَةً قُلْتِ: لاَ وَرَبِّ إِبْرَاهِيمَ)) قَالَتْ: قُلْتُ أَجَلْ لاَ أَهْجُرُ إِلاَّ اسْمَكَ.

[راجع: ٥٢٢٨]

तशरीह : बाक़ी दिल से आपकी मुहब्बत नहीं जाती। बाब का तर्जुमा से मुताबक़त यूँ हुई कि जब हदीष से बेगुनाह ख़फ़ा रहना जाइज़ हुआ तो गुनाह की वजह से ख़फ़ा रहना बतरीक़े औला जाइज़ होगा।

बाब 64 : क्या अपने साथी की मुलाक़ात के लिये हर दिन जा सकता है या सुबह व शाम ही के औक़ात में जाए

٦٤- باب هَلْ يَزُورُ صَاحِبَهُ كُلَّ يَوْمٍ، أَوْ بُكْرَةً وَعَشِيًّا؟

6079. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम बिन उर्वा ने ख़बर दी, उन्हें मअमर ने, उनसे ज़ुहरी ने (दूसरी सनद) और लैष बिन सअद ने बयान किया कि मुझे अक़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्हें उर्वा बिन ज़ुबैर ने ख़बर दी और उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतहहरा आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब मैंने होश सम्भाला तो जिसमे रसूलुल्लाह (ﷺ) उनके पास सुबह व शाम तशरीफ़ न लाते हों, एक दिन अबूबक्र (रज़ि.) (वालिद माजिद) के घर में भरी दोपहर में बैठे हुए थे कि एक शख़्स ने कहा ये रसूलुल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ ला रहे हैं, ये ऐसा वक़्त था कि उस वक़्त हमारे यहाँ आँहज़रत (ﷺ) के आने का मा'मूल न था, अबूबक्र (रज़ि.) बोले कि इस वक़्त आँहज़रत (ﷺ) का तशरीफ़ लाना किसी ख़ास वजह ही से हो सकता है, फिर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया मुझे मक्का छोड़ने की इजाज़त मिल गई है। (राजेअ : 476)

٦٠٧٩- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى، أَخْبَرَنَا هِشَامٌ، عَنْ مَعْمَرٍ ح وَقَالَ اللَّيْثُ: حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ قَالَ ابْنُ شِهَابٍ: فَأَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّ عَائِشَةَ زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ: لَمْ أَعْقِلْ أَبَوَيَّ إِلاَّ وَهُمَا يَدِينَانِ الدِّينَ وَلَمْ يَمُرَّ عَلَيْهِمَا يَوْمٌ إِلاَّ يَأْتِينَا فِيهِ رَسُولُ اللهِ ﷺ طَرَفَيِ النَّهَارِ بُكْرَةً وَعَشِيَّةً، فَبَيْنَمَا نَحْنُ جُلُوسٌ فِي بَيْتِ أَبِي بَكْرٍ فِي نَحْرِ الظَّهِيرَةِ، قَالَ قَائِلٌ هَذَا رَسُولُ اللهِ ﷺ فِي سَاعَةٍ لَمْ يَكُنْ يَأْتِينَا فِيهَا، قَالَ أَبُو بَكْرٍ، مَا جَاءَ بِهِ فِي هَذِهِ السَّاعَةِ إِلاَّ أَمْرٌ؟ قَالَ : ((إِنِّي قَدْ أُذِنَ لِي بِالْخُرُوجِ)). [راجع: ٤٧٦]

तश्रीह : उसके बाद हिजरत का वाक़िया पेश आया। हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) ने दो ऊँट ख़ास इस मक़्सद के लिये खिला पिलाकर तैयार कर रखे थे, रात के अंधेरे में आप दोनों सवार होकर एक ग़ुलाम को साथ लेकर घर से निकल पड़े और रात को ग़ारे ष़ौर में क़याम फ़र्माया जहाँ तीन रात आप क़याम पज़ीर रहे, यहाँ से बाद में चलकर मदीना पहुँचे। ये हिजरत का वाक़िया इस्लाम में इस क़दर अहमियत रखता है कि सन हिजरी इसी से शुरू किया गया।

बाब 65 : मुलाक़ात के लिये जाना और जो लोगों से मुलाक़ात के लिये गया

और उन्हीं के यहाँ खाना खाया तो जाइज़ है। हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़ि.) हज़रत अबू दर्दा (रज़ि.) से मुलाक़ात के लिये उनके यहाँ गये और उन्हीं के यहाँ खाना खाया।

6080. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल वह्हाब ष़क़फ़ी ने ख़बर दी, उन्हें ख़ालिद हज़्ज़ाअ ने, उन्हें अनस बिन सीरीन ने और उन्हें अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) क़बीला अंसार के घराने में मुलाक़ात के लिये तशरीफ़ ले गये और उन्हीं के यहाँ खाना खाया, जब आप वापस तशरीफ़ लाने लगे तो आपके हुक्म से एक चटाई पर पानी छिड़का गया और आँहज़रत (ﷺ) ने उस पर नमाज़ पढ़ी और घर वालों के लिये दुआ की।
(राजेअ : 670)

٦٥- باب الزِّيَارَةِ

وَمَنْ زَارَ قَوْمًا فَطَعِمَ عِنْدَهُمْ، وَزَارَ سَلْمَانُ أَبَا الدَّرْدَاءِ فِي عَهْدِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَكَلَ عِنْدَهُ.

٦٠٨٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلاَمٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ، عَنْ خَالِدٍ الْحَذَّاءِ، عَنْ أَنَسِ بْنِ سِيرِينَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ زَارَ أَهْلَ بَيْتٍ فِي الأَنْصَارِ فَطَعِمَ عِنْدَهُمْ طَعَامًا، فَلَمَّا أَرَادَ أَنْ يَخْرُجَ أَمَرَ بِمَكَانٍ مِنَ الْبَيْتِ، فَنُضِحَ لَهُ عَلَى بِسَاطٍ فَصَلَّى عَلَيْهِ وَدَعَا لَهُمْ.
[راجع: ٦٧٠]

तश्रीह : ये उ़त्बान बिन मालिक का घर था कुछ ने कहा कि उम्मे सुलैम का घर था और आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत अनस (रज़ि.) के लिये दुआ फ़र्माई थी जैसे कि ऊपर गुज़र चुका है।

बाब 66 : जब दूसरे मुल्क के वफ़ूद मुलाक़ात को आएँ तो उनके लिये अपने आपको आरास्ता करना

٦٦- باب مَنْ تَجَمَّلَ لِلْوُفُودِ

6081. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुस्समद बिन अ़ब्दुल वारिष़ ने, कहा कि मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, कहा कि मुझसे यह्या बिन अबी इस्हाक़ ने, कहा कि मुझसे सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह ने पूछा कि इस्तबरक़ क्या चीज़ है? मैंने कहा कि दीबा से बना हुआ दबीज़ और ख़ुरदुरा कपड़ा फिर उन्होंने बयान किया कि मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि उ़मर (रज़ि.) ने एक शख़्स को इस्तबरक़ का जोड़ा पहने हुए देखा तो नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में उसे लेकर हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! इसे आप ख़रीद लें और

٦٠٨١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ، قَالَ : حَدَّثَنِي أَبِي، قَالَ: حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ : قَالَ لِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللهِ: مَا الإِسْتَبْرَقُ؟ قُلْتُ : مَا غَلُظَ مِنَ الدِّيبَاجِ وَخَشُنَ مِنْهُ، قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ يَقُولُ: رَأَى عُمَرُ عَلَى رَجُلٍ حُلَّةً مِنْ إِسْتَبْرَقٍ فَأَتَى بِهَا النَّبِيَّ

वफ़द जब आपसे मुलाक़ात के लिये आएँ तो उनकी मुलाक़ात के वक़्त इसे पहन लिया करें। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि रेशम तो वही पहन सकता है जिसका (आख़िरत में) कोई हिस्सा न हो ख़ैर इस बात पर एक मुद्दत गुज़र गई फिर ऐसा हुआ कि एक दिन आँहज़रत (ﷺ) ने ख़ुद उन्हें एक जोड़ा भेजा तो वो उसे लेकर आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया आँहज़रत (ﷺ) ने ये जोड़ा मेरे लिये भेजा है, हालाँकि इसके बारे में आप इससे पहले ऐसा इर्शाद फ़र्मा चुके हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये मैंने तुम्हारे पास इसलिये भेजा है ताकि तुम इसके ज़रिये (बेचकर) माल हासिल करो। चुनाँचे इब्ने उमर (रज़ि.) इसी हदीष़ की वजह से कपड़े में (रेशम के) बेल-बूटों को भी मकरूह जानते थे। (राजेअ : 886)

صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ اشْتَرِ هَذِهِ فَالْبَسْهَا لِوَفْدِ النَّاسِ إِذَا قَدِمُوا عَلَيْكَ؟ فَقَالَ: ((إِنَّمَا يَلْبَسُ الْحَرِيرَ مَنْ لاَ خَلاَقَ لَهُ)) فَمَضَى فِي ذَلِكَ مَا مَضَى ثُمَّ إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ بَعَثَ إِلَيْهِ بِحُلَّةٍ فَأَتَى بِهَا النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: بَعَثْتَ إِلَيَّ بِهَذِهِ وَقَدْ قُلْتَ فِي مِثْلِهَا مَا قُلْتَ قَالَ: ((إِنَّمَا بَعَثْتُ إِلَيْكَ لِتُصِيبَ بِهَا مَالاً)) فَكَانَ ابْنُ عُمَرَ يَكْرَهُ الْعَلَمَ فِي الثَّوْبِ لِهَذَا الْحَدِيثِ. [راجع: ٨٨٦]

हदीष़ और बाब में मुताबक़त ज़ाहिर है।

बाब 67 : किसी से भाईचारा और दोस्ती का इक़रार करना

٦٧- باب الإِخَاءِ وَالْحِلْفِ

और अबू जुहैफ़ह (वहब बिन अ़ब्दुल्लाह) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने सलमान और अबू दर्दा को भाई भाई बना दिया था और अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने बयान किया कि जब हम मदीना मुनव्वरह आए तो नबी करीम (ﷺ) ने मेरे और सअ़द बिन रबीअ़ के दरम्यान भाईचारगी कराई थी।

وَقَالَ أَبُو جُحَيْفَةَ: آخَى النَّبِيُّ ﷺ بَيْنَ سَلْمَانَ وَأَبِي الدَّرْدَاءِ. وَقَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ: لَمَّا قَدِمْنَا الْمَدِينَةَ آخَى النَّبِيُّ ﷺ بَيْنِي وَبَيْنَ سَعْدِ بْنِ الرَّبِيعِ.

6082. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे यहया बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे हुमैद तवील ने और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि जब अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ हमारे यहाँ आए तो नबी करीम (ﷺ) ने उनमें और सअ़द बिन रबीअ़ में भाईचारगी कराई तो फिर (जब अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने निकाह किया तो) आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अब वलीमा कर ख़्वाह एक बकरी का हो। (राजेअ : 2049)

٦٠٨٢- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ حُمَيْدٍ، عَنْ أَنَسٍ قَالَ: لَمَّا قَدِمَ عَلَيْنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ فَآخَى النَّبِيُّ ﷺ بَيْنَهُ وَبَيْنَ سَعْدِ بْنِ الرَّبِيعِ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((أَوْلِمْ وَلَوْ بِشَاةٍ)). [راجع: ٢٠٤٩]

6083. हमसे मुहम्मद बिन सब्बाह ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन ज़करिया ने बयान किया, कहा हमसे आ़सिम बिन सुलैमान अहवल ने बयान किया, कहा कि मैंने हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से पूछा, क्या तुमको ये बात मा'लूम है कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि इस्लाम में

٦٠٨٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ صَبَّاحٍ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ زَكَرِيَّا، حَدَّثَنَا عَاصِمٌ، قَالَ: قُلْتُ لأَنَسِ بْنِ مَالِكٍ: أَبَلَغَكَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((لاَ حِلْفَ فِي الإِسْلاَمِ))؟ فَقَالَ:

قَدْ حَالَفَ النَّبِيُّ ﷺ بَيْنَ قُرَيْشٍ وَالأَنْصَارِ فِي دَارِي. [راجع: ٢٢٩٤]

मुआहिदा (हलफ़) की कोई अस़ल नहीं? अनस ने फ़र्माया कि आँहज़रत (ﷺ) ने ख़ुद क़ुरैश और अंसार के दरम्यान मेरे घर में हलफ़ कराई थी। (राजेअ : 2294)

हलफ़ ये कि क़ौल क़रार करके किसी और क़ौम में शरीक हो जाना जैसा कि जाहिलियत में दस्तूर था अब भी अल्बत्ता ज़रूरत के औक़ात में मुसलमान अगर दूसरी त़ाक़तों से मुआहिदा करें तो ज़ाहिर है कि जाइज़ होगा।

٦٨- باب التَّبَسُّمِ وَالضَّحِكِ

وَقَالَتْ فَاطِمَةُ عَلَيْهَا السَّلاَمُ: أَسَرَّ إِلَيَّ النَّبِيُّ ﷺ فَضَحِكْتُ، وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: إِنَّ اللهَ هُوَ أَضْحَكَ وَأَبْكَى.

बाब 68 : मुस्कुराना और हंसना और फ़ातिमा अलैहस्सलाम ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने चुपके से मुझसे एक बात कही तो मैं हंस दी . इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि अल्लाह ही हंसाता है और रुलाता है.

हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) की ये बात वफ़ाते नबवी से कुछ पहले की है जैसा कि गुज़र चुका है।

٦٠٨٤- حَدَّثَنَا حِبَّانُ بْنُ مُوسَى، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ رِفَاعَةَ الْقُرَظِيَّ طَلَّقَ امْرَأَتَهُ فَبَتَّ طَلاَقَهَا، فَتَزَوَّجَهَا بَعْدَهُ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ الزَّبِيرِ فَجَاءَتِ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنَّهَا كَانَتْ عِنْدَ رِفَاعَةَ فَطَلَّقَهَا آخِرَ ثَلاَثِ تَطْلِيقَاتٍ، فَتَزَوَّجَهَا بَعْدَهُ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ الزَّبِيرِ وَإِنَّهُ وَاللهِ مَا مَعَهُ يَا رَسُولَ اللهِ إِلاَّ مِثْلُ هَذِهِ الْهُدْبَةِ، لِهُدْبَةٍ أَخَذَتْهَا مِنْ جِلْبَابِهَا قَالَ وَأَبُوبَكْرٍ جَالِسٌ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ وَابْنُ سَعِيدِ بْنِ الْعَاصِ جَالِسٌ بِبَابِ الْحُجْرَةِ، لِيُؤْذَنَ لَهُ فَطَفِقَ خَالِدٌ يُنَادِي أَبَا بَكْرٍ أَلاَ تَزْجُرُ هَذِهِ عَمَّا تَجْهَرُ بِهِ عِنْدَ رَسُولِ اللهِ ﷺ؟ وَمَا يَزِيدُ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَلَى التَّبَسُّمِ ثُمَّ قَالَ : ((لَعَلَّكِ تُرِيدِينَ أَنْ تَرْجِعِي إِلَى رِفَاعَةَ، لاَ حَتَّى تَذُوقِي

6084. हमसे ह़िब्बान बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें उ़र्वा ने और उन्हें ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि रिफ़ाआ क़ुर्ज़ी ने अपनी बीवी को त़लाक़ दे दी और त़लाक़ रजई नहीं दी। उसके बाद उनसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन ज़ुबैर (रज़ि.) ने निकाह़ कर लिया, लेकिन वो नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुई और अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह! मैं रिफ़ाआ (रज़ि.) के निकाह़ में थी लेकिन उन्होंने मुझे तीन त़लाक़ें दे दीं। फिर मुझसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन ज़ुबैर (रज़ि.) ने निकाह़ कर लिया, लेकिन अल्लाह की क़सम! इनके पास तो पल्लू की त़रह़ के सिवा और कुछ नहीं। (मुराद ये कि वो नामर्द हैं) और उन्होंने अपनी चादर का पल्लू पकड़कर बताया (रावी ने बयान किया कि) ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) आँह़ज़रत (ﷺ) के पास बैठे हुए थे और सईद बिन अल आस़ के लड़के ख़ालिद हुज्रे के दरवाज़े पर थे और अंदर दाख़िल होने की इजाज़त के मुंतज़िर थे। ख़ालिद बिन सईद उस पर ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) को आवाज़ देकर कहने लगे कि आप इस औरत को डांटते नहीं कि आँह़ज़रत (ﷺ) के सामने किस त़रह़ की बात कहती है और ह़ुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने तबस्सुम के सिवा और कुछ नहीं फ़र्माया फिर फ़र्माया ग़ालिबन तुम रिफ़ाआ के पास दोबारा जाना चाहती हो लेकिन ये उस वक़्त तक मुम्किन नहीं है जब तक तुम इनका (अ़ब्दुर्रह़मान रज़ि.का) मज़ा न चख लो और वो

तुम्हारा मज़ा न चख लें। (राजेअ : 2639)

عُسَيلته وَيَذُوقَ عُسَيْلَتَكِ)).

[راجع: ٢٦٣٩]

6085. हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम ने बयान किया, उनसे सालेह बिन कैसान ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अब्दुल हमीद बिन अब्दुर्रहमान बिन ज़ैद बिन ख़त्ताब ने, उनसे मुहम्मद बिन सअद ने और उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होने की इजाज़त चाही। उस वक़्त आँहज़रत (ﷺ) के पास आपकी कई बीवियाँ जो कुरैश से ता'ल्लुक़ रखती थीं आपसे ख़र्च देने के लिये तक़ाज़ा कर रही थीं और पुकार पुकारकर बातें कर रही थीं। जब हज़रत उमर (रज़ि.) ने इजाज़त चाही तो वो जल्दी से भागकर पर्दे के पीछे चली गईं। फिर आँहज़रत (ﷺ) उस वक़्त हंस रहे थे। हज़रत उमर (रज़ि.) ने अर्ज़ किया अल्लाह आपको ख़ुश रखे, या रसूलल्लाह! मेरे माँ-बाप आप पर कुर्बान हों। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया उन पर मुझे हैरत हुई, जो अभी मेरे पास तक़ाज़ा कर रही थीं, जब उन्होंने तुम्हारी आवाज़ सुनी तो फ़ौरन भागकर पर्दे के पीछे चली गईं। हज़रत उमर (रज़ि.) ने इस पर अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! आप इसके ज़्यादा मुस्तहिक़ हैं कि आपसे डरा जाए, फिर औरतों को मुख़ातिब करके उन्होंने कहा, अपनी जानों की दुश्मन! मुझसे तो तुम डरती हो और अल्लाह के रसूल (ﷺ) से नहीं डरतीं। उन्होंने अर्ज़ किया आप (रज़ि.) आँहज़रत (ﷺ) से ज़्यादा सख़्त हैं। इस पर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया हाँ! ऐ इब्ने ख़त्ताब! उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, अगर शैतान भी तुम्हें रास्ते पर आता हुआ देखेगा तो तुम्हारा रास्ता छोड़कर दूसरे रास्ते पर चला जाएगा। (राजेअ : 3294)

٦٠٨٥- حدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ، عَنْ صَالِحِ بْنِ كَيْسَانَ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عَبْدِ الْحَمِيدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ زَيْدِ بْنِ الْخَطَّابِ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ أَبِيهِ قَالَ : اسْتَأْذَنَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ وَعِنْدَهُ نِسْوَةٌ مِنْ قُرَيْشٍ يَسْأَلْنَهُ وَيَسْتَكْثِرْنَهُ عَالِيَةً أَصْوَاتُهُنَّ عَلَى صَوْتِهِ فَلَمَّا اسْتَأْذَنَ عُمَرُ تَبَادَرْنَ الْحِجَابَ فَأَذِنَ لَهُ النَّبِيُّ ﷺ فَدَخَلَ وَالنَّبِيُّ ﷺ يَضْحَكُ فَقَالَ: أَضْحَكَ اللهُ سِنَّكَ يَا رَسُولَ اللهِ بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي فَقَالَ: ((عَجِبْتُ مِنْ هَؤُلاَءِ اللاَّتِي كُنَّ عِنْدِي لَمَّا سَمِعْنَ صَوْتَكَ تَبَادَرْنَ الْحِجَابَ)). فَقَالَ: أَنْتَ أَحَقُّ أَنْ يَهَبْنَ يَا رَسُولَ اللهِ، ثُمَّ أَقْبَلَ عَلَيْهِنَّ فَقَالَ: يَا عَدُوَّاتِ أَنْفُسِهِنَّ أَتَهَبْنَنِي وَلَمْ تَهَبْنَ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقُلْنَ: إِنَّكَ أَفَظُّ وَأَغْلَظُ مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِيهٍ يَا ابْنَ الْخَطَّابِ وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ مَا لَقِيَكَ الشَّيْطَانُ سَالِكًا فَجًّا إِلاَّ سَلَكَ فَجًّا غَيْرَ فَجِّكَ)).

[راجع: ٣٢٩٤]

तशरीह : इस हदीष से हज़रत उमर (रज़ि.) की अज़ीम फ़ज़ीलत पर रोशनी पड़ती है कि शैतान भी उनसे डरता है। दूसरी हदीष में है कि शैतान हज़रत उमर (रज़ि.) के साये से भागता है। अब ये इश्काल न होगा कि हज़रत उमर (रज़ि.) की अफ़ज़लियत रसूले करीम (ﷺ) पर निकलती है क्योंकि ये एक ख़ास मामला है, चोर डाकू जितना कोतवाल से डरते हैं उतना ही ख़ुद बादशाह से नहीं डरते।

6086. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़यैना ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने, उनसे अबुल अ़ब्बास साइब ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ताइफ़ में थे (फ़त्हे मक्का के बाद) तो आपने फ़र्माया कि अगर अल्लाह ने चाहा तो हम यहाँ से कल वापस होंगे। आपके कुछ सहाबा ने कहा कि हम उस वक़्त तक नहीं जाएँगे जब तक इसे फ़त्ह न कर लें। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अगर यही बात है तो कल सुबह लड़ाई करो। बयान किया कि दूसरे दिन सुबह को सहाबा ने घमासान की लड़ाई लड़ी और बहुत ज़्यादा सहाबा ज़ख़्मी हुए। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि इंशाअल्लाह हम कल वापस होंगे, बयान किया कि अब सब लोग ख़ामोश रहे। इस पर आँह़ज़रत (ﷺ) हंस पड़े। हुमैदी ने बयान किया कि हमसे सुफ़यान ने पूरी सनद ख़बर के लफ़्ज़ के साथ बयान की। (राजेअ: 4325)

٦٠٨٦- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَمْرٍو، عَنْ أَبِي الْعَبَّاسِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ : لَمَّا كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِالطَّائِفِ قَالَ: ((إِنَّا قَافِلُونَ غَدًا إِنْ شَاءَ اللهُ)) فَقَالَ نَاسٌ مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللهِ: لاَ نَبْرَحُ أَوْ نَفْتَحَهَا، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((فَاغْدُوا عَلَى الْقِتَالِ)) قَالَ: فَغَدَوْا فَقَاتَلُوهُمْ قِتَالاً شَدِيدًا وَكَثُرَ فِيهِمُ الْجِرَاحَاتُ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ ((إِنَّا قَافِلُونَ غَدًا إِنْ شَاءَ اللهُ)) قَالَ : فَسَكَتُوا فَضَحِكَ رَسُولُ اللهِ ﷺ قَالَ الْحُمَيْدِيُّ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ كُلَّهُ بِالْخَبَرِ.

[راجع: ٤٣٢٥]

बाब का मत़लब फ़ज़ह़िक रसूलुल्लाह (ﷺ) से निकला कि आप हंस दिये।

6087. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, कहा हमको इब्ने शिहाब ने ख़बर दी, उन्हें हुमैद बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने, उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि एक साह़ब रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाजिर हुएऔर अ़र्ज़ किया मैं तो तबाह हो गया अपनी बीवी के साथ रमज़ान में (रोज़ा की ह़ालत में) हमबिस्तरी कर ली। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर एक ग़ुलाम आज़ाद कर। उन्होंने अ़र्ज़ किया मेरे पास कोई ग़ुलाम नहीं। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर दो महीने के रोज़े रख। उन्होंने अ़र्ज़ किया इसकी भी मुझमें त़ाक़त नहीं। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया फिर साठ मिस्कीनों को खाना खिला। उन्होंने अ़र्ज़ किया कि इतना भी मेरे पास नहीं है। बयान किया कि फिर खजूर का एक टोकरा लाया गया। इब्राहीम ने बयान किया कि, अ़र्क़ एक त़रह का पैमाना (नौ किलोग्राम) था। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, पूछने वाला कहाँ है? लो इसे सदक़ा कर देना। उन्होंने अ़र्ज़ किया कि मुझसे जो ज़्यादा मुह़ताज हो उसे दूँ? अल्लाह की क़सम मदीना के दोनों

٦٠٨٧- حَدَّثَنَا مُوسَى، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ، أَخْبَرَنَا ابْنُ شِهَابٍ، عَنْ حُمَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: أَتَى رَجُلٌ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: هَلَكْتُ، وَقَعْتُ عَلَى أَهْلِي فِي رَمَضَانَ، قَالَ: ((أَعْتِقْ رَقَبَةً)) قَالَ: لَيْسَ لِي قَالَ: ((فَصُمْ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ)) قَالَ: لاَ أَسْتَطِيعُ قَالَ: ((فَأَطْعِمْ سِتِّينَ مِسْكِينًا)) قَالَ: لاَ أَجِدُ فَأُتِيَ بِعَرَقٍ فِيهِ تَمْرٌ قَالَ إِبْرَاهِيمُ: الْعَرَقُ الْمِكْتَلُ فَقَالَ: ((أَيْنَ السَّائِلُ؟ تَصَدَّقْ بِهَا)) قَالَ عَلَى أَفْقَرَ مِنِّي وَاللهِ مَا بَيْنَ لاَبَتَيْهَا أَهْلُ بَيْتٍ أَفْقَرُ مِنَّا؟ فَضَحِكَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى

بَدَتْ نَوَاجِذُهُ قَالَ : ((فَأَنْتُمْ إِذًا)).

[راجع: ١٩٣٦]

मैदानों के दरम्यान कोई घराना भी हमसे ज़्यादा मुहताज नहीं है। इस पर आँहज़रत (ﷺ) हंस दिये और आपके सामने के दंदाने मुबारक खुल गये, उसके बाद फ़र्माया, अच्छा फिर तो तुम मियाँ-बीवी ही इसे खा लो। (राजेअ : 1936)

इस ह़दीष़ में भी आपके हंसने का ज़िक्र है।

٦٠٨٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ الأُوَيْسِيُّ، حَدَّثَنَا مَالِكٌ، عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ، عَن أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، قَالَ: كُنْتُ أَمْشِي مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَعَلَيْهِ بُرْدٌ نَجْرَانِيٌّ غَلِيظُ الْحَاشِيَةِ، فَأَدْرَكَهُ أَعْرَابِيٌّ فَجَبَذَ بِرِدَائِهِ جَبْذَةً شَدِيدَةً، قَالَ أَنَسٌ : فَنَظَرْتُ إِلَى صَفْحَةِ عَاتِقِ النَّبِيِّ ﷺ وَقَدْ أَثَّرَتْ بِهَا حَاشِيَةُ الرِّدَاءِ مِنْ شِدَّةِ جَبْذَتِهِ ثُمَّ قَالَ : يَا مُحَمَّدُ مُرْ لِي مِنْ مَالِ اللهِ الَّذِي عِنْدَكَ فَالْتَفَتَ إِلَيْهِ فَضَحِكَ ثُمَّ أَمَرَ لَهُ بِعَطَاءٍ.

[راجع: ٣١٤٩]

6088. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह उवैसी ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक (रह .) ने बयान किया, उनसे इस्ह़ाक़ बिन अ़ब्दुल्लाह इब्ने अबी त़लह़ा ने और उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ चल रहा था। आपके जिस्म पर एक नजरानी चादर थी, जिसका ह़ाशिया मोटा था। इतने में एक देहाती आपके पास आया और उसने आपकी चादर बड़े ज़ोर से खींची। ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) के शाने को देखा कि ज़ोर से खींचने की वजह से उस पर निशान पड़ गये। फिर उसने कहा ऐ मुहम्मद! अल्लाह का जो माल आपके पास है उसमें से मुझे दिये जाने का हुक्म फ़र्माइए। उस वक़्त मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) को मुड़कर देखा तो आप मुस्कुरा दिये फिर आपने उसे दिये जाने का हुक्म फ़र्माया। (राजेअ : 3149)

सुब्ह़ानल्लाह! क़ुर्बान उस अख़्लाक़ के क्या कोई बादशाह ऐसा कर सकता है। ये ह़दीष़ साफ़ आपकी नुबुव्वत की दलील है।

٦٠٨٩- حَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ إِدْرِيسَ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ، عَنْ قَيْسٍ، عَنْ جَرِيرٍ، قَالَ: مَا حَجَبَنِي النَّبِيُّ مُنْذُ أَسْلَمْتُ وَلاَ رَآنِي إِلاَّ تَبَسَّمَ فِي وَجْهِي.

[راجع: ٣٠٢٠]

6089. हमसे इब्ने नुमैर ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने इदरीस ने बयान किया, उनसे इस्माईल ने, उनसे क़ैस ने और उनसे ह़ज़रत जरीर (रज़ि.) ने बयान किया कि जबसे मैं ने इस्लाम क़ुबूल किया आँह़ज़रत (ﷺ) ने (अपने पास आने से) कभी नहीं रोका और जब भी आपने मुझे देखा तो मुस्कुराए। (राजेअ : 3020)

٦٠٩٠- وَلَقَدْ شَكَوْتُ إِلَيْهِ أَنِّي لاَ أَثْبُتُ عَلَى الْخَيْلِ فَضَرَبَ بِيَدِهِ فِي صَدْرِي وَقَالَ: ((اللَّهُمَّ ثَبِّتْهُ وَاجْعَلْهُ هَادِيًا مَهْدِيًّا)). [راجع: ٣٠٣٥]

6090. मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) से शिकायत की कि मैं घोड़े पर जमकर नहीं बैठ पाता तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने अपना हाथ मेरे सीने पर मारा और दुआ की कि ऐ अल्लाह! इसे ष़बात फ़र्मा। इसे हिदायत करने वाला और ख़ुद हिदायत पाया हुआ बना। (राजेअ : 3035)

तश्रीह : ये ह़ज़रत जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह बजली हैं जिनको आँह़ज़रत (ﷺ) ने एक बुतख़ाना ढहाने के लिये भेजा था, उस वक़्त उन्होंने घोड़े पर अपने न जम सकने की दुआ की दरख़्वास्त की थी अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने उनके लिये दुआ फ़र्माई थी, रिवायत में आँह़ज़रत (ﷺ) के हंसने का ज़िक्र है बाब से यही मुत़ाबक़त है।

٦٠٩١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ هِشَامٍ، قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ زَيْنَبَ بِنْتِ أُمِّ سَلَمَةَ، عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ أَنَّ أُمَّ سُلَيْمٍ قَالَتْ : يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّ اللهَ لاَ يَسْتَحْيِي مِنَ الْحَقِّ هَلْ عَلَى الْمَرْأَةِ غُسْلٌ إِذَا احْتَلَمَتْ؟ قَالَ: ((نَعَمْ إِذَا رَأَتِ الْمَاءَ)) فَضَحِكَتْ أُمُّ سَلَمَةَ فَقَالَتْ: أَتَحْتَلِمُ الْمَرْأَةُ؟ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((فَبِمَ شَبَهُ الْوَلَدِ؟)). [راجع: ١٣٠]

6091. हमसे मुह़म्मद बिन मुष़न्ना ने बयान किया, कहा हमसे यह्या क़त्तान ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने बयान किया, उन्हें उनके वालिद ने ख़बर दी, उन्हें ज़ैनब बिन्ते उम्मे सलमा (रज़ि.) ने, उन्हें उम्मे सलमा (रज़ि.) ने कि उम्मे सुलैम (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! अल्लाह ह़क़ से नहीं शर्माता, क्या औ़रत को जब एह़तिलाम हो तो उस पर गुस्ल वाजिब है? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ जब औ़रत पानी देखे (तो उस पर गुस्ल वाजिब है) इस पर उम्मे सलमा (रज़ि.) हंसीं और अ़र्ज़ किया, क्या औ़रत को भी एह़तिलाम होता है? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया फिर बच्चे की सूरत माँ से क्यूँ मिलती है। (राजेअ़ : 130)

तश्रीह : औ़रत के यहाँ भी मनी पैदा होती है फिर एह़तिलाम क्यूँ नामुम्किन है। इस ह़दीष़ की मुनासबत बाब से यूँ है कि उम्मे सलमा (रज़ि.) को हंसी आ गई और आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनको मना नहीं फ़र्माया ऐसे मवाक़ेअ़ पर हंसी आ जाना ये फ़ित़री आ़दत है जो बुरी नहीं है।

٦٠٩٢- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ، قَالَ حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنَا عَمْرٌو، أَنَّ أَبَا النَّضْرِ حَدَّثَهُ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: مَا رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ مُسْتَجْمِعًا قَطُّ ضَاحِكًا، حَتَّى أَرَى مِنْهُ لَهَوَاتِهِ إِنَّمَا كَانَ يَتَبَسَّمُ. [راجع: ٤٨٢٨]

6092. हमसे यह्या बिन सुलैमान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इब्ने वहब ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अ़म्र ने ख़बर दी, उनसे अबुन् नज़्र ने बयान किया, उनसे सुलैमान बिन यसार ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) को इस त़रह़ खुलकर कभी हंसते हुए नहीं देखा कि आपके ह़लक़ का कव्वा नज़र आने लगता हो, आप स़िर्फ़ मुस्कुराते थे। (राजेअ़ : 4828)

٦٠٩٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مَحْبُوبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ، وَقَالَ لِي خَلِيفَةُ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، حَدَّثَنَا سَعِيدٌ، عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَجُلاً جَاءَ إِلَى النَّبِيِّ

6093. हमसे मुह़म्मद बिन मह़बूब ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने (दूसरी सनद) और मुझसे ख़लीफ़ा ने बयान किया, कहा हमको यज़ीद बिन ज़ुरैअ़ ने बयान किया, उनसे सईद ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि एक स़ाहब जुम्आ के दिन नबी करीम (ﷺ) के पास आए। आँह़ज़रत (ﷺ) उस वक़्त मदीना में जुम्अे का

ख़ुत्बा दे रहे थे, उन्होंने अ़र्ज़ किया बारिश का क़हत़ पड़ गया है, आप (ﷺ) अपने रब से बारिश की दुआ़ कीजिए। आँह़ज़रत (ﷺ) ने आसमान की त़रफ़ देखा कहीं हमें बादल नज़र नहीं आ रहा था। फिर आपने बारिश की दुआ़ की, इतने में बादल उठा और कुछ टुकड़े कुछ की त़रफ़ बढ़े और बारिश होने लगी, यहाँ तक कि मदीना के नाले बहने लगे। अगले जुम्ओ तक इसी त़रह़ बारिश होती रही सिलसिला टूटता ही न था चुनाँचे वही स़ाह़ब या कोई दूसरे (अगले जुम्ओ को) खड़े हुए, आँह़ज़रत (ﷺ) ख़ुत्बा दे रहे थे और उन्होंने अ़र्ज़ किया हम डूब गये, अपने रब से दुआ़ करें कि अब बारिश बंद कर दे। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ऐ अल्लाह! हमारे चारों त़रफ़ बारिश हो, हम पर न हो। दो या तीन मर्तबा आपने ये फ़र्माया, चुनाँचे मदीना मुनव्वरह् से बादल छंटने लगे, बाएँ और दाएँ, हमारे चारों त़रफ़ दूसरे मक़ामात पर बारिश होने लगी और हमारे यहाँ बारिश एक दम बंद हो गई। ये अल्लाह ने लोगों को आँह़ज़रत (ﷺ) का मुअ़जिज़ा और अपने पैग़म्बर (ﷺ) की करामत और दुआ़ की क़ुबूलियत बतलाई। (राजेअ़ : 932)

ﷺ يَوْمَ الْجُمُعَةِ وَهُوَ يَخْطُبُ بِالْمَدِينَةِ فَقَالَ: قَحِطَ الْمَطَرُ فَاسْتَسْقِ رَبَّكَ، فَنَظَرَ إِلَى السَّمَاءِ وَمَا نَرَى مِنْ سَحَابٍ فَاسْتَسْقَى فَنَشَأَ السَّحَابُ بَعْضُهُ إِلَى بَعْضٍ، ثُمَّ مُطِرُوا حَتَّى سَالَتْ مَثَاعِبُ الْمَدِينَةِ، فَمَا زَالَتْ إِلَى الْجُمُعَةِ الْمُقْبِلَةِ مَا تُقْلِعُ، ثُمَّ قَامَ ذَلِكَ الرَّجُلُ - أَوْ غَيْرُهُ - وَالنَّبِيُّ ﷺ يَخْطُبُ فَقَالَ: غَرِقْنَا فَادْعُ رَبَّكَ يَحْبِسْهَا عَنَّا، فَضَحِكَ ثُمَّ قَالَ: ((اللَّهُمَّ حَوَالَيْنَا وَلاَ عَلَيْنَا)) مَرَّتَيْنِ أَوْ ثَلاَثًا فَجَعَلَ السَّحَابُ يَتَصَدَّعُ عَنِ الْمَدِينَةِ يَمِينًا وَشِمَالاً يُمْطَرُ مَا حَوَالَيْنَا وَلاَ يُمْطَرُ فِيهَا شَيْءٌ يُرِيهِمُ اللهُ كَرَامَةَ نَبِيِّهِ ﷺ وَإِجَابَةَ دَعْوَتِهِ.

[راجع: ٩٣٢]

तशरीह़ : रिवायत में आँह़ज़रत (ﷺ) के हंसने का जो ज़िक्र है यही बाब से मुत़ाबक़त है दीगर मज़्कूरा अह़ादीष़ में आँह़ज़रत (ﷺ) के हंसने का किसी न किसी त़रह़ ज़िक्र है मगर आपका हंसना स़िर्फ़ तबस्सुम के त़ौर पर होता था अ़वाम की त़रह़ आप नहीं हंसते थे। (ﷺ)

बाब 69 : अल्लाह तआ़ला का सूरह हुजुरात में इर्शाद फ़र्माना, ऐ लोगों! जो ईमान लाए हो! अल्लाह से डरो और सच बोलने वालों के साथ रहो, और झूठ बोलने की मुमानअ़त का बयान

٦٩- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللهَ وَكُونُوا مَعَ الصَّادِقِينَ﴾ وَمَا يُنْهَى عَنِ الْكَذِبِ.

6094. हमसे उ़ष्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे मंस़ूर ने बयान किया, उनसे अबू वाइल ने बयान किया और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, बिलाशुब्हा सच आदमी को नेकी की त़रफ़ बुलाता है और नेकी जन्नत की त़रफ़ ले जाती है और एक शख़्स़ सच बोलता रहता है यहाँ तक कि वो स़िद्दीक़ का लक़ब और मर्तबा

٦٠٩٤- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ الصِّدْقَ يَهْدِي إِلَى الْبِرِّ وَإِنَّ الْبِرَّ يَهْدِي إِلَى الْجَنَّةِ، وَإِنَّ الرَّجُلَ لَيَصْدُقُ حَتَّى يَكُونَ صِدِّيقًا، وَإِنَّ الْكَذِبَ

हासिल कर लेता है और बिला शुब्हा झूठ बुराई की तरफ़ ले जाता है और बुराई जहन्नम की तरफ़ ले जाती है और एक शख़्स झूठ बोलता रहता है, यहाँ तक कि वो अल्लाह के यहाँ बहुत झूठा लिख दिया जाता है।

يَهْدِي إِلَى الْفُجُورِ، وَإِنَّ الْفُجُورَ يَهْدِي إِلَى النَّارِ، وَإِنَّ الرَّجُلَ لَيَكْذِبُ حَتَّى يُكْتَبَ عِنْدَ اللهِ كَذَّابًا)).

तशरीह: इसीलिये फ़र्माया **इन्नमल आमालु बिन्नियात** अमलों का ए'तिबार निय्यतों पर है। अल्लाह पाक हर मुसलमान को, हर बुख़ारी शरीफ़ के पढ़ने वाले को और मुझ नाचीज़ गुनाहगार बन्दे को ख़ात्मा बिल ख़ैर नसीब करे, तौहीद व सुन्नत व कलिमा तय्यिबा पर ख़ात्मा हो। उम्मीद है कि इस मुक़ाम पर तमाम क़ारेईने किराम कहेंगे आमीन या रब्बल आलमीन।

6095. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे अबी सुहैल नाफ़ेअ बिन मालिक बिन अबी आमिर ने, उनसे उनके वालिद मालिक बिन अबी आमिर ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया मुनाफ़िक़ की तीन निशानियाँ हैं, जब बोलता है झूठ बोलता है, जब वा'दा करता है ख़िलाफ़ करता है और जब उसे अमीन बनाया जाता है तो ख़यानत करता है।

٦٠٩٥- حَدَّثَنَا ابْنُ سَلاَمٍ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ، عَنْ أَبِي سُهَيْلٍ، نَافِعِ بْنِ مَالِكِ بْنِ أَبِي عَامِرٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((آيَةُ الْمُنَافِقِ ثَلاَثٌ : إِذَا حَدَّثَ كَذَبَ، وَإِذَا وَعَدَ أَخْلَفَ، وَإِذَا اؤْتُمِنَ خَانَ)).

ये अमली मुनाफ़िक़ है फिर भी मामला ख़तरनाक है बुरे ख़साइल से हर मुसलमान को परहेज़ लाज़िम है।

6096. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू रजाअ ने बयान किया, उनसे समूरह बिन जुन्दब (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मेरे पास गुज़िश्ता रात ख़्वाब में दो आदमी आए उन्होंने कहा कि जिसे आपने देखा कि उसका जबड़ा चीरा जा रहा था वो बड़ा ही झूठा था, जो एक बात को लेता और सारी दुनिया में फैला देता था, क़यामत तक उसको यही सज़ा मिलती रहेगी। (राजेअ: 845)

٦٠٩٦- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، حَدَّثَنَا أَبُو رَجَاءٍ، عَنْ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدَبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((رَأَيْتُ رَجُلَيْنِ أَتَيَانِي قَالاَ الَّذِي رَأَيْتَهُ يُشَقُّ شِدْقُهُ فَكَذَّابٌ يَكْذِبُ بِالْكَذْبَةِ تُحْمَلُ عَنْهُ حَتَّى تَبْلُغَ الآفَاقَ فَيُصْنَعُ بِهِ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ)).

[راجع: ٨٤٥]

झूठे मसले बनाने वाले, बिदआत मुहद्दषात को रिवाज देने वाले, झूठी रिवायात बयान करने वाले नामो-निहाद व ख़ुत्बा सब इस सख़्त धमकी के मिस्दाक़ हो सकते हैं। इल्ला मन असिमहुल्लाहु

बाब 70 : अच्छे चाल चलन के बारे में

٧٠- باب فِي الْهَدْيِ الصَّالِحِ

अच्छा चाल चलन वो है जो बिलकुल सुन्नते नबवी के मुताबिक़ हो।

6097. हमसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम राह्वै ने बयान किया, कहा कि मैंने अबू उसामा से पूछा क्या तुमसे आ'मश ने ये बयान किया कि मैंने शक़ीक़ से सुना, कहा मैंने हज़रत हुज़ैफ़ा

٦٠٩٧- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ: قُلْتُ لأَبِي أُسَامَةَ أَحَدَّثَكُمُ الأَعْمَشُ

(रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे, कि बिला शुब्हा सब लोगो से अपनी चाल-ढाल और वज़अ और सीरत में रसूलुल्लाह (ﷺ) से सबसे ज़्यादा मुशाबेह ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) हैं। जब वो अपने घर से बाहर निकलते और उसके बाद दोबारा अपने घर वापस आने तक उनका यही ह़ाल रहता है लेकिन जब वो अकेले घर में रहते तो मा'लूम नहीं किया करते रहते हैं। (राजेअ़ : 3762)

قَالَ: سَمِعْتُ شَقِيقًا، قَالَ: سَمِعْتُ حُذَيْفَةَ يَقُولُ: إِنَّ أَشْبَهَ دَلاًّ وَسَمْتًا وَهَدْيًا بِرَسُولِ اللهِ ﷺ لاَبْنُ أُمِّ عَبْدٍ مِنْ حِينَ يَخْرُجُ مِنْ بَيْتِهِ إِلَى أَنْ يَرْجِعَ إِلَيْهِ لاَ نَدْرِي وَمَا يَصْنَعُ فِي أَهْلِهِ إِذَا خَلاَ.

[راجع: ٣٧٦٢]

अबू उसामा ने कहा हाँ।

6098. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे मुख़ारिक़ ने, उन्होंने कहा मैंने त़ारिक़ से सुना, कहा कि अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने कहा बिला शुब्हा सबसे अच्छा कलाम अल्लाह की किताब है और सबसे अच्छा त़रीक़ा चाल चलन ह़ज़रत मुह़म्मद (ﷺ) का त़रीक़ा है। (दीगर मक़ामात : 7277)

٦٠٩٨- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ مُخَارِقٍ، قَالَ: سَمِعْتُ طَارِقًا قَالَ: قَالَ عَبْدُ اللهِ إِنَّ أَحْسَنَ الْحَدِيثِ كِتَابُ اللهِ وَأَحْسَنَ الْهَدْيِ هَدْيُ مُحَمَّدٍ ﷺ.

[طرفه في : ٧٢٧٧].

तश्रीह़ : इक़बाल मरहूम ने इस ह़दीष़ के मज़्मून को यूँ अदा फ़र्माया है,

ब मुस्त़फ़ा व रिसाँ ख़ुवैश रा कि दीं हमा उस्त   व गर बाद नरसीदी तमाम बू लहबी अस्त

दीन यही है कि नबी करीम (ﷺ) के क़दम ब क़दम चला जाए इसके अ़लावा अबू लहब का दीन है वो दीने मुह़म्मदी नहीं है।

बाब 71 : तकलीफ़ पर स़ब्र करने का बयान और अल्लाह तआ़ला ने सूरह रअ़द में फ़र्माया, बिला शुब्हा स़ब्र करने वाले बेह़द अपना ष़वाब पाएँगे

٧١- باب الصَّبْرِ عَلَى الأَذَى

وَقَوْلُ اللهِ تَعَالَى : ﴿إِنَّمَا يُوَفَّى الصَّابِرُونَ أَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ﴾.

6099. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे यह़्या बिन सईद क़त़्त़ान ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, कहा मुझसे आ'मश ने बयान किया, उनसे सईद बिन जुबैर ने, उनसे अबू अ़ब्दुर्रह़मान सुलमी ने, उनसे ह़ज़रत अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कोई शख़्स भी या कोई चीज़ भी तकलीफ़ बर्दाश्त करने वाली, जो उसे किसी चीज़ को सुनकर हुई हो, अल्लाह से ज़्यादा नहीं है। लोग उसके लिये औलाद ठहराते हैं और वो उन्हें तन्दुरुस्ती देता है बल्कि उन्हें रोज़ी भी देता है।

٦٠٩٩- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ سُفْيَانَ، قَالَ: حَدَّثَنِي الأَعْمَشُ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ السُّلَمِيِّ، عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَيْسَ أَحَدٌ - أَوْ لَيْسَ شَيْءٌ - أَصْبَرَ عَلَى أَذًى سَمِعَهُ مِنَ اللهِ إِنَّهُمْ لَيَدْعُونَ لَهُ وَلَدًا، وَإِنَّهُ لَيُعَافِيهِمْ وَيَرْزُقُهُمْ)).

दुनिया में सबसे बड़ा इत्तिहाम वो है जो ईसाइयों ने अल्लाह के ज़िम्मे लगाया है कि ह़ज़रत मरयम अल्लाह की बीवी और ह़ज़रत

ईसा (अलैहिस्सलाम) अल्लाह के बेटे हैं। लेकिन अल्लाह इतना बुर्दबार है कि वो इस इत्तिहाम को उन ज़ालिमों के लिये तंगी व तुर्शी का सबब नहीं बनाता बल्कि उनको ज़्यादा ही देता है। सच है, अल्लाहुस्समद।

6100. हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स़ बिन ग़याष़ ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, कहा कि मैंने उनसे सुना वो बयान करते थे कि अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (जंगे हुनैन) में कुछ माल तक़्सीम किया जैसा कि आप हमेशा तक़्सीम किया करते थे। इस पर क़बीला अंसार के एक शख़्स़ ने कहा कि अल्लाह की क़सम इस तक़्सीम से अल्लाह की रज़ामंदी ह़ासिल करना मक़्सूद नहीं था। मैंने कहा कि ये बात मैं ज़रूर रसूलुल्लाह (ﷺ) से कहूँगा। चुनाँचे मैं आँह़ज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ आँह़ज़रत (ﷺ) अपने स़ह़ाबा के साथ तशरीफ़ रखते थे, मैंने चुपके से ये बात आप (ﷺ) से कही। आँह़ज़रत (ﷺ) को उसकी ये बात बड़ी नागवार गुज़री और आपके चेहरे का रंग बदल गया और आप गुस़्सा हो गये यहाँ तक कि मेरे दिल में ये ख़्वाहिश पैदा हुई कि काश! मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) को इस बात की ख़बर न दी होती फिर आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया मूसा (अ़लैहि.) को इससे भी ज़्यादा तकलीफ़ पहुँचाई गई थी लेकिन उन्होंने स़ब्र किया। (राजेअ़ : 3150)

٦١٠٠- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ قَالَ : سَمِعْتُ شَقِيقًا يَقُولُ: قَالَ عَبْدُ اللهِ قَسَمَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قِسْمَةً كَبَعْضِ مَا كَانَ يَقْسِمُ فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الأَنْصَارِ: وَاللهِ إِنَّهَا لَقِسْمَةٌ مَا أُرِيدَ بِهَا وَجْهُ اللهِ قُلْتُ: أَمَّا أَنَا لأَقُولَنَّ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَتَيْتُهُ وَهُوَ فِي أَصْحَابِهِ فَسَارَرْتُهُ فَشَقَّ ذَلِكَ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَتَغَيَّرَ وَجْهُهُ وَغَضِبَ حَتَّى وَدِدْتُ أَنِّي لَمْ أَكُنْ أَخْبَرْتُهُ ثُمَّ قَالَ : ((قَدْ أُوذِيَ مُوسَى بِأَكْثَرَ مِنْ ذَلِكَ فَصَبَرَ)).

[راجع: ٣١٥٠]

पस मैं भी स़ब्र करूँगा। ए'तिराज़ करने वाला मुअ़त्तब बिन क़ुशैर नामी मुनाफ़िक़ था ये निहायत ही ख़राब बात उसी ने कही थी मगर आँह़ज़रत (ﷺ) ने स़ब्र किया और उसकी बात को कोई नोटिस नहीं लिया, इसी से बाब का मत़लब ष़ाबित होता है।

बाब 72 : गुस़्से में जिन पर इ़ताब है उनको मुख़ात़ब करना

٧٢- باب مَنْ لَمْ يُوَاجِهِ النَّاسَ بِالْعِتَابِ

6101. हमसे उ़म्र बिन ह़फ़्स़ बिन ग़याष़ ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, कहा हमसे मुस्लिम ने बयान किया, उनसे मसरूक़ ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने एक काम किया और लोगों को भी इसकी इजाज़त दे दी लेकिन कुछ लोगों ने इसका न करना अच्छा जाना। जब आँह़ज़रत (ﷺ) को इसकी ख़बर मिली तो आपने ख़ुत़्बा दिया और अल्लाह की ह़म्द के बाद

٦١٠١- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ، عَنْ مَسْرُوقٍ قَالَتْ عَائِشَةُ: صَنَعَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ شَيْئًا فَرَخَّصَ فِيهِ فَتَنَزَّهَ عَنْهُ قَوْمٌ فَبَلَغَ ذَلِكَ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَخَطَبَ فَحَمِدَ اللهَ ثُمَّ قَالَ: ((مَا بَالُ أَقْوَامٍ يَتَنَزَّهُونَ عَنِ الشَّيْءِ أَصْنَعُهُ؟ فَوَ

फ़र्माया इन लोगों को क्या हो गया है जो उस काम से परहेज़ नहीं करते हैं, जो मैं करता हूँ, अल्लाह की क़सम! मैं अल्लाह को सबसे ज़्यादा जानता हूँ और इन सबसे ज़्यादा अल्लाह से डरने वाला हूँ।

الله إِنِّي لأَعْلَمُهُمْ بِالله وَأَشَدُّهُمْ لَهُ خَشْيَةً)).

तशरीह : बाब का तर्जुमा इस जगह से निकला कि आपने उन लोगों को मुख़ातब करके नहीं फ़र्माया बल्कि ब सैग़ा ग़ायब इर्शाद हुआ कि कुछ लोगों का ये हाल है, इस ह़दीष़ से ये निकला कि इत्तिबाअ़े सुन्नते नबवी (ﷺ) यही तक़्वा और यही ख़ुदातरसी है और जो शख़्स ये समझे कि आँह़ज़रत (ﷺ) का कोई फ़ेअ़ल या कोई क़ौल ख़िलाफ़े तक़्वा था या उसके ख़िलाफ़ कोई फ़ेअ़ल या कोई क़ौल अफ़ज़ल है वो अ़ज़ीम ग़लती पर है। इस ह़दीष़ मे आपने ये भी फ़र्माया कि मैं अल्लाह को उनसे ज़्यादा पहचानता हूँ तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने जो सिफ़ाते इलाही बयान की हैं मष़लन उतरना चढ़ना हंसना तअ़ज्जुब करना, आना जाना आवाज़ से बात करना ये सब सिफ़ात बरह़क़ हैं और तावील करने वाले ग़लती पर हैं क्योंकि उनका इल्म आँह़ज़रत (ﷺ) के इल्म के मुक़ाबले पर सिफ़र के क़रीब है और इर्शादे नबवी बरह़क़ है।

6102. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने, कहा हमको शुअ़बा ने ख़बरदी, उन्हें क़तादा ने, कहा मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा से सुना, जो ह़ज़रत अनस (रज़ि.) के गुलाम हैं कि ह़ज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) कुँवारी लड़कियों से भी ज़्यादा शर्मीले थे, जब आप कोई ऐसी चीज़ देखते जो आपको नागवार होती तो हम आपके चेहरा मुबारक से समझ जाते थे। (राजेअ़ : 3562)

٦١٠٢- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الله، أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ سَمِعْتُ عَبْدَ الله: هُوَ ابْنُ أَبِي عُتْبَةَ مَوْلَى أَنَسٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ أَشَدَّ حَيَاءً مِنَ الْعَذْرَاءِ فِي خِدْرِهَا، فَإِذَا رَأَى شَيْئًا يَكْرَهُهُ عَرَفْنَاهُ فِي وَجْهِهِ.

[راجع: ٣٥٦٢]

गो मुरव्वत और शर्म की वजह से आप ज़ुबान से कुछ न फ़र्माते इसीलिये आपने शर्म को ईमान का एक ह़िस्सा क़रार दिया जिसका अ़क्स ये है कि बेशर्म आदमी का ईमान कमज़ोर हो जाता है।

बाब 73 : जो शख़्स अपने किसी मुसलमान भाई को जिसमें कुफ़्र की वजह न हो काफ़िर कहे वो ख़ुद काफ़िर हो जाता है

٧٣- باب مَنْ كَفَّرَ أَخَاهُ مِنْ غَيْرِ تَأْوِيلٍ فَهُوَ كَمَا قَالَ

6103. हमसे मुह़म्मद बिन यह्या (या मुह़म्मद बिन बश्शार) और अह़मद बिन सईद दारमी ने बयान किया, उन्हों ने कहा कि हमसे उ़ष़्मान बिन उ़मर ने बयान किया, कहा हमको अ़ली बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें यह्या बिन अबी कष़ीर ने, उन्हें अबू सलमा ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जब कोई शख़्स अपने किसी भाई को कहता है कि ऐ काफ़िर! तो उन दोनों में से एक काफ़िर हो गया। और इक्रिमा बिन अ़म्मार ने यह्या से बयान किया कि उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन यज़ीद ने कहा, उन्होंने अबू

٦١٠٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ وَ أَحْمَدُ بْنُ سَعِيدٍ قَالاَ: حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ عُمَرَ، أَخْبَرَنَا عَلِيُّ بْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ الله عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ الله ﷺ قَالَ: ((إِذَا قَالَ الرَّجُلُ لأَخِيهِ : يَا كَافِرُ فَقَدْ بَاءَ بِهِ أَحَدُهُمَا)). وَقَالَ عِكْرِمَةُ بْنُ عَمَّارٍ: عَنْ يَحْيَى، عَنْ عَبْدِ الله بْنِ يَزِيدَ، سَمِعَ

أَبَا سَلَمَةَ، سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ [راجع: ٦١٠٣]

सलमा से सुना और उन्होंने ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से। (राजेअ़ : 6103)

तश्रीह : जिसको काफ़िर कहा वो वाक़ई में काफ़िर है तब तो वो काफ़िर है और जब वो काफ़िर नहीं तो कहने वाला काफ़िर हो गया। इसीलिये अहले ह़दीष़ ने तक्फ़ीर में बड़ी एह़तियात़ बरती है, वो कहते हैं कि हम किसी अहले क़िब्ला को काफ़िर नहीं कहते लेकिन बाद वाले फ़ुक़हा अपनी किताबों में अदना अदना बातों पर अपने मुख़ालिफ़ीन की तक्फ़ीर करते हैं, स़ाह़िबे दुर्रे-मुख़्तार ने बड़ी जुर्अत (बहादुरी) से ये फ़त्वा दर्ज कर दिया, **फलअ़नतु रब्बिना इअ़दादु रम्लिन अ़ला मन रद्द क़ौल अबी ह़नीफ़त** या'नी जो ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा के किसी क़ौल को रद्द कर दे उस पर इतनी ला'नत हो जितने दुनिया में ज़र्रात हैं। कहिये इस उसूल के मुवाफ़िक़ तो सारे अइम्मा-ए-दीन मल्ऊन ठहरे जिन्होंने बहुत से मसाइल में ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) के क़ौल को रद्द किया है। ख़ुद ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़ .) के शागिर्दों ने कितने ही मसाइल में ह़ज़रत इमाम से इख़्तिलाफ़ किया है तो क्या स़ाह़िबे दुर्रे-मुख़्तार के नज़दीक वो भी सब मल्ऊन और मत़रूद थे! ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) को ऐसे लोगो ने पैग़म्बर समझ लिया है या आयत **इत्तख़ज़ू अह़बारहुम व रुहबानहुम** के तह़त उनको अल्लाह बना लिया है, ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) एक आ़लिमे दीन थे, उनसे कितने ही मसाइल में ख़त़ा हुई वो मा'सूम नहीं थे। इस ह़दीष़ से उन लोगों को सबक़ लेना चाहिये जो बिला तह़क़ीक़ मह़ज़ गुमान की बिना पर मुसलमानों को मुश्रिक या काफ़िर कह देते हैं। (वह़ीदी)

٦١٠٤- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((أَيُّمَا رَجُلٍ قَالَ لأَخِيهِ: يَا كَافِرُ فَقَدْ بَاءَ بِهَا أَحَدُهُمَا)).

6104. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक (रह़ .) ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने, उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जिस शख़्स़ ने भी अपने किसी भाई को कहा कि ऐ काफ़िर! तो उन दोनों में से एक काफ़िर हो गया।

٦١٠٥- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ، عَنْ ثَابِتِ بْنِ الضَّحَّاكِ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ حَلَفَ بِمِلَّةٍ غَيْرِ الإِسْلاَمِ كَاذِبًا فَهُوَ كَمَا قَالَ: وَمَنْ قَتَلَ نَفْسَهُ بِشَيْءٍ عُذِّبَ بِهِ فِي نَارِ جَهَنَّمَ، وَلَعْنُ الْمُؤْمِنِ كَقَتْلِهِ، وَمَنْ رَمَى مُؤْمِنًا بِكُفْرٍ فَهُوَ كَقَتْلِهِ)). [راجع: ١٣٦٣]

6105. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब ने बयान किया, कहा हमसे अय्यूब सुख़ितयानी ने बयान किया, उनसे अबू क़िलाबा ने, उनसे ष़ाबित बिन ज़ह्ह़ाक (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिसने इस्लाम के सिवा किसी और मज़हब की झूठ मूट क़सम खाई तो वो वैसा ही हो जाता है, जिसकी उसने क़सम खाई है और जिसने किसी चीज़ से ख़ुदकुशी कर ली तो उसे जहन्नम में उसी से अ़ज़ाब दिया जाएगा और मोमिन पर ला'नत भेजना उसे क़त्ल करने के बराबर है और जिसने किसी मोमिन पर कुफ़्र की तोह्मत लगाई तो ये उसके क़त्ल के बराबर है। (राजेअ़ : 1363)

किसी मज़हब पर क़सम खाना मष़लन यूँ कहा कि अगर मैं ने ये काम किया तो मैं यहूदी या नस़रानी वग़ैरह वग़ैरह हो जाऊँ ये बहुत बुरी क़सम है अआ़ज़नल्लाहु मिन्हू

٧٤- باب مَنْ لَمْ يَرَ إِكْفَارَ مَنْ قَالَ ذَلِكَ مُتَأَوِّلاً أَوْ جَاهِلاً وَقَالَ عُمَرُ لِحَاطِبِ

बाब 74 : अगर किसी ने कोई वजह मा'कूल रखकर किसी को काफ़िर कहा या

नादानिस्ता तो वो काफ़िर होगा और ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने

हातिब बिन अबी बल्तआ के बारे में कहा कि वो मुनाफ़िक़ है इस पर नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया उमर! तू क्या जाने अल्लाह तआला ने तो बद्र वालों को अर्श पर से देखा और फ़र्मा दिया कि मैंने तुमको बख़्श दिया.

: إِنَّهُ مُنَافِقٌ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ اللهَ قَدِ اطَّلَعَ إِلَى أَهْلِ بَدْرٍ فَقَالَ : قَدْ غَفَرْتُ لَكُمْ)).

हातिब का मशहूर वाक़िया है कि उन्होंने एक बार पोशीदा तौर पर मक्का वालों को जंग से आगाह कर दिया था उस पर ये इशारा है।

तश्रीह: जंगे बद्र माह रमज़ान 2 हिजरी में मुक़ामे बद्र पर पर बरपा हुई, अबू जहल एक हज़ार की फ़ौज लेकर मदीना मुनव्वरह पर हमलावर हुआ जब मदीना के क़रीब आ गया तो मुसलमानों को उनके नापाक इरादे की ख़बर हुई, चुनाँचे रसूले करीम (ﷺ) सिर्फ़ 313 फ़िदाइयों के साथ मदीना मुनव्वरह से बाहर निकले। 313 में सिर्फ़ 13 तलवारें थीं और राशन व सवारियों का कोई इंतिज़ाम न था उधर मक्का वाले एक हज़ार मुसल्लह फ़ौज के साथ हर तरह से लैस होकर आए थे। उस जंग में 22 मुसलमान शहीद हुए कुफ़्फ़ार के 70 आदमी क़त्ल हुए और 70 ही क़ैद हुए। अबू जहल जैसा ज़ालिम इस जंग मे दो नौउम्र मुसलमान बच्चों के हाथों से मारा गया। बद्र मक्का से सात मंज़िल दूर और मदीना से तीन मंज़िल है, मुफ़स्सल हालात कुतुब तवारीख़ व तफ़ासीर में मुलाहिज़ा हों बुख़ारी में भी किताबुल ग़ज़्वात में तफ़्सीलात देखी जा सकती हैं।

6106. हमसे मुहम्मद बिन उबादा ने बयान किया, कहा हमको यज़ीद ने ख़बर दी, कहा हमको सुलैम ने ख़बर दी, कहा हमसे अम्र बिन दीनार ने बयान किया, उनसे हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि मुआज़ बिन जबल (रज़ि.) नबी करीम (ﷺ) के साथ नमाज़ पढ़ते, फिर अपनी क़ौम में आते और उन्हें नमाज़ पढ़ाते। उन्होंने (एक मर्तबा) नमाज़ में सूरह बक़रः पढ़ी इस पर एक साहब जमाअत से अलग हो गये और हल्की नमाज़ पढ़ी। जब उसके बारे में मुआज़ को मा'लूम हुआ तो कहा वो मुनाफ़िक़ है। मुआज़ की ये बात जब उनको मा'लूम हुई तो वो आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! हम लोग मेहनत का काम करते हैं और अपनी ऊँटनियों को ख़ुद पानी पिलाते हैं हज़रत मुआज़ ने कल रात हमें नमाज़ पढ़ाई और सूरह बक़रः पढ़नी शुरू कर दी। इसलिये मैं नमाज़ तोड़कर अलग हो गया, इस पर वो कहते हैं कि मैं मुनाफ़िक़ हूँ। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ऐ मुआज़! तुम लोगों को फ़ित्ने में मुब्तला करते हो, तीन मर्तबा आपने ये फ़र्माया (जब इमाम हो तो) सूरतु इक़्रः वश्शम्सि व ज़ुहाहा सब्बिहिस्म रब्बिकल्आला जैसी सूरतें पढ़ा करो। (राजेअ : 700)

٦١٠٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُبَادَةَ، أَخْبَرَنَا يَزِيدُ، أَخْبَرَنَا سُلَيْمٌ، حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ، حَدَّثَنَا جَابِرُ بْنُ عَبْدِ اللهِ أَنَّ مُعَاذَ بْنَ جَبَلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ كَانَ يُصَلِّي مَعَ النَّبِيِّ ﷺ ثُمَّ يَأْتِي قَوْمَهُ فَيُصَلِّي بِهِمُ الصَّلاَةَ فَقَرَأَ بِهِمُ الْبَقَرَةَ قَالَ: فَتَجَوَّزَ رَجُلٌ فَصَلَّى صَلاَةً خَفِيفَةً، فَبَلَغَ ذَلِكَ مُعَاذًا فَقَالَ: إِنَّهُ مُنَافِقٌ فَبَلَغَ ذَلِكَ الرَّجُلَ فَأَتَى النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّا قَوْمٌ نَعْمَلُ بِأَيْدِينَا وَنَسْقِي بِنَوَاضِحِنَا وَإِنَّ مُعَاذًا صَلَّى بِنَا الْبَارِحَةَ فَقَرَأَ الْبَقَرَةَ فَتَجَوَّزْتُ فَزَعَمَ أَنِّي مُنَافِقٌ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((يَا مُعَاذُ أَفَتَّانٌ أَنْتَ؟)) ثَلاَثًا ((اقْرَأْ وَالشَّمْسِ وَضُحَاهَا، وَسَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الأَعْلَى وَنَحْوَهُمَا)).

[راجع: ٧٠٠]

इमामाने मसाजिद ये हदीष़ पेशेनज़र रखें। अल्लाह तौफ़ीक़ दे आमीन।

6107. मुझसे इस्हाक़ बिन राहवै ने बयान किया, कहा हमको अबुल मुग़ीरह ने ख़बर दी, कहा हमसे इमाम औज़ाई ने

٦١٠٧- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ، أَخْبَرَنَا أَبُو الْمُغِيرَةِ، حَدَّثَنَا الأَوْزَاعِيُّ، حَدَّثَنَا

बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ज़ुह्री ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हुमैदी बिन अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ ने, उन्होंने ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया तुममें से जिसने लात व उ़ज़्ज़ा की (या दूसरे बुतों की क़सम) खाई तो उसे ला इलाहा इल्लल्लाह पढ़ना चाहिये और जिसने अपने साथी से कहा कि आओ जुआ खेलें तो उसे बतौरे कफ़्फ़ारा सदक़ा देना चाहिये। (राजेअ़ : 4860)

الزُّهْرِيُّ، عَنْ حُمَيْدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَنْ حَلَفَ مِنْكُمْ فَقَالَ فِي حَلِفِهِ: بِاللاَّتِ وَالْعُزَّى فَلْيَقُلْ : لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَمَنْ قَالَ لِصَاحِبِهِ : تَعَالَ أُقَامِرْكَ فَلْيَتَصَدَّقْ)). [راجع: ٤٨٦٠]

तश्रीह़ : लात व उ़ज़्ज़ा बुतों की क़सम वही लोग खा सकते हैं जो उनको मा'बूद जानते होंगे, लिहाज़ा अगर कोई मुसलमान ऐसी क़सम खा बैठे तो लाज़िम है कि वो दोबारा कलिमा त़य्यिबा पढ़कर ईमान की तज्दीद करे। ग़ैरुल्लाह में सब दाख़िल हैं बुत हों या अवतार या पैग़म्बर या शहीद या वली या फ़रिश्ते किसी भी बुत या ह़जर वग़ैरह की क़सम खाने वाला दोबारा कलिमा त़य्यिबा पढ़कर तज्दीदे ईमान के लिये मामूर है।

6108. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने, उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कि वो ह़ज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) के पास पहुँचे जो चंद सवारों के साथ थे, उस वक़्त ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) अपने वालिद की क़सम खा रहे थे। उस पर रसूले करीम (ﷺ) ने उन्हें पुकारकर कहा, आगाह हो, यक़ीनन अल्लाह पाक तुम्हें मना करता है कि तुम अपने बाप दादों की क़सम खाओ, पस अगर किसी को क़सम ही खानी है तो वो अल्लाह की क़सम खाए, वरना चुप रहे। (राजेअ़ : 2679)

٦١٠٨- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ أَدْرَكَ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ فِي رَكْبٍ وَهُوَ يَحْلِفُ بِأَبِيهِ فَنَادَاهُمْ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَلاَ إِنَّ اللهَ يَنْهَاكُمْ أَنْ تَحْلِفُوا بِآبَائِكُمْ، فَمَنْ كَانَ حَالِفًا فَلْيَحْلِفْ بِاللهِ وَإِلاَّ فَلْيَصْمُتْ)). [راجع: ٢٦٧٩]

दूसरी ह़दीष़ में आया है कि ग़ैरुल्लाह की क़सम खाना मना है अगर किसी की ज़ुबान से ग़ैरुल्लाह की क़सम निकल गई तो उसे कलिमा तौह़ीद पढ़कर फिर ईमान की तज्दीद करना चाहिये अगर कोई इरादतन किसी पीर या बुत की अ़ज़्मत मिष़्ले अ़ज़्मते इलाही के जानकर उनके नाम की क़सम खाएगा तो वो यक़ीनन मुश्रिक हो जाएगा एक ह़दीष़ में जो **अफ़्लह़ व अबीहि इन स़दक़** के लफ़्ज़ आए हैं। ये ह़दीष़ पहले की है। लिहाज़ा यहाँ क़सम का जवाज़ मन्सूख़ है।

बाब 75 : ख़िलाफ़े शरअ़ काम पर ग़ुस्सा और सख़्ती करना, और अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया सूरह बरात में, कुफ़्फ़ार और मुनाफ़िक़ीन से जिहाद कर और उन पर सख्ती कर

٧٥- باب مَا يَجُوزُ مِنَ الْغَضَبِ وَالشِّدَّةِ لأَمْرِ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ وَقَالَ اللهُ تَعَالَى: ﴿جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ﴾.

6109. हमसे बुसरा बिन स़फ़्वान ने बयान किया, उन्हों ने कहा हमसे इब्राहीम ने बयान किया, उनसे ज़ु ह्री ने बयान किया, उनसे क़ासिम ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) अंदर तशरीफ़ लाए और घर में एक पर्दा लटका हुआ था जिस पर तस्वीरें थीं। आँह़ज़रत (ﷺ) के चेहरे का रंग बदल गया, फिर

٦١٠٩- حَدَّثَنَا يُسَرَةُ بْنُ صَفْوَانَ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنِ الْقَاسِمِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: دَخَلَ عَلَى النَّبِيُّ ﷺ وَفِي الْبَيْتِ قِرَامٌ فِيهِ صُوَرٌ فَتَلَوَّنَ وَجْهُهُ ثُمَّ تَنَاوَلَ السِّتْرَ فَهَتَكَهُ وَقَالَتْ :

आपने पर्दा पकड़ा और उसे फाड़ दिया। उम्मुल मोमिनीन ने बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, क़यामत के दिन उन लोगों पर सबसे ज़्यादा अज़ाब होगा, जो ये सूरतें बनाते हैं। (राजेअ: 2479)

قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مِنْ أَشَدِّ النَّاسِ عَذَابًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ الَّذِينَ يُصَوِّرُونَ هَذِهِ الصُّوَرَ)). [راجع: ٢٤٧٩]

6110. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे क़ैस बिन अबी हाज़िम ने और उनसे अबू मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि एक शख़्स नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया मैं सुबह की नमाज़ जमाअत से फ़लाँ इमाम की वजह से नहीं पढ़ता क्योंकि वो बहुत लम्बी नमाज़ पढ़ाते हैं। उन्होंने कहा कि उस दिन उन इमाम साहब को नसीहत करने में आँहज़रत (ﷺ) को मैंने जितना ग़ुस्से में देखा ऐसा मैंने आपको कभी नहीं देखा था, फिर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ लोगों! तुममें से कुछ लोग (नमाज़ बजमाअत पढ़ने से) लोगों को दूर करने वाले हैं, पस जो शख़्स भी लोगों को नमाज़ पढ़ाए मुख़्तसर पढ़ाए, क्योंकि नमाज़ियों में कोई बीमार होता है कोई बूढ़ा, कोई काम-काज वाला। (राजेअ: 90)

٦١١٠- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي خَالِدٍ، حَدَّثَنَا قَيْسُ بْنُ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : أَتَى رَجُلُ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: إِنِّي لأَتَأَخَّرُ عَنْ صَلاَةِ الْغَدَاةِ مِنْ أَجْلِ فُلاَنٍ، مِمَّا يُطِيلُ بِنَا قَالَ : فَمَا رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَطُّ أَشَدَّ غَضَبًا فِي مَوْعِظَةٍ مِنْهُ يَوْمَئِذٍ قَالَ: فَقَالَ: ((يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ مِنْكُمْ مُنَفِّرِينَ، فَأَيُّكُمْ مَا صَلَّى بِالنَّاسِ فَلْيَتَجَوَّزْ فَإِنَّ فِيهِمُ الْمَرِيضَ وَالْكَبِيرَ وَذَا الْحَاجَةِ)). [راجع: ٩٠]

लिहाज़ा सबका लिहाज़ ज़रूरी है। अइम्मा हज़रात को इसमें बहुत ही बड़ा सबक़ है काश! इमाम हज़रात इन पर तवज्जह देकर इस हदीष को हर वक़्त अपने ज़हन रखें और इस पर अमल करें।

6111. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे जुवैरिया ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने बयान किया और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद(रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) नमाज़ पढ़ रहे थे कि आपने मस्जिद में क़िब्ला की जानिब मुँह का थूक देखा। फिर आपने उसे अपने हाथ से साफ़ किया और ग़ुस्सा हुए, फिर फ़र्माया जब तुममें से कोई शख़्स नमाज़ में होता है तो अल्लाह तआला उसके सामने होता है। इसलिये कोई शख़्स नमाज़ में अपने सामने न थूके। (राजेअ: 406)

٦١١١- حَدَّثَنَا مُوسَى ابْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: بَيْنَا نَبِيُّ ﷺ يُصَلِّي رَأَى فِي قِبْلَةِ الْمَسْجِدِ نُخَامَةً فَحَكَّهَا بِيَدِهِ فَتَغَيَّظَ ثُمَّ قَالَ ((إِنَّ أَحَدَكُمْ إِذَا كَانَ فِي صَلاَتِهِ فَإِنَّ اللهَ حِيَالَ وَجْهِهِ فَلاَ يَتَنَخَّمَنَّ حِيَالَ وَجْهِهِ فِي الصَّلاَةِ)). [راجع: ٤٠٦]

6112. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमको इस्माईल बिन जा'फ़र ने ख़बर दी, कहा हमको रबीआ बिन अबी अब्दुर्रहमान ने ख़बर दी, उन्हें ज़ैद बिन ख़ालिद जहनी ने कि एक साहब ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से लुक़्ता (रास्ता

٦١١٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ، أَخْبَرَنَا رَبِيعَةُ بْنُ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ يَزِيدَ مَوْلَى الْمُنْبَعِثِ، عَنْ

में गिरी पड़ी चीज़ जिसे किसी ने उठा लिया हो) के बारे में पूछा तो आपने फ़र्माया साल भर तक लोगों से पूछते रहो फिर उसका सर बंधन और ज़र्फ़ पहचान कर रख और ख़र्च कर डाल। फिर अगर उसके बाद उसका मालिक आ जाए तो वो चीज़ उसे वापस कर दे। पूछा या रसूलल्लाह! भूली भटकी बकरी के बारे में क्या हुक्म है? आपने फ़र्माया कि उसे पकड़ ला क्योंकि वो तुम्हारे भाई की है या फिर भेड़िये की होगी। पूछा या रसूलल्लाह! और खोया हुआ ऊँट? बयान किया कि उस पर आँहज़रत (ﷺ) नाराज़ हो गये और आपके दोनों रुख़सार सुर्ख़ हो गये, या रावी ने यूँ कहा कि आपका चेहरा सुर्ख़ हो गया, फिर आपने फ़र्माया तुम्हें उस ऊँट से क्या ग़र्ज़ है उसके साथ तो उसके पैर हैं और उसका पानी है वो कभी न कभी अपने मालिक को पा लेगा। (राजेअ़ : 91)

زَيْدِ بْنِ خَالِدٍ الْجُهَنِيِّ أَنَّ رَجُلاً سَأَلَ رَسُولَ اللهِ ﷺ عَنِ اللُّقَطَةِ؟ فَقَالَ: ((عَرِّفْهَا سَنَةً، ثُمَّ اعْرِفْ وِكَاءَهَا وَعِفَاصَهَا ثُمَّ اسْتَنْفِقْ بِهَا، فَإِنْ جَاءَ رَبُّهَا فَأَدِّهَا إِلَيْهِ)) قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ فَضَالَّةُ الْغَنَمِ؟ قَالَ: ((خُذْهَا فَإِنَّمَا هِيَ لَكَ أَوْ لأَخِيكَ أَوْ لِلذِّئْبِ)) قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ فَضَالَّةُ الإِبِلِ؟ قَالَ: فَغَضِبَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حَتَّى احْمَرَّتْ وَجْنَتَاهُ أَوِ احْمَرَّ وَجْهُهُ ثُمَّ قَالَ: ((مَا لَكَ وَلَهَا؟ مَعَهَا حِذَاؤُهَا وَسِقَاؤُهَا حَتَّى يَلْقَاهَا رَبُّهَا)). [راجع: ٩١]

6113. और मक्की बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन सईद ने बयान किया (दूसरी सनद) ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा और मुझसे मुहम्मद बिन ज़ियाद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे उ़मर बिन उ़बैदुल्लाह के ग़ुलाम सालिम अबुन नज़्र ने बयान किया, उनसे बुस्र बिन सईद ने बयान किया और उनसे ज़ैद बिन ष़ाबित (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने खजूर की शाख़ों या बोरिये से एक मकान छोटे से बहरे की तरह बना लिया था। वहाँ आकर आप तहज्जुद की नमाज़ पढ़ा करते थे। चंद लोग भी वहाँ आ गये और उन्होंने आपकी इक्तिदा में नमाज़ पढ़ी फिर सब लोग दूसरी रात भी आ गये और ठहरे रहे लेकिन आप घर ही में रहे और बाहर उनके पास तशरीफ़ नहीं लाए। लोग आवाज़ बुलंद करने लगे और दरवाज़े पर कंकरियाँ मारीं तो आँहज़रत (ﷺ) ग़ुस्स़ की हालत में बाहर तशरीफ़ लाए और फ़र्माया तुम चाहते हो कि हमेशा ये नमाज़ पढ़ते रहो ताकि तुम पर फ़र्ज़ हो जाए (उस वक़्त मुश्किल हो) देखो तुम नफ़्ल नमाज़ें अपने घरों में ही पढ़ा करो क्योंकि फ़र्ज़ नमाज़ों के सिवा आदमी की बेहतरीन

٦١١٣- وَقَالَ الْمَكِّيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ سَعِيدٍ ح وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ زِيَادٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ سَعِيدٍ، قَالَ: حَدَّثَنِي سَالِمٌ أَبُو النَّضْرِ مَوْلَى عُمَرَ بْنِ عُبَيْدِ اللهِ، عَنْ بُسْرِ بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: احْتَجَرَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حُجَيْرَةً مُخَصَّفَةً - أَوْ حَصِيرًا - فَخَرَجَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يُصَلِّي فِيهَا فَتَتَبَّعَ إِلَيْهِ رِجَالٌ وَجَاؤُوا يُصَلُّونَ بِصَلاَتِهِ ثُمَّ جَاؤُوا لَيْلَةً، فَحَضَرُوا وَأَبْطَأَ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَنْهُمْ فَلَمْ يَخْرُجْ إِلَيْهِمْ فَرَفَعُوا أَصْوَاتَهُمْ وَحَصَبُوا الْبَابَ فَخَرَجَ إِلَيْهِمْ مُغْضَبًا فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَا زَالَ بِكُمْ صَنِيعُكُمْ حَتَّى ظَنَنْتُ أَنَّهُ سَيُكْتَبُ عَلَيْكُمْ، فَعَلَيْكُمْ بِالصَّلاَةِ فِي بُيُوتِكُمْ فَإِنَّ خَيْرَ صَلاَةِ الْمَرْءِ

नफ़्ल नमाज़ वो है जो घर में पढ़ी जाए। (राजेअ : 731)

فِي بَيْتِهِ إِلاَّ الصَّلاَةَ الْمَكْتُوبَةَ)).

[راجع: ٧٣١]

तश्रीह : ह़दीष़ में तो आँह़ज़रत (ﷺ) का एक नारवा सवाल गुस्सा करना मज़्कूर है, यही बाब से मुताबक़त है घर में नमाज़ पढ़ने से नफ़्ल नमाज़ें मुराद हैं। फ़र्ज़ नमाज़ का महल मसाजिद हैं बिला उ़ज़्रे शरई फ़र्ज़ नमाज़ घर में पढ़े वो बहुत से ष़वाब से मह़रूम रह गया। स़ह़ाबा का आपको आवाज़ देना इत्तिलाअ़न मकान पर कंकरी फेंककर आपको बुलाना, नमाज़े तहज्जुद आपकी इक़्तिदा मे अदा करने के शौक़ में था। खोए हुए ऊँट के बारे में आपका हुक्म अ़रब के माहौल के मुताबिक़ था।

बाब 76 : गुस्से से परहेज़ करना अल्लाह तआ़ला के फ़र्मान (सूरह शूरा) की वजह से और सूरह आले इमरान में फ़र्माया

٧٦- باب الْحَذَرِ مِنَ الْغَضَبِ لِقَوْلِ اللهِ تَعَالَى :

और (अल्लाह के प्यारे बन्दे वो हैं) जो कबीरा गुनाहों से और बे शिर्मी से परहेज़ करते हैं और जब वो गुस्सा होते हैं तो मुआ़फ़ कर देते हैं और जो ख़र्च करते हैं ख़ुशहाल और तंगदस्ती में और गुस्से को पी जाने वाले और लोगों को मुआ़फ़ कर देने वाले होते हैं और अल्लाह अपने मुख़्लिस बन्दों को पसंद करता है।

﴿وَالَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ كَبَائِرَ الإِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ، وَإِذَا مَا غَضِبُوا هُمْ يَغْفِرُونَ وَالَّذِينَ يُنفِقُونَ فِي السَّرَّاءِ وَالضَّرَّاءِ وَالْكَاظِمِينَ الْغَيْظَ والعافين عَنِ النَّاسِ وَا للهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ﴾.

6114. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें सईद बिन मुसय्यिब ने और उन्हें ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया पहलवान वो नहीं है जो कुश्ती लड़ने में ग़ालिब हो जाए बल्कि अस़ली पहलवान तो वो है जो गुस्से की हालत में अपने आप पर क़ाबू पाए। बेक़ाबू न हो जाए।

٦١١٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَالِكٌ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لَيْسَ الشَّدِيدُ بِالصُّرَعَةِ، إِنَّمَا الشَّدِيدُ الَّذِي يَمْلِكُ نَفْسَهُ عِنْدَ الْغَضَبِ)).

6115. हमसे उ़ष्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अ़दी बिन ष़ाबित ने, उनसे सुलैमान बिन सुरद (रज़ि.) ने बयान किया कि दो आदमियों ने नबी करीम (ﷺ) की मौजूदगी में झगड़ा किया, हम भी आँह़ज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में बैठे हुए थे। एक शख़्स दूसरे को गुस्से की हालत में गाली दे रहा था और उसका चेहरा सुर्ख़ था, आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं एक ऐसा कलिमा जानता हूँ कि अगर ये शख़्स उसे कह ले तो उसका गुस्सा दूर हो जाए। अगर ये अऊ़ज़ुबिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम कह ले। सहाबा ने उससे कहा कि सुनते नहीं, हुज़ूरे अकरम

٦١١٥- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ عَدِيِّ بْنِ ثَابِتٍ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ صُرَدٍ، قَالَ: اسْتَبَّ رَجُلاَنِ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ وَنَحْنُ عِنْدَهُ جُلُوسٌ وَأَحَدُهُمَا يَسُبُّ صَاحِبَهُ مُغْضَبًا قَدِ احْمَرَّ وَجْهُهُ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنِّي لأَعْلَمُ كَلِمَةً لَوْ قَالَهَا لَذَهَبَ عَنْهُ مَا يَجِدُ لَوْ قَالَ: أَعُوذُ بِا للهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ))

(ﷺ) क्या फ़र्मा रहे हैं? उसने कहा कि क्या मैं दीवाना हूँ? (राजेअ: 3282)

فَقَالُوا لِلرَّجُلِ: أَلاَ تَسْمَعُ مَا يَقُولُ النَّبِيُّ ﷺ قَالَ: إِنِّي لَسْتُ بِمَجْنُونٍ. [راجع: ۳۲۸۲]

ये भी उसने ग़ुस्से की ह़ालत में कहा कुछ ने कहा कि मत़लब ये है कि मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) का इर्शाद सुन लिया है, फिर उसने ये कलिमा पढ़ लिया।

6116. मुझसे यह्या बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको अबूबक्र ने ख़बर दी जो इब्ने अय्याश हैं, उन्हें अबू ह़ुसैन ने, उन्हें अबू स़ालेह़ ने और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि एक शख़्स़ ने नबी करीम (ﷺ) से अ़र्ज़ किया कि मुझे आप कोई नस़ीह़त फ़र्मा दीजिए आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ग़ुस़्सा न हुआ कर। उन्होंने कई मर्तबा ये सवाल किया और आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ग़ुस़्सा न हुआ कर।

٦١١٦- حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا أَبُو بَكْرٍ هُوَ ابْنُ عَيَّاشٍ، عَنْ أَبِي حُصَيْنٍ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَجُلاً قَالَ لِلنَّبِيِّ ﷺ: أَوْصِنِي قَالَ: ((لاَ تَغْضَبْ)) فَرَدَّدَ مِرَارًا قَالَ : ((لاَ تَغْضَبْ)).

तश्रीह : शायद ये शख़्स़ बड़ा ग़ुस़्से वाला होगा। तो उसको यही नस़ीह़त सब पर मुक़द्दम की पस ह़स्बे ह़ाल नस़ीह़त करना सुन्नते नबवी है जैसा कि हर ह़कीम पर फ़र्ज़ है कि मर्ज़ के ह़स्बे ह़ाल दवा तज्वीज़ करे।

बाब 77 : ह़या और शर्म का बयान

٧٧- باب الْحَيَاءِ

6117. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने उनसे अबुस्सवार अ़दवी ने बयान किया, कहा कि मैंने इमरान बिन ह़ुस़ैन से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया ह़या से हमेशा भलाई पैदा होती है। उस पर बशीर बिन कअ़ब ने कहा कि हिक्मत की किताबों में लिखा है कि ह़या से वक़ार ह़ास़िल होता है, ह़या से सकीनत ह़ास़िल होती है। इमरान ने उनसे कहा मैं तुझसे रसूलुल्लाह (ﷺ) की ह़दीष़ बयान करता हूँ और तू अपनी (दो वर्क़ी) किताब की बातें मुझको सुनाता है।

٦١١٧- حَدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَبِي السَّوَّارِ الْعَدَوِيِّ قَالَ: سَمِعْتُ عِمْرَانَ بْنَ حُصَيْنٍ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((الْحَيَاءُ لاَ يَأْتِي إِلاَّ بِخَيْرٍ)) فَقَالَ بُشَيْرُ بْنُ كَعْبٍ: مَكْتُوبٌ فِي الْحِكْمَةِ إِنَّ مِنَ الْحَيَاءِ وَقَارًا وَإِنَّ مِنَ الْحَيَاءِ سَكِينَةً. فَقَالَ لَهُ عِمْرَانُ: أُحَدِّثُكَ عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَتُحَدِّثُنِي عَنْ صَحِيفَتِكَ؟!.

तश्रीह : ह़ालाँकि बशीर बिन कअ़ब ने ह़कीमों की किताब से ह़दीष़ की ताईद की थी मगर इमरान ने उसको भी पसंद नहीं किया क्योंकि ह़दीष़ या आयत सुनने के बाद फिर औरों का कलाम सुनने की ज़रूरत नहीं, जब आफ़ताब आ गया तो मश्अ़ल या चिराग़ की क्या ज़रूरत है। इस ह़दीष़ से उन लोगों को नस़ीह़त लेनी चाहिये जो ह़दीष़ का मुआ़रिज़ा किसी इमाम या मुज्तहिद के क़ौल से करते हैं। शाह वलीउल्लाह (रह़.) ने ऐसे ही मुक़ल्लिदीन के बारे में बस़द अफ़सोस कहा है, **फ़मा यकूनु जवाबुहुम यौम यक़ुमुन्नासु लिरब्बिल्आलमीन** क़यामत के दिन ऐसे लोग जब बारगाहे इलाही मे खड़े होंगे और सवाल होगा कि तुमने मेरे रसूल का इर्शाद सुनकर फ़लाँ इमाम का क़ौल क्यूँ इख़्तियार किया तो ऐसे लोग अल्लाह पाक को क्या जवाब देंगे देखो। हुज्जतुल्लाहिल बालिग़ा उर्दू पेज नं. 240

6118. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबू सलमा ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे सालिम ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) का गुज़र एक शख़्स पर से हुआ जो अपने भाई पर ह़या की वजह से नाराज़ हो रहा था और कह रहा था कि तुम बहुत शर्माते हो, गोया वो कह रहा था कि तुम उसकी वजह से अपना नुक़्सान कर लेते हो। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि उसे छोड़ दो कि ह़या ईमान में से है। (राजेअ़ : 24)

٦١١٨- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي سَلَمَةَ، حَدَّثَنَا ابْنُ شِهَابٍ، عَنْ سَالِمٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا مَرَّ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى رَجُلٍ وَهُوَ يُعَاتِبُ أَخَاهُ فِي الْحَيَاءِ يَقُولُ: إِنَّكَ لَتَسْتَحْيِي حَتَّى كَأَنَّهُ يَقُولُ: قَدْ أَضَرَّ بِكَ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((دَعْهُ فَإِنَّ الْحَيَاءَ مِنَ الإِيمَانِ)). [راجع: ٢٤]

6119. हमसे अ़ली बिन अल जअ़द ने बयान किया, कहा हमको शुअ़बा ने ख़बर दी, उन्हें क़तादा ने, उन्हें अनस (रज़ि.) के गुलाम क़तादा ने, अबू अ़ब्दुल्लाह ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि उनका नाम अ़ब्दुल्लाह बिन अबी उ़त्बा है, मैंने अबू सईद से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) पर्दा में रहने वाली कुँवारी लड़की से भी ज़्यादा ह़या वाले थे। (राजेअ़ : 3562)

٦١١٩- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الْجَعْدِ، أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ مَوْلَى أَنَسٍ قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ اسْمُهُ عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي عُتْبَةَ : سَمِعْتُ أَبَا سَعِيدٍ يَقُولُ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ أَشَدَّ حَيَاءً مِنَ الْعَذْرَاءِ فِي خِدْرِهَا. [راجع: ٣٥٦٢]

बाब 78 : जब ह़या न हो तो जो चाहो करो

٧٨- باب إِذَا لَمْ تَسْتَحِ فَاصْنَعْ مَا شِئْتَ.

6120. हमसे अह़मद बिन यूनुस ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ज़ुहैर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मंसूर ने बयान किया, उनसे रिब्ई बिन ख़राश ने बयान किया, उनसे अबू मसऊ़द अंसारी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अगले पैग़म्बरों का कलाम जो लोगों को मिला उसमें ये भी है कि जब शर्म ही न रही तो फिर जो जी चाहे वो करो। (राजेअ़ : 3483)

٦١٢٠- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا مَنْصُورٌ، عَنْ رِبْعِيِّ بْنِ حِرَاشٍ، حَدَّثَنَا أَبُو مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّ مِمَّا أَدْرَكَ النَّاسُ مِنْ كَلاَمِ النُّبُوَّةِ الأُولَى إِذَا لَمْ تَسْتَحِ فَاصْنَعْ مَا شِئْتَ)). [راجع: ٣٤٨٣]

बाब 79 : शरीअ़त की बातें पूछने में शर्म न करना चाहिये

٧٩- باب مَا لاَ يُسْتَحْيَا مِنَ الْحَقِّ لِلتَّفَقُّهِ فِي الدِّينِ

6121. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने उनसे ज़ैनब बिन्ते अबी

٦١٢١- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ

सलमा (रज़ि.) ने और उनसे उम्मे सलमा (रज़ि.) ने बयान किया कि हज़रत उम्मे सुलैम (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुईं और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! अल्लाह हक़ बात से हया नहीं करता क्या औरत को जब एहतिलाम हो तो उस पर ग़ुस्ल वाजिब है? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ अगर औरत मनी की तरी देखे तो उस पर भी ग़ुस्ल वाजिब है। (राजेअ : 130)

زَيْنَبَ ابْنَةَ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: جَاءَتْ أُمُّ سُلَيْمٍ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ. فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّ اللهَ لاَ يَسْتَحِي مِنَ الْحَقِّ فَهَلْ عَلَى الْمَرْأَةِ غُسْلٌ إِذَا احْتَلَمَتْ؟ فَقَالَ: نَعَمْ ((إِذَا رَأَتِ الْمَاءَ)). [راجع: ١٣٠]

तश्रीह : ये हज़रत ज़ैनब रसूलुल्लाह (ﷺ) की रबीबा थीं, उनके वालिद हज़रत अबू सलमा थे जिनका नाम अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्दुल असद मख़्ज़ूमी है और कुन्नियत अबू सलमा है। ये रसूले करीम (ﷺ) के हक़ीक़ी फूफीज़ाद भाई थे। उनकी वालिदा का नाम बर्रा बिन्ते अ़ब्दुल मुत्तलिब है और अबू सलमा नबी (ﷺ) के दूध शरीक भी हैं। उनकी बीवी उम्मे सलमा ने उनके साथ हब्शा की हिजरत की थी मगर मक्का वापस आ गये जब दोबारा मदीना मुनव्वरह को हिजरत की तो उनके बच्चे सलमा को ददिहाल वालों ने छीन लिया और हज़रत उम्मे सलमा को उनके मायके वालों ने जबरन रोक लिया। अबू सलमा दिल मसोसकर बीवी और बच्चों को छोड़कर अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की मुहब्बत में मदीना चले गये। हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) एक साल तक बराबर रोती रही और रोज़ाना उस जगह आकर बैठ जाती जहाँ शौहर से अलग की गई थीं, उनकी इस बेक़रारी और गिरया व ज़ारी ने संगदिल अ़ज़ीज़ों को भी रहम पर मजबूर कर दिया और उन्होंने उनको उनके शौहर के पास जाने की इजाज़त दे दी। ये अकेली मदीना मुनव्वरह को चल खड़ी हुईं, जंगे उहुद में अबू सलमा सख़्त ज़ख़्मी हो गये और जमादिल आख़िर 3 हिजरी में उन ज़ख़्मों की वजह से उनका इंतिक़ाल हो गया। उस वक़्त उन्होंने दुआ की थी कि या अल्लाह! मेरे अहलो-अयाल की अच्छी तरह निगाहदाश्त कीजियो। ये दुआ मक़्बूल हुई और अबू सलमा के अहलो-अयाल को रसूलुल्लाह (ﷺ) जैसा सरपरस्त अ़ता हुआ और हज़रत उम्मे सलमा को उम्मुल मोमिनीन का लक़ब व मन्सब अ़ता किया गया। अबू सलमा (रज़ि.) के बच्चों की रसूले करीम (ﷺ) ने ऐसी ता'लीम व तर्बियत की कि उ़मर बिन अबू सलमा से सईद बिन मुसय्यिब, अबू उमामा बिन सहल और उ़र्वा बिन ज़ुबैर (रज़ि.) जैसे जलीलुल क़द्र सहाबा हदीष़ की रिवायत करते हैं और हज़रत अ़ली उनको फ़ारस और बहरीन का हाकिम मुक़र्रर करते हैं। अबू सलमा की बेटी ज़ैनब अपने ज़माने की सब औरतों से ज़्यादा फ़क़ीहा थीं, ये बच्ची ही थीं कि एक दिन खेलते खेलते ये रसूले करीम (ﷺ) के पास आ गईं आप ग़ुस्ल फ़र्मा रहे थे आपने प्यार से उनके मुँह पर पानी के छींटे मारे, चेहरे की ताज़गी बुढ़ापे में भी जवानी जैसी क़ायम रही। इनका इंतिक़ाल मदीना मुनव्वरह में 84 साल की उ़म्र में 60 हिजरी में हुआ।

6122. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा हमसे मुहारिब बिन दिष़ार ने, कहा कि मैंने हज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मोमिन की मिष़ाल उस सर सब्ज़ पेड़ की है, जिसके पत्ते नहीं झड़ते। सहाबा ने कहा कि ये फ़लाँ पेड़ है। ये फ़लाँ पेड़ है। मेरे दिल में आया कि कहूँ कि ये खजूर का पेड़ है लेकिन चूँकि मैं नौजवान था, इसलिये मुझको बोलते हुए हया आई। फिर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि वो खजूर का पेड़ है। और इसी सनद से शुअ़बा से रिवायत है कि कहा हमसे ख़ुबैब बिन अ़ब्दुर्रहमान

٦١٢٢– حَدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، حَدَّثَنَا مُحَارِبُ بْنُ دِثَارٍ، قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عُمَرَ يَقُولُ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَثَلُ الْمُؤْمِنِ كَمَثَلِ شَجَرَةٍ خَضْرَاءَ، لاَ يَسْقُطُ وَرَقُهَا وَلاَ يَتَحَاتُّ)) فَقَالَ الْقَوْمُ: هِيَ شَجَرَةُ كَذَا هِيَ شَجَرَةُ كَذَا فَأَرَدْتُ أَنْ أَقُولَ هِيَ النَّخْلَةُ وَأَنَا غُلاَمٌ شَابٌّ فَاسْتَحْيَيْتُ فَقَالَ: ((هِيَ النَّخْلَةُ)). وَعَنْ شُعْبَةَ، حَدَّثَنَا

خُبَيْبُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ حَفْصِ بْنِ عَاصِمٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ مِثْلَهُ وَزَادَ فَحَدَّثْتُ بِهِ عُمَرَ، فَقَالَ: لَوْ كُنْتَ قُلْتَهَا لَكَانَ أَحَبَّ إِلَيَّ مِنْ كَذَا وَكَذَا. [راجع: ٦١]

ने, उनसे ह़फ़्स़ बिन आ़सिम ने और उनसे इब्ने ड़मर (रज़ि.) ने इसी त़रह बयान किया और ये इज़ाफ़ा किया कि फिर मैंने इसका ज़िक्र ड़मर (रज़ि.) से किया तो उन्होंने कहा अगर तुमने कह दिया होता तो मुझे इतना इतना माल मिलने से भी ज़्यादा ख़ुशी ह़ासिल होती। (राजेअ़ : 61)

ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने इसी रिवायत से बाब का मत़ लब निकाला कि ह़ज़रत ड़मर (रज़ि.) ने अपने बेटे अ़ब्दुल्लाह की इस शर्म को पसंद न किया जो दीन की बात बतलाने में उन्होंने की। बेमह़ल शर्म करना ग़लत़ है।

٦١٢٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا مَرْحُومٌ، سَمِعْتُ ثَابِتًا أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: جَاءَتِ امْرَأَةٌ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ تَعْرِضُ عَلَيْهِ نَفْسَهَا فَقَالَتْ: هَلْ لَكَ حَاجَةٌ فِيَّ؟

6123. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे मरहूम बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने कहा कि मैंने स़ाबित से सुना, और उन्होंने अनस (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि एक ख़ातून नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुई और अपने आपको आँह़ज़रत (ﷺ) के निकाह़ के लिये पेश किया और अ़र्ज़ किया, क्या आँह़ज़रत (ﷺ) को मुझसे निकाह़ की ज़रूरत है? इस पर अनस (रज़ि.) की स़ाहबज़ादी बोलीं, वो कितनी बेह़या थी। अनस (रज़ि.) ने कहा कि वो तुमसे तो अच्छी थीं उन्होंने अपने आपको आँह़ज़रत (ﷺ) के निकाह़ के लिये पेश किया। (राजेअ़ : 5120)

ये सआ़दत कहाँ मिलती है कि आँह़ज़रत (ﷺ) किसी औ़रत को अपनी ज़ोजियत के लिये पसंद फ़र्माएँ।

٨٠- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((يَسِّرُوا وَلاَ تُعَسِّرُوا)) وَكَانَ يُحِبُّ التَّخْفِيفَ وَالْيُسْرَ عَلَى النَّاسِ.

बाब 80 : नबी करीम (ﷺ) का फ़र्मान कि आसानी करो, सख़्ती न करो, आप (ﷺ) लोगों पर तख़्फ़ीफ़ और आसानी को पसंद फ़र्माया करते थे

अल्लाह पाक हमारे ड़लमा और फ़ुक़हा को भी इस नबी (ﷺ) के तरीक़े पर अ़मल की तौफ़ीक़ दे जिन्होंने मिल्लते इस्लामिया को मुख़्तलिफ़ फ़िर्क़ों में बांट करके उम्मत को बहुत सी मुश्किलात में मुब्तला कर रखा है।

٦١٢٤- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ، حَدَّثَنَا النَّضْرُ، أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: لَمَّا بَعَثَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَمُعَاذَ بْنَ جَبَلٍ قَالَ لَهُمَا: ((يَسِّرَا وَلاَ تُعَسِّرَا وَبَشِّرَا وَلاَ تُنَفِّرَا وَتَطَاوَعَا)) قَالَ أَبُو مُوسَى: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّا بِأَرْضٍ يُصْنَعُ فِيهَا شَرَابٌ مِنَ الْعَسَلِ يُقَالُ لَهُ

6124. मुझसे इस्हाक़ ने बयान किया, कहा हमसे नज़्र ने बयान किया, कहा हमको शुअ़बा ने ख़बर दी, उन्हें सईद बिन अबी बुर्दा ने, उन्हें उनके वालिद ने और उनके दादा ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें (अबू मूसा अशअ़री रज़ि.) और मुआ़ज़ बिन जबल को (यमन) भेजा तो उनसे फ़र्माया कि (लोगों के लिए) आसानियाँ पैदा करना, तंगी में न डालना, उन्हें ख़ुशख़बरी सुनाना, दीन से नफ़रत न दिलाना और तुम दोनों आपस में इत्तिफ़ाक़ से काम करना, अबू मूसा

(रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह! हम ऐसी सरज़मीन में जा रहे हैं जहाँ शहद से शराब बनाई जाती है और उसे बित्ऽ कहा जाता है और जौ से शराब बनाई जाती है और उसे मिज़्र कहा जाता है? आँहज़रत ने फ़र्माया कि हर नशा लाने वाली चीज़ हराम है। (राजेअ़ : 2261)

الْبِتْعُ وَشَرَابٌ مِنَ الشَّعِيرِ يُقَالُ لَهُ : الْمِزْرُ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((كُلُّ مُسْكِرٍ حَرَامٌ)). [راجع: ٢٢٦١]

कोई शराब हो जो नशा करे वो ह़राम है।

6125. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अबुत तियाह़ ने बयान किया, उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, आसानी पैदा करो, तंगी न पैदा करो, लोगों को तसल्ली और तशफ़्फ़ी दो नफ़रत न दिलाओ।

٦١٢٥- حَدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي التَّيَّاحِ، قَالَ : سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((يَسِّرُوا وَلاَ تُعَسِّرُوا وَسَكِّنُوا وَلاَ تُنَفِّرُوا)).

6126. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, उनसे मालिक ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़र्वा ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब भी रसूलुल्लाह (ﷺ) को दो चीज़ों में से एक को इख़्तियार करने का इख़्तियार दिया गया तो आपने हमेशा उनमें आसान चीज़ों को इख़्तियार किया, बशर्ते कि उसमें गुनाह का कोई पहलू न होता। अगर उसमें गुनाह का कोई पहलू होता तो आँहज़रत (ﷺ) उससे सबसे ज़्यादा दूर रहते और हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने अपनी ज़ात के लिये किसी से बदला नहीं लिया, अल्बत्ता अगर कोई शख़्स अल्लाह की हुर्मत वहद को तोड़ता तो आँहज़रत (ﷺ) उनसे तो महज़ अल्लाह की रज़ामंदी के लिये बदला लेते। (राजेअ़ : 3560)

٦١٢٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، عَنْ مَالِكٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ: مَا خُيِّرَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بَيْنَ أَمْرَيْنِ قَطُّ إِلاَّ أَخَذَ أَيْسَرَهُمَا مَا لَمْ يَكُنْ إِثْمًا، فَإِنْ كَانَ إِثْمًا كَانَ أَبْعَدَ النَّاسِ مِنْهُ، وَمَا انْتَقَمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لِنَفْسِهِ فِي شَيْءٍ قَطُّ إِلاَّ أَنْ تُنْتَهَكَ حُرْمَةُ اللهِ فَيَنْتَقِمُ بِهَا لِلَّهِ. [راجع: ٣٥٦٠]

बज़ाहिर इस ह़दीष़ में इश्काल है क्योंकि जो काम गुनाह होता है उसके लिये आपको कैसे इख़्तियार दिया जाता, शायद ये मुराद हो कि काफ़िरों की त़रफ़ से ऐसा इख़्तियार दिया जाता।

6127. हमसे अबुन नोअ़मान बिन फ़ज़ल सदूसी ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अज़्रक़ बिन क़ैस ने कि अह्वाज़ नामी ईरानी शहर में हम एक नहर के किनारे थे जो ख़ुश्क पड़ी थी, फिर अबू बर्ज़ा असलमी स़हाबी घोड़े पर तशरीफ़ लाए और नमाज़ पढ़ी और घोड़ा छोड़ दिया। घोड़ा भागने लगा तो आपने नमाज़ तोड़ दी और उसका पीछा किया, आख़िर उसके क़रीब पहुँचे और उसे पकड़ लिया। फिर वापस आकर नमाज़ क़ज़ा की, वहाँ एक शख़्स

٦١٢٧- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنِ الأَزْرَقِ بْنِ قَيْسٍ، قَالَ: كُنَّا عَلَى شَاطِىءِ نَهْرٍ بِالأَهْوَازِ قَدْ نَضَبَ عَنْهُ الْمَاءُ فَجَاءَ أَبُو بَرْزَةَ الأَسْلَمِيُّ عَلَى فَرَسٍ فَصَلَّى وَخَلَّى فَرَسَهُ، فَانْطَلَقَتِ الْفَرَسُ فَتَرَكَ صَلاَتَهُ وَتَبِعَهَا حَتَّى أَدْرَكَهَا، فَأَخَذَهَا ثُمَّ جَاءَ فَقَضَى صَلاَتَهُ وَفِينَا رَجُلٌ

ख़ारजी था, वो कहने लगा कि इस बूढ़े को देखो इसने घोड़े के लिये नमाज़ तोड़ डाली। अबू बर्ज़ा (रज़ि.) नमाज़ से फ़ारिग़ होकर आए और कहा जबसे मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) से जुदा हुआ हूँ, किसी ने मुझको मलामत नहीं की और उन्होंने कहा कि मेरा घर यहाँ से दूर है, अगर मैं नमाज़ पढ़ता रहता और घोड़े को भागने देता तो अपने घर रात तक भी न पहुँच पाता और उन्होंने बयान किया कि वो आँहज़रत (ﷺ) की सुहबत में रहे हैं और मैंने आँहज़रत (ﷺ) को आसान सूरतों को इख़्तियार करते देखा है। (राजेअ़: 1211)

لَهُ رَأْيٌ فَأَقْبَلَ يَقُولُ: انْظُرُوا إِلَى هَذَا الشَّيْخِ تَرَكَ صَلاَتَهُ مِنْ أَجْلِ فَرَسٍ، فَأَقْبَلَ فَقَالَ: مَا عَنَّفَنِي أَحَدٌ مُنْذُ فَارَقْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ وَقَالَ إِنَّ مَنْزِلِي مُتَرَاخٍ فَلَوْ صَلَّيْتُ وَتَرَكْتُ لَمْ آتِ أَهْلِي إِلَى اللَّيْلِ وَذَكَرَ أَنَّهُ صَحِبَ النَّبِيَّ ﷺ فَرَأَى مِنْ تَيْسِيرِهِ. [راجع: ١٢١١]

6128. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने (दूसरी सनद) और लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया कि मुझसे यूनुस ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा ने ख़बर दी और उन्हें हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने ख़बर दी कि एक देहाती ने मस्जिद में पेशाब कर दिया, लोग उसकी तरफ़ मारने को बढ़े, लेकिन रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया इसे छोड़ दो और जहाँ इसने पेशाब किया है उस जगह पर पानी का एक डोल भरा हुआ बहा दो, क्योंकि तुम आसानी करने वाले बनाकर भेजे गये हो तंगी करने वाले बनाकर नहीं भेजे गये। (राजेअ़: 220)

٦١٢٨- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ ح وَقَالَ اللَّيْثُ: حَدَّثَنِي يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عُتْبَةَ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ أَخْبَرَهُ أَنَّ أَعْرَابِيًّا بَالَ فِي الْمَسْجِدِ فَثَارَ إِلَيْهِ النَّاسُ لِيَقَعُوا بِهِ فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((دَعُوهُ وَأَهْرِيقُوا عَلَى بَوْلِهِ ذَنُوبًا مِنْ مَاءٍ -أَوْ سَجْلاً مِنْ مَاءٍ- فَإِنَّمَا بُعِثْتُمْ مُيَسِّرِينَ وَلَمْ تُبْعَثُوا مُعَسِّرِينَ)). [راجع: ٢٢٠]

तश्रीह: इस हदीष़ से उन लोगों का रद्द हुआ जो कहते हैं, ऐसी हालत में वहाँ की मिट्टी निकालनी ज़रूरी थी ये हदीष़ पहले कई बार गुज़र चुकी है। इससे अख़्लाक़े नबवी पर भी रोशनी पड़ती है। (ﷺ) व अ़ला आलिही व सहबिही अज्मईन अल्फ़ अल्फ़ मर्रतिन बिअ़ददि कुल्लि ज़र्रतिन

बाब 81 : लोगों के साथ फ़राख़ी से पेश आना

٨١- باب الاِنْبِسَاطِ إِلَى النَّاسِ

और हज़रत इब्ने मस्ऊ़द (रज़ि.) ने कहा कि लोगों के साथ मैल मिलाप रखो, लेकिन उसकी वजह से अपने दीन को ज़ख़्मी न करना और इस बाब में अहलो-अ़याल के साथ हंसी मज़ाक़ दिल्लगी करने का भी बयान है।

وَقَالَ ابْنُ مَسْعُودٍ: خَالِطِ النَّاسَ، وَدِينَكَ لاَ تَكْلِمَنَّهُ، وَالدُّعَابَةِ مَعَ الأَهْلِ.

6129. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा (रज़ि .) ने बयान किया, कहा हमसे अबुत्त तियाह ने, कहा मैं ने हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) हम बच्चों से भी दिल्लगी करते, यहाँ तक कि मेरे छोटे भाई अबू उ़मैर नामी से (मज़ाहन) फ़र्माते या अबा उ़मैर मा फअ़लन्नुग़ैर ऐ अबू

٦١٢٩- حَدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، حَدَّثَنَا أَبُو التَّيَّاحِ، قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: إِنْ كَانَ النَّبِيُّ ﷺ لَيُخَالِطُنَا حَتَّى يَقُولَ لأَخٍ لِي صَغِيرٍ يَا أَبَا عُمَيْرٍ مَا فَعَلَ النُّغَيْرُ؟.

ड़मेर! तेरी नुग़ैर नामी चिड़िया तो बख़ैर है? (दीगर मक़ामात : 6203)

[طرفه في: ٦٢٠٣].

तश्रीह : अबू ड़मैर वो ही बच्चा था जो बचपन में मर गया था और उम्मे सुलैम ने उसके मरने की ख़बर उसके वालिद अबू त़लहा से छुपाकर रखी थी यहाँ तक कि उन्होंने खाना खाया उम्मे सुलैम से सुह़बत की। उस वक़्त ड़म्मे सुलैम ने कहा कि बच्चा मर गया है उसको दफ़न कर दो इसी स़ब्र व शुक्र का नतीजा था कि अल्लाह ने उसी रात उम्मे सुलैम के बत़न में ह़मल ठहरा दिया और बेहतरीन बदल अ़ता फ़र्माया।

6130. हमसे मुह़म्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमको अबू मुआविया ने ख़बर दी, कहा हमसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) के यहाँ लड़कियों के साथ खेलती थी, मेरी बहुत सी सहेलियाँ थीं जो मेरे साथ खेला करती थीं, जब आँह़ज़रत (ﷺ) अंदर तशरीफ़ लाते तो वो छुप जातीं, फिर आँह़ज़रत (ﷺ) उन्हें मेरे पास भेजते और वो मेरे साथ खेलतीं।

٦١٣٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ، أَخْبَرَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كُنْتُ أَلْعَبُ بِالْبَنَاتِ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ وَكَانَ لِي صَوَاحِبُ يَلْعَبْنَ مَعِي فَكَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ إِذَا دَخَلَ يَتَقَمَّعْنَ مِنْهُ فَيُسَرِّبُهُنَّ إِلَيَّ فَيَلْعَبْنَ مَعِي.

इसी ह़दीष़ से बच्चियों के लिये गुड़ियों से खेलना बिल इत्तिफ़ाक़ जाइज़ रखा गया है और गुड़ियों को उन मूरतों मे से मुस्तष़्ना रखा गया है जिनका बनाना ह़राम है।

बाब 82 : लोगों के साथ ख़ातिर तवाज़ोअ से पेश आना

٨٢- باب الْمُدَارَاةِ مَعَ النَّاسِ

और ह़ज़रत अबुद दर्दा (रज़ि.) से रिवायत बयान की जाती है कि कुछ लोग ऐसे हैं जिनके सामने हम हंसते और ख़ुशी का इज़्हार करते हैं मगर हमारे दिल उन पर ला'नत करते हैं।

وَيُذْكَرُ عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ : إِنَّا لَنَكْشِرُ فِي وُجُوهِ أَقْوَامٍ وَإِنَّ قُلُوبَنَا لَتَلْعَنُهُمْ.

मत़लब ये है कि दोस्त दुश्मन सबके साथ इंसानियत और अख़्लाक़ से और मुह़ब्बत से पेश आना ये निफ़ाक़ नहीं है, निफ़ाक़ ये है कि मष़लन उनसे कहे मैं दिल से आपसे मुह़ब्बत रखता हूँ ह़ालाँकि दिल में उनकी अ़दावत होती है।

6131. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन ड़ययना ने, उनसे इब्नुल मुंकदिर ने, उनसे ड़र्वा बिन ज़ुबैर ने और उन्हें ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) से एक शख़्स़ ने अंदर आने की इजाज़त चाही तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसे अंदर बुला लो, ये अपनी क़ौम का बहुत ही बुरा आदमी है, जब वो शख़्स़ अंदर आ गया तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने उसके साथ नर्मी के साथ बातचीत फ़र्माई। मैंने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह! आपने अभी इसके बारे में क्या फ़र्माया था और फिर इतनी नर्मी के साथ बातचीत फ़र्माई। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, आइशा! अल्लाह के नज़दीक एक

٦١٣١- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ ابْنِ الْمُنْكَدِرِ حَدَّثَهُ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ، أَنَّ عَائِشَةَ أَخْبَرَتْهُ أَنَّهُ اسْتَأْذَنَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ رَجُلٌ فَقَالَ: ((ائْذَنُوا لَهُ فَبِئْسَ ابْنُ الْعَشِيرَةِ، أَوْ بِئْسَ أَخُو الْعَشِيرَةِ)) فَلَمَّا دَخَلَ أَلاَنَ لَهُ الْكَلاَمَ فَقُلْتُ : يَا رَسُولَ اللهِ قُلْتَ مَا قُلْتَ ثُمَّ أَلَنْتَ لَهُ فِي الْقَوْلِ فَقَالَ: ((أَيْ عَائِشَةُ إِنَّ شَرَّ النَّاسِ مَنْزِلَةً عِنْدَ اللهِ مَنْ تَرَكَهُ أَوْ

مرتبہ کے एतिबार...

वَدَعَهُ النَّاسِ اتِّقَاءَ فُحْشِهِ)). [راجع: ٦٠٣٢]

मर्तबा के ए'तिबार से वो शख़्स सबसे बुरा है जिसे लोग उसकी बदख़ल्क़ी की वजह से छोड़ दें। (राजेअ: 6032)

٦١٣٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الْوَهَّابِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ عُلَيَّةَ، أَخْبَرَنَا أَيُّوبُ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أُهْدِيَتْ لَهُ أَقْبِيَةٌ مِنْ دِيبَاجٍ مُزَرَّرَةٌ بِالذَّهَبِ، فَقَسَمَهَا فِي أُنَاسٍ مِنْ أَصْحَابِهِ وَعَزَلَ مِنْهَا وَاحِدًا لِمَخْرَمَةَ، فَلَمَّا جَاءَ قَالَ: ((خَبَأْتُ هَذَا لَكَ)) قَالَ أَيُّوبُ: بِثَوْبِهِ أَنَّهُ يُرِيهِ إِيَّاهُ وَكَانَ فِي خُلُقِهِ شَيْءٌ.

وَرَوَاهُ حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ. وَقَالَ حَاتِمُ بْنُ وَرْدَانَ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ، عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ، عَنِ الْمِسْوَرِ قَدِمَتْ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ أَقْبِيَةٌ. [راجع: ٢٥٩٩]

6132. हमसे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल वह्हाब ने बयान किया, कहा हमको इब्ने उलय्या ने ख़बर दी, कहा हमको अय्यूब ने ख़बर दी, उन्हें अब्दुल्लाह बिन अबी मुलैका ने ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) के पास हदिया में दीबा की चंद क़बाएँ आईं, उनमें सोने के बटन लगे हुए थे। आँहज़रत (ﷺ) ने वो क़बाएँ अपने सहाबा में तक़्सीम कर दीं और एक मख़रमा के लिये बाक़ी रखी, जब मख़रमा आया तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये मैंने तुम्हारे लिये छुपा रखी थी। अय्यूब ने कहा या'नी अपने कपड़े में छुपा रखी थी आप मख़रमा को ख़ुश करने के लिये उसके तक्मे या घुण्डी को दिखला रहे थे क्यों कि वो ज़रा सख़्तमिज़ाज आदमी थे।

इस हदीष़ को हम्माद बिन ज़ैद ने भी अय्यूब के वास्ते से रिवायत किया मुर्सलात में और हातिम बिन वरदान ने कहा हमसे अय्यूब ने बयान किया, उनसे अबू मुलैका ने और उनसे मिस्वर बिन मख़रमा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) के पास चंद क़बाएँ तोहफ़े में आईं फिर ऐसी ही हदीष़ बयान की। (राजेअ: 2599)

तश्रीह: इस सनद के बयान करने से इमाम बुख़ारी (रह.) की ग़र्ज़ ये है कि हम्माद बिन ज़ैद और इब्ने उलय्या की रिवायतें बज़ाहिर मुर्सलन हैं मगर फ़िल हक़ीक़त मौसूलन हैं क्योंकि हातिम बिन वरदान की रिवायत से ये निकलता है कि इब्ने अबी मुलैका ने इसको मिस्वर बिन मख़रमा से रिवायत किया है जो सहाबी हैं।

٨٣- باب لاَ يُلْدَغُ الْمُؤْمِنُ مِنْ جُحْرٍ مَرَّتَيْنِ،

बाब 83 : मोमिन एक सूराख़ से दो बार नहीं डसा जा सकता

وَقَالَ مُعَاوِيَةُ، لاَ حَكِيمَ إِلاَّ ذُو تَجْرِبَةٍ.

और मुआविया बिन सुफ़यान ने कहा आदमी तजुर्बा उठाकर दाना बनता है।

या'नी मुसलमान को जब एक बार किसी चीज़ का तजुर्बा हो जाता है उससे नुक़्सान उठाता है तो फिर दोबारा धोखा नहीं खाता होशियार रहता है, बक़ौल दूध का जला छाछ भी फूँक फूँककर पीता है।

٦١٣٣- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنِ ابْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لاَ يُلْدَغُ الْمُؤْمِنُ مِنْ جُحْرٍ

6133. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष़ बिन सअद ने बयान किया, उन्होंने कहा उनसे अक़ील ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने, उनसे इब्ने मुसय्यिब ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मोमिन को एक सूराख़ से दोबारा डंक नहीं

وَاحِدٍ مَرَّتَيْنِ)).

लग सकता।

एक ही बार धोखा खाता है फिर होशियार रहता है। सच कहा गया है कि,

आदमी बनता है लाखों ठोकरें खाने के बाद, रंग लाती है ह़िना पत्थर पे पिस जाने के बाद

बाब 84 : मेहमान के ह़क़ के बयान में

6134. हमसे इस्ह़ाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमसे रौह़ बिन उ़बादा ने, कहा हमसे हुसैन ने, उनसे यह़्या बिन अबीबक्र ने, उनसे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़ि.)ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) मेरे पास तशरीफ़ लाए और फ़र्माया, क्या ये मेरी ख़बर स़ह़ीह़ है कि तुम रात भर इ़बादत करते रहते हो और दिन में रोज़े रखते हो? मैंने कहा कि जी हाँ ये स़ह़ीह़ है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ऐसा न करो, इ़बादत भी कर और सो भी, रोज़े भी रख और बिला रोज़े भी रह, क्योंकि तुम्हारे जिस्म का भी तुम पर ह़क़ है, तुम्हारी आँखों का भी तुम पर ह़क़ है, तुमसे मुलाक़ात के लिये आने वालों का भी तुम पर ह़क़ है, तुम्हारी बीवी का भी तुम पर ह़क़ है, उम्मीद है कि तुम्हारी उ़म्र लम्बी हो क्योंकि हर नेकी का बदला दस गुना मिलता है, इस त़रह़ ज़िंदगी भर का रोज़ा होगा। उन्होंने बयान किया कि मैंने सख़्ती चाही तो आपने मेरे ऊपर सख़्ती कर दी, मैंने अ़र्ज़ किया कि मैं इससे ज़्यादा की त़ाक़त रखता हूँ। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर हर हफ़्ते तीन रोज़ा रखा कर, बयान किया कि मैंने और सख़्ती चाही और आपने मेरे ऊपर और सख़्ती कर दी। मैंने अ़र्ज़ किया कि मैं इससे भी ज़्यादा की त़ाक़त रखता हूँ। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह के नबी दाऊद (अ़लैहिस्सलाम) जैसा रोज़ा रख। मैंने पूछा, अल्लाह के नबी दाऊद (अ़लैहि.) का रोज़ा कैसा था? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि एक दिन रोज़ा एक दिन इफ़्त़ार गोया आधी उ़म्र के रोज़े। (राजेअ : 1131)

٨٤- باب حَقِّ الضَّيْفِ

٦١٣٤- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، حَدَّثَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ، حَدَّثَنَا حُسَيْنٌ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ دَخَلَ عَلَيَّ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَقَالَ: ((أَلَمْ أُخْبَرْ أَنَّكَ تَقُومُ اللَّيْلَ وَتَصُومُ النَّهَارَ))، قُلْتُ: بَلَى قَالَ: ((فَلاَ تَفْعَلْ قُمْ وَنَمْ، وَصُمْ وَأَفْطِرْ، فَإِنَّ لِجَسَدِكَ عَلَيْكَ حَقًّا، وَإِنَّ لِزَوْرِكَ عَلَيْكَ حَقًّا، وَإِنَّ لِزَوْجِكَ عَلَيْكَ حَقًّا، وَإِنَّكَ عَسَى أَنْ يَطُولَ بِكَ عُمُرٌ، وَإِنَّ مِنْ حَسْبِكَ أَنْ تَصُومَ مِنْ كُلِّ شَهْرٍ ثَلاَثَةَ أَيَّامٍ فَإِنَّ بِكُلِّ حَسَنَةٍ عَشْرَ أَمْثَالِهَا فَذَلِكَ الدَّهْرُ كُلُّهُ))، قَالَ فَشَدَّدْتُ فَشُدِّدَ عَلَيَّ قُلْتُ : فَإِنِّي أُطِيقُ غَيْرَ ذَلِكَ قَالَ: ((فَصُمْ مِنْ كُلِّ جُمُعَةٍ ثَلاَثَةَ أَيَّامٍ)) قَالَ: فَشَدَّدْتُ فَشُدِّدَ عَلَيَّ قُلْتُ : أُطِيقُ غَيْرَ ذَلِكَ قَالَ: ((فَصُمْ صَوْمَ نَبِيِّ اللهِ دَاوُدَ)) قُلْتُ: وَمَا صَوْمُ نَبِيِّ اللهِ دَاوُدَ؟ قَالَ : ((نِصْفُ الدَّهْرِ)).

[راجع: ١١٣١]

तशरीह : आँह़ज़रत (ﷺ) के इस इर्शादे गिरामी का ह़ासिल ये है कि अल्लाह पाक ने इंसान को मिल्की और बहीमी दोनों त़ाक़तें देकर मअ़जूने मुरक्कब पैदा फ़र्माया है। अगर एक कुव्वत को बिलकुल तबाह करके इंसान फ़रिश्ता बन जाए तो गोया वो अपनी फ़ित़रत बिगाड़ता है। मंशा-ए-कुदरत ये है कि आदमी को आदमी ही रहना चाहिये, इ़बादते इलाही

भी हो और दुनिया के ह़िस्से भी जाइज़ ह़द के अंदर ह़ासिल किये जाएँ। यही सुन्नते नबवी (ﷺ) है कि बीवी-बच्चों के ह़ुक़ूक़ भी अदा किये जाएँऔर इबादत भी की जाए। रात को आराम भी किया जाए और इबादत भी की जाए। इसीलिये आँह़ज़रत (ﷺ) ने निकाह़ के बारे में ख़ास़ तौर से फ़र्माया कि निकाह़ करना मेरी सुन्नत है और जो मेरी सुन्नत से नफ़रत करे वो मेरी उम्मत से ख़ारिज है। इससे कुँवारे रहने वाले नामो-निहाद पीरों को सबक़ लेना चाहिये।

बाब 85 : मेहमान की इ़ज़्ज़त और ख़ुद उसकी ख़िदमत करना और अल्लाह तआ़ला के फ़र्मान, इब्राहीम (अ़लैहि.) के मेहमान जिनकी इ़ज़्ज़त की गई, की तफ़्सीर

٨٥- باب إِكْرَامِ الضَّيْفِ وَخِدْمَتِهِ إِيَّاهُ بِنَفْسِهِ وَقَوْلِهِ: ﴿وَضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ الْمُكْرَمِينَ﴾. [الذاريات: ٢٣]

6135. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें सईद बिन अबी सईद मक़्बरी ने, उन्हें अबू शुरैह़ कअ़बी (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जो शख़्स़ अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो उसे अपने मेहमान की इ़ज़्ज़त करनी चाहिये। उसकी ख़ातिरदारी बस एक दिन और रात की है और मेहमानी तीन दिन और रातों की। उसके बाद जो हो वो स़दक़ा है और मेहमान के लिये जाइज़ नहीं कि वो अपने मेज़बान के पास इतने दिन ठहर जाए कि उसे तंग कर डाले। (राजेअ़ : 6019)

٦١٣٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَالِكٌ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ أَبِي شُرَيْحٍ الْكَعْبِيِّ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ، فَلْيُكْرِمْ ضَيْفَهُ جَائِزَتُهُ يَوْمٌ وَلَيْلَةٌ وَالضِّيَافَةُ ثَلاَثَةُ أَيَّامٍ فَمَا بَعْدَ ذَلِكَ فَهُوَ صَدَقَةٌ، وَلاَ يَحِلُّ لَهُ أَنْ يَثْوِيَ عِنْدَهُ حَتَّى يُحْرِجَهُ)). [راجع: ٦٠١٩]

बल्कि ह़द दर्जा तीन दिन तीन रात उसके पास खाना खाए फिर अपना इंतिज़ाम ख़ुद क़र ले।

हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने इसी त़रह़ बयान किया और ये लफ़्ज़ ज़्यादा किये कि जो कोई अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो उसे अच्छी बात कहनी चाहिये वरना उसे चुप रहना चाहिये।

.... - حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ مِثْلَهُ وَزَادَ ((مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ فَلْيَقُلْ خَيْرًا أَوْ لِيَصْمُتْ)).

इसीलिये कहा गया है कि पहले तोल पीछे बोल। सोच समझकर बोलना बड़ी दानिशमंदी है।

6136. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने मह्दी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अबू ह़ुस़ैन ने, उनसे अबू स़ालेह़ ने और उनसे ह़ज़रत अबू ह़ुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जो शख़्स़ अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो, उस पर लाज़िम है कि अपने पड़ौसी को तकलीफ़ न दे, जो शख़्स़ अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो, उस पर लाज़िम है कि अपने मेहमान की इ़ज़्ज़त करे और जो शख़्स़ अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो,

٦١٣٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ مَهْدِيٍّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِي حُصَيْنٍ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ فَلاَ يُؤْذِ جَارَهُ. وَمَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ فَلْيُكْرِمْ ضَيْفَهُ، وَمَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ فَلْيَقُلْ

उस पर लाज़िम है कि भली बात कहे वरना चुप रहे। (राजेअ : 5185)

خَيْرًا أَوْ لِيَصْمُتْ)). [راجع: ٥١٨٥]

6137. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने, उनसे यज़ीद बिन अबी ह़बीब ने, उनसे अबुल ख़ैर ने और उनसे उ़क़्बा बिन आ़मिर (रज़ि.) ने बयान किया कि हमने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह! आप हमें (तब्लीग़ वग़ैरह के लिये) भेजते हैं और रास्ते में हम कुछ क़बीलों के गाँवों में क़याम करते हैं लेकिन वो हमारी मेहमानी नहीं करते, आँह़ज़रत (ﷺ) का इस सिलसिले में क्या इर्शाद है? आँह़ज़रत (ﷺ) ने इस पर हमसे फ़र्माया कि जब तुम ऐसे लोगों के पास जाकर उतरो और वो जैसा दस्तूर है मेहमानी के त़ौर पर तुमको कुछ दें तो उसे मंज़ूर कर लो अगर न दें तो मेहमानी का ह़क़ क़ायदे के मुवाफ़िक़ उनसे वसूल कर लो। (राजेअ : 2461)

٦١٣٧- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ، عَنْ أَبِي الْخَيْرِ، عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ: قُلْنَا يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّكَ تَبْعَثُنَا فَنَنْزِلُ بِقَوْمٍ فَلاَ يَقْرُونَنَا فَمَا تَرَى فِيهِ فَقَالَ لَنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنْ نَزَلْتُمْ بِقَوْمٍ فَأَمَرُوا لَكُمْ بِمَا يَنْبَغِي لِلضَّيْفِ فَاقْبَلُوا فَإِنْ لَمْ يَفْعَلُوا فَخُذُوا مِنْهُمْ حَقَّ الضَّيْفِ الَّذِي يَنْبَغِي لَهُمْ)). [راجع: ٢٤٦١]

तश्रीह : अकष़र उ़लमा कहते हैं कि ये हुक्म इब्तिदा-ए-इस्लाम में अ़रब के मुरव्वजा दस्तूर के तह़त था जब मुसाफ़िरों के लिये दौराने सफ़र में जहाँ मुसाफ़िर क़याम करता वहाँ वालों को उनके खिलाने पिलाने का इंतिज़ाम करना ज़रूरी था। आज होटलों का दौर है मगर ह़दीष़ का मंशा आज भी वाजिबुल अ़मल है कि मेहमानों की ख़बरगीरी करना ज़रूरी है। मौलवी अ़ब्दुल ह़क़ बिन फ़ज़्लुल्लाह ग़ज़नवी जो इमाम शौकानी (रह़.) के बिला वास्ता शागिर्द थे और मुतर्जिम (वह़ीदुज़्ज़माँ) ने बचपन में उनसे शागिर्दी इख़्तियार किया है, बड़े ही मुत्तबअ़े सुन्नत और ह़क़ परस्त थे। मौलाना मौसूफ़ का क़ायदा था कि किसी के यहाँ जाते तो तीन दिन से ज़्यादा हर्गिज़ न खाते बल्कि तीन दिन के बाद अपना इंतिज़ाम ख़ुद करते। (रह़.)

6138. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें अबू सलमा ने और उन्हें ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जो शख़्स अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो उसे अपने मेहमान की इ़ज़्ज़त करनी चाहिये और जो शख़्स अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो उसे चाहिये कि वो स़िलारह़मी करे, जो शख़्स अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो, उसे चाहिये कि अच्छी बात ज़ुबान से निकाले वरना चुप रहे। (राजेअ : 5185)

٦١٣٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ فَلْيُكْرِمْ ضَيْفَهُ، وَمَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ فَلْيَصِلْ رَحِمَهُ، وَمَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ فَلْيَقُلْ خَيْرًا أَوْ لِيَصْمُتْ)). [راجع: ٥١٨٥]

तश्रीह : इस ह़दीष़ में जो स़िफ़ाते ह़सना मज़्कूर हुई हैं वो इतनी अहम हैं कि उनसे मह़रूम रहने वाले आदमी को ईमान से मह़रूम कहा जा सकता है। मेहमान का इकराम करना, स़िलारह़मी करना, ज़ुबान क़ाबू में रखना ये बड़ी ही ऊँची ख़ूबियाँ हैं जो हर मोमिन मुसलमान के अंदर होनी ज़रूरी हैं, वरना ख़ाली नमाज़ रोज़ा बेवज़न होकर रह जाएँगे। आजकल कितने ही नमाज़ी मुद्दइयाने दीन हैं जो मह़ज़ लिफ़ाफ़ा हैं अंदर कुछ नहीं है। बेमग़ज़ गुठली बेकारे मह़ज़ होती है,

कितने नामो-निहाद व हुफ़्फ़ाज़ भी ऐसे होते हैं जो महज़ रिया व नमूद के त़लबगार होते हैं, इल्ला माशाअल्लाह।

बाब 86 : मेहमान के लिये पुर तकल्लुफ़ खाना तैयार करना

٨٦- باب صُنْعِ الطَّعَامِ، وَالتَّكَلُّفِ لِلضَّيْفِ

6139. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे जा'फ़र बिन औ़न ने बयान किया, कहा हमसे अबुल उ़मैस (उ़त्बा बिन अ़ब्दुल्लाह) ने बयान किया, उनसे औ़न बिन अबी जुहैफ़ा ने और उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने सलमान फ़ारसी और अबू दर्दा (रज़ि.) को भाई भाई बना दिया। एक मर्तबा सलमान अबू दर्दा (रज़ि.) की मुलाक़ात के लिये तशरीफ़ लाए तो उम्मे दर्दा (रज़ि.) को बड़ी ख़स्ता हालत में देखा और पूछा क्या हाल है? वो बोलीं तुम्हारे भाई अबू दर्दा को दुनिया से कोई सरोकार नहीं। अबू दर्दा तशरीफ़ लाए तो सलमान ने उनके सामने खाना पेश किया। उन्होंने कहा कि आप खाइये, मैं रोज़े से हूँ। सलमान फ़ारसी (रज़ि.) बोले कि मैं उस वक़्त तक न खाऊँगा जब तक आप भी न खाएँ। चुनाँचे अबू दर्दा (रज़ि.) ने भी खाया रात हुई तो अबू दर्दा (रज़ि.) नमाज़ पढ़ने की तैयारी करने लगे। सलमान ने कहा कि सो जाइये, फिर जब आख़िर रात हुई तो अबू दर्दा ने कहा अब उठिये, बयान किया कि फिर दोनों ने नमाज़ पढ़ी। उसके बाद सलमान (रज़ि.) ने कहा कि बिला शुब्हा तुम्हारे रब का तुम पर ह़क़ है और तुम्हारी जान का भी तुम पर ह़क़ है, तुम्हारी बीवी का भी तुम पर ह़क़ है, पस सारे ह़क़दारों के हुक़ूक़ अदा करो। फिर नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और आपसे इसका ज़िक्र किया तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि सलमान ने सच कहा है। अबू जुहैफ़ा का नाम वहब अस्सुवाई है, जिसे वहबुल ख़ैर भी कहते हैं। (राजेअ: 1968)

٦١٣٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ عَوْنٍ، حَدَّثَنَا أَبُو الْعُمَيْسِ، عَنْ عَوْنِ ابْنِ أَبِي جُحَيْفَةَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ : آخَى النَّبِيُّ ﷺ بَيْنَ سَلْمَانَ وَأَبِي الدَّرْدَاءِ فَزَارَ سَلْمَانُ أَبَا الدَّرْدَاءِ فَرَأَى أُمَّ الدَّرْدَاءِ مُتَبَذِّلَةً فَقَالَ لَهَا: مَا شَأْنُكِ؟ قَالَتْ: أَخُوكَ أَبُو الدَّرْدَاءِ لَيْسَ لَهُ حَاجَةٌ فِي الدُّنْيَا فَجَاءَ أَبُو الدَّرْدَاءِ فَصَنَعَ لَهُ طَعَامًا فَقَالَ: كُلْ فَإِنِّي صَائِمٌ قَالَ : مَا أَنَا بِآكِلٍ حَتَّى تَأْكُلَ، فَأَكَلَ فَلَمَّا كَانَ اللَّيْلُ ذَهَبَ أَبُو الدَّرْدَاءِ يَقُومُ فَقَالَ: نَمْ فَنَامَ ثُمَّ ذَهَبَ يَقُومُ، فَقَالَ نَمْ. فَلَمَّا كَانَ آخِرُ اللَّيْلِ قَالَ سَلْمَانُ: قُمِ الآنَ قَالَ: فَصَلَّيَا فَقَالَ لَهُ سَلْمَانُ: إِنَّ لِرَبِّكَ عَلَيْكَ حَقًّا، وَلِنَفْسِكَ عَلَيْكَ حَقًّا، وَلأَهْلِكَ عَلَيْكَ حَقًّا، فَأَعْطِ كُلَّ ذِي حَقٍّ حَقَّهُ، فَأَتَى النَّبِيَّ ﷺ فَذَكَرَ ذَلِكَ لَهُ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((صَدَقَ سَلْمَانُ)). أَبُو جُحَيْفَةَ وَهْبٌ السُّوَائِيُّ يُقَالُ : وَهْبُ الْخَيْرِ.

[راجع: ١٩٦٨]

तश्रीह : औ़रत बेचारी मैली कुचैली बैठी हुई थी, ह़ज़रत सलमान के पूछने पर उसे कहना पड़ा कि मेरे शौहर जब मुझसे मुख़ात़िब ही नहीं होते तो मैं बनाव सिंगार करके क्या करूँ? आख़िर ह़ज़रत सलमान के समझाने से अबू दर्दा (रज़ि.) ने अपनी ह़ालत को बदला। रिवायत में ह़ज़रत सलमान के लिये खाना तैयार करने का ज़िक्र है बाब से यही मुत़ाबक़त है।

बाब 87 : मेहमान के सामने ग़ुस्सा और रंज का

٨٧- باب مَا يُكْرَهُ مِنَ الْغَضَبِ

ज़ाहिर करना मकरूह है

وَالْجَزَعِ عِنْدَ الضَّيْفِ

6140. हमसे अय्याश बिन वलीद ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल आला ने बयान किया, कहा हमसे सईद अल जरीरी ने बयान किया, उनसे अबू उ़स्मान नह्दी ने, उनसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबीबक्र (रज़ि.) ने कि ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने कुछ लोगों की मेज़बानी की और अ़ब्दुर्रह़मान से कहा कि मेहमानों का पूरी त़रह़ ख़्याल रखना क्योंकि मैं नबी करीम (ﷺ) के पास जाऊँगा, मेरे आने से पहले उन्हें खाना खिला देना। चुनाँचे अ़ब्दुर्रह़मान खाना मेहमानों के पास लाए और कहा कि खाना खाइए। उन्होने पूछा कि हमारे घर के मालिक कहाँ हैं ? उन्होंने अ़र्ज़ किया कि आप लोग खाना खा लें। मेहमानों ने कहा कि जब तक हमारे मेज़बान न आ जाएँ हम खाना नहीं खाएँगे। अ़ब्दुर्रह़मान (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया कि हमारी दरख़्वास्त क़ुबूल कर लीजिए क्योंकि ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के आने तक अगर आप लोग खाने से फ़ारिग़ नहीं हो गये तो हमें उनकी नाराज़गी का सामना करना होगा। उन्होंने उस पर भी इंकार किया। मैं जानता था कि अबूबक्र (रज़ि.) मुझ पर नाराज़ होंगे। इसलिये जब वो आए मैं उनसे बचने लगा। उन्होंने पूछा, तुम लोगों ने क्या किया? घर वालों ने उन्हें बताया तो उन्होंने अ़ब्दुर्रह़मान (रज़ि.) को पुकारा! मैं ख़ामोश रहा। फिर उन्होंने पुकारा! अ़ब्दुर्रह़मान! मैं इस मर्तबा भी ख़ामोश रहा। फिर उन्होंने कहा अरे पाजी! मैं तुझको क़सम देता हूँ कि अगर तू मेरी आवाज़ सुन रहा है तो बाहर आ जा, मैं बाहर निकला और अ़र्ज़ किया कि आप अपने मेहमानों से पूछ लें। मेहमानों ने भी कहा अ़ब्दुर्रह़मान सच कह रहा है। वो खाना हमारे पास लाए थे। आख़िर वालिद (रज़ि.) ने कहा कि तुम लोगों ने मेरा इंतिज़ार किया, अल्लाह की क़सम मैं आज रात खाना नहीं खाऊँगा । मेहमानों ने भी क़सम खा ली कि अल्लाह की क़सम जब तक आप न खाएँ हम भी न खाएँगे। अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा भाई मैंने ऐसी ख़राब बात कभी नहीं देखी। मेहमानों! तुम लोग हमारी मेज़बानी से क्यूँ इंकार करते हो। ख़ैर अ़ब्दुर्रह़मान खाना ला, वो खाना लाए तो आपने उस पर अपना हाथ रखकर कहा, अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, पहली ह़ालत (खाना न खाने की क़सम) शैत़ान की त़रफ़ से

٦١٤٠- حَدَّثَنَا عَيَّاشُ بْنُ الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى، حَدَّثَنَا سَعِيدٌ الْجُرَيْرِيُّ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ أَبَا بَكْرٍ تَضَيَّفَ رَهْطًا فَقَالَ: لِعَبْدِ الرَّحْمَنِ: دُونَكَ أَضْيَافَكَ فَإِنِّي مُنْطَلِقٌ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَافْرُغْ مِنْ قِرَاهُمْ قَبْلَ أَنْ أَجِيءَ، فَانْطَلَقَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ فَأَتَاهُمْ بِمَا عِنْدَهُ فَقَالَ: اطْعَمُوا فَقَالُوا: أَيْنَ رَبُّ مَنْزِلِنَا؟ قَالَ: اطْعَمُوا قَالُوا: مَا نَحْنُ بِآكِلِينَ حَتَّى يَجِيءَ رَبُّ مَنْزِلِنَا؟ قَالَ: اقْبَلُوا عَنَّا قِرَاكُمْ فَإِنَّهُ إِنْ جَاءَ وَلَمْ تَطْعَمُوا لَنَلْقَيَنَّ مِنْهُ، فَأَبَوْا فَعَرَفْتُ أَنَّهُ يَجِدُ عَلَيَّ فَلَمَّا جَاءَ تَنَحَّيْتُ عَنْهُ فَقَالَ: مَا صَنَعْتُمْ؟ فَأَخْبَرُوهُ فَقَالَ: يَا عَبْدَ الرَّحْمَنِ فَسَكَتُّ ثُمَّ قَالَ: يَا عَبْدَ الرَّحْمَنِ فَسَكَتُّ، فَقَالَ: يَا غُنْثَرُ أَقْسَمْتُ عَلَيْكَ إِنْ كُنْتَ تَسْمَعُ صَوْتِي لَمَّا جِئْتَ فَخَرَجْتُ، فَقُلْتُ: سَلْ أَضْيَافَكَ فَقَالُوا: صَدَقَ أَتَانَا بِهِ قَالَ: فَإِنَّمَا انْتَظَرْتُمُونِي وَاللهِ لاَ أَطْعَمُهُ اللَّيْلَةَ فَقَالَ الآخَرُونَ: وَاللهِ لاَ نَطْعَمُهُ حَتَّى تَطْعَمَهُ قَالَ: لَمْ أَرَ فِي الشَّرِّ كَاللَّيْلَةِ وَيْلَكُمْ مَا أَنْتُمْ لِمَ لاَ تَقْبَلُونَ عَنَّا قِرَاكُمْ، هَاتِ طَعَامَكَ فَجَاءَهُ فَوَضَعَ يَدَهُ فَقَالَ: بِسْمِ اللهِ الأُولَى لِلشَّيْطَانِ فَأَكَلَ وَأَكَلُوا.

थी। चुनाँचे उन्होंने खाना खाया और उनके साथ मेहमानों ने भी खाया। (राजेअ : 602)

[راجع: ٦٠٢]

तश्रीह : हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) भी आख़िर इंसान थे, मेहमानों को भूखा देखकर घरवालों पर ख़फ़्गी का इज़्हार करने लगे, मेहमानों ने जब आपका ये हाल देखा तो वो भी खाने से क़सम खा बैठे। आख़िर सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) ने ख़ुद अपनी क़सम तोड़कर खाना खाया और मेहमानों को भी खिलाया, क़सम खाने को आपने शैतान की तरफ़ से क़रार दिया। इसी से बाब का मतलब निकलता है, क्योंकि आपने मेहमानों के सामने जो अब्दुर्रहमान (रज़ि.) पर ग़ुस्सा किया था और क़सम खा ली थी उसको शैतान का अग़्वा क़रार दिया।

बाब 88 : मेहमान को अपने मेज़बान से कहना कि जब तक तुम साथ न खाओगे मैं भी नहीं खाऊँगा. इस बाब में अबू जुहैफ़ह की एक हदीष नबी करीम (ﷺ) से मरवी है.

٨٨- باب قَوْلِ الضَّيْفِ لِصَاحِبِهِ لاَ آكُلُ حَتَّى تَأْكُلَ.

فِيهِ حَدِيثُ أَبِي جُحَيْفَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

6141. मुझसे मुहम्मद बिन मुष़न्ना ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबी अ़दी ने बयान किया, उनसे सुलैमान इब्ने त़रफ़ान ने, उनसे अबू उ़ष्मान नह्दी ने कि अ़ब्दुर्रहमान बिन अबीबक्र (रज़ि .) ने बयान किया कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) अपना एक मेहमान या कई मेहमान लेकर घर आए। फिर आप शाम ही से नबी करीम (ﷺ) के पास चले गये, जब वो लौटकर आए तो मेरी वालिदा ने कहा कि आज अपने मेहमानों को छोड़कर आप कहाँ रह गये थे। अबूबक्र (रज़ि.) ने पूछा क्या तुमने उनको खाना नहीं खिलाया। उन्होंने कहा कि हमने तो खाना उनके सामने पेश किया लेकिन उन्होंने इंकार किया। ये सुनकर अबूबक्र (रज़ि.) को ग़ुस्सा आया और उन्होंने (घर वालों को) बुरा-भला कहा और दुख का इज़्हार किया और क़सम खा ली कि मैं खाना नहीं खाऊँगा । अ़ब्दुर्रहमान कहते हैं कि मैं तो डर के मारे छुप गया तो आपने पुकारा कि ऐ पाजी! किधर है तू इधर आ। मेरी वालिदा ने भी क़सम खा ली कि अगर वो खाना नहीं खाएँगे तो वो भी नहीं खाएँगी। उसके बाद मेहमानों ने भी क़सम खा ली कि अगर अबूबक्र नहीं खाएँगे तो वो भी नहीं खाएँगे। आख़िर हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा कि ये ग़ुस्सा करना शैतानी काम था, फिर आपने खाना मंगवाया और ख़ुद भी मेहमानों के साथ खाया (उस खाने मे ये बरकत हुई) जब ये लोग एक लुक़्मा उठाते तो नीचे से खाना और भी बढ़ जाता था। अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा ऐ बनी फ़रास की

٦١٤١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، عَنْ سُلَيْمَانَ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ قَالَ: قَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا جَاءَ أَبُو بَكْرٍ بِضَيْفٍ لَهُ أَوْ بِأَضْيَافٍ لَهُ، فَأَمْسَى عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ فَلَمَّا جَاءَ قَالَتْ أُمِّي احْتَبَسْتَ عَنْ ضَيْفِكَ أَوْ أَضْيَافِكَ اللَّيْلَةَ؟ قَالَ : أَوَ مَا عَشَّيْتِهِمْ فَقَالَتْ: عَرَضْنَا عَلَيْهِ أَوْ عَلَيْهِمْ فَأَبَوا أَوْ فَأَبَى فَغَضِبَ أَبُو بَكْرٍ فَسَبَّ وَجَدَّعَ وَحَلَفَ أَنْ لاَ يَطْعَمَهُ فَاخْتَبَأْتُ أَنَا فَقَالَ: يَا غُنْثَرُ، فَحَلَفَتِ الْمَرْأَةُ لاَ تَطْعَمُهُ حَتَّى يَطْعَمَهُ، فَحَلَفَ الضَّيْفُ أَوِ الأَضْيَافُ أَنْ لاَ يَطْعَمَهُ أَوْ يَطْعَمُوهُ حَتَّى يَطْعَمَهُ، فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: إِنْ كَانَ هَذِهِ مِنَ الشَّيْطَانِ فَدَعَا بِالطَّعَامِ فَأَكَلَ وَأَكَلُوا فَجَعَلُوا لاَ يَرْفَعُونَ لُقْمَةً، إِلاَّ رَبَا مِنْ أَسْفَلِهَا أَكْثَرُ مِنْهَا فَقَالَ : يَا أُخْتَ بَنِي

فِرَاسٍ مَا هَذَا؟ فَقَالَتْ: وَقُرَّةِ عَيْنِي إِنَّهَا الآنَ لأَكْثَرُ قَبْلَ أَنْ نَأْكُلَ فَأَكَلُوا، وَبَعَثَ بِهَا إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَذَكَرَ أَنَّهُ أَكَلَ مِنْهَا.

[راجع: ٦٠٢]

बहन! ये क्या हो रहा है, खाना तो और बढ़ गया। उन्होंने कहा कि मेरी आँखों की ठण्डक! अब ये इससे भी ज़्यादा हो गया। जब हमने खाना खाया भी नहीं था। फिर सबने खाया और उसमें से नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में भेजा, कहते हैं कि आँहज़रत (ﷺ) ने भी उस खाने में से खाया। (राजेअ : 602)

तश्रीह : हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) की ज़ोजा उम्मे रूमान बनी फ़रास क़बीले से थीं उनका नाम ज़ैनब था। हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) का मंशा-ए-बाब ये है कि गाहे कोई ऐसा मौक़ा हो कि मेज़बान से मेहमान ऐसा लफ़्ज़ कह दे कि आप जब तक साथ में न खाएँगे मैं भी नहीं खाऊँगा तो अख़्लाक़न ऐसा कहने में कोई मुज़ायक़ा नहीं है और बरअक्स मेज़बान के लिये भी यही बात है, बहरहाल मेज़बान का फ़र्ज़ है कि हत्तल इम्कान मेहमान का इकराम करने में कोई कसर न छोड़े और मेहमान का फ़र्ज़ है कि मेज़बान के घर ज़्यादा ठहरकर उसके लिये तकलीफ़ का बाइष़ न बने। ये इस्लामी आदाब व अख़्लाक़ व तमद्दुन व मआशरत की बातें हैं, अल्लाह पाक हर मौक़े पर इनको मा'मूल बनाने की तौफ़ीक़ बख़्शे, आमीन।

٨٩- باب إِكْرَامِ الْكَبِيرِ، وَيَبْدَأُ الأَكْبَرُ بِالْكَلاَمِ وَالسُّؤَالِ

बाब 89 : जो उम्र में बड़ा हो उसकी तअ़्ज़ीम करना और पहले उसी को बात करने और पूछने देना

٦١٤٢، ٦١٤٣- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ هُوَ ابْنُ زَيْدٍ، عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ بُشَيْرِ بْنِ يَسَارٍ مَوْلَى الأَنْصَارِ، عَنْ رَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ، وَسَهْلِ بْنِ أَبِي حَثْمَةَ أَنَّهُمَا حَدَّثَاهُ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ سَهْلٍ، وَمُحَيِّصَةَ بْنَ مَسْعُودٍ أَتَيَا خَيْبَرَ فَتَفَرَّقَا فِي النَّخْلِ فَقُتِلَ عَبْدُ اللهِ بْنُ سَهْلٍ، فَجَاءَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ سَهْلٍ وَحُوَيِّصَةُ وَمُحَيِّصَةُ ابْنَا مَسْعُودٍ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَتَكَلَّمُوا فِي أَمْرِ صَاحِبِهِمْ، فَبَدَأَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ وَكَانَ أَصْغَرَ الْقَوْمِ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((كَبِّرِ الْكُبْرَ)) قَالَ يَحْيَى: لِيَلِيَ الْكَلاَمَ الأَكْبَرُ فَتَكَلَّمُوا فِي أَمْرِ صَاحِبِهِمْ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَتَسْتَحِقُّونَ قَتِيلَكُمْ - أَوْ قَالَ صَاحِبَكُمْ - بِأَيْمَانِ خَمْسِينَ

6142,43. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद ने बयान किया, वो इब्ने ज़ैद हैं, उनसे यह्या बिन सईद ने, उनसे अंसार के ग़ुलाम बुशैर बिन यसार ने, उनसे राफ़ेअ बिन ख़दीज और सहल बिन अबी ह़ष्मा ने बयान किया कि अ़ब्दुल्लाह बिन सहल और मुहैसा बिन मसऊद ख़ैबर से आए और खजूर के बाग़ में एक–दूसरे से जुदा हो गये, अ़ब्दुल्लाह बिन सहल वहीं क़त्ल कर दिये गये। फिर अ़ब्दुर्रहमान बिन सहल और मसऊद के दोनों बेटे हुवैसा और मुहैसा नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अपने मक़्तूल साथी (अ़ब्दुल्लाह रज़ि.) के मुक़द्दमे में बातचीत की। पहले अ़ब्दुर्रहमान ने बोलना चाहा जो सबसे छोटे थे। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि बड़े की बड़ाई करो। (इब्ने सईद ने इसका मक़्सद ये) बयान किया कि जो बड़ा है वो बातचीत करे, फिर उन्होंने अपने साथी के मुक़द्दमे में बातचीत की। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अगर तुममें से 50 आदमी क़सम खा लें कि अ़ब्दुल्लाह को यहूदियों ने मारा है तो तुम दियत के मुस्तह़िक़ हो जाओगे। उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! हमने ख़ुद तो उसे देखा नहीं था (फिर उसके बारे में क़सम कैसे खा सकते हैं?) आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया फिर यहूद अपने पचास आदमियों से क़सम खिलवाकर तुमसे छुटकारा

पा लेंगे। उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! ये काफ़िर लोग हैं (इनकी क़सम का क्या भरोसा) चुनाँचे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अ़ब्दुल्लाह बिन सहल के वारिषों को दियत ख़ुद अपनी तरफ़ से अदा कर दी। हज़रत सहल (रज़ि.) ने बयान किया कि उन ऊँटों मे से (जो आँहज़रत ﷺ ने उन्हें दियत में दिये थे) एक ऊँटनी को मैंने पकड़ा वो थान में घुस गई, उसने एक लात मुझको लगाई। और लैष ने कहा मुझसे यह्या ने बयान किया, उनसे बुशैर ने और उनसे सहल ने, यह्या ने यहाँ बयान किया कि मैं समझता हूँ कि बुशैर ने मअ राफ़ेअ बिन ख़दीज के अल्फ़ाज़ कहे थे। और सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे यह्या ने बयान किया, उनसे बुशैर ने और उन्होंने सिर्फ़ सहल से रिवायत की। (राजेअ : 2702)

مِنكُمْ)) قَالُوا يَا رَسُولَ اللهِ أَمْرٌ لَمْ نَرَهُ قَالَ : ((فَتُبَرِّئُكُمْ يَهُودُ فِي أَيْمَانِ خَمْسِينَ مِنْهُمْ)) قَالُوا يَا رَسُولَ اللهِ قَوْمٌ كُفَّارٌ فَوَدَاهُمْ رَسُولُ اللهِ ﷺ مِنْ قِبَلِهِ. قَالَ سَهْلٌ: فَأَدْرَكْتُ نَاقَةً مِنْ تِلْكَ الإِبِلِ فَدَخَلَتْ مِرْبَدًا لَهُمْ فَرَكَضَتْنِي بِرِجْلِهَا قَالَ اللَّيْثُ: حَدَّثَنِي يَحْيَى عَنْ بُشَيْرٍ عَنْ سَهْلٍ قَالَ يَحْيَى : حَسِبْتُ أَنَّهُ قَالَ مَعَ رَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ. وَقَالَ ابْنُ عُيَيْنَةَ : حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ بُشَيْرٍ، عَنْ سَهْلٍ وَحْدَهُ.

[راجع: ٢٧٠٢]

इसमें राफ़ेअ का नाम नहीं है।

तश्रीह : हदीष़ में क़सामत का ज़िक्र है जिसकी तफ़्सील पहले गुज़र चुकी है। किसी मक़्तूल के बारे में आँखों देखी न हो तो उसकी क़ौम के पचास आदमी अपने ख़्याल में क़ातिल का नाम लेकर क़समें खाएँगे कि वल्लाह! वही क़ातिल है तो वो दियत के हक़दार हो जाएँगे, यही क़सामत है। हदीष़ में हर अम्र में बड़ों को मुक़द्दम रखने का हुक्म है, बाब से यही ता'ल्लुक़ है। शरीअ़ते इस्लामी में क़त्ले नाहक़ का मामला कितना अहम है इससे यही ज़ाहिर हुआ।

6144. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन कष़ीर ने बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह ने कहा कि मुझसे नाफ़ेअ ने बयान किया और उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मुझे उस पेड़ का नाम बताओ, जिसकी मिषाल मुसलमान की सी है। वो हमेशा अपने रब के हुक्म से फल देता है और उसके पत्ते नहीं झड़ा करते। मेरे दिल में आया कि कह दूँ कि वो खजूर का पेड़ है लेकिन मैंने कहना पसंद नहीं किया क्योंकि मज्लिस में हज़रात अबूबक्र और उ़मर (रज़ि.) जैसे अकाबिर थे। फिर जब उन दोनों बुज़ुर्गों ने कुछ न हीं कहा तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये खजूर का पेड़ है। जब मैं अपने वालिद के साथ निकला तो मैंने अ़र्ज़ किया कि मेरे दिल में आया कि कह दूँ ये खजूर का पेड़ है, उन्होंने कहा फिर तुमने कहा क्यूँ नहीं? अगर तुमने कह दिया होता तो मेरे लिये इतना माल और अस्बाब

٦١٤٤- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ حَدَّثَنِي نَافِعٌ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((أَخْبِرُونِي بِشَجَرَةٍ مَثَلُهَا مَثَلُ الْمُسْلِمِ تُؤْتِي أُكُلَهَا كُلَّ حِينٍ بِإِذْنِ رَبِّهَا وَلاَ تَحُتُّ وَرَقَهَا))، فَوَقَعَ فِي نَفْسِي النَّخْلَةُ فَكَرِهْتُ أَنْ أَتَكَلَّمَ، وَثَمَّ أَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ فَلَمَّا لَمْ يَتَكَلَّمَا قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((هِيَ النَّخْلَةُ)) فَلَمَّا خَرَجْتُ مَعَ أَبِي قُلْتُ : يَا أَبَتَاهُ وَقَعَ فِي نَفْسِي النَّخْلَةُ قَالَ

: مَا مَنَعَكَ أَنْ تَقُولَهَا لَوْ كُنْتَ قُلْتَهَا كَانَ أَحَبَّ إِلَيَّ مِنْ كَذَا وَكَذَا؟ قَالَ: مَا مَنَعَنِي إِلاَّ أَنِّي لَمْ أَرَكَ وَلاَ أَبَا بَكْرٍ تَكَلَّمْتُمَا فَكَرِهْتُ.

[راجع: ٦١]

मिलने से भी ज़्यादा ख़ुशी होती। इब्ने उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि (मैंने अर्ज़ किया) सिर्फ़ इस वजह से मैंने नहीं कहा कि जब मैंने आपको और हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) जैसे बुज़ुर्ग को ख़ामोश देखा तो मैंने आप बुज़ुर्गों के सामने बात करना बुरा जाना। (राजेअ : 61)

तश्रीह : खजूर के पेड़ में ये ख़ासियत है कि क़हत के ज़माने में भी जबकि और पेड़ सूख जाते हैं ये ख़ूब मेवे देता है और ये बहरहाल मुफ़ीद रहता है। अरबों का बहुत बड़ा सरमाया यही पेड़ है, जिसका फल ग़िज़ाइयत से भरपूर और बेहद ताक़त पहुँचाने वाला और नफ़ाबख़्श होता है। मदीना मुनव्वरह में बहुत सी क़िस्म की खजूरें पैदा होती हैं जिनमें अज्वा नामी खजूर बहुत ही तर्याक़ है। हदीष से बड़ों को मुक़द्दम रखना ष़ाबित हुआ, मगर कोई मौक़ा मुनासिब हो और छोटे लोग बड़ों की ख़ामोशी देखकर सच बात कह दें तो ये मअ़यूब नहीं होगा।

बाब 90 : शे'र, रजज़ और हुदा ख़्वानी का जाइज़ होना

٩٠- بَابُ مَا يَجُوزُ مِنَ الشِّعْرِ وَالرَّجَزِ وَالْحُدَاءِ وَمَا يُكْرَهُ مِنْهُ. وَقَوْلِهِ تَعَالَى:

﴿وَالشُّعَرَاءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوُونَ أَلَمْ تَرَ أَنَّهُمْ فِي كُلِّ وَادٍ يَهِيمُونَ وَأَنَّهُمْ يَقُولُونَ مَا لاَ يَفْعَلُونَ إِلاَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَذَكَرُوا اللهَ كَثِيرًا وَانْتَصَرُوا مِنْ بَعْدِ مَا ظُلِمُوا وَسَيَعْلَمُ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَيَّ مُنْقَلَبٍ يَنْقَلِبُونَ﴾. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: فِي كُلِّ لَغْوٍ يَخُوضُونَ.

और जो चीज़ें इसमें नापसंद हैं उनका बयान और अल्लाह तआ़ला ने सूरह शुअ़रा में फ़र्माया, शाइरों की पैरवी वही लोग करते हैं जो गुमराह हैं, क्या तुम नहीं देखते हो कि वो हर वादी में भटकते फिरते हैं और वो बातें कहते हैं जो ख़ुद नहीं करते। सिवा उन लोगों के जो ईमान ले आए और जिन्होंने अमले स़ालेह किये और अल्लाह का कष़रत से ज़िक्र किया और जब उन पर ज़ुल्म किया गया तो उन्होंने उसका बदला लिया और ज़ुल्म करने वालों को जल्द ही मा'लूम हो जाएगा कि उनका अंजाम क्या होता है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि (फ़ी कुल्लि वादिन यहीमून) का मत़लब ये है कि हर एक लग़्व बेहूदा बात में घुसते हैं।

तश्रीह : रजज़ वो श'र जो मैदाने जंग में पढ़े जाते हैं अपनी बहादुरी जतलाने के लिये और हुदा वो मौज़ूँ कलाम जो ऊँटों को सुनाया जाता है ताकि वो गर्म हो जाएँ और ख़ूब चलें ये हुदाख़्वानी अरब में ऐसी राइज है कि ऊँट उसे सुनकर मस्त हो जाते और कोसों बग़ैर थकने के चले जाते हैं। आज के दौर में इन ऊँटों की जगह मुल्के अरब में भी कारों, बसों ने ले ली है इल्ला माशा अल्लाह। आयत मे उन श'रों के जवाज़ पर इशारा है जो इस्लाम की बरतरी और कुफ़्फ़ार के जवाब में कहे जाएँगे। हज़रत हस्सान ऐसे ही शायर थे जिनको दरबारे रिसालत के शाइर होने का फ़ख़्र हासिल है।

٦١٤٥- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو بَكْرِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ مَرْوَانَ بْنَ الْحَكَمِ أَخْبَرَهُ أَنَّ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ

6145. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझको अबूबक्र बिन अ़ब्दुर्रहमान ने ख़बर दी, उन्हें मरवान बिन हकम ने ख़बर दी, उन्हें अ़ब्दुर्रहमान बिन अस्वद बिन अ़ब्दे यग़ूष़ ने ख़बर दी, उन्हें उबई बिन कअ़ब (रज़ि.) ने

ख़बर दी कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, कुछ शे'रों में दानाई होती है।

الأَسْوَدِ بْنِ عَبْدِ يَغُوثَ أَخْبَرَهُ أَنَّ أُبَيَّ بْنَ كَعْبٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ مِنَ الشِّعْرِ حِكْمَةً)).

मा'लूम हुआ कि पुर अज़् ह़िक्मत व दानिश व इस्लामियात के अश्आर मज़्मूम नहीं हैं।

6146. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे अस्वद बिन क़ैस ने, उन्होंने कहा कि मैंने जुन्दब बिन अ़ब्दुल्लाह से सुना, उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) चल रहे थे कि आपको पत्थर से ठोकर लगी और आप गिर पड़े, इससे आपकी उँगली से ख़ून बहने लगा, तो आपने ये शे'र पढ़ा,

तू तो इक उंगली है और क्या है जो ज़ख़्मी हो गई
क्या हुआ अगर राहे मौला में तू ज़ख़्मी हो गई

(राजेअ़: 2802)

٦١٤٦- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الأَسْوَدِ بْنِ قَيْسٍ سَمِعْتُ جُنْدُبًا يَقُولُ: بَيْنَمَا النَّبِيُّ ﷺ يَمْشِي إِذْ أَصَابَهُ حَجَرٌ فَعَثَرَ فَدَمِيَتْ إِصْبَعُهُ فَقَالَ :

هَلْ أَنْتِ إِلاَّ إِصْبَعٌ دَمِيتِ
وَفِي سَبِيلِ اللهِ مَا لَقِيتِ

[راجع: ٢٨٠٢]

तश्रीह: ये कलाम रजज़ है, शे'र नहीं आपने ख़ुद कोई शे'र नहीं बनाया। हाँ दूसरे शाइरों के उ़म्दह शे'र कभी आपने पढ़े हैं। **सदक़ल्लाहु तआ़ला व मा अ़ल्लम्नाहुश्शिअ़र व मा यम्बग़ी लहू।**

6147. हमसे मुह़म्मद बिन बश्शार ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन मह्दी ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल मलिक ने, उन्होंने कहा हमसे अबू सलमा ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, शुअ़रा के कलाम में से सच्चा कलिमा लबीद का मिस्रा है जो ये है कि! अल्लाह के सिवा जो कुछ है सब मअ़दूम व फ़ना होने वाला है। उमय्या बिन अबी स़ल्त शाइर तो क़रीब था कि मुसलमान हो जाए। (राजेअ़: 3841)

٦١٤٧- حَدَّثَنَا بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ مَهْدِيٍّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ، حَدَّثَنَا أَبُو سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَصْدَقُ كَلِمَةٍ قَالَهَا الشَّاعِرُ كَلِمَةُ لَبِيدٍ)) : أَلاَ كُلُّ شَيْءٍ مَا خَلاَ اللهَ بَاطِلُ وَكَادَ أُمَيَّةُ بْنُ أَبِي الصَّلْتِ أَنْ يُسْلِمَ. [راجع: ٣٨٤١]

तश्रीह: लबीद अ़रब का एक मशहूर शायर था। उसके कलाम में तौह़ीद की ख़ूबियाँ और बुतपरस्ती की मज़म्मत भरी हुई है। मा'लूम हुआ कि अच्छा शे'र ख़्वाह किसी ग़ैर मुस्लिम ही का क्यूँ न हो उसकी तह़सीन जाइज़ है। मर्द बायद कि गीरद अन्दर गोश व र बनिश्त अस्त पद बर दीवार। और इसका मिस्रा ये है, **व कुल्लु नईमिन ला महालत ज़ाइलुन** या'नी हर एक नेअ़मत ज़रूर ज़रूर ख़त्म होने वाली है मगर जन्नत की नेअ़मतें।

6148. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे ह़ातिम बिन इस्माईल ने, उनसे बुरैद इब्ने अबी उ़बैद ने और उनसे सलमा बिन अक्वा (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) के साथ जंगे ख़ैबर में गये और हमने रात में सफ़र किया, इतने में मुसलमानों के आदमी ने आ़मिर बिन अक्वा (रज़ि.) से कहा

٦١٤٨- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا حَاتِمُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي عُبَيْدٍ، عَنْ سَلَمَةَ بْنِ الأَكْوَعِ قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ إِلَى خَيْبَرَ فَسِرْنَا لَيْلاً

فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ : لِعَامِرِ بْنِ الأَكْوَعِ أَلاَ تُسْمِعُنَا هُنَيْهَاتِكَ قَالَ: وَكَانَ عَامِرٌ رَجُلاً شَاعِرًا فَنَزَلَ يَحْدُوا بِالْقَوْمِ يَقُولُ:

اللَّهُمَّ لَوْ لاَ أَنْتَ مَا اهْتَدَيْنَا
وَلاَ تَصَدَّقْنَا وَلاَ صَلَّيْنَا
فَاغْفِرْ فِدَاءً لَكَ مَا اقْتَفَيْنَا
وَثَبِّتِ الأَقْدَامَ إِنْ لاَقَيْنَا
نَا إِذَا صِيحَ بِنَا أَتَيْنَا
وَأَلْقِيَنْ سَكِينَةً عَلَيْنَا
وَبِالصِّيَاحِ عَوَّلُوا عَلَيْنَا

فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَنْ هَذَا السَّائِقُ)) قَالُوا: عَامِرُ بْنُ الأَكْوَعِ فَقَالَ: ((يَرْحَمُهُ اللهُ)) فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ: وَجَبَتْ يَا نَبِيَّ اللهِ لَوْ لاَ أَمْتَعْتَنَا بِهِ قَالَ: فَأَتَيْنَا خَيْبَرَ فَحَاصَرْنَاهُمْ حَتَّى أَصَابَتْنَا مَخْمَصَةٌ شَدِيدَةٌ، ثُمَّ إِنَّ اللهَ فَتَحَهَا عَلَيْهِمْ فَلَمَّا أَمْسَى النَّاسُ الْيَوْمَ الَّذِي فُتِحَتْ عَلَيْهِمْ أَوْقَدُوا نِيرَانًا كَثِيرَةً فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ ((مَا هَذِهِ النِّيرَانُ عَلَى أَيِّ شَيْءٍ تُوقِدُونَ؟)) قَالُوا عَلَى لَحْمٍ قَالَ: ((عَلَى أَيِّ لَحْمٍ؟)) قَالُوا: عَلَى لَحْمِ حُمُرٍ إِنْسِيَّةٍ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَهْرِقُوهَا وَاكْسِرُوهَا)) فَقَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللهِ أَوْ نُهَرِيقُهَا وَنَغْسِلُهَا قَالَ: ((أَوْذَاكَ)) فَلَمَّا تَصَافَّ الْقَوْمُ كَانَ سَيْفُ عَامِرٍ فِيهِ قِصَرٌ فَتَنَاوَلَ بِهِ يَهُودِيًّا لِيَضْرِبَهُ وَيَرْجِعُ ذُبَابُ سَيْفِهِ فَأَصَابَ رُكْبَةَ عَامِرٍ فَمَاتَ مِنْهُ، فَلَمَّا

कि अपने कुछ शे'र अश्आर सुनाओ। रावी ने बयान किया कि आमिर शायर थे। वो लोगों को अपनी हुदा सुनाने लगे। ऐ अल्लाह! अगर तू न होता तो हम हिदायत न पाते न हम सदक़ा दे सकते और न नमाज़ पढ़ सकते। हम तुझ पर फ़िदा हैं, हमने जो कुछ पहले गुनाह किये उनको तू मुआफ़ कर दे और जब (दुश्मन से) हमारा सामना हो तो हमें षाबित क़दम रख और हम पर सुकून नाज़िल फ़र्मा। जब हमें जंग के लिये बुलाया जाता है, तो हम मौजूद हो जाते हैं और दुश्मन ने भी पुकारकर हमसे नजात चाही है। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया ये कौन ऊँटों को हाँक रहा है जो हदी गा रहा है? सहाबा ने अर्ज़ किया कि आमिर बिन अक्वा है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह पाक इस पर रहम करे। एक सहाबी या'नी उमर (रज़ि.) ने कहा, या रसूलल्लाह! अब तो आमिर शहीद हुए, काश और चंद रोज़ आप हमको आमिर से फ़ायदा उठाने देते। रावी ने बयान किया कि फिर हम ख़ैबर आए और उसको घेर लिया इस घिराव में हम शदीद फ़ाक़ों में मुब्तला हुए, फिर अल्लाह तआला ने ख़ैबर वालों पर हमको फ़तह अता फ़र्माई जिस दिन उन पर फ़तह हुई उसकी शाम को लोगों ने जगह जगह आग जलाई। आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा कि ये आग कैसी है, किस काम के लिये तुम लोगों ने ये आग जलाई है? सहाबा ने अर्ज़ किया कि गोश्त पकाने के लिये। इस पर आपने पूछा किस चीज़ के गोश्त के लिये? सहाबा ने कहा कि बस्ती के पालतू गधों का गोश्त पकाने के लिये। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, गोश्त को बर्तनों में से फेंक दो और बर्तनों को तोड़ दो। एक सहाबी ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! हम गोश्त तो फेंक देंगे, मगर बर्तन तोड़ने के बजाय अगर धो लें? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अच्छा यूँ ही कर लो। जब लोगों ने जंग की सफ़बन्दी कर ली तो आमिर (इब्ने अक्वा शायर) ने अपनी तलवार से एक यहूदी पर वार किया, उनकी तलवार छोटी थी उसकी नोक पलटकर ख़ुद उनके घुटनों पर लगी और उसकी वजह से उनकी शहादत हो गई। जब लोग वापस आने लगे तो सलमा (आमिर के भाई) ने बयान किया कि मुझे आँहज़रत (ﷺ) ने देखा कि मेरे चेहरे का रंग बदला हुआ है दरयाफ़्त फ़र्माया कि क्या बात है? मैंने अर्ज़ किया आँहज़रत (ﷺ) पर मेरे माँ और

فَقَالُوا قَالَ سَلَمَةُ: رَآنِي رَسُولُ اللهِ ﷺ شَاحِبًا فَقَالَ لِي: ((مَا لَكَ)) فَقُلْتُ: فِدًى لَكَ أَبِي وَأُمِّي زَعَمُوا أَنَّ عَامِرًا حَبِطَ عَمَلُهُ، قَالَ: ((مَنْ قَالَهُ)) قُلْتُ قَالَهُ فُلاَنٌ وَفُلاَنٌ وَأُسَيْدُ بْنُ الْحُضَيْرِ الأَنْصَارِيُّ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((كَذَبَ مَنْ قَالَهُ، إِنَّ لَهُ لأَجْرَيْنِ)) وَجَمَعَ بَيْنَ إِصْبَعَيْهِ إِنَّهُ لَجَاهِدٌ مُجَاهِدٌ قَلَّ عَرَبِيٌّ نَشَأَ بِهَا مِثْلَهُ.

[راجع: ٢٤٧٧]

बाप फ़िदा हों, लोग कह रहे हैं कि आमिर के आमाल बर्बाद हो गये। (क्योंकि उनकी मौत ख़ुद तलवार से हुई है) आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ये किसने कहा? मैंने अर्ज़ किया, फ़लाँ, फ़लाँ, फ़लाँ और उसैद बिन हुज़ैर अंसारी ने। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, जिसने ये बात कही उसने झूठ कहा है उन्हें तो दोहरा अज्र मिलेगा। आँहज़रत (ﷺ) ने अपनी दो उँगलियों को मिलाकर इशारा किया कि वो आबिद भी था और मुजाहिद भी (तो इबादत और जिहाद दोनों का षवाब उसने पाया) आमिर की तरह तो बहुत कम बहादुर अरब में पैदा हुए हैं (वो ऐसा बहादुर और नेक आदमी था) (राजेअ : 2477)

तश्रीह : आमिर के लिये जो लफ़्ज़ आपने इस्ते'माल फ़र्माए वो उनकी शहादत की पेशीनगोई थी, क्योंकि जिसके लिये आप लफ़्ज़ यरहमहुल्लाह फ़र्मा देते वो ज़रूर शहीद हो जाता ये आपका एक मुअजिज़ा था। इसी से लोगों ने लफ़्ज़े मरहूम निकाला है, जो फ़ौतशुदा मुसलमानों पर बोला जाता है और रिवायत में हुदा ख़्वानी और रजज़ वग़ैरह का ज़िक्र है, बाब से यही मुनासबत है। अश्आरे मज़्कूरा का तर्जुमा हज़रत मौलाना वहीदुज़्ज़माँ मरहूम के लफ़्ज़ों में ये है,

गर न होती तेरी रहमत ऐ शहे आली सिफ़ात! — तो नमाज़ें हम न पढ़ते और न देते हम ज़कात
तुझ पे सदक़े जब तक दुनिया में हम ज़िन्दा रहें — बख़्श दे हमको, लड़ाई में अता फ़र्मा षिबात
अपनी रहमत हम पे नाज़िल कर शह वाला सिफ़ात — जब वो नाहक़ चीख़ते सुनते नहीं हम उनकी बात
चीख़ चिल्लाकर उन्होंने हमसे चाही है नजात — चीख़ चिल्लाकर उन्होंने हमसे चाही नजात

हुदा एक ख़ास लहजे का गाना जिसको सुनकर थका हुआ ऊँट ताज़ा दम होकर मस्त हो जाता है (अक्माल सफ़्हा : 468) इससे रज़्मिया नज़्मों का जवाज़ निकलता है।

यहाँ मज़्कूरा अहादीष में कुछ जंगे ख़ैबर के वाक़िआत बयान किये गये हैं और ये हमारे मुहतरम कातिब साहब की मेहरबानी है कि उन्होंने पिछले सफ़्हात में उर्दू को इतना ख़फ़ी कर दिया कि सफ़्हात के मुताबिक़ अरबी उर्दू में काफ़ी तफ़ावुत वाक़ेअ हो गया और ये आख़िरी सफ़्हात ख़ाली रह गये यहाँ मरक़ूमा अहादीष का तर्जुमा पिछले सफ़्हात पर चला गया। उम्मीद है कि इस सिलसिले में क़ारेईने किराम हमको मअज़ूर तसव्वुर फ़र्माते हुए उन ख़ाली सफ़्हात पर जंगे ख़ैबर की तफ़्सीलात मा'लूम करके महज़ूज़ होंगे जंगे ख़ैबर सुलह हुदैबिया के बाद वाक़ेअ हुई। जिसके मौक़े पर अल्लाह पाक ने आयत **वअदकुमुल्लाहु मगानिम कषीरः** (अल् फ़त्ह : 20) नाज़िल फ़र्माकर बाद की होने वाली फ़ुतूहात पर इशारा फ़र्मा दिया इसलिये मुनासिब होगा कि सुलह हुदैबिया ही से आप मुतालआ फ़र्माकर जंगे ख़ैबर की तफ़्सीलात मा'लूम करें ये मज़्कूरा ज़ेल तफ़्सीलात हमारे बुज़ुर्गतरीन उस्ताज़ हज़रत क़ाज़ी सुलैमान साहब सलमान (रह.) की क़लमे हक़ीक़त रक़म से मुतालआ फ़र्मा रहे हैं। हज़रत मरहूम यूँ शुरू कर रहे हैं :

सुलह हुदैबिया (6 हिजरी मुक़द्दस) इस साल नबी (ﷺ) ने अपना एक ख़्वाब मुसलमानों को सुनाया फ़र्माया, मैंने देखा गोया मैं और मुसलमान मक्का पहुँच गये हैं और बैतुल्लाह का तवाफ़ कर रहे हैं, इस ख़्वाब के सुनने से ग़रीबुल वतन मुसलमानों को इस शौक़ ने जो बैतुल्लाह के तवाफ़ का उनके दिल में था बेचैन कर दिया और उन्होंने उसी साल नबी (ﷺ) को सफ़रे मक्का के लिये आमादा कर लिया, मदीना से मुसलमानों ने सामाने जंग साथ नहीं लिया बल्कि क़ुर्बानी के ऊँट साथ लिए और सफ़र भी ज़ीक़अदा के महीने में किया जिसमें अरब क़दीम रिवाज की पाबन्दी से जंग हर्गिज़ न किया करते

थे और जिसमें हर एक दुश्मन को बिला रोक टोक मक्का में आने की इजाज़त हुआ करती थी। जब मक्का 19 मील रह गया तो नबी (ﷺ) ने मुक़ामे हुदैबिया से क़ुरैश के पास अपने आने की ख़बर भेज दी और आगे बढ़ने की इजाज़त भी उनसे चाही।

ड़ष्मान बिन अ़फ़्फ़ान (रज़ि.) जिनका इस्लामी तारीख़ में ज़ुन् नूरैन लक़ब है, सफ़ीर बनाकर भेजे गये। उनके जाने के बाद लश्करे इस्लामी में ये ख़बर फैल गई कि क़ुरैश ने ह़ज़रत ड़ष्मान (रज़ि.) को क़त्ल या क़ैद कर दिया है। इसलिये नबी (ﷺ) ने इस बे सरो सामानी में जमइयत से जाँनिषारी की बेअ़त ली कि अगर लड़ना भी पड़ा तो षाबित क़दम रहेंगे। बेअ़त करने वालों की ता'दाद चौदह सौ थी। क़ुर्आन मजीद में है, **लक़द रज़ियल्लाहु अनिल्मूमिनीन इज़ युबायिऊनक तह़तश्शजरति** इस बेअ़त में नबी (ﷺ) ने अपने बाएँ हाथ को ड़ष्मान (रज़ि.) का दाहिना हाथ क़रार दिया और उनकी जानिब से अपने दाहिने हाथ पर बेअ़त की। इस बेअ़त का ह़ाल सुनकर क़ुरैश डर गये और उनके सरदार यके बाद दीगरे हुदैबिया मे ह़ाज़िर हुए। ड़र्वा बिन मसऊ़द जो क़ुरैश की जानिब से आया उसने क़ुरैश की जानिब वापस जाकर कहा। ये ड़र्वा जो आज क़ुरैश का सफ़ीर बनकर आया था, चंद साल के बाद ख़ुद बख़ुद मुसलमान हो गया था, और अपनी क़ौम में तब्लीग़े इस्लाम के लिये सफ़ीर बनकर गया था।

ऐ क़ौम! मुझे बारहा नज्जाशी (बादशाहे ह़ब्श) क़ैसर (बादशाहे क़ुस्तुन्तुनिया) किसरा (बादशाहे ईरान) के दरबार मे जाने का इत्तिफ़ाक़ हुआ है मगर मुझे कोई भी ऐसा बादशाह नज़र न आया जिसकी अ़ज़्मत उसके दरबार वालों के दिल में ऐसी हो जैसे अस्ह़ाबे मुह़म्मद के दिल में मुह़म्मद की है। मुह़म्मद (ﷺ) थूकता है तो उसका लुआबे दहन ज़मीन पर गिरने नहीं पाता। किसी न किसी के हाथ ही पर गिरता है और वो शख़्स उस लुआबे दहन को अपने चेहरे पर मल लेता है। जब मुह़म्मद (ﷺ) कोई हुक्म देता है तो ता'मील के लिये बस मुबादिरत करते हैं। जब वो वुज़ू करता है तो वुज़ू में इस्तेमाल किये हुए पानी के लिये ऐसे गिरे पड़ते हैं गोया लड़ाई हो पड़ेगी। जब वो कलाम करता है तो सबके सब चुप हो जाते हैं। उनके दिल में मुह़म्मद (ﷺ) का इतना अदब है कि वो उसके सामने नज़र उठाकर नहीं देखते। मेरी राय है कि उनसे सुलह़ कर लो जिस त़रह़ भी बने। सोच समझकर क़ुरैश सुलह़ पर आमादा हुए। सुलह़ के लिये मुन्दर्जा ज़ेल शराइत़ तै हुईं।

(1) दस साल तक आपसी सुलह़ रहेगी, जानेबैन की आमद व रफ़्त में किसी को रोक टोक न होगी। (2) जो क़बीले चाहें, क़ुरैश से मिल जाएँ और जो क़बीले चाहें वो मुसलमानो की जानिब शामिल हो जाएँ। दोस्तदार क़बीलों के हुक़ूक़ भी यही होंगे। (3) अगले साल मुसलमानों को त़वाफ़े का'बा की इजाज़त होगी। उस वक़्त हथियार उनके जिस्म पर न होंगे गो सफ़र में साथ हों। (4) अगर क़ुरैश मे से कोई शख़्स नबी (ﷺ) के पास मुसलमान होकर चला जाए तो नबी (ﷺ) उस शख़्स को क़ुरैश के त़लब करने पर वापस कर देंगे, लेकिन अगर कोई शख़्स इस्लाम छोड़कर क़ुरैश से जा मिले तो क़ुरैश उसे वापस न करेंगे।

आख़िरी शर्त़ सुनकर तमाम मुसलमान बजुज़ अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) घबरा उठे, ड़मर फ़ारूक़ (रज़ि.) इस बारे में ज़्यादा पुरजोश थे। लेकिन नबी करीम (ﷺ) ने हंसकर इस शर्त़ को भी मंज़ूर फ़र्मा लिया। मुआहिदा ह़ज़रत अ़ली मुर्तज़ा (रज़ि.) ने लिखा था। उन्होंने शुरू में लिखा, बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम; सुहैल जो क़ुरैश की त़रफ़ से मुख़्तारे मुआहिदा था, बोला, अल्लाह की क़सम हम नहीं जानते कि रह़मान किसे कहते हैं बिस्मिकल्लाहुम्म लिखो। नबी (ﷺ) ने वही लिख देने का हुक्म दिया। ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने फिर लिखा ये मुआहिदा मुह़म्मद रसूलुल्लाह और क़ुरैश के दरम्यान मुनअक़िद हुआ है। सुहैल ने इस पर भी ए'तिराज़ किया और नबी करीम (ﷺ) ने उसकी दरख़्वास्त पर मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह लिखने का हुक्म दिया। (बुख़ारी अ़न मिस्वर बिन मख़रमा बाबुश्शुरूत़ फ़िल जिहाद) यही सुहैल जो आज इस्मे मुबारक मुह़म्मद (ﷺ) के साथ रसूल लिखने पर ए'तिराज़ करता है चंद साल के बाद दिली शौक़ और उमंग से मुसलमान हो गया। इंतिक़ाले नबवी (ﷺ) के बाद मक्का मुकर्रमा में उसने इस्लाम की ह़क़्क़ानियत पर ऐसी ज़बरदस्त तक़रीर की थी, जो हज़ारों मुसलमानों के लिये इस्तिह़काम और ताज़गी ईमान का बाइ़ष ठहरी थी, बेशक ये इस्लाम का अ़जीब अष़र है कि वो जानी और दिली दुश्मनों को दम भर में अपना फ़िदाई बना लेता है।

मुआहिदा की आख़िरी शर्त़ की निस्बत क़ुरैश का ख़्याल था इस शर्त़ से डरकर कोई शख़्स आइन्दा मुसलमान न

होगा, लेकिन ये शर्त अभी तै ही हुई थी और अहदनामा लिखा ही जा रहा था, दोनों तरफ़ से मुआहिदा पर दस्तख़त भी न हुए थे कि सुहैल बिन अम्र (जो अहले मक्का की तरफ़ से मुआहिदा पर दस्तख़त करने का इख़्तियार रखता था) के सामने अबू जुन्दल इसी जलसे में पहुँच गया और अबू जन्दल मक्का में मुसलमान हो गया था, कुरैश ने उसे क़ैद कर रखा था और अब वो मौक़ा पाकर जंजीरों समेत ही भागकर लश्करे इस्लामी में पहुँचा था। सुहैल ने कहा कि इसे हमारे हवाले किया जाए।

अहदनामा कब वाजिबुल अमल होता है : नबी (ﷺ) ने फ़र्माया कि अहदनामे के मुकम्मल हो जाने पर उसके ख़िलाफ़ न होगा, या'नी जब तक अहदनामा मुकम्मल न हो जाए उसकी शराइत पर अमल नहीं हो सकता। सुहैल ने बिगड़कर कहा कि जब हम सुलह ही नहीं करते। नबी (ﷺ) ने हुक्म दिया और अबू जुन्दल कुरैश के सुपुर्द कर दिया गया। कुरैश ने मुसलमानों के कैम्प में उसकी मश्कें बाँधीं, पैर में ज़ंजीर डाली और कुशाँ कुशाँ ले गये। नबी (ﷺ) ने जाते वक़्त इस क़दर फ़र्मा दिया कि अबू जन्दल! अल्लाह तेरी कशाइश के लिये कोई सबील निकाल देगा।

अबू जन्दल की ज़िल्लत और कुरैश का ज़ुल्म देखकर मुसलमानो के अंदर जोश और तैश तो पैदा हुआ, मगर नबी (ﷺ) का हुक्म समझकर ज़ब्त व सब्र किये रहे। नबी करीम (ﷺ) हुदैबिया ही में ठहरे हुए थे कि अस्सी (80) आदमी कोहे तन्ईम से सुबह के वक़्त जब मुसलमान नमाज़ में मसरूफ़ थे इस इरादे से उतरे कि मुसलमानों को नमाज़ में क़त्ल कर दें ये सब गिरफ़्तार कर लिये गये और आँहज़रत (ﷺ) ने उन्हें अज़राहे रहमदिली व अफ़्व छोड़ दिया।

हमलावर दुश्मनों को मुआफ़ी : इसी वाक़िये पर कुर्आन मजीद में इस आयत का नुज़ूल हुआ, **व हुवल्लज़ी कफ़्फ़ अयदियहुम अन्कुम व अयदियकुम अन्हुम बिबत्नि मक्कत मिम्बअदि अन अज़्फ़रकुम अलैहिम** (सूरतुल्फ़तह आयत : 23) अल्लाह वो है जिसने वादी मक्का में तुम्हारे दुश्मनों के हाथ तुमसे रोक दिये और तुम्हारे हाथ भी (उन पर क़ाबू पाने के बाद) उनसे रोक दिये।

अल ग़र्ज़ ये सफ़र बहुत ख़ैरो—बरकत का मौजिब हुआ। आँहज़रत (ﷺ) ने मुआनिदीन के साथ मुआहिदा करने में फ़य्याज़ी, हज़्म, दूरबीनी और हमलावर दुश्मनों की मुआफ़ी में अफ़्व और रहमतुल लिल आलमीन के अनवार का ज़हूर दिखाया, हुदैबिया ही से मदीना मुनव्वरह को वापस तशरीफ़ ले गये। इसी मुआहिदे के बाद सूरतुल फ़तह का नुज़ूल हुदैबिया में हुआ था। उमर फ़ारूक़ (रज़ि.) ने पूछा या रसूलल्लाह! क्या ये मुआहिदा हमारे लिये फ़तह है? फ़र्माया, हाँ! अबू जन्दल ने ज़ुन्दाने मक्का में पहुँचकर दीने हक़ की तब्लीग़ शुरू कर दी, जो कोई उसकी निगरानी पर मामूर होता, वो उसे तौहीद की ख़ूबियाँ सुनाता, अल्लाह की अज़्मत व जलालत बयान करके ईमान की हिदायत करता। अल्लाह की कुदरत कि अबू जन्दल अपने सच्चे इरादे और सई में कामयाब हो जाता और वो शख़्स मुसलमान हो जाता। कुरैश इस दूसरे ईमान लाने वाले को भी क़ैद कर देते, अब ये दोनों मिलकर तब्लीग़ का काम उसी क़ैदख़ाने में करते। अलग़र्ज़ इस तरह एक अबू जन्दल के क़ैद होकर मक्का पहुँच जाने का नतीजा ये हुआ कि एक साल के अंदर क़रीबन तीन सौ लोग मुसलमान हो गये। अबू जन्दल की तरह एक शख़्स अबू बसीर था वो मुसलमान होकर मदीना पहुँचा, कुरैश ने उसे भी वापस लाने के लिये दो शख़्स नबी (ﷺ) की ख़िदमत में भेजे, आँहज़रत (ﷺ) ने अबू बसीर को उनके सुपुर्द कर दिया। रास्ते में अबू बसीर ने उनमें से एक को धोखा देकर मार दिया, दूसरा नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में ख़बर देने के लिये गया। उसके पीछे ही अबू बसीर पहुँचा, नबी (ﷺ) ने उसे फ़साद अंगेज़ फ़र्माया उस इताब से डरकर वहाँ से भी भागा। कुरैश ने अबू जन्दल और उसके साथ ईमान लाने वालों को मक्का से निकाल दिया। अबू जन्दल को चूँकि मदीना आने की इजाज़त नहीं थी, इसलिये उसने मक्का से शाम के रास्ते पर एक पहाड़ी पर क़ब्ज़ा कर लिया, जो क़ाफ़िला कुरैश का आता जाता उसे लूट लेता (क्योंकि कुरैश फ़रीक़े जंग थे) अबू बसीर भी उसी से जा मिला।

एक बार अबुल आस़ बिन रबीअ का क़ाफ़िला भी शाम से आया। अबू जन्दल वग़ैरह अबुल आस़ से वाक़िफ़ थे, सय्यदा ज़ैनब बिन्ते रसूल(ﷺ) का उससे निकाह हुआ था (गो अबुल आस़ के मुश्रिक रहने से इफ़्तिराक़ हो चुका था) अबू जन्दल ने क़ाफ़िला लूट लिया। मगर किसी जान का नुक़्सान न हुआ। इसलिये कि अबुल आस़ उनमें था। अबुल आस़ वहाँ से सीधा मदीना आया और हज़रत ज़ैनब (रज़ि.) की वसातत से माजरा की ख़बर नबी (ﷺ) तक पहुँचाई। नबी (ﷺ)ने

मामला सहाबा के मश्वरे पर छोड़ दिया। सहाबा ने अबुल आस़ की ताइद में फ़ैसला किया। जब अबू जन्दल को इस फ़ैसले की ख़बर हुई तो उन्हों ने सारा अस्बाब रस्सी और महारे शुतर तक अबुल आस़ को वापस कर दिया, अबुल आस़ मक्का पहुँचा। सब लोगों का रुपया पैसा अस्बाब अदा किया। फिर मुनादी कराई कि अगर किसी का कोई हक़ मुझ पर रह गया हो तो बता दे। सबने कहा तू बड़ी अमीन है। अबुल आस़ ने कहा अब मैं जाता हूँ और मुसलमान होता हूँ। मुझे डर था कि अगर इससे पहले मुसलमान हो जाता तो लोग इल्ज़ाम लगाते कि हमारा माल मारकर मुसलमान हो गया है। नबी (ﷺ) ने अबू जन्दल और उसके साथियों को भी अब मदीना मुनव्वरा बुला लिया था ताकि वो क़ुरैश को न लूट सकें।

अब क़ुरैश घबराए कि हमने क्यूँ अहदनामे मे उन ईमानवालों को वापस लेने की शर्त़ दर्ज कराई फिर उन्होंने मक्का क चंद मुंतख़िब (चुनिंदा) शख़्सों को नबी (ﷺ) की ख़िदमत में भेजा कि हम अहदनामे की इस शर्त़ से दस्तबरदार होते हैं। उन नौ मुस्लिमों को अपने पास वापस बुला लीजिए। नबी (ﷺ)ने मुआहिदा के ख़िलाफ़ करना पसंद न फ़र्माया। उस वक़्त आम मुसलमान भी समझ गये कि मुआहिदा की वो शर्त़ जो बज़ाहिर हमको नागवार थी उसका मंज़ूर कर लेना किस क़दर मुफ़ीद ष़ाबित हुआ।

अबू जन्दल के ह़ाल से क्या नतीजा ह़ासि़ल होता है : अबू जुन्दल के क़िस्से से हर शख़्स जो सर में दिमाग़ और दिमाग़ में फ़हम का माद्दा रखता है। वो समझ सकता है कि इस्लाम की स़दाक़त कैसी इलाही त़ाक़त के साथ फैल रही थी और किस त़रह़ त़ालिबाने ह़क़ के दिल में क़ब्ज़ा कर रही थी कि वत़न की दूरी, अक़ारिब की जुदाई, क़ैद, ज़िल्लत, भूख–प्यास, डर व लालच, तलवार, फांसी ग़र्ज़ दुनिया की कोई चीज़ और कोई जज़्बा उनको इस्लाम से न रोक सकता था।

सुलह़ का ह़क़ीक़ी फ़ायदा : इमाम ज़ुहरी ने मुआहिदा की दफ़ा अव्वल के बारे में तह़रीर फ़र्माया है कि जानिबैन से आमद व रफ़्त की रोक टोक के उठ जाने से ये फ़ायदा हुआ कि लोग मुसलमानों से मिलने जुलने लगे और इस त़रह़ उनको इस्लाम की ह़क़ीक़त और स़दाक़त मा'लूम करने के मौक़े मिले और इसी वजह से उस साल इतने ज़्यादा लोगों ने इस्लाम क़ुबूल किया कि उससे बेशतर किसी साल इतने मुसलमान न हुए थे।

मुसलमानों का त़वाफ़े का'बा के लिये जाना और उसके नताइज (7 हिजरी मुक़द्दस 9) मुआहिदा हुदैबिया की शर्त़ दोम की रू से मुसलमान इस साल मक्का पहुँचकर उ़मरा करने का ह़क़ रखते थे। इसलिये अल्लाह के रसूल (ﷺ) दो हज़ार स़ह़ाबा को साथ लेकर मक्का पहुँचे। मक्का वालों ने नबी (ﷺ) को मक्का आने से न रोका लेकिन ख़ुद घरों को मुक़फ़्फ़ल करके कोहे अबू क़ुबीस की चोटी पर जिसके नीचे मक्का आबाद है चले गये, पहाड़ पर से मुसलमानों के काम देखते रहे। अल्लाह के नबी (ﷺ) तीन दिन तक के लिये मक्का में रहे और फिर सारी जमइयत के साथ मदीना को वापस चले गये। उन मुंकिरों पर मुसलमानों के सच्चे जोश, सादा और मुअष़्ष़िर त़रीक़े इ़बादत का और उनकी आ़ला दयानत व अमानत का (कि ख़ालीशुदा शहर में किसी का एक पाई का भी नुक़्सान न हुआ था) अ़जीब अष़र हुआ, जिसने सैंकड़ों को इस्लाम की त़रफ़ माइल कर दिया।

जंगे ख़ैबर (मुह़र्रम 7 हिजरी) : ख़ैबर मदीना से शाम की जानिब तीन मंज़िल पर एक मुक़ाम का नाम है, ये यहूदियों की ख़ालिस़ आबादी का क़स्बा था। आबादी के आसपास मुस्तह़कम क़िले बनाए हुए थे। नबी (ﷺ) को सफ़रे हुदैबिया से पहुँचे हुए अभी थोड़े ही दिन (एक माह से कम) हुए थे किये सुनने में आया कि ख़ैबर के यहूदी फिर मदीना पर ह़मला करने वाले हैं और जंगे अह़ज़ाब की नाकामी का बदला लेने और अपनी खोई हुई जंगी इ़ज़्ज़त व क़ुव्वत को मुल्क भर में बह़ाल करने के लिये एक ख़ूँख़ार जंग की तैयारी कर चुके हैं। उन्होंने क़बीला ग़त़्फ़ान के चार हज़ार जंगजू बहादुरों को भी अपने साथ मिला लिया था और मुआहिदा ये था कि अगर मदीना फ़तह़ हो गया तो पैदावारे ख़ैबर का आधा ह़िस्सा हमेशा बनू ग़त़्फ़ान को देते रहेंगे।

मुसलमान मुह़ास़िरे की सख़्ती को जो पिछले साल ही जंगे अह़ज़ाब में उन्हें उठानी पड़ी थी, अभी नहीं भूले थे। इसलिये सब मुसलमानों का इस अम्र पर इत्तिफ़ाक़ हो गया कि ह़मलावर दुश्मन को आगे बढ़कर लेना चाहिये।

नबी (ﷺ) ने इस ग़ज़्वा में सिर्फ़ उन्ही सहाबा को हमरकाब चलने की इजाज़त दी थी जो **लक़द रज़ियल्लाहु अनिल्मूमिनीन इज़ युबायिऊनक तहतश्शजरित फ़अलिम मा फ़ी कुलूबिहिम** की बशारत से मुम्ताज़ थे और जिनको **वअदकुमुल्लाहु मग़ानिम कथीरः ताखुज़ूनहा** की ख़ुश ख़बरी मिल चुकी थी। इनकी ता'दाद चौदह सौ थी जिनमें से दो सौ घुड़सवार थे।

मुक़द्दमा लश्कर के सरदार उक्काशा बिन मिह्सन असदी (रज़ि.) और मैमना लश्कर के सरदार उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) थे। सरदार मैसरह कोई और सहाबी (रज़ि.) थे। सहाबिया औरतें भी शामिले लश्कर थीं, जो बीमारों और ज़ख़्मियों की ख़बरगीरी और तीमारदारी के लिये साथ हो ली थीं।

लश्करे इस्लाम आबादी ख़ैबर के मुत्तसिल रात के वक़्त पहुँच गया था लेकिन नबी (ﷺ) की आदते मुबारका ये थी कि लड़ाई रात को शुरू न करते थे और न शब ख़ून डाला करते थे। इसलिये लश्करे इस्लाम ने मैदान में डेरे डाल दिये। मअरका के लिये उस मुक़ाम का इंतिख़ाब मर्दे जंग आज़मा हुबाब बिन अल मुंज़िर(रज़ि.) ने किया था। ये मैदान अहले ख़ैबर और बनू ग़त्फ़ान के बीच पड़ता था। इस तदबीर का फ़ायदा ये हुआ कि जब बनू ग़त्फ़ान यहूदियाने ख़ैबर की मदद के लिये निकले तो उन्होंने लश्करे इस्लाम को सद्दे राह पाया और इसलिये चुपचाप अपने घरों को वापस चले गये।

नबी (ﷺ) ने हुक्म दिया था कि लश्कर का बड़ा कैम्प इसी जगह रहेगा और हमलावर फ़ौज के दस्ते कैम्प से जाया करेंगे। लश्कर के अंदर फ़ौरन मस्जिद तैयार कर ली गई थी और जंग के दोश बदोश तब्लीग़े इस्लाम का सिलसिला भी जारी फ़र्मा दिया गया था।

हज़रत उष्मान (रज़ि.)... इस कैम्प के ज़िम्मेदार अफसर थे। क़स्बा ख़ैबर के क़िले जो आबादी के दाएँ बाएँ थे शुमार में दस थे, जिसके अंदर दस हज़ार जंगी मर्द रहते थे, हम उनको तीन हिस्सों में बांट सकते हैं (1) क़िला नाइम (2) क़िला नत़ात (3) हिस्न सअब बिन मुआज़। ये चारों हसूने नत़ात के नाम से नामज़द थे (4) हिस्नुज़्ज़ुबैर (5) हिस्ने शन (6) हिस्नुल बर्र। ये तीनों हिस्सूने शन के नाम से नामज़द थे। (7) हिस्ने उबई (8) हिस्ने क़मूस त़बरी (9) हिस्ने वत़ीह (10) हिस्ने सलालिम। जिसे हिस्ने बनी अल हक़ीक़ भी कहते हैं। ये तीनों हिस्सून किब्तिया के नाम से नामज़द थे।

महमूद बिन मुस्लिमा (रज़ि.) को हमलावर फ़ौज का सरदार बनाया गया और उन्हों ने क़िला नत़ात का आग़ाज़ कर दिया। नबी (ﷺ) ख़ुद भी हमलावर फ़ौज में शामिल हुएथे, बाक़ी मांदा फ़ौजी कैम्प ज़ेरे निगरानी हज़रत उष्मान बिन अफ़्फ़ान (रज़ि.) था।

महमूद बिन मुस्लिमा (रज़ि.) पाँच रोज़ तक बराबर हमला करते रहे लेकिन क़िला फ़तह न हुआ, पाँचवें रोज़ का.... ज़िक्र है कि महमूद (रज़ि.) मैदाने जंग की गर्मी से ज़रा सुस्ताने के लिये पाईन क़िले की दीवार के साये में लेट गये। किनाना बिन अल हक़ीक़ यहूदी ने उन्हें ग़ाफ़िल देखकर एक पत्थर उनके सर पर दे मारा जिससे वो शहीद हो गये। फ़ौज की कमान मुहम्मद बिन मुस्लिमा (रज़ि.) के भाई ने सम्भाल ली और शाम तक कमाले शुजाअत व दिलावरी से लड़ते रहे। मुहम्मद बिन मुस्लिमा की राय हुई कि यहूदियों के नख़्लिस्तान को काटा जाए क्योंकि उन लोगो को एक एक पेड़ एक एक बच्चा के बराबर प्यारा है। इस तदबीर से अहले क़िले पर अष्र डाला जा सकेगा। इस तदबीर पर अमल शुरू हो गया था कि अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने नबी (ﷺ) के हुज़ूर में हाज़िर होकर इल्तिमास किया कि ये इलाक़ा यक़ीनन मुसलमानों के हाथ पर फ़तह होने वाला है फिर हम इसे अपने हाथों से क्यूँ ख़राब करें। नबी (ﷺ) ने इस राय को पसंद फ़र्माया और इब्ने मुस्लिमा (रज़ि.) के पास नख़्लिस्तान काटने का हुक्मे इम्तिनाई भेज दिया। शाम को मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) ने अपने भाई की मज़्लूमाना शहादत का क़िस्सा ख़ुद ही नबी (ﷺ) की ख़िदमत में आकर अर्ज़ किया, नबी (ﷺ) ने फ़र्माया **ल उतियन्ना औ लयातियन्नर्रायत ग़दन रजुलुन युहिब्बुहुल्लाहु व रसूलुहू यफ़तहिल्लाहु अलैहि** कल फ़ौज का निशान उस शख़्स को दिया जाएगा (या वो शख़्स निशान हाथ में लेगा) जिससे अल्लाह तआला और रसूलुल्लाह (ﷺ) मुहब्बत करते हैं और अल्लाह तआला फ़तह इनायत करेगा। ये ऐसी ता'रीफ़ थी, जिसे सुनकर फ़ौज के बड़े बड़े बहादुर अगले दिन की कमान मिलने के आरज़ूमंद हो गये।

उस रात पासबानी लश्कर की ख़िदमत ह़ज़रत ड़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) के सुपुर्द थी। उन्होंने गर्दावरी करते हुए एक यहूदी को गिरफ़्तार किया और उसी वक़्त नबी (ﷺ) की ख़िदमत में लाए। आँह़ज़रत (ﷺ) नमाज़े तहज्जुद में थे, जब फ़ारिग़ हुआ तो यहूदी से बातचीत की। यहूदी ने कहा कि अगर उसे और उसके ज़न व बच्चे को क़िले के अंदर हैं अमान अ़ता हो तो वो बहुत से जंगी राज़ बता सकता है। ये वा'दा उससे कर लिया गया। यहूदी ने बताया कि नत़ात के यहूदी आज की रात अपने ज़न बच्चे को क़िले शन में भेज रहे हैं और नक़द व जिंस को क़िले नत़ात के अंदर दफ़न कर रहे हैं। मुझे वो मुक़ाम मा'लूम है। जब मुसलमान क़िले नत़ात ले लेंगे तो मैं वो जगह बता दूँगा। बताया कि क़िले शन के तहख़ानों में क़िला शिकनी के बहुत से आलात मिन्जनीक़ वग़ैरह मौजूद हैं। जब मुसलमान क़िले शन फ़तह़ कर लेंगे तो मैं वो तहख़ाने भी सब बता दूँगा। सुबह़ हुई तो नबी करीम (ﷺ) ने ह़ज़रत अ़ली मुर्तज़ा (रज़ि.) को याद फ़र्माया। लोगों ने अ़र्ज़ किया कि उन्हें आशूबे चश्म है और आँखों में दर्द भी होता रहा है। ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) आ गये तो नबी (ﷺ) ने लबे मुबारक जनाबे अ़ली मुर्तज़ा (रज़ि.) की आँखों को लगा दिया। उसी वक़्त आँखें खुल गईं न आशूब की सुर्ख़ी बाक़ी थी और न दर्द की तकलीफ़। फिर फ़र्माया अ़ली! जाओ अल्लाह की राह में जिहाद करो, पहले इस्लाम की दा'वत दो, बाद में जंग करो। अ़ली! अगर तुम्हारे हाथ पर एक शख़्स भी मुसलमान हो जाए तो ये काम भारी ग़नीमतों के ह़ासिल हो जाने से ज़्यादा बेहतर होगा।

ह़ज़रत अ़ली मुर्तज़ा (रज़ि.) ने क़िला नाइम पर जंग की त़रह़ डाली। मुक़ाबला के लिये क़िले का मशहूर सरदार मरह़ब में निकला। ये अपने आपको हज़ार बहादुरों के बराबर कहा करता था। उसने आते ही ये रजुज़ पढ़ना शुरू कर दिया, **क़द अ़लिमत खैबरू इन्नी मर्हब शाकिस्सलाहि बतलुन मुजर्रबुन इज़िल्कुलूब अक़्बल्तु तल्हबु** ख़ैबर जानता है कि मैं हथियार सजाने वाला बहादुर तजुर्बेकार मरह़ब हूँ। जब लोगों के होश मारे जाते हैं, तो मैं बहादुरी दिखाता हूँ।

उसके मुक़ाबले के लिये आ़मिर बिन अल अक़्वा (रज़ि.) निकले। वो भी अपना रजज़ पढ़ते जाते थे। **क़द अ़लिमत खैबरू इन्नी आ़मिर शाकिस्सलाहि बतलुन मुकाइर**। ख़ैबर जानता है कि हथियार चलाने में उस्ताद नबुर्द आज़मा तल्ख़ हूँ। मेरा नाम आ़मिर है।

मरह़ब ने उन पर तलवार से वार किया। आ़मिर (रज़ि.) ने उसे ढाल पर रोका और मरह़ब के ह़िस्से ज़ेरीं पर वार चलाया। मगर उनकी तलवार जो लम्बाई में छोटी थी, उन ही के घुटने पर लगी, जिसके स़दमें से बिलआख़िर शहीद हो गये।

फिर ह़ज़रत अ़ली मुर्तज़ा (रज़ि.) निकले। रजज़े ह़ैदरी से मैदाने जंग गूँज उठा।

अनल्लज़ी सम्मत्नी उम्मी हैदर अकीलुकुम बिस्सैफ़ कैलस्सिन्दरः कलैतु बाग़ाति शदीद क़स्वरः मैं हूँ कि मेरी माँ ने मेरा नाम शेरे ग़ज़बनाक रखा है, मैं अपनी तलनवार की सख़ावत से तुम्हें बड़े बड़े पैमाने अ़ता करूँगा। मैं शेरे बब्बर ह़मलावर हुनरे मैदान हूँ।

ह़ज़रत अ़ली मुर्तज़ा (रज़ि.) ने एक ही हाथ तलवार का ऐसा मारा कि मरह़ब के ख़ुद आहिनी को काटता हुआ अ़मामा को क़त्अ़ करता सर के दो टुकड़े बनाता हुआ गर्दन तक जा पहुँचा। मरह़ब का भाई यासिर निकला उसे ज़ुबैर बिन अ़वाम ने ख़ाक में सुला दिया।

उसके बाद ह़ज़रत अ़ली मुर्तज़ा (रज़ि.) के आ़म ह़मले से क़िले नाइम फ़तह़ हो गया। उसी रोज़ क़िला स़अ़ब को ह़ज़रत हुबाब बिन मुंज़िर (रज़ि.) ने मुह़ास़रे से तीसरे दिन बाद फ़तह़ कर लिया। हुबाब बिन मुंज़िर अंस़ारी अस् सुल्मी (रज़ि.) अबू अ़म्र कुन्नियत और जुर्राय लक़ब था। ग़ज़्वा-ए-बद्र में 33 साल के थे, मैदान जंगे बद्र के बारे में भी आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनकी राय को पसंद फ़र्माया था। ह़ज़रत ड़मर (रज़ि.) की ख़िलाफ़त में इंतिक़ाल फ़र्माया, क़िला स़अ़ब से मुसलमानों को जौ, खजूर, छुहारे, मक्खन, रोग़न, ज़ैतून, चर्बी और पारचा जात की मिक़्दार कष़ीर मिली। फ़ौज में क़िल्लते रसद से जो तकलीफ़ हो रही थी वो दूर हो गई। इस क़िले के आलात क़िले शिकन भी बरामद हुए, जिसकी ख़बर यहूदी जासूस दे चुका था। इससे अगले रोज़ क़िले नत़ात फ़तह़ हो गया। अब क़िला अज़् ज़ुबैर जो एक पहाड़ी टीले पर वाक़ेअ़ था और अपने बानी ज़ुबैर के नाम से मौसूम था, पर ह़मला किया गया। दो रोज़ के बाद एक यहूदी लश्करे इस्लाम में आया। उसने कहा ये क़िला तो महीने भर तक भी तुम फ़तह़ न कर सकोगे मैं एक राज़ बताता हूँ। इस क़िले के अंदरूनी एक ज़ेरे ज़मीन नाला की राह से

जाता है अगर पानी का रास्ता बंद कर दिया जाए तो फ़तह़ मुम्किन है। मुसलमानों ने पानी पर क़ब्ज़ा कर लिया। अब अहले क़िला क़िले से निकलकर खुले मैदान में आकर लड़े और मुसलमानों ने उन्हें शिकस्त देकर क़िला फ़तह़ कर लिया।

फिर ह़िस्ने उबई पर ह़मला शुरू हुआ। इस क़िले वालों ने सख़्त मुदाफ़िअ़त की, उनमें से एक शख़्स़ जिसका नाम ग़ज़्वान था, मुबाज़िरत के लिये बाहर निकला। हुबाब (रज़ि.) मुक़ाबले को गये उसका बाज़ू रास्त कट गया। वो क़िले को भागा। हुबाब (रज़ि.) ने पीछा किया और उसकी रगे पाश्ना को भी काट डाला, वो गिर पड़ा और फिर क़त्ल किया गया।

क़िले से एक और यहूदी निकला, जिसका मुक़ाबला एक मुसलमान ने किया। मगर मुसलमान उसके हाथ से शहीद हो गया। अब अबू दुजाना (रज़ि.) निकले। उन्होंने जाते ही उसके हाथ पैर काट दिये और फिर क़त्ल कर डाला।

यहूद पर रौब त़ारी हो गया और बाहर निकलने से रुक गये। अबू दुजाना (रज़ि.) आगे बढ़े। मुसलमानों ने उनका साथ दिया। तक्बीर कहते हुए क़िले की दीवार पर जा चढ़े। क़िला फ़तह़ कर लिया। अहले क़िला भाग गये उस क़िले से बकरियाँ और कपड़े और अस्बाब बहुत सा मिला।

अब मुसलमानों ने ह़िस्नुल बर्र पर ह़मला कर दिया। यहाँ के क़िले नशीनों ने मुसलमानों पर इतने तीर बरसाए और इतने पत्थर गिराये कि मुसलमानों को भी मुक़ाबले में मिनजनीक़ का इस्ते'माल करना पड़ा। मिनजनीक़ वही थे जो ह़िस्ने स़अब से ग़नीमत में मिले थे। मिनजनीक़ों से क़िले की दीवारें गिराई गईं और क़िला फ़तह़ हो गया। (इस अ़ज़ीम फ़तह़ के बाद बहुत से अकाबिर ने इस्लाम क़ुबूल कर लिया) उन्हीं ईमान लाने वालों में ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) भी थे, जो जंगे उहुद में काफ़िरों के रिसाला के अफ़सर थे और मुसलमानों को उन्होंने सख़्त नुक़्सान पहुँचाया।

यही वो ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) हैं जिन्होंने इस्लामी जनरल होने की ह़ैषियत में मुसैलमा कज़्ज़ाब को शिकस्त दी, तमाम इ़राक़ और आधे शाम का मुल्क फ़तह़ किया था। मुसलमानों के ऐसे जानी दुश्मन और ऐसे जाँबाज़ सिपाही का ख़ुद ब ख़ुद मुसलमान हो जाना इस्लाम की सच्चाई का मुअजिज़ा है।

अ़म्र बिन आ़स़ (रज़ि.) का इस्लाम लाना 8 हिजरी : इन्हीं इस्लाम लाने वालों में अ़म्र बिन आ़स़ (रज़ि.) थे, क़ुरैश ने इन ही को मुसलमानों से अ़दावत और बैरूनी मामलात में आ़ला क़ाबिलियत रखने की वजह से उस वफ़द (प्रतिनिधि मण्डल) का सरदार बनाया था जो ह़ब्शा के पास गया था ताकि वो ह़ब्श में गये हुए मुसलमानों को क़ुरैश के ह़वाले कर दे। इन्हीं अ़म्र बिन आ़स़ (रज़ि.) ने ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) की ज़माना-ए-ख़िलाफ़त में मुल्के मिस्र को फ़तह़ किया था। ऐसे मुदब्बिर व माहिरे सियासत और फ़ातेह़े मुमालिक का मुसलमान हो जाना भी इस्लाम का ऐजाज़ है।

उन ही इस्लाम लाने वालों में उ़ष्मान बिन त़लह़ा (रज़ि.) भी थे। जो का'बा के आ़ला मुहतमिम व कलीद बरदार थे जब ये नामी सरदार (जिनकी शराफ़त ह़सब व नसब सारे अ़रब में मुसल्लमा थी) नबी (ﷺ) की ख़िदमत में जा पहुँचा तो नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि आज मक्का ने अपने जिगर के दो टुकड़े हमको दे डाले। (मुंतख़ब अज़्रहमतुल लिल आ़लमीन जिल्द अव्वल)

क़ारेईने! बुख़ारी शरीफ़ ने बेशतर अह़ादीष़ की रिवायत करने वाली ख़ातून उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत आइशा स़िद्दीक़ा का नाम नामी व इस्मे गिरामी पढ़ा होगा मगर ऐसे बहुत कम होंगे जो ह़ज़रत स़िद्दीक़ा (रज़ि.) के ह़ालात से वाक़फ़ियत रखते हों । इसलिये मुनासिब मा'लूम हुआ कि ह़ज़रत स़िद्दीक़ा (रज़ि.) के कुछ ह़ालाते ज़िंदगी दर्ज कर दिये जाएँ। अल्लाह पाक ईमानवालों की माँ, रसूले करीम (ﷺ) की ह़रमे मुह़तरम ह़ज़रत आइशा स़िद्दीक़ा (रज़ि.) की रूह़े पाक पर हमारी त़रफ़ से बेशुमार सलाम और रह़मतें नाज़िल फ़र्माए, आमीन।

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत आ़इशा स़िद्दीक़ा (रज़ि.) : आ़इशा (रज़ि.) बिन्ते अबूबक्र स़िद्दीक़ (रज़ि.) अ़ब्दुल्लाह बिन अबी क़ह़ाफ़ा उ़ष्मान बिन आ़मिर बिन उ़मर बिन कअ़ब बिन सअ़द इब्ने तय्यिम बिन मुर्रह बिन कअ़ब बिन लवी बिन क़ालिब बिन फ़हर बिन मालिक बिन नज़्र बिन किनाना।

ननिहाल की त़रफ़ से आ़इशा (रज़ि.) बिन्ते उम्मे हारून बिन्ते आ़मिर बिन उ़वैमिर बिन अ़ब्दे शम्स बिन उ़ताब

बिन इज़्निया इब्ने सबीअ़ बिन वह्मान बिन ह़ारिष़ बिन ग़नम बिन मालिक बिन किनाना।

आपका नसबनामा हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से बाप की त़रफ़ से आठवीं और माँ की त़रफ़ से बारहवीं पुश्त मे किनाना से जा मिलता है। इस त़रह़ से आप बाप की त़रफ़ से कुरैशी और माँ की त़रफ़ से किनानी हैं।

लक़ब व ख़िताब : आपका नाम आ़इशा, लक़ब ह़मीरा और स़िद्दीक़ा और ख़िताब उम्मुल मोमिनीन, कुन्नियत उम्मे अ़ब्दुल्लाह। ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) के यहाँ कोई औलाद न हुई जिसके नाम से वो अपनी कुन्नियत मुक़र्रर करतीं और कुन्नियत से किसी का पुकारा जाना अ़रब में चूँकि इ़ज़्ज़त की निशानी समझी जाती थी, इसलिये आपने हुज़ूर (ﷺ) के मश्वरे से अपनी बहन अस्मा के बेटे अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर के नाम पर अपनी कुन्नियत उम्मे अ़ब्दुल्लाह रख ली थी।

तारीख़े विलादत : आपकी विलादत की स़ह़ीह़ तारीख़ तो मा'लूम नहीं, लेकिन इस क़दर ष़ाबित है कि हुज़ूर (ﷺ) की बिअ़ष़त के पाँचवें और हिजरते नबवी से नौ साल पहले पैदा हुई थीं क्योकि ये ष़ाबितशुदा अम्र है कि हिजरत से तीन साल पहले जब आपका हुज़ूर (ﷺ) से निकाह़ हुआ तो उस वक़्त आपकी उ़म्र 6 साल की थी और मदीना मुनव्वरह़ पहुँचकर 1 हिजरी में जब आप काशाना-ए-नबवी में दाख़िल हुईं तो आपकी उ़म्र नौ साल की थी।

रज़ाअ़त : शुर्फ़ाए अ़रब के दस्तूर के मुवाफ़िक़ आपको वाइल की बीवी ने दूध पिलाया था। (उसदुल ग़ाबा में वाइल की माँ लिखा है लेकिन स़ह़ीह़ बुख़ारी बाबुर्रज़ाअ़त में बीवी लिखा है और यही स़ह़ीह़ है)। एक बार वाइल के भाई अफ़लह़ या'नी आपके रज़ाई चचा आपसे मिलने को आए और उन्होंने अंदर आने की इजाज़त चाही, ह़ज़रत आ़इशा स़िद्दीक़ा(रज़ि.) ने फ़र्माया कि जब तक मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) से न पूछ लूँ, इजाज़त नहीं दे सकती। जिस वक़्त हुज़ूर (ﷺ) घर में तशरीफ़ लाए तो आपने उनसे फ़र्माया कि वो तुम्हारे चचा हैं ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर (ﷺ) दूध तो औ़रत पिलाती है मर्द नहीं पिलाता। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया तुम्हारे चचा हैं। तुम्हारे पास आ सकते हैं।

बचपन : आपके वालिदैन आपकी पैदाइश से पेशतर ही मुसलमान हो चुके थे। इसलिये दुनिया में आँख खोलते ही तौह़ीद की स़दा उनके कान में पहुँचने लगी और शिर्क व कुफ़्र की आलूदगी से बिलकुल पाक रहीं। होनहार बरवा के चिकने चिकने पात, आप बचपन ही में फ़हम और ज़का, क़द व क़ामत और स़ूरत व सीरत में मुम्ताज़ थीं। आ़ज़ा मज़बूत़ और जिस्म तवाना था, आ़म बच्चों की त़रह़ बचपन में ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) भी खेलकूद की बहुत दिलदादा थीं, गुड़ियों से खेलना और झूले झूलना आपके दो मरग़ूबतरीन खेल थे, मुह़ल्ले की तमाम लड़कियाँ आपके घर में जमा हो जातीं और खेलकूद में उनके इशारों पर चलतीं। वो आपके सामने ऐसी मरऊ़ब व मुअद्दब रहतीं, गोया कि ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) उनकी सरदार हैं। वालिदैन इस छोटी सी उ़म्र में आपकी फ़रासत व रौब देखकर ख़ुश होते और उन्हें कुछ औक़ात ख़्याल होता कि ये किसी दिन ज़रूर मुअ़ज़्ज़ज़ व मुमताज़ होगी। सच है,

बालाए सर्श ज़ह़ू शमन्दी मै ताफ़्त सितारा बुलंदी

आपकी ज़हानत का यह ह़ाल था कि बचपन की ज़रा ज़रा सी बातें आपको तफ़्स़ील के साथ याद थीं और उन्हें इस त़रह़ बयान कर दिया करती थीं कि गोया कि अभी सामने वाक़ेअ़ हो रहीं हों।

शादी : नुबुव्वत के दसवें साल माहे रमज़ानुल मुबारक में ह़ज़रत ख़दीजतुल कुबरा (रज़ि.) 65 साल की उ़म्र में इंतिक़ाल कर गईं। उनकी जुदाई का हुज़ूर (ﷺ) को सख़्त स़दमा हुआ। ये वो ज़माना था जबकि कुफ़्फ़ारे मक्का हुज़ूर (ﷺ) को सताने में कोई दक़ीक़ा उठा न रखते थे। उनकी कुलफ़तों और अज़िय्यतों को भुलाने और दिल व जान को तस्कीन देने वाली, तंहाई की सुकुन देने वाली बीवी जब इस दुनिया से रुख़्स़त हो गईं तो हुज़ूर (ﷺ) बेह़द मलूल रहने लगे। आपको मग़मूम देखकर मशहूर स़ह़ाबी उ़ष़्मान बिन मज़ऊ़न की बीवी ख़ौला बिन्ते ह़कीम ने एक दिन अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! हुज़ूर (ﷺ) किसी औ़रत से निकाह़ कर लीजिए। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया किस औ़रत से? अ़र्ज़ किया, कुँवारी और बेवा दोनों मौजूद हैं, जिससे हुक्म हो, इसके बारे में सिलसिला जुम्बानी की जाए। फ़र्माया कौन कौन? अ़र्ज़ किया बेवा तो सौदा बिन्ते ज़म्अ़ा हैं, जो हुज़ूर पर ईमान ला चुकी हैं और कुँवारी ह़ज़रत अबूबक्र स़िद्दीक़ (रज़ि.) की, जो हुज़ूर (ﷺ) के नज़दीक सबसे ज़्यादा मह़बूब हैं।

बेटी आइशा हैं। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया बेहतर उन दोनों की बाबत सिलसिला जुम्बानी करो। हुज़ूर (ﷺ) की रज़ा हासिल करके ख़ौला ख़ुशी ख़ुशी हज़रत अबूबक्र के घर गईं और उम्मे रूमान से इसका तज़्किरा किया। उम्मे रूमान ने कहा कि आइशा के वालिद को आ लेने दो, वो बाहर गये हुए हैं। थोड़ी देर बाद जब हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) घर आए तो ये ख़ुश ख़बरी आपको सुनाई गयी। उन्होंने फ़र्माया अगर हुज़ूर (ﷺ) की मर्ज़ी है तो इसमे मुझे क्या उज़्र है, लेकिन हुज़ूर (ﷺ) तो मेरे भाई हैं, आइशा का निकाह हुज़ूर (ﷺ) से क्यूँकर होता है? (ज़माना-ए-जाहिलियत में अरब में दस्तूर था कि जिस तरह सगे भाई की लड़की से निकाह जाइज़ न था, उसी तरह मुँह बोले भाई की लड़की को भी अपने लिये हराम समझते थे)

ख़ौला फिर हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुईं और अर्ज़ किया कि अबूबक्र (रज़ि.) ने ये ए'तिराज़ किया है, हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि अबूबक्र (रज़ि.) मेरे दीनी भाई हैं न कि सगे भाई इसलिये उनकी लड़की से निकाह जाइज़ है। वहाँ क्या उज़्र था, हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने सरे तस्लीम ख़म कर दिया। अहादीष में है कि निकाह से पहले हुज़ूर (ﷺ) ने ख़्वाब में देखा था कि एक फ़रिश्ता रेशम के कपड़े में लपेटकर कोई चीज़ हुज़ूर (ﷺ) के सामने पेश कर रहा है, हुज़ूर ने पूछा क्या है? उसने जवाब दिया कि ये हुज़ूर की बीवी हैं। हुज़ूर (ﷺ) ने खोलकर देखा तो आइशा (रज़ि.) थीं।

निकाह के वक़्त हज़रत आइशा (रज़ि.) की उम्र 6 साल की थी। निकाह की रस्म बड़े सादे तरीक़े से अमल में लाई गई। वो अपनी हमसिन सहेलियों के साथ खेल रही थीं कि उनकी अना आई और उनको ले गई। उनके वालिद ने आकर निकाह पढ़ा दिया। पाँच सौ दिरहम महर मुक़र्रर हुआ। हज़रत आइशा (रज़ि.) ख़ुद फ़र्माया करती थीं कि मेरा निकाह हो गया और मुझे ख़बर न थी, आख़िर आहिस्ता आहिस्ता मेरी वालिदा ने मुझे इस अम्र की ख़बर दे दी।

फ़ज़ाइल : आपमें चंद एक ऐसी ख़ुसूसियात थीं, जो दूसरी उम्महातुल मोमिनीन को हासिल न थीं और वो ये हैं, (1) हुज़ूर (ﷺ) की सिर्फ़ आप ही ऐक ऐसी बीवी थीं, जो कुँवारी हुज़ूर (ﷺ) के निकाह में आईं, फ़रिश्ते ने आपकी सूरत ख़्वाब में हुज़ूर (ﷺ) के सामने पेश की (2) आप पैदाइश ही से शिर्क व कुफ़्र की आलूदगी से पाक रहीं (3) आपके वालिदैन मुहाजिर थे (4) आपकी बरात में क़ुर्आन शरीफ़ की आयात नाज़िल हुईं (5) आप ही के लिहाफ़ में हुज़ूर (ﷺ) को कई बार वह्य हुई, किसी और बीवी के लिहाफ़ में नहीं हुई (6) आप ही के हुज्रे में और आप ही के आग़ोश में सर रखे हुए हुज़ूर (ﷺ) ने वफ़ात पाई और वहीं दफ़न हुए।

वफ़ात : एक लम्बी उम्र के बाद माहे रमज़ान में आपकी तबीयत ख़राब हुई और चंद रोज़ तक बीमार रहीं, वसिय्यत की कि मुझे हुज़ूर (ﷺ) के साथ इस हुज्रे में दफ़न न कीजियो, बल्कि दीगर अज़्वाजुन्नबी के साथ मुझको भी जन्नतुल बक़ीअ में दफ़न किया जाए। रात ही को दफ़न कर दी जाऊँ और सुबह का इंतिज़ार न किया जाए। 17 रमज़ानुल मुबारक की शब को वफ़ात पाई, जनाज़ा हस्बे वसिय्यत रात ही के वक़्त उठाया गया। लेकिन मर्दों और औरतों का इतना हुजूम था कि रात के वक़्त कभी नहीं देखा गया। हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने जो उन दिनों हाकिमे मदीना थे, नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। भतीजों और भांजों ने क़ब्र में उतारा और वो शम्अ-ए-रुश्दो हिदायत दुनिया की नज़रों से रुख़्सत हो गई। **इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजेऊन।**

अबू हुरैरह (रज़ि.) : अबू हुरैरह (रज़ि.) अपनी कुन्नियत ही से ऐसे मशहूर हुए कि उनकी सहीह नाम दरयाफ़्त करना मुश्किल है, कोई कहता है अब्दुल्लाह बिन आमिर नाम था। कोई कहता है उमैर बिन आमिर, कोई कहता है बरीर बिन अशरफ़ा, कोई कहता है सकीन बिन दौमा, कोई कहता है अब्दुल्लाह बिन अब्दे शम्स, कोई कहता है आमिर, कोई कहता है अब्दे नहिम, कोई कहता है अब्दे ग़नम। कोई कहता है अब्दे शम्स, कोई कहता है अब्दे अम्र बिन ग़नीम, कोई कहता है मरदूस बिन आमिर। अबू आमिर कहते हैं कि जाहिलियत में उनमे से कोई नाम होगा। इस्लामी नाम अब्दुल्लाह या अब्दुर्रहमान है। अज़्दी दौसी हैं, आपके पास एक छोटी सी बिल्ली थी। जिसको साथ रखते थे इसलिये कुन्नियत अबू हुरैरह (रज़ि.) हो गई। जंगे ख़ैबर के ज़माने में हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होकर इस्लाम लाए। फिर हर वक़्त हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में रहने लगे। सबसे ज़्यादा हदीषें उन्हीं की रिवायतकर्दा हैं। 57 हिजरी या 58 हिजरी या 59 हिजरी में फ़ौत हुए। (माख़ूज़)

6149. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अय्यूब सुख़्तियानी ने बयान किया, उनसे अबू क़िलाबा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) (एक सफ़र के मौक़े पर) अपनी औरतों के पास आए जो ऊँटों पर सवार जा रही थीं, उनके साथ उम्मे सुलैम (रज़ि.) अनस की वालिदा भी थीं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अफ़सोस, अंजशा! शीशों को आहिस्तगी से ले चल। अबू क़िलाबा ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) ने औरतों के बारे में ऐसे अल्फ़ाज़ का इस्ते'माल फ़र्माया कि अगर तुममें कोई शख़्स इस्ते'माल करे तो तुम उस पर ऐबजोई करो या'नी आँहज़रत (ﷺ) का ये इर्शाद कि शीशों को नर्मी से ले चल। (दीगर मक़ामात : 6161, 6202, 6209, 6210, 6211)

٦١٤٩- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ، عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: أَتَى النَّبِيُّ ﷺ عَلَى بَعْضِ نِسَائِهِ وَمَعَهُنَّ أُمُّ سُلَيْمٍ فَقَالَ: ((وَيْحَكَ يَا أَنْجَشَةُ رُوَيْدَكَ سَوْقًا بِالْقَوَارِيرِ)) قَالَ أَبُو قِلاَبَةَ: فَتَكَلَّمَ النَّبِيُّ ﷺ بِكَلِمَةٍ لَوْ تَكَلَّمَ بَعْضُكُمْ لَعِبْتُمُوهَا عَلَيْهِ. قَوْلُهُ : سَوْقَكَ بِالْقَوَارِيرِ.

[أطرافه في: ٦١٦١، ٦٢٠٢، ٦٢٠٩، ٦٢١٠، ٦٢١١].

तश्रीह : शीशों से मुराद औरतें थीं जो फ़िल वाक़ेअ शीशे की तरह नाज़ुक होती हैं, अंजशा नामी गुलाम ऊँटों का चलाने वाला बड़ा ख़ुश आवाज़ था। उसके गाने से ऊँट मस्त होकर ख़ूब भाग रहे थे। आपको डर हुआ कि कहीं औरतें गिर न जाएँ, इसलिये फ़र्माया आहिस्ता ले चल। नुक्ताचीनी इस तौर पर कि औरतों को शीशे से तश्बीह दी और उनको शीशे की तरह नाज़ुक क़रार दिया मगर ये तश्बीह बहुत उम्दह थी। फ़िल हक़ीक़त औरतें ऐसी ही नाज़ुक होती हैं। स़िन्फ़े नाज़ुक पर ये रहमतुल लिल आलमीन का एहसाने अज़ीम है कि आपने उनकी कमज़ोरी व नज़ाकत का मर्दों को क़दम क़दम पर एहसास कराया।

बाब 91 : मुश्रिकों की बुराई करना दुरुस्त है

٩١- باب هِجَاءِ الْمُشْرِكِينَ

6150. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमसे अब्दह ने बयान किया, कहा हमको हिशाम बिन उर्वा ने ख़बर दी, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि हज़रत हस्सान बिन षाबित (रज़ि .) ने मुश्रिकीन की हिजू करने की इजाज़त चाही तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उनका और मेरा ख़ानदान तो एक ही है (फिर तो मैं भी इस हिजू में शरीक हो जाऊँगा) हस्सान (रज़ि.) ने कहा कि मैं हिजू से आपको इस तरह साफ़ निकल दूँगा जिस तरह गुँधे हुए आटे से बाल निकाल लिया जाता है। और हिशाम बिन उर्वा से रिवायत है, उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि मैं हस्सान बिन षाबित (रज़ि.) को हज़रत आइशा (रज़ि.) की मज्लिस में बुरा कहने लगा तो उन्होंने कहा कि हस्सान को बुरा

٦١٥٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ، حَدَّثَنَا عَبْدَةُ، قَالَ أَخْبَرَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ اسْتَأْذَنَ حَسَّانُ بْنُ ثَابِتٍ رَسُولَ اللهِ ﷺ فِي هِجَاءِ الْمُشْرِكِينَ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((فَكَيْفَ بِنَسَبِي؟)) فَقَالَ حَسَّانُ: لأَسُلَّنَّكَ مِنْهُمْ كَمَا تُسَلُّ الشَّعْرَةُ مِنَ الْعَجِينِ. وَعَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ قَالَ: ذَهَبْتُ أَسُبُّ حَسَّانَ عِنْدَ عَائِشَةَ، فَقَالَتْ: لاَ

भला न कहो, वो नबी करीम (ﷺ) की तरफ़ से मुश्रिकों को जवाब देता था। (राजेअ : 3531)

تَسُبَّهُ فَإِنَّهُ كَانَ يُنَافِحُ عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ.

[راجع: ٣٥٣١]

तशरीह : मुश्रिकों की हिजू करता था और आँहज़रत (ﷺ) की तरफ़दारी करता था। इस रिवायत से हज़रत आइशा (रज़ि.) की पाक नफ़्सी और दीनदारी और परहेज़गारी मा'लूम होती है। आप किस दर्जा की पाक नफ़्स और फ़रिश्ता ख़स्लत थीं। चूँकि हस्सान (रज़ि.) ने अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़दारी की थी इसलिये हज़रत आइशा (रज़ि.) को अपनी ईज़ा का जो उनकी तरफ़ पहुँची थी कुछ ख़्याल न किया और उनको बुरा कहने से मना किया। अल्लाह पाक मुसलमानों को भी हज़रत आइशा (रज़ि.) जैसी नेक फ़ित्रत अता फ़र्माए कि वो बाहमी तौर पर एक दूसरे की बुराइयाँ करने से बाज़ रहें, आमीन।

6151. हमसे अस्बग़ बिन फ़ुर्ज ने बयान किया, कहा कि मुझसे अब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, कहा कि मुझे यूनुस ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें हैशम बिन अबी सनन ने ख़बर दी कि उन्होंने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना वो हालात और क़सस के तहत रसूले करीम (ﷺ) का तज़्किरा कर रहे थे। कि एक दफ़ा आँहज़रत (ﷺ)ने फ़र्माया तुम्हारे एक भाई ने कोई बुरी बात नहीं कही। आपका इशारा इब्ने रवाहा की तरफ़ था (अपने अश्आर में) उन्होंने यूँ कहा था, और हममें अल्लाह के रसूल हैं जो उसकी किताब की तिलावत करते हैं, उस वक़्त जब फ़ज्र की रोशनी फूटकर फैल जाती है। हमें उन्होंने गुमराही के बाद हिदायत का रास्ता दिखाया। पस हमारे दिल इस अम्र पर यक़ीन रखते हैं कि आँहज़रत (ﷺ) ने जो कुछ फ़र्माया वो ज़रूर वाक़ेअ होगा। आप रात इस तरह गुज़ारते हैं कि उनका पहलू बिस्तर से जुदा रहता है (या'नी जागकर) जबकि काफ़िरों के बोझ से उनकी ख़्वाबगाहें बोझल हुई रहती हैं। यूनुस के साथ इस हदीष को अक़ील ने भी ज़ुहरी से रिवायत किया और मुहम्मद बिन वलीद ज़ुबैदी ने ज़ुहरी से, उन्होंने सईद बिन मुसय्यिब से और अब्दुर्रहमान अअरज से, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से इस हदीष को रिवायत किया। (राजेअ : 1155)

٦١٥١- حَدَّثَنَا أَصْبَغُ، قَالَ أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ وَهْبٍ، قَالَ أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَنَّ الْهَيْثَمَ بْنَ أَبِي سِنَانٍ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ فِي قَصَصِهِ يَذْكُرُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: ((إِنَّ أَخًا لَكُمْ لاَ يَقُولُ: الرَّفَثَ)) يَعْنِي بِذَلِكَ ابْنَ رَوَاحَةَ قَالَ:

فِينَا رَسُولُ اللهِ يَتْلُو كِتَابَهُ
إِذَا انْشَقَّ مَعْرُوفٌ مِنَ الْفَجْرِ سَاطِعُ
أَرَانَا الْهُدَى بَعْدَ الْعَمَى فَقُلُوبُنَا
بِهِ مُوقِنَاتٌ أَنَّ مَا قَالَ وَاقِعُ
يَبِيتُ يُجَافِي جَنْبَهُ عَنْ فِرَاشِهِ
إِذَا اسْتَثْقَلَتْ بِالْكَافِرِينَ الْمَضَاجِعُ

تَابَعَهُ عُقَيْلٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ، وَقَالَ الزُّبَيْدِيُّ: عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَعِيدٍ وَالأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ.

[راجع: ١١٥٥]

तशरीह : हज़रत मौलाना वहीदुज़्ज़माँ मरहूम ने अश्आर में उनका तर्जुमा यूँ किया है :

एक पैग़म्बर ख़ुदा का पढ़ता है उसकी किताब — और सुनाता है हमें जब सुबह़ की पौ फटती है
हम तो अंधे थे उसी ने रास्ता बतला दिया — बात है यक़ीनी दिल में जाकर लगती है
रात को रखता है पहलू अपने बिस्तर से अलग — काफ़िरों की ख़्वाबगाह को नींद भारी करती है

पहले शे'र में आँह़ज़रत (ﷺ) के इल्म की त़रफ़ इशारा है और तीसरे में आपके अ़मल की त़रफ़ इशारा है पस आप इल्म और अ़मल हर लिह़ाज़ से कामिल व मुकम्मल हैं।

6152. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी (रह़.) ने कहा और हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे भाई अ़ब्दुल ह़मीद ने बयान किया, उनसे सुलैमान ने, उनसे मुह़म्मद बिन अबी अ़तीक़ ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ौफ़ ने, उन्होंने ह़स्सान बिन ष़ाबित अंसारी (रज़ि.) से सुना, वो ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) को गवाह बनाकर कह रहे थे कि ऐ अबू हुरैरह! मैं आपको अल्लाह की क़सम देकर पूछता हूँ, क्या तुमने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ ह़स्सान! अल्लाह के रसूल की त़रफ़ से मुश्रिकों को जवाब दो, ऐ अल्लाह! रूहुल क़ुदस के ज़रिये उनकी मदद कर। ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि हाँ। (राजेअ़ : 453)

٦١٥٢- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ ح وَحَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي أَخِي عَنْ سُلَيْمَانَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِي عَتِيقٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ أَنَّهُ سَمِعَ حَسَّانَ بْنَ ثَابِتٍ الأَنْصَارِيَّ يَسْتَشْهِدُ أَبَا هُرَيْرَةَ فَيَقُولُ : يَا أَبَا هُرَيْرَةَ نَشَدْتُكَ بِاللهِ هَلْ سَمِعْتَ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((يَا حَسَّانُ أَجِبْ عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ، اللَّهُمَّ أَيِّدْهُ بِرُوحِ الْقُدُسِ)) قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ : نَعَمْ. [راجع: ٤٥٣]

मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) से ये सुना है।

6153. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अ़दी बिन ष़ाबित ने और उनसे ह़ज़रत बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने ह़स्सान (रज़ि.) से फ़र्माया इनकी हिजू करो। (या'नी मुश्रिकीने क़ुरैश की) या आँह़ज़रत (ﷺ) ने (हाजहुम के अल्फ़ाज़ फ़र्माए) ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लैहिस्सलाम) तेरे साथ हैं। (राजेअ़ : 3213)

٦١٥٣- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَدِيِّ بْنِ ثَابِتٍ، عَنِ الْبَرَاءِ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ لِحَسَّانَ: ((اهْجُهُمْ)) أَوْ قَالَ : ((هَاجِهِمْ وَجِبْرِيلُ مَعَكَ)). [راجع: ٣٢١٣]

तश्रीह : इन अह़ादीष़ से ष़ाबित हुआ कि ह़िमायते इस्लाम और मज़म्मते कुफ़्र में नज़्मो-नष़्र में बोलना, इस बारे में किताबें मज़ामीन लिखना ऐन बाइ़ष़ रज़ा-ए-अल्लाह व रसूल है। नेज़ जो नामोनिहाद मुसलमान क़ुर्आन शरीफ़ व ह़दीष़ शरीफ़ की तौहीन व तख़्फ़ीफ़ करें जैसा कि आजकल मुंकिरीने ह़दीष़ का गिरोह करता रहता है उनका जवाब देना और उनकी मज़म्मत करना ज़रूरी है। जिन बुरे उ़लमा ने शरअ़े इस्लामी को मस्ख़ करने में अपना पूरा ज़ोर तफ़क्क़ाह ख़र्च कर डाला है उनका स़ह़ीह़ तआ़रुफ़ कराके मुसलमानों को उनके किज़्ब से मुत्तलअ़ करना भी इसी ज़ैल में है जिसकी मिष़ाल में मुजद्दिदे इस्लाम उस्ताज़ुल हिन्द ह़ज़रत मौलाना शाह वलीउल्लाह मुह़द्दिष़ देहलवी मरहूम के इस इर्शादे गिरामी को पेश करना ही काफ़ी है। ह़ज़रत मरहूम ऐसे उ़लमा-ए-सू की हिजू में फ़र्माते हैं, **फ़इन शित अन तरन्नुमूज़जल्यहूद फ़न्ज़ुर इला उलमाइस्सूइ मिनल्लज़ीन यत्लुबूनहुनिय व कदिअतादू तक़्लीदसलफ़ि व आ़रज़ू अन नुसूसिल्किताबि वस्सुन्नति व तमस्सकू बितअ़म्मुक़ि आ़लिमिन व तशदुदिही व इजाज़िही व इस्तिह़सानिही फ़आरज़ू अन कलामिश्शारिइल्मअसूमि व तमस्सकू बिअहादीष़ि मौज़ूअतिन व तावीलातिन फ़ासिदातिन कअन्नहुम हुम** (अल्फ़ौज़ुल्कबीर पेज 26-27) अ़रबी बरह़ाशिया सफ़रुस्सआ़दत मत्बूआ मिस्र) या'नी मुसलमानों! अगर तुम यहूद का नमूना अपने लोगों में देखना चाहो तो तुम दुनिया के त़ालिब बुरे उ़लमा को देख लो कि सलफ़ की तक़्लीद उनकी ख़ू हो गई है और उन्होंने क़ुर्आन व ह़दीष़ की नसूस़ से मुँह

मोड़ लिया है और किसी आ़लिम के तअ़म्मुक़ और उसके तशद्दुद व इस्तिह़सान को अपनी दस्तावेज़ बना लिया है पस उन्होंने मअ़सूम व बे ख़ता स़ाह़िबे शरअ (ﷺ) के कलाम से रूगर्दानी कर ली है और झूठी बनावटी रिवायतों और नाक़िस़ और खोटी तावीलों को अपने लिये सनद ठहराया है। गोया ये बुरे उ़लमा वही यहूदियों के उ़लमा के नमूने हैं।

बाब 92 : शे'रो-शायरी में इस तरह औक़ात स़र्फ़ करना मना है

कि आदमी अल्लाह की याद और इल्म ह़ास़िल करने और क़ुर्आन शरीफ़ की तिलावत करने से बाज़ रह जाए।

٩٢- باب مَا يُكْرَهُ أَنْ يَكُونَ الْغَالِبَ عَلَى الإِنْسَانِ الشِّعْرُ حَتَّى يَصُدَّهُ عَنْ ذِكْرِ اللهِ وَالْعِلْمِ وَالْقُرْآنِ

रात-दिन आदमी शे'रगोई में मशग़ूल रहे।

6154. हमसे उ़बैदुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको ह़ंज़ला ने ख़बर दी, उन्हें सालिम ने, और उन्हें ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया। अगर तुममें से कोई शख़्स़ अपना पेट पीप से भरे तो ये उससे बेहतर है कि वो उसे शे'र से भरे।

٦١٥٤- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى، أَخْبَرَنَا حَنْظَلَةُ، عَنْ سَالِمٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لأَنْ يَمْتَلِىءَ جَوْفُ أَحَدِكُمْ قَيْحًا، خَيْرٌ لَهُ مِنْ أَنْ يَمْتَلِىءَ شِعْرًا)).

मुराद वो गंदी शायरी है जिसका ता'ल्लुक़ इश्क़ फ़िस्क़ से या किसी बेजा मदह़ व ज़म से है।

6155. हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स़ बिन ग़यास़ ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, कहा कि मैंने अबू स़ालेह़ से सुना और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर तुममें से कोई शख़्स़ अपना पेट पीप से भर ले तो ये उससे बेहतर है कि वो श'रों से भर जाए।

٦١٥٥- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لأَنْ يَمْتَلِىءَ جَوْفُ رَجُلٍ قَيْحًا يَرِيهِ خَيْرٌ مِنْ انْ يَمْتَلِىءَ شِعْرًا)).

तश्रीह़ : पेट भर जाने से यही मत़लब है कि सिवा शे'रों के उसको और कुछ याद न हो। न क़ुर्आन याद करे और न ह़दीष़ देखे। रात दिन शे'रगोई की धुन में मस्त रहे जैसा कि आजकल के अकष़र शाइरों का माह़ौल है इल्ला माशाअल्लाह। वो वाइ़ज़ीन ह़ज़रात भी ज़रा ग़ौर करें जो क़ुर्आन व ह़दीष़ की जगह सारा वाज़ शे'रो शायरी से भर देते हैं। यूँ गाहे गाहे ह़म्द व नेअ़मत के अश्आ़र मज़्मूम नहीं हैं।

बाब 93 : नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्माना कि तेरे हाथ को मिट्टी लगे या तुझको ज़ख़्म पहुँचे, तेरे ह़लक़ में बीमारी हो।

٩٣- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ ((تَرِبَتْ يَمِينُكَ)) ((وَعَقْرَى حَلْقَى))

तश्रीह़ : अस़ल में अ़रब लोग ये लफ़्ज़ मन्ह़ूस औ़रत के लिये कहते हैं और ये कलिमात ग़ुस़्से और प्यार दोनों वक़्त कहे जाते हैं। इनसे बद दुआ़ देना मक़्स़ूद नहीं है। ख़ास़ त़ौर पर ह़ुज़ूर प्यार ही के लिये इनको इस्ते'माल करते थे।

6156. हमसे यह़्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे

٦١٥٦- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا

لَيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ : إِنَّ أَفْلَحَ أَخَا أَبِي الْقُعَيْسِ اسْتَأْذَنَ عَلَيَّ بَعْدَ مَا نَزَلَ الْحِجَابُ فَقُلْتُ: وَاللّٰهِ لاَ آذَنُ لَهُ، حَتَّى أَسْتَأْذِنَ رَسُولَ اللّٰهِ ﷺ فَإِنَّ أَخَا أَبِي الْقُعَيْسِ لَيْسَ هُوَ أَرْضَعَنِي، وَلَكِنْ أَرْضَعَتْنِي امْرَأَةُ أَبِي الْقُعَيْسِ، فَدَخَلَ عَلَيَّ رَسُولُ اللّٰهِ ﷺ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللّٰهِ إِنَّ الرَّجُلَ لَيْسَ هُوَ أَرْضَعَنِي وَلَكِنْ أَرْضَعَتْنِي امْرَأَتُهُ قَالَ: ((ائْذَنِي لَهُ فَإِنَّهُ عَمُّكِ تَرِبَتْ يَمِينُكِ)) قَالَ عُرْوَةُ: فَبِذَلِكَ كَانَتْ عَائِشَةُ تَقُولُ: حَرِّمُوا مِنَ الرَّضَاعَةِ مَا يَحْرُمُ مِنَ النَّسَبِ. [راجع: ٢٦٤٤]

लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़र्वा ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि अबू क़ुऐ़स के भाई अफ़्लह (मेरे रज़ाई चचा ने) मुझसे पर्दा का हुक्म नाज़िल होने के बाद अंदर आने की इजाज़त चाही, मैंने कहा कि अल्लाह की क़सम जब तक आँह़ज़रत (ﷺ) इजाज़त न देंगे मैं अंदर आने की इजाज़त नहीं दूँगी क्योंकि अबू क़ुऐ़स की बीवी ने दूध पिलाया है। फिर जब रसूलुल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ लाए तो मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मर्द ने मुझे दूध नहीं पिलाया था, दूध तो उनकी बीवी ने पिलाया था। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उन्हें अंदर आने की इजाज़त दे दो, क्योंकि वो तुम्हारे चचा हैं, तुम्हारे हाथ में मिट्टी लगे। उ़र्वा ने कहा कि उसी जगह से ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) कहती थीं कि जितने रिश्ते ख़ून की वजह से ह़राम होते हैं वो रज़ाअ़त से भी ह़राम ही समझो। (राजेअ़ : 2644)

٦١٥٧- حَدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، حَدَّثَنَا الْحَكَمُ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنِ الأَسْوَدِ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا قَالَتْ: أَرَادَ النَّبِيُّ ﷺ أَنْ يَنْفِرَ فَرَأَى صَفِيَّةَ عَلَى بَابِ خِبَائِهَا كَئِيبَةً حَزِينَةً لأَنَّهَا حَاضَتْ فَقَالَ: ((عَقْرَى حَلْقَى - لُغَةُ قُرَيْشٍ - إِنَّكِ لَحَابِسَتُنَا)) ثُمَّ قَالَ: ((أَكُنْتِ أَفَضْتِ يَوْمَ النَّحْرِ -)) يَعْنِي الطَّوَافَ - قَالَتْ : نَعَمْ قَالَ : ((فَانْفِرِي إِذًا)).[راجع: ٢٩٤]

6157. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ह़कम बिन उ़तैबा ने बयान किया, उनसे इब्राहीम नख़ई ने, उनसे अस्वद ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने (ह़ज्ज से) वापसी का इरादा किया तो देखा कि स़फ़िया (रज़ि.) अपने ख़ैमे के दरवाज़े पर रंजीदा खड़ी हैं क्योंकि वो ह़ाइज़ा हो गई थीं। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया। अ़क्रा ह़ल्क़ी ये क़ुरैश का मुहावरा है। अब तुम हमें रोकोगी? फिर पूछा क्या तुमने क़ुर्बानी के दिन त़वाफ़े इफ़ाज़ा कर लिया था? उन्हों ने कहा कि हाँ। फ़र्माया कि फिर चलो। (राजेअ़ : 294)

मा'लूम हुआ कि ऐसी मजबूरी मे त़वाफ़े विदाअ़ की जगह त़वाफ़े इफ़ाज़ा काफ़ी हो सकता है। त़वाफ़े इफ़ाज़ा दस ज़िलहिज्ज को और त़वाफ़े विदाअ़ मक्का से वापसी के दिन होता है।

٩٤- بَابُ مَا جَاءَ فِي زَعَمُوا

बाब 94 : ज़अ़मू कहने का बयान

ज़अ़मू का कहना कुछ लोगों ने मकरूह जाना है क्योंकि ये लफ़्ज़ अकष़र ऐसी जगह बोला जाता है जहाँ कहने वाले को अपनी बात की सच्चाई का यक़ीन न हो। अ़रब में मष़ल है कि लफ़्ज़े ज़अ़मू बोलना झूठ पर सवार होना है। ज़अ़मू का मा'नी

उन्होंने गुमान किया ये लफ़्ज़ शक वाली बात के लिये बोला जाता है मगर कुछ दफ़ा इसमें यक़ीन भी ग़ालिब होता है इसलिये ये लफ़्ज़ इस्ते'माल करना जाइज़ है।

6158. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा क़अ़म्बी ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने, उनसे उ़मर बिन उ़बैदुल्लाह के ग़ुलाम अबुन् नज़्र ने, उनसे उम्मे हानी बिन्ते अबी त़ालिब के ग़ुलाम अबू मुर्रह ने ख़बर दी कि उन्होंने उम्मे हानी बिन्ते अबी त़ालिब से सुना। उन्होंने बयान किया कि फ़तहे मक्का के मौक़े पर मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुई। मैंने देखा कि आप ग़ुस्ल कर रहे हैं और आपकी स़ाहबज़ादी फ़ात़िमा (रज़ि.) ने पर्दा कर दिया है। मैंने सलाम किया तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने पूछा कि ये कौन हैं? मैंने कहा कि उम्मे हानी बिन्ते अबी त़ालिब हूँ। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, उम्मे हानी! मरह़बा हो। जब आप ग़ुस्ल कर चुके तो खड़े होकर आठ रकअ़ात पढ़ीं। आप उस वक़्त एक कपड़े में जिस्मे मुबारक को लपेटे हुए थे। जब नमाज़ से फ़ारिग़ हो गये तो मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मेरे भाई (अ़ली बिन अबी त़ालिब रज़ि.) का ख़्याल है कि वो एक ऐसे शख़्स़ को क़त्ल करेंगे जिसे मैंने अमान दे रखी है। या'नी फ़लाँ बिन हुबैरह को। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, उम्मे हानी जिसे तुमने अमान दी उसे हमने भी अमान दी। उम्मे हानी ने बयान किया कि ये नमाज़ चाश्त की थी। (राजेअ़ : 280)

٦١٥٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ أَبِي النَّضْرِ، مَوْلَى عُمَرَ بْنِ عُبَيْدِ اللهِ أَنَّ أَبَا مُرَّةَ مَوْلَى أُمِّ هَانِىءٍ بِنْتِ أَبِي طَالِبٍ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ سَمِعَ أُمَّ هَانِىءٍ بِنْتَ أَبَا طَالِبٍ تَقُولُ : ذَهَبْتُ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ عَامَ الْفَتْحِ فَوَجَدْتُهُ يَغْتَسِلُ وَفَاطِمَةُ ابْنَتُهُ تَسْتُرُهُ، فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ فَقَالَ: ((مَنْ هَذِهِ؟)) فَقُلْتُ: أَنَا أُمُّ هَانِىءٍ بِنْتُ أَبِي طَالِبٍ فَقَالَ: ((مَرْحَبًا بِأُمِّ هَانِىءٍ)) فَلَمَّا فَرَغَ مِنْ غُسْلِهِ قَامَ فَصَلَّى ثَمَانِيَ رَكَعَاتٍ مُلْتَحِفًا فِي ثَوْبٍ وَاحِدٍ فَلَمَّا انْصَرَفَ قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ زَعَمَ ابْنُ أُمِّي أَنَّهُ قَاتِلٌ رَجُلاً قَدْ أَجَرْتُهُ فُلاَنُ بْنُ هُبَيْرَةَ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((قَدْ أَجَرْنَا مَنْ أَجَرْتِ يَا أُمَّ هَانِىءٍ)) قَالَتْ أُمُّ هَانِىءٍ وَذَاكَ ضُحًى.

[راجع: ٢٨٠]

तशरीह : बाब का तर्जुमा यहाँ से निकला कि उम्मे हानी ने ज़अ़म इब्ने उम्मी कहा तो लफ़्ज़ ज़अ़मू कहना जाइज़ हुआ। फ़लाँ से मुराद ह़ारिष़ बिन हिशाम या अ़ब्दुल्लाह बिन अबी रबीआ़ या ज़ुहैर बिन अबी उमय्या था। इस ह़दीष़ से मा'लूम हुआ कि इस्लामी स्टेट में अगर मुसलमान औ़रत भी किसी काफ़िर को ज़िम्मी बनाकर पनाह दे दे तो क़ानूनन उसकी पनाह को लागू किया जाएगा क्योंकि इस बारे मे औ़रत भी एक मुसलमान मर्द जितना ही ह़क़ रखती है। जो लोग कहते हैं कि इस्लाम में औ़रत को कोई ह़क़ नहीं दिया गया इसमे उन लोगों की भी तर्दीद है।

बाब 95 : लफ़्ज़े वयलक या'नी तुझ पर अफ़सोस है कहना दुरुस्त है

٩٥- بَابُ مَا جَاءَ فِي قَوْلِ الرَّجُلِ وَيْلَكَ.

6159. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम बिन यह्या ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने एक शख़्स़ को देखा कि क़ुर्बानी के लिये एक ऊँटनी हाँके लिये जा रहा है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि इस पर सवार होकर जा। उन्होंने कहा कि

٦١٥٩- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ رَأَى رَجُلاً يَسُوقُ بَدَنَةً فَقَالَ: ((ارْكَبْهَا))، قَالَ: إِنَّهَا بَدَنَةٌ،

ये तो क़ुर्बानी का जानवर है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि सवार हो जा, अफ़सोस (वयलक) दूसरी या तीसरी मर्तबा ये फ़र्माया। (राजेअ : 1690)

قَالَ: ((ارْكَبْهَا)) قَالَ: إِنَّهَا بَدَنَةٌ، قَالَ: ((ارْكَبْهَا وَيْلَكَ)). [راجع: ١٦٩٠]

6160. मुझसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, वो इमाम मालिक से रिवायत करते हैं, वो अबुज़्ज़िनाद से, वो अअ़रज से, वो ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक शख़्स को देखा कि क़ुर्बानी का ऊँट हँकाए जा रहा है। आपने उससे कहा कि तू इस पर सवार हो जा। उसने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! ये तो क़ुर्बानी का ऊँट है। आपने दूसरी बार या तीसरी बार फ़र्माया कि तेरी ख़राबी हो, तू सवार हो जा। (राजेअ : 1689)

٦١٦٠- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ رَأَى رَجُلاً يَسُوقُ بَدَنَةً فَقَالَ لَهُ: ((ارْكَبْهَا)) قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّهَا بَدَنَةٌ، قَالَ: ((ارْكَبْهَا وَيْلَكَ)) فِي الثَّانِيَةِ أَوْ فِي الثَّالِثَةِ. [راجع: ١٦٨٩]

क़ुर्बानी के लिये जो ऊँट नज़्र कर दिया जाए उस पर सफ़रे ह़ज्ज के लिये सवारी की जा सकती है वो शख़्स ऐसे ऊँट को लेकर पैदल सफ़र कर रहा था और बार बार कहने पर भी सवार नहीं हो रहा था। उस पर आपने लफ़्ज़ वयलक बोलकर उसको ऊँट पर सवार कराया। मा'लूम हुआ कि ऐसे मवाक़ेअ़ पर लफ़्ज़ वयलक बोल सकते हैं या'नी तुझ पर अफ़सोस है।

6161. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे ष़ाबित बिनानी ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने (दूसरी सनद) और इस ह़दीष़ को ह़म्माद ने अय्यूब सुख़्तियानी से और अय्यूब ने अबू क़िलाबा से रिवायत किया और उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) एक सफ़र में थे और आपके साथ आपका एक ह़ब्शी ग़ुलाम था। उनका नाम अंजशा था वो ह़दी पढ़ रहा था। (जिसकी वजह से सवारी तेज़ चलने लगी) आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अफ़सोस (वयह़क) ऐ अंजशा शीशों के साथ आहिस्ता आहिस्ता चल। (राजेअ़ : 1649)

٦١٦١- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ ثَابِتٍ الْبُنَانِيِّ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، وَأَيُّوبَ عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فِي سَفَرٍ وَكَانَ مَعَهُ غُلاَمٌ لَهُ أَسْوَدُ يُقَالُ لَهُ: أَنْجَشَةُ يَحْدُو فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((وَيْحَكَ يَا أَنْجَشَةُ رُوَيْدَكَ بِالْقَوَارِيرِ)). [راجع: ١٦٤٩]

शीशों से आपने औ़रतों को मुराद लिया क्योंकि वो भी शीशे की त़रह़ नाज़ुक अंदाम होती हैं।

6162. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब ने बयान किया, उनसे ख़ालिद ने, उनसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबीबक्र ने और उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के सामने एक शख़्स ने दूसरे शख़्स की ता'रीफ़ की। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अफ़सोस (वयलक) तुमने अपने भाई की गर्दन काट दी। तीन मर्तबा (ये फ़र्माया) अगर तुम्हें किसी की ता'रीफ़ ही करनी पड़ जाए तो ये कहिए कि फ़लाँ के बारे में मेरा ये ख़याल है। अगर वो बात उसके बारे में

٦١٦٢- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، عَنْ خَالِدٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي بَكْرَةَ، عَنْ أَبِيهِ قَالَ: أَثْنَى رَجُلٌ عَلَى رَجُلٍ عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ((وَيْلَكَ قَطَعْتَ عُنُقَ أَخِيكَ ثَلاَثًا مَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَادِحًا لاَ

مُحَالَةَ فَلْيَقُلْ أَحْسِبُ فُلاَنًا وَاللهُ حَسِيبُهُ وَلاَ أُزَكِّي عَلَى اللهِ أَحَدًا إِنْ كَانَ يَعْلَمُ)). [راجع: ٢٦٦٢]

जानता हो और अल्लाह उसका निगराँ है मैं तो अल्लाह के मुक़ाबले में किसी को नेक नहीं कह सकता। या'नी यूँ नहीं कह सकता कि वो अल्लाह के इल्म में भी नेक है। (राजेअ : 2662)

क्योंकि उसको अल्लाह के इल्म की ख़बर नहीं है।

٦١٦٣- حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ، عَنِ الأَوْزَاعِيِّ، عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، وَالضَّحَّاكِ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ : بَيْنَا النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقْسِمُ ذَاتَ يَوْمٍ قِسْمًا فَقَالَ ذُو الْخُوَيْصِرَةِ : رَجُلٌ مِنْ بَنِي تَمِيمٍ يَا رَسُولَ اللهِ اعْدِلْ قَالَ: ((وَيْلَكَ مَنْ يَعْدِلُ إِذَا لَمْ أَعْدِلْ)) فَقَالَ عُمَرُ: ائْذَنْ لِي فَلأَضْرِبْ عُنُقَهُ قَالَ: ((لاَ إِنَّ لَهُ أَصْحَابًا يَحْقِرُ أَحَدُكُمْ صَلاَتَهُ مَعَ صَلاَتِهِمْ، وَصِيَامَهُ مَعَ صِيَامِهِمْ يَمْرُقُونَ مِنَ الدِّينِ كَمُرُوقِ السَّهْمِ مِنَ الرَّمِيَّةِ يُنْظَرُ إِلَى نَصْلِهِ فَلاَ يُوجَدُ فِيهِ شَيْءٌ، ثُمَّ يُنْظَرُ إِلَى رِصَافِهِ فَلاَ يُوجَدُ فِي شَيْءٍ ثُمَّ يُنْظَرُ إِلَى نَضِيِّهِ فَلاَ يُوجَدُ فِيهِ شَيْءٌ، ثُمَّ يُنْظَرُ إِلَى قُذَذِهِ فَلاَ يُوجَدُ فِيهِ شَيْءٌ، سَبَقَ الْفَرْثَ وَالدَّمَ يَخْرُجُونَ عَلَى حِينِ فُرْقَةٍ مِنَ النَّاسِ، آيَتُهُمْ رَجُلٌ إِحْدَى يَدَيْهِ مِثْلُ ثَدْيِ الْمَرْأَةِ، أَوْ مِثْلُ الْبَضْعَةِ تَدَرْدَرُ)) قَالَ أَبُو سَعِيدٍ : أَشْهَدُ لَسَمِعْتُهُ مِنَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَشْهَدُ أَنِّي كُنْتُ مَعَ عَلِيٍّ، حِينَ قَاتَلَهُمْ فَالْتُمِسَ فِي الْقَتْلَى فَأُتِيَ بِهِ عَلَى النَّعْتِ الَّذِي نَعَتَ النَّبِيُّ

6163. मुझसे अ़ब्दुर्रहमान बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे वलीद ने बयान किया, उनसे इमाम औज़ाई ने, उनसे ज़ुह्री ने, उनसे अबू सलमा और ज़ह्हाक ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि एक दिन नबी करीम (ﷺ) कुछ तक़्सीम कर रहे थे। बनी तमीम के एक शख़्स ज़ुल ख़ुवैसरा ने कहा या रसूलल्लाह! इंसाफ़ से काम लीजिए। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अफ़सोस! अगर मैं ही इंसाफ़ नहीं करूँगा तो फिर कौन करेगा। ह़ज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा, आँहज़रत (ﷺ) मुझे इजाज़त दीजिए तो मैं इसकी गर्दन मार दूँ। आपने फ़र्माया कि नहीं। उसके कुछ (क़बीले वाले) ऐसे लोग पैदा होंगे कि तुम उनकी नमाज़ के मुक़ाबले में अपनी नमाज़ को मा'मूली समझोगे और उनके रोज़ों के मुक़ाबले में अपने रोज़े को मा'मूली समझोगे, लेकिन वो दीन से इस त़रह निकल चुके होंगे जिस त़रह तीर शिकार से निकल जाता है। तीर के फल में देखा जाए तो उस पर भी कोई निशान नहीं मिलेगा। उसकी लकड़ी पर देखा जाए तो उस पर भी कोई निशान नहीं मिलेगा। फिर उसके दंदानों में देखा जाए और उसमें भी कुछ नहीं मिलेगा फिर उसके पर में देखा जाए तो उसमें भी कुछ नहीं मिलेगा। (या'नी शिकार के जिस्म को पार करने का कोई निशान) तीर लीद और ख़ून को पार करके निकल चुका होगा। ये लोग उस वक़्त पैदा होंगे जब लोगों में फूट पड़ जाएगी। (एक ख़लीफ़ा पर मुत्तफ़िक़ न होंगे) उनकी निशानी उनका एक मर्द (सरदारे लश्कर) होगा। जिसका एक हाथ औरत के पिस्तान की त़रह होगा या (फ़र्माया कि) गोश्त के लाथड़े की त़रह थलथल हिल रहा होगा। अबू सईद (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं गवाही देता हूँ कि मैं ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) के साथ था। जब उन्होंने उन ख़ारजियों से (नहरवान में) जंग की थी। मक़्तूलीन में तलाश की गई तो एक शख़्स इन्हीं

صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.
[راجع: ٣٣٤٤]

सिफ़ात का लाया गया। जो हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने बयान की थीं। उसका एक हाथ पिस्तान की तरह का था। (राजेअ : 3344)

तश्रीह : इस हदीष़ से मा'लूम हुआ कि इबादत और तक़्वा और ज़ुहद कुछ काम नहीं आता जब तक अल्लाह और उसके रसूल और अहले बैत से मुहब्बत न रखे। मुहब्बते रसूल आपकी सुन्नत पर अमल करने से हासिल होती है। लोग अहले दुनिया कुछ भी कहें मगर हदीष़ शरीफ़ न छूटे हर वक़्त हदीष़ से रिश्ता रहे। सफ़र हो या हज़र, सुबह हो या शाम हदीष़ का मुतालआ हदीष़ पर अमल करने का शौक़ ग़ालिब रहे, हदीष़ की किताब से मुहब्बत रहे, हदीष़ पर चलने वालों से उल्फ़त रहे। हदीष़ को शाये करने वालों से मुहब्बत का शैवा रहे। ज़िंदगी हदीष़ पर, मौत हदीष़ पर, हर वक़्त बग़ल में हदीष़ यही तमन्ना रहे। या अल्लाह! हमारे पास कोई नेक अमल नहीं है जो तेरी बारगाह में पेश करने के क़ाबिल हो। यही क़ुर्आने पाक ष़नाई की ख़िदमत और सहीह बुख़ारी का तर्जुमा हमारे पास है और तेरे फ़ज़्ल से बुख़ारी के साथ सहीह मुस्लिम की ख़िदमत भी है जो तेरे पास लेकर आएँगे। तू ही या अल्लाह रहीम, करीम और क़ुबूल करने वाला है। (राज़)

٦١٦٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ أَبُو الْحَسَنِ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا الأَوْزَاعِيُّ، حَدَّثَنِي ابْنُ شِهَابٍ، عَنْ حُمَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَجُلاً أَتَى رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ هَلَكْتُ قَالَ: ((وَيْحَكَ)) قَالَ : وَقَعْتُ عَلَى أَهْلِي فِي رَمَضَانَ قَالَ: ((أَعْتِقْ رَقَبَةً)) قَالَ: مَا أَجِدُهَا قَالَ: ((فَصُمْ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ)) قَالَ: لاَ أَسْتَطِيعُ قَالَ: ((فَأَطْعِمْ سِتِّينَ مِسْكِينًا)) قَالَ : مَا أَجِدُ فَأُتِيَ بِعَرَقٍ فَقَالَ: ((خُذْهُ فَتَصَدَّقْ بِهِ)) فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ أَعَلَى غَيْرِ أَهْلِي فَوَ الَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ مَا بَيْنَ طُنُبَيِ الْمَدِينَةِ أَحْوَجُ مِنِّي فَضَحِكَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى بَدَتْ أَنْيَابُهُ قَالَ: ((خُذْهُ)).
تَابَعَهُ يُونُسُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ وَقَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنِ خَالِدٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ وَيْلَكَ.

6164. हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल अबुल हसन ने बयान किया, कहा हमको हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको इमाम औज़ाई ने ख़बर दी, कहा कि मुझको इब्ने शिहाब ने ख़बर दी, बयान किया उनसे हुमैद बिन अब्दुर्रहमान ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि एक सहाबी रसूले करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैं तो तबाह हो गया। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अफ़सोस! (क्या बात हुई?) उन्होंने कहा कि मैंने रमज़ान में अपनी बीवी से सुहबत कर ली। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कि फिर एक ग़ुलाम आज़ाद कर। उन्होंने अर्ज़ किया कि मेरे पास ग़ुलाम है ही नहीं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर दो महीने लगातार रोज़े रख। उसने कहा कि इसकी मुझमें ताक़त नहीं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर साठ मिस्कीनों को खाना खिला। कहा कि इतना भी मैं अपने पास नहीं पाता। उसके बाद खजूर का एक टोकरा आया तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि इसे ले और सदक़ा कर दे। उन्होंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! क्या अपने घर वालों के सिवा किसी और को? उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! सारे मदीना के दोनों तनाबों या'नी दोनों किनारों में मुझसे ज़्यादा कोई मुहताज नहीं। आँहज़रत (ﷺ) उस पर इतना हंस दिये कि आपके आगे के दंदाने मुबारक दिखाई देने लगे। फ़र्माया कि जाओ तुम ही ले लो। औज़ाई के साथ इस हदीष़ को यूनुस ने भी ज़ुह्री से रिवायत किया और अब्दुर्रहमान बिन ख़ालिद ने

ज़ुह्री से इस ह़दीष़ में बजाय लफ़्ज़े वयह़क के लफ़्ज़े वयलक रिवायत किया है (मा'नी दोनों के एक ही हैं)

(राजेअ़ : 1936)

[راجع: ١٩٣٦]

6165. हमसे सुलैमान बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे वलीद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू अ़म्र औज़ाई ने बयान किया, कहा कि मुझसे इब्ने शिहाब ज़ुह्री ने बयान किया, उनसे अ़ता बिन यज़ीद लैष़ी ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने कि एक देहाती ने कहा, या रसूलल्लाह! हिजरत के बारे में मुझे कुछ बताइये (उसकी निय्यत हिजरत की थी) आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, तुझ पर अफ़सोस! हिजरत को तूने क्या समझा है ये बहुत मुश्किल है। तुम्हारे पास कुछ ऊँट हैं । उन्होंने अ़र्ज़ किया कि जी हाँ। आँह़ज़रत (ﷺ) ने पूछा क्या तुम उनकी ज़कात अदा करते हो? उन्होंने अ़र्ज़ किया जी हाँ। फ़र्माया कि फिर सात समुन्दर पार अ़मल करते रहो। अल्लाह तुम्हारे किसी अ़मल के ष़वाब को ज़ाये नहीं करेगा।

٦١٦٥- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ، حَدَّثَنَا أَبُو عَمْرٍو الأَوْزَاعِيُّ حَدَّثَنِي ابْنُ شِهَابٍ الزُّهْرِيُّ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَزِيدَ اللَّيْثِيِّ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ أَعْرَابِيًّا قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ أَخْبِرْنِي عَنِ الْهِجْرَةِ؟ فَقَالَ: ((وَيْحَكَ إِنَّ شَأْنَ الْهِجْرَةِ شَدِيدٌ، فَهَلْ لَكَ مِنْ إِبِلٍ؟)) قَالَ : نَعَمْ. قَالَ: ((فَهَلْ تُؤَدِّي صَدَقَتَهَا؟)) قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: ((فَاعْمَلْ مِنْ وَرَاءِ الْبِحَارِ فَإِنَّ اللهَ لَنْ يَتِرَكَ مِنْ عَمَلِكَ شَيْئًا)).

दीनी फ़राइज़ अदा करते रहो हिजरत का ख़्याल छोड़ दो।

6166. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल वह्हाब ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ख़ालिद बिन ह़ारिष़ ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे वाक़िद बिन मुह़म्मद बिन ज़ैद ने बयान किया, उन्होंने उनके वालिद से सुना और उन्होंने ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अफ़सोस! (वयलकुम या वयह़कुम) शुअ़बा ने बयान किया कि शक उनके शैख़ (वाक़िद बिन मुह़म्मद को) था। मेरे बाद तुम काफ़िर न हो जाना कि एक-दूसरे की गर्दन मारने लगो। और नज़्र ने शुअ़बा से बयान किया, वयह़कुम और उ़मर बिन मुह़म्मद ने अपने वालिद से वयलकुम या वयह़कुम के लफ़्ज़ नक़ल किये हैं।

(राजेअ़ : 1742)

٦١٦٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الْوَهَّابِ، حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ الْحَارِثِ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ وَاقِدِ بْنِ مُحَمَّدِ بْنِ زَيْدٍ سَمِعْتُ أَبِي عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((وَيْلَكُمْ)) - أَوْ وَيْحَكُمْ - قَالَ شُعْبَةُ: شَكَّ هُوَ ((لاَ تَرْجِعُوا بَعْدِي كُفَّارًا يَضْرِبُ بَعْضُكُمْ رِقَابَ بَعْضٍ)). وَقَالَ النَّضْرُ : عَنْ شُعْبَةَ : وَيْحَكُمْ. وَقَالَ عُمَرُ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنْ أَبِيهِ: وَيْلَكُمْ أَوْ وَيْحَكُمْ.[راجع: ١٧٤٢]

मत़लब एक ही है। बाहमी क़त्ल व ग़ारत इस्लामी शैवा नहीं बल्कि ये शैवा-ए-कुफ़्फ़ार है। अल्लाह हमको इस पर ग़ौर करने की तौफ़ीक़ दे। (आमीन)

6167. हमसे अ़म्र इब्ने आ़सिम ने बयान किया, कहा हमसे

٦١٦٧- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَاصِمٍ، حَدَّثَنَا

هَمَّامٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ أَنَّ رَجُلاً مِنْ أَهْلِ الْبَادِيَةِ أَتَى النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ مَتَى السَّاعَةُ قَائِمَةٌ؟ قَالَ: ((وَيْلَكَ وَمَا أَعْدَدْتَ لَهَا؟)) قَالَ: مَا أَعْدَدْتُ لَهَا إِلاَّ أَنِّي أُحِبُّ اللهَ وَرَسُولَهُ، قَالَ: ((إِنَّكَ مَعَ مَنْ أَحْبَبْتَ)) فَقُلْنَا: وَنَحْنُ كَذَلِكَ قَالَ: ((نَعَمْ)). فَفَرِحْنَا يَوْمَئِذٍ فَرَحًا شَدِيدًا فَمَرَّ غُلاَمٌ لِلْمُغِيرَةِ وَكَانَ مِنْ أَقْرَانِي فَقَالَ: ((إِنْ أُخِّرَ هَذَا، فَلَنْ يُدْرِكَهُ الْهَرَمُ حَتَّى تَقُومَ السَّاعَةُ)). وَاخْتَصَرَهُ شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ سَمِعْتُ أَنَسًا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. [راجع: ٣٦٨٨]

हम्माम बिन यह्या ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने कि एक बदवी नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और पूछा या रसूलल्लाह! क़यामत कब आएगी? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अफ़सोस! (वयलक) तुमने उस क़यामत के लिये क्या तैयारी कर ली है? उन्होंने अर्ज़ किया मैंने उसके लिये तो कोई तैयारी नहीं की है अल्बत्ता मैं अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत रखता हूँ। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, फिर तुम क़यामत के दिन उनके साथ हो, जिससे तुम मुहब्बत रखते हो। हमने अर्ज़ किया और हमारे साथ भी यही मामला होगा? फ़र्माया कि हाँ। हम उस दिन बहुत ज़्यादा ख़ुश हुए। फिर मुग़ीरह के एक ग़ुलाम वहाँ से गुज़रे वो मेरे हम उम्र थे। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर ये बच्चा ज़िंदा रहा तो इसको बुढ़ापा आने से पहले क़यामत क़ायम हो जाएगी। (राजेअ़ : 3688)

या'नी तुम सब लोग दुनिया से गुज़र जाओगे। मौत भी एक क़यामत ही है जैसे दूसरी ह़दीष़ में है **मम्मात फक़द कामत क़ियामतुहू** बाक़ी रहा क़यामते कुबरा या'नी आसमान ज़मीन का फटना। उसके वक़्त को बजुज़ अल्लाह के कोई नहीं जानता यहाँ तक कि रसूले करीम (ﷺ) भी नहीं जानते थे। इन तमाम मज़्कूरा रिवायात में लफ़्ज़े वयलक या वयह़क इस्ते'माल हुआ है। इसीलिये उनको यहाँ नक़ल किया गया है बाब से यही वजहे मुताबक़त है। इस ह़दीष़ को शुअ़बा ने इख़्तिसार के साथ बयान किया है। क़तादा से कि मैंने अनस से सुना और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से।

٩٦- باب عَلاَمَةِ حُبِّ اللهِ عَزَّوَجَلَّ

لِقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللهُ﴾. [آل عمران: ٣١].

बाब 96 : अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल की मुहब्बत किसको कहते हैं?

और अल्लाह तआ़ला ने सूरह आले इमरान में फ़र्माया कि, अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत रखते हो तो मेरी इत्तिबाअ़ करो, अल्लाह तुमसे मुहब्बत करेगा। (आले इमरान 31)

बग़ैर इत़ाअ़ते रसूल (ﷺ) मुहब्बते इलाही का दा'वा बिलकुल ग़लत़ है।

٦١٦٨- حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ سُلَيْمَانَ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: ((الْمَرْءُ مَعَ مَنْ أَحَبَّ)). [طرفه في : ٦١٦٩].

6168. हमसे बिश्र बिन ख़ालिद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे सुलैमान ने, उनसे अबू वाइल ने और उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, इंसान उसके साथ है जिससे वो मुहब्बत रखता है। (दीगर मक़ामात : 6169)

٦١٦٩- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ أَبِي وَائِلٍ قَالَ:

6169. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन अ़ब्दुल ह़मीद ने बयान किया, उनसे आ'मश ने,

قَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ كَيْفَ تَقُولُ فِي رَجُلٍ أَحَبَّ قَوْمًا وَلَمْ يَلْحَقْ بِهِمْ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((الْمَرْءُ مَعَ مَنْ أَحَبَّ)). تَابَعَهُ جَرِيرُ بْنُ حَازِمٍ، وَسُلَيْمَانُ بْنُ قَرْمٍ، وَأَبُو عَوَانَةَ عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. [راجع: ٦١٦٨]

उनसे अबू वाइल ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने कि एक शख़्स़ रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! आपका उस शख़्स़ के बारे में क्या इर्शाद है जो एक जमाअ़त से मुह़ब्बत रखता है लेकिन उनसे मैल नहीं हो सका है? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि इंसान उसके साथ है जिससे वो मुह़ब्बत रखता है। इस रिवायत की मुताबअ़त जरीर बिन ह़ाज़िम, सुलैमान बिन क़र्म और अबू अ़वाना ने आ'मश से की, उनसे अबू वाइल ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने। (राजेअ़ : 6168)

मुह़ब्बत भी एक अ़ज़ीम बड़ा वसील–ए–नजात है। मगर मुह़ब्बत के साथ इत़ाअ़ते नबवी और अ़मल भी मुत़ाबिक़े सुन्नत होना ज़रूरी है।

जन्नतुल फ़िरदौस को सीधी गई है ये सड़क
मसलके सुन्नत पे ऐ सालिक चला जा बे धड़क

٦١٧٠- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ أَبِي مُوسَى قَالَ: قِيلَ لِلنَّبِيِّ ﷺ الرَّجُلُ يُحِبُّ الْقَوْمَ وَلَمَّا يَلْحَقْ بِهِمْ قَالَ: ((الْمَرْءُ مَعَ مَنْ أَحَبَّ)).
تَابَعَهُ أَبُو مُعَاوِيَةَ وَمُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدٍ.

6170. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान स़ौरी ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अबू वाइल ने और उनसे ह़ज़रत अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) से अ़र्ज़ किया गया एक शख़्स़ एक जमाअ़त से मुह़ब्बत रखता है लेकिन उससे मिल नहीं सका है? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि इंसान उसके साथ है जिससे वो मुह़ब्बत रखता है। सुफ़यान के साथ इस रिवायत की मुताबअ़त अबू मुआ़विया और मुह़म्मद बिन उ़बैद ने की है।

٦١٧١- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ أَخْبَرَنَا أَبِي، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ، عَنْ سَالِمِ بْنِ أَبِي الْجَعْدِ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ أَنَّ رَجُلاً سَأَلَ النَّبِيَّ ﷺ مَتَى السَّاعَةُ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: ((مَا أَعْدَدْتَ لَهَا؟)) قَالَ: مَا أَعْدَدْتُ لَهَا مِنْ كَثِيرِ صَلاَةٍ وَلاَ صَوْمٍ وَلاَ صَدَقَةٍ، وَلَكِنِّي أُحِبُّ اللهَ وَرَسُولَهُ قَالَ: ((أَنْتَ مَعَ مَنْ أَحْبَبْتَ)).
[راجع: ٣٦٨٨]

6171. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, कहा हमको हमारे वालिद उ़स्मान मरवज़ी ने ख़बर दी, उन्हें शुअ़बा ने, उन्हें अ़म्र बिन मुर्रह ने, उन्हें सालिम बिन अबी अल जअ़द ने और उन्हें ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि एक शख़्स़ ने नबी करीम (ﷺ) से पूछा, या रसूलल्लाह! क़यामत कब क़ायम होगी? आँह़ज़रत (ﷺ) ने दरयाफ़्त किया तुमने उसके लिये क्या तैयारी की है? उन्होंने अ़र्ज़ किया कि मैंने उसके लिये बहुत सारी नमाज़ें, रोज़े और स़दक़े नहीं तैयार कर रखे हैं, लेकिन मैं अल्लाह और उसके रसूल से मुह़ब्बत रखता हूँ। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम उसके साथ हो जिससे तुम मुह़ब्बत रखते हो। (राजेअ़ : 3688)

तश्रीह : यही ह़ाल मुझ नाचीज़ का भी है अल्लाह मुझको भी इस ह़दीष़ का मिस्दाक़ बनाए, आमीन। इमाम अबू नुऐ़म

ने इस ह़दीष़ के सब त़रीक़ों को किताबुल मुहिब्बीन में जमा किया है। बीस स़ह़ाबा के क़रीब उसके रावी हैं। इस ह़दीष़ में बड़ी ख़ुशख़बरी है। उन लोगों के लिये जो अल्लाह और उसके रसूल और अहले बैत और तमाम स़ह़ाबा किराम और औलिया अल्लाह से मुह़ब्बत रखते हैं। या अल्लाह! हम अपने दिलों में तेरी और तेरे ह़बीब और स़ह़ाबा किराम के बाद जिस क़दर ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) की मुह़ब्बत दिलों में रखते हैं वो तुझको ख़ूब मा'लूम है पस क़यामत के दिन हमको ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) के साथ बारगाहे रिसालत में शर्फ़े हुज़ूर अ़ता फ़र्माना, आमीन या रब्बल आ़लमीन। नेज़ मेरे अहले बैत और तमाम शाइक़ीने इ़ज़ाम, मुआविनीने किराम को भी ये शर्फ़ बख़्श दीजियो, आमीन।

बाब 97 : किसी का किसी को यूँ कहना चल दूर हो

٩٧- باب قَوْلِ الرَّجُلِ لِلرَّجُلِ: اخْسَأْ

6172. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे मुस्लिम बिन ज़रीर ने बयान किया, कहा मैं ने अबू रजाअ से सुना और उन्होंने ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने इब्ने स़ाइद से फ़र्माया, मैंने इस वक़्त अपने दिल में एक बात छुपा रखी है, वो क्या है? वो बोला अद् दुख़्ख़ु आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया चल दूर हो जा।

٦١٧٢- حدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا سَلْمُ بْنُ زَرِيرٍ، سَمِعْتُ أَبَا رَجَاءٍ سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لاِبْنِ صَائِدٍ: ((قَدْ خَبَأْتُ لَكَ خَبِيئًا فَمَا هُوَ؟)) قَالَ : الدُّخُّ قَالَ : ((اخْسَأْ)).

6173. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने कहा कि मुझसे सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने ख़बर दी कि उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ इब्ने स़य्याद की त़रफ़ गये। बहुत से दूसरे स़ह़ाबा भी साथ थे। आँह़ज़रत (ﷺ) ने देखा कि वो चंद बच्चों के साथ बनी मुग़ाला के क़िले के पास खेल रहा है। उन दिनों इब्ने स़य्याद जवान होने के क़रीब था। आँह़ज़रत (ﷺ) की आमद का उसे एह़सास नहीं हुआ। यहाँ तक कि आपने उसकी पीठ पर अपना हाथ मारा। फिर फ़र्माया क्या तू गवाही देता है कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ? उसने आँह़ज़रत (ﷺ) की त़रफ़ देखकर कहा, मैं गवाही देता हूँ कि आप उम्मियों के या'नी (अ़रबों के) रसूल हैं। फिर इब्ने स़य्याद ने कहा क्या आप गवाही देते हैं कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ? आँह़ज़रत (ﷺ) ने उस पर उसे दूर कर दिया और फ़र्माया, मैं अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाया। फिर इब्ने स़य्याद से आपने पूछा, तुम क्या देखते हो? उसने कहा कि मेरे पास सच्चा और झूठा दोनों आते हैं। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया

٦١٧٣- حدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ أَخْبَرَهُ أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ انْطَلَقَ مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ فِي رَهْطٍ مِنْ أَصْحَابِهِ قِبَلَ ابْنِ صَيَّادٍ حَتَّى وَجَدَهُ يَلْعَبُ مَعَ الْغِلْمَانِ فِي أُطُمِ بَنِي مَغَالَةَ، وَقَدْ قَارَبَ ابْنُ صَيَّادٍ يَوْمَئِذٍ الْحُلُمَ فَلَمْ يَشْعُرْ حَتَّى ضَرَبَ رَسُولُ اللهِ ﷺ ظَهْرَهُ بِيَدِهِ ثُمَّ قَالَ: ((أَتَشْهَدُ أَنِّي رَسُولُ اللهِ؟)) فَنَظَرَ إِلَيْهِ فَقَالَ: أَشْهَدُ أَنَّكَ رَسُولُ الأُمِّيِّينَ، ثُمَّ قَالَ ابْنُ صَيَّادٍ: أَتَشْهَدُ أَنِّي رَسُولُ اللهِ؟ فَرَضَّهُ النَّبِيُّ ﷺ ثُمَّ قَالَ: ((آمَنْتُ بِاللهِ وَرُسُلِهِ)) ثُمَّ قَالَ لاِبْنِ صَيَّادٍ: ((مَاذَا تَرَى؟)) قَالَ: يَأْتِينِي صَادِقٌ وَكَاذِبٌ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ

तुम्हारे लिये मामला का मुश्तबह कर दिया गया है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया मैंने तुम्हारे लिये एक बात अपने दिल में छुपा रखी है? उसने कहा कि वो अद् दुख़ुख़ु है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया दूर हो, अपनी हैसियत से आगे न बढ़। उमर (रज़ि.) ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या आप मुझे इजाज़त देंगे कि इसे क़त्ल कर दूँ? आँहज़रत (ﷺ)ने फ़र्माया, अगर ये वही (दज्जाल) है तो इस पर ग़ालिब नहीं हुआ जा सकता और अगर ये दज्जाल नहीं है तो उसे क़त्ल करने में कोई ख़ैर नहीं। (राजेअ : 1354)

6174. सालिम ने बयान किया कि मैंने अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि उसके बाद रसूलुल्लाह (ﷺ) उबई बिन कअब अंसारी (रज़ि.) को साथ लेकर उस खजूर के बाग़ की तरफ़ रवाना हुए, जहाँ इब्ने सय्याद रहता था। जब आँहज़रत (ﷺ) बाग़ में पहुँचे तो आपने खजूर की टहनियों में छुपना शुरू किया। आँहज़रत (ﷺ) चाहते थे कि इससे पहले कि वो देखे छुपकर किसी बहाने इब्ने सय्याद की कोई बात सुनें। इब्नें सय्याद एक मख़मली चादर के बिस्तर पर लटा हुआ था और कुछ गुनगुना रहा था। इब्ने सय्याद की माँ ने आँहज़रत (ﷺ) को खजूर के तनों से छुपकर आते हुए देख लिया और उसे बता दिया कि ऐ साफ़! (ये उसका नाम था) मुहम्मद (ﷺ) आ रहे हैं। चुनाँचे वो मुतनब्बह हो गया। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर उसकी माँ उसे मुतनब्बह न करती तो बात साफ़ हो जाती। (राजेअ : 1155)

6175. सालिम ने बयान किया कि अब्दुल्लाह ने बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) लोगों के मज्मओ में खड़े हुए और अल्लाह की उसकी शान के मुताबिक़ ता'रीफ़ करने के बाद आपने दज्जाल का ज़िक्र किया और फ़र्माया कि मैं तुम्हें उससे डराता हूँ। कोई नबी ऐसा नहीं गुज़रा जिसने अपनी क़ौम को इससे न डराया हो। नूह (अलैहिस्सलाम) ने अपनी क़ौम को इससे डराया लेकिन मैं उसकी तुम्हें एक ऐसी निशानी बताऊँगा जो किसी नबी ने अपनी क़ौम को नहीं बताई। तुम जानते हो कि वो काना होगा और अल्लाह काना नहीं है। (राजेअ : 3057)

((خُلِّطَ عَلَيْكَ الأَمْرُ)) قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنِّي خَبَأْتُ لَكَ خَبِيئًا)) قَالَ هُوَ الدُّخُّ. قَالَ: ((اخْسَأْ فَلَنْ تَعْدُو قَدْرَكَ)) قَالَ عُمَرُ يَا رَسُولَ اللهِ أَتَأْذَنُ لِي فِيهِ أَضْرِبْ عُنُقَهُ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنْ يَكُنْ هُوَ لاَ تُسَلَّطُ عَلَيْهِ وَإِنْ لَمْ يَكُنْ هُوَ فَلاَ خَيْرَ لَكَ فِي قَتْلِهِ)). [راجع: ١٣٥٤]

٦١٧٤- قَالَ سَالِمٌ: فَسَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ يَقُولُ: انْطَلَقَ بَعْدَ ذَلِكَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَأُبَيُّ بْنُ كَعْبٍ الأَنْصَارِيُّ يَؤُمَّانِ النَّخْلَ الَّتِي فِيهَا ابْنُ صَيَّادٍ حَتَّى إِذَا دَخَلَ رَسُولُ اللهِ ﷺ طَفِقَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَتَّقِي بِجُذُوعِ النَّخْلِ، وَهُوَ يَخْتِلُ أَنْ يَسْمَعَ مِنَ ابْنِ صَيَّادٍ شَيْئًا قَبْلَ أَنْ يَرَاهُ وَابْنُ صَيَّادٍ مُضْطَجِعٌ عَلَى فِرَاشِهِ فِي قَطِيفَةٍ لَهُ فِيهَا رَمْرَمَةٌ -أَوْ زَمْزَمَةٌ- فَرَأَتْ أُمُّ ابْنِ صَيَّادٍ النَّبِيَّ ﷺ وَهُوَ يَتَّقِي بِجُذُوعِ النَّخْلِ فَقَالَتْ لاِبْنِ صَيَّادٍ: أَيْ صَافِ، وَهُوَ اسْمُهُ، هَذَا مُحَمَّدٌ فَتَنَاهَى ابْنُ صَيَّادٍ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لَوْ تَرَكَتْهُ بَيَّنَ)). [راجع: ١١٥٥]

٦١٧٥- قَالَ سَالِمٌ: قَالَ عَبْدُ اللهِ قَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فِي النَّاسِ فَأَثْنَى عَلَى اللهِ بِمَا هُوَ أَهْلُهُ ثُمَّ ذَكَرَ الدَّجَّالَ فَقَالَ: ((إِنِّي أُنْذِرُكُمُوهُ وَمَا مِنْ نَبِيٍّ إِلاَّ وَقَدْ أَنْذَرَ قَوْمَهُ، لَقَدْ أَنْذَرَهُ نُوحٌ قَوْمَهُ، وَلَكِنِّي سَأَقُولُ لَكُمْ فِيهِ قَوْلاً لَمْ يَقُلْهُ نَبِيٌّ لِقَوْمِهِ، تَعْلَمُونَ أَنَّهُ أَعْوَرُ وَأَنَّ اللهَ لَيْسَ بِأَعْوَرَ)).

[راجع: ٣٠٥٧]

इस रिवायत में आपसे लफ़्ज़े अख़्सअ दूर हो का इस्ते'माल मज़्कूर है। इसीलिये इस ह़दीष़ को यहाँ लाया गया है।

बाब 98 : किसी शख़्स का मरहबा कहना

٩٨- باب قَوْلِ الرَّجُلِ مَرْحَبًا

وَقَالَتْ عَائِشَةُ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ لِفَاطِمَةَ عَلَيْهَا السَّلاَمُ: ((مَرْحَبًا بِابْنَتِي)) وَقَالَتْ أُمُّ هَانِىءٍ جِئْتُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: ((مَرْحَبًا بِأُمِّ هَانِىءٍ)).

और ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने ह़ज़रत फ़ातिमा (अ़लैहस्सलाम) से फ़र्माया था मरहबा मेरी बेटी। और उम्मे हानी (रज़ि.) ने कहा कि मैं आँह़ज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुई तो आपने फ़र्माया मरहबा, उम्मे हानी

٦١٧٦- حَدَّثَنَا عِمْرَانُ بْنُ مَيْسَرَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، حَدَّثَنَا أَبُو التَّيَّاحِ، عَنْ أَبِي جَمْرَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: لَمَّا قَدِمَ وَفْدُ عَبْدِ الْقَيْسِ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَرْحَبًا بِالْوَفْدِ الَّذِينَ جَاؤُوا غَيْرَ خَزَايَا، وَلاَ نَدَامَى)) فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ ﷺ إِنَّا حَيٌّ مِنْ رَبِيعَةَ وَبَيْنَنَا وَبَيْنَكَ مُضَرُ وَإِنَّا لاَ نَصِلُ إِلَيْكَ إِلاَّ فِي الشَّهْرِ الْحَرَامِ فَمُرْنَا بِأَمْرٍ فَصْلٍ نَدْخُلُ بِهِ الْجَنَّةَ وَنَدْعُو بِهِ مَنْ وَرَاءَنَا فَقَالَ: ((أَرْبَعٌ وَأَرْبَعٌ: أَقِيمُوا الصَّلاَةَ، وَآتُوا الزَّكَاةَ، وَصُومُوا رَمَضَانَ، وَأَعْطُوا خُمُسَ مَا غَنِمْتُمْ، وَلاَ تَشْرَبُوا فِي الدُّبَّاءِ، وَالْحَنْتَمِ، وَالنَّقِيرِ، وَالْمُزَفَّتِ)).

[راجع: ٥٣]

6176. हमसे इमरान बिन मैसरह ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वारिष़ ने बयान किया, उनसे अबुत्त तियाह यज़ीद बिन हुमैद ने बयान किया, उनसे अबू जम्रह ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जब क़बीला अ़ब्दुल क़ैस का वफ़्द नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मरहबा उन लोगों को जो आ पहुँचे तो वो ज़लील हुए न शर्मिन्दा (ख़ुशी से मुसलमान हो गये वरना मारे जाते शर्मिन्दा होते) उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! हम क़बीला रबीअ़ की शाख़ से ता'ल्लुक़ रखते हैं और चूँकि हमारे और आपके दरम्यान क़बीला मुज़र के काफ़िर लोग ह़ाइल हैं इसलिये हम आपकी ख़िदमत में सिर्फ़ हुर्मत वाले महीनों ही में ह़ाज़िर हो सकते हैं (जिनमें लूट खसोट नहीं होती) आप कुछ ऐसी जची तुली बात बतला दें जिस पर अ़मल करने से हम जन्नत में दाख़िल हो जाएँ और जो लोग नहीं आ सके हैं उन्हें भी उसकी दअ़वत पहुँचाएँ। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि चार चार चीज़ें हैं। नमाज़ क़ायम करो, ज़कात दो, रमज़ान के रोज़े रखो और ग़नीमत का पाँचवाँ ह़िस्सा (बैतुलमाल को) अदा करो और दुब्बा, ह़न्तुम, नक़ीर और मज़फ़्फ़त में न पियो। (राजेअ़ : 53)

दोनों अह़ादीष़ में लफ़्ज़े मरहबा बज़ुबाने रिसालत मआब (ﷺ) मज़्कूर है, दुब्बा कद्दू की तूम्बी, ह़न्तुम सब्ज लाखी मर्तबान, नक़ीर लकड़ी के कुरेदे हुए बर्तन, मुज़फ़्फ़त राल लगे हुए बर्तनों को कहा गया है। ये बर्तन उ़मूमन शराब रखने के लिये इस्ते'माल होते थे जिनमें नशा और बढ़ जाता था, इसलिये शराब की हुर्मत के साथ उनको उन बर्तनो से भी रोक दिया गया। ऐसे ह़ालात आज भी हों तो ये बर्तन काम में लाना मना हैं वरना नहीं।

बाब 99 : लोगों को उनके बाप का नाम लेकर क़यामत के दिन बुलाया जाना

٩٩- باب مَا يُدْعَى النَّاسُ بِآبَائِهِمْ

٦١٧٧- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى،

6177. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन

عَنْ عُبَيْدِ اللهِ، عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الْغَادِرِ يُرْفَعُ لَهُ لِوَاءٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يُقَالُ: هَذِهِ غَدْرَةُ فُلاَنِ بْنِ فُلاَنٍ)).

[راجع: ٣١٨٨]

सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह उ़म्री ने, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अ़हद तोड़ने वाले के लिये क़यामत में एक झण्डा उठाया जाएगा और पुकार दिया जाएगा कि ये फ़लाँ बिन फ़लाँ की दग़ाबाज़ी का निशान है। (राजेअ़ : 3188)

٦١٧٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ الْغَادِرَ يُنْصَبُ لَهُ لِوَاءٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، فَيُقَالُ هَذِهِ غَدْرَةُ فُلاَنِ بْنِ فُلاَنٍ)).

[راجع: ٣١٨٨]

6178. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा क़अ़म्बी ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया अ़हद तोड़ने वाले के लिये क़यामत में एक झण्डा उठाया जाएगा और पुकारा जाएगा कि ये फ़लाँ बिन फ़लाँ की दग़ाबाज़ी का निशान है। (राजेअ़ : 3188)

ये बहुत ही ज़िल्लत व रुस्वाई का मौजिब होगा कि इस त़रह़ उसकी दग़ाबाज़ी को मैदाने मह़शरर में मुश्तहर (प्रचारित) किया जाएगा और तमाम नेक लोग उस पर थू थू करेंगे।

बाब 100 : आदमी को ये न कहना चाहिये कि मेरा नफ़्स पलीद हो गया

١٠٠- باب لاَ يَقُلْ خَبُثَتْ نَفْسِي

क्योंकि पलीद बुरा लफ़्ज़ है जो काफ़िरों से ख़ास़ है मुसलमान पलीद नहीं हो सकता।

٦١٧٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لاَ يَقُولَنَّ أَحَدُكُمْ خَبُثَتْ نَفْسِي، وَلَكِنْ لِيَقُلْ، لَقِسَتْ نَفْسِي)).

6179. हमसे मुह़म्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, तुममें कोई शख़्स़ ये न कहे कि मेरा नफ़्स पलीद हो गया है बल्कि ये कहे कि मेरा दिल ख़राब या परेशान हो गया।

٦١٨٠- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، عَنْ يُونُسَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَبِي أُمَامَةَ بْنِ سَهْلٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((لاَ يَقُولَنَّ أَحَدُكُمْ خَبُثَتْ نَفْسِي، وَلَكِنْ لِيَقُلْ، لَقِسَتْ نَفْسِي)). تَابَعَهُ عُقَيْلٌ.

6180. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, कहा हमको ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, वो यूनुस से रिवायत करते हैं, वो ज़ुह्री से, वो अबू उमामा बिन सहल से, वो अपने बाप से, वो नबी करीम (ﷺ) से, आपने फ़र्माया तुममें से कोई हर्गिज़ यूँ न कहे कि मेरा नफ़्स पलीद हो गया लेकिन यूँ कह सकता है कि मेरा दिल ख़राब या परेशान हो गया। इस ह़दीष़ को अ़क़ील ने भी इब्ने शिहाब से रिवायत किया है।

बाब 101 : ज़माने को बुरा कहना मना है

١٠١- باب لاَ تَسُبُّوا الدَّهْرَ

तश्रीह : क्योंकि ज़माना ख़ुद कुछ नहीं कर सकता, जो कुछ करता है वो अल्लाह पाक ही करता है तो ज़माने को बुरा कहना गोया अल्लाह पाक ही को बुरा कहना है। अकषर लोगों की आदत होती है कि झट से कह बैठते हैं कि ज़माना बुरा है ऐसा कहने से परहेज़ करना चाहिये।

6181. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष बिन सअद ने बयान किया, उनसे यूनुस ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्हें अबू सलमा ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह तआला फ़र्माता है कि इंसान ज़माने को गाली देता है हालाँकि मैं ही ज़माना हूँ, मेरे ही हाथ में रात और दिन हैं। (राजेअ : 4826)

٦١٨١- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ يُونُسَ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ قَالَ : قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((قَالَ اللهُ : يَسُبُّ بَنُو آدَمَ الدَّهْرَ، وَأَنَا الدَّهْرُ بِيَدِي اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ)). [راجع: ٤٨٢٦]

तश्रीह : ह़दीष़ में लफ़्ज़ यदुन वारिद हुआ है जिसके ज़ाहिरी मा'नी पर ईमान व यक़ीन लाना वाजिब है। तफ़्सील अल्लाह के ह़वाले है। तावील करना त़रीक़ा सलफ़ के ख़िलाफ़ है। हो सकता है कि जो तावील हम करें वो अल्लाह की मुराद के ख़िलाफ़ हो पस तरजीह़ नसूस को है न तावील को। (तारीख़ अहले ह़दीष़, पेज : 284)

6182. हमसे अय्याश बिन वलीद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल आ़ला ने बयान किया, कहा हमसे मअ़मर ने बयान किया, उनसे ज़ुहरी ने, उनसे अबू सलमा ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अंगूर इनबुन को करम न कहो और ये न कहो कि हाय ज़माने की नामुरादी क्योंकि ज़माना तो अल्लाह ही के इख़्तियार में है। (दीगर : 6183)

٦١٨٢- حَدَّثَنَا عَيَّاشُ بْنُ الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لاَ تُسَمُّوا الْعِنَبَ الْكَرْمَ، وَلاَ تَقُولُوا: خَيْبَةَ الدَّهْرِ فَإِنَّ اللهَ هُوَ الدَّهْرُ)). [طرفه في: ٦١٨٣].

अ़रब लोग इसे करम इसलिये कहते हैं कि उनके ख़्याल में शराबनोशी से सख़ावत और बुज़ुर्गी पैदा होती थी इसीलिये ये लफ़्ज़ इस त़ौर पर इस्ते'माल करना मना क़रार पाया।

बाब 102 : नबी करीम (ﷺ) का यूँ फ़र्माना कि, करम तो मोमिन का दिल है

١٠٢- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((إِنَّمَا الْكَرْمُ قَلْبُ الْمُؤْمِنِ)).

जैसे दूसरी ह़दीष़ में है कि मुफ़्लिस तो वो है जो क़यामत के दिन मुफ़्लिस होगा। और जैसे आपने फ़र्माया कि ह़क़ीक़ी पहलवान तो वो है जो ग़ुस़्स़े के वक़्त अपने ऊपर क़ाबू रखे या अल्लाह के सिवा और कोई बादशाह नहीं है या'नी और सबकी हुकूमतें फ़ना हो जाने वाली हैं आख़िर में उसी की हुकूमत बाक़ी रह जाएगी बावजूद उसके फिर अल्लाह पाक ने अपने कलाम में सूरह सबा में यूँ फ़र्माया बादशाह लोग जब किसी बस्ती में दाख़िल होते हैं तो उसको लूट खसोट कर ख़राब कर देते हैं। (अन् नम्ल : 34)

وَقَدْ قَالَ: ((إِنَّمَا الْمُفْلِسُ الَّذِي يُفْلِسُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ)) كَقَوْلِهِ : إِنَّمَا الصُّرَعَةُ الَّذِي يَمْلِكُ نَفْسَهُ عِنْدَ الْغَضَبِ كَقَوْلِهِ: لاَ مُلْكَ إِلاَّ للهِ فَوَصَفَهُ بِانْتِهَاءِ الْمُلْكِ ثُمَّ ذَكَرَ الْمُلُوكَ أَيْضًا فَقَالَ: ﴿إِنَّ الْمُلُوكَ إِذَا دَخَلُوا قَرْيَةً أَفْسَدُوهَا﴾ [النمل: ٣٤].

6183. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, उनसे सईद बिन मुसय्यिब ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, लोग (अंगूर को) कर्म कहते हैं, कर्म तो मोमिन का दिल है। (राजेअ़ : 6182)

٦١٨٣- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((وَيَقُولُونَ الْكَرْمُ إِنَّمَا الْكَرْمُ قَلْبُ الْمُؤْمِنِ)).

[راجع: ٦١٨٢]

तश्रीह : इसका मत़लब ये है कि मुसलमान के दिल के सिवा और किसी चीज़ मष़लन अंगूर वग़ैरह को करम न कहना चाहिये। इन ह़दीष़ों के लाने से ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) की ग़र्ज़ ये है कि इन्नमा का कलिमा अ़रबी में ह़स्र के लिये आता है तो जब ये फ़र्माया कि **इन्नमल्करमु क़ल्बुल्मूमिन** तो इसका मत़लब ये हुआ कि क़ल्बे मोमिन के सिवा और किसी चीज़ को करम कहना दुरुस्त नहीं है।

बाब 103 : किसी शख़्स का ये कहना कि, मेरे बाप और माँ तुम पर क़ुर्बान हों, इसमें ज़ुबैर (रज़ि.) ने आँह़ज़रत (ﷺ) से रिवायत की है

١٠٣- باب قَوْلِ الرَّجُلِ فِدَاكَ أَبِي وَأُمِّي فِيهِ الزُّبَيْرُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

6184. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या क़त़्त़ान ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ष़ौरी ने, उनसे सअ़द बिन इब्राहीम ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन राशिद ने और उनसे ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को किसी के लिये अपने आपको क़ुर्बान करने का लफ़्ज़ कहते नहीं सुना, सिवा सअ़द बिन अबी वक़्क़ास़ (रज़ि.) के। मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) से सुना आप फ़र्मा रहे थे। तीर मार ऐ सअ़द! मेरे माँ-बाप तुम पर क़ुर्बान हों, मेरा ख़्याल है कि ये ग़ज़्व-ए-उहुद के मौक़े पर फ़र्माया। (राजेअ़ : 2905)

٦١٨٤- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ سُفْيَانَ، حَدَّثَنِي سَعْدُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ شَدَّادٍ، عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: مَا سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يُفَدِّي أَحَدًا غَيْرَ سَعْدٍ سَمِعْتُهُ يَقُولُ: ((ارْمِ فِدَاكَ أَبِي وَأُمِّي)) أَظُنُّهُ يَوْمَ أُحُدٍ.

[راجع: ٢٩٠٥]

तश्रीह : ये ह़ज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास़ (रज़ि.) हैं जिनके लिये आँह़ज़रत (ﷺ) ने लफ़्ज़े **फ़िदाक अबी व उम्मी** फ़र्माए, ये ह़ज़रत सअ़द की इंतिहाई ख़ुशक़िस्मती की दलील है। मदीना मुनव्वरह में बत़ौरे यादगार एक तीर ऐसा ही एक घराने में मह़फ़ूज़ रखा है जिसे मैंने ख़ुद देखा है। कहा जाता है कि यही वो तीर था जो ह़ज़रत सअ़द के हाथ मे था और जिस पर आँह़ज़रत (ﷺ) ने ह़ज़रत सअ़द से ये लफ़्ज़ फ़र्माए थे वल्लाहु आ़लमु बिस्सवाब। उस तीर के ख़ोल पर ये ह़दीष़े मज़्कूरा लिखी हुई है। (राज़)

बाब 104 : किसी का ये कहना अल्लाह मुझे आप पर क़ुर्बान करे और ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से कहा हमने आप पर अपने बापों और माओं को क़ुर्बान किया

١٠٤- باب قَوْلِ الرَّجُلِ : جَعَلَنِي اللهُ فِدَاءَكَ وَقَالَ أَبُو بَكْرٍ لِلنَّبِيِّ ﷺ فَدَيْنَاكَ بِآبَائِنَا وَأُمَّهَاتِنَا.

तश्रीह : जमा के स़ेग़े मे बाप के बाप या'नी दादा दादी नाना नानी वग़ैरह सब मुराद हैं। ये भी त़र्ज़े कलाम है जैसा कि ज़ाहिर है।

6185. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया,

٦١٨٥- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا

कहा हमसे बिश्र बिन मुफ़ज़्ज़ल ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन अबी इस्हाक़ ने बयान किया और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि वो और अबू तलहा (रज़ि.) नबी करीम (ﷺ) के साथ (मदीना मुनव्वरह के लिये) रवाना हुए। उम्मुल मोमिनीन हज़रत सफ़िया (रज़ि.) आँहज़रत (ﷺ) की सवारी पर आपके पीछे थीं, रास्ते में किसी जगह ऊँटनी का पैर फिसल गया और आँहज़रत (ﷺ) और उम्मुल मोमिनीन गिर गये। अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरा ख़्याल है अबू तलहा ने अपनी सवारी से फ़ौरन अपने को गिरा दिया और आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में पहुँच गये और अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी (ﷺ)! अल्लाह आप पर मुझे क़ुर्बान करे क्या आपको कोई चोट आई? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि नहीं, अल्बत्ता औरत को देखो। चुनाँचे अबू तलहा (रज़ि.) ने कपड़ा अपने चेहरे पर डाल लिया, फिर उम्मुल मोमिनीन की तरफ़ बढ़े और अपना कपड़ा उनके ऊपर डाल दिया। उसके बाद वो खड़ी हो गईं और आँहज़रत (ﷺ) और उम्मुल मोमिनीन के लिये अबू तलहा ने पालान मज़बूत बाँधा। अब आपने सवार होकर फिर सफ़र शुरू किया, जब मदीना मुनव्वरह के क़रीब पहुँचे (या यूँ कहा कि मदीना दिखाई देने लगा) तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि, हम लौटने वाले हैं तौबा करते हुए अपने रब की इबादत करते हुए और उसकी हम्द बयान करते हुए, आँहज़रत (ﷺ) इसे बराबर कहते रहे यहाँ तक मदीना में दाख़िल हो गये। (राजेअ : 371)

بِشْرُ بْنُ الْمُفَضَّلِ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّهُ أَقْبَلَ هُوَ وَأَبُو طَلْحَةَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ ومع النَّبِيِّ ﷺ صَفِيَّةُ مُرْدِفُهَا عَلَى رَاحِلَتِهِ، فَلَمَّا كَانُوا بِبَعْضِ الطَّرِيقِ عَثَرَتِ النَّاقَةُ، فَصُرِعَ النَّبِيُّ ﷺ وَالْمَرْأَةُ وَأَنَّ أَبَا طَلْحَةَ قَالَ: أَحْسِبُ اقْتَحَمَ عَنْ بَعِيرِهِ، فَأَتَى رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقَالَ: يَا نَبِيَّ اللهِ جَعَلَنِي اللهُ فِدَاءَكَ هَلْ أَصَابَكَ مِنْ شَيْءٍ؟ قَالَ: ((لاَ وَلَكِنْ عَلَيْكَ بِالْمَرْأَةِ)) فَأَلْقَى أَبُو طَلْحَةَ ثَوْبَهُ عَلَى وَجْهِهِ فَقَصَدَ قَصْدَهَا فَأَلْقَى ثَوْبَهُ عَلَيْهَا فَقَامَتِ الْمَرْأَةُ، فَشَدَّ لَهُمَا عَلَى رَاحِلَتِهِمَا فَرَكِبَا فَسَارُوا حَتَّى إِذَا كَانُوا بِظَهْرِ الْمَدِينَةِ أَوْ قَالَ: أَشْرَفُوا عَلَى الْمَدِينَةِ، قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((آيِبُونَ تَائِبُونَ عَابِدُونَ لِرَبِّنَا حَامِدُونَ)) فَلَمْ يَزَلْ يَقُولُهَا حَتَّى دَخَلَ الْمَدِينَةَ. [راجع: ٣٧١]

तश्रीह : अबू तलहा (रज़ि.) ने आपको इस हालत में देखकर अज़्राहे तअज़ीम लफ़्ज़ **जअलनियल्लाहु फिदाक** (अल्लाह मुझको आप पर क़ुर्बान करे) बोला। जिसको आपने नापसंद नहीं फ़र्माया। इसी से बाब का मतलब षाबित हुआ। मदीना मुनव्वरह ख़ैरियत से वापसी पर आपने **आइबूना ताइबूना अल्अख़** के अल्फ़ाज़ इस्ते'माल किये। अब भी सफ़र से वतन बख़ैरियत वापसी पर इन अल्फ़ाज़ का विर्द करना मस्नून है। ख़ास तौर पर हाजी लोग जब वतन पहुँचे तो ये दुआ पढ़ते हुए अपने शहर या बस्ती में दाख़िल हों।

बाब 105 : अल्लाह पाक को कौन से नाम ज़्यादा पसंद हैं और किसी शख़्स का किसी को यूँ कहना बेटा

١٠٥- باب أَحَبِّ الأَسْمَاءِ إِلَى اللهِ عَزَّ وَجَلَّ وَقَوْلُ الرَّجُلِ لِصَاحِبِهِ يَا بُنَيَّ

(या'नी प्यार से गो वो उसका बेटा न हो)

6186. हमसे सदक़ा बिन फ़ज़ल ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान बिन उयय्ना ने ख़बर दी, उनसे इब्नुल मुंकदिर ने बयान किया और उनसे हज़रत जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि हममें से एक साहब के यहाँ बच्चा पैदा हुआ तो

٦١٨٦- حَدَّثَنَا صَدَقَةُ بْنُ الْفَضْلِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ، حَدَّثَنَا ابْنُ الْمُنْكَدِرِ، عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: وُلِدَ لِرَجُلٍ

उन्होंने उसका नाम क़ासिम रखा। हमने उनसे कहा कि हम तुमको अबुल क़ासिम कहकर नहीं पुकारेंगे (क्योंकि अबुल क़ासिम आँहज़रत ﷺ की कुन्नियत थी) और न हम तुम्हारी इज़्ज़त के लिये ऐसा करेंगे। उन साहब ने इसकी ख़बर आँहज़रत (ﷺ) को दी, तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अपने बेटे का नाम अ़ब्दुर्रहमान रख ले। (राजेअ़ : 3114)

مِنَّا غُلاَمٌ فَسَمَّاهُ الْقَاسِمَ فَقُلْنَا: لاَ نَكْنِيكَ أَبَا الْقَاسِمِ، وَلاَ كَرَامَةَ فَأَخْبَرَ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ((سَمِّ ابْنَكَ عَبْدَ الرَّحْمَنِ)).

[راجع: ٣١١٤]

तश्रीह : ह़याते नबवी में किसी को अबुल क़ासिम से पुकारना बाइ़षे इश्तिबाह था क्योंकि अबुल क़ासिम ख़ुद आँह़ज़रत (ﷺ) ही थे। लिहाज़ा आपने हर किसी को कुन्नियत अबुल क़ासिम रखने से मना किया ताकि इश्तिबाह न हो। आपके बाद ये कुन्नियत रखना उ़लमा ने जाइज़ रखा है। अ़ब्दुल्लाह, अ़ब्दुर्रहमान अल्लाह के नज़दीक बड़े प्यारे नाम हैं क्योंकि इनमें अल्लाह की तरफ़ निस्बत है जो बन्दगी को ज़ाहिर करती है। बाब का मज़्मून स़रीह़न एक ह़दीष़ में आया है कि **अह़ब्बुल्अस्माइ इलल्लाहि अ़ब्दुल्लाह व अ़ब्दुर्रहमान।**

बाब 106 : नबी करीम (ﷺ) का फ़र्मान कि मेरे नाम पर नाम रखो, लेकिन मेरी कुन्नियत न रखो. ये अनस (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया है

١٠٦- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((سَمُّوا بِاسْمِي وَلاَ تَكْتَنُوا بِكُنْيَتِي)). قَالَهُ أَنَسٌ : عَنِ النَّبِيِّ ﷺ

6187. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे हुसैन ने बयान किया, उनसे सालिम ने और उनसे ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि हममें से एक शख़्स के यहाँ बच्चा पैदा हुआ तो उन्होंने उसका नाम क़ासिम रखा। स़ह़ाबा ने उनसे कहा कि जब तक हम आँह़ज़रत (ﷺ) से पूछ न लें। हम इस नाम पर तुम्हारी कुन्नियत नहीं होने देंगे। फिर आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मेरे नाम पर नाम रखो लेकिन मेरी कुन्नियत न इख़्तियार करो। (राजेअ़ : 3114)

٦١٨٧- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ، حَدَّثَنَا حُصَيْنٌ، عَنْ سَالِمٍ، عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: وُلِدَ لِرَجُلٍ مِنَّا غُلاَمٌ فَسَمَّاهُ الْقَاسِمَ فَقَالُوا: لاَ نَكْنِيهِ حَتَّى نَسْأَلَ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ((سَمُّوا بِاسْمِي، وَلاَ تَكْتَنُوا بِكُنْيَتِي)).

[راجع: ٣١١٤]

6188. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुख़्तियानी ने, उनसे मुह़म्मद बिन सीरीन ने और उन्होंने ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना कि अबुल क़ासिम (ﷺ) ने फ़र्माया मेरे नाम पर नाम रखो लेकिन मेरी कुन्नियत न रखो। (राजेअ़ : 110)

٦١٨٨- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنِ ابْنِ سِيرِينَ سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ أَبُو الْقَاسِمِ ﷺ: ((سَمُّوا بِاسْمِي وَلاَ تَكْتَنُوا بِكُنْيَتِي)). [راجع: ١١٠]

आपकी ह़याते त़य्यिबा में ये मुमानअ़त थी ताकि इश्तिबाह न हो।

6189. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, कहा कि मैंने मुह़म्मद

٦١٨٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ

الْمُنْكَدِرِ، قَالَ : سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا وُلِدَ لِرَجُلٍ مِنَّا غُلاَمٌ فَسَمَّاهُ الْقَاسِمَ فَقَالُوا: لاَ نَكْنِيكَ بِأَبِي الْقَاسِمِ وَلاَ نُنْعِمُكَ عَيناً فَأَتَى النَّبِيَّ ﷺ فَذَكَرَ ذَلِكَ لَهُ فَقَالَ : ((سَمِّ ابْنَكَ عَبْدَ الرَّحْمَنِ)). [راجع: ٣١١٤]

बिन मुंकदिर से सुना कि कहा कि मैंने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अंसारी (रज़ि.) से सुना, कि हममें से एक आदमी के यहाँ बच्चा हुआ तो उन्होंने उसका नाम क़ासिम रखा। सहाबा ने कहा कि हम तुम्हारी कुन्नियत अबुल क़ासिम नहीं रखेंगे और न तेरी आँख इस कुन्नियत से पुकारकर ठण्डी करेंगे। वो शख़्स नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आपसे इसका ज़िक्र किया। आपने फ़र्माया कि अपने लड़के का नाम अ़ब्दुर्रहमान रख लो। (राजेअ़ : 3114)

तश्रीह : अकषर उलमा ने कहा है कि ये मुमानअ़त आपकी हयात तक थी क्योंकि उस वक़्त अबुल क़ासिम कुन्नियत रखने से आपको तकलीफ़ होती थी। एक रिवायत में है कि एक दफ़ा एक शख़्स ने पुकारा या अबल क़ासिम। आप (ﷺ) उस पर मुतवज्जह हो गये तो उस शख़्स ने कहा कि मैंने आपको नहीं पुकारा था उस वक़्त आपने इश्तिबाह को रोकने के लिये ये हुक्म सादिर फ़र्माया।

١٠٧- باب اسْمِ الْحَزْنِ

बाब 107 : हज़्न नाम रखना

जो अ़रबी में दुश्वार गुज़ार और सख़्त ज़मीन को कहते हैं।

٦١٩٠- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنِ ابْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِيهِ أَنَّ أَبَاهُ جَاءَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: ((مَا اسْمُكَ؟)) قَالَ: حَزْنٌ قَالَ: ((أَنْتَ سَهْلٌ)) قَالَ : لاَ أُغَيِّرُ اسْمًا سَمَّانِيهِ أَبِي قَالَ ابْنُ الْمُسَيَّبِ : فَمَا زَالَتِ الْحُزُونَةُ فِينَا بَعْدُ. حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ وَ مَحْمُودٌ قَالاَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنِ ابْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ بِهَذَا.

[طرفه في ٦١٩٣].

6190. हमसे इस्हाक़ बिन नस्र ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें सईद बिन मुसय्यिब ने और उन्हें उनके वालिद मुसय्यिब (रज़ि.) ने कि उनके वालिद (हज़्न बिन अबी वहब) नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा कि तुम्हारा नाम क्या है? उन्होंने बताया कि हज़्न (बमा'नी सख़्ती) आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम सहल (बमा'नी नर्मी) हो, फिर उन्होंने कहा कि मेरा नाम मेरे वालिद रख गये हैं इसे मैं नहीं बदलूँगा। हज़रत इब्ने मुसय्यिब (रह.) बयान करते थे कि चुनाँचे हमारे ख़ानदान में बाद तक हमेशा सख़्ती और मुसीबत का दौर रहा।

(दीगर : 6193)

तश्रीह : ये सज़ा थी उस बात की कि रसूले करीम (ﷺ) का मश्वरा क़ुबूल नहीं किया और हज़्न बमा'नी सख़्ती क़सावत की जगह सहल बमा'नी नर्मी नाम पसंद नहीं किया और ये न जाना कि नाम का अषर मुसम्मा में ज़रूर होता है। मा'लूम हुआ कि ऐसा ग़लत नाम वालिदैन अगर रख दें तो वो नाम बाद म बदलकर अच्छा नाम रख देना चाहिये। अकषर अ़वाम अपने बच्चों का नाम ग़लत सलत रख देते हैं। हालाँकि सबसे बेहतर नाम वो है जिसमें अल्लाह पाक की तरफ़ अ़ब्दियत पाई जाए जैसे अ़ब्दुल्लाह, अ़ब्दुर्रहमान वग़ैरह। अंबिया किराम के नाम पर नाम रख देना भी जाइज़ दुरुस्त है। जैसे इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक़, ईसा, मूसा वग़ैरह वग़ैरह। कुछ लोग शिर्किया नाम रख देते हैं वो बहुत ही ग़लत होते हैं जैसे अ़ब्दे नबी,

अब्दुर्रसूल, गुलाम जीलानी वग़ैरह वग़ैरह। सहल हुज़्न की ज़िद है या'नी नर्म और हमवार ज़मीन। इससे ये भी निकला कि बड़ा आदमी अगर कोई मुफ़ीद मश्वरा दे तो उसे ले लेना चाहिये, ख़्वाह वो आबा व अज्दाद (बाप-दादा) की रस्मों के ख़िलाफ़ ही क्यूँ न पड़ता हो। माँ–बाप के त़ौर त़रीक़े वहीं तक क़ाबिले अ़मल होते हैं जो शरीअ़ते इस्लामी के मुवाफ़िक़ हों वरना माँ–बाप की अंधी तक़्लीद कोई चीज़ नहीं है। ह़ज़रत सईद बिन मुसय्यिब किबार ताबेईन में से हैं। ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी के दूसरे साल ये पैदा हुए और ख़िलाफ़ते वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक 94 हिजरी में इनका इंतिक़ाल हुआ। इनके वालिद ह़ज़रत मुसय्यिब (रज़ि.) उन लोगों में से हैं जिन्होंने शजरह के नीचे बेअ़त की थी। मुसय्यिब ही के बाप का नाम ह़ज़्न था। ह़ज़्न बिन ज़ुबैब बिन अ़मर अल क़ुरैशी अल मख़्ज़ूमी जो मुहाजिरीन में से थे और जाहिलियत में अशराफ़े क़ुरैश में इनका शुमार होता था।

बाब 108 : किसी बुरे नाम को बदलकर अच्छा नाम रखना

١٠٨ – باب تَحْوِيلِ الاسْمِ إِلَى اسْمٍ أَحْسَنَ مِنْهُ

6191. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, कहा हमसे अबू ग़स्सान ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबू ह़ाज़िम ने बयान किया और उनसे सहल (रज़ि.) ने बयान किया कि मुंज़िर बिन अबी उसैद (रज़ि.) की विलादत हुई तो उन्हें नबी करीम (ﷺ) के पास लाया गया। आँह़ज़रत (ﷺ) ने बच्चे को अपनी रान पर रख लिया। अबू उसैद (रज़ि.) बैठे हुए थे। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) किसी चीज़ में जो सामने थी मसरूफ़ हो गये (और बच्चे की त़रफ़ तवज्जह हट गई) अबू उसैद (रज़ि.) ने बच्चे के बारे में हुक्म दिया और आँह़ज़रत (ﷺ) की रान से उसे उठा लिया गया। फिर जब आँह़ज़रत (ﷺ) मुतवज्जह हुए तो फ़र्माया, बच्चा कहाँ है? अबू उसैद (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह! हमने उसे घर भेज दिया। आँह़ज़रत (ﷺ) ने पूछा, उसका नाम क्या है? अ़र्ज़ किया कि फ़लाँ। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, बल्कि उसका नाम मुंज़िर है। चुनाँचे उसी दिन आँहुज़ूर (ﷺ) ने उनका यही नाम मुंज़िर रखा।

मुंज़िर गुनाहगारों को अ़ज़ाबे इलाही से डराने वाला।

٦١٩١ – حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ، حَدَّثَنَا أَبُو غَسَّانَ قَالَ : حَدَّثَنِي أَبُو حَازِمٍ، عَنْ سَهْلٍ قَالَ : أُتِيَ بِالْمُنْذِرِ بْنِ أَبِي أُسَيْدٍ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ حِينَ وُلِدَ فَوَضَعَهُ عَلَى فَخِذِهِ، وَأَبُو أُسَيْدٍ جَالِسٌ، فَلَهَا النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِشَيْءٍ بَيْنَ يَدَيْهِ، فَأَمَرَ أَبُو أُسَيْدٍ بِابْنِهِ فَاحْتُمِلَ مِنْ فَخِذِ النَّبِيِّ ﷺ فَاسْتَفَاقَ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: ((أَيْنَ الصَّبِيُّ؟)) فَقَالَ أَبُو أُسَيْدٍ: قَلَبْنَاهُ يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ: ((مَا اسْمُهُ؟)) قَالَ: فُلاَنٌ. قَالَ: ((وَلَكِنْ اسْمُهُ الْمُنْذِرُ)) فَسَمَّاهُ يَوْمَئِذٍ الْمُنْذِرَ.

6192. हमसे स़दक़ा बिन फ़ज़्ल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको मुहम्मद बिन जा'फ़र ने ख़बर दी, उन्हें शुअ़बा ने, उन्हें अ़ता बिन मैमूना से, उन्हें अबू नाफ़ेअ़ ने और उन्हें ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि उम्मुल मोमिनीन ज़ैनब (रज़ि.) का नाम बर्रह था, कहा जाने लगा कि वो अपनी पाकी ज़ाहिर करती हैं। चुनाँचे आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनका नाम ज़ैनब रखा।

٦١٩٢ – حَدَّثَنَا صَدَقَةُ بْنُ الْفَضْلِ، أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ أَبِي مَيْمُونَةَ، عَنْ أَبِي رَافِعٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ زَيْنَبَ كَانَ اسْمُهَا بَرَّةَ فَقِيلَ تُزَكِّي نَفْسَهَا فَسَمَّاهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ: زَيْنَبَ.

तश्रीह : कुछ लोगों ने कहा कि ये ज़ैनब बिन्ते जह़श उम्मुल मोमिनीन का नाम रखा गया था। ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने अदबुल मुफ़रद में निकाला कि जुवैरिया का भी पहले नाम बर्रह रखा गया था तब आपने बदलकर

जुवैरिया रख दिया। लफ़्ज़ बर्रह बहुत नेकोकार के मा'नी में है। ये आप (ﷺ) को पसंद नहीं आया क्योंकि इसमें ख़ुद पसंदी की झलक आती थी। लफ़्ज़े ज़ैनब के मा'नी मोटे जिस्म वाली औरत। हज़रत ज़ैनब इस्म बा मुसम्मा थीं रज़ियल्लाहु अन्हा।

6193. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्हें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, कहा मुझको अ़ब्दुल ह़मीद बिन जुबैर बिन शैबा ने ख़बर दी, कहा कि मैं सईद बिन मुसय्यिब के पास बैठा हुआ था तो उन्होंने मुझसे बयान किया कि उनके दादा ह़ज़्न नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आँहज़रत (ﷺ) ने दरयाफ़्त फ़र्माया कि तुम्हारा नाम क्या है? उन्होंने कहा कि मेरा नाम ह़ज़्न है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम तो सहल हो। उन्होंने कहा कि मैं तो अपने बाप का रखा हुआ नाम नहीं बदलूँगा। सईद बिन मुसय्यिब ने कहा उसके बाद से अब तक हमारे ख़ानदान में सख़्ती और मुसीबत ही रही। ह़ज़ूनत से सऊबत मुराद है। (राजेअ : 6190)

٦١٩٣- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، أَنَّ ابْنَ جُرَيْجٍ أَخْبَرَهُمْ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ الْحَمِيدِ بْنِ جُبَيْرِ بْنِ شَيْبَةَ، قَالَ: جَلَسْتُ إِلَى سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، فَحَدَّثَنِي أَنَّ جَدَّهُ حَزْنًا قَدِمَ عَلَى النَّبِيِّ فَقَالَ: ((مَا اسْمُكَ؟)) قَالَ: اسْمِي حَزْنٌ قَالَ: ((بَلْ أَنْتَ سَهْلٌ)) قَالَ: مَا أَنَا بِمُغَيِّرٍ اسْمًا سَمَّانِيهِ أَبِي قَالَ ابْنُ الْمُسَيَّبِ : فَمَا زَالَتْ فِينَا الْحُزُونَةُ بَعْدُ.

[راجع: ٦١٩٠]

तश्रीह : ये सज़ा थी उसकी जो उनके दादा ने आँहज़रत (ﷺ) का रखा हुआ नाम क़ुबूल नहीं किया जिसमें सरासर ख़ैर ख़्वाही और बरकत थी मगर उनको अपने बाप दादा का रखा हुआ नाम ह़ज़्न ही पसंद रहा और इसी वजह से बाद की नस्लें भी मुसीबत ही में मुब्तला रहीं। इंसान की ज़िंदगी पर नाम का बड़ा अ़ष्र पड़ता है इसलिये बच्चे का नाम उम्दह से उम्दह रखना चाहिये।

बाब 109 : जिसने अम्बिया के नाम पर नाम रखे

١٠٩- باب مَنْ سَمَّى بِأَسْمَاءِ الأَنْبِيَاءِ

हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने अपने साहबज़ादे हज़रत इब्राहीम को बोसा दिया।

وَقَالَ أَنَسٌ قَبَّلَ النَّبِيُّ ﷺ إِبْرَاهِيمَ، يَعْنِي ابْنَهُ.

तो आँहज़रत (ﷺ) ने अपने साहबज़ादे का नाम इब्राहीम रखा। आपका ये बच्चा हज़रत मारिया क़िब्तिया के बत़न से पैदा हुआ था। माह ज़िलहिज्ज 10 हिजरी में 18 माह की उ़म्र में इनका इंतिक़ाल हो गया और उनको बक़ीअ़ ग़रक़द में दफ़न किया गया। **इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।**

6194. हमसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन नुमैर ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन बिश्र ने, उनसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद बजली ने, कि मैंने इब्ने अबी औफ़ा (रज़ि.) से पूछा। तुमने नबी करीम (ﷺ) के साहबज़ादे इब्राहीम को देखा था? बयान किया कि उनकी वफ़ात बचपन ही में हो गई थी और अगर आँहज़रत (ﷺ) के बाद किसी नबी की आमद होती तो आँहज़रत (ﷺ) के साहबज़ादे ज़िंदा रहते लेकिन आँहज़रत (ﷺ) के बाद कोई नबी नहीं आएगा।

٦١٩٤- حَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بِشْرٍ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قُلْتُ لاِبْنِ أَبِي أَوْفَى: رَأَيْتَ إِبْرَاهِيمَ ابْنَ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَاتَ صَغِيرًا وَلَوْ قُضِيَ أَنْ يَكُونَ بَعْدَ مُحَمَّدٍ ﷺ نَبِيٌّ عَاشَ ابْنُهُ وَلَكِنْ لاَ نَبِيَّ بَعْدَهُ.

तश्रीह : न ज़िल्ली न बरोज़ी जैसा कि आजकल के दजाजला कहते हैं हदाहुमुल्लाह। अब क़यामत तक सिर्फ़ आप ही की नुबुव्वत रहेगी। कोई अगर नुबुव्वत का नया मुद्दई होगा तो वो दज्जाल है, झूठा है, इस्लाम से ख़ारिज है। लौ

क़द्दरल्लाहु अंय्यकून बअदहू नबिय्युन लअाश वलाकिन्नहू ख़ातमुन्नबिय्यिन।

6195. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमको शुअबा ने ख़बर दी, उन्हें अदी बिन ष़ाबित ने कहा कि मैंने ह़ज़रत बरा (रज़ि.) से सुना। बयान किया कि जब आप (ﷺ) के फ़रज़न्द इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) का इंतिक़ाल हुआ तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया उसके लिये जन्नत में एक दूध पिलाने वाली दाया मुक़र्रर हो गई है। (राजेअ : 1382)

٦١٩٥- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَدِيِّ بْنِ ثَابِتٍ قَالَ: سَمِعْتُ الْبَرَاءَ قَالَ: لَمَّا مَاتَ إِبْرَاهِيمُ عَلَيْهِ السَّلاَمُ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّ لَهُ مُرْضِعًا فِي الْجَنَّةِ)). [راجع: ١٣٨٢]

6196. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे हुसैन बिन अब्दुर्रहमान ने, उनसे सालिम बिन अबिल जअद ने और उनसे जरीर बिन अब्दुल्लाह अंसारी ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, मेरे नाम पर नाम रखो, लेकिन मेरी कुन्नियत न इख़्तियार करो क्योंकि मैं क़ासिम (तक़्सीम करने वाला) हूँ और तुम्हारे दरम्यान (उलूमे दीन को) तक़्सीम करता हूँ। और इस रिवायत को अनस (रज़ि.) ने भी नबी करीम (ﷺ) से नक़ल किया। (राजेअ : 3114)

٦١٩٦- حَدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ حُصَيْنِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ سَالِمِ بْنِ أَبِي الْجَعْدِ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ الأَنْصَارِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((سَمُّوا بِاسْمِي، وَلاَ تَكْتَنُوا بِكُنْيَتِي، فَإِنَّمَا أَنَا قَاسِمٌ أَقْسِمُ بَيْنَكُمْ)). وَرَوَاهُ أَنَسٌ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. [راجع: ٣١١٤]

6197. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू हुसैन ने बयान किया, उनसे अबू सालेह ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया तुम मेरे नाम पर नाम रखो लेकिन तुम मेरी कुन्नियत न इख़्तियार करो और जिसने मुझे ख़्वाब में देखा तो उसने मुझे ही देखा क्योंकि शैतान मेरी सूरत में नहीं आ सकता और जिसने क़स्दन मेरी तरफ़ कोई झूठ बात मन्सूब की उसने अपना ठिकाना जहन्नम में बना लिया। (राजेअ: 110)

٦١٩٧- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو حُصَيْنٍ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((سَمُّوا بِاسْمِي، وَلاَ تَكْتَنُوا بِكُنْيَتِي، وَمَنْ رَآنِي فِي الْمَنَامِ فَقَدْ رَآنِي، فَإِنَّ الشَّيْطَانَ لاَ يَتَمَثَّلُ صُورَتِي، وَمَنْ كَذَبَ عَلَيَّ مُتَعَمِّدًا، فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ)). [راجع: ١١٠]

तश्रीह : ये आँह़ज़रत (ﷺ) की ख़ुसूसियात में से है कि शैतान आपकी सूरत में नज़र नहीं आ सकता ताकि वो आपका नाम लेकर ख़्वाब में किसी से कोई झूठ न बोल सके। आँह़ज़रत (ﷺ) को ख़्वाब में देखने वाला यक़ीनन जान लेता है कि मैंने ख़ुद आँह़ज़रत (ﷺ) ही को देखा है और ये अम्र देखने वाले पर किसी न किसी तरह से ज़ाहिर हो जाता है। दोज़ख़ की वईद उसके लिये है जो ख़्वाह मख़्वाह झूठ मूट कहे। मैंने आपको ख़्वाब में देखा है या कोई झूठी बात गढ़कर आपके ज़िम्मे लगाए। पस झूठी अह़ादीष़ गढ़ने वाले ज़िंदा दोज़ख़ी हैं। **अआज़नल्लाहु मिन्हुम आमीन**

6198. हमसे मुहम्मद बिन अला ने बयान किया, कहा हमसे

٦١٩٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ، حَدَّثَنَا

अबू उसामा ने बयान किया, उनसे बुरैद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबी बुरैदा ने और उनसे अबू मूसा (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरे यहाँ एक बच्चा पैदा हुआ तो मैं उसे लेकर नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उसका नाम इब्राहीम रखा और एक खजूर अपने दहाने मुबारक में नर्म करके उसके मुँह में डाली और उसके लिये बरकत की दुआ की फिर उसे मुझे दे दिया। ये अबू मूसा की बड़ी औलाद थी। (राजेअ: 5467)

أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ بُرَيْدِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى قَالَ وُلِدَ لِي غُلاَمٌ فَأَتَيْتُ بِهِ النَّبِيَّ ﷺ فَسَمَّاهُ إِبْرَاهِيمَ فَحَنَّكَهُ بِتَمْرَةٍ، وَدَعَا لَهُ بِالْبَرَكَةِ وَدَفَعَهُ إِلَيَّ. وَكَانَ أَكْبَرَ وُلْدِ أَبِي مُوسَى.
[راجع: ٥٤٦٧]

6199. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे ज़ाइदा ने, कहा हमसे ज़ियाद बिन इलाक़ा ने, कहा हमने मुग़ीरह बिन शुअ़बा (रज़ि.) सेसुना, बयान किया कि जिस दिन ह़ज़रत इब्राहीम (रज़ि.) की वफ़ात हुई उस दिन सूरज ग्रहण हुआ था। उसको अबूबक्र ने भी नबी करमी (ﷺ) से रिवायत किया है। (राजेअ: 1043)

٦١٩٩- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا زَائِدَةُ، حَدَّثَنَا زِيَادُ بْنُ عِلاَقَةَ سَمِعْتُ الْمُغِيرَةَ بْنَ شُعْبَةَ قَالَ: انْكَسَفَتِ الشَّمْسُ يَوْمَ مَاتَ إِبْرَاهِيمُ. رَوَاهُ أَبُو بَكْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.
[راجع: ١٠٤٣]

तश्रीह़ : लोगों ने गुमान किया कि ये ग्रहण ह़ज़रत इब्राहीम की वफ़ात पर हुआ है मगर आँह़ज़रत (ﷺ) ने स़ाफ़ फ़र्मा दिया कि चाँद और सूरज किसी की मौत या ह़यात की वजह से ग्रहण नहीं होते बल्कि ये क़ुदरते इलाही के निशानात हैं वो जब चाहता है अपने बन्दों को ये निशानात दिखलाता है। ऐसे मौक़ों पर अल्लाह को याद करो, नमाज़ पढ़ो, स़दक़ा करो वग़ैरह वग़ैरह। जदीद इ़ल्मी तह़क़ीक़ात ने इस सिलसिले में जो कुछ मा'लूमात की हैं वो भी सब ह़दीष़ के मुत़ाबिक़ क़ुदरत की निशानियाँ ही हैं कोई इख़्तिलाफ़ नहीं है। पारा नम्बर 4 में ये ह़दीष़ मुफ़स्सल है जिसमें तफ़्सीलाते बाला सारी मज़्कूर हैं।

बाब 110 : बच्चे का नाम वलीद रखना

١١٠- باب تَسْمِيَةِ الْوَلِيدِ

तश्रीह़ : ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) की ग़र्ज़ इस बाब से ये है कि जिस ह़दीष़ में वलीद नाम रखने की नही आई है वो सख़्त ज़ईफ़ क़ाबिले हुज्जत नहीं है। नीचे लिखी ह़दीष़ में एक मुसलमान का नाम वलीद मज़्कूर है। आपने ख़ुद इसी नाम से उसका ज़िक्र किया है। इसी से जवाज़ ष़ाबित हुआ।

6200. हमसे अबू नुऐ़म फ़ज़्ल बिन दुकैन ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, उनसे सईद ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि जब नबी करीम (ﷺ) ने सरे मुबारक रुकूअ़ से उठाया तो ये दुआ़ की। ऐ अल्लाह! वलीद बिन वलीद, सलमा बिन हिशाम, अ़याश बिन अबी रबीआ़ और मक्का में दीगर मौजूद कमज़ोर मुसलमानों को नजात दे दे। ऐ अल्लाह! क़बीला मुज़र के कुफ़्फ़ारों को सख़्त पकड़। ऐ अल्लाह! उन पर यूसुफ़ (अ़लैहिस्सलाम) के ज़माने जैसा क़ह़त नाज़िल फ़र्मा। (राजेअ: 797)

٦٢٠٠- أَخْبَرَنَا أَبُو نُعَيْمٍ الْفَضْلُ بْنُ دُكَيْنٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَعِيدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: لَمَّا رَفَعَ النَّبِيُّ ﷺ رَأْسَهُ مِنَ الرَّكْعَةِ قَالَ: ((اللَّهُمَّ أَنْجِ الْوَلِيدَ بْنَ الْوَلِيدِ، وَ سَلَمَةَ بْنَ هِشَامٍ، وَعَيَّاشَ بْنَ أَبِي رَبِيعَةَ وَالْمُسْتَضْعَفِينَ بِمَكَّةَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ، اللَّهُمَّ اشْدُدْ وَطْأَتَكَ عَلَى مُضَرَ، اللَّهُمَّ اجْعَلْهَا عَلَيْهِمْ سِنِينَ

كَسِنِي يُوسُفَ)). [راجع: ٧٩٧]

तश्रीह : ये तीनों हज़राते मज़्कूरीन मुग़ीरह मख़्ज़ूमी के ख़ानदान से हैं जो मुसलमान हो गये थे। कुफ़्फ़ार ने उनको हिजरत से रोककर क़ैद कर दिया था। वलीद बिन वलीद हज़रत ख़ालिद बिन वलीद के भाई हैं। सलमा बिन हिशाम अबू जहल के भाई हैं जो क़दीमुल इस्लाम हैं और अय्याश बिन अबी रबीआ माँ की तरफ़ से अबू जहल के भाई हैं। मुज़र क़बीला क़ुरैश से एक क़बीला था जिसके लिये आँहज़रत (ﷺ) ने बद् दुआ फ़र्माई थी। इस हदीष़ से वलीद नाम रखना जाइज़ ष़ाबित हुआ। बाब से यही मुताबक़त है।

बाब 111 : जिसने अपने किसी साथी को उसके नाम में से कोई हर्फ़ कम करके पुकारा

١١١- باب مَنْ دَعَا صَاحِبَهُ فَنَقَصَ مِنَ اسْمِهِ حَرْفًا

और अबू हाज़िम ने अबू हुरैरह (रज़ि.) से बयान किया कि उनसे नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, या अबाहिर! हालाँकि उनका नाम अबू हुरैरह (रज़ि.) था।

وَقَالَ أَبُو حَازِمٍ : عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ لِي النَّبِيُّ ﷺ: ((يَا أَبَا هِرٍّ)).

6201. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया, और उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतहहरा हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, या आइश! ये जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) हैं और तुम्हें सलाम कहते हैं। मैंने कहा और उन पर भी सलाम और अल्लाह की रहमत हो। बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) वो चीज़ें देखते थे जो हम नहीं देखते थे। (राजेअ : 3217)

٦٢٠١- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((يَا عَائِشُ هَذَا جِبْرِيلُ يُقْرِئُكِ السَّلاَمَ)) قُلْتُ: وَعَلَيْهِ السَّلاَمُ وَرَحْمَةُ اللهِ، قَالَتْ وَهُوَ يَرَى مَا لاَ نَرَى. [راجع: ٣٢١٧]

रिवायत में हज़रत आइशा का नाम तख़्फ़ीफ़ के साथ सिर्फ़ आइश मज़्कूर हुआ है। यही बाब से मुताबक़त की वजह है।

6202. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब ने बयान किया, कहा हमसे अय्यूब ने बयान किया, उनसे अबू क़िलाबा ने और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि हज़रत उम्मे सुलैम (रज़ि.) मुसाफ़िरों के सामान के साथ थीं और नबी करीम (ﷺ) के ग़ुलाम अंजशा औरतों के ऊँट को हाँक रहे थे। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अंजश! ज़रा इस तरह आहिस्तगी से ले चल जैसे शीशों को लेकर जाता है। (राजेअ : 6149)

٦٢٠٢- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ، عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ، عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَتْ أُمُّ سُلَيْمٍ فِي الثَّقَلِ وَأَنْجَشَةُ غُلاَمُ النَّبِيِّ ﷺ يَسُوقُ بِهِنَّ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((يَا أَنْجَشُ، رُوَيْدَكَ سَوْقَكَ بِالْقَوَارِيرِ)). [راجع: ٦١٤٩]

तश्रीह : अंजशा आँहज़रत (ﷺ) के ग़ुलाम काले रंग वाले थे। गाने में आवाज़ बहुत ग़ज़ब की हसीन थी जिसे सुनकर ऊँट भी मस्त हो जाते थे। आपने मस्तूरात को शीशे से तश्बीह दी। नज़ाकत की बिना पर और अंजशा को

सवारी तेज़ चलाने से रोका कि कहीं तेज़ी में कोई औरत सवारी से गिर न जाए। अंजशा को सिर्फ़ अंजश से आपने ज़िक्र फ़र्माया बाब से यही वजहे मुताबक़त है।

बाब 112 : बच्चे की कुन्नियत रखना इससे पहले कि वो स़ाह़िबे औलाद हो

١١٢- باب الْكُنْيَةِ لِلصَّبِيِّ وَقَبْلَ أَنْ يُولَدَ لِلرَّجُلِ

6203. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वारिष़ ने बयान किया, उनसे अबुत तियाह़ ने और उनसे अनस ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) हुस्ने अख़लाक़ में सब लोगों से बढ़कर थे, मेरा एक भाई अबू उ़मैर नामी था। बयान किया कि मेरा ख़याल है कि बच्चे का दूध छूट चुका था। आँह़ज़रत (ﷺ) जब तशरीफ़ लाते तो उससे मज़ाह़न फ़र्माते या अबा उ़मैर मा फ़अ़लन नुग़ैर अकष़र ऐसा होता कि नमाज़ का वक़्त हो जाता और आँह़ज़रत (ﷺ) हमारे घर में होते। आप उस बिस्तर को बिछाने का हुक्म देते जिस पर आप बैठे हुए होते, चुनाँचे उसे झाड़कर उस पर पानी छिड़क दिया जाता। फिर आप खड़े होते और हम आपके पीछे खड़े होते और आप हमें नमाज़ पढ़ाते। (राजेअ़ : 6129)

٦٢٠٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، عَنْ أَبِي التَّيَّاحِ، عَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ أَحْسَنَ النَّاسِ خُلُقًا، وَكَانَ لِي أَخٌ يُقَالُ لَهُ: أَبُو عُمَيْرٍ قَالَ أَحْسِبُهُ، فَطِيمٌ، وَكَانَ إِذَا جَاءَ قَالَ: ((يَا أَبَا عُمَيْرٍ مَا فَعَلَ النُّغَيْرُ؟)) نُغَرٌ كَانَ يَلْعَبُ بِهِ فَرُبَّمَا حَضَرَ الصَّلاَةَ وَهُوَ فِي بَيْتِنَا فَيَأْمُرُ بِالْبِسَاطِ الَّذِي تَحْتَهُ فَيُكْنَسُ وَيُنْضَحُ، ثُمَّ يَقُومُ وَنَقُومُ خَلْفَهُ فَيُصَلِّي بِنَا.

[راجع: ٦١٢٩]

तशरीह़ : आपने उस बच्चे की कुन्नियत अबू उ़मैर, उ़मेर का बाप रख दी ह़ालाँकि वो ख़ुद बच्चा था और उ़मैर उसका कोई बच्चा न था इस त़रह़ पहले ही से बच्चे की कुन्नियत रख देना अ़रबों का आ़म दस्तूर था। नुग़ैर नामी चिड़िया से ये बच्चा खेला करता था इसीलिये आपने मज़ाह़न ये फ़र्माया। (ﷺ) **अल्फ़ अल्फ़ मर्रतिन बिअ़ददि कुल्लि ज़र्रतिन** आमीन या रब्बल्आलमीन (राज़)

बाब 113 : कुन्नियत होते हुए दूसरी अबू तुराब कुन्नियत रखना जाइज़ है

١١٣- باب التَّكَنِّي بِأَبِي تُرَابٍ وَإِنْ كَانَتْ لَهُ كُنْيَةٌ أُخْرَى

6204. हमसे ख़ालिद बिन मुख़्लिद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुलैमान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे अबू ह़ाज़िम ने बयान किया, उनसे सहल बिन सअ़द ने कि ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) को उनकी कुन्नियत अबू तुराब सबसे ज़्यादा प्यारी थी और इस कुन्नियत से उन्हें पुकारा जाता तो बहुत ख़ुश होते थे क्योंकि ये कुन्नियत अबू तुराब ख़ुद रसूले करीम (ﷺ) ने रखी थी। एक दिन ह़ज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) से ख़फ़ा होकर वो बाहर चले आए और मस्जिद की दीवार के पास लेट गये। आँह़ज़रत (ﷺ) उनके पीछे आए और फ़र्माया कि ये तो दीवार के पास लेटे हुए हैं। जब आँह़ज़रत (ﷺ)

٦٢٠٤- حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ، قَالَ حَدَّثَنِي أَبُو حَازِمٍ، عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ : إِنْ كَانَتْ أَحَبَّ أَسْمَاءِ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ إِلَيْهِ لأَبُو تُرَابٍ، وَإِنْ كَانَ لَيَفْرَحُ أَنْ يُدْعَى بِهَا، وَمَا سَمَّاهُ أَبُو تُرَابٍ إِلاَّ النَّبِيُّ ﷺ غَاضَبَ يَوْمًا فَاطِمَةَ فَخَرَجَ فَاضْطَجَعَ إِلَى الْجِدَارِ فِي الْمَسْجِدِ فَجَاءَهُ النَّبِيُّ ﷺ يَتْبَعُهُ فَقَالَ: هُوَ

ذَا مُضْطَجِعٌ فِي الْجِدَارِ فَجَاءَهُ النَّبِيُّ ﷺ وَامْتَلأَ ظَهْرُهُ تُرَابًا فَجَعَلَ النَّبِيُّ ﷺ يَمْسَحُ التُّرَابَ عَنْ ظَهْرِهِ وَيَقُولُ: ((اجْلِسْ يَا أَبَا تُرَابٍ)). [راجع: ٤٤١]

तशरीफ़ लाए तो ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) की पीठ मिट्टी से भर चुकी थी। आँह़ज़रत (ﷺ) उनकी पीठ से मिट्टी झाड़ते हुए (प्यार से) फ़र्माने लगे, अबू तुराब उठ जाओ। (राजेअ़ : 441)

तशरीह : ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) की पहली कुन्नियत अबुल ह़सन मशहूर थी मगर बाद में जब ख़ुद आँह़ज़रत (ﷺ) ने अज़्राह मुह़ब्बत आपको अबू तुराब कुन्नियत से पुकारा तो ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) उसी से ज़्यादा ख़ुश होने लगे। इस त़रह़ दो दो कुन्नियत रखना भी जाइज़ है। आँह़ज़रत (ﷺ) को ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) से जो मुह़ब्बत थी उसी का नतीजा था कि आप ख़ुद बनफ़्सिही उनको राज़ी करके घर लाने के लिये तशरीफ़ ले गये जबकि ह़ज़रत फ़ात़िमा (रज़ि.) से नाराज़ होकर वो बाहर चले गये थे। ऐसी बाहमी ख़फ़्गी मियाँ-बीवी में बसा औक़ात हो जाती है जो मअ़यूब नहीं है। चूँकि ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) की कमर में मिट्टी लग गई थी। इसलिये आपने प्यार से उनको अबू तुराब (मिट्टी का बाबा) कुन्नियत से याद फ़र्माया। (ﷺ)

ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) की मुद्दते ख़िलाफ़त चार साल और नौ माह है। 17 रमज़ान 40 हिजरी बरोज़ हफ़्ता एक ख़ारजी इब्ने मुलज्जम नामी के ह़मले से आपने जामे शहादत नोश फ़र्माया। **इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजेऊन, रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अरज़ाहु** ह़ज़रत सय्यदा फ़ात़िमा (रज़ि.) ने 3 रमज़ान 11 हिजरी में आँह़ज़रत (ﷺ) से छः माह बाद इंतिक़ाल फ़र्माया। **इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजेऊन अल्अख़ ग़फ़रल्लाहु लहा** (आमीन)

١١٤- باب أَبْغَضِ الأَسْمَاءِ إِلَى اللهِ

बाब 114 : अल्लाह को जो नाम बहुत ही ज़्यादा नापसंद हैं उनका बयान

٦٢٠٥- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ ((أَخْنَى الأَسْمَاءِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عِنْدَ اللهِ رَجُلٌ تَسَمَّى مَلِكَ الأَمْلاَكِ)). [طرفه في : ٦٢٠٦].

6105. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, कहा हमसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अअ़रज ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया क़यामत के दिन अल्लाह के नज़दीक सबसे बदतरीन नाम उसका होगा जो अपना नाम मलिकुल अम्लाक (शहंशाह) रखे। (दीगर : 6206)

तशरीह : लफ़्ज़े अख़्ना के मा'नी बहुत ही बदतरीन, बहुत ही गंदा नाम ये है कि लोग किसी का नाम बादशाहों का बादशाह रखें। ऐसे नाम वाले क़यामत के दिन बदतरीन लोग होंगे।

٦٢٠٦- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رِوَايَةً قَالَ: أَخْنَعُ اسْمٍ عِنْدَ اللهِ، وَقَالَ سُفْيَانُ، غَيْرَ مَرَّةٍ أَخْنَعُ الأَسْمَاءِ عِنْدَ اللهِ رَجُلٌ تَسَمَّى بِمَلِكِ الأَمْلاَكِ. قَالَ سُفْيَانُ : يَقُولُ غَيْرُهُ تَفْسِيرُهُ شَاهَانْ شَاهْ. [راجع: ٦٢٠٥]

6206. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़यैना ने बयान किया, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अअ़रज ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने वो नबी करीम (ﷺ) से रिवायत करते हैं कि अल्लाह के नज़दीक सबसे बदतरीन नाम। और कभी सुफ़यान ने एक से ज़्यादा मर्तबा ये रिवायत इस त़रह़ बयान की कि अल्लाह के नज़दीक सबसे बदतरीन नामों (जमा के स़ेग़े के साथ) में उसका नाम होगा जो मलिकुल अम्लाक अपना नाम रखेगा। सुफ़यान ने बयान किया कि अबुज़्ज़िनाद के ग़ैर ने कहा कि

इसका मफ़्हूम है शाहाने शाह। (राजेअ : 6205)

तश्रीह : फ़िल हक़ीक़त शहंशाह परवरदिगार है। बन्दे शहंशाह नहीं हो सकते जो लोग अपने को शहंशाह कहलाते हैं अल्लाह के नज़दीक वो निहायत ही हक़ीर और गंदे बन्दे हैं, इसीलिये आज के जुम्हूरी दौर में अब कोई शहंशाह नहीं रहा अल्लाह ने सबको नाबूद कर दिया। आज सब एक सत्ह पर हैं मगर आजकल उनकी जगह मिम्बराने पार्लियामेंट व असेम्बली ने ले रखी है। इल्ला माशाअल्लाह।

बाब 115 : मुश्रिक की कुन्नियत का बयान

١١٥- باب كُنْيَةِ الْمُشْرِكِ

और मिस्वर बिन मख़्रमा ने कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया, हाँ ये हो सकता है कि अबू तालिब का बेटा मेरी बेटी को तलाक़ दे दे।

وَقَالَ مِسْوَرٌ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ ((إِلاَّ أَنْ يُرِيدَ ابْنُ أَبِي طَالِبٍ)).

हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने इस हदीष़ से ये ष़ाबित किया कि मुश्रिक शख़्स को उसकी कुन्नियत से याद कर सकते हैं। क्योंकि आँहज़रत (ﷺ) ने अबू तालिब का बेटा कहा। अबू तालिब कुन्नियत थी और वो मुश्रिक की हालत में मरे थे। नीचे की रिवायत में बाब का तर्जुमा इससे निकलता है कि रसूले करीम (ﷺ) ने अ़ब्दुल्लाह बिन उबई मुनाफ़िक़ को उसकी कुन्नियत अबुल हुबाब से ज़िक्र किया।

6207. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने (दूसरी सनद) और हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे मेरे भाई अ़ब्दुल हमीद ने बयान किया, उनसे सुलैमान ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन अबी अ़तीक़ ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी शिहाब ने बयान किया, उनसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने और उन्हें उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) एक गधे पर सवार हुए जिस पर फ़िदक़ का बना हुआ एक कपड़ा बिछा हुआ था, उसामा आपके पीछे सवार थे। आँहज़रत (ﷺ) बनी हारिष़ बिन ख़ज़रज में सअ़द बिन उ़बादा (रज़ि.) की एयादत के लिये तशरीफ़ ले जा रहे थे, ये वाक़िया ग़ज़्वा-ए-बद्र से पहले का है ये दोनों रवाना हुए और रास्ते में एक मज्लिस से गुज़रे जिसमें अ़ब्दुल्लाह बिन उबई इब्ने सलूल भी था। अ़ब्दुल्लाह ने अभी तक अपने इस्लाम का ऐलान नहीं किया था। उस मज्लिस में कुछ मुसलमान भी थे। बुतों की परश्तिश करने वाले कुछ मुश्रिकीन भी थे और कुछ यहूदी भी थे। मुसलमान शुरका में अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा भी थे। जब मज्लिस पर (आँहुज़ूर (ﷺ) की) सवारी का गुबार उड़कर पड़ा तो अ़ब्दुल्लाह बिन उबई ने अपनी चादर नाक पर रख ली और कहने लगा कि हम पर गुबार न उड़ाओ। उसके बाद हुज़ूर (ﷺ) ने (क़रीब पहुँचने के बाद) उन्हें सलाम किया और खड़े

٦٢٠٧- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، قَالَ حَدَّثَنِي أَخِي، عَنْ سُلَيْمَانَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِي عَتِيقٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ أَنَّ أُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ رَكِبَ عَلَى حِمَارٍ عَلَيْهِ قَطِيفَةٌ فَدَكِيَّةٌ، وَأُسَامَةُ وَرَاءَهُ يَعُودُ سَعْدَ بْنَ عُبَادَةَ فِي بَنِي حَارِثِ بْنِ الْخَزْرَجِ قَبْلَ وَقْعَةِ بَدْرٍ، فَسَارَا حَتَّى مَرَّا بِمَجْلِسٍ فِيهِ عَبْدُ اللهِ بْنُ أُبَيٍّ ابْنُ سَلُولَ، وَذَلِكَ قَبْلَ أَنْ يُسْلِمَ عَبْدُ اللهِ بْنُ أُبَيٍّ فَإِذَا فِي الْمَجْلِسِ أَخْلاَطٌ مِنَ الْمُسْلِمِينَ، وَالْمُشْرِكِينَ عَبَدَةِ الأَوْثَانِ وَالْيَهُودِ وَفِي الْمُسْلِمِينَ عَبْدُ اللهِ بْنُ رَوَاحَةَ، فَلَمَّا غَشِيَتِ الْمَجْلِسَ عَجَاجَةُ الدَّابَّةِ، خَمَّرَ ابْنُ أُبَيٍّ أَنْفَهُ بِرِدَائِهِ وَقَالَ:

हो गये। फिर सवारी से उतरकर उन्हें अल्लाह की तरफ़ बुलाया और क़ुर्आन मजीद की आयतें उन्हें पढ़कर सुनाईं। इस पर अब्दुल्लाह बिन उबई इब्ने सलूल ने कहा कि भले आदमी जो कलाम तुमने पढ़ा उससे बेहतर कलाम नहीं हो सकता। अगरचे वाक़ई ये ह़क़ है मगर हमारी मज्लिसों में आकर इसकी वजह से हमें तकलीफ़ न दिया करो। जो तुम्हारे पास जाए बस उसको ये क़िस्से सुना दिया करो। अब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि.) ने अर्ज़ किया ज़रूर या रसूलल्लाह! आप हमारी मज्लिसों में भी तशरीफ़ लाया करें क्योंकि हम इसे पसंद करते हैं। इस मामले पर मुसलमानों, मुश्रिकों और यहूदियों का झगड़ा हो गया और क़रीब था कि एक दूसरे के ख़िलाफ़ हाथ उठा दें। लेकिन आँह़ज़रत (ﷺ) उन्हें ख़ामोश करते रहे। आख़िर जब सब लोग ख़ामोश हो गये तो आँह़ज़रत (ﷺ) अपनी सवारी पर बैठे और रवाना हुए। जब सअ़द बिन उबादा के यहाँ पहुँचे तो उनसे फ़र्माया कि ऐ सअ़द! तुमने नहीं सुना आज अबू हुबाब ने किस तरह बातें की हैं। आपका इशारा अब्दुल्लाह बिन उबई की तरफ़ था कि उसने ये बातें कही हैं। सअ़द बिन उबादा (रज़ि.) बोले, मेरा बाप आप पर स़दक़े हो या रसूलल्लाह! आप उसे मुआफ़ कर दीजिए और उससे दरगुज़र फ़र्माएँ, उस ज़ात की क़सम! जिसने आप पर किताब नाज़िल की है अल्लाह ने आपको सच्चा कलाम देकर यहाँ भेजा जो आप पर उतारा। आपके तशरीफ़ लाने से पहले इस शहर (मदीना मुनव्वरह) के बाशिन्दे इस पर मुत्तफ़िक़ हो गये थे कि उसे (अब्दुल्लाह बिन उबई को) शाही ताज पहना दें और शाही अमामा बाँध दें लेकिन अल्लाह ने सच्चा कलाम देकर आपको यहाँ भेज दिया और ये तज्वीज़ मौक़ूफ़ रही तो वो इसकी वजह से चिढ़ गया और जो कुछ आपने आज मुलाह़िज़ा किया, वो इसी जलन की वजह से है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने अब्दुल्लाह बिन उबई को मुआफ़ कर दिया। आँह़ज़रत (ﷺ) और आपके स़ह़ाबा मुश्रिकीन और अहले किताब से जैसा कि उन्हें अल्लाह तआ़ला ने हुक्म दिया था, दरगुज़र किया करते थे और उनकी तरफ़ से पहुँचने वाली तकलीफ़ों पर स़ब्र किया करते थे, अल्लाह तआ़ला ने भी इर्शाद फ़र्माया है कि, तुम उन लोगों से जिन्हें किताब दी गई है (अज़िय्यतदेह बातें) सुनोगे, दूसरे मौक़े पर इर्शाद फ़र्माया बहुत से अहले किताब ख़्वाहिश रखते हैं

لاَ تُغَبِّرُوا عَلَيْنَا، فَسَلَّمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَلَيْهِمْ ثُمَّ وَقَفَ، فَنَزَلَ فَدَعَاهُمْ إِلَى اللهِ وَقَرَأَ عَلَيْهِمُ الْقُرْآنَ فَقَالَ لَهُ عَبْدُ اللهِ بْنُ أُبَيٍّ ابْنُ سَلُولَ: أَيُّهَا الْمَرْءُ لاَ أَحْسَنَ مِمَّا تَقُولُ إِنْ كَانَ حَقًّا فَلاَ تُؤْذِنَا بِهِ فِي مَجَالِسِنَا فَمَنْ جَاءَكَ فَاقْصُصْ عَلَيْهِ، قَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ رَوَاحَةَ: بَلَى يَا رَسُولَ اللهِ فَاغْشَنَا فِي مَجَالِسِنَا، فَإِنَّا نُحِبُّ ذَلِكَ فَاسْتَبَّ الْمُسْلِمُونَ وَالْمُشْرِكُونَ وَالْيَهُودُ، حَتَّى كَادُوا يَتَثَاوَرُونَ فَلَمْ يَزَلْ رَسُولُ اللهِ ﷺ يُخَفِّضُهُمْ حَتَّى سَكَتُوا ثُمَّ رَكِبَ رَسُولُ اللهِ ﷺ دَابَّتَهُ فَسَارَ حَتَّى دَخَلَ عَلَى سعدِ بْنِ عُبَادَةَ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَيْ سَعْدُ أَلَمْ تَسْمَعْ مَا قَالَ أَبُو حُبَابٍ؟)) يُرِيدُ عَبْدَ اللهِ بْنَ أُبَيٍّ قَالَ كَذَا وَكَذَا فَقَالَ سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ: أَيْ رَسُولَ اللهِ بِأَبِي أَنْتَ اعْفُ عَنْهُ وَاصْفَحْ، فَوَ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ لَقَدْ جَاءَ اللهُ بِالْحَقِّ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَيْكَ، وَلَقَدِ اصْطَلَحَ أَهْلُ هَذِهِ الْبَحْرَةِ عَلَى أَنْ يُتَوِّجُوهُ وَيُعَصِّبُوهُ بِالْعِصَابَةِ، فَلَمَّا رَدَّ اللهُ ذَلِكَ بِالْحَقِّ الَّذِي أَعْطَاكَ شَرِقَ بِذَلِكَ فَذَلِكَ فَعَلَ بِهِ مَا رَأَيْتَ فَعَفَا عَنْهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ، وَكَانَ رَسُولُ اللهِ وَأَصْحَابُهُ يَعْفُونَ عَنِ الْمُشْرِكِينَ وَأَهْلِ الْكِتَابِ، كَمَا أَمَرَهُمُ اللهُ وَيَصْبِرُونَ عَلَى الأَذَى قَالَ اللهُ تَعَالَى: ((وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا

अल्अख़। चुनाँचे हुज़ूरे अकरम (ﷺ) उन्हें मुआफ़ करने के लिये अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ तौजीह किया करते थे। बिलआख़िर आपको (जंग की) इजाज़त दी गई। जब आँहज़रत (ﷺ) ने ग़ज़्वा-ए-बद्र किया और अल्लाह के हुक्म से उसमें कुफ़्फ़ार के बड़े बड़े बहादुर और क़ुरैश के सरदार क़त्ल किये गये तो आँहज़रत (ﷺ) अपने सहाबा के साथ फ़तहमंद और ग़नीमत का माल लिये हुए वापस हुए, उनके साथ कुफ़्फ़ार क़ुरैश के कितने ही बहादुर सरदार क़ैद भी करके लाए तो उस वक़्त अ़ब्दुल्लाह बिन उबई इब्ने सलूल और उसके बुतपरस्त मुश्रिक साथी कहने लगे कि अब उनका काम जम गया तो आँहज़रत (ﷺ) से बेअ़त कर लो, उस वक़्त उन्होंने इस्लाम पर बेअ़त की और बज़ाहिर मुसलमान हो गये (मगर दिल में निफ़ाक़ रहा)।

(राजेअ़: 2987)

الْكِتَابَ)) [آل عمران : ١٨٦] الآيَةَ وَقَالَ: ﴿وَدَّ كَثِيرٌ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ﴾ [البقرة : ١٠٩] فَكَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَتَأَوَّلُ فِي الْعَفْوِ عَنْهُمْ مَا أَمَرَهُ اللهُ بِهِ حَتَّى أَذِنَ لَهُ فِيهِمْ، فَلَمَّا غَزَا رَسُولُ اللهِ ﷺ بَدْرًا فَقَتَلَ اللهُ بِهَا مَنْ قَتَلَ مِنْ صَنَادِيدِ الْكُفَّارِ وَسَادَةِ قُرَيْشٍ، فَقَفَلَ رَسُولُ اللهِ ﷺ أَصْحَابُهُ مَنْصُورِينَ غَانِمِينَ مَعَهُمْ أُسَارَى مِنْ صَنَادِيدِ الْكُفَّارِ وَسَادَةِ قُرَيْشٍ قَالَ ابْنُ أُبَيٍّ ابْنُ سَلُولَ: وَمَنْ مَعَهُ مِنَ الْمُشْرِكِينَ عَبَدَةِ الأَوْثَانِ هَذَا أَمْرٌ قَدْ تَوَجَّهَ فَبَايِعُوا رَسُولَ اللهِ ﷺ عَلَى الإِسْلاَمِ فَأَسْلَمُوا. [راجع: ٢٩٨٧]

तश्रीह: सनद में उ़र्वा बिन ज़ुबैर फ़ुक़हा-ए-सब्अ़े मदीना से हैं जिनके अस्मा-ए-गिरामी इस नज़्म में हैं,

इज़ा क़ील मन फिल्इल्मि सब्अत अब्हुरिन रिवायतुहुम लैसतइ अनिल्इल्मि खारिजतुन
फकुल हुम उबैदुल्लाह उर्वः क़ासिम सईद अबू बक्र सुलैमान खारिजः

ये सातों बुज़ुर्ग मदीना तय्यिबा में एक ही ज़माने में थे। अकषर इनमें से 94 हिजरी में फ़ौत हुए तो उस साल का नाम ही आमुल फ़ुक़हा पड़ गया आख़िर बारी बारी 106 हिजरी तक सब रुख़्सत हो गये। रहिमहुमुल्लाहु अज्मईन।

6208. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल मलिक ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन हारिष बिन नौफ़िल ने और उनसे हज़रत अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब ने कि उन्होंने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! आपने जनाब अबू तालिब को उनकी वफ़ात के बाद कोई फ़ायदा पहुँचाया, वो आपकी हिफ़ाज़त किया करते थे और आपके लिये लोगों पर ग़ुस्सा हुआ करते थे। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ वो दोज़ख़ में उस जगह पर हैं जहाँ टख़्नों तक आग है अगर मैं न होता तो वो दोज़ख़ के नीचे के तब्क़े में रहते जहाँ और मुश्रिक रहेंगे।

(राजेअ़: 3883)

٦٢٠٨- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ الْحَارِثِ بْنِ نَوْفَلٍ، عَنْ عَبَّاسِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ هَلْ نَفَعْتَ أَبَا طَالِبٍ بِشَيْءٍ؟ فَإِنَّهُ كَانَ يَحُوطُكَ وَيَغْضَبُ لَكَ، قَالَ: ((نَعَمْ هُوَ فِي ضَحْضَاحٍ مِنَ النَّارِ، لَوْ لاَ أَنَا لَكَانَ فِي الدَّرْكِ الأَسْفَلِ مِنَ النَّارِ)). [راجع: ٣٨٨٣]

बाब 116 : तअ़रीज़ के तौर पर बात कहने में झूठ से बचाव है

١١٦ - باب الْمَعَارِيضُ مَنْدُوحَةٌ عَنِ الْكَذِبِ

और इस्हाक़ ने बयान किया कि मैंने अनस (रज़ि.) से सुना कि अबू तलहा के एक बच्चे अबू उमेर नामी का इंतिक़ाल हो गया। उन्होंने (अपनी बीवी से) पूछा कि बच्चा कैसा है? उम्मे सुलैम (रज़ि.) ने कहा कि उसकी जान को सुकून है और मुझे उम्मीद है कि अब वो चैन से होगा। अबू तलहा उस कलाम का मतलब ये समझे कि उम्मे सुलैम सच्ची है।

وَقَالَ إِسْحَاقُ، سَمِعْتُ أَنَسًا مَاتَ ابْنٌ لأَبِي طَلْحَةَ فَقَالَ : كَيْفَ الْغُلاَمُ؟ قَالَتْ أُمُّ سُلَيْمٍ، هَدَأَ نَفَسُهُ، وَأَرْجُوا أَنْ يَكُونَ قَدِ اسْتَرَاحَ وَظَنَّ أَنَّهَا صَادِقَةٌ.

6209. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने, उनसे ष़ाबित बिनानी ने, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) एक सफ़र में थे, रास्ते में हदी-ख़्वाँ ने हदी पढ़ी तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ऐ अंजशा! शीशों को आहिस्ता आहिस्ता ले चल, तुझ पर अफ़सोस। (राजेअ़ : 6149)

٦٢٠٩ - حَدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ ثَابِتٍ الْبُنَانِيِّ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ فِي مَسِيرٍ لَهُ فَحَدَا الْحَادِي فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((ارْفُقْ يَا أَنْجَشَةُ وَيْحَكَ بِالْقَوَارِيرِ)). [راجع: ٦١٤٩]

6210. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हम्माद ने बयान किया, उनसे ष़ाबित बिनानी ने बयान किया, उनसे अनस व अय्यूब ने, उनसे अबू क़िलाबा ने और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) एक सफ़र में थे। अंजशा नामी ग़ुलाम औरतों की सवारियों को हुदा पढ़ता ले चल रहा था। आँहज़रत (ﷺ) ने उससे फ़र्माया, अंजशा! इन शीशों को आहिस्ता ले चल। अबू क़िलाबा ने बयान किया कि मुराद औरतें थीं। (राजेअ़ : 6149)

٦٢١٠ - حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ وَأَيُّوبُ عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ عن أنس رضى الله عنه أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ فِي سَفَرٍ وَكَانَ غُلاَمٌ يَحْدُوبِهِنَّ يُقَالُ لَهُ أَنْجَشَةُ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((رُوَيْدَكَ يَا أَنْجَشَةُ سَوْقَكَ بِالْقَوَارِيرِ)) قَالَ أَبُو قِلاَبَةَ: يَعْنِي النِّسَاءَ. [راجع: ٦١٤٩]

6211. हमसे इस्हाक़ ने बयान किया, कहा हमको हब्बान ने ख़बर दी, कहा हमसे हम्माम ने बयान किया, उनसे क़तादा ने बयान किया, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के एक हुदा ख़्वाँ थे अंजशा नामी थे उनकी आवाज़ बड़ी अच्छी थी। आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया, अंजशा! आहिस्ता चाल इख़्तियार कर, उन शीशों को मत तोड़। क़तादा ने बयान किया कि मुराद कमज़ोर औरतें थीं (कि सवारी से गिर न जाएँ)। (राजेअ़ : 6149)

٦٢١١ - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ، أَخْبَرَنَا حَبَّانُ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ قَالَ: كَانَ لِلنَّبِيِّ ﷺ، حَادٍ يُقَالُ لَهُ، أَنْجَشَةُ، وَكَانَ حَسَنَ الصَّوْتِ فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ ﷺ: ((رُوَيْدَكَ يَا أَنْجَشَةُ لاَ تَكْسِرِ الْقَوَارِيرَ)) قَالَ قَتَادَةُ : يَعْنِي ضَعَفَةَ النِّسَاءِ. [راجع: ٦١٤٩]

6212. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि मदीना मुनव्वरह पर (एक रात नामा'लूम आवाज़ की वजह से) डर तारी हो गया। चुनाँचे रसूलुल्लाह (ﷺ) अबू तलहा (रज़ि.) के एक घोड़े पर सवार हुए। फिर (वापस आकर) फ़र्माया हमें तो कोई (ख़ौफ़ की) चीज़ नज़र न आई। अल्बत्ता ये घोड़ा तो गोया दरिया था। (राजेअ़ : 2627)

٦٢١٢- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ شُعْبَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي قَتَادَةُ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: كَانَ بِالْمَدِينَةِ فَزَعٌ فَرَكِبَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَرَسًا لأَبِي طَلْحَةَ فَقَالَ: ((مَا رَأَيْنَا مِنْ شَيْءٍ وَإِنْ وَجَدْنَاهُ لَبَحْرًا)). [راجع: ٢٦٢٧]

बाब 117 : किसी शख़्स का किसी चीज़ के बारे में ये कहना कि ये कुछ नहीं और मक़्सद ये हो कि उसकी कोई ह़क़ीक़त नहीं है और

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा आँह़ज़रत (ﷺ) ने दो क़ब्रवालों के ह़क़ में फ़र्माया किसी बड़े गुनाह में अ़ज़ाब नहीं दिये जाते और ह़ालाँकि वो बड़ा गुनाह है।

١١٧- باب قَوْلِ الرَّجُلِ لِلشَّيْءِ لَيْسَ بِشَيْءٍ وَهُوَ يَنْوِي أَنَّهُ لَيْسَ بِحَقٍّ

وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ، قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: لِلْقَبْرَيْنِ: ((يُعَذَّبَانِ بِلاَ كَبِيرٍ وَإِنَّهُ لَكَبِيرٌ)).

तश्रीह : इमाम बुख़ारी (रह़.) ने इस ह़दीष़ से बाब का मत़लब यूँ निकाला कि जब आँह़ज़रत (ﷺ) ने बड़े को फ़र्माया कि बड़ा नहीं तो **सलबु शैइन अन नफ़्सिही** किया और यही मक़्सूदे बाब है कि शै को **लैस बिशैइन** कहना इज़्हारे तअ़ज्जुब के लिये उर्दू में भी ये मुह़ावरा इस्ते'माल किया जाता है।

6231. हमसे मुह़म्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमको मुख़्लद बिन यज़ीद ने ख़बर दी, कहा हमको इब्ने जुरैज ने ख़बर दी कि इब्ने शिहाब ने बयान किया कि मुझको यह्या बिन उ़र्वा ने ख़बर दी, उन्होंने उ़र्वा से सुना, कहा कि आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि कुछ लोगों ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से काहिनों के बारे में पूछा। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया, कि उनकी (पेशीनगोइयों की) कोई हैषियत नहीं। स़ह़ाबा ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! लेकिन वो कुछ औक़ात ऐसी बातें करते हैं जो स़ह़ीह़ षाबित होती हैं। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि वो बात सच्ची बात होती है जिसे जिन फ़रिश्तों से सुनकर उड़ा लेता है और फिर उसे अपने वली (काहिन) के कान में मुर्ग़ की आवाज़ की त़रह डालता है। उसके बाद काहिन उस (एक सच्ची बात में) सौ से ज़्यादा झूठ मिला देते हैं। (राजेअ़ : 3210)

٦٢١٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلاَمٍ، أَخْبَرَنَا مَخْلَدُ بْنُ يَزِيدَ، أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، قَالَ ابْنُ شِهَابٍ: أَخْبَرَنِي يَحْيَى بْنُ عُرْوَةَ، يَقُولُ: قَالَتْ عَائِشَةُ سَأَلَ أُنَاسٌ رَسُولَ اللهِ ﷺ عَنِ الْكُهَّانِ، فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لَيْسُوا بِشَيْءٍ)) قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ، فَإِنَّهُمْ يُحَدِّثُونَ أَحْيَانًا بِالشَّيْءِ يَكُونُ حَقًّا فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((تِلْكَ الْكَلِمَةُ مِنَ الْحَقِّ يَخْطَفُهَا الْجِنِّيُّ فَيَقُرُّهَا فِي أُذُنِ وَلِيِّهِ قَرَّ الدَّجَاجَةِ، فَيَخْلِطُونَ فِيهَا أَكْثَرَ مِنْ مِائَةِ كَذْبَةٍ)). [راجع: ٣٢١٠]

बाब 118 : आसमान की त़रफ़ नज़र उठाना

और अल्लाह तआ़ला ने सूरह ग़ाशिया में फ़र्माया, क्या वो ऊँट को नहीं देखते कि कैसे उसकी पैदाइश की गई है और

١١٨- باب رَفْعِ الْبَصَرِ إِلَى السَّمَاءِ

وَقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿أَفَلاَ يَنْظُرُونَ إِلَى الإِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ وَإِلَى السَّمَاءِ كَيْفَ رُفِعَتْ﴾

[الغاشية : ١٧]، وَقَالَ أَيُّوبُ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ : عَنْ عَائِشَةَ رَفَعَ النَّبِيُّ ﷺ رَأْسَهُ إِلَى السَّمَاءِ.

आसमान की त़रफ़ कि कैसे वो बुलंद किया गया है। और अय्यूब ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सरे मुबारक आसमान की त़रफ़ उठाया।

٦٢١٤- حَدَّثَنَا ابْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا سَلَمَةَ بْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ يَقُولُ: أَخْبَرَنِي جَابِرُ بْنُ عَبْدِ اللهِ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((ثُمَّ فَتَرَ عَنِّي الْوَحْيُ، فَبَيْنَا أَنَا أَمْشِي، سَمِعْتُ صَوْتًا مِنَ السَّمَاءِ فَرَفَعْتُ بَصَرِي إِلَى السَّمَاءِ، فَإِذَا الْمَلَكُ الَّذِي جَاءَنِي بِحِرَاءٍ قَاعِدٌ عَلَى كُرْسِيٍّ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالأَرْضِ)). [راجع: ٤]

6214. हमसे इब्ने बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने कि मैंने अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान से सुना, वो बयान करते थे कि मुझे जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से, आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर मेरे पास वह्य आने का सिलसिला बंद हो गया। एक दिन मैं चल रहा था कि मैंने आसमान की त़रफ़ से एक आवाज़ सुनी, मैंने आसमान की त़रफ़ नज़र उठाई तो मैंने फिर उस फ़रिश्ते को देखा जो मेरे पास ग़ारे ह़िरा में आया था। वो आसमान व ज़मीन के बीच कुर्सी पर बैठा हुआ था। (राजेअ़ : 4)

ये ज़िब्रईल (अ़लैहिस्सलाम) थे जो आज आपको अपनी उसी शक्ल में नज़र आए।

٦٢١٥- حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي مَرْيَمَ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، قَالَ أَخْبَرَنِي شَرِيكٌ، عَنْ كُرَيْبٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: بِتُّ فِي بَيْتِ مَيْمُونَةَ وَالنَّبِيُّ ﷺ عِنْدَهَا فَلَمَّا كَانَ ثُلُثُ اللَّيْلِ الآخِرُ أَوْ بَعْضُهُ قَعَدَ يَنْظُرُ إِلَى السَّمَاءِ فَقَرَأَ : ﴿إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضِ وَاخْتِلاَفِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ لآيَاتٍ لأُولِي الأَلْبَابِ﴾ [آل عمران : ١٩٠]. [راجع: ١١٧]

6215. हमसे इब्ने अबी मरयम ने बयान किया, कहा हमसे मुह़म्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, कहा कि मुझे शुरैक ने ख़बर दी, उन्हें कुरैब ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने एक रात मैमूना (रज़ि.) (ख़ाला) के घर गुज़ारी, नबी करीम (ﷺ) भी उस रात का आख़िरी तिहाई ह़िस़्सा हुआ या उसका कुछ ह़िस़्सा रह गया तो आँह़ज़रत (ﷺ) उठ बैठे और आसमान की त़रफ़ देखा फिर इस आयत की तिलावत की। बिला शुब्हा आसमान की और ज़मीन की पैदाइश में और दिन-रात के बदलते रहने में अ़क़्ल वालों के लिये निशानियाँ हैं। (राजेअ़ : 117)

रात को उठने वाले ख़ुशनसीबों के लिये आसमानी नज़ारों को देखना और इन आयात को बग़ौर पढ़ना बहुत बड़ी नेअ़मत है।

١١٩- باب نَكْتِ الْعُودِ فِي الْمَاءِ وَالطِّينِ

बाब 119 : कीचड़ पानी में लकड़ी मारना

٦٢١٦- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ عُثْمَانَ بْنِ غِيَاثٍ، حَدَّثَنَا أَبُو عُثْمَانَ،

6216. हमसे मुसद्दद ने कहा, कहा हमसे यह़्या क़त़्त़ान ने बयान किया, उनसे उ़ष्मान बिन ग़याष़ ने, कहा हमसे अबू उ़ष्मान नह्दी ने बयान किया और उनसे अबू मूसा अश़अ़री ने

عَنْ أَبِي مُوسَى أَنَّهُ كَانَ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي حَائِطٍ مِنْ حِيطَانِ الْمَدِينَةِ وَفِي يَدِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عُودٌ يَضْرِبُ بِهِ بَيْنَ الْمَاءِ وَالطِّينِ، فَجَاءَ رَجُلٌ يَسْتَفْتِحُ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((افْتَحْ وَبَشِّرْهُ بِالْجَنَّةِ)) فَذَهَبْتُ فَإِذَا أَبُو بَكْرٍ فَفَتَحْتُ لَهُ وَبَشَّرْتُهُ بِالْجَنَّةِ فَاسْتَفْتَحَ رَجُلٌ آخَرُ فَقَالَ: ((افْتَحْ لَهُ وَبَشِّرْهُ بِالْجَنَّةِ)) فَإِذَا عُمَرُ فَفَتَحْتُ لَهُ وَبَشَّرْتُهُ بِالْجَنَّةِ ثُمَّ اسْتَفْتَحَ رَجُلٌ آخَرُ وَكَانَ مُتَّكِئًا فَجَلَسَ فَقَالَ: ((افْتَحْ وَبَشِّرْهُ بِالْجَنَّةِ عَلَى بَلْوَى تُصِيبُهُ - أَوْ تَكُونُ -)) فَذَهَبْتُ فَإِذَا عُثْمَانُ فَفَتَحْتُ لَهُ وَبَشَّرْتُهُ بِالْجَنَّةِ فَأَخْبَرْتُهُ بِالَّذِي قَالَ قَالَ اللَّهُ الْمُسْتَعَانُ.

[راجع: ٣٦٧٤]

कि वो नबी करीम (ﷺ) के साथ मदीना के बाग़ों में से एक बाग़ मे थे। आँहज़रत (ﷺ) के हाथ में एक लकड़ी थी, आप उसको पानी और कीचड़ में मार रहे थे। उस दौरान में एक स़ाहब ने बाग़ का दरवाज़ा खुलवाना चाहा। आँहज़रत (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया कि उसके लिये दरवाज़ा खोल दे और उन्हें जन्नत की ख़ुशख़बरी सुना दे। मैं गया तो वहाँ हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) मौजूद थे, मैंने उनके लिये दरवाज़ा खोला और उन्हें जन्नत की ख़ुशख़बरी सुनाई फिर एक और स़ाहब ने दरवाज़ा खुलवाया। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि दरवाज़ा खोल दे और उन्हें जन्नत की ख़ुशख़बरी सुना दे इस मर्तबा हज़रत उ़मर (रज़ि.) थे। मैंने उनके लिये भी दरवाज़ा खोला और उन्हें भी जन्नत की ख़ुशख़बरी सुना दी। फिर एक तीसरे स़ाहब ने दरवाज़ा खुलवाया। आँहज़रत (ﷺ) उस वक़्त टेक लगाए हुए थे अब सीधे बैठ गये। फिर फ़र्माया दरवाज़ा खोल दे और जन्नत की ख़ुशख़बरी सुना दे, उस आज़माइश के साथ जिससे (दुनिया में) उन्हें दो चार होना पड़ेगा। मैं गया तो वहाँ हज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) थे। उनके लिये भी मैंने दरवाज़ा खोला और उन्हें जन्नत की ख़ुशख़बरी सुनाई और वो बात भी बता दी जो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माई थी। उ़ष्मान (रज़ि.) ने कहा ख़ैर अल्लाह मददगार है। (राजेअ : 3674)

तश्रीह : इस हदीष़ में आँहज़रत (ﷺ) का एक बड़ा मुअजिज़ा है। आपने जैसा फ़र्माया था वैसा ही हुआ। हज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) को आख़िर ख़िलाफ़त में बड़ी मुसीबत पेश आई लेकिन उन्होंने स़ब्र किया और शहीद हुए।

अबूबक्र (रज़ि.) के लिये दरवाज़ा सबसे पहले खोला गया। पहले आपका नाम अ़ब्दुल का'बा था। इस्लाम लाने पर आँहज़रत (ﷺ) ने आपका नाम अ़ब्दुल्लाह रख दिया लक़ब स़िद्दीक़ और कुन्नियत अबूबक्र (रज़ि.) आपकी ख़िलाफ़त दो साल तीन माह और दस दिन रही। वफ़ात 63 साल की उ़म्र में 21 जमादिष़ ष़ानी 13 हिजरी में बुख़ार से वाक़ेअ़ हुई। 7 तारीख़ जमादिष़ ष़ानी से आपको बुख़ार आना शुरू हुआ था। रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अरज़ाहू। उ़मर (रज़ि.) मुग़ीरह बिन शुअ़बा (रज़ि.) के गुलाम अबू लूलू फ़ीरोज़ ईरानी के हाथ से शहीद हुए। उस वक़्त उनकी उ़म्र 63 साल की थी 27 ज़िलहिज्ज 23 हिजरी में बुध के दिन इंतिक़ाल फ़र्माया रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अरजाहू। आपकी मुद्दते ख़िलाफ़त साढ़े दस साल से कुछ ज़्यादा है। हज़रत उ़ष्मान के ज़माने में कुछ मुनाफ़िक़ों ने बग़ावत की। आख़िर आपको 18 ज़िलहिज्ज 35 हिजरी में उन ज़ालिमों ने बहुत बुरी त़रह से शहीद कर दिया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजेऊन। (रज़ियल्लाहु अ़न्हुम)

١٢٠- باب الرَّجُلِ يَنْكُتُ الشَّيْءَ بِيَدِهِ فِي الأَرْضِ.

बाब 120 : किसी शख़्स का ज़मीन पर किसी चीज़ को मारना

6217. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबी अ़दी ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने, उनसे सुलैमान व मंसूर ने, उनसे सअ़द बिन उ़बैदह ने, उनसे अबू अ़ब्दुर्रहमान सुलमी ने और उनसे ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ एक जनाज़े में शरीक थे। आँह़ज़रत (ﷺ) के हाथ में एक छड़ी थी उसको आप ज़मीन पर मार रहे थे फिर आपने फ़र्माया तुममें कोई ऐसा नहीं है जिसका जन्नत या दोज़ख़ का ठिकाना तै न हो चुका हो। स़हाबा ने अ़र्ज़ किया, फिर क्यूँ न हम उस पर भरोसा कर लें। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अ़मल करते रहो क्योंकि हर शख़्स जिस ठिकाने के लिये पैदा किया गया है उसको वैसी ही तौफ़ीक़ दी जाएगी। जैसा कि क़ुर्आन शरीफ़ के सूरह वल लैल में है कि जिसने अल्लाह के लिये ख़ैरात की और अल्लाह तआ़ला से डरा, आख़िर तक। (राजेअ़ : 1362)

٦٢١٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ سُلَيْمَانَ وَمَنْصُورٍ، عَنْ سعدِ بْنِ عُبَيْدَةَ عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ السُّلَمِيِّ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي جَنَازَةٍ فَجَعَلَ يَنْكُتُ الأَرْضَ بِعُودٍ فَقَالَ: ((لَيْسَ مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ إِلاَّ وَقَدْ فُرِغَ مِنْ مَقْعَدِهِ مِنَ الْجَنَّةِ وَالنَّارِ)) فَقَالُوا: أَفَلاَ نَتَّكِلُ؟ قَالَ: ((اعْمَلُوا فَكُلٌّ مُيَسَّرٌ ﴿فَأَمَّا مَنْ أَعْطَى وَاتَّقَى﴾ [الليل : ٥] الآيَةَ.

[راجع: ١٣٦٢]

बाब 121 : तअ़ज्जुब के वक़्त अल्लाहु अकबर और सुब्हानल्लाह कहना

١٢١- باب التَّكْبِيرِ وَالتَّسْبِيحِ عِنْدَ التَّعَجُّبِ

6218. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उनसे हिन्द बिन्ते ह़ारिष़ ने बयान किया कि उम्मे सलमा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) (रात में) बेदार हुए और फ़र्माया, सुब्ह़ानल्लाह! अल्लाह की रह़मत के कितने ख़ज़ाने आज नाज़िल किये गये हैं और किस त़रह़ के फ़ित्ने भी उतारे गये हैं। कौन है! जो उन हुज्रा वालियों को जगाए। आँह़ज़रत (ﷺ) की मुराद अज़्वाजे मुत़ह्हरात से थी ताकि वो नमाज़ पढ़ लें क्योंकि बहुत सी दुनिया में कपड़े पहनने वालियाँ आख़िरत में नंगी होंगी। और इब्ने अबी ष़ौर ने बयान किया, उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.)ने और उनसे ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा, क्या आपने अज़्वाजे मुत़ह्हरात को त़लाक़ दे दी है? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि नहीं। मैंने कहा अल्लाहु अकबर! (राजेअ़ : 115)

٦٢١٨- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، حَدَّثَتْنِي هِنْدُ بِنْتُ الْحَارِثِ أَنَّ أُمَّ سَلَمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: اسْتَيْقَظَ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: ((سُبْحَانَ اللهِ مَاذَا أُنْزِلَ مِنَ الْخَزَائِنِ؟ وَمَاذَا أُنْزِلَ مِنَ الْفِتَنِ؟ مَنْ يُوقِظُ صَوَاحِبَ الْحُجَرِ؟)) يُرِيدُ بِهِ أَزْوَاجَهُ ((حَتَّى يُصَلِّينَ رُبَّ كَاسِيَةٍ فِي الدُّنْيَا عَارِيَةٍ فِي الآخِرَةِ)) وَقَالَ ابْنُ أَبِي ثَوْرٍ: عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنْ عُمَرَ قَالَ: قُلْتُ لِلنَّبِيِّ ﷺ طَلَّقْتَ نِسَاءَكَ؟ قَالَ: ((لاَ)). قُلْتُ: اللهُ أَكْبَرُ.[راجع: ١١٥]

उ़मर (रज़ि.) ने उस अंसारी की ख़बर पर तअ़ज्जुब किया जिसने कहा था कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने अपनी बीवियों को त़लाक़ दे दी है। ग़फ़रल्लाहु लहू (आमीन)

6219. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा

٦٢١٩- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا

हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने (दूसरी सनद) और हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे मेरे भाई अ़ब्दुल ह़मीद ने बयान किया, उनसे सुलैमान ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन अबी अ़तीक़ ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे इमाम ज़ैनुल आ़बेदीन अ़ली बिन हुसैन ने कि नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुत़ह्हरा ह़ज़रत स़फ़िया बिन्ते हुय्य (रज़ि.) ने उन्हें ख़बर दी कि वो आँह़ज़रत (ﷺ) के पास मिलने आईं। आँह़ज़रत (ﷺ) उस वक़्त मस्जिद में रमज़ान के आख़िरी अ़शरे में ए'तिकाफ़ किये हुऐ थे। इशा के वक़्त थोड़ी देर उन्होंने आँह़ज़रत (ﷺ) से बातें कीं और वापस लौटने के लिये उठीं तो आँह़ज़रत (ﷺ) भी उन्हें छोड़ आने के लिये खड़े हो गये। जब वो मस्जिद के उस दरवाज़े के पास पहुँचें जहाँ आँह़ज़रत (ﷺ) की ज़ोजा मुत़ह्हरा उम्मे सलमा (रज़ि.) का हुज्रा था, तो उधर से दो अंस़ारी स़हाबी गुज़रे और आँह़ज़रत (ﷺ) को सलाम किया और आगे बढ़ गये। लेकिन आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि थोड़ी देर के लिये ठहर जाओ। ये स़फ़िया बिन्ते हुय्यि (रज़ि.) मेरी बीवी हैं। उन दोनों स़हाबा ने अ़र्ज़ किया। सुब्ह़ानल्लाह, या रसूलल्लाह। उन पर बड़ा शाक़ गुज़रा। लेकिन आपने फ़र्माया कि शैत़ान इंसान के अंदर ख़ून की त़रह दौड़ता रहता है, इसलिये मुझे डर हुआ कि कहीं वो तुम्हारे दिल में कोई शुब्हा न डाल दे। (राजेअ़ : 2035)

شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ ح وَحَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، قَالَ: حَدَّثَنِي أَخِي عَنْ سُلَيْمَانَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِي عَتِيقٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ الْحُسَيْنِ أَنَّ صَفِيَّةَ بِنْتَ حُيَيٍّ زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ أَخْبَرَتْهُ أَنَّهَا جَاءَتْ رَسُولَ اللهِ ﷺ تَزُورُهُ وَهُوَ مُعْتَكِفٌ فِي الْمَسْجِدِ فِي الْعَشْرِ الْغَوَابِرِ مِنْ رَمَضَانَ، فَتَحَدَّثَتْ عِنْدَهُ سَاعَةً مِنَ الْعِشَاءِ ثُمَّ قَامَتْ تَنْقَلِبُ فَقَامَ مَعَهَا النَّبِيُّ ﷺ يَقْلِبُهَا، حَتَّى إِذَا بَلَغَتْ بَابَ الْمَسْجِدِ الَّذِي عِنْدَ مَسْكَنِ أُمِّ سَلَمَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ مَرَّ بِهِمَا رَجُلاَنِ مِنَ الأَنْصَارِ، فَسَلَّمَا عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ ثُمَّ نَفَذَا، فَقَالَ لَهُمَا رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((عَلَى رِسْلِكُمَا إِنَّمَا هِيَ صَفِيَّةُ بِنْتُ حُيَيٍّ)) قَالاَ: سُبْحَانَ اللهِ يَا رَسُولَ اللهِ وَكَبُرَ عَلَيْهِمَا قَالَ ((إِنَّ الشَّيْطَانَ يَجْرِي مِنَ ابْنِ آدَمَ مَبْلَغَ الدَّمِ، وَإِنِّي خَشِيتُ أَنْ يَقْذِفَ فِي قُلُوبِكُمَا)). [راجع: ٢٠٣٥]

ऐसे मौक़ों में किसी पैदा होने वाली ग़लतफ़हमी पहले ही दफ़ा कर देना भी सुन्नते-नबवी है जो बहुत ही बाइ़से-स़वाब है।

बाब 122 : उँगलियों से पत्थर या कंकरी फेंकने की मुमानअ़त

١٢٢- باب النَّهْيِ عَنِ الْخَذْفِ

6220. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, उन्होंने उ़क़्बा बिन स़ह्बान अज़्दी से सुना, वो अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल मज़्नी से नक़ल करते थे कि नबी करीम (ﷺ) ने कंकरी फेंकने से मना किया था और फ़र्माया था कि वो न शिकार मार सकती है और न दुश्मन को कोई नुक़्स़ान पहुँचा सकती है, अल्बत्ता आँख

٦٢٢٠- حَدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ قَالَ: سَمِعْتُ عُقْبَةَ بْنَ صُهْبَانَ الأَزْدِيَّ يُحَدِّثُ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مُغَفَّلٍ الْمُزَنِيِّ قَالَ: نَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنِ الْخَذْفِ، وَقَالَ: ((إِنَّهُ لاَ يَقْتُلُ الصَّيْدَ وَلاَ يَنْكَأُ الْعَدُوَّ، وَإِنَّهُ يَفْقَأُ الْعَيْنَ وَيَكْسِرُ السِّنَّ)).

फोड़ सकती है और दांत तोड़ सकती है।(राजेअ : 4841)

[راجع: ٤٨٤١]

बाब 123 : छींकने वाले का अल्हम्दुलिल्लाह कहना

١٢٣- باب الْحَمْدِ لِلْعَاطِسِ

6221. हमसे मुहम्मद बिन कषीर ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान षौरी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के पास दो अस्हाब छींके। आँहज़रत (ﷺ) ने एक का जवाब दिया यरहमुकल्लाह (अल्लाह तुम पर रहम करे) से दिया और दूसरे का नहीं। आँहज़रत (ﷺ) से इसकी वजह पूछी गई तो फ़र्माया कि उसने अल्हम्दुलिल्लाह कहा था (इसलिये इसका जवाब दिया) और दूसरे ने अल्हम्दुलिल्लाह न कहा था। छींकने वाले को अल्हम्दुलिल्लाह ज़रूर कहना चाहिये और सुनने वालों को यरहमुकल्लाह (से जवाब देना इस्लामी तहज़ीब है)। (दीगर : 6225)

٦٢٢١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: عَطَسَ رَجُلاَنِ عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَشَمَّتَ أَحَدَهُمَا وَلَمْ يُشَمِّتِ الآخَرَ فَقِيلَ لَهُ: فَقَالَ: ((هَذَا حَمِدَ اللهَ، وَهَذَا لَمْ يَحْمَدِ اللهَ)).

[طرفه في : ٦٢٢٥].

बाब 124 : छींकने वाला अल्हम्दुलिल्लाह कहे तो उसका जवाब अल्फ़ाज़ यरहमुकल्लाह से देना चाहिये या'नी अल्लाह तुझ पर रहम करे

١٢٤- باب تَشْمِيتِ الْعَاطِسِ إِذَا حَمِدَ اللهَ

6222. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अश्अष बिन सुलैम ने कि मैंने मुआविया बिन सुवैद बिन मुक़र्रिन से सुना और उनसे हज़रत बरा (रज़ि.) ने बयान किया कि हमें नबी करीम (ﷺ) ने सात बातों का हुक्म दिया था और सात कामों से रोका था, हमें आँहज़रत (ﷺ) ने बीमार की मिज़ाजपुर्सी करने, जनाज़े के पीछे चलने, छींकने वाले के जवाब देने, दा'वत करने वाले की दा'वत क़ुबूल करने, सलाम का जवाब देने, मज़्लूम की मदद करने और क़सम खा लेने वाले की क़सम पूरी करने में मदद देने का हुक्म दिया था और आँहज़रत (ﷺ) ने हमें सात कामों से रोका था, सोने की अंगूठी से, या बयान किया कि सोने के छल्ले से, रेशम और दीबा और संदुस (दीबा से बारीक रेशमी कपड़ा) पहनने से और रेशमी ज़ीन से। (राजेअ : 1239)

٦٢٢٢- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنِ الأَشْعَثِ بْنِ سُلَيْمٍ قَالَ : سَمِعْتُ مُعَاوِيَةَ بْنَ سُوَيْدِ بْنِ مُقَرِّنٍ، عَنِ الْبَرَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: أَمَرَنَا النَّبِيُّ ﷺ بِسَبْعٍ وَنَهَانَا عَنْ سَبْعٍ أَمَرَنَا بِعِيَادَةِ الْمَرِيضِ، وَاتِّبَاعِ الْجَنَازَةِ، وَتَشْمِيتِ الْعَاطِسِ، وَإِجَابَةِ الدَّاعِي، وَرَدِّ السَّلاَمِ، وَنَصْرِ الْمَظْلُومِ، وَإِبْرَارِ الْمُقْسِمِ، وَنَهَانَا عَنْ سَبْعٍ، عَنْ خَاتَمِ الذَّهَبِ -أَوْ قَالَ حَلْقَةِ الذَّهَبِ-، وَعَنْ لُبْسِ الْحَرِيرِ، وَالدِّيبَاجِ، وَالسُّنْدُسِ، وَالْمَيَاثِرِ.

[راجع: ١٢٣٩]

बाब 125 : छींक अच्छी है और जम्हाई में

١٢٥- باب مَا يُسْتَحَبُّ مِنَ

الْعُطَاسِ، وَمَا يُكْرَهُ مِنَ التَّثَاؤُبِ

बुराई है

छींक चुस्ती और होशियारी और दिमाग़ की सफ़ाई और सेह्त की दलील है। बरख़िलाफ़ इसके जम्हाई सुस्ती काहिली और भारीपन और इम्तिलाए माद्दा की दलील है।

٦٢٢٣- حَدَّثَنَا آدَمُ بْنُ أَبِي إِيَاسٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ، حَدَّثَنَا سَعِيدٌ الْمَقْبُرِيُّ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ اللهَ يُحِبُّ الْعُطَاسَ، وَيَكْرَهُ التَّثَاؤُبَ، فَإِذَا عَطَسَ فَحَمِدَ اللهَ فَحَقٌّ عَلَى كُلِّ مُسْلِمٍ سَمِعَهُ أَنْ يُشَمِّتَهُ، وَأَمَّا التَّثَاؤُبُ فَإِنَّمَا هُوَ مِنَ الشَّيْطَانِ، فَلْيَرُدَّهُ مَا اسْتَطَاعَ فَإِذَا قَالَ: هَا ضَحِكَ مِنْهُ الشَّيْطَانُ)).

[راجع: ٣٢٨٩]

6223. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्ने अबी ज़िब ने बयान किया, उनसे सईद मक़्बरी ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने (फ़र्माया कि) अल्लाह तआला छींक को पसंद करता है और जम्हाई को नापसंद करता है। इसलिये जब तुममें से कोई शख़्स छींके और अल्हम्दुलिल्लाह कहे तो हर मुसलमान पर जो उसे सुने, ह़क़ है कि उसका जवाब यरहमुकल्लाह से दे। लेकिन जम्हाई शैत़ान की त़रफ़ से होती है इसलिये जहाँ तक हो सके उसे रोके क्योंकि जब वो मुँह खोलकर हा-हा-हा कहता है तो शैत़ान उस पर हंसता है। (राजेअ : 3289)

١٢٦- باب إِذَا عَطَسَ كَيْفَ يُشَمَّتُ؟

बाब 126 : छींकने वाले का किस त़रह जवाब दिया जाए?

٦٢٢٤- حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي سَلَمَةَ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ دِينَارٍ،عَنْ أَبِي صَالِحٍ،عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا عَطَسَ أَحَدُكُمْ فَلْيَقُلْ: الْحَمْدُ لِلَّهِ وَلْيَقُلْ لَهُ أَخُوهُ -أَوْ صَاحِبُهُ- يَرْحَمُكَ اللهُ فَإِذَا قَالَ لَهُ يَرْحَمُكَ اللهُ، فَلْيَقُلْ: يَهْدِيكُمُ اللهُ وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ)).

6224. हमसे मालिक बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबी सलमा ने बयान किया, उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने ख़बर दी, वो अबू स़ालेह़ ने और उन्हें ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत करते हैं कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जब तुममें से कोई छींके तो अल्हम्दु लिल्लाह कहे और उसका भाई या उसका साथी (रावी को शक था) यरह़मुकल्लाह कहे। जब साथी यरह़मुकल्लाह कहे तो उसके जवाब में छींकने वाला यह्दियकुमुल्लाहु व युस्लिहु बालकुम)

अल्लाह तुम्हें सीधे रास्ते पर रखे और तुम्हारे ह़ालात दुरुस्त करे।

١٢٧- باب لاَ يُشَمَّتُ الْعَاطِسُ إِذَا لَمْ يَحْمَدِ اللهَ

बाब 127 : जब छींकने वाला अल्हम्दुलिल्लाह न कहे तो उसके लिये यरह़मुकल्लाह भी न कहा जाए

٦٢٢٥- حَدَّثَنَا آدَمُ بْنُ أَبِي إِيَاسٍ،

6225. हमसे आदम बिन अयास ने बयान किया, कहा हमसे

शुअ़बा ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान तैमी ने बयान किया, कहा कि मैंने ह़ज़रत अनस (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) की मौजूदगी में दो आदमियों ने छींका। लेकिन आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनमें से एक की छींक पर यरह़मुकल्लाह कहा और दूसरे की छींक पर नहीं कहा। इस पर दूसरा शख़्स़ बोला कि या रसूलल्लाह! आपने उनकी छींक पर यरह़मुकल्लाह फ़र्माया। लेकिन मेरी छींक पर नहीं फ़र्माया? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उन्होंने अल्ह़म्दु लिल्लाह कहा था और तुमने नहीं कहा था। (राजेअ़ : 6221)

حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ التَّيْمِيُّ، قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: عَطَسَ رَجُلاَنِ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ فَشَمَّتَ أَحَدَهُمَا وَلَمْ يُشَمِّتِ الآخَرَ فَقَالَ الرَّجُلُ: يَا رَسُولَ اللهِ شَمَّتَّ هَذَا وَلَمْ تُشَمِّتْنِي؟ ((إِنَّ هَذَا حَمِدَ اللهَ وَلَمْ تَحْمَدِ اللهَ)).
[راجع: ٦٢٢١]

बाब 128 : जब जम्हाई आए तो चाहिये कि मुँह पर हाथ रख ले

١٢٨- باب إِذَا تَثَاوَبَ فَلْيَضَعْ يَدَهُ عَلَى فِيهِ

6226. हमसे आ़सिम बिन अ़ली ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्ने अबी ज़िब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सईद मक़्बरी ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने बयान किया, उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह तआ़ला छींक को पसंद करता है क्योंकि वो कुछ दफ़ा स़ेह़त की अ़लामत है और जम्हाई को नापसंद करता है, इसलिये जब तुममें से कोई शख़्स़ छींके तो वो अल्ह़म्दुलिल्लाह कहे लेकिन जम्हाई लेना शैत़ान की त़रफ़ से होता है। इसलिये जब तुममें से किसी को जम्हाई आए तो वो अपनी क़ुव्वत व त़ाक़त के मुत़ाबिक़ उसे रोके इसलिये कि जब तुममें से कोई जम्हाई लेता है तो शैत़ान हंसता है। (राजेअ़ : 3289)

٦٢٢٦- حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ، عَنْ سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ ((إِنَّ اللهَ يُحِبُّ الْعُطَاسَ، وَيَكْرَهُ التَّثَاؤُبَ فَإِذَا عَطَسَ أَحَدُكُمْ وَحَمِدَ اللهَ كَانَ حَقًّا عَلَى كُلِّ مُسْلِمٍ سَمِعَهُ أَنْ يَقُولَ لَهُ: يَرْحَمُكَ اللهُ، وَأَمَّا التَّثَاؤُبُ فَإِنَّمَا هُوَ مِنَ الشَّيْطَانِ، فَإِذَا تَثَاوَبَ أَحَدُكُمْ فَلْيَرُدَّهُ مَا اسْتَطَاعَ، فَإِنَّ أَحَدَكُمْ إِذَا تَثَاءَبَ ضَحِكَ مِنْهُ الشَّيْطَانُ)). [راجع: ٣٢٨٩]

वो तो बनी आदम की दुश्मन है वो आदमी की सुस्ती और काहिली देखकर ख़ुश होता है।

79. किताबुल इस्तीज़ान

किताब इजाज़त लेने के बयान में

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बाब 1 : सलाम के शुरू होने का बयान

١- باب بَدْءِ السَّلاَمِ

इमाम बुख़ारी (रह़.) ने इस्तीज़ान के मुत्तसिल सलाम का बाब बाँधा उसमें इशारा है कि जो सलाम न करे उसे अंदर आने की इजाज़त न दी जाए। (क़स्तलानी)

6227. हमसे यह्या बिन जा'फ़र ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, उनसे मअ़मर ने, उनसे हम्माम ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह तआ़ला ने आदम को अपनी सूरत पर बनाया, उनकी लम्बाई साठ हाथ थी। जब उन्हें पैदा कर चुका तो फ़र्माया कि जाओ और उन फ़रिश्तों को बैठे हुए हैं, सलाम करो और सुनो कि तुम्हारे सलाम का क्या जवाब देते हैं, क्योंकि यही तुम्हारा और तुम्हारी औलाद का सलाम होगा। आदम (अ़लैहि.) ने कहा अस्सलामु अ़लैकुम! फ़रिश्तों ने जवाब दिया, अस्सलामु अ़लैकुम व रह़मतुल्लाह, उन्होंने आदम के सलाम पर, व रह़मतुल्लाह बढ़ा दिया। पस जो शख़्स भी जन्नत में जाएगा ह़ज़रत आदम (अ़लैहिस्सलाम) की सूरत के मुत़ाबिक़ होकर जाएगा। उसके बाद से फिर ख़िल्क़त का क़द व क़ामत कम होता गया। अब तक ऐसा ही होता रहा। (राजेअ़ : 3326)

٦٢٢٧- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنْ هَمَّامٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((خَلَقَ اللهُ آدَمَ عَلَى صُورَتِهِ طُولُهُ سِتُّونَ ذِرَاعًا، فَلَمَّا خَلَقَهُ قَالَ: اذْهَبْ فَسَلِّمْ عَلَى أُولَئِكَ النَّفَرِ مِنَ الْمَلاَئِكَةِ جُلُوسٌ فَاسْتَمِعْ مَا يُحَيُّونَكَ، فَإِنَّهَا تَحِيَّتُكَ وَتَحِيَّةُ ذُرِّيَّتِكَ فَقَالَ: السَّلاَمُ عَلَيْكُمْ فَقَالُوا: السَّلاَمُ عَلَيْكَ وَرَحْمَةُ اللهِ، فَزَادُوهُ وَرَحْمَةُ اللهِ فَكُلُّ مَنْ يَدْخُلُ الْجَنَّةَ عَلَى صُورَةِ آدَمَ فَلَمْ يَزَلِ الْخَلْقُ يَنْقُصُ بَعْدُ حَتَّى الآنَ)).

[راجع: ٣٣٢٦]

तश्रीह : मुम्किन है कि आइन्दा और कम हो जाए ये ज़्यादती और कमी ह़ज़ारों बरस में होती है। इंसान उसको क्या देख सकता है। जो लोग इस क़िस्म की अह़ादीष़ में शक करते हैं उनको ये समझ लेना चाहिए कि ह़ज़रत आदम की स़ह़ीह़ ह़दीष़ से ष़ाबित नहीं है तो मा'लूम नहीं कि ह़ज़रत आदम को कितने बरस गुज़र चुके हैं। न ये मा'लूम है कि आइन्दा दुनिया कितने बरस और रहेगी इसलिये क़द व क़ामत का कम हो जाना क़ाबिल इंकार नहीं। **ख़लक़ल्लाहु आदम अ़ला सूरतिही** की ज़मीर

आदम (अलैहिस्सलाम) की तरफ़ लौट सकती है या'नी आदम की उस सूरत पर जो अल्लाह के इल्म में थी। कुछ ने कहा मतलब ये है कि आदम पैदाइश से इसी सूरत पर थे जिस सूरत पर हमेशा रहे या'नी ये नहीं हुआ कि पैदा होते वक़्त वो छोटे बच्चे हों फिर बड़े हुए हों जैसा उनकी औलाद में होता है। कुछ ने ज़मीर को अल्लाह की तरफ़ लौटाया है मगर ये आयत **लैस कमिष्लिही शैउन** के ख़िलाफ़ होगा। **वल्लाहु आलमु बिस्सवाब व आमन्ना बिल्लाहि व बिरसूलिही (ﷺ)**

बाब 2 : अल्लाह तआला का सूरह नूर में ये फ़र्माना,

ऐ ईमानवालों! तुम अपने (ख़ास) घरों के सिवा दूसरे घरों में मत दाख़िल हो जब तक कि इजाज़त न हासिल कर लो और उनके रहने वालों को सलाम न कर लो। तुम्हारे हक़ में यही बेहतर है ताकि तुम ख़याल रखो। फिर अगर उनमें तुम्हें कोई (आदमी) न मा'लूम हो तो भी उनमें न दाख़िल हो जब तक कि तुमको इजाज़त न मिल जाए और अगर तुमसे कह दिया जाए कि लौट जाओ तो (बिला ख़फ़्गी) वापस लौट आया करो यही तुम्हारे हक़ में ज़्यादा सफ़ाई की बात है और अल्लाह तुम्हारे आमाल को ख़ूब जानता है। तुम पर कोई गुनाह इसमें नहीं है कि तुम उन मकानात में दाख़िल हो जाओ (जिनमें) कोई रहता न हो और उनमें तुम्हारा कुछ माल हो और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो और जो कुछ तुम छुपाते हो। और सईद बिन अबुल हसन ने (अपने भाई) हसन बसरी से कहा कि अजमी औरतें सीना और सर खोले रहती हैं तो हसन बसरी (रह.) ने कहा कि उनसे अपनी निगाह फेर ला। अल्लाह तआला फ़र्माता है, मोमिनों से कह दीजिए कि अपनी नज़रें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें। क़तादा ने कहा कि उससे मुराद ये है कि जो उनके लिये जाइज़ नहीं है (उससे हिफ़ाज़त करे) और आप कह दीजिए ईमानवालियों से कि अपनी नज़रें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त रखें और अपने सिंगार ज़ाहिर न होने दें। ख़ाइनतुल आयन से मुराद उस चीज़ की तरफ़ देखना है जिससे मना किया गया है। ज़ुहरी ने नाबालिग़ लड़कियों को देखने के सिलसिले में कहा कि उनकी भी किसी ऐसी चीज़ की तरफ़ नज़र न करनी चाहिये जिसे देखने से शह्वते नफ़्सानी पैदा हो सकती हो। ख़्वाह वो लड़की छोटी ही क्यूँ न हो। अता ने उन लौण्डियों की तरफ़ नज़र करने को मकरूह कहा है, जो मक्का में बेची जाती हैं। हाँ अगर उन्हें ख़रीदने का इरादा हो तो जाइज़ है। (अल्हम्दुलिल्लाह अब

٢- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى :

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لاَ تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ بُيُوتِكُمْ حَتَّى تَسْتَأْنِسُوا وَتُسَلِّمُوا عَلَى أَهْلِهَا ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ فَإِنْ لَمْ تَجِدُوا فِيهَا أَحَدًا فَلاَ تَدْخُلُوهَا حَتَّى يُؤْذَنَ لَكُمْ وَإِنْ قِيلَ لَكُمُ ارْجِعُوا فَارْجِعُوا هُوَ أَزْكَى لَكُمْ وَاللهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ مَسْكُونَةٍ فِيهَا مَتَاعٌ لَكُمْ وَاللهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ﴾ [النور، الآيات : ٢٧، ٢٨، ٢٩] وَقَالَ سَعِيدُ بْنُ أَبِي الْحَسَنِ لِلْحَسَنِ إِنَّ نِسَاءَ الْعَجَمِ يَكْشِفْنَ صُدُورَهُنَّ وَرُؤُوسَهُنَّ قَالَ: اصْرِفْ بَصَرَكَ عَنْهُنَّ قَوْلُ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿قُلْ لِلْمُؤْمِنِينَ يَغُضُّوا مِنْ أَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوا فُرُوجَهُمْ﴾ [النور : ٣٠] وَقَالَ قَتَادَةُ : عَمَّا لاَ يَحِلُّ لَهُمْ ﴿وَقُلْ لِلْمُؤْمِنَاتِ يَغْضُضْنَ مِنْ أَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوجَهُنَّ﴾ [النور : ٣١] خَائِنَةَ الأَعْيُنِ مِنَ النَّظَرِ إِلَى مَا نُهِيَ عَنْهُ وَقَالَ الزُّهْرِيُّ : فِي النَّظَرِ إِلَى الَّتِي لَمْ تَحِضْ مِنَ النِّسَاءِ لاَ يَصْلُحُ النَّظَرُ إِلَى شَيْءٍ مِنْهُنَّ مِمَّنْ يُشْتَهَى النَّظَرُ إِلَيْهِ، وَإِنْ كَانَتْ صَغِيرَةً، وَكَرِهَ عَطَاءٌ النَّظَرَ إِلَى الْجَوَارِي يُبَعْنَ

मक्का में ऐसे बाज़ार ख़त्म हो चुके हैं)।

بِمَكَّةَ إِلاَّ أَنْ يُرِيدَ أَنْ يَشْتَرِيَ.

6228. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, उन्ह सुलैमान बिन यसार ने ख़बर दी और उन्हें ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने ख़बर दी, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ह़ज़रत फ़ज़ल बिन अ़ब्बास (रज़ि.) को क़ुर्बानी के दिन अपनी सवारी पर अपने पीछे बिठाया। वो ख़ूबसूरत गोरे मर्द थे। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) लोगों को मसाइल बताने के लिये खड़े हो गये। उसी दौरान में क़बीला ख़ष्अम की एक ख़ूबसूरत औरत भी आँह़ज़रत (ﷺ) से मसला पूछने आई। फ़ज़ल भी उस औरत को देखने लगे। उसका हुस्न व जमाल उनको भला मा'लूम हुआ। आँह़ज़रत (ﷺ) ने अपना हाथ पीछे ले जाकर फ़ज़ल की ठोडी पकड़ी और उनका चेहरा दूसरी त़रफ़ कर दिया। फिर उस औरत ने कहा, या रसूलल्लाह! ह़ज्ज के बारे में अल्लाह का जो अपने बन्दों पर फ़रीज़ा है वो मेरे वालिद पर लागू होता है, जो बहुत बूढ़े हो चुके हैं और सवारी पर सीधे नहीं बैठ सकते। क्या अगर मैं उनकी त़रफ़ से ह़ज्ज कर लूँ तो उनका ह़ज्ज अदा हो जाएगा? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ हो जाएगा।

(राजेअ: 1513)

٦٢٢٨- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، قَالَ: أَخْبَرَنِي سُلَيْمَانُ بْنُ يَسَارٍ أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: أَرْدَفَ رَسُولُ اللهِ ﷺ الْفَضْلَ بْنَ عَبَّاسٍ يَوْمَ النَّحْرِ خَلْفَهُ عَلَى عَجُزِ رَاحِلَتِهِ وَكَانَ الْفَضْلُ رَجُلاً وَضِيئًا فَوَقَفَ النَّبِيُّ ﷺ لِلنَّاسِ يُفْتِيهِمْ، وَأَقْبَلَتِ امْرَأَةٌ مِنْ خَثْعَمَ وَضِيئَةٌ تَسْتَفْتِي رَسُولَ اللهِ ﷺ، فَطَفِقَ الْفَضْلُ يَنْظُرُ إِلَيْهَا وَأَعْجَبَهُ حُسْنُهَا، فَالْتَفَتَ النَّبِيُّ ﷺ وَالْفَضْلُ يَنْظُرُ إِلَيْهَا، فَأَخْلَفَ بِيَدِهِ فَأَخَذَ بِذَقَنِ الْفَضْلِ فَعَدَلَ وَجْهَهُ عَنِ النَّظَرِ إِلَيْهَا، فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّ فَرِيضَةَ اللهِ فِي الْحَجِّ عَلَى عِبَادِهِ أَدْرَكَتْ أَبِي شَيْخًا كَبِيرًا، لاَ يَسْتَطِيعُ أَنْ يَسْتَوِيَ عَلَى الرَّاحِلَةِ فَهَلْ يَقْضِي عَنْهُ أَنْ أَحُجَّ عَنْهُ قَالَ: ((نَعَمْ)).[راجع: ١٥١٣]

ह़दीष़ की बाब से मुत़ाबक़त ये है कि आपने फ़ज़ल बिन अ़ब्बास (रज़ि.) को ग़ैर औरत की त़रफ़ देखने से मना किया था।

6229. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अबू आ़मिर ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमसे ज़ुहैर ने बयान किया, उनसे ज़ैद बिन असलम ने बयान किया, उनसे अ़त़ा बिन यसार ने बयान किया और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया रास्तों पर बैठने से बचो! स़ह़ाबा ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! हमारी ये मजलिस तो बहुत ज़रूरी हैं, हम वहीं रोज़मर्रा बातचीत किया करते हैं। आपने फ़र्माया कि अच्छा जब तुम उन मजलिसों में बैठना ही चाहते हो तो रास्ते का ह़क़ अदा किया करो या'नी रास्ते को उसका ह़क़ दो। स़ह़ाबा ने अ़र्ज़ किया,

٦٢٢٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، أَخْبَرَنَا أَبُو عَامِرٍ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((إِيَّاكُمْ وَالْجُلُوسَ بِالطُّرُقَاتِ)) فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ مَا لَنَا مِنْ مَجَالِسِنَا بُدٌّ نَتَحَدَّثُ فِيهَا؟ فَقَالَ: ((إِذَا أَبَيْتُمْ إِلاَّ الْمَجْلِسَ، فَأَعْطُوا الطَّرِيقَ حَقَّهُ)). قَالُوا:

وَمَا حَقُّ الطَّرِيقِ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: ((غَضُّ الْبَصَرِ، وَكَفُّ الأَذَى، وَرَدُّ السَّلاَمِ، وَالأَمْرُ بِالْمَعْرُوفِ، وَالنَّهْيُ عَنِ الْمُنْكَرِ)). [راجع: ٢٤٦٥]

रास्ते का हक़ किया है या रसूलल्लाह! फ़र्माया (ग़ैर महरम औरतों को देखने से) नज़र नीची रखना, राहगीरों को न सताना, सलाम का जवाब देना, भलाई का हुक्म देना और बुराई से रोकना। (राजेअ : 2465)

٣- باب السَّلاَمُ اسْمٌ مِنْ أَسْمَاءِ اللهِ تَعَالَى

बाब 3 : सलाम के बयान में

﴿وَإِذَا حُيِّيتُم بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوا بِأَحْسَنَ مِنْهَا أَوْ رُدُّوهَا﴾ [النساء : ٨٦]

सलाम अल्लाह तआ़ला के नामों में से एक नाम है और अल्लाह पाक ने सूरह निसा में फ़र्माया और जब तुम्हें सलाम किया जाए तो तुम उससे बढ़कर अच्छा जवाब दो (या (कम अज़्कम) उतना ही जवाब दो। (अन् निसा : 86)

अस्सलामु अ़लैकुम के मा'नी हुए कि अल्लाह पाक तुमको महफ़ूज़ रखे हर बला से बचाए। ये बेहतरीन दुआ है जो एक मुसलमान अपने दूसरे मुसलमान भाई को मुलाक़ात पर पेश करता है। सलाम की तक्मील मुसाफ़ा से होती है मुसाफ़ा के मा'नी दोनों का अपने दाएँ हाथों को मिलाना उसमें सिर्फ़ दायाँ हाथ इस्ते'माल होना चाहिये।

٦٢٣٠- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ قَالَ: حَدَّثَنِي شَقِيقٌ، عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: كُنَّا إِذَا صَلَّيْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ قُلْنَا: السَّلاَمُ عَلَى اللهِ قَبْلَ عِبَادِهِ، السَّلاَمُ عَلَى جِبْرِيلَ، السَّلاَمُ عَلَى مِيكَائِيلَ، السَّلاَمُ عَلَى فُلاَنٍ، فَلَمَّا انْصَرَفَ النَّبِيُّ ﷺ أَقْبَلَ عَلَيْنَا بِوَجْهِهِ فَقَالَ ((إِنَّ اللهَ هُوَ السَّلاَمُ، فَإِذَا جَلَسَ أَحَدُكُمْ فِي الصَّلاَةِ فَلْيَقُلْ: التَّحِيَّاتُ للهِ، وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ، السَّلاَمُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ، السَّلاَمُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللهِ الصَّالِحِينَ، فَإِنَّهُ إِذَا قَالَ ذَلِكَ: أَصَابَ كُلَّ عَبْدٍ صَالِحٍ فِي السَّمَاءِ وَالأَرْضِ، أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ، ثُمَّ يَتَخَيَّرُ بَعْدُ مِنَ الْكَلاَمِ مَا شَاءَ)).

6230. हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे शक़ीक़ ने बयान किया और उनसे अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि जब हम (इब्तिदा-ए-इस्लाम में) नबी करीम (ﷺ) के साथ नमाज़ पढ़ते तो कहते सलाम हो अल्लाह पर उसके बन्दों से पहले, सलाम हो जिब्रईल पर, सलाम हो मीकाईल पर, सलाम हो फ़लाँ पर, फिर (एक मर्तबा) जब आँह़ज़रत (ﷺ) नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो हमारी त़रफ़ मुतवज्जह होकर फ़र्माया कि अल्लाह ही सलाम है। इसलिये जब तुममें से कोई नमाज़ में बैठे तो अत्तहिय्यातु लिल्लाहि वस़्सलवातु वत्तय्यिबातु अस्सलामु अ़लैक अय्युहन्नबिय्यु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू अस्सलामु अ़लैना व अला इबादिल्लाहिस़्स़ालिहीन। अल्अख़ पढ़ा करे। क्योंकि जब वो ये दुआ पढ़ेगा तो आसमान व ज़मीन के हर स़ालेह़ बन्दे को उसकी ये दुआ पहुँचेगी। अश्हदु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्न मुह़म्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुहू उसके बाद उसे इख़्तियार है जो दुआ चाहे पढ़े।

(मगर ये दरूद शरीफ़ पढ़ने के बाद है।)

(राजेअ : 831)

[راجع: ٨٣١]

बाब 4 : थोड़ी जमाअ़त बड़ी जमाअ़त को पहले सलाम करे

6231. हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल अबुल ह़सन ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें हम्माम बिन मुनब्बा ने और उन्हें ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया छोटा बड़े को सलाम करे, गुज़रने वाला बैठने वाले को सलाम करे और छोटी जमाअ़त बड़ी जमाअ़त को पहले सलाम करे। (दीगर मक़ाम : 6232–34)

٤- باب تَسْلِيمِ الْقَلِيلِ عَلَى الْكَثِيرِ

٦٢٣١- حدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ أَبُوالْحَسَنِ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((يُسَلِّمُ الصَّغِيرُ عَلَى الْكَبِيرِ، وَالْمَارُّ عَلَى الْقَاعِدِ، وَالْقَلِيلُ عَلَى الْكَثِيرِ)).[أطرافه في : ٦٢٣٢-٦٢٣٤].

बाब 5 : सवार पहले पैदल को सलाम करे

6232. हमसे मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको मुख़लद ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमको इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, उन्होने कहा कि मुझे ज़ियाद ने ख़बर दी, उन्होंने अ़ब्दुर्रह़मान बिन ज़ैद के ग़ुलाम ष़ाबित से सुना, और उन्होंने ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना। उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया सवार पैदल चलने वाले को सलाम करे, पैदल चलने वाला बैठे हुए को और कम ता'दाद वाले बड़ी ता'दाद वालों को। (राजेअ़ : 6231)

٥- باب تَسْلِيمِ الرَّاكِبِ عَلَى الْمَاشِي

٦٢٣٢- حدَّثَنَا مُحَمَّدٌ، أَخْبَرَنَا مَخْلَدٌ، أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ أَخْبَرَنِي زِيَادٌ أَنَّهُ سَمِعَ ثَابِتًا مَوْلَى عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ زَيْدٍ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((يُسَلِّمُ الرَّاكِبُ عَلَى الْمَاشِي، وَالْمَاشِي عَلَى الْقَاعِدِ، وَالْقَلِيلُ عَلَى الْكَثِيرِ)). [راجع: ٦٢٣١]

बाब 6 : चलने वाला पहले बैठे हुए शख़्स को सलाम करे

6233. हमसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको रौह़ बिन उ़बादा ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमसे इब्ने जुरैज ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे ज़ियाद ने ख़बर दी, उन्हे ष़ाबित ने ख़बर दी जो अ़ब्दुर्रह़मान बिन ज़ैद के ग़ुलाम हैं और उन्हें ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, सवार पैदल चलने वाले को सलाम करे, पैदल चलने वाला बैठे हुए शख़्स को और छोटी जमाअ़त पहले बड़ी जमाअ़त को सलाम करे। (राजेअ़ : 6231)

٦- باب تَسْلِيمِ الْمَاشِي عَلَى الْقَاعِدِ

٦٢٣٣- حدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ، حَدَّثَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، قَالَ: أَخْبَرَنِي زِيَادٌ أَنَّ ثَابِتًا أَخْبَرَهُ، وَهُوَ مَوْلَى عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ زَيْدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: ((يُسَلِّمُ الرَّاكِبُ عَلَى الْمَاشِي، وَالْمَاشِي عَلَى الْقَاعِدِ، وَالْقَلِيلُ عَلَى الْكَثِيرِ)). [راجع: ٦٢٣١]

बाब 7 : कम उ़म्र वाला पहले बड़ी उ़म्र वाले को सलाम करे

٧- باب تَسْلِيمِ الصَّغِيرِ عَلَى الْكَبِيرِ

6234. और इब्राहीम बिन त़ह्मान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे मूसा बिन उ़क्बा ने बयान किया, उनसे स़फ़्वान बिन सुलैम ने बयान किया, उनसे अ़त़ा बिन यसार ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया छोटा बड़े को सलाम करे, गुज़रने वाला बैठने वाले को और कम ता'दाद वाले बड़ी ता'दाद वालों को। (राजेअ़ : 6231)

٦٢٣٤- وقال إِبْرَاهِيمَ بْنُ طَهْمَانَ: عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ، عَنْ صَفْوَانَ بْنِ سُلَيْمٍ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((يُسَلِّمُ الصَّغِيرُ عَلَى الْكَبِيرِ، وَالْمَارُّ عَلَى الْقَاعِدِ، وَالْقَلِيلُ عَلَى الْكَثِيرِ)). [راجع: ٦٢٣١]

तश्रीह : इब्राहीम बिन त़ह्मान के अष़र को ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने अदबुल मुफ़रद में वस़्ल किया है और अबू नुऐ़म और बैहक़ी ने वस़्ल किया है और किरमानी ने ग़लती की जो ये कहा कि इमाम बुख़ारी (रह़.) ने ये ह़दीष़ इब्राहीम बिन त़ह्मान से बत़रीक़े मज़्कूरा सुनी होगी इसलिये वक़ाल इबाहीम कहा क्योंकि इमाम बुख़ारी (रह़.) ने इब्राहीम बिन त़ह्मान का ज़माना नहीं पाया तो किरमानी का ये कहना ग़लत़ है।

बाब 8 : सलाम को ज़्यादा से ज़्यादा रिवाज देना

٨- باب إِفْشَاءِ السَّلاَمِ

6235. हमसे क़ुतैबा ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे शैबानी ने, उनसे अश्अ़ष़ बिन अबी शअ़शाअ ने, उनसे मुआ़विया बिन सुवैद बिन मुक़र्रिन ने और उनसे बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें सात बातों का हुक्म दिया था। बीमार की मिज़ाजपुर्सी करने का, जनाज़े के पीछे चलने का, छींकने वाले के जवाब देने का, कमज़ोर की मदद करने का, मज़्लूम की मदद करने का, इफ़्शाअ सलाम (सलाम का जवाब देने और बकष़रत सलाम करने) का, क़सम (ह़क़) खाने वाले की क़सम पूरी करने का। और आँह़ज़रत (ﷺ) ने चाँदी के बर्तन में पीने से मना किया था और सोने की अंगूठी पहनने से हमें मना किया था। मयष़र (रेशम की ज़ीन) पर सवार होने से, रेशम और दीबा पहनने, क़स्सी (रेशमी कपड़ा) और इस्तब्रक़ पहनने से (मना किया था)। (राजेअ़ : 1239)

٦٢٣٥- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الشَّيْبَانِيِّ، عَنْ أَشْعَثَ بْنِ أَبِي الشَّعْثَاءِ، عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ سُوَيْدِ بْنِ مُقَرِّنٍ، عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: أَمَرَنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ بِسَبْعٍ: بِعِيَادَةِ الْمَرِيضِ، وَاتِّبَاعِ الْجَنَائِزِ، وَتَشْمِيتِ الْعَاطِسِ، وَنَصْرِ الضَّعِيفِ، وَعَوْنِ الْمَظْلُومِ، وَإِفْشَاءِ السَّلاَمِ، وَإِبْرَارِ الْمُقْسِمِ، وَنَهَى عَنِ الشُّرْبِ فِي الْفِضَّةِ، وَنَهَانَا عَنْ تَخَتُّمِ الذَّهَبِ، وَعَنْ رُكُوبِ الْمَيَاثِرِ، وَعَنْ لُبْسِ الْحَرِيرِ، وَالدِّيبَاجِ، وَالْقَسِّيِّ، وَالإِسْتَبْرَقِ. [راجع: ١٢٣٩]

ये समाजी शरई आदाब हैं जिनका मल्ह़ूज़े ख़ात़िर रखना बहुत ज़रूरी है।

बाब 9 : पहचान हो या न हो हर एक मुसलमान को सलाम करना

٩- باب السَّلاَمِ لِلْمَعْرِفَةِ وَغَيْرِ الْمَعْرِفَةِ

6236. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, कहा कि मुझसे यज़ीद ने बयान किया, उनसे अबुल ख़ैर ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र

٦٢٣٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، قَالَ حَدَّثَنِي يَزِيدُ، عَنْ أَبِي

(रज़ि.) ने कि एक साहब ने नबी करीम (ﷺ) से पूछा इस्लाम की कौनसी हालत अफ़ज़ल है? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ये कि (अल्लाह की मख़्लूक़ को) खाना खिलाओ और सलाम करो, उसे भी जिसे तुम पहचानते हो और उसे भी जिसे तुम नहीं पहचानते। (राजेअ : 12)

الْخَيْرِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو، أَنَّ رَجُلاً سَأَلَ النَّبِيَّ ﷺ أَيُّ الإِسْلاَمِ خَيْرٌ؟ قَالَ: ((تُطْعِمُ الطَّعَامَ، وَتَقْرَأُ السَّلاَمَ عَلَى مَنْ عَرَفْتَ، وَعَلَى مَنْ لَمْ تَعْرِفْ)). [راجع: ١٢]

इन अहादीष़ को रोज़ाना मा'मूल बनाना भी बेहद ज़रूरी है। अल्लाह हर मुसलमान को ये तौफ़ीक़ बख़्शे, आमीन।

6237. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, उनसे अता बिन यज़ीद लैष़ी ने और उनसे अबू अय्यूब (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, किसी मुसलमान के लिये जाइज़ नहीं कि वो अपने किसी (मुसलमान) भाई से तीन दिन से ज़्यादा ता'ल्लुक़ काटे कि जब वो मिलें तो ये एक तरफ़ मुँह फेर ले और दूसरा दूसरी तरफ़ और दोनों में अच्छा वो है जो सलाम पहले करे। और सुफ़यान ने कहा कि उन्होंने ये हदीष़ ज़ुहरी से तीन मर्तबा सुनी है। (राजेअ : 6077)

٦٢٣٧- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَزِيدَ اللَّيْثِيِّ، عَنْ أَبِي أَيُّوبَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لاَ يَحِلُّ لِمُسْلِمٍ أَنْ يَهْجُرَ أَخَاهُ فَوْقَ ثَلاَثٍ، يَلْتَقِيَانِ فَيَصُدُّ هَذَا وَيَصُدُّ هَذَا، وَخَيْرُهُمَا الَّذِي يَبْدَأُ بِالسَّلاَمِ)). وَذَكَرَ سُفْيَانُ أَنَّهُ سَمِعَهُ مِنْهُ ثَلاَثَ مَرَّاتٍ. [راجع: ٦٠٧٧]

बाब 10 : पर्दे की आयत के बारे में

١٠- باب آيَةِ الْحِجَابِ

6238. हमसे यह्या बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने वहब ने बयान किया, कहा मुझको यूनुस ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने कहा कि मुझे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने ख़बर दी कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) मदीना मुनव्वरह (हिजरत करके) तशरीफ़ लाए तो उनकी उम्र दस साल थी। फिर मैंने आँहज़रत (ﷺ) की ज़िंदगी के बाक़ी दस सालों में आपकी ख़िदमत की और मैं पर्दे के हुक्म के बारे में सबसे ज़्यादा जानता हूँ कि कब नाज़िल हुआ था। उबई बिन कअ़ब (रज़ि.) मुझसे इसके बारे में पूछा करते थे। पर्दे के हुक्म का नुज़ूल सबसे पहले उस रात हुआ जिसमें रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ज़ैनब बिन्ते जह़श (रज़ि.) से निकाह के बाद उनके साथ पहली ख़ल्वत की थी। आँहज़रत (ﷺ) उनके दूल्हा थे और आपने सहाबा को दा'वते वलीमा पर बुलाया था। खाने से फ़ारिग़ होकर सब लोग चले गये लेकिन चंद आदमी आपके पास बैठे रह गये और बहुत देर

٦٢٣٨- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ أَنَّهُ كَانَ ابْنَ عَشْرِ سِنِينَ مَقْدَمَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَدِينَةَ فَخَدَمْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَشْرًا حَيَاتَهُ وَ كُنْتُ أَعْلَمَ النَّاسِ بِشَأْنِ الْحِجَابِ حِينَ أُنْزِلَ وَقَدْ كَانَ أُبَيُّ بْنُ كَعْبٍ يَسْأَلُنِي عَنْهُ وَكَانَ أَوَّلَ مَا نَزَلَ فِي مُبْتَنَى رَسُولِ اللهِ ﷺ بِزَيْنَبَ ابْنَةِ جَحْشٍ، أَصْبَحَ النَّبِيُّ ﷺ بِهَا عَرُوسًا فَدَعَا الْقَوْمَ فَأَصَابُوا مِنَ الطَّعَامِ، ثُمَّ خَرَجُوا وَبَقِيَ

तक वहीं ठहरे रहे। आँहज़रत (ﷺ) उठकर बाहर तशरीफ़ ले गये और मैं भी आँहज़रत (ﷺ) के साथ चला गया ताकि वो लोग भी चले जाएँ। आँहज़रत (ﷺ) चलते रहे और मैं भी आँहज़रत (ﷺ) के साथ चलता रहा और हज़रत आइशा (रज़ि.) के हुज्रे की चौखट तक पहुँचे। आँहज़रत (ﷺ) ने समझा कि वो लोग अब चले गये हैं। इसलिये वापस तशरीफ़ लाए और मैं भी आँहज़रत (ﷺ) के साथ वापस आया लेकिन आप जब ज़ैनब (रज़ि.) के हुज्रे में दाख़िल हुए तो वो लोग अभी बैठे हुए थे और अभी तक वापस नहीं गये थे। आँहज़रत (ﷺ) दोबारा वहाँ से लौट गये और मैं भी आपके साथ लौट गया। जब आप आइशा (रज़ि.) के हुज्रे की चौखट तक पहुँचे तो आपने समझा कि वो लोग निकल चुके होंगे। फिर आप लौटकर आए और मैं भी आपके साथ लौट आया तो वाक़ई वो लोग जा चुके थे। फिर पर्दे की आयत नाज़िल हुई और आँहज़रत (ﷺ) ने मेरे और अपने दरम्यान पर्दा लटका लिया। (राजेअ : 4791)

مِنهُمْ رَهْطٌ عِنْدَ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَأَطَالُوا الْمَكْثَ فَقَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ، فَخَرَجَ وَخَرَجْتُ مَعَهُ كَيْ يَخرجُو فَمَشَى رَسُولُ اللهِ ﷺ وَمَشَيْتُ مَعَهُ، حَتَّى جَاءَ عَتَبَةَ حُجْرَةِ عَائِشَةَ، ثُمَّ ظَنَّ رَسُولُ اللهِ ﷺ أَنَّهُمْ خَرَجُوا فَرَجَعَ وَرَجَعْتُ مَعَهُ حَتَّى دَخَلَ عَلَى زَيْنَبَ، فَإِذَا هُمْ جُلُوسٌ لَمْ يَتفَرَّقُوا فَرَجَعَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَرَجَعْتُ مَعَهُ، حَتَّى بَلَغَ عَتَبَةَ حُجْرَةِ عَائِشَةَ فَظَنَّ أَنْ قَدْ خَرَجُوا، فَرَجَعَ وَرَجَعْتُ فَإِذَا هُمْ قَدْ خَرَجُوا فَأَنْزَلَ آيَةَ الْحِجَابِ فَضَرَبَ بَيْنِي وَبَيْنَهُ سِتْرًا.

[راجع: ٤٧٩١]

ऐसे मौक़े पर साहिबे ख़ाना की ज़रूरत का ख़्याल रखना बेहद ज़रूरी है।

6239. हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, कहा हमसे मुअतमिर ने बयान किया, कहा मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया कि उनसे अबु मिज्लज़ ने बयान किया और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि जब नबी करीम (ﷺ) ने ज़ैनब (रज़ि.) से निकाह किया तो लोग अंदर आए और खाना खाया फिर बैठ कर बातें करते रहे। आँहज़रत (ﷺ) ने इस तरह इज़्हार किया गोया आप खड़े होना चाहते हैं। लेकिन वो खड़े नहीं हुए जब आँहज़रत (ﷺ) ने ये देखा तो आप तो खड़े हो गये। आपके खड़े होने पर क़ौम के जिन लोगों को खड़ा होना था वो भी खड़े हो गये लेकिन कुछ लोग अब भी बैठे रहे और जब आँहज़रत (ﷺ) अंदर दाख़िल होने के लिये तशरीफ़ लाए तो कुछ लोग बैठे हुए थे (आप वापस हो गये) और फिर जब वो लोग भी खड़े हुए और चले गये तो मैंने आँहज़रत (ﷺ) को इसकी ख़बर दी। आँहज़रत (ﷺ) तशरीफ़ लाए और अंदर दाख़िल हो गये। मैंने भी अंदर जाना चाहा लेकिन आँहज़रत (ﷺ) ने मेरे और अपने बीच

٦٢٣٩- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ، حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ، قَالَ أَبِي، حَدَّثَنَا أَبُو مِجْلَزٍ، عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: لَمَّا تَزَوَّجَ النَّبِيُّ ﷺ زَيْنَبَ دَخَلَ الْقَوْمُ فَطَعِمُوا، ثُمَّ جَلَسُوا يَتَحَدَّثُونَ فَأَخَذَ كَأَنَّهُ يَتَهَيَّأُ لِلْقِيَامِ، فَلَمْ يَقُومُوا فَلَمَّا رَأَى ذَلِكَ قَامَ، فَلَمَّا قَامَ قَامَ مَنْ قَامَ مِنَ الْقَوْمِ، وَقَعَدَ بَقِيَّةُ الْقَوْمِ وَإِنَّ النَّبِيَّ ﷺ جَاءَ لِيَدْخُلَ فَإِذَا الْقَوْمُ جُلُوسٌ، ثُمَّ إِنَّهُمْ قَامُوا فَانْطَلَقُوا فَأَخْبَرْتُ النَّبِيَّ ﷺ فَجَاءَ حَتَّى دَخَلَ، فَذَهَبْتُ أَدْخُلُ فَأَلْقَى الْحِجَابَ بَيْنِي وَبَيْنَهُ، وَأَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى: ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لاَ تَدْخُلُوا بُيُوتَ النَّبِيِّ﴾ [الأحزاب : ٥٣]

पर्दा डाल लिया। और अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल की। ऐ ईमानवालों! नबी के घर में न दाख़िल हो, आख़िर तक। (राजेअ : 4791)

الآيَةَ. [راجع: ٤٧٩١]

कुछ नुस्ख़ों में यहाँ ये इबारत और ज़ाइद है, **क़ाल अबू अब्दुल्लाह फ़ीहि मिनल्फ़िक्हि अन्नहू लम यस्ताज़िन्हुम हीन काम व खरज व फ़ीहि तहय्युअन लिल्क़ियाम व हुव युरीदु अंय्यकुमू.** हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा इस हदीष से मसला निकला कि आँहज़रत (ﷺ) उठ खड़े हुए और चले उनसे इजाज़त नहीं ली और ये भी निकला कि आपने उनके सामने उठने की तैयारी की। आपका मतलब ये था कि वो भी उठ जाएँ तो मा'लूम हुआ कि जब लोग बेकार बैठे रहें और साहिबे ख़ाना तंग हो जाए तो उनकी बग़ैर इजाज़त उठकर चले जाना या उनको उठाने के लिये उठने की तैयारी करना दुरुस्त है।

6240. हमसे इस्हाक़ ने बयान किया, कहा हमको यअक़ूब ने ख़बर दी, मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उनसे सालेह ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, कहा कि मुझे उर्वा बिन ज़ुबैर (रज़ि.) ने ख़बर दी और उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतह्हरा आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) आँहज़रत (ﷺ) से कहा करते थे कि आँहुज़ूर (ﷺ) अज़्वाजे मुतह्हरात का पर्दा कराएँ। बयान किया कि आँहुज़ूर (ﷺ) ने ऐसा नहीं किया और अज़्वाजे मुतह्हरात रफ़ा-ए-हाजत के लिये सिर्फ़ रात ही में एक वक़्त निकलती थीं (उस वक़्त घरों में बैतुल ख़ला नहीं थे) एक मर्तबा सौदा बिन्ते ज़म्आ (रज़ि.) बाहर गई हुई थीं। उनका क़द लम्बा था। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने उन्हें देखा। उस वक़्त वो मजलिस मे बैठे हुए थे। उन्होंने कहा सौदा! मैंने आपको पहचान लिया। ये उन्होंने इसलिये कहा क्योंकि वो पर्दे के हुक्म के नाज़िल होने के बड़े मुतमन्नी थे। बयान किया कि फिर अल्लाह तआला ने पर्दे की आयत नाज़िल की। (राजेअ : 146)

٦٢٤٠- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ، أَخْبَرَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ صَالِحٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ: كَانَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ يَقُولُ لِرَسُولِ اللهِ ﷺ: احْجُبْ نِسَاءَكَ قَالَتْ فَلَمْ يَفْعَلْ، وَكَانَ أَزْوَاجُ النَّبِيِّ ﷺ يَخْرُجْنَ لَيْلاً إِلَى لَيْلٍ قِبَلَ الْمَنَاصِعِ، فَخَرَجَتْ سَوْدَةُ بِنْتُ زَمْعَةَ وَكَانَتِ امْرَأَةً طَوِيلَةً فَرَآهَا عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ وَهُوَ فِي الْمَجْلِسِ فَقَالَ: عَرَفْتُكِ يَا سَوْدَةُ حِرْصًا عَلَى أَنْ يُنْزَلَ الْحِجَابُ قَالَتْ: فَأَنْزَلَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ آيَةَ الْحِجَابِ. [راجع: ١٤٦]

तश्रीह : इस हदीष से ये निकला कि अज़्वाजे मुतह्हरात के लिये जिस पर्दे का हुक्म दिया गया वो ये था कि घर से बाहर ही न निकलें या निकलें तो मुहाफ़ा या मुहमल वग़ैरह में कि उनका जिस्म भी मा'लूम न हो सके मगर ये पर्दा आँहज़रत (ﷺ) की बीवियों से ख़ास था। दूसरी मुसलमान औरतो को ऐसा हुक्म न था वो पर्दे के साथ बराबर बाहर निकला करती थीं।

बाब 11 : इजाज़त लेने का इसलिये हुक्म दिया गया है कि नज़र न पड़े

١١- باب الاِسْتِئْذَانُ مِنْ أَجْلِ الْبَصَرِ

6241. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया (सुफ़यान ने कहा कि) मैंने ये हदीष ज़ुह्री से सुनकर इस तरह याद की है कि जैसे तू इस वक़्त यहाँ मौजूद हो और उनसे सहल बिन सअद ने

٦٢٤١- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، قَالَ الزُّهْرِيُّ : حَفِظْتُهُ كَمَا أَنَّكَ هَهُنَا، عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ: اطَّلَعَ رَجُلٌ مِنْ جُحْرٍ فِي حُجَرِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ

कि एक शख़्स ने नबी करीम (ﷺ) के किसी हुज्रे में सूराख़ से देखा, आँहज़रत (ﷺ) के पास उस वक़्त एक कँघा था जिससे आप सरे मुबारक खुजला रहे थे। आँहज़रत (ﷺ) ने उससे फ़र्माया कि अगर मुझे मा'लूम होता कि तुम झाँक रहे हो तो कँघा तुम्हारी आँख में चुभो देता (अंदर दाख़िल होने से पहले) इजाज़त माँगना तो है ही इसलिये कि (अंदर की कोई ज़ाती चीज़) न देखी जाए। (राजेअ : 5924)

وَسَلَّمَ وَمَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِدْرَيٌ يَحُكُّ بِهِ رَأْسَهُ فَقَالَ: ((لَوْ أَعْلَمُ أَنَّكَ تَنْظُرُ لَطَعَنْتُ بِهِ فِي عَيْنِكَ، إِنَّمَا جُعِلَ الاِسْتِئْذَانُ مِنْ أَجْلِ الْبَصَرِ)).

[راجع: ٥٩٢٤]

6242. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे उबैदुल्लाह बिन अबीबक्र ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि एक साहब नबी करीम (ﷺ) के किसी हुज्रे में झांककर देखने लगा तो आँहज़रत (ﷺ) उनकी तरफ़ तीर का फल या बहुत से फल लेकर बढ़े, गोया मैं आँहज़रत (ﷺ) को देख रहा हूँ उन साहब की तरफ़ इस तरह चुपके चुपके तशरीफ़ लाए। (दीगर 6889,6990)

٦٢٤٢- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ أَنَّ رَجُلاً اطَّلَعَ مِنْ بَعْضِ حُجَرِ النَّبِيِّ ﷺ فَقَامَ إِلَيْهِ النَّبِيُّ ﷺ بِمِشْقَصٍ أَوْ بِمَشَاقِصَ فَكَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَيْهِ يَخْتِلُ الرَّجُلَ لِيَطْعُنَهُ.

[طرفاه في: ٦٨٨٩، ٦٩٠٠].

गोया आप वो फल उन्हें चुभो देंगे।

बाब 12 : शर्मगाह के अलावा दूसरे हिस्सों के ज़िना का बयान

١٢- باب زِنَا الْجَوَارِحِ دُونَ الْفَرْجِ

6243. हमसे हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे इब्ने ताउस ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि अबू हुरैरह (रज़ि.) की हदीष से ज़्यादा सग़ीरा गुनाहों से मुशाबेह मैंने और कोई चीज़ नहीं देखी। (हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. ने जो बातें बयान की हैं वो मुराद हैं) मुझसे महमूद ने बयान किया, कहा हमको अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने ख़बर दी, कहा हमको मअमर ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने ताउस ने, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि मैंने कोई चीज़ सग़ीरा गुनाहों से मुशाबेह उस हदीष के मुक़ाबले में नहीं देखी जिसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से नक़ल किया है कि अल्लाह तआला ने इंसानों के मामले में ज़िना में से उसका हिस्सा लिख दिया है जिससे वो ला महाला दो चार होगा पस आँख का ज़िना देखना, ज़ुबान का ज़िना बोलना है, दिल का ज़िना ये है कि वो ख़्वाहिश और आरज़ू करता है फिर शर्मगाह उस ख़्वाहिश को सच्चा करती है या झुठला देती है। (दीगर : 6612)

٦٢٤٣- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ ابْنِ طَاوُسٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : لَمْ أَرَ شَيْئًا أَشْبَهَ بِاللَّمَمِ مِنْ قَوْلِ أَبِي هُرَيْرَةَ، وَحَدَّثَنِي مَحْمُودٌ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ ابْنِ طَاوُسٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ : مَا رَأَيْتُ شَيْئًا أَشْبَهَ بِاللَّمَمِ مِمَّا قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((إِنَّ اللهَ كَتَبَ عَلَى ابْنِ آدَمَ حَظَّهُ مِنَ الزِّنَا، أَدْرَكَ ذَلِكَ لاَ مَحَالَةَ، فَزِنَا الْعَيْنِ النَّظَرُ، وَزِنَا اللِّسَانِ الْمَنْطِقُ، وَالنَّفْسُ تَمَنَّى وَتَشْتَهِي، وَالْفَرْجُ يُصَدِّقُ ذَلِكَ كُلَّهُ أَوْ يُكَذِّبُهُ)).[طرفه في : ٦٦١٢].

तश्रीह : मत्लब ये है कि नफ़्स में ज़िना की ख़्वाहिश पैदा होती है अब अगर शर्मगाह से ज़िना किया तो ज़िना का गुनाह लिखा गया और अगर अल्लाह के डर से ज़िना से बाज़ रहा तो ख़्वाहिश ग़लत और झूठ हो गई इस सूरत में मुआफ़ी हो जाएगी।

बाब 13 : सलाम और इजाज़त तीन मर्तबा होनी चाहिये

6244. हमसे इस्हाक़ ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुस्समद ने ख़बर दी, उन्हें अब्दुल्लाह बिन मुषन्ना ने ख़बर दी, उनसे षुमामा बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब किसी को सलाम करते (और जवाब न मिलता) तो तीन मर्तबा सलाम करते थे और जब आप कोई बात फ़र्माते तो (ज़्यादा से ज़्यादा) तीन मर्तबा उसे दोहराते। (राजेअ़ : 94)

6245. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ख़ुसैफ़ा ने बयान किया, उनसे बुस्र बिन सईद ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं अंसार की एक मजलिस में था कि अबू मूसा (रज़ि.) तशरीफ़ लाए जैसे घबराए हुए हों। उन्होने कहा कि मैंने उ़मर (रज़ि.) के यहाँ तीन मर्तबा अंदर आने की इजाज़त चाही लेकिन मुझे कोई जवाब नहीं मिला, इसलिये वापस चला आया (जब उ़मर रज़ि. को मा'लूम हुआ) तो उन्होंने दरयाफ़्त किया कि (अंदर आने में) क्या बात मानेअ़ थी? मैंने कहा कि मैंने तीन मर्तबा अंदर आने की इजाज़त मांगी और जब मुझे कोई जवाब नहीं मिला तो वापस चला गया और रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया है कि जब तुममें से कोई किसी से तीन मर्तबा इजाज़त चाहे और इजाज़त न मिले तो वापस चला जाना चाहिये। उ़मर (रज़ि.) ने कहा वल्लाह! तुम्हें इस हदीष की स़ेह्हत के लिये कोई गवाह लाना होगा। (अबू मूसा रज़ि. ने मजलिस वालों से पूछा) क्या तुममें कोई ऐसा है जिसने आँहज़रत (ﷺ) से ये हदीष सुनी हो? उबई बिन कअ़ब (रज़ि.) ने कहा कि अल्लाह की क़सम! तुम्हारे साथ (इसकी गवाही देने को सिवा (जमाअ़त मे सबसे कम उ़म्र शख़्स के और कोई नहीं खड़ा होगा। अबू सईद (रज़ि.) ने कहा और मैं ही जमाअ़त का वो सबसे कम उ़म्र आदमी था। मैं उनके साथ उठकर गया और उ़मर (रज़ि.) से कहा कि वाक़ई नबी करीम (ﷺ) ने ऐसा फ़र्माया है। और इब्नुल मुबारक ने

١٣- باب التَّسْلِيمِ وَالاِسْتِئْذَانِ ثَلاَثًا

٦٢٤٤- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا ثُمَامَةُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَانَ إِذَا سَلَّمَ سَلَّمَ ثَلاَثًا وَإِذَا تَكَلَّمَ بِكَلِمَةٍ أَعَادَهَا ثَلاَثًا.
[راجع: ٩٤]

٦٢٤٥- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ خُصَيْفَةَ، عَنْ بُسْرِ بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: كُنْتُ فِي مَجْلِسٍ مِنْ مَجَالِسِ الأَنْصَارِ إِذْ جَاءَ أَبُو مُوسَى كَأَنَّهُ مَذْعُورٌ، فَقَالَ: اسْتَأْذَنْتُ عَلَى عُمَرَ ثَلاَثًا فَلَمْ يُؤْذَنْ لِي، فَرَجَعْتُ فَقَالَ : مَا مَنَعَكَ؟ قُلْتُ اسْتَأْذَنْتُ ثَلاَثًا فَلَمْ يُؤْذَنْ لِي فَرَجَعْتُ، وَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((إِذَا اسْتَأْذَنَ أَحَدُكُمْ ثَلاَثًا فَلَمْ يُؤْذَنْ لَهُ فَلْيَرْجِعْ))، فَقَالَ: وَاللهِ لَتُقِيمَنَّ عَلَيْهِ بَيِّنَةً أَمِنْكُمْ أَحَدٌ سَمِعَهُ مِنَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ فَقَالَ أُبَيُّ بْنُ كَعْبٍ: وَاللهِ لاَ يَقُومُ مَعَكَ إِلاَّ أَصْغَرُ الْقَوْمِ، فَكُنْتُ أَصْغَرَ الْقَوْمِ فَقُمْتُ مَعَهُ فَأَخْبَرْتُ عُمَرَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ ذَلِكَ. وَقَالَ ابْنُ الْمُبَارَكِ، أَخْبَرَنِي ابْنُ عُيَيْنَةَ حَدَّثَنِي يَزِيدُ بْنُ خُصَيْفَةَ، عَنْ بُسْرٍ سَمِعْتُ أَبَا سَعِيدٍ

بِهٰذَا.
[راجع: ۲۰۶۲]

बयान किया कि मुझको सुफ़यान बिन उ़ययना ने ख़बर दी, कहा मुझसे यज़ीद बिन ख़ुसैफ़ा ने बयान किया, उन्होंने बुस्र बिन सईद से, कहा मैंने अबू सईद (रज़ि.) से सुना, फिर यही ह़दीष़ नक़ल की। (राजेअ : 2062)

तश्रीह़ : ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने उस गवाही के बाद फ़ौरन ह़दीष़ को तस्लीम कर लिया। मोमिन की शान यही होनी चाहिये रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अरज़ाहु। पस बुस्र का सिमाअ़ अबू सईद से ष़ाबित हुआ इस रिवायत से ये भी ष़ाबित हुआ कि एक रावी की रिवायत भी जब वो ष़िक़ह हो हुज्जत है और क़यास को उसके मुक़ाबिल तर्क कर देंगे। अहले ह़दीष़ का यही क़ौल है। कुछ नुस्ख़ों में ये इबारत ज़ाइद है, **क़ाल अबू अ़ब्दिल्लाह अराद उ़मरू इन्तष़बतित्तष़ब्बुतु ला अंल्ला युजीज़ु ख़ब्रूल्वाहिदि** या'नी इमाम बुख़ारी (रह़.) ने कहा कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने जो अबू मूसा (रज़ि.) से गवाह लाने को कहा तो उनका मत़लब ये था कि ह़दीष़ कीऔर ज़्यादा मज़बूती हो जाए ये सबब नहीं था कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) एक स़ह़ाबी की रिवायतकर्दा ह़दीष़ को सह़ीह़ नहीं समझते थे।

बाब 14 : अगर कोई शख़्स़ बुलाने पर आया हो तो क्या उसे भी अंदर दाख़िल

١٤- باب إِذَا دُعِيَ الرَّجُلُ فَجَاءَ هَلْ يَسْتَأْذِنُ؟

وَقَالَ سَعِيدٌ: عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَبِي رَافِعٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((هُوَ إِذْنُهُ)).

होने के लिये इज़्न लेना चाहिये या नहीं सईद ने क़तादा से बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू राफ़ेअ़ ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, यही (बुलाना) उसके लिये इजाज़त है।

तश्रीह़ : अब फिर इजाज़त लेने की ज़रूरत नहीं । बाब की ह़दीष़ में बावजूद दा'वत के इजाज़त लेने का ज़िक्र है। दोनों में तत़्बीक़ यूँ है अगर बुलाते ही कोई चला जाए तब नये इज़्न की ज़रूरत नहीं वरना इजाज़त लेना चाहिये।

٦٢٤٦- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ ذَرٍّ، وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا عُمَرُ بْنُ ذَرٍّ، أَخْبَرَنَا مُجَاهِدٌ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: دَخَلْتُ مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَوَجَدَ لَبَنًا فِي قَدَحٍ فَقَالَ: ((أَبَا هِرٍّ الْحَقْ أَهْلَ الصُّفَّةِ فَادْعُهُمْ إِلَيَّ))، قَالَ : فَأَتَيْتُهُمْ فَدَعَوْتُهُمْ فَأَقْبَلُوا فَاسْتَأْذَنُوا فَأَذِنَ لَهُمْ فَدَخَلُوا.
[راجع: ٥٣٧٥]

6246. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, कहा हमसे उ़मर बिन ज़र्र ने बयान किया (दूसरी सनद) और हमसे मुह़म्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, कहा हमको उ़मर बिन ज़र्र ने ख़बर दी, कहा हमको मुजाहिद ने ख़बर दी और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ (आपके घर में) दाख़िल हुआ, आँह़ज़रत (ﷺ) ने एक बड़े प्याले में दूध पाया तो फ़र्माया, अबू हुरैरह! अहले सुफ़्फ़ा के पास जा और उन्हे मेरे पास बुला ला। मैं उनके पास आया और उन्हें बुला लाया। वो आए और (अंदर आने की) इजाज़त चाही फिर जब इजाज़त दी गई तो दाख़िल हुए। बाब और ह़दीष़ में मुत़ाबक़त ज़ाहिर है। (राजेअ़ : 5375)

बाब 15 : बच्चों को सलाम करना

١٥- باب التَّسْلِيمِ عَلَى الصِّبْيَانِ

٦٢٤٧- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الْجَعْدِ، أَخْبَرَنَا

6247. हमसे अ़ली बिन अल जअ़द ने बयान किया, उन्होंने

कहा हमको शुअबा ने ख़बर दी, उन्हें सय्यार ने, उन्होंने ष़ाबित बिनानी से रिवायत की, उन्हें अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि आप बच्चों के पास से गुज़रे तो उन्हें सलाम किया और फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) भी ऐसा ही करते थे।

شُعْبَةُ، عَنْ سَيَّارٍ، عَنْ ثَابِتٍ الْبُنَانِيِّ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ مَرَّ عَلَى صِبْيَانٍ فَسَلَّمَ عَلَيْهِمْ وَقَالَ : كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَفْعَلُهُ.

बाब 16 : मर्दों और औरतों को सलाम करना और औरतों का मर्दों को

١٦- باب تَسْلِيمِ الرِّجَالِ عَلَى النِّسَاءِ، وَالنِّسَاءِ عَلَى الرِّجَالِ

तश्रीह : ह़दीष़ की रू से तो ये जाइज़ निकलता है मगर फ़ुक़हा ये कहते हैं कि जवान औरतो को मर्दों का या जवान मर्दों को जवान औरतों का सलाम करना बेहतर नहीं, ऐसा न हो कि कोई फ़ित्ना पैदा हो जाए। मैं (वह़ीदुज़्ज़माँ) मैं कहता हूँ कि फ़ित्ने के ख़्याल से शरई हुक्म बदल नहीं सकता। जब कलाम जाइज़ है तो सलाम का मना होना अ़जीब बात है। ह़दीष़ में **तक़रउस्सलाम अ़ला मन अ़रफ़्त व अ़ला मल्लम तअ़रिफ़** है जो मर्द औरत सबको शामिल है।

6248. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबी ह़ाज़िम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे सहल (रज़ि.) ने कि हम जुम्आ के दिन ख़ुश हुआ करते थे। मैंने अ़र्ज़ किया कि किसलिये? फ़र्माया कि हमारी एक बुढ़िया थीं जो मुक़ामे बिज़ाआ जाया करती थीं। इब्ने सलाम ने कहा कि बिज़ाआ मदीना मुनव्वरह का खजूर का एक बाग़ था। फिर वो वहाँ से चुक़न्दर लाती थीं और उसे हाँडी में डालती थीं और जौ के कुछ दाने पीसकर (उसमें मिलाती थीं) जब हम जुम्आ की नमाज़ पढ़कर वापस होते तो उन्हें सलाम करने आते और वो चुक़न्दर की जड़ में आटा मिली हुई दा'वत हमारे सामने रखती थीं, हम इस वजह से जुम्आ के दिन ख़ुश हुआ करते थे और क़ैलूला या दोपहर का खाना हम जुम्आ के बाद करते थे। (राजेअ़: 938)

٦٢٤٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ سَهْلٍ قَالَ: كُنَّا نَفْرَحُ يَوْمَ الْجُمُعَةِ قُلْتُ: وَلِمَ قَالَ كَانَتْ لَنَا عَجُوزٌ تُرْسِلُ إِلَى بِضَاعَةَ قَالَ ابْنُ مَسْلَمَةَ: نَخْلٌ بِالْمَدِينَةِ، فَتَأْخُذُ مِنْ أُصُولِ السِّلْقِ فَتَطْرَحُهُ فِي قِدْرٍ وَتُكَرْكِرُ حَبَّاتٍ مِنْ شَعِيرٍ فَإِذَا صَلَّيْنَا الْجُمُعَةَ انْصَرَفْنَا وَنُسَلِّمُ عَلَيْهَا فَتُقَدِّمُهُ إِلَيْنَا فَنَفْرَحُ مِنْ أَجْلِهِ وَمَا كُنَّا نَقِيلُ وَلاَ نَتَغَدَّى إِلاَّ بَعْدَ الْجُمُعَةِ.[راجع: ٩٣٨]

6249. हमसे इब्ने मुक़ातिल ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ आइश! ये जिब्रईल (अ़लैहिस्सलाम) हैं। तुम्हें सलाम कहते हैं। बयान किया कि मैंने अ़र्ज़ किया व अ़लैहिस्सलाम व रहमतुल्लाह, आप देखते हैं जो हम नहीं देख सकते। उम्मुल मोमिनीन का इशारा आँहज़रत (ﷺ) की तरफ़ था। मअ़मर के साथ इस ह़दीष़ को शुऐ़ब और यूनुस और

٦٢٤٩- حَدَّثَنَا ابْنُ مُقَاتِلٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((يَا عَائِشَةُ هَذَا جِبْرِيلُ يَقْرَأُ عَلَيْكِ السَّلاَمَ)) قَالَتْ: قُلْتُ وَعَلَيْهِ السَّلاَمُ وَرَحْمَةُ اللهِ تَرَى مَا لاَ نَرَى تُرِيدُ رَسُولَ اللهِ ﷺ.

नोअमान ने भी ज़ुहरी से रिवायत किया है। यूनुस और नोअमान की रिवायतों में वबरकातुहू का लफ़्ज़ ज़्यादा है। (राजेअ: 3217)

تَابَعَهُ شُعَيْبٌ وَقَالَ يُونُسُ وَالنُّعْمَانُ : عَنِ الزُّهْرِيِّ وَبَرَكَاتُهُ. [راجع: ٣٢١٧]

तश्रीह : इस हदीष़ की मुताबक़त तर्जुम-ए-बाब से यूँ है कि हज़रत जिब्रईल (अलैहि.) आँहज़रत (ﷺ) के पास दह्या कल्बी की सूरत में आया करते थे और दह्या मर्द थे तो उनका हुक्म भी मर्द का हुआ और हदीष़ से मर्द का औरत को और औरत का मर्द को सलाम करना षाबित हुआ ख़्वाह वो अजनबी ही क्यूँ न हों मगर पर्दा ज़रूरी है।

बाब 17 : अगर घर वाला पूछे कि कौन है उसके जवाब मे कोई कहे कि मैं हूँ और नाम न ले

١٧- باب إِذَا قَالَ : مَنْ ذَا؟ فَقَالَ: أَنَا؟

6250. हमसे अबुल वलीद हिशाम बिनअब्दुल मलिक ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन मुंकदिर ने कहा कि मैंने हज़रत जाबिर (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में उस क़र्ज़ के बारे में ह़ाज़िर हुआ जो मेरे वालिद पर था। मैंने दरवाज़ा खटखटाया। आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा, कौन हैं? मैंने कहा, मैं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, मैं मैं जैसे आपने इस जवाब को नापसंद फ़र्माया। (राजेअ: 2127)

٦٢٥٠- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ هِشَامُ بْنُ عَبْدِ الْمَلِكِ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ قَالَ: سَمِعْتُ جَابِرًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ فِي دَيْنٍ كَانَ عَلَى أَبِي فَدَقَقْتُ الْبَابَ فَقَالَ: ((مَنْ ذَا؟)) فَقُلْتُ: أَنَا فَقَالَ: ((أَنَا أَنَا)) كَأَنَّهُ كَرِهَهَا. [راجع: ٢١٢٧]

क्योंकि कुछ वक़्त सिर्फ़ आवाज़ से साहिबे ख़ाना पहचान नहीं सकता कि कौन है इसलिये जवाब में अपना नाम बयान करना चाहिये।

बाब 18 : जवाब में सिर्फ़ अलैकस्सलाम कहना

١٨- باب مَنْ رَدَّ فَقَالَ : عَلَيْكَ السَّلاَمُ

और हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा था कि, व अलैहिस्सलाम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू और उन पर भी सलाम हो और अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें (और नबी करीम ﷺ ने फ़र्माया) फ़रिश्तों ने आदम (अलैहि.) को जवाब दिया। अस्सलामु अलैक व रहमतुल्लाह (सलाम हो आप पर और अल्लाह की रहमत)

وَقَالَتْ عَائِشَةُ وَعَلَيْهِ السَّلاَمُ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((رَدَّ الْمَلاَئِكَةُ عَلَى آدَمَ : السَّلاَمُ عَلَيْكَ وَرَحْمَةُ اللهِ)).

ये दोनों हदीषें ऊपर मौसूलन गुज़र चुकी हैं। इनको लाने से हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) की ग़र्ज़ ये है कि सलाम के जवाब मे बढ़ाकर कहना बेहतर है। गो सिर्फ़ अलैकस्सलाम भी कहना दुरुस्त है।

6251. हमसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अब्दुल्लाह बिन नुमैर ने ख़बर दी, उनसे उबैदुल्लाह ने बयान किया, उनसे सईद बिन अबी सईद मक़्बरी ने बयान किया और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि एक शख़्स मस्जिद में दाख़िल हुआ, रसूलुल्लाह (ﷺ) मस्जिद के किनारे बैठे हुए थे। उसने नमाज़ पढ़ी और फिर ह़ाज़िर होकर

٦٢٥١- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَجُلاً دَخَلَ الْمَسْجِدَ وَرَسُولُ اللهِ ﷺ جَالِسٌ

فِي نَاحِيَةِ الْمَسْجِدِ فَصَلَّى، ثُمَّ جَاءَ فَسَلَّمَ عَلَيْهِ فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((وَعَلَيْكَ السَّلَامُ، ارْجِعْ فَصَلِّ فَإِنَّكَ لَمْ تُصَلِّ)) فَرَجَعَ فَصَلَّى ثُمَّ جَاءَ فَسَلَّمَ فَقَالَ وَ عَلَيْكَ السَّلَامُ ارْجِعْ فَصَلِّ فَإِنَّكَ لَمْ تُصَلِّ فَصَلَّى ثُمَّ جَاءَ فَسَلَّمَ فَقَالَ وَعَلَيْكَ السَّلَامُ فَارْجِعْ فَصَلِّ فَإِنَّكَ لَمْ تُصَلِّ)) فَقَالَ فِي الثَّانِيَةِ: أَوْ فِي الَّتِي بَعْدَهَا عَلِّمْنِي يَا رَسُولَ اللهِ فَقَالَ: ((إِذَا قُمْتَ إِلَى الصَّلَاةِ فَاسْبِغِ الْوُضُوءَ ثُمَّ اسْتَقْبِلِ الْقِبْلَةَ فَكَبِّرْ، ثُمَّ اقْرَأْ بِمَا تَيَسَّرَ مَعَكَ مِنَ الْقُرْآنِ ثُمَّ ارْكَعْ حَتَّى تَطْمَئِنَّ رَاكِعًا، ثُمَّ ارْفَعْ حَتَّى تَسْتَوِيَ قَائِمًا، ثُمَّ اسْجُدْ حَتَّى تَطْمَئِنَّ سَاجِدًا، ثُمَّ ارْفَعْ حَتَّى تَطْمَئِنَّ جَالِسًا، ثُمَّ اسْجُدْ حَتَّى تَطْمَئِنَّ سَاجِدًا، ثُمَّ ارْفَعْ حَتَّى تَطْمَئِنَّ جَالِسًا، ثُمَّ افْعَلْ ذَلِكَ فِي صَلَاتِكَ كُلِّهَا)) وَقَالَ أَبُو أُسَامَةَ فِي الْأَخِيرِ حَتَّى تَسْتَوِيَ قَائِمًا.

[راجع: ٧٥٧]

आँहज़रत (ﷺ) को सलाम किया। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, व अलैकस्सलाम वापस जा और दोबारा नमाज़ पढ़, क्यों कि तुमने नमाज़ नहीं पढ़ी। वो वापस गये और नमाज़ पढ़ी। फिर (नबी करीम ﷺ) के पास आये और सलाम किया आपने फ़र्माया, व अलैकस्सलाम। वापस जाओ फिर नमाज़ पढ़ो क्योंकि तुमने नमाज़ नहीं पढ़ी। वो वापस गया और उसने फिर नमाज़ पढ़ी। फिर वापस आया और नबी अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में सलाम अर्ज़ किया। आप (ﷺ) ने जवाब में फ़र्माया व अलैकुमुस्सलाम। वापस जाओ और दोबारा नमाज़ पढ़ो क्योंकि तुमने नमाज़ नहीं पढ़ी। उन साहब ने दूसरी मर्तबा, या उसके बाद, अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मुझे नमाज़ पढ़ना सिखा दीजिए। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया जब नमाज़ के लिये खड़े हुआ करो तो पहले पूरी तरह वुज़ू करो, फिर क़िब्ला रू होकर तक्बीरे (तहरीमा) कहो, उसके बाद क़ुर्आन मजीद में से जो तुम्हारे लिये आसान हो वो पढ़ो, फिर रुकूअ करो और जब रुकूअ की हालत में बराबर हो जाओ तो सर उठाओ। जब सीधे खड़े हो जाओ तो फिर सज्दे में जाओ, जब सज्दा पूरी तरह कर लो तो सर उठाओ और अच्छी तरह से बैठ जाओ। यही अमल अपनी हर रकअत मे करो। और अबू उसामा रावी ने दूसरे सज्दे के बाद यूँ कहा फिर सर उठा यहाँ तक कि सीधा खड़ा हो जा।

(राजेअ : 757)

तो इसमें जल्सा-ए-इस्तिराहत का ज़िक्र नहीं है। उस शख़्स का नाम ख़ल्लाद बिन राफ़ेअ था ये नमाज़ जल्दी जल्दी अदा कर रहा था। आपने नमाज़ आहिस्ता से पढ़ने की ता'लीम दी। हदीष में लफ़्ज़ व अलैकस्सलाम मज़्कूर है। बाब से यही मुताबक़त है। अबू उसामा रावी के अष़र को ख़ुद हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने किताबुल ईमान वन् नुज़ूर मे वस्ल किया है।

٦٢٥٢- حَدَّثَنَا ابْنُ بَشَّارٍ، قَالَ حَدَّثَنِي يَحْيَى، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ، حَدَّثَنِي سَعِيدٌ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((ثُمَّ ارْفَعْ حَتَّى تَطْمَئِنَّ جَالِسًا)).

[راجع: ٧٥٧]

6252. हमसे इब्ने बश्शार ने बयान किया, कहा कि मुझसे यह्या ने बयान किया, उनसे उबैदुल्लाह ने, उनसे सईद ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, फिर सर सज्दे से उठा और अच्छी तरह बैठ जा।

(राजेअ : 757)

या'नी इसमें जल्सा-ए-इस्तिराहत का ज़िक्र है जिसे करना मस्नून है।

बाब 19 : अगर कोई शख़्स कहे कि फ़लाँ शख़्स ने तुझको सलाम कहा है तो वो क्या कहे

١٩- باب إِذَا قَالَ فُلاَنٌ يُقْرِئُكَ السَّلاَمَ

6253. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे ज़करिया ने बयान किया, कहा कि मैंने आमिर से सुना, उन्होंने बयान किया कि मुझसे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि जिब्रईल (अ़लैहि.) तुम्हें सलाम कहते हैं। आइशा (रज़ि.) ने कहा कि, व अ़लैहिस्सलाम व रह़मतुल्लाह। उन पर भी अल्लाह की त़रफ़ से सलामती और उसकी रह़मत नाज़िल हो। (राजेअ़ : 3217)

٦٢٥٣- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا زَكَرِيَّا قَالَ: سَمِعْتُ عَامِرًا يَقُولُ: حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا حَدَّثَتْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ لَهَا: ((إِنَّ جِبْرِيلَ يُقْرِئُكِ السَّلاَمَ)) قَالَتْ: وَعَلَيْهِ السَّلاَمُ وَرَحْمَةُ اللهِ.

[راجع: ٣٢١٧]

तश्रीह़ : बाब की मुत़ाबक़त ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) के जवाब से है। इससे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) की फ़ज़ीलत भी ष़ाबित हुई। जिसको ख़ुद ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लैहिस्सलाम) भी सलाम पेश करते हैं। अल्लाह पाक ऐसी पाक ख़ातून पर हमारी त़रफ़ से भी बहुत से सलाम पहुँचाए और ह़श्र में उनकी दुआएँ हमको नस़ीब करे, आमीन। ह़ज़रत आइशा सि़द्दीक़ा (रज़ि.) ने 63 साल की उ़म्रे त़वील पाई। **रज़ियल्लाहु अ़न्हा व अर्ज़ाहा आमीन**

बाब 20 : ऐसी मजलिस वालों को सलाम करना जिसमे मुसलमान और मुश्रिक सब शामिल हों

٢٠- باب التَّسْلِيمِ فِي مَجْلِسٍ فِيهِ أَخْلاَطٌ مِنَ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُشْرِكِينَ

सलाम करने वाला मुसलमानों की निय्यत करे कुछ ने कहा कि वो कहे अस्सलामु मनित्तबअ़ल्हुदा।

6254. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम बिन उ़र्वा ने ख़बर दी, उन्हें मअ़मर ने, उन्हें ज़ुह्री ने, उनसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने बयान किया कि मुझे उसामा बिन ज़ैद (रज़ि .) ने ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) एक गधे पर सवार हुए जिस पर पालान बँधा हुआ था और नीचे फ़िदक की बनी हुई एक मख़मली चादर बिछी हुई थी। आँह़ज़रत (ﷺ) ने सवारी पर अपने पीछे उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) को बिठाया था। आप बनी ह़ारिष़ बिन ख़ज़रज में ह़ज़रत सअ़द बिन उ़बादा (रज़ि.) की एयादत के लिये तशरीफ़ ले जा रहे थे। ये जंगे बद्र से पहले का वाक़िया है। आँह़ज़रत (ﷺ) एक मजलिस पर से गुज़रे जिसमें मुसलमान बुतपरस्त मुश्रिक और यहूदी सब ही शरीक थे। अ़ब्दुल्लाह बिन उबई इब्ने सलूल भी उनमें

٦٢٥٤- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى، أَخْبَرَنَا هِشَامٌ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ قَالَ: أَخْبَرَنِي أُسَامَةُ بْنُ زَيْدٍ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ رَكِبَ حِمَارًا عَلَيْهِ إِكَافٌ تَحْتَهُ قَطِيفَةٌ فَدَكِيَّةٌ، وَأَرْدَفَ وَرَاءَهُ أُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ، وَهُوَ يَعُودُ سَعْدَ بْنَ عُبَادَةَ فِي بَنِي الْحَارِثِ بْنِ الْخَزْرَجِ، وَذَلِكَ قَبْلَ وَقْعَةِ بَدْرٍ، حَتَّى مَرَّ فِي مَجْلِسٍ فِيهِ أَخْلاَطٌ مِنَ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُشْرِكِينَ عَبَدَةِ الأَوْثَانِ وَالْيَهُودِ وَفِيهِمْ عَبْدُ اللهِ بْنُ أُبَيٍّ

ابْنُ سَلُولٍ، وَفِي الْمَجْلِسِ عَبْدُ اللهِ بْنُ رَوَاحَةَ فَلَمَّا غَشِيَتِ الْمَجْلِسَ عَجَاجَةُ الدَّابَّةِ خَمَّرَ عَبْدُ اللهِ بْنُ أُبَيٍّ أَنْفَهُ بِرِدَائِهِ ثُمَّ قَالَ: لاَ تُغَبِّرُوا عَلَيْنَا فَسَلَّمَ عَلَيْهِمُ النَّبِيُّ ﷺ ثُمَّ وَقَفَ فَنَزَلَ فَدَعَاهُمْ إِلَى اللهِ وَقَرَأَ عَلَيْهِمُ الْقُرْآنَ فَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ أُبَيٍّ ابْنُ سَلُولٍ : أَيُّهَا الْمَرْءُ لاَ أَحْسَنَ مِنْ هَذَا إِنْ كَانَ مَا تَقُولُ حَقًّا فَلاَ تُؤْذِنَا فِي مَجَالِسِنَا وَارْجِعْ إِلَى رَحْلِكَ فَمَنْ جَاءَكَ مِنَّا فَاقْصُصْ عَلَيْهِ، قَالَ ابْنُ رَوَاحَةَ : اغْشَنَا فِي مَجَالِسِنَا فَإِنَّا نُحِبُّ ذَلِكَ فَاسْتَبَّ الْمُسْلِمُونَ وَالْمُشْرِكُونَ وَالْيَهُودُ حَتَّى هَمُّوا أَنْ يَتَوَاثَبُوا فَلَمْ يَزَلِ النَّبِيُّ ﷺ يُخَفِّضُهُمْ حَتَّى سَكَتُوا ثُمَّ رَكِبَ دَابَّتَهُ حَتَّى دَخَلَ عَلَى سَعْدِ بْنِ عُبَادَةَ فَقَالَ: ((أَيْ سَعْدُ أَلَمْ تَسْمَعْ مَا قَالَ أَبُو حُبَابٍ؟)) يُرِيدُ عَبْدَ اللهِ بْنَ أُبَيٍّ قَالَ: كَذَا وَكَذَا، قَالَ: اعْفُ عَنْهُ يَا رَسُولَ اللهِ وَاصْفَحْ، فَوَ اللهِ لَقَدْ أَعْطَاكَ اللهُ الَّذِي أَعْطَاكَ، وَلَقَدِ اصْطَلَحَ أَهْلُ هَذِهِ الْبَحْرَةِ عَلَى أَنْ يُتَوِّجُوهُ فَيُعَصِّبُونَهُ بِالْعِصَابَةِ، فَلَمَّا رَدَّ اللهُ ذَلِكَ بِالْحَقِّ الَّذِي أَعْطَاكَ شَرِقَ بِذَلِكَ، فَذَلِكَ فَعَلَ بِهِ مَا رَأَيْتَ فَعَفَا عَنْهُ النَّبِيُّ ﷺ.

था। मजलिस में अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा भी मौजूद थे। जब मजलिस पर सवारी का गर्द पड़ा तो अ़ब्दुल्लाह ने अपनी चादर से अपनी नाक छुपा ली और कहा कि हमारे ऊपर गुबार न उड़ाओ। फिर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने सलाम किया और वहाँ रुक गये और उतरकर उन्हें अल्लाह की त़रफ़ बुलाया और उनके लिये क़ुर्आन मजीद की तिलावत की। अ़ब्दुल्लाह बिन उबई इब्ने सलूल बोला, मियाँ मैं इन बातों के समझने से क़ासिर हूँ अगर वो चीज़ ह़क़ है जो तुम कहते हो तो हमारी मजलिसों में आकर हमें तकलीफ़ न दिया करो, अपने घर जाओ और हम में से जो तुम्हारे पास आए उससे बयान करो। उस पर इब्ने रवाहा ने कहा आँह़ज़रत (ﷺ) हमारी मजलिसों में तशरीफ़ लाया करें क्योकि हम इसे पसंद करते हैं। फिर मुसलमानों मुश्रिकों और यहूदियों में इस बात पर तू तू मैं मैं होने लगी और क़रीब था कि वो कोई इरादा कर बैठें और एक-दूसरे पर ह़मला कर दें। लेकिन आँह़ज़रत (ﷺ) उन्हें बराबर ख़ामोश कराते रहे और जब वो ख़ामोश हो गये तो आँह़ज़रत (ﷺ) अपनी सवारी पर बैठकर सअ़द बिन उ़बादह (रज़ि.) के यहाँ गये। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया, सअ़द तुमने नहीं सुना कि अबू हुबाब ने आज क्या बात कही है। आपका इशारा अ़ब्दुल्लाह बिन उबई की त़रफ़ था कि उसने ये ये बातें कही हैं। ह़ज़रत सअ़द ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! उसे मुआ़फ़ कर दीजिए और दरगुज़र फ़र्माइये। अल्लाह तआ़ला ने वो ह़क़ आपको अ़त़ा किया है जो अ़त़ा फ़र्माना था। इस बस्ती (मदीना मुनव्वरह) के लोग (आपकी तशरीफ़ आवरी से पहले) इस पर मुत्तफ़िक़ हो गये थे कि उसे ताज पहना दें और शाही अ़मामा उसके सर पर बाँध दें लेकिन जब अल्लाह तआ़ला ने इस मंसूबे को उस ह़क़ की वजह से ख़त्म कर दिया जो उसने आपको अ़त़ा फ़र्माया है तो उसे ह़क़ से ह़सद हो गया और इसी वजह से उसने ये मामला किया है जो आपने देखा। चुनाँचे आँह़ज़रत (ﷺ) ने उसे मुआ़फ़ कर दिया।

तश्रीह: इस ह़दीष़ से जहाँ बाब का मज़्मून वाज़ेह़ त़ौर पर ष़ाबित हो रहा है वहाँ आँह़ज़रत (ﷺ) की कमाले दानाई, दूर अंदेशी, अ़फ़्व, ह़िल्म की भी एक शानदार तफ़्सील है कि आपने एक इंतिहाई गुस्ताख़ को दामने अ़फ़्व में ले लिया और अ़ब्दुल्लाह बिन उबई जैसे ख़ुफ़िया दुश्मने इस्लाम की ह़रकते शनीआ़ को माफ़ कर दिया। अल्लाह पाक ऐसे प्यारे रसूल पर हज़ार हा हज़ार अनगिनत दरूदो-सलाम नाज़िल फ़र्माए आमीन। उसमें आज के ठेकेदाराने इस्लाम के लिये भी

दर्से इबरत है जो हर वक़्त शोला-ज्वाला बनकर अपने इल्म व फ़ज़ल की धाक बिठाने के लिये अख़्लाक़े नबवी का अमलन मज़ाक़ उड़ाते रहते हैं और ज़रा सी ख़िलाफ़े मिज़ाज बात पाकर ग़ैज़ व ग़ज़ब का मुज़ाहिरा करने लग जाते हैं। अकषर मुक़ल्लिदीने जामेदीन का यही ह़ाल है इल्ला माशाअल्लाह। अल्लाह पाक उन मज़हब के ठेकेदारों को अपना मुक़ाम समझने की तौफ़ीक़ बख़्शे, आमीन।

बाब 21 : जिसने गुनाह करने वाले को सलाम नहीं किया

और उस वक़्त तक उसके सलाम का जवाब भी नहीं दिया जब तक उसका तौबा करना ज़ाहिर नहीं हो गया और कितने दिनों तक गुनहगारों का तौबा करना ज़ाहिर होता है? और ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़ि.) ने कहा कि शराब पीने वालों को सलाम न करो।

٢١- باب مَنْ لَمْ يُسَلِّمْ عَلَى مَنِ اقْتَرَفَ ذَنْبًا وَمَنْ لَمْ يَرُدَّ سَلاَمَهُ حَتَّى تَتَبَيَّنَ تَوْبَتُهُ وَإِلَى مَتَى تَتَبَيَّنُ تَوْبَةُ الْعَاصِي؟ وَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ عَمْرٍو : لاَ تُسَلِّمُوا عَلَى شَرَبَةِ الْخَمْرِ.

ये भी मौक़ा है जो अल्हुब्बु लिल्लाहि वल्बुग़्ज़ुलिल्लाहि को ज़ाहिर करता है।

6255. हमसे इब्ने बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ब्दुल्लाह ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन कअ़ब ने बयान किया कि मैंने कअ़ब बिन मालिक से सुना, वो बयान करते थे कि जब वो ग़ज़्वा-ए-तबूक़ में शरीक नहीं हो सके थे और नबी करीम (ﷺ) ने हमसे बातचीत करने की मुमानअ़त कर दी थी और मैं आँह़ज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर होकर सलाम करता था और ये अंदाज़ा लगाता था कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने जवाबे सलाम मे होंठ मुबारक हिलाए या नहीं, आख़िर पचास दिन गुज़र गये और आँह़ज़रत (ﷺ) ने अल्लाह की बारगाह में हमारी तौबा के क़ुबूल किये जाने का नमाज़े फ़ज्र के बाद ऐलान किया।
(राजेअ़ : 2757)

٦٢٥٥- حَدَّثَنَا ابْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَبْدِ اللهِ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ كَعْبٍ قَالَ: سَمِعْتُ كَعْبَ بْنَ مَالِكٍ يُحَدِّثُ حِينَ تَخَلَّفَ عَنْ تَبُوكَ وَنَهَى رَسُولُ اللهِ ﷺ عَنْ كَلاَمِنَا وَآتِي رَسُولَ اللهِ ﷺ فَأُسَلِّمُ عَلَيْهِ فَأَقُولُ فِي نَفْسِي هَلْ حَرَّكَ شَفَتَيْهِ بِرَدِّ السَّلاَمِ أَمْ لاَ؟ حَتَّى كَمَلَتْ خَمْسُونَ لَيْلَةً، وَآذَنَ النَّبِيُّ ﷺ بِتَوْبَةِ اللهِ عَلَيْنَا حِينَ صَلَّى الْفَجْرَ.
[راجع: ٢٧٥٧]

तश्रीह : ये एक अज़ीम वाक़िया था जिससे ह़ज़रत कअ़ब बिन मालिक (रज़ि.) मुत्तहम हुए थे। हुज़ूर (ﷺ) की उस दा'वते जिहाद की अहमियत के पेशेनज़र कअ़ब बिन मालिक जैसे नेक व स़ालेह़ फ़िदाई इस्लाम के लिये ये तसाहुल मुनासिब न था वो जैसे अ़ज़ीमुल मर्तबत थे उनकी कोताही को भी वही दर्जा दिया गया और उन्होंने जिस स़ब्र व शुक्र व पामर्दी के साथ इस इम्तिह़ान मे कामयाबी ह़ासिल की वे भी लाइक़े स़द तबरीक है अब ये अम्र इमाम व ख़लीफ़ा की दूर अंदेशी पर मौक़ूफ़ है कि वो किसी भी ऐसी लग़्ज़िश के मुर्तकिब को किस ह़द तक क़ाबिले सरज़िंश समझता है। ये हर कस व नाकस का मुक़ाम नहीं है **फ़फ़्हम व ला तकुम्मिनल्क़ासिरीन।**

बाब 22 : ज़िम्मियों के सलाम का जवाब किस त़रह़ दिया जाए?

٢٢- باب كَيْفَ يُرَدُّ عَلَى أَهْلِ الذِّمَّةِ السَّلاَمُ؟

6256. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्होंने कहा कि मुझे उ़र्वा ने ख़बर दी, और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि कुछ यहूदी रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और कहा कि, अस्सामु अ़लैक (तुम्हे मौत आए) मैं उनकी बात समझ गई और मैंने जवाब दिया अ़लैकुमुस्साम वल ला'नत आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, आ़इशा! स़ब्र से काम ले क्योंकि अल्लाह तआ़ला तमाम मामलात में नर्मी को पसंद करता है, मैंने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह! क्या आपने नहीं सुना कि उन्होंने क्या कहा था? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैंने उनका जवाब दे दिया था कि, वअ़लैकुम (और तुम्हें भी) (राजेअ़ : 2935)

٦٢٥٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، قَالَ أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: دَخَلَ رَهْطٌ مِنَ الْيَهُودِ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالُوا: السَّامُ عَلَيْكَ فَفَهِمْتُهَا فَقُلْتُ: عَلَيْكُمُ السَّامُ وَاللَّعْنَةُ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَهْلاً يَا عَائِشَةُ فَإِنَّ اللهَ يُحِبُّ الرِّفْقَ فِي الأَمْرِ كُلِّهِ)) فَقُلْتُ : يَا رَسُولَ اللهِ أَوَ لَمْ تَسْمَعْ مَا قَالُوا؟ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((فَقَدْ قُلْتُ: وَعَلَيْكُمْ)).

[راجع: ٢٩٣٥]

6257. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होने कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जब तुम्हें यहूदी सलाम करें और अगर उनमें से कोई अस्साम अ़लैक कहे तो तुम उसके जवाब में स़िर्फ़ व अ़लैक (और तुम्हें भी) कह दिया करो।

٦٢٥٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَالِكٌ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِذَا سَلَّمَ عَلَيْكُمُ الْيَهُودُ فَإِنَّمَا يَقُولُ أَحَدُهُمْ : السَّامُ عَلَيْكَ، فَقُلْ : وَعَلَيْكَ)).

6258. हमसे उ़ष्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हुशैम ने बयान किया, उन्हें उ़बैदुल्लाह बिन अबीबक्र बिन अनस ने ख़बर दी, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जब अहले किताब तुम्हें सलाम करें तो तुम उसके जवाब में स़िर्फ़ व अ़लैकुम कहो। (दीगर : 6926)

٦٢٥٨- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ أَبِي بَكْرِ بْنِ أَنَسٍ، حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِذَا سَلَّمَ عَلَيْكُمْ أَهْلُ الْكِتَابِ فَقُولُوا: وَعَلَيْكُمْ)).

[طرفه في : ٦٩٢٦].

तश्रीह : ये भी एक ख़ास़ वाक़िया के बारे में है जबकि यहूदी ने स़ाफ़ लफ़्ज़ों में बद् दुआ के अल्फ़ाज़ सलाम की जगह इस्ते'माल किये थे। आज के दौर में ग़ैर-मुस्लिम अगर कोई अच्छे लफ़्ज़ों में दुआ सलाम करता है तो उसका जवाब भी अच्छा ही देना चाहिये। **व ह्य्यतुम बितहिय्यतिन फहय्यो बिअहसनिम मिन्हा औरदूहा** में आ़म हुक्म है।

बाब 23 : जिसने ह़क़ीक़ते ह़ाल मा'लूम करने के लिये

٢٣- باب مَنْ نَظَرَ فِي كِتَابِ

ऐसे शख़्स का मक्तूब पकड़ लिया जिसमें मुसलमानों के ख़िलाफ़ कोई बात लिखी गई हो तो ये जाइज़ है

مَنْ يُحَذِّرُ عَلَى الْمُسْلِمِينَ لِيَسْتَبِينَ أَمْرُهُ

मगर ये भी बहुक्मे ख़लीफ़-ए-इस्लाम हो जबकि उसको ऐसे शख़्स का हाल मा'लूम हो जाए।

6259. हमसे यूसुफ़ बिन बुह्लूल ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने इदरीस ने बयान किया, कहा कि मुझसे हुसैन बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे सअ़द बिन उ़बैदह ने, उनसे अबू अ़ब्दुर्रहमान सुल्मी ने और उनसे ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे ज़ुबैर बिन अ़वाम और अबू मुर्षद ग़नवी को भेजा। हम सब घुड़सवार थे। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जाओ और जब रौज़-ए-ख़ाख़ (मक्का और मदीना के दरम्यान एक मुक़ाम) पर पहुँचो तो वहाँ तुम्हें मुश्रिकीन की एक औ़रत मिलेगी, उसके पास ह़ातिब बिन अबी बल्तआ़ का एक ख़त़ है जो मुश्रिकीन के पास भेजा गया है (उसे ले आओ)। बयान किया कि हमने उस औ़रत को पा लिया, वो अपने ऊँट पर जा रही थी और वहीं पर मिली (जहाँ) आँहज़रत (ﷺ) ने बताया था। बयान किया कि हमने उससे कहा कि ख़त़ जो तुम साथ ले जा रही हो वो कहाँ है? उसने कहा कि मेरे पास कोई ख़त़ नहीं है। हमने उसके ऊँट को बिठाया और उसके कजावे में तलाशी ली लेकिन हमें कोई चीज़ नहीं मिली। मेरे दोनों साथियों ने कहा कि हमें कोई ख़त़ तो नज़र आता नहीं। बयान किया कि मैंने कहा, मुझे यक़ीन है कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने ग़लत़ बात नहीं कही है। क़सम है उसकी जिसकी क़सम खाई जाती है, तुम ख़त़ निकालो वरना मैं तुम्हें नंगा कर दूँगा। बयान किया कि जब उस औ़रत ने देखा कि मैं वाक़ई इस मामले में संजीदा हूँ तो उसने इज़ार बाँधने की जगह की त़रफ़ हाथ बढ़ाया, वो एक चादर इज़ार के त़ौर पर बाँधे हुए थी और ख़त़ निकाला। बयान किया कि हम उसे लेकर रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए। आँहज़रत (ﷺ) ने दरयाफ़्त फ़र्माया, ह़ातिब तुमने ऐसा क्यूँ किया? उन्होंने कहा कि मैं अब भी अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान रखता हूँ। मेरे अंदर कोई तग़य्युर व तब्दीली नहीं आई है, मेरा मक़्सद (ख़त़ भेजने से) सिर्फ़ ये था कि (क़ुरैश पर आपकी फ़ौजकशी की ख़बर दूँ और इस त़रह मेरा उन लोगों पर एहसान

٦٢٥٩- حَدَّثَنَا يُوسُفُ بْنُ بُهْلُولٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ إِدْرِيسَ، قَالَ حَدَّثَنِي حُصَيْنُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ سَعْدِ بْنِ عُبَيْدَةَ، عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ السُّلَمِيِّ، عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: بَعَثَنِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَالزُّبَيْرَ بْنَ الْعَوَّامِ وَأَبَا مَرْثَدٍ الْغَنَوِيَّ وَكُلُّنَا فَارِسٌ فَقَالَ: ((انْطَلِقُوا حَتَّى تَأْتُوا رَوْضَةَ خَاخٍ فَإِنَّ بِهَا امْرَأَةً مِنَ الْمُشْرِكِينَ مَعَهَا صَحِيفَةٌ مِنْ حَاطِبِ بْنِ أَبِي بَلْتَعَةَ إِلَى الْمُشْرِكِينَ)) قَالَ : فَأَدْرَكْنَاهَا تَسِيرُ عَلَى جَمَلٍ لَهَا حَيْثُ قَالَ لَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: قُلْنَا أَيْنَ الْكِتَابُ الَّذِي مَعَكِ؟ قَالَتْ: مَا مَعِي كِتَابٌ فَأَنَخْنَا بِهَا فَابْتَغَيْنَا فِي رَحْلِهَا، فَمَا وَجَدْنَا شَيْئًا قَالَ: صَاحِبَايَ : مَا نَرَى كِتَابًا قَالَ: قُلْتُ لَقَدْ عَلِمْتُ مَا كَذَبَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَالَّذِي يُحْلَفُ بِهِ لَتُخْرِجِنَّ الْكِتَابَ أَوْ لأُجَرِّدَنَّكِ قَالَ: فَلَمَّا رَأَتِ الْجِدَّ مِنِّي أَهْوَتْ بِيَدِهَا إِلَى حُجْزَتِهَا وَهِيَ مُحْتَجِزَةٌ بِكِسَاءٍ، فَأَخْرَجَتِ الْكِتَابَ قَالَ: فَانْطَلَقْنَا بِهِ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ((مَا حَمَلَكَ يَا حَاطِبُ

हो जाए और इसकी वजह से अल्लाह मेरे अहल और माल की तरफ़ से (उनसे) मुदाफ़िअत कराए। आपके जितने (मुहाजिर) सहाबा हैं उनके मक्का मुकर्रमा में ऐसे अफ़राद हैं जिनके ज़रिये अल्लाह उनके माल और उनके घर वालों की हिफ़ाज़त कराएगा। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, उन्होंने सच कह दिया है अब तुम लोग उनके बारे में सिवा भलाई के और कुछ न कहो। बयान किया कि उस पर उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने फ़र्माया कि इस शख़्स ने अल्लाह, उसके रसूल और मोमिनों के साथ ख़यानत की है, मुझे इजाज़त दीजिए कि मैं इसकी गर्दन मार दूँ। बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, उमर! तुम्हें क्या मा'लूम, अल्लाह तआला बद्र की लड़ाई में शरीक सहाबा की ज़िंदगी पर मुत्तलअ था और उसके बावजूद कहा कि तुम जो चाहो करो, तुम्हारे लिये जन्नत लिख दी गई है। बयान किया कि उस पर उमर (रज़ि.) की आँखें अश्क आलूद हो गईं और अर्ज़ की, अल्लाह और उसके रसूल ही ज़्यादा जानने वाले हैं। (राजेअ: 3007)

عَلَى مَا صَنَعْتَ؟)) قَالَ: مَا بِي إِلاَّ أَنْ أَكُونَ مُؤْمِنًا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ، وَمَا غَيَّرْتُ وَلاَ بَدَّلْتُ. أَرَدْتُ أَنْ تَكُونَ لِي عِنْدَ الْقَوْمِ يَدٌ يَدْفَعُ اللَّهُ بِهَا عَنْ أَهْلِي وَمَالِي، وَلَيْسَ مِنْ أَصْحَابِكَ هُنَاكَ إِلاَّ وَلَهُ مَنْ يَدْفَعُ اللَّهُ بِهِ عَنْ أَهْلِهِ وَمَالِهِ، قَالَ: ((صَدَقَ فَلاَ تَقُولُوا لَهُ إِلاَّ خَيْرًا)) قَالَ: فَقَالَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ إِنَّهُ قَدْ خَانَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَالْمُؤْمِنِينَ فَدَعْنِي فَأَضْرِبَ عُنُقَهُ قَالَ: فَقَالَ ((يَا عُمَرُ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ اللَّهَ قَدِ اطَّلَعَ عَلَى أَهْلِ بَدْرٍ فَقَالَ: اعْمَلُوا مَا شِئْتُمْ فَقَدْ وَجَبَتْ لَكُمُ الْجَنَّةُ)) قَالَ: فَدَمَعَتْ عَيْنَا عُمَرَ قَالَ: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ.

[راجع: ٣٠٠٧]

तश्रीह : हज़रत हातिब बिन अबी बल्तआ (रज़ि .) की साफ़गोई ने सारा मामला साफ़ कर दिया और हदीष **इन्नमल्आमालु बिन्निय्यात** के तहत रसूले करीम (ﷺ) ने उनको शर्फ़े माफ़ी अता फ़र्माकर और एक अहमतरीन दलील पेश करके हज़रत उमर और दीगर सहाबा किराम (रज़ि.) को मुत्मइन कर दिया। इससे ज़ाहिर हुआ कि मुफ़्ती जब तक किसी मामले के दोनों पहलू पर गहरी नज़र न डाल ले उसको फ़त्वा लिखना मुनासिब नही है।

बाब 24 : अहले किताब को किस तरह ख़त लिखा जाए

٢٤- باب كَيْفَ يُكْتَبُ الْكِتَابُ إِلَى أَهْلِ الْكِتَابِ؟

6260. हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल अबुल हसन ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमको यूनुस ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, उन्हें उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन उत्बा ने ख़बर दी, उन्हें हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने ख़बर दी और उन्हें अबू सुफ़यान बिन हर्ब (रज़ि.) ने ख़बर दी कि हिरक़्ल ने क़ुरैश के चंद अफ़राद के साथ उन्हें भी बुला भेजा। ये लोग शाम तिजारत की ग़र्ज़ से गये थे। सब लोग हिरक़्ल के पास आए। फिर उन्होंने वाक़िया बयान किया कि फिर हिरक़्ल ने

٦٢٦٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ أَبُو الْحَسَنِ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ، أَخْبَرَنَا يُونُسُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُتْبَةَ أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ أَبَا سُفْيَانَ بْنَ حَرْبٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ هِرَقْلَ أَرْسَلَ إِلَيْهِ فِي نَفَرٍ مِنْ قُرَيْشٍ وَكَانُوا تِجَارًا بِالشَّامِ، فَأَتَوْهُ فَذَكَرَ الْحَدِيثَ قَالَ:

رسولुल्लाह (ﷺ)का ख़त मंगवाया और वो पढ़ा गया। ख़त में ये लिखा हुआ था। बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम। मुहम्मद की तरफ़ से जो अल्लाह का बन्दा और उसका रसूल (ﷺ) है हिरक़्ल अज़ीमे रोम की तरफ़, सलाम हो उन पर जिन्होंने हिदायत की इत्तिबाअ की, अम्मा बअद! (राजेअ : 7)

ثُمَّ دَعَا بِكِتَابِ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقُرِئَ فَإِذَا فِيهِ ((بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ مِنْ مُحَمَّدٍ عَبْدِ اللهِ وَرَسُولِهِ، إِلَى هِرَقْلَ عَظِيمِ الرُّومِ السَّلاَمُ عَلَى مَنِ اتَّبَعَ الْهُدَى أَمَّا بَعْدُ)). [راجع: ٧]

तश्रीह : ख़त लिखने का ये वो दस्तूरे नबवी है जो बहुत सी ख़ूबियों पर मुश्तमिल है। कातिब और मक्तूब को किस किस तरह क़लम चलानी चाहिये। ये तमाम हिदायात इससे वाज़ेह हैं मगर ग़ौरो-फ़िक्र करने की ज़रूरत है ।वफ़्फ़कनल्लाहु लिमा युहिब्बु व यर्ज़ा आमीन

बाब 25 : ख़त किसके नाम से शुरू किया जाए

٢٥- باب بِمَنْ يُبْدَأُ فِي الْكِتَابِ

6261. लैष़ ने बयान किया कि मुझसे जा'फ़र बिन रबीअ ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रहमान बिन हुर्मुज़ ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से कि आँहज़रत (ﷺ) ने बनी इस्राईल के एक शख़्स का ज़िक्र किया कि उन्होंने लकड़ी का एक लट्ठा लिया और उसमें सूराख़ करके एक हज़ार दीनार और ख़त रख दिया। वो ख़त उनकी तरफ़ से उनके साथी (क़र्ज़ ख़्वाह) की तरफ़ था। और उ़मर बिन अबी सलमा ने बयान किया कि उनसे उनके वालिद ने और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि .) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि उन्होंने लकड़ी के एक लट्ठे में सूराख़ किया और उसके अंदर रख दिया और उनके पास एक ख़त लिखा, फ़लाँ की तरफ़ से फ़लाँ को मिले। (राजेअ : 1498)

٦٢٦١- وَقَالَ اللَّيْثُ: حَدَّثَنِي جَعْفَرُ بْنُ رَبِيعَةَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ هُرْمُزَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ أَنَّهُ ذَكَرَ رَجُلاً مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ أَخَذَ خَشَبَةً فَنَقَرَهَا فَأَدْخَلَ فِيهَا أَلْفَ دِينَارٍ وَصَحِيفَةً مِنْهُ إِلَى صَاحِبِهِ وَقَالَ عُمَرُ بْنُ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِيهِ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((نَجَرَ خَشَبَةً فَجَعَلَ الْمَالَ فِي جَوْفِهَا وَكَتَبَ إِلَيْهِ صَحِيفَةً مِنْ فُلاَنٍ إِلَى فُلاَنٍ)). [راجع: ١٤٩٨]

तश्रीह : चूँकि क़र्ज़दार इंतिहाई अमानतदार और वा'दा वफ़ा मर्दे मोमिन था। अल्लाह ने उसकी दुआ क़ुबूल की और अमानत और मक्तूब दोनों क़र्ज़ख़्वाह को बख़ैरियत वसूल हो गये, ऐसे मरदाने हक़ आज न के बराबर हैं। यही वो लोग हैं जिनके बारे में कहा गया है कि निगाहे मर्दे मोमिन से बदल जाती हैं तक़्दीरें। जज़ाअनल्लाहु मिन्हुम आमीन

बाब 26 : नबी करीम (ﷺ) का इर्शाद है कि अपने सरदार को लेने के लिये उठो

٢٦- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((قُومُوا إِلَى سَيِّدِكُمْ))

6262. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे सअद बिन इब्राहीम ने, उनसे अबू उमामा बिन सहल बिन हनीफ़ ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने कि क़ुरैज़ा के यहूदी हज़रत सअद बिन मुआज़ को ष़ालिष़ बनाने पर तैयार हो गये तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने

٦٢٦٢- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ أَبِي أُمَامَةَ بْنِ سَهْلِ بْنِ حُنَيْفٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ أَنَّ أَهْلَ قُرَيْظَةَ نَزَلُوا عَلَى حُكْمِ سَعْدٍ فَأَرْسَلَ النَّبِيُّ

उन्हें बुला भेजा। जब वो आए तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अपने सरदार के लेने को उठो या यूँ फ़र्माया कि अपने में सबसे बेहतर को लेने के लिये उठो। फिर वो हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के पास बैठ गये और आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि बनी क़ुरैज़ा के लोग तुम्हारे फ़ैसले पर राज़ी होकर (क़िला से) उतर आए हैं (अब तुम क्या फ़ैसला करते हो) हज़रत सअद (रज़ि.) ने कहा कि फिर मैं ये फ़ैसला करता हूँ कि इनमें जो जंग के क़ाबिल हैं उन्हें क़त्ल कर दिया जाए और इनके बच्चों और औरतों को क़ैद कर लिया जाए। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि आपने वही फ़ैसला किया जिस फ़ैसले को फ़रिश्ता लेकर आया था। अबू अ़ब्दुल्लाह (मुसन्निफ़) ने बयान किया कि मुझे मेरे कुछ अस्हाब ने अबुल वलीद के वास्ते से अबू सईद (रज़ि.) का क़ौल इला हुक्मिक के बजाय अ़ला हुक्मिक नक़ल किया है। (राजेअ : 4043)

صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَيْهِ فَجَاءَ فَقَالَ: ((قُومُوا إِلَى سَيِّدِكُمْ - أَوْ قَالَ - خَيْرِكُمْ)) فَقَعَدَ عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ((هَؤُلاَءِ نَزَلُوا عَلَى حُكْمِكَ)) قَالَ: ((فَإِنِّي أَحْكُمُ أَنْ تُقْتَلَ مُقَاتِلَتُهُمْ وَتُسْبَى ذَرَارِيُّهُمْ)) فَقَالَ: ((لَقَدْ حَكَمْتَ بِمَا حَكَمَ بِهِ الْمَلِكُ)). قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ: أَفْهَمَنِي بَعْضُ أَصْحَابِي عَنْ أَبِي الْوَلِيدِ مِنْ قَوْلِ أَبِي سَعِيدٍ إِلَى حُكْمِكَ.
[راجع: ٤٠٤٣]

तश्रीह : हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कुछ मेरे साथियों ने अबुल वलीद से यूँ नक़ल किया इला हुक्मिक या'नी बजाय अ़ला हुक्मिक के। अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने यूँ ही कहा बजाय अ़ला के इला नक़ल किया। हक़ ये है कि हज़रत सअद बिन मुआज़ ज़ख़्मी थे, इसलिये आँहज़रत (ﷺ) ने सहाबा से फ़र्माया कि उठकर उनको सवारी से उतारो और तअ़ज़ीम के लिये खड़ा होना मना है। दूसरी हदीष में है कि **ला तक़ूमू कमा यक़ूमुल्अआजिमु** जैसे अ़ज्मी लोग अपने बड़े की तअ़ज़ीम के लिये खड़े हो जाते हैं, मैं तुमको इससे मना करता हूँ।

बाब 27 : मुसाफ़ा का बयान

٢٧- باب الْمُصَافَحَةِ

तश्रीह : लफ़्ज़े मुसाफ़ा सफ़्ह से है जिसके मा'नी हथेली के हैं। पस एक आदमी का सीधे हाथ की हथेली दूसरे आदमी के सीधे हाथ की हथेली से मिलाना मुसाफ़ा कहलाता है जो मस्नून है ये दोनों जानिब से सीधे हाथों के मिलाने से होता है। बायाँ हाथ मिलाने का यहाँ कोई महल नहीं है जो लोग दायाँ और बायाँ दोनों हाथ मिलाते हैं। उनको लफ़्ज़े मुसाफ़ा की हक़ीक़त पर ग़ौर करने की ज़रूरत है मज़ीद तफ़्सील आगे मुलाहिज़ा हो।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने कहा कि मुझे नबी करीम (ﷺ) ने तशह्हुद सिखलाया तो मेरी दोनों हथेलियाँ आँहज़रत (ﷺ) की हथेलियों के दरम्यान थीं और कअ़ब बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं मस्जिद में दाख़िल हुआ तो वहाँ रसूलुल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ रखते थे। तलहा बिन उबैदुल्लाह उठकर बड़ी तेज़ी से मेरी तरफ़ बढ़े और मुझसे मुसाफ़ा किया और (तौबा के क़ुबूल होने पर) मुझे मुबारक बाद दी।

وَقَالَ ابْنُ مَسْعُودٍ: عَلَّمَنِي النَّبِيُّ ﷺ التَّشَهُّدَ وَكَفِّي بَيْنَ كَفَّيْهِ وَقَالَ كَعْبُ بْنُ مَالِكٍ: دَخَلْتُ الْمَسْجِدَ فَإِذَا بِرَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَامَ إِلَيَّ طَلْحَةُ بْنُ عُبَيْدِ اللهِ يُهَرْوِلُ حَتَّى صَافَحَنِي وَهَنَّأَنِي.

6263. हमसे अ़म्र बिन आ़सिम ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम ने बयान किया, उनसे क़तादा ने कि मैंने हज़रत अनस

٦٢٦٣- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَاصِمٍ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، عَنْ قَتَادَةَ قَالَ: قُلْتُ لأَنَسٍ:

(रज़ि.) से पूछा, क्या मुसाफ़े का दस्तूर नबी करीम (ﷺ) के स़हाबा में था? उन्होंने कहा कि हाँ ज़रूर था।

أَكَانَتِ الْمُصَافَحَةُ فِي أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ؟ قَالَ : نَعَمْ.

6264. हमसे यह्या बिन सुलैमान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इब्ने वहब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे हैवह ने ख़बर दी, कहा कि मुझसे अबू अ़क़ील ज़ुह्रा बिन मअ़बद ने बयान किया, उन्होंने अपने दादा अ़ब्दुल्लाह बिन हिशाम (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ थे और आँह़ज़रत (ﷺ) उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) का हाथ पकड़े हुए थे। (राजेअ़: 3694)

٦٢٦٤- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ، قَالَ: أَخْبَرَنِي حَيْوَةُ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو عُقَيْلٍ زُهْرَةُ بْنُ مَعْبَدٍ سَمِعَ جَدَّهُ عَبْدَ اللهِ بْنَ هِشَامٍ قَالَ : كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ وَهُوَ آخِذٌ بِيَدِ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ. [راجع: ٣٦٩٤]

बाब 28 : दोनों हाथ पकड़ना और ह़म्माद बिन ज़ैद ने इब्ने मुबारक से दोनों हाथों से मुस़ाफ़ा किया

٢٨- باب الأَخْذِ بِالْيَدَيْنِ

وَصَافَحَ حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ ابْنَ الْمُبَارَكِ بِيَدَيْهِ.

6265. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, कहा हमसे यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने मुजाहिद से सुना, उन्होंने कहा कि मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन नज्रह अबू मअ़मर ने बयान किया कि मैंने ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे तशह्हुद सिखाया, उस वक़्त मेरा हाथ आँह़ज़रत (ﷺ) की हथेलियों के दरम्यान में था (इस त़रह़ सिखाया) जिस त़रह़ आप क़ुर्आन की सूरत सिखाया करते थे। अत्तहिय्यातु लिल्लाहि वस्सलवातु वत्तय्यिबातु अस्सलामु अ़लैक अय्युहन्नबिय्यु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू अस्सलामु अ़लैना व अ़ला इबादिल्लाहिस्सालिहीन अश्हदु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्न मुहम्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुहू। आँह़ज़रत (ﷺ) उस वक़्त ह़यात थे। जब आपकी वफ़ात हो गई तो हम (ख़िताब का स़ेग़ा के बजाय) इस त़रह़ पढ़ने लगे। अस्सलामु अ़लन्नबिय्यि या'नी नबी करीम (ﷺ) पर सलाम हो। (राजेअ़: 831)

٦٢٦٥- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا سَيْفٌ قَالَ: سَمِعْتُ مُجَاهِدًا يَقُولُ: حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ سَخْبَرَةَ أَبُو مَعْمَرٍ، قَالَ : سَمِعْتُ ابْنَ مَسْعُودٍ يَقُولُ: عَلَّمَنِي رَسُولُ اللهِ ﷺ وَكَفِّي بَيْنَ كَفَّيْهِ التَّشَهُّدَ، كَمَا يُعَلِّمُنِي السُّورَةَ مِنَ الْقُرْآنِ ((التَّحِيَّاتُ للهِ، وَالصَّلَوَاتُ، وَالطَّيِّبَاتُ، السَّلاَمُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ، السَّلاَمُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللهِ الصَّالِحِينَ، أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ)) وَهُوَ بَيْنَ ظَهْرَانَيْنَا فَلَمَّا قُبِضَ قُلْنَا : السَّلاَمُ، يَعْنِي عَلَى النَّبِيِّ ﷺ. [راجع: ٨٣١]

तश्रीह : मुस़ाफ़ा एक हाथ से मस्नून है या दोनों हाथों से, इसके लिये हम मुहद्दिषे कबीर मौलाना अ़ब्दुर्रहमान स़ाहब मुबारकपुरी (रह़.) की क़लमे मुबारक से कुछ तफ़्स़ीलात पेश करते हैं। मज़ीद तफ़्स़ील के लिये आपके रिसाला मक़ाला अल हुस्ना का मुत़ालआ़ किया जाए। ह़ज़रत मौलाना मरहूम फ़र्माते हैं,

एक हाथ से मुस़ाफ़ा करना जिस त़रह़ अहले ह़दीष मुस़ाफ़ा करते हैं, अह़ादीषे स़हीह़ा स़रीह़ा और आष़ारे स़ह़ाबा

(रज़ि.) से निहायत साफ़ तौर पर षाबित है उसके षुबूत में ज़रा भी शक नहीं है और दोनों हाथों से मुसाफ़ा करना जिस तरह इस ज़माने के हन्फ़िया में राइज है, वो न किसी सहीह हदीष से षाबित है और न किसी सहाबी के अष्र से और न किसी ताबेई के क़ौल व फ़ेअल से और चारों इमाम (इमाम अबू हनीफ़ा, इमाम शाफ़िई, इमाम मालिक, इमाम अहमद बिन हंबल रह.) से भी किसी इमाम का दोनों हाथों से मुसाफ़ा करना या इसका फ़त्वा देना बसनद मन्क़ूल नहीं और फ़ुक़हा-ए-हनफ़िया ने तश्बीह और तम्षील के पैराया में जो ये लिखा है कि अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने फ़िक़ह की काश्त की और ज़राअ़त लगाई और अल्क़मा (रज़ि.) ने उसमें सिंचाई की और उसको सींचा और इब्राहीम नख़ई (रह.) ने उसको काटा और हम्माद (रह.) ने मालिश की और इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) ने उसके ग़ल्ले को चक्की में पीसा और इमाम अबू यूसुफ़ (रह.) ने उसके आटे को गूँधा और इमाम मुहम्मद (रह.) ने उसकी रोटी पकाई और बाक़ी तमाम लोग (या'नी मुक़ल्लिदीने अहनाफ़) उस रोटी से खा रहे हैं। सो वाज़ेह हो कि उनका काश्त करने वाले, ज़राअ़त लगाने वाले, सिंचाई करने वाले, काटने वाले, मालिश करने वाले, आटा गूंधने वाले, और रोटी पकाने वाले में से भी किसी का दोनों हाथों से मुसाफ़ा करना या इसका फ़त्वा देना षाबित नहीं।

हन्फ़िया के नज़दीक जो निहायत मुस्तनद और मो'तबर किताबें हैं जिन पर मज़हबे हनफ़ी की बुनियाद है, उनमें भी दोनों हाथों से मुसाफ़ा का मस्नून या मुस्तहब होना नहीं लिखा है। कुतुबे हन्फ़िया में तब्क़-ए-ऊला की किताबें इमाम मुहम्मद की तस्नीफ़ात (मब्सूत, जामेअ कबीर, सीयरे सग़ीर, सीयरे कबीर, ज़ियादात) हैं। जिनके मसाइल, मसाइले उसूल और मसाइले ज़ाहिरे रिवायत से ता'बीर किये जाते हैं और इमाम मुहम्मद (रह.) की इन तस्नीफ़ात में आख़िरी तस्नीफ़ बक़ौले अ़ल्लामा इब्नुल हुमाम जामेउ़स्सग़ीर है इमाम मुहम्मद (रह.) की इस आख़िरी तस्नीफ़ की जलालते शान का पता भी अच्छी तरह तुमको इससे लग सकता है कि इमाम अबू यूसुफ़ (रह.) जो इमाम मुहम्मद (रह.) के उस्ताद हैं इस किताब को हर वक़्त अपने पास रखते थे; न हज़र में इसको जुदा करते और न सफ़र में। इस आख़िरी तस्नीफ़ में भी इमाम मुहम्मद (रह.) ने ये नहीं लिखा है कि मुसाफ़ा दोनों हाथों से करना चाहिये बल्कि सिर्फ़ इस क़दर लिखा है, **ला बास बिल्मुसाफ़हति** या'नी मुसाफ़ा करने में कुछ मुज़ायक़ा नहीं है। फ़ुक़हा-ए-हन्फ़िया के तब्क़-ए-षानिया में अ़ल्लामा क़ाज़ी ख़ान बहुत बड़े पाया के फ़क़ीह हैं। आपकी ज़ख़ीम किताब जो फ़तावा क़ाज़ी ख़ान के नाम से मशहूर है। इन्दल हन्फ़िया निहायत मुस्तनद है। क़ाज़ी ख़ान साहब ने अपनी उस किताब के हर बाब में बेशुमार मसाइले जुज़्इया को दर्ज फ़र्माया है लेकिन आपने भी इस किताब में दोनों हाथों से मुसाफ़ा करने को नहीं लिखा है बल्कि मुसाफ़ा के बारे में सिर्फ़ वही लिखा है जो इमाम मुहम्मद (रह.) ने जामेउ़स्सग़ीर में लिखा है। कुतुबे मो'तबरह हन्फ़िया में हिदाया एक दर्सी और ऐसी मक़्बूल और मुस्तनद व भरोसेमंद किताब है कि इसकी मदह में फ़ुक़हा-ए-हन्फ़िया इस शे'र को पढ़ते हैं :

इन्नल्हिदायत कल्क़ुर्आन क़द नसखत   मा सुन्निफ़ु क़ब्लहा फ़िश्शरइ मिन कुतुब

या'नी हिदाया ने क़ुर्आन मजीद की तरह तमाम उन किताबों को मन्सूख़ कर दिया जो इससे पहले लोगों ने तस्नीफ़ की थीं। उस किताब में भी ये नहीं लिखा है कि मुसाफ़ा दोनों हाथों से करना चाहिये बल्कि उसमें सिर्फ़ इस क़दर लिखा है, **व ला बास बिल्मुसाफ़हति लि अन्नहू हुवल्मुतवारिष व क़ाल अलैहिस्सलाम मन साफ़ह अरवाहुल्मुस्लिम व हर्रक यदहू तनाषरत जुनूबुहू इन्तिहा**. या'नी मुसाफ़ा करने में कुछ मुज़ायक़ा नहीं है क्योंकि वो एक क़दीम सुन्नत है और फ़र्माया रसूलल्लाह (ﷺ) ने कि जो शख़्स अपने भाई मुसलमान से मुसाफ़ा करे और अपने हाथ को हिला दे तो उसके गुनाह झड़ जाते हैं। और हिदाया के शुरूह बिनाया, एनाया, कफ़ाया, नताइजुल अफ़्कार, तक्मिला, फ़त्हुल क़दीर वग़ैरह में भी इस अम्र की तस्रीह नहीं की गई है कि मुसाफ़ा दोनों हाथों से मस्नून या मुस्तहब और कुतुबे मो'तबरा हन्फ़िया शरह वक़ाया भी दर्सी क़िताब है और क़रीब क़रीब हिदाया के मक़्बूल व मुस्तनद है। उसमें भी दोनों हाथों से मुसाफ़ा का मस्नून या मुस्तहब होना नहीं लिखा है। उसमें भी सिर्फ़ इस क़दर लिखा है कि मुसाफ़ा दोनों हाथों से होना चाहिये। अब आओ ज़रा उन मतनों को देखें जिन पर बाद वाले फ़ुक़हा का ए'तिमाद **इअलम अन्नल्मुतअख्खरीन क़द इअतमदू अलल्मुतूनिष्षलाषतिल्विक़ायति व मुख़्तसरिल्क़ुदूरी वल्कन्ज़ि क़ज़ा फ़िन्नाफ़िइल्कबीर** है। या'नी वक़ाया,

कंज़, क़ुदूरी, सो वाज़ेह रहे कि इन मतनों में भी दोनों हाथों से मुसाफ़ा का मस्नून या मुस्तहब होना नहीं लिखा है। अल मुख़्तसर मज़हबे ह़नफ़ी की किताबें मुस्तनद व मो'तबर हैं जिन पर मज़हबे ह़नफ़ी की बुनियाद है उनमें से किसी में दोनों हाथों से मुसाफ़ा करना नहीं लिखा है न उनमें ये लिखा है कि दोनों हाथों से मुसाफ़ा करना ज़रूरी है और न ये लिखा है कि दोनों हाथों से मुसाफ़ा मस्नून या मुस्तहब है।

अगर कोई साहब फ़र्माएँ कि फ़िक़हे ह़नफ़ी में दुर्रे मुख़्तार एक मशहूर व मा'रूफ़ किताब है और उसमें लिखा है कि दोनों हाथों से मुसाफ़ा करना सुन्नत है तो उनको ये जवाब देना चाहिये कि किसी किताब का मशहूर व मा'रूफ़ होना और बात है और उसका मुस्तनद और मो'तबर होना और बात। बिलख़ुसूस बिलादे मावराउन् नहर में कि वहाँ तो लोग उसे अज़्बर याद करते हैं। मगर साथ इस शोहरत के बावजूद मुह़क़्क़िीने ह़न्फ़िया के नज़दीक बिलकुल ग़ैर मुस्तनद और नाक़ाबिले ए'तिबार है। पस दुर्रे मुख़्तार के मशहूर व मा'रूफ़ होने से उसका मुस्तनद और भरोसेमंद होना ज़रूरी नहीं है और साथ उसके फ़ुक़हा-ए-ह़न्फ़िया ने इस अम्र की साफ़ तस्रीह़ **मुक़द्दमः उम्दतुर्रिआयः हाशियः शरह विकायः ला यजूज़ुल्इफ़्ताउ मिनल्कुतुबिल्मुख़्तसरति कन्नहरि व शर्हुल्कन्ज़ि लिल्ऐनी वद्दुर्रिल्मुख़्तार शरह तन्वीरिल्अब्सार इन्तिहा** की है कि दुर्रे मुख़्तार वग़ैरह कुतुबे मुख़्तसरा से फ़त्वा देना जाइज़ नहीं। इसके अलावा हमें ये भी देखना ज़रूरी है कि दुर्रे मुख़्तार में ये मसला (या'नी दोनों हाथों से मुसाफ़ा का सुन्नत होना) किस किताब से नक़ल किया गया है और जिस किताब से नक़ल किया गया है वो किताब कैसी है मो'तबर है या ग़ैर मो'तबर। पस वाज़ेह हो कि दुर्रे मुख़्तार में ये मसला क़ुनिया से नक़ल (दुर्रे मुख़्तार में है **व फ़िल्क़ुन्यति अस्सुन्नतु फ़िल्मुसाफ़ह़ति बिकिल्ता यदैहि व तमामिही फ़ीमा अल्लक़्तहु अलल्मुल्तक़ा इन्तिहा**) किया गया है और इन्दल ह़न्फ़िया क़ुनिया मो'तबर नहीं है। (देखो मुक़द्दमा उम्दतुर् रिआया 12) उस किताब का मुसन्निफ़ ए'तिक़ादन मुअतज़्ली था और फ़ुरूअ में ह़नफ़ी। उसकी तमाम किताबें क़ुनिया वग़ैरह बतस्रीह़ फ़ुक़हा-ए-ह़न्फ़िया ग़ैर मो'तबर व ग़ैर मुस्तनद हैं और साह़िबे क़ुनिया ने इस मसले की कोई दलील भी नहीं लिखी है। पस जब मा'लूम हुआ कि दुर्रे मुख़्तार में ये मसला क़ुनिया से नक़ल किया गया है और फ़ुक़हा-ए-ह़न्फ़िया के नज़दीक क़ुनिया ग़ैर मो'तबर और ग़ैर मुस्तनद है और क़ुनिया में इसकी कोई दलील भी नहीं लिखी है तो ज़ाहिर है कि दोनों हाथो से मुसाफ़ा के सुन्नत होने के षुबूत मे दुर्रे मुख़्तार का नाम लेना नावाक़िफ़ लोगों का काम है और दुर्रे मुख़्तार के मिष्ल कुछ और कुतुबे ह़न्फ़िया मुताख़िरीन मे भी दोनों हाथो से मुसाफ़ा के मस्नून होने का दा'वा किया गया है लेकिन वो न कुतुबे मो'तबरा मज़्कूरा बाला की तरह़ मो'तबर और मुस्तनद हैं और न उनमें मो'तबर और मुस्तनद किताब से ये दा'वा मन्क़ूल है और न उनमें इसकी कोई दलील लिखी है। ग़ालिब ये है कि इसी क़ुनिया से बवास्ता या बिला वास्ता ये दा'वा नक़ल किया गया है। ये सब बातें जब तुम सुन चुके हो तो अब हमारे इस ज़माने के अह़नाफ़ का सनीअ देखो। इन लोगों ने इस मसले में तह़क़ीक़ से कुछ भी काम नहीं लिया और जिन अह़ादीष़ से एक हाथ से मुसाफ़ा मस्नून होना षाबित होता है उसको बिल कुल्लिया नज़रअंदाज़ कर दिया बल्कि अपनी उन तमाम मुस्तनद किताबों को भी नज़रअंदाज़ कर दिया जिन पर मज़हबे ह़नफ़ी की बिना है और अड़े तो किस पर दुर्रे मुख़्तार वग़ैरह पर और अड़े तो ऐसा कि एक हाथ के मुसाफ़े को ग़ैर मस्नून ठहरा दिया और कुछ जह्हाल व मुता'स्सिबीन ने तो इस क़दर तशद्दुद किया कि अपनी जहालत और तअस्सुब के जोश में आकर एक हाथ के मुसाफ़े की निस्स्बत ग़ैर दुरुस्त और बिदअत होने का दा'वा कर दिया और उस पर भी तस्कीन न हुई तो इस सुन्नते नबविया को नसारा का काम ठहराकर और इस सुन्नत के आमिलीन को बुरे लक़ब से याद करके अपने जहालत और तअस्सुब भरे हुए दिल को ठण्डा किया। **इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन व हा अन अशरइ फ़िल्मक़्सूदि मुतवक्किलन अलल्लाहिल्वुदूद।**

एक हाथ से मुसाफ़ा के मस्नून होने के षुबूत में

पहली रिवायत : ह़ाफ़िज़ इब्ने अब्दुल बर्र (रह़.) तम्हीद शरह़ मौता में लिखते हैं, **हद्दष़ना अब्दुल्वारिष़ बिन सुफ़्यान काल हद्दष़ना क़ासिम बिन अस्बग हद्दष़ना इब्नु वज़ाह क़ाल हद्दष़ना यअक़ूब बिन क़अब क़ाल हद्दष़ना मुबश्शिर बिन इस्माईल अन हस्सान बिन नूह अन उबैदिल्लाहिब्नि बुस्र क़ाल तरौन यदी हाजिहि साफ़ह़तु बिहा रसूलल्लाहि (ﷺ) ज़करल्हदीष़** .या'नी उबैदुल्लाह बिन बुस्र (रज़ि.) से रिवायत है कि उन्होंने कहा कि तुम लोग मेरे

इस हाथ को देखते हो। मैंने इसी एक हाथ से रसूलुल्लाह (ﷺ) से मुसाफ़ा किया है और ज़िक्र किया ह़दीष़ को। ये ह़दीष़ स़ह़ीह़ है। इस ह़दीष़ से बस़राह़त ष़ाबित हुआ कि एक हाथ से मुस़ाफ़ा करना मस्नून है।

दूसरी रिवायत : अन अनसिब्नि मालिक क़ाल स़ाफ़ह़तु बिकफ़ी हाज़िही कफ़्फ़ रसूलिल्लाहि (ﷺ) फमा मसस्तु खज़्ज़न व ला हरीरन अल्यनु मिन कतफिहि (ﷺ) या'नी अनस बिन मालिक (रज़ि.) से रिवायत है कि मैंने अपनी इस एक हथेली से मुस़ाफ़ा किया है रसूलुल्लाह (ﷺ) की हथेली से पस मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) की हथेली से ज़्यादा नर्म किसी ख़ज़ को और न किसी रेशमी कपड़े को महसूस किया। ये ह़दीष़ मुसलसल बिल मुस़ाफ़ा के नाम से मशहूर है। इस ह़दीष़ की सनद में जितने रावी वाक़ेअ हुए हैं उनमें से हर एक ने इस ह़दीष़ को रिवायत करते वक़्त अपने उस्ताद से एक ही हाथ से मुस़ाफ़ा किया है जैसा कि अनस (रज़ि.) ने एक हाथ से रसूलुल्लाह (ﷺ) से मुस़ाफ़ा किया था। इस ह़दीष़ को अ़ल्लामा मुह़म्मद आ़बिद सनदी (रह़.) ने ह़स़रुश शारिद में और अ़ल्लामा शौकानी (रह़.) ने इत्तिह़ाफ़ुल अकाबिर में और बहुत से मुह़द्दिष़ीन ने अपने मुसलसलात में ज़िक्र किया है। इस ह़दीष़ की इस्नाद के कई त़रीक़ हैं। कुछ त़रीक़ अगरचे क़ाबिले एह़तिजाज व इस्तिशहाद नहीं मगर कुछ त़रीक़ क़ाबिले इस्तिशहाद ज़रूर हैं और हमने इस रिवायत को एह़तिजाजन पेश नहीं किया है बल्कि इस्तिशहादन और इसी त़रह़ तीसरी रिवायत भी इस्तिशहादन ही ज़िक्र की गई है। वाज़ेह़ हो कि इन दोनों रिवायतों में अगरचे दाहिने हाथ की तस़रीह़ नहीं है लेकिन इन रिवायतों में जो आगे आती हैं दाहिने हाथ की तस़रीह़ मौजूद है और मुस़ाफ़ा के दाहिने ही हाथ से मस्नून होने की ताईद ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) की इस ह़दीष़ से होती है, **कानन्नबिय्यु (ﷺ) युहिबुत्तयम्मुन मस्तत़ाअ फ़ी शानिही कुल्लिही फ़ी त़ुहूरिही व तरज्जुलिही व तनअ़ुलिही अ़लैहि कज़ा फ़िल्मिश्काति** या'नी रसूलुल्लाह (ﷺ) अपने तमाम कामों मे ह़त्तल वस़अ दाहिने को मह़बूब रखते वुज़ू करने में, और कँघी करने और जूता पहनने में। इस ह़दीष़ के उ़मूम में मुस़ाफ़ा भी दाख़िल है जैसा कि अ़ल्लामा ऐ़नी (रह़.) ने बिनाया शरह़ हिदाया में और इमाम नववी (रह़.) ने शरह़ स़ह़ीह़ मुस्लिम में इसकी तस़रीह़ की है।

तीसरी रिवायत : अ़न अबी उमामत तमामत्तहिय्यति अल्अख़्ज़ु बिल्यदि वल्मुस़ाफ़ह़तु बिल्युम्ना रवाहुल्हाकिम फिल्कुना कजा फ़ी कन्ज़िलउम्माल (पेज 31, जिल्द 5) या'नी अबू उमामा (रज़ि.) से रिवायत है कि सलाम की तमामी हाथ का पकड़ना और मुस़ाफ़ा दाहिने हाथ से है। रिवायत किया इसको ह़ाकिम ने किताबुल कुना में। इस रिवायत से भी स़राह़तन मा'लूम हुआ कि एक हाथ से या'नी दाहिने हाथ से मुस़ाफ़ा करना चाहिये।

चौथी रिवायत : स़ह़ीह़ अबू अ़वाना में अ़म्र बिन आ़स़ से रिवायत है, **फलम्मा जअ़लल्लाहुल्इस्लाम फ़ी क़ल्बी अतैतु रसूलल्लाहि (ﷺ) फ़कुल्तु या रसूलल्लाहि बस्सित यदक लिउबायिअक फ़बस़त यमीनहू फकबज़्तु यदी फक़ाल मालिक या अम्र फ़कुल्तु अरत्तु अन अश्तरित फक़ाल तश्तरितु माज़ा कुल्त यग़्फ़िरू ली फ़क़ाल मा अलिम्तु या अमर अन्नल्इस्लाम यहंदिमु मा कान क़ब्लहू अल्हदीष़** या'नी अ़म्र बिन आ़स़ (रज़ि.) कहते हैं कि जब अल्लाह तआ़ला ने मेरे दिल में इस्लाम डाला तो मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आया और कहा या रसूलल्लाह! अपने हाथ (मुबारक) को बढ़ाइए कि मैं आपसे बेअ़त करूँ पस रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपने दाहिने हाथ को बढ़ाया फिर मैंने अपना हाथ समेट लिया। आपने फ़र्माया क्या है तुझको ऐ अ़म्र! मैंने कहा कुछ शर्त़ रखना चाहता हूँ आपने फ़र्माया किस बात की शर्त़ रखना चाहता है? मैंने कहा इस बात की कि मेरी मग़्फ़िरत की जाए। आपने फ़र्माया कि तुझको ख़बर नहीं कि इस्लाम के पहले जितने गुनाह होते हैं उनको इस्लाम नेस्त व नाबूद कर देता है। इस ह़दीष़ को इमाम मुस्लिम ने भी अपनी स़ह़ीह़ में रिवायत किया है। मगर उसमें बजाय अब्सित़ यदक के उब्सुत यमीनक वाक़ेअ हुआ है। इस ह़दीष़ से स़राह़तन मा'लूम हुआ कि बेअ़त के वक़्त एक ही हाथ से (या'नी दाहिने हाथ से) मुस़ाफ़ा करना मस्नून है क्योंकि अगर दोनों हाथों से मुस़ाफ़ा ज़रूरी या मस्नून होता तो आप अपने दोनों हाथों को बढ़ाते और वाज़ेह़ हो कि इस ह़दीष़ के मुवाफ़िक़ बेअ़त के वक़्त दाहिने ही हाथ से मुसाफ़ा करने की आ़दत भी बराबर जारी रही है। मुल्ला अ़ली क़ारी (मिरक़ात शरह़ मिश्कात, जिल्द नं. 1 पेज नं. 87) में इस ह़दीष़ के तह़त लिखते हैं, **बस्स़ित यमीनक अय इफ़्तह़हा व मुदहा लिअज़अ यमीनी अलैहा कमा हुवल्आदतुल्बैअ़तु** या'नी अपने दाहिने हाथ को बढ़ाइए ताकि मैं अपने दाहिने हाथ को आपके दाहिने हाथ पर रखूँ जैसा कि बेअ़त में आ़दत है। जब इस ह़दीष़ से ष़ाबित हुआ कि बेअ़त के वक़्त एक ही हाथ (या'नी दाहिने हाथ) से मुस़ाफ़ा करना

मस्नून है तो इसी से मुलाक़ात के वक़्त भी एक ही हाथ (या'नी दाहिने हाथ) से मुसाफ़ा का मस्नून होना षाबित हुआ क्योंकि मुसाफ़ा मुलाक़ात और मुसाफ़ा बेअ़त दोनों की ह़क़ीक़त एक है इन दोनों मुसाफ़ा की ह़क़ीक़त में शरीअ़त से कुछ फ़र्क़ षाबित नहीं है, कमा तक़द्दम बयानुहू।

पाँचवीं रिवायत : मुस्नद अह़मद बिन ह़ंबल, पेज नं. 568 में है, **ह़द्दषना अ़ब्दुल्लाह ह़द्दषनी अबी ह़द्दषना अबू सईद व अफ़्फ़ान क़ाल ह़द्दषना रबीअ़: बिन कुल्षूम ह़द्दषनी अबी क़ाल समिअ़तु अबा गादिय: यक़ूलु बायअ़तु रसूलल्लाहि (ﷺ) क़ाल अबू सईद फ़क़ुल्तु लहू बियमीनिक क़ाल नअ़म क़ाला जमीअन फ़िल्ह़दीष़ व ख़तब्तु रसूलल्लाहि (ﷺ) यौमल्अ़क़बति** या'नी रबीआ बिन कुल्षुम कहते हैं कि मुझसे मेरे बाप ने ह़दीष़ बयान की कि मैंने अबू ग़ादिया से सुना, वो कहते थे कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से बेअ़त की पस मैंने अबू ग़ादिया से कहा क्या आपने अपने दाहिने हाथ से रसूलुल्लाह (ﷺ) से बेअ़त की थी। उन्होंने कहा हाँ। ये रिवायत स़ह़ीह़ है इसके सब रावी षिक़ह हैं। इस रिवायत से भी बेअ़त के वक़्त एक ही हाथ से (या'नी दाहिने हाथ से) मुसाफ़ा का मस्नून होना बस़राह़त षाबित है। पस इसी से मुसाफ़ा मुलाक़ात का भी एक ही हाथ (या'नी दाहिने हाथ) से मस्नून होना षाबित हुआ। कमा मर्र

छठी रिवायत : स़ह़ीह़ बुख़ारी में अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से रिवायत है **व कान बैअ़तुर्रिज़्वानि बअ़द मा ज़हब उ़ष्मानु इला मक्कत फ़क़ाल रसूलुल्लाहि (ﷺ) बियदिहिल्युम्ना हाज़िही यदु उ़ष्मान फ़ज़रब बिहा अ़लला यदिही फ़क़ाल हाज़िही लिउ़ष्मान अल्ह़दीष़** या'नी उ़ष्मान (रज़ि.) के मक्का चले जाने के बाद बेअ़तुर् रिज़्वान हुई। पस रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपने दाहिने हाथ की त़रफ़ इशारा करके फ़र्माया कि ये मेरा दाहिना हाथ उ़ष्मान (रज़ि.) का हाथ है। फिर आपने अपने दाहिने हाथ को अपने दूसरे हाथ पर मारा और फ़र्माया कि ये बेअ़त उ़ष्मान (रज़ि.) के लिये है। इस ह़दीष़ से भी एक हाथ से मुसाफ़ा का मस्नून होना षाबित है इसलिये कि आपका दाहिना हाथ तो बजाय एक हाथ उ़ष्मान (रज़ि.) के हाथ और दूसरा ख़ुद आपका। फ़तफ़क्कर

सातवीं रिवायत : मुस्नद अह़मद बिन ह़ंबल, जिल्द 3 पेज नं. 471 में है, **अन ह़िब्बान अबिन्नज़्र क़ाल दख़ल्तु मअ़ वाष़िल: बिन अल्अस्क़अ फ़ी मरज़िहिल्लज़ी मात फ़ीहि फ़सल्लम अ़लैहि व जलस फ़अख़ज़ अबुल्अस्वद यमीन वाष़िल: फ़मसह बिहा ऐनैहि व वज्हहू लिबैअ़तिनबिहा रसूलल्लाहि (ﷺ) अल्ह़दीष़** या'नी ह़िब्बान कहते हैं कि मैं वाष़िला के साथ अबुल अस्वद के पास उनके मर्ज़ुल मौत में गया। पस वाष़िला ने उनको सलाम किया और बैठे पस अबुल अस्वद ने वाष़िला के दाहिने हाथ को पकड़ा और उसको अपनी दोनों आँखों और मुँह से लगाया इस वास्ते कि वाष़िला ने अपने उसी दाहिने हाथ से रसूलुल्लाह (ﷺ) से बेअ़त की थी। इस रिवायत से भी दाहिने हाथ से मुसाफ़-ए-बेअ़त का मस्नून होना बस़राह़त षाबित है। पस इसी से मुसाफ़-ए-मुलाक़ात का भी एक ही हाथ से मस्नून होना ज़ाहिर है।

आठवीं रिवायत : स़ह़ीह़ अबू अ़वाना में है, **ह़द्दषना इस्ह़ाक़ बिन यसार काल ह़द्दषना उबैदुल्लाहि क़ाल अम्बाना सुफ़्यान अ़न ज़ियाद बिन अ़लाका क़ाल समिअ़तु जरीरन युह़द्दिषु हीन मातल्मुगीरत ब्न शुअ़बत ख़त़बन्नास फ़क़ाल उस़ीकुम बितक़्वल्लाहि वह़दहू ला शरीक लहू वस्सकीन: वल्वक़ार फ़इन्नी बायअ़तु रसूलल्लाहि (ﷺ) बियदी हाज़िही अ़लल्इस्लामि बश्तरत अ़लन्नुस्ह़ि लिकुल्लि मुस्लिमिन फ़वरब्बिल्क़अ़बति इन्नी लकुम नास़िहुम अज्मईन व इस्तग़्फ़र व नज़ल** या'नी ज़ियाद बिन अ़लाक़ा से रिवायत है कि जब मुग़ीरह बिन शुअ़बा ने इंतिक़ाल किया तो जरीर (रज़ि.) ने ख़ुत्बा पढ़ा और कहा (ऐ लोगों!) मैं तुमको अल्लाह वह़दहू ला शरीक लहू से डरने और सुकून और वक़ार की वस़िय्यत करता हूँ। मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से अपने इस एक हाथ से इस्लाम पर बेअ़त की है और रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझसे हर मुसलमान के वास्ते ख़ैरख़्वाही करने की शर्त की है पस रब्बे का'बा की क़सम! मैं तुम लोगों का ख़ैरख़्वाह हूँ और इस्तिग़फ़ार किया और उतरे इस रिवायत से भी एक हाथ से मुसाफ़ा का मस्नून होना ज़ाहिर है।

नवीं रिवायत : सुनन इब्ने माजा में है. **अन उ़क़्बत बिन स़हबान क़ाल समिअ़तु उ़ष्मान बिन अफ़्फ़ान यक़ूलु मा तग़न्नैतु व ला तमन्नैतु व ला मसस्तु ज़करी बियमीनी मुन्ज़ु बायअ़तु बिहा रसूलल्लाहि (ﷺ)** या'नी उ़क़्बा बिन

सह्बान रिवायत करते हैं कि मैंने उ़ष्मान (रज़ि.) को सुना वो कहते थे कि जबसे मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से अपने दाहिने हाथ से बेअ़त की है तबसे मैंने न तग़नी की और न झूठ बोला और न अपने दाहिने हाथ से अपने ज़कर को छुआ। इस रिवायत से भी मुसाफ़-ए-मुलाक़ात का एक हाथ या'नी दाहिने से मस्नून होना ज़ाहिर है।

दसवीं रिवायत : कंज़ुल उ़म्माल, पेज नं. 82 जिल्द नं. 1 में है, **अ़न अनसिन क़ाल बायअ़तुन्नबिय्य (ﷺ) बियदी हाज़िही अलस्समइ वत्ताअ़ति फ़ीमस्ततअ़तु** (इब्ने जरीर) या'नी अनस (रज़ि.) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से बेअ़त की अपने इस एक हाथ से समअ़ और त़ाअ़त पर बक़द्र अपनी इस्तित़ाअ़त के। रिवायत किया इसको इब्ने जरीर ने। इस रिवायत से भी एक हाथ से मुस़ाफ़-ए-मुलाक़ात का मस्नून होना ज़ाहिर है।

ग्यारह्वीं रिवायत : कंज़ुल उ़म्माल में है **अ़न अ़ब्दिल्लाहि ब्नि हकीम क़ाल बायअ़तु उ़मर बियदी हाज़िही अलस्समइ वत्ताअ़ति फ़ीमस्ततअ़तु** (इब्ने सअ़द) या'नी अ़ब्दुल्लाह बिन ह़कम रिवायत करते हैं कि मैंने उ़मर (रज़ि.) से बेअ़त की अपने एक हाथ से समअ़ और त़ाअ़त पर बक़द्र अपनी इस्तित़ाअ़त के। रिवायत किया इसको इब्ने सअ़द ने। इस रिवायत से भी बेअ़त के वक़्त एक हाथ से मुस़ाफ़ा का मस्नून होना ज़ाहिर है और इसी से मुस़ाफ़-ए-मुलाक़ात का भी एक हाथ से मस्नून होना ष़ाबित होता है। जैसा कि गुज़रा। वाज़ेह़ हो कि दसवीं और ग्यारह्वीं रिवायत में अगरचे दाहिने हाथ की तस़रीह़ नहीं है। मगर रिवायाते मज़्कूरा बाला बताती हैं कि इन दोनों रिवायतों मे एक हाथ से मुराद दाहिना हाथ है व नेज़ वाज़ेह़ हो कि बेअ़त की रिवायाते मज़्कूरा में कुछ रिवायतें इस्तिश्हादन पेश की गई हैं। नेज़ वाज़ेह़ हो कि मुस़ाफ़ा बेअ़त के एक हाथ से मस्नून होने के बारे में और भी बहुत सी रिवायाते मर्फ़ूआ व मौक़ूफ़ा आई हैं और जिस क़द्र यहाँ नक़ल की गई हैं वो इष्बाते मत्लूब के वास्ते काफ़ी व वाफ़ी हैं।

बारहवीं रिवायत : किताबुत् तर्ग़ीब वत् तरहीब मे है **अ़न सल्मानल्फ़ारसी अनिन्नबिय्यि (ﷺ) क़ाल इन्नल्मुस्लिम इज़ा लक़िय अख़ाहू फ़अख़ज़ बियदिही तहातत अ़न्हुमा ज़ुनूबुहुमा कमा यतहातुल्वरक़ु अ़निश्शजरतिल्याबिसति फ़ी यौमिरीहिन आ़सिफ़िन रवाहुत्तब्रानी बिइस्नादिन हसनिन** या'नी सलमान फ़ारसी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब कोई मुसलमान अपने भाई से मुलाक़ात करता है और उसका हाथ पकड़ता है तो उन दोनों के गुनाह इस त़रह़ झड़ जाते हैं जिस त़रह़ सख़्त हवा के दिन सूखे पेड़ से पत्ते झड़ते हैं। इस ह़दीष़ को त़बरानी ने बइस्नादे ह़सन रिवायत किया है। इस ह़दीष़ से भी एक हाथ से मुस़ाफ़ा का मस्नून होना ज़ाहिर है क्योंकि इसमें लफ़्ज़े यद बस़ेग़ा वाह़िद है और स़ेग़ा वाह़िद फ़र्दे वाह़िद पर दलालत करता है। वाज़ेह़ हो कि मुस़ाफ़ा की जिन जिन अह़ादीष़ में लफ़्ज़ यद वाक़ेअ़ हुआ है बस़ेग़ा वाह़िद ही वाक़ेअ़ हुआ है। मुस़ाफ़ा की किसी ह़दीष़ में लफ़्ज़े यद बस़ेग़ा तष्निया नहीं वाक़ेअ़ हुआ है। **व मनिद्दआ ख़िलाफ़हू फ़अलैहिल बयानु** पस इस क़िस्म की तमाम अह़ादीष़ हमारे मुद्दआ की मुष्बत हैं।

तेरहवीं रिवायत : जामेअ़ तिर्मिज़ी में है. **अ़निल्बरा बिन आ़ज़िब क़ाल क़ाल रसूलुल्लाहि (ﷺ) मा मिन मुस्लिमिन यल्तक़ैयानि फयतसाफ़हानि इल्ला गुफ़िर लहुमा क़ब्ल अंय्यतफर्रक़ा क़ालत्तिर्मिज़ी हाज़ा हदीषुन हसनुन गरीबुन** या'नी बरा बिन आ़ज़िब (रज़ि.) से रिवायत है कि फ़र्माया रसूलल्लाह (ﷺ) ने कि जब दो मुसलमान बाहम मुलाक़ात करते हैं पस मुस़ाफ़ा करते हैं तो क़ब्ल इसके कि एक-दूसरे से अलग हों उन दोनों की मग़्फ़िरत कर दी जाती है। तिर्मिज़ी ने कहा ये ह़दीष़ ह़सन ग़रीब है। इस ह़दीष़ से और इसके सिवा तमाम उन अह़ादीष़ से जिनमें मुत्लक़ मुस़ाफ़ा का ज़िक्र है और यद और क़फ़ की तस़रीह़ नहीं है। एक ही हाथ का मुस़ाफ़ा ष़ाबित होता है और इन अह़ादीष़ से दोनों हाथ का मुस़ाफ़ा का षुबूत नहीं होता। इस वास्ते कि अहले लुग़त और शुर्राह़े ह़दीष़ ने मुस़ाफ़ा के जो मा'नी लिखे हैं वो दोनों हाथ के मुस़ाफ़े पर स़ादिक़ नहीं आते और एक हाथ के मुस़ाफ़े पर जिस त़रह़ अहले ह़दीष़ मे मुरव्वज है बख़ूबी स़ादिक़ आते हैं। अब पहले मुस़ाफ़ा के मा'नी सुनो। अ़ल्लामा मुर्तज़ा ज़ुबैदी ह़नफ़ी (रह़.) ताजुल उ़रूस शरह़ क़ामूस में लिखते हैं. **अर्रजुलु युस़ाफ़िहुर्रजुल इज़ा वज़अ़ स़फ़्ह कफ़्फ़िही फ़ी स़फ़्हि कफ़्फ़िही व स़फ़हा कफ़्फैहुमा वज्हाहुमा व मिन्हु हदीषुल्मुस़ाफ़ति इन्दल्लिक़ाइ व हिय मुफ़ाअ़लतुम्मिन स़फ़्हिल्कफ़्फ़ि बिल्यदि व इक़्बालिल्वज्हि व**

त्तहज़ीबि फ़ला यल्तफ़ित इला मन जअम अन्नल्मुसाफ़हत गैर अरबिय्यिन इन्तिहा

मुल्ला अली (रह़.) क़ारी ह़नफ़ी मिरक़ात शरह मिश्कात मे लिखते हैं, **अल्मुसाफ़हतु हियल्आज़ाउ बिसफ़्हतिल्यदि इला सफ़्हतिल्यदि** ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर (रह़.) फ़त्हुल बारी में लिखते हैं, **हिय मुफ़ाअलतुम्मिनस्सफ़्हति वल्मुरादु बिहा अल्इफ़्ज़ाउ बिसफ़्हतिल्यदि इला सफ़्हतिल्यदि** इब्ने अषैर (रह़.) निहाया में लिखते हैं **व मिन्हु हदीषुल्मुसाफ़हति इन्दल्लिक़ाइ व हिय मुफ़ाअलतुम्मिनस्साक़ि सफ़हुल्कफ़्फ़ि बिल्कफ़्फ़ि व इक्बालुल्वज्हि अलल्वज्हि** इन इबारात का ख़ुलासा और ह़ासिल ये है कि मुसाफ़ा के मा'नी हैं बत़ने कफ़ को बत़ने कफ़ से मिलाना। पस इससे मा'लूम हुआ कि पुश्ते कफ़ को पुश्ते कफ़ से या बत़ने कफ़ पुश्त कफ़ से मिलाने को मुसाफ़ा नहीं कहेंगे। जब तुम मुसाफ़ा के मा'नी मा'लूम कर चुके तो सुनो कि मुसाफ़ा के मा'नी का मुसाफ़ा मुरव्वजा इन्दे अहले ह़दीष पर सादिक़ आना तो ज़ाहिर रहा है रहा दोनों हाथ से मुसाफ़ा सो इसकी दो सूरत हैं, एक ये कि दाहिने हाथ के बत़ने कफ़ को दाहिने हाथ के बत़ने कफ़ से मिलाया जाए और मुसाफ़िहीन मे से हर एक अपने बाएँ हाथ के बत़ने कफ़ को दूसरे के दाहिने हाथ के पुश्त कफ़ से मिलाए। इस सूरत का मुसाफ़ा इस ज़माने के अकषर अह़नाफ़ में मुरव्वज है और इसके षुबूत में ह़ज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) की ये रिवायत **अल्लमनिन्नबिय्यु (ﷺ) व कफ़्फ़ी बैन कफ़्फ़ैहि अत्तशह्हुद** पेश की जाती है और दूसरी सूरत ये है कि दाहिने हाथ के बत़ने कफ़ को दाहिने हाथ के बत़ने कफ़ से और बाएँ हाथ के बत़ने कफ़ को बाएँ हाथ के बत़ने कफ़ से मिलाया जाए और मुसाफ़िहीन में से एक के दोनों हाथ बत़ौर मिक़राज़ के हों। इस मिक़राज़ी सूरत का मुसाफ़ा इस ज़माने के कुछ अह़नाफ़ में राइज है। इन दोनों सूरतो में से पहली सूरत में फ़क़त़ दाहिने हाथ के बत़ने कफ़ को दाहिने हाथ के बत़ने कफ़ से मिलाने पर मुसाफ़ा के मा'नी सादिक़ आते हैं और बाक़ी ज़ाइद है जिसको मुसाफ़ा से कुछ ता'ल्लुक़ नहीं है। रही दूसरी सूरत सो अव्वलन उसको पहली सूरत के क़ाएलीन की दलीले मज़्कूर बात़िल करती है षानियन ये मिक़राज़ी मुसाफ़ा एक मुसाफ़ा नहीं है बल्कि दो मुसाफ़ा है क्योंकि दाहिने हाथ का बत़ने कफ़ दाहिने हाथ के बत़ने कफ़ से मिलता है और उस पर मुसाफ़ा की ता'रीफ़ **अल्इफ़्ज़ाउ बिसफ़्हतिल्यदि इला सफ़्हतिल्यदि** सादिक़ आती है। लिहाज़ा ये एक मुसाफ़ा हुआ और बाएँ हाथ का बत़ने कफ़ बाएँ हाथ के बत़ने कफ़ से मिलता है और उस पर भी मुसाफ़ा की ता'रीफ़ सादिक़ आती है। लिहाज़ा ये भी एक मुसाफ़ा हुआ पस मिक़राज़ी मुसाफ़ा में बिला शुब्हा दो मुसाफ़ा होते हैं और अगरचे मुसाफ़ा के जो मा'नी अहले लुग़त ने बयान किया हैं शरअ ने इससे दूसरे मा'नी की त़रफ़ नक़ल नहीं किया है लेकिन शरअ ने मुसाफ़ा के लिये दाहिने हाथ को ज़रूर मुतअय्यन किया है। जैसा कि रिवायाते मज़्कूरा बाला से वाज़ेह़ है। बिना अलिया इस मिक़राज़ी मुसाफ़े में बाएँ हाथ के बत़ ने कफ़ को बाएँ हाथ के बत़ने कफ़ से मिलाना है हमारे इतने बयान से साफ़ ज़ाहिर हुआ कि बरा बिन आज़िब (रज़ि.) की ह़दीषे मज़्कूरा से नेज़ तमाम उन अह़ादीष से जिनमें मुत़्लक़ मुसाफ़ा मज़्कूर है और यद और कफ़ की तस्रीह़ नहीं है। एक ही हाथ से मुसाफ़ा का मस्नून होना षाबित होता है। फ़तफ़क्कर व तदब्बर। हमने एक हाथ के मुसाफ़े की सुन्नत होने के इष्बात में तेरह रिवायतें पेश की है इनके सिवा और भी रिवायतें हैं लेकिन इस क़दर इष्बात मत़्लूब के लिये काफ़ी व वाफ़ी हैं। अब हम एक हाथ से मुसाफ़े के मस्नून या मुस्तह़ब होने के बारे में उलमा व फ़ुक़हा के चंद अक़्वाल बयान कर देना वाजिब समझते हैं।

एक हाथ से मुसाफ़ा के मस्नून या मुस्तह़ब होने के बारे में उलमा व फ़ुक़हा के अक़्वाल

अल्लामा इब्ने आबिद शामी (रह़.) ह़नफ़ी का क़ौल : आप रद्दुल मुख़्तार ह़ाशिया दुर्रे मुख़्तार में लिखते हैं,**क़ौलुहू (फ़इल्लम यक़्दिर) अय अला तक़्बीलिही इल्ला बिल्ईज़ाद औ मुत्लक़न यज़उ यदैहि अलैहि षुम्म युक़ब्बिलुहुमा औ यज़उ इहदाहुमा वल्औला अन तकूनल्युम्ना लिअन्नहल्मुस्तअमलतु फ़ीमा फ़ीहि शर्फ़ुन व लिमा नुक़िल अनिल्बहरिल्अमीक मिन अन्नल्हजर यमीनुल्लाहि युसाफ़िहु बिहा इबादहू वल्मुसाफ़हतु बिल्युम्ना इन्तिहा** या'नी अगर ह़ज्रे अस्वद के चूमने पर क़ुदरत न हो या क़ुदरत हो मगर ईज़ा के साथ तो उन दोनों सूरतों में त़वाफ़ करने वाला ह़ज्रे अस्वद पर अपने दोनों हाथों को रखे फिर हाथों को चूमे या सिर्फ़ एक हाथ रखे और बेहतर ये है कि ह़ज्रे अस्वद पर दाहिने हाथ रखे इस वास्ते कि दाहिना ही हाथ शरीफ कामों में मुस्तअम्मुल होता है और इस वास्ते कि बह़रे

अमीक़ से नक़ल किया गया है कि हज्रे अस्वद अल्लाह तआला का दाहिना हाथ है इससे उसके बन्दे मुसाफ़ा करते हैं और मुसाफ़ा दाहिने हाथ से है।

अल्लामा बद्रुद्दीन ऐनी (रह.) हनफ़ी का क़ौल : आप बिनाया ये शरह हिदाया में लिखते हैं **वत्तफ़क़ल्उलमाउ अला अन्नहू यस्तहिब्बु तक़दीमुल्युम्ना फ़ी कुल्लि मा हुव मिम्बाबित्तक्रीमि कल्वुज़ूइ वल्गुस्लि व लुब्सिष्षौबि वन्नअलि वल्खुफ्फ़ि वस्सरावीलि व दुखूलिल्मस्जिदि वस्सिवाकि वल्इक्तिहालि व तक़्लीमिल्अज़्फ़ारि व कस्सिश्शारिबि व नुत्फ़िल्इब्ति व हल्क़िर्रासि वस्सलामि मिनस्सलाति वल्खुरूजि मिनल्खलाइ वश्शुबि वल्मुसाफ़हति वस्तिलामिल्हज्रि वल्अख़्ज़ि वल्अताइ व गैर ज़ालिक मिम्मा हुव हुव मअनाहू व यस्तहिब्बु तक़्दीमुल्यसारि फ़ी ज़िद्दि ज़ालिक इन्तिहा** या'नी उलमा ने इस बात पर इत्तिफ़ाक़ किया है कि तमाम उन उमूर में जो बाबे तक्रीम से हैं दाहिने का मुक़द्दम करना मुस्तहब है जैसे वुज़ू और ग़ुस्ल करना और कपड़ा और जूता और मौज़ा और पायजामा पहनना और मस्जिद में दाख़िल होना और मिस्वाक करना और सुर्मा लगाना और नाख़ून और लब के बाल तराशना और बग़ल के बाल उखेड़ना और सर मूँडना और नमाज़ से सलाम फेरना और पाख़ाना से निकलना और खाना और पीना और मुसाफ़ा करना और हज्रे अस्वद का बोसा लेना और देना वग़ैरह और उन कामों में जो इन उमूर के ख़िलाफ़ हैं बाएँ का मुक़द्दम करना मुस्तहब है।

अल्लामा ज़ियाउद्दीन हनफ़ी नक़्शबन्दी (रह.) का क़ौल : आप अपनी किताब **लवामिउल्उक़ूल शर्हु रूमुज़िल्हदीष** में लिखते हैं :–**.वज़्ज़ाहिर मिन आदाबिश्शरीअति तअयीनुल्युम्ना मिनल्जानिबैनि लिहुसूलिस्सुन्नति कज़ालिक फला तहसुलु बिल्युस्रा फिल्युस्रा व ला फिल्युम्ना इन्तिहा ज़करहू तहत हदीष़िन इज़ल्तक़ल्मुस्लिमानि फतसाफ़ह व हमिदल्लाह अल्हदीष** या'नी आदाबे शरीअत से ज़ाहिर यही है कि मुसाफ़ा के मस्नून होने के लिये दोनों जानिब से दाहिना हाथ मुतअय्यन है पस अगर दोनों जानिब से बायाँ हाथ मिलाया गया या एक जाबिन से दाहिना और एक तरफ़ से बायाँ तो मुसाफ़ा मस्नून नहीं होगा।

अल्लामा अब्दुर्रऊफ़ मुनावी (रह.) का क़ौल : आप अपनी किताब **अरौज़ुन्नज़ीर शर्हु जामिइन सग़ीर** में लिखते हैं। **वला तहसुलुस्सुन्नतु इल्ला बिवज़्इल्युम्ना फ़िल्युम्ना हैषु ला उज़्र इन्तिहा** या'नी मुसाफ़ा मस्नून नहीं होगा मगर इसी सूरत से कि दाहिने हाथ को दाहिने हाथ में रखा जाए जबकि कोई उज़्र न हो।

अल्लामा अज़ीज़ी (रह.) का क़ौल : आप अपनी किताब अस्सिराजुम मुनीर शरह जामेअ सग़ीर मे हदीष़ लिक़ाए हाज की शरह मे लिखते हैं **इज़ा लक़ीतल्हाज्ज अय इन्द कुदूमिही मिन हज्जिही फसल्लम अलैहि व साफहुहू अय ज़अयदकल्युम्ना फ़ी यदिहिल्युम्ना इन्तिहा** या'नी जब तू हाजी से मुलाक़ात करे या'नी हज से आने के वक़्त तो उस पर सलाम कर और उससे मुसाफ़ा कर या'नी अपने दाहिने हाथ को उसके दाहिने हाथ में रख।

अल्लाम इब्ने अर्सलान (रह.) का क़ौल : अल्लामा अल्क़मा (रह.) अपनी किताब **.अल्कौकबुल्मुनीर** शरह जामेअ सग़ीर में हदीष़**.इज़ल्तकल्मुस्लिमानि फतसाफहा** अल्अख़ के तहत में लिखते हैं**क़ाल इब्नु अर्सान व ला तहसुलु हाज़िहिस्सुन्नतु इल्ला बिअय्यक़अ बिश्रतु अहदिल्कफ़्फ़ैनि अलल्आख़र (इन्तिहा)** या'नी मुसाफ़ा की सुन्नत हासिल नहीं होगी मगर इसी तौर से कि एक हथेली की चमड़ी दूसरी हथेली की चमड़ी पर रखी जाए।

अल्लामा इब्ने हजर मक्की (रह.) का क़ौल : आप **अल्मन्हजुल्क़दीम** शरह मसाइलुत ता'लीम में लिखते हैं **यसुन्नुत्तयामुनु बिल्वुज़ूइ लिअन्नहू (ﷺ) कान युहिब्बुत्तयामुन फ़ी शानिही कुल्लिही मिम्मा हुव मिम्बाबित्तक्रीम कतस्रीहि शैअरिन व तुहूरिन इक्तिहालिन व हल्क़िन व नुत्फ़ु इबितिन व क़स्सि शारिबिन व लुब्सि नहवि नअलिन व षौबिन व तक़्लीमि ज़फ़्रिन व मुसाफ़हतिन व अखज़हू अताउन व यक्रहु तर्कत्तयामुन (इन्तिहा)** इस इबारत का हासिल वही है जो अल्लामा ऐनी की इबारत का हासिल है।

इमाम नववी (रह.) का क़ौल : अल्लामा अब्दुल्लाह बिन सुलैमान अल यम्नी अज़् ज़ुबैदी अपने रिसाले मुसाफ़ा में

लिखते हैं **क़ालन्नववी यस्तहिब्बु अन तकूनल्मुसाफ़हतु बिल्युम्ना व हुव अफ़्ज़लु इन्तिहा.** या'नी नववी ने कहा कि दाहिने हाथ से मुसाफ़ा करना मुस्तहब है और यही अफ़ज़ल है। अब हम आख़िर में जनाबे क़ुतुबे रब्बानी मौलाना शैख़ सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी (रह.) (जो पीराने पीर के लक़ब से मशहूर हैं और जिनका एक आ़लिम इरादातमंद है) का क़ौल नक़ल करके पहले बाब को ख़त्म करते हैं।

जनाब क़ुतुबे रब्बानी मौलाना शैख़ सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी (रह.) का क़ौल : आप अपनी बेनज़ीर किताब **गुन्यतुत्तालिबीन** में लिखते हैं **फस्लुन फ़ीमा यस्तहिब्बु फ़िअलुहू बियमीनिही व मा यस्तहिब्बु बिशिमालिही यस्तहिब्बु लहू तनाउलुल्अशयाइ बियमीनिही वल्अक्लि वश्शुर्बि वल्मुसाफहति वल्बदाति बिहा फिल्वुज़ूइ वल्इन्तिआलि व लुब्सिष्षियाबि व कज़ालिक़ युब्दउ बिद्दुखूलि इलल्मवाज़िइल्मुबारकति कल्मसाजिदि वल्मशाहिदि वल्मनाज़िलि वद्दुरि बिरिज्लिहिल्युम्ना व अम्मश्शिमालु फलिफ़िअलिल्अश्याइल्मुस्तक्ज़रति व इजालतिद्दुरनि वल्इस्तिन्षारि वल्इस्तिन्जाइ व तन्क़ीहिल्अन्फ़ि व गुस्लिन्नजासति कुल्लिहा इल्ला अंय्यशुक्क़ ज़ालिक औ यतअज़्ज़र कल्मश्लूल वल्मक़्तूअ यसारूहू फ़यफ़्अलुहू बियमीनिही इन्तिहा** या'नी ये फ़स्ल है उन उमूर के बयान में जिनका दाहिने हाथ से करना, मुस्तहब है और उन उमूर के बयान में जिनका बाएँ हाथ से करना मुस्तहब है। मुसलमान के लिये चीज़ों को लेना और खाना और पीना और मुसाफ़ा करना दाहिने हाथ से मुस्तहब है और वुज़ू करने में और जूते और कपड़े पहनने में दाहिनी तरफ़ से शुरू करना मुस्तहब है और इसी तरह मुतबर्रक मुक़ामात जैसे मस्जिद और मजलिस और मंज़िल और घर में दाख़िल होने में दाहिने पैर से शुरू करना चाहिये और लेकिन बायाँ हाथ सो उन चीज़ों के करने के लिये है जो मुस्तक़्दिर हैं और मैल के दूर करने के लिये है जैसे नाक झाड़ना और इस्तिन्जा करना और नाक साफ़ करना और तमाम नजासतों को धोना मगर जिस सूरत में बाएँ हाथ से उन कामों का करना दुश्वार हो या न हो सके जैसे वो शख़्स जिसका बायाँ हाथ शल हो गया और या वो शख़्स जिसका बायाँ हाथ कट गया हो तो इस सूरत मे उन कामों को (मजबूरन) दाहिने हाथ से करे।

कहाँ हैं सिलसिला क़ादरिया के मुरीदान और किधर हैं हज़रत पीराने पीर दस्तगीर के इरादत मदान अपने पीरों दस्तगीर के इस क़ौल को बग़ौर व इबरत मुलाहिज़ा फ़र्माएँ और अगर अपनी इरादत और अक़ीदत में सच्चे हैं तो इसके मुताबिक़ अमल करें और एक हाथ से मुसाफ़ा की निस्बत या इसके आमेलीन के निस्बत अपनी ज़ुबान से जो ना मुलायम अल्फ़ाज़ निकाले हो उनको नदामत व शर्मिन्दगी के साथ वापस लें। **वल्लाहुल्हादी इलल्हक़्क़ि**

दो हाथ से मुसाफ़ा वालों की दलील और उसका जवाब

सहीहैन में इब्ने मसऊद (रज़ि.) से मरवी है, **अल्लमनिन्नबिय्यु (ﷺ) व कफ़्फ़ी बैन कफ़्फ़ैहि अत्तशह्हुद** या'नी इब्ने मसऊद (रज़ि.) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे तशह्हुद की ता'लीम ऐसी हालत में दी कि मेरी हथेली आपकी दोनों हथेलियों के दरम्यान थी। इस दलील का जवाब ये है।

क़ौल इब्ने मसऊद (रज़ि.) **व कफ़्फ़ी बैन कफ़्फ़ैहि** में लफ़्ज़ कफ़ा से ज़ाहिर ये है कि उनकी फ़क़त एक हथेली मुराद है और मतलब ये है कि हालते ता'लीम तशह्हुद में इब्ने मसऊद (रज़ि.) की फ़क़त एक हथेली रसूलुल्लाह (ﷺ) की दोनों हथेलियों में थी क्योंकि कफ़ी मे लफ़्ज़ कफ़ मुफ़रद है और मुफ़रद फ़र्दे वाहिद पर दलालत करता है। नेज़ रसूलुल्लाह (ﷺ) के कफ़ को बसेग़ा तष्निया और अपने कफ़ को बसेग़ा मुफ़रद ज़िक्र करना भी ज़ाहिर दलील इसी अम्र की है कि लफ़्ज़ कफ़ी से इब्ने मसऊद की एक ही हथेली मुराद है। नेज़ इब्ने मसऊद (रज़ि.) की अगर दोनों हथेलियाँ आँहज़रत (ﷺ) की दोनों मुतबर्रक हथेलियों में होतीं तो इब्ने मसऊद (रज़ि.) ज़रूर इसकी तस्रीह करते और एहतिमाम और एअतिनाअ के साथ बल्कि फ़ख़्र के साथ फ़र्माते। व कफ़ा बैन कफैहि या'नी मेरी दोनों हथेलियाँ आँहज़रत (ﷺ) की दोनों हथेलियो के दरम्यान थीं। इस सूरत में वकफ़ी कहने का कोई मौक़ा नहीं था नेज़ इब्ने मसऊद (रज़ि.) की ग़र्ज़ व कफ़ी बैन कफैहि से इस हालत और वज़अ का बताना है जिस हालत और वज़अ के साथ रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनको तशह्हुद की ता'लीम दी थी

पस अगर ता'लीमे तशह्हुद के वक़्त ह़ालत ये थी कि इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) की दोनों हथेलियाँ आँह़ज़रत (ﷺ) की दोनों हथेलियों के दरम्यान थीं तो इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) व कफ़ाया बैन कफैहि फ़र्माते क्योंकि ख़ास़ इस ह़ालत पर लफ़्ज़ व कफ़ी बैन कफैहि स़राह़तन व नस़्स़न दलालत नहीं करता है। पस जब मा'लूम हुआ कि इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) के क़ौल मज़्कूर में .... से उनकी फ़क़त़ एक हथेली मुराद है और मत़लब ये है कि इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) की फ़क़त़ एक हथेली आँह़ज़रत (ﷺ) की दोनों हथेलियों के दरम्यान थी तो ज़ाहिर है कि इस दलील से दोनों हाथ से मुस़ाफ़ा करने वालों का दा'वा किसी त़रह़ षाबित नहीं हो सकता क्योंकि ये लोग इस त़रह़ के मुस़ाफ़े के क़ाइल नहीं बल्कि उस मुस़ाफ़े के क़ाइल हैं जिसमें दोनों जानिब से दो दो हथेलियाँ मिलाई जाएँ। पस जो इन लोगों का दा'वा है वो इस दलील से षाबित नहीं होता और जो षाबित होता है वो इनका दा'वा नहीं। ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर (रह़.) फ़त्ह़ुल बारी में लिखते हैं, **वज्हु इदखालि हाज़ल्हदीषि अय हदीषु अब्दिल्लाह बिन हिशाम फिल्मुस़ाफ़ह़ति अन्नल्अख़्ज़ बिल्यदि यस्तल्ज़िमु इल्तिक़ाउ स़फ़्ह़तिल्यदि बिस़फ़्ह़तिल्यदि ग़ालिबन व मिन ष़म्म अफ़्रदहा बितर्जुमतिही व तला हाज़िहिल्जवाज़ वुक़ूउल्अख़्ज़ बिल्यदि मिन गैरि हुसूलिल्मुस़ाफ़ह़ति** और अ़ल्लाम क़स्त़लानी (रह़.) इर्शादुस्सारी में लिखते हैं **व लम्मा कानल्अख़्ज़ु बिल्यदि यजूज़ु अंय्यक़अ मिन गैरि हुसूलिल्मुस़ाफ़ह़ति अफ़्रदहू बिहाज़ल्बाब** उन दोनों इ़बारतों का ख़ुलास़ा ये है कि चूँकि हाथ का पकड़ना हो सकता है कि बग़ैर ह़ुसूले मुस़ाफ़ा के हो इसलिये कि इमाम बुख़ारी (रह़.) ने इसका एक अलग बाब मुनअ़क़िद किया और मौलवी अ़ब्दुल ह़ई स़ाह़ब ह़नफ़ी (रह़.) मज्मूआ़ फ़तावा में लिखते हैं व आँचे दर स़ह़ीह़ बुख़ारी दर बाब मज़्कूर अज़ अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) मरवी अस्त **अ़ल्लमनी रसूलुल्लाहि (ﷺ) व कफ़्फ़ी बैन कफ़्फ़ैहि अत्तशह्हुद कमा युअ़ल्लिमुनी अस्सूरत मिनल्क़ुर्आन अत्तहिय्यातु लिल्लाहि वस़्स़लवातु अत्तय्यिबातु अल्हदीष़** पस ज़ाहिर आँस्त कि मुस़ाफ़ा मुतवारिषा कि बक़ुव्वत तलाक़ी मस्नून अस्त नबूदा बल्कि त़रीक़ा ता'लीमिया बूदा कि अकाबिर बवक़्ते एहतिमाम ता'लीम चीज़े अज़्दोनों दस्त या यक दस्त दस्त असाग़िर गिरफ़्ता ता'लीम मी साज़न्द या'नी स़ह़ीह़ बुख़ारी में जो अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) से मरवी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे तशह्हुद सिखलाया इस ह़ालत में कि मेरी हथेली आपकी दोनों हथेलियों में थी सो ज़ाहिर ये है कि ये मुस़ाफ़ा मुतवारिषा जो बवक़्ते मुलाक़ात मस्नून है नहीं था बल्कि त़रीक़ा तअ़लीमिया था कि अकाबिर किसी चीज़ के एहतिमाम ता'लीम के वक़्त दोनों हाथ से या एक हाथ से अस़ाग़िर का हाथ पकड़कर ता'लीम करते हैं और मौलवी स़ाह़ब मौसूफ़ के अ़लावा अजिल्ला फ़ुक़हा-ए-ह़नफ़िया ने भी इस अम्र की तस़्रीह़ की है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) का अपने दोनों हथेलियों में इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) के कफ़ को पकड़ना मज़ीद एहतिमाम व ताकीदे ता'लीम के लिये था और उन लोगों में से किसी ने ये नहीं लिखा है कि ये अ़ला सबीलिल मुस़ाफ़ा था। हिदाया में है **वल्अख़्ज़ु बिहाज़ा (अय बितशह्हुदि इब्नि मस्ऊ़द) औला मिनल्अख़्ज़ि बितशह्हुदि इब्नि अ़ब्बास रज़ि. लिअन्न फीहिल्अम्रू व अक़ल्लुहू अल्इस्तिह़बाबु वल्अलिफ़ु वल्लामु व हुमा लिल्इस्तिग़राक़ि वजियादतुल्वावि व हिय लितज्दीदिल्कलामि कमा फ़िल्क़समि व ताकीदित्तअ़लीमि इन्तिहा** अ़ल्लामा इब्नुल हुम्माम (रह़.) फ़त्ह़ुल क़दीर में लिखते हैं **क़ौलुहू व ताकीदुत्ताअ़लीमि यअ़नी बिही अख़्ज़ुहू बियदिही ज़ियादतुत्तौकीदि लैस फ़ी तशह्हुदि इब्नि अ़ब्बास इन्तिहा** ह़ाफ़िज़ ज़ेलई (रह़.) तख़्रीजे हिदाया में लिखते हैं **व मिन्हा अय मिन तर्जीहि तशह्हुदि इब्नि मस्ऊ़द अ़ला तशह्हुदि इब्नि अ़ब्बास अन्नहू क़ाल फ़ीहि अ़ल्लमनित्तशह्हुद व कफ्फ़ी बैन कफ़्फ़ैहि व लम यक़ुल ज़ालिक फ़ी गैरिही फदल्ल अ़ला मज़ीदिल्इतिनाइ वल्इहतिमामि बिही इन्तिहा** ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर (रह़.) दिराया में लिखते हैं **व अम्मा ताकीदुत्तअ़लीमि फ़फ़ी तशह्हुदि इब्नि अ़ब्बास अयज़न इन्द मुस्लिम फसल्लम लिल्मुसन्निफ़ि इष़्नानि व बक़िय इष़्नानि इल्ला अंय्युरीद बिताकीदित्तअ़लीमि क़ौलुहू कफ़्फ़ी बैन बैन कफ्फैहि फहिय जाइदतुन लहू इन्तिहा।** और कफ़ाया हाशिया हिदाया में है, **व ताकीदुत्तअ़लीमि फइन्नहू रूविय अन मुहम्मद बिन अल्ह़सन अन्नहू क़ाल अखज़ अबू यूसुफ़ बियदी व अ़ल्लमनित्तशह्हुद व क़ाल अखज़ अबू ह़नीफ़त बियदी फ़अ़ल्लमनित्तशह्हुद व क़ाल अबू हनीफ़त अखज़ हम्माद बियदी फअ़ल्लमनित्तशह्हुद व क़ाल हम्माद अखज़ अल्क़मा बियदी व अ़ल्लमनित्तशह्हुद व क़ाल अल्कमा अखज़ इब्नु मस्ऊ़द बियदी व अ़ल्लमनित्तशह्हुद व**

काल इब्नु मस्ऊद अखज़ रसूलुल्लाहि (ﷺ) बियदी व अल्लमनित्तशह्हुद (अल्ख) इन इबारात से साफ़ वाज़ेह है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) का इब्ने मसऊद के कफ़ को अपने दोनों कफ़ों मे पकड़ना मज़ीद एहतिमामे ता'लीम के लिये था और अला सबीलिल मुसाफ़ा नहीं था और वहाँ वाज़ेह रहे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) का हाथ पकड़कर ता'लीम देना बहुत सी अहादीष से षाबित है अज़्आँ जुम्ला मुस्नद अहमद बिन हंबल पेज नं. 78 जिल्द नं. 5) की एक ये रिवायत है। **हद्दषना अब्दुल्लाह हद्दषनी अबी हद्दषना इस्माईल हद्दषना सुलैमान बिन अल्मुगैरः अन हुमैद बिन हिलाल अन अबी कतादः व अबिद्दहमा काला काना यक्षुरानिस्सफ़र नहव हाज़ल्बैति क़ाला अतैना अला रजुलिम्मिन अहलिल्बादियति फ़क़ालल्बदवी अखज़ रसूलुल्लाहि बियदी फजअल युअल्लिमुनी मिम्मा अल्लामहुल्लाहु तबारक व तआला इन्नक लन तदअ शैअन इत्तिकाअल्लाहि जल्ल व अज़्ज़ इल्ला आताकल्लाहु खैरम्मिन्हु** या'नी अबू क़तादा और अबुद दहमा कहते हैं कि हम दोनों एक बदवी शख़्स के पास आए तो उस बदवी ने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मेरा हाथ पकड़ा पस मुझे ता'लीम करने लगे उन बातों की जिनकी अल्लाह तआला ने आपको ता'लीम दी थी और फ़र्माया कि जब तू अल्लाह तआला के डर से किसी चीज़ को छोड़ देगा तो ज़रूर अल्लाह तआला उस चीज़ से बेहतर कोई चीज़ तुझे अता करेगा।

अगर कोई कहे कि सहीह बुख़ारी से दोनों हाथ का मुसाफ़ा षाबित है इस वास्ते कि इमाम बुख़ारी (रह.) ने अपनी सहीह में लिखा है। **बाबुल्अख़्ज़ि बिल्यदैनि**. या'नी बाब दोनो हाथों के पकड़ने के बयान मे और हम्माद बिन ज़ैद (रज़ि.) ने इब्नुल मुबारक से अपने दोनो हाथों से मुसाफ़ा किया। फिर बाद उसके इमाम बुख़ारी (रह.) ने इब्ने मसऊद (रज़ि.) की हदीषे मज़्कूर को ज़िक्र किया। पस जब सहीह बुख़ारी में इमाम बुख़ारी (रह.) के इस बाब से दोनों हाथ का मुसाफ़ा षाबित है तो इसके क़ाबिले कुबूल व क़ाबिले अमल होने के क्या शुब्हा हो सकता है तो इसके दो जवाब हैं ।

पहला जवाब ये है कि बुख़ारी के इस बाब में तीन अम्र मज़्कूर हैं एक इमाम बुख़ारी (रह.) की तब्वीब या'नी इमाम बुख़ारी का ये क़ौल कि, बाब दोनों हाथ के पकड़ने के बयान में, दूसरे हम्माद बिन ज़ैद का अषर, तीसरे इब्ने मसऊद (रज़ि.) की हदीषे मज़्कूर। इमाम बुख़ारी (रह.) की सिर्फ़ तब्वीब से दोनों हाथ के मुसाफ़े का षाबित न होना ज़ाहिर है क्योंकि मुसन्निफ़ीन की तब्वीब उनका दा'वा होता है जो बिला दलील किसी तरह क़ाबिले कुबूल नहीं। इसके अलावा सिर्फ़ दोनों हाथों के पकड़ने का नाम मुसाफ़ा नहीं है। दोनों हाथ के पकड़ने से दोनों हाथ के मुसाफ़ा का हुसूल ज़रूरी नहीं है और हम्माद बिन ज़ैद के अषर से भी दोनों हाथ का मुसाफ़ा किसी तरह षाबित नहीं हो सकता। देखो पाँचवीं दलील का जवाब; रही इब्ने मसऊद (रज़ि.) की हदीषे मज़्कूर, सो उससे भी दोनों हाथ का मुसाफ़ा किसी तरह षाबित नहीं होता जैसा कि तुमको ऊपर मा'लूम हो चुका है। पस ये कहना कि दोनों हाथ का मुसाफ़ा सहीह बुख़ारी से षाबित है साफ़ धोखा देना और लोगों को मुग़ालते में डालना है।

दूसरा जवाब ये है कि इमाम बुख़ारी (रह.) के इस बाब से दोनों हाथ के मुसाफ़ा का षुबूत तीन अम्र पर मौक़ूफ़ है। एक ये कि इस बाब में लफ़्ज़े बिल यदैन की बाबत सहीह बुख़ारी के नुस्ख़े मुत्तफ़िक़ हों या'नी ऐसा न हो कि कुछ नुस्ख़ों में बिल यदैन बसेग़ा तष्निया हो और कुछ नुस्खों में बिल यद बसेग़ा वाहिद हो। दूसरे ये कि अख़्ज़ बिल यदैन से इमाम बुख़ारी (रह.) का मक़्सूद व मुसाफ़ा बिल यदैन हो। तीसरे ये कि इमाम बुख़ारी (रह.) का ये मक़्सूद किसी हदीषे मर्फ़ूअ से षाबित भी हो। अगर ये तीनों अम्र षाबित हैं तो बिला शुब्हा इमाम बुख़ारी (रह.) के इस बाब से दोनों हाथ का मुसाफ़ा षाबित होगा व इल्ला फ़ला। लेकिन वाज़ेह रहे कि उन तीनों अम्रों से कोई भी षाबित नहीं। इस बाब मे लफ़्ज़े बिल यदैन की बाबत सहीह बुख़ारी (रह.) के नुस्ख़े मुत्तफ़िक़ नहीं हैं कुछ में बिल यदैन बसैग़ा वाहिद ही वाक़ेअ है देखो शुरूहे बुख़ारी बल्कि कुछ नुस्खों में बिल यमीन वाक़ेअ हुआ है। और अख़्ज़ बिल यदैन से इमाम बुख़ारी (रह.) का मक़्सूद मुसाफ़ा बिल यदैन होना भी षाबित नहीं बल्कि हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह.) वग़ैरह शरह सहीह बुख़ारी ने साफ़ तस्रीह कर दी है कि चूँकि हो सकता है कि अख़्ज़ बिल यदैन बग़ैर हुसूले मुसाफ़ा के हो इसलिये बुख़ारी ने इसके लिये एक अलग बाब बलफ़्ज़े बाबुल अख़्ज़ बिल यदैन मुनअक़िद किया और बिल फ़र्ज़ इमाम बुख़ारी (रह.) का ये मक़्सूद हो भी तो ये मक़्सूद किसी हदीषे मर्फ़ूअ सहीह सरीह

से हर्गिज़ हर्गिज़ षाबित नहीं। पस ये कहना कि, सहीह बुख़ारी से दोनों हाथ का मुसाफ़ा षाबित है, सरासर ग़लत है।

कुछ लोग यूँ कहते हैं कि नसारा एक हाथ से मुसाफ़ा करते हैं पस एक हाथ से मुसाफ़ा करने में उनके साथ मुशाबिहत होती है और नसारा और यहूद की मुख़ालफ़त करने का हुक्म है इसलिये दो ही हाथ से मुसाफ़ा करना ज़रूरी है और एक हाथ से मुसाफ़ा हर्गिज़ जाइज़ नहीं तो उसका जवाब ये है कि जब सय्यदुल मुर्सलीन ख़ातिमुन् नबिय्यीन अहमद मुज्तबा मुहम्मदे मुस्तफ़ा (ﷺ) से एक हाथ से मुसाफ़ा का मस्नून होना षाबित है और किसी हदीष से एक हाथ से मुसाफ़ा के बारे मे नसारा की मुख़ालफ़त करने का हुक्म हर्गिज़ हर्गिज़ षाबित नहीं है तो एक हाथ से मुसाफ़ा करना न किसी क़ौम की मुशाबिहत से नाजाइज़ हो सकता है और न किसी के क़ौल व फ़ेअल से मकरूह ठहर सकता है बल्कि वो हमेशा हमेशा के लिये मस्नून ही रहेगा और ऐसे अम्रे मस्नून को किसी क़ौम की मुशाबिहत की वजह से या किसी के क़ौल व फ़ेअल से नाजाइज़ ठहराना मुसलमान का काम नहीं है। और यहूद और नसारा की मुख़ालफ़त करने का बिलाशुब्हा हुक्म आया है मगर इन्हीं उमूर में जिनका मस्नून होना कुर्आन या सुन्नत से षाबित नहीं या इन उमूर में जिनका जाइज़ या मस्नून होना पहले से षाबित था मगर फिर ख़ुद आँहज़रत (ﷺ) ने इन उमूर में यहूद या नसारा या किसी और क़ौम की मुख़ालफ़त करने का हुक्म फ़र्मा दिया और इस बारे में ऐसा हुक्म किसी सहीह मर्फ़ूअ हदीष से षाबित नहीं है।

हज़रत हम्माद बिन ज़ैद के अषर का जवाब : ये दलील दोनों हाथ से मुसाफ़ा के मस्नून होने की दलील नहीं है, हाँ मुस्तदिल की नावाक़फ़ी और नाफ़हमी की अल्बत्ता दलील है। अव्वलन इस वजह से कि मुस्तदिल ने हम्माद बिन ज़ैद और अब्दुल्लाह बिन मुबारक को ताबेई बताया है हालाँकि ये दोनों शख़्स ताबेई नहीं थे बल्कि इत्तिबाअे ताबेईन से थे। हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह.) ने उन दोनों बुज़ुर्गों को तब्क़ा षामिना इत्तिबाअ ताबेईन का तब्क़ा है देखो तक़रीबुत तहज़ीब। पस मुस्तदल का उन दोनों बुज़ुर्गों को ताबेई लिखना सरासर नावाक़फ़ी है। षानियन इस वजह से कि ताबेईन और इत्तिबाअ ताबेईन के अक़्वाल व अफ़आल बिल इत्तिफ़ाक़ हुज्जत नहीं हैं। कमा तफ़र्रकु फ़ी मुक़र्रह। पस दोनों हाथ से मुसाफ़ा के मस्नून होने पर सिर्फ़ हम्माद बिन ज़ैद के फ़ेअल से एहतिजाज करना महज़ नावाक़फ़ी है षालिषा इस वजह से कि हम्माद बिन ज़ैद के फ़ेअल के ख़िलाफ़ एक हाथ से मुसाफ़ा के मस्नून होने के बारे में बहुत सी हदीषें मौजूद हैं देखो पहला बाब। पस बावजूद मौजूद होने अहादीष मुतअद्दा के हम्माद बिन ज़ैद के फ़ेअल बिला दलील को पेश करना और फिर ये लिखना कि, जो लोग दो हाथ से मुसाफ़ा को ख़िलाफ़े सुन्नत कहते हैं तावक़्त ये कि एक हाथ से मुसाफ़ा करने की कोई हदीष पेश न करें अल्अख़ साफ़ और खुली नावाक़िफ़ी और बेख़बरी है। राबिअन इस वजह से कि अबू इस्माईल बिन इब्राहीम की रिवायत से हम्माद बिन ज़ैद का दोनो हाथ से मुसाफ़ा करना तो षाबित होता है मगर अब्दुल्लाह बिन मुबारक का दोनों हाथ से मुसाफ़ा करना हर्गिज़ षाबित नहीं होता। पस इस रिवायत को इस दावे के षुबूत में पेश करना कि दोनों जानिब से दोनों हाथ मिलाना सुन्नत है साफ़ नाफ़हमी है।

और वाज़ेह रहे कि मुस्तदिल का एक हम्माद बिन ज़ैद का फ़ेअल (और वो भी एक मर्तबा का फ़ेअल) पेश करके ये लिखना कि, इस रिवायत से बख़ूबी वाज़ेह है कि मुसाफ़ा दोनों हाथ से ज़माना ख़ैरुल क़ुरून में अमल दरआमद था और सहाबा के देखने वाले या'नी हज़राते ताबेईन भी दो ही हाथ से मुसाफ़ा करते थे। महज़ झूठ है और अवाम अहले इस्लाम को साफ़ मुग़ालता देना है और अगर ग़ौर व तदब्बुर से काम लिया जाए तो इसी रिवायत से ज़ाहिर होता है कि उस ज़माने में दोनों हाथ से मुसाफ़ा नहीं किया जाता था और इस पर हर्गिज़ अमल दरआमद नहीं था। क्योंकि उस ज़माने में अगर आम तौर पर तमाम लोग दो ही हाथ से मुसाफ़ा करते होते तो इस तक़्दीर पर अबू इस्माईल का हम्माद बिन ज़ैद के दोनो हाथ से मुसाफ़ा करने की ख़बर देना और किसी को कि यह्या वग़ैरह जैसे लोगों को महज़ बेफ़ायदा ठहरना है। और लफ़्ज़ कुल्ता का ज़्यदा करना भी बिलकुल लग़्व और बेसूद होता है पस साफ़ मा'लूम हुआ कि उस ज़माने में एक ही हाथ से मुसाफ़े का रिवाज था और उसी पर अमल दरआमद था और जब अबू इस्माईल ने हम्माद बिन ज़ैद को दोनों हाथों से मुसाफ़ा करते हुए देखा तो उनको ये एक नई बात मा'लूम हुई इस वजह से लोगों को इसकी ख़बर दी। इस तक़्दीर पर इस ख़बर का मुफ़ीद होना ज़ाहिर है और लफ़्ज़े कुल्ता को बढ़ाने का भी फ़ायदा इस तक़्दीर पर मख़्फ़ी नहीं है। फ़तदब्बर (मज़ीद तफ़्सीलात के लिये अल मक़ालातुल हुस्ना का मुतालआ फ़र्माइये)।

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

छब्बीसवां पारा

बाब 29 : मुआनक़ा या'नी गले मिलने के बयान में और एक आदमी का दूसरे से पूछना क्यूँ आज सुबह आपका मिज़ाज कैसा है

٢٩- باب الْمُعَانَقَةِ وَقَوْلِ الرَّجُلِ كَيْفَ أَصْبَحْتَ؟

तश्रीह : सलाम के साथ लफ़्ज़ मुसाफ़ा और मुआनिक़ा दोनों इस्ते'माल होते हैं मुसाफ़ा सलाम करने वाले अपने सीधे हाथ की हथेलियों को आपस में मिलाएँ। **यग़्फ़िरुल्लाहु लना व लकुम** से एक दूसरे को दुआ पेश करें। मुसाफ़ा सिर्फ़ एक सीधे हाथ से होता है। मुआनक़ा गले से गला मिलाना। अहले अरब का यही तरीक़ा है जिसे इस्लाम ने भी मुस्तहब क़रार दिया क्योंकि इन सबका मक़्सदे वाहिद मुहब्बत व ख़ुलूस बढ़ाना है और मुहब्बत और ख़ुलूस इस्लाम है कैफ़ अस्बहत कहकर मिज़ाजपुर्सी करना और जवाब में बिहम्दिल्लाह बारहा कहना यही अम्रे मुस्तहब है। यही वो तहज़ीब है जिस पर इस्लाम को नाज़ है। सद अफ़सोस उन मुसलमानों पर जो इस्लाम की सीधी साधी राह पुर ख़ुलूस तहज़ीब को छोड़कर ग़ैरों की ग़लत तहज़ीब इख़्तियार करके अपना दीन व ईमान ख़राब करते हैं। अल्हम्दु लिल्लाह! आज बुख़ारी शरीफ़ के पारा नम्बर 26 की तस्वीद के लिये क़लम हाथ में लिया है अल्लाह पाक ख़ैरियत के साथ इसे भी दर्जे तक्मील को पहुँचाकर क़ुबूल फ़र्माए और इस ख़िदमते हदीषे नबवी (ﷺ) को मेरे और मेरी आलो औलाद और तमाम अहबाब और मुआविनीने किराम के लिये दोनों जहान की तरक़्क़ी का वसीला बनाए, आमीन। **बिरहमतिक या अर्हमर्राहिमीन**

बाब की हदीष में मुआनक़ा का ज़िक्र नहीं है और शायद हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) इस हदीष को जो किताबुल बुयूअ में गुज़र चुकी है यहाँ लिखना चाहते होंगे (जिसमें ये बयान है कि आँहज़रत ﷺ ने इमाम हसन को गले गलाया मगर (दूसरी सनद से) क्योंकि एक ही सनद से हदीष को मुकर्रर लाना हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) की आदत के ख़िलाफ़ है) पर इसका मौक़ा नहीं मिला और बाब ख़ाली रह गया। कुछ नुस्ख़ों में लफ़्ज़ुल मुआनक़ा के बाद वाव नहीं है इस सूरत में क़ौलुर् रजुल कैफ़ अस्बहतु अलग बाब होगा और ये बाब हदीष से ख़ाली होगा। अब मुआनक़ा का हुक्म ये है कि वो जाइज़ नहीं है मगर जब कोई सफ़र से आए तो उससे मुआनक़ा दुरुस्त है क्योंकि हज़रत जा'फ़र (रज़ि.) जब हब्श से आए तो आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे मुआनक़ा किया। लेकिन ज़हबी ने मीज़ान में इस हदीष की सनद को वाही कहा है। अल्बत्ता आदमी अपने बच्चे को प्यार के तौर पर गले लगा सकता है जैसे आँहज़रत (ﷺ) ने इमाम हसन को लगाया ये सहीह हदीष से षाबित है और इमाम अहमद ने हज़रत अबूदाऊद से नक़ल किया कि आँहज़रत (ﷺ) ने एक बार उनको अपने से चिमटाया उसकी सनद में एक शख़्स मुब्हम है। तबरानी ने मुअजम औसत में इससे रिवायत की है कि सहाबा मुलाक़ात के वक़्त जब सफ़र से आते तो मुआनक़ा करते और तिर्मिज़ी ने निकाला कि ज़ैद बिन हारिषा जब मदीने में आए तो आँहज़रत (ﷺ) ने उनको गले से लगाया प्यार किया। तिर्मिज़ी ने इस हदीष को हसन कहा है। बहरहाल सफ़र से जो लौटकर आए उससे मुआनक़ा करना दुरुस्त है लेकिन ईदैन वग़ैरह मे मुआनक़ा का जो मुसाफ़ा लोगों मे मा'मूल हो गया है इसी तरह सुबह या अस्र या जुम्आ के बाद इसकी शरीअत से कोई असल नहीं और अकषर उलमा ने उसे मकरूह क़रार दिया (वहीदी)। **अख़रज सुफ़्यान बिन उययना फ़ी जामिइही अनिलअज्लह अनिश्शुअबी अन्न जअफ़र लम्म क़दिम तलक्काहु रसूलुल्लाहि (ﷺ) फक़ब्बल जअफ़र बैन अयनैहि व अख़रजत्तिर्मिज़ी फ़ी मुअजमतिस्सहाबति मिन हदीषि आयशत लम्मा क़दिम जअफ़र इस्तक़्बलहू रसूलुल्लाहि (ﷺ) फ़क़ब्बल मा बैन अयनैहि अख़रजत्तिर्मिज़ी अन आयशत क़ालत क़दिम जैदु ब्नु हारिषा अल्मदीनत व रसूलुल्लाहि (ﷺ) फ़ी बैती फकरअल्बाब क़ाम इलैहिन्नबिय्यु (ﷺ) उर्यानन यजुर्रूहू**

ष़ौबुहू फ़आनक़हू व क़ब्बलहू कालत्तिर्मिज़ी हदीषुन हसनुन

ख़ुलास़ा ये है कि ह़ज़रत जा'फ़र त़य्यार (रज़ि.) जब ह़ब्शा से वापस आकर दरबारे रिसालत में तशरीफ़ लाए तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने (अज़्राहे शफ़क़त) ह़ज़रत जा'फ़र की पेशानी को चूमा इसी त़रह़ जब ह़ज़रत ज़ैद बिन ह़ारष़ा मदीना आए तो आँह़ज़रत (ﷺ) उनसे बग़लगीर हुए और उनको चूमा बहरह़ाल इस त़रह़ मुआनक़ा जाइज़ है मगर मुरीदीन जो मक्कार पीरों के हाथ पीरों को बोसा देते हैं और उनके क़दमों में सर रखते हैं, ये खुला हुआ शिर्क है, ऐसी ह़रकात से हर मुवह्ह़िद मुसलमान को परहेज़ लाज़िम है।

6266. हमसे इस्ह़ाक़ बिन राह्वै ने बयान किया, कहा हमको बिश्र बिन शुऐब ने ख़बर दी, कहा मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने, कहा मुझको अ़ब्दुल्लाह बिन कअ़ब ने ख़बर दी और उनको अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने ख़बर दी कि ह़ज़रत अ़ली इब्ने अबी त़ालिब (रज़ि.) (मर्ज़ुल मौत में) नबी करीम (ﷺ) के पास से निकले (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी (रह़.) ने कहा और हमसे अह़मद बिन स़ालेह़ ने बयान किया, कहा हमसे अ़म्बसा बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे यूनुस बिन यज़ीद ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ज़ुह्री ने बयान किया, कहा मुझको अ़ब्दुल्लाह बिन कअ़ब बिन मालिक ने ख़बर दी और उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने ख़बर दी कि ह़ज़रत अ़ली बिन अबी त़ालिब (रज़ि.) नबी करीम (ﷺ) के यहाँ से निकले, ये उस मर्ज़ का वाक़िया है जिसमें आँह़ज़रत (ﷺ) की वफ़ात हुई थी। लोगों ने पूछा ऐ अबुल ह़सन! हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने सुबह कैसी गुज़ारी है? उन्होंने कहा कि बिह़म्दिल्लाह आपको सकून रहा है। फिर ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) का हाथ ह़ज़रत अ़ब्बास (रज़ि.) ने पकड़कर कहा। क्या तुम आँह़ज़रत (ﷺ) को देखते नहीं हो। (वल्लाह!) तीन दिन के बाद तुम्हें लाठी का बन्दा बनना पड़ेगा। वल्लाह! मैं समझता हूँ कि इस मर्ज़ में आप वफ़ात पा जाएँगे। मैं बनी अ़ब्दुल मुत्तलिब के चेहरों पर मौत के आष़ार को ख़ूब पहचानता हूँ, इसलिये हमारे साथ तुम आपके पास चलो। ताकि पूछा जाए कि आँह़ज़रत (ﷺ) के बाद ख़िलाफ़त किस के हाथ मे रहेगी अगर वो हमीं लोगों को मिलती है तो हमें मा'लूम हो जाएगा और अगर दूसरों के पास जाएगी तो हम अ़र्ज़ करेंगे ताकि आँह़ज़रत (ﷺ) हमारे बारे में कुछ वसिय्यत कर दें। ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने कहा कि वल्लाह! अगर हमने आँह़ज़रत (ﷺ) से ख़िलाफ़त की दरख़्वास्त की और आँह़ज़रत (ﷺ) ने इंकार कर दिया तो फिर

٦٢٦٦- حدَّثَنَا إِسْحَاقُ، أَخْبَرَنَا بِشْرُ بْنُ شُعَيْبٍ، حَدَّثَنِي أَبِي عَنِ الزُّهْرِيِّ، قَالَ أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ كَعْبٍ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عَبَّاسٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ عَلِيًّا يَعْنِي ابْنَ أَبِي طَالِبٍ خَرَجَ مِنْ عِنْدِ النَّبِيِّ ﷺ ح وَحَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا عَنْبَسَةُ، حَدَّثَنَا يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عَبَّاسٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ خَرَجَ مِنْ عِنْدِ النَّبِيِّ ﷺ فِي وَجَعِهِ الَّذِي تُوُفِّيَ فِيهِ فَقَالَ النَّاسُ: يَا أَبَا الْحَسَنِ كَيْفَ أَصْبَحَ رَسُولُ اللهِ ﷺ قَالَ: أَصْبَحَ بِحَمْدِ اللهِ بَارِئًا، فَأَخَذَ بِيَدِهِ الْعَبَّاسُ فَقَالَ: أَلاَ تَرَاهُ أَنْتَ وَاللهِ بَعْدَ الثَّلاَثِ عَبْدُ الْعَصَا، وَاللهِ إِنِّي لأَرَى رَسُولَ اللهِ ﷺ سَيُتَوَفَّى فِي وَجَعِهِ، وَإِنِّي لأَعْرِفُ فِي وُجُوهِ بَنِي عَبْدِ الْمُطَّلِبِ الْمَوْتَ، فَاذْهَبْ بِنَا إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَنَسْأَلَهُ فِيمَنْ يَكُونُ الأَمْرُ فَإِنْ كَانَ فِينَا عَلِمْنَا ذَلِكَ، وَإِنْ كَانَ فِي غَيْرِنَا آمَرْنَاهُ فَأَوْصَى بِنَا، قَالَ عَلِيٌّ: وَاللهِ لَئِنْ سَأَلْنَاهَا

लोग हमें कभी नहीं देंगे मैं तो आँहज़रत (ﷺ) से कभी नहीं पूछूँगा कि आपके बाद कौन ख़लीफ़ा हो। (राजेअ : 4447)

رَسُولَ اللهِ ﷺ فَيَمْنَعُنَا لاَ يُعْطِينَاهَا النَّاسُ أَبَدًا، وَإِنِّي لاَ أَسْأَلُهَا رَسُولَ اللهِ ﷺ أَبَدًا. [راجع: ٤٤٤٧]

तश्रीह : हदीष और बाब में मुताबक़त यूँ है कि हज़रत अली (रज़ि.) से लोगों ने **कैफ़ अस्बह रसूलुल्लाहि (ﷺ) बिहम्दिल्लाहि बारिअन** कहकर मिज़ाज पूछा और उन्होंने बिहम्दिल्लाह बारिअन कहकर जवाब दिया और इस हदीष में बहुत से उमूर तश्रीह तलब हैं। अम्रे ख़िलाफ़त के बारे में हज़रत अली (रज़ि.) ने कहा वो बिलकुल सहीह था। चुनाँचे बाद के वाक़ियात ने बतला दिया कि ख़िलाफ़त जिस तर्तीब से क़ायम हुई वही तर्तीब अल्लाह के नज़दीक महबूब और मुक़द्दर थी अल्लाह पाक चारों ख़ुल्फ़ा-ए-राशिदीन की अरवाहे तय्यिबात को हमारी तरफ़ से बहुत बहुत सलाम पेश फ़र्माए, आमीन षुम्म आमीन।

रिवायत में लफ़्ज़ **अब्दुल असाअ** से मुराद ये है कि कोई और ख़लीफ़ा हो जाएगा तुमको इसकी इताअत करनी होगी। **लफ़्ज़ का लफ़्ज़ी तर्जुमा लाठी का गुलाम** है मगर मतलब यही है कि कोई ग़ैर क़ुरैशी तुम पर हुकूमत करेगा तुम उसके मातहत होकर रहोगे। हज़रत अली (रज़ि.) की कमाले दानिशमंदी है कि उन्होंने हज़रत अब्बास (रज़ि.) के मश्वरे को क़ुबूल नहीं फ़र्माया और साफ़ कह दिया कि अगर मुलाक़ात करने पर आँहज़रत (ﷺ) ने साफ़ फ़र्मा दिया कि तुमको ख़िलाफ़त नहीं मिल सकती तो फिर तो क़यामत तक लोग हमको ख़लीफ़ा नहीं बनाएँगे। इसलिये बेहतर यही है कि इस अम्र को तवक्कल अलल्लाह पर छोड़ दिया जाए, अगर इस बार हमको ख़िलाफ़त न मिली तो आइन्दा के लिये तो उम्मीद रहेगी। ऐसा पूछने में एक तरह की बदफ़ाली और आँहज़रत (ﷺ) को रंज देना भी था। इसलिये हज़रत अली (रज़ि.) ने इसे गवारा नहीं किया और इसमें अल्लाह की हिक्मत और मस्लिहत है कि उस वक़्त ये मुक़द्दमा गोल मोल रहे और मुसलमान अपने सलाह और मश्वरे से जिसे चाहें ख़लीफ़ा बना लें। ये तर्ज़े इंतिख़ाब आँहज़रत (ﷺ) ने वो क़ायम फ़र्माया जिसको अब सारे सियासतदाँ ऐन दानाई और अक़्लमंदी समझते हैं और दुनिया में ये पहला तरीक़ा था कि हुकूमत का मामला राये आम्मा पर छोड़ा गया जो आज तरक़्क़ी पज़ीर लफ़्ज़ों में लफ़्ज़ आज़ाद जुम्हूरिया से बदल गया है। ख़िलाफ़त के मामले में बाद में जो कुछ हुआ कि चारों ख़ुल्फ़ा-ए-राशिदीन अपने अपने वक़्तों में मस्नदे ख़िलाफ़त की ज़ीनत हुए। ये ऐन मंशा-ए-इलाही के मुताबिक़ हुआ और बहुत बेहतर हुआ। **व कान इन्दल्लाहि कदरम्मक़्दूरा** हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं । **व फ़ीहिम अन्नल्ख़िलाफ़त लम तज़क्कर अबदन्नबिय्यि (ﷺ) लअला अस्लन लिअन्नल्अब्बास हलफ अन्नहू यसीरू मामूरन ला अम्रन लिमा कान यअरिफु मिन तौजीहिन्नबिय्यि (ﷺ) बिहा इला गैरिही व फ़ी सुकूति अलिय्यिन दलीलुन अला इल्मि अलिय्यिन बिमा क़ालल्अब्बास** (फत्ह) या'नी इसमें दलील है कि नबी करीम (ﷺ) की वफ़ात के बाद हज़रत अली (रज़ि.) के हक़ में ख़िलाफ़त का कोई ज़िक्र नहीं हुआ इसलिये कि हज़रत अब्बास (रज़ि.) क़स्मिया कह चुके थे कि वो आपकी वफ़ात के बाद आमिर नहीं बल्कि मामूर होकर रहेंगे इसलिये कि वो आँहज़रत (ﷺ) की तवज्जह हज़रत अली (रज़ि.) से ग़ैर की तरफ़ महसूस कर चुके थे और हज़रत अली (रज़ि.) का सुकूत ही दलील है कि जो कुछ हज़रत अब्बास (रज़ि.) ने कहा वो इससे वाक़िफ़ थे साफ़ ज़ाहिर हो गया कि हज़रत अली (रज़ि.) के लिये ख़िलाफ़त बिला फ़स्ल का नारा महज़ उम्मत में इंशिक़ाक़ व इफ़्तिराक़ के लिये खड़ा किया गया जिसमें ज़्यादा हिस्सा मुसलमान नुमा यहूदियों का था।

बाब 30 : कोई बुलाए तो जवाब में लफ़्ज़े लब्बैक (हाज़िर) और सअदेक (आपकी ख़िदमत के लिये मुस्तैद) कहना

٣٠- باب مَنْ أَجَابَ بِلَبَّيْكَ وَسَعْدَيْكَ

6267. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे

٦٢٦٧- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ،

हम्माम ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, उनसे अनस (रज़ि.) ने और उनसे मुआज़ (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की सवारी पर आँहज़रत (ﷺ) के पीछे सवार था आपने फ़र्माया ऐ मुआज़! मैंने कहा। लब्बैक व सअ़देक (हाज़िर हूँ) फिर आँहज़रत (ﷺ) ने तीन मर्तबा मुझे इसी तरह मुख़ातब किया उसके बाद फ़र्माया, तुम्हें मा'लूम है कि बन्दों पर अल्लाह का क्या हक़ है? (फिर ख़ुद ही जवाब दिया) कि ये कि उसी की इबादत करें और उसके साथ किसी को शरीक न ठहराएँ फिर आप थोड़ी देर चलते रहे और फ़र्माया, ऐ मुआज़! मैंने अ़र्ज़ की, लब्बैक व सअ़देक, फ़र्माया तुम्हें मा'लूम है कि जब वो ये कर लें तो अल्लाह पर बन्दों का क्या हक़ है? ये कि उन्हें अ़ज़ाब न दे।

حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ، عَنْ مُعَاذٍ قَالَ: أَنَا رَدِيفُ النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: ((يَا مُعَاذُ)) قُلْتُ: لَبَّيْكَ وَسَعْدَيْكَ، ثُمَّ قَالَ مِثْلَهُ ثَلاَثًا، ((هَلْ تَدْرِي مَا حَقُّ اللهِ عَلَى الْعِبَادِ؟)) قَالَ أَنْ يَعْبُدُوهُ وَلاَ يُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا ثُمَّ سَارَ سَاعَةً قَالَ: ((يَا مُعَاذُ)) قُلْتُ: لَبَّيْكَ وَسَعْدَيْكَ قَالَ: ((هَلْ تَدْرِي مَا حَقُّ الْعِبَادِ عَلَى اللهِ إِذَا فَعَلُوا ذَلِكَ؟ أَنْ لاَ يُعَذِّبَهُمْ)).

हमसे हुदबा बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम बिन यह्या ने बयान किया, कहा हमसे क़तादा बिन दआ़मा ने बयान किया, उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने और उनसे हज़रत मुआज़ (रज़ि.) ने फिर वही हदीष़े मज़्कूरा बाला बयान की। (राजेअ़: 2856)

.... - حَدَّثَنَا هُدْبَةُ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، عَنْ أَنَسٍ، عَنْ مُعَاذٍ بِهَذَا.

[راجع: ٢٨٥٦]

तश्रीह: हदीष़े हाज़ा में शिर्क की इंतिहाई मज़म्मत है और तौहीद पर इंतिहाई बशारत भी है। बाब और हदीष़ में मुताबक़त हज़रत मुआज़(रज़ि.) के क़ौल लब्बैक व सअ़देक से ष़ाबित होती है। अल्लाह पर हक़ होने से ये मुराद है कि उसने अपने फ़ज़्ल व करम से ऐसा वा'दा फ़र्माया है बाक़ी अल्लाह पर वाजिब कोई चीज़ नहीं है वो जो चाहे करे उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ कोई दम मारने का मजाज़ नहीं है इसलिये जो लोग बिहक़्क़ि फुलानिन बिहक़्क़ि फलानिन से दुआ करते हैं उनका ये तरीक़ा ग़लत है क्योंकि अल्लाह पर किसी का हक़ वाजिब नहीं है। यहाँ हज़रत मौलाना वहीदुज़्ज़माँ मरहूम ने जो ख़्याल ज़ाहिर किया है इससे हमको इत्तिफ़ाक़ नहीं है।

6268. हमसे उमर बिन हफ़्स़ बिन ग़याष़ ने बयान किया, कहा मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, कहा हमसे ज़ैद बिन वहब ने बयान किया (कहा कि) वल्लाह! हमसे अबू ज़र्र (रज़ि.) ने मक़ामे रब्ज़ा में बयान किया कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ रात के वक़्त मदीना मुनव्वरह की काली पत्थरों वाली ज़मीन पर चल रहा था कि उहुद पहाड़ दिखाई दिया। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ अबू ज़र्र! मुझे पसंद नहीं कि अगर उहुद पहाड़ के बराबर भी मेरे पास सोना हो और मुझपर एक रात भी इस तरह गुज़र जाए या तीन रात कि उसमें से एक दीनार भी मेरे पास बाक़ी बचे। सिवाय उसके जो मैं क़र्ज़ की अदायगी के लिये महफ़ूज़ रख लूँ मैं इस

٦٢٦٨- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ وَهْبٍ، حَدَّثَنَا وَاللهِ أَبُو ذَرٍّ بِالرَّبَذَةِ قَالَ: كُنْتُ أَمْشِي مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي حَرَّةِ الْمَدِينَةِ عِشَاءً اسْتَقْبَلَنَا أُحُدٌ فَقَالَ: ((يَا أَبَا ذَرٍّ مَا أُحِبُّ أَنَّ أُحُدًا لِي ذَهَبًا تَأْتِي عَلَيَّ لَيْلَةٌ أَوْ ثَلاَثٌ عِنْدِي مِنْهُ دِينَارٌ إِلاَّ أَرْصُدُهُ لِدَيْنٍ إِلاَّ أَنْ أَقُولَ بِهِ فِي عِبَادِ اللهِ هَكَذَا وَهَكَذَا وَهَكَذَا))

وَأَرَانَا بِيَدِهِ ثُمَّ قَالَ: ((يَا أَبَا ذَرٍّ)) قُلْتُ لَبَّيْكَ وسعديك يارسول الله قال الا كثرون هم الأ قلون إلأ من قال هكذا وهكذا ثُمَّ قَالَ لِي: ((مَكَانَكَ لاَ تَبْرَحْ يَا أَبَا ذَرٍّ حَتَّى أَرْجِعَ)) فَانْطَلَقَ حَتَّى غَابَ عَنِّي فَسَمِعْتُ صَوْتًا فَخَشِيتُ أَنْ يَكُونَ عُرِضَ لِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَرَدْتُ أَنْ أَذْهَبَ ثُمَّ ذَكَرْتُ قَوْلَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ((لاَ تَبْرَحْ)) فَمَكُثْتُ قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ سَمِعْتُ صَوْتًا خَشِيتُ أَنْ يَكُونَ عُرِضَ لَكَ ثُمَّ ذَكَرْتُ قَوْلَكَ، فَقُمْتُ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((ذَاكَ جِبْرِيلُ أَتَانِي فَأَخْبَرَنِي أَنَّهُ مَنْ مَاتَ مِنْ أُمَّتِي لاَ يُشْرِكُ بِاللهِ شَيْئًا، دَخَلَ الْجَنَّةَ)) قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ وَإِنْ زَنَى وَإِنْ سَرَقَ؟ قَالَ: ((وَإِنْ زَنَى وَإِنْ سَرَقَ)) قُلْتُ لِزَيْدٍ إِنَّهُ بَلَغَنِي أَنَّهُ أَبُو الدَّرْدَاءِ فَقَالَ: أَشْهَدُ لَحَدَّثَنِيهِ أَبُو ذَرٍّ بِالرَّبَذَةِ. قَالَ الأَعْمَشُ: وَحَدَّثَنِي أَبُو صَالِحٍ عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ نَحْوَهُ. وَقَالَ أَبُو شِهَابٍ: عَنِ الأَعْمَشِ يَمْكُثُ عِنْدِي فَوْقَ ثَلاَثٍ.

[راجع: ١٢٣٧]

सारे सोने को अल्लाह की मख़्लूक़ में इस इस तरह तक़्सीम कर दूँगा। अबू ज़र्र (रज़ि.) ने इसकी कैफ़ियत हमें अपने हाथ से लप भरकर दिखाई फिर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ऐ अबू ज़र्र! मैंने अ़र्ज़ किया लब्बैक सअ़देक या रसूलल्लाह! आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ज़्यादा जमा करने वाले ही (ष़वाब की हैषियत से) कम हासिल करने वाले होंगे। सिवाय उसके जो अल्लाह के बन्दों पर माल इस इस तरह या'नी कष़रत के साथ ख़र्च करे। फिर फ़र्माया यहीं ठहरे रहो अबू ज़र्र! यहाँ से उस वक़्त तक न हटना जब तक मैं वापस न आ जाऊँ। फिर आँहज़रत (ﷺ) तशरीफ़ ले गये और नज़रों से ओझल हो गये। उसके बाद मैंने आवाज़ सुनी और मुझे ख़तरा हुआ कि कहीं हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को कोई परेशानी न पेश आ गई हो। इसलिये मैंने (आँहज़रत ﷺ को देखने के लिये) जाना चाहा लेकिन फ़ौरन ही आँहुज़ूर (ﷺ) का ये इर्शाद याद आया कि यहाँ से न हटना। चुनाँचे मैं वहीं रुक गया (जब आप तशरीफ़ लाए तो) मैंने अ़र्ज़ की। मैंने आवाज़ सुनी थी और मुझे ख़तरा हो गया था कि कहीं आपको कोई परेशानी न पेश आ जाए फिर मुझे आपका इर्शाद याद आया इसलिये मैं यहीं ठहर गया। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ये जिब्रईल (अ़लैहिस्सलाम) थे। मेरे पास आए थे और मुझे ख़बर दी है कि मेरी उम्मत का जो शख़्स भी इस हाल में मरेगा कि अल्लाह के साथ किसी चीज़ को शरीक न ठहराता हो तो वो जन्नत में जाएगा। मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! अगरचे उसने ज़िना और चोरी की हो? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ! अगरचे उसने ज़िना और चोरी भी की हो। (आ'मश ने बयान किया कि) मैंने ज़ैद बिन वहब से कहा कि मुझे मा'लूम हुआ है कि इस हदीष़ के रावी अबू दर्दा (रज़ि.) हैं? हज़रत ज़ैद ने फ़र्माया मैं गवाही देता हूँ कि ये हदीष़ मुझसे अबू ज़र्र (रज़ि.) ने मक़ामे रब्ज़ा में बयान की थी। आ'मश ने बयान किया कि मुझसे अबू स़ालेह ने हदीष़ बयान की और उनसे अबू दर्दा (रज़ि.) ने इसी तरह बयान किया और अबू शिहाब ने आ'मश से बयान किया। (राजेअ़ : 1237)

हज़रत अबू ज़र्र (रज़ि.) की हदीष़ में ये लफ़्ज़ और बयान किये कि अगर सोना उहुद पहाड़ के बराबर भी हो तो मैं ये पसंद नहीं

करूँगा मेरे पास तीन दिन से ज़्यादा रहे।

तश्रीह : ह़दीष़ में कई एक उसूली बातें मज़्कूर हैं मष़लन जो शख़्स ख़ालिस़ तौह़ीद वाला शिर्क से बचने वाला है वो किसी भी कबीरा गुनाह की वजह से दोज़ख़ में हमेशा नहीं रहेगा ये भी मुम्किन है कि अल्लाह पाक तौह़ीद की बरकत से उसके तमाम गुनाहों को मुआफ़ कर दे। ह़दीष़ के आख़िर में आँह़ज़रत (ﷺ) का एक ऐसा तर्ज़े अ़मल मज़्कूर है जो हमेशा अहले दुनिया के लिये मश्अ़ले राह रहेगा आप दुनिया मे अव्वलीन इंसान हैं जिन्होंने सरमायादारी व दौलत परस्ती पर अपने क़ौल व अ़मल से ऐसी कारी ज़र्ब लगाई कि आज सारी दुनिया इसी डगर पर चल पड़ी है जैसा कि इक़बाल मरहूम ने कहा है,

गया दौरे सरमायादारी गया, दिखाकर तमाशा मदारी गया

बाब 31 : कोई शख़्स किसी दूसरे बैठे हुए मुसलमान भाई को उसकी जगह से न उठाए

٣١- باب لاَ يُقِيمُ الرَّجُلُ الرَّجُلَ مِنْ مَجْلِسِهِ

6269. हमसे इस्माईल बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने बयान किया, और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, कोई शख़्स किसी दूसरे शख़्स को उसके बैठने की जगह से न उठाए कि ख़ुद वहाँ बैठ जाए। (राजेअ़ : 911)

٦٢٦٩- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لاَ يُقِيمُ الرَّجُلُ الرَّجُلَ مِنْ مَجْلِسِهِ ثُمَّ يَجْلِسُ فِيهِ)). [راجع: ٩١١]

बाब 32: अल्लाह पाक का सूरह फ़तह़ में फ़र्माना कि ऐ मुसलमानों! जब तुमसे कहा जाए कि मजलिस में कुशादगी कर लो तो कुशादगी कर लिया करो, अल्लाह तआ़ला तुम्हारे लिये कुशादगी करेगा और जब तुमसे कहा जाए कि उठ जाओ तो उठ जाया करो। (अल मुजादला :

٣٢- باب

﴿إِذَا قِيلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوا فِي الْمَجَالِسِ فَافْسَحُوا يَفْسَحِ اللهُ لَكُمْ وَإِذَا قِيلَ انْشُزُوا فَانْشُزُوا﴾ الآيَةَ [المجادلة : ١١].

तश्रीह : कुछ ने कहा कि ये हुक्म ख़ास़ मजलिसे नबवी के बारे में था मगर स़ह़ीह़ ये है कि हुक्म आ़म है। इस बाब को ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) इसलिये लाए कि पिछले बाब में जो दूसरे की जगह बैठने की मुमानअ़त थी वो इस ह़ालत में है जब ख़ाली जगह होते हुए कोई ऐसा करे अगर जगह की तंगी नहीं है तो फिर इस्लाम में भी तंगी का हुक्म नहीं है।

6270. हमसे ख़ल्लाद बिन यह्या ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह उ़मरी ने, उनसे नाफ़ेअ़ और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने इससे मना किया था कि किसी शख़्स को उसकी जगह से उठाया जाए ताकि दूसरा उसकी जगह बैठे, अल्बत्ता (आने वाले को मजलिस में) जगह दे दिया करो और फ़राख़ी कर दिया करो और ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) नापसंद करते थे कि कोई शख़्स मजलिस में से किसी को उठाकर ख़ुद

٦٢٧٠- حَدَّثَنَا خَلاَّدُ بْنُ يَحْيَى، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عن عُبَيْدِ اللهِ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ نَهَى أَنْ يُقَامَ الرَّجُلُ مِنْ مَجْلِسِهِ وَيَجْلِسَ فِيهِ آخَرُ، وَلَكِنْ تَفَسَّحُوا وَتَوَسَّعُوا، وَكَانَ ابْنُ عُمَرَ يَكْرَهُ أَنْ يَقُومَ الرَّجُلُ مِنْ مَجْلِسِهِ، ثُمَّ

उसकी जगह बैठ जाए। (राजेअ : 911)

يُجْلِسَ مَكَانَهُ. [راجع: ٩١١]

मजलिस के आदाब में से ये अहमतरीन अदब है जिसकी ता'लीम इस ह़दीष़ में दी गई है आयते बाब भी इसी पाक ता'लीम पर मुश्तमिल है। **क़ुल्तु लफ़्ज़ु इब्नि उ़मर अ़ला कतादा कानू यतनाफ़सुन फ़ी मज्लिसिन्नबिय्यि (ﷺ) इज़ा रऔहू मुक़्बिलन फ़सबक़ू अ़लैहिम फअमरहुल्लाहु तआ़ला अंय्युवस्सिअ़ बअ़जुहुम लिबअ़ज़िन** (फ़त्ह) या'नी सहाबा किराम (रज़ि.) जब आँह़ज़रत (ﷺ) को तशरीफ़ लाते हुए देखते तो वो एक-दूसरे से आगे बढ़ने और जगह पकड़ने की कोशिश किया करते थे इस पर उनको मजलिस में खुलकर बैठने का हुक्म दिया गया।

बाब 33 : जो अपने साथियों की इजाज़त के बग़ैर मजलिस या घर में खड़ा हुआ या खड़ा होने के लिये इरादा किया ताकि दूसरे लोग भी खड़े हो जाएँ तो ये जाइज़ है

٣٣- باب مَنْ قَامَ مِنْ مَجْلِسِهِ أَوْ بَيْتِهِ وَلَمْ يَسْتَأْذِنْ أَصْحَابَهُ أَوْ تَهَيَّأَ لِلْقِيَامِ لِيَقُومَ النَّاسُ

तश्रीह : जब कोई शख़्स किसी दूसरे भाई की मुलाक़ात को जाए तो तहज़ीब ये है कि अपनी ग़र्ज़ बयान करके उठ खड़ा हो अगर घर वाले बैठने के लिये कहें तो बैठे यूँ बेकार वक़्त ज़ाया करना और वहाँ बैठे रहकर साहिबे ख़ाना का भी वक़्त बर्बाद करना किसी तरह भी मुनासिब नहीं है। क़ुर्बान जाइये जनाब नबी करीम (ﷺ) पर कि ज़िंदगी के हर एक गोशे पर आपने कैसी नज़र से काम लिया और कितने बेहतरीन अहकाम सादिर फ़र्माए हैं। (ﷺ)

6271. हमसे ह़सन बिन उ़मर ने बयान किया, कहा हमसे मुअ़तमिर बिन सुलैमान ने, कहा मैंने अपने वालिद से सुना, वो अबू मिज्लज़ (ह़क़ बिन हुमैद) से बयान करते थे और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ज़ैनब बिन्ते जह़श (रज़ि.) से निकाह किया तो लोगों को (दा'वते वलीमा पर) बुलाया। लोगों ने खाना खाया फिर बैठकर बातें करते रहे। बयान किया कि फिर आँह़ज़रत (ﷺ) ने ऐसा किया गोया आप उठना चाहते हैं। लेकिन लोग (बेहद बैठे हुए थे) फिर भी खड़े नहीं हुए। जब आँह़ज़रत (ﷺ) ने ये देखा तो आप खड़े हो गये। जब आँह़ज़रत (ﷺ) खड़े हुए तो आपके साथ और भी बहुत से सहाबा खड़े हो गये लेकिन तीन आदमी अब भी बाक़ी रह गये। उसके बाद हुज़ूरे अकरम (ﷺ) अंदर जाने के लिये तशरीफ़ लाए लेकिन वो लोग अब भी बैठे हुए थे। उसके बाद वो लोग भी चले गये। अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर मैं आया और मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) को ख़बर दी कि वो (तीन आदमी) भी जा चुके हैं। आँह़ज़रत (ﷺ) तशरीफ़ लाए और अंदर दाख़िल हो गये। मैंने भी अंदर जाना चाहा लेकिन आँह़ज़रत (ﷺ) ने मेरे और अपने दरम्यान पर्दा डाल लिया और अल्लाह तआ़ला ने ये आयत नाज़िल की, ऐ ईमानवालों! नबी के घर में उस वक़्त

٦٢٧١- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ، سَمِعْتُ أَبِي يَذْكُرُ عَنْ أَبِي مِجْلَزٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: لَمَّا تَزَوَّجَ رَسُولُ اللهِ ﷺ زَيْنَبَ ابْنَةَ جَحْشٍ دَعَا النَّاسَ، طَعِمُوا ثُمَّ جَلَسُوا يَتَحَدَّثُونَ، قَالَ : فَأَخَذَ كَأَنَّهُ يَتَهَيَّأُ لِلْقِيَامِ فَلَمْ يَقُومُوا، فَلَمَّا رَأَى ذَلِكَ قَامَ، فَلَمَّا قَامَ، قَامَ مَنْ قَامَ مَعَهُ مِنَ النَّاسِ، وَبَقِيَ ثَلاَثَةٌ وَإِنَّ النَّبِيَّ ﷺ جَاءَ لِيَدْخُلَ، فَإِذَا الْقَوْمُ جُلُوسٌ ثُمَّ إِنَّهُمْ قَامُوا فَانْطَلَقُوا قَالَ فَجِئْتُ فَأَخْبَرْتُ النَّبِيَّ ﷺ أَنَّهُمْ قَدِ انْطَلَقُوا، فَجَاءَ حَتَّى دَخَلَ فَذَهَبْتُ أَدْخُلُ فَأَرْخَى الْحِجَابَ بَيْنِي وَبَيْنَهُ وَأَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى : ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لاَ تَدْخُلُوا بُيُوتَ النَّبِيِّ إِلاَّ أَنْ يُؤْذَنَ لَكُمْ - إِلَى

तक दाख़िल न हो जब तक तुम्हें इजाज़त न दी जाए। इर्शाद हुआ व इन्ना लकुम इन्दल्लाहि अ़ज़ीमा तक। (राजेअ़ : 4791)

قَوْلِهِ- إِنَّ ذَٰلِكُمْ كَانَ عِنْدَ اللهِ عَظِيمًا﴾ [الأحزاب : ٥٣].

[راجع: ٤٧٩١]

तश्रीह : और उनकी ख़ानगी (पारिवारिक) ज़रूरियात के पेशेनज़र आदाब का तक़ाज़ा यही है कि दा'वत से फ़राग़त के बाद फ़ौरन वहाँ से रुख़्सत हो जाएँ। बयान की गई ह़दीष़ में ऐसी ही तफ़्सीलात मज़्कूर हैं।

बाब 34 : हाथ से इह़तिबाअ करना और इसको कुरफ़ुसा कहते हैं

٣٤- باب الإِحْتِبَاءِ بِالْيَدِ وَهُوَ الْقُرْفُصَاءُ

या'नी सुरीन ज़मीन पर लगाकर बैठना और हाथों को पिण्डलियों पर जोड़कर बैठना जाइज़ है। इसको कुरफ़ुसा कहते हैं (अ़रबी में इसको इह़तिबाअ कहते हैं) या'नी दोनों रानों को खड़ा करके सुरीन पर बैठे और हाथों को पिण्डलियों पर ह़ल्क़ा करके (घेरा बनाकर) रानों को पेट से मिलाए।

6272. हमसे मुह़म्मद बिन अबी ग़ालिब ने बयान किया, कहा हमको इब्राहीम बिन मुंज़िर ह़िज़ामी ने ख़बर दी, कहा हमसे मुह़म्मद बिन फ़ुलैह़ ने बयान किया, उनसे उनके बाप ने, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को स़ेह़ने का'बा में देखा कि आप सुरीन पर बैठे हुए दोनो रानें शिकमे मुबारक से मिलाए हुए हाथों से पिण्डली पकड़े हुए बैठे थे।

٦٢٧٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي غَالِبٍ، أَخْبَرَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ الْحِزَامِيُّ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُلَيْحٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ بِفِنَاءِ الْكَعْبَةِ مُحْتَبِيًا بِيَدِهِ هَكَذَا.

बाब 35 : अपने साथियों के सामने तकिया लगाकर टेक देकर बैठना

٣٥- باب مَنِ اتَّكَأَ بَيْنَ يَدَيْ أَصْحَابِهِ

ख़ब्बाब बिन अरत (रज़ि .) ने कहा कि मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ तो आप एक चादर पर टेक लगाए हुए थे। मैंने अ़र्ज़ किया आँह़ज़रत (ﷺ) अल्लाह तआ़ला से दुआ नहीं करते! (ये सुनकर) आप सीधे हो बैठे।

وَقَالَ خَبَّابٌ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ وَهُوَ مُتَوَسِّدٌ بُرْدَةً قُلْتُ: أَلاَ تَدْعُو اللهَ؟ فَقَعَدَ.

तश्रीह : ये ह़दीष़ बाब अ़लामते नबुव्वः में गुज़र चुकी है। **क़ालल्मुहल्लब यजूज़ु लिल्आ़लिमि वल्मुफ़्ती वल्इमाम अल्इत्तिकाउ फ़ी मज्लिसिही बिह़ज़रतिन्नासि औ लम यजिदहु फ़ी बअ़्ज़ि आ़ज़ाइही औ अरादहू यर्तफ़िकु बिज़ालिक व इल्ला यकूनु ज़ालिक़ फ़ी आ़म्मति मज्लिसिही** (फ़त्ह) या'नी आ़लिम और मुफ़्ती और इमाम के लिये लोगों के सामने मजलिस में किसी जिस्मानी दर्द या बीमारी की वजह से तकिया लगाकर बैठना जाइज़ है मह़ज़ राह़त की वजह से भी मगर आ़म मजलिसों में ऐसा नहीं होना चाहिये।

6273. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे बिश्र बिन मुफ़ज़्ज़ल ने बयान किया, कहा हमसे सईद बिन अयास जरीरी ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबीबक्र ने और उनसे उनके बाप ने बयान किया कि

٦٢٧٣- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ الْمُفَضَّلِ، حَدَّثَنَا الْجُرَيْرِيُّ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي بَكْرَةَ، عَنْ أَبِيهِ قَالَ:

قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَلاَ أُخْبِرُكُمْ بِأَكْبَرِ الْكَبَائِرِ؟)) قَالُوا: بَلَى يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ: ((الإِشْرَاكُ بِاللهِ وَعُقُوقُ الْوَالِدَيْنِ)). [راجع: ٢٦٥٣]

रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया क्या मैं तुम्हें सबसे बड़े गुनाह की ख़बर न दूँ। सहाबा (रज़ि.) ने अर्ज़ किया क्यूँ नहीं या रसूलल्लाह! आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह के साथ शिर्क करना और वालिदैन की नाफ़र्मानी करना। (राजेअ : 2653)

٦٢٧٤- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا بِشْرٌ مِثْلَهُ، وَكَانَ مُتَّكِئًا فَجَلَسَ فَقَالَ: ((أَلاَ وَقَوْلُ الزُّورِ)) فَمَا زَالَ يُكَرِّرُهَا حَتَّى قُلْنَا لَيْتَهُ سَكَتَ. [راجع: ٢٦٥٤]

6274. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे बिश्र बिन मुफ़ज़्ज़ल ने इसी तरह मिषाल बयान किया (और ये भी बयान किया कि) आँहज़रत (ﷺ) टेक लगाए हुए थे फिर आप सीधे बैठ गये और फ़र्माया हाँ और झूठी बात भी। आँहज़रत (ﷺ) उसे इतनी मर्तबा बार बार दुहराते रहे कि हमने कहा, काश! आप ख़ामोश हो जाते। (राजेअ : 2654)

तश्रीह : ये हदीष किताबुल अदब में गुज़र चुकी है और दूसरी अहादीष में भी आपका तकिया लगाकर बैठना मन्क़ूल है जैसे ज़म्माम बिन षअल्बा और समुरह की अहादीष में है। झूठी बात के लिये आपका ये बार बार फ़र्माना इसकी बुराई को वाज़ेह करने के लिये था।

٣٦- باب مَنْ أَسْرَعَ فِي مَشْيِهِ لِحَاجَةٍ أَوْ قَصْدٍ

बाब 36 : जो किसी ज़रूरत या किसी ग़र्ज़ की वजह से तेज़ तेज़ चले

٦٢٧٥- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ، عَنْ عُمَرَ بْنِ سَعِيدٍ، عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ أَنَّ عُقْبَةَ بْنَ الْحَارِثِ حَدَّثَهُ قَالَ: صَلَّى النَّبِيُّ ﷺ الْعَصْرَ فَأَسْرَعَ ثُمَّ دَخَلَ الْبَيْتَ. [راجع: ٨٥١]

6275. हमसे अबू आसिम ने बयान किया, उनसे उमर बिन सईद ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने और उनसे उक़्बा बिन हारिष (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने हमें अस्र की नमाज़ पढ़ाई और फिर बड़ी तेज़ी के साथ चलकर आप घर में दाख़िल हो गये। (राजेअ : 851)

तश्रीह : ये घर में दाख़िल होना किसी ज़रूरत या हाजत की वजह से था। ये हदीष ऊपर गुज़र चुकी है लोगों को आपके ख़िलाफ़ मा'मूल जल्दी जल्दी चलने पर ता'ज्जुब हुआ आपने बतलाया कि मैं अपने घर में सोने का एक डला छोड़ आया था मैंने उसका अपने घर में रहना पसंद नहीं किया उसके बांट देने केलिये मैंने तेज़ी से क़दम उठाए थे। ख़ाक हो उन मुआनिदीन के मुँह पर जो अल्लाह के ऐसे बरगुज़ीदा बन्दे और बुज़ुर्ग रसूल पर दुनियादारी का इल्ज़ाम लगाते हैं। **कबुरत कलिमतन तख्रुजु मिन अफ़्वाहिहिम इंय्यकूलून इल्ला कज़िबा**

٣٧- باب السَّرِيرِ

बाब 37 : चारपाई या तख़्त का बयान

٦٢٧٦- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي الضُّحَى، عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يُصَلِّي وَسْطَ

6276. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अबुज़्ज़ुहा ने, उनसे मसरूक़ ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) तख़्त के बीच में नमाज़ पढ़ते थे और मैं आँहज़रत (ﷺ) और क़िब्ला के दरम्यान लेटी रहती थी

मुझे कोई ज़रूरत होती लेकिन मुझको खड़े होकर आपके सामने आना बुरा मा'लूम होता। अल्बत्ता आपकी तरफ़ रुख़ करके मैं आहिस्ता से खिसक जाती थी। (राजेअ : 382)

السَّرِيرِ، وَأَنَا مُضْطَجِعَةٌ بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْقِبْلَةِ، تَكُونُ لِي الْحَاجَةُ فَأَكْرَهُ أَنْ أَقُومَ فَأَسْتَقْبِلَهُ فَأَنْسَلُّ انْسِلاَلاً. [راجع: ٣٨٢]

क़िब्ला रुख़ में औरतों का लेटना मुसल्ली की नमाज़ को बातिल नहीं करता।

बाब 38 : गाव तकिया लगाना या गद्दा बिछाना

٣٨- باب مَنْ أُلْقِيَ لَهُ وِسَادَةٌ

6277. हमसे इस्हाक़ बिन शाहीन वास्ती ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद ने बयान किया (दूसरी सनद) हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा और मुझसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, उनसे अम्र बिन औन ने बयान किया, उनसे ख़ालिद (बिन अब्दुल्लाह तिहान) ने बयान किया, उनसे ख़ालिद (हज़्ज़ाअ) ने, उनसे अबू क़िलाबा ने बयान किया, कहा कि मुझे अबुल मुलैह आमिर बिन ज़ैद ने ख़बर दी, उन्होंने (अबू क़िलाबा) को (ख़िताब करके) कहा कि मैं तुम्हारे वालिद ज़ैद के साथ हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, उन्होंने हमसे बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) से मेरे रोज़े का ज़िक्र किया गया। आँहज़रत (ﷺ) मेरे यहाँ तशरीफ़ लाए, मैंने आपके लिये चमड़े का एक गद्दा, जिसमें खजूर की छाल भरी हुई थी बिछा दिया। आँहज़रत (ﷺ) ज़मीन पर बैठे और गद्दा मेरे और आँहज़रत (ﷺ) के दरम्यान वैसा ही पड़ा रहा। फिर आँहज़रत (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया क्या तुम्हारे लिये हर महीने में तीन दिन के (रोज़े) काफ़ी नहीं ? मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! फ़र्माया सात दिन। मैंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! फ़र्माया नौ दिन। मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! फ़र्माया हज़रत दाऊद (अलैहिस्सलाम) के रोज़े से ज़्यादा कोई रोज़ा नहीं है। ज़िंदगी के आधे अय्याम, एक दिन का रोज़ा और एक दिन बग़ैर रोज़ा के रहना। (राजेअ : 1131)

٦٢٧٧- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ ح وَحَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَوْنٍ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ، عَنْ خَالِدٍ، عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ أَخْبَرَنِي أَبُو الْمَلِيحِ قَالَ: دَخَلْتُ مَعَ أَبِيكَ زَيْدٍ عَلَى عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو، فَحَدَّثَنَا أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذُكِرَ لَهُ صَوْمِي فَدَخَلَ عَلَيَّ فَأَلْقَيْتُ لَهُ وِسَادَةً مِنْ أَدَمٍ حَشْوُهَا لِيفٌ، فَجَلَسَ عَلَى الأَرْضِ وَصَارَتِ الْوِسَادَةُ بَيْنِي وَبَيْنَهُ، فَقَالَ لِي : ((أَمَا يَكْفِيكَ مِنْ كُلِّ شَهْرٍ ثَلاَثَةُ أَيَّامٍ))؟ قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ: خَمْساً قُلْتُ يارسول الله قال قال سَبعًا قُلْتُ يارسول الله قال تسعاً قلت يارسول الله قَالَ ((إِحْدَى عَشْرَةَ)) قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ: ((لاَ صَوْمَ فَوْقَ صَوْمِ دَاوُدَ، شَطْرَ الدَّهْرِ صِيَامُ يَوْمٍ وَإِفْطَارُ يَوْمٍ)).

[راجع: ١١٣١]

इस हदीष से मा'लूम हुआ कि गद्दा बिछाना और उस पर बैठना जाइज़ है यही बाब से मुताबक़त है।

6278. मुझसे यह्या बिन जा'फ़र ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन हारून ने बयान किया, उनसे शुअबा ने, उनसे मुग़ीरह बिन मिक़्सम ने, उनसे इब्राहीम नख़ई ने और उनसे

٦٢٧٨- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ مُغِيرَةَ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ،

अ़ल्क़मा बिन क़ैस ने कि आप मुल्के शाम में पहुँचे (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी (रह़.) ने कहा कि और मुझसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे मुग़ीरह ने और उनसे इब्राहीम ने बयान किया कि अ़ल्क़मा मुल्के शाम गये और मस्जिद में जाकर दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी फिर ये दुआ़ की ऐ अल्लाह! मुझे एक हमनशीं अ़ता कर। चुनाँचे वो अबू दर्दा (रज़ि.) की मजलिस में जा बैठे। अबू दर्दा (रज़ि.) ने पूछा, तुम्हारा ता'ल्लुक़ कहाँ से है? कहा कि अहले कूफ़ा से। पूछा क्या तुम्हारे यहाँ (निफ़ाक़ और मुनाफ़िक़ीन के) भेदों के जानने वाले वो स़हाबी नहीं हैं जिनके सिवा कोई और उनसे वाक़िफ़ नहीं है। उनका इशारा हुज़ैफ़ह (रज़ि.) की त़रफ़ था। क्या तुम्हारे यहाँ वो नहीं हैं (या यूँ कहा कि) तुम्हारे वो जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल (ﷺ) की ज़ुबानी शैत़ान से पनाह दी थी। इशारा अ़म्मार (रज़ि.) की त़रफ़ था। क्या तुम्हारे यहाँ मिस्वाक और गद्दे वाले नहीं हैं? उनका इशारा इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) की त़रफ़ था। अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) सूरह वल्लैलि इज़ा यग़शा किस त़रह पढ़ते थे। अ़ल्क़मा (रज़ि.) ने कहा कि वो वज़्ज़कर वल उन्षा पढ़ते थे। अबू दर्दा (रज़ि.) ने उस पर कहा कि ये लोग कूफ़ा वाले अपने मुसलसल अ़मल से क़रीब था कि मुझे शुब्हा में डाल देते हालाँकि मैंने नबी करीम (ﷺ) से ख़ुद सुना था।

عَنْ عَلْقَمَةَ أَنَّهُ قَدِمَ الشَّامَ ح وَحَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ مُغِيرَةَ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ قَالَ: ذَهَبَ عَلْقَمَةُ إِلَى الشَّامِ فَأَتَى الْمَسْجِدَ فَصَلَّى رَكْعَتَيْنِ فَقَالَ: اللَّهُمَّ ارْزُقْنِي جَلِيسًا، فَقَعَدَ إِلَى أَبِي الدَّرْدَاءِ فَقَالَ: مِمَّنْ أَنْتَ؟ قَالَ: مِنْ أَهْلِ الْكُوفَةِ، قَالَ : أَلَيْسَ فِيكُمْ صَاحِبُ السِّرِّ الَّذِي كَانَ لاَ يَعْلَمُهُ غَيْرُهُ؟ يَعْنِي حُذَيْفَةَ؟ أَلَيْسَ فِيكُمْ أَوْ كَانَ فِيكُمُ الَّذِي أَجَارَهُ اللهُ عَلَى لِسَانِ رَسُولِهِ ﷺ مِنَ الشَّيْطَانِ؟ يَعْنِي عَمَّارًا، أَوَ لَيْسَ فِيكُمْ صَاحِبُ السِّوَاكِ الْوِسَادَةِ يَعْنِي ابْنَ مَسْعُودٍ كَيْفَ كَانَ عَبْدُ اللهِ يَقْرَأُ: ﴿وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَى﴾ [الليل: ١] قَالَ: ﴿وَالذَّكَرِ وَالأُنْثَى﴾ فَقَالَ: مَا زَالَ هَؤُلاَءِ حَتَّى كَادُوا يُشَكِّكُونِي وَقَدْ سَمِعْتُهَا مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ.

तशरीह : दोनों रिवायतों में रसूले करीम (ﷺ) के लिये गद्दा बिछाया जाना मज़्कूर है यही बाब से मुत़ाबक़त है। ह़ज़रत अबू दर्दा (रज़ि.) ने जिन तीन बुज़ुर्गों के मुख़्तलिफ़ मनाक़िब बयान किये या'नी ह़ज़रत हुज़ैफ़ह, ह़ज़रत अ़म्मार, और ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.), ह़ज़रत अबू दर्दा का अस़ल मंशा था जो ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द की क़िरात के बारे में है, उनका अ़मल इसी क़िरात पर था और सब्आ़ क़िरात में से ये भी एक क़िरात है मगर मशहूर आम और मक़्बूल अनाम क़िरात वो है जो जुम्हूर क़िरात के यहाँ मक़्बूल और मुरव्वज है या'नी वज़्ज़कर वल उन्षा की जगह **व मा ख़लकज़्ज़कर वल्उन्षा** मुस़्ह़फ़े उ़ष्मानी में इस क़िरात को तरजीह़ ह़ास़िल है। **अस्सियाक़ु युर्शिदु इला अन्नहू अराद वस़्फ़ कुल्लि वाहिदिम्मिनस़्स़हाबति बिमा कानख़तस़्स़ बिहिल्फ़ज़्ल दूर ग़ैरिही मिनस़्स़हाबति** (फ़त्ह) या'नी हर स़ह़ाबी को फ़ज़्ल ह़ास़िल था उसका इज़्हार मक़्सूद था और बस।

बाब 39 : जुम्आ़ के बाद क़ैलूला करना

٣٩- باب الْقَائِلَةِ بَعْدَ الْجُمُعَةِ

दिन के वक़्त दोपहर के क़रीब या उसके बाद आराम करने को क़ैलूला कहते हैं ।

6279. हमसे मुहम्मद बिन कषीर ने बयान किया, कहा हमसे

٦٢٧٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، حَدَّثَنَا

سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ: كُنَّا نَقِيلُ وَنَتَغَدَّى بَعْدَ الْجُمُعَةِ.

[راجع: ٩٣٨]

सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, उनसे अबू ह़ाज़िम ने और उनसे ह़ज़रत सहल बिन सअ़द साएदी (रज़ि.) ने बयान किया कि हम खाना और क़ैलूला जुम्अ़े की नमाज़ के बाद करते थे। (राजेअ़: 938)

٤٠- باب الْقَائِلَةِ فِي الْمَسْجِدِ

बाब 40 : मस्जिद में भी क़ैलूला करना जाइज़ है

٦٢٨٠- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ: مَا كَانَ لِعَلِيٍّ اسْمٌ أَحَبُّ إِلَيْهِ مِنْ أَبِي تُرَابٍ، وَإِنْ كَانَ لَيَفْرَحُ بِهِ إِذَا دُعِيَ بِهَا جَاءَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بَيْتَ فَاطِمَةَ عَلَيْهَا السَّلاَمُ فَلَمْ يَجِدْ عَلِيًّا فِي الْبَيْتِ فَقَالَ: ((أَيْنَ ابْنُ عَمِّكِ؟)) فَقَالَتْ: كَانَ بَيْنِي وَبَيْنَهُ شَيْءٌ فَغَاضَبَنِي فَخَرَجَ، فَلَمْ يَقِلْ عِنْدِي فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لإِنْسَانٍ: ((انْظُرْ أَيْنَ هُوَ؟)) فَجَاءَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ فِي الْمَسْجِدِ رَاقِدٌ فَجَاءَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَهُوَ مُضْطَجِعٌ قَدْ سَقَطَ رِدَاؤُهُ عَنْ شِقِّهِ فَأَصَابَهُ تُرَابٌ، فَجَعَلَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَمْسَحُهُ عَنْهُ وَهُوَ يَقُولُ: ((قُمْ أَبَا تُرَابٍ قُمْ أَبَا تُرَابٍ)).

[راجع: ٤٤١]

6280. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन ह़ाज़िम ने बयान किया, उनसे ह़ज़रत सहल बिन सअ़द साएदी (रज़ि.) ने बयान किया कि ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) को कोई नाम अबू तुराब से ज़्यादा मह़बूब नहीं था। जब उनको इस नाम से बुलाया जाता तो वो ख़ुश होते थे। एक मर्तबा रसूलुल्लाह (ﷺ) ह़ज़रत फ़ातिमा (अ़लैहिस्सलाम) के घर तशरीफ़ लाए तो ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) को घर में नहीं पाया तो फ़र्माया कि बेटी तुम्हारे चचा के लड़के (और शौहर) कहा गये हैं? उन्होंने कहा मेरे और उनके दरम्यान कुछ तल्ख़ कलामी हो गई थी वो मुझ पर ग़ुस़्सा होकर बाहर चले गये और मेरे यहाँ (घर में) क़ैलूला नहीं किया। आँह़ज़रत (ﷺ) ने एक शख़्स़ से कहा कि देखो वो कहाँ हैं। वो स़ह़ाबी वापस आए और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! वो तो मस्जिद में सोये हुए हैं। आँह़ज़रत (ﷺ) मस्जिद में तशरीफ़ लाए तो ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) लेटे हुए थे और चादर आपके पहलू से गिर गई थी और गर्द आलूद हो गई थी। आँह़ज़रत (ﷺ) उससे मिट्टी साफ़ करने लगे और फ़र्माने लगे, अबू तुराब! (मिट्टी वाले) उठो, अबू तुराब! उठो। (राजेअ़: 441)

तशरीह : ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) मस्जिद में क़ैलूला करते हुए पाए गए इसी से बाब का मत़लब ष़ाबित हुआ। ह़ज़रत अ़ली (रज़ि .) आँह़ज़रत के चचाज़ाद भाई थे। मगर अ़रब लोग बाप के चचा को भी चचा कह देते हैं इसी बिना पर आपने ह़ज़रत फ़ात़िमा (रज़ि.) से **अयन इब्नु अम्मिक** के अल्फ़ाज़ इस्ते'माल फ़र्माए।

٤١- باب مَنْ زَارَ قَوْمًا فَقَالَ عِنْدَهُمْ

बाब 41 : अगर कोई शख़्स़ कहीं मुलाक़ात को जाए और दोपहर को वहीं आराम करे तो ये जाइज़ है

٦٢٨١- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا

6281. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह अंस़ारी ने कहा कि मुझसे मेरे वालिद

ने, उनसे षुमामा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि (उनकी वालिदा) उम्मे सुलैम नबी करीम (ﷺ) के लिये चमड़े का फ़र्श बिछा देती थीं और आँहज़रत (ﷺ) उनके यहाँ इसी पर क़ैलूला कर लेते थे। बयान किया कि फिर जब आँहज़रत (ﷺ) सो गये (और बेदार हुए) तो उम्मे सुलैम (रज़ि.) ने आहज़रत (ﷺ) का पसीना और (झड़े हुए) आपके बाल ले लिये और (पसीने को) एक शीशी में जमा किया और फिर सुक (एक ख़ुश्बू) में उसे मिला लिया। बयान किया है कि फिर जब अनस बिन मालिक (रज़ि.) की वफ़ात का वक़्त क़रीब हुआ तो उन्होंने वसिय्यत की कि उस सुक (जिसमें आँहज़रत ﷺ का पसीना मिला हुआ था) में उसे उनके हनूत में मिला दिया जाए। बयान किया है कि फिर उनके हनूत में उसे मिलाया गया।

مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الأَنْصَارِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ ثُمَامَةَ، عَنْ أَنَسٍ أَنَّ أُمَّ سُلَيْمٍ كَانَتْ تَبْسُطُ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نِطَعًا فَيَقِيلُ عِنْدَهَا عَلَى ذَلِكَ النِّطَعِ قَالَ: فَإِذَا نَامَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَخَذَتْ مِنْ عَرَقِهِ وَشَعَرِهِ فَجَمَعَتْهُ فِي قَارُورَةٍ، ثُمَّ جَمَعَتْهُ فِي سُكٍّ قَالَ: فَلَمَّا حَضَرَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ الْوَفَاةُ أَوْصَى أَنْ يُجْعَلَ فِي حَنُوطِهِ مِنْ ذَلِكَ السُّكِّ قَالَ: فَجُعِلَ فِي حَنُوطِهِ.

तश्रीह : हाफ़िज़ ने कहा कि ये बाल हज़रत उम्मे सुलैम (रज़ि.) ने हज़रत अबू तलहा (रज़ि.) से लिये थे। हज़रत अबू तलहा (रज़ि.) ने वो बाल उसी वक़्त ले लिये थे जब आपने मिना मे सर मुँडाया था। एक रिवायत में है हज़रत उम्मे सुलैम (रज़ि.) आपके बदन का पसीना जमा कर रही थीं इतने में आँहज़रत (ﷺ) जागे तो फ़र्माया उम्मे सुलैम ये क्या कर रही हो? उन्होंने कहा कि मैं आपका पसीना ख़ुश्बू में डालने के लिये जमा करती हूँ वो ख़ुद भी निहायत ख़ुश्बूदार है। दूसरी रिवायत में है कि हम बरकत के लिये आपका पसीना अपने बच्चों के वास्ते जमा करती हैं चुनाँचे हनूत में आँहज़रत (ﷺ) के बाल और पसीना मिला हुआ था **व ला मुआरज़त बैन क़ौलिहा अन्नहा कानत तज्मउहू लिअज्लि तय्यिबतिन व बैन क़ौलिहा लिल्बर्कति बल युहमलु अला अन्नहा कानत तुफ़स्सिलु ज़ालिकल्अम्रैनि मअन** (फ़त्ह) या'नी ये काम बरकत और ख़ुश्बू दोनों मक़ासिद के लिये किया करती थीं।

6282-83. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने, उनसे इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबी तलहा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने। अब्दुल्लाह बिन अबी तलहा (रज़ि.) ने उनसे सुना वो बयान करते थे कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) क़ुबा तशरीफ़ ले जाते थे तो उम्मे हराम बिन्ते मिल्हान (रज़ि.) के घर भी जाते थे और वो आँहज़रत (ﷺ) को खाना खिलाती थीं, फिर आँहज़रत (ﷺ) सो गये और बेदार हुए तो आप हंस रहे थे। उम्मे हराम (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने पूछा या रसूलल्लाह! आप किस बात पर हंस रहे हैं? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मेरी उम्मत के कुछ लोग अल्लाह के रास्ते में ग़ज़्वा करते हुए मेरे सामने (ख़्वाब में) पेश किये गये, जो उस समुन्दर के ऊपर (कश्तियों में) सवार होंगे (जन्नत में वो ऐसे नज़र आए) जैसे बादशाह तख़्त पर होते हैं, या बयान किया कि बादशाहों की तरह तख़्त पर। इस्हाक़ को इन लफ़्ज़ों में ज़रा शुब्हा था (उम्मे

٦٢٨٢، ٦٢٨٣- حدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَهُ يَقُولُ: كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا ذَهَبَ إِلَى قُبَاءٍ يَدْخُلُ عَلَى أُمِّ حَرَامٍ بِنْتِ مِلْحَانَ فَتُطْعِمُهُ، وَكَانَتْ تَحْتَ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ فَدَخَلَ يَوْمًا فَأَطْعَمَتْهُ فَنَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ، ثُمَّ اسْتَيْقَظَ يَضْحَكُ قَالَتْ: فَقُلْتُ مَا يُضْحِكُكَ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: ((نَاسٌ مِنْ أُمَّتِي عُرِضُوا عَلَيَّ غُزَاةً فِي سَبِيلِ اللهِ

हराम रज़ि. ने बयान किया कि) मैंने अ़र्ज़ किया आँहज़रत (ﷺ) दुआ़ कर दें कि अल्लाह मुझे भी उनमें से बनाए। आँहज़रत (ﷺ) ने दुआ की फिर आँहज़रत (ﷺ) अपना सर रखकर सो गये और जब बेदार हुए तो हंस रहे थे। मैंने कहा या रसूलल्लाह! आप किस बात पर हंस रहे हैं? फ़र्माया कि मेरी उम्मत के कुछ लोग अल्लाह के रास्ते में ग़ज़्वा करते हुए मेरे सामने पेश किये गये जो उस समुन्दर के ऊपर सवार होंगे जैसे बादशाह तख़्त पर होते हैं या मिष्ल बादशाहों के तख़्त पर। मैंने अ़र्ज़ किया कि अल्लाह से मेरे लिये दुआ कीजिए कि मुझे भी उनमें से कर दे। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तू उस गिरोह के सबसे पहले लोगों में होगी चुनाँचे उम्मे हराम (रज़ि.) ने (मुआ़विया रज़ि. की शाम पर गवर्नरी के ज़माने में) समन्दरी सफ़र किया और ख़ुश्की पर उतरने के बाद अपनी सवारी से गिर पड़ीं और वफ़ात पा गईं। (राजेअ़ : 2788, 2789)

يَرْكَبُونَ ثَبَجَ هَذَا الْبَحْرِ مُلُوكًا عَلَى الأَسِرَّةِ)) - أَوْ قَالَ ((مِثْلَ الْمُلُوكِ عَلَى الأَسِرَّةِ)) شَكَّ إِسْحَاقُ قُلْتُ: ادْعُ اللهَ أَنْ يَجْعَلَنِي مِنْهُمْ؟ فَدَعَا ثُمَّ وَضَعَ رَأْسَهُ فَنَامَ، ثُمَّ اسْتَيْقَظَ يَضْحَكُ، فَقُلْتُ: مَا يُضْحِكُكَ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: ((نَاسٌ مِنْ أُمَّتِي عُرِضُوا عَلَيَّ غُزَاةً فِي سَبِيلِ اللهِ، يَرْكَبُونَ ثَبَجَ هَذَا الْبَحْرِ مُلُوكًا عَلَى الأَسِرَّةِ))- فَقُلْتُ: ادْعُ اللهَ أَنْ يَجْعَلَنِي مِنْهُمْ؟ قَالَ : ((أَنْتِ مِنَ الأَوَّلِينَ)) فَرَكِبَتِ الْبَحْرَ زَمَانَ مُعَاوِيَةَ، فَصُرِعَتْ عَنْ دَابَّتِهَا حِينَ خَرَجَتْ مِنَ الْبَحْرِ فَهَلَكَتْ.

[راجع: ٢٧٨٨، ٢٧٨٩]

तश्रीह : दोनों रिवायतों में आँहज़रत के क़ैलूला का बाब के मुताबिक़ करने का ज़िक्र है यही ह़दीष और बाब में मुताबक़त है। पहली रिवायत में आपके ख़ुश्बूदार पसीने का ज़िक्र है सदबार क़ाबिले ता'रीफ़ हैं ह़ज़रत अनस (रज़ि.) जिनको ये बेहतरीन ख़ुश्बू नसीब हुई। दूसरी रिवायत में ह़ज़रत उम्मे ह़राम (रज़ि.) के बारे में एक पेशीनगोई का ज़िक्र है जो ह़ज़रत अमीर मुआविया (रज़ि.) के ज़माने में ह़र्फ़ ब ह़र्फ़ सह़ीह़ षाबित हुई। ह़ज़रत उम्मे ह़राम (रज़ि.) उस जंग में वापसी के वक़्त अपनी सवारी से गिरकर शहीद हो गई थीं। इस त़रह़ पेशीनगोई पूरी हुई, इससे समन्दरी सफ़र का जाइज़ होना भी षाबित हुआ, पर आजकल तो समन्दरी सफ़र बहुत ज़रूरी और आसान हो गया है जैसा कि मुशाहिदा है।

बाब 42 : आसानी के साथ आदमी जिस त़रह़ बैठ सके बैठ सकता है

٤٢- باب الْجُلُوسِ كَيْفَمَا تَيَسَّرَ

6284. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, उनसे अ़ता बिन यज़ीद लैषी ने और उनसे ह़ज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने दो त़रह़ के पहनावे से और दो त़रह़ की ख़रीदा व फ़रोख़्त से मना किया था। इश्तिमाले स़म्माअ और एक कपड़े में इस त़रह़ इह़तिबाअ करने से कि इंसान की शर्मगाह पर कोई चीज़ न हो और मुलामिसत और मुनाबिज़त से। इस

٦٢٨٤- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَزِيدَ اللَّيْثِيِّ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: نَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنْ لِبْسَتَيْنِ، وَعَنْ بَيْعَتَيْنِ: اِشْتِمَالِ الصَّمَّاءِ، وَالاِحْتِبَاءِ فِي ثَوْبٍ وَاحِدٍ لَيْسَ عَلَى فَرْجِ الإِنْسَانِ مِنْهُ شَيْءٌ، وَالْمُلاَمَسَةِ وَالْمُنَابَذَةِ. تَابَعَهُ مَعْمَرٌ

रिवायत की मुताबअ़त मअ़मर, मुहम्मद बिन अबी हफ़्सा, और अ़ब्दुल्लाह बिन बुदैल ने ज़ुह्री से की है। (राजेअ़ : 367)

وَمُحَمَّدُ بْنُ أَبِي حَفْصَةَ وَعَبْدُ اللهِ بْنُ بُدَيْلٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ. [راجع: ٣٦٧]

तश्रीह : इस हदीष़ से हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने बाब का मतलब यूँ निकाला है कि जब आँहज़रत (ﷺ) ने इस तरह बैठने से मना फ़र्माया कि उसमें सतरे औरत खुलने का डर हो तो इससे ये निकला कि ये डर न हो तो इस तरह बैठना जाइज़ दुरुस्त है। इमाम मुस्लिम (रह.) की रिवायत में है कि आप नमाज़े फ़ज्र के बाद सूरज निकलने तक चार ज़ानू बैठे रहा करते थे। मअ़मर की रिवायत को इमाम बुख़ारी (रह.) ने किताबुल बुयूअ़ में और मुहम्मद बिन अबी हफ़्सा की रिवायत को इब्ने अ़दी ने और अ़ब्दुल्लाह बिन बुदैल की रिवायत को ज़हली ने ज़ुहरियात में वस्ल किया है। मुलासमत के बारे में अ़ल्लामा नववी ने शरह मुस्लिम में उ़लमा से तीन सूरतें नक़ल की हैं एक ये कि बेचने वाला एक कपड़ा लिपटा हुआ या अंधेरे में लेकर आए और ख़रीददार उसको छुए तो बेचने वाला ये कहे कि मैंने ये कपड़ा तेरे हाथ बेचा इस शर्त से कि तेरा छूना तेरे देखने के क़ायम मुक़ाम है और जब तू देखे तो तुझे इख़्तियार नहीं है। दूसरी सूरत ये कि छूने से मजलिस का इख़्तियार क़त्अ़ किया जाए और तीनों सूरतों में बेअ़ बातिल है। इसी तरह बेअ़े मुनाबज़ा के भी तीन मा'नी हैं। एक तो ये कि कपड़े का फेंकना बेअ़ क़रार दिया जाए। ये हज़रत इमाम शाफ़िई (रह.) की तफ़्सीर है। दूसरी ये कि फेंकने से इख़्तियार क़त्अ़ किया जाए। तीसरी ये कि फेंकने से कंकरी का फेंकना मुराद है। या'नी ख़रीदने वाला बायेअ़ के हुक्म से किसी माल पर कंकरी फेंक दे तो वो कंकरी जिस चीज़ पर पड़ जाएगी उसका लेना ज़रूरी हो जाएगा ख़्वाह वो कम हो या ज़्यादा। ये सब जाहिलियत के ज़माने की बेअ़ हैं जो जुए में दाख़िल हैं। इसलिये आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे मना फ़र्माया है और रिवायते हाज़ा में दो क़िस्म के लिबासों से मना फ़र्माया गया है। एक इश्तिमाले स़म्माअ है जिसकी ये सूरत जो बयान की गई है दूसरी सूरत ये है कि आदमी एक कपड़े को अपने जिस्म पर इस तरह से लपेट ले कि किसी तरफ़ से खुला न रहे गोया उसको उस पत्थर से मुशाबिहत दी जिसको सख़्र-ए-स़िमाअ कहते हैं या'नी वो पत्थर जिसमें कोई सूराख़ या शिगाफ़ न हो सब तरफ़ से सख़्त और यक्साँ हो। कुछ ने कहा कि इश्तिमाले स़िमाअ ये है कि आदमी किसी भी कपड़े से अपना सारा जिस्म ढांपकर किसी एक जानिब से कपड़े को उठा दे तो उसका सुतू र खुल जाए। ग़र्ज़ ये दोनों क़िस्में नाजाइज़ हैं और दूसरा लिबासे इहतिबाअ ये है कि जिससे आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया है कि जब शर्मगाह पर कोई कपड़ा न हो तो एक ही कपड़ा से गोट मारकर बैठे जिसकी सूरत ये है कि एक कपड़े से या हाथों से अपने पैरों और पेट को मिलाकर पीठ या'नी कमर से जकड़े तो अगर शर्मगाह पर कपड़ा है और शर्मगाह ज़ाहिर नहीं होती है तो जाइज़ है और अगर शर्मगाह ज़ाहिर हो जाती है तो नाजाइज़ है।

बाब 43 : जिसने लोगों के सामने सरगोशी की और जिसने अपने साथी का राज़ नहीं बताया फिर जब वो इंतिक़ाल कर गया तो बताया ये जाइज़ है

٤٣- باب مَنْ نَاجَى بَيْنَ يَدَيِ النَّاسِ وَلَمْ يُخْبِرْ بِسِرِّ صَاحِبِهِ فَإِذَا مَاتَ أَخْبَرَ بِهِ

6285,86. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़वाना वज़ाह ने, कहा हमसे फ़रास बिन यह्या ने बयान किया, उनसे आ़मिर शअ़बी ने, उनसे मसरूक़ ने कि मुझसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि ये तमाम अज़्वाजे मुतह्हरात (हुज़ूरे अकरम ﷺ के मर्ज़ुल वफ़ात में) आँहज़रत (ﷺ) के पास थीं, कोई वहाँ से नहीं हटा था कि

٦٢٨٥، ٦٢٨٦- حَدَّثَنَا مُوسَى، عَنْ أَبِي عَوَانَةَ، حَدَّثَنَا فِرَاسٌ، عَنْ عَامِرٍ، عَنْ مَسْرُوقٍ، حَدَّثَتْنِي عَائِشَةُ أُمُّ الْمُؤْمِنِينَ قَالَتْ: إِنَّا كُنَّا أَزْوَاجَ النَّبِيِّ ﷺ عِنْدَهُ جَمِيعًا لَمْ تُغَادَرْ مِنَّا وَاحِدَةٌ فَأَقْبَلَتْ فَاطِمَةُ

हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) चलती हुई आईं। अल्लाह की क़सम! उनकी चाल रसूलुल्लाह (ﷺ) की चाल से अलग नहीं थी (बल्कि बहुत ही मुशाबेह थी) जब हुज़ूर अकरम (ﷺ) ने उन्हें देखा तो ख़ुश आमदीद कहा। फ़र्माया बेटी! मरहबा! फिर आँहज़रत (ﷺ) ने अपनी दाईं तरफ़ या बाईं तरफ़ उन्हें बिठाया। उसके बाद आहिस्ता से उनसे कुछ कहा और हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) बहुत ज़्यादा रोने लगीं । जब आँहज़रत (ﷺ) ने उनका ग़म देखा तो दोबारा उनसे सरगोशी की उस पर वो हंसने लगीं। तमाम अज़्वाज में से मैंने उनसे कहा कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने हममे सिर्फ़ आपको सरगोशी की ख़ुसूसियात बख़्शी फिर आप रोने लगीं। जब आँहज़रत (ﷺ) उठे तो मैंने उनसे पूछा कि आपके कान में आँहज़रत (ﷺ) ने क्या फ़र्माया था? उन्होंने कहा कि मैं आँहज़रत (ﷺ) का राज़ नहीं खोल सकती। फिर जब आपकी वफ़ात हो गई तो मैंने हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) से कहा कि मेरा जो हक़ आप पर है उसका वास्ता देती हूँ कि आप मुझे वो बात बता दें। उन्होंने कहा कि अब बता सकती हूँ। चुनाँचे उन्होंने मुझे बताया कि जब आँहुज़ूर (ﷺ) ने मुझसे पहली सरगोशी की थी तो फ़र्माया था कि, जिब्रईल (अलैहि.) हर साल मुझसे साल में एक मर्तबा दौर किया करते थे लेकिन इस साल मुझसे उन्होंने दो मर्तबा दौर किया और मेरा ख़याल है कि मेरी वफ़ात का वक़्त क़रीब है, अल्लाह से डरती रहना और सब्र करना क्योंकि मैं तुम्हारे लिये एक अच्छा आगे जाने वाला हूँ, बयान किया कि उस वक़्त मेरा रोना जो आपने देखा था उसकी वजह यही थी। जब आँहज़रत (ﷺ) ने मेरी परेशानी देखी तो आपने दोबारा मुझसे सरगोशी की, फ़र्माया, फ़ातिमा बेटी! क्या तुम उस पर ख़ुश नहीं हो कि जन्नत में तुम मोमिन औरतों की सरदार होगी, या (फ़र्माया कि) इस उम्मत की औरतों की सरदार होगी। (राजेअ : 3623)

عَلَيْهَا السَّلاَمُ تَمْشِي لاَ وَاللهِ مَا تَخْفَى مِشْيَتُهَا مِنْ مِشْيَةِ رَسُولِ اللهِ ﷺ، فَلَمَّا رَآهَا رَحَّبَ قَالَ : ((مَرْحَبًا بِابْنَتِي)) ثُمَّ أَجْلَسَهَا عَنْ يَمِينِهِ، أَوْ عَنْ شِمَالِهِ ثُمَّ سَارَّهَا فَبَكَتْ بُكَاءً شَدِيدًا، فَلَمَّا رَأَى حُزْنَهَا سَارَّهَا الثَّانِيَةَ، إِذَا هِيَ تَضْحَكُ فَقُلْتُ لَهَا: أَنَا مِنْ بَيْنِ نِسَائِهِ خَصَّكِ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِالسِّرِّ مِنْ بَيْنِنَا، ثُمَّ أَنْتِ تَبْكِينَ، فَلَمَّا قَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ سَأَلْتُهَا عَمَّا سَارَّكِ قَالَتْ: مَا كُنْتُ لأُفْشِيَ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ سِرَّهُ، فَلَمَّا تُوُفِّيَ قُلْتُ لَهَا: عَزَمْتُ عَلَيْكِ بِمَا لِي عَلَيْكِ مِنَ الْحَقِّ لَمَّا أَخْبَرْتِنِي قَالَتْ: أَمَّا الآنَ، فَنَعَمْ. فَأَخْبَرَتْنِي قَالَتْ: أَمَّا حِينَ سَارَّنِي فِي الأَمْرِ الأَوَّلِ فَإِنَّهُ أَخْبَرَنِي ((أَنَّ جِبْرِيلَ كَانَ يُعَارِضُهُ بِالْقُرْآنِ كُلَّ سَنَةٍ مَرَّةً، وَإِنَّهُ قَدْ عَارَضَنِي بِهِ الْعَامَ مَرَّتَيْنِ وَلاَ أَرَى الأَجَلَ إِلاَّ قَدِ اقْتَرَبَ فَاتَّقِي اللهَ وَاصْبِرِي، فَإِنِّي نِعْمَ السَّلَفُ أَنَا لَكِ)) قَالَتْ: فَبَكَيْتُ بُكَائِي الَّذِي رَأَيْتِ، فَلَمَّا رَأَى جَزَعِي سَارَّنِي الثَّانِيَةَ قَالَ : ((يَا فَاطِمَةُ أَلاَ تَرْضَيْنَ أَنْ تَكُونِي سَيِّدَةَ نِسَاءِ الْمُؤْمِنِينَ أَوْ سَيِّدَةَ نِسَاءِ هَذِهِ الأُمَّةِ)).[راجع: ٣٦٢٣]

तश्रीह : सरगोशी से इसलिये मना किया कि किसी तीसरे आदमी को सूए ज़न न पैदा हो अगर मजलिस में इस ख़तरे का अन्देशा न हो तो सरगोशी जाइज़ भी है जैसा कि हज़रत फ़ातिमतुज़्ज़हरा (रज़ि.) से रसूले करीम का सरगोशी करना मज़्कूर है।

बाब 44 : चित्त लेटने का बयान

٤٤- باب الاِسْتِلْقَاءِ

6287. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुह्री ने बयान किया, कहा कि मुझे अ़ब्बाद बिन तमीम ने ख़बर दी, उनसे उनके चचा ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को मस्जिद में चित्त लेटे देखा आप एक पैर दूसरे पर रखे हुए थे।

(राजेअ़ : 3624)

٦٢٨٧- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ قَالَ : أَخْبَرَنِي عَبَّادُ بْنُ تَمِيمٍ، عَنْ عَمِّهِ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ فِي الْمَسْجِدِ مُسْتَلْقِيًا وَاضِعًا إِحْدَى رِجْلَيْهِ عَلَى الأُخْرَى.

[راجع: ٣٦٢٤]

बाब 45 : किसी जगह सिर्फ़ तीन आदमी हों तो एक को अकेला छोड़कर दो आदमी सरगोशी न करें

٤٥- باب لاَ يَتَنَاجَى اثْنَانِ دُونَ الثَّالِثِ

और अल्लाह पाक ने (सूरह क़दसमिअल्लाह : 9, 10 में) फ़र्माया, मुसलमानों! जब तुम सरगोशी करो तो गुनाह और ज़ुल्म और पैग़म्बर की नाफ़र्मानी पर सरगोशी न किया करो बल्कि नेकी और परहेज़गारी पर..... आख़िर आयत व अलल्लाहि फ़ल्यतवक्कलिल मोमिनून तक।

और अल्लाह ने इस सूरत में मज़ीद फ़र्माया मुसलमानों! जब तुम पैग़म्बर से सरगोशी करो तो उससेपहले कुछ स़दक़ा निकाला करो ये तुम्हारे हक़ में बेहतर और पाकीज़ा है अगर तुमको ख़ैरात करने के लिये कुछ न मिले तो ख़ैर अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। आख़िर आयत वल्लाहु ख़बीरुम् बिमा तअ़मलून तक। (सूरह मुजादला : 12,13)

وَقَوْلُهُ تَعَالَى : ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَنَاجَيْتُمْ فَلاَ تَتَنَاجَوْا بِالإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَةِ الرَّسُولِ وَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوَى﴾ إِلَى قَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿وَعَلَى اللهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ﴾ [المجادلة : ١٠-٩] وقوله : ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نَاجَيْتُمُ الرَّسُولَ فَقَدِّمُوا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوَاكُمْ صَدَقَةً ذَلِكَ خَيْرٌ لَكُمْ وَأَطْهَرُ فَإِنْ لَمْ تَجِدُوا فَإِنَّ اللهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ - إِلَى قَوْلِهِ - وَاللهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ﴾[المجادلة : ١٢، ١٣].

तश्रीह : ये आयत बाद की आयत से मन्सूख़ हो गई, कहते हैं कि इस पर अव्वलीन अ़मल करने वाले सिर्फ़ हज़रत अ़ली (रज़ि.) थे, उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) के साथ सरगोशी करने से पहले कुछ स़दक़ा किया और इन दोनों आयतों के लाने से इमाम बुख़ारी (रह़.) की ग़र्ज़ ये है कि कानाफूसी दुरुस्त है वो भी इस शर्त के साथ कि गुनाह और ज़ुल्म की बात के लिये न हो।

6288. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, (दूसरी सनद) ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने कहा कि हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने

٦٢٨٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَالِكٌ ح وَحَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ

((إِذَا كَانُوا ثَلاَثَةً فَلاَ يَتَنَاجَى اثْنَانِ دُونَ الثَّالِثِ)).

कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जब तीन आदमी साथ हों तो तीसरे साथी को छोड़कर दो आपस में कानाफूसी न करें।

तश्रीह : दूसरी रिवायत किसी की सुह्बत में बैठे तो वो अमानत की बातें अपने दिल में रखे और इफ़्शा (ज़ाहिर) न करे कि उनसे उस भाई को दुख हो।

٤٦- باب حِفْظِ السِّرِّ

बाब 46 : राज़ छुपाना

٦٢٨٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ صَبَّاحٍ، حَدَّثَنَا مُعْتَمِرُ بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ يَقُولُ: أَسَرَّ إِلَيَّ النَّبِيُّ ﷺ سِرًّا فَمَا أَخْبَرْتُ بِهِ أَحَدًا بَعْدَهُ، وَلَقَدْ سَأَلَتْنِي أُمُّ سُلَيْمٍ فَمَا أَخْبَرْتُهَا بِهِ.

4689. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन स़ब्बाह ने बयान किया, कहा हमसे मुअ़तमिर बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा कि मैंने अपने वालिद से सुना कि मैंने ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझसे एक राज़ की बात कही थी और मैंने वो राज़ किसी को नहीं बताया (उनकी वालिदा) ह़ज़रत उम्मे सुलैम (रज़ि.) ने मुझसे इसके बारे मे पूछा लेकिन मैंने उन्हें भी नहीं बताया।

तश्रीह : दारमी की रिवायत में यूँ है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने मुझको एक काम के लिये भेजा था जिसकी वजह से मैं अपनी वालिदा के पास देर में पहुँचा। वालिदा ने ताख़ीर की वजह पूछी मैंने कहा कि वो आँह़ज़रत (ﷺ) के राज़ की एक बात है फिर ह़ज़रत वालिदा ने भी यही फ़र्माया कि आँह़ज़रत (ﷺ) के राज़ की बात किसी के सामने ज़ाहिर न कीजियो मगर उसमें वही राज़ मुराद है जिसके ज़ाहिर होने से एक मुसलमान भाई को नुक़्सान का डर हो।

٤٧- باب إِذَا كَانُوا أَكْثَرَ مِنْ ثَلاَثَةٍ فَلاَ بَأْسَ بِالْمُسَارَةِ وَالْمُنَاجَاةِ

बाब 47 : जब तीन से ज़्यादा आदमी हों तो कानाफूसी करने में कोई ह़र्ज नहीं है

٦٢٩٠- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((إِذَا كُنْتُمْ ثَلاَثَةً فَلاَ يَتَنَاجَى رَجُلاَنِ دُونَ الآخَرِ، حَتَّى تَخْتَلِطُوا بِالنَّاسِ أَجْلَ أَنْ يُحْزِنَهُ)).

6290. हमसे उ़स्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन अ़ब्दुल ह़मीद ने बयान किया, उनसे मंसूर बिन मुअ़तमिर ने, उनसे अबू वाइल ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जब तुम तीन आदमी हो तो तीसरे साथी को छोड़कर तुम आपस में कानाफूसी न किया करो। इसलिये लोगों को रंज होगा अल्बत्ता अगर दूसरे आदमी भी हों तो मुज़ायक़ा नहीं।

٦٢٩١- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ، عَنْ أَبِي حَمْزَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ شَقِيقٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: قَسَمَ النَّبِيُّ ﷺ يَوْمًا قِسْمَةً فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الأَنْصَارِ: إِنَّ هَذِهِ لَقِسْمَةٌ مَا

6291. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, उनसे अबू ह़म्ज़ा मुह़म्मद बिन मैमून ने, उनसे आ'मश ने, उनसे शक़ीक़ ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने एक मर्तबा कुछ माल तक़्सीम फ़र्माया इस पर अंसार के एक शख़्स ने कहा कि ये ऐसी तक़्सीम है जिससे अल्लाह की

ख़ुशनूदी मक़्सूद न थी। मैंने कहा कि हाँ! अल्लाह की क़सम! मैं हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में जाऊँगा । चुनाँचे मैं गया आँहज़रत (ﷺ) उस वक़्त मजलिस में बैठे हुए थे मैंने आँहज़रत (ﷺ) के कान में चुपके से ये बात कही तो आप ग़ुस्सा हो गये और आपका चेहरा सुर्ख़ हो गया फिर आपने फ़र्माया कि मूसा (अलैहिस्सलाम) पर अल्लाह की रहमत हो उन्हें इससे भी ज़्यादा तकलीफ़ पहुँचाई गई लेकिन उन्होंने सब्र किया (पस मैं भी सब्र करूँगा) (राजेअ : 3150)

أُرِيدَ بِهَا وَجْهُ اللهِ قُلْتُ: أَمَا وَاللهِ لآتِيَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَتَيْتُهُ وَهُوَ فِي مَلأٍ فَسَارَرْتُهُ فَغَضِبَ، حَتَّى احْمَرَّ وَجْهُهُ ثُمَّ قَالَ: ((رَحْمَةُ اللهِ عَلَى مُوسَى أُوذِيَ بِأَكْثَرَ مِنْ هَذَا فَصَبَرَ)).
[راجع: ٣١٥٠]

तश्रीह : बाब का मतलब हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) के तर्ज़े अमल से निकला क्योंकि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने उस वक़्त आँहज़रत (ﷺ) से सरगोशी की जब दूसरे कई लोग मौजूद थे। ये गुस्ताख़ मुनाफ़िक़ था जैसा कि पहले बयान हो चुका है। कहते हैं कि हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) को बहुत तकलीफ़ें दी गईं क़ारून ने एक फ़ाहिशा औरत को भड़काकर आप पर ज़िना की तोह्मत लगाई, बनी इस्राईल ने आपको फ़ितक़ (एक क़िस्म की बीमारी) का आरज़ा बतलाया किसी ने कहा कि आपने अपने भाई हारून को मार डाला। इन इल्ज़ामात पर हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) ने सब्र किया अल्लाह उन पर बहुत बहुत सलाम पेश करे, आमीन।

बाब 48 : देर तक सरगोशी करना

٤٨- باب طُولِ النَّجْوَى

सूरह बनी इस्राईल में फ़र्माया कि, व इज़्हुम नज्वा तो नज्वा नाजियत का मस्दर है या'नी वो लोग सरगोशी कर रहे हैं यहाँ ये उन लोगों की सिफ़त वाक़ेअ हो रहा है।

﴿وَإِذْ هُمْ نَجْوَى﴾ [الأسراء: ٤٧] مَصْدَرٌ مِنْ نَاجَيْتُ فَوَصَفَهُمْ بِهَا وَالْمَعْنَى يَتَنَاجَوْنَ.

6292. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अब्दुल अज़ीज़ बिन सुहैब और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नमाज़ की तक्बीर कही गई और एक सहाबी रसूलुल्लाह (ﷺ) से सरगोशी करते रहे, फिर वो देर तक सरगोशी करते रहे यहाँ तक कि आपके सहाबा सोने लगे उसके बाद आप उठे और नमाज़ पढ़ाई। (राजेअ : 642)

٦٢٩٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ، عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: أُقِيمَتِ الصَّلاَةُ وَرَجُلٌ يُنَاجِي رَسُولَ اللهِ ﷺ فَمَا زَالَ يُنَاجِيهِ حَتَّى نَامَ أَصْحَابُهُ ثُمَّ قَامَ فَصَلَّى. [راجع: ٦٤٢]

बाब 49 : सोते वक़्त घर में आग न रहने दी जाए (न चिराग़ रोशन किया जाए)

٤٩- باب لاَ تُتْرَكُ النَّارُ فِي الْبَيْتِ عِنْدَ النَّوْمِ

क्योंकि उससे कुछ दफ़ा घर में आग लगकर नुक़्साने अज़ीम हो जाता है।

6293. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़यय्ना ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने, उनसे सालिम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया,

٦٢٩٣- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَالِمٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لاَ تَتْرُكُوا النَّارَ فِي

जब सोने लगो तो घर में आग न छोड़ो।

بُيُوتِكُمْ حِينَ تَنَامُونَ)).

6294. हमसे मुहम्मद बिन अ़लाअ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे बुरैद बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे अबू बुर्दा ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) ने बयान किया कि मदीना मुनव्वरह मे एक घर रात के वक़्त जल गया। नबी करीम (ﷺ) से इसके बारे में कहा गया तो आपने फ़र्माया कि आग तुम्हारी दुश्मन है इसलिये जब सोने लगो तो उसे बुझा दिया करो।

٦٢٩٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ، قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ بُرَيْدِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: إِحْتَرَقَ بَيْتٌ بِالْمَدِينَةِ عَلَى أَهْلِهِ مِنَ اللَّيْلِ، فَحُدِّثَ بِشَأْنِهِمُ النَّبِيُّ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ هَذِهِ النَّارَ إِنَّمَا هِيَ عَدُوٌّ لَكُمْ، فَإِذَا نِمْتُمْ فَأَطْفِئُوهَا عَنْكُمْ)).

6295. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे कष़ीर बिन शन्ज़ीर ने बयान किया, उनसे अ़ता बिन अबी रिबाह ने बयान किया, उनसे ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया, कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया (सोते वक़्त) बर्तन ढंक लिया करो वरना दरवाज़े बंद कर लिया करो और चिराग़ बुझा लिया करो क्योंकि ये चूहा कुछ औक़ात चिराग़ की बत्ती खींच लेता है और घर वालों को जला देता है। (राजेअ़ : 3280)

٦٢٩٥- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ كَثِيرٍ، عَنْ عَطَاءٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((خَمِّرُوا الآنِيَةَ وَأَجِيفُوا الأَبْوَابَ، وَأَطْفِئُوا الْمَصَابِيحَ، فَإِنَّ الْفُوَيْسِقَةَ رُبَّمَا جَرَّتِ الْفَتِيلَةَ فَأَحْرَقَتْ أَهْلَ الْبَيْتِ)). [راجع: ٣٢٨٠]

ये मुआ़शरती ज़िंदगी के ऐसे पहलू हैं जिन पर ख़िलाफ़वर्ज़ी से कुछ दफ़ा ऐसे लोग सख़्ततरीन तकलीफ़ के शिकार हो जाते हैं। क़ुर्बान जाइए इस प्यारे रसूल पर जिन्होंने ज़िंदगी के हर गोशे के लिये हमको बेहतरीन हिदायात पेश फ़र्माई हैं।

बाब 50 : रात के वक़्त दरवाज़े बंद करना

٥٠- باب إِغْلاَقِ الأَبْوَابِ بِاللَّيْلِ

6296. हमसे ह़स्सान बिन अबी अ़ब्बाद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हम्माम बिन यह्या ने बयान किया, उनसे अ़ता बिन अबी रिबाह ने और उनसे ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जब रात मे सोने लगो तो चिराग़ बुझा दिया करो और दरवाज़े बंद कर लिया करो और मशकीज़ों का मुँह बाँध दिया करो और खाने-पीने की चीज़ें ढंक दिया करो। ह़म्माद ने कहा कि मेरा ख़्याल है कि ये भी फ़र्माया कि, अगरचे एक लकड़ी से ही हो। (राजेअ़ : 3280)

٦٢٩٦- حَدَّثَنَا حَسَّانُ بْنُ أَبِي عَبَّادٍ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، عَنْ عَطَاءٍ، عَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَطْفِئُوا الْمَصَابِيحَ بِاللَّيْلِ إِذَا رَقَدْتُمْ، وَأَغْلِقُوا الأَبْوَابَ وَأَوْكِئُوا الأَسْقِيَةَ، وَخَمِّرُوا الطَّعَامَ وَالشَّرَابَ)) قَالَ هَمَّامٌ، وَأَحْسِبُهُ ((وَلَوْ بِعُودٍ)). [راجع: ٣٢٨٠]

बाब 51 : बूढ़ा होने पर ख़त्ना करना और बग़ल के बाल नोचना

٥١- باب الْخِتَانِ بَعْدَ الْكِبَرِ وَنَتْفِ الإِبْطِ

तश्रीह : अहले ह़दीष़ के नज़दीक ख़त्ना करना वाजिब है। ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) के तर्जुम-ए-बाब से भी वजूब निकलता है क्योंकि बड़ा होने के बाद भी ख़त्ना कराना उन्होंने लाज़िम रखा है। इस बाब की मुनासबत किताबुल इस्तीज़ान से मुश्किल है किरमानी ने कहा कि मुनासबत ये है कि ख़त्ने की तक़रीब मे लोग जमा होते हैं तो इस्तीज़ान की ज़रूरत पड़ती है इसीलिये उसे किताबुल इस्तीज़ान में लाए। **फ़फ्हम वला तकुम्मिनल्क़ाफ़िरीन**

6297. हमसे यह्या बिन क़ज़्आ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे सईद बिन मुसय्यिब ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया पाँच चीज़ें फ़ित़रत से हैं। ख़त्ना करना, ज़ेरे नाफ़ के बाल बनाना, बग़ल के बाल स़ाफ़ करना, मूँछ छोटी कराना और नाख़ुन काटना। (राजेअ़ : 5889)

٦٢٩٧- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ قَزَعَةَ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الْفِطْرَةُ خَمْسٌ: الْخِتَانُ، وَالاِسْتِحْدَادُ، وَنَتْفُ الإِبْطِ وَقَصُّ الشَّارِبِ، وَتَقْلِيمُ الأَظْفَارِ)).

[راجع: ٥٨٨٩]

कुछ रिवायात में दाढ़ी बढ़ाने का भी ज़िक्र है ये तमाम काम सुनने इब्राहीमी हैं जिनकी पाबन्दी उनके आल के लिये ज़रूरी है। अल्लाह पाक हर मुसलमान को उन पर अ़मल की तौफ़ीक़ बख़्शे कि वो स़ह़ीह़तरीन फ़र्ज़न्दाने मिल्लते इब्राहीमी ष़ाबित हों। इस ह़दीष़ से बाब का मत़लब यूँ निकला कि आपने ख़त्ना को पैदाइशी सुन्नत फ़र्माया और उ़मर की कोई क़ैद नहीं लगाई तो मा'लूम हुआ कि बड़ी उ़मर में भी ख़त्ना है।

6298. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐ़ब बिन अबी ह़म्ज़ा ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अअ़रज ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लैहि.) ने अस्सी (80) साल की उ़म्र में ख़त्ना कराया और आपने क़दूम (तख़्फ़ीफ़ के साथ) (कुल्हाड़े) से ख़त्ना किया। हमसे क़ुतैबा ने बयान किया, कहा हमसे मुग़ीरह ने बयान किया और उनसे अबुज़्ज़िनाद ने बिल क़द्दूम (तश्दीद के साथ बयान किया)

٦٢٩٨- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبُ بْنُ أَبِي حَمْزَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((اخْتَتَنَ إِبْرَاهِيمُ عَلَيْهِ السَّلاَمُ بَعْدَ ثَمَانِينَ سَنَةً، وَاخْتَتَنَ بِالْقَدُومِ)) مُخَفَّفَةً. قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ: حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، حَدَّثَنَا الْمُغِيرَةُ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ وَقَالَ : بِالْقَدُّومِ

6299. हमसे मुह़म्मद बिन अ़ब्दुर्रह़ीम ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्बाद बिन मूसा ने ख़बर दी, कहा हमसे इस्माईल बिन जा'फ़र ने बयान किया, कहा हमसे इस्राईल ने, उनसे अबू इस्ह़ाक़ ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने कि ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से पूछा गया कि जब नबी करीम (ﷺ) की वफ़ात हुई तो आपकी उ़म्र क्या थी? कहा कि उन दिनों मेरा ख़त्ना हो चुका था और अ़रब लोगों की आ़दत थी जब तक

٦٢٩٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحِيمِ، أَخْبَرَنَا عَبَّادُ بْنُ مُوسَى، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ قَالَ: سُئِلَ ابْنُ عَبَّاسٍ مِثْلُ مَنْ أَنْتَ حِينَ قُبِضَ النَّبِيُّ ﷺ؟ قَالَ أَنَا يَوْمَئِذٍ مَخْتُونٌ، قَالَ: وَكَانُوا لاَ يَخْتِنُونَ

الرَّجُلَ حَتَّى يُدْرِكَ.[طرفه في: ٦٣٠٠].

लड़का जवानी के क़रीब न होता उसका ख़त्ना न करते थे। (दीगर: 6300)

٦٣٠٠- وقَالَ ابْنُ إِدْرِيسَ: عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قُبِضَ النَّبِيُّ ﷺ وَأَنَا خَتِينٌ. [راجع: ٦٢٩٩]

6300. और अब्दुल्लाह बिन इदरीस बिन यज़ीद ने अपने वालिद से बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने, उससे सईद बिन जुबैर ने और उनसे हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि जब नबी करीम (ﷺ) की वफ़ात हुई तो मेरा ख़त्ना हो चुका था। (राजेअ़: 6299)

٥٢- باب كُلُّ لَهْوٍ بَاطِلٌ إِذَا شَغَلَهُ عَنْ طَاعَةِ اللهِ

बाब 52 : आदमी जिस काम में मसरूफ़ होकर अल्लाह की इबादत से ग़ाफ़िल हो जाए वो लह्व में दाख़िल और बातिल है

وَمَنْ قَالَ لِصَاحِبِهِ: تَعَالَ أُقَامِرْكَ وَقَوْلُهُ تَعَالَى: ﴿وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَشْتَرِي لَهْوَ الْحَدِيثِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيلِ اللهِ﴾ [لقمان ٦].

और जिसने अपने साथी से कहा कि आओ जुआ खेलें उसका क्या हुक्म है और अल्लाह तआ़ला ने सूरह लुक़्मान में फ़र्माया, कुछ लोग ऐसे हैं जो अल्लाह की राह से बहका देने के लिये खेल कूद की बातें बोल लेते हैं। (लुक़्मान : 6)

तश्रीह : हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने कहा कि क़सम उस परवरदिगार की जिसके सिवा कोई सच्चा मा'बूद नहीं, इससे गाना मुराद है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) और हज़रत जाबिर और हज़रत इक्रिमा और हज़रत सईद बिन जुबैर (रज़ि.) से भी ऐसा ही मन्क़ूल है हज़रत इमाम हसन बस़री (रह.) ने कहा कि ये आयत ग़िना और मज़ामीर की मज़म्मत में नाज़िल हुई है।

٦٣٠١- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي حُمَيْدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَنْ حَلَفَ مِنْكُمْ فَقَالَ فِي حَلِفِهِ: بِاللاَّتِ وَالْعُزَّى فَلْيَقُلْ : لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ، وَمَنْ قَالَ لِصَاحِبِهِ : تَعَالَ أُقَامِرْكَ فَلْيَتَصَدَّقْ)).

6301. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, कहा कि मुझे हुमैद बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया तुममें से जिसने क़सम खाई और कहा कि लात व उ़ज़्ज़ा की क़सम, तो फिर वो ला इलाहा इल्लल्लाह कहे और जिसने अपने साथी से कहा कि आओ जुआ खेलें तो उसे स़दक़ा कर देना चाहिये।

तश्रीह : लिहाज़ा रुपया पैसा जुआ खेलने के लिये इस्ते'माल करना हराम है। जो लोग पीर व मुर्शिद की क़सम खाते हैं वो भी इस हदीष़ के मिस्दाक़ हैं क़सम खाना स़िर्फ़ अल्लाह के नाम से हो ग़ैरुल्लाह के नाम की क़सम खाना शिर्क है **मन हलफ़ बिगैरिल्लाहि फ़क़द अश्रक** इस बाब की मुनासबत किताबुल इस्तीज़ान से मुश्किल है इसी तरह हदीष़ की मुनासबत बाब के तर्जुमा से। कुछ ने पहले अम्र की तौजीह ये की है कि जुआ खेलने के लिये जो बुलाए उसको घर आने की इजाज़त न देनी चाहिये और दूसरे की तौजीह ये की है कि लात और उ़ज़्ज़ा की क़सम खाना भी लह्वल हदीष़ में दाख़िल है जो हराम है।

٥٣- باب مَا جَاءَ فِي الْبِنَاءِ

बाब 53 : इमारत बनाना कैसा है

قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ : عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((مِنْ

हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत

أَشْرَاطِ السَّاعَةِ إِذَا تَطَاوَلَ رِعَاءُ الْبَهْمِ فِي الْبُنْيَانِ)).

किया कि क़यामत की निशानियों में से ये भी है कि मवेशी चराने वाले लोग कोठियों में अकड़ने लगेंगे या'नी बुलंद कोठियाँ बनवाकर फ़ख़्र करने लगेंगे।

तश्रीह : इस ह़दीष़ को लाकर इमाम बुख़ारी (रह़.) ने ये इशारा किया कि बहुत लम्बी लम्बी ऊँची इमारतें बनवाना मकरूह है और इस बाब में एक स़रीह़ रिवायत भी वारिद है जिसको इब्ने अबिद्दनिया ने निकाला कि जब आदमी सात हाथ से ज़्यादा अपनी इमारत ऊँची करता है तो उसको यूँ पुकारते हैं ओ फ़ासिक़! तू कहाँ जाता है मगर इस ह़दीष़ की सनद ज़ईफ़ है, दूसरे मौक़ूफ़ है। ख़ब्बाब की स़ह़ीह़ ह़दीष़ में जिसे तिर्मिज़ी वग़ैरह ने निकाला यूँ है कि आदमी को हर एक ख़र्च का ष़वाब मिलता है मगर इमारत के ख़र्च का ष़वाब नहीं मिलता। त़बरानी ने मुअजम औसत़ में निकाला जब अल्लाह किसी बन्दे के साथ बुराई करना चाहता है तो उसका पैसा इमारत में ख़र्च कराता है। मुतर्जिम (वह़ीदुज़्ज़माँ) कहता है मुराद वही इमारत है जो फ़ख़्र और तकब्बुर के लिये बिला ज़रूरत बनाई जाती है जैसे अकष़र दुनियादार अमीरों की आ़दत है लेकिन वो इमारत दीन के कामों के लिये या आ़म मुसलमानों के फ़ायदे के लिये बनाई जाए, मसाजिद, मदारिस, सरायें, यतीमख़ाने उनमें तो फिर ष़वाब होगा बल्कि जब तक ऐसी मुक़द्दस इमारत बाक़ी रहेगी बराबर उन बनाने वालों को ष़वाब मिलता रहेगा।

٦٣٠٢- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ هُوَ ابْنُ سَعِيدٍ، عَنْ سَعِيدٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: رَأَيْتُنِي مَعَ النَّبِيِّ ﷺ بَنَيْتُ بِيَدِي بَيْتًا يُكِنُّنِي مِنَ الْمَطَرِ، وَيُظِلُّنِي مِنَ الشَّمْسِ مَا أَعَانَنِي عَلَيْهِ أَحَدٌ مِنْ خَلْقِ اللهِ.

6302. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, कहा हमसे इस्ह़ाक़ ने बयान किया, वो सईद के बेटे हैं, उनसे सईद ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में अपने हाथों से एक घर बनाया ताकि बारिश से ह़िफ़ाज़त रहे और धूप से साया ह़ासिल हो अल्लाह की मख़्लूक़ मेंसे किसी ने उस काम में मेरी मदद नहीं की। मा'लूम हुआ कि ज़रूरत के लायक़ घर बनाना दुरुस्त है।

٦٣٠٣- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، قَالَ عَمْرٌو : قَالَ ابْنُ عُمَرَ: وَاللهِ مَا وَضَعْتُ لَبِنَةً عَلَى لَبِنَةٍ، وَلاَ غَرَسْتُ نَخْلَةً مُنْذُ قُبِضَ النَّبِيُّ ﷺ قَالَ سُفْيَانُ فَذَكَرْتُهُ لِبَعْضِ أَهْلِهِ، قَالَ: وَاللهِ لَقَدْ بَنَى قَالَ سُفْيَانُ: قُلْتُ فَلَعَلَّهُ قَالَ: قَبْلَ أَنْ يَبْنِيَ.

6303. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे अबू सुफ़यान ष़ौरी ने, उनसे अ़म्र बिन नशार ने और उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि वल्लाह! नबी करीम (ﷺ) की वफ़ात के बाद न मैंने कोई ईंट किसी ईंट पर रखी और न कोई बाग़ लगाया। सुफ़यान ने बयान किया कि जब मैंने इसका ज़िक्र इब्ने उ़मर (रज़ि.) के कुछ घरानों के सामने किया तो उन्होंने कहा कि अल्लाह की क़सम! उन्होंने घर बनाया था। सुफ़यान ने बयान किया कि मैंने कहा फिर ये बात इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने घर बनाने से पहले कही होगी।

तश्रीह : ह़ज़रत सुफ़यान ष़ौरी (रह़.) की पेशकर्दा तत्बीक़ बिलकुल मुनासिब है कि ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) की ये बात घर बनाने से पहले की फ़रमूदा है बाद में उन्होंने घर बनाया जैसा कि ख़ुद उनके घरवालों का बयान है। ज़रूरत से ज़्यादा मकान बनाना वबाले जान है जैसा कि आजकल लोगों ने मज़बूत तरीन इमारतें बना बनाकर खड़ी कर दी हैं। बाग़ लगाना इफ़ादा के लिये बेहतर है।

४०. किताबुद्दअवात

किताब दुआओं के बयान में

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

तश्रीह : आदम (अलैहि.) से लेकर आज तक ख़ुदा-ए-पाक के वजूदे बरह़क़ को मानने वाली जितनी क़ौमें गुज़री हैं या मौजूद हैं उन सब ही में दुआ का तस़व्वुर व तख़य्युल व तआमुल मौजूद है। मुवह्हिद क़ौमों ने हर क़िस्म की नेक दुआओं का मर्कज़ अल्लाह पाक, रब्बुल आलमीन की ज़ाते वाह़िद को क़रार दिया और मुश्रिकीन क़ौमों ने इस स़ह़ीह़ मर्कज़ से हटकर अपने देवताओं, औलिया, पीरों, शहीदों, क़ब्रों, बुतों के साथ ये मामला शुरू कर दिया। ताहम इस क़िस्म के तमाम लोगों का, दुआ के तस़व्वुर पर ईमान रहा है और अब भी मौजूद है। इस्लाम में दुआ को बहुत बड़ी अहमियत दी गई है, पैग़म्बरे इस्लाम अलैहिस्सलातु वस्सलाम फ़र्माते हैं कि **अद्दुआउ मुख़्ख़ुल्इबादति** या'नी इबादत का अस़ली मग़ज़ दुआ है। इसलिये इस्लाम में जिन जिन कामों को इबादत का नाम दिया गया है उन सबकी बुनियाद शुरू से आख़िर तक दुआओं पर रखी गई है। नमाज़ जो इस्लाम का सतून है और जिसके अदा किये बग़ैर किसी मुसलमान कलिमागो को चारा नहीं वो शुरू से आख़िर तक दुआओं का एक बेहतरीन गुलदस्ता है। रोज़ा, ह़ज्ज का भी यही ह़ाल है। ज़कात में भी लेने वाले को देने वाले के ह़क़ में नेक दुआ सिखलाकर बतलाया गया है कि इस्लाम का अस़ल मुद्दआ तमाम इबादात से दुआ है। चुनाँचे ख़ुद आँह़ज़रत (ﷺ) फ़र्माते हैं, **अद्दुआउ हुवल्इबादतु षुम्म क़रअ व क़ाल रब्बुकुम उदऊनी अस्तजिब लकुम** (रवाहु अहमद वग़ैरूहू) या'नी दुआ इबादत है बल्कि एक रिवायत के मुताबिक़ दुआओं में वो ग़ज़ब की त़ाक़त रखी गई है कि इनसे तक़्दीरें बदल जाती हैं। इसलिये नबी करीम (ﷺ) ने ख़ास़ ताकीद फ़र्माई कि **फ़अलैकुम इबादल्लाहि बिद्दुआअ** (रवाहु तिर्मिज़ी) या'नी ऐ अल्लाह के बन्दे! बिज़ ज़रूर दुआ को अपने लिये लाज़िम कर लो। एक रिवायत में है कि जो शख़्स अल्लाह से दुआ नहीं माँगता समझ लो वो अल्लाह के ग़ज़ब में गिरफ़्तार है और फ़र्माया कि जिसके लिये दुआ बकष़रत करने का दरवाज़ा खोल दिया गया समझ लो उसके लिये रह़मते इलाही के दरवाज़े खुल गये और भी बहुत सी रिवायात इस क़िस्म की मौजूद हैं पस अहले ईमान का फ़र्ज़ है कि अल्लाह पाक से हर वक़्त दुआ मांगना अपना अमल बना लें। क़ुबूलियते दुआ के लिये क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में कुछ तफ़्स़ीलात हैं। उनको भी सरसरी नज़र से मुलाह़िज़ा फ़र्मा लीजिए ताकि आपकी दुआ क़ुबूल हो जाए।

(1) दुआ करते वक़्त ये सोच लेना ज़रूरी है कि उसका खाना-पीना उसका लिबास ह़लाल माल से है या ह़राम से। अगर रिज़्क़े ह़लाल व सिद्क़े मक़ाल व लिबासे त़य्यिब मुहय्या नहीं है तो दुआ से पहले उनको मुहय्या करने की कोशिश करनी ज़रूरी है।

(2) क़ुबूलियते दुआ के लिये ये शर्त़ बड़ी अहम है कि दुआ करते वक़्त अल्लाह बरह़क़ पर यक़ीन कामिल हो और साथ ही दिल में ये अज़्म बिल जज़्म हो कि जो वो दुआ कर रहा है वो ज़रूर क़ुबूल होगी। रद्द नहीं की जाएगी।

(3) क़ुबूलियते दुआ के लिये दुआ के मज़्मून पर तवज्जह देना भी ज़रूरी है अगर आप क़त़्अ रह़मी के लिये ज़ुल्म व ज़्यादती

के लिये या क़ानूने क़ुदरत के बरअक्स कोई मुत़ालबा अल्लाह के सामने रख रहे हैं तो हर्गिज़ ये गुमान न करें कि इस क़िस्म की दुआएँ भी आपकी क़ुबूल होंगी।

(4) दुआ करने के बाद फ़ौरन ही इसकी क़ुबूलियत आप पर ज़ाहिर हो जाए, ऐसा तस़व्वुर भी स़ह़ीह़ नहीं है बहुत सी दुआएँ फ़ौरन अष़र दिखाती हैं और बहुत सी काफ़ी देर के बाद अष़र पज़ीर होती हैं। बहुत सी दुआएँ बज़ाहिर क़ुबूल नहीं होतीं मगर उनकी बरकात से हम किसी आने वाली बड़ी आफ़त से बच जाते हैं और बहुत सी दुआएँ स़िर्फ़ आख़िरत के लिये ज़ख़ीरा बनकर रह जाती हैं। बहरहाल दुआ बशराइते बाला किसी ह़ाल में भी बेकार नहीं जाती।

(5) आँह़ज़रत (ﷺ) ने आदाबे दुआ में बतलाया है कि अल्लाह के सामने हाथों को हथेलियों की त़रफ़ से फैला कर सच्चे दिल से साइल बनकर दुआ मांगो। फ़र्माया, **तुम्हारा रब्बे करीम बहुत ही ह़यादार है उसको शर्म आती है कि अपने मुख़्लिस़ बन्दे के हाथों को ख़ाली हाथ वापस कर दे।** आख़िर में हाथों को चेहरे पर मल लेना भी आदाबे दुआ से है।

(6) पीठ पीछे अपने मुसलमान भाई के लिये दुआ करना क़ुबूलियत के लिह़ाज़ से फ़ौरी अष़र रखता है मज़ीद ये कि फ़रिश्ते साथ में आमीन कहते हैं और दुआ करने वाले को दुआ देते हैं कि अल्लाह तुमको भी वो चीज़ अ़त़ा करे जो तुम अपने भाई के लिये मांग रहे हो।

(7) आँह़ज़रत (ﷺ) फ़र्माते हैं कि पाँच क़िस्म के आदमियों की दुआ ज़रूर क़ुबूल होती है। मज़्लूम की दुआ, ह़ाजी की दुआ जब तक वो वापस हो, मुजाहिद की दुआ यहाँ तक कि वो अपने मक़्स़द को पहुँचे, मरीज़ की दुआ यहाँ तक कि वो तन्दुरुस्त हो, पीठ पीछे अपने भाई के लिये दुआए ख़ैर जो क़ुबूलियत में फ़ौरी अष़र रखती है।

(8) एक दूसरी रिवायत की बिना पर तीन दुआएँ ज़रूर क़ुबूल होती हैं। वालिदैन का अपनी औलाद के ह़क़ में दुआ करना और मज़्लूम की कुछ रिवायत की बिना पर रोज़ेदार की दुआ और इमामे आ़दिल की दुआ भी फ़ौरी अष़र दिखलाती है। मज़्लूम की दुआ के लिये आसमानों के दरवाज़े खुल जाते हैं और बारगाहे अह़दियत से आवाज़ आती है कि मुझको क़सम है अपने जलाल की और इ़ज़्ज़त की मैं ज़रूर तेरी मदद करूँगा अगरचे उसमें कुछ वक़्त लगे।

(9) कुशादगी, बेफ़िक्री, फ़ारिग़ुल बाली के औक़ात में दुआओं में मशग़ूल रहना कमाल है वरना शदाइद व मस़ाइब में तो सब ही दुआ करने लग जाते हैं। औलाद के ह़क़ में बद् दुआ करने की मुमानअ़त है। इसी त़रह़ अपने लिये या अपने माल के लिये बद् दुआ नहीं करनी चाहिये।

(10) दुआ करने से पहले फिर अपने दिल का जाइज़ा लीजिए कि उसमें सुस्ती-ग़फ़लत का कोई दाग़ धब्बा तो नहीं है। दुआ वही क़ुबूल होती जो दिल की गहराई से स़िद्क़ निय्यत से ह़ुज़ूरे क़ल्ब व यक़ीने कामिल के साथ की जाए।

बाब : अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया, मुझे पुकारो! मैं तुम्हारी पुकार क़ुबूल करूँगा

باب قوله تعالى ﴿ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ - إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ﴾ [غافر: ٦٠]. وَلِكُلِّ نَبِيٍّ دَعْوَةٌ مُسْتَجَابَةٌ

बिला शुब्हा जो लोग मेरी इ़बादत से तकब्बुर करते हैं वो बहुत जल्द दोज़ख़ में ज़िल्लत के साथ दाख़िल होंगे। उस ह़दीष़ का बयान कि हर नबी की एक दुआ ज़रूर ही क़ुबूल होती है।

तशरीह : इस आयत को लाकर ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने ये ष़ाबित किया कि दुआ भी इ़बादत है और इस बाब में एक स़रीह़ ह़दीष़ वारिद है जिसे इमाम अह़मद और तिर्मिज़ी और नसाई और इब्ने माजा ने निकाला कि दुआ भी इ़बादत है फिर आपने ये आयत पढ़ी। **उदऊनी अस्तजिब लकुम** दूसरी रिवायत में यूँ है कि दुआ ही इ़बादत का मग़्ज़

है। पस अब जो कोई अल्लाह के सिवा किसी दूसरे से दुआ करे तो वो मुश्रिक होगा क्योंकि उसने ग़ैरुल्लाह की इबादत की और यही शिर्क है।

6304. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अअ़रज ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया हर नबी को एक दुआ ह़ासिल होती है (जो क़ुबूल की जाती है) और मैं चाहता हूँ कि मैं अपनी दुआ को आख़िरत में अपनी उम्मत की शफ़ाअ़त के लिये मह़फ़ूज़ रखूँ। (दीगर : 7474)

٦٣٠٤– حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لِكُلِّ نَبِيٍّ دَعْوَةٌ يَدْعُو بِهَا، وَأُرِيدُ أَنْ أَخْتَبِيءَ دَعْوَتِي شَفَاعَةً لأُمَّتِي فِي الآخِرَةِ)).[طرفه في : ٧٤٧٤].

6305. और मुअ़तमिर ने बयान किया, उन्होंने अपने वालिद से सुना, उन्होंने ह़ज़रत अनस (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, हर नबी ने कुछ चीज़ें मांगी या फ़र्माया कि हर नबी को एक दुआ दी गई जिस चीज़ की उसने दुआ मांगी फिर उसे क़ुबूल किया गया लेकिन मैंने अपनी दुआ क़यामत के दिन अपनी उम्मत की शफ़ाअ़त के लिये मह़फ़ूज़ रखी हुई है।

٦٣٠٥– قَالَ خَلِيْفَةُ قَالَ مُعْتَمِرٌ: سَمِعْتُ أَبِي، عَنْ أَنَسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((كُلُّ نَبِيٍّ سَأَلَ سُؤَالاً)) أَوْ قَالَ: ((لِكُلِّ نَبِيٍّ دَعْوَةٌ قَدْ دَعَا بِهَا فَاسْتُجِيبَ فَجَعَلْتُ دَعْوَتِي شَفَاعَةً لأُمَّتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ)).

तश्रीह़ : क़ाल इब्नु बत़्ताल फ़ी हाज़ल्हदीषि बयानु फज़्लि नबिय्यिना अल् अख़। या'नी इस ह़दीष़ में हमारे नबी (ﷺ) की फ़ज़ीलत बयान की गई है जो आपको तमाम रसूलों पर ह़ासिल है कि आपने उस मख़्सूस दुआ के लिये अपने नफ़्स पर सारी उम्मत और अपने अहले बैत के लिये ईषार फ़र्माया। नववी (रह़.) ने कहा कि इसमें आपकी त़रफ़ से उम्मत पर कमाले शफ़क़त का इज़्हार है इसमें उन पर भी दलील है कि अहले सुन्नत मे से जो शख़्स तौह़ीद पर मरा वो दोज़ख़ में हमेशा नहीं रहेगा अगरचे वो कबाइर पर इस़रार करता हुआ मर जाए। (फ़त्ह़ुल बारी)

बाब 2 : इस्तिग़फ़ार के लिये अफ़ज़ल दुआ का बयान

٢– باب أَفْضَلِ الاِسْتِغْفَارِ

और अल्लाह तआ़ला ने सूरह नूह़ में फ़र्माया, अपने रब से बख़्शिश मांगो वो बड़ा बख़्शने वाला है तुम ऐसा करोगे तो वो आसमान के दहाने खोल देगा और माल और बेटों से तुमको सरफ़राज़ करेगा और बाग़ अ़ता करेगा और नहरें इनायत करेगा। और सूरह आले इमरान में फ़र्माया, बहिश्त उन लोगों के लिये तैयार की गई है जिनसे कोई बेहयाई का काम हो जाता है या कोई गुनाह सरज़द होता है तो अल्लाह पाक को याद करके अपने गुनाहों की बख़्शिश चाहते हैं और अल्लाह के सिवा कौन है जो गुनाहों को बख़्शे और वो अपने बुरे कामों पर जान बूझकर हठधर्मी नहीं करते हैं। (आले इमरान : 135)

وَقَوْلِهِ تَعَالَى : ﴿اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ إِنَّهُ كَانَ غَفَّارًا. يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا. وَيُمْدِدْكُمْ بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ وَيَجْعَلْ لَكُمْ جَنَّاتٍ، وَيَجْعَلْ لَكُمْ أَنْهَارًا﴾ [نوح: ١٠]. ﴿وَالَّذِينَ إِذَا فَعَلُوا فَاحِشَةً أَوْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللهَ فَاسْتَغْفَرُوا لِذُنُوبِهِمْ وَمَنْ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلاَّ اللهُ وَلَمْ يُصِرُّوا عَلَى مَا فَعَلُوا وَهُمْ يَعْلَمُونَ﴾ [آل عمران : ١٣٥].

6306. हमसे अबू मअ़मर ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल

٦٣٠٦– حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ، حَدَّثَنَا

عبدُالوارِثِ، حَدَّثَنَا الْحُسَيْنُ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ بُرَيْدَةَ، عَنْ بَشِيْرِ بْنِ كَعْبٍ الْعَدَوِيِّ، قَالَ: حَدَّثَنِي شَدَّادُ بْنُ أَوْسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((سَيِّدُ الاِسْتِغْفَارِ أَنْ تَقُولَ : اللَّهُمَّ أَنْتَ رَبِّي لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ خَلَقْتَنِي وَأَنَا عَبْدُكَ، وَأَنَا عَلَى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ، أَبُوءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ وَأَبُوءُ بِذَنْبِي فَاغْفِرْ لِي فَإِنَّهُ لاَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلاَّ أَنْتَ، قَالَ: وَمَنْ قَالَهَا مِنَ النَّهَارِ مُوقِنًا بِهَا فَمَاتَ مِنْ يَوْمِهِ، قَبْلَ أَنْ يُمْسِيَ فَهُوَ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ، وَمَنْ قَالَهَا مِنَ اللَّيْلِ وَهُوَ مُوقِنٌ بِهَا فَمَاتَ قَبْلَ أَنْ يُصْبِحَ فَهُوَ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ

वारिष़ बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे हुसैन बिन ज़क्वान मुअ़ल्लिम ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन बुरैदह ने बयान किया, उनसे बशीर बिन कअ़ब अ़दवी ने कहा कि मुझसे शद्दाद बिन औस (रज़ि.) ने बयान किया, और उनसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने कि सय्यिदुल इस्तिग़फ़ार (मग़्फ़िरत मांगने के सब कलिमात का सरदार) ये है कि यूँ कहे, ऐ अल्लाह! तू मेरा रब है, तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं। तूने ही मुझे पैदा किया और मैं तेरा ही बन्दा हूँ मैं अपनी त़ाक़त के मुत़ाबिक़ तुझसे किये हुए अ़हद और वादे पर क़ायम हूँ। उन बुरी ह़रकतों के अ़ज़ाब से जो मैंने की हैं तेरी पनाह मांगता हूँ, मुझ पर नेअ़मतें तेरी हैं इसका इक़रार करता हूँ। मेरी मग़्फ़िरत कर दे कि तेरे सिवा और कोई भी गुनाह मुआ़फ़ नहीं करता। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिसने इस दुआ़ के अल्फ़ाज़ पर यक़ीन रखते हुए दिल से इनको कह लिया और उसी दिन उसका इंतिक़ाल हो गया शाम होने से पहले तो वो जन्नती है और जिसने इस दुआ़ के अल्फ़ाज़ पर यक़ीन रखते हुए रात में इनको पढ़ लिया और फिर उसका सुबह होने से पहले इंतिक़ाल हो गया तो वो जन्नती है।

٣- باب اسْتِغْفَارِ النَّبِيِّ ﷺ فِي الْيَوْمِ وَاللَّيْلَةِ

बाब 3 : दिन और रात नबी करीम (ﷺ) का इस्तिग़फ़ार करना

तश्रीह : आँह़ज़रत (ﷺ) का ये इस्तिग़फ़ार और तौबा करना इज़्हारे अ़ब्दियत के लिये था या दुनिया की ता'लीम के लिये या बरत़रीक़े तवाज़ोअ़ या इसलिये कि आपकी तरक़्क़ी दरजात हर वक़्त होती रहती तो हर मर्तबा आ़ला पहुँचकर मर्तब-ए-औला से इस्तिग़फ़ार करते। सत्तर बार से मुराद ख़ास़ अ़दद है या बहुत होना। अ़रबों की आ़दत है जब कोई चीज़ बहुत बार की जाती है तो उसको सत्तर बार कहते हैं। इमाम मुस्लिम की रिवायत में सौ बार मज़्कूर है।

٦٣٠٧- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ قَالَ: قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((وَاللهِ إِنِّي لأَسْتَغْفِرُ اللهَ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ فِي الْيَوْمِ أَكْثَرَ مِنْ سَبْعِينَ مَرَّةً)).

6307. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने कहा कि मुझे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने ख़बर दी उन्होंने कहा कि ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह की क़सम! मैं दिन में सत्तर मर्तबा से ज़्यादा अल्लाह से इस्तिग़फ़ार और उससे तौबा करता हूँ।

٤- باب التَّوْبَةِ

बाब 4 : तौबा का बयान

हज़रत क़तादा ने कहा कि, तूबू इलल्लाहि तौबतन नसूहा सूरह तहरीम में नसूह से सच्ची और इख़्लास के साथ तौबा करना मुराद है।

قَالَ قَتَادَةُ : تُوبُوا إِلَى اللهِ تَوْبَةً نَصُوحًا : الصَّادِقَةُ النَّاصِحَةُ.

6308. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे अबू शिहाब ने, उनसे आ'मश ने, उनसे अम्मारा बिन उमैर ने, उनसे हारिस बिन सुवैद और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने दो अहादीस (बयान कीं) एक नबी करीम (ﷺ) से और दूसरी ख़ुद अपनी तरफ़ से कहा कि मोमिन अपने गुनाहों को ऐसा महसूस करता है जैसे वो किसी पहाड़ के नीचे बैठा है और डरता है कि कहीं वो उसके ऊपर न गिर जाए और बदकार अपने गुनाहों को मक्खी की तरह हल्का समझता है कि वो उसके नाक के पास से गुज़री और उसने अपने हाथ से यूँ उसकी तरफ़ इशारा किया। अबू शिहाब ने नाक पर अपने हाथ के इशारे से उसकी कैफ़ियत बताई फिर उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) की ये हदीस बयान की। अल्लाह तआला अपने बन्दे की तौबा से उस शख़्स से भी ज़्यादा ख़ुश होता है जिसने किसी ख़तरे से भरी जगह पर पड़ाव किया हो उसके साथ उसकी सवारी भी हो और उस पर खाने-पीने की चीज़ें मौजूद हों। वो सर रखकर सो गया हो और जब बेदार हो तो उसकी सवारी ग़ायब रही हो। आख़िर भूख व प्यास या जो कुछ अल्लाह ने चाहा उसे सख़्त लग जाए वो अपने दिल में सोचे कि मुझे अब घर वापस चला जाना चाहिये और जब वो वापस हुआ और फिर सो गया लेकिन उस नींद से जो सर उठाया तो उसकी सवारी वहाँ खाना-पीना लिये हुए सामने खड़ी है तो ख़्याल करो उसको किस क़दर ख़ुशी होगी। अबू शिहाब के साथ इस हदीस को अबू अवाना और जरीर ने भी इससे रिवायत किया। और शुअबा और अबू मुस्लिम (उबैदुल्लाह बिन सईद) ने इसको आ'मश से रिवायत किया, उन्होंने इब्राहीम तैमी से, उन्होंने हारिस बिन सुवैद से और अबू मुआविया ने यूँ कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, उन्होंने अम्मारा से उन्होंने अस्वद बिन यज़ीद से, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) से। और हमसे आ'मश ने बयान किया, उन्होंने इब्राहीम तैमी से, उन्होंने हारिस बिन सुवैद से, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) से।

٦٣٠٨- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا أَبُو شِهَابٍ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ عُمَارَةَ بْنِ عُمَيْرٍ، عَنِ الْحَارِثِ بْنِ سُوَيْدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْعُودٍ حَدِيثَيْنِ أَحَدُهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ وَالآخَرُ عَنْ نَفْسِهِ قَالَ: ((إِنَّ الْمُؤْمِنَ يَرَى ذُنُوبَهُ كَأَنَّهُ قَاعِدٌ تَحْتَ جَبَلٍ، يَخَافُ أَنْ يَقَعَ عَلَيْهِ، وَإِنَّ الْفَاجِرَ يَرَى ذُنُوبَهُ كَذُبَابٍ مَرَّ عَلَى أَنْفِهِ)) فَقَالَ: بِهِ هَكَذَا قَالَ أَبُو شِهَابٍ بِيَدِهِ فَوْقَ أَنْفِهِ ثُمَّ قَالَ : ((للهُ أَفْرَحُ بِتَوْبَةِ عَبْدِهِ مِنْ رَجُلٍ نَزَلَ مَنْزِلاً وَبِهِ مَهْلَكَةٌ، وَمَعَهُ رَاحِلَتُهُ عَلَيْهَا طَعَامُهُ وَشَرَابُهُ فَوَضَعَ رَأْسَهُ فَنَامَ نَوْمَةً فَاسْتَيْقَظَ وَقَدْ ذَهَبَتْ رَاحِلَتُهُ حَتَّى اشْتَدَّ عَلَيْهِ الْحَرُّ وَالْعَطَشُ، أَوْ مَا شَاءَ اللهُ، قَالَ: أَرْجِعُ إِلَى مَكَانِي فَرَجَعَ فَنَامَ نَوْمَةً ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ فَإِذَا رَاحِلَتُهُ عِنْدَهُ)). تَابَعَهُ أَبُو عَوَانَةَ وَجَرِيرٌ عَنِ الأَعْمَشِ، وَقَالَ أَبُو أُسَامَةَ: حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، حَدَّثَنَا عُمَارَةُ قَالَ: سَمِعْتُ الْحَارِثَ بْنَ سُوَيْدٍ وَقَالَ شُعْبَةُ : وَأَبُو مُسْلِمٍ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ التَّيْمِيِّ، عَنِ الْحَارِثِ بْنِ سُوَيْدٍ وَقَالَ أَبُو مُعَاوِيَةَ : حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ عُمَارَةَ، عَنِ الأَسْوَدِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ، وَعَنْ إِبْرَاهِيمَ التَّيْمِيِّ، عَنِ الْحَارِثِ بْنِ سُوَيْدٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ.

6309. हमसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमको हब्बान बिन बिलाल ने ख़बर दी, कहा हमसे हम्माम बिन यह्या ने बयान किया, कहा हमसे क़तादा ने बयान किया और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि हमसे हुदबा ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम ने बयान किया, कहा हमसे क़तादा ने बयान किया, उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया। अल्लाह तआला अपने बन्दे की तौबा से तुममें से उस शख़्स से भी ज़्यादा ख़ुश होता है जिसका ऊँट मायूसी के बाद अचानक उसे मिल गया हो हालाँकि वो एक चटियल मैदान में गुम हुआ था।

٦٣٠٩- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ، أَخْبَرَنَا حَبَّانُ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ح. وَحَدَّثَنَا هُدْبَةُ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((اللهُ أَفْرَحُ بِتَوْبَةِ عَبْدِهِ مِنْ أَحَدِكُمْ سَقَطَ عَلَى بَعِيرِهِ وَقَدْ أَضَلَّهُ فِي أَرْضِ فَلاَةٍ)).

मा'लूम हुआ कि तौबा करने से रहमते ख़ुदावन्दी के ख़ज़ानों के दहाने खुल जाते हैं तौबा करने वाले के सब गुनाहों को नेकियों से बदल दिया जाता है। ख़्वाह उसने जुआ खेलकर बुराइयाँ जमा की हों या शराब व कबाब में गुनाहों को इकट्ठा किया हो या चोरी की हो, बेईमानी, या ज़ुल्म व सितम या झूठ व फ़रेब में गुनाह किए हों वो सब तौबा करने से नेकियों में बदल जाएँगे और अल्लाह उस शख़्स से ख़ुश हो जाएगा।

बाब 5 : दाईं करवट पर लेटना

٥- باب الضَّجْعِ عَلَى الشِّقِّ الأَيْمَنِ

तश्रीह : इस बाब और हदीषे ज़ेल की मुनासबत कुछ ने ये बताई है कि फ़ज्र की सुन्नतें पढ़कर दाईं करवट पर लेट जाना भी मिष्ल एक ज़िक्र या दुआ के है जिसमें ष़वाब मिलता है यहाँ तक कि इमाम इब्ने हज़्म ने इसको वाजिब कहा है। हाफ़िज़ ने कहा इस बाब को लाकर इमाम बुख़ारी (रह.) ने उन दुआओं की तम्हीद की जो सोते वक़्त पढ़ी जाती हैं और जिनको आगे चलकर बयान किया है।

6310. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हिशाम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें उ़र्वा ने और उन्हें हज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) रात में (तहज्जुद की) ग्यारह रकआ़त पढ़ते थे फिर जब फ़ज्र तुलूअ़ हो जाती तो दो हल्की रकआ़त (सुन्नते फ़ज्र) पढ़ते। उसके बाद आप दाईं करवट पर लेट जाते आख़िर मुअज़्ज़िन आता और आँहज़रत (ﷺ) को ख़बर देता तो आप फ़ज्र की नमाज़ पढ़ाते। (राजेअ़ : 626)

٦٣١٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُصَلِّي مِنَ اللَّيْلِ إِحْدَى عَشْرَةَ رَكْعَةً، فَإِذَا طَلَعَ الْفَجْرُ صَلَّى رَكْعَتَيْنِ خَفِيفَتَيْنِ، ثُمَّ اضْطَجَعَ عَلَى شِقِّهِ الأَيْمَنِ حَتَّى يَجِيءَ الْمُؤَذِّنُ فَيُؤْذِنَهُ.[راجع: ٦٢٦]

तश्रीह : रात से बारह महीनों की रातें मुराद हैं रमज़ान की रातों में नमाज़े तरावीह भी तहज्जुद ही की नमाज़ है पस ष़ाबित हुआ कि आपने रमज़ान में नमाज़े तरावीह भी ग्यारह रकआ़त से ज़्यादा नहीं पढ़ी हैं पस तरजीह इसी को हासिल

है जो लोग आठ रकआत तरावीह को बिदअत कहते हैं वो सख़्ततरीन ग़लती में मुब्तला हैं कि सुन्नत को बिदअत कह रहे हैं तक़्लीदी ज़िद्द और तअस्सुब इतनी बुरी बीमारी है कि आदमी जिसकी वजह से बिलकुल अंधा हो जाता है **इल्ला मन हदाहुल्लाहु** फ़ज्र की सुन्नत पढ़कर थोड़ी देर के लिये दाईं करवट पर लेट जाना ही सुन्नते नबवी है कुछ लोग इस सुन्नत को भी बनज़रे तहक़ीर देखते हैं। अल्लाह उनको नेक फ़हम दे, आमीन।

बाब 6 : वुज़ू करके सोने की फ़ज़ीलत

٦- باب إِذَا بَاتَ طَاهِرًا

6311. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुअतमिर बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा कि मैंने मंसूर से सुना, उनसे सअद बिन उबैदह ने बयान किया कि मुझसे बरा बिन आज़िब (रज़ि.) ने बयान किया, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जब तू सोने लगे तो नमाज़ के वुज़ू की तरह वुज़ू कर फिर दाईं करवट लेट जा और ये दुआ पढ़, ऐ अल्लाह! मैंने अपने आपको तेरी इताअत में दे दिया। अपना सब कुछ तेरे सुपुर्द कर दिया। अपने मामलात तेरे हवाले कर दिए। डर की वजह से और तेरी (रहमत व षवाब की) उम्मीद में कोई पनाहगाह कोई मुख़्लिस़ तेरे सिवा नहीं मैं तेरी किताब पर ईमान लाया जो तू ने नाज़िल की है और तेरे नबी पर जो तूने भेजा है, उसके बाद अगर तुम मर गये तो फ़ित्तरते दीने इस्लाम पर मरोगे पस इन कलिमात को (रात की) सबसे आख़िरी बात बनाओ जिन्हें तुम अपनी ज़ुबान से अदा करो (हज़रत बराअ बिन आज़िब रज़ि. ने बयान किया कि) मैंने अर्ज़ की, व बिरसूलिकल्लज़ी अर्सल्ता कहने में क्या वजह है? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि नहीं वबि नबिय्यिकल्लज़ी अर्सल्ता कहो। (राजेअ : 247)

٦٣١١- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ: حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ، قَالَ: سَمِعْتُ مَنْصُورًا، عَنْ سَعْدِ بْنِ عُبَيْدَةَ حَدَّثَنِي الْبَرَاءُ بْنُ عَازِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِذَا أَتَيْتَ مَضْجَعَكَ فَتَوَضَّأْ وُضُوءَكَ لِلصَّلاَةِ ثُمَّ اضْطَجِعْ عَلَى شِقِّكَ الأَيْمَنِ، وَقُلْ: اللَّهُمَّ أَسْلَمْتُ نَفْسِي إِلَيْكَ، وَفَوَّضْتُ أَمْرِي إِلَيْكَ، وَأَلْجَأْتُ ظَهْرِي إِلَيْكَ، رَهْبَةً وَرَغْبَةً إِلَيْكَ، لاَ مَلْجَأَ وَلاَ مَنْجَى مِنْكَ إِلاَّ إِلَيْكَ، آمَنْتُ بِكِتَابِكَ الَّذِي أَنْزَلْتَ وَبِنَبِيِّكَ الَّذِي أَرْسَلْتَ، فَإِنْ مُتَّ مُتَّ عَلَى الْفِطْرَةِ، وَاجْعَلْهُنَّ آخِرَ مَا تَقُولُ؟)) فَقُلْتُ: أَسْتَذْكِرُهُنَّ وَبِرَسُولِكَ الَّذِي أَرْسَلْتَ قَالَ: ((لاَ، بِنَبِيِّكَ الَّذِي أَرْسَلْتَ)). [راجع: ٢٤٧]

तश्रीह : इससे षाबित हुआ कि अषर माषूर अदइया व अज़्कार में अज़्ख़ुद कमी व बेशी करना दुरुस्त नहीं है उनको हूबहू अस़ल के मुताबिक़ ही पढ़ना ज़रूरी है।

बाब 7 : सोते वक़्त क्या दुआ पढ़नी चाहिये

٧- باب مَا يَقُولُ إِذَا نَامَ

6312. हमसे क़बीस़ा बिन उक़्बा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान षौरी ने बयान किया, उनसे अब्दुल मलिक बिन उमेर ने, उनसे रिब्ई बिन हिराश ने और उनसे हज़रत हुज़ैफ़ह बिन यमान (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) जब अपने बिस्तर पर लेटते तो ये कहते, तेरे ही नाम के साथ मैं मुर्दा और ज़िन्दा रहता हूँ और जब बेदार होते तो कहते उसी अल्लाह

٦٣١٢- حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ، عَنْ رِبْعِيِّ بْنِ حِرَاشٍ، عَنْ حُذَيْفَةَ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا أَوَى إِلَى فِرَاشِهِ قَالَ: ((بِاسْمِكَ أَمُوتُ وَأَحْيَا)) وَإِذَا قَامَ، قَالَ: ((الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَحْيَانَا

بَعْدَ مَا أَمَاتَنَا وَإِلَيْهِ النُّشُورُ)). تُنْشِرُهَا: تُخْرِجُهَا.

[أطرافه في: ٦٣١٤، ٦٣٢٤، ٧٣٩٤].

के लिये तमाम ता'रीफ़ें हैं जिसने हमें ज़िन्दा किया। उसके बाद कि उसने मौत तारी कर दी थी और उसी की तरफ़ लौटना है। क़ुर्आन शरीफ़ में जो लफ़्ज़ नुन्शिज़ुहा है उसका भी यही है कि मैं उसको निकालकर उठाता हूं।(दीगर: 6314, 6324, 7394)

इस तरह इन्सानों को हर दफ़न की जगहों से क़यामत के दिन अल्लाह तआला उठाएगा।

٦٣١٣- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ الرَّبِيعِ، وَمُحَمَّدُ بْنُ عَرْعَرَةَ، قَالاَ : حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، سَمِعَ الْبَرَاءَ بْنَ عَازِبٍ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أَمَرَ رَجُلاً وَحَدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ الْهَمْدَانِيُّ، عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أَوْصَى رَجُلاً فَقَالَ: ((إِذَا أَرَدْتَ مَضْجَعَكَ فَقُلِ: اللَّهُمَّ أَسْلَمْتُ نَفْسِي إِلَيْكَ، وَفَوَّضْتُ أَمْرِي إِلَيْكَ، وَوَجَّهْتُ وَجْهِي إِلَيْكَ، وَأَلْجَأْتُ ظَهْرِي إِلَيْكَ، رَغْبَةً وَرَهْبَةً إِلَيْكَ، لاَ مَلْجَأَ وَلاَ مَنْجَا مِنْكَ إِلاَّ إِلَيْكَ، آمَنْتُ بِكِتَابِكَ الَّذِي أَنْزَلْتَ وَبِنَبِيِّكَ الَّذِي أَرْسَلْتَ، فَإِنْ مُتَّ، مُتَّ عَلَى الْفِطْرَةِ)). [راجع: ٢٤٧]

6313. हमसे सईद बिन रबीअ़ और मुहम्मद बिन अ़रअ़रा ने बयान किया, उन दोनों ने कहा कि हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया, उन्होंने हज़रत बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने एक सहाबी को हुक्म दिया (दूसरी सनद) हज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने कहा कि हमसे आदम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया उनसे अबू इस्हाक़ हम्दानी ने बयान किया, और उनसे हज़रत बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने एक सहाबी को वसिय्यत की और फ़र्माया कि जब बिस्तर पर जाने लगो तो ये दुआ पढ़ा करो। ऐ अल्लाह! मैंने अपनी जान तेरे सुपुर्द की और अपना मामला तुझे सौंपा और अपने आपको तेरी तरफ़ मुतवज्जह किया और तुझ पर भरोसा किया, तेरी तरफ़ रग़बत है तेरे डर की वजह से, तुझसे तेरे सिवा कोई जाए पनाह नहीं, मैं तेरी किताब पर ईमान लाया जो तू ने नाज़िल की और तेरे नबी पर जिन्हें तूने भेजा। फिर अगर वो मरा तो फ़ित़रत (इस्लाम) पर मरेगा। (राजेअ़: 147)

मुताबिक़ व मतालिब के लिहाज़ से ये दुआ भी बड़ी अहमियत रखती है तोते की रट से कुछ नतीजा न होगा।

٨- باب وَضْعِ الْيَدِ الْيُمْنَى تَحْتَ الْخَدِّ الأَيْمَنِ

बाब 8 : सोते में दायाँ हाथ दाएँ रुख़सार के नीचे रखना

٦٣١٤- حَدَّثَنِي مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ، عَنْ رِبْعِيٍّ، عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا أَخَذَ مَضْجَعَهُ مِنَ اللَّيْلِ وَضَعَ يَدَهُ تَحْتَ خَدِّهِ ثُمَّ يَقُولُ: ((اللَّهُمَّ بِاسْمِكَ أَمُوتُ وَأَحْيَا)) وَإِذَا اسْتَيْقَظَ

6314. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल मलिक बिन उ़मेर ने, उनसे रिब्ई ने और उनसे हज़रत हुज़ैफ़ह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) जब रात में बिस्तर पर लेटते तो अपना हाथ अपने रुख़सार के नीचे रखते और ये कहते, ऐ अल्लाह! तेरे नाम के साथ मरता हूँ और ज़िन्दा होता हूँ। और जब आप बेदार होते तो कहते। तमाम ता'रीफ़ें उस अल्लाह के लिये

قَالَ: ((الْحَمْدُ للهِ الَّذِي أَحْيَانَا بَعْدَ مَا أَمَاتَنَا وَإِلَيْهِ النُّشُورُ)).[راجع: ٦٣١٢]

हैं जिसने हमें ज़िन्दा किया उसके बाद कि हमें मौत (मुराद नींद है) दे दी थी और तेरी ही त़रफ़ लौटना है। (राजेअ : 6312)

तश्रीह : ह़ज़रत हुज़ैफ़ह बिन यमान (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) के ख़ास सह़ाबा में से हैं आपके राज़ व रमूज़ के अमीन थे। शहादत ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) के चालीस दिन बाद 35 हिजरी में मदाइन में फ़ौत हुए रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अरज़ाहू आमीन। कहते हैं, **अन्नौमु अखुल्मौत** और क़ुर्आन में भी तवफ़्फ़ा का लफ़्ज़ सोने के लिये आया है फ़र्माया, **व हुवल्लज़ी यमवफ़्फ़ाकुम बिल्लैलि यअ़लमु मा जरहतुम बिन्नहारि षुम्म यब्अ़षुकुम लियक़्ज़िय इला अजलिम्मुसम्मा – अल्आय:**

٩- باب النَّوْمِ عَلَى الشِّقِّ الأَيْمَنِ

बाब 9 : दाईं करवट पर सोना

٦٣١٥- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ بْنُ زِيَادٍ، حَدَّثَنَا الْعَلاَءُ بْنُ الْمُسَيَّبِ، قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ إِذَا أَوَى إِلَى فِرَاشِهِ نَامَ عَلَى شِقِّهِ الأَيْمَنِ ثُمَّ قَالَ: ((اللَّهُمَّ أَسْلَمْتُ نَفْسِي إِلَيْكَ، وَوَجَّهْتُ وَجْهِي إِلَيْكَ، وَفَوَّضْتُ أَمْرِي إِلَيْكَ، وَأَلْجَأْتُ ظَهْرِي إِلَيْكَ، رَغْبَةً ورهبةً إليك لاَ مَلْجَأَ وَلاَ مَنْجَا مِنْكَ إِلاَّ إِلَيْكَ، آمَنْتُ بِكِتَابِكَ الَّذِي أَنْزَلْتَ بِنَبِيِّكَ الَّذِي أَرْسَلْتَ)) وَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَنْ قَالَهُنَّ ثُمَّ مَاتَ تَحْتَ لَيْلَتِهِ مَاتَ عَلَى الْفِطْرَةِ)). اِسْتَرْهَبُوهُمْ مِنَ الرَّهْبَةِ، مَلَكُوتٌ: مُلْكٌ مَثَلُ رَهَبُوتٌ خَيْرٌ مِنْ رَحَمُوتٍ تَقُولُ: تَرْهَبُ خَيْرٌ مِنْ أَنْ تَرْحَمَ.

6315. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल वाह़िद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ला बिन मुसय्यब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे मेरे बाप ने बयान किया और उनसे ह़ज़रात बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब अपने बिस्तर पर लेटते तो दाईं पहलू पर लेटते और फिर कहते अल्लाहुम्म अस्लम्तु नफ़्सी इलैक व वज्जह्तु वज्हिया इलैक व फ़वज़्ज़तु अम्री इलैक, व अलजअतु ज़ह्री इलैक, रग़्बतन व रह्बतन इलैक, ला मल्जअन वला मन्जा मिन्का इल्ला इलैक, आमन्तु बिकिताबिकल्लज़ी अन्ज़ल्ता बि नबिय्यिकल्लज़ी अर्सल्ता। और रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिस शख़्स ने ये दुआ पढ़ी और फिर उस रात अगर उसकी वफ़ात हो गई तो उसकी वफ़ात फ़ित़रत पर होगी। क़ुर्आन मजीद में इस्तर्हबूहुम का लफ़्ज़ आया है ये भी रह्बा से निकाला है (रह्बत के मा'नी डर के हैं) मलकूत का मा'नी मुल्क या'नी सल्तनत जैसे कहते हैं कि रहबत रह़मत से बेहतर है या'नी डराना रह़म करने से बेहतर है।

चूँकि ह़दीषे हाज़ा में रहबत का लफ़्ज़ आया है ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने इसकी मुनासबत से लफ़्ज़ **इस्तरहबूहुम** (सूरह आ़राफ़) की भी तफ़्सीर कर दी उन जादूगरों ने जो ह़ज़रत मूसा के मुक़ाबले पर आए थे अपने जादू से सांप बनाकर लोगों को डराना चाहा **व जाऊ बिसिहरिन अ़ज़ीम।**

١٠- باب الدُّعَاءِ إِذَا انْتَبَهَ بِاللَّيْلِ

बाब 10 : अगर रात में आदमी की आँख खुल जाए तो क्या दुआ पढ़नी चाहिये

٦٣١٦- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا ابْنُ مَهْدِيٍّ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ سَلَمَةَ، عَنْ كُرَيْبٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: بِتُّ عِنْدَ مَيْمُونَةَ فَقَامَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَتَى حَاجَتَهُ غَسَلَ وَجْهَهُ وَيَدَيْهِ ثُمَّ نَامَ، ثُمَّ قَامَ فَأَتَى الْقِرْبَةَ فَأَطْلَقَ شِنَاقَهَا ثُمَّ تَوَضَّأَ وُضُوءًا بَيْنَ وُضُوءَيْنِ لَمْ يُكْثِرْ وَقَدْ أَبْلَغَ فَصَلَّى فَقُمْتُ فَتَمَطَّيْتُ كَرَاهِيَةَ أَنْ يَرَى أَنِّي كُنْتُ أَرْقُبُهُ فَتَوَضَّأْتُ فَقَامَ يُصَلِّي، فَقُمْتُ عَنْ يَسَارِهِ فَأَخَذَ بِأُذُنِي فَأَدَارَنِي عَنْ يَمِينِهِ، فَتَتَامَّتْ صَلاَتُهُ ثَلاَثَ عَشْرَةَ رَكْعَةً ثُمَّ اضْطَجَعَ، فَنَامَ حَتَّى نَفَخَ، وَكَانَ إِذَا نَامَ نَفَخَ فَآذَنَهُ بِلاَلٌ بِالصَّلاَةِ، فَصَلَّى وَلَمْ يَتَوَضَّأْ، وَكَانَ يَقُولُ فِي دُعَائِهِ: ((اللَّهُمَّ اجْعَلْ فِي قَلْبِي نُورًا، وَفِي بَصَرِي نُورًا، وَفِي سَمْعِي نُورًا، وَعَنْ يَمِينِي نُورًا، وَعَنْ يَسَارِي نُورًا، وَفَوْقِي نُورًا، وَتَحْتِي نُورًا. وَأَمَامِي نُورًا، وَخَلْفِي نُورًا، وَاجْعَلْ لِي نُورًا)) قَالَ كُرَيْبٌ : وَسَبْعٌ فِي التَّابُوتِ فَلَقِيتُ رَجُلاً مِنْ وَلَدِ الْعَبَّاسِ فَحَدَّثَنِي بِهِنَّ، فَذَكَرَ عَصَبِي وَلَحْمِي وَدَمِي وَشَعَرِي وَبَشَرِي وَذَكَرَ خَصْلَتَيْنِ.

[راجع: ١١٧]

6316. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रहमान इब्ने मह्दी ने, उनसे सुफ़यान ष़ौरी ने, उनसे सलमा बिन कुहैल ने, उनसे कुरैब ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि मैमूना (रज़ि.) के यहाँ एक रात सोया तो नबी करीम (ﷺ) उठे और आपने अपनी ह़वाइज ज़रूरत पूरी करने के बाद अपना चेहरा धोया, फिर दोनों हाथ धोये और फिर सो गये। उसके बाद आप खड़े हो गये और मशकीज़ के पास गये और आपने उसका मुँह खोला फिर दरम्याना वुज़ू किया (न मुबालग़ा के साथ न मा'मूली और हल्के क़िस्म का, तीन तीन मर्तबा से) कम धोया। अल्बत्ता पानी हर जगह पहुँचा दिया। फिर आपने नमाज़ पढ़ी। मैं भी खड़ा हुआ और आपके पीछे ही रहा क्योंकि मैं उसे पसंद नहीं करता था कि आँह़ज़रत (ﷺ) ये समझें कि मैं आपका इंतिज़ार कर रहा था। मैंने भी वुज़ू कर लिया था। आँहुज़ूर (ﷺ) जब खड़े होकर नमाज़ पढ़ने लगे तो मैं भी आपके बाईं त़रफ़ खड़ा हो गया। आपने मेरा कान पकड़कर दाईं त़रफ़ कर दिया। मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) (की इक़्तिदा में) तेरह रकअ़त नमाज़ मुकम्मल की। उसके बाद आप सो गये और आपकी सांस में आवाज़ पैदा होने लगी। आँह़ज़रत (ﷺ) जब सोते थे तो आपकी सांस में आवाज़ पैदा होने लगती थी। उसके बाद बिलाल (रज़ि.) ने आपको नमाज़ की ख़बर दी चुनाँचे आपने (नया वुज़ू) किये बग़ैर नमाज़ पढ़ी। आँह़ज़रत (ﷺ) अपनी दुआ में ये कहते थे, ऐ अल्लाह! मेरे दिल में नूर पैदा कर, मेरी नज़र में नूर पैदा कर, मेरे कान में नूर पैदा कर, मेरे दाईं त़रफ़ नूर पैदा कर, मेरे बाईं त़रफ़ नूर पैदा कर, मेरे ऊपर नूर पैदा कर, मेरे नीचे नूर पैदा कर, मेरे आगे नूर पैदा कर, मेरे पीछे नूर पैदा कर और मुझे नूर अ़ता कर। कुरैब (रावी ह़दीष़ ने बयान किया कि मेरे पास मज़ीद सात लफ़्ज़ मह़फ़ूज़ हैं फिर मैंने अ़ब्बास (रज़ि.) के एक स़ाह़बज़ादे से मुलाक़ात की तो उन्होंने मुझसे उनके बारे में बयान किया कि, मेरे पट्ठे, मेरा गोश्त, मेरा ख़ून, मेरे बाल और मेरा चमड़ा इन सब में नूर भर दे, और दो चीज़ों का और भी ज़िक्र किया। (राजेअ़ : 117)

तश्रीह : यही दुआ है जो सुन्नते फ़ज्र के बाद लेटने पर पढ़ी जाती है बड़ी ही बाबरकत दुआ है। अल्लाह पाक तमाम मुसलमानों को इस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़र्माए और हर एक के सीने में रोशनी इनायत फ़र्माए आमीन। (इस दुआ की सहीह महल ये है कि जब आदमी सुन्नते फ़ज्र पढ़ ले तो मस्जिद को जाते हुए रास्ते में ये दुआ पढ़े आजकल चूँकि सुन्नतें मसाजिद में अदा करने का आम रिवाज बन चुका है तो फिर सुन्नतों के बाद लेटकर जब उठ बैठे तो फिर इस दुआ को पढ़ें। लेटे-लेटे इस दुआ को पढ़ने के बारे में मुझे कोई रिवायत नहीं मिल सकी वल्लाहु आलम बिस्सवाब, अब्दुर्रशीद तौंसवी)

6317. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान बिन उयय्ना ने बयान किया, उन्होंने कहा मैंने सुलैमान बिन अबी मुस्लिम से सुना, उन्होंने ताउस से रिवायत किया और उन्होंने हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) जब रात में तहज्जुद के लिये खड़े होते तो ये दुआ करते। ऐ अल्लाह! तेरे ही लिये तमाम ता'रीफ़ें हैं तू आसमान और ज़मीन और इनमें मौजूद तमाम चीज़ों का नूर है, तेरे ही लिये तमाम ता'रीफ़ें हैं तू आसमान और ज़मीन और इनमें मौजूद तमाम चीज़ों का क़ायम रखने वाला है और तेरे ही लिये तमाम ता'रीफ़ें हैं, तू हक़ है, तेरा वा'दा हक़ है, तेरा क़ौल हक़ है, तुझसे मिलना हक़ है, जन्नत हक़ है, दोज़ख़ हक़ है, क़यामत हक़ है, अंबिया हक़ हैं और मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (ﷺ) हक़ हैं। ऐ अल्लाह! तेरे सुपुर्द किया, तुझ पर भरोसा किया, तुझ पर ईमान लाया, तेरी तरफ़ रुजूअ किया, दुश्मनों का मामला तेरे सुपुर्द किया, फ़ैसला तेरे सुपुर्द किया, पस मेरी अगली-पिछली ख़ताएँ माफ़ कर। वो भी जो मैंने छुपकर की हैं और वो भी खुलकर की हैं तू ही सबसे पहले है और तू ही सबसे बाद में है, सिर्फ़ तू ही मा'बूद है और तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं। (राजेअ : 1120)

٦٣١٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، قَالَ: سَمِعْتُ سُلَيْمَانَ بْنَ أَبِي مُسْلِمٍ، عَنْ طَاوُسٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا قَامَ مِنَ اللَّيْلِ يَتَهَجَّدُ قَالَ: ((اللَّهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ نُورُ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضِ، وَمَنْ فِيهِنَّ وَلَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ قَيِّمُ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضِ وَمَنْ فِيهِنَّ، وَلَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ الْحَقُّ وَوَعْدُكَ حَقٌّ، وَقَوْلُكَ حَقٌّ وَلِقَاؤُكَ حَقٌّ وَالْجَنَّةُ حَقٌّ وَالنَّارُ حَقٌّ، وَالسَّاعَةُ حَقٌّ وَالنَّبِيُّونَ حَقٌّ، وَمُحَمَّدٌ حَقٌّ، اللَّهُمَّ لَكَ أَسْلَمْتُ وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ، وَبِكَ آمَنْتُ وَإِلَيْكَ أَنَبْتُ وَبِكَ خَاصَمْتُ وَإِلَيْكَ حَاكَمْتُ، فَاغْفِرْ لِي مَا قَدَّمْتُ وَمَا أَخَّرْتُ وَمَا أَسْرَرْتُ وَمَا أَعْلَنْتُ، أَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَأَنْتَ الْمُؤَخِّرُ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ أَنْتَ أَوْ لاَ إِلَهَ غَيْرُكَ)). [راجع: ١١٢٠]

बाब 11 : सोते वक़्त तक्बीर व तस्बीह पढ़ना

١١- باب التَّكْبِيرِ وَالتَّسْبِيحِ عِنْدَ الْمَنَامِ

6318. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा बिन हज्जाज ने बयान किया, उनसे हकम बिन उयय्ना ने, उनसे इब्ने अबी लैला ने, उनसे अली (रज़ि.) ने कि फ़ातिमा अलैहस्सलाम ने चक्की पीसने की तकलीफ़ की

٦٣١٨- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنِ الْحَكَمِ، عَنِ ابْنِ أَبِي لَيْلَى، عَنْ عَلِيٍّ أَنَّ فَاطِمَةَ عَلَيْهَا السَّلاَمُ

شَكَتْ مَا تَلْقَى فِي يَدِهَا مِنَ الرَّحَى فَأَتَتِ النَّبِيَّ ﷺ تَسْأَلُهُ خَادِمًا فَلَمْ تَجِدْهُ فَذَكَرَتْ ذَلِكَ لِعَائِشَةَ فَلَمَّا جَاءَ أَخْبَرَتْهُ قَالَ: فَجَاءَنَا وَقَدْ أَخَذْنَا مَضَاجِعَنَا، فَذَهَبْتُ أَقُومُ فَقَالَ: ((مَكَانَكِ)) فَجَلَسَ بَيْنَنَا حَتَّى وَجَدْتُ بَرْدَ قَدَمَيْهِ عَلَى صَدْرِي، فَقَالَ : ((أَلاَ أَدُلُّكُمَا عَلَى مَا هُوَ خَيْرٌ لَكُمَا مِنْ خَادِمٍ؟ إِذَا أَوَيْتُمَا إِلَى فِرَاشِكُمَا أَوْ أَخَذْتُمَا مَضَاجِعَكُمَا فَكَبِّرَا ثَلاَثًا وَثَلاَثِينَ، وَسَبِّحَا ثَلاَثًا وَثَلاَثِينَ، وَاحْمَدَا ثَلاَثًا وَثَلاَثِينَ، فَهَذَا خَيْرٌ لَكُمَا مِنْ خَادِمٍ))، وَعَنْ شُعْبَةَ عَنْ خَالِدٍ عَنِ ابْنِ سِيرِينَ قَالَ التَّسْبِيحُ أَرْبَعٌ ثَلاَثُونَ. [راجع: ٣١١٣]

वजह से कि उनके मुबारक हाथ को स़दमा पहुँचता है तो नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में एक ख़ादिम मांगने के लिये हाज़िर हुई। आँहज़रत (ﷺ) घर में मौजूद नहीं थे। इसलिये उन्होंने ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) से ज़िक्र किया। जब आप तशरीफ़ लाए तो ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने आपसे इसका ज़िक्र किया। ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर आँहज़रत (ﷺ) हमारे यहाँ तशरीफ़ लाए हम उस वक़्त तक अपने बिस्तरों पर लेट चुके थे, मैं खड़ा होने लगा तो आपने फ़रमाया कि क्या मैं तुम दोनों को वो चीज़ें न बता दूँ जो तुम्हारे लिये ख़ादिम से भी बेहतर हो। जब तुम अपने बिस्तर पर जाने लगो तो तैंतीस मर्तबा अल्लाहु अकबर तैंतीस मर्तबा सुब्ह़ानल्लाह और तैंतीस मर्तबा अल्ह़म्दुलिल्लाह कहो, ये तुम्हारे लिये ख़ादिम से बेहतर है और शुअ़बा से रिवायत है उनसे ख़ालिद ने, उनसे इब्ने सीरीन ने बयान किया कि सुब्ह़ानल्लाह चौंतीस मर्तबा कहो।

(राजेअ़ : 3113)

तश्रीह़ : मुस्लिम की रिवायत में इतना ज़्यादा है कि आँहज़रत (ﷺ) ने अपनी शहज़ादी स़ाहिबा से पूछा मैंने सुना है कि तुम मुझसे मिलने को आई थी लेकिन मैं नहीं था कहो क्या काम है? उन्होंने अ़र्ज़ किया ह़ज़रत अब्बाजान मैंने सुना है कि आपके पास लौण्डी और गुलाम आए हैं। एक गुलाम या लौण्डी हमको भी दे दीजिए क्योंकि आटा पीसने या पानी लाने में मुझको सख़्त मशक़्क़त हो रही है, उस वक़्त आपने ये वज़ीफ़ा बतलाया। दूसरी रिवायत में यूँ है कि आपने फ़र्माया सुफ़्फ़ा वाले लोग भूखे हैं, उन गुलामों को बेचकर उनके खिलाने का इंतिज़ाम करूँगा।

١٢ - باب التَّعَوُّذِ وَالْقِرَاءَةِ عِنْدَ الْمَنَامِ

बाब 12 : सोते वक़्त शैत़ान से पनाह मांगना और तिलावते क़ुर्आन करना

٦٣١٩ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، قَالَ: حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، قَالَ أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ إِذَا أَخَذَ مَضْجَعَهُ نَفَثَ فِي يَدَيْهِ وَقَرَأَ بِالْمُعَوِّذَاتِ وَمَسَحَ بِهِمَا جَسَدَهُ. [راجع: ٥٠١٧]

6319. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे अ़क़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्हें उ़र्वा ने ख़बर दी और उन्हें उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) लेटते तो अपने हाथों पर फूँकते और मुअ़व्विज़ात पढ़ते और दोनों हाथ अपने जिस्म पर फेरते। (राजेअ़ : 5017)

٦٣٢٠ - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا

6320. हमसे अह़मद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे

ज़ुहैर ने बयान किया, कहा हमसे उबैदुल्लाह बिन उमर ने बयान किया, कहा मुझसे सईद बिन अबी सईद मक़्बरी ने बयान किया, उनसे उनके बाप ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जब तुममें से कोई शख़्स बिस्तर पर लेटे तो पहले अपना बिस्तर अपने इज़ार के किनारे से झाड़ ले क्योंकि वो नहीं जानता कि उसकी बेख़बरी में क्या चीज़ उस पर आ गई है। फिर ये दुआ पढ़े, मेरे पालने वाले! तेरे नाम से मैंने अपना पहलू रखा है और तेरे ही नाम से उठाऊँगा। अगर तूने मेरी जान को रोक लिया तो उस पर रहम करना और अगर छोड़ दिया (ज़िंदगी बाक़ी रखी) तू इसकी इस तरह हिफ़ाज़त करना जिस तरह तू सालेहीन की हिफ़ाज़त करता है। इसकी रिवायत अबू ज़म्रह और इस्माईल बिन ज़करिया ने उबैदुल्लाह के हवाले से की और यह्या बिन बिश्र ने बयान किया, उनसे उबैदुल्लाह ने, उनसे सईद ने, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने और इसकी रिवायत इमाम मालिक (रह.) और इब्ने अज्लान ने की है, उनसे सईद ने, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से इस तरह रिवायत की है। (दीगर : 7393)

زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنِي سَعِيدُ بْنُ أَبِي سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيُّ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِذَا أَوَى أَحَدُكُمْ إِلَى فِرَاشِهِ فَلْيَنْفُضْ فِرَاشَهُ بِدَاخِلَةِ إِزَارِهِ، فَإِنَّهُ لاَ يَدْرِي مَا خَلَفَهُ عَلَيْهِ، ثُمَّ يَقُولُ: بِاسْمِكَ، رَبِّي وَضَعْتُ جَنْبِي وَبِكَ أَرْفَعُهُ إِنْ أَمْسَكْتَ نَفْسِي فَارْحَمْهَا وَإِنْ أَرْسَلْتَهَا فَاحْفَظْهَا بِمَا تَحْفَظُ بِهِ الصَّالِحِينَ)). تَابَعَهُ أَبُو ضَمْرَةَ، وَإِسْمَاعِيلُ بْنُ زَكَرِيَّا، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ وَقَالَ يَحْيَى: وَبِشْرٌ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ، عَنْ سَعِيدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ، وَرَوَاهُ مَالِكٌ وَابْنُ عَجْلاَنَ عَنْ سَعِيدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. [طرفه في: ٧٣٩٣].

बाब 14 : आधी रात के बाद सुबह सादिक़ के पहले दुआ करने की फ़ज़ीलत

١٤- باب الدُّعَاءِ نِصْفَ اللَّيْلِ

तश्रीह : ये बड़ी फ़ज़ीलत का वक़्त है और मोमिन बन्दे की दुआ जो ख़ालिस निय्यत से इस वक़्त की जाए वो ज़रूर कुबूल होती है और तमाम सालेहीन और औलिया अल्लाह ने इस वक़्त को दुआ और मुनाजात के लिये इख़्तियार किया है और हर एक वली ने कुछ न कुछ क़यामे शब ज़रूर किया है और आँहज़रत (ﷺ) ने तो इस पर सारी उम्र मुवाज़िबत की है। तमाम अहले हदीष को लाज़िम है कि इस वक़्त ज़रूर क़याम करें और थोड़ी बहुत जो भी हो सके इबादत बजा लाएँ उसका इस्तिग़फ़ार भी बड़ी ताष़ीर रखता है ये कुबूलियते आम व ख़ास वक़्त होती है।

6321. हमसे अब्दुल अज़ीज़ ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अबू अब्दुल्लाह अल अग़र्रि और अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि हमारा रब तबारक व तआला हर रात आसमाने दुनिया की तरफ़ नुज़ूल करता है, उस वक़्त जब रात का आख़िरी तिहाई हिस्सा बाक़ी रह जाता है और फ़र्माता है कौन

٦٣٢١- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا مَالِكٌ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَبِي عَبْدِ اللهِ الأَغَرِّ، وَأَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((يَتَنَزَّلُ رَبُّنَا تَبَارَكَ وَتَعَالَى كُلَّ لَيْلَةٍ إِلَى سَمَاءِ الدُّنْيَا

है जो मुझसे दुआ करता है कि मैं उसकी दुआ कुबूल करूँ, कौन है जो मुझसे मांगता है कि मैं उसे दूँ, कौन है जो मुझसे बख़्शिश तलब करता है कि मैं उसकी बख़्शिश करूँ।
(राजेअ: 1145)

حِينَ يَبْقَى ثُلُثُ اللَّيْلِ الآخِرُ، يَقُولُ: مَنْ يَدْعُونِي فَأَسْتَجِيبَ لَهُ، مَنْ يَسْأَلُنِي فَأُعْطِيَهُ مَنْ يَسْتَغْفِرُنِي فَأَغْفِرَ لَهُ)).
[راجع: ١١٤٥]

तश्रीह : हदीष़ बाब में अल्लाह पाक रब्बुल आलमीन के आख़िर तिहाई हिस्सा रात में आसमाने दुनिया पर नुज़ूल का ज़िक्र है या'नी ख़ुद परवरदिगार अपनी ज़ात से नुज़ूल फ़र्माता है जैसा कि दूसरी रिवायत में ख़ुद ज़ात की सराहत मौजूद है अब कुछ लोगों की ये तावील कि उसकी रहमत उतरती है या फ़रिश्ते उतरते हैं ये महज़ तावील फ़ासिद है। और इमाम शैख़ुल इस्लाम हज़रत अल्लामा इब्ने तैमिया (रह.) और उनके शागिर्दे रशीद हज़रत अल्लामा इब्ने क़य्यिम (रह.) ने इस अक़ीदे पर बहुत तफ़्सील से लिखा है। अल्लामा इब्ने तैमिया की मुस्तक़िल किताबुन् नुज़ूल है उसमें आपने मुख़ालिफ़ीन के तमाम ए'तिराज़ात और शुब्हात का जवाब मुफ़स्सल दिया है। ख़ुलासा ये है कि नुज़ूल भी परवरदिगार की एक सिफ़त है जिसको हम और सिफ़ात की तरह अपने ज़ाहिरी मा'नी पर महमूल रखते हैं लेकिन इसकी कैफ़ियत हम नहीं जानते और ये नुज़ूल उसका मख़्लूक़ात की तरह नहीं है और ये अम्र उसके लिये क़त्अन महाल नहीं है कि वो बयक वक़्त अर्श पर भी हो और आसमाने दुनिया पर नुज़ूल भी फ़र्माए, **इन्नल्लाह अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर** ऐसे इस्तिलाहात पेश करने वालों की निगाहें कमज़ोर हैं। तर्जुमा बाब में आधी रात का ज़िक्र था और हदीष़ में आख़िर षुलुष़ लैल मज़्कूर है। इसका जवाब हाफ़िज़ साहब ने यूँ दिया है कि हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने अपनी आदत के मुवाफ़िक़ हदीष़ की दूसरे तरीक़ की तरफ़ इशारा किया है जिसको दारे कुत्नी ने निकाला उसमें षुलुष़ लैल मज़्कूर है और इब्ने बत्ताल ने कहा हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने कुर्आन की आयत को लिया जिसमें निस्फ़ का लफ़्ज़ है या'नी **क़ुमिल्लैल इल्ला कलीलन निस्फ़ु** और इसकी मुताबअ़त से बाब में निस्फ़ुल आयत का लफ़्ज़ ज़िक्र किया।

बाब 15 : बैतुलख़ला जाने के लिये कौनसी दुआ पढ़नी चाहिये

١٥ - باب الدُّعَاءِ عِنْدَ الْخَلاَءِ

6322. हमसे मुहम्मद बिन अरअरा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअबाने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन सुहैब ने बयान किया, और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) जब बैतुलख़ला जाते तो ये दुआ पढ़ते अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबिक मिनल् ख़ुबुषि़ वल ख़बाइषि़. ऐ अल्लाह! मैं ख़बीष़ जिन्नों और जिन्नियों की बुराई से तेरी पनाह माँगता हूँ। (राजेअ: 142)

٦٣٢٢ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَرْعَرَةَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ صُهَيْبٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا دَخَلَ الْخَلاَءَ قَالَ: ((اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَائِثِ)). [راجع: ١٤٢]

तश्रीह : मतलब ये है कि पाख़ाना के अंदर घुसने से पहले ये दुआ पढ़ ली जाए पाख़ाने के अंदर ज़िक्रे इलाही जाइज़ नहीं है। ख़ुबुष़ और ख़बाइष़ के अल्फ़ाज़ हर गंदे ख़्याल और गंदी हरकतों और गंदे जिन्नों, भूतों, भूतनियों को शामिल हैं। उस्तादुल हिन्द हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहद्दिष़ देहल्वी फ़र्माते हैं, **क़ौलुहू (ﷺ) इन्नल्हुशूश मुहतज़रतुन फइज़ा अता अहदुकुमुल्खलाअ लियकुल अऊज़ुबिल्लाहि मिनल्ख़ुबुषि़ वल्खबाइष़ व इज़ा खरज मिनल्खलाइ क़ाल गुफ़्रानक अकूलु यस्तह्बिबु अंय्यकूल इन्दुखूलि अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बिक अल्ख लिअन्नहुशूश मुहतज़रतुन यहज़ुरूहश्शयातीनु लिअन्नहुम युहिब्बूनन्नजासत मुहतजरतुन कमा अंय्यहज़ुरहल्जिन्नु वशयातीनु यर्सुदून बनी आदम बिल्अज़ा वल्फ़साद हुज्जतुल्लाहिल्बालिगा** (हुज्जतुल्लाह) ख़ुलासा ये कि बैतुल ख़ला में जिन्नात हाज़िर होते हैं जो इंसानों को तकलीफ़ पहुँचाना चाहते हैं इसलिये उन दुआओं का पढ़ना मुस्तहब क़रार दिया गया।

बाब 16 : सुबह के वक़्त क्या दुआ पढ़े

١٦ - باب مَا يَقُولُ إِذَا أَصْبَحَ

6323. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ ने बयान किया, कहा हमसे हुसैन ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन बुरैदा ने बयान किया, उनसे बशीर बिन कअ़ब ने और उनसे शद्दाद बिन औस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया सबसे उम्दह इस्तिग़फ़ार ये है, ऐ अल्लाह! तू मेरा पालने वाला है तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं तूने मुझे पैदा किया और मैं तेरा बन्दा हूँ और मैं तेरे अ़हद पर क़ायम हूँ और तेरे वा'दा पर। जहाँ तक मुझसे मुम्किन है। तेरी नेअमत का त़ालिब होकर तेरी पनाह में आता हूँ और अपने गुनाहों से तेरी पनाह चाहता हूँ, पस तू मेरी मग़्फ़िरत फ़र्मा क्योंकि तेरे सिवा गुनाह और कोई नहीं मुआ़फ़ करता। मैं तेरी पनाह मांगता हूँ अपने बुरे कामों से। अगर किसी ने रात होते ही ये कह लिया और उसी रात उसका इंतिक़ाल हो गया तो वो जन्नत में जाएगा। (या फ़र्माया कि) वो अहले जन्नत में होगा और अगर ये दुआ सुबह के वक़्त पढ़ी और उसी दिन उसकी वफ़ात हो गई तो भी ऐसा ही होगा। (राजेअ: 6306)

٦٣٢٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، حَدَّثَنَا حُسَيْنٌ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ بُرَيْدَةَ، عَنْ بُشَيْرِ بْنِ كَعْبٍ، عَنْ شَدَّادِ بْنِ أَوْسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((سَيِّدُ الاَسْتِغْفَارِ اللَّهُمَّ أَنْتَ رَبِّي لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ خَلَقْتَنِي، وَأَنَا عَبْدُكَ وَأَنَا عَلَى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ، أَبُوءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ وَأَبُوءُ لَكَ بِذَنْبِي، فَاغْفِرْ لِي فَإِنَّهُ لاَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلاَّ أَنْتَ، أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ إِذَا قَالَ حِينَ يُمْسِي فَمَاتَ دَخَلَ الْجَنَّةَ، أَوْ كَانَ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ وَإِذَا قَالَ حِينَ يُصْبِحُ فَمَاتَ مِنْ يَوْمِهِ مِثْلَهُ)).

[راجع: ٦٣٠٦]

6324. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़यैना ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल मलिक बिन उ़मैर ने, उनसे रिब्ई बिन ह़िराश ने और उनसे ह़ज़रत हुज़ैफ़ह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) जब सोने का इरादा करते तो कहते, तेरे नाम के साथ ऐ अल्लाह! मैं मरता और तेरे ही नाम से जीता हूँ, और जब बेदार होते तो ये दुआ पढ़ते। तमाम तअ़रीफ़ें उस अल्लाह के लिये हैं जिसने हमे मौत के बाद ज़िंदगी बख़्शी और उसी की त़रफ़ हमको लौटना है। (राजेअ: 6312)

٦٣٢٤- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ، عَنْ رِبْعِيِّ بْنِ حِرَاشٍ، عَنْ حُذَيْفَةَ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا أَرَادَ أَنْ يَنَامَ قَالَ: ((بِاسْمِكَ اللَّهُمَّ أَمُوتُ وَأَحْيَا))، وَإِذَا اسْتَيْقَظَ مِنْ مَنَامِهِ قَالَ: ((الْحَمْدُ للهِ الَّذِي أَحْيَانَا بَعْدَ مَا أَمَاتَنَا وَإِلَيْهِ النُّشُورُ)). [راجع: ٦٣١٢]

6325. हमसे अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे अबू ह़म्ज़ा मुहम्मद बिन मैमून ने, उनसे मंसूर बिन मअ़मर ने, उनसे रिब्ई बिन ह़िराश ने, उनसे ख़रशा बिन अल हुर्र ने और उनसे ह़ज़रत अबू ज़र्र ग़िफ़ारी (रह.) ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) रात में अपनी ख़्वाबगाह पर जाते तो कहते, ऐ अल्लाह! मैं तेरे ही नाम से मरता हूँ और तेरे ही नाम से ज़िंदा होता हूँ, और जब बेदार होते तो फ़र्माते, तमाम ता'रीफ़ें उस अल्लाह के लिये हैं जिसने हमें मौत के बाद ज़िंदगी बख़्शी और उसी की त़रफ़ हमको जाना है।

٦٣٢٥- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ، عَنْ أَبِي حَمْزَةَ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ رِبْعِيِّ بْنِ حِرَاشٍ، عَنْ خَرَشَةَ بْنِ الْحُرِّ، عَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا أَخَذَ مَضْجَعَهُ مِنَ اللَّيْلِ قَالَ: ((اللَّهُمَّ بِاسْمِكَ أَمُوتُ وَأَحْيَا))، فَإِذَا اسْتَيْقَظَ قَالَ ((الْحَمْدُ للهِ الَّذِي أَحْيَانَا بَعْدَ مَا أَمَاتَنَا وَإِلَيْهِ النُّشُورُ)).

(दीगर: 3795)

[طرفه في : ٣٧٩٥].

बाब 17 : नमाज़ में कौनसी दुआ पढ़े?

١٧- باب الدُّعَاءِ فِي الصَّلاَةِ

6326. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा हमको लैष़ बिन सअ़द ने ख़बर दी, कहा कि मुझसे यज़ीद बिन अबी ह़बीब ने बयान किया, उनसे अबुल ख़ैर मुर्ष़द बिन अ़ब्दुल्लाह ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स़ (रज़ि.) ने और उनसे ह़ज़रत अबूबक्र स़िद्दीक़ (रज़ि.) ने कि उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से कहा कि मुझे ऐसी दुआ सिखा दीजिये जिसे मैं अपनी नमाज़ में पढ़ा करूँ। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये कहा कर, ऐ अल्लाह! मैंने अपनी जान पर बहुत ज़ुल्म किया है और गुनाहों को तेरे सिवा और कोई मुआ़फ़ नहीं करता पस मेरी मग़्फ़िरत कर, ऐसी मग़्फ़िरत जो तेरे पास से हो और मुझ पर रहम कर बिला शुब्हा तू बड़ा मग़्फ़िरत करने वाला, बड़ा रह़म करने वाला है। और अ़म्र बिन ह़ारिष़ ने भी इस ह़दीष़ को यज़ीद से, उन्होंने अबुल ख़ैर से, उन्होंने ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़ि.) से सुना कि ह़ज़रत अबूबक्र स़िद्दीक़ (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से अ़र्ज़ किया आख़िर तक। (राजेअ़: 834)

٦٣٢٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ، حَدَّثَنِي يَزِيدُ، عَنْ أَبِي الْخَيْرِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو، عَنْ أَبِي بَكْرٍ الصِّدِّيقِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ لِلنَّبِيِّ ﷺ: عَلِّمْنِي دُعَاءً أَدْعُو بِهِ فِي صَلاَتِي قَالَ: ((قُلِ اللَّهُمَّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي ظُلْمًا كَثِيرًا، وَلاَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلاَّ أَنْتَ فَاغْفِرْ لِي مَغْفِرَةً مِنْ عِنْدِكَ، وَارْحَمْنِي إِنَّكَ أَنْتَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ)). وَقَالَ عَمْرٌو: عَنْ يَزِيدَ، عَنْ أَبِي الْخَيْرِ إِنَّهُ سَمِعَ عَبْدَ اللهِ بْنَ عَمْرٍو، قَالَ أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ لِلنَّبِيِّ ﷺ. [راجع: ٨٣٤]

तश्रीह : ह़ज़रत अ़म्र बिन ह़ारिष़ की रिवायत को ख़ुद ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने किताबुत तौह़ीद में वस़्ल किया है **क़ाल अब्तर्स फ़ी हदीष़ि अबी बक्र दलालतुन अ़ला रद्दि क़ौलिही मन ज़अ़म अन्नहू ला यस्तह़िक़्क़ु इस्मल्ईमानि इल्ला मल्ला खत़ीअ़त लहू इल्ला ज़म्बुन लिअन्नस़्स़िद्दीक़ मन अक्बरू अहलुल्ईमानि व कद अल्लमहुन्नबिय्यु (ﷺ) यक़ूलु इन्नी ज़लम्तु नफ़्सी ज़ुल्मन कष़ीरा अल्ख व क़ालल्किर्मानी हाज़हुआउ मिनल्जवामिइ ग़ायतिल्इन्आमि फ़ल्मग़्फ़िरतु सत्रूज़्ज़ुनूबि व नहवुहा वर्रहमतु ईसालुल्खैराति व फ़िष़ानी तलबु इदखालिल्जन्नति व हाज़ा हुवल्फ़ौज़ुल्अ़ज़ीम** (फ़तहुल्बारी) या'नी ह़ज़रत अबूबक्र वाली ह़दीष़ में उस शख़्स़ के क़ौल की तर्दीद है जो कहता है कि लफ़्ज़ ईमानदार उसी पर बोला जा सकता है मुत़्लक़न गुनाहों से पाक व स़ाफ़ हो ह़ालाँकि ह़ज़रत स़िद्दीक़े अकबर (रज़ि .) से बढ़कर कौन मोमिन होगा उसके वजूद आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनको ये दुआ सिखलाई जो यहाँ मज़्कूर है जिसमें अपने नफ़्स पर मज़ालिम या'नी गुनाहों का ज़िक्र है। किरमानी ने कहा कि इस दुआ में ग़ायत तक़्स़ीर के ए'तिराफ़ की ता'लीम है और ग़ायत इन्आ़म की त़लब है क्योंकि मग़्फ़िरत गुनाहों का छुपाना है और रह़मत से मुराद नेकियों का ईस़ाल है पस अव्वल में दोज़ख़ से बचना और दूसरी में जन्नत में दाख़िला और यही एक बड़ी मुराद है। अल्लाह हर मुसलमान की ये मुराद पूरी करे, आमीन।

6327. हमसे अ़ली ने बयान किया, कहा हमसे मालिक बिन सुऐर ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कि वला तज्हरु बिस़लातिका वला तुख़ाफ़ित बिहा दुआ के बारे में नाज़िल हुई (कि न बहुत ज़ोर ज़ोर से और न बिल्कुल

٦٣٢٧- حَدَّثَنَا عَلِيٌّ، حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ سُعَيْرٍ، حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ ﴿وَلاَ تَجْهَرْ بِصَلاَتِكَ وَلاَ تُخَافِتْ بِهَا﴾ أُنْزِلَتْ فِي الدُّعَاءِ.

आहिस्ता आहिस्ता) बल्कि दरम्यानी रास्ता इख़्तियार करो। (राजेअ : 4723)

[راجع: ٤٧٢٣]

तश्रीह : लफ़्ज़ आमीन भी दुआ है इसे सूरह फ़ातिहा के ख़त्म पर जहरी नमाज़ों में बुलंद आवाज़ से कहना सुन्नते नबवी है जिस पर तीनों इमामों का अमल है या'नी इमाम मालिक, इमाम शाफ़िई और इमाम अहमद बिन हंबल (रह.) मगर हनफ़िया इससे महरूम हैं **व ला तुखाफ़ित बिहा** पर उनको ग़ौर करके दरम्यानी रास्ता इख़्तियार करना चाहिये।

6328. हमसे उ़ष्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे जरीर बिन अ़ब्दुल हमीद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मंसूर बिन मुअतमिर ने बयान किया, उनसे अबू वाइल ने बयान किया और उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नमाज़ में ये कहा करते थे कि अल्लाह पर सलाम हो, फ़लाँ पर सलाम हो। फिर आँहज़रत (ﷺ) ने हमसे एक दिन फ़र्माया कि अल्लाह ख़ुद सलाम है इसलिये जब तुम नमाज़ मे बैठो तो ये पढ़ा करो। अत्तहिय्यातु लिल्लाहि इर्शाद अस्सालिहीन तक इसलिये कि जब तुम ये कहोगे तो आसमान और ज़मीन में मौजूद अल्लाह तआला के हर सालेह बन्दे को पहुँचेगा। अश्हदु अन् ला इलाहा इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्ना मुहम्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुह। इसके बाद षना में इख़्तियार है जो दुआ चाहो पढ़ो। (राजेअ : 831)

٦٣٢٨- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا نَقُولُ فِي الصَّلاَةِ السَّلاَمُ عَلَى اللهِ السَّلاَمُ عَلَى فُلاَنٍ فَقَالَ لَنَا النَّبِيُّ ﷺ ذَاتَ يَوْمٍ: ((إِنَّ اللهَ هُوَ السَّلاَمُ فَإِذَا قَعَدَ أَحَدُكُمْ فِي الصَّلاَةِ فَلْيَقُلْ : التَّحِيَّاتُ للهِ - إِلَى قَوْلِهِ - الصَّالِحِينَ فَإِذَا قَالَهَا أَصَابَ كُلَّ عَبْدٍ للهِ فِي السَّمَاءِ وَالأَرْضِ صَالِحٍ أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ ثُمَّ يَتَخَيَّرُ مِنَ الثَّنَاءِ مَا شَاءَ)).

[راجع: ٨٣١]

बाब 18 : नमाज़ के बाद दुआ करने का बयान

١٨- باب الدُّعَاءِ بَعْدَ الصَّلاَةِ

तश्रीह : हाफ़िज़ ने कहा कि ये बाब लाकर हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने इसका रद्द किया है जो कहता है कि नमाज़ के बाद दुआ करना मश्रूअ नहीं है और दलील देते हैं मुस्लिम की हदीष से कि आँहज़रत (ﷺ) नमाज़ की उस जगह न ठहरते मगर इतना कि **अल्लाहुम्म अन्तस्सलाम व मिन्कस्सलाम तबारकत या ज़ल्जलालि वल्इक्राम** कहने के मुवाफ़िक़ या'नी ये कहकर उठ जाते हालाँकि इस हदीष का मतलब ये था कि क़िब्ला रू होकर नमाज़ की सी हालत पर आप उतनी ही देर ठहरते लेकिन सहाबा की तरफ़ मुँह करके दुआ करने की नफ़ी इससे नहीं निकलती। शैख़ इब्ने क़य्यिम ने कहा नमाज़ से सलाम फेरने के बाद क़िब्ला ही की तरफ़ मुँह किये हुए दुआ करना किसी सहीह या हसन हदीष से षाबित नहीं है और न आँहज़रत (ﷺ) से ये मन्क़ूल है न ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन से। हाफ़िज़ ने कहा इब्ने क़य्यिम का ये क़ौल सहीह नहीं। आँहज़रत (ﷺ) ने मुआज़ (रज़ि.) से फ़र्माया कि तुम हर नमाज़ के बाद ये पढ़ते रहो, **अल्लाहुम्म अइन्नी अ़ला ज़िक्रिक व शुक्रिक व हुस्नि इबादतिक** तक। और अहमद और तिर्मिज़ी ने निकाला कि आँहज़रत (ﷺ) हर नमाज़ के बाद ये दुआ किया करते थे, **अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ुबिका मिनल कुफ़्रि वल फ़क़्रि व अ़ज़ाबिल क़ब्रि** और सअ़द और ज़ैद बिन अरक़म से भी इस बाब में रिवायतें हैं और तिर्मिज़ी ने अबू उमामा से रिवायत की कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया वो दुआ ज़्यादा मक़्बूल है जो रात को और फ़र्ज़ नमाज़ के बाद हो और तबरी ने हज़रत जा'फ़र सादिक़ (रज़ि.) से निकाला कि फ़र्ज़ नमाज़ के बाद दुआ अफ़ज़ल है इस दुआ से जो नफ़्ल नमाज़ के बाद हुआ उतनी जितनी फ़र्ज़ नमाज़ नफ़्ल से अफ़ज़ल है। मैं वहीदुज़्ज़माँ कहता हूँ कि इमाम इब्ने क़य्यिम का कलाम सहीह है और हाफ़िज़ साहब का ए'तिराज़ साक़ित है। इस वजह से कि इन अहादीष से फ़र्ज़ नमाज़ के बाद दुआ करने का जवाज़ निकलता है और वो मुम्किन है कि तशहहुद

के बाद हो या क़िब्ला की तरफ़ मुँह फेरकर दूसरी तरफ़ मुँह करे और इमाम इब्ने क़य्यिम ने जिसकी नफ़ी की है वो ये है कि क़िब्ला ही की तरफ़ मुँह किये रहे और दुआ करता रहे जैसे हमारे ज़माने के लोगों ने उमूमन ये आदत कर ली है कि हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद नमाज़ ही की तरह बैठे बैठे और क़िब्ला रुख़ किये लम्बी लम्बी दुआएँ करते रहते हैं उसकी अस्ल हदीष़ शरीफ़ से बिलकुल नहीं है और तअज्जुब तो उन जाहिलों पर होता है जो ऐसा करना लाज़िम और ज़रूरी जानते हैं और न करने वालों को ताना देते हैं अल्लाह उनको नेक समझ अता करे आमीन। **क़ाल इब्नु बत्ताल फ़ी हाजिहिल्अहादीषि अत्तग़ीबु अलज़्ज़िक्रि इदबारस्सलाति व अन्न ज़ालिक युवाज़ी इन्फ़ाक़ल्मालि फ़ी सबीलिल्लाहि कमाल हुव ज़ाहिरुन मिन जुम्लतिन तदरूकून बिही व सुइलल्इमामुल्औज़ाइ हलिस्सलातु अफ़्ज़लु अम तिलावतुल्क़ुर्आनि फक़ाल लैस शैउन यअदिलुल्क़ुर्आनु व लाकिन कान हदस्सलफ़ुज़्ज़िक्र व फ़ीहा अन्नज़्ज़िक्रल्मज़्कूर यलिस्सलातुल्मक्तूबः व ला युअख्खरू इला अंय्युल्लियरातिबः लिमा तक़द्दम वल्लाहु आलमु** (फ़त्हुल्बारी) इब्ने बत्ताल ने कहा कि इन अहादीष़ में हर नमाज़ के बाद ज़िक्रे अल्लाह की तर्ग़ीब है और ये अल्लाह की राह में माल ख़र्च करने के बराबर है जैसा कि जुम्ला तदरुकूना बिही अल्अख़ से ज़ाहिर है और इमाम औज़ाई से पूछा गया कि नमाज़ के बाद ज़िक्र अज़्कार बेहतर है या तिलावते क़ुर्आन शरीफ़? बोले तिलावते क़ुर्आन से बेहतर तो कोई अमल है ही नहीं मगर सलफ़ का तरीक़ा बाद नमाज़ ज़िक्र अज़्कार ही का था और जो ज़िक्र अज़्कार फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद ही है नफ़्ल और सुन्नतों के बाद नहीं जैसा कि इस हदीष़ में मज़्कूर हुआ है।

٦٣٢٩- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ، أَخْبَرَنَا يَزِيدُ، أَخْبَرَنَا وَرْقَاءُ، عَنْ سُمَيٍّ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ ذَهَبَ أَهْلُ الدُّثُورِ بِالدَّرَجَاتِ وَالنَّعِيمِ وَالْمُقِيمِ، قَالَ: ((كَيْفَ ذَاكَ؟)) قَالَ: صَلُّوا كَمَا صَلَّيْنَا وَجَاهَدُوا كَمَا جَاهَدْنَا وَأَنْفَقُوا مِنْ فُضُولِ أَمْوَالِهِمْ وَلَيْسَتْ لَنَا أَمْوَالٌ قَالَ: ((أَفَلاَ أُخْبِرُكُمْ بِأَمْرٍ تُدْرِكُونَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ وَتَسْبِقُونَ مَنْ جَاءَ بَعْدَكُمْ وَلاَ يَأْتِي أَحَدٌ بِمِثْلِ مَا جِئْتُمْ إِلاَّ مَنْ جَاءَ بِمِثْلِهِ، تُسَبِّحُونَ فِي دُبُرِ كُلِّ صَلاَةٍ عَشْرًا، وَتَحْمَدُونَ عَشْرًا، وَتُكَبِّرُونَ عَشْرًا)). تَابَعَهُ عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ، عَنْ سُمَيٍّ وَرَوَاهُ ابْنُ عَجْلاَنَ عَنْ سُمَيٍّ وَرَجَاءِ بْنِ حَيْوَةَ، وَرَوَاهُ جَرِيرٌ عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ رُفَيْعٍ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ، وَرَوَاهُ سُهَيْلٌ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ

6329. मुझसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमको ज़ैद बिन हारून ने ख़बर दी, कहा हमको वर्क़ाअ ने ख़बर दी, उन्हें सुमय ने, उन्हें अबू स़ालेह ने और उन्हें हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि स़हाबा किराम ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मालदार लोग बुलंद दरजात और हमेशा रहने वाली जन्नत की नेअमतों को हासिल कर ले गये। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये कैसे? स़हाबा किराम (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया जिस तरह हम नमाज़ पढ़ते हैं वो भी पढ़ते हैं और जिस तरह हम जिहाद करते हैं वो भी जिहाद करते हैं और उसके साथ वो अपना ज़ाइद माल भी (अल्लाह के रास्ते में) ख़र्च करते हैं और हमारे पास माल नहीं है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया फिर क्या मैं तुम्हें एक ऐसा अ़मल न बतलाऊँ जिससे तुम अपने आगे के लोगों के साथ हो जाओ और अपने पीछे आने वालों से आगे निकल जाओ और कोई शख़्स़ उतना ष़वाब न हासिल कर सके जितना तुमने किया हो, सिवा उस सूरत में जबकि वो भी वही अ़मल करे जो तुम करोगे (और वो अ़मल ये है) कि हर नमाज़ के बाद दस मर्तबा सुब्हानल्लाह पढ़ा करो, दस मर्तबा अल्हम्दुलिल्लाह पढ़ा करो और दस मर्तबा अल्लाहु अकबर पढ़ा करो। इसकी रिवायत उ़बैदुल्लाह बिन उ़मर ने सुमय और रजाइ बिन हैवह से की और इसकी रिवायत जरीर ने अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन रुफ़ैअ से की, उनसे अबू स़ालेह ने और उनसे हज़रत अबुद् दर्दा (रज़ि.) ने। और इसकी रिवायत सुहैल ने अपने वालिद से की, उनसे

हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने। (राजेअ : 843)

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.
[راجع: ٨٤٣]

6330. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन अ़ब्दुल ह़मीद ने बयान किया, उनसे मंसूर बिन मुअ़तमिर ने, उनसे मुसय्यब बिन राफ़ेअ़ ने, उनसे ह़ज़रत मुग़ीरह बिन शुअ़बा (रज़ि.) के मौला वारिद ने बयान किया कि ह़ज़रत मुग़ीरह (रज़ि.) ने ह़ज़रत मुआ़विया बिन अबी सुफ़यान (रज़ि.) को लिखा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) हर नमाज़ के बाद जब सलाम फेरते तो ये कहा करते थे कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं वो तन्हा है उसका कोई शरीक नहीं, मुल्क उसी के लिये है और उसी के लिये तमाम ता'रीफ़ें हैं और वो हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है। ऐ अल्लाह! जो कुछ तूने दिया है उसे कोई रोकने वाला नहीं और जो कुछ तूने रोक दिया उसे कोई देने वाला नहीं और किसी मालदार और नसीबावर (को तेरी बारगाह में) उसका माल नफ़ा नहीं पहुँचा सकता। और शुअ़बा ने बयान किया, उनसे मंसूर ने बयान किया कि मैंने ह़ज़रत मुसय्यब (रज़ि.) से सुना। (राजेअ़ : 844)

٦٣٣٠- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنِ الْمُسَيَّبِ بْنِ رَافِعٍ، عَنْ وَرَّادٍ مَوْلَى الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ قَالَ : كَتَبَ الْمُغِيرَةُ إِلَى مُعَاوِيَةَ بْنِ أَبِي سُفْيَانَ أَنَّ رَسُولَ اللّٰهِ ﷺ كَانَ يَقُولُ فِي دُبُرِ كُلِّ صَلاَةٍ إِذَا سَلَّمَ: ((لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللّٰهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، اللَّهُمَّ لاَ مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ، وَلاَ مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ، وَلاَ يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ)). وَقَالَ شُعْبَةُ: عَنْ مَنْصُورٍ قَالَ: سَمِعْتُ الْمُسَيَّبَ. [راجع: ٨٤٤]

तश्रीह : ह़ज़रत अमीर मुआ़विया बिन अबी सुफ़यान (रज़ि.) क़ुरैशी अम्वी हैं उनकी माँ हिन्द बिन्त उ़त्बा है फ़त्ह़े मक्का के दिन इस्लाम क़ुबूल किया। ह़ज़रत फ़ारूक़े आ'ज़म (रज़ि.) ने अपने अ़हदे ख़िलाफ़त में इनको शाम का गवर्नर बना दिया था। ख़िलाफ़त ह़ज़रत उ़ष्मान ग़नी (रज़ि.) में भी ये शाम के ह़ाकिम रहे। ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) के ज़माने में ये शाम के मुस्तक़िल ह़ाकिम बन गये और ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) के बाद ह़ज़रत ह़सन (रज़ि.) ने 41 हिजरी में अम्रे ख़िलाफ़त उनके सुपुर्द कर दिया। ये शाम के चालीस साल तक ह़ाकिम रहे। 80 बरस की उ़म्र में लक़वा की बीमारी में माहे रजब में वफ़ात पाई। बड़े ही दानिशमंद सियासतदान मर्द आहिनी थे। इनके दौरे ह़ुकूमत में इस्लाम को दूर-दराज़ तक फैलने के बहुत से मौक़े मिले।

बाब 19 : अल्लाह तआ़ला का सूरह तौबा में फ़र्माना

١٩- باب

और उनके लिये दुआ़ कीजिए। और जिसने अपने आपको छोड़कर अपने भाई के लिये दुआ़ की उसकी फ़ज़ीलत का बयान। और ह़ज़रत अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया ऐ अल्लाह! उ़बैद अबू आ़मिर की मग़्फ़िरत कर। ऐ अल्लाह! ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस के गुनाह मुआ़फ़ कर।

باب قَوْلِ اللّٰهِ تَعَالَى : ﴿وَصَلِّ عَلَيْهِمْ﴾ [التوبة : ١٠٣] وَمَنْ خَصَّ أَخَاهُ بِالدُّعَاءِ دُونَ نَفْسِهِ. وَقَالَ أَبُو مُوسَى: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِعُبَيْدٍ أَبِي عَامِرٍ اللَّهُمَّ اغْفِر لِعَبْدِ اللّٰهِ بْنِ قَيْسٍ ذَنْبَهُ)).

तश्रीह : अल्लाहुम्मग़्फ़िर लि उ़बैद एक ह़दीष़ का टुकड़ा है जो ग़ज़्वा-ए-औत़ास में मज़्कूर हो चुकी है। ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने ये बाब लाकर उस शख़्स का रद्द किया है जिसने इसको मकरूह जाना है या'नी आदमी दूसरे के लिये दुआ़ करे, अपने तईं छोड़ दे।

6331. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे मुस्लिम के मौला यज़ीद बिन अबी उ़बैद ने और उनसे सलमा बिन अक्वा (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ ख़ैबर गये (रास्ते में) मुसलमानों में से किसी शख़्स ने कहा आमिर! अपनी हुदा सुनाओ। वो हुदा पढ़ने लगे और कहने लगे। अल्लाह की क़सम! अगर अल्लाह न होता तो हम हिदायत न पाते, इसके अ़लावा दूसरे अश्आ़र भी उन्होंने पढ़े मुझे वो याद नहीं हैं। (ऊँट हुदा सुनकर तेज़ चलने लगे तो) रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये सवारियों को कौन हाँक रहा है, लोगों ने कहा कि आमिर बिन अक्वा हैं। आँहज़रत (ﷺ) फ़र्माया कि अल्लाह उस पर रहम करे। मुसलमानों में से एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! काश! अभी आप उनसे हमें और फ़ायदा उठाने देते। फिर जब सफ़बन्दी हुई तो मुसलमानों ने काफ़िरों से जंग की और हज़रत आमिर (रज़ि.) की तलवार छोटी थी जो ख़ुद उनके पैर पर लग गई और उनकी मौत हो गई। शाम हुई तो लोगों ने जगह जगह आग जलाई। आँहज़रत (ﷺ) ने दरयाफ़्त किया ये आग कैसी है, इसे क्यूँ जलाया गया है? सहाबा ने कहा कि पालतू गधों (का गोश्त पकाने) के लिये। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया जो कुछ हाँडियों में गोश्त है इसे फेंक दो और हाँडियों को तोड़ दो। एक सहाबी ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! इजाज़त हो तो ऐसा क्यूँ न कर लें कि हाँडियों में जो कुछ है उसे फेंक दें और हाँडियों को धो लें। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अच्छा यही कर लो। (राजेअ : 2477)

٦٣٣١- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي عُبَيْدٍ مَوْلَى سَلَمَةَ، حَدَّثَنَا سَلَمَةُ بْنُ الأَكْوَعِ قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ إِلَى خَيْبَرَ قَالَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ: أَيَا عَامِرُ لَوْ أَسْمَعْتَنَا مِنْ هُنَيْهَاتِكَ فَنَزَلَ يَحْدُو بِهِمْ يُذَكِّرُ (تَاللهِ لَوْ لاَ اللهُ مَا اهْتَدَيْنَا) وَذَكَرَ شِعْرًا، غَيْرَ هَذَا وَلَكِنِّي لَمْ أَحْفَظْهُ قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((مَنْ هَذَا السَّائِقُ؟)) قَالُوا: عَامِرُ بْنُ الأَكْوَعِ قَالَ: ((يَرْحَمُهُ اللهُ)) وَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ يَا رَسُولَ اللهِ لَوْ لاَ مَتَّعْتَنَا بِهِ فَلَمَّا صَافَّ الْقَوْمُ قَاتَلُوهُمْ فَأُصِيبَ عَامِرٌ بِقَائِمَةِ سَيْفِ نَفْسِهِ فَمَاتَ، فَلَمَّا أَمْسَوْا أَوْقَدُوا نَارًا كَثِيرَةً فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَا هَذِهِ النَّارُ عَلَى أَيِّ شَيْءٍ تُوقِدُونَ؟)) قَالُوا: عَلَى حُمُرٍ إِنْسِيَّةٍ فَقَالَ: ((أَهْرِيقُوا مَا فِيهَا وَكَسِّرُوهَا)). قَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللهِ أَلاَ نُهَرِيقُ مَا فِيهَا وَنَغْسِلُهَا قَالَ: ((أَوْ ذَاكَ)).

[راجع: ٢٤٧٧]

तश्रीह : हज़रत आमिर बिन अक्वइ (रज़ि.) के लिये आँहज़रत (ﷺ) ने लफ़्ज़ यरहमुल्लाह कहकर दुआ फ़र्माई है यही बाब से मुताबक़त है। हज़रत उ़मर (रज़ि.) इस दुआ से समझ गये कि हज़रत आमिर बिन अक्वा की शहादत यक़ीनी है। इसीलिये उन्होंने लफ़्ज़े मज़्कूरा ज़ुबान से निकाले आख़िर ख़ुद उन ही की तलवार से उनकी शहादत हो गई वो यक़ीनन शहीद हो गये। ये हदीष मुफ़स्सल पहले भी गुज़र चुकी है लोगों ने ख़ुदकुशी का ग़लत गुमान किया था बाद में आँहज़रत (ﷺ) ने इस गुमान की तग़्लीत फ़र्माकर हज़रत आमिर (रज़ि.) की शहादत का इज़्हार फ़र्माया। रावी हदीष हज़रत सलमा बिन अक्वा की कुन्नियत अबू मुस्लिम है और शजरह के नीचे बेअ़त करने वालों में से हैं। बहुत बड़े दिलावर बहादुर थे। मदीना में 74 हिजरी में फ़ौत हुए।

6332. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा

٦٣٣٢- حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ، قَالَ: حَدَّثَنَا

हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन मुर्रह ने, कहा मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में अगर कोई शख़्स सदक़ा लाता तो आँहज़रत (ﷺ) फ़र्माते कि ऐ अल्लाह! फ़लाँ की आल औलाद पर अपनी रहमतें नाज़िल फ़र्मा। मेरे वालिद सदक़ा लाए तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ऐ अल्लाह! अबी औफ़ा की आले औलाद पर रहमतें नाज़िल फ़र्मा। (राजेअ़ : 1497)

شُعْبَةُ، عَنْ عَمْرٍو، قَالَ : سَمِعْتُ ابْنَ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا أَتَاهُ رَجُلٌ بِصَدَقَةٍ قَالَ: ((اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى آلِ فُلاَنٍ)) فَأَتَاهُ أَبِي فَقَالَ: ((اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى آلِ أَبِي أَوْفَى)).

[راجع: ١٤٩٧]

6333. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने, उनसे क़ैस ने कि मैंने जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह बजली से सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कोई ऐसा मर्दे मुजाहिद है जो मुझको ज़िल ख़ल्सा बुत से आराम पहुँचाए वो एक बुत था जिसको जाहिलियत में लोग पूजा करते थे और उसको का'बा कहा करते थे। मैंने कहा या रसूलल्लाह! इस ख़िदमत के लिये मैं तैयार हूँ लेकिन मैं घोड़े पर ठीक जमकर बैठ नहीं सकता हूँ। आपने मेरे सीने पर हाथ मुबारक फेरकर दुआ की कि ऐ अल्लाह! इसे षाबितक़दमी अ़ता फ़र्मा और इसको हिदायत करने वाला और नूरे हिदायत पाने वाला बना। जरीर ने कहा कि फिर मैं अपनी क़ौम अहमस के पचास आदमी लेकर निकला और अबी सुफ़यान ने यूँ नक़ल किया कि मैं अपनी क़ौम की एक जमाअ़त लेकर निकला और मैं वहाँ गया और उसे जला दिया फिर मैं नबी करीम (ﷺ) के पास आया और मैंने कहा ऐ अल्लाह के रसूल! अल्लाह की क़सम मैं आपके पास नहीं आया जब तक मैंने इसे जले हुए ख़ारिशज़दा ऊँट की तरह स्याह न कर दिया। पस आपने क़बीला अहमस और उसके घोड़ों के लिये दुआ फ़र्माई। (राजेअ़ : 3020)

٦٣٣٣- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ، عَنْ قَيْسٍ، قَالَ: سَمِعْتُ جَرِيرًا قَالَ: قَالَ لِي رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَلاَ تُرِيحُنِي مِنْ ذِي الْخَلَصَةِ؟)) وَهُوَ نُصُبٌ كَانُوا يَعْبُدُونَهُ يُسَمَّى : الْكَعْبَةُ الْيَمَانِيَةُ، قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنِّي رَجُلٌ لاَ أَثْبُتُ عَلَى الْخَيْلِ فَصَكَّ فِي صَدْرِي وَقَالَ: ((اللَّهُمَّ ثَبِّتْهُ وَاجْعَلْهُ هَادِيًا مَهْدِيًّا)) قَالَ: فَخَرَجْتُ فِي خَمْسِينَ مِنْ أَحْمَسَ مِنْ قَوْمِي وَرُبَّمَا قَالَ سُفْيَانُ: فَانْطَلَقْتُ فِي عُصْبَةٍ مِنْ قَوْمِي فَأَتَيْتُهَا فَأَحْرَقْتُهَا، ثُمَّ أَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ: وَاللهِ مَا أَتَيْتُكَ حَتَّى تَرَكْتُهَا مِثْلَ الْجَمَلِ الأَجْرَبِ فَدَعَا لأَحْمَسَ وَخَيْلِهَا.[راجع: ٣٠٢٠]

6334. हमसे सईद बिन रबीअ़ ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने कहा कि मैंने हज़रत अनस (रज़ि.) से सुना, कहा कि उम्मे सुलैम (रज़ि.) ने रसूले करीम (ﷺ) से कहा कि अनस आपका ख़ादिम है उसके हक़ में दुआ फ़र्माइये। आँहज़रत (ﷺ) ने दुआ फ़र्माई या अल्लाह! उसके माल व औलाद को ज़्यादा कर और जो कुछ तूने उसे

٦٣٣٤- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ الرَّبِيعِ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ قَالَ : سَمِعْتُ أَنَسًا قَالَ قَالَتْ أُمُّ سُلَيْمٍ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَسٌ خَادِمُكَ قَالَ ((اللَّهُمَّ أَكْثِرْ مَالَهُ وَوَلَدَهُ، وَبَارِكْ لَهُ فِيمَا أَعْطَيْتَهُ)).

दिया है, उसमें उसे बरकत अता फ़र्माइयो। (राजेअ : 1982)

[راجع: ۱۹۸۲]

6335. हमसे उ़स्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दह बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने एक स़ह़ाबी को मस्जिद में क़ुर्आन पढ़ते सुना तो फ़र्माया, अल्लाह इस पर रह़म करे इसने मुझे फ़लाँ फ़लाँ आयतें याद दिला दीं जो मैं फ़लाँ फ़लाँ सूरतों से भूल गया था। (राजेअ : 2655)

٦٣٣٥- حدَّثنا عُثمانُ بنُ أبي شيبةَ، حدَّثنا عَبْدَةُ، عَنْ هِشامٍ، عَنْ أبيهِ، عَنْ عائشةَ رَضيَ اللهُ عَنها قالَتْ: سَمِعَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلاً يَقرأُ في المَسْجِدِ فَقالَ: ((رَحِمَهُ اللهُ لَقَدْ أَذْكَرَني كَذا وَكَذا آيَةً أَسقَطْتُها في سُورَةِ كَذا وكَذا))

[راجع: ٢٦٥٥].

6336. हमसे ह़फ़्स़ बिन उ़मर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा बिन ह़ज्जाज ने, कहा मुझको सुलैमान बिन मह्रान ने ख़बर दी, उन्हें अबू वाइल ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने कोई चीज़ तक़्सीम फ़र्माई तो एक शख़्स़ बोला कि ये ऐसी तक़्सीम है कि इससे अल्लाह की रज़ा मक़्सूद नहीं है। मैंने नबी करीम (ﷺ) को इसकी ख़बर दी तो आप उस पर ग़ुस्सा हुए और मैंने ख़फ़्गी के आष़ार आपके चेहरा-ए-मुबारक पर देखे और आपने फ़र्माया कि अल्लाह मूसा (अ़लैहिस्सलाम) पर रह़म फ़र्माए, उन्हें उससे भी ज़्यादा तकलीफ़ दी गई लेकिन उन्होंने स़ब्र किया। (राजेअ : 3150)

٦٣٣٦- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، أَخْبَرَنِي سُلَيْمَانُ عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: قَسَمَ النَّبِيُّ ﷺ قَسْمًا فَقَالَ رَجُلٌ : إِنَّ هَذِهِ لَقِسْمَةٌ مَا أُرِيدَ بِهَا وَجْهُ اللهِ فَأَخْبَرْتُ النَّبِيَّ ﷺ فَغَضِبَ حَتَّى رَأَيْتُ الْغَضَبَ فِي وَجْهِهِ وَقَالَ: ((يَرْحَمُ اللهُ مُوسَى لَقَدْ أُوذِيَ بِأَكْثَرَ مِنْ هَذَا فَصَبَرَ)). [راجع: ٣١٥٠]

मैं भी ऐसे बेजा इल्तिज़ामात पर स़ब्र करूँगा। ये ए'तिराज़ करने वाला मुनाफ़िक़ था और ए'तिराज़ भी बिलकुल बात़िल था। आँह़ज़रत (ﷺ) मस़ालेहे मिल्ली को सबसे ज़्यादा समझने वाले और मुस्तह़िक़्क़ीन को सबसे ज़्यादा जानने वाले थे। फिर आपकी तक़्सीम पर ए'तिराज़ करना किसी मोमिन मुसलमान का काम नहीं हो सकता। सिवाय उस शख़्स़ के जिसका दिल नूरे ईमान से मह़रूम हो। तमाम अह़कामे इस्लाम के लिये यही क़ानून है।

बाब 20 : दुआ में सजअ़ या'नी क़ाफ़िये लगाना मकरूह है

٢٠- باب مَا يُكْرَهُ مِنَ السَّجْعِ فِي الدُّعَاءِ

(क़ालल्अज़्हरी हुवल्कलामुल्मुक़फ़्फ़ा मिन ग़ैर मुराअ़ति वज़्निन) अज़्हरी ने कहा कि कलामे मुक़्फ़ा वो है जिसमें महज़ क़ाफ़िया बन्दी हो वज़न की रिआ़यत मद्देनज़र न हो।

6337. हमसे यह़्या बिन मुह़म्मद बिन सकन ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ह़ब्बान बिन हिलाल अबू ह़बीब ने बयान किया, कहा हमसे हारून मुक़्री ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुबैर बिन ख़र्रेति ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने और उनसे

٦٣٣٧- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ السَّكَنِ، حَدَّثَنَا حَبَّانُ بْنُ هِلاَلٍ أَبُو حَبِيبٍ، حَدَّثَنَا هَارُونُ الْمُقْرِىءُ، حَدَّثَنَا

ह... [damaged] ...ास (रज़ि.) ने कहा कि लोगों को वो... हफ़्ता में ... एक दिन जुम्आ को किया कर, अगर तुम इस पर तैयार न हो तो दो मर्तबा अगर तुम ज़्यादा ही करना चाहते हो तो बस तीन दिन और लोगों को इस क़ुर्आन से उकता न देना, ऐसा न हो कि तुम कुछ लोगो के पास पहुँचो, वो अपनी बातों में मसरूफ़ हों और तुम पहुँचते ही उनसे अपनी बात (बशक्ले वा'ज़) बयान करने लगो और उनकी आपस की बातचीत को काट दो कि इस तरह वो उकता जाएँ, बल्कि (ऐसे मुक़ाम पर) तुम्हें ख़ामोश रहना चाहिये। जब वो तुमसे कहें तो फिर तुम उन्हें अपनी बातें सुनाओ। इस तरह कि वो भी इस तक़रीर के ख़्वाहिशमंद हों और दुआ में क़ाफ़ियाबन्दी से परहेज़ करते रहना, क्योंकि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) और आपके सहाबा को देखा है कि वो हमेशा ऐसा ही करते थे।

الزُّبَيْرُ بْنُ الْخِرِّيتِ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: حَدِّثِ النَّاسَ كُلَّ جُمُعَةٍ مَرَّةً فَإِنْ أَبَيْتَ فَمَرَّتَيْنِ، فَإِنْ أَكْثَرْتَ فَثَلاَثَ مِرَارٍ، وَلاَ تُمِلَّ النَّاسَ هَذَا الْقُرْآنَ وَلاَ أُلْفِيَنَّكَ تَأْتِي الْقَوْمَ، وَهُمْ فِي حَدِيثٍ مِنْ حَدِيثِهِمْ، فَتَقُصُّ عَلَيْهِمْ فَتَقْطَعُ عَلَيْهِمْ حَدِيثَهُمْ فَتُمِلُّهُمْ، وَلَكِنْ أَنْصِتْ فَإِذَا أَمَرُوكَ فَحَدِّثْهُمْ وَهُمْ يَشْتَهُونَهُ فَانْظُرِ السَّجْعَ مِنَ الدُّعَاءِ، فَاجْتَنِبْهُ فَإِنِّي عَهِدْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ وَأَصْحَابَهُ لاَ يَفْعَلُونَ إِلاَّ ذَلِكَ يَعْنِي لاَ يَفْعَلُونَ إِلاَّ ذَلِكَ الاجْتِنَابَ.

तश्रीह: या'नी हमेशा इससे परहेज़ करते थे। सहाबा किराम (रज़ि.) और रसूलुल्लाह (ﷺ) सीधी सादी दुआ किया करते बिला तकल्लुफ़ और मुख़्तसर। दूसरी हदीष़ में है कि मेरे बाद कुछ ऐसे लोग पैदा होंगे जो दुआ और तहारत में मुबालग़ा करेंगे, हद से बढ़ जाएँगे। मोमिन को चाहिये कि सुन्नत की पैरवी करे और मुक़फ़्फ़ा और मुसज्जअ दुआओं से जो पिछले लोगों ने निकाली हैं परहेज़ रखे। जो दुआएँ आँहज़रत (ﷺ) से बसनदे सहीह मन्क़ूल हैं वो दुनिया और आख़िरत के तमाम मक़ासिद के लिये काफ़ी हैं अब जो कुछ दुआएँ माषूर मसज्जअ हैं जैसे **अल्लाहुम्म मन्ज़िलुल्किताबि मजरस्सहाबि हाज़िमुल्अहज़ाबि (या) सदक़ल्लाहु वअदहू व अअज़्ज़ जुन्दहू नसर अब्दहू व हज़मल्अहज़ाब वहदुहू (या) अऊ़ज़ु बिक मिन ऐनिन ला तदमउ व मिन नफ़्सिन ला तश्बउ व मिन क़ल्बिन ला यख़्शउ** वो मुस्तष्ना होंगी क्योंकि ये बिला क़स्द आँहज़रत (ﷺ) की ज़ुबाने मुबारक से निकली हैं अगर बिला क़स्द सज्अ हो जाए तो क़बाहत नहीं है। जान-बूझकर तकल्लुफ़न ऐसा करना मना है क्योंकि उसमें रिया नमूद भी मुम्किन है जो शिर्के ख़फ़ी है इल्ला माशा अल्लाह।

बाब 21 : अल्लाह पाक से अपना मक़्सद क़त्ई तौर से मांगे इसलिये कि अल्लाह पर कोई जबर करने वाला नहीं है

٢١- باب لِيَعْزِمِ الْمَسْأَلَةَ، فَإِنَّهُ لاَ مُسْتَكْرِهَ لَهُ.

6338. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन अलिया ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल अज़ीज़ बिन सुहैब ने ख़बर दी, उनसे हज़रत्त अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जब तुममें से कोई दुआ करे तो अल्लाह से क़त्इ तौर पर मांगे और ये न कहे कि ऐ अल्लाह! अगर तू चाहे तो मुझे अता फ़र्मा क्योंकि अल्लाह पर कोई ज़बरदस्ती करने वाला नहीं है। (दीगर मक़ामात : 7477)

٦٣٣٨- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ، عَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِذَا دَعَا أَحَدُكُمْ فَلْيَعْزِمِ الْمَسْأَلَةَ، وَلاَ يَقُولَنَّ: اللَّهُمَّ إِنْ شِئْتَ فَأَعْطِنِي فَإِنَّهُ لاَ مُسْتَكْرِهَ لَهُ)). [طرفه في: ٧٤٧٧].

6339. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, उनसे

٦٣٣٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ،

इमाम मालिक ने, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अअ़रज ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया तुममें से कोई शख़्स इस त़रह न कहे कि, या अल्लाह! अगर तू चाहे तो मुझे मुआ़फ़ कर दे, मेरी मग़्फ़िरत कर दे। बल्कि यक़ीन के साथ दुआ़ करे क्योंकि अल्लाह पर कोई ज़बरदस्ती करने वाला नहीं है। (दीगर : 7477)

عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لاَ يَقُولَنَّ أَحَدُكُمْ : اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي اللَّهُمَّ ارْحَمْنِي إِنْ شِئْتَ، لِيَعْزِمِ الْمَسْأَلَةَ فَإِنَّهُ لاَ مُكْرِهَ لَهُ)).

[طرفه في: ٧٤٧٧].

बाब 22 : जब तक बन्दा जल्दबाज़ी न करे तो उसकी दुआ़ क़ुबूल की जाती है

٢٢- باب يُسْتَجَابُ لِلْعَبْدِ مَا لَمْ يَعْجَلْ

6340. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें अ़ब्दुर्रह़मान बिन अज़्हर के ग़ुलाम अबू उ़बैद ने और उन्हें ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया बन्दे की दुआ़ क़ुबूल होती है जब तक कि वो जल्दी न करे कि कहने लगे कि मैंने दुआ़ की थी और मेरी दुआ़ क़ुबूल नहीं हुई।

٦٣٤٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَالِكٌ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَبِي عُبَيْدٍ مَوْلَى ابْنِ أَزْهَرَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((يُسْتَجَابُ لأَحَدِكُمْ مَا لَمْ يَعْجَلْ يَقُولُ: دَعَوْتُ فَلَمْ يُسْتَجَبْ لِي)).

तश्रीह़ : क़ुबूलियते दुआ़ के लिये जल्दबाज़ी करना स़ह़ीह़ नहीं है। दुआ़ अगर ख़ुलूसे क़ल्ब के साथ है और शराइत़ व आदाबे दुआ़ को मल्ह़ूज़े ख़ातिर रखा गया है तो वो जल्द या देर-सवेर ज़रूर क़ुबूल होगी। बज़ाहिर क़ुबूल न भी हो तो वो ज़ख़ीरा-ए-आख़िरत बनेगी। ह़दीष़ **युस्तजाबु लिअहदिकुम मा लम यअ़जल** का यही मत़लब है कि दुआ़ में मशग़ूल रहो थक हारकर दुआ़ का सिलसिला न काट दो नाउम्मीदी को पास न आने दो और दुआ़ बराबर करते रहो। राक़िमुल ह़ुरूफ़ (लेखक) की ज़िंदगी में ऐसे बहुत से मौक़े आए कि हर त़रफ़ से नाउम्मीदियों ने घेर लिया मगर दुआ़ का सिलसिला जारी रखा। आख़िर अल्लाह पाक की रह़मत ने दस्तगीरी फ़र्माई और दुआ़ क़ुबूल हुई एक आख़िरी दुआ़ और है और उम्मीदे क़वी है कि वो भी ज़रूर क़ुबूल होगी ये दुआ़ तक्मीले बुख़ारी शरीफ़ और ख़िदमते मुस्लिम शरीफ़ के लिये है। ह़दीष़ के बाब का मत़लब ये है कि बन्दा नाउम्मीदी का कलिमा मुँह से न निकाले और अल्लाह की रह़मत से नाउम्मीद न हो। मुस्लिम और तिर्मिज़ी की रिवायत में है जब तक गुनाह या नात़ा तोड़ने की दुआ़ न करे, दुआ़ ज़रूर क़ुबूल होती है। इसलिये आदमी को लाज़िम है कि दुआ़ से कभी उकताए नहीं अगर बिल फ़र्ज़ जो मत़लब चाहता था वो पूरा न हुआ तो ये क्या कम है कि दुआ़ का ष़वाब मिला। दूसरी ह़दीष़ में है कि मोमिन की दुआ़ ज़ाये नहीं जाती या तो दुनिया में क़ुबूल होती है या आख़िरत में उसका ष़वाब मिलेगा और दुआ़ के क़ुबूल होने में देर हो तो जल्दी न करे नाउम्मीद न हो जाए। कुछ पैग़म्बरों की दुआ़ चालीस साल बाद क़ुबूल हुई। हर बात का एक वक़्त अल्लाह तआ़ला ने रखा है वो वक़्त आना चाहिये **कुल्लु अम्रिन मर्हुनुन बिऔक़ातिहा** मशहूर है। अस़ल ये है कि दुआ़ की क़ुबूलियत के लिये बड़ी ज़रूरत इस चीज़ की है कि आदमी का खाना-पीना, पहनना, रहना-सहना सब ह़लाल से हो ह़राम और शुब्हे वाली कमाई से बचा रहे उसके साथ बात़हारत होकर क़िब्ला रू होकर ख़ुलूसे दिल से दुआ़ करे और अव्वल और आख़िर अल्लाह की ता'रीफ़ और ष़ना बयान करे। आँह़ज़रत (ﷺ) पर दरूद भेजे। (ﷺ) इन शराइत़ के साथ जो दुआ़ होगी वो देर-सवेर ज़रूर क़ुबूल की जाएगी। न हो उससे मायूस उम्मीदवार।

बाब 23 : दुआ में हाथों का उठाना

٢٣- باب رَفْعِ الأَيْدِي فِي الدُّعَاءِ

وَقَالَ أَبُو مُوسَى الأَشْعَرِيُّ، دَعَا النَّبِيُّ ﷺ: ثُمَّ رَفَعَ يَدَيْهِ، وَرَأَيْتُ بَيَاضَ إِبْطَيْهِ وَقَالَ ابْنُ عُمَرَ : رَفَعَ النَّبِيُّ ﷺ: ((اللَّهُمَّ إِنِّي أَبْرَأُ إِلَيْكَ مِمَّا صَنَعَ خَالِدٌ)).

और अबू मूसा अश्अरी ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने दुआ की और अपने हाथ उठाए तो मैंने आप (ﷺ) की बग़लों की सफ़ेदी देखी और अ़ब्दुल्लाह बिन इ़मर (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने अपने हाथ उठाए और दुआ फ़र्माई कि ऐ अल्लाह! ख़ालिद ने जो कुछ किया है मैं उससे बेज़ार हूँ।

٦٣٤١- قال أَبُو عَبْدِ الله: وَقَالَ الأُوَيْسِيُّ حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، عَنْ يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، وَشَرِيكٍ سَمِعَا أَنَسًا عَنْ النَّبِيِّ ﷺ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى رَأَيْتُ بَيَاضَ إِبْطَيْهِ. [راجع: ١٠٣١]

6341. ह़ज़रत अबू अ़ब्दुल्लाह बिन इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा और अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह उवैसी ने कहा कि मुझसे मुहम्मद बिन जअ़फ़र ने बयान किया, उनसे यह्या बिन सईद और शुरैक बिन अबी नम्र ने, उन्होंने ह़ज़रत अनस (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने अपने हाथ इतने उठाए कि मैंने आपकी बग़लों की सफ़ेदी देखी। (राजेअ : 1031)

तश्रीह : ह़ज़रत ख़ालिद (रज़ि.) ने ग़ज़्वा में बनू ख़ुज़ैमा के लोगों को मार डाला था। ह़ालाँकि वो सबाना सबाना कहकर इस्लाम क़ुबूल कर रहे थे। मगर ह़ज़रत ख़ालिद (रज़ि.) न समझ सके और उनको क़त्ल कर दिया जिस पर रसूले करीम (ﷺ) ने सख़्त ख़फ़गी का इज़्हार फ़र्माया और अल्लाह के साथ उससे बेज़ारी ज़ाहिर फ़र्माई जो यहाँ मज़्कूर है।

बाब 24 : क़िब्ला की त़रफ़ मुँह किये बग़ैर दुआ करना

٢٤- باب الدُّعَاءِ غَيْرَ مُسْتَقْبِلِ الْقِبْلَةِ

٦٣٤٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مَحْبُوبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: بَيْنَا النَّبِيُّ ﷺ يَخْطُبُ يَوْمَ الْجُمُعَةِ فَقَامَ رَجُلٌ، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ ادْعُ اللهَ أَنْ يَسْقِيَنَا؟ فَتَغَيَّمَتِ السَّمَاءُ وَمُطِرْنَا حَتَّى مَا كَادَ الرَّجُلُ يَصِلُ إِلَى مَنْزِلِهِ فَلَمْ نَزَلْ نُمْطَرُ إِلَى الْجُمُعَةِ الْمُقْبِلَةِ فَقَامَ ذَلِكَ الرَّجُلُ أَوْ غَيْرُهُ، فَقَالَ: ادْعُ اللهَ أَنْ يَصْرِفَهُ عَنَّا فَقَدْ غَرِقْنَا فَقَالَ: ((اللَّهُمَّ حَوَالَيْنَا وَلاَ عَلَيْنَا)) فَجَعَلَ السَّحَابُ يَتَقَطَّعُ حَوْلَ الْمَدِينَةِ وَلاَ يُمْطِرُ أَهْلَ الْمَدِينَةِ. [راجع: ٩٣٢]

6342. हमसे मुहम्मद बिन मह़बूब ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) जुम्अ़े के दिन ख़ुत्बा दे रहे थे कि एक आदमी खड़ा हुए और कहा कि या रसूलल्लाह! अल्लाह से दुआ फ़र्मा दीजिए कि हमारे लिये बारिश बरसाए (आँह़ज़रत ﷺ ने दुआ फ़र्माई) और आसमान पर बादल छा गया और बारिश बरसने लगी, ये ह़ाल हो गया कि हमारे लिये घर तक पहुँचना मुश्किल था। ये बारिश अगले जुम्अ़े तक होती रही फिर वही स़ह़ाबी या कोई दूसरे स़ह़ाबी इस दूसरे जुम्अ़े को खड़े हुए और कहा कि अल्लाह से दुआ फ़र्माईए कि अब बारिश बन्द कर दे हम तो डूब गये। आँह़ज़रत (ﷺ) ने दुआ की कि ऐ अल्लाह! हमारे चारों त़रफ़ की बस्तियों को सैराब कर और हम पर बारिश बंद कर दे। चुनाँचे बादल टुकड़े होकर मदीना के चारों त़रफ़ बस्तियों में चला गया और मदीना वालों पर बारिश रुक गई। (राजेअ : 932)

तश्रीह : ह़ालते ख़ुत्बा में इस त़ौर पर दुआ़ फ़र्माई कि आप सामेईन की त़रफ़ मुँह किये हुए थे इसी से बाब का मत़लब षाबित हुआ।

बाब 25 : क़िब्ला रुख़ होकर दुआ़ करना

तश्रीह : ख़ास़ मवाक़ेअ़ के अ़लावा आदाबे दुआ़ से ये है कि मुँह क़िब्ला रुख़ हो जैसा कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने जंगे बद्र मे किया था वग़ैरह वग़ैरह।

6343. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे वुहैब बिन ख़ालिद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़म्र बिन यह्या ने बयान किया, उनसे अ़ब्बाद बिन तमीम ने बयान किया और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ैद अंस़ारी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) इस ईदगाह में इस्तिस्क़ाअ की दुआ़ के लिये निकले और बारिश की दुआ़ की, फिर आप क़िब्ला रुख़ हो गये और अपनी चादर को पलटा। (राजेअ़ : 1005)

٦٣٤٣- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ يَحْيَى، عَنْ عَبَّادِ بْنِ تَمِيمٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ زَيْدٍ قَالَ: خَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ إِلَى هَذَا الْمُصَلَّى يَسْتَسْقِي فَدَعَا وَاسْتَسْقَى ثُمَّ اسْتَقْبَلَ الْقِبْلَةَ وَقَلَبَ رِدَاءَهُ. [راجع: ١٠٠٥]

तश्रीह : नमाज़े इस्तिस्क़ाअ किताबुस् स़लात से मा'लूम की जा सकती है इसमें आख़िर में चादर पलटने का त़रीक़ा देखा जा सकता है।

बाब 26 : नबी करीम (ﷺ) ने अपने ख़ादिम (ह़ज़रत अनस रज़ि.) के लिये लम्बी उ़म्र और माल की ज़्यादती की दुआ़ फ़र्माई

٢٦- باب دَعْوَةِ النَّبِيِّ ﷺ لِخَادِمِهِ بِطُولِ الْعُمُرِ، وَبِكَثْرَةِ مَالِهِ

6344. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी अल अस्वद ने बयान किया, कहा हमसे ह़रमिय्यि बिन अ़म्मारा ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि मेरी वालिदा (उम्मे सुलैम रज़ि.) ने कहा या रसूलल्लाह! अनस (रज़ि.) आपका ख़ादिम है इसके लिये दुआ़ फ़र्मा दें। आँह़ज़रत (ﷺ) ने दुआ़ की कि ऐ अल्लाह! उसके माल और औलाद को ज़्यादा कर और जो कुछ तू ने उसे दिया है उसमे बरकत अ़ता फ़र्मा। (राजेअ़ : 1982)

٦٣٤٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي الأَسْوَدِ، حَدَّثَنَا حَرَمِيٌّ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَتْ أُمِّي يَا رَسُولَ اللهِ خَادِمُكَ أَنَسٌ ادْعُ اللهَ لَهُ قَالَ: ((اللَّهُمَّ أَكْثِرْ مَالَهُ وَوَلَدَهُ وَبَارِكْ لَهُ فِيمَا أَعْطَيْتَهُ)). [راجع: ١٩٨٢]

तश्रीह : आपकी दुआ़ की बरकत से ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने सौ साल से भी ज़्यादा उ़म्र पाई और इंतिक़ाल के वक़्त उनकी औलाद की ता'दाद सौ से भी ज़ाइद थी।

बाब 27 : परेशानी के वक़्त दुआ़ करना

٢٧ - باب الدُّعَاءِ عِنْدَ الْكَرْبِ

6345. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हिशाम बिन उ़र्वा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे क़तादा ने बयान किया, उनसे अबुल आ़लिया ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम

٦٣٤٥- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، عَنْ أَبِي الْعَالِيَةِ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ

(ﷺ) परेशानी के वक़्त ये दुआ करते थे। अल्लाह के सिवा मा'बूद नहीं जो बहुत अज़्मत वाला है और बुर्दबार है, अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं जो आसमानों और ज़मीन का रब और बड़े भारी अर्श का रब है।

(दीगर मक़ामात : 6346, 7431, 7321)

ﷺ يَدْعُو عِنْدَ الْكَرْبِ ((لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ الْعَظِيمُ الْحَلِيمُ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ)).

[أطرافه في : ٦٣٤٦، ٧٤٢١، ٧٤٣١].

6346. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह्या बिन अबी कष़ीर ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन अबी अब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, उनसे अबुल आलिया ने और उनसे हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) हालते परेशानी में ये दुआ किया करते थे, अल्लाह साहिबे अज़्मत और बुर्दबार के सिवा कोई मा'बूद नहीं, अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं जो अर्शे अज़ीम का रब है, अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं जो आसमानों और ज़मीनों का रब है और अर्शे करीम का रब है। और वहब ने बयान किया कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने इस तरह बयान किया। (राजेअ : 6345)

٦٣٤٦- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ هِشَامِ بْنِ أَبِي عَبْدِ اللهِ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَبِي الْعَالِيَةِ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَانَ يَقُولُ عِنْدَ الْكَرْبِ: ((لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ الْعَظِيمُ الْحَلِيمُ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ، لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَرَبُّ الأَرْضِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ)). وَقَالَ وَهْبٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ مِثْلَهُ. [راجع: ٦٣٤٥]

बाब 28 : मुसीबत की सख़्ती से अल्लाह की पनाह मांगना

٢٨- باب التَّعَوُّذِ مِنْ جَهْدِ الْبَلاَءِ

6347. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, कहा मुझसे सुमय ने बयान किया, उनसे अबू सालेह ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) मुसीबत की सख़्ती, तबाही तक पहुँच जाने, क़ज़ा व क़द्र की बुराई और दुश्मनों के ख़ुश होने से पनाह मांगते थे और सुफ़यान ने कहा कि हदीष़ मे तीन सिफ़ात का बयान था। एक मैंने भुला दी थी और मुझे याद नहीं कि वो एक कौनसी सिफ़त है।

(दीगर मक़ामात : 6616)

٦٣٤٧- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنِي سُمَيٌّ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَتَعَوَّذُ مِنْ جَهْدِ الْبَلاَءِ وَدَرَكِ الشَّقَاءِ، وَسُوءِ الْقَضَاءِ وَشَمَاتَةِ الأَعْدَاءِ. قَالَ سُفْيَانُ: الْحَدِيثُ ثَلاَثٌ زِدْتُ أَنَا وَاحِدَةً لاَ أَدْرِي أَيَّتُهُنَّ هِيَ. [طرفه في : ٦٦١٦].

इस्माईल की रिवायत में इसकी सराहत है कि वो चौथी बात शमाअते अअदाअ की थी।

बाब 29 : नबी करीम (ﷺ) का मर्ज़ुल मौत में दुआ करना कि या अल्लाह! मुझको आख़िरत में रफ़ीक़े आला (मलाइका और अंबिया) के साथ मिला दे

٢٩- باب دُعَاءِ النَّبِيِّ ﷺ: ((اللَّهُمَّ الرَّفِيقَ الأَعْلَى)).

6348. हमसे सईद बिन उ़फ़ैर ने बयान किया, कहा कि मुझसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, कहा कि मुझसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें सईद बिन मुसय्यिब और उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने बहुत से इल्मवालों के सामने ख़बर दी कि आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) जब बीमार नहीं थे तो फ़र्माया करते थे कि जब भी किसी नबी की रूह क़ब्ज़ की जाती तो पहले जन्नत में उसका ठिकाना दिखा दिया जाता है, उसके बाद उसे इख़्तियार दिया जाता है (कि चाहें दुनिया में रहें या जन्नत में चलें) चुनाँचे जब आँहज़रत (ﷺ) बीमार हुए और सरे मुबारक मेरी रान पर था। उस वक़्त आप पर थोड़ी देर के लिये ग़शी त़ारी हुई। फिर जब आपको उससे कुछ होश हुआ तो छत की त़रफ़ टकटकी बाँधखर देखने लगे, फिर फ़र्माया, ऐ अल्लाह! रफ़ीक़े आ़ला के साथ मिला दे। मैंने समझ लिया कि आँहज़रत (ﷺ) अब हमें इख़्तियार नहीं कर सकते। मैं समझ गई कि जो बात आँहज़रत (ﷺ) स़ेहत के ज़माने में बयान फ़र्माया करते थे, ये वही बात है। बयान किया कि ये आँहज़रत (ﷺ) का आख़िरी कलिमा था जो आपने ज़ुबान से अदा फ़र्माया कि, ऐ अल्लाह! रफ़ीक़े आ़ला के साथ मिला दे। (राजेअ़ : 4435)

٦٣٤٨- حدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عُفَيْرٍ، قَالَ: حَدَّثَنِي اللَّيْثُ، قَالَ: حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ، وَعُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ فِي رِجَالٍ مِنْ أَهْلِ الْعِلْمِ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَقُولُ وَهُوَ صَحِيحٌ: ((لَنْ يُقْبَضَ نَبِيٌّ قَطُّ حَتَّى يَرَى مَقْعَدَهُ مِنَ الْجَنَّةِ ثُمَّ يُخَيَّرُ)). فَلَمَّا نَزَلَ بِهِ وَرَأْسُهُ عَلَى فَخِذِي غُشِيَ عَلَيْهِ سَاعَةً ثُمَّ أَفَاقَ فَأَشْخَصَ بَصَرَهُ إِلَى السَّقْفِ ثُمَّ قَالَ: ((اللَّهُمَّ الرَّفِيقَ الأَعْلَى)) قُلْتُ: إِذًا لاَ يَخْتَارُنَا، وَعَلِمْتُ أَنَّهُ الْحَدِيثُ الَّذِي كَانَ يُحَدِّثُنَا وَهُوَ صَحِيحٌ، قَالَتْ: فَكَانَتْ تِلْكَ آخِرَ كَلِمَةٍ تَكَلَّمَ بِهَا: ((اللَّهُمَّ الرَّفِيقَ الأَعْلَى)). [راجع: ٤٤٣٥]

आपको भी इख़्तियार दिया गया कि आप दुनिया में रहना चाहें तो कोहे उहुद आपके लिये सोने का बना दिया जाएगा मगर आपने आख़िरत को पसंद फ़र्माकर ..... आ़ला की रफ़ाक़त को पसंद फ़र्माया। (ﷺ) अल्फ़ अल्फ़ मर्र:

बाब 30 : मौत और ज़िंदगी की दुआ़ के बारे में

٣٠- باب الدُّعَاءِ بِالْمَوْتِ وَالْحَيَاةِ

6349. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे यह़्या बिन सईद क़त़्तान ने बयान किया, उनसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने बयान किया, उनसे क़ैस बिन अबी ह़ाज़िम ने बयान किया, कहा कि मैं ख़ब्बाब बिन अरत (रज़ि.) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ उन्होंने सात दाग़ (किसी बीमारी के इलाज के लिये) लगवाए थे। उन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अगर हमें मौत की दुआ़ करने से मना न किया होता तो ज़रूर उसकी दुआ़ करता। (राजेअ़ : 5672)

٦٣٤٩- حدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ إِسْمَاعِيلَ، عَنْ قَيْسٍ، قَالَ: أَتَيْتُ خَبَّابًا وَقَدِ اكْتَوَى سَبْعًا، قَالَ : لَوْ لاَ أَنَّ رَسُولَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَانَا أَنْ نَدْعُوا بِالْمَوْتِ لَدَعَوْتُ بِهِ. [راجع:٥٦٧٢]

तश्रीह़ : शिद्दत तकलीफ़ की वजह से उन्होंने ये फ़र्माया जिससे मा'लूम हुआ कि बहरहाल मौत की दुआ़ मांगना मना है। बल्कि लम्बी उ़म्र की दुआ़ करना है जिससे सआ़दत दारैन ह़ासिल हो इसीलिये नेकोकार लम्बी उ़म्रों वाले क़यामत में दरजात के अंदर शुह्दा से भी आगे बढ़ जाएँगे। जअ़ल्नल्लाहु मिन्हुम आमीन।

6350. हमसे मुहम्मद बिन मुस़न्ना ने बयान किया, कहा हमसे यह्या क़त्तान ने बयान किया, उनसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने बयान किया, उनसे क़ैस बिन अबी ह़ाज़िम ने बयान किया, कहा कि मैं ख़ब्बाब बिन अरत (रज़ि.) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ उन्होंने अपने पेट पर सात दाग़ लगवा रखे थे, मैंने सुना कि वो कह रहे थे कि अगर नबी करीम (ﷺ) ने हमें मौत की दुआ करने से मना न किया होता तो मैं उसकी ज़रूर दुआ कर लेता। (राजेअ : 5672)

٦٣٥٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ إِسْمَاعِيلَ قَالَ: حَدَّثَنِي قَيْسٌ قَالَ: أَتَيْتُ خَبَّابًا وَقَدِ اكْتَوَى سَبْعًا فِي بَطْنِهِ، فَسَمِعْتُهُ يَقُولُ : لَوْ لاَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ نَهَانَا أَنْ نَدْعُوا بِالْمَوْتِ، لَدَعَوْتُ بِهِ.

[راجع: ٥٦٧٢]

6351. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इस्माईल बिन अ़लिया ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमें अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन सुहैब ने बताया और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया तुममें से कोई शख़्स किसी तकलीफ़ की वजह से जो उसे होने लगी हो, मौत की तमन्ना न करे। अगर मौत की तमन्ना ज़रूरी ही हो जाए तो ये कहे कि ऐ अल्लाह! जब तक मेरे लिये ज़िंदगी बेहतर है मुझे ज़िंदा रखियो और जब मेरे लिये मौत बेहतर हो तो मुझे उठा लीजियो।

٦٣٥١- حَدَّثَنَا ابْنُ سَلاَمٍ، أَخْبَرَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عُلَيَّةَ، عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ صُهَيْبٍ، عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لاَ يَتَمَنَّيَنَّ أَحَدٌ مِنْكُمُ الْمَوْتَ لِضُرٍّ نَزَلَ بِهِ، فَإِنْ كَانَ لاَ بُدَّ مُتَمَنِّيًا لِلْمَوْتِ فَلْيَقُلْ : اللَّهُمَّ أَحْيِنِي مَا كَانَتِ الْحَيَاةُ خَيْرًا لِي، وَتَوَفَّنِي إِذَا كَانَتِ الْوَفَاةُ خَيْرًا لِي)). [راجع: ٥٦٧١]

बाब 31 : बच्चों के लिये बरकत की दुआ करना और उनके सर पर शफ़क़त का हाथ फेरना

٣١- باب الدُّعَاءِ لِلصِّبْيَانِ بِالْبَرَكَةِ وَمَسْحِ رُؤُوسِهِمْ

और अबू मूसा अश्अ़री (रज़ि.) ने कहा कि मेरे यहाँ एक बच्चा पैदा हुआ तो नबी करीम (ﷺ) ने उसके लिये बरकत की दुआ फ़र्माई।

وَقَالَ أَبُو مُوسَى وُلِدَ لِي غُلاَمٌ وَدَعَا لَهُ النَّبِيُّ ﷺ بِالْبَرَكَةِ.

6352. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे ह़ातिम बिन इस्माईल ने बयान किया, उनसे जअ़द बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया कि मैंने ह़ज़रत साइब बिन यज़ीद (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मेरी ख़ाला मुझे लेकर रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुई और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मेरा भांजा बीमार है। चुनाँचे आँह़ज़रत (ﷺ) ने मेरे सर पर हाथ फेरा और मेरे लिये बरकत की दुआ की। फिर आपने वुज़ू किया और मैंने आपके वुज़ू का पानी पिया। उसके बाद मैं आपकी पुश्त की त़रफ़ खड़ा हो गया और मैंने मुह्रे नबुवत देखी जो दोनों शानों के दरम्यान थी जैसे छप्पर खट की घुण्डी

٦٣٥٢- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا حَاتِمٌ، عَنِ الْجَعْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: سَمِعْتُ السَّائِبَ بْنَ يَزِيدَ يَقُولُ: ذَهَبَتْ بِي خَالَتِي إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّ ابْنَ أُخْتِي وَجِعٌ، فَمَسَحَ رَأْسِي وَدَعَا لِي بِالْبَرَكَةِ، ثُمَّ تَوَضَّأَ فَشَرِبْتُ مِنْ وَضُوئِهِ، ثُمَّ قُمْتُ خَلْفَ ظَهْرِهِ فَنَظَرْتُ إِلَى خَاتَمِهِ بَيْنَ كَتِفَيْهِ مِثْلَ

होती है या ह़जला का अंडा। (राजेअ़ : 190)

زِرُّ الْحَجَلَةِ. [راجع: ١٩٠]

तश्रीह : ह़जला एक परिन्दा होता है। कुछ रिवायात में ज़िर्रूल ह़जलति ब तक़्दीम राय मुह्मला बरज़ाए मुअजमा आया है। या'नी चकोर के अण्डा की त़रह़ गोलाई में है कि इसकी ताईद उस रिवायत से होती है जिसे तिर्मिज़ी ने जाबिर बिन समुरह़ से रिवायत किया है कि आँह़ज़रत (ﷺ) की मुह्रे नबूवत दोनों मूँढ़ों के दरम्यान कबूतर के अण्डे के बराबर लाल रसौली की त़रह़ थी (लुग़ातुल ह़दीष़)

6353. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, कहा हमसे सईद बिन बी अय्यूब ने बयान किया, उनसे अबू अ़क़ील (ज़ुह्रा बिन मअ़बद) ने कि उन्हें उनके दादा अ़ब्दुल्लाह बिन हिशाम (रज़ि.) साथ लेकर बाज़ार से निकलते या बाज़ार जाते और खाने की कोई चीज़ ख़रीदते, फिर अगर अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) की उनसे मुलाक़ात हो जाती तो वो कहते कि हमें भी इसमे शरीक कीजिए कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने आपके लिये बरकत की दुआ़ फ़र्माई थी। कुछ दफ़ा तो एक ऊँट के बोझ का पूरा अनाज नफ़ा में आ जाता और वो उसे घर भेज देते थे। (राजेअ़ : 2502)

٦٣٥٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي أَيُّوبَ، عَنْ أَبِي عَقِيلٍ، أَنَّهُ كَانَ يَخْرُجُ بِهِ جَدُّهُ عَبْدُ اللهِ بْنُ هِشَامٍ مِنَ السُّوقِ أَوْ إِلَى السُّوقِ فَيَشْتَرِي الطَّعَامَ فَيَلْقَاهُ ابْنُ الزُّبَيْرِ وَابْنُ عُمَرَ فَيَقُولاَنِ: أَشْرِكْنَا فَإِنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَدْ دَعَا لَكَ بِالْبَرَكَةِ، فَيُشْرِكُهُمْ فَرُبَّمَا أَصَابَ الرَّاحِلَةَ كَمَا هِيَ فَيَبْعَثُ بِهَا إِلَى الْمَنْزِلِ. [راجع: ٢٥٠٢]

अबू अ़क़ील ज़ुह्रा बिन मअ़बद के ह़क़ में रसूले करीम (ﷺ) ने दुआए बरकत की थी उसी का ये ष़मरह़ था जो यहाँ बयान हुआ है।

6354. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह उवैसी ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे स़ालेह़ बिन कैसान ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्हें मह़मूद बिन रबीअ़ (रज़ि.) ने ख़बर दी, ये मह़मूद वो बुज़ुर्ग हैं जिनके मुँह में रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जिस वक़्त वो बच्चे थे, उन्हीं के कूएँ से पानी लेकर कुल्ली की थी। (राजेअ़ : 77)

٦٣٥٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ صَالِحِ بْنِ كَيْسَانَ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَخْبَرَنِي مَحْمُودُ بْنُ الرَّبِيعِ، وَهُوَ الَّذِي مَجَّ رَسُولُ اللهِ ﷺ فِي وَجْهِهِ وَهُوَ غُلاَمٌ مِنْ بِئْرِهِمْ. [راجع: ٧٧]

वो बच्चा इंतिहाई ख़ुश क़िस्मत होना चाहिये जिसके मुँह में रसूले करीम (ﷺ) के मुँह मुबारक की कुल्ली दाख़िल हो

6355. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको हिशाम बिन उ़र्वा ने ख़बर दी, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के पास बच्चों को लाया जाता तो आप उनके लिये दुआ़ करते थे। एक मर्तबा एक बच्चा लाया गया और उसने आपके कपड़े पर पेशाब कर दिया। फिर आँह़ज़रत (ﷺ) ने पानी मंगाया और पेशाब की जगह पर उसे डाला। कपड़े को धोया नहीं। (राजेअ़ : 222)

٦٣٥٥- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُؤْتَى بِالصِّبْيَانِ فَيَدْعُو لَهُمْ فَأُتِيَ بِصَبِيٍّ فَبَالَ عَلَى ثَوْبِهِ، فَدَعَا بِمَاءٍ فَأَتْبَعَهُ إِيَّاهُ وَلَمْ يَغْسِلْهُ. [راجع: ٢٢٢]

ये ह़ज़रत ह़सन या ह़ज़रत ह़ुसैन या उम्मे फ़ुलैस के फ़र्ज़न्द थे। मा'लूम हुआ कि शीरख़्वार बच्चे के पेशाब पर पानी डाल देना काफ़ी है।

6356. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, कहा कि मुझे अ़ब्दुल्लाह बिन ष़अल्बा बिन स़ुऐर (रज़ि.) ने ख़बर दी और रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनकी आँख या मुँह पर हाथ फेरा था। उन्होंने ह़ज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास़ (रज़ि.) को एक रकअ़त वित्र नमाज़ पढ़ते देखा था। (राजेअ़ : 4300)

٦٣٥٦- حدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ ثَعْلَبَةَ بْنِ صُعَيْرٍ وَكَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ قَدْ مَسَحَ عَيْنَهُ أَنَّهُ رَأَى سَعْدَ بْنَ أَبِي وَقَّاصٍ يُوتِرُ بِرَكْعَةٍ. [راجع: ٤٣٠٠]

तश्रीह : वित्र के मा'नी तंहा अकेला ताक़ के हैं इसकी ज़द शफ़अ़ या'नी जोड़ा है। रसूले करीम (ﷺ) ने वित्र को कभी सात रकअ़ात कभी पाँच रकअ़ात कभी तीन रकअ़ात कभी एक रकअ़ात भी पढ़ा है। ह़ज़रत अबू अय्यूब रिवायत करते हैं कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, **अल्वित्रु ह़क़्क़ुन अला कुल्लि मुस्लिमिन फ़मन अह़ब्बु अंय्यूतिर बिखम्सिन फल्यफ़्अल व मन अह़ब्बु अंय्यूतिर बिषलाष़िन फल्यफ़्अल व मन अह़ब्बु अह़ब्बु अंय्यूतिर बिवाहिदतिन फल्यफ़्अल रवाहु अबू दाऊद वन्नसई वब्नु माजा** या'नी नमाज़े वित्र हर मुसलमान के ऊपर ह़क़ और ष़ाबित है बस जो चाहे वित्र सात रकअ़ात पढ़े जो चाहे पाँच रकअ़ात पढ़े जो चाहे तीन रकअ़ात पढ़े और जो चाहे एक रकअ़त पढ़े। इब्ने उ़मर की रिवायत से आँह़ज़रत (ﷺ) फ़र्माते हैं अल वित्र रकअ़तु मिन आख़िरिल लैल रवाहु मुस्लिम या'नी नमाज़े वित्र आख़िरी रात मे है जो एक रकअ़त है। आँह़ज़रत (ﷺ) पाँच रकअ़त वित्र पढ़ने की स़ूरत में दरम्यान मे नहीं बल्कि सिर्फ़ आख़िरी रकअ़त में क़अ़दा फ़र्माते थे (मुस्लिम) पस एक रकअ़त वित्र जाइज़ दुरुस्त बल्कि सुन्नते नबवी है जो लोग एक रकअ़त वित्र अदा करें उन पर ए'तिराज़ करने वाले ख़ुद ग़लती पर हैं, यूँ तीन पाँच सात पढ़ सकते हैं। ह़दीष़ और बाब में मुत़ाबक़त इससे है कि रसूले करीम (ﷺ) ने ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ष़अ़ल्बा (रज़ि.) के सर पर अज़्राहे शफ़क़त व दुआ दस्ते शफ़क़त फेरा था।

बाब 32 : नबी करीम (ﷺ) पर दरूद भेजना

٣٢- باب الصَّلاَةِ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ

तश्रीह : स़ह़ीह़ अह़ादीष़ में जो दरूद के स़ैग़े आए हैं वो मअ़दूदे चंद हैं। जो ह़स्न ह़ुस़ैन में जमा हैं लेकिन बाद के लोगों ने हज़ारों स़ैग़े बड़े बड़े मुबालिग़ा और तक बंदी के साथ बनाए हैं। मैं नहीं कह सकता कि उनके पढ़ने में ज़्यादा ष़वाब होगा बल्कि डर है कि मुवाख़िज़ा न हो क्योंकि आपने दुआ में मुबालिग़ा और सज्अ़ व क़ाफ़िया लगाने को मना फ़र्माया और तअ़ज्जुब है उन लोगों से जिन्होंने माष़ूरा दरूदों पर क़नाअ़त न करके हज़ार हा नए दरूद ईजाद किये हैं। बेहतर यही है कि वही स़ैग़े दरूद के पढ़े जाएँ जो ह़दीष़ से ष़ाबित हैं और जो मज़ा इत्तिबाअ़ सुन्नत में मोमिन को आता है वो किसी चीज़ में नहीं आता। बाक़ी दरूद शरीफ़ बकष़रत पढ़ना ऐसा पाकीज़ा अ़मल है जिसकी फ़ज़ीलत में बहुत कुछ लिखा जा सकता है बल्कि जो शख़्स़ आँह़ज़रत (ﷺ) का इस्मे गिरामी सुनकर दरूद न पढ़े उसको बहुत बड़ा बख़ील क़रार दिया गया है। हुज्जतुल हिन्द ह़ज़रत शाह वलीउल्लाह मुह़द्दिष़ देह्लवी (रह़.) ने अल क़ौलुल जमील में फ़र्माया है कि **बिहा वजदना मा वजदना** या'नी हमको रूह़ानी तरक़्क़ीयात जो नस़ीब हुई हैं वो बकष़रत दरूद पढ़ने ही से ह़ासिल हुई हैं। इसीलिये बुख़ारी शरीफ़ मुतर्जिम उर्दू का पढ़ना भी मौजिबे स़द बरकत है कि इसमें सत़र सत़र में अल्फ़ाज़ (ﷺ) हैं और आँह़ज़रत (ﷺ) पर दरूद शरीफ़ लिखी गई है। दुआ है कि अल्लाह पाक इस अ़मल को क़ुबूल करके मुझ ह़क़ीर सरापा तक़्स़ीर ख़ादिम को रोज़े क़यामत में आँह़ज़रत (ﷺ) के दस्ते मुबारक से जामे कौष़र नस़ीब करे और मेरे जुम्ला रुफ़क़ा-ए-किराम मुआविनीने इ़ज़ाम व शाऐक़ीन को भी अल्लाह पाक दरजाते आ़लिया बख़्शे आमीन (राज़)

6357. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा बिन ह़ज्जाज ने बयान किया, कहा हमसे ह़कम

٦٣٥٧- حدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، حَدَّثَنَا الْحَكَمُ، قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ الرَّحْمَنِ

بْنَ أَبِي لَيْلَى قَالَ: لَقِيَنِي كَعْبُ بْنُ عُجْرَةَ فَقَالَ : أَلاَ أُهْدِي لَكَ هَدِيَّةً؟ إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ خَرَجَ عَلَيْنَا فَقُلْنَا: يَا رَسُولَ اللهِ قَدْ عَلِمْنَا كَيْفَ نُسَلِّمُ عَلَيْكَ، فَكَيْفَ نُصَلِّي عَلَيْكَ؟ قَالَ: فَقُولُوا: ((اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ، وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ، إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ، اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ)). [راجع: ٣٣٧٠]

बिन उतैबा ने बयान किया, कहा कि मैंने अ़ब्दुर्रहमान बिन अबी लैला से सुना, कहा कि कअ़ब बिन उ़ज्रा (रज़ि.) मुझसे मिले और कहा कि मैं तुम्हें एक तौहफ़ा न द् ? (या'नी एक उ़म्दह ह़दीष़ न सुनाऊँ?) नबी करीम (ﷺ) हम लोगों में तशरीफ़ लाए तो हमने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! ये तो हमें मा'लूम हो गया है कि हम आपको सलाम किस त़रह करें, लेकिन आप पर दरूदा हम किस त़रह भेजें? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि इस तरह कहो। ऐ अल्लाह! मुह़म्मद (ﷺ) पर अपनी रह़मत नाज़िल कर और आले मुहम्मद (ﷺ) पर, जैसा कि तूने इब्राहीम और आले इब्राहीम पर रह़मत नाज़िल फ़र्माई, बिलाशुब्हा तू ता'रीफ़ किया हुआ और पाक है। ऐ अल्लाह! मुह़म्मद (ﷺ) पर और मुह़म्मद (ﷺ) की आल पर बरकत नाज़िल कर जैसा कि तूने इब्राहीम और आले इब्राहीम (अ़.) पर बरकत नाज़िल की, बिला शुब्हा तू ता'रीफ़ किया हुआ और पाक है। (राजेअ़ : 3370)

٦٣٥٨- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ حَمْزَةَ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي حَازِمٍ وَالدَّرَاوَرْدِيُّ عَنْ يَزِيدَ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ خَبَّابٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: قُلْنَا يَا رَسُولَ اللهِ هَذَا السَّلاَمُ عَلَيْكَ فَكَيْفَ نُصَلِّي؟ قَالَ: قُولُوا: ((اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُولِكَ، كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ، وَبَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَ عَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَآلِ إِبْرَاهِيمَ)). [راجع: ٤٧٩٨]

6358. हमसे इब्राहीम बिन ह़म्ज़ा ज़ुबैरी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्ने अबी ह़ाज़िम और दरावर्दी ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उसामा ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन ख़ब्बाब ने बयान किया और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि हमने कहा ऐ अल्लाह के रसूल! आपको सलाम इस त़रह किया जाता है, लेकिन आप पर दरूद किस त़रह भेजा जाता है? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि इस त़रह कहो ऐ अल्लाह! अपनी रह़मत नाज़िल कर मुहम्मद (ﷺ) पर जो तेरे बन्दे हैं और तेरे रसूल हैं जिस त़रह तूने रह़मत नाज़िल की इब्राहीम पर और बरकत भेज मुहम्मद (ﷺ) पर और उनकी आल पर जिस त़रह बरकत भेजी तूने इब्राहीम पर और आले इब्राहीम पर। (राजेअ़ : 4798)

٣٣- باب هَلْ يُصَلَّى عَلَى غَيْرِ النَّبِيِّ ﷺ وَقَوْلُ اللهِ تَعَالَى:

﴿وَصَلِّ عَلَيْهِمْ إِنَّ صَلاَتَكَ سَكَنٌ لَهُمْ﴾ [التوبة : ١٠٣]

बाब 33 : क्या नबी करीम (ﷺ) के सिवा किसी और पर दरूद भेजा जा सकता है?

और अल्लाह तआ़ला ने सूरह तौबा में अपने पैग़म्बर से यूँ फ़र्माया, वस़ल्लि अ़लैहिम इन्ना स़लातक सकनुल् लहुम) या'नी उन पर दरूद भेज क्योंकि तेरे दरूद (दुआ़) से उनको तसल्ली होती है। (तौबा : 103)

٦٣٥٩- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ، عَنِ ابْنِ

6359. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन मुर्रह ने, और उनसे

इब्ने अबी औफ़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास कोई शख़्स अपनी ज़कात लेकर आता तो आप फ़र्माते, अल्लाहुम्म स़ल्लि अ़लैहि (ऐ अल्लाह! इस पर अपनी रहमत नाज़िल फ़र्मा) मेरे वालिद भी अपनी ज़कात लेकर आए तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ऐ अल्लाह! आले अबी औफ़ा पर अपनी रहमत नाज़िल फ़र्मा। (राजेअ़: 1497)

أَبِي أَوْفَى قَالَ: كَانَ إِذَا أَتَى رَجُلٌ النَّبِيَّ ﷺ بِصَدَقَتِهِ قَالَ: ((اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَيْهِ)) فَأَتَاهُ أَبِي بِصَدَقَتِهِ فَقَالَ: ((اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى آلِ أَبِي أَوْفَى)). [راجع: ١٤٩٧]

6360. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुस्लिमा क़अ़म्बी ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबीबक्र ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे अ़म्र बिन सुलैम ज़रक़ी ने बयान किया कि हमको अबू हुमैद स़ाअ़दी (रज़ि.) ने ख़बरदी कि स़हाबा ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! हम आप पर किस त़रह दरूद भेजें ? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि इस त़रह कहो, ऐ अल्लाह! मुहम्मद और आपके अज़्वाज और आपकी औलाद पर अपनी रहमत नाज़िल कर जैसी कि तूने इब्राहीम पर रहमत नाज़िल की और रहमत नाज़िल कर जैसी कि तूने इब्राहीम और आले इब्राहीम पर रहमत नाज़िल की और मुहम्मद और उनकी अज़्वाज और उनकी औलाद पर बरकत नाज़िल कर, जैसा कि तूने इब्राहीम और आले इब्राहीम पर बरकत नाज़िल की। बिला शुब्हा किया गया शान व अ़ज़्मत वाला है। (राजेअ़: 3369)

٦٣٦٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَمْرِو بْنِ سُلَيْمٍ الزُّرَقِيِّ أَخْبَرَنِي أَبُو حُمَيْدٍ السَّاعِدِيُّ أَنَّهُمْ قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ كَيْفَ نُصَلِّي عَلَيْكَ؟ قَالَ: قُولُوا: ((اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَأَزْوَاجِهِ وَذُرِّيَّتِهِ، كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ وَبَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَأَزْوَاجِهِ وَذُرِّيَّتِهِ، كَمَا بَارَكْتَ عَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ)). [راجع: ٣٣٦٩]

तश्रीह़ : ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने इस बाब में दो अह़ादीष़ बयान की हैं एक से बिल इस्तिक़्लाल ग़ैर अंबिया पर और दूसरी से तब्अ़न ग़ैर अंबिया पर दरूद भेजने का जवाज़ निकला है। कुछ ने ग़ैर अंबिया के लिये भी इस्तिक़्लाल को यूँ कहना दुरुस्त रखा है। अल्लाहुम्म स़ल्लि अ़लैहि और ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) का भी रुझान इसी त़रह़ मा'लूम होता है। क्योंकि स़लात के मा'नी रह़मत के भी हैं। तो **अल्लाहुम्म स़ल्लि अ़लैहि** का मतलब ये हुआ किया अल्लाह! उस पर अपनी रह़मत रह़मत उतार और अबू दाऊद और नसाई की रिवायत में यूँ है। **अल्लाहुम्मज्अ़ल स़लवातिक व रह़मतक अ़ला आलि सअ़द बिन उबाद:** कुछ ने यूँ कहना भी दुरुस्त रखा है कि पहले आँह़ज़रत (ﷺ) पर दरूद शरीफ़ हो बाद मे और को भी शरीक किया जाए जैसे यूँ कहना। **अल्लाहुम्म स़ल्लि अ़ला मुहम्मदिंव व अ़लल्ह़सन बिन अ़ली** और यही मुख़्तार है। दरूद शरीफ़ मे कुछ ने तख़्स़ीस़ ह़ज़रत इब्राहीम (अ़.) पर कलाम किया है कि यूँ क्यूँ न कहा अल्लाहुम्मा स़ल्लि अ़ल मूसा जवाब ये दिया गया कि ह़ज़रत मूसा पर तजल्ली जलाली थी और ह़ज़रत इब्राहीम (अ़.) पर तजल्ली जमाली। इसलिये ह़ज़रत इब्राहीम (अ़.) के नाम को तरजीह़ दी गई कि आप (ﷺ) के लिये तजल्ली जमाली का सवाल हो। एक वजह ये भी मा'लूम होती है कि ह़ज़रत इब्राहीम (अ़.) का दर्जा बड़ा है क्योकि आप जद्दुल अंबिया हैं। ह़ज़रत मूसा (अ़.) का ये मक़ाम नहीं है और आँह़ज़रत (ﷺ) का सिलसिला नसब ह़ज़रत इब्राहीम (अ़.) से जाकर मिलता है और ह़ज़रत इब्राहीम (अ.) को दुनिया व आख़िरत में जो बलन्दी और ख़ुल्लत ह़ासिल हुई है वो और को नहीं। लिहाज़ा आँह़ज़रत (ﷺ) के लिये भी ऐसी ही बलन्दी और ख़ुल्लत का सवाल मुनासिब था जो यक़ीनन आँह़ज़रत (ﷺ) को भी ह़ासिल हुआ क्योंकि आज भी आपके नाम लेने वालों की ता'दाद दुनिया में क्रोड़हा क्रोड़ तक पहुँच रही है। **अल्लाहुम्म स़ल्लि अ़ला मुहम्मद व अ़ला आलि मुहम्मद कमा स़ल्लैत अ़ला इब्राहीम व अ़ला आलि इब्राहीम इन्नक हमीदुम्मजीद अल्लाहुम्म बारिक अ़ला मुहम्मद व अ़ला आलि मुहम्मद कमा बारक्त अ़ला इब्राहीम व अ़ला आलि इब्राहीम इन्नक हमीदुन मजीद, आमीन!**

बाब 34 : नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्मान कि ऐ

٣٤- بَابُ قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ:

((مَنْ آذَيْتُهُ فَاجْعَلْهُ لَهُ زَكَاةً وَرَحْمَةً))

अगर मुझसे किसी को तकलीफ़ पहुँची हो तो उसे तू उसके गुनाहों के लिये कफ़्फ़ारा और रहमत बना दे

٦٣٦١- حَدَّثَنَا ابْنُ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((اللَّهُمَّ فَأَيُّمَا مُؤْمِنٍ سَبَبْتُهُ فَاجْعَلْ ذَلِكَ لَهُ قُرْبَةً إِلَيْكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ)).

6361. हमसे अह़मद बिन स़ालेह़ ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, कहा कि मुझे यूनुस ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, कहा कि मुझको सईद बिन मुसय्यब ने ख़बर दी और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ऐ अल्लाह! मैंने जिस मोमिन को भी बुरा भला कहा हो तो उसके लिये उसे क़यामत के दिन अपनी क़ुरबत का ज़रिया बना दे।

तश्रीह : आँह़ज़रत (ﷺ) ने अपनी ज़िंदगी भर में कभी किसी को बुरा नहीं कहा। लिहाज़ा ये इर्शादे गिरामी कमाले तवाज़ोअ और अहले ईमान से शफ़क़त की बिना पर फ़र्माया गया। (ﷺ)

٣٥- باب التَّعَوُّذِ مِنَ الْفِتَنِ

बाब 35 : फ़ित्नों से अल्लाह की पनाह मांगना

٦٣٦٢- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ سَأَلُوا رَسُولَ اللهِ ﷺ حَتَّى أَحْفَوْهُ الْمَسْأَلَةَ فَغَضِبَ فَصَعِدَ الْمِنْبَرَ فَقَالَ: ((لاَ تَسْأَلُونِي الْيَوْمَ عَنْ شَيْءٍ إِلاَّ بَيَّنْتُهُ لَكُمْ)). فَجَعَلْتُ أَنْظُرُ يَمِينًا وَشِمَالاً فَإِذَا كُلُّ رَجُلٍ لاَفٌّ رَأْسَهُ فِي ثَوْبِهِ يَبْكِي فَإِذَا رَجُلٌ كَانَ إِذَا لاَحَى الرِّجَالَ يُدْعَى لِغَيْرِ أَبِيهِ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ مَنْ أَبِي؟ قَالَ: ((حُذَافَةُ)) ثُمَّ أَنْشَأَ عُمَرُ فَقَالَ: رَضِينَا بِاللهِ رَبًّا وَبِالإِسْلاَمِ دِينًا وَبِمُحَمَّدٍ ﷺ رَسُولاً، نَعُوذُ بِاللهِ مِنَ الْفِتَنِ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَا رَأَيْتُ فِي الْخَيْرِ وَالشَّرِّ كَالْيَوْمِ قَطُّ، إِنَّهُ صُوِّرَتْ لِي الْجَنَّةُ وَالنَّارُ حَتَّى رَأَيْتُهُمَا وَرَاءَ الْحَائِطِ)). وَكَانَ قَتَادَةُ

6362. हमसे ह़फ़्स़ बिन उ़मर ह़ौज़ी ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम दस्तवाई ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि स़ह़ाबा ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सवालात किये और जब बहुत ज़्यादा किये तो आँह़ज़रत (ﷺ) को नागवारी हुई, फिर आप (ﷺ) मिम्बर पर तशरीफ़ लाए और फ़र्माया, आज तुम मुझसे जो बात भी पूछोगे मैं बताऊँगा। उस वक़्त मैंने दाएँ-बाएँ देखा तो तमाम स़ह़ाबा सर अपने कपड़ों में लपेटे हुए रो रहे थे, एक स़ाह़ब जिनका अगर किसी से झगड़ा होता तो उन्हें उनके बाप के सिवा किसी और की त़रफ़ (त़ाना के त़ौर पर) मन्सूब किया जाता था। उन्होंने पूछा या रसूलल्लाह! मेरे बाप कौन हैं ? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हुज़ाफ़ह़। उसके बाद उ़मर (रज़ि.) उठे और अ़र्ज़ किया, हम राज़ी हैं कि हमारा रब है, इस्लाम से कि वो दीन है, मुह़म्मद (ﷺ) से कि वो सच्चे रसूल हैं, हम फ़ित्नों से अल्लाह की पनाह मांगते हैं। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, आज की त़रह ख़ैर व शर्र के मामले में मैंने कोई दिन नहीं देखा, मेरे सामने जन्नत और जहन्नम की तस्वीर लाई गई और मैंने उन्हें दीवार के ऊपर देखा। क़तादा इस ह़दीष़ को बयान करते वक़्त (सूरह माइदह की) आयत का ज़िक्र किया करते थे, ऐ ईमानवालों !

يَذْكُرُ عِنْدَ هَذَا الْحَدِيثِ هَذِهِ الآيَةَ : ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لاَ تَسْأَلُوا عَنْ أَشْيَاءَ إِنْ تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ﴾ [المائدة : ١٠١].

[راجع: ٩٣]

ऐसी चीज़ों के बारे न सवाल करो कि अगर तुम्हारे सामने उनका जवाब ज़ाहिर हो जाए तो तुम को बुरा लगे। (अल माइदह: 101) (राजेअ: 93)

٣٦- باب التَّعَوُّذِ مِنْ غَلَبَةِ الرِّجَالِ

बाब 36 : दुश्मनों के ग़ालिब आने से अल्लाह की पनाह मांगना

٦٣٦٣- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ أَبِي عَمْرٍو مَوْلَى الْمُطَّلِبِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ حَنْطَبٍ أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لأَبِي طَلْحَةَ: ((الْتَمِسْ لَنَا غُلاَمًا مِنْ غِلْمَانِكُمْ يَخْدُمُنِي))؟ فَخَرَجَ بِي أَبُو طَلْحَةَ يُرْدِفُنِي وَرَاءَهُ فَكُنْتُ أَخْدُمُ رَسُولَ اللهِ ﷺ كُلَّمَا نَزَلَ فَكُنْتُ أَسْمَعُهُ يُكْثِرُ أَنْ يَقُولَ: ((اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحَزَنِ وَالْعَجْزِ وَالْكَسَلِ وَالْبُخْلِ وَالْجُبْنِ وَضَلَعِ الدَّيْنِ وَغَلَبَةِ الرِّجَالِ)). فَلَمْ أَزَلْ أَخْدُمُهُ حَتَّى أَقْبَلْنَا مِنْ خَيْبَرَ وَأَقْبَلَ بِصَفِيَّةَ بِنْتِ حُيَيٍّ، قَدْ حَازَهَا فَكُنْتُ أَرَاهُ يُحَوِّي وَرَاءَهُ بِعَبَاءَةٍ أَوْ كِسَاءٍ ثُمَّ يُرْدِفُهَا وَرَاءَهُ حَتَّى إِذَا كُنَّا بِالصَّهْبَاءِ صَنَعَ حَيْسًا فِي نِطَعٍ، ثُمَّ أَرْسَلَنِي فَدَعَوْتُ رِجَالاً فَأَكَلُوا، وَكَانَ ذَلِكَ بِنَاءَهُ بِهَا، ثُمَّ أَقْبَلَ حَتَّى بَدَا لَهُ أُحُدٌ قَالَ: ((هَذَا جُبَيْلٌ يُحِبُّنَا وَنُحِبُّهُ)) فَلَمَّا أَشْرَفَ عَلَى الْمَدِينَةِ قَالَ: ((اللَّهُمَّ إِنِّي أُحَرِّمُ مَا بَيْنَ جَبَلَيْهَا مِثْلَ مَا حَرَّمَ إِبْرَاهِيمُ مَكَّةَ، اللَّهُمَّ بَارِكْ

6363. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन अबी अ़म्र, मुत्तलिब बिन अ़ब्दुल्लाह बिन हन्तब के ग़ुलाम ने बयान किया, उन्हों ने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अबू त़लह़ा (रज़ि.) से फ़र्माया, अपने यहाँ के लड़कों में से कोई बच्चा तलाश कर जो मेरा काम कर दिया करे। चुनाँचे अबू त़लह़ा (रज़ि.) मुझे अपनी सवारी पर पीछे बिठाकर ले गये। आँह़ज़रत (ﷺ) जब भी घर होते तो मैं आपकी ख़िदमत किया करता था। मैंने सुना कि आँह़ज़रत (ﷺ) ये दुआ अकष़र पढ़ा करते थे, ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह मांगता हूँ ग़म और अलम से, आजिज़ी और कमज़ोरी से और बुख़्ल से और बुज़दिली से और क़र्ज़ के बोझ से और इंसानों के ग़ल्बे से। मैं आँह़ज़रत (ﷺ) की ख़िदमत करता रहा। फिर हम ख़ैबर से वापस आए और आँह़ज़रत (ﷺ) उम्मुल मोमिनीन स़फ़िया बिन्ते हुय्यि (रज़ि.) के साथ वापस हुए। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उन्हें अपने लिये मुंतख़ब किया था। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनके लिये ऊबाया चादर से पर्दा किया और उन्हें अपनी सवारी पर अपने पीछे बिठाया। जब हम मुक़ामे स़ह्बा पहुँचे तो आपने एक चर्मी दस्तरख़्वान पर कुछ मलीदा तैया कराके रखवाया, फिर मुझे भेजा और मैं कुछ स़ह़ाबा को बुला लाया और सबने उसे खाया, ये आपकी दा'वते वलीमा थी। उसके बाद आप आगे बढ़े और उहुद पहाड़ दिखाई दिया। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ये पहाड़ हमसे मुहब्बत करता है और हम इससे मुहब्बत करते हैं। आप जब मदीना मुनव्वरह पहुँचे तो फ़र्माया, ऐ अल्लाह! मैं इस शहर के दोनों पहाड़ों के बीच के इलाक़े को उस त़रह़ हुर्मत वाला क़रार देता हूँ जिस त़रह़ इब्राहीम (अ़लैहि.) ने मक्का को हुर्मतवाला क़रार दिया था।

ऐ अल्लाह! यहाँ वालों के मुद्द में और उनके साअ में बरकत अता फ़र्मा। (राजेअ : 371)

बाब 37 : अज़ाबे क़ब्र से अल्लाह की पनाह मांगना

6364. हमसे अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उयैना ने, कहा हमसे मूसा बिन उक़्बा ने बयान किया, कहा कि मैंने उम्मे ख़ालिद बिन्ते ख़ालिद बिन सईद (रज़ि.) से सुना (मूसा ने) बयान किया कि मैंने किसी से नहीं सुना कि उनकी बयान की हुई हदीष से मुख़्तलिफ़ किसी ने नबी करीम (ﷺ) से सुना हो, उन्होंने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना कि क़ब्र के अज़ाब से अल्लाह की पनाह मांगता हूँ। (राजेअ : 1376)

6365. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल मलिक बिन उमेर ने बयान किया, उनसे मुस्अब बिन सअद बिन अबी वक़्क़ास ने कि सअद (रज़ि.) पाँच बातों का हुक्म देते थे और उन्हे नबी करीम (ﷺ) के हवाले से ज़िक्र करते थे कि आँहज़रत (ﷺ) इनसे पनाह मांगने का हुक्म करते थे कि, ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह मांगता हूँ बुख़्ल और बुज़दिली से और तेरी पनाह मांगता हूँ उससे कि बदतरीन बुढ़ापा मुझ पर आ जाए और तुझसे पनाह मांगता हूँ दुनिया के फ़ित्ने से, इससे मुराद दज्जाल का फ़ित्ना है और तुझसे पनाह मांगता हूँ क़ब्र के अज़ाब से। (राजेअ : 2822)

6366. हमसे उष्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन अब्दुल हमीद ने बयान किया, उनसे अबू वाइल ने, उनसे मसरूक़ ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मदीना के यहूदियों की दो बूढ़ी औरतें मेरे पास आईं और उन्होंने मुझसे कहा कि क़ब्र वालों को उनकी क़ब्र में अज़ाब होगा। लेकिन मैंने उन्हें झुठलाया और उनकी तस्दीक़ नहीं कर सकी। फिर वो दोनों औरतें चली गईं और नबी करीम (ﷺ) तशरीफ़ लाए तो मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! दो बूढ़ी औरतें आई थीं, फिर मैंने आपसे वाक़िया बयान किया। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उन्होंने सहीह कहा, क़ब्रवालों को अज़ाब होगा और उनके अज़ाब को

لَهُمْ فِي مُدِّهِمْ وَصَاعِهِمْ)).
[راجع: ٣٧١]

٣٧- باب التَّعَوُّذِ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ

٦٣٦٤- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ قَالَ: سَمِعْتُ أُمَّ خَالِدٍ بِنْتَ خَالِدٍ قَالَ: وَلَمْ أَسْمَعْ أَحَدًا سَمِعَ مِنَ النَّبِيِّ ﷺ غَيْرَهَا قَالَتْ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَتَعَوَّذُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ. [راجع: ١٣٧٦]

٦٣٦٥- حَدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ، عَنْ مُصْعَبٍ، قَالَ: كَانَ سَعْدٌ يَأْمُرُ بِخَمْسٍ وَيَذْكُرُهُنَّ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ كَانَ يَأْمُرُ بِهِنَّ ((اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْبُخْلِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ الْجُبْنِ، وَأَعُوذُ بِكَ أَنْ أُرَدَّ إِلَى أَرْذَلِ الْعُمُرِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الدُّنْيَا - يَعْنِي فِتْنَةَ الدَّجَّالِ - وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ)). [راجع: ٢٨٢٢]

٦٣٦٦- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: دَخَلَتْ عَلَيَّ عَجُوزَانِ مِنْ عُجُزِ يَهُودِ الْمَدِينَةِ فَقَالَتَا لِي: إِنَّ أَهْلَ الْقُبُورِ يُعَذَّبُونَ فِي قُبُورِهِمْ فَكَذَّبْتُهُمَا، وَلَمْ أُنْعِمْ أَنْ أُصَدِّقَهُمَا فَخَرَجَتَا وَدَخَلَ عَلَيَّ النَّبِيُّ ﷺ فَقُلْتُ لَهُ يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّ عَجُوزَيْنِ وَذَكَرْتُ لَهُ

فَقَال: ((صَدَقَتَا إِنَّهُمْ يُعَذَّبُونَ عَذَابًا تَسْمَعُهُ الْبَهَائِمُ كُلُّهَا)) فَمَا رَأَيْتُهُ بَعْدُ فِي صَلاَةٍ إِلاَّ تَعَوَّذَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ.
[راجع: ١٠٤٩]

तमाम चौपाये सुनेंगे। फिर मैंने देखा कि आँहज़रत (ﷺ) हर नमाज़ में क़ब्र के अ़ज़ाब से अल्लाह की पनाह मांगने लगे। (राजेअ: 1049)

٣٨- باب التَّعَوُّذِ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ

बाब 38 : ज़िंदगी और मौत के फ़ित्नों से अल्लाह की पनाह मांगना

٦٣٦٧- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا الْمُعْتَمِرُ قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: كَانَ نَبِيُّ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْعَجْزِ وَالْكَسَلِ، وَالْجُبْنِ وَالْهَرَمِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ)). [راجع: ٢٨٢٣]

6367. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे मुअ़तमिर बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा कि मैंने अपने वालिद से सुना, बयान किया कि मैंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) कहा करते थे कि, ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह मांगता हूँ आजिज़ी से, सुस्ती से, बुज़दिली से और बहुत ज़्यादा बुढ़ापे से और मैं तेरी पनाह मांगता हूँ अ़ज़ाबे क़ब्र से और मैं तेरी पनाह मांगता हूँ ज़िंदगी और मौत की आज़माइशों से। (राजेअ : 2823)

٣٩- باب التَّعَوُّذِ مِنَ الْمَأْثَمِ وَالْمَغْرَمِ

बाब 39 : गुनाह और क़र्ज़ से अल्लाह की पनाह मांगना

٦٣٦٨- حَدَّثَنَا مُعَلَّى بْنُ أَسَدٍ، حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَقُولُ: ((اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكَسَلِ وَالْهَرَمِ وَالْمَأْثَمِ وَالْمَغْرَمِ، وَمِنْ فِتْنَةِ الْقَبْرِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ، وَمِنْ فِتْنَةِ النَّارِ وَعَذَابِ النَّارِ، وَمِنْ شَرِّ فِتْنَةِ الْغِنَى وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْفَقْرِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيحِ الدَّجَّالِ، اللَّهُمَّ اغْسِلْ عَنِّي خَطَايَايَ بِمَاءِ الثَّلْجِ وَالْبَرَدِ، وَنَقِّ قَلْبِي مِنَ الْخَطَايَا كَمَا نَقَّيْتَ الثَّوْبَ الأَبْيَضَ مِنَ الدَّنَسِ، وَبَاعِدْ بَيْنِي وَبَيْنَ خَطَايَايَ كَمَا بَاعَدْتَ بَيْنَ

6368. हमसे मुअ़ल्ला बिन असद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे वुहैब ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने बयान किया, उनसे उनके वालिद उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) कहा करते थे, ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह मांगता हूँ सुस्ती से, बहुत ज़्यादा बुढ़ापे से, गुनाह से, क़र्ज़ से और क़ब्र की आज़माइश से और क़ब्र के अ़ज़ाब से और दोज़ख़ की आज़माइश से और दोज़ख़ के अ़ज़ाब से और मालदारी की आज़माइश से और तेरी पनाह मांगता हूँ मुहताजी की आज़माइश से और तेरी पनाह मांगता हूँ मसीह दज्जाल की आज़माइश से। ऐ अल्लाह! मुझसे मेरे गुनाहों को बर्फ़ और ओले के पानी से धो दे और मेरे दिल को ख़ताओं से इस तरह पाक साफ़ कर दे जिस तरह तूने सफ़ेद कपड़े को मैल से पाक साफ़ कर दिया और मुझमें और मेरे गुनाहों में इतनी दूरी कर दे जितनी मश्रिक़ और मग़रिब में दूरी है। (राजेअ : 832)

الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ)).[راجع: ٨٣٢]

बाब 40 : बुज़दिली और सुस्ती से अल्लाह की पनाह मांगना

٤٠-باب الاِسْتِعَاذَةِ مِنَ الْجُبْنِ وَالْكَسَلِ

6369. हमसे ख़ालिद बिन मुख़्लद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुलैमान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे अ़म्र बिन अबी अ़म्र ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, कहा कि नबी करीम (ﷺ) कहते थे, ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह मांगता हूँ ग़म व अलम से, सुस्ती, बुज़दिली, बुख़्ल, क़र्ज़ चढ़ जाने और लोगों के ग़ल्बे से।

٦٣٦٩- حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ، قَالَ: حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ أَبِي عَمْرٍو قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسًا قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَقُولُ: ((اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحَزَنِ وَالْعَجْزِ وَالْكَسَلِ وَالْجُبْنِ وَالْبُخْلِ وَضَلَعِ الدَّيْنِ وَغَلَبَةِ الرِّجَالِ)).

बाब 41 : बुख़्ल से अल्लाह की पनाह मांगना बुख़्ल (बाअ के ज़म्मा और ख़ाअ के सकून)

٤١- باب التَّعَوُّذُ مِنَ الْبُخْلِ

और बुख़्ल (बाअ के नसब और ख़ाअ के नसब के साथ) एक ही हैं जैसे हुज़्न और हज़नि

الْبُخْلُ وَالْبَخَلُ وَاحِدٌ مِثْلُ الْحُزْنِ وَالْحَزَنِ.

6370. हमसे मुहम्मद बिन मुष़न्ना ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे ग़ुन्दर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल मलिक बिन उ़मैर ने बयान किया, उनसे मुस्अ़ब बिन सअ़द ने बयान किया और उनसे सअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) ने कि वो उन पाँच बातों से पनाह मांगने का हुक्म देते थे और उन्हें नबी करीम (ﷺ) के हवाले से बयान करते थे कि, ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह मांगता हूँ बुख़्ल से, मैं तेरी पनाह मांगता हूँ बुज़दिली से, मैं तेरी पनाह मांगता हूँ उससे कि नाकारा उ़म्र में पहुँचा दिया जाऊँ, मैं तेरी पनाह मांगता हूँ दुनिया की आज़माइश से और मैं तेरी पनाह माँगता हूँ क़ब्र के अ़ज़ाब से। (राजेअ़ : 2822)

٦٣٧٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى. حَدَّثَنِي غُنْدَرٌ قَالَ : حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ، عَنْ مُصْعَبِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ كَانَ يَأْمُرُ بِهَؤُلاَءِ الْخَمْسِ وَيُحَدِّثُهُنَّ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْبُخْلِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ الْجُبْنِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ أَنْ أُرَدَّ إِلَى أَرْذَلِ الْعُمُرِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الدُّنْيَا، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ)). [راجع: ٢٨٢٢]

बाब 42 : नाकारा उ़म्र से अल्लाह की पनाह मांगना,

٤٢- باب التَّعَوُّذِ مِنْ أَرْذَلِ الْعُمُرِ

सूरह हूद में जो लफ़्ज़ अराज़िलुना आया है उससे अस्क़ातुना या'नी कमीने, पापी लोग मुराद हैं।

أَرَاذِلُنَا : أَسْقَاطُنَا.

6371. हमसे इस हदीष़ को अबू मअ़मर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल वारिष़ बिन सईद ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन सुहैब ने बयान किया और उनसे

٦٣٧١- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ صُهَيْبٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ

अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) पनाह मांगते थे और कहते थे कि, ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह मांगता हूँ सुस्ती से और तेरी पनाह माँगता हूँ बुज़दिली से और तेरी पनाह माँगता हूँ नाकारा बुढ़ापे से और तेरी पनाह मांगता हूँ बुख़्ल से। (राजेअ़ : 2823)

رَسُولُ اللهِ ﷺ يَتَعَوَّذُ يَقُولُ: ((اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكَسَلِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ الْجُبْنِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ الْهَرَمِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ الْبُخْلِ)). [راجع: ٢٨٢٣]

बाब 43 : दुआ से वबा और परेशानी दूर हो जाती है

٤٣- باب الدُّعَاءِ يَرْفَعُ الْوَبَاءَ وَالْوَجَعَ

6372. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ अल्लाह! हमारे दिल में मदीना की ऐसी ही मुहब्बत पैदा कर दे जैसी तूने मक्का की मुहब्बत हमारे दिल में पैदा की है बल्कि उससे भी ज़्यादा और उसके बुख़ार को जुह़्फ़ा में मुंतक़िल कर दे। ऐ अल्लाह! हमारे लिये हमारे मुद्द और स़ाअ़ में बरकत अ़ता फ़र्मा। (राजेअ़ : 1889)

٦٣٧٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((اللَّهُمَّ حَبِّبْ إِلَيْنَا الْمَدِينَةَ كَمَا حَبَّبْتَ إِلَيْنَا مَكَّةَ أَوْ أَشَدَّ وَانْقُلْ حُمَّاهَا إِلَى الْجُحْفَةِ، اللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِي مُدِّنَا وَصَاعِنَا)). [راجع: ١٨٨٩]

6373. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने, कहा हमको इब्ने शिहाब ने ख़बर दी, उन्हें आ़मिर बिन सअ़द ने और उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) हज्जतुल वदाअ़ के मौक़े पर मेरी एयादत के लिये तशरीफ़ लाए। मेरी उस बीमारी ने मुझे मौत से क़रीब कर दिया था। मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप ख़ुद मुशाहिदा कर रहे हैं कि बीमारी ने मुझे कहाँ पहुँचा दिया है और मेरे पास माल और दौलत है और सिवा एक लड़की के उसका और कोई वारिष़ नहीं, क्या मैं अपनी दौलत का दो तिहाई स़दक़ा कर दूँ? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि नहीं। मैंने अ़र्ज़ किया फिर आधी का कर दूँ? फ़र्माया कि एक तिहाई बहुत है अगर तुम अपने वारिष़ों को मालदार छोड़ो तो ये उससे बेहतर है कि उन्हें मुह़ताज छोड़ दो और वो लोगों के सामने हाथ फैलाते फिरें और यक़ीन रखो कि तुम जो कुछ भी ख़र्च करोगे और उससे मक़्सूद अल्लाह की ख़ुशनूदी हुई तुम्हें तो उस पर ष़वाब मिलेगा, यहाँ तक कि अगर तुम अपनी बीवी के मुँह में लुक़्मा रखोगे (तो उस पर भी तुम्हें ष़वाब मिलेगा) मैंने

٦٣٧٣- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، قَالَ : أَخْبَرَنَا ابْنُ شِهَابٍ عَنْ عَامِرِ بْنِ سَعْدٍ أَنَّ أَبَاهُ قَالَ: عَادَنِي رَسُولُ اللهِ ﷺ فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ مِنْ شَكْوَى أَشْفَيْتُ مِنْهُ عَلَى الْمَوْتِ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ بَلَغَ بِي مَا تَرَى مِنَ الْوَجَعِ وَأَنَا ذُو مَالٍ وَلاَ يَرِثُنِي إِلاَّ ابْنَةٌ لِي وَاحِدَةٌ أَفَأَتَصَدَّقُ بِثُلُثَيْ مَالِي؟ قَالَ: ((لاَ)) قُلْتُ: فَبِشَطْرِهِ قَالَ: ((الثُّلُثُ كَثِيرٌ إِنَّكَ إِنْ تَذَرَ وَرَثَتَكَ أَغْنِيَاءَ خَيْرٌ مِنْ أَنْ تَذَرَهُمْ عَالَةً يَتَكَفَّفُونَ النَّاسَ، وَإِنَّكَ لَنْ تُنْفِقَ نَفَقَةً تَبْتَغِي بِهَا وَجْهَ اللهِ إِلاَّ أُجِرْتَ حَتَّى مَا تَجْعَلُ فِي فِي امْرَأَتِكَ)) قُلْتُ: أُخَلَّفُ بَعْدَ

أَصْحَابِي؟ قَالَ ((إِنَّكَ لَنْ تُخَلَّفَ، فَتَعْمَلَ عَمَلاً تَبْتَغِي بِهِ وَجْهَ اللهِ إِلاَّ ازْدَدْتَ دَرَجَةً وَرِفْعَةً، وَلَعَلَّكَ تُخَلَّفُ حَتَّى يَنْتَفِعَ بِكَ أَقْوَامٌ وَيُضَرَّ بِكَ آخَرُونَ، اللَّهُمَّ أَمْضِ لأَصْحَابِي هِجْرَتَهُمْ، وَلاَ تَرُدَّهُمْ عَلَى أَعْقَابِهِمْ))، لَكِنِ الْبَائِسُ سَعْدُ بْنُ خَوْلَةَ. قَالَ سَعْدٌ: رَثَى لَهُ النَّبِيُّ ﷺ مِنْ أَنْ تُوُفِّيَ بِمَكَّةَ.

अ़र्ज़ किया कि मैं अपने साथियों से पीछे छोड़ दिया जाऊँगा? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर तुम पीछे छोड़ दिये जाओ और फिर कोई अ़मल करो जिससे मक़्सूद अल्लाह की रज़ा हो तो तुम्हारा मर्तबा बुलंद होगा और उम्मीद है कि तुम अभी ज़िन्दा रहोगे और कुछ क़ौमें तुमसे फ़ायदा उठाएँगी और कुछ नुक़्सान उठाएँगी। ऐ अल्लाह! मेरे सहाबा की हिजरत को कामयाब फ़र्मा और इन्हें उल्टे पाँव वापस न कर, अल्बत्ता अफ़सोस सअ़द बिन ख़ौला का है। सअ़द ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन पर अफ़सोस का इज़्हार इस वजह से किया था कि उनका इंतिक़ाल मक्का मुअ़ज़्ज़मा में हो गया था।

٤٤- باب الاِسْتِعَاذَةِ مِنْ أَرْذَلِ الْعُمُرِ وَمِنْ فِتْنَةِ الدُّنْيَا وَفِتْنَةِ النَّارِ

बाब 44 : नाकारा उ़म्र, दुनिया की आज़माइश और दोज़ख़ की आज़माइश से अल्लाह की पनाह मांगना

٦٣٧٤- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا الْحُسَيْنُ، عَنْ زَائِدَةَ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ، عَنْ مُصْعَبٍ، عَنْ أَبِيهِ قَالَ: تَعَوَّذُوا بِكَلِمَاتٍ كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَتَعَوَّذُ بِهِنَّ: ((اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْجُبْنِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ الْبُخْلِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ أَنْ أُرَدَّ إِلَى أَرْذَلِ الْعُمُرِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الدُّنْيَا وَعَذَابِ الْقَبْرِ)). [راجع: ٢٨٢٢]

6374. हमसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमको हुसैन बिन अ़ली जुअ़फ़ी ने ख़बर दी, उन्हें ज़ाइदा बिन क़ुदामा ने, उन्हें अ़ब्दुल मलिक बिन उ़मैर ने, उन्हें मुस्अ़ब बिन सअ़द ने और उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि इन कलिमात के ज़रिये अल्लाह की पनाह मांगो जिनके ज़रिये नबी करीम (ﷺ) पनाह मांगते थे, ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह माँगता हूँ बुज़दिली से, तेरी पनाह मांगता हूँ बुख़्ल से, तेरी पनाह माँगता हूँ उससे कि नाकारा उ़म्र को पहुँचूँ, तेरी पनाह मांगता हूँ दुनिया की आज़माइश से और क़ब्र के अ़ज़ाब से। (राजेअ : 2822)

٦٣٧٥- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مُوسَى، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، قَالَ : حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَقُولُ: ((اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكَسَلِ وَالْهَرَمِ وَالْمَغْرَمِ وَالْمَأْثَمِ، اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ النَّارِ، وَفِتْنَةِ النَّارِ، وَعَذَابِ الْقَبْرِ، وَشَرِّ فِتْنَةِ الْغِنَى وَشَرِّ فِتْنَةِ الْفَقْرِ،

6375. हमसे यह्या बिन मूसा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे वकीअ़ ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने बयान किया, उनसे उनके वालिद उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने बयान किया और उनसे उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) दुआ़ किया करते थे कि, ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह मांगता हूँ सुस्ती से, नाकारा उ़म्र से, बुढ़ापे से, क़र्ज़ से और गुनाह से। ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह मांगता हूँ दोज़ख़ के अ़ज़ाब से, दोज़ख़ की आज़माइश से, क़ब्र के अ़ज़ाब से, मालदारी की बुरी आज़माइश से, मुह्ताजी की

बुरी आज़माइश से और मसीह दज्जाल की आज़माइश से। ऐ अल्लाह! मेरे गुनाहों को बर्फ़ और ओले के पानी से धो दे और मेरे दिल को ख़ताओं से पाक कर दे, जिस तरह सफ़ेद कपड़ा मैल से साफ़ कर दिया जाता है और मेरे गुनाहों के दरम्यान इतना फ़ासिला कर दे जितना मश्रिक़ व मग़रिब में है। (राजेअ : 832)

وَمِنْ شَرِّ فِتْنَةِ الْمَسِيحِ الدَّجَّالِ، اللَّهُمَّ اغْسِلْ خَطَايَايَ بِمَاءِ الثَّلْجِ وَالْبَرَدِ، وَنَقِّ قَلْبِي مِنَ الْخَطَايَا كَمَا يُنَقَّى الثَّوْبُ الأَبْيَضُ مِنَ الدَّنَسِ، وَبَاعِدْ بَيْنِي وَبَيْنَ خَطَايَايَ كَمَا بَاعَدْتَ بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ)). [راجع: ٨٣٢]

बाब 45 : मालदारी के फ़ित्ने से अल्लाह की पनाह मांगना

٤٥- باب الاِسْتِعَاذَةِ مِنْ فِتْنَةِ الْغِنَى

6376. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सलाम बिन अबी मुतीअ ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उर्वा ने बयान किया, उनसे उनके वालिद उर्वा बिन ज़ुबैर ने और उनसे उनकी ख़ाला (उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) पनाह मांगा करते थे कि, ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह मांगता हूँ दोज़ख़ की आज़माइश से, दोज़ख़ के अज़ाब से, और तेरी पनाह मांगता हूँ क़ब्र की आज़माइश से और तेरी पनाह मांगता हूँ क़ब्र के अज़ाब से और तेरी पनाह मांगता हूँ मालदारी की आज़माइश से और तेरी पनाह मांगता हूँ मसीह दज्जाल की आज़माइश से। (राजेअ : 832)

٦٣٧٦- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا سَلاَّمُ بْنُ أَبِي مُطِيعٍ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ خَالَتِهِ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَتَعَوَّذُ: ((اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ النَّارِ وَمِنْ عَذَابِ النَّارِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْقَبْرِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْغِنَى، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْفَقْرِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيحِ الدَّجَّالِ)). [راجع: ٨٣٢]

तश्रीह : माल व दौलत के फ़ित्ने की मिष़ाल क़ारून की है जिसे अल्लाह ने माल के घमण्ड की वजह से ज़मींदोज़ कर दिया और माल की बरकत की मिष़ाल हज़रत उ़ष्मान ग़नी (रज़ि.) की है जो तारीख़े इस्लाम में क़यामत तक के लिये नाम पा गये। **रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अर्ज़ाहु।** अल्लाह पाक हर मुसलमान को हज़रत उ़ष्मान ग़नी (रज़ि.) जैसा ग़नी बनाए, आमीन।

बाब 46 : मुहताजी के फ़ित्ने से पनाह मांगना

٤٦- باب التَّعَوُّذِ مِنْ فِتْنَةِ الْفَقْرِ

6377. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अबू मुआविया ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमको हिशाम बिन उर्वा ने ख़बर दी, उन्हें उनके वालिद उर्वा बिन ज़ुबैर ने और उनसे उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ये दुआ किया करते थे। ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह मांगता हूँ दोज़ख़ के फ़ित्ने से और दोज़ख़ के अ़ज़ाब से और क़ब्र की आज़माइश से और क़ब्र के अ़ज़ाब से और मालदारी की बुरी आज़माइश से और मुहताजी की बुरी आज़माइश से और मसीह दज्जाल की बुरी

٦٣٧٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ، أَخْبَرَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، أَخْبَرَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَقُولُ: ((اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ النَّارِ وَعَذَابِ النَّارِ، وَفِتْنَةِ الْقَبْرِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ، وَشَرِّ فِتْنَةِ الْغِنَى، وَشَرِّ فِتْنَةِ الْفَقْرِ، اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ فِتْنَةِ

आज़माइश से। ऐ अल्लाह! मेरे दिल को बर्फ़ और ओले के पानी से धो दे और मेरे दिल को ख़ताओं से साफ़ कर दे जैसा कि सफ़ेद कपड़े को मैल से साफ़ करता है और मेरे और मेरी ख़ताओं के बीच इतनी दूरी कर दे जितनी दूरी मशरिक़ और मग़रिब में है। ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह मांगता हूँ सुस्ती से, गुनाह से और क़र्ज़ से। (राजेअ : 832)

الْمَسِيحِ الدَّجَّالِ، اللَّهُمَّ اغْسِلْ قَلْبِي بِمَاءِ الثَّلْجِ وَالْبَرَدِ، وَنَقِّ قَلْبِي مِنَ الْخَطَايَا كَمَا نَقَّيْتَ الثَّوْبَ الأَبْيَضَ مِنَ الدَّنَسِ، وَبَاعِدْ بَيْنِي وَبَيْنَ خَطَايَايَ كَمَا بَاعَدْتَ بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ، اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكَسَلِ وَالْمَأْثَمِ وَالْمَغْرَمِ)).

[راجع: ٨٣٢]

तशरीह : मुहताजी और क़र्ज़ बहुत ही ख़तरनाक अज़ाब हैं। मेरी दिन और रात ये दुआ है कि अल्लाह मुझको और मेरे मुता'ल्लिक़ीन और शाऐक़ीने बुख़ारी शरीफ़ को वक़्ते आख़िर तक क़र्ज़ और मुहताजी से बचाए। ख़ास तौर से मेरे जो मुख़्लिसीन अदायगी क़र्ज़ के लिये दुआओं की दरख़्वास्त करते रहते हैं अल्लाह पाक उन सबका क़र्ज़ अदा कराए और मुझको भी इस हालत में मौत दे कि मैं किसी का एक पैसे का भी मक़रूज़ न होऊँ। मौत से पहले अल्लाह सारा क़र्ज़ अदा करा दे। आमीन या रब्बल आलमीन (राज़)

बाब 47 : बरकत के साथ माल की ज़्यादती के लिये दुआ करना

٤٧- باب الدُّعَاءِ بِكَثْرَةِ الْمَالِ مَعَ الْبَرَكَةِ

6378,79. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर (मुहम्मद बिन जा'फ़र) ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि मैंने क़तादा से सुना, उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया और उनसे उम्मे सुलैम (रज़ि.) ने कहा कि उन्होंने कहा या रसूलल्लाह! अनस (रज़ि.) आप (ﷺ) का ख़ादिम है उसके लिए अल्लाह से दुआ कीजिए। आँहज़रत (ﷺ) ने दुआ फ़र्माई, ऐ अल्लाह! उसके माल और औलाद में ज़्यादती कर और जो कुछ तू उसे दे उसमें बरकत अता फ़र्मा। और हिशाम बिन ज़ैद से रिवायत है कि उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से इसी तरह सुना। (दीगर मक़ाम : 6381)

٦٣٧٨، ٦٣٧٩- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ : سَمِعْتُ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ، عَنْ أُمِّ سُلَيْمٍ أَنَّهَا قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ أَنَسٌ خَادِمُكَ ادْعُ اللهَ لَهُ قَالَ: ((اللَّهُمَّ أَكْثِرْ مَالَهُ وَوَلَدَهُ وَبَارِكْ لَهُ فِيمَا أَعْطَيْتَهُ)). وَعَنْ هِشَامِ بْنِ زَيْدٍ، سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ مِثْلَهُ. [طرفه في: ٦٣٨١].

बाब : बरकत के साथ बहुत औलाद की दुआ करना

- باب الدُّعَاءِ بِكَثْرَةِ الْوَلَدِ مَعَ الْبَرَكَةِ

6380,81. हमसे अबू ज़ैद सईद बिन रबीअ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, उन्होंने कहा मैंने अनस (रज़ि.) से सुना कि उम्मे सुलैम (रज़ि.) ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर! अनस (रज़ि.) आपका

٦٣٨٠، ٦٣٨١- حَدَّثَنَا أَبُو زَيْدٍ سَعِيدُ بْنُ الرَّبِيعِ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَتْ

ख़ादिम है उसके लिये दुआ फ़र्माइये। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ अल्लाह! उसके माल व औलाद में ज़्यादती कर और जो कुछ तू दे उसमें बरकत अता फ़र्मा। (राजेअ : 1982)

ام سُلَيْمٍ أَنَسٌ خَادِمُكَ ادْعُ اللهَ لَهُ قَالَ: ((اللَّهُمَّ أَكْثِرْ مَالَهُ وَوَلَدَهُ وَبَارِكْ لَهُ فِيمَا أَعْطَيْتَهُ)). [راجع: ١٩٨٢]

हज़रत अनस (रज़ि.) के हक़ में दुआ-ए-नबवी क़ुबूल हुई। सौ साल से ज़ाइद उम्र पाई और इंतिक़ाल के वक़्त औलाद दर औलाद की ता'दाद सौ से भी ज़ाइद थी। ज़ालिक फ़ज़्लुल्लाहि युअतीहि मय्यंशाउ

बाब 48 : इस्तिख़ारा की दुआ का बयान

٤٨- باب الدُّعَاءِ عِنْدَ الإِسْتِخَارَةِ

तश्रीह : उस्ताज़ुल हिन्द हज़रत शाह वलीउल्लाह देहलवी (रह़.) फ़र्माते हैं, **व मिन्हा सलातुल्इस्तिख़ारति व कान अहलुल्जाहिलिय्यति इज़ा अरज़त लहुम हाजतुम मिन सफ़रिन औ निकाहिन औ बैइन इस्तक़्समू बिल्अज़्लाम फनहा अन्हुन्नबिय्यु (ﷺ) लिअन्नहु गैर मुअतमदिन अला अहलिन व इन्नमा हुव महज़ इत्तिफ़ाक़ व लिअन्नहू इफ़्तिराउन अलल्लाहि बिकौलिही अमरनी रब्बी व नहानी रब्बी फइवजुहुम मिन ज़ालिल्इस्तिखारति फिल्उमूरि तर्याक़ मुजर्रब लितहलीलि शिब्हिल्मलाइकति व ज़बतन्नबिय्यु (ﷺ) आदाबहा व दुआअहा फशरअ रक्अतैनि** अल्अख़। या'नी जाहिलियत वालों को सफ़र या शादी या तिजारत की कोई ज़रूरत पेश आई तो वो बुतों के हाथों में दिये हुए तीरों से फ़ाल निकाला करते थे। अहले इस्लाम को इन हरकतों से रोका गया क्योंकि ये महज़ झूठ और शिर्किया काम था, उसके ऐवज़ में रसूले करीम (ﷺ) ने दुआ-ए-इस्तिख़ारह की तालीम फ़र्माई जो तर्याक़ मुजर्रब है उसके लिये दो रकअ़ात नमाज़े इस्तिख़ारह मशरूअ क़रार दी और ये दुआ ता'लीम फ़र्माई।

6382. हमसे अबू मुस्अ़ब मुत्रफ़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रहमान बिन अबी अल मवाल ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन मुंकदिर ने और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) हमें तमाम मामलात में इस्तिख़ारा की ता'लीम देते थे, क़ुर्आन की सूरत की तरह (नबी-ए-करीम ﷺ ने फ़र्माया) जब तुममें से कोई शख़्स किसी (मुबाह) काम का इरादा करे (अभी पक्का अ़ज़्म न हुआ हो) तो दो रकअ़ात (नफ़्ल) पढ़े उसके बाद यूँ दुआ करे, ऐ अल्लाह! मैं भलाई मांगता हूँ (इस्तिख़ारा) तेरी भलाई से, तू इल्म वाला है, मुझे इल्म नहीं और तू तमाम पोशीदा बातों को जानने वाला है, ऐ अल्लाह! अगर तू जानता है कि ये काम मेरे लिये बेहतर है, मेरे दीन के ए'तिबार से, मेरी मआ़श और मेरे अंजामकार के ए'तिबार से या दुआ में ये अल्फ़ाज़ कहे फ़ी आजिल अम्री व आजिलिही तू इसे मेरे लिये मुक़द्दर कर दे और अगर तू जानता है कि ये काम मेरे लिये बुरा है मेरे दीन के लिये, मेरी ज़िंदगी के लिये और मेरे अंजाम कार के लिये या ये अल्फ़ाज़ फ़र्माए, फ़ी आजिल अम्री व आजिलिही तू इसे मुझसे फेर दे और मुझे इससे फेर दे और मेरे लिये भलाई मुक़द्दर कर दे जहाँ कहीं भी वो हो और फिर मुझे

٦٣٨٢- حَدَّثَنَا مُطَرِّفُ بْنُ عَبْدِ اللهِ أَبُو مُصْعَبٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي الْمَوَالِ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ، عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُعَلِّمُنَا الإِسْتِخَارَةَ فِي الأُمُورِ كُلِّهَا، كَالسُّورَةِ مِنَ الْقُرْآنِ إِذَا هَمَّ بِالأَمْرِ فَلْيَرْكَعْ رَكْعَتَيْنِ، ثُمَّ يَقُولُ : ((اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْتَخِيرُكَ بِعِلْمِكَ، وَأَسْتَقْدِرُكَ بِقُدْرَتِكَ وَأَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ الْعَظِيمِ، فَإِنَّكَ تَقْدِرُ وَلاَ أَقْدِرُ، وَتَعْلَمُ وَلاَ أَعْلَمُ، وَأَنْتَ عَلاَّمُ الْغُيُوبِ، اللَّهُمَّ إِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّ هَذَا الأَمْرَ خَيْرٌ لِي فِي دِينِي وَمَعَاشِي وَعَاقِبَةِ أَمْرِي - أَوْ قَالَ فِي عَاجِلِ أَمْرِي وَآجِلِهِ - فَاصْرِفْهُ عَنِّي وَاصْرِفْنِي عَنْهُ وَاقْدُرْ لِي الْخَيْرَ حَيْثُ كَانَ، ثُمَّ رَضِّنِي بِهِ وَيُسَمِّي حَاجَتَهُ)). [راجع ١١٦٢]

उससे मुत्मइन कर दे (ये दुआ करते वक़्त) अपनी ज़रूरत का बयान कर देना चाहिये। (राजेअ : 1162)

तश्रीह : जब किसी शख़्स को एक काम करने या न करने में तरद्दुद हो या दो बातों या दो चीज़ों में से एक के इख़्तियार करने में तो बाब की ह़दीष़ के मुवाफ़िक़ इस्तिख़ारा करे। अल्लाह तआला उस पर ख़्वाब में या और किसी त़रह़ जो उसके ह़क़ में बेहतर होगा उस पर खोल देगा या उसी की तौफ़ीक़ देगा। बस जो इस्तिख़ारा ब-सनदे स़ह़ीह़ आँह़ज़रत (ﷺ) से मन्क़ूल है वो यही है। बाक़ी इस्तिख़ारे जो शिया इमामिया किया करते हैं। मष़लन तस्बीह़ पर या इस्तिख़ारा ज़ातुर्रिक़ाअ उनकी अस़ल ह़दीष़ की किताबों में नहीं मिलती। इस्तिख़ारा करना गोया अल्लाह से त़लबे ख़ैर करना और मश्वरा त़लब करना है। क़ुदरत के इशारे होते हैं और उनकी बिना पर अहले ईमान स़ाह़िबाने फ़िरासतुल्लाह के इशारों को समझकर उनके मुत़ाबिक़ क़दम उठाते हैं। इस मक़्स़द के लिये दुआ-ए-मस्नूना जो यहाँ लिखी गई है बेहतरीन दुआ है और बकष़रत यूँ पढ़ना **अल्लाहुम्म खैरुल्ली व अख़्तिरली** भी इस्तिख़ारा के लिये बेहतरीन अ़मल है।

बाब 49 : वुज़ू के वक़्त की दुआ का बयान

6383. हमसे मुह़म्मद बिन अ़लाअ ने बयान किया, कहा हमसे उसामा ने बयान किया, उनसे बुरैद बिन अ़ब्दुल्लाह ने, उनसे अबू बुर्दा ने और उनसे अबू मूसा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने पानी मांगा, फिर आपने वुज़ू किया, फिर हाथ उठाकर ये दुआ की। ऐ अल्लाह! उबैद अबू आ़मिर की मग़्फ़िरत फ़र्मा। मैंने उस वक़्त आँह़ज़रत (ﷺ) की बग़ल की सफ़ेदी देखी। फिर आपने दुआ की। ऐ अल्लाह! क़यामत के दिन इसे बहुत सी इंसानी मख़्लूक़ से बुलंद मर्तबा अ़त़ा फ़र्माइयो। (राजेअ : 2884)

٤٩ - باب الدُّعَاءِ عِنْدَ الْوُضُوءِ

٦٣٨٣ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ بُرَيْدِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى قَالَ: دَعَا النَّبِيُّ ﷺ بِمَاءٍ فَتَوَضَّأَ ثُمَّ رَفَعَ يَدَيْهِ فَقَالَ ((اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِعُبَيْدٍ أَبِي عَامِرٍ)) وَرَأَيْتُ بَيَاضَ إِبْطَيْهِ فَقَالَ: ((اللَّهُمَّ اجْعَلْهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَوْقَ كَثِيرٍ مِنْ خَلْقِكَ مِنَ النَّاسِ)).

[راجع: ٢٨٨٤]

बाब 50 : किसी बुलंद टीले पर चढ़ते वक़्त की दुआ का बयान

ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने कहा क़ुर्आन में जो ख़ैरुन उ़क़्बा आया है तो आ़क़िबत और अ़क़ब के एक ही मा'नी हैं जिनसे आख़िरत मुराद है।

6384. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुख़्तियानी ने बयान किया, उनसे अबू उ़ष़्मान नह्दी ने और उनसे अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ एक सफ़र में थे जब हम किसी बुलंद जगह पर चढ़ते तो तक्बीर कहते। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया

٥٠ - باب الدُّعَاءِ إِذَا عَلاَ عَقَبَةً

قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ خَيْرٌ عُقْبًا عَاقِبَةً وَعُقْبَى وَعَاقِبَةٌ وَاحِدٌ وَهُوَ الآخِرَةُ

٦٣٨٤ - حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ، عَنْ أَبِي مُوسَى قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي سَفَرٍ فَكُنَّا إِذَا عَلَوْنَا كَبَّرْنَا فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَيُّهَا النَّاسُ ارْبَعُوا عَلَى

أَنْفُسِكُمْ فَإِنَّكُمْ لاَ تَدْعُونَ أَصَمَّ وَلاَ غَائِبًا، وَلَكِنْ تَدْعُونَ سَمِيعًا بَصِيرًا)) ثُمَّ أَتَى عَلَيَّ وَأَنَا أَقُولُ فِي نَفْسِي لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللهِ فَقَالَ : ((يَا عَبْدَ اللهِ بْنَ قَيْسٍ قُلْ: لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللهِ فَإِنَّهَا كَنْزٌ مِنْ كُنُوزِ الْجَنَّةِ - أَوْ قَالَ - أَلاَ أَدُلُّكَ عَلَى كَلِمَةٍ هِيَ كَنْزٌ مِنْ كُنُوزِ الْجَنَّةِ؟ لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللهِ)).

[راجع: ٢٩٩٢]

लोगों! अपने ऊपर रहम करो, तुम किसी बहरे या ग़ायब अल्लाह को नहीं पुकारते हो तुम तो उस ज़ात को पुकारते हो जो बहुत ज़्यादा सुनने वाला, बहुत ज़्यादा देखने वाला है। फिर आँहज़रत (ﷺ) मेरे पास तशरीफ़ लाए। मैं उस वक़्त ज़ेरे लब कह रहा था। ला हौल वला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस कहो, ला हौल वला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह क्योंकि ये जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना है, या आँहज़रत (ﷺ) ने ये फ़र्माया क्या मैं तुम्हें एक ऐसा कलिमा न बता दूँ जो जन्नत के ख़ज़ानों मे से एक ख़ज़ाना है। ला हौल वला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह। (राजेअ़ : 2992)

तश्रीह : इस कलिमे में सब कुछ अल्लाह ही के हवाले किया गया है। लिहाज़ा जो शख़्स अल्लाह पाक पर ऐसा पुख़्ता अ़क़ीदा रखेगा वो यक़ीनन जन्नती होगा। मज़ीद तफ़्सील आगे आ रही है। दुआ में हद से ज़्यादा चिल्लाना भी कोई अम्रे मुस्तहसन नहीं है। **वदऊ रब्बकुम तज़र्रूअंव्व ख़ुफ़्यतन इन्नहू ला युहिब्बुलमुअतदीन।**

٥١- بَابُ الدُّعَاءِ إِذَا هَبَطَ وَادِيًا.

बाब 51 : किसी ढलान में उतरते वक़्त की दुआ

فِيهِ حَدِيثُ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

इस बाब में हज़रत जाबिर (रज़ि.) की हदीष़ है

इसमे यूँ है जब हम बुलंदी पर चढ़ते तो तक्बीर कहते और जब नशीब में उतरते तो तस्बीह़ कहते। बाब के इष़्बात के लिये हदीषे़ जाबिर ही को काफ़ी समझा गया।

٥٢- بَابُ الدُّعَاءِ إِذَا أَرَادَ سَفَرًا، أَوْ رَجَعَ

बाब 52 : सफ़र में जाते वक़्त या सफ़र से वापसी के वक़्त दुआ करना

فِيهِ يَحْيَى بْنُ إِسْحَاقَ عَنْ أَنَسٍ.

इसमें एक हदीष़ यह्या बिन इस्हाक़ से मरवी है जो उन्होंने हज़रत अनस (रज़ि.) से रिवायत की है।

तश्रीह : इमाम बुख़ारी (रह़.) ने सफ़र में निकलते वक़्त की दुआ इस बाब में बयान नहीं की शायद उनको कोई ह़दीष़ अपनी शर्त पर न मिली होगी। इमाम मुस्लिम ने इब्ने उ़मर (रज़ि.) से निकाला कि जब आँहज़रत (ﷺ) अपनी ऊँटनी पर सवार हो जाते सफ़र को जाते वक़्त तो तीन बार तक्बीर कहते फिर ये आयत पढ़ते, **सुब्हानल्लज़ी सख्खरलना हाज़ा व मा कुन्ना लहू मुक़्रिनीन।** हिस़्ने ह़सीन में ये दुआ मन्क़ूल है, **अल्लाहुम्म इन्ना नस्अलुक फी सफ़रिना हाज़ल्बिर्र वत्तक़्वा व मिनल्अमलि मा तर्ज़ा अल्लाहुम्म हौनुन अ़लैना सफ़रुना व अत्वलुना बअ़दहू अल्लाहुम्म अन्तस्साहिब फिस्सफ़रि वल्खलीफ़तु फिल्अहलि वल्वलदि अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबिक मिन वअ़षाइस्सफ़रि व काबतिल्मन्ज़रि व सूइल्मुन्क़लबि फिल्मालि वल्अहलि वल्वलदि**

٦٣٨٥- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَانَ إِذَا قَفَلَ مِنْ غَزْوٍ أَوْ حَجٍّ أَوْ عُمْرَةٍ يُكَبِّرُ

6385. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, उन्हों ने कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे नाफ़ेअ़ ने बयान किया और उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) जब

عَلَى كُلِّ شَرَفٍ مِنَ الأَرْضِ ثَلاَثَ تَكْبِيرَاتٍ ثُمَّ يَقُولُ: ((لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ آيِبُونَ تَائِبُونَ عَابِدُونَ لِرَبِّنَا حَامِدُونَ صَدَقَ اللهُ وَعْدَهُ وَنَصَرَ عَبْدَهُ وَهَزَمَ الأَحْزَابَ وَحْدَهُ)). [راجع: ١٧٩٧]

किसी ग़ज़्वे या हज्ज या उम्रह से वापस होते तो ज़मीन से हर बुलंद चीज़ पर चढ़ते हुए तीन तक्बीरें कहा करते थे। फिर दुआ करते, अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं, तन्हा है उसका कोई शरीक नहीं, उसके लिये बादशाही है और उसी के लिये तमाम ता'रीफ़ें हैं और वो हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है। लौटते हैं हम तौबा करते हुए अपने रब की इबादत करते हुए और हम्द बयान करते हुए। अल्लाह ने अपना वा'दा सच कर दिखाया, अपने बन्दे की मदद की और तन्हा तमाम लश्कर को शिकस्त दी। (राजेअ़ : 1797)

तश्रीह : बुलंदी पर चढ़ते हुए अल्लाह की बुलंदी व बड़ाई को याद रखकर नारा-ए-तक्बीर बुलंद करना शाने ईमानी है। ऐसे अक़ीदे व अमल वालों को अल्लाह दुनिया में भी बुलंदी देता है आयत, **कतबल्लाहु लअग़्लिबन्न अना व रूसुली** (अल् मुजादल : 21) में वही इशारा है। लश्कर को शिकस्त देने का इशारा जंगे अह़ज़ाब पर है जहाँ कुफ़्फ़ार बड़ी ता'दाद में जमा हुए थे मगर आख़िर में ख़ाइब व ख़ासिर हुए।

٥٣- باب الدُّعَاءِ لِلْمُتَزَوِّجِ

बाब 53 : शादी करने वाले दूल्हे के लिये दुआ करना

٦٣٨٦- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: رَأَى النَّبِيُّ ﷺ عَلَى عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ أَثَرَ صُفْرَةٍ فَقَالَ: ((مَهْيَمْ أَوْ مَهْ)) قَالَ: تَزَوَّجْتُ امْرَأَةً عَلَى وَزْنِ نَوَاةٍ مِنْ ذَهَبٍ فَقَالَ: ((بَارَكَ اللهُ لَكَ أَوْلِمْ وَلَوْ بِشَاةٍ)). [راجع: ٢٠٤٩]

6386. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे ष़ाबित ने बयान किया और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ (रज़ि.) पर ज़र्दी का अष़र देखा तो फ़र्माया ये क्या है? कहा कि मैंने एक औ़रत से एक गुठली के बराबर सोने से शादी की है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह तुम्हें बरकत दे, वलीमा कर, चाहे एक बकरी का ही हो। (राजेअ़ : 2049)

शादी के मौक़े पर बरकत की दुआ में इशारा है कि शादी दोनों के लिये बाइ़ष़े बरकत हो। रोज़ी-रिज़्क़, आल-औलाद, दीन-ईमान सब मे बरकत मुराद है।

٦٣٨٧- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ عَمْرٍو عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: هَلَكَ أَبِي وَتَرَكَ سَبْعَ أَوْ تِسْعَ بَنَاتٍ فَتَزَوَّجْتُ امْرَأَةً فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ((تَزَوَّجْتَ يَا جَابِرُ؟)) قُلْتُ: نَعَمْ. قَالَ: ((بِكْرًا أَمْ ثَيِّبًا؟)) قُلْتُ: ثَيِّبًا قَالَ: ((هَلاَّ جَارِيَةً

6387. हमसे अबुन नोअ़मान ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अ़म्र ने और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरे वालिद शहीद हुए तो उन्होंने सात या नौ लड़कियाँ छोड़ी थीं (रावी को ता'दाद में शुब्हा था) फिर मैंने एक औ़रत से शादी की तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने पूछा, जाबिर क्या तुमने शादी कर ली है? मैंने कहा जी हाँ। फ़र्माया कुँवारी से या ब्याही से? मैंने कहा ब्याही से। फ़र्माया, किसी लड़की से क्यूँ न की। तुम उसके साथ खेलते और वो तुम्हारे साथ खेलती या (आँहज़रत ﷺ ने फ़र्माया कि) तुम उसे हंसाते वो तुम्हें हंसाती। मैंने अ़र्ज़ किया, मेरे वालिद (ह़ज़रत

ﺗُﻼﻋِﺒُﻬَﺎ وَﺗُﻼعِبُكَ، وَتُضَاحِكُهَا وَتُضَاحِكُكَ)) قُلْتُ: هَلَكَ أَبِي فَتَرَكَ سَبْعَ أَوْ تِسْعَ بَنَاتٍ فَكَرِهْتُ أَنْ أَجِيئَهُنَّ بِمِثْلِهِنَّ، فَتَزَوَّجْتُ امْرَأَةً تَقُومُ عَلَيْهِنَّ قَالَ: ((فَبَارَكَ اللهُ عَلَيْكَ)) لَمْ يَقُلْ ابْنُ عُيَيْنَةَ وَمُحَمَّدُ بْنُ مُسْلِمٍ، عَنْ عَمْرٍو بَارَكَ اللهُ عَلَيْكَ. [راجع: ٤٤٣]

अ़ब्दुल्लाह) शहीद हुए और सात या नौ लड़कियाँ छोड़ी हैं। इसलिये मैंने पसंद नहीं किया कि मैं उनके पास उन्हीं जैसी लड़की लाऊँ। चुनाँचे मैंने ऐसी औरत से शादी की जो उनकी निगरानी कर सके। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह तुम्हें बरकत अ़ता फ़र्माए। इब्ने उ़ययना, और मुहम्मद बिन मुस्लिमा ने अ़म्र से रिवायत में। अल्लाह तुम्हे बरकत अ़ता फ़र्माए, के अल्फ़ाज़ नहीं कहे। (राजेअ़ : 443)

तश्रीह : शादी मे भी जज़्बात से ज़्यादा दूरअंदेशी की ज़रूरत है। ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) का ये वाक़िया इ़बरत व नसीह़त के लिये काफ़ी है। अल्लाह हर मुसलमान को समझने की तौफ़ीक़ दे। अपनी बहनों की परवरिश करना भी एक बड़ी सआ़दतमंदी है। अल्लाह हर जवान को ऐसी तौफ़ीक़ बख़्शे, आमीन।

٥٤- باب مَا يَقُولُ: إِذَا أَتَى أَهْلَهُ

बाब 54 : जब मर्द अपनी बीवी के पास आए तो क्या दुआ पढ़नी चाहिये

٦٣٨٨- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ سَالِمٍ، عَنْ كُرَيْبٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَوْ أَنَّ أَحَدَهُمْ إِذَا أَرَادَ أَنْ يَأْتِيَ أَهْلَهُ قَالَ: بِسْمِ اللهِ اللَّهُمَّ جَنِّبْنَا الشَّيْطَانَ، وَجَنِّبِ الشَّيْطَانَ مَا رَزَقْتَنَا فَإِنَّهُ إِنْ يُقَدَّرْ بَيْنَهُمَا وَلَدٌ فِي ذَلِكَ لَمْ يَضُرُّهُ شَيْطَانٌ أَبَدًا)). [راجع: ١٤١]

6388. हमसे उ़ष्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे सालिम ने, उनसे कुरैब ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अगर कोई शख़्स अपनी बीवी के पास आने का इरादा करे तो ये दुआ पढ़े। अल्लाह के नाम से, ऐ अल्लाह! हमें शैत़ान से दूर रख और जो कुछ तू हमें अ़ता करे उसे भी शैत़ान से दूर रख। तो अगर उस सुह़बत से कोई औलाद मुक़द्दर में होगी तो शैत़ान उसे कुछ भी नुक़सान नहीं पहुँचा सकेगा। (राजेअ़ : 141)

तश्रीह : औरत से मिलाप के वक़्त भी शह्वत से मग़्लूब न होना बल्कि अल्लाह को याद रखना उसका अष़र ये होना लाज़मी है कि आदमी की औलाद पर भी उस कैफ़ियत का पूरा पूरा अष़र पड़ेगा और वो यक़ीनन शैत़ानी ख़साइल और अष़रात से महफ़ूज़ रहेंगे क्योंकि माँ-बाप के ख़साइल भी औलाद में मुंतक़िल होते हैं इल्ला अंय्यशाअल्लाह।

٥٥- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً))

बाब 55 : नबी करीम (ﷺ) की ये दुआ ऐ हमारे रब! हमें दुनिया में भलाई अ़ता कर। आख़िर तक

٦٣٨٩- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ عَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ أَكْثَرُ دُعَاءِ النَّبِيِّ ﷺ: ((اللَّهُمَّ رَبَّنَا

6389. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल वारिष़ ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने बयान किया और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) की अकष़र ये दुआ हुआ करती थी, ऐ अल्लाह!

हमें दुनिया में भलाई (ह़स्ना) अ़ता कर और आख़िरत में भलाई अ़ता कर और हमें दोज़ख़ से बचा। (राजेअ़ : 4522)

آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً، وَفِي الآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ)).[راجع: ٤٥٢٢]

तश्रीह़ : बड़ी भारी अहम दुआ़ है कि दुनिया और दीन दोनों की कामयाबी के लिये दुआ़ की गई है बल्कि दुनिया को आख़िरत पर मुक़द्दम किया गया है। इसलिये कि दुनिया के सुधार ही से आख़िरत का सुधार होगा।

बाब 56 : दुनिया के फ़ित्नों से पनाह मांगना

٥٦- باب التَّعَوُّذِ مِنْ فِتْنَةِ الدُّنْيَا

6390. हमसे फ़र्वा बिन अबिल मग़राअ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे उ़बैदह बिन हुमैद ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल मलिक बिन उ़मैर ने बयान किया, उनसे मुस्अ़ब बिन सअ़द बिन अबी वक़्क़ास़ ने बयान किया और उनसे उनके वालिद ह़ज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास़ (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) हमें ये कलिमात इस त़रह़ सिखाते थे जैसे लिखना सिखाते थे। ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह मांगता हूँ बुख़्ल से और तेरी पनाह मांगता हूँ बुज़दिली से और तेरी पनाह मांगता हूँ नाकारा उ़म्र से और तेरी पनाह मांगता हूँ दुनिया की आज़माइश से और क़ब्र के अ़ज़ाब से। (राजेअ़ : 2822)

٦٣٩٠- حَدَّثَنَا فَرْوَةُ بْنُ أَبِي الْمَغْرَاءِ، حَدَّثَنَا عُبَيْدَةُ بْنُ حُمَيْدٍ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ، عَنْ مُصْعَبِ بْنِ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ، عَنْ أَبِيهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُعَلِّمُنَا هَؤُلاَءِ الْكَلِمَاتِ كَمَا تُعَلَّمُ الْكِتَابَةُ ((اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْبُخْلِ، وَأَعُوذُ بِكَ الْجُبْنِ، وَأَعُوذُ بِكَ أَنْ نُرَدَّ إِلَى أَرْذَلِ الْعُمُرِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الدُّنْيَا وَعَذَابِ الْقَبْرِ)).[راجع: ٢٨٢٢]

तश्रीह़ : ये दुआ़ इस क़ाबिल है कि इसे बग़ौर पढ़ा जाए और मज़्कूरा कमज़ोरियों से बचने की पूरी पूरी कोशिश की जाए। हर दुआ़ के मआ़नी व मत़ालिब व मक़ासिद समझने की ज़रूरत है। त़ोते की रट न होनी चाहिये। यही फ़ल्सफ़-ए-दुआ़ है।

बाब 57 : दुआ़ में एक ही फ़िक़्रे को बार-बार अ़र्ज़ करना

٥٧- باب تَكْرِيرُ الدُّعَاءِ

तश्रीह़ : इस बाब में ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) जो ह़दीष़ जादू की लाए हैं। इससे बाब का मत़लब नहीं निकलता मगर उन्होंने अपनी आ़दत के मुवाफ़िक़ इसके दूसरे त़रीक़ की त़रफ़ इशारा किया जिसको उन्होंने त़िब्ब और बाब बदउल ख़ल्क़ में निकाला है। और इमाम मुस्लिम (रह़ .) की रिवायत में यूँ है कि आपने दुआ़ की, फिर दुआ़ की, फिर दुआ़ की और इस बाब में स़ाफ़ रिवायत है जिसको अबू दाऊद और नसाई ने अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) से निकाला। उसमें ये है कि आँह़ज़रत को तीन बार दुआ़ और तीन बार इस्तिग़फ़ार करना पसंद था।

6391. हमसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, कहा हमसे अनस बिन अ़याज़ ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) पर जादू किया गया और कैफ़ियत ये हुई कि आँह़ज़रत (ﷺ) समझने लगे कि फ़लाँ काम आपने कर लिया है हालाँकि आपने नहीं किया था और आँह़ज़रत (ﷺ) ने अपने रब से दुआ़ की थी, फिर आपने फ़र्माया, तुम्हें मा'लूम है,

٦٣٩١- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ، حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ عِيَاضٍ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ طُبَّ حَتَّى إِنَّهُ لَيُخَيَّلُ إِلَيْهِ قَدْ صَنَعَ الشَّيْءَ وَمَا صَنَعَهُ، وَإِنَّهُ دَعَا رَبَّهُ ثُمَّ قَالَ: ((أَشَعَرْتِ أَنَّ اللهَ قَدْ أَفْتَانِي فِيمَا اسْتَفْتَيْتُهُ

अल्लाह ने मुझे वो बात बता दी है जो मैंने उससे पूछी थी। आइशा (रज़ि.) ने पूछा, या रसूलल्लाह! वो ख़्वाब क्या है? फ़र्माया मेरे पास दो मर्द आए और एक मेरे सर के पास बैठ गया और दूसरा पैरों के पास। फिर एक ने अपने दूसरे साथी से कहा, इन साहब की बीमारी क्या है? दूसरे ने जवाब दिया, इन पर जादू हुआ है। पहले ने पूछा किसने जादू किया है? जवाब दिया कि लबीद बिन आसम ने। पूछा वो जादू किस चीज़ में है? जवाब दिया कि कँघी पर खजूर के ख़ोशे में। पूछा वो है कहाँ? कहा कि ज़रवान में और ज़रवान बनी ज़ुरैक़ का एक कुआँ है। आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर आँहज़रत (ﷺ) उस कुँए पर तशरीफ़ ले गये और जब आइशा (रज़ि.) के पास दोबारा वापस आए तो फ़र्माया वल्लाह! उसका पानी तो मेहन्दी से निचोड़े हुए पानी की तरह था और वहाँ के खजूर के पेड़ शैतान के सर की तरह थे। बयान किया कि फिर आँहज़रत (ﷺ) तशरीफ़ लाए और उन्हें कुँए के बारे में बताया। मैंने कहा, या रसूलल्लाह! फिर आपने उसे निकाला क्यूँ नहीं? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुझे अल्लाह तआला ने शफ़ा दे दी और मैंने ये पसंद नहीं किया कि लोगों में एक बुरी चीज़ फैलाऊँ। ईसा बिन यूनुस और लैष ने हिशाम से इज़ाफ़ा किया कि उनसे उनके वालिद ने बयान किया और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) पर जादू किया गया तो आप बराबर दुआ करते रहे और फिर पूरी हदीष को बयान किया। (राजेअ : 3175)

فِيهِ؟)) فَقَالَتْ عَائِشَةُ: فَمَا ذَاكَ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: ((جَاءَنِي رَجُلاَنِ فَجَلَسَ أَحَدُهُمَا عِنْدَ رَأْسِي، وَالآخَرُ عِنْدَ رِجْلَيَّ فَقَالَ أَحَدُهُمَا لِصَاحِبِهِ: مَا وَجَعُ الرَّجُلِ قَالَ: مَطْبُوبٌ. قَالَ: مَنْ طَبَّهُ؟ قَالَ: لَبِيدُ بْنُ الأَعْصَمِ قَالَ: فِيمَا ذَا؟ قَالَ: فِي مُشْطٍ وَمُشَاطَةٍ وَجُفِّ طَلْعَةٍ، قَالَ: فَأَيْنَ هُوَ؟ قَالَ : فِي ((ذَرْوَانَ)) وَذَرْوَانُ بِئْرٌ فِي بَنِي زُرَيْقٍ. قَالَتْ: فَأَتَاهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ ثُمَّ رَجَعَ إِلَى عَائِشَةَ فَقَالَ: ((وَاللهِ لَكَأَنَّ مَاءَهَا نُقَاعَةُ الْحِنَّاءِ، وَلَكَأَنَّ نَخْلَهَا رُؤُوسُ الشَّيَاطِينِ)) قَالَتْ: فَأَتَى رَسُولُ اللهِ ﷺ فَأَخْبَرَهَا عَنِ الْبِئْرِ فَقُلْتُ : يَا رَسُولَ اللهِ فَهَلاَّ أَخْرَجْتَهُ؟ قَالَ : ((أَمَّا أَنَا فَقَدْ شَفَانِي اللهُ، وَكَرِهْتُ أَنْ أُثِيرَ عَلَى النَّاسِ شَرًّا)). زَادَ عِيسَى بْنُ يُونُسَ وَاللَّيْثُ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: سُحِرَ النَّبِيُّ ﷺ فَدَعَا وَدَعَا وَسَاقَ الْحَدِيثَ.

[راجع: ٣١٧٥]

तश्रीह : उस्व-ए-नबवी से मा'लूम हुआ कि जहाँ तक मुम्किन हो शर्र की इशाअत से भी बचना लाज़िम है। उसे उछालना, शोहरत देना उस्व-ए-नबी के ख़िलाफ़ है। काश! मुद्दइयाने अमल बिस्सुन्नह ऐसे उमूर को भी याद रखें, आमीन।

बाब 58 : मुश्रिकीन के लिये बद् दुआ करना

٥٨- باب الدُّعَاءِ عَلَى الْمُشْرِكِينَ

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने कहा, ऐ अल्लाह! मेरी मदद कर ऐसे क़हत के ज़रिये जैसा यूसुफ़ (अलैहि.) के ज़माने में पड़ा था और आपने बद्दुआ की, ऐ अल्लाह! अबू जहल को पकड़ ले, और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने नमाज़ में ये दुआ की कि, ऐ अल्लाह! फ़लाँ-

وَقَالَ ابْنُ مَسْعُودٍ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((اللَّهُمَّ أَعِنِّي عَلَيْهِمْ بِسَبْعٍ كَسَبْعِ يُوسُفَ))، وَقَالَ: ((اللَّهُمَّ عَلَيْكَ بِأَبِي جَهْلٍ)) وَقَالَ ابْنُ عُمَرَ: دَعَا النَّبِيُّ ﷺ فِي الصَّلاَةِ: ((اللَّهُمَّ الْعَنْ فُلاَنًا وَفُلاَنًا)) حَتَّى أَنْزَلَ

फ़लाँ को अपनी रहमत से दूर कर दे, यहाँ तक कि क़ुर्आन की आयत लैस लक मिनल् अम्रि शैउन नाज़िल हुई।

الله عَزَّ وَجَلَّ: ﴿لَيْسَ لَكَ مِنَ الأَمْرِ شَيْءٌ﴾.

तश्रीह : इंसानी ज़िंदगी मे कुछ मवाक़ेअ ऐसे भी आ जाते हैं कि इंसान दुश्मनों के ख़िलाफ़ बद् दुआ करने पर भी मजबूर हो जाता है। क़ुरैशे मक्का की मुतवातिर शरारतों की बिना पर आँहज़रत ने वक़्ती तौर पर मजबूरन बद् दुआ की जो क़ुबूल हुई और अशरारे क़ुरैश सब तबाह व बर्बाद हो गये। सच है,

बतरस अज़्आह मज़्लूमाँ कि हंगाम दुआ करदन इजाबत अज़ दर हक़ बहर इस्तिक़्बाल मी आयद

6392. हमसे इब्ने सलाम ने बयान किया, कहा हमको वकीअ ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने अबी ख़ालिद ने, कहा मैंने इब्ने अबी औफ़ा (रज़ि.) से सुना, कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अहज़ाब के लिये बद् दुआ की। ऐ अल्लाह! किताब के नाज़िल करने वाले! हिसाब जल्दी लेने वाले! अहज़ाब को (मुश्रिकीन की जमाअतों को, ग़ज़्वा-ए-अहज़ाब में) शिकस्त दे, उन्हें शिकस्त दे दे और उन्हें झिंझोड़ दे। (राजेअ : 2933)

٦٣٩٢- حَدَّثَنَا ابْنُ سَلاَمٍ، أَخْبَرَنَا وَكِيعٌ عَنِ ابْنِ أَبِي خَالِدٍ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: دَعَا رَسُولُ اللهِ ﷺ عَلَى الأَحْزَابِ فَقَالَ: ((اللَّهُمَّ مُنْزِلَ الْكِتَابِ سَرِيعَ الْحِسَابِ، اهْزِمِ الأَحْزَابَ اهْزِمْهُمْ وَزَلْزِلْهُمْ)). [راجع: ٢٩٣٣]

तश्रीह : कुफ़्फ़ारे अरब ने मुत्तहिदा महाज़ लेकर इस्लाम के ख़िलाफ़ ज़बरदस्त यल्ग़ार की थी। इसको जंगे अहज़ाब या जंगे ख़ंदक़ कहा गया है। अल्लाह ने उनकी ऐसी कमर तोड़ी कि बाद में जंग का ये सिलसिला ही ख़त्म हो गया।

6393. हमसे मुआज़ बिन फ़ज़ाला ने बयान किया, उनसे हिशाम ने बयान किया, उनसे यह्या ने, उनसे अबू सलमा ने बयान किया, और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) जब इशा की आख़िरी रकअत में (रुकूअ से उठते हुए) समिअल्लाहुलिमन हमिदह् कहते थे तो दुआए क़ुनूत पढ़ते थे। ऐ अल्लाह! अय्याश बिन अबी रबीआ को नजात दे। ऐ अल्लाह! वलीद बिन वलीद को नजात दे। ऐ अल्लाह! सलमा बिन हिशाम को नजात दे। ऐ अल्लाह! कमज़ोर और नातवाँ मोमिनों को नजात दे। ऐ अल्लाह! क़बीला मुज़र पर अपनी पकड़ को सख़्त कर दे। ऐ अल्लाह! वहाँ ऐसा क़हत पैदा कर दे जैसा यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के ज़माने में हुआ था। (राजेअ : 797)

٦٣٩٣- حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ فَضَالَةَ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ يَحْيَى، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ إِذَا قَالَ: ((سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ فِي الرَّكْعَةِ الآخِرَةِ مِنْ صَلاَةِ الْعِشَاءِ، قَنَتَ: اللَّهُمَّ أَنْجِ عَيَّاشَ بْنَ رَبِيعَةَ، اللَّهُمَّ أَنْجِ الْوَلِيدَ بْنَ الْوَلِيدِ اللَّهُمَّ أَنْجِ سَلَمَةَ بْنَ هِشَامٍ، اللَّهُمَّ أَنْجِ الْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ، اللَّهُمَّ اشْدُدْ وَطْأَتَكَ عَلَى مُضَرَ، اللَّهُمَّ اجْعَلْهَا سِنِينَ كَسِنِي يُوسُفَ)). [راجع: ٧٩٧]

तश्रीह : हिजरते नबवी के बाद कुछ कमज़ोर मसाकीन मुसलमान मक्का में रहकर कुफ़्फ़ारे मक्का के हाथों तकलीफ़ उठा रहे थे उन ही के लिये आपने ये दुआ फ़र्माई जो क़ुबूल हुई और मज़्लूम और ज़ुअफ़ा मुसलमानों को उनके शर्र से नजात मिली। मुश्रिकीने मक्का आख़िर मे मुसलमान हुए और बहुत से तबाह हो गये।

6394. हमसे ह़सन बिन रबीअ़ ने बयान किया, कहा हमसे अबुल अह़वस़ ने बयान किया, उनसे आ़स़िम ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने एक मुहिम भेजी, जिसमे शरीक लोगों को क़ुर्राअ (या'नी क़ुर्आन मजीद के क़ारी) कहा जाता था। उन सबको शहीद कर दिया गया। मैं ने नहीं देखा कि नबी करीम (ﷺ) को कभी किसी चीज़ का इतना ग़म हुआ हो जितना आपको उनकी शहादत का ग़म हुआ था। चुनाँचे आँह़ज़रत (ﷺ) ने एक महीने तक फ़ज्र की नमाज़ में उनके लिये बद् दुआ की। आप कहते कि अ़स़्सया ने अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़र्मानी की। (राजेअ़ : 1001)

٦٣٩٤- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ الرَّبِيعِ، حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، عَنْ عَاصِمٍ، عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : بَعَثَ النَّبِيُّ ﷺ سَرِيَّةً يُقَالُ لَهُمْ: الْقُرَّاءُ فَأُصِيبُوا، فَمَا رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ وَجَدَ عَلَى شَيْءٍ مَا وَجَدَ عَلَيْهِمْ فَقَنَتَ شَهْرًا فِي صَلاَةِ الْفَجْرِ وَيَقُولُ: ((إِنَّ عُصَيَّةَ عَصَوُا اللهَ وَرَسُولَهُ)). [راجع: ١٠٠١]

6395. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हिशाम ने बयान किया, उन्हें मअ़मर ने ख़बरदी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि यहूदी नबी करीम (ﷺ) को सलाम करते तो कहते अस्सामु अ़लैक (आपको मौत आए) आ़इशा (रज़ि .) उनका मक़स़द समझ गईं और जवाब दिया कि अ़लैकुमुस्साम वल ला'नत (तुम्हें मौत आए और तुम पर ला'नत हो) आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, ठहरो आ़इशा! अल्लाह तमाम उमूर में नर्मी को पसंद करता है। आ़इशा (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी! क्या आपने नहीं सुना कि ये लोग क्या कहते हैं? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, तुमने नहीं सुना कि मैं उन्हें किस त़रह़ जवाब देता हूँ, मैं कहता हूँ व अ़लैकुम। (राजेअ़ : 2935)

٦٣٩٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ الْيَهُودُ يُسَلِّمُونَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ يَقُولُونَ: السَّامُ عَلَيْكَ، فَفَطِنَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا إِلَى قَوْلِهِمْ فَقَالَتْ: عَلَيْكُمُ السَّامُ وَاللَّعْنَةُ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَهْلاً يَا عَائِشَةُ إِنَّ اللهَ تَعَالَى يُحِبُّ الرِّفْقَ فِي الأَمْرِ كُلِّهِ))، فقالت: يَا نَبِيَّ اللهِ أَوَلَمْ تَسْمَعْ مَا يَقُولُونَ؟ قَالَ: ((أَوَلَمْ تَسْمَعِي أَرُدُّ ذَلِكَ عَلَيْهِمْ؟ فَأَقُولُ: وَعَلَيْكُمْ)). [راجع: ٢٩٣٥]

तश्रीह़ : यहूदी इस्लाम के अज़्ली दुश्मन हैं मगर अल्लाह के ह़बीब (ﷺ) के अख़्लाक़े फ़ाज़िला देखिए कि आपने उनके बारे में ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) की बद् दुआ़ को नापसंद किया। इंसानियत की यही मे'राज है कि दुश्मनों के साथ भी ए'तिदाल का बर्ताव किया जाए।

6396. हमसे मुह़म्मद बिन मुस़न्ना ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अंस़ारी ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन ह़स्सान ने बयान किया, कहा हमसे मुह़म्मद बिन सीरीन ने बयान किया, कहा हमसे उ़बैदह ने बयान किया, कहा हमसे ह़ज़रत अ़ली बिन अबी त़ालिब (रज़ि.) ने बयान किया कि ग़ज़्वा ख़ंदक़ के मौक़े पर हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ थे। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह इनकी क़ब्रों और इनके

٦٣٩٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، قَالَ: حَدَّثَنَا الأَنْصَارِيُّ حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ حَسَّانَ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِيرِينَ، حَدَّثَنَا عَبِيدَةُ حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ يَوْمَ الْخَنْدَقِ فَقَالَ

((مَلأَ اللهُ قُبُورَهُمْ وَبُيُوتَهُمْ نَارًا، كَمَا شَغَلُونَا عَنْ صَلاَةِ الْوُسْطَى حَتَّى غَابَتِ الشَّمْسُ)) وَهِيَ صَلاَةُ الْعَصْرِ.

[راجع: ٢٩٣١]

घरों को आग से भर दे। इन्होंने हमें (अ़स्र की नमाज़) स़लातुल वुस्ता नहीं पढ़ने दी। जब तक कि सूरज ग़ुरूब हो गया और ये अ़स्र की नमाज़ थी। (राजेअ़ : 2931)

नमाज़े अ़स्र ही स़लातुल वुस्ता है, इस नमाज़ की बहुत ख़ुसूस़ियात है जिसमें बहुत से मस़ालेह़ मक़्स़ूद हैं।

٥٩- باب الدُّعَاءِ لِلْمُشْرِكِينَ

बाब 59 : मुश्रिकीन की हिदायत के लिये दुआ़ करना

इस बाब का मज़्मून पिछले बाब के मुख़ालिफ़ न होगा क्योंकि उस बाब में जो बद्दुआ़ का बयान है वो उस ह़ालत पर मह़मूल है कि मुश्रिकों के ईमान लाने की उम्मीद न रही हो और ये उस ह़ालत में है जबकि ईमान लाने की उम्मीद हो या उनका दिल मिलाना मक़्स़ूद हो। कुछ ने कहा मुश्रिकों के लिये दुआ़ करना आँह़ज़रत (ﷺ) से ख़ास़ था औरों के लिये दुरुस्त नहीं लेकिन हिदायत की दुआ़ तो अकष़र लोगों ने जाइज़ रखी है।

٦٣٩٧- حَدَّثَنَا عَلِيٌّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَدِمَ الطُّفَيْلُ بْنُ عَمْرٍو عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّ دَوْسًا قَدْ عَصَتْ، وَأَبَتْ فَادْعُ اللهَ عَلَيْهَا فَظَنَّ النَّاسُ أَنَّهُ يَدْعُو عَلَيْهِمْ فَقَالَ: ((اللَّهُمَّ اهْدِ دَوْسًا وَائْتِ بِهِمْ)). [راجع: ٢٩٣٧]

6397. हमसे अ़ली ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ने कहा, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अ़अ़रज ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि त़ुफ़ैल बिन अ़म्र (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! क़बीला दौस ने नाफ़र्मानी और सरकशी की है, आप उनके लिये बद् दुआ़ कीजिए। लोगों ने समझा कि आँह़ज़रत (ﷺ) उनके लिये बद्दुआ़ ही करेंगे लेकिन आँह़ज़रत (ﷺ) ने दुआ़ की कि, ऐ अल्लाह! क़बीला दौस को हिदायत दे और उन्हें (मेरे पास) भेज दे। (राजेअ़ : 2937)

फिर ऐसा हुआ क़बीला दौस ने इस्लाम कुबूल किया और दरबारे नबवी में ह़ाज़िर हुए।

٦٠- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ:

बाब 60 : नबी करीम (ﷺ) का यूँ दुआ़ करना

कि, ऐ अल्लाह! मेरे अगले-पिछले सब गुनाह बख़्श दे।

तश्रीह़ : आप (ﷺ) का ये फ़र्मान बत़ौरे इज़्हारे उ़बूदियत के है या उम्मत की ता'लीम के लिये वरना आपको अल्लाह ने मा'स़ूम अ़निल ख़त़ा क़रार दिया है। बराए तवाज़ोअ़ भी हो सकता है।

٦٣٩٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ صَبَّاحٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، ابْنِ أَبِي مُوسَى، عَنْ أَبِيهِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: أَنَّهُ كَانَ يَدْعُو بِهَذَا الدُّعَاءِ

6398. हमसे मुह़म्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल मलिक बिन स़ब्बाह़ ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने, उनसे अबू इस्ह़ाक़ ने, उनसे इब्ने अबी मूसा ने, उनसे उनके वालिद ने कि नबी करीम (ﷺ) ये दुआ़ करते थे, मेरे रब! मेरी ख़त़ा, मेरी नादानी और तमाम मामलात में मेरे ह़द से तजावुज़ करने में मेरी मग़्फ़िरत फ़र्मा और वो गुनाह भी

जिनको तू मुझसे ज़्यादा जाननेवाला है। ऐ अल्लाह! मेरी मग़्फ़िरत कर मेरी ख़ताओं में, मेरे बिल इरादा और बिला इरादा कामों में और मेरे हंसी मज़ाह के कामों में और ये सब मेरी ही तरफ़ से हैं। ऐ अल्लाह! मेरी मग़्फ़िरत कर उन कामों में जो मैं कर चुका हूँ और उन्हें जो करूँगा और जिन्हें मैंने छुपाया और जिन्हे मैंने ज़ाहिर किया है, तू ही सबसे पहले है और तू ही सबसे बाद में है और तू हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है, और उबैदुल्लाह बिन मुआज़ (जो इमाम बुख़ारी के शैख़ हैं) ने बयान किया कि हमसे मेरे वालिद ने बयान किया कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने, उनसे अबू बुर्दा बिन अबी मूसा ने और उनसे उनके वालिद ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने। (दीगर : 6399)

((رَبِّ اغْفِرْ لِي خَطِيئَتِي وَجَهْلِي وَإِسْرَافِي فِي أَمْرِي كُلِّهِ، وَمَا أَنْتَ أَعْلَمُ بِهِ مِنِّي، اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي خَطَايَايَ وَعَمْدِي وَجَهْلِي وَهَزْلِي وَكُلُّ ذَلِكَ عِنْدِي اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي مَا قَدَّمْتُ وَمَا أَخَّرْتُ، وَمَا أَسْرَرْتُ وَمَا أَعْلَنْتُ أَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَأَنْتَ الْمُؤَخِّرُ وَأَنْتَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ)) وَقَالَ عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُعَاذٍ، وَحَدَّثَنَا أَبِي وَقَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ أَبِي بُرْدَةَ بْنِ أَبِي مُوسَى، عَنْ أَبِيهِ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.
[طرفه في: ٦٣٩٩].

तश्रीह : दुआ के आख़िरी **इन्नक अला कुल्लि शैइन क़दीर** फ़र्माना उस चीज़ का इज़्हार है कि अल्लाह पाक हर चीज़ पर क़ादिर है वो जो चाहे कर सकता है वो किसी का मुह्ताज नहीं है यही इस्तिग़्ना-ए-इलाही तो वो चीज़ है जिससे बड़े-बड़े पैग़म्बर और मुक़र्रब बन्दे भी थर्राते हैं और रात-दिन बड़ी आजिज़ी के साथ अपने क़ुसूरों का इक़रार और ए'तिराफ़ करते रहते हैं अगर ज़रा भी अनानियत किसी के दिल में आई तो फिर कहीं ठिकाना न रहा। हज़रत शैख़ शर्फ़ुद्दीन यह्या मिम्बरी (रह.) अपनी मकातीब में फ़र्माते हैं वो पाक परवरदिगार ऐसा मुस्तग़्ना और बेपरवाह है कि अगर चाहे तो हर रोज़ हज़रत इब्राहीम और हज़रत मुहम्मद (ﷺ) की तरह लाखों आदमियों को पैदा कर दे और अगर चाहे तो दम भर में जितने मुक़र्रब बन्दे हैं उन सबको रान्दा-ए-दरगाह बना दे। जल्ले जलालुहू। यहाँ मशिय्यते इलाही का ज़िक्र हो रहा है, मशिय्यत और चीज़ है और क़ानून और चीज़ है। क़वानीने इलाही के बारे में साफ़ इर्शाद है, **व लन तजिद लिसुन्नतिल्लाहि तब्दीला व लन तजिद लिसुन्नतिल्लाहि तहवीला** (फ़ातिर : 43) **सदक़ल्लाहु तबारक व तआला**

6399. हमसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, कहा हमसे उबैदुल्लाह बिन अब्दुल मजीद ने बयान किया, कहा हमसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया, उनसे अबूबक्र बिन अबी मूसा और अबू बुर्दा ने और मेरा ख़याल है कि अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) के हवाले से कि नबी करीम (ﷺ) ये दुआ किया करते थे, ऐ अल्लाह! मेरी मग़्फ़िरत फ़र्मा, मेरी ख़ताओं में, मेरी नादानी में और मेरी किसी मामले में ज़्यादती में, उन बातों में जिनका तू मुझसे ज़्यादा जानने वाला है। ऐ अल्लाह! मेरी मग़्फ़िरत फ़र्मा मेरे हंसी मज़ाह और संजीदगी में और मेरे इरादे में और ये सब कुछ मेरी ही तरफ़ से हैं। (राजेअ : 6398)

٦٣٩٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الْمَجِيدِ، حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ، حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ عَنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ أَبِي مُوسَى وَأَبِي بُرْدَةَ أَحْسِبُهُ عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ كَانَ يَدْعُو : ((اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي خَطِيئَتِي وَجَهْلِي وَإِسْرَافِي فِي أَمْرِي، وَمَا أَنْتَ أَعْلَمُ بِهِ مِنِّي، اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي هَزْلِي وَجِدِّي وَخَطَايَ وَعَمْدِي وَكُلُّ ذَلِكَ عِنْدِي)).
[راجع: ٦٣٩٨]

बाब 61 : उस क़ुबूलियत की घड़ी में दुआ करना जो जुम्अ़े के दिन आती है

٦١- باب الدُّعَاءِ فِي السَّاعَةِ الَّتِي فِي يَوْمِ الْجُمُعَةِ

6400. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन इब्राहीम ने, उन्हें अय्यूब ने ख़बर दी, उन्हें मुहम्मद ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि अबुल क़ासिम (ﷺ) ने फ़र्माया, जुम्अ़े के दिन एक ऐसी घड़ी आती है जिसमें अगर कोई मुसलमान इस हाल में पा ले कि वो खड़ा नमाज़ पढ़ रहा हो तो जो भलाई भी वो मांगेगा अल्लाह इनायत फ़र्माएगा और आपनेअपने हाथ से इशारा फ़र्माया और हमने उससे ये समझा कि आँहुज़ूर (ﷺ) उस घड़ी के मुख़्तसर होने की तरफ़ इशारा कर रहे हैं । (राजेअ़ : 935)

٦٤٠٠- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا أَيُّوبُ، عَنْ مُحَمَّدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ أَبُو الْقَاسِمِ ﷺ: ((فِي الْجُمُعَةِ سَاعَةٌ لاَ يُوَافِقُهَا مُسْلِمٌ وَهُوَ قَائِمٌ يُصَلِّي يَسْأَلُ خَيْرًا إِلاَّ أَعْطَاهُ)) وَقَالَ بِيَدِهِ ((قُلْنَا يُقَلِّلُهَا يُزَهِّدُهَا)). [راجع: ٩٣٥]

तश्रीह : हुज्जतुल हिन्द हज़रत शाह वलीउल्लाह मरहूम फ़र्माते हैं, थुम्म इख़्तलफ़तिर्रिवायतु फ़ी तअ़ईनिहा फ़क़ील हिय मा बैन अंय्यज्लिसल्इमामुल्मिम्बर अन्तक्ज़ियस्सलात लिअन्नहा साअ़तुन तुफ़्तहु फ़ीहा अब्वाबुस्समाइ व यकूनुल्मूमिनीन फ़ीहा रागिबीना इलल्लाहि फक़द इज्तमअ़ फ़ीहा बरकातुस्समाइ वल्अर्ज़ि (अल्ख) व क़ील अ़बदल्अ़स्रि इला गुयूबतिश्शस्मि लिअन्नहा वक़्तु नुज़ूलिल्कज़ाइ व फ़ी बअ़ज़िल्कुतुबिल्इलाहिय्य इन्नमा फ़ीहा खुलिक़ आदमु (हुज्जतिल्लाहिल्बालिग़ा) या'नी उस घड़ी की तअ़य्युन में इख़्तिलाफ़ है। ये भी है कि ये इमाम के मिम्बर पर बैठने से ख़त्मे नमाज़ तक होती है इसलिये कि उस घड़ी में आसमान के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और उसमे मोमिनों को अल्लाह की तरफ़ रग़बत ज़्यादा होती है, पस उसमें आसमानी व ज़मीनी बरकात जमा की जाती हैं और ये भी कहा गया है कि ये अ़स्र के बाद से गुरूब तक है, इसलिये कि ये क़ज़ा-ए-इलाही के नुज़ूल का वक़्त है और कुछ हवालों की बिना पर आदम की पैदाइश का वक़्त है।

बाब 62 : नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्मान कि यहूद के हक़ में हमारी (जवाबी) दुआएँ क़ुबूल होती हैं लेकिन उनकी कोई बद्दुआ हमारे हक़ में क़ुबूल नहीं होती

٦٢- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((يُسْتَجَابُ لَنَا فِي الْيَهُودِ وَلاَ يُسْتَجَابُ لَهُمْ فِينَا)).

6401. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल वह्हाब ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अय्यूब ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि यहूद नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहा अस्सामु अ़लैकुम आँहज़रत (ﷺ) ने जवाब दिया व अ़लैकुम लेकिन आइशा (रज़ि.) ने कहा अस्सामु अ़लैकुम व लअ़नकुमुल्लाहु व ग़ज़ब अ़लैकुम आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, ठहर आइशा! नर्मख़ूई इख़्तियार कर और सख़्ती और बदकलामी से हमेशा परहेज़ कर। उन्होंने कहा क्या आपने नहीं सुना कि यहूदी क्या कह रहे थे?

٦٤٠١- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ، عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ الْيَهُودَ أَتَوُا النَّبِيَّ ﷺ فَقَالُوا: السَّامُ عَلَيْكَ قَالَ: ((وَعَلَيْكُمْ)) فَقَالَتْ عَائِشَةُ: السَّامُ عَلَيْكُمْ وَلَعَنَكُمُ اللهُ وَغَضِبَ عَلَيْكُمْ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَهْلاً يَا عَائِشَةُ عَلَيْكِ بِالرِّفْقِ، وَإِيَّاكِ وَالْعُنْفَ أَوِ

قَالَتْ: أَوَلَمْ تَسْمَعْ مَا قَالُوا؟ قَالَ: ((أَوَلَمْ تَسْمَعِي مَا قُلْتُ؟ رَدَدْتُ عَلَيْهِمْ، فَيُجَابُ لِي فِيهِمْ وَلاَ يُسْتَجَابُ لَهُمْ فِيَّ)). [راجع: ٢٩٣٥]

आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया तुमने नहीं सुना कि मैंने उन्हें क्या जवाब दिया, मैंने उनकी बात उन्हीं पर लौटा दी और मेरी उनके बदले में दुआ क़ुबूल की गई और उनकी मेरे बारे में क़ुबूल नहीं की गई। (राजेअ : 2935)

फिर उनके कोसने काटने से क्या होता है जैसा आपने फ़र्माया था वैसा ही हुआ। आज के ग़ासिब यहूदियों का भी जो फ़िलीस्तीन पर क़ब्ज़ा ग़ासिबाना किये हुए हैं, यही अंजाम होने वाला है। (इंशाअल्लाह)

٦٣- باب التَّأْمِينِ

बाब 63 : (जहरी नमाज़ों में) बिल जहर आमीन कहने की फ़ज़ीलत का बयान

٦٤٠٢- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ الزُّهْرِيُّ : حَدَّثَنَاهُ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا أَمَّنَ الْقَارِىءُ فَأَمِّنُوا، فَإِنَّ الْمَلاَئِكَةَ تُؤَمِّنُ، فَمَنْ وَافَقَ تَأْمِينُهُ تَأْمِينَ الْمَلاَئِكَةِ غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ)). [راجع: ٧٨٠]

6402. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया कि ज़ुह्री ने बयान किया कि हमसे सईद बिन मुसय्यब ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जब पढ़ने वाला आमीन कहे तो तुम भी आमीन कहो क्योंकि उस वक़्त फ़रिश्ते भी आमीन कहते हैं और जिसकी आमीन फ़रिश्तों की आमीन के साथ होती है उसके पिछले गुनाह मुआफ़ कर दिये जाते हैं। (राजेअ : 780)

तश्रीह : जहरी नमाज़ों में आयत **ग़ैरिल्मग़ज़ूबि अ़लैहिम वलज़्ज़ाल्लीन** पर बुलंद आवाज़ से आमीन कहना उम्मत के एक बड़ी जमाअ़त का अ़मल है मगर बिरादराने अह्नाफ़ को इससे इख़्तिलाफ़ है इस सिलसिले में मुक़्तदा-ए-अहले ह़दीष़ ह़ज़रत मौलाना अबुल वफ़ा ष़नाउल्लाह अमृतसरी (रह़.) का एक मक़ाला पेशे ख़िदमत है उम्मीद है कि क़ारेईने किराम इस मक़ाले को बग़ौर मुत़ालअ़ा फ़र्माते हुए ह़ज़रत मौलाना मरहूम के लिये और मुझ नाचीज़ ख़ादिम के लिये भी दुआ-ए-ख़ैर करेंगे।

अहले ह़दीष़ का मज़हब है कि जब इमाम ऊँची क़िरात पढ़े तो बाद वलज़्ज़ाल्लीन के (इमाम) और मुक़्तदी बुलंद आवाज़ से आमीन कहें जैसा कि ह़दीष़े ज़ेल से ज़ाहिर है। **अन अबी हुरैरत रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु क़ाल कान रसूलुल्लाहि (ﷺ) इज़ तला ग़ैरिल्मग़ज़ूबि अ़लैहिम वलज़्ज़ाल्लीन क़ाल आमीन ह़त्ता समिअ़ मन स़ल्ला मिनस़्स़फ़्फ़िल‌अव्वलि रवाहु अबू दाऊद व इब्नु माजा व क़ाल ह़त्ता यस्मअ़हा अहलुस्सफ़्फ़िल‌अव्वलि फयर्तज्जु बिहल्मस्जिद** (अल् मुन्तक़ा) अबू हुरैरह (रज़ि.) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब **ग़ैरिल मग़ज़ूबि अ़लैहिम वलज़्ज़ाल्लीन** पढ़ते तो आमीन कहते। ऐसी कि पहली स़फ़ वाले सुन लेते फिर सब लोग बैक आवाज़ आमीन कहते तो तमाम मस्जिद गूँज जाती। इस मसले ने अपनी क़ुव्वते ष़ुबूत की वजह से कुछ मुहक़्क़िक़ीन उ़लमा-ए-अह्नाफ़ को भी अपना क़ाइल बना लिया। चुनाँचे मौलाना अ़ब्दुल ह़ई स़ाह़ब लखनवी मरहूम शरह़ वक़ाया के ह़ाशिया पर लिखते हैं, **क़द ष़बतल्जहरू मिन रसूलिल्लाहि (ﷺ) बिअसानीद मुतअ़द्दतिन यक़्वी बअ़ज़ुहा बअ़ज़न फ़ी सुननि इब्नि माजा वन्नसई व अबू दाऊद व जामिउत्तिर्मिज़ी व सहीह इब्नि हिब्बान व किताबुल्उम्म लिशाफ़िई व गैरहा व अ़न जमाअ़तिम्मिन अस़्हाबिही बिरिवायति इब्नि हिब्बान फी किताबिष़्ष़िकात व गैरिही व लिहाज़ा अशार बअ़ज़ु अस़्हाबिना कइब्निल्हुमा फ़ी फ़त्हिल्क़दीर व तिल्मीज़ुहू इब्नु अमीरिल्हाज्ज फ़ी हुल्यतिल्मुस़ल्ला शर्हु मुन्यतिल्मुस़ल्ला इला क़ुव्वति रिवायतिन** (हाशियः शर्हुविकायः)

नबी अकरम (ﷺ) से मुतअद्दिद सनदों के साथ आमीन बिल जहर कहना षाबित है वो ऐसी सनदें हैं कि एक दूसरी को क़ुव्वत देती हैं जो इब्ने माजा, नसाई, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, सहीह इब्ने हिब्बान, इमाम शाफ़िई की किताब अल उम्म वग़ैरह में मौजूद हैं। आँहज़रत (ﷺ) के सहाबा से भी इब्ने हिब्बान की रिवायत से षाबित है। इसी वास्ते हमारे कुछ उलमा मषलन इब्ने हुमाम ने फ़त्हुल क़दीर में और उनके शागिर्द इब्ने अमीरुल हाज ने हिल्यतुल मुसल्ला शरह मनियतुल मुसल्ला में इस बात की तरफ़ इशारा किया है कि आमीन बिल जहर का षुबूत ब-एं'तिबारे रिवायात के क़वी है।

(आख़िर में यही) शैख़ इब्ने हुमाम शरह हिदाया फ़त्हुल क़दीर मसला हाज़ा आमीन बिल जहर में बिलकुल अहले हदीष के हक़ में फ़ैसला देते हैं। चुनाँचे उनके अल्फ़ाज़ ये हैं, **लौ कान इलय्य फ़ी हाज़ा मअ्ना लवाक़फ़तु बिअन्न रिवायतल्खफ़्ज़ि युरादु बिहा अदमुल्क़िरातिल्खफ़ीफ़ि व रिवायतुल्जहरि सुम्मिय फ़ी दुर्रिस्सब्ति व क़द यदुल्लु अला हाज़ा मा फ़ी इब्नि माजा कान रसूलुल्लाहि (ﷺ) इज़ा तला गैरिल्मग़ज़ूबि मंय्यलीहि मिनस्सफ़्फ़िल्अव्वलि फयर्तज्जु बिल्मस्जिदु** (फ़त्हुल्क़दीर, नौल्किश्वर, पेज 117) अगर मुझे इस अम्र में इख़्तियार हो या'नी मेरी राय कोई चीज़ हो तो मैं उसमें मुवाफ़क़त करूँ कि जो रिवायत आहिस्ता वाली है उससे तो ये मुराद है कि बहुत ज़ोर से न चिल्लाते थे और जहर की आवाज़ से मुराद गूँजती हुई आवाज़ है। मेरी इस तौजीह पर इब्ने माजा की रिवायत दलालत करती है कि आँहज़रत (ﷺ) जब **वलज़्ज़ाल्लीन** पढ़ते तो आमीन कहते ऐसी कि पहली सफ़ वाले सुन लेते थे फिर दूसरे लोगों की आवाज़ से मस्जिद गूँज उठ जाती थी।

इज़्हारे शुक्र : अहले हदीष को फ़ख़्र है कि इनके मसाइल क़ुर्आन व हदीष से षाबित होकर अइम्मा सलफ़ के मा'मूल बिही होने के अलावा सूफ़िया-ए-किराम में से मौलाना मख़्दूम जिहानी महबूब सुब्हानी हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी क़द्दस सिर्रुहु अल अज़ीज़ भी इनकी ताईद में हैं। चुनाँचे इनकी ग़न्यतुत्तालिबीन के देखने वालों पर मख़्फ़ी नहीं कि हज़रत मम्दूह ने आमीन रफ़अयदैन को किस वज़ाहत से लिखा है।

पस सूफ़िया-ए-किराम की ख़िदमत में उमूमन और ख़ानदाने क़ादरिया की जनाब में ख़ुसूसन बड़े अदब से अर्ज़ है कि वो इन दोनों सुन्नतों को रिवाज देने में दिल व जान से सई करें और अगर ख़ुद न करें तो इनके रिवाज देने वाले अहले हदीष से मुहब्बत और इख़्लास रखें।

हज़रत मौलाना वहीदुज़्ज़माँ मरहूम यहाँ लिखते हैं कि हर दुआ के बाद दुआ करने वाले और सुनने वालों सबको आमीन कहना मुस्तहब है। इब्ने माजा की रिवायत में यूँ है कि यहूदी जितना सलाम और आमीन पर तुमसे जलते हैं उतना किसी बात पर नहीं जलते। दूसरी रिवायत में है कि षुम्म आमीन बहुत कहा करो। अफ़सोस है कि हमारे ज़माने में कुछ मुसलमान भी आमीन से जलने लगे हैं और जब अहले हदीष पुकारकर नमाज़ में आमीन कहते हैं तो वो बुरा मानते हैं। लड़ने पर मुस्तैद होते हैं, गोया यहूदियों की पैरवी करते हैं (वहीदी)। अल्लाह पाक उलमा-ए-किराम को समझ दे कि आज के नाज़ुक दौर में वो उम्मत को ऐसे इख़्तिलाफ़ पर लड़ने झगड़ने से बाज़ रहने की तल्क़ीन करें आमीन। ऊपर वाला मक़ाला हज़रतुल उस्ताज़ मौलाना अबुल वफ़ा षनाउल्लाह अमृतसरी (रह.) की किताब मसलके अहले हदीष का इक़्तिबास है। (राज़)

बाब 64 : ला इलाहा इल्लल्लाह कहने की फ़ज़ीलत का बयान

٦٤- باب فَضْلِ التَّهْلِيلِ

6403. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे सुमय ने, उनसे अबू सालेह ने, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जिसने ये कलिमा कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं, तन्हा है उसका कोई शरीक नहीं, उसी

٦٤٠٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ سُمَيٍّ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((مَنْ قَالَ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ

के लिये बादशाही है और उसी के लिये ता'रीफ़ें हैं और वो हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है, दिन में सौ दफ़ा पढ़ा उसे दस गुलामों को आज़ाद करने का ष़वाब मिलेगा और उसके लिये सौ नेकियाँ लिख दी जाएँगी और उसकी सौ बुराइयाँ मिटा दी जाएँगी और उस दिन वो शैतान के शर्र से महफ़ूज़ रहेगा शाम तक के लिये और कोई शख़्स उस दिन उससे बेहतर काम करने वाला नहीं समझा जाएगा, सिवा उसके जो उससे ज़्यादा करे। (राजेअ : 2393)

عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ فِي يَوْمٍ مِائَةَ مَرَّةٍ كَانَتْ لَهُ عَدْلَ عَشْرِ رِقَابٍ، وَكُتِبَتْ لَهُ مِائَةُ حَسَنَةٍ وَمُحِيَتْ عَنْهُ مِائَةُ سَيِّئَةٍ، وَكَانَتْ لَهُ حِرْزًا مِنَ الشَّيْطَانِ يَوْمَهُ ذَلِكَ، حَتَّى يُمْسِيَ وَلَمْ يَأْتِ أَحَدٌ بِأَفْضَلَ مِمَّا جَاءَ إِلاَّ رَجُلٌ عَمِلَ أَكْثَرَ مِنْهُ)).

[راجع: ٢٣٩٣]

6404. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल मलिक बिन अ़म्र ने, कहा कि हमसे उ़मर बिन अबी ज़ाइदा ने, उनसे अबू इस्हाक़ सबीई ने, उनसे अ़म्र बिन मैमून ने बयान किया कि जिसने ये कलिमा दस मर्तबा पढ़ लिया वो ऐसा होगा जैसे उसने एक अ़रबी गुलाम आज़ाद किया। इसी सनद से उ़मर बिन अबी ज़ाइदा ने बयान किया कि हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी सफ़र ने बयान किया, उनसे शअ़बी ने, उनसे रबीअ़ बिन ख़ुष़ैम ने यही मज़्मून तो मैंने रबीअ़ बिन ख़ुष़ैम से पूछा कि तुमने किससे ये ह़दीष़ सुनी है? उन्होंने कहा कि अ़म्र बिन मैमून औदी से। फिर मैं अ़म्र बिन मैमून के पास आया और उनसे पूछा कि तुमने ये ह़दीष़ किससे सुनी है? उन्होंने कहा कि इब्ने अबी लैला से। इब्ने अबी लैला के पास आया और पूछा कि तुमने ये ह़दीष़ किससे सुनी है? उन्होंने कहा कि अबू अय्यूब अंसारी (रज़ि.) से, वो ये ह़दीष़ नबी करीम (ﷺ) से बयान करते थे और इब्राहीम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उनसे उनके वालिद यूसुफ़ बिन इस्हाक़ ने, उनसे अबू इस्हाक़ सबीई ने, उन्होंने कहा कि मुझसे अ़म्र बिन मैमून औदी ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी लैला ने और उनसे अबू अय्यूब (रज़ि.) ने, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से। और इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने बयान किया, उनसे शअ़बी ने, उनसे रबीअ़ ने मौक़ूफ़न उनका क़ौल नक़ल किया। और आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल मलिक बिन मैसरह ने बयान किया, कहा मैंने हिलाल बिन यसाफ़ से सुना, उनसे रबीअ़ बिन ख़ुष़ैम और अ़म्र बिन मैमून दोनों ने और

٦٤٠٤ - قَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ عَمْرٍو، حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ أَبِي زَائِدَةَ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مَيْمُونٍ قَالَ: مَنْ قَالَ عَشْرًا كَانَ كَمَنْ أَعْتَقَ رَقَبَةً مِنْ وَلَدِ إِسْمَاعِيلَ. قَالَ عُمَرُ بْنُ أَبِي زَائِدَةَ: وَحَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي السَّفَرِ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ رَبِيعِ بْنِ خُثَيْمٍ مِثْلَهُ فَقُلْتُ لِلرَّبِيعِ : مِمَّنْ سَمِعْتَهُ؟ فَقَالَ : مِنْ عَمْرِو بْنِ مَيْمُونٍ فَأَتَيْتُ عَمْرَو بْنَ مَيْمُونٍ فَقُلْتُ: مِمَّنْ سَمِعْتَهُ؟ فَقَالَ : مِنَ ابْنِ أَبِي لَيْلَى، فَأَتَيْتُ ابْنَ أَبِي لَيْلَى فَقُلْتُ: مِمَّنْ سَمِعْتَهُ؟ فقال مِنْ أَبِي أَيُّوبَ الأَنْصَارِيِّ يُحَدِّثُهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. وَقَالَ إِبْرَاهِيمُ بْنُ يُوسُفَ: عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ مَيْمُونٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي لَيْلَى، عَنْ أَبِي أَيُّوبَ قَوْلَهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. وَقَالَ مُوسَى : حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، عَنْ دَاوُدَ، عَنْ عَامِرٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي لَيْلَى، عَنْ أَبِي أَيُّوبَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. وَقَالَ إِسْمَاعِيلُ: عَنِ الشَّعْبِيِّ،

عَنِ الرَّبِيعِ قَوْلَهُ. وَقَالَ آدَمُ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ مَيْسَرَةَ، سَمِعْتُ هِلاَلَ بْنَ يَسَافٍ. عَنِ الرَّبِيعِ بْنِ خُثَيْمٍ، وَعَمْرِو بْنِ مَيْمُونٍ، عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَوْلَهُ. وَقَالَ الأَعْمَشُ: وَحُصَيْنٌ. عَنْ هِلاَلٍ، عَنِ الرَّبِيعِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ قَوْلَهُ وَرَوَاهُ أَبُو مُحَمَّدٍ الْحَضْرَمِيُّ، عَنْ أَبِي أَيُّوبَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

उनसे इब्ने मसऊद (रज़ि.) ने। और आ'मश और हुसैन दोनों ने हिलाल से बयान किया, उनसे रबीअ बिन ख़ुषैम ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने, यही हदीष़ रिवायत की। और अबू मुहम्मद हज़रमी ने अबू अय्यूब (रज़ि.) से, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से मर्फ़ूअन इसी हदीष़ को रिवायत किया।

तश्रीह : सनद में इस्माईल बिन अबी ख़ालिद वाला जो अष़र नक़ल हुआ है उसे हुसैन मरवज़ी ने ज़ियादाते ज़ुहद में वस्ल किया मगर ज़ियादात मे पहले ये रिवायत मौक़ूफ़न रबीअ से नक़ल की इसके अख़ीर में ये है। शअबी ने कहा मैंने रबीअ से पूछा तुमने ये किससे सुना? उन्होंने कहा अम्र बिन मैमून से। मैं उनसे मिला और पूछा, उन्होंने कहा कि मैंने अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला से सुना। मैं उनसे मिला और पूछा तुमये हदीष़ किससे रिवायत करते हो? उन्होंने कहा अबू अय्यूब अंसारी (रह.) से, उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) से। **कलिमा ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहू** अल्अख़ बड़ी फ़ज़ीलत वाला कलिमा है। कुछ रिवायतों में **व लहुल हम्दु के बाद युह्यि व युमीत** और कुछ में ग़ैरुक अल्अख़ के लफ़्ज़ ज़्यादा आए हैं। ये कलिमा गुनाहगारों के लिये इक्सीरे आ'ज़म है। अगर रोज़ाना कम से कम सौ बार इस कलिमे को पढ़ लिया करें तो गुनाहों से कफ़्फ़ारा के अलावा तौहीद में अक़ीदा इस क़दर मज़बूत व पुख़्ता हो जाएगा कि वो शख़्स तौहीद की बरकत से अपने अंदर एक ख़ास ईमानी ताक़त महसूस करेगा। राक़िमुल हुरूफ़ (लेखक) ख़ादिम मुहम्मद दाऊद राज़ ने अपनी हक़ीर उम्र में ऐसे कई बुज़ुर्गों की ज़ियारत की है जिनकी ईमानी ताक़त का मैं अंदाज़ा नहीं कर सका। जिनमें से एक मुम्बई के मशहूर बुज़ुर्ग मुहाजिरे मक्का हज़रत हाजी मुंशी अलीमुल्लाह साहब भी थे जो मक्का ही की सरज़मीन में आराम कर रहे हैं। **गफरल्लाहु लहू व अदखिल्हु जन्नतुल्फिरदौसि (आमीन)**

अबू मुहम्मद हज़रमी कीरिवायत को इमाम अहमद और जिरानी ने वस्ल किया है। कुछ नुस्ख़ों में यहाँ इतनी इबारत ज़ाइद है, **क़ाल अबू अब्दुल्लाह वस्सहीहु कौलु अम्र** या'नी हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि अम्र की रिवायत सहीह है हालाँकि ऊपर अम्र की रिवायत कोई नहीं गुज़री बल्कि उमर बिन ज़ाइदह की है। हाफ़िज़ अबू ज़र्र ने कहा अम्र बग़ैर वाव के सहीह है।

बाब 65 : सुब्हानल्लाह कहने की फ़ज़ीलत का बयान

٦٥- باب فَضْلِ التَّسْبِيحِ

लफ़्ज़े सुब्हान महज़ूफ़ का मसदर है। फ़ेअले महज़ूफ़ ये है **सब्बहतुल्लाह सुब्हाना** जैसे लफ़्ज़ **सब्बहतुल्लाह सुब्हाना हमित्तुल्लाह हम्दन** है।

٦٤٠٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ سُمَيٍّ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((مَنْ قَالَ: سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ فِي يَوْمٍ مِائَةَ مَرَّةٍ حُطَّتْ خَطَايَاهُ، وَإِنْ كَانَتْ مِثْلَ

6405. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे सुमय ने बयान किया, उनसे अबू सालेह ने बयान किया और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जिसने सुब्हानल्लाह वबिहम्दिही दिन में सौ मर्तबा कहा, उसके गु नाह मुआफ़ कर दिये जाते हैं, ख़्वाह समुन्दर की झाग के बराबर ही क्यूँ न हों।

زَبَدِ الْبَحْرِ)).

मुस्लिम में अबू ज़र्र से नक़ल है कि उन्होंने रसूले करीम (ﷺ) से महबूब तरीन कलाम पूछा तो आपने बतलाया कि इन्न अहब्बल कलामि इलल्लाहि सुब्हानल्लाह वबि हम्दिही या'नी अल्लाह के यहाँ महबूबतरीन कलाम सुब्हानल्लाह व बि हम्दिही है।

6406. हमसे ज़ुहैर बिन हर्ब ने बयान किया, उन्होने कहा हमसे इब्ने फ़ुज़ैल ने बयान किया, उनसे अम्मारा ने, उनसे अबू ज़ुर्आ ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया दो कलिमे जो ज़ुबान पर हल्के हैं तराज़ू में बहुत भारी और रहमान को अज़ीज़ हैं। सुब्हानल्लाहिल् अज़ीम सुब्हानल्लाह वबिहम्दिही

(दीगर मक़ाम: 6682, 7563)

٦٤٠٦- حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ فُضَيْلٍ، عَنْ عُمَارَةَ، عَنْ أَبِي زُرْعَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((كَلِمَتَانِ خَفِيفَتَانِ عَلَى اللِّسَانِ ثَقِيلَتَانِ فِي الْمِيزَانِ حَبِيبَتَانِ إِلَى الرَّحْمَنِ، سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيمِ سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ)).

[طرفاه في : ٦٦٨٢، ٧٥٦٣].

ये तस्बीह भी बड़ा वज़न रखती है हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने जामेअ अस्सहीह को इस कलिमे पर ख़त्म किया है।

बाब 66 : अल्लाह तबारक व तआला के ज़िक्र की फ़ज़ीलत का बयान

٦٦- باب فَضْلِ ذِكْرِ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ

तश्रीह : ज़िक्रे इलाही की फ़ज़ीलत में हज़रत हुज्जतुल हिन्द शाह वलीउल्लाह मुहद्दिष देहलवी फ़र्माते हैं, क़ाल रसूलुल्लाहि (ﷺ) **ला यक़अदु क़ौमुन यज़्कुरूनल्लाह इल्ला हफ़्फ़तहुमुल्मलाइकतु व गशियतहुमर्रहमतु व क़ाल (ﷺ) क़ाल तआला अना इन्द ज़न्नि अब्दी बी व अना मअहू इज़ा ज़करनी फइज़करनी फ़ी नफ़्सिही ज़कर्तुहू फ़ी नफ़्सी व इन ज़करनी फदज़करनी फ़ी निफ़्सिही ज़कर्तुहू फ़ी मलइ खैरिम्मिन्हु व क़ाल (ﷺ) अला उख़्बिरूकुम बिख़ैरि आमालिकुम व अज़्काहा इन्द मलाइकिकुम व अर्फ़इहा फ़ी दरजातिकुम व खैरुल्लकुम मिन इन्फ़ाक़िज़्ज़हबि वल्वर्क़ि व खैरुल्लकुम मिन अन तल्क़ू अदुव्वकुम फतज़्रिबू आनाक़हुम व यज़्रिबू आनाक़कुम क़ालु बला क़ाल ज़िक्रुल्लाहि** (हुज्जतुल्लाहिल्बालिग़ा) या'नी रसूले करीम (ﷺ) फ़र्माते हैं जो भी क़ौम अल्लाह का ज़िक्र करने के लिये बैठती है उसको फ़रिश्ते घेर लेते हैं और रहमते इलाही उनको ढाँप लेती है और हदीषे क़ुदसी में अल्लाह ने फ़र्माया कि मैं बन्दा के गुमान के साथ हूँ और जब भी वो मुझको याद करता है मैं उसके साथ होता हूँ। अगर वो अपने नफ़्स में मुझको याद करता है तो मैं भी उसे अपने नफ़्स में याद करता हूँ और अगर बन्दा किसी गिरोह में मेरा ज़िक्र करता है तो मैं उसका ऐसे गिरोह में ज़िक्र करता हूँ जो बेहतरीन या'नी फ़रिश्तों का गिरोह है और रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मैं तुमको बेहतरीन अमल न बतलाऊँ जो अल्लाह के यहाँ बहुत पाकीज़ा है और दर्जा में बहुत बुलन्द है और सोने और चाँदी के ख़र्च करने से भी बेहतर है बल्कि जिहाद से भी अफ़ज़ल है। सहाबा ने कहा हाँ ज़रूर बतलाईये। आपने फ़र्माया कि, वो अल्लाह का ज़िक्र है।

क़ुर्आन मजीद में अल्लाह ने अपने बंदगाने ख़ास का ज़िक्र इन लफ़्ज़ों में किया है। **अल्लज़ीन यज़्कुरूनल्लाह कियामव्वंक़ुऊदव्वं अला जुनूबिहिम व यतफ़क्करून फ़ी ख़ल्क़िस्समावाति वल्अर्ज़ि रब्बना मा खलक़्त हाज़ा बातिलन सुब्हानक फक़िना अज़ाबन्नार** (आले इम्रान 191) या'नी अल्लाह के प्यारे बन्दे वो हैं जो बैठे हुए और खड़े हुए और लैटे हुए हर तीनों इंसानी हालतों में अल्लाह को याद रखते हैं। बल्कि आसमानों और ज़मीनों में नज़रे इबरत डालकर कहते हैं कि या अल्लाह! तेरा सारा कारख़ाना बेकार महज़ नहीं है बल्कि इसमें तेरी क़ुदरत के लाता'दाद ख़ज़ाने मख़्फ़ी हैं, तू पाक है, पस तू हमको मौत के और दोज़ख़ से बचाईयो। इस आयत मे दीदा इबरतवालों के लिये बहुत से सबक़ हैं। देखने को नूर बातिन चाहियो।

6407. हमसे मुहम्मद बिन अ़लाअ ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अ़ब्दुल्लाह ने, उनसे अबू बुर्दा ने और उनसे अबू मूसा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया उस शख़्स की मिषाल जो अपने रब को याद करता है और उसकी मिषाल जो अपने रब को याद नहीं करता ज़िंदा और मुर्दा जैसी है।

٦٤٠٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ بُرَيْدِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَثَلُ الَّذِي يَذْكُرُ رَبَّهُ وَالَّذِي لاَ يَذْكُرُ مَثَلُ الْحَيِّ وَالْمَيِّتِ)).

तश्रीह: अल्लाह की याद गोया नमूद ज़िंदगी है और अल्लाह को भूल जाना गोया ज़ुल्मत मौत है। कुछ ने कहा अल्लाह की याद न करने वालों से कुछ नफ़ा नुक़्सान नहीं पहुँचता। क़ुर्आन मजीद में अल्लाह का ज़िक्र करने के बारे में बहुत सी आयात हैं एक जगह फ़र्माया, **या अय्युहल्लज़ीन आमनुज़्कुरुल्लाह ज़िक्रन कष़ीरा** (अल अहज़ाब : 41) ऐ ईमान वालों! अल्लाह को बकष़रत याद किया करो। एक ह़दीष़ में आँह़ज़रत (ﷺ) ने एक सहाबी को फ़र्माया था कि तेरी ज़ुबान हमेशा अल्लाह के ज़िक्र से तर रहनी चाहिये। किसी ह़ाल में भी अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न होना ये अल्लाह वालों की शान है। नमाज़, रोज़ा, ह़ज्ज, ज़कात, कलिमा, कलाम, ज़िक्र, अज़्कार सबका ख़ुलास़ा यही ज़िक्रुल्लाह है जिसके कलिमात तस्बीह़, तह़्मीद व तक्बीर व तहलील बेहतरीन ज़रायेअ़ हैं। तिलावते क़ुर्आन मजीद व मुतालआ ह़दीषे नबवी व कष़रते दरूदो-शरीफ़ भी सब ज़िक्रुल्लाह ही की सूरतें हैं। सबसे बड़ा ज़िक्र ये है कि जुम्ला अवामिर और नवाही के लिये अल्लाह को याद रखे। अवामिर को बजा लाए नवाही से परहेज़ कर ले।

ज़ाकिरीन की मजलिस का ये दर्जा है कि ज़िक्रुल्लाह करने वालों के अ़लावा आने वाला शख़्स गो उनमे शरीक न हो, किसी काम या मतलब से उनके पास आकर बैठ गया हो, तो उनके ज़िक्र की बरकत से वो भी बख़्श दिया गया। इस ह़दीष़ से अल्लाह वाले और ज़ाकिरीने अल्लाह की बड़ी फ़ज़ीलत षाबित हुई कि उनके पास बैठने वाला भी गो किसी ज़रूरत से गया हो उनके फ़ैज़ और बरकत से मह़रूम नहीं रहता। अब अफ़सोस है उन लोगों पर जो पैग़म्बरे रह़मत के साथ बैठने वालों और सफ़र और ह़ज़र में आपके साथ रहने वाले स़ह़ाबा किराम को बहिश्त से मह़रूम और बदनसीब जानते हैं। ये कमबख़्त ख़ुद ही मह़रूम होंगे। एक बार कअ़ब असलमी ख़ादिमे रसूले करीम (ﷺ) से, आपने फ़र्माया, मांग क्या मांगता है? उन्होंने कहा जन्नत में आपकी रिफ़ाक़त चाहता हूँ। आपने फ़र्माया कुछ और? उन्होंने कहा बस यही। आपने फ़र्माया अच्छा कष़रते सुजूद से मेरी मदद कर। (स़ह़ीह़ मुस्लिम किताबुस्सलात कष़रतुस्सुजूद)

अल्लाह पाक हर मुसलमान को ये दर्जा-ए-रिफ़ाक़त अ़ता करे, आमीन।

6408. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन अ़ब्दुल ह़मीद ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अबू स़ालेह़ ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह के कुछ फ़रिश्ते ऐसे हैं जो रास्तों में फिरते रहते हैं और अल्लाह की याद करने वालों को तलाश करते रहते हैं। फिर जहाँ वो कुछ ऐसे लोगों को पा लेते हैं जो अल्लाह का ज़िक्र करते होते हैं तो एक-दूसरे को आवाज़ देते हैं कि आओ हमारा मतलब ह़ासिल हो गया। फिर वो पहले आसमान तक अपने परों से उन पर उमड़ते रहते हैं। फिर ख़त्म पर अपने रब की तरफ़ चले जाते हैं। फिर उनका रब उनसे

٦٤٠٨- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((إِنَّ للهِ مَلاَئِكَةً يَطُوفُونَ فِي الطُّرُقِ يَلْتَمِسُونَ أَهْلَ الذِّكْرِ فَإِذَا وَجَدُوا قَوْمًا يَذْكُرُونَ اللهَ تَنَادَوْا هَلُمُّوا إِلَى حَاجَتِكُمْ قَالَ: فَيَحُفُّونَهُمْ بِأَجْنِحَتِهِمْ إِلَى السَّمَاءِ الدُّنْيَا، قَالَ: فَيَسْأَلُهُمْ رَبُّهُمْ عَزَّ وَجَلَّ

وَهُوَ أَعْلَمُ مِنْهُمْ مَا يَقُولُ عِبَادِي؟ قَالُوا: يَقُولُونَ يُسَبِّحُونَكَ وَيُكَبِّرُونَكَ وَيَحْمَدُونَكَ وَيُمَجِّدُونَكَ، قَالَ: فَيَقُولُ هَلْ رَأَوْنِي؟ قَالَ : فَيَقُولُونَ لاَ وَاللهِ، مَا رَأَوْكَ قَالَ: فَيَقُولُ وَكَيْفَ لَوْ رَأَوْنِي؟ قَالَ: يَقُولُونَ لَوْ رَأَوْكَ كَانُوا أَشَدَّ لَكَ عِبَادَةً وَأَشَدَّ لَكَ تَمْجِيدًا وَأَكْثَرَ لَكَ تَسْبِيحًا، قَالَ: يَقُولُ فَمَا يَسْأَلُونِي؟ قَالَ: يَسْأَلُونَكَ الْجَنَّةَ قَالَ: يَقُولُ وَهَلْ رَأَوْهَا؟ قَالَ : يَقُولُونَ : لاَ وَاللهِ يَا رَبِّ مَا رَأَوْهَا قَالَ : يَقُولُ فَكَيْفَ لَوْ أَنَّهُمْ رَأَوْهَا؟ قَالَ: يَقُولُونَ لَوْ أَنَّهُمْ رَأَوْهَا كَانُوا أَشَدَّ عَلَيْهَا حِرْصًا، وَأَشَدَّ لَهَا طَلَبًا وَأَعْظَمَ فِيهَا رَغْبَةً، قَالَ: فَمِمَّ يَتَعَوَّذُونَ؟ قَالَ: يَقُولُونَ مِنَ النَّارِ، قَالَ: يَقُولُ وَهَلْ رَأَوْهَا؟ قَالَ: يَقُولُونَ لاَ وَاللهِ مَا رَأَوْهَا قَالَ : يَقُولُ فَكَيْفَ لَوْ رَأَوْهَا؟ قَالَ : يَقُولُونَ لَوْ رَأَوْهَا كَانُوا أَشَدَّ مِنْهَا فِرَارًا وَأَشَدَّ لَهَا مَخَافَةً، قَالَ : فَيَقُولُ فَأُشْهِدُكُمْ أَنِّي قَدْ غَفَرْتُ لَهُمْ، قَالَ : يَقُولُ مَلَكٌ مِنَ الْمَلاَئِكَةِ فِيهِمْ فُلاَنٌ لَيْسَ مِنْهُمْ إِنَّمَا جَاءَ لِحَاجَةٍ قَالَ: هُمُ الْجُلَسَاءُ لاَ يَشْقَى بِهِمْ جَلِيسُهُمْ)). رَوَاهُ شُعْبَةُ، عَنِ الأَعْمَشِ وَلَمْ يَرْفَعْهُ، وَرَوَاهُ سُهَيْلٌ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

पूछता है ... ह़ालाँकि वो अपने बन्दों के बारे में ख़ूब जानता है..... कि मेरे बन्दे क्या कहते थे? वो जवाब देते हैं कि वो तेरी तस्बीह़ बयान करते थे, तेरी किब्रियाई बयान करते थे, तेरी ह़म्द करते थे और तेरी बड़ाई करते थे। फिर अल्लाह तआ़ला पूछता है क्या उन्होंने मुझे देखा है? कहा कि वो जवाब देते हैं, नहीं वल्लाह! उन्होंने तुझे नहीं देखा। इस पर अल्लाह तआ़ला फ़र्माता है, फिर उनका इस वक़्त क्या ह़ाल होता जब वो मुझे देखे हुए होते? वो जवाब देते हैं कि अगर वो तेरा दीदार कर लेते तो तेरी इबादत और भी बहुत ज़्यादा करते, तेरी बड़ाई सबसे ज़्यादा बयान करते, तेरी तस्बीह़ सबसे ज़्यादा करते। फिर अल्लाह तआ़ला पूछता है, फिर वो मुझसे क्या मांगते हैं? फ़रिश्ते कहते हैं कि वो जन्नत मांगते हैं। बयान किया कि अल्लाह तआ़ला पूछता है क्या उन्होंने जन्नत देखी है? फ़रिश्ते जवाब देते हैं, नहीं वल्लाह! ऐ रब! उन्होंने तेरी जन्नत नहीं देखी। बयान किया कि अल्लाह तआ़ला पूछता है उनका उस वक़्त क्या आ़लम होता अगर उन्होंने जन्नत को देखा होता? फ़रिश्ते जवाब देते हैं कि अगर उन्होंने जन्नत को देखा होता तो वो उसके और भी ज़्यादा ख़्वाहिशमंद होते, सबसे बढ़कर उसके त़लबगार होते और सबसे ज़्यादा उसके आरज़ूमंद होते। फिर अल्लाह तआ़ला पूछता है कि वो किस चीज़ से पनाह मांगते हैं? फ़रिश्ते जवाब देते हैं, दोज़ख़ से। अल्लाह तआ़ला पूछता है क्या उन्होंने जहन्नम को देखा है? वो जवाब देते हैं, नहीं वल्लाह! उन्होंने जहन्नम को नहीं देखा है। अल्लाह तआ़ला फ़र्माता है, फिर अगर उन्होंने उसे देखा होता तो उनका क्या ह़ाल होता? वो जवाब देते हैं कि अगर उन्होंने उसे देखा होता तो उससे बचने में वो सबसे आगे होते और सबसे ज़्यादा उससे ख़ौफ़ खाते। इस पर अल्लाह तआ़ला फ़र्माता है कि मैं तुम्हें गवाह बनाता हूँ कि मैंने उनकी मग़्फ़िरत की। नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि उस पर उनमें से एक फ़रिश्ते ने कहा कि उनमें फ़लाँ भी था जो उन ज़ाकिरीन में से नहीं था, बल्कि वो किसी ज़रूरत से आ गया था। अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़र्माता है कि ये (ज़ाकिरीन) वो लोग हैं जिनकी मजलिस में बैठने वाला भी नामुराद नहीं रहता।

इस हदीष़ को शुअ़बा ने भी आ'मश से रिवायत किया लेकिन इसको मर्फ़ूअ़न नहीं किया। और सुहैल ने भी इसको अपने वालिद अबू स़ालेह से रिवायत किया, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से, उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) से।

तश्रीह : मजालिसे ज़िक्र से क़ुर्आन व ह़दीष़ का पढ़ना पढ़ाना। क़ुर्आन व ह़दीष़ की मजालिस वा'ज़ मुनअ़क़िद करना भी मुराद है क़ुर्आन पाक ख़ुद ज़िक्र है, इन्ना नहनु नज़्ज़ल्नज़्ज़िक्र व इन्ना लहू लहाफ़िज़ून।

बाब 67 : ला ह़ौल वला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह कहना

٦٧- باب قَوْلِ لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللهِ

6409. हमसे अबुल हसन मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमको सुलैमान बिन त़रख़ान तैमी ने ख़बर दी, उन्हें अबू उ़ष्मान नह्दी ने और उनसे हज़रत अबू मूसा अश्अ़री (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) एक घाटी या दर्रे में घुसे। बयान किया कि जब एक और स़हाबी भी उस पर चढ़ गये तो उन्होंने बुलंद आवाज़ से, ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर कहा। रावी ने बयान किया कि उस वक़्त आँहज़रत (ﷺ) अपने ख़च्चर पर सवार थे। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम लोग किसी बहरे या ग़ायब को नहीं पुकारते। फिर फ़र्माया, अबू मूसा या यूँ (फ़र्माया) ऐ अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस! क्या मैं तुम्हें एक कलिमा न बता दूँ जो जन्नत के ख़ज़ानों मे से है। मैंने अ़र्ज़ किया, ज़रूर इर्शाद फ़र्माएँ फ़र्माया कि ला ह़ौल वला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह (राजेअ़ : 2992)

٦٤٠٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ أَبُو الْحَسَنِ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا سُلَيْمَانُ التَّيْمِيُّ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ، عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ قَالَ: أَخَذَ النَّبِيُّ ﷺ فِي عَقَبَةٍ أَوْ قَالَ فِي ثَنِيَّةٍ قَالَ: فَلَمَّا عَلاَ عَلَيْهَا رَجُلٌ نَادَى فَرَفَعَ صَوْتَهُ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَاللهُ أَكْبَرُ قَالَ: وَرَسُولُ اللهِ عَلَى بَغْلَتِهِ قَالَ: ((فَإِنَّكُمْ لاَ تَدْعُونَ أَصَمَّ وَلاَ غَائِبًا)) ثُمَّ قَالَ: ((يَا أَبَا مُوسَى أَوْ يَا عَبْدَ اللهِ، أَلاَ أَدُلُّكَ عَلَى كَلِمَةٍ مِنْ كَنْزِ الْجَنَّةِ؟)) قُلْتُ: بَلَى، قَالَ: ((لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللهِ)). [راجع: ٢٩٩٢]

तश्रीह : ला ह़ौल गुनाहों से बचने की त़ाक़त नहीं है व ला क़ुव्वत और न नेकी करने की त़ाक़त है इल्ला बिल्लाह मगर ये सब कुछ महज़ अल्लाह की मदद पर मौक़ूफ़ है। वही इंसान के हर ह़ाल का मालिक और मुख़्तार है। इस कलिमे में अल्लाह पाक की अ़ज़्मत व शान का बयान एक ख़ास़ अंदाज़ से किया गया है। इसीलिये ये कलिमा जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना है इसे जो भी पढ़ेगा और दिल में जगह देगा यक़ीनन जन्नती होगा। जअ़लनल्लाहु मिन्हुम (आमीन)।

बाब 68 : अल्लाह पाक के एक कम सौ नाम हैं

٦٨- باب لِلَّهِ عَزَّ وَجَلَّ مِائَةُ اسْمٍ غَيْرَ وَاحِدٍ

तश्रीह : तिर्मिज़ी में इस्मे ज़ात अल्लाह के अलावा मुन्दर्जा ज़ैल निन्नानवे सिफ़ाती नाम आए हैं, **अर्रहमानु अर्रहीम** अल् मलिक, अल कुद्दूस,अस्सलाम, अल् मोमिन, अल् मुहैमीन, अल् अज़ीज़, अल् जब्बार, अल् मुतकब्बिर, अल् ख़ालिक़ अल् बारी, अल मुसव्विर, अल ग़फ़्फ़ार, अल वह्हाब, अर् रज़्ज़ाक़, अल् फ़त्ताह, अल् अलीम, अल क़ाबिज़, अल बासित़, अल ख़ाफ़िज़, अर् राफ़ेअ, अल मुइज़्ज़ु, अल मुज़िल्लु, अस्समीअ, अल बसीर, अल हकीम, अल लत़ीफ़, अल ख़बीर, अल हलीम, अल अज़ीम, अल ग़फ़ूर, अश्शकूर, अल अली, अल कबीर, अल हफ़ीज़, अल मुक़ीत, अल हसीब, अल जलील, अल करीम, अर रक़ीब, अल मुजीब, अल वासेअ, अल वदूद, अल मजीद, अल बाअिष़, अश्शहीद, अल हक़, अल वकील, अल क़वी, अल मतीन, अल वली, अल हुमैद, अल मुह़्सी, अल मुब्दी, अल मुईद, अल मुहयि, अल मुमीत, अल हई, अल क़य्यूम, अल वाजिद, अल माजिद, अल अहद, अल वाहिद, अस्समद, अल क़ादिर, अल मुक़्तदिर, अल मुक़द्दम, अल मुअख़्ख़िर, अल अव्वल, अल आख़िर, अज़्ज़ाहिर, अल बात़िन, अल वाली, अल मुतआलि, अल बर्र, अत्तव्वाब, अल मुंतक़िम, अल अफ़ुव्व, अर् रऊफ़, मालिकुल मुल्क, ज़ुल जलालि वल इकराम, अल मुक़्सित़, अल जामेअ, अल ग़नी, अल् मुग़्नी, अल मानेअ, अज़्ज़ार, अन् नाफ़ेअ, अन्नूर, अल हादी, अल बदीअ, अल वारिष़ अर् रशीद, अस् सबूर।

ये अल्लाह तआला के वो नाम हैं जिनके याद करने पर जन्नत की बशारत आई है। ताहम अस्मा हुस्ना इन 99 नामों तक महदूद नहीं बल्कि इनके अलावा अल्लाह तआला के और नाम भी हैं मष़लन **अल्क़ाहिर अल्ग़ाफ़िर अल्फ़ात़िर अस्सुब्हान अल्हन्नान अल्मन्नान अर्रब अल्मुहीत़ अल्क़दीर, अल्ख़ल्लाक़, अद्दाइम, अल्क़ाइम, अहकमुल्हाकिमीन, अर्हमुर्राहिमीन** वग़ैरह।

6410. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमने ये हदीष़ अबुज़्ज़िनाद से याद की, उनसे अअरज ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने रिवायतन बयान किया कि अल्लाह तआला के निन्नानवे नाम हैं, एक कम सौ, जो शख़्स भी इन्हें याद कर लेगा जन्नत में जाएगा। अल्लाह ताक़ है और ताक़ पसंद करता है। (राजेअ : 2736)

٦٤١٠- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، قَالَ : حَفِظْنَاهُ مِنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رِوَايَةً قَالَ: لله تِسْعَةٌ وَتِسْعُونَ اسْماً مِائَةٌ إِلاَّ وَاحِداً، لاَ يَحْفَظُهَا أَحَدٌ إِلاَّ دَخَلَ الْجَنَّةَ وَهُوَ وِتْرٌ يُحِبُّ الْوِتْرَ. [راجع: ٢٧٣٦]

बाब 69 : ठहर ठहरकर फ़ासले से वा'ज़ व नसीहत करना

٦٩- باب الْمَوْعِظَةِ سَاعَةً بَعْدَ سَاعَةٍ

6411. हमसे उमर बिन हफ़्स बिन ग़याष़ ने बयान किया, कहा मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, कहा कि मुझसे शक़ीक़ ने बयान किया, कहा कि हम अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) का इंतिज़ार कर रहे थे कि यज़ीद बिन मुआविया (एक बुज़ुर्ग ताबेई) आए। हमने कहा, तशरीफ़ रखिए, लेकिन उन्होंने जवाब दिया कि नहीं, मैं अंदर जाऊँगा और तुम्हारे साथ (अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि.) को बाहर लाऊँगा। अगर वो न आए तो मैं ही तन्हा आ जाऊँगा और तुम्हारे साथ बैठूँगा। फिर अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) बाहर तशरीफ़ लाए और वो यज़ीद बिन मुआविया

٦٤١١- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، حَدَّثَنِي شَقِيقٌ، قَالَ كُنَّا نَنْتَظِرُ عَبْدَ اللهِ إِذْ جَاءَ يَزِيدُ بْنُ مُعَاوِيَةَ فَقُلْنَا: أَلاَ تَجْلِسُ؟ قَالَ: لاَ، وَلَكِنْ أَدْخُلُ فَأُخْرِجُ إِلَيْكُمْ صَاحِبَكُمْ وَإِلاَّ جِئْتُ أَنَا فَجَلَسْتُ، فَخَرَجَ عَبْدُ اللهِ وَهُوَ آخِذٌ بِيَدِهِ فَقَامَ عَلَيْنَا فَقَالَ: أَمَا إِنِّي أُخْبَرُ بِمَكَانِكُمْ، وَلَكِنَّهُ يَمْنَعُنِي مِنَ الْخُرُوجِ إِلَيْكُمْ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ

का हाथ पकड़े हुए थे हमारे सामने खड़े हुए कहने लगे मैं जान गया था कि तुम यहाँ मौजूद हो। पस मैं जो निकला तो इस वजह से कि मैंने आँहज़रत (ﷺ) को देखा। आप मुक़र्रर दिनों में हमको वा'ज़ फ़र्माया करते थे। (फ़ासला देकर) आपका मत़लब ये होता था कि कहीं हम उकता न जाएँ।

(राजेअ़ : 68)

وَسَلَّمَ كَانَ يَتَخَوَّلُنَا بِالْمَوْعِظَةِ فِي الأَيَّامِ كَرَاهِيَةَ السَّآمَةِ عَلَيْنَا.

[راجع: ٦٨]

किताबुद्दअ़वात यहाँ ख़त्म है मुनासिब है कि आदाबे दुआ़ के बारे में कुछ तफ़्सील अ़र्ज़ कर दिया जाए।

तश्रीह़ : ह़ज़रत आदम (अ़लैहिस्सलाम) से लेकर अब तक अल्लाह पाक के वजूदे बरह़क़ को मानने वाली जितनी क़ौमें गुज़री हैं या मौजूद हैं इन सब में दुआ़ का तस़व्वुर व तख़य्युल व तआ़मुल मौजूद है। मुवह्हिद क़ौमों ने हर क़िस्म की नेक दुआ़ओं का मर्कज़ अल्लाह पाक रब्बुल आ़लमीन की ज़ाते वाहिद को क़रार दिया और मुश्रिकीन क़ौमों ने इस सह़ीह़ मर्कज़ से अपने देवताओं, औलिया, पीरों, शहीदों, क़ब्रों, बुतों के साथ ये मामला शुरू कर दिया। ताहम इस क़िस्म के तमाम लोगों का दुआ़ के तस़व्वुर पर ईमान रहा है और अब भी मौजूद है।

इस्लाम में दुआ़ को बहुत बड़ी अहमियत दी गई है, पैग़म्बरे इस्लाम अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम फ़र्माते हैं, **अद् दुआ़उ मुख़्ख़ुल इ़बादह** या'नी दुआ़ इ़बादत का मग़ज़ है। इसलिये इस्लाम में जिन जिन कामों को इ़बादत का नाम दिया गया है उन सबकी बुनियाद शुरू से आख़िर तक दुआ़ओं पर रखी गई है। नमाज़ जो इस्लाम का सतून है और जिसे अदा किये बग़ैर किसी मुसलमान को चारा नहीं वो शुरू से आख़िर तक दुआ़ओं का एक बेहतरीन गुलदस्ता है। रोज़ा, ह़ज्ज का भी यही ह़ाल है। ज़कात में ज़कात देने वाले के ह़क़ में नेक दुआ़ सिखलाकर बतलाया गया है कि इस्लाम का अ़सल मुद्दआ जुम्ला इ़बादात से दुआ़ है चुनाँचे ख़ुद आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, **अद्दुआ़उ हुवल्इबादतु ष़ुम्म क़रअ व क़ाल रब्बुकुमुदऊनी अस्तजिब लकुम** (रवाहु अहमद) या'नी दुआ़ इ़बादत है बल्कि एक रिवायत के मुताबिक़ दुआ़ओं में वो ग़ज़ब की क़ुव्वत रखी गई है कि उनसे तक़्दीरें बदल जाती हैं। (मौसूफ़ मुतर्जिम का इशारा शायद उस ह़दीष़ की त़रफ़ है कि अगर कोई चीज़ तक़्दीर व क़ज़ा से सबक़त ले जा सकती है तो ये दुआ़ थी लेकिन इसका वो मत़लब नहीं जो मौसूफ़ ने लिया है उसमें वाज़ेह़ त़ौर पर ये बताया जा रहा है कि दुआ़ में बड़ी ताष़ीर है जो किसी दवा में भी नहीं लेकिन ये तक़्दीर नहीं बदल सकती गोया यूँ कहिये कि मोमिन का आख़िरी हथियार दुआ़ है जो तरयाक़े मुजर्रब है अगर उस पर ह़ावी है तो सिर्फ़ क़द्र व क़ज़ा अ़ब्दुर्रशीद तौंसवी)।

इसलिये नबी करीम (ﷺ) ने ख़ास़ ताकीद फ़र्माई कि **फ़अ़लैकुम इ़बादल्लाह बिद्दुआ़इ** (रवाहुत्तिर्मिज़ी) या'नी ऐ अल्लाह के बन्दों ! बिज़ ज़रूर दुआ़ को अपने लिये लाज़िम कर लो। एक रिवायत में है कि जो शख़्स़ अल्लाह से दुआ़ नहीं मांगता समझ लो अल्लाह के ग़ज़ब में गिरफ़्तार है और फ़र्माया कि जिसके लिये दुआ़ बकष़रत करने का दरवाज़ा खोल दिया गया समझ लो उसके लिये रह़मते इलाही के दरवाज़े खुल गये और भी बहुत सी रिवायात इस क़िस्म की मौजूद हैं। पस अहले ईमान का फ़र्ज़ है कि अल्लाह पाक से हर वक़्त दुआ़ मांगना अपना अ़मल बना लें। क़ुबूलियते दुआ़ के लिये क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में कुछ तफ़्स़ीलात हैं, इस मुख़्तस़र मक़ाले में इनको भी सरसरी नज़र से मुलाह़िज़ा फ़र्मा लीजिए ताकि आपकी दुआ़ बिज़ ज़रूर क़ुबूल हो जाए।

(1) दुआ़ करते वक़्त ये सोच लेना ज़रूरी है कि उसका खाना-पीना, उसका लिबास ह़लाल माल से है या ह़राम से। अगर रिज़्क़े ह़लाल व स़िदक़े मक़ाल व लिबासे त़य्यब मुहय्या नहीं है तो दुआ़ से पहले उनको मुहय्या करने की कोशिश

करनी ज़रूरी है।

(2) क़ुबूलियते दुआ के लिये ये शर्त बड़ी अहम है कि दुआ करते वक़्त अल्लाह बरहक़ पर यक़ीने कामिल हो और साथ ही दिल में ये अज़्म बिल जज़्म हो कि जो वो दुआ कर रहा है वो ज़रूर क़ुबूल होगी, रद्द नहीं की जाएगी।

(3) क़ुबूलियते दुआ के लिये दुआ के मज़्मून पर तवज्जह देना भी ज़रूरी है अगर आप क़त्अ रहमी के लिये ज़ुल्म व ज़्यादती के लिये या क़ानूने क़ुदरत के बरअक्स कोई मुतालबा अल्लाह के सामने रख रहे हैं तो हर्गिज़ ये गुमान न करें कि इस क़िस्म की दुआएँ भी आपकी क़ुबूल होंगी।

(4) दुआ करने के बाद फ़ौरन ही इसकी क़ुबूलियत आप पर ज़ाहिर हो जाए, ऐसा तसव्वुर भी सहीह नहीं है बहुत सी दुआएँ फ़ौरन अष़र दिखाती हैं और बहुत सी काफ़ी देर के बाद अष़र पज़ीर होती हैं। बहुत सी दुआएँ बज़ाहिर क़ुबूल नहीं होतीं मगर उनकी बरकात से हम किसी आने वाली बड़ी आफ़त से बच जाते हैं और बहुत सी दुआएँ सिर्फ़ आख़िरत के लिये ज़ख़ीरा बनकर रह जाती हैं । बहरहाल दुआ बशराइते-बाला किसी हाल में भी बेकार नहीं जाती।

(5) आँहज़रत (ﷺ) ने आदाबे दुआ में बतलाया है कि अल्लाह के सामने हाथों को हथेलियों की तरफ़ से फैला कर सिदक़ दिल से साइल बनकर दुआ मांगो। फ़र्माया, तुम्हारा रब्बे करीम बहुत ही हयादार है उसको शर्म आती है कि अपने मुख़्लिस़ बन्दे के हाथों को ख़ाली हाथ वापस कर दे। आख़िर में हाथों को चेहरे पर मल लेना भी आदाबे दुआ से है। (आदाबे दुआ से है कहने की बजाय यूँ कहा जाए कि जाइज़ है बग़ैर मले अगर नीचे गिरा दिये जाएँ तब भी आदाबे दुआ में शामिल है। अब्दुर्रशीद तौंसवी)

(6) पीठ पीछे अपने भाई मुसलमान के लिये दुआ करना क़ुबूलियत के लिहाज़ से फ़ौरी अष़र रखता है मज़ीद ये कि फ़रिश्ते साथ में आमीन कहते हैं और दुआ करने वाले को दुआ देते हैं कि अल्लाह तुमको भी वो चीज़ अता करे जो तुम अपने भाई के लिये मांग रहे हो।

(7) आँहज़रत (ﷺ) फ़र्माते हैं कि पाँच क़िस्म के आदमियों की दुआ ज़रूर क़ुबूल होती है। मज़्लूम की दुआ, हाजी की दुआ जब तक वो वापस हो, मुजाहिद की दुआ यहाँ तक कि वो अपने मक़्सद को पहुँचे, मरीज़ की दुआ यहाँ तक कि वो तन्दरुस्त हो, पीठ पीछे अपने भाई के लिये दुआ-ए-ख़ैर जो क़ुबूलियत में फ़ौरी अष़र रखती है।

(8) एक दूसरी रिवायत की बिना पर तीन दुआएँ ज़रूर क़ुबूल होती हैं; वालिदैन का अपनी औलाद के हक़ में दुआ करना और मज़्लूम की कुछ रिवायत की बिना पर रोज़ेदार की दुआ और इमामे आदिल की दुआ भी फ़ौरी अष़र दिखलाती है। मज़्लूम की दुआ के लिये आसमानों के दरवाज़े खुल जाते हैं और बारगाहे अहदियत से आवाज़ आती है कि मुझको क़सम है अपने जलाल की और इज़्ज़त की मैं ज़रूर तेरी मदद करूँगा अगरचे उसमें कुछ वक़्त लगे।

(9) कुशादगी, बेफ़िक्री, फ़ारिग़ुल बाली के औक़ात में दुआओं में मशग़ूल रहना कमाल है वरना शदाइद व मसाइब में तो सब ही दुआ करने लग जाते हैं। औलाद के हक़ में बद् दुआ करने की मुमानअत है। इसी तरह अपने लिये या अपने माल के लिये बद् दुआ नहीं करनी चाहिये।

(10) दुआ करने से पहले फिर अपने दिल का जाइज़ा लीजिए कि उसमें सुस्ती ग़फ़लत का कोई दाग़ धब्बा तो नहीं है। दुआ वही क़ुबूल होती जो दिल की गहराई से सिद्क़ निय्यत से हुज़ूरे क़ल्ब व यक़ीने कामिल के साथ की जाए।

ये चंद बातें बतौर ज़रूरी गुज़ारिशात के नाज़िरीन के सामने रख दी गई हैं । उम्मीद बल्कि यक़ीने कामिल है कि बुख़ारी शरीफ़ का मुतालआ करने वाले भाई-बहन सब अपने इस हक़ीरतरीन ख़ादिम को भी अपनी दुआ में शरीक रखेंगे और अगर कहीं भूल-चूक नज़र आए तो इससे मुख़्लिसाना तौर पर ख़बर करेंगे, या अपने दामने अफ़्व में छुपा लेंगे।

81. किताबुर्रिक़ाक़

किताब दिल को नरम करने वाली बातों के बयान में

بِسۡمِ اللهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

बाब 1 : सेहत और फ़राग़त के बयान में आँहज़रत (ﷺ) का ये फ़र्मान कि, ज़िंदगी आख़िरत ही की ज़िंदगी ह

١ - باب الصِّحَّةِ وَالْفَرَاغِ وَلاَ عَيْشَ إِلاَّ عَيْشُ الآخِرَةِ

तश्रीह : इस किताब में इमाम बुख़ारी (रह़.) ने वो अह़ादीष़ जमा की हैं, जिन्हें पढ़कर दिल में रिक़्क़त और नर्मी पैदा होती है, रिक़ाक़–रक़ीक़तुन की जमा है जिसके मा'नी हैं नर्मी, शर्मिन्दगी, पतलापन। ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर अस्क़लानी (रह़.) लिखते हैं, **अर्रिक़ाक़ वर्रूक़ाइक़ जम्अ रक़ीक़तिन व सुम्मियत हाज़िहिल्अहादीषु बिज़ालिक लिअन्न फ़ी कुल्लिम्मिन्हा मा यहदिषु फिल्क़ल्बि रिक़्क़तुन क़ाल अहलुल्लुग़ति अरिक़्क़तु अर्रहमतु व ज़िद्दुल्गिल्ज़ि व युक़ालु लिल्कष़ीर रक़्क़ वज्हुहू इस्तिहयाअन व क़ालर्रागिबः मता कानतिर्रिक़्क़तु फ़ी जिस्मिन व ज़िदुहा अस्सिफ़ाक़तु कष़ौबिन रक़ीक़िन व ष़ौबिन स़फ़ीक़िन व मता कानत फी नफ़्सिन फज़िदुहा अल्क़स्वतु करक़ीकिल्क़ल्बि व क़ासिल्क़ल्बि** (फ़त्हुल्बारी) या'नी रिक़ाक़, रक़ाइक़ रक़ीक़ा की जमा है और इन अह़ादीष़ को ये नाम इस वजह से दिया गया है क्योंकि इनमें से हर एक में ऐसी बातें हैं जिनसे दिल में नर्मी पैदा होती है। अहले लुग़त कहते हैं या'नी रह़म (नर्मी, ग़ैरत) इसकी ज़िद (उलट) ग़लज़ (सख़्ती) है चुनाँचे ज़्यादा ग़ैरतमंद शख़्स़ के बारे में कहते हैं ह़या से उसका चेहरा शर्म आलूद हो गया। इमाम राग़िब फ़र्माते हैं। रिक़्क़त का लफ़्ज़ जब जिस्म पर बोला जाता है तो इसकी ज़िद स़फ़ाक़ा (मोटापन) आती है, जैसे ष़ौबुन रक़ीक़ (पतला कपड़ा) और ष़ौबुन स़फ़ीक़ (मोटा कपड़ा) और जब किसी ज़ात पर बोला जाता है तो इसकी ज़िद क़स्वा (सख़्ती) आती है रक़ीकुल क़ल्ब (नर्म दिल) और क़ासियुल क़ल्ब (सख़्त दिल)।

6412. हमसे मक्की बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन सईद ने ख़बर दी, वो अबू हिन्दा के स़ाहबज़ादे हैं, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया दो नेअ़मतें ऐसी हैं कि अक्ष़र उनकी क़द्र नहीं करते, सेहत और फ़राग़त। अ़ब्बास अ़म्बरी ने बयान किया कि हमसे स़फ़्वान बिन ईसा ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी हिन्द ने, उनसे उनके वालिद ने कि मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) से सुना, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से इसी ह़दीष़ की

٦٤١٢– حَدَّثَنَا الْمَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ سَعِيدٍ هُوَ ابْنُ أَبِي هِنْدٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((نِعْمَتَانِ مَغْبُونٌ فِيهِمَا كَثِيرٌ مِنَ النَّاسِ، الصِّحَّةُ، وَالْفَرَاغُ)). قَالَ عَبَّاسٌ الْعَنْبَرِيُّ، حَدَّثَنَا صَفْوَانُ بْنُ عِيسَى، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ سَعِيدِ بْنِ أَبِي هِنْدٍ، عَنْ أَبِيهِ سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ

तरह।

6413. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे मुआविया बिन क़ुर्रह ने और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ अल्लाह! आख़िरत की ज़िंदगी के सिवा और कोई ज़िंदगी नहीं। पस तू अंसार और मुहाजिरीन में सुलह को बाक़ी रख। (राजेअ : 2834)

عَنِ النَّبِيِّ ﷺ مِثْلَهُ.

٦٤١٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ قُرَّةَ، عَنْ أَنَسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ:

اللَّهُمَّ لاَ عَيْشَ إِلاَّ عَيْشُ الآخِرَهْ

فَأَصْلِحِ الأَنْصَارَ وَالْمُهَاجِرَهْ

[راجع: ٢٨٣٤]

6414. हमसे अह़मद बिन मिक़्दाम ने बयान किया, कहा हमसे फ़ुज़ैल बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा हमसे अबू हाज़िम ने बयान किया, उनसे हज़रत सहल बिन सअद साएदी (रज़ि.) ने कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ ग़ज़्वा-ए-ख़ंदक़ के मौक़े पर मौजूद थे, आँहज़रत (ﷺ) भी ख़ंदक़ खोदते जाते थे और हम मिट्टी को उठाते जाते थे और आँहज़रत (ﷺ) हमारे क़रीब से गुज़रते हुए फ़र्माते, ऐ अल्लाह! ज़िंदगी तो बस आख़िरत ही की ज़िंदगी है, पस तू अंसार और मुहाजिरीन की मग़्फ़िरत फ़र्मा। इस रिवायत की मुताबअत सहल बिन सअद (रज़ि.) ने भी नबी करीम (ﷺ) से की है।

٦٤١٤- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ الْمِقْدَامِ، حَدَّثَنَا الْفُضَيْلُ بْنُ سُلَيْمَانَ، حَدَّثَنَا أَبُو حَازِمٍ، حَدَّثَنَا سَهْلُ بْنُ سَعْدٍ السَّاعِدِيُّ كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ فِي الْخَنْدَقِ وَهُوَ يَحْفِرُ وَنَحْنُ نَنْقُلُ التُّرَابَ وَيَمُرُّ بِنَا فَقَالَ:

اللَّهُمَّ لاَ عَيْشَ إِلاَّ عَيْشُ الآخِرَهْ

فَاغْفِرْ لِلأَنْصَارِ وَالْمُهَاجِرَهْ

تابَعَهُ سَهْلُ بْنُ سَعْدٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ مِثْلَهُ.

बाब 2 : आख़िरत के सामने दुनिया की क्या ह़क़ीक़त है

٢- بَابُ مَثَلِ الدُّنْيَا فِي الآخِرَةِ

उसका बयान और अल्लाह तआला ने सूरह ह़दीद में फ़र्माया, बिलाशुब्हा दुनिया की ज़िंदगी महज़ खेलकूद की तरह है और ज़ीनत है और आपस में एक-दूसरे पर फ़ख़्र करने और माल औलाद को बढ़ाने की कोशिशों का नाम है, उसकी मिष़ाल उस बारिश की है जिसके सब्ज़ा ने काश्तकारों को भा लिया है, फिर जब उस खेती में उभार आता है तो तुम देखोगे कि वो पककर ज़र्द (सुनहरा) हो चुका है। फिर वो दाना निकालने के लिये रौंद डाला जाता है (यही ह़ाल ज़िंदगी का है) और आख़िरत में काफ़िरों के लिये सख़्त अ़ज़ाब है और मुसलमानों के लिये अल्लाह तआला की मग़्फ़िरत और उसकी ख़ुशनूदी भी है और दुनिया की ज़िंदगी तो महज़ एक धोखे का सामान है।

وَقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿إِنَّمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَلَهْوٌ وَزِينَةٌ وَتَفَاخُرٌ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي الأَمْوَالِ وَالأَوْلاَدِ كَمَثَلِ غَيْثٍ أَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهُ ثُمَّ يَهِيجُ فَتَرَاهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُونُ حُطَامًا وَفِي الآخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيدٌ وَمَغْفِرَةٌ مِنَ اللهِ وَرِضْوَانٌ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلاَّ مَتَاعُ الْغُرُورِ﴾ [الحديد : ٢٠].

6415. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, उन्होंने

٦٤١٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ،

कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबी ह़ाज़िम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे सहल (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने आपको ये फ़र्माते सुना कि जन्नत में एक कोड़े जितनी जगह दुनिया और इसमें जो कुछ है सबसे बेहतर है और अल्लाह के रास्ते में सुबह को या शाम को थोड़ा सा चलना भी दुनिया व मा फ़ीहा से बेहतर है। (राजेअ़ : 2794)

حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ سَهْلٍ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ ((مَوْضِعُ سَوْطٍ فِي الْجَنَّةِ خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيهَا، وَلَغَدْوَةٌ فِي سَبِيلِ اللهِ - أَوْ رَوْحَةٌ - خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيهَا)).

[راجع: ٢٧٩٤]

बाब 3 : नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्मान कि दुनिया में इस त़रह़ ज़िंदगी बसर करो जैसे तुम मुसाफ़िर हो या आ़रज़ी त़ौर पर किसी रास्ते पर चलने वाले हो

٣- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((كُنْ فِي الدُّنْيَا كَأَنَّكَ غَرِيبٌ أَوْ عَابِرُ سَبِيلٍ)).

6416. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुह़म्मद बिन अ़ब्दुर्रह़मान अबू मुंज़िर त़फ़ावी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुलैमान आ'मश ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे मुजाहिद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मेरा शाना (कांधा) पकड़कर फ़र्माया, दुनिया में इस त़रह़ हो जा जैसे तू मुसाफ़िर या रास्ता चलने वाला हो, ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) फ़र्माया करते थे शाम हो जाए तो सुबह़ का इंतिज़ार न करो और सुबह़ हो जाए तो शाम का इंतिज़ार न करो। अपनी स़ेह़त को मर्ज़ से पहले ग़नीमत जानो और ज़िंदगी को मौत से पहले।

٦٤١٦- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَبُو الْمُنْذِرِ الطُّفَاوِيُّ، عَنْ سُلَيْمَانَ الأَعْمَشِ، قَالَ حَدَّثَنِي مُجَاهِدٌ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: أَخَذَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِمَنْكِبِي فَقَالَ: ((كُنْ فِي الدُّنْيَا كَأَنَّكَ غَرِيبٌ أَوْ عَابِرُ سَبِيلٍ)). وَكَانَ ابْنُ عُمَرَ يَقُولُ: إِذَا أَمْسَيْتَ فَلاَ تَنْتَظِرِ الصَّبَاحَ، وَإِذَا أَصْبَحْتَ فَلاَ تَنْتَظِرِ الْمَسَاءَ، وَخُذْ مِنْ صِحَّتِكَ لِمَرَضِكَ، وَمِنْ حَيَاتِكَ لِمَوْتِكَ.

बाब 4 : आरज़ू की रस्सी का लम्बा होना

٤- باب فِي الأَمَلِ وَطُولِهِ

और अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया कि, पस जो शख़्स़ जहन्नम से बचा लिया गया और जन्नत में दाख़िल किया गया वो कामयाब हुआ और दुनिया की ज़िंदगी तो महज़ धोखे का सामान है और सूरह हिज्र में फ़र्माया ऐ नबी! इन काफ़िरों को छोड़ दो कि वो खाते रहें और मज़े करते रहें और आरज़ू उनको धोखे में ग़ाफ़िल रखती है, पस वो अ़न्क़रीब जान लेंगे जब उनको मौत अचानक दबोच लेगी। अ़ली (रज़ि.) ने कहा कि

وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَأُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ، وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلاَّ مَتَاعُ الْغُرُورِ﴾ [آل عمران : ١٨٥] ﴿ذَرْهُمْ يَأْكُلُوا وَيَتَمَتَّعُوا وَيُلْهِهِمُ الأَمَلُ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ﴾ [الحجر : ٣] وَقَالَ

عَلِيٌّ : ارْتَحَلَتِ الدُّنْيَا مُدْبِرَةً، وَارْتَحَلَتِ الآخِرَةُ مُقْبِلَةً، وَلِكُلِّ وَاحِدَةٍ مِنْهُمَا بَنُونَ فَكُونُوا مِنْ أَبْنَاءِ الآخِرَةِ، وَلاَ تَكُونُوا مِنْ أَبْنَاءِ الدُّنْيَا، فَإِنَّ الْيَوْمَ عَمَلٌ وَلاَ حِسَابَ وَغَدًا حِسَابٌ وَلاَ عَمَلَ. بِمُزَحْزِحِهِ: بِمُبَاعِدِهِ.

दुनिया पीठ फेरने वाली है और आख़िरत सामने आ रही है। इंसानों में दुनिया व आख़िरत दोनों के चाहने वाले हैं। पस तुम आख़िरत के चाहने वाले बनो, दुनिया के चाहने वाले न बनो, क्योंकि आज तो काम ही काम है हिसाब नहीं है और कल हिसाब ही हिसाब होगा और अमल का वक़्त बाक़ी नहीं रहेगा। सूरह बक़रः में जो लफ़्ज़ बिमुज़हज़िहिहि बमा'नी मुबाइदिहि है इसके मा'नी हटाने वाला।

तश्रीह : बाब की आयत में लफ़्ज़ अमलि से आरज़ू व तमन्ना मुराद है। या'नी ख़्वाहिशाते नफ़्सानी पूरी होने की उम्मीद रखना। मषलन आदमी ये ख़याल करे कि अभी बहुत उम्र पड़ी है, जल्दी क्या है आख़िर उम्र में तौबा कर लेंगे। ऐसी ही ग़लत आरज़ू को अमलि कहते हैं। बुढ़ापे में ऐसी आरज़ू की रस्सी बहुत लम्बी होती जाती है मगर दफ़अतन मौत आकर दबोच लेती है। इल्ला मन रहिमल्लाह। आयते बाब में लफ़्ज़ ज़ह्ज़िह आया था इसकी मुनासबत से बिमुज़ह्ज़िहा की तफ़्सीर बयान कर दी है। कुछ नुस्ख़ों में ये इबारत नहीं है।

٦٤١٧- حَدَّثَنَا صَدَقَةُ بْنُ الْفَضْلِ، أَخْبَرَنَا يَحْيَى، عَنْ سُفْيَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ مُنْذِرٍ، عَنْ رَبِيعِ بْنِ خُثَيْمٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: خَطَّ النَّبِيُّ ﷺ خَطًّا مُرَبَّعًا، وَخَطَّ خَطًّا فِي الْوَسَطِ خَارِجًا مِنْهُ، وَخَطَّ خُطَطًا صِغَارًا إِلَى هَذَا الَّذِي فِي الْوَسَطِ مِنْ جَانِبِهِ الَّذِي فِي الْوَسَطِ، وَقَالَ: ((هَذَا الإِنْسَانُ وَهَذَا أَجَلُهُ مُحِيطٌ بِهِ، - أَوْ قَدْ أَحَاطَ بِهِ - وَهَذَا الَّذِي هُوَ خَارِجٌ أَمَلُهُ وَهَذِهِ الْخُطَطُ الصِّغَارُ الأَعْرَاضُ، فَإِنْ أَخْطَأَهُ هَذَا نَهَشَهُ هَذَا، وَإِنْ أَخْطَأَهُ هَذَا نَهَشَهُ هَذَا)).

6417. हमसे सदक़ा बिन फ़ज़ल ने बयान किया, कहा हमको यह्या बिन क़त्तान ने ख़बर दी, उनसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उनसे मुंज़िर बिन यअ़ला ने, उनसे रबीअ़ बिन ख़ुषैम ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने चौखटा ख़त्त खींचा। फिर उसके दरम्यान एक ख़त्त खींचा जो चौखटे ख़त्त से निकला हुआ था। उसके बाद दरम्यान वाले ख़त्त के इस हिस्से में जो चौखटे के दरम्यान मे थे छोटे छोटे बहुत से ख़तूत खींचे और फिर फ़र्माया कि ये इंसान है और ये इसकी मौत है जो इसे घेरे हुए है और ये जो (बीच का) ख़त्त बाहर निकला हुआ है वो इसकी उम्मीद है और छोटे छोटे ख़तूत इसकी दुनियावी मुश्किलात हैं। पस इंसान जब एक (मुश्किल) से बचकर निकलता है तो दूसरी में फंस जाता है और दूसरी से निकलता है तो तीसरी में फंस जाता है।

तश्रीह : इस चौखटे की शक्ल यूँ मुरत्तब की गई है। अंदर वाली लकीर इंसान है जिसको चारों त़रफ़ से मुश्किलात ने घेर रखा है और घेरने वाली लकीर उसकी मौत है और बाहर निकलने वाली उसकी हिर्स व आरज़ू है जो मौत आने पर धरी रह जाती है। चंद रोज़ा ज़िंदगी का यही हाल है।

٦٤١٨- حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ، عَنْ أَنَسٍ قَالَ: خَطَّ النَّبِيُّ ﷺ خُطُوطًا فَقَالَ:

6418. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम फ़राहैदी ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम बिन यह्या ने बयान किया, उनसे इस्हाक़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबी त़लहा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ)ने चंद ख़ुतूत

खींचे और फ़र्माया कि ये उम्मीद है और ये मौत है, इंसान इसी हालत (उम्मीदों तक पहुँचने की) में रहता है कि क़रीब वाला ख़त्त (मौत) उस तक पहुँच जाता है।

((هَذَا الأَمَلُ وَهَذَا أَجَلُهُ، هُوَ كَذَلِكَ إِذْ جَاءَهُ الْخَطُّ الأَقْرَبُ)).

बाब 5 : जो शख़्स साठ साल की उम्र को पहुँच गया

तो फिर अल्लाह तआला ने उम्र के बारे में उसके लिये बहाने का कोई मौक़ा बाक़ी न रखा क्योंकि अल्लाह ने फ़र्माया है कि, क्या मैंने तुम्हें इतनी उम्र नहीं दी थी कि जो शख़्स इसमें नसीहत हासिल करना चाहता कर लेता और तुम्हारे पास डराने वाला आया, फिर भी तुमने होश से काम नहीं लिया। (फ़ातिर : 37)

٥- باب مَنْ بَلَغَ سِتِّينَ سَنَةً فَقَدْ أَعْذَرَ اللهُ إِلَيْهِ فِي الْعُمُرِ

لِقَوْلِهِ : ﴿أَوَلَمْ نُعَمِّرْكُمْ مَا يَتَذَكَّرُ فِيهِ مَنْ تَذَكَّرَ وَجَاءَكُمُ النَّذِيرُ﴾ [فاطر : ٣٧].

6419. हमसे अ़ब्दुस्सलाम बिन मुतह्हिर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे उ़मर बिन अ़ता ने बयान किया, उनसे मअ़न बिन मुहम्मद ग़िफ़ारी ने, उनसे सईद बिन अबी सईद मक़्बरी ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह तआ़ला ने उस आदमी के उ़ज़्र के सिलसिले में हुज्जत तमाम कर दी जिसकी मौत को मुअख़्ख़र किया यहाँ तक कि वो साठ साल की उम्र को पहुँच गया। इस रिवायत की मुताबअ़त अबू ह़ाज़िम और इब्ने अ़ज्लान ने मक़्बरी से की है।

٦٤١٩- حَدَّثَنِي عَبْدُ السَّلاَمِ بْنُ مُطَهَّرٍ. حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ عَلِيٍّ، عَنْ مَعْنِ بْنِ مُحَمَّدٍ الْغِفَارِيِّ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((أَعْذَرَ اللهُ إِلَى امْرِىءٍ أَخَّرَ أَجَلَهُ حَتَّى بَلَّغَهُ سِتِّينَ سَنَةً)). تَابَعَهُ أَبُو حَازِمٍ وَابْنُ عَجْلاَنَ عَنِ الْمَقْبُرِيِّ.

या अल्लाह! मैं सत्तर साल को पहुँच रहा हूँ, या अल्लाह! मौत के बाद मुझको ज़िल्लत व ख़्वारी से बचाइयो और मेरे और मेरे सारे हमदर्दाने किराम को भी। आमीन या रब्बल आ़लमीन। (राज़)

6420. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू सफ़्वान अ़ब्दुल्लाह बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यूनुस ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया कि हमको सईद बिन मुसय्यब ने ख़बर दी और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि बूढ़े इंसान का दिल दो चीज़ों के बारे में हमेशा जवान रहता है, दुनिया की मुहब्बत और ज़िंदगी की लम्बी उम्मीद। लैष़ ने बयान किया कि मुझसे यूनुस ने बयान किया और यूनुस ने इब्ने शिहाब से बयान किया कि मुझे सईद बिन अबू सलमा ने ख़बर दी।

٦٤٢٠- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا أَبُو صَفْوَانَ عَبْدُ اللهِ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنَا سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((لاَ يَزَالُ قَلْبُ الْكَبِيرِ شَابًّا فِي اثْنَتَيْنِ: فِي حُبِّ الدُّنْيَا، وَطُولِ الأَمَلِ)). قَالَ اللَّيْثُ: حَدَّثَنِي يُونُسُ، عَنْ ابي شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَعِيدٌ وَأَبُو سَلَمَةَ.

6421. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हिशाम बिन उ़र्वा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने

٦٤٢١- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ

اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((يَكْبَرُ ابْنُ آدَمَ وَيَكْبَرُ مَعَهُ اثْنَانِ: حُبُّ الْمَالِ، وَطُولُ الْعُمُرِ)). رَوَاهُ شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ.

बयान किया और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया इंसान की उम्र बढ़ती जाती है और उसके साथ दो चीज़ें उसके अंदर बढ़ती जाती हैं, माल की मुहब्बत और लम्बी उम्र की आरज़ू। इसकी रिवायत शुअ़बा ने क़तादा से की है।

तशरीह : इस सनद के ज़िक्र करने से इमाम बुख़ारी (रह.) की ग़र्ज़ ये है कि क़तादा की तदलीस का शुब्हा दूर हो क्योंकि शुअ़बा तदलीस करने वालों से उसी वक़्त रिवायत करते हैं जब उनके सिमाअ़ का यक़ीन हो जाता है।

٦- باب الْعَمَلِ الَّذِي يُبْتَغَى بِهِ وَجْهُ اللهِ تَعَالَى. فِيهِ سَعْدٌ

बाब 6 : ऐसा काम जिससे ख़ालिस़ अल्लाह तआ़ला की रज़ामंदी मक़्सूद हो,

इस बाब में सअ़द बिन अबी वक़्क़ास़ (रज़ि.) की रिवायत है जो उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) से नक़ल की है।

٦٤٢٢- حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ أَسَدٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، قَالَ أَخْبَرَنِي مَحْمُودُ بْنُ الرَّبِيعِ وَزَعَمَ مَحْمُودٌ أَنَّهُ عَقَلَ رَسُولَ اللهِ ﷺ وَقَالَ: وَعَقَلَ مَجَّةً مَجَّهَا مِنْ دَلْوٍ كَانَ فِي دَارِهِمْ. [راجع: ٧٧]

6422. हमसे मुआ़ज़ बिन असद ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें मअ़मर ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया कि मुझे महमूद बिन रबीअ़ अंस़ारी ने ख़बर दी और वो कहते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की ये बात ख़ूब मेरे ज़हन में महफ़ूज़ है। उन्हें याद है कि आँहज़रत (ﷺ) ने उनके एक डोल में से पानी लेकर मुझ पर कुल्ली कर दी थी। (राजेअ़ : 77)

٦٤٢٣- قَالَ : سَمِعْتُ عِتْبَانَ بْنَ مَالِكٍ الأَنْصَارِيَّ ثُمَّ أَحَدَ بَنِي سَالِمٍ قَالَ : غَدَا عَلَيَّ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَقَالَ: ((لَنْ يُوَافِيَ عَبْدٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَقُولُ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ يَبْتَغِي بِهِ وَجْهَ اللهِ إِلاَّ حَرَّمَ اللهُ عَلَيْهِ النَّارَ)). [راجع: ٤٢٤]

6423. उन्होंने बयान किया कि इ़त्बान बिन मालिक अंस़ारी (रज़ि.) से मैंने सुना, फिर बनी सालिम के ए क और स़ाहब से सुना, उन्होंने बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) मेरे यहाँ तशरीफ़ लाए और फ़र्माया, कोई बन्दा जब क़यामत के दिन इस ह़ालत में पेश होगा कि उसने कलिमा ला इलाहा इल्लल्लाह का इक़रार किया होगा और इससे उसका मक़्सूद अल्लाह की ख़ुशनूदी ह़ासिल करनी होगी तो अल्लाह तआ़ला दोज़ख़ की आग को उस पर ह़राम कर देगा। (राजेअ़ : 424)

कलिमा-ए-त़य्यिबा का स़ह़ीह़ इक़रार ये है कि उसके मुत़ाबिक़ अ़मल और अ़क़ीदा भी हो, वरना महज़ ज़ुबानी त़ौर पर कलिमा पढ़ना बेकार है।

٦٤٢٤- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ عَمْرٍو عَنْ سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((يَقُولُ اللهُ تَعَالَى: مَا لِعَبْدِي

6424. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे यअ़क़ूब बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन अबी अ़म्र ने, उनसे सईद मक़्बरी ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह तआ़ला फ़र्माता है कि मेरे उस मोमिन बन्दे का जिसकी मैं कोई अ़ज़ीज़

الْمُؤْمِنِ عِنْدِي جَزَاءٌ إِذَا قَبَضْتُ صَفِيَّهُ مِنْ أَهْلِ الدُّنْيَا؟ ثُمَّ احْتَسَبَهُ إِلاَّ الْجَنَّةُ)).

चीज़ दुनिया से उठा लूँ और वो उस पर स़वाब की निय्यत से स़ब्र कर ले, तो उसका बदला मेरे यहाँ जन्नत के सिवा और कुछ भी नहीं।

तश्रीह़ : इससे मुराद वो बन्दा है जिसका कोई प्यारा बच्चा फ़ौत हो जाए और वो स़ब्र करे तो यक़ीनन उसके लिये वो बच्चा शफ़ाअ़त करेगा। मगर दुनिया में ऐसा कौन है जिसे ये स़दमा पेश न आता हो इल्ला माशाअल्लाह। अल्लाह मुझको भी स़ब्र की तौफ़ीक़ दे, आमीन (राज़)

٧- باب مَا يُحْذَرُ مِنْ زَهْرَةِ الدُّنْيَا وَالتَّنَافُسِ فِيهَا

बाब 7 : दुनिया की बहार व रौनक़ और इस पर रीझने से डरना

٦٤٢٥- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنِي إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ عُقْبَةَ، عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ قَالَ ابْنُ شِهَابٍ: حَدَّثَنَا عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّ الْمِسْوَرَ بْنَ مَخْرَمَةَ أَخْبَرَهُ أَنَّ عَمْرَو بْنَ عَوْفٍ وَهُوَ حَلِيفٌ لِبَنِي عَامِرِ بْنِ لُؤَيٍّ كَانَ شَهِدَ بَدْرًا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ بَعَثَ أَبَا عُبَيْدَةَ بْنَ الْجَرَّاحِ إِلَى الْبَحْرَيْنِ يَأْتِي بِجِزْيَتِهَا وَكَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ هُوَ صَالَحَ أَهْلَ الْبَحْرَيْنِ، وَأَمَّرَ عَلَيْهِمُ الْعَلاَءَ بْنَ الْحَضْرَمِيِّ فَقَدِمَ أَبُو عُبَيْدَةَ بِمَالٍ مِنَ الْبَحْرَيْنِ، فَسَمِعَتِ الأَنْصَارُ بِقُدُومِهِ فَوَافَتْهُ صَلاَةَ الصُّبْحِ مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ، فَلَمَّا انْصَرَفَ تَعَرَّضُوا لَهُ فَتَبَسَّمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حِينَ رَآهُمْ وَقَالَ: ((أَظُنُّكُمْ سَمِعْتُمْ بِقُدُومِ أَبِي عُبَيْدَةَ، وَأَنَّهُ جَاءَ بِشَيْءٍ؟)) قَالُوا: أَجَلْ يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ: ((فَأَبْشِرُوا وَأَمِّلُوا مَا يَسُرُّكُمْ، فَوَ اللهِ مَا الْفَقْرَ أَخْشَى عَلَيْكُمْ، وَلَكِنْ أَخْشَى عَلَيْكُمْ أَنْ تُبْسَطَ عَلَيْكُمُ الدُّنْيَا كَمَا بُسِطَتْ عَلَى مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ فَتَنَافَسُوهَا كَمَا تَنَافَسُوهَا، وَتُلْهِيَكُمْ كَمَا أَلْهَتْهُمْ)). [راجع: ١٣٤٤]

6425. हमसे इस्माईल बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इस्माईल बिन इब्राहीम बिन उ़क़्बा ने बयान किया, उनसे मूसा बिन उ़क़्बा ने कहा कि इब्ने शिहाब ने बयान किया कि मुझसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने बयान किया और उन्हें मिस्वर बिन मख़रमा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि अ़म्र बिन औ़फ़ (रज़ि.) जो बनी आ़मिर बिन अ़दी के ह़लीफ़ थे और बद्र की लड़ाई में रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ शरीक थे, उन्होंने उन्हें ख़बर दी कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने अबू उ़बैदह बिन अल जर्राह़ (रज़ि .) को बह़रीन वहाँ का जिज़्या लाने के लिये भेजा, आँह़ज़रत (ﷺ) ने बह़रीन वालों से सुलह़ कर ली थी और उन पर अ़लाअ बिन ह़ज़्रमी को अमीर मुक़र्रर किया था। जब अबू उ़बैदह (रज़ि.) बह़रीन से जिज़्या का माल लेकर आए तो अंस़ार ने उनके आने के बारे में सुना और सुबह़ की नमाज़ आँह़ज़रत (ﷺ) के साथ पढ़ी और जब आँह़ज़रत (ﷺ) जाने लगे तो वो आपके सामने आ गये। आँह़ज़रत (ﷺ) उन्हे देखकर मुस्कुराए और फ़र्माया मेरा ख़याल है कि अबू उ़बैदह के आने के बारे में तुमने सुन लिया है और ये भी कि वो कुछ लेकर आए हैं? अंस़ार ने अ़र्ज़ किया जी हाँ! या रसूलल्लाह! आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, फिर तुम्हें ख़ुशख़बरी हो तुम उसकी उम्मीद रखो जो तुम्हें ख़ुश कर देगी, अल्लाह की क़सम! फ़क़्र और मुह़ताजी वो चीज़ नहीं है जिससे मैं तुम्हारे बारे में डरता हूँ बल्कि मैं तो इससे डरता हूँ कि दुनिया तुम पर भी उसी त़रह कुशादा कर दी जाएगी, जिस त़रह उन लोगों पर कर दी गई थी जो तुमसे पहले थे और तुम भी उसके लिये एक-दूसरे से आगे बढ़ने की इसी त़रह कोशिश करोगे जिस त़रह वो करते थे और तुम्हें भी उसी त़रह ग़ाफ़िल कर देगी जिस त़रह उनको ग़ाफ़िल किया था। (राजेअ़ : 1344)

तश्रीह : हूबहू यही हुआ बाद के ज़मानों में मुसलमान दुनियावी मुहब्बत में फंसकर इस्लाम और फ़िक्रे आख़िरत से ग़ाफ़िल हो गये जिसके नतीजे में बेदीनी पैदा हो गई और वो आपस में लड़ने लगे जिसका नतीजा ये इंहितात (कमी) है जिसने आज दुनिया-ए-इस्लाम को घेर रखा है।

6426. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी हबीब ने बयान किया, उनसे अबुल ख़ैर ने बयान किया और उनसे उ़क़्बा बिन आ़मिर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) बाहर तशरीफ़ लाए और जंगे उहुद के शहीदों के लिये इस तरह नमाज़ पढ़ी जिस तरह मुर्दा पर नमाज़ पढ़ी जाती है। फिर आप मिम्बर पर तशरीफ़ लाए और फ़र्माया आख़िरत में मैं तुमसे आगे जाऊँगा और मैं तुम पर गवाह होऊँगा, वल्लाह! मैं अपने हौज़ को इस वक़्त भी देख रहा हूँ और मुझे ज़मीन के ख़ज़ानों की चाबियाँ दी गई हैं या (फ़र्माया कि) ज़मीन की चाबियाँ दी गई हैं और अल्लाह की क़सम! मैं तुम्हारे बारे में इससे नहीं डरता कि तुम मेरे बाद शिर्क करोगे बल्कि मुझे तुम्हारे बारे में ये डर है कि तुम दुनिया के लिये एक-दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करने लगोगे।

٦٤٢٦- حدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ عَنْ أَبِي الْخَيْرِ، عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ خَرَجَ يَوْمًا فَصَلَّى عَلَى أَهْلِ أُحُدٍ صَلاَتَهُ عَلَى الْمَيِّتِ، ثُمَّ انْصَرَفَ إِلَى الْمِنْبَرِ فَقَالَ: ((إِنِّي فَرَطٌ لَكُمْ، وَأَنَا شَهِيدٌ عَلَيْكُمْ، وَإِنِّي وَاللهِ لأَنْظُرُ إِلَى حَوْضِي الآنَ، وَإِنِّي قَدْ أُعْطِيتُ مَفَاتِيحَ خَزَائِنِ الأَرْضِ - أَوْ مَفَاتِيحَ الأَرْضِ - وَإِنِّي وَاللهِ مَا أَخَافُ عَلَيْكُمْ أَنْ تُشْرِكُوا بَعْدِي، وَلَكِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ أَنْ تَنَافَسُوا فِيهَا)).

इस ह़दीष़ से नमाज़े जनाज़ा ग़ाइबाना ष़ाबित हुई।

तश्रीह : बाद के ज़मानों में मुसलमानों की ख़ानाजंगी की तारीख़ (गृहयुद्धों के इतिहास) पर गहरी नज़र डालने से ये वाज़ेह हो जाता है कि हुज़ूर (ﷺ) का फ़र्मान ह़र्फ़ ब ह़र्फ़ स़ह़ीह़ ष़ाबित हुआ और बेशतर इस्लामी अकाबिर आपस में लड़कर तबाह हो गये यहाँ तक कि उ़लमा-ए-किराम भी इस बीमारी से न बच सके इल्ला मन शाअल्लाह।

6427. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे ज़ैद बिन असलम ने, उनसे अ़ता बिन यसार ने और उनसे अबू सईद (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया मैं तुम्हारे बारे में सबसे ज़्यादा इससे डर खाता हूँ कि जब अल्लाह तआ़ला ज़मीन की बरकतें तुम्हारे लिये निकाल देगा। पूछा गया ज़मीन की बरकतें क्या हैं? फ़र्माया कि दुनिया की चमक दमक। इस पर एक स़ह़ाबी ने आँह़ज़रत (ﷺ) से पुछा क्या भलाई से बुराई पैदा हो सकती है? आँह़ज़रत (ﷺ) उस पर ख़ामोश हो गये और हमने ख़्याल किया कि शायद आप पर वह्य नाज़िल हो रही है। उसके बाद आप अपनी पेशानी को स़ाफ़ करने लगे और पूछा, पूछने वाले कहाँ हैं? पूछने वाले ने

٦٤٢٧- حدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، قَالَ حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((إِنَّ أَكْثَرَ مَا أَخَافُ عَلَيْكُمْ مَا يُخْرِجُ اللهُ لَكُمْ مِنْ بَرَكَاتِ الأَرْضِ)). قِيلَ : وَمَا بَرَكَاتُ الأَرْضِ؟ قَالَ: ((زَهْرَةُ الدُّنْيَا)) فَقَالَ لَهُ رَجُلٌ: هَلْ يَأْتِي الْخَيْرُ بِالشَّرِّ؟ فَصَمَتَ النَّبِيُّ ﷺ حَتَّى ظَنَنَّا أَنَّهُ يُنْزَلُ عَلَيْهِ ثُمَّ

جَعَلَ يَمْسَحُ عَنْ جَبِينِهِ فَقَالَ: ((أَيْنَ السَّائِلُ؟)) قَالَ: أَنَا قَالَ أَبُو سَعِيدٍ: لَقَدْ حَمِدْنَاهُ حِينَ طَلَعَ ذَلِكَ قَالَ: ((لاَ يَأْتِي الْخَيْرُ إِلاَّ بِالْخَيْرِ، إِنَّ هَذَا الْمَالَ خَضِرَةٌ حُلْوَةٌ، وَإِنَّ كُلَّ مَا أَنْبَتَ الرَّبِيعُ يَقْتُلُ حَبَطًا أَوْ يُلِمُّ إِلاَّ آكِلَةَ الْخَضِرَةِ أَكَلَتْ حَتَّى إِذَا امْتَدَّتْ خَاصِرَتَاهَا اسْتَقْبَلَتِ الشَّمْسَ فَاجْتَرَّتْ وَثَلَطَتْ وَبَالَتْ، ثُمَّ عَادَتْ فَأَكَلَتْ وَإِنَّ هَذَا الْمَالَ حُلْوَةٌ مَنْ أَخَذَهُ بِحَقِّهِ وَوَضَعَهُ فِي حَقِّهِ، فَنِعْمَ الْمَعُونَةُ هُوَ، وَمَنْ أَخَذَهُ بِغَيْرِ حَقِّهِ كَانَ كَالَّذِي يَأْكُلُ وَلاَ يَشْبَعُ)).

[راجع: ٩٢١]

कहा कि हाज़िर हूँ। अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने कहा कि जब इस सवाल का हल हमारे सामने आ गया तो हमने उन स़ाहब की ता'रीफ़ की। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि भलाई से तो स़िर्फ़ भलाई ही पैदा होती है लेकिन ये माल सरसब्ज़ और ख़ुशगवार (घास की त़रह़) है और जो चीज़ें भी रबीअ़ के मौसम में उगती हैं वो ह़िर्स़ के साथ खाने वालों को हलाक कर देती हैं या हलाकत के क़रीब पहुँचा देती है; सिवाय उस जानवर के जो पेट भरकर खाए कि जब उसने खा लिया और उसकी दोनों कोख भर गईं तो उसने सूरज की त़रफ़ मुँह करके जुगाली कर ली और फिर पाख़ाना पेशाब कर दिया और उसके बाद फिर लौट के खा लिया। और ये माल भी बहुत शीरीं है जिसने उसके ह़क़ के साथ लिया और ह़क़ में ख़र्च किया तो वो बेहतरीन ज़रिया है और जिसने इसे नाजाइज़ त़रीक़े से ह़ास़िल किया तो वो उस शख़्स़ जैसा है जो खाता जाता है लेकिन आसूदा नहीं होता। (राजेअ़ : 921)

तश्रीह : ए'तिदाल (संतुलन) पर इशारा है जिसे हरियाली चरने वाले जानवर की मिष़ाल से बयान फ़र्माया है जो जानवर हरियाली बेए'तिदाली से खा जाते हैं वो बीमार भी हो जाते हैं दुनिया का यही ह़ाल है यहाँ ए'तिदाल हर ह़ाल में ज़रूरी है।

٦٤٢٨ - حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا جَمْرَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي زَهْدَمُ بْنُ مُضَرِّبٍ قَالَ: سَمِعْتُ عِمْرَانَ بْنَ حُصَيْنٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((خَيْرُكُمْ قَرْنِي، ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ)) قَالَ عِمْرَانُ: فَمَا أَدْرِي قَالَ النَّبِيُّ ﷺ بَعْدَ قَوْلِهِ مَرَّتَيْنِ أَوْ ثَلاَثًا، ((ثُمَّ يَكُونُ بَعْدَهُمْ قَوْمٌ يَشْهَدُونَ وَلاَ يُسْتَشْهَدُونَ، وَيَخُونُونَ وَلاَ يُؤْتَمَنُونَ، وَيَنْذِرُونَ وَلاَ يَفُونَ، وَيَظْهَرُ فِيهِمُ السِّمَنُ)).[راجع: ٢٦٥١]

6428. मुझसे मुह़म्मद बिन बश्शार ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा कि मैंने अबू ह़म्ज़ा से सुना, कहा कि मुझसे ज़ह्दम बिन मुज़र्रिब ने बयान किया, कहा कि मैंने इमरान बिन ह़ुस़ैन (रज़ि.) से सुना और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया तुममें सबसे बेहतर मेरा ज़माना है, फिर उन लोगों का ज़माना है जो उसके बाद होंगे। इमरान ने बयान किया कि मुझे नहीं मा'लूम आँह़ज़रत (ﷺ) ने इर्शाद को दो मर्तबा दोह़राया या तीन मर्तबा। फिर उसके बाद वो लोग होंगे कि वो गवाही देंगे लेकिन उनकी गवाही क़ुबूल नहीं की जाएगी, वो ख़यानत करेंगे और उन पर से ए'तिमाद जाता रहेगा। वो नज़्र मानेंगे लेकिन पूरी नहीं करेंगे और उनमें मोटापा फैल जाएगा। (राजेअ़ : 2651)

तश्रीह : रावी को तीन दफ़ा का शुब्हा है अगर आपने तीसरी दफ़ा भी ऐसा फ़र्माया तो तबेअ़ ताबेईन भी इस फ़ज़ीलत में दाख़िल हो सकते हैं। जिनमें अइम्मा-ए-अरबआ और मुह़द्दिष़ीन की बड़ी ता'दाद शामिल हो जाती है और

हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) भी इसी ज़ैल में आ जाते हैं, मगर दो मर्तबा फ़र्माने को तरजीह हासिल है। आख़िर में पेशीनगोई फ़र्माई जो हर्फ़ ब हर्फ़ सहीह साबित हो रही है। झूठी गवाही देने वाले, अमानतों में ख़यानत करने वाले, अहद करके उसे तोड़ने वाले आज मुसलमानों में कष़रत से मिलेंगे। ऐसे लोग नाजाइज़ पैसा हासिल करके जिस्मानी लिहाज़ से मोटी-मोटी तोंदों वाले भी बहुत देखे जा सकते हैं। **अल्लाहुम्मा ला तज्अल्ना मिन्हुम, आमीन।**

6429. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, कहा हमसे अबू हम्ज़ा ने, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे उ़बैदह ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, सबसे बेहतर मेरा ज़माना है, उसके बाद उन लोगों का जो उसके बाद होंगे, फिर जो उनके बाद होंगे और उसके बाद ऐसे लोग पैदा होंगे जो क़सम से पहले गवाही देंगे कभी गवाही से पहले क़सम खाएँगे। (राजेअ़ : 2652)

٦٤٢٩- حدَّثَنَا عَبْدَانُ، عَنْ أَبِي حَمْزَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَبِيدَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((خَيْرُ النَّاسِ قَرْنِي، ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ، ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ، ثُمَّ يَجِيءُ مِنْ بَعْدِهِمْ قَوْمٌ تَسْبِقُ شَهَادَتُهُمْ أَيْمَانَهُمْ، وَأَيْمَانُهُمْ شَهَادَتَهُمْ)).

[راجع: ٢٦٥٢]

मतलब ये है कि न उनको गवाही देने में कुछ बाक होगा न क़सम खाने में कोई ता'म्मुल होगा। गवाही देकर क़समें खाएँगे कभी क़समें खाएंगे फिर उसके बाद गवाही देंगे।

6430. मुझसे यह्या बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमसे वक़ीअ़ ने बयान किया, उनसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद कूफ़ी ने बयान किया, उनसे क़ैस बिन अबी हाज़िम ने बयान किया कि मैंने ख़ब्बाब बिन अरत (रज़ि.) से सुना, उस दिन उनके पेट में सात दाग़ लगाए गये थे। उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अगर हमें मौत की दुआ़ करने से मना न किया होता तो मैं अपने लिये मौत की दुआ़ करता। आँहज़रत (ﷺ) के सहाबा गुज़र गये और दुनिया ने उनके (आ़माले ख़ैर में से) कुछ नहीं घटाया और हमने दुनिया से इतना कुछ हासिल किया कि मिट्टी के सिवा उसकी कोई जगह नहीं। (राजेअ़ : 5672)

٦٤٣٠- حدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ مُوسَى، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، عَنْ قَيْسٍ قَالَ: سَمِعْتُ خَبَّابًا وَقَدِ اكْتَوَى يَوْمَئِذٍ سَبْعًا فِي بَطْنِهِ وَقَالَ: لَوْ لاَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ نَهَانَا أَنْ نَدْعُوَ بِالْمَوْتِ لَدَعَوْتُ بِالْمَوْتِ، إِنَّ أَصْحَابَ مُحَمَّدٍ ﷺ مَضَوْا وَلَمْ تَنْقُصْهُمُ الدُّنْيَا بِشَيْءٍ، وَإِنَّا أَصَبْنَا مِنَ الدُّنْيَا مَا لاَ نَجِدُ لَهُ مَوْضِعًا إِلاَّ التُّرَابَ.

[راجع: ٥٦٧٢]

तश्रीह : पहले गुज़रने वाले सहाबा-ए-किराम, फ़ुतूहात का आराम न पाने वाले सारी नेकियाँ साथ ले गये। बाद वाले लोगों ने फ़ुतूहात से दुनियावी आराम इतना हासिल किया कि बड़े-बड़े मकानात की ता'मीर कर गये उसी पर इशारा है।

6431. हमसे मुहम्मद बिन मुष़न्ना ने बयान किया, कहा हमसे यह्या क़त्तान ने बयान किया, उनसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने, उनसे क़ैस बिन अबी हाज़िम ने, कहा कि मैं ख़ब्बाब बिन अरत (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, वो अपने मकान की दीवार बनवा रहे थे, उन्होंने कहा कि हमारे साथी जो गुज़र गये,

٦٤٣١- حدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ إِسْمَاعِيلَ قَالَ: حَدَّثَنِي قَيْسٌ، قَالَ: أَتَيْتُ خَبَّابًا وَهُوَ يَبْنِي حَائِطًا لَهُ فَقَالَ إِنَّ أَصْحَابَنَا الَّذِينَ مَضَوْا لَمْ

تَنْقُصْهُمُ الدُّنْيَا شَيْئًا، وَإِنَّا أَصَبْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ شَيْئًا لاَ نَجِدُ لَهُ مَوْضِعًا إِلاَّ التُّرَابَ. [راجع: ٥٦٧٢]

दुनिया ने उनके नेक आ'माल में से कुछ भी कमी नहीं की लेकिन उनके बाद हमको इतना माल मिला कि हम उसको कहाँ ख़र्च करें बस इस मिट्टी और पानी या'नी इमारत में हमको उसे ख़र्च का मौक़ा मिला है। (राजेअ : 5672)

तश्रीह : या'नी बेज़रूरत इमारतें बनवाईं। महज़ दुनियावी नाम व नमूद व नुमाइश के लिये इमारतों का बनवाना अम्रे महमूद नहीं है। हाँ ज़रूरत के तहत जैसे खाना ज़रूरी है इसी तरह सर्दी गर्मी बरसात से बचने के लिये मकान भी ज़रूरी है।

٦٤٣٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ خَبَّابٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : هَاجَرْنَا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ. [راجع: ١٢٧٦]

6432. हमसे मुहम्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, उनसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने, उनसे आ'मश ने, उनसे अबू वाइल ने और उनसे ख़ब्बाब बिन अरत (रज़ि.) ने बयान किया कि हमने रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ हिजरत की थी और उसका क़िस़्स़ा बयान किया। (राजेअ : 1271)

٨- باب

बाब 8 : अल्लाह पाक का सूरह फ़ातिर में फ़र्माना

قَوْلِ اللهِ تَعَالَى : ﴿يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ وَعْدَ اللهِ حَقٌّ فَلاَ تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَلاَ يَغُرَّنَّكُمْ بِاللهِ الْغَرُورُ إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوهُ عَدُوًّا إِنَّمَا يَدْعُوا حِزْبَهُ لِيَكُونُوا مِنْ أَصْحَابِ السَّعِيرِ﴾ جَمْعُهُ سُعُرٌ. قَالَ مُجَاهِدٌ : الْغَرُورُ الشَّيْطَانُ.

अल्लाह का वा'दा हक़ है पस तुम्हें दुनिया की ज़िंदगी धोखे में न डाल दे (कि आख़िरत को भूल जाओ) और न कोई धोखा देने वाली चीज़ तुम्हें अल्लाह से ग़ाफ़िल कर दे। बिला शुब्हा शैतान तुम्हारा दुश्मन है पस तुम उसे अपना दुश्मन ही समझो, वो तो अपने गिरोह को बुलाता है कि वो जहन्नमी हो जाए। आयत में सईर का लफ़्ज़ है जिसकी जमा सुअुर आती है। मुजाहिद ने कहा जिसे फ़रयाबी ने वस़्ल किया कि ग़ुरूर से शैतान मुराद है।

٦٤٣٣- حَدَّثَنَا سَعْدُ بْنُ حَفْصٍ، حَدَّثَنَا شَيْبَانُ، عَنْ يَحْيَى، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ الْقُرَشِيِّ قَالَ أَخْبَرَنِي مُعَاذُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ ابْنَ أَبَانَ أَخْبَرَهُ قَالَ : أَتَيْتُ عُثْمَانَ بِطَهُورٍ وَهُوَ جَالِسٌ عَلَى الْمَقَاعِدِ، فَتَوَضَّأَ فَأَحْسَنَ الْوُضُوءَ ثُمَّ قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ تَوَضَّأَ وَهُوَ فِي هَذَا الْمَجْلِسِ فَأَحْسَنَ الْوُضُوءَ ثُمَّ قَالَ : ((مَنْ تَوَضَّأَ مِثْلَ هَذَا الْوُضُوءِ ثُمَّ أَتَى الْمَسْجِدَ فَرَكَعَ رَكْعَتَيْنِ، ثُمَّ جَلَسَ غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ)) قَالَ: وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ:لاَ تَغْتَرُّوا.

6433. हमसे सअ़द बिन ह़फ़्स़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शैबान बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे यह्या ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन इब्राहीम क़ुरशी ने बयान किया कि मुझे मुआ़ज़ बिन अ़ब्दुर्रहमान ने ख़बर दी, उन्हें ह़मरान बिन अबान ने ख़बरदी, उन्होंने कहा कि मैं ह़ज़रत उ़ष़्मान (रज़ि.) के लिये वुज़ू का पानी लेकर आया वो चबूतरे पर बैठे हुए थे, फिर उन्होंने अच्छी तरह वुज़ू किया। उसके बाद कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) को इसी जगह वुज़ू करते देखा था। आँह़ज़रत (ﷺ) ने अच्छी तरह वुज़ू किया। फिर फ़र्माया कि जिसने इस तरह वुज़ू किया और फिर मस्जिद में आकर दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी तो उसके पिछले गुनाह मुआ़फ़ हो जाते हैं। बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने उस पर ये भी फ़र्माया कि उस पर मग़रूर न हो जाओ।

कि सब गुनाह बख़्श दिये गये अब फ़िक्र ही क्या है।

तशरीह : रिवायत में सय्यदना हज़रत उ़ष्मान ग़नी (रज़ि.) का ज़िक्रे ख़ैर है बल्कि सुन्नते नबवी पर उनका क़दम ब क़दम अ़मल पैरा होना भी मज़्कूर है। हज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) की मुहब्बत अहले सुन्नत का ख़ास़ निशान है जैसा कि हज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) से पूछा गया था। चुनाँचे शरह़ फ़िक़्हे अकबर पेज 96 में ये यूँ मज़्कूर है **सुइल अबू ह़नीफ़त अ़न मज़्हबि अहलिस्सुन्नति वल्जमाअ़ति फ़क़ाल अन्तुफ़ज़्ज़िलश्शैख़ेन अय अबा बक्र व उ़मर व नुहिब्बल्खत नययनि अय उ़ष्मान व अ़लिय्यन व अन्नरल्मस्ह अल्खुफ़्फ़ैनि व नुस़ल्ली ख़ल्फ़ कुल्लि बिर्रिन व फ़ाजिरिन.** हज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) से मज़हब अहले सुन्नत वल जमाअ़त की ता'रीफ़ पूछी गई तो आपने बतलाया कि हम शैख़ैन या'नी हज़रत अबूबक्र व उ़मर (रज़ि.) को तमाम स़ह़ाबा पर फ़ज़ीलत दें और दोनों दामादों या'नी हज़रत अ़ली और हज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) से मुहब्बत रखें और मोज़ों पर मसह़ को जाइज़ समझें और हर नेक व बद इमाम के पीछे इक़्तिदा करें यही अहले सुन्नत वल जमाअ़त की ता'रीफ़ है।

बाब 9 : स़ालेह़ीन का गुज़र जाना

٩- بَابُ ذَهَابِ الصَّالِحِينَ

6434. मुझसे यह्या बिन ह़म्माद ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, उनसे बयान बिन बिश्र ने, उनसे क़ैस बिन अबी ह़ाज़िम ने और उनसे मिरदास असलमी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया नेक लोग एक के बाद एक गुज़र जाएँगे उसके बाद जौ के भूसे या खजूर के कचरे की त़रह़ कुछ लोग दुनिया में रह जाएँगे जिनकी अल्लाह पाक को कुछ ज़रा भी परवाह न होगी। इमाम बुख़ारी (रह़.) ने कहा ह़ुफ़ालत और ह़ष़ालहु दोनों के एक ही मा'नी हैं।

(राजेअ़ : 4156)

٦٤٣٤- حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ حَمَّادٍ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ بَيَانٍ، عَنْ قَيْسِ بْنِ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ مِرْدَاسٍ الأَسْلَمِيِّ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((يَذْهَبُ الصَّالِحُونَ الأَوَّلُ فَالأَوَّلُ، وَيَبْقَى حُفَالَةٌ كَحُفَالَةِ الشَّعِيرِ - أَوِ التَّمْرِ - لاَ يُبَالِيهِمُ اللهُ بَالَةً)). قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ : يُقَالُ : حُفَالَةٌ وَحُثَالَةٌ.

[راجع: ٤١٥٦]

कुछ नुस्ख़ों में क़ाल अबू अ़ब्दुल्लाह अल्अख़ इबारत नहीं है।

बाब 10 : माल के फ़ित्ने से डरते रहना

١٠- بَابُ مَا يُتَّقَى مِنْ فِتْنَةِ الْمَالِ

और अल्लाह तआ़ला ने सूरह तग़ाबुन में फ़र्माया कि, बिला शुब्हा तुम्हारे माल व औलाद तुम्हारे लिये अल्लाह की त़रफ़ से आज़माइश हैं।

وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿إِنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلاَدُكُمْ فِتْنَةٌ﴾

6435. मुझसे यह्या बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको अबूबक्र बिन अ़य्याश ने ख़बर दी, उन्हें अबू हुस़ैन (उ़ष्मान बिन ह़ास़िम) ने, उन्हें अबू स़ालेह़ ज़क्वान ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया दीनार व दिरहम के बन्दे, उ़म्दह़ रेशमी चादरों के बन्दे, स्याह कमली के बन्दे, तबाह हो गये कि अगर उन्हे दिया जाए तो वो ख़ुश हो जाते हैं और अगर न दिया जाए तो नाराज़ रहते हैं।

٦٤٣٥- حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا أَبُو بَكْرٍ، عَنْ أَبِي حَصِينٍ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((تَعِسَ عَبْدُ الدِّينَارِ وَالدِّرْهَمِ وَالْقَطِيفَةِ وَالْخَمِيصَةِ، إِنْ أُعْطِيَ رَضِيَ وَإِنْ لَمْ يُعْطَ لَمْ يَرْضَ)).

(राजेअ़ : 2886)

[راجع: ٢٨٨٦]

तश्रीह : ज़माना-ए-रिसालत में ऐसे भी लोग थे जो दुनियावी मफ़ाद के तहत मुसलमान हो गये थे उन ही का ये ज़िक्र है ऐसा इस्लाम किसी काम का नहीं है जिससे महज़ दुनिया हासिल करना मक़्सूद हो।

6436. हमसे अबू आ़सिम नबील ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने बयान किया, उनसे अ़ता बिन अबी रिबाह ने बयान किया, कहा कि मैंने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर इंसान के पास माल की दो वादियाँ हों तो तीसरी का ख़्वाहिशमंद होगा और इंसान का पेट मिट्टी के सिवा और कोई चीज़ नहीं भर सकती और अल्लाह उस शख़्स की तौबा क़ुबूल करता जो (दिल से) सच्ची तौबा करता है। (दीगर : 6437)

٦٤٣٦- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، عَنْ عَطَاءٍ قَالَ : سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((لَوْ كَانَ لاِبْنِ آدَمَ وَادِيَانِ مِنْ مَالٍ لاَبْتَغَى ثَالِثًا، وَلاَ يَمْلأُ جَوْفَ ابْنِ آدَمَ إِلاَّ التُّرَابُ، وَيَتُوبُ اللهُ عَلَى مَنْ تَابَ)).[طرفه في : ٦٤٣٧].

6437. मुझसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको मुख़्लद ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमको इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मैंने अ़ता से सुना, उन्होंने कहा कि मैंने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से सुना, कहा कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर इंसान के पास माल (भेड़-बकरी) की पूरी वादी हो तो वो चाहेगा कि उसे वैसी ही एक और मिल जाए और इंसान की आँख मिट्टी के सिवा और कोई चीज़ नहीं भर सकती और जो अल्लाह से तौबा करता है, वो उसकी तौबा क़ुबूल करता है। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि मुझे मा'लूम नहीं ये क़ुर्आन में से है या नहीं। बयान किया कि मैंने इब्ने ज़ुबैर (रज़ि.) को ये मिम्बर पर कहते सुना था। (राजेअ़ : 6436)

٦٤٣٧- حَدَّثَنِي مُحَمَّدٌ قَالَ : أَخْبَرَنَا مَخْلَدٌ، أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ: سَمِعْتُ عَطَاءً يَقُولُ: سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ يَقُولُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((لَوْ أَنَّ لاِبْنِ آدَمَ مِثْلَ وَادٍ مَالاً لأَحَبَّ أَنَّ لَهُ إِلَيْهِ مِثْلَهُ، وَلاَ يَمْلأُ عَيْنَ ابْنِ آدَمَ إِلاَّ التُّرَابُ، وَيَتُوبُ اللهُ عَلَى مَنْ تَابَ)). قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: فَلاَ أَدْرِي مِنَ الْقُرْآنِ هُوَ أَمْ لاَ. قَالَ: وَسَمِعْتُ ابْنَ الزُّبَيْرِ يَقُولُ ذَلِكَ عَلَى الْمِنْبَرِ.[راجع: ٦٤٣٦]

तश्रीह : सूरह तकाषुर के नुज़ूल से पहले इस इबारत को क़ुर्आन की तरह तिलावत किया जाता रहा। फिर सूरह तकाषुर के नुज़ूल के बाद उसकी तिलावत मन्सूख़ हो गई। मज़्मून एक ही है इंसान के हिर्स और तमअ़ का बयान है। अहादीषे ज़ैल में मज़ीद वज़ाहत मौजूद है।

6438. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुर्रहमान बिन सुलैमान बिन ग़सील ने बयान किया, उनसे अ़ब्बास बिन सहल बिन सअ़द ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) को मक्का मुकर्रमा में मिम्बर पर ये कहते सुना। उन्होंने अपने ख़ुत्बे में कहा कि ऐ

٦٤٣٨- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ سُلَيْمَانَ بْنِ الْغَسِيلِ، عَنْ عَبَّاسِ بْنِ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ الزُّبَيْرِ عَلَى الْمِنْبَرِ بِمَكَّةَ فِي خُطْبَتِهِ يَقُولُ

लोगों! नबी करीम (ﷺ) फ़र्माते थे कि अगर इंसान को एक वादी सोना भर के दे दिया जाए तो वो दूसरी का ख़्वाहिशमंद रहेगा, अगर दूसरी दे दी जाए तो तीसरी का ख़्वाहिशमंद रहेगा और इंसान का पेट मिट्टी के सिवा और कोई चीज़ नहीं भर सकती और अल्लाह पाक उसकी तौबा क़ुबूल करता है जो तौबा करे।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَقُولُ: ((لَوْ لاَ أَنَّ ابْنَ آدَمَ أُعْطِيَ وَادِيًا مَلأً مِنْ ذَهَبٍ أَحَبَّ إِلَيْهِ ثَانِيًا، وَلَوْ أُعْطِيَ ثَانِيًا أَحَبَّ إِلَيْهِ ثَالِثًا، وَلاَ يَسُدُّ جَوْفَ ابْنِ آدَمَ إِلاَّ التُّرَابُ، وَيَتُوبُ اللهُ عَلَى مَنْ تَابَ)).

6439. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे स़ालेह़ ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने कि मुझे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने ख़बर दी और उनसे रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर इंसान के पास सोने की एक वादी हो तो वो चाहेगा कि दो हो जाएँ और उसका मुँह क़ब्र की मिट्टी के सिवा और कोई चीज़ नहीं भर सकती और अल्लाह उसकी तौबा क़ुबूल करता है जो तौबा करे।

٦٤٣٩- حدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ صَالِحٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَخْبَرَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لَوْ أَنَّ لاِبْنِ آدَمَ وَادِيًا مِنْ ذَهَبٍ أَحَبَّ أَنْ يَكُونَ لَهُ وَادِيَانِ، وَلَنْ يَمْلأَ فَاهُ إِلاَّ التُّرَابُ، وَيَتُوبُ اللهُ عَلَى مَنْ تَابَ)).

6440. और हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, उनसे ह़म्माद बिन सलमा ने बयान किया, उनसे ष़ाबित ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने और उनसे उबइ बिन कअ़ब (रज़ि.) ने कि हम इसे क़ुर्आन ही में से समझते थे यहाँ तक कि आयत अल्हाकुमुत् तकाषुर नाज़िल हुई।

٦٤٤٠- وَقَالَ لَنَا أَبُو الْوَلِيدِ : حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ، عَنْ أُبَيٍّ قَالَ : كُنَّا نَرَى هَذَا مِنَ الْقُرْآنِ حَتَّى نَزَلَتْ: ﴿أَلْهَاكُمُ التَّكَاثُرُ﴾ [التكاثر : ١]

अल्फ़ाज़े ह़दीष़ **लौ अन्न इब्नि आदम वादियन** अल्अख़ को कुछ स़ह़ाबा, क़ुर्आन ही में से समझते थे। मगर सूरह अल्हाकुमुत्तकाषुर से उनको मा'लूम हुआ कि ये क़ुर्आनी अल्फ़ाज़ नहीं हैं बल्कि ये ह़दीषे़ नबवी है जिसका मज़्मून क़ुर्आन पाक की सूरह अल्हाकुमुत् तकाषुर में अदा किया गया है। ये सूरत बहुत ही रिक़्क़त अंगेज़ है मगर हुज़ूरे क़ल्ब के साथ तिलावत की ज़रूरत है, वफ़्फ़क़नल्लाहु आमीन।

बाब 11 : नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्मान कि ये दुनिया का माल बज़ाहिर सरसब्ज़ व ख़ुशगवार नज़र आता है

١١- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((هَذَا الْمَالُ خَضِرَةٌ حُلْوَةٌ))

और अल्लाह तआ़ला ने (सूरह आले इमरान : 4 में) फ़र्माया कि इंसानों को ख़्वाहिशात की तड़प, औरतों, बाल-बच्चों, ढेरों सोने-चाँदी, निशान लगें हुए घोड़ों, और चौपायों खेतों में महबूब बना दी गई है, ये चंद रोज़ा ज़िंदगी का सरमाया है। ह़ज़रत (ﷺ) उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि ऐ अल्लाह! हम तो सिवा उसके कुछ त़ाक़त ही नहीं रखते कि जिस चीज़ से तूने हमें ज़ीनत बख़्शी है इस पर हम त़बई त़ौर पर ख़ुश हों। ऐ अल्लाह! मैं तुझसे दुआ

وَقَالَ اللهُ تَعَالَى: ﴿زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوَاتِ مِنَ النِّسَاءِ وَالْبَنِينَ وَالْقَنَاطِيرِ الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالأَنْعَامِ وَالْحَرْثِ ذَلِكَ مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا﴾ قَالَ عُمَرُ: اللَّهُمَّ إِنَّا لاَ نَسْتَطِيعُ إِلاَّ أَنْ نَفْرَحَ بِمَا زَيَّنْتَهُ لَنَا، اللَّهُمَّ

करता हूँ कि उस माल को त हक़ जगह पर ख़र्च कराइयो।

إِنِّي أَسْأَلُكَ أَنْ أُنْفِقَهُ فِي حَقِّهِ.

6441. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, कहा कि मैंने ज़ुह्री से सुना, वो कहते थे कि मुझे उ़र्वा और सईद बिन मुसय्यब ने ख़बर दी, उन्हें हकीम बिन हिज़ाम ने, कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से मांगा तो आँहज़रत (ﷺ) ने मुझे अ़ता फ़र्माया। मैंने फिर मांगा और आँहज़रत (ﷺ) ने फिर अ़ता किया। फिर मैंने मांगा और आँहज़रत (ﷺ) ने फिर अ़ता किया। फिर फर्माया कि ये माल; और कुछ औक़ात सुफ़यान ने यूँ बयान किया कि (हकीम रज़ि. ने बयान किया) ऐ हकीम! ये माल सरसब्ज़ और ख़ुशगवार नज़र आता है पस जो शख़्स इसे नेक निय्यती से ले उसमें बरकत होती है और जो लालच के साथ लेता है तो उसके माल में बरकत नहीं होती बल्कि वो उस शख़्स जैसा हो जाता है जो खाता जाता है लेकिन उसका पेट नहीं भरता और ऊपर का हाथ नीचे के हाथ से बेहतर है। (राजेअ़ : 1472)

٦٤٤١– حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ : سَمِعْتُ الزُّهْرِيَّ يَقُولُ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ وَسَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ، عَنْ حَكِيمِ بْنِ حِزَامٍ قَالَ: سَأَلْتُ النَّبِيَّ ﷺ فَأَعْطَانِي ثُمَّ سَأَلْتُهُ، فَأَعْطَانِي ثُمَّ سَأَلْتُهُ فَأَعْطَانِي، ثُمَّ قَالَ: ((هَذَا الْمَالُ)) وَرُبَّمَا قَالَ سُفْيَانُ : قَالَ لِي ((يَا حَكِيمُ إِنَّ هَذَا الْمَالَ خَضِرَةٌ حُلْوَةٌ، فَمَنْ أَخَذَهُ بِطِيبِ نَفْسٍ بُورِكَ لَهُ فِيهِ، وَمَنْ أَخَذَهُ بِإِشْرَافِ نَفْسٍ لَمْ يُبَارَكْ لَهُ فِيهِ، وَكَانَ كَالَّذِي يَأْكُلُ وَلاَ يَشْبَعُ، وَالْيَدُ الْعُلْيَا خَيْرٌ مِنَ الْيَدِ السُّفْلَى)). [راجع: ١٤٧٢]

तश्रीह : ऊपर का हाथ सख़ी का हाथ और नीचे का हाथ सदक़ा ख़ैरात लेने वाले का हाथ है। सख़ी का दर्जा बहुत ऊँचा है और लेने वाले का नीचा। मगर आयते करीमा, **ला तुब्तिलू सदक़ातिकुम बिल्मन्नि वल्अज़ा** (अल बक़र : 264) के तहत मुअ़ती (देने वाले) का फ़र्ज़ है कि देने वाले, लेने वाले को हक़ीर न जाने उस पर एहसान न जतलाए न और कुछ ज़हनी तकलीफ़ दे वरना उसके सदक़े का षवाब ज़ाये (बर्बाद) हो जाएगा।

बाब 12 : आदमी जो माल अल्लाह की राह में दे दे वही उसका अ़सली माल है

١٢– باب مَا قَدَّمَ مِنْ مَالِهِ فَهُوَ لَهُ

جو آخرت میں کام آنے والا ہے۔

6442. मुझसे उ़मर बिन ह़फ़्स़ ने बयान किया, कहा मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, कहा कि मुझसे इब्राहीम तैमी ने बयान किया, उनसे ह़ारिष़ बिन सुवैद ने कि अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, तुममें कौन है जिसे अपने माल से ज़्यादा अपने वारिष़ का माल प्यारा हो? स़ह़ाबा ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! हममें कोई ऐसा नहीं जिसे माल ज़्यादा प्यारा न हो। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, फिर उसका माल वो है जो उसने (मौत से) पहले (अल्लाह के रास्ते में ख़र्च) किया और उसके वारिष़ का माल वो है जो वो छोड़कर मरा।

٦٤٤٢– حَدَّثَنِي عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ، حَدَّثَنِي أَبِي، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ قَالَ: حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ التَّيْمِيُّ، عَنِ الْحَارِثِ بْنِ سُوَيْدٍ قَالَ: عَبْدُ اللهِ قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((أَيُّكُمْ مَالُ وَارِثِهِ أَحَبُّ إِلَيْهِ مِنْ مَالِهِ))، قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ مَا مِنَّا أَحَدٌ إِلاَّ مَالُهُ أَحَبُّ إِلَيْهِ. قَالَ: ((فَإِنَّ مَالَهُ مَا قَدَّمَ وَمَالُ وَارِثِهِ مَا أَخَّرَ)).

तश्रीह : हदीष़ और बाब में मुताबक़त ज़ाहिर है। मुबारक हैं वो लोग जो अपनी ज़िंदगी में आख़िरत के लिये ज़्यादा से ज़्यादा अष़ाष़ा जमा कर सकें और अल्लाह के रास्ते से मुराद इस्लाम है जिसकी इशाअ़त और ख़िदमत में माल और जान से पुरख़ुलूस ह़िस्सा लेना मुसलमान की ज़िंदगी का वाह़िद नस्बुल ऐन होना चाहिये। **वफ़्फ़क़नल्लाहु लिमा युहिब्बु व यर्ज़ा।**

बाब 13 : जो लोग दुनिया में ज़्यादा मालदार हैं वही आख़िरत में ज़्यादा नादार होंगे

١٣- باب الْمُكْثِرُونَ هُمُ الْمُقِلُّونَ

और अल्लाह तआ़ला ने सूरह हूद में फ़र्माया, जो शख़्स दुनिया की ज़िंदगी और उसकी ज़ीनत का त़ालिब है तो मैं उसके तमाम आ'माल का बदला इसी दुनिया में उसको भरपूर दे देता हूँ और उसमें उनके लिये किसी त़रह की कमी नहीं की जाती यही वो लोग हैं जिनके लिये आख़िरत में दोज़ख़ के सिवा और कुछ नहीं है और जो कुछ उन्होंने इस दुनिया की ज़िंदगी में किया वो (आख़िरत के ह़क़ में) बेकार षाबित हुआ और जो कुछ (अपने ख़्याल में) वो करते हैं सब बेकार मह़ज़ है। (सूरह हूद : 15)

وَقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزِينَتَهَا نُوَفِّ إِلَيْهِمْ أَعْمَالَهُمْ فِيهَا وَهُمْ فِيهَا لاَ يُبْخَسُونَ الَّذِينَ أُولَئِكَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الآخِرَةِ إِلاَّ النَّارُ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوا فِيهَا وَبَاطِلٌ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ﴾ [هود: ١٥].

तश्रीह : क्योंकि उन्होंने आख़िरत की बह्बूदी के लिये तो कोई काम न किया था बल्कि यही ख़्याल रहा कि लोग उसकी ता'रीफ़ करें सो ये मक़्सद हुआ अब आख़िरत में कुछ नहीं रियाकारों का यही ह़ाल है, नेक काम वो दुनिया में करते हैं (उख़रवी नतीजे के लिह़ाज़ से) वो सब बात़िल हैं।

6443. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन अ़ब्दुल ह़मीद ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन रफ़ीअ़ ने, उनसे ज़ैद बिन वहब ने और उनसे अबू ज़र्र ग़िफ़ारी (रज़ि.) ने बयान किया कि एक रोज़ मैं बाहर निकला तो देखा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) तन्हा चल रहे थे और आपके साथ कोई भी न था। अबू ज़र्र (रज़ि .) कहते हैं कि उससे मैं समझा कि आँह़ज़रत (ﷺ) इसे पसंद नहीं फ़र्माएँगे कि आपके साथ उस वक़्त कोई रहे। इसलिये मैं चाँद के साये में आँह़ज़रत (ﷺ) के पीछे-पीछे चलने लगा। उसके बाद आप मुड़े तो मुझे देखा और पूछा, कौन है? मैंने अ़र्ज़ किया अबू ज़र्र! अल्लाह मुझे आप पर क़ुर्बान करे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, अबू ज़र्र! यहाँ आओ। बयान किया कि फिर मैं थोड़ी देर तक आपके साथ चलता रहा। उसके बाद आपने फ़र्माया कि जो लोग (दुनिया में) ज़्यादा माल व दौलत जमा किये हुए हैं क़यामत के दिन वही ख़सारे में होंगे। सिवाय उनके जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने माल दिया हो और उन्होंने उसे दाएँ-बाएँ, आगे-पीछे ख़र्च

٦٤٤٣- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ رُفَيْعٍ، عَنْ زَيْدِ بْنِ وَهْبٍ عَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: خَرَجْتُ لَيْلَةً مِنَ اللَّيَالِي فَإِذَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَمْشِي وَحْدَهُ، وَلَيْسَ مَعَهُ إِنْسَانٌ قَالَ فَظَنَنْتُ أَنَّهُ يَكْرَهُ أَنْ يَمْشِيَ مَعَهُ أَحَدٌ قَالَ: فَجَعَلْتُ أَمْشِي فِي ظِلِّ الْقَمَرِ فَالْتَفَتَ فَرَآنِي فَقَالَ: ((مَنْ هَذَا؟)) قُلْتُ: أَبُو ذَرٍّ، جَعَلَنِي اللهُ فِدَاءَكَ قَالَ: ((يَا أَبَا ذَرٍّ تَعَالَهْ)) قَالَ: فَمَشَيْتُ مَعَهُ سَاعَةً. فَقَالَ: ((إِنَّ الْمُكْثِرِينَ هُمُ الْمُقِلُّونَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، إِلاَّ مَنْ أَعْطَاهُ اللهُ خَيْرًا، فَنَفَحَ فِيهِ يَمِينَهُ وَشِمَالَهُ، وَبَيْنَ يَدَيْهِ

किया हो और उसे भले कामों में लगाया हो। (अबू ज़र्र रज़ि. ने) बयान किया कि फिर थोड़ी देर तक मैं आपके साथ चलता रहा। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि यहाँ बैठ जाओ। आँहज़रत (ﷺ) ने मुझे एक हमवार ज़मीन पर बिठा दिया जिसके चारों तरफ़ पत्थर थे और फ़र्माया कि यहाँ उस वक़्त तक बैठे रहो जब तक मैं तुम्हारे पास लौट के आऊँ। फिर आप पथरीली ज़मीन की तरफ़ चले गये और नज़रों से ओझल हो गये। आप वहाँ रहे और देर तक वहीं रहे। फिर मैंने आपसे सुना, आप ये कहते हुए तशरीफ़ ला रहे थे, चाहे चोरी की हो, चाहे ज़िना किया हो। अबू ज़र्र कहते हैं कि जब आँहज़रत (ﷺ) तशरीफ़ लाए तो मुझसे सब्र नहीं हो सका और मैंने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी! अल्लाह आप पर मुझे क़ुर्बान करे। इस पथरीली ज़मीन के किनारे आप किससे बातें कर रहे थे? मैंने तो किसी दूसरे को आपसे बात करते नहीं देखा। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि, ये जिब्रईल (अ़लैहि.) थे। पथरीली ज़मीन (ह़र्रा) के किनारे वो मुझसे मिले और कहा कि अपनी उम्मत को ख़ुशख़बरी दे दो कि जो भी इस ह़ाल में मरेगा कि अल्लाह के साथ किसी चीज़ को शरीक न ठहराता हो तो वो जन्नत में जाएगा। मैंने अ़र्ज़ किया ऐ जिब्रईल! ख़्वाह उसने चोरी की हो और ज़िना किया हो? उन्होंने कहा कि हाँ। मैंने फ़िर अ़र्ज़ किया, ख़्वाह उसने चोरी की हो, ज़िना किया हो? जिब्रईल (अ़लैहि.) ने कहा हाँ! ख़्वाह उसने शराब ही पी हो। नज़्र ने बयान किया कि हमें शुअ़बा ने ख़बर दी (कहा) और हमसे ह़बीब बिन अबी ष़ाबित, आ'मश और अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन रफ़ीअ़ ने बयान किया, उनसे ज़ैद बिन वहब ने इसी तरह बयान किया। इमाम बुख़ारी (रह़.) ने कहा अबू स़ालेह़ ने जो इसी बाब में अबू दर्दा से रिवायत की है वो मुन्क़त़अ़ है (अबू स़ालेह़ ने अबू दर्दा से नहीं सुना) और स़ह़ीह़ नहीं है हमने ये बयान कर दिया ताकि इस ह़दीष़ का ह़ाल मा'लूम हो जाए और स़ह़ीह़ अबू ज़र्र की ह़दीष़ है (जो ऊपर मज़्कूर हुई) किसी ने इमाम बुख़ारी (रह़.) से पूछा अ़त़ा बिन यसार ने भी तो ये ह़दीष़ अबू दर्दा से रिवायत की है। उन्होंने कहा वो भी मुन्क़त़अ़ है और स़ह़ीह़ नहीं है। आख़िर स़ह़ीह़ वही अबू ज़र्र की ह़दीष़ निकली। इमाम बुख़ारी (रह़.) ने कहा अबू दर्दा की ह़दीष़ को छोड़ो (वो सनद लेने के

وَوَرَاءَهُ وَعَمِلَ فِيهِ خَيْرًا)) قَالَ : فَمَشَيْتُ مَعَهُ سَاعَةً فَقَالَ لِي ((اجْلِسْ هَهُنَا)) قَالَ: فَأَجْلَسَنِي فِي قَاعٍ حَوْلَهُ حِجَارَةٌ فَقَالَ لِي: ((اجْلِسْ هَهُنَا حَتَّى أَرْجِعَ إِلَيْكَ)) قَالَ: فَانْطَلَقَ فِي الْحَرَّةِ حَتَّى لاَ أَرَاهُ فَلَبِثَ عَنِّي فَأَطَالَ اللُّبْثَ، ثُمَّ إِنِّي سَمِعْتُهُ وَهُوَ مُقْبِلٌ وَهُوَ يَقُولُ: ((وَإِنْ سَرَقَ وَإِنْ زَنَى)). قَالَ: فَلَمَّا جَاءَ لَمْ أَصْبِرْ حَتَّى قُلْتُ : يَا نَبِيَّ اللهِ جَعَلَنِي اللهُ فِدَاءَكَ مَنْ تُكَلِّمُ فِي جَانِبِ الْحَرَّةِ؟ مَا سَمِعْتُ أَحَدًا يَرْجِعُ إِلَيْكَ شَيْئًا قَالَ: ((ذَلِكَ جِبْرِيلُ عَلَيْهِ السَّلاَمُ عَرَضَ لِي فِي جَانِبِ الْحَرَّةِ، قَالَ: بَشِّرْ أُمَّتَكَ أَنَّهُ مَنْ مَاتَ لاَ يُشْرِكُ بِاللهِ شَيْئًا دَخَلَ الْجَنَّةَ، قُلْتُ: يَا جِبْرِيلُ وَإِنْ سَرَقَ وَإِنْ زَنَى؟ قَالَ نَعَمْ. قَالَ: قُلْتُ وَإِنْ سَرَقَ وَإِنْ زَنَى؟ قَالَ. نَعَمْ وَإِنْ شَرِبَ الْخَمْرَ)) قَالَ النَّضْرُ: أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، وَحَدَّثَنَا حَبِيبُ بْنُ أَبِي ثَابِتٍ، وَالأَعْمَشُ وَعَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ رُفَيْعٍ، حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ وَهْبٍ بِهَذَا. قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ: حَدِيثُ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ مُرْسَلٌ لاَ يَصِحُّ إِنَّمَا أَرَدْنَا لِلْمَعْرِفَةِ وَالصَّحِيحُ حَدِيثُ أَبِي ذَرٍّ قِيلَ لأَبِي عَبْدِ اللهِ حَدِيثُ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ قَالَ: مُرْسَلٌ أَيْضًا لاَ يَصِحُّ، وَالصَّحِيحُ حَدِيثُ أَبِي ذَرٍّ قَالَ : اضْرِبُوا عَلَى حَدِيثِ أَبِي الدَّرْدَاءِ هَذَا إِذَا مَاتَ

قَالَ : لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ عِنْدَ الْمَوْتِ.
[راجع: ١٢٣٧]

लायक़ नहीं है क्योंकि वो मुन्क़तअ है) इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि अबू ज़र्र की हदीष़ का मतलब ये है कि मरते वक़्त आदमी ला इलाहा इल्लल्लाह कहे और तौहीद पर ख़ात्मा हो (तो वो एक न एक दिन ज़रूर जन्नत में जाएगा गो कितना ही गुनाहगार हो) कुछ नुस्ख़ों में ये है हाज़ा इज़ा ताब व क़ाल ला इलाह इल्लल्लाह इन्दल्मौत या'नी अबू ज़र्र की हदीष़ उस शख़्स़ के बारे में हे जो गुनाह से तौबा करे और मरते वक़्त ला इलाहा इल्ललाह कहे। (राजेअ : 1237)

ज़ैद बिन वहब की सनद के बयान करने से इमाम बुख़ारी (रह.) ने अब्दुल अ़ज़ीज़ का सिमाअ़ ज़ैद बिन वहब से ष़ाबित कर दिया है और तदलीस के शुब्हा को दूर कर दिया।

١٤- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((مَا أُحِبُّ أَنَّ لِي مِثْلَ أُحُدٍ ذَهَبًا))

बाब 14 : नबी करीम (ﷺ) का ये इर्शाद कि, अगर उहुद पहाड़ के बराबर सोना मेरे पास हो तो भी मुझको ये पसंद नहीं, आख़िर हदीष़ तक

٦٤٤٤- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ الرَّبِيعِ، حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ زَيْدِ بْنِ وَهْبٍ قَالَ: قَالَ أَبُو ذَرٍّ كُنْتُ أَمْشِي مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي حَرَّةِ الْمَدِينَةِ فَاسْتَقْبَلَنَا أُحُدٌ فَقَالَ: ((يَا أَبَا ذَرٍّ)) قُلْتُ: لَبَّيْكَ يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ: ((مَا يَسُرُّنِي أَنَّ عِنْدِي مِثْلَ أُحُدٍ هَذَا ذَهَبًا تَمْضِي عَلَيَّ ثَالِثَةٌ وَعِنْدِي مِنْهُ دِينَارٌ إِلاَّ شَيْئًا أَرْصُدُهُ لِدَيْنٍ إِلاَّ أَنْ أَقُولَ بِهِ فِي عِبَادِ اللهِ هَكَذَا وَهَكَذَا وَهَكَذَا، عَنْ يَمِينِهِ وَعَنْ شِمَالِهِ وَمِنْ خَلْفِهِ)) ثُمَّ مَشَى فَقَالَ: ((إِنَّ الأَكْثَرِينَ هُمُ الأَقَلُّونَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، إِلاَّ مَنْ قَالَ: هَكَذَا وَهَكَذَا وَهَكَذَا عَنْ يَمِينِهِ، وَعَنْ شِمَالِهِ وَمِنْ خَلْفِهِ، وَقَلِيلٌ مَا هُمْ)) ثُمَّ قَالَ لِي

6444. हमसे ह़सन बिन रबीअ़ ने बयान किया, कहा हमसे अबुल अह़वस़ (सलाम बिन सुलैम) ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे ज़ैद बिन वहब ने कि ह़ज़रत अबू ज़र्र ग़िफ़ारी (रज़ि.) ने कहा, मैं नबी करीम (ﷺ) के साथ मदीना के पथरीले इलाक़े में चल रहा था कि उहुद पहाड़ हमारे सामने आ गया। आँह़ज़रत (ﷺ) ने पूछा अबू ज़र्र! मैंने अ़र्ज़ किया हाज़िर हूँ, या रसूलल्लाह! आप (ﷺ) ने फ़र्माया, मुझे इससे बिलकुल ख़ुशी नहीं होगी कि मेरे पास इस उहुद के बराबर सोना हो और उस पर तीन दिन इस त़रह़ गुज़र जाएँ कि उसमें से एक दीनार भी बाक़ी रह जाए सिवा उस थोड़ी रक़म के जो मैं क़र्ज़ की अदायगी के लिये छोड़ूँ बल्कि मैं उसे अल्लाह के बन्दों में इस त़रह़ ख़र्च करूँ अपनी दाईं त़रफ़ से, बाईं त़रफ़ से और पीछे से। फिर आँह़ज़रत (ﷺ) चलते रहे, उसके बाद फ़र्माया ज़्यादा माल जमा रखने वाले ही क़यामत के दिन मुफ़्लिस होंगे सिवा उस शख़्स़ के जो उस माल को इस इस त़रह़ दाईं त़रफ़ से, बाईं त़रफ़ से और पीछे से ख़र्च करे और ऐसे लोग कम हैं। फिर मुझसे फ़र्माया, यहीं ठहरे रहो, यहाँ से उस वक़्त तक न जाना जब तक मैं आ न जाऊँ। फिर आँह़ज़रत

(ﷺ) रात के अंधेरे में चले गये और नज़रों से ओझल हो गये। उसके बाद मैंने आवाज़ सुनी जो बुलंद थी। मुझे डर लगा कि कहीं आँहज़रत (ﷺ) को कोई दुश्वारी न पेश आ गई हो। मैंने आपकी ख़िदमत में पहुँचने का इरादा किया लेकिन आपका इर्शाद याद आया कि अपनी जगह से न हटना, जब तक मैं न आ जाऊँ। चुनाँचे जब तक आँहज़रत (ﷺ) तशरीफ़ नहीं लाए मैं वहाँ से नहीं हटा। फिर आप आए मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैंने एक आवाज़ सुनी थी, मुझे डर लगा लेकिन फिर आपका इर्शाद याद आया। आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा क्या तुमने सुना था? मैंने अ़र्ज़ किया, जी हाँ। फ़र्माया कि वो जिब्रईल (अ़लैहि.) थे और उन्होंने कहा कि आपकी उम्मत का जो शख़्स इस हाल में मर जाए कि उसने अल्लाह के साथ किसी को शरीक न किया हो तो जन्नत में जाएगा। मैंने पूछा ख़्वाह उसने ज़िना और चोरी भी की हो? उन्होंने कहा हाँ! ज़िना और चोरी ही क्यूँ न की हो। (राजेअ : 1237)

((مَكَانَكَ لاَ تَبْرَحْ حَتَّى آتِيَكَ))، ثُمَّ انْطَلَقَ فِي سَوَادِ اللَّيْلِ حَتَّى تَوَارَى، فَسَمِعْتُ صَوْتًا قَدِ ارْتَفَعَ فَتَخَوَّفْتُ أَنْ يَكُونَ قَدْ عَرَضَ لِلنَّبِيِّ ، فَأَرَدْتُ أَنْ آتِيَهُ، فَذَكَرْتُ قَوْلَهُ لِي: ((لاَ تَبْرَحْ حَتَّى آتِيَكَ)) فَلَمْ أَبْرَحْ حَتَّى أَتَانِي قُلْتُ : يَا رَسُولَ اللهِ لَقَدْ سَمِعْتُ صَوْتًا تَخَوَّفْتُ فَذَكَرْتُ لَهُ فَقَالَ: ((وَهَلْ سَمِعْتَهُ؟)) قُلْتُ: نَعَمْ. قَالَ: ((ذَاكَ جِبْرِيلُ أَتَانِي فَقَالَ : مَنْ مَاتَ مِنْ أُمَّتِكَ لاَ يُشْرِكُ بِاللهِ شَيْئًا دَخَلَ الْجَنَّةَ، قُلْتُ : وَإِنْ زَنَى وَإِنْ سَرَقَ؟ قَالَ : وَإِنْ زَنَى وَإِنْ سَرَقَ)).

[راجع: ١٢٣٧]

तशरीह : अहले सुन्नत का मज़हब गुनहगार मोमिन के बारे में जो बग़ैर तौबा किये मर जाए यही है कि उसका मामला अल्लाह की मर्ज़ी पर है ख़्वाह गुनाह मुआफ़ करके उसको बिला अ़ज़ाब जन्नत में दाख़िल करे या चंद रोज़ अ़ज़ाब करके उसे बख़्श दे लेकिन मुरजिया कहते हैं कि जब आदमी मोमिन हो तो कोई गुनाह उसको ज़रर न करेगा और मुअतज़िला कहते हैं कि वो बिला तौबा मर जाए तो हमेशा दोज़ख़ में रहेगा। ये दोनों क़ौल ग़लत़ हैं और अहले सुन्नत ही का मज़हब स़ह़ीह़ है। मोमिन मुसलमान के लिये बहरहाल बख़्शिश मुक़द्दर है। या अल्लाह! अपनी बख़्शिश से हमको भी सरफ़राज़ फ़र्माइयो, आमीन।

6445. मुझसे अह़मद बिन शबीब ने बयान किया, कहा मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उनसे यूनुस ने और लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया कि मुझसे यूनुस ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ज़ुह्री ने, उनसे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा बिन मसऊ़द ने कि अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर मेरे पास उहुद पहाड़ के बराबर भी सोना हो तो भी मुझे उसमें ख़ुशी होगी कि तीन दिन भी मुझ पर इस ह़ाल में न गुज़रने पाएँ कि उसमें से मेरे पास कुछ भी बाक़ी बचे। अल्बत्ता अगर किसी का क़र्ज़ दूर करने के लिये कुछ रख छोड़ूँ तो ये और बात है। (राजेअ : 2389)

٦٤٤٥- حَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ شَبِيبٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ يُونُسَ، وَقَالَ اللَّيْثُ : حَدَّثَنِي يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لَوْ كَانَ لِي مِثْلُ أُحُدٍ ذَهَبًا لَسَرَّنِي أَنْ لاَ تَمُرَّ عَلَيَّ ثَلاَثُ لَيَالٍ وَعِنْدِي مِنْهُ شَيْءٌ إِلاَّ شَيْئًا أَرْصُدُهُ لِدَيْنٍ)).

[راجع: ٢٣٨٩]

मा'लूम हुआ कि क़र्ज़ की अदायगी के लिये माल जमा करना शरअ़न ऐब की बात नहीं है।

बाब 15 : मालदार वो है जिसका दिल ग़नी हो

١٥- باب الْغِنَى غِنَى النَّفْسِ

और अल्लाह तआ़ला ने सूरह मोमिनून में फ़र्माया, क्या ये लोग ये समझते हैं कि हम जो माल और औलाद देकर उनकी मदद किये जाते हैं। आख़िर आयत, मिन दूनि ज़ालिक हुम लहा आ़मिलून तक। सुफ़यान बिन उ़ययना ने कहा कि हुम लहा आ़मिलून से मुराद ये है कि अभी वो आ़माल उन्होंने नहीं किये लेकिन ज़रूर उनको करने वाले हैं।

وَقَوْلُ اللهِ تَعَالَى: ﴿أَيَحْسَبُونَ أَنَّمَا نُمِدُّهُمْ بِهِ مِنْ مَالٍ وَبَنِينَ﴾ [المؤمنون : ٥٥] إِلَى قَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿مِنْ دُونِ ذَلِكَ هُمْ لَهَا عَامِلُونَ﴾ [المؤمنون : ٦٣] قَالَ ابْنُ عُيَيْنَةَ: لَمْ يَعْمَلُوهَا لاَ بُدَّ مِنْ أَنْ يَعْمَلُوهَا.

6446. हमसे अह़मद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे अबूबक्र बिन अ़याश ने बयान किया, कहा हमसे अबू हुसैन ने बयान किया, उनसे अबू स़ालेह ज़क्वान ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया तवगरी ये नहीं है कि सामान ज़्यादा हो, बल्कि अमीरी ये है कि दिल ग़नी हो।

٦٤٤٦- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرٍ، حَدَّثَنَا أَبُو حَصِينٍ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَيْسَ الْغِنَى عَنْ كَثْرَةِ الْعَرَضِ، وَلَكِنَّ الْغِنَى غِنَى النَّفْسِ)).

दिल ग़नी हो तो थोड़ा ही बहुत है, दिल ग़नी न हो तो पहाड़ बराबर दौलत मिलने से भी पेट नहीं भर सकता।

बाब 16 : फ़क्र की फ़ज़ीलत का बयान

١٦- باب فَضْلِ الْفَقْرِ

6447. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबी ह़ाज़िम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे सहल बिन सअ़द साएदी (रज़ि.) ने बयान किया कि एक शख़्स़ रसूले करीम (ﷺ) के सामने से गुज़रा तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने एक दूसरे शख़्स़ अबू ज़र्र ग़िफ़ारी (रज़ि.) से जो आपके क़रीब बैठे हुए थे, पूछा कि उस शख़्स़ (गुज़रने वाले) के बारे में तुम क्या कहते हो? उन्होंने कहा कि ये मुअ़ज़्ज़ज़ लोगों में से है और अल्लाह की क़सम! ये इस क़ाबिल है कि अगर ये पैग़ामे निकाह़ भेजे तो उससे निकाह़ कर दिया जाए। अगर ये सिफ़ारिश करे तो उनकी सिफ़ारिश क़ुबूल कर ली जाए। बयान किया कि आँह़ज़रत (ﷺ) ये सुनकर ख़ामोश हो गये। उसके बाद एक दूसरे स़ाह़ब गुज़रे। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनसे उनके बारे में भी पूछा कि उनके बारे में तुम्हारी क्या राय है? उन्होंने कहा, या रसूलल्लाह! ये स़ाह़ब मुसलमानों के ग़रीब त़बक़े से हैं और ये ऐसे हैं कि अगर ये निकाह़ का पैग़ाम भेजें तो इनका निकाह़ न

٦٤٤٧- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنِي عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ السَّاعِدِيِّ أَنَّهُ قَالَ: مَرَّ رَجُلٌ عَلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ لِرَجُلٍ عِنْدَهُ جَالِسٍ: مَا رَأْيُكَ فِي هَذَا؟ فَقَالَ رَجُلٌ مِنْ أَشْرَافِ النَّاسِ: هَذَا، وَاللهِ حَرِيٌّ إِنْ خَطَبَ أَنْ يُنْكَحَ وَإِنْ شَفَعَ أَنْ يُشَفَّعَ، قَالَ: فَسَكَتَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ مَرَّ رَجُلٌ فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا رَأْيُكَ فِي هَذَا؟ فَقَالَ : يَا رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ هَذَا رَجُلٌ مِنْ فُقَرَاءِ الْمُسْلِمِينَ، هَذَا حَرِيٌّ إِنْ خَطَبَ أَنْ لاَ

किया जाए, अगर ये किसी की सिफ़ारिश करें तो इनकी सिफ़ारिश क़ुबूल न की जाए और कुछ कहें तो उनकी बात न सुनी जाए। आँहज़रत (ﷺ) ने उसके बाद फ़र्माया। अल्लाह के नज़दीक ये पिछला मुहताज शख़्स अगले मालदार शख़्स से बेहतर है, भले ही वैसे आदमी ज़मीन भरकर हों। (राजेअ : 5091)

يُنْكَحَ، وَإِنْ شَفَعَ أَنْ لاَ يُشَفَّعَ، وَإِنْ قَالَ: أَنْ لاَ يُسْمَعَ لِقَوْلِهِ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((هَذَا خَيْرٌ مِنْ مِلْءِ الأَرْضِ مِنْ مِثْلِ هَذَا)).

[راجع: ٥٠٩١]

तश्रीह : फ़क़ीरी से मुराद माल व दौलत की कमी है। लेकिन दिल की मालदारी के साथ ये फ़क़ीरी महमूद और सुन्नत है अंबिया और औलिया की, लेकिन दिल में अगर फ़क़ीरी के साथ हिर्स लालच हो तो उस फ़क़ीरी से आँहज़रत (ﷺ) ने अल्लाह से पनाह मांगी है। अल्लाह हर मुसलमान को मुहताजगी से बचाए (आमीन)। आँहज़रत (ﷺ) ने मालदार को देखकर फ़र्माया कि अगर सारी दुनिया ऐसे मालदारों, मुतकब्बिरों, काफ़िरों से भर जाए तो उस सबसे एक मोमिन मुख़्लिस शख़्स जो बज़ाहिर फ़क़ीर नज़र आ रहा है, ये उन सबसे बेहतर है। इस हदीष़ से उन सरमायादारों की बुराई वाज़ेह होती है जो क़ारून बनकर मग़रूर रहते हैं।

6448. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने, कहा कि मैंने अबू वाइल से सुना, कहा कि हमने ख़ब्बान बिन अरत (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि हमने नबी करीम (ﷺ) के साथ अल्लाह तआ़ला की रज़ा हासिल करने के लिये हिजरत की। चुनाँचे हमारा अज्र अल्लाह के ज़िम्मे रहा। पस हममें से कोई तो गुज़र गया और अपना अज्र (इस दुनिया में) नहीं लिया। हज़रत मुस्अ़ब बिन उ़मैर (रज़ि.) (उन्हीं) में से थे, वो जंगे उहुद के मौक़े पर शहीद हो गये थे और एक चादर छोड़ी थी (उस चादर का उनको कफ़न दिया गया था)। उस चादर से हम अगर उनका सर ढंकते तो उनके पैर खुल जाते और पैर ढंकते तो सर खुल जाता। चुनाँचे आँहज़रत (ﷺ) ने हमें हुक्म दिया कि उनका सर ढंक दें और पैर पर इज़्ख़र घास डाल दें और कोई हममें से ऐसे हुए जिनके फल ख़ूब पके और वो मज़े से चुन चुनकर खा रहे हैं। (राजेअ : 1278)

٦٤٤٨- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا وَائِلٍ، قَالَ: عُدْنَا خَبَّابًا فَقَالَ : هَاجَرْنَا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نُرِيدُ وَجْهَ اللهِ فَوَقَعَ أَجْرُنَا عَلَى اللهِ تَعَالَى فَمِنَّا مَنْ مَضَى لَمْ يَأْخُذْ مِنْ أَجْرِهِ شَيْئًا مِنْهُمْ مُصْعَبُ بْنُ عُمَيْرٍ، قُتِلَ يَوْمَ أُحُدٍ وَتَرَكَ نَمِرَةً، فَإِذَا غَطَّيْنَا رَأْسَهُ بَدَتْ رِجْلاَهُ، وَإِذَا غَطَّيْنَا رِجْلَهُ بَدَا رَأْسُهُ، فَأَمَرَنَا النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ نُغَطِّيَ رَأْسَهُ وَنَجْعَلَ عَلَى رِجْلَيْهِ مِنَ الإِذْخِرِ، وَمِنَّا مَنْ أَيْنَعَتْ لَهُ ثَمَرَتُهُ فَهُوَ يَهْدِبُهَا.

[راجع: ١٢٧٨]

या'नी उनको दुनिया की फ़ुतूहात हुईं, ख़ूब माल व दौलत मिला और वो अपनी ज़िंदगी आराम से गुज़ार रहे हैं।

6449. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे सल्म बिन ज़रीर ने बयान किया, कहा हमसे अबू रजाअ इमरान बिन तमीम ने बयान किया, उनसे इमरान बिन हुसैन (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मैंने जन्नत में झांका तो उसमें रहने वाले अकष़र ग़रीब लोग थे और मैंने दोज़ख़ में झांका तो

٦٤٤٩- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا سَلْمُ بْنُ زَرِيرٍ، حَدَّثَنَا أَبُو رَجَاءٍ، عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((اطَّلَعْتُ فِي

उसकी रहने वालियाँ अकषर औरतें थीं। अबू रजाअ के साथ इस हदीष को अय्यूब सुख़्तियानी और औफ़ अअराबी ने भी रिवायत किया है और सख़र बिन जुवैरिया और हम्माद बिन नजीह दोनों ने इस हदीष को अबू रजाअ से, उन्होंने हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से रिवायत किया। (राजेअ : 3241)

الْجَنَّةِ فَرَأَيْتُ أَكْثَرَ أَهْلِهَا الْفُقَرَاءَ، وَاطَّلَعْتُ فِي النَّارِ فَرَأَيْتُ أَكْثَرَ أَهْلِهَا النِّسَاءَ)). تَابَعَهُ أَيُّوبُ وَعَوْفٌ وَقَالَ صَخْرٌ وَحَمَّادُ بْنُ نَجِيحٍ عَنْ أَبِي رَجَاءٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ. [راجع: ٣٢٤١]

अय्यूब की रिवायत को इमाम नसाई (रह.) ने और औफ़ की रिवायत को ख़ुद इमाम बुख़ारी (रह.) ने किताबुन् निकाह में वस्ल किया है। जन्नत में ग़रीब लोगों से फ़ुक़रा, मुवह्हिदीन, मुत्तबअ़े-सुन्नत मुराद हैं और दोज़ख़ में औरतों से बदकार औरतें मुराद हैं।

6450. हमसे अबू मअ़मर अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अ़म्र बिन हज्जाज ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वारिष बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे सईद बिन अबी अ़रूबा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने कभी मेज़ पर खाना नहीं खाया। यहाँ तक कि आपकी वफ़ात हो गई और वफ़ात तक आपने कभी बारीक चपाती तनावुल नहीं फ़र्माई। (राजेअ : 5386)

٦٤٥٠- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي عَرُوبَةَ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: لَمْ يَأْكُلِ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى خِوَانٍ حَتَّى مَاتَ، وَمَا أَكَلَ خُبْزًا مُرَقَّقًا حَتَّى مَاتَ. [راجع: ٥٣٨٦]

6451. हमसे अबूबक्र अ़ब्दुल्लाह बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन उ़र्वा ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) की वफ़ात हुई तो मेरे तौशाख़ाना में कोई अनाज न था जो किसी जानदार के खाने के क़ाबिल होता, सिवा थोड़े से जौ के जो मेरे तौशाख़ाना में थे, मैं उनमें ही से खाती रही आख़िर उकताकर जब बहुत दिन हो गये तो मैंने उन्हें मापा तो वो ख़त्म हो गये। (राजेअ : 3097)

٦٤٥١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: لَقَدْ تُوُفِّيَ النَّبِيُّ ﷺ وَمَا فِي رَفِّي مِنْ شَيْءٍ يَأْكُلُهُ ذُو كَبِدٍ، إِلاَّ شَطْرُ شَعِيرٍ فِي رَفٍّ لِي فَأَكَلْتُ مِنْهُ حَتَّى طَالَ عَلَيَّ فَكِلْتُهُ فَفَنِيَ. [راجع: ٣٠٩٧]

तश्रीह : ये जो दूसरी हदीष में है कि अपना अनाज मापो उसमें बरकत होगी, उससे मुराद ये है कि बेअ और शरा के वक़्त माप लेना बेहतर है लेकिन घर में ख़र्च करते वक़्त अल्लाह का नाम लेकर ख़र्च किया जाए बरकत होगी।

बाब 17 : नबी करीम (ﷺ) और आप (ﷺ) के गुज़रान का बयान और दुनिया के मज़ों से उनका अलग रहना

١٧- باب كَيْفَ كَانَ عَيْشُ النَّبِيِّ ﷺ وَأَصْحَابِهِ وَتَخَلِّيهِمْ مِنَ الدُّنْيَا

तश्रीह : रसूले करीम (ﷺ) और आपके सहाबा किराम (रज़ि.) की दुर्वेशाना ज़िंदगी इस तर्ज़ की थी कि आज से मुक़ाबला किया जाए तो आसमान ज़मीन का फ़र्क़ नज़र आएगा उनका आख़िरत की ने'मतों पर ईमान कामिल था वो आख़िरत ही को हर घड़ी तरजीह देते और ज़िंदगी को बेहद सादगी के साथ गुज़ारते। आजकल के रहन-सहन को

देखकर उस सादा ज़िंदगी का तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता। आज हर शख़्स दुनियावी ऐशो-आराम में ग़र्क़ नज़र आ रहा है इल्ला माशाअल्लाह।

6452. मुझसे अबू नुऐम ने ये ह़दीष़ आधी के क़रीब बयान की और आधी दूसरे शख़्स ने, कहा हमसे ड़मर बिन ज़र्र ने बयान किया, कहा हमसे मुजाहिद ने बयान किया कि ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) कहा करते थे कि, अल्लाह की क़सम जिसके सिवा कोई मा'बूद नहीं (ज़माना-ए-नबवी में) भूख के मारे ज़मीन पर अपने पेट के बल लेट जाता था और कभी मैं भूख के मारे अपने पेट पर पत्थर बाँधा करता था। एक दिन मैं उस रास्ते पर बैठ गया जिससे स़ह़ाबा निकलते थे। ह़ज़रत अबूबक्र स़िद्दीक़ (रज़ि.) गुज़रे और मैंने उनसे किताबुल्लाह की एक आयत के बारे में पूछा, मेरे पूछने का मक़्स़द स़िर्फ़ ये था कि वो मुझे कुछ खिला दें मगर चले गये और कुछ नहीं किया। फिर ह़ज़रत ड़मर (रज़ि.) मेरे पास से गुज़रे, मैंने उनसे भी क़ुर्आन मजीद की एक आयत पूछी और पूछने का मक़्स़द स़िर्फ़ ये था कि वो मुझे कुछ खिला दें मगर वो भी गुज़रे गये और कुछ नहीं किया। उसके बाद हुज़ूरे अकरम (ﷺ) गुज़रे और आपने जब मुझे देखा तो आप मुस्कुरा दिये और आप मेरे दिल की बात समझ गये और मेरे चेहरे को आपने ताड़ लिया। फिर आपने फ़र्माया, अबाहिर! मैंने अ़र्ज़ किया लब्बैक, या रसूलल्लाह! फ़र्माया मेरे साथ आ जाओ और आप चलने लगे। मैं आँह़ज़रत (ﷺ) के पीछे चल दिया। फिर आँह़ज़रत (ﷺ) अंदर घर में तशरीफ़ ले गये। फिर मैंने इजाज़त चाही और मुझे इजाज़त मिली। जब आप दाख़िल हुए तो एक प्याले में दूध मिला। पूछा कि ये दूध कहाँ से आया है? कहा कि फ़लाँ औरत ने आँह़ज़रत (ﷺ) के लिये तोह़फ़े में भेजा है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अबाहिर! मैंने अ़र्ज़ किया लब्बैक, या रसूलल्लाह! फ़र्माया, अहले सुफ़्फ़ा इस्लाम के मेहमान हैं, वो न किसी के घर पनाह ढूँढते, किसी के माल में और न किसी के पास! जब आँह़ज़रत (ﷺ) के पास स़दक़ा आता तो उसे आँह़ज़रत (ﷺ) उन्हीं के पास भेज देते और ख़ुद उसमें से कुछ नहीं रखते। अल्बत्ता जब आपके पास तोह़फ़ा आता तो उन्हें बुला भेजते और ख़ुद भी उसमें से कुछ खाते और उन्हें भी शरीक करते। चुनाँचे मुझे ये बात नागवार गुज़री और मैंने सोचा कि ये दूध है ही कितना कि सारे सुफ़्फ़ा वालों में तक़्सीम हो, उसका ह़क़दार मैं था कि उसे

٦٤٥٢- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ بِنَحْوٍ مِنْ نِصْفِ هَذَا الْحَدِيثِ، حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ ذَرٍّ، حَدَّثَنَا مُجَاهِدٌ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ كَانَ يَقُولُ : اللهِ الَّذِي لاَ إِلَهَ إِلاَّ هُوَ إِنْ كُنْتُ لأَعْتَمِدُ بِكَبِدِي عَلَى الأَرْضِ مِنَ الْجُوعِ وَإِنْ كُنْتُ لأَشُدُّ الْحَجَرَ عَلَى بَطْنِي مِنَ الْجُوعِ، وَلَقَدْ قَعَدْتُ يَوْمًا عَلَى طَرِيقِهِمِ الَّذِي يَخْرُجُونَ مِنْهُ، فَمَرَّ أَبُو بَكْرٍ فَسَأَلْتُهُ عَنْ آيَةٍ مِنْ كِتَابِ اللهِ، مَا سَأَلْتُهُ إِلاَّ لِيُشْبِعَنِي فَمَرَّ وَلَمْ يَفْعَلْ، ثُمَّ مَرَّ بِي عُمَرُ فَسَأَلْتُهُ عَنْ آيَةٍ مِنْ كِتَابِ اللهِ مَا سَأَلْتُهُ إِلاَّ لِيُشْبِعَنِي، فَمَرَّ فَلَمْ يَفْعَلْ، ثُمَّ مَرَّ بِي أَبُو الْقَاسِمِ ﷺ فَتَبَسَّمَ حِينَ رَآنِي وَعَرَفَ مَا فِي نَفْسِي وَمَا فِي وَجْهِي ثُمَّ قَالَ: ((أَبَا هِرٍّ)) قُلْتُ: لَبَّيْكَ يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ: ((الْحَقْ)) وَمَضَى فَتَبِعْتُهُ فَدَخَلَ فَاسْتَأْذَنَ فَأَذِنَ لِي فَدَخَلَ فَوَجَدَ لَبَنًا فِي قَدَحٍ فَقَالَ ((مِنْ أَيْنَ هَذَا اللَّبَنُ؟)) قَالُوا: أَهْدَاهُ لَكَ فُلاَنٌ أَوْ فُلاَنَةُ قَالَ : ((أَبَا هِرٍّ)) قُلْتُ: لَبَّيْكَ يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ: ((الْحَقْ إِلَى أَهْلِ الصُّفَّةِ فَادْعُهُمْ لِي)) قَالَ : وَأَهْلُ الصُّفَّةِ أَضْيَافُ الإِسْلاَمِ لاَ يَأْوُونَ إِلَى أَهْلٍ وَلاَ مَالٍ، وَلاَ عَلَى أَحَدٍ إِذَا أَتَتْهُ صَدَقَةٌ بَعَثَ بِهَا إِلَيْهِمْ، وَلَمْ يَتَنَاوَلْ مِنْهَا شَيْئًا وَإِذَا أَتَتْهُ هَدِيَّةٌ أَرْسَلَ إِلَيْهِمْ وَأَصَابَ مِنْهَا وَأَشْرَكَهُمْ فِيهَا، فَسَاءَنِي ذَلِكَ فَقُلْتُ: وَمَا

هَذَا اللَّبَنُ فِي أَهْلِ الصُّفَّةِ كُنْتُ أَحَقَّ أَنَا أُصِيبَ مِنْ هَذَا اللَّبَنِ شَرْبَةً أَتَقَوَّى بِهَا فَإِذَا جَاءَ أَمَرَنِي فَكُنْتُ أَنَا أُعْطِيهِمْ وَمَا عَسَى أَنْ يَبْلُغَنِي مِنْ هَذَا اللَّبَنِ، وَلَمْ يَكُنْ مِنْ طَاعَةِ اللهِ وَطَاعَةِ رَسُولِهِ ﷺ بُدٌّ، فَأَتَيْتُهُمْ فَدَعَوْتُهُمْ فَأَقْبَلُوا فَاسْتَأْذَنُوا فَأَذِنَ لَهُمْ، وَأَخَذُوا مَجَالِسَهُمْ مِنَ الْبَيْتِ قَالَ: ((يَا أَبَا هِرٍّ)) قُلْتُ: لَبَّيْكَ يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ: ((خُذْ فَأَعْطِهِمْ)) قَالَ: فَأَخَذْتُ الْقَدَحَ فَجَعَلْتُ أُعْطِيهِ الرَّجُلَ فَيَشْرَبُ حَتَّى يَرْوَى ثُمَّ يَرُدُّ عَلَيَّ الْقَدَحَ وَأُعْطِيهِ الرَّجُلَ فَيَشْرَبُ حَتَّى يَرْوَى ثُمَّ يَرُدُّ عَلَيَّ الْقَدَحَ فَيَشْرَبُ حَتَّى يَرْوَى، ثُمَّ يَرُدُّ عَلَيَّ الْقَدَحَ، حَتَّى انْتَهَيْتُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ وَقَدْ رَوِيَ الْقَوْمُ كُلُّهُمْ فَأَخَذَ الْقَدَحَ فَوَضَعَهُ عَلَى يَدِهِ فَنَظَرَ إِلَيَّ فَتَبَسَّمَ فَقَالَ: ((أَبَا هِرٍّ))، قُلْتُ: لَبَّيْكَ يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ: ((بَقِيتُ أَنَا وَأَنْتَ)) قُلْتُ: صَدَقْتَ يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ: ((اقْعُدْ فَاشْرَبْ)) فَقَعَدْتُ فَشَرِبْتُ فَقَالَ: ((اشْرَبْ)) فَشَرِبْتُ فَمَا زَالَ يَقُولُ: ((اشْرَبْ)) حَتَّى قُلْتُ: لاَ وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ مَا أَجِدُ لَهُ مَسْلَكًا قَالَ: فَأَرِنِي فَأَعْطَيْتُهُ الْقَدَحَ فَحَمِدَ اللهَ وَسَمَّى وَشَرِبَ الْفَضْلَةَ.

[راجع: ٥٣٧٥]

पीकर कुछ क़ुव्वत हासिल करता। जब सुफ़्फ़ा वाले आएँगे तो आँहज़रत (ﷺ) मुझे फ़र्माएँगे और मैं उन्हें उसे दे दूँगा। मुझे तो शायद उस दूध में से कुछ भी न मिलेगा लेकिन अल्लाह और उसके रसूल की हुक्म बरदारी के सिवा कोई और चारा भी नहीं था। चुनाँचे मैं उनके पास आया और आँहज़रत (ﷺ) की दा'वत पहुँचाई, वो आ गये और इजाज़त चाही। उन्हें इजाज़त मिल गई फिर वो घर में अपनी अपनी जगह बैठ गये। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अबाहिर! मैंने अ़र्ज़ किया लब्बैक, या रसूलल्लाह! फ़र्माया लो और इसे इन सब हाज़िरीन को दे दो। बयान किया कि फिर मैंने प्याला पकड़ लिया और एक एक को देने लगा। एक शख़्स दूध पीकर जब सैराब हो जाता तो मुझे प्याला वापस कर देता फिर दूसरे शख़्स को देता वो भी सैर होकर पीता फिर प्याला मुझको वापस कर देता और इसी त़रह तीसरा पीकर फिर मुझे प्याला वापस कर देता। इस त़रह में नबी करीम (ﷺ) तक पहुँचा तो सब लोग पीकर सैराब हो चुके थे। आख़िर में आँहज़रत (ﷺ) ने प्याला पकड़ा और अपने हाथ पर रखकर आपने मेरी त़रफ़ देखा और मुस्कुराकर फ़र्माया, अबाहिर! मैंने अ़र्ज़ किया, लब्बैक या रसूलल्लाह! फ़र्माया, अब मैं और तुम बाक़ी रह गये हैं, मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! आपने सच फ़र्माया। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया बैठ जाओ और पियो। मैं बैठ गया और मैंने दूध पिया और आँहज़रत (ﷺ) बराबर फ़र्माते रहे कि और पियो आख़िर मुझे कहना पड़ा, नहीं उस ज़ात की क़सम! जिसने आपको ह़क़ के साथ भेजा है, अब बिल्कुल गुंजाइश नहीं है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया फिर मुझे दे दो। मैंने प्याला आँहज़रत (ﷺ) को दे दिया। आँहज़रत (ﷺ) ने अल्लाह की ह़म्द बयान की और बिस्मिल्लाह पढ़कर बचा हुआ ख़ुद पी गये। (राजेअ़ : 5375)

तश्रीह : मस्जिदे नबवी के सायबान के नीचे एक चबूतरा बना दिया गया था जिस पर बेघर, बे-दर मुश्ताक़ाने इ़ल्म क़ुर्आन व ह़दीष़ रहते थे, यही अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा थे। उन्हीं में से ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) भी थे ह़दीष़ में आपके खुले हुए एक बाबरकत मुअ़जज़ा का ज़िक्र है। ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने जो बेसब्री का ख़्याल किया था कि देखिए दूध मेरे लिये बचता है या नहीं उस पर आँहज़रत (ﷺ) मुस्कुरा दिये। सच है, **ख़ुलक़ल इंसान हलूआ।**

6453. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या क़त्तान ने बयान किया, उनसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने, उनसे क़ैस ने बयान किया, कहा कि मैंने सअद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैं सबसे पहला अरब हूँ जिसने अल्लाह के रास्ते में तीर चलाए। हमने उस हाल में वक़्त गुज़ारा है कि जिहाद कर रहे हैं और हमारे पास खाने की कोई चीज़ हब्ला के पत्तों और उस बबूल के सिवा खाने के लिये नहीं थी और बकरी की मींगनियों की तरह हम पाख़ाना किया करते थे। अब ये बनू असद के लोग मुझको इस्लाम सिखलाकर दुरुस्त करना चाहते हैं फिर तो मैं बिलकुल बदनसीब ठहरा और मेरा सारा किया कराया बेकार गया।

٦٤٥٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا قَيْسٌ، قَالَ: سَمِعْتُ سَعْدًا يَقُولُ: إِنِّي لأَوَّلُ الْعَرَبِ رَمَى بِسَهْمٍ فِي سَبِيلِ اللهِ، وَرَأَيْتُنَا نَغْزُو وَمَا لَنَا طَعَامٌ، إِلاَّ وَرَقُ الْحُبْلَةِ، وَهَذَا السَّمُرُ وَإِنْ أَحَدَنَا لَيَضَعُ كَمَا تَضَعُ الشَّاةُ وَمَالَهُ خِلْطٌ، ثُمَّ أَصْبَحَتْ بَنُو أَسَدٍ تُعَزِّرُنِي عَلَى الإِسْلاَمِ، خِبْتُ إِذًا وَضَلَّ سَعْيِي.

बनू असद ने उन पर कुछ ज़ाती ए'तिराज़ किये थे जो ग़लत थे उनके बारे में उन्होंने ये बयान दिया है। हदीष़ में फ़क़्र का ज़िक्र है, यही बाब से मुनासबत है। ये बनू असद वफ़ाते नबवी के बाद मुर्तद होकर तलहा बिन ख़ुवैलिद के पैरोकार हो गये थे जिसने झूठी नुबुव्वत का दा'वा किया था, हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) ने उनको मारकर फिर मुसलमान बनाया उन लोगों ने हज़रत उमर से सअद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) की शिकायत की थी। सअद कूफ़ा के हाकिम थे। हज़रत सअद (रज़ि.) ने फ़र्माया कि ये कल के मुसलमान मुझको पढ़ाने बैठे हैं। हब्ला और समर कांटेदार पेड़ होते हैं।

6454. मुझसे उष्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा मुझसे जरीर बिन अब्दुल हमीद ने, उनसे मंसूर ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अस्वद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मुहम्मद (ﷺ) के घर वालों को मदीना आने के बाद कभी तीन दिन तक बराबर गेहूँ की रोटी खाने के लिये नहीं मिली, यहाँ तक कि आँहज़रत (ﷺ) की रूह क़ब्ज़ हो गई। (राजेअ: 5416)

٦٤٥٤- حَدَّثَنِي عُثْمَانُ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنِ الأَسْوَدِ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: مَا شَبِعَ آلُ مُحَمَّدٍ ﷺ مُنْذُ قَدِمَ الْمَدِينَةَ مِنْ طَعَامِ بُرٍّ ثَلاَثَ لَيَالٍ تِبَاعًا حَتَّى قُبِضَ. [راجع: ٥٤١٦]

6455. मुझसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम बिन अब्दुर्रहमान बग़वी ने बयान किया, कहा हमसे इस्हाक़ अज़रक़ ने बयान किया, उनसे मिस्अर बिन कुदाम ने, उनसे हिलाल ने, उनसे उर्वा बिन ज़ुबैर ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि हज़रत नबी करीम (ﷺ) के घराना ने अगर कभी एक दिन में दो मर्तबा खाना खाया तो ज़रूर उसमें एक वक़्त सिर्फ़ खजूरें होती थीं।

٦٤٥٥- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ هُوَ الأَزْرَقُ، عَنْ مِسْعَرِ بْنِ كِدَامٍ، عَنْ هِلاَلٍ، عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: مَا أَكَلَ آلُ مُحَمَّدٍ أَكْلَتَيْنِ فِي يَوْمٍ إِلاَّ إِحْدَاهُمَا تَمْرٌ.

6456. मुझसे अहमद बिन रजाअ ने बयान किया, कहा हमसे नज़्र ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उर्वा ने कहा कि मुझे

٦٤٥٦- حَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ رَجَاءٍ، حَدَّثَنَا

मेरे वालिद ने ख़बर दी और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) का बिस्तर चमड़े का था और उसमें खजूर की छाल भरी हुई थी।

النَّضْرُ، عَنْ هِشَامٍ قَالَ أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ فِرَاشُ رَسُولِ اللهِ ﷺ مِنْ أَدَمٍ وَحَشْوُهُ مِنْ لِيفٍ.

ये था रसूले करीम (ﷺ) का बिस्तर व तकिया। आज अकष़र सुन्नत पर अ़मल करने के वे दा'वेदार, जिनके ऐश को देखकर शायद फ़िरऔ़न व हामान भी हैरतज़दा हो जाएँ, वे लोग क्या नबवी ज़िंदगी पर क़नाअ़त (स़ब्र) कर सकते हैं ?

6457. हमसे हुदबा बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम बिन यह्या ने बयान किया, कहा हमसे क़तादा ने बयान किया, कहा कि हम अनस बिन मालिक (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर होते, उनका नानबाई वहीं मौजूद होता (जो रोटियाँ पका पकाकर देता जाता) हज़रत अनस (रज़ि.) लोगों से कहते कि खाओ मैंने कभी नबी करीम (ﷺ) को पतली रोटी खाते नहीं देखा और न आँहज़रत (ﷺ) ने कभी अपनी आँख से समूची भुनी हुई बकरी देखी। यहाँ तक कि आपका इंतिक़ाल हो गया। (राजेअ़ : 5385) (ﷺ) अल्फ़ अल्फ़ मर्रत बअ़द कुल्लि ज़र्रह्

٦٤٥٧- حَدَّثَنَا هُدْبَةُ بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا هَمَّامُ بْنُ يَحْيَى، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، قَالَ كُنَّا نَأْتِي أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ وَخَبَّازُهُ قَائِمٌ، وَقَالَ: كُلُوا فَمَا أَعْلَمُ النَّبِيَّ ﷺ رَأَى رَغِيفًا مُرَقَّقًا حَتَّى لَحِقَ بِاللهِ وَلاَ رَأَى شَاةً سَمِيطًا بِعَيْنِهِ قَطُّ.

[راجع: ٥٣٨٥]

6458. हमसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन उ़र्वा ने बयान किया, कहा मुझको मेरे वालिद ने ख़बर दी और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि हमारे ऊपर ऐसा महीना भी गुज़र जाता था कि चूल्हा नहीं जलता था। स़िर्फ़ खजूर और पानी होता था। हाँ अगर कभी किसी जगह से कुछ थोड़ा सा गोश्त आ जाता तो उसको भी खा लेते थे।(राजेअ़ : 2567)

٦٤٥٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا يَحْيَى، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ يَأْتِي عَلَيْنَا الشَّهْرُ مَا نُوقِدُ فِيهِ نَارًا، إِنَّمَا هُوَ التَّمْرُ وَالْمَاءُ إِلاَّ أَنْ نُؤْتَى بِاللُّحَيْمِ.

[راجع: ٢٥٦٧]

6459.हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह उवैसी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्ने अबी हाज़िम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन रूमान ने बयान किया, उनसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने और उनसे उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया, उन्हों ने उ़र्वा से कहा, बेटे! हम दो महीनों में तीन चाँद देख लेते हैं और रसूलुल्लाह (ﷺ) (की बीवियों) के घरों में चूल्हा नहीं जलता था। मैंने पूछा फिर आप लोग ज़िन्दा किस चीज़ पर रहती थीं? बतलाया कि स़िर्फ़ दो काली खजूर पर, खजूर और पानी, हाँ! आँहज़रत (ﷺ) के कुछ अंसारी पड़ौसी थे जिनके यहाँ दूध देने वाली ऊँटनियाँ थीं वो अपने घरों से आँहज़रत (ﷺ) के लिये

٦٤٥٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ الأُوَيْسِيُّ، حَدَّثَنِي ابْنُ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ يَزِيدَ بْنِ رُومَانَ، عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ أَنَّهَا قَالَتْ لِعُرْوَةَ : ابْنَ أُخْتِي إِنْ كُنَّا لَنَنْظُرُ إِلَى الْهِلاَلِ ثَلاَثَةَ أَهِلَّةٍ فِي شَهْرَيْنِ، وَمَا أُوقِدَتْ فِي أَبْيَاتِ رَسُولِ اللهِ ﷺ نَارٌ، فَقُلْتُ: مَا كَانَ يُعِيشُكُمْ قَالَتْ: الأَسْوَدَانِ التَّمْرُ وَالْمَاءُ، إِلاَّ أَنَّهُ قَدْ كَانَ لِرَسُولِ اللهِ ﷺ جِيرَانٌ مِنَ الأَنْصَارِ، كَانَ

لَهُمْ مَنَائِحُ وَكَانُوا يَمْنَحُونَ رَسُولَ اللهِ ﷺ مِنْ أَبْيَاتِهِمْ فَيَسْقِينَاهُ.

[راجع: ٢٥٦٧]

दूध भेज देते और आप हमें वही दूध पिला देते थे। (राजेअ़ : 2567)

٦٤٦٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُضَيْلٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عُمَارَةَ، عَنْ أَبِي زُرْعَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((اللَّهُمَّ ارْزُقْ آلَ مُحَمَّدٍ قُوتًا)).

6460. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुहम्मद बिन फ़ुज़ैल ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे अ़म्मारा ने, उनसे अबू ज़ुरआ़ ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दुआ़ की, ऐ अल्लाह! आले मुहम्मद (ﷺ) को इतनी रोज़ी दे कि वो ज़िन्दा रह सकें।

तश्रीह : तमाम बयान की गई अहादीष़ का मक़्सद यही है कि मुसलमान अगर दुनिया में ज़्यादा ऐशो-आराम की ज़िंदगी न गुज़ार सकें तो भी उनको शुक्रगुज़ार बन्दा बनकर रहना चाहिये और यक़ीन रखना चाहिये कि रसूले करीम (ﷺ) की ज़िंदगी उनके लिये बेहतरीन नमूना है। हाँ ह़लाल त़रीक़ों से त़लबे-रिज़्क़ सरापा मह़मूद है और उस त़ौर पर जो दौलत ह़ासिल हो वो भी ऐन फ़ज़्ले इलाही है। अस्ह़ाबे नबवी में ह़ज़रत उ़ष्मान ग़नी और ह़ज़रत अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ जैसे मालदार ह़ज़रात भी मौजूद थे। रज़ियल्लाहु अ़न्हुम अज्मईन

١٨- باب الْقَصْدِ وَالْمُدَاوَمَةِ عَلَى الْعَمَلِ

बाब 18 : नेक अ़मल पर हमेशगी करना और दरम्यानी चाल चलना (न कमी हो न ज़्यादती)

٦٤٦١- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ، أَخْبَرَنَا أَبِي، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ أَشْعَثَ قَالَ : سَمِعْتُ أَبِي قَالَ سَمِعْتُ مَسْرُوقًا قَالَ: سَأَلْتُ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَيُّ الْعَمَلِ كَانَ أَحَبَّ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ؟ قَالَتْ: الدَّائِمُ، قَالَ: قُلْتُ فَأَيَّ حِينَ كَانَ يَقُومُ؟ قَالَتْ : كَانَ يَقُومُ إِذَا سَمِعَ الصَّارِخَ. [راجع: ١١٣٢]

6461. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद उ़ष्मान बिन ह़ब्ला ने ख़बर दी, उन्हें शुअ़बा ने, उनसे अश्अ़ष ने बयान किया कि मैंने अपने वालिद अबुल शअ़शाअ सुलैम बिन अस्वद से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने मसरूक़ से सुना, कहा कि मैंने आ़इशा (रज़ि.) से पूछा, कौनसी इबादत नबी करीम (ﷺ) को ज़्यादा पसंद थी। फ़र्माया कि जिस पर हमेशगी हो सके। कहा कि मैंने पूछा आप रात को तहज्जुद के लिये कब उठते थे? बतलाया कि जब मुर्ग़ की आवाज़ सुन लेते। (राजेअ़ : 1132)

मुर्ग़ पहली बांग आधी रात के बाद देता है। उस वक़्त आप तहज्जुद के लिये खड़े हो जाते।

٦٤٦٢- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ أَنَّهَا قَالَتْ : كَانَ أَحَبُّ الْعَمَلِ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ الَّذِي يَدُومُ عَلَيْهِ صَاحِبُهُ.

[راجع: ١١٣٢]

6462. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) को सबसे ज़्यादा पसंदीदा अ़मल था जिसको आदमी हमेशा करता रहे।

(राजेअ़ : 1132)

नेक अ़मल कभी करना, कभी छोड़ देना मह़मूद नहीं जो भी हो उस पर हमेशगी होना मह़मूद है।

6463. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबी ज़िब ने बयान किया, उनसे सईद मक़्बरी ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया तुमसे किसी शख़्स़ को उसका अ़मल नजात नहीं दिला सकेगा। स़ह़ाबा ने अ़र्ज़ किया और आपको भी नहीं या रसूलल्लाह! फ़र्माया और मुझे भी नहीं, सिवा उसके कि अल्लाह तआ़ला मुझे अपनी रह़मत के साये में ले ले। पस तुमको चाहिये कि दुरुस्ती के साथ अ़मल करो और मियाना रवी इख़्तियार करो। सुबह़ और शाम, इसी त़रह़ रात को ज़रा सा चल लिया करो और ए'तिदाल के साथ चला करो मंज़िले मक़्सूद को पहुँच जाओगे। (राजेअ़ : 39)

٦٤٦٣- حَدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ، عَنْ سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لَنْ يُنَجِّيَ أَحَدًا مِنْكُمْ عَمَلُهُ)) قَالُوا: وَلاَ أَنْتَ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: ((وَلاَ أَنَا إِلاَّ أَنْ يَتَغَمَّدَنِي اللهُ بِرَحْمَةٍ، سَدِّدُوا وَقَارِبُوا وَاغْدُوا وَرُوحُوا، وَشَيْءٌ مِنَ الدُّلْجَةِ وَالْقَصْدَ الْقَصْدَ تَبْلُغُوا)). [راجع: ٣٩]

मक़्सूद ये है कि आदमी सुबह़ व शाम को इसी त़रह़ रात को थोड़ी सी इ़बादत कर लिया करे और हमेशा करता रहे। ये तीन वक़्त निहायत मुतबर्रक हैं। आयत **अक़िमिस़्स़लात लिदुलूकिश्शम्सि** से ज़ुहर और **ह़ाफ़िज़ू अ़लस़्स़लवाति वस़्स़लातिल्वुस्ता** (अल बक़र : 238) से अ़स्र इस त़रह़ से क़ुर्आने करीम से पंजवक़्त इ़बादत का तक़ाज़ा है।

6464. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान ने बयान किया, उनसे मूसा बिन उ़क़्बा ने, उनसे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया दरम्यानी चाल इख़्तियार करो और बुलंद परवाज़ी न करो और अ़मल करते रहो, तुममें से किसी का अ़मल उसे जन्नत में नहीं दाख़िल कर सकेगा, मेरे नज़दीक सबसे पसंदीदा अ़मल वो है जिस पर हमेशगी की जाए, ख़्वाह कम ही क्यूँ न हो। (दीगर : 6467)

٦٤٦٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ، عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((سَدِّدُوا وَقَارِبُوا وَاعْلَمُوا أَنْ لَنْ يُدْخِلَ أَحَدَكُمْ عَمَلُهُ الْجَنَّةَ، وَأَنَّ أَحَبَّ الأَعْمَالِ أَدْوَمُهَا إِلَى اللهِ وَإِنْ قَلَّ)).[طرفه في : ٦٤٦٧].

फ़राइज़े इलाही में कमी बेशी का सवाल ही नहीं है। ये तमाम नफ़्ली इ़बादतों का ज़िक्र है।

6465. मुझसे मुह़म्मद बिन अ़रअ़रा ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे सअ़द बिन इब्राहीम ने, उनसे अबू सलमा ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) से पूछा गया कौनसा अ़मल अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा पसंद है? फ़र्माया कि जिस पर हमेशगी की जाए, ख़्वाह वो थोड़ा ही हो और फ़र्माया नेक काम करने में उतनी ही तकलीफ़ उठाओ जितनी त़ाक़त है (जो हमेशा निभ सके)।

٦٤٦٥- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَرْعَرَةَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ: سُئِلَ النَّبِيُّ ﷺ: أَيُّ الأَعْمَالِ أَحَبُّ إِلَى اللهِ؟ قَالَ: ((أَدْوَمُهَا وَإِنْ قَلَّ)) وَقَالَ اكْلَفُوا مِنَ الأَعْمَالِ مَا تُطِيقُونَ)).

6466. मुझसे उ़ष्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे मंसूर ने बयान किया, उनसे इब्राहीम नख़ई ने और उनसे अ़ल्क़मा ने बयान किया कि मैंने उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) से पूछा उम्मुल मोमिनीन! नबी करीम (ﷺ) क्यूँकर इबादत किया करते थे क्या आपने कुछ ख़ास़ दिन ख़ास़ कर रखे थे? बतलाया कि नहीं, आँह़ज़रत (ﷺ) के अ़मल में हमेशगी होती थी और तुममें कौन है जो उन अ़मलों की त़ाक़त रखता हो जिनकी आँह़ज़रत (ﷺ) त़ाक़त रखते थे। (राजेअ़ : 1987)

٦٤٦٦- حدَّثني عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَلْقَمَةَ قَالَ: سَأَلْتُ أُمَّ الْمُؤْمِنِينَ عَائِشَةَ قُلْتُ: يَا أُمَّ الْمُؤْمِنِينَ كَيْفَ كَانَ عَمَلُ النَّبِيِّ ﷺ، هَلْ كَانَ يَخُصُّ شَيْئًا مِنَ الأَيَّامِ؟ قَالَتْ: لاَ، كَانَ عَمَلُهُ دِيمَةً وَأَيُّكُمْ يَسْتَطِيعُ مَا كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَسْتَطِيعُ.
[راجع: ١٩٨٧]

सारी रात इबादत में गुज़ार देता यहाँ तक कि पैरों में वरम हो जाना सिवाय ज़ाते क़ुदसी सिफ़ात फ़िदाहू रूही के और किसमें ऐसी त़ाक़त हो सकती है।

6467. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे मुह़म्मद बिन ज़िब्रिक़ान ने, कहा हमसे मूसा बिन उ़क़्बा ने, उनसे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने, उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया देखो जो नेक काम करो ठीक त़ौर से करो और ह़द से न बढ़ जाओ बल्कि उसके क़रीब रहो (म्यानारवी इख़्तियार करो) और ख़ुश रहो और याद रखो कि कोई भी अपने अ़मल की वजह से जन्नत में नहीं जाएगा। स़ह़ाबा ने अ़र्ज़ किया और आप (ﷺ) भी नहीं या रसूलल्लाह! फ़र्माया, और मैं भी नहीं सिवा उसके कि अल्लाह की मग़्फ़िरत व रह़मत के साये में मुझे ढाँक ले। मदीनी ने बयान किया कि मेरा ख़्याल है कि मूसा बिन उ़क़्बा ने ये ह़दीष़ अबू सलमा से अबुन् नस़्र के वास्त़े से सुनी है। अबू सलमा ने आ़इशा (रज़ि.) से। और अ़फ़्फ़ान बिन मुस्लिम ने बयान किया कि हमसे वुहैब ने बयान किया, उनसे मूसा बिन उ़क़्बा ने बयान किया, कहा कि मैंने अबू सलमा (रज़ि.) से सुना और उन्होंने आ़इशा (रज़ि.) से और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से कि आपने फ़र्माया दुरुस्ती के साथ अ़मल करो और ख़ुश रहो। और मुजाहिद ने बयान किया कि सदादन सदीदा दोनों के मा'नी स़दक़ के हैं। (राजेअ़ : 6464)

٦٤٦٧- حدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الزِّبْرِقَانِ، حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ عَائِشَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((سَدِّدُوا وَقَارِبُوا وَأَبْشِرُوا، فَإِنَّهُ لاَ يَدْخِلُ أَحَدًا الْجَنَّةَ عَمَلُهُ))، قَالُوا: وَلاَ أَنْتَ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: ((وَلاَ أَنَا. إِلاَّ أَنْ يَتَغَمَّدَنِي اللهُ بِمَغْفِرَةٍ وَرَحْمَةٍ)). قَالَ: أَظُنُّهُ عَنْ أَبِي النَّضْرِ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ عَائِشَةَ. وَقَالَ عَفَّانُ: حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ، قَالَ : سَمِعْتُ أَبَا سَلَمَةَ عَنْ عَائِشَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((سَدِّدُوا وَأَبْشِرُوا)). وَقَالَ مُجَاهِدٌ: سَدَادًا سَدِيدًا: صِدْقًا.
[راجع: ٦٤٦٤]

तशरीह : या'नी सच्चाई को हर ह़ाल में इख़्तियार करो तुम आमाले ख़ैर करोगे तुमको जन्नत की बल्कि दुनिया में भी कामयाबी की बशारत है। क़ुर्आन की आयत, क़ूलू क़ौलन सदीदा (अल अह़ज़ाब : 70) की त़रफ़ इशारा है। अ़फ़्फ़ान बिन मुस्लिम ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) के उस्ताद हैं इस सनद को लाकर इमाम बुख़ारी (रह़.) ने अ़ली बिन

अ़ब्दुल्लाह मदीनी का गुमान दूर किया कि अगली रिवायत मुन्क़तअ़ है क्योंकि उसमें मूसा के सिमाअ़ की अबू सलमा से स़राह़त है ह़दीष़ में सदूदा का लफ़्ज़ आया था सदीदन और सदादन का भी वही माद्दा है इस मुनासबत से इमाम बुख़ारी (रह़.) ने इसकी तफ़्सीर यहाँ बयान कर दी।

कु़र्आन शरीफ़ में है, **व तिल्कल्जन्नतुल्लती औरष्तुमूहा बिमा कुन्तुम तअ़मलून** (अल आराफ़ : 43) उसके मुआरिज़ नहीं है क्योंकि अ़मले स़ालेह़ भी मिन्जुम्ला अस्बाबे दुख़ूले जन्नत का एक सबब है लेकिन अस़ली सबब रह़मत और इनायते इलाही है। कुछ ने कहा आयत में दर्जात की तरक़्क़ी मुराद है न मह़ज़ दुख़ूले जन्नत और तरक़्क़ी आमाले स़ालिह़ा के लिह़ाज़ से होगी इस ह़दीष़ से मुअ़तज़िला का रद्द होता है जो कहते हैं आमाले स़ालिह़ा करने वाले को बहिश्त में ले जाना अल्लाह पर वाजिब है। मआ़ज़ल्लाह मिन्हु

٦٤٦٨- حدّثني إبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُلَيْحٍ، قَالَ حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ هِلاَلِ بْنِ عَلِيٍّ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُهُ يَقُولُ: إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ صَلَّى لَنَا يَوْمًا الصَّلاَةَ ثُمَّ رَقِيَ الْمِنْبَرَ فَأَشَارَ بِيَدِهِ قِبَلَ قِبْلَةِ الْمَسْجِدِ فَقَالَ : ((قَدْ أُرِيتُ الآنَ مُنْذُ صَلَّيْتُ لَكُمُ الصَّلاَةَ الْجَنَّةَ وَالنَّارَ مُمَثَّلَتَيْنِ فِي قُبُلِ هَذَا الْجِدَارِ، فَلَمْ أَرَ كَالْيَوْمِ فِي الْخَيْرِ وَالشَّرِّ فَلَمْ أَرَ كَالْيَوْمِ فِي الْخَيْرِ وَالشَّرِّ)).
[راجع: ٩٧]

6468. मुझसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुह़म्मद बिन फ़ुलैह़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उनसे हिलाल बिन अ़ली ने बयान किया कि मैंने ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) को ये कहते सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें एक दिन नमाज़ पढ़ाई, फिर मिम्बर पर चढ़े और अपने हाथ से मस्जिद के क़िबले की त़रफ़ इशारा किया और फ़र्माया कि उस वक़्त जब मैंने तुम्हें नमाज़ पढ़ाई तो मुझे इस दीवार की त़रफ़ जन्नत और जहन्नम की तस्वीर दिखाई गई मैंने (सारी उ़म्र में) आज की त़रह़ न कोई बहिश्त की सी ख़ूबस़ूरत चीज़ देखी न दोज़ख़ की सी डरावनी। मैंने आज की त़रह़ न कोई बहिश्त की सी ख़ूबस़ूरत चीज़ देखी न दोज़ख़ की सी डरावनी चीज़। (राजेअ़ : 97)

बाब 19 : अल्लाह से ख़ौफ़ के साथ उम्मीद रखना

١٩- باب الرَّجَاءِ مَعَ الْخَوْفِ

وَقَالَ سُفْيَانُ، مَا فِي الْقُرْآنِ آيَةٌ أَشَدُّ عَلَيَّ مِنْ ﴿لَسْتُمْ عَلَى شَيْءٍ حَتَّى تُقِيمُوا التَّوْرَاةَ وَالإِنْجِيلَ. وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ مِنْ رَبِّكُمْ﴾ [المائدة : ٦٨].

और सूफ़ियान बिन उ़यैयना ने कहा कि क़ुर्आन की कोई आयत मुझ पर इतनी सख़्त नहीं गुज़री जितनी (सूरह माइदा) की ये आयत है कि ऐ पैग़म्बर के क़रीब वालों! तुम्हारा तरीक़ (मज़हब) कोई चीज़ नहीं है जब तक तौरात और इन्जील और उन किताबों पर जो तुम पर उतरी हैं पूरा अ़मल न करो।

इस आयत की सख़्ती की वजह ज़ाहिर है क्योंकि अल्लाह ने उसमें ये फ़र्माया कि जब तक किताबे इलाही पर पूरा पूरा अ़मल न हो उस वक़्त तक दीन व ईमान कोई चीज़ नहीं है।

٦٤٦٩- حدّثنا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَمْرِو بْنِ أَبِي عَمْرٍو، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ:

6469. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यअ़क़ूब बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन अबी अ़म्र ने बयान किया, उनसे सईद बिन अबी सईद मक़्बरी ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि अल्लाह

سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((إِنَّ اللهَ خَلَقَ الرَّحْمَةَ يَوْمَ خَلَقَهَا مِائَةَ رَحْمَةٍ، فَأَمْسَكَ عِنْدَهُ تِسْعًا وَتِسْعِينَ رَحْمَةً، وَأَرْسَلَ فِي خَلْقِهِ كُلِّهِمْ رَحْمَةً وَاحِدَةً، فَلَوْ يَعْلَمُ الْكَافِرُ بِكُلِّ الَّذِي عِنْدَ اللهِ مِنَ الرَّحْمَةِ لَمْ يَيْأَسْ مِنَ الْجَنَّةِ، وَلَوْ يَعْلَمُ الْمُؤْمِنُ بِكُلِّ الَّذِي عِنْدَ اللهِ مِنَ الْعَذَابِ لَمْ يَأْمَنْ مِنَ النَّارِ)). [راجع: ٦٠٠٠]

तआला ने रहमत को जिस दिन बनाया तो उसके सौ हिस्से किये और अपने पास उनमें से निन्यानवे रखे। उसके बाद तमाम मख़्लूक़ के लिये सिर्फ़ एक हिस्सा रहमत का भेजा। पस अगर काफ़िर को वो तमाम रहम मा'लूम हो जाए जो अल्लाह के पास है तो वो जन्नत से नाउम्मीद न हो और अगर मोमिन को वो तमाम अ़ज़ाब मा'लूम हो जाएँ जो अल्लाह के पास हैं तो वो दोज़ख़ से कभी बेख़ौफ़ न हो। (राजेअ़ : 6000)

तश्रीह : यही उम्मीद और डर है जिसके बीच ईमान है उम्मीद भी कामिल और डर भी पूरा पूरा। अल्लाहुम्मर्ज़ुक्ना (आमीन)। मोमिन कितने भी नेक आमाल करता हो लेकिन हर वक़्त उसको डर रहता है शायद मेरी नेकियाँ बारगाहे इलाही मे क़ुबूल न हुई हों और शायद ख़ात्मा बुरा हो जाए। अबू उ़ष्मान ने कहा गुनाह करते जाना और फिर नजात की उम्मीद रखना बदबख़्ती की निशानी है उ़लमा ने कहा है कि हालते सेहत में अपने दिल पर डर ग़ालिब रखे और मरते वक़्त उसके रहम व करम की उम्मीद ज़्यादा रखे।

٢٠- باب الصَّبْرِ عَنْ مَحَارِمِ اللهِ

﴿إِنَّمَا يُوَفَّى الصَّابِرُونَ أَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ﴾ [الزمر : ١٠] وَقَالَ عُمَرُ: وَجَدْنَا خَيْرَ عَيْشِنَا بِالصَّبْرِ.

बाब 20 : अल्लाह की हराम की हुई चीज़ों से बचना उनसे स़ब्र किये रहना

बिला शुब्हा स़ब्र करने वालों को उनका ष़वाब बेहिसाब दिया जाएगा (अज़्ज़ुमर : 10) और ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने कहा हमने सबसे उ़म्दा ज़िंदगी स़ब्र ही में पाई है।

स़ब्र के मा'नी नफ़्स को इत़ाअ़ते इलाही के लिये तैयार करना।

तश्रीह : स़ब्र कहते हैं बुरी बात से नफ़्स को रोकना और ज़ुबान से कोई शिकवा-शिकायत का कलिमा न निकालना। अल्लाह के रहम व करम का इंतिज़ार करना। ह़ज़रत ज़ुन्नून मिस्री ने कहा है स़ब्र क्या है बुरी बातों से दूर रहना, बला के वक़्त इत्मीनान रखना, कितनी ही मुह़ताजी आए मगर बेपरवाह रहना। इब्ने अ़ता ने कहा स़ब्र क्या है बला-ए-इलाही पर अदब के साथ सुकूत करना। या अल्लाह! मैंने भी 76 ईस्वी में बह़ालते सफ़र एक पेश आई मुसीबत उ़ज़्मा पर ऐसा ही स़ब्र किया है पस मुझको अज्र बेहिसाब अ़ता फ़र्माइयो, आमीन। (राज़)

٦٤٧٠- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ أَخْبَرَنِي عَطَاءُ بْنُ يَزِيدَ اللَّيْثِيُّ أَنَّ أَبَا سَعِيدٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ أُنَاسًا مِنَ الأَنْصَارِ سَأَلُوا رَسُولَ اللهِ ﷺ فَلَمْ يَسْأَلْهُ أَحَدٌ مِنْهُمْ، إِلاَّ أَعْطَاهُ حَتَّى نَفِدَ مَا عِنْدَهُ فَقَالَ لَهُمْ حِينَ نَفِدَ كُلُّ شَيْءٍ أَنْفَقَ بِيَدَيْهِ ((مَا يَكُنْ عِنْدِي مِنْ خَيْرٍ، لاَ

6470. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, कहा कि मुझे अ़ता बिन यज़ीद लैष़ी ने ख़बर दी और उन्हें अबू सईद (रज़ि.) ने ख़बर दी कि चंद अंस़ारी स़ह़ाबा ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से मांगा और जिसने भी आँह़ज़रत (ﷺ) से मांगा आँह़ज़रत (ﷺ) ने उसे दिया, यहाँ तक कि जो माल आपके पास था वो ख़त्म हो गया। जब सब कुछ ख़त्म हो गया जो आँह़ज़रत (ﷺ) ने अपने दोनों हाथों से दिया था तो आपने फ़र्माया कि जो भी

أَدَّخِرَهُ عَنْكُمْ وَإِنَّهُ مَنْ يَسْتَعِفَّ يُعِفَّهُ اللهُ، وَمَنْ يَتَصَبَّرْ يُصَبِّرْهُ اللهُ، وَمَنْ يَسْتَغْنِ يُغْنِهِ اللهُ، وَلَنْ تُعْطَوْا عَطَاءً خَيْرًا وَأَوْسَعَ مِنَ الصَّبْرِ)). [راجع: ١٤٦٩]

अच्छी चीज़ मेरे पास होगी मैं उसे तुमसे बचाकर रखता हूँ। बात ये है जो तुम में (सवाल से) बचता रहेगा अल्लाह भी उसे ग़ैब से देगा और जो शख़्स दिल पर ज़ोर डालकर सब्र करेगा अल्लाह भी उसे सब्र देगा और जो बेपरवाह रहना इख़्तियार करेगा अल्लाह भी उसे बेपरवाह कर देगा और अल्लाह की कोई नेअ़मत सब्र से बढ़कर तुमको नहीं मिली। (राजेअ़ : 1469)

सब्र तल्ख़ अस्त व लेकिन बर शीरीं दारद..... सब्र अजीब है साबिर आदमी की तरफ़ आख़िर में सबके दिल माइल हो जाते हैं सब उसकी हमदर्दी करने लगते हैं सच है। वल्लाहु मअ़स्साबिरीन।

٦٤٧١- حَدَّثَنَا خَلاَّدُ بْنُ يَحْيَى، حَدَّثَنَا مِسْعَرٌ، حَدَّثَنَا زِيَادُ بْنُ عِلاَقَةَ قَالَ: سَمِعْتُ الْمُغِيرَةَ بْنَ شُعْبَةَ يَقُولُ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُصَلِّي حَتَّى تَرِمَ أَوْ تَنْتَفِخَ قَدَمَاهُ فَيُقَالُ لَهُ: فَيَقُولُ: ((أَفَلاَ أَكُونُ عَبْدًا شَكُورًا؟)). [راجع: ١١٣٠]

6471. हमसे ख़ल्लाद बिन यह्या ने बयान किया, कहा हमसे मिस्अ़र बिन कुदाम ने बयान किया, कहा हमसे ज़ियाद बिन इलाक़ा ने बयान किया, कहा कि मैंने मुग़ीरह बिन शुअ़बा (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) इतनी नमाज़ पढ़ते कि आपके क़दमों में वरम आ जाता या कहा कि आपके क़दम फूल जाते। आँहज़रत (ﷺ) से अ़र्ज़ किया जाता कि आप तो बख़्शे हुए हैं। आँहज़रत (ﷺ) फ़र्माते हैं कि क्या मैं अल्लाह का शुक्रगुज़ार बन्दा न बनूँ। (राजेअ़ : 1130)

٢١- باب ﴿وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللهِ فَهُوَ حَسْبُهُ﴾ [الطلاق : ٣]

बाब 21 : जो अल्लाह पर भरोसा करेगा अल्लाह भी उसके लिये काफ़ी होगा

قَالَ الرَّبِيعُ بْنُ خُثَيْمٍ، مِنْ كُلِّ مَا ضَاقَ عَلَى النَّاسِ.

रबीअ़ बिन ख़ुष़ैम ताबेई ने बयान किया कि मुराद है कि तमाम इंसानी मुश्किलात में अल्लाह पर भरोसा इख़्तियार करे।

٦٤٧٢- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ، حَدَّثَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، قَالَ سَمِعْتُ حُصَيْنَ بْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ قَالَ: كُنْتُ قَاعِدًا عِنْدَ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ فَقَالَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ: أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((يَدْخُلُ الْجَنَّةَ مِنْ أُمَّتِي سَبْعُونَ أَلْفًا بِغَيْرِ حِسَابٍ، هُمُ الَّذِينَ لاَ يَسْتَرْقُونَ لاَ يَتَطَيَّرُونَ وَعَلَى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ)). [راجع: ٣٤١٠]

6472. मुझसे इस्हाक़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे रौह बिन ड़बादह ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने हुसैन बिन अ़ब्दुल्लाह से सुना, उन्होंने कहा कि मैं सईद बिन जुबैर की ख़िदमत में बैठा हुआ था, उन्होंने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया मेरी उम्मत के सत्तर हज़ार लोग बग़ैर हिसाब के जन्नत में जाएँगे। ये वो लोग होंगे जो झाड़-फूँक नहीं कराते, न शगून लेते हैं और अपने रब ही पर भरोसा रखते हैं। (राजेअ़ : 3410)

तश्रीह : भरोसा का ये मत़लब नहीं है कि अस्बाब का ह़ासिल करना भी ज़रूरी है लेकिन अ़क़ीदा ये होना चाहिये कि जो भी होगा अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से होगा।

बाब 22 : बेफ़ायदा बातचीत करना मना है

٢٢- باب مَا يُكْرَهُ مِنْ قِيلَ وَقَالَ

6473. हमसे अ़ली बिन मुस्लिम ने बयान किया, कहा हमसे हुशैम ने बयान किया, कहा हमको एक से ज़्यादा कई आदमियों ने ख़बर दी जिनमें मुग़ीरह बिन मिक़्सम और फ़लाँ ने (मुजालिद बिन सईद, उनकी रिवायत को इब्ने ख़ुज़ैमा ने निकाला) और एक तीसरे स़ाहब दाऊद बिन अबी हिन्द भी हैं, उन्हें शअ़बी ने, उन्हें मुग़ीरह बिन शुअ़बा (रज़ि.) के कातिब वारिद ने कि मुआ़विया (रज़ि.) ने मुग़ीरह (रज़ि.) को लिखा कि कोई ह़दीष़ जो आपने नबी करीम (ﷺ) से सुनी हो वो मुझे लिखकर भेजो। रावी ने बयान किया कि फिर मुग़ीरह (रज़ि.) ने उन्हें लिखा कि मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) से सुना है, आप नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद ये दुआ़ पढ़ते कि, अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं जो तन्हा है उसका कोई शरीक नहीं, मुल्क उसी का है और तमाम ता'रीफ़ें उसी के लिये हैं और वो हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है, ये तीन बार पढ़ते। बयान किया कि आँह़ज़रत (ﷺ) बेफ़ायदा बातचीत करने, ज़्यादा सवाल करने, माल ज़ाया करने, अपनी चीज़ बचाकर रखने से और दूसरों की मांगते रहने, माँओं की नाफ़रमानी करने और लड़कियों को ज़िंदा दफ़न करने से मना करते थे। और हुशैम से रिवायत है, उन्हें अ़ब्दुल मलिक इब्ने उ़मैर ने ख़बर दी, कहा कि मैंने वर्राद से सुना, वो ये ह़दीष़ मुग़ीरह (रज़ि.) से बयान करते थे और वो नबी करीम (ﷺ) से। (राजेअ़ : 844)

٦٤٧٣- حدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْلِمٍ، حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، أَخْبَرَنَا غَيْرُ وَاحِدٍ مِنْهُمْ مُغِيرَةُ وَفُلاَنٌ وَرَجُلٌ ثَالِثٌ أَيْضًا، عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنْ وَرَّادٍ كَاتِبِ الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ، أَنْ مُعَاوِيَةَ كَتَبَ إِلَى الْمُغِيرَةِ أَنِ اكْتُبْ إِلَيَّ بِحَدِيثٍ سَمِعْتَهُ مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ قَالَ: فَكَتَبَ إِلَيْهِ الْمُغِيرَةُ إِنِّي سَمِعْتُهُ يَقُولُ عِنْدَ انْصِرَافِهِ مِنَ الصَّلاَةِ : ((لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ)) ثَلاَثَ مَرَّاتٍ قَالَ : وَكَانَ يَنْهَى عَنْ قِيلَ، وَقَالَ، وَكَثْرَةِ السُّؤَالِ وَإِضَاعَةِ الْمَالِ، وَمَنْعٍ وَهَاتِ وَعُقُوقِ الأُمَّهَاتِ وَوَأْدِ الْبَنَاتِ. وَعَنْ هُشَيْمٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ عُمَيْرٍ قَالَ : سَمِعْتُ وَرَّادًا يُحَدِّثُ هَذَا الْحَدِيثَ عَنِ الْمُغِيرَةِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

[راجع: ٨٤٤]

बाब 32 : ज़ुबान की (ग़लत़ बातों से) ह़िफ़ाज़त करना

٣٢- باب حِفْظِ اللِّسَانِ

और आँह़ज़रत (ﷺ) का ये फ़र्मान कि जो कोई अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि वो अच्छी बात कहे या फिर चुप रहे। और अल्लाह तआ़ला का ये फ़र्मान कि, इंसान जो बात भी ज़ुबान से निकालता है तो उसके (लिखने के लिये) एक चौकीदार फ़रिश्ता तैयार रहता है। (सूरह क़ाफ़ : 18)

وَقَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ فَلْيَقُلْ: خَيْرًا أَوْ لِيَصْمُتْ))، وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ إِلاَّ لَدَيْهِ رَقِيبٌ عَتِيدٌ﴾ [ق : ١٨].

6474. हमसे मुहम्मद बिन अबूबक्र मुक़द्दमी ने बयान किया, कहा हमसे उ़मर बिन अ़ली ने बयान किया, उन्होंने अबू ह़ाज़िम से सुना, उन्होंने सहल बिन सअ़द (रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया मेरे लिये जो शख़्स दोनों जबड़ों के बीच की

٦٤٧٤- حدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ الْمُقَدَّمِيُّ، حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ عَلِيٍّ سَمِعَ أَبَا حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ عَنْ رَسُولِ اللهِ

ﷺ قَالَ: ((مَنْ يَضْمَنْ لِي مَا بَيْنَ لَحْيَيْهِ، وَمَا بَيْنَ رِجْلَيْهِ أَضْمَنْ لَهُ الْجَنَّةَ)).

[طرفه في : ٦٨٠٧].

चीज़ (ज़ुबान) और दोनों पैरों के बीच की चीज़ (शर्मगाह) की ज़िम्मेदारी दे दे मैं उसके लिये जन्नत की ज़िम्मेदारी दे दूँगा। (दीगर मक़ाम : 6807)

٦٤٧٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ فَلْيَقُلْ خَيْرًا، أَوْ لِيَصْمُتْ، وَمَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ فَلاَ يُؤْذِ جَارَهُ، وَمَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ فَلْيُكْرِمْ ضَيْفَهُ)).

[راجع: ٥١٨٥]

6475. मुझसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे अबू सलमा ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जो कोई अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहे कि अच्छी बात कहे वरना ख़ामोश रहे और जो कोई अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है वो अपने पड़ौसी को तकलीफ़ न पहुँचाए और जो कोई अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो वो अपने मेहमान की इज़्ज़त करे। (राजेअ़ : 5185)

तश्रीह : क़स्तलानी (रह़.) ने कहा अल्लाह की रज़ामंदी की बात ये है कि किसी मुसलमान की भलाई की बात कहे जिससे उसको फ़ायदा पहुँचे और नाराज़ी की बात ये है कि मष़लन ज़ालिम बादशाह या ह़ाकिम से मुसलमान भाई की बुराई करे इस निय्यत से कि उसको ज़रर पहुँचे। इब्ने अ़ब्दुल बर्र से ऐसा ही मन्क़ूल है। इब्ने अ़ब्दुस्सलाम ने कहा नाराज़ी की बात से वो बात मुराद है जिसका ह़ुस्न और क़बह़ मा'लूम न हो ऐसी बात मुँह से निकालना ह़राम है। तमाम ह़िक्मत और अख़्लाक़ का ख़ुलास़ा और अस़लुल उसूल ये है कि आदमी सोचकर बात कहे बिन सोचे जो मुँह में आए कह देना नादानों का काम है बहुत लोग ऐसे हैं कि बात जानकर भी उस पर अ़मल नहीं करते और टर्र टर्र बेफ़ायदा बातें किये जाते हैं ऐसा इल्म बग़ैर अ़मल के क्या फ़ायदा देगा।

٦٤٧٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، حَدَّثَنَا سَعِيدٌ الْمَقْبُرِيُّ، عَنْ أَبِي شُرَيْحٍ الْخُزَاعِيِّ قَالَ: سَمِعَ أُذُنَايَ وَوَعَاهُ قَلْبِي النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((الضِّيَافَةُ ثَلاَثَةُ أَيَّامٍ، جَائِزَتُهُ)) قِيلَ، مَا جَائِزَتُهُ؟ قَالَ: ((يَوْمٌ وَلَيْلَةٌ)) ((وَمَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ فَلْيُكْرِمْ ضَيْفَهُ، وَمَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ فَلْيَقُلْ خَيْرًا، أَوْ لِيَسْكُتْ)). [راجع: ٦٠١٩]

6476. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सईद मक़्बरी ने बयान किया, उनसे अबू शुरैह़ ख़ुज़ाई ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मेरे दोनों कानों ने सुना है और मेरे दिल ने याद रखा है कि नबी करीम (ﷺ) ने ये फ़र्माया था मेहमानी तीन दिन की होती है मगर जो लाज़मी है वो तो पूरी करो। पूछा गया लाज़मी कितनी है? फ़र्माया कि एक दिन और एक रात और जो कोई अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि अपने मेहमान की ख़ातिर करे और जो शख़्स़ अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि अच्छी बात कहे वरना चुप रहे। (राजेअ़ : 6019)

6477. मुझसे इब्राहीम बिन ह़म्ज़ा ने बयान किया, कहा मुझसे इब्ने अबी ह़ाज़िम ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अ़ब्दुल्लाह ने। उनसे मुह़म्मद बिन इब्राहीम ने, उनसे ईसा बिन त़लहा तैमी ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने, उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, बन्दा एक बात ज़ुबान से निकालता है और उसके बारे में सोचता नहीं (कि कितनी कुफ्र और बेअदबी की बात है) जिसकी वजह से वो दोज़ख़ के गड्ढे में इतनी दूर गिर पड़ता है जितना कि पश्चिम से पूरब दूर है। (दीगर मक़ाम : 6807)

٦٤٧٧- حدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ حَمْزَةَ، حَدَّثَنِي ابْنُ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ يَزِيدَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عِيسَى بْنِ طَلْحَةَ بْنِ عُبَيْدِ اللهِ التَّيْمِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ سَمِعَ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((إِنَّ الْعَبْدَ لَيَتَكَلَّمُ بِالْكَلِمَةِ، مَا يَتَبَيَّنُ فِيهَا يَزِلُّ بِهَا فِي النَّارِ أَبْعَدَ مَا بَيْنَ الْمَشْرِقِ)).

[طرفه في : ٦٨٠٧].

6478. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुनीर ने बयान किया, उन्होंने अबुन् नज़र से सुना, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ब्दुल्लाह या'नी इब्ने दीनार ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे अबू स़ालेह़ ने, उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया बन्दा अल्लाह की रज़ामंदी के लिये एक बात ज़ुबान से निकालता है उसे वो कोई अहमियत भी नहीं देता मगर उसी की वजह से अल्लाह उसके दर्जे बुलंद कर देता है और एक दूसरा बन्दा एक ऐसा कलिमा ज़ुबान से निकालता है जो अल्लाह की नाराज़गी का बाइ़ष होता है उसे वो कोई अहमियत नहीं देता लेकिन उसकी वजह से जहन्नम में चला जाता है। (राजेअ़ : 6477)

٦٤٧٨- حدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُنِيرٍ سَمِعَ أَبَا النَّضْرِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَبْدِ اللهِ. يَعْنِي ابْنَ دِينَارٍ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ الْعَبْدَ لَيَتَكَلَّمُ بِالْكَلِمَةِ مِنْ رِضْوَانِ اللهِ، لاَ يُلْقِي لَهَا بَالاً يَرْفَعُ اللهُ بِهَا دَرَجَاتٍ، وَإِنَّ الْعَبْدَ لَيَتَكَلَّمُ بِالْكَلِمَةِ مِنْ سَخَطِ اللهِ، لاَ يُلْقِي لَهَا بَالاً يَهْوِي بِهَا فِي جَهَنَّمَ)). [راجع: ٦٤٧٧]

बाब 24 : अल्लाह के डर से रोने की फ़ज़ीलत का बयान

٢٤- باب الْبُكَاءِ مِنْ خَشْيَةِ اللهِ

6479. हमसे मुह़म्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे यह़्या क़त्त़ान ने बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे ख़ुबैब बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने बयान किया, उनसे ह़फ़्स़ बिन आ़स़िम ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया सात त़रह़ के लोग वो हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला अपने साये में पनाह देगा। (उनमें) एक वो शख़्स़ भी है जिसने तन्हाई में अल्लाह को याद किया तो उसकी आँखों से आंसू जारी हो गये। (राजेअ़ : 660)

٦٤٧٩- حدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ، قَالَ حَدَّثَنِي خُبَيْبُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ حَفْصِ بْنِ عَاصِمٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((سَبْعَةٌ يُظِلُّهُمُ اللهُ رَجُلٌ ذَكَرَ اللهَ فَفَاضَتْ عَيْنَاهُ)).

[راجع: ٦٦٠]

उसका रोना अल्लाह को पसंद आ गया इसी से उसकी नजात हो सकती है और वो अ़र्शे इलाही के साये का ह़क़दार बन सकता है।

बाब 25 : अल्लाह से डरने की फ़ज़ीलत का बयान

٢٥- باب الْخَوْفِ مِنَ اللهِ

6480. हमसे उ़ष्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन अ़ब्दुल ह़मीद ने, उनसे मंसूर बिन मुअ़तमिर ने, उनसे रिब्ई बिन ह़राश ने और उनसे हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, पिछली उम्मतों में का एक शख़्स जिसे अपने बुरे अ़मलों का डर था। उसने अपने घरवालों से कहा कि जब मैं मर जाऊँ तो मेरी लाश रेज़ा रेज़ा करके गर्म दिन में उठा के दरिया में डाल देना। उसके घर वालों ने उसके साथ ऐसा ही किया फिर अल्लाह तआ़ला ने उसे जमा किया और उससे पूछा कि ये जो तुमने किया इसकी वजह क्या है? उस शख़्स ने कहा कि परवरदिगार मुझे इस पर सिर्फ़ तेरे डर ने आमादा किया। चुनाँचे अल्लाह तआ़ला ने उसकी मग़्फ़िरत फ़र्मा दी। (राजेअ़ : 3452)

٦٤٨٠- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ رِبْعِيٍّ عَنْ حُذَيْفَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((كَانَ رَجُلٌ مِمَّنْ كَانَ قَبْلَكُمْ يُسِيءُ الظَّنَّ بِعَمَلِهِ، فَقَالَ لأَهْلِهِ: إِذَا أَنَا مُتُّ فَخُذُونِي فَذَرُّونِي فِي الْبَحْرِ فِي يَوْمٍ صَائِفٍ، فَفَعَلُوا بِهِ فَجَمَعَهُ اللهُ ثُمَّ قَالَ: مَا حَمَلَكَ عَلَى الَّذِي صَنَعْتَ؟ قَالَ: مَا حَمَلَنِي إِلاَّ مَخَافَتُكَ فَغَفَرَ لَهُ)). [راجع: ٣٤٥٢]

6481. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे मुअ़तमिर ने बयान किया, कहा मैंने अपने वालिद से सुना, उनसे क़तादा ने बयान किया, उनसे उ़क़्बा बिन अ़ब्दुल ग़ाफ़िर ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने पिछली उम्मतों के एक शख़्स का ज़िक्र फ़र्माया कि अल्लाह तआ़ला ने उसे माल व औलाद अ़ता की थी। फ़र्माया कि जब उसकी मौत का वक़्त क़रीब आया तो उसने अपने लड़कों से पूछा, बाप की हैष़ियत से मैंने कैसा अपने आपको ष़ाबित किया? लड़कों ने कहा कि बेहतरीन बाप। फिर उस शख़्स ने कहा कि उसने अल्लाह के पास कोई नेकी जमा नहीं की है। क़तादा ने (लम यतबर्रु) की तफ़्सीर (लम यद्दख़िर) (नहीं जमा की) से की है। और उसने ये भी कहा कि गर उसे अल्लाह के हुज़ूर में पेश किया गया तो अल्लाह तआ़ला उसे अ़ज़ाब देगा (उसने अपने लड़कों से कहा कि) देखो, जब मैं मर जाऊँ तो मेरी लाश को जला देना और जब मैं कोयला हो जाऊँ तो मुझे पीस देना और किसी तेज़ हवा के दिन मुझे उसमें उड़ा देना। उसने अपने लड़कों से इस पर वा'दा लिया। चुनाँचे लड़कों ने उसके साथ ऐसा ही किया। फिर अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया कि हो जा। चुनाँचे वो एक मर्द की शक्ल में खड़ा नज़र आया। फिर फ़र्माया मेरे बन्दे! ये जो तूने किया कराया है इस पर तुझे किस चीज़ ने आमादा किया था? उसने कहा कि तेरे

٦٤٨١- حَدَّثَنَا مُوسَى، حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ، سَمِعْتُ أَبِي، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَبْدِ الْغَافِرِ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ((ذَكَرَ رَجُلاً فِيمَنْ كَانَ سَلَفَ أَوْ قَبْلَكُمْ آتَاهُ اللهُ مَالاً وَوَلَدًا يَعْنِي أَعْطَاهُ، قَالَ : فَلَمَّا حُضِرَ قَالَ لِبَنِيهِ : أَيَّ أَبٍ كُنْتُ قَالُوا خَيْرَ أَبٍ قَالَ: فَإِنَّهُ لَمْ يَبْتَئِرْ عِنْدَ اللهِ خَيْرًا)) فَسَّرَهَا قَتَادَةُ لَمْ يَدَّخِرْ ((وَإِنْ يَقْدَمْ عَلَى اللهِ يُعَذِّبْهُ فَانْظُرُوا فَإِذَا مُتُّ فَأَحْرِقُونِي حَتَّى إِذَا صِرْتُ فَحْمًا فَاسْحَقُونِي أَوْ قَالَ: فَاسْهَكُونِي، ثُمَّ إِذَا كَانَ رِيحٌ عَاصِفٌ فَأَذْرُونِي فِيهَا، فَأَخَذَ مَوَاثِيقَهُمْ عَلَى ذَلِكَ وَرَبِّي فَفَعَلُوا فَقَالَ اللهُ : كُنْ، فَإِذَا رَجُلٌ قَائِمٌ، ثُمَّ قَالَ : أَيْ عَبْدِي مَا حَمَلَكَ عَلَى مَا فَعَلْتَ؟ قَالَ : مَخَافَتُكَ أَوْ فَرَقٌ مِنْكَ،

فَمَا تَلاَ فَاهُ أَنْ رَحِمَهُ اللهُ)) فَحَدَّثْتُ أَبَا عُثْمَانَ فَقَالَ: سَمِعْتُ سَلْمَانَ غَيْرَ أَنَّهُ زَادَ فَأَذْرُونِي فِي الْبَحْرِ أَوْ كَمَا حَدَّثَ. وَقَالَ مُعَاذٌ : حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، سَمِعْتُ عُقْبَةَ : سَمِعْتُ أَبَا سَعِيدٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

[راجع: ٣٤٧٨]

डर ने। अल्लाह तआला ने उसका बदला ये दिया कि उस पर रहम फ़र्माया। मैंने ये ह़दीष़ उ़ष़मान से बयान की तो उन्होंने बयान किया कि मैंने सलमान से सुना। अल्बत्ता उन्होंने ये लफ़्ज़ बयान किया कि, मुझे दरिया में बहा देना, या जैसा कि उन्होंने बयान किया और मुआज़ ने बयान किया कि हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, उन्होंने उ़क़्बा से सुना, उन्होंने अबू सईद (रज़ि.) से सुना और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से। (राजेअ: 3478)

٢٦- باب الإِنْتِهَاءِ عَنِ الْمَعَاصِي

बाब 26 : गुनाहों से बाज़ रहने का बयान

٦٤٨٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ بُرَيْدِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَثَلِي وَمَثَلُ مَا بَعَثَنِي اللهُ كَمَثَلِ رَجُلٍ أَتَى قَوْمًا فَقَالَ: رَأَيْتُ الْجَيْشَ بِعَيْنَيَّ وَإِنِّي أَنَا النَّذِيرُ الْعُرْيَانُ، فَالنَّجَاءَ فَأَطَاعَتْهُ طَائِفَةٌ فَأَدْلَجُوا عَلَى مَهْلِهِمْ فَنَجَوْا، وَكَذَّبَتْهُ طَائِفَةٌ فَصَبَّحَهُمُ الْجَيْشُ فَاجْتَاحَهُمْ)).

[طرفه في : ٧٢٨٤].

6482. हमसे मुह़म्मद बिन अ़लाअ ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे बुरैद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबी बुर्दा ने उनसे अबू बुर्दा ने, और उनसे अबू मूसा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, मेरी ओर जो कुछ कलाम अल्लाह ने मेरे साथ भेजा है उसकी मिष़ाल एक ऐसे शख़्स जैसी है जो अपनी क़ौम के पास आया और कहा कि मैंने (तुम्हारे दुश्मन का) लश्कर अपनी आँखों से देखा है और मैं खुला डराने वाला हूँ। पस भागो, भागो (अपनी जान बचाओ) इस पर एक जमाअ़त ने उसकी बात मान ली और रात ही रात इत्मीनान से किसी मह़फ़ूज़ जगह पर निकल गये और नजात पाई। लेकिन दूसरी जमाअ़त ने उसे झुठलाया और दुश्मन के लश्कर ने सुबह़ के वक़्त अचानक उन्हें आ लिया और तबाह कर दिया। (दीगर मक़ाम : 8284)

तश्रीह : ये अ़रब में एक मष़ल (कहावत) हो गई है हुआ ये था कि किसी ज़माने में दुश्मन की फ़ौजें एक मुल्क पर चढ़ गईं थीं। उन मुल्क वालों मे से एक शख़्स उन फ़ौजों को मिला उन्होंने उसको पकड़ा और उसके कपड़े उतार लिये। वो इसी ह़ाल में नंग धड़ंग भाग निकला और अपने मुल्क वालों को जाकर ख़बर दी कि जल्दी अपना बन्दोबस्त कर लो दुश्मन आन पहुँचा, उसके मुल्क वालों ने इसकी तस्दीक़ की चूँकि वो बरहना और नंगा भागता आ रहा था और उसकी आ़दत नंगे फिरने की न थी। बाब की मुत़ाबक़त इस त़रह़ से है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनको गुनाहों से और अल्लाह की नाफ़र्मानी से डराया और ख़बर दी कि अल्लाह का अ़ज़ाब गुनाहगारों के लिये तैयार है तो गुनाहों से तौबा करके अपना बचाओ कर लो फिर जिसने आपकी बात मानी इस्लाम क़ुबूल किया शिर्क और कुफ़्र और गुनाह से तौबा की वो तो बच गया और जिसने न मानी वो सुबह़ होते ही या'नी मरते ही तबाह हो गया अ़ज़ाबे इलाही में गिरफ़्तार हुआ।

٦٤٨٣- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ

6483. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, कहा हमसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रह़मान ने बयान किया, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.)

से सुना और उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कि मेरी और लोगों की मिषाल एक ऐसे शख़्स की है जिसने आग जलाई, जब उसके चारों तरफ़ रोशनी हो गई तो परवाने और ये कीड़े-मकोड़े जो आग पर गिरते हैं उसमें गिरने लगे और आग जलाने वाला उन्हें उसमें से निकालने लगा लेकिन वो उसके क़ाबू में नहीं आए और आग में गिरते ही रहे। इसी तरह मैं तुम्हारी कमर को पकड़ पकड़कर आग से तुम्हें निकालता हूँ और तुम हो कि उसी में गिरते जाते हो।

6484. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे ज़करिया ने बयान किया, उनसे आमिर ने बयान किया, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से सुना, कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मुसलमान वो है जो मुसलमानों को अपनी ज़ुबान और हाथ से (तकलीफ़ पहुँचने) से महफ़ूज़ रखे और मुहाजिर वो है जो उन चीज़ों से रुक जाए जिससे अल्लाह ने मना किया है। (राजेअ : 10)

बाब 27 : नबी करीम (ﷺ) का इर्शाद,

अगर तुम्हें मा'लूम हो जाता जो मुझे मा'लूम है तो तुम हंसते कम और रोते ज़्यादा।

6485. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अक़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे सईद बिन मुसय्यब ने बयान किया कि हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर तुम्हें वो मा'लूम होता जो मैं जानता हूँ तो तुम हंसते कम और रोते ज़्यादा। (दीगर मक़ाम : 6637)

6486. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे मूसा बिन अनस ने बयान किया और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अगर तुम्हें वो मा'लूम होता जो मैं जानता हूँ तो तुम हंसते कम और रोते ज़्यादा। (राजेअ

أَنَّهُ حَدَّثَهُ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((إِنَّمَا مَثَلِي وَمَثَلُ النَّاسِ كَمَثَلِ رَجُلٍ اسْتَوْقَدَ نَارًا، فَلَمَّا أَضَاءَتْ مَا حَوْلَهُ جَعَلَ الْفَرَاشُ وَهَذِهِ الدَّوَابُّ الَّتِي تَقَعُ فِي النَّارِ يَقَعْنَ فِيهَا، فَجَعَلَ يَنْزِعُهُنَّ وَيَغْلِبْنَهُ فَيَقْتَحِمْنَ فِيهَا فَأَنَا آخِذٌ بِحُجَزِكُمْ عَنِ النَّارِ وَ أَنْتُمْ تَقْتَحِمُونَ فِيهَا)).

٦٤٨٤- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا زَكَرِيَّا، عَنْ عَامِرٍ سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ عَمْرٍو يَقُولُ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((الْمُسْلِمُ مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُونَ مِنْ لِسَانِهِ وَيَدِهِ، وَالْمُهَاجِرُ مَنْ هَجَرَ مَا نَهَى اللهُ عَنْهُ)).[راجع: ١٠]

٢٧- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((لَوْ تَعْلَمُونَ مَا أَعْلَمُ لَضَحِكْتُمْ قَلِيلاً وَلَبَكَيْتُمْ كَثِيرًا)).

٦٤٨٥- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ كَانَ يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لَوْ تَعْلَمُونَ مَا أَعْلَمُ لَضَحِكْتُمْ قَلِيلاً وَلَبَكَيْتُمْ كَثِيرًا)). [طرفه في : ٦٦٣٧].

٦٤٨٦- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ مُوسَى بْنِ أَنَسٍ، عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَوْ تَعْلَمُونَ مَا أَعْلَمُ لَضَحِكْتُمْ قَلِيلاً

:93)

وَلَبَكَيْتُمْ كَثِيرًا)). [راجع: ٩٣]

बाब 28 : दोज़ख़ को ख़्वाहिशाते नफ़्सानी से ढंक दिया गया है

٢٨- باب حُجِبَتِ النَّارُ بِالشَّهَوَاتِ

तशरीह : जो शख़्स नफ़्सानी ख़्वाहिशों में पड़ गया उसने गोया दोज़ख़ का हिजाब उठा दिया। अब दोज़ख़ में पड़ जाएगा। क़ुर्आन शरीफ़ में भी यही मज़्मून है **फअम्मा मन तग़ा व आष़रल्हयातदुन्या** (अन् नाज़िआत : 27)

6487. हमसे इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अअरज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया दोज़ख़ ख़्वाहिशाते नफ़्सानी से ढंक दी गई है और जन्नत मुश्किलात और दुश्वारियों से ढंकी हुई है।

٦٤٨٧- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((حُجِبَتِ النَّارُ بِالشَّهَوَاتِ، وَحُجِبَتِ الْجَنَّةُ بِالْمَكَارِهِ)).

बाब 29 : जन्नत तुम्हारे जूते के तस्मे से भी ज़्यादा तुमसे क़रीब है और इसी तरह दोज़ख़ भी है

٢٩- باب الْجَنَّةُ أَقْرَبُ إِلَى أَحَدِكُمْ مِنْ شِرَاكِ نَعْلِهِ، وَالنَّارُ مِثْلُ ذَلِكَ

तशरीह : मतलब ये है कि आदमी ष़वाब की बात को गो वो अदना दर्जा की हो हक़ीर न समझे। शायद वही अल्लाह को पसंद आ जाए और उसको नजात मिल जाए। इसी तरह बुरी और गुनाह की बात को छोटी और हक़ीर न समझे शायद अल्लाह तआला को नापसंद आ जाए और दोज़ख़ में उसका ठिकाना बनाए।

6488. हमसे मूसा बिन मसऊद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उन्होंने हमसे मंसूर व आ'मश ने बयान किया, उनसे अबू वाइल ने बयान किया और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जन्नत तुम्हारे जूते के तस्मे से भी ज़्यादा तुमसे क़रीब है और इसी तरह दोज़ख़ भी।

٦٤٨٨- حَدَّثَنِي مُوسَى بْنُ مَسْعُودٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مَنْصُورٍ، وَالأَعْمَشِ عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((الْجَنَّةُ أَقْرَبُ إِلَى أَحَدِكُمْ مِنْ شِرَاكِ نَعْلِهِ وَالنَّارُ مِثْلُ ذَلِكَ)).

6489. मुझसे मुहम्मद बिन मुष़न्ना ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ग़ुन्दर ने बयान किया, उनसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अब्दुल मलिक बिन उमैर ने बयान किया, उनसे अबू सलमा ने बयान किया और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया सबसे सच्चा शे'र जिसे शायर ने कहा है ये है, हाँ! अल्लाह के सिवा तमाम चीज़ें बेबुनियाद हैं। (राजेअ : 3841)

٦٤٨٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((أَصْدَقُ بَيْتٍ قَالَهُ الشَّاعِرُ: أَلاَ كُلُّ شَيْءٍ مَا خَلاَ اللهَ بَاطِلٌ)) [راجع: ٣٨٤١]

तशरीह : इससे अगला मिस्रा ये है, **व कुल्लु नईमल् ला महालत ज़ाइल** तर्जुमा मंज़ूम मौलाना वहीदुज़्ज़माँ (रह.) ने यूँ किया है,

फ़ानी है जो कुछ है ग़ैरुल्लाह   कोई मज़ा रहना नहीं हर्गिज़ सदा

बाब 30 : उसे देखना चाहिये जो नीचे दर्जे का है, उसे नहीं देखना चाहिये जिसका मर्तबा उससे ऊँचा है

٣٠- باب لِيَنْظُرْ إِلَى مَنْ هُوَ أَسْفَلَ مِنْهُ، وَلاَ يَنْظُرْ إِلَى مَنْ هُوَ فَوْقَهُ

6490. हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अअ़रज ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जब तुममें से कोई शख़्स किसी ऐसे आदमी को देखे जो माल और शक्ल व सूरत में उससे बढ़कर है तो उस वक़्त उसे ऐसे शख़्स का ध्यान करना चाहिये जो उससे कम दर्जे का है।

٦٤٩٠- حدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِذَا نَظَرَ أَحَدُكُمْ إِلَى مَنْ فُضِّلَ عَلَيْهِ فِي الْمَالِ وَالْخَلْقِ، فَلْيَنْظُرْ إِلَى مَنْ هُوَ أَسْفَلَ مِنْهُ مِمَّنْ فُضِّلَ عَلَيْهِ)).

बाब 31 : जिसने किसी नेकी या बदी का इरादा किया उसका नतीजा क्या है?

٣١- باب مَنْ هَمَّ بِحَسَنَةٍ أَوْ بِسَيِّئَةٍ

6491. हमसे अबू मअ़मर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल वारिष़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे जअ़दि अबू उ़ष्मान ने बयान किया, उनसे अबू रजाअ अ़तारदी ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक ह़दीष़े क़ुदसी में फ़र्माया, अल्लाह तआ़ला ने नेकियाँ और बुराइयाँ मुक़द्दर कर दी हैं और फिर उन्हें स़ाफ़-स़ाफ़ बयान कर दिया है। पस जिसने किसी नेकी का इरादा किया लेकिन उस पर अ़मल न कर सका तो अल्लाह तआ़ला ने उसके लिये एक मुकम्मल नेकी का बदला लिखा है और अगर उसने इरादे के बाद उस पर अ़मल भी कर लिया तो अल्लाह तआ़ला ने उसके लिये अपने यहाँ दस गुने से सात सौ गुना तक नेकियाँ लिखी हैं और उससे बढ़ाकर और जिसने किसी बुराई का इरादा किया और फिर उस पर अ़मल नहीं किया तो अल्लाह तआ़ला ने उसके लिये अपने यहाँ एक नेकी लिखी है और अगर उसने इरादा के बाद उस अ़मल भी कर लिया तो अपने यहाँ उसके लिये एक बुराई लिखी है।

٦٤٩١- حدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، حَدَّثَنَا جَعْدٌ أَبُو عُثْمَانَ، حَدَّثَنَا أَبُو رَجَاءٍ الْعُطَارِدِيُّ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ فِيمَا يَرْوِي عَنْ رَبِّهِ عَزَّ وَجَلَّ قَالَ: قَالَ: ((إِنَّ اللهَ كَتَبَ الْحَسَنَاتِ وَالسَّيِّئَاتِ، ثُمَّ بَيَّنَ ذَلِكَ فَمَنْ هَمَّ بِحَسَنَةٍ فَلَمْ يَعْمَلْهَا كَتَبَهَا اللهُ لَهُ عِنْدَهُ اللهُ حَسَنَةً كَامِلَةً، فَإِنْ هُوَ هَمَّ بِهَا فَعَمِلَهَا كَتَبَهَا اللهُ لَهُ عِنْدَهُ عَشْرَ حَسَنَاتٍ إِلَى سَبْعِمِائَةِ ضِعْفٍ إِلَى أَضْعَافٍ كَثِيرَةٍ، وَمَنْ هَمَّ بِسَيِّئَةٍ فَلَمْ يَعْمَلْهَا كَتَبَهَا اللهُ لَهُ عِنْدَهُ حَسَنَةً كَامِلَةً، فَإِنْ هُوَ هَمَّ بِهَا فَعَمِلَهَا كَتَبَهَا اللهُ لَهُ سَيِّئَةً وَاحِدَةً)).

बाब 32 : छोटे और ह़क़ीर गुनाहों से भी बचते रहना

٣٢- باب مَا يُتَّقَى مِنْ مُحَقَّرَاتِ الذُّنُوبِ

इनको ह़क़ीर न समझना। गुनाह हर ह़ाल में बुरा है, छोटा हो या बड़ा; और बन्दे को क्या मा'लूम शायद अल्लाह पाक उसी पर मुवाख़िज़ा कर बैठे।

6492. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे महदी ने बयान किया, उनसे ग़ीलान ने, उनसे अनस (रज़ि.) से, उन्होंने कहा तुम ऐसे अ़मल करते हो जो तुम्हारी नज़र में बाल से ज़्यादा बारीक हैं (तुम उसे ह़क़ीर समझते हो, बड़ा गुनाह नहीं समझते) और हम लोग आँह़ज़रत (ﷺ) के ज़माने में इन कामों को हलाक कर देने वाला समझते थे। इमाम बुख़ारी (रह़.) ने कहा कि ह़दीष़ में जो लफ़्ज़ मौबिक़ात है उसका मा'नी हलाक करने वाले।

٦٤٩٢- حدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا مَهْدِيٌّ، عَنْ غَيْلاَنَ، عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: إِنَّكُمْ لَتَعْمَلُونَ أَعْمَالاً هِيَ أَدَقُّ فِي أَعْيُنِكُمْ مِنَ الشَّعْرِ، إِنْ كُنَّا نَعُدُّهَا عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ الْمُوبِقَاتِ قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ : يَعْنِي بِذَلِكَ الْمُهْلِكَاتِ.

बाब 33 : अ़मलों का ए'तिबार ख़ात्मे पर है और ख़ात्मे से डरते रहना

٣٣- باب الأَعْمَالُ بِالْخَوَاتِيمِ وَمَا يَخَافُ مِنْهَا

ऐसा न हो कि आख़िरी वक़्त में बुरा अ़मल सरज़द हो जाएं।

6493. हमसे अ़ली बिन अ़य्याश ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू ग़स्सान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे अबू ह़ाज़िम ने बयान किया, उनसे ह़ज़रत सहल बिन सअ़द साएदी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने एक शख़्स़ को देखा जो मुश्रिकीन से जंग में मस़रूफ़ था, ये शख़्स़ मुसलमानों के स़ाह़िबे माल व दौलतमंद लोगों में से था। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर कोई चाहता है कि किसी जहन्नमी को देखे तो वो उस शख़्स़ को देखे। उस पर एक स़ह़ाबी उस शख़्स़ के पीछे लग गये, वो शख़्स़ बराबर लड़ता रहा और आख़िर ज़ख़्मी हो गया। फिर उसने चाहा कि जल्दी मर जाए। पस अपनी तलवार ही की धार अपने सीने के दरम्यान रखकर उस पर अपने आपको डाल दिया और तलवार उसके शानों को चीरती हुई निकल गई (इस त़रह़ वो ख़ुदकुशी करके मर गया) हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, बन्दा लोगों की नज़र में अहले जन्नत के काम करता रहता है ह़ालाँकि वो जहन्नमी में से होता है। एक दूसरा बन्दा लोगों की नज़रों में अहले जहन्नम के काम करता रहता है ह़ालाँकि वो जन्नती होता है और आ़माल का ए'तिबार तो ख़ात्मे पर मौक़ूफ़ है। (राजेअ़ : 2898)

٦٤٩٣- حدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَيَّاشٍ، حَدَّثَنَا أَبُو غَسَّانَ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو حَازِمٍ، عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ السَّاعِدِيِّ قَالَ: نَظَرَ النَّبِيُّ ﷺ إِلَى رَجُلٍ يُقَاتِلُ الْمُشْرِكِينَ وَكَانَ مِنْ أَعْظَمِ الْمُسْلِمِينَ غَنَاءً عَنْهُمْ، فَقَالَ: ((مَنْ أَحَبَّ أَنْ يَنْظُرَ إِلَى رَجُلٍ مِنْ أَهْلِ النَّارِ فَلْيَنْظُرْ إِلَى هَذَا))، فَتَبِعَهُ رَجُلٌ فَلَمْ يَزَلْ عَلَى ذَلِكَ حَتَّى جُرِحَ فَاسْتَعْجَلَ الْمَوْتَ، فَقَالَ بِذُبَابَةِ سَيْفِهِ فَوَضَعَهُ بَيْنَ ثَدْيَيْهِ فَتَحَامَلَ عَلَيْهِ حَتَّى خَرَجَ مِنْ بَيْنِ كَتِفَيْهِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّ الْعَبْدَ لَيَعْمَلُ فِيمَا يَرَى النَّاسُ عَمَلَ أَهْلِ الْجَنَّةِ وَإِنَّهُ لَمِنْ أَهْلِ النَّارِ، وَيَعْمَلُ فِيمَا يَرَى النَّاسُ عَمَلَ أَهْلِ النَّارِ وَهُوَ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ، وَإِنَّمَا الأَعْمَالُ بِخَوَاتِيمِهَا)).[راجع: ٢٨٩٨]

तश्रीह : या'नी आख़िर मरते वक़्त जिसने जैसा काम किया उसी का ए'तिबार होगा अगर सारी उ़म्र इ़बादत तक़्वा में गुज़ारी लेकिन मरते वक़्त गुनाह में गिरफ़्तार हुआ तो पिछले नेक आ़माल कुछ फ़ायदा न देंगे अल्लाह बुरे ख़ात्मे से बचाए। इस ह़दीष़ से ये निकला कि किसी कलिमा गो मुसलमान को चाहे वो फ़ासिक़ फ़ाजिर हो या स़ालेह़ और

परहेज़गार हम क़तई तौर पर दोज़ख़ी या जन्नती नहीं कह सकते। मा'लूम नहीं कि उसका ख़ात्मा कैसा होता है और अल्लाह के यहाँ उसका नाम किन लोगों में लिखा हुआ है? हदीष़ से ये भी निकला कि मुसलमान को अपने आमाले स़ालिहा पर मग़रूर न होना चाहिये और बुरे ख़ात्मे से हमेशा डरते रहना चाहिये। बुज़ुर्गों ने तजुर्बा किया है कि अहले हदीष़ और अहले बैते नबवी से मुहब्बत रखने वालों का ख़ात्मा अकष़र बेहतर होता है। या अल्लाह! मुझ नाचीज़ को भी हमेशा अहले हदीष़ और आले मुहम्मद (ﷺ) से मुहब्बत रही है और जिसको सच्चे दिल से उसका एहतिराम किया है मुझ नाचीज़ हक़ीर गुनाहगार को भी ख़ात्मा बिल ख़ैर नसीब कि **बर क़ौल ईमान कुनम ख़ात्मा**, आमीन।

बाब 34 : बुरी सुहबत से तन्हाई बेहतर है

٣٤- باب الْعُزْلَةُ رَاحَةٌ مِنْ خُلاَّطِ السُّوْءِ

हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया कि मुझसे अ़ता बिन यज़ीद ने बयान किया और उनसे हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया, उन्होंने कहा कि सवाल किया गया, ऐ अल्लाह के रसूल! और मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उनसे औज़ाई ने बयान किया, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, उनसे अ़ता बिन यज़ीद लैष़ी ने बयान किया और उनसे हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि एक अअ़राबी नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और पूछा, या रसूलल्लाह! कौन शख़्स सबसे अच्छा है? फ़र्माया कि वो शख़्स जिसने अपनी जान और माल के ज़रिये जिहाद किया और वो शख़्स जो किसी पहाड़ की कोह में ठहरा हुआ अपने रब की इबादत करता है और लोगों को अपनी बुराई से महफ़ूज़ रखता है। इस रिवायत की मुताबअ़त ज़ुबैदी, सुलैमान बिन कष़ीर और नोअ़मान ने ज़ुहरी से की। और मअ़मर ने ज़ुहरी से बयान किया, उनसे अ़ता या उबैदुल्लाह ने, उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने और यूनुस व इब्ने मुसाफ़िर और यह्या बिन सईद ने इब्ने शिहाब (ज़ुहरी) से बयान किया, उनसे अ़ता ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) के किसी सहाबी ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने। (राजेअ़ : 2886)

٦٤٩٤- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، حَدَّثَنِي عَطَاءُ بْنُ يَزِيدَ أَنَّ أَبَا سَعِيدٍ حَدَّثَهُ قَالَ: قِيلَ يَا رَسُولَ اللهِ، ح وَقَالَ مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ: حَدَّثَنَا الأَوْزَاعِيُّ، حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَزِيدَ اللَّيْثِيِّ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ جَاءَ أَعْرَابِيٌّ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ أَيُّ النَّاسِ خَيْرٌ؟ قَالَ: ((رَجُلٌ جَاهَدَ بِنَفْسِهِ وَمَالِهِ، وَرَجُلٌ فِي شِعْبٍ مِنَ الشِّعَابِ يَعْبُدُ رَبَّهُ وَيَدَعُ النَّاسَ مِنْ شَرِّهِ)). تَابَعَهُ الزُّبَيْدِيُّ وَسُلَيْمَانُ بْنُ كَثِيرٍ وَالنُّعْمَانُ عَنِ الزُّهْرِيِّ: وَقَالَ مَعْمَرٌ: عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عَطَاءٍ أَوْ عُبَيْدِ اللهِ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ وَقَالَ يُونُسُ وَابْنُ مُسَافِرٍ وَيَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ: عَنْ عَطَاءٍ، عَنْ بَعْضِ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. [راجع: ٢٨٨٦]

ज़ुबैदी की रिवायत को इमाम मुस्लिम ने और सुलैमान की रिवायत को अबू दाऊद ने और नोअ़मान की रिवायत को इमाम अहमद (रज़ि.) ने वस्ल किया है।

6495. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे माजिशून ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रहमान बिन अबी स़अ़स़आ ने, उनसे उनके वालिद ने और उन्होंने अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना,

٦٤٩٥- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا الْمَاجِشُونُ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي صَعْصَعَةَ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ أَنَّهُ

سَمِعَهُ يَقُولُ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((يَأْتِي عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ خَيْرُ مَالِ الرَّجُلِ الْمُسْلِمِ الْغَنَمُ يَتْبَعُ بِهَا شَعَفَ الْجِبَالِ، وَمَوَاقِعَ الْقَطْرِ يَفِرُّ بِدِينِهِ مِنَ الْفِتَنِ)). [راجع: ١٩]

आपने फ़र्माया कि लोगों पर एक ऐसा ज़माना आएगा जब एक मुसलमान का सबसे बेहतर माल उसकी बकरियाँ होंगी वो उन्हें लेकर पहाड़ की चोटियों और बारिश की जगहों पर चला जाएगा। उस दिन वो अपने दीन ईमान को लेकर फ़सादों से डरकर वहाँ से भाग जाएगा। (राजेअ : 19)

तश्रीह : आज के दौर में ऐसी आज़ादाना चोटियाँ भी नाबूद हो गई हैं अब हर जगह ख़तरा है। इस हदीष से उन लोगों ने दलील ली है जो कहते हैं उ़ज़्लत बेहतर है कभी लोगों से मिलकर रहना बेहतर होता है और ये भी ज़रूरी है कि उ़ज़्लत करने वाला शख़्स शुहरत और रिया व नमूद की निय्यत से उ़ज़्लत न करे बल्कि गुनाहों से बचने की निय्यत हो और जुम्आ जमाअ़त फ़राइज़े इस्लाम तर्क न करे ज़्यादा तफ़्सील अहयाउल उ़लूम में है। (मज़्कूरा अहादीष और इन जैसी दूसरी अहादीष में जो उ़ज़्लत की तरग़ीब और फ़ज़ीलत बयान हुई है इससे फ़ित्नों का ज़माना मुराद है और माहौल में लोगों से मिलने की सूरत में गुनाहों से बचना मुश्किल हो। वरना इस्लाम आम हालत में ता'ल्लुक़ जोड़ने और आबादी बढ़ाने का हुक्म देता है क्योंकि आप सोचें कि तीमारदारी का षवाब, सलाम करने, स़िलारहमी का षवाब वग़ैरह ये तमाम नेकियाँ तब मुम्किन हैं जब आबादी में रिहाइश होगी। (अ़ब्दुर्रशीद तौंसवी) उ़ज़्लत के मा'नी लोगों से अलग थलग तन्हा दूर रहने के हैं।

٣٥- باب رَفْعِ الأَمَانَةِ

बाब 35 : (आख़िर ज़माने में) दुनिया से अमानतदारी का उठ जाना

٦٤٩٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِنَانٍ، حَدَّثَنَا فُلَيْحُ بْنُ سُلَيْمَانَ، حَدَّثَنَا هِلاَلُ بْنُ عَلِيٍّ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِذَا ضُيِّعَتِ الأَمَانَةُ فَانْتَظِرِ السَّاعَةَ)) قَالَ: كَيْفَ إِضَاعَتُهَا يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ : ((إِذَا أُسْنِدَ الأَمْرُ إِلَى غَيْرِ أَهْلِهِ فَانْتَظِرِ السَّاعَةَ)). [راجع: ٥٩]

6496. हमसे मुहम्मद बिन सिनान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे फुलैह बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा हमसे हिलाल बिन अ़ली ने बयान किया, उनसे अ़ता बिन यसार ने बयान किया और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जब अमानत ज़ाये की जाए तो क़यामत का इंतिज़ार करो। पूछा या रसूलल्लाह! अमानत किस तरह ज़ाया की जाएगी? फ़र्माया जब काम नाअहल लोगों के सुपुर्द कर दिये जाएँ तो क़यामत का इंतिज़ार करो। (राजेअ : 59)

इब्ने बत्ताल ने कहा अल्लाह पाक ने हुकूमत के ज़िम्मेदारों पर ये अमानत सौंपी है कि वो ओहदा और मनास़िब ईमानदार और दयानतदार आदमियों को दें अगर ज़िम्मेदार लोग ऐसा न करेंगे तो अल्लाह के नज़दीक ख़ाइन ठहरेंगे। आज के नामो-निहाद जुम्हूरी दौर में ये सारी बातें ख़्वाब व ख़्याल होकर रह गई हैं। इल्ला माशाअल्लाह

٦٤٩٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ زَيْدِ بْنِ وَهْبٍ، حَدَّثَنَا حُذَيْفَةُ قَالَ: حَدَّثَنَا رَسُولُ

6497. हमसे मुहम्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान षौरी ने ख़बर दी, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, कहा उनसे ज़ैद बिन वहब ने कहा, हमसे हज़रत हुज़ैफ़ह (रज़ि.) ने बयान किया कि हमसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दो

ا الله ﷺ حَدِيثَيْنِ رَأَيْتُ أَحَدَهُمَا وَأَنَا أَنْتَظِرُ الآخَرَ، حَدَّثَنَا ((أَنَّ الأَمَانَةَ نَزَلَتْ فِي جَذْرِ قُلُوبِ الرِّجَالِ، ثُمَّ عَلِمُوا مِنَ الْقُرْآنِ، ثُمَّ عَلِمُوا مِنَ السُّنَّةِ)) وَحَدَّثَنَا عَنْ رَفْعِهَا قَالَ: ((يَنَامُ الرَّجُلُ النَّوْمَةَ فَتُقْبَضُ الأَمَانَةُ مِنْ قَلْبِهِ، فَيَظَلُّ أَثَرُهَا مِثْلَ أَثَرِ الْوَكْتِ، ثُمَّ يَنَامُ النَّوْمَةَ فَتُقْبَضُ فَيَبْقَى أَثَرُهَا مِثْلَ الْمَجْلِ كَجَمْرٍ دَحْرَجْتَهُ عَلَى رِجْلِكَ فَنَفِطَ، فَتَرَاهُ مُنْتَبِرًا وَلَيْسَ فِيهِ شَيْءٌ فَيُصْبِحُ النَّاسُ يَتَبَايَعُونَ فَلاَ يَكَادُ أَحَدٌ يُؤَدِّي الأَمَانَةَ فَيُقَالُ: إِنَّ فِي بَنِي فُلاَنٍ رَجُلاً أَمِينًا وَيُقَالُ لِلرَّجُلِ: مَا أَعْقَلَهُ وَمَا أَظْرَفَهُ وَمَا أَجْلَدَهُ وَمَا فِي قَلْبِهِ مِثْقَالُ حَبَّةِ خَرْدَلٍ مِنْ إِيمَانٍ، وَلَقَدْ أَتَى عَلَيَّ زَمَانٌ وَمَا أُبَالِي أَيَّكُمْ بَايَعْتُ لَئِنْ كَانَ مُسْلِمًا رَدَّهُ عَلَيَّ الإِسْلاَمُ، وَإِنْ كَانَ نَصْرَانِيًّا رَدَّهُ عَلَيَّ سَاعِيهِ، فَأَمَّا الْيَوْمَ فَمَا كُنْتُ أُبَايِعُ إِلاَّ فُلاَنًا وَفُلاَنًا)).

[طرفاه في: ٧٠٨٦، ٧٢٧٦].

हदीसें इर्शाद फ़र्माईं। एक का ज़हूर तो मैं देख चुका हूँ और दूसरी का इंतिज़ार कर रहा हूँ। आँहज़रत (ﷺ) ने हमसे फ़र्माया कि अमानत लोगों के दिलों की गहराइयों में उतरती है। फिर क़ुर्आन शरीफ़ से, फिर हदीष से इसकी मज़बूती होती जाती है और आँहज़रत (ﷺ) ने हमसे उसके उठ जाने के बारे में इर्शाद फ़र्माया कि, आदमी एक नींद सोयेगा और (उसी में) अमानत उसके दिल से ख़त्म हो जाएगी और उस बेईमानी का हल्का निशान पड़ जाएगा। फिर एक और नींद लेगा तो अब उसका निशान छाले की तरह हो जाएगा जैसे तू पैरों पर एक चिंगारी लुढ़काए तो ज़ाहिर में एक छाला फूल आता है उसको फूला देखता है, पर अंदर कुछ नहीं होता। फिर हाल ये हो जाएगा कि सुबह उठकर लोग ख़रीद व फ़रोख़्त करेंगे और कोई शख़्स अमानदार नहीं होगा। कहा जाएगा कि बनी फ़लाँ में एक अमानतदार शख़्स है। किसी शख़्स के बारे में कहा जाएगा कि कितना अक़्लमंद है, कितना बुलंद हौसला है और कितना बहादुर है। हालाँकि उसके दिल में राई बराबर भी ईमान (अमानत) नहीं होगा, (हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि. कहते हैं) मैंने एक ऐसा वक़्त भी गुज़ारा है कि मैं उसकी परवाह नहीं करता था कि किससे ख़रीद व फ़रोख़्त करता हूँ। अगर वो मुसलमान होता तो उसको इस्लाम (बेईमानी से) रोकता था। अगर वो नस़रानी होता तो उसका मददगार उसे रोकता था लेकिन अब मैं फ़लाँ फ़लाँ के सिवा किसी से ख़रीद व फ़रोख़्त नहीं करता। (दीगर: 7276, 7086)

तश्रीह : चंद ही आदमी इस क़ाबिल हैं कि उनसे मामला करूँ। मतने क़स्तलानी (रह़.) में यहाँ इतनी इबारत और ज़्यादा है, **काल्फर्बरी क़ाल अबू जअ़फ़र हद्दष़्तु अबा अ़ब्दिल्लाह फक़ाल समिअ़तु अबा अह़मद बिन आस़िम .... यक़ूलु समिअ़तु अबा उ़बैद यक़ूलु क़ालल्अस्मई व अबू अमर व गैरहुमा जज़्र कुलूबुर्रिजाल अल्जज़्रू अल्अस़्ल मिन कुल्ली शैइन वल्वक्तु अष़रश्शैइल्यसीर मिन्हु वल्मजल अष़रुल्अमल फ़िल्कफ़्फ़ि** इज़ा गलज़ या'नी मुहम्मद बिन यूसुफ़ फ़रबरी ने कहा अबू जा'फ़र मुहम्मद बिन हातिम जो इमाम बुख़ारी (रह़.) के मुंशी थे उनकी किताबें लिखा करते थे, कहते थे कि मैंने इमाम बुख़ारी (रह़.) को ह़दीष़ सुनाई तो वो कहने लगे मैंने अबू अह़मद बिन आ़स़िम बल्ख़ी से सुना, वो कहते थे मैंने अबू उ़बैद से सुना, वो कहते थे अ़ब्दुल मलिक बिन कुरैब अस्मई और अबू अ़म्र बिन अ़लाअ क़ाहिरी वग़ैरह लोगों ने सुफ़यान ष़ौरी से कहा जज़्र का लफ़्ज़ जो ह़दीष़ में है उसका मत़लब जड़ और वक्त कहते हैं हल्के ख़फ़ीफ़ दाग़ को और मजल वो मोटा छाला जो काम करने से हाथ में पड़ जाता है।

٦٤٩٨- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ أَخْبَرَنِي سَالِمُ

6498. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझको सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी और उनसे

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि लोगों की मिष़ाल ऊँटों की सी है, सौ में भी एक तेज़ सवारी के क़ाबिल नहीं मिलता।

بْنُ عَبْدِ اللهِ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((إِنَّمَا النَّاسُ كَالإِبِلِ الْمِائَةِ لاَ تَكَادُ تَجِدُ فِيهَا رَاحِلَةً)).

आज मुसलमान बकष़रत हर जगह मौजूद हैं मगर ह़क़ीक़ी मुसलमान तलाश किये जाएँ तो मायूसी होगी। फिर भी अल्लाह वालों से ज़मीन ख़ाली नहीं है, **कम मिन इबादिल्लाह लौ अक़्सम अलल्लाह लअबर्रहू।**

बाब 36 : रिया और शुह्रत त़ल्बी की मज़म्मत में

٣٦- باب الرِّيَاءِ وَالسُّمْعَةِ

6499. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ने, कहा मुझसे सलमा बिन अबू नुऐ़म ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे सलमा ने बयान किया कि मैंने ह़ज़रत जुन्दुब (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया और मैंने आपके सिवा किसी को ये कहते नहीं सुना कि, नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, चुनाँचे मैं उनके क़रीब पहुँचा तो मैंने सुना कि, नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, चुनाँचे मैं उनके क़रीब पहुँचा तो मैंने सुना कि वो कह रहे थे कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया (किसी नेक काम के नतीजे में) जो शुह्रत का त़ालिब हो अल्लाह तआ़ला उसकी बदनिय्यती क़यामत के दिन सबको सुना देगा। इसी त़रह जो कोई लोगों को दिखाने के लिये नेक काम करे अल्लाह भी क़यामत के दिन उसको सब लोगों को दिखला देगा। (दीगर मक़ाम : 7152)

٦٤٩٩- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ سُفْيَانَ حَدَّثَنِي سَلَمَةُ بْنُ كُهَيْلٍ. ح وَحَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ سَلَمَةَ قَالَ: سَمِعْتُ جُنْدَبًا يَقُولُ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: وَلَمْ أَسْمَعْ أَحَدًا يَقُولُ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ غَيْرَهُ فَدَنَوْتُ مِنْهُ فَسَمِعْتُهُ يَقُولُ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((مَنْ سَمَّعَ، سَمَّعَ اللهُ بِهِ وَمَنْ يُرَائِي يُرَائِي اللهُ بِهِ)).

[طرفه في : ٧١٥٢].

तश्रीह : रियाकारी से बचने के लिये नेक काम छुपाकर करना बेहतर है मगर जहाँ इज़्हार के बग़ैर चारा न हो जैसे फ़र्ज़ नमाज़ जमाअ़त से अदा करना या दीन की किताबें तालीफ़ और शाये करना इसी त़रह जो शख़्स दीन का पेशवा हो उसको भी अपना अ़मल ज़ाहिर करना चाहिये ताकि दूसरे लोग उसकी पैरवी करें बहरहाल ह़दीष़ **इन्नमल आमालु बिन्नियात** को मद्देनज़र रखना ज़रूरी है। रिया को शिर्क ख़फ़ी कहा गया है जिसकी मज़म्मत के लिये ये ह़दीष़ काफ़ी वाफ़ी है।

बाब 37 : जो अल्लाह की इत़ाअ़त करने के लिये अपने नफ़्स को दबाए उसकी फ़ज़ीलत का बयान

٣٧- باب مَنْ جَاهَدَ نَفْسَهُ فِي طَاعَةِ اللهِ

6500. हमसे हदबा बिन ख़ालिद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हम्माम बिन ह़ारिष़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे क़तादा ने बयान किया, उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत मुआ़ज़ बिन

٦٥٠٠- حَدَّثَنَا هُدْبَةُ بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ، عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

قَالَ: بَيْنَمَا أَنَا رَدِيفُ النَّبِيِّ ﷺ لَيْسَ بَيْنِي وَبَيْنَهُ إِلاَّ آخِرَةُ الرَّحْلِ، فَقَالَ: ((يَا مُعَاذُ)) قُلْتُ : لَبَّيْكَ يَا رَسُولَ اللهِ وَسَعْدَيْكَ، ثُمَّ سَارَ سَاعَةً ثُمَّ قَالَ: ((يَا مُعَاذُ)) قُلْتُ: لَبَّيْكَ رَسُولَ اللهِ وَسَعْدَيْكَ، ثُمَّ سَارَ سَاعَةً ثُمَّ قَالَ: ((يَا مُعَاذُ بْنَ جَبَلٍ)) قُلْتُ: لَبَّيْكَ رَسُولَ اللهِ وَسَعْدَيْكَ قَالَ: ((هَلْ تَدْرِي مَا حَقُّ اللهِ عَلَى عِبَادِهِ؟)) قُلْتُ : اللهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ قَالَ: ((حَقُّ اللهِ عَلَى عِبَادِهِ أَنْ يَعْبُدُوهُ وَلاَ يُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا)) ثُمَّ سَارَ سَاعَةً، ثُمَّ قَالَ: ((يَا مُعَاذُ بْنَ جَبَلٍ)) قُلْتُ: لَبَّيْكَ يَا رَسُولَ اللهِ وَسَعْدَيْكَ، قَالَ: ((هَلْ تَدْرِي مَا حَقُّ الْعِبَادِ عَلَى اللهِ إِذَا فَعَلُوهُ))؟ قُلْتُ: اللهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ قَالَ: ((حَقُّ الْعِبَادِ عَلَى اللهِ أَنْ لاَ يُعَذِّبَهُمْ)). [راجع: ٢٨٥٦]

जबल (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की सवारी पर आपके पीछे बैठा हुआ था। सिवा कजावा के आख़िरी हिस्से के मेरे और आँहज़रत (ﷺ) के बीच कोई चीज़ हाइल नहीं थी। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ मुआज़! मैंने अ़र्ज़ किया लब्बैक व सअ़दैक, या रसूलल्लाह! फिर थोड़ी देर आँहज़रत (ﷺ) चलते रहे, फिर फ़र्माया, ऐ मुआज़! मैंने अ़र्ज़ किया लब्बैक व सअ़दैक, या रसूलल्लाह! फिर थोड़ी देर मज़ीद आँहज़रत (ﷺ) चलते रहे। फिर फ़र्माया, ऐ मुआज़! मैंने अ़र्ज़ किया लब्बैक व सअ़दैक, या रसूलल्लाह! फ़र्माया, तुम्हें मा'लूम है कि अल्लाह का अपने बन्दों पर क्या हक़ है? मैंने अ़र्ज़ किया अल्लाह और उसके रसूल ज़्यादा इल्म रखते हैं। फ़र्माया, अल्लाह का बन्दों पर ये हक़ है कि वो अल्लाह ही की इबादत करें और उसके साथ किसी को शरीक न ठहराएँ। फिर आँहज़रत (ﷺ) थोड़ी देर चलते रहे और फ़र्माया, ऐ मुआज़ बिन जबल! मैंने अ़र्ज़ किया, लब्बैक व सअ़दैक, या रसूलल्लाह! फ़र्माया, तुम्हें मा'लूम है कि जब बन्दे ये कर लें तो उनका अल्लाह पर क्या हक़ है? मैंने अ़र्ज़ किया अल्लाह और उसके रसूल को ज़्यादा इल्म है। फ़र्माया कि बन्दों का अल्लाह पर ये हक़ है कि वो उन्हें अ़ज़ाब न दे। (राजेअ़ : 2856)

तश्रीह : ह़दीष़ में तौह़ीद और शिर्क का बयान है तौह़ीद या'नी इबादत में अल्लाह को एक ही जानना उसके साथ किसी को शरीक न करना ख़ालिस़ उसी एक की इबादत करना हर क़िस्म के शिर्क से बचना ये दुख़ूले जन्नत का मौजिब है।

बाब 38 : तवाजोअ़ या'नी आजिज़ी करने के बयान में

٣٨- باب التَّوَاضُعِ

ये तमाम अख़्लाक़े ह़सना का अस़्लुल उस़ूल है अगर तवाजोअ़ न हो तो कोई इबादत काम न आएगी। दूसरी ह़दीष़ में है कि जो कोई अल्लाह के लिये तवाज़ोअ़ करता है अल्लाह उसका रुत्बा बुलंद कर देता है। एक ह़दीष़ में इर्शादे इलाही नक़ल किया गया है कि तवाज़ोअ़ करो और कोई दूसरे पर फ़ख़्र न करे।

٦٥٠١- حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا حُمَيْدٌ، عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ لِلنَّبِيِّ ﷺ نَاقَةٌ. قَالَ وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدٌ، أَخْبَرَنَا الْفَزَارِيُّ وَأَبُو خَالِدٍ الأَحْمَرُ، عَنْ حُمَيْدٍ الطَّوِيلِ،

6501. हमसे मालिक बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुबैर बिन मुआविया ने बयान किया, कहा हमसे हुमैद ने बयान किया, उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) की एक ऊँटनी थी (दूसरी सनद) ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने कहा और मुझसे मुह़म्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमको फ़ुज़ारी ने और अबू ख़ालिद अह़मर ने ख़बर दी, उन्हें हुमैद त़वील ने और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.)

عَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَتْ نَاقَةٌ لِرَسُولِ اللهِ ﷺ تُسَمَّى الْعَضْبَاءَ، وَكَانَتْ لاَ تُسْبَقُ، فَجَاءَ أَعْرَابِيٌّ عَلَى قَعُودٍ لَهُ فَسَبَقَهَا، فَاشْتَدَّ ذَلِكَ عَلَى الْمُسْلِمِينَ وَقَالُوا: سُبِقَتِ الْعَضْبَاءُ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّ حَقًّا عَلَى اللهِ أَنْ لاَ يَرْفَعَ شَيْئًا مِنَ الدُّنْيَا إِلاَّ وَضَعَهُ)).

ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की एक ऊँटनी थी जिसका नाम अ़ज़्बाअ था (कोई जानवर दौड़ में) उससे आगे नहीं बढ़ पाता था। फिर एक अअ़राबी अपने ऊँट पर सवार होकर आया और आँह़ज़रत (ﷺ) की ऊँटनी से आगे बढ़ गया। मुसलमानों पर ये मामला बड़ा शाक़ गुज़रा और कहने लगे कि अफ़सोस अ़ज़्बाअ पीछे रह गई। आँह़ज़रत (ﷺ) ने इस पर फ़र्माया कि अल्लाह तआ़ला ने अपने ऊपर ये लाज़िम कर लिया है कि जब दुनिया में वो किसी चीज़ को बढ़ाता है तो उसे वो घटाता भी है।

तरक़्क़ी के साथ तनज़्ज़ुली और अदबार के साथ इक़बाल भी लगा हुआ है तिल्कल्अय्यामु नुदाविलुहा बैनन्नासि (आले इम्रान : 160) का यही मत़लब है।

٦٥٠٢– حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عُثْمَانَ، حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ بِلاَلٍ، حَدَّثَنِي شَرِيكُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي نَمِرٍ، عَنْ عَطَاءٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((إِنَّ اللهَ قَالَ: مَنْ عَادَى لِي وَلِيًّا فَقَدْ آذَنْتُهُ بِالْحَرْبِ، وَمَا تَقَرَّبَ إِلَيَّ عَبْدِي بِشَيْءٍ أَحَبَّ إِلَيَّ مِمَّا افْتَرَضْتُ عَلَيْهِ، وَمَا يَزَالُ عَبْدِي يَتَقَرَّبُ إِلَيَّ بِالنَّوَافِلِ حَتَّى أُحِبَّهُ، فَإِذَا أَحْبَبْتُهُ كُنْتُ سَمْعَهُ الَّذِي يَسْمَعُ بِهِ، وَبَصَرَهُ الَّذِي يُبْصِرُ بِهِ، وَيَدَهُ الَّتِي يَبْطِشُ بِهَا، وَرِجْلَهُ الَّتِي يَمْشِي بِهَا، وَإِنْ سَأَلَنِي لأُعْطِيَنَّهُ، وَلَئِنِ اسْتَعَاذَنِي لأُعِيذَنَّهُ، وَمَا تَرَدَّدْتُ عَنْ شَيْءٍ أَنَا فَاعِلُهُ تَرَدُّدِي عَنْ نَفْسِ الْمُؤْمِنِ يَكْرَهُ الْمَوْتَ، وَأَنَا أَكْرَهُ مَسَاءَتَهُ)).

6502. मुझसे मुह़म्मद बिन उ़स्मान ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद बिन मुख़लद ने, कहा हमसे सुलैमान बिन बिलाल ने, उनसे शुरैक बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबी नम्र ने, उनसे अ़त़ा ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह तआ़ला फ़र्माता है कि जिसने मेरे किसी वली से दुश्मनी की उसे मेरी त़रफ़ से ऐलाने जंग है और मेरा बन्दा जिन जिन इबादतों से मेरा क़ुर्ब ह़ासिल करता है और कोई इबादत मुझको उससे ज़्यादा पसंद नहीं है जो मैंने उस पर फ़र्ज़ की है (या'नी फ़राइज़ मुझको बहुत पसंद हैं जैसे नमाज़, रोज़ा, ह़ज्ज, ज़कात) और मेरा बन्दा फ़र्ज़ अदा करने के बाद नफ़्ल इबादतें करके मुझसे इतना नज़दीक हो जाता है कि मैं उससे मुह़ब्बत करने लग जाता हूँ। फिर जब मैं उससे मुह़ब्बत करने लग जाता हूँ तो मैं उसका कान बन जाता हूँ जिससे वो सुनता है, उसकी आँख बन जाता हूँ जिससे वो देखता है, उसका हाथ बन जाता हूँ जिससे वो पकड़ता है, उसका पैर बन जाता हूँ जिससे वो चलता है और अगर वो मुझसे मांगता है तो मैं उसे देता हूँ अगर वो किसी दुश्मन या शैत़ान से मेरी पनाह का त़ालिब होता है तो मैं उसे मह़फ़ूज़ रखता हूँ और मैं जो काम करना चाहता हूँ उसमें मुझे इतना तरद्दुद नहीं होता जितना कि मुझे अपने मोमिन बन्दे की जान निकालने में होता है। वो तो मौत को बवजह तकलीफ़े जिस्मानी के पसंद नहीं करता और मुझको भी उसे तकलीफ़ देना बुरा लगता है।

तश्रीह : इस ह़दीष़ में मुह़द्दिष़ीन ने कलाम किया है और उसके रावी ख़ालिद बिन मुख़्लद को मुंकिरुल ह़दीष़ कहा है। मैं वह़ीदुज़्ज़माँ कहता हूँ कि ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर (रह़.) ने इसके दूसरे त़रीक़ भी बयान किये हैं भले ही वो अकष़र ज़ईफ़ हैं मगर ये सब त़ुरूक़ मिलकर ह़दीष़ ह़सन हो जाती है और ख़ालिद बिन मुख़्लद को अबू दाऊद ने स़दूक़ कहा है। (वह़ीदी)

इस ह़दीष़ का ये मत़लब नहीं है कि बन्दा ऐन अल्लाह हो जाता है जैसे मआ़ज़ल्लाह इत्तिह़ादिया और ह़ुलूलिया कहते हैं बल्कि ह़दीष़ का मत़लब ये है कि जब बन्दा मेरी इबादत में ग़र्क़ हो जाता है और मह़बूबियत के दर्जे पर पहुँचता है तो उसके ह़वास ज़ाहिरी व बात़िनी सब शरीअ़त के ताबेअ़ हो जाते हैं वो हाथ-पैर, कान-आँख से स़िर्फ़ वही काम लेता है जिसमें मेरी ख़ुशी है। ख़िलाफ़े शरीअ़त उससे कोई काम सरज़द नहीं होता। (और अल्लाह की इबादत में किसी ग़ैर को शरीक करना शिर्क है जिसका इर्तिकाब जहन्नम में डाला जाना है। तौह़ीद और शिर्क की तफ़्स़ीलात मा'लूम करने के लिये तक़्वियतुल ईमान का मुत़ालआ़ करना चाहिये अ़रबी ह़ज़रात अद्दीनुल ख़ालिस़ का मुत़ालआ़ करें। वबिल्लाहित्तौफ़ीक़

बाब 39 : नबी करीम (ﷺ) का इर्शाद कि मैं और क़यामत दोनों ऐसे नज़दीक हैं जैसे ये (कलिमा और बीच की उँगलियाँ) नज़दीक हैं

٣٩- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((بُعِثْتُ أَنَا وَالسَّاعَةَ كَهَاتَيْنِ))

(सूरह नह़ल में अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है) और क़यामत का मामला तो बस आँख झपकने की त़रह़ है या वो उससे भी जल्द है बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है। (सूरह नह़ल : 77)

﴿وَمَا أَمْرُ السَّاعَةِ إِلاَّ كَلَمْحِ الْبَصَرِ أَوْ هُوَ أَقْرَبُ إِنَّ اللهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ﴾ [النحل : ٧٧]

6503. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, कहा हमसे अबू ग़स्सान ने बयान किया, कहा हमसे अबू ह़ाज़िम ने बयान किया, उनसे सहल (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, मैं और क़यामत इतने नज़दीक नज़दीक भेजे गये हैं, और आँह़ज़रत (ﷺ) ने अपनी दो उँगलियों के इशारे से (इस नज़दीकी को) बताया फिर उन दोनों को फैलाया। (राजेअ़ : 4936)

٦٥٠٣- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ، حَدَّثَنَا أَبُو غَسَّانَ، حَدَّثَنَا أَبُو حَازِمٍ، عَنْ سَهْلٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((بُعِثْتُ أَنَا وَالسَّاعَةُ هَكَذَا)) وَيُشِيرُ بِإِصْبَعَيْهِ فَيَمُدُّ بِهِمَا. [راجع: ٤٩٣٦]

मत़लब ये है कि मुझमें और क़यामत में अब किसी नये नबी, पैग़म्बर और रसूल का फ़ास़ला नहीं है और मेरी उम्मत आख़िरी उम्मत है इसी पर क़यामत आएगी।

6504. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद जअ़फ़ी ने बयान किया, कहा हमसे वहब बिन जरीर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे क़तादा और अबुत्तियाह ने और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मैं और क़यामत इन दोनों (उँगलियों) की त़रह़ (पास-पास) भेजे गये हैं।

٦٥٠٤- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، هُوَ الْجُعْفِيُّ حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ جَرِيرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، وَأَبِي التَّيَّاحِ عَنْ أَنَسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((بُعِثْتُ وَالسَّاعَةَ كَهَاتَيْنِ)).

6505. मुझसे यह़्या बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको अबूबक्र बिन अ़य्याश ने ख़बर दी, उन्हें अबू ह़ुस़ैन ने, उन्हें अबू स़ालेह़ ने, उन्हें ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने और उनसे नबी

٦٥٠٥- حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا أَبُو بَكْرٍ، عَنْ أَبِي حَصِينٍ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عن أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى

اللہ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((بُعِثْتُ أَنَا وَالسَّاعَةُ كَهَاتَيْنِ))، يَعْنِي إِصْبَعَيْنِ. تَابَعَهُ إِسْرَائِيلُ عَنْ أَبِي حَصِينٍ.

करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मैं और क़यामत इन दो की तरह भेजे गये हैं। आपकी मुराद दो उँगलियों से थी। अबूबक्र बिन अ़य्याश के साथ इस ह़दीष़ को इस्राईल ने भी अबू ह़ुसैन से रिवायत किया है जिसे हुमामैन ने वस्ल किया है।

٤٠- باب

बाब 40

इसमें कोई तर्जुमा नहीं है गोया अगले बाब की फ़स्ल है।

٦٥٠٦- حدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ مِنْ مَغْرِبِهَا، فَإِذَا طَلَعَتْ فَرَآهَا النَّاسُ آمَنُوا أَجْمَعُونَ، فَذَلِكَ حِينَ لاَ يَنْفَعُ نَفْسًا إِيمَانُهَا لَمْ تَكُنْ آمَنَتْ مِنْ قَبْلُ، أَوْ كَسَبَتْ فِي إِيمَانِهَا خَيْرًا، وَلَتَقُومَنَّ السَّاعَةُ وَقَدْ نَشَرَ الرَّجُلاَنِ ثَوْبَهُمَا بَيْنَهُمَا فَلاَ يَتَبَايَعَانِهِ وَلاَ يَطْوِيَانِهِ، وَلَتَقُومَنَّ السَّاعَةُ وَقَدِ انْصَرَفَ الرَّجُلُ بِلَبَنِ لِقْحَتِهِ فَلاَ يَطْعَمُهُ، وَلَتَقُومَنَّ السَّاعَةُ وَهُوَ يَلِيطُ حَوْضَهُ فَلاَ يَسْقِي فِيهِ، وَلَتَقُومَنَّ السَّاعَةُ وَقَدْ رَفَعَ أُكْلَتَهُ إِلَى فِيهِ فَلاَ يَطْعَمُهَا)).

[راجع: ٨٥]

6506. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, कहा हमसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रह़मान ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया क़यामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी जब तक सूरज मग़रिब से न निकलेगा। जब सूरज मग़रिब से निकलेगा और लोग देख लेंगे तो सब ईमान ले आएँगे, यही वो वक़्त होगा जब किसी के लिये उसका ईमान लाना नफ़ा नहीं देगा जो उससे पहले ईमान न लाया होगा या जिसने ईमान के बाद अ़मले ख़ैर न किया हो। पस कयामत आ जाएगी और दो आदमी कपड़ा बीच में (ख़रीद व फ़रोख़्त के लिये) फैलाए हुए होंगे। अभी लेन-देन भी न हुआ होगा और न उन्होंने उसे लपेटा होगा (कि क़यामत क़ायम हो जाएगी) और क़यामत इस ह़ाल में क़ायम हो जाएगी कि एक शख़्स अपनी ऊँटनी का दूध लेकर आ रहा होगा और उसे पी भी नहीं सकेगा और क़यामत इस ह़ाल में क़ायम हो जाएगी कि एक शख़्स अपना ह़ौज़ तैयार करा रहा होगा और उसका पानी भी न पी पाएगा। क़यामत इस ह़ाल में क़ायम हो जाएगी कि एक शख़्स अपना लुक़्मा अपने मुँह की तरफ़ उठाएगा और उसे खाने भी न पाएगा। (राजेअ़ : 85)

इस ह़दीष़ का मतलब ये है कि क़यामत अचानक क़ायम हो जाएगी किसी को ख़बर न होगी लोग अपने अपने धंधों में मस़रूफ़ होंगे कि क़यामत क़ायम हो जाएगी।

٤١- باب مَنْ أَحَبَّ لِقَاءَ اللهِ أَحَبَّ اللهُ لِقَاءَهُ

बाब 41 : जो अल्लाह से मिलने को पसंद रखता है अल्लाह भी उससे मिलने को पसंद रखता है

٦٥٠٧- حدَّثَنَا حَجَّاجٌ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ،

6507. हमसे ह़ज्जाज ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम ने, कहा हमसे क़तादा ने, उनसे अनस (रज़ि.) ने और उनसे ह़ज़रत

حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، عَنْ أَنَسٍ عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((مَنْ أَحَبَّ لِقَاءَ اللهِ، أَحَبَّ اللهُ لِقَاءَهُ، وَمَنْ كَرِهَ لِقَاءَ اللهِ كَرِهَ اللهُ لِقَاءَهُ))، قَالَتْ عَائِشَةُ: أَوْ بَعْضُ أَزْوَاجِهِ إِنَّا لَنَكْرَهُ الْمَوْتَ، قَالَ: ((لَيْسَ ذَاكِ، وَلَكِنَّ الْمُؤْمِنَ إِذَا حَضَرَهُ الْمَوْتُ بُشِّرَ بِرِضْوَانِ اللهِ وَكَرَامَتِهِ، فَلَيْسَ شَيْءٌ أَحَبَّ إِلَيْهِ مِمَّا أَمَامَهُ، فَأَحَبَّ لِقَاءَ اللهِ وَأَحَبَّ اللهُ لِقَاءَهُ، وَإِنَّ الْكَافِرَ إِذَا حُضِرَ بُشِّرَ بِعَذَابِ اللهِ وَعُقُوبَتِهِ، فَلَيْسَ شَيْءٌ أَكْرَهَ إِلَيْهِ مِمَّا أَمَامَهُ كَرِهَ لِقَاءَ اللهِ وَكَرِهَ اللهُ لِقَاءَهُ)). اخْتَصَرَهُ أَبُودَاوُدَ وَعَمْرٌو، عَنْ شُعْبَةَ، وَقَالَ سَعِيدٌ: عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ زُرَارَةَ، عَنْ سَعْدٍ، عَنْ عَائِشَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

उबादा बिन सामित (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जो शख़्स अल्लाह से मिलने को दोस्त रखता है, अल्लाह भी उससे मिलने को दोस्त रखता है और जो अल्लाह से मिलने को पसंद नहीं करता है अल्लाह भी उससे मिलने को पसंद नहीं करता। और आइशा (रज़ि.) या आँहज़रत (ﷺ) की कुछ अज़्वाज ने अर्ज़ किया कि मरना तो हम भी नहीं पसंद करते? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह के मिलने से मौत मुराद नहीं है बल्कि बात ये है कि ईमानदार आदमी को जब मौत आती है तो उसे अल्लाह की ख़ुशनूदी और उसके यहाँ उसकी इज़्ज़त की ख़ुशख़बरी दी जाती है। उस वक़्त मोमिन को कोई चीज़ इससे ज़्यादा अज़ीज़ नहीं होती जो उसके आगे (अल्लाह से मुलाक़ात और उसकी रज़ा और जन्नत के हुसूल के लिये) होती है, इसलिये वो अल्लाह से मुलाक़ात का ख़्वाहिशमंद हो जाता है और अल्लाह भी उसकी मुलाक़ात को पसंद करता है और जब काफ़िर की मौत का वक़्त क़रीब होता है तो उसे अल्लाह के अज़ाब और उसकी सज़ा की बशारत दी जाती है, उस वक़्त कोई चीज़ उसके दिल में इससे ज़्यादा नागवार नहीं होती जो उसके आगे होती है। वो अल्लाह से मिलने को नापसंद करने लगता है, पस अल्लाह भी उससे मिलने को नापसंद करता है। अबू दाऊद त्रियालिसी और अम्र बिन मरज़ूक़ ने इस हदीष़ को शुअबा से मुख़्तसरन रिवायत किया है और सईद बिन अबी अरूबा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, उनसे ज़ुरारह बिन अबी औफ़ा ने, उनसे सअद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया।

ख़ुशबख़्ती ये है कि मौत के वक़्त अल्लाह की मुलाक़ात का शौक़ ग़ालिब हो और तर्के दुनिया का ग़म न हो। अल्लाह हर मुसलमान को इस कैफ़ियत के साथ मौत नसीब करे, आमीन। कलिमा तय्यिबा उस वक़्त पढ़ने का भी मक़्सद यही है मोमिन को मौत के वक़्त जो तकलीफ़ होती है उसका अंजाम हमेशा-हमेशा की राहत है।

٦٥٠٨- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ بُرَيْدٍ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ أَحَبَّ لِقَاءَ اللهِ أَحَبَّ اللهُ لِقَاءَهُ،

6508. मुझसे मुहम्मद बिन अलाअ ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने, उनसे यज़ीद बिन अब्दुल्लाह ने, उनसे अबूबुर्दा ने, उनसे अबू मूसा अश्अरी (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जो शख़्स अल्लाह से मिलने को पसंद करता है अल्लाह भी उससे मिलने को पसंद करता है और जो शख़्स

وَمَنْ كَرِهَ لِقَاءَ ا للهِ كَرِهَ ا للهُ لِقَاءَهُ)).

अल्लाह से मिलने को नापसंद करता है अल्लाह भी उससे मिलने को नापसंद करता है।

मत़लब ये है कि मौत बहरहाल आनी है उसे बुरा न जानना चाहिये।

٦٥٠٩- حدَّثنِي يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ وَعُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ فِي رِجَالٍ مِنْ أَهْلِ الْعِلْمِ أَنَّ عَائِشَةَ زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ ا للهِ ﷺ يَقُولُ وَهُوَ صَحِيحٌ: ((إِنَّهُ لَمْ يُقْبَضْ نَبِيٌّ قَطُّ حَتَّى يُرَى مَقْعَدَهُ مِنَ الْجَنَّةِ، ثُمَّ يُخَيَّرُ)) فَلَمَّا نَزَلَ بِهِ وَرَأْسُهُ عَلَى فَخِذِي غُشِيَ عَلَيْهِ سَاعَةً ثُمَّ أَفَاقَ فَأَشْخَصَ بَصَرَهُ إِلَى السَّقْفِ، ثُمَّ قَالَ: ((اللَّهُمَّ الرَّفِيقَ الأَعْلَى)) قُلْتُ: إِذًا لاَ يَخْتَارُنَا وَعَرَفْتُ أَنَّهُ الْحَدِيثُ الَّذِي كَانَ يُحَدِّثُنَا بِهِ قَالَتْ: فَكَانَتْ تِلْكَ آخِرَ كَلِمَةٍ تَكَلَّمَ بِهَا النَّبِيُّ ﷺ قَوْلُهُ: ((اللَّهُمَّ الرَّفِيقَ الأَعْلَى)). اللَّهُمَّ الرَّفِيْقُ الأَعْلَى. [راجع: ٤٤٣٥]

6509. मुझसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील बिन ख़ालिद ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, कहा मुझको सईद बिन मुसय्यब और उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने चंद इल्म वालों के सामने ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुत़हहरा ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जब आप ख़ासे तंदुरुस्त थे फ़र्माया था किसी नबी की उस वक़्त तक रूह क़ब्ज़ नहीं की जाती जब तक जन्नत में उसके रहने की जगह उसे दिखा न दी जाती हो और फिर उसे (दुनिया या आख़िरत के लिये) इख़्तियार दिया जाता है। फिर जब आँह़ज़रत (ﷺ) बीमार हुए और आँह़ज़रत (ﷺ) का सरे मुबारक मेरी रान पर था तो आप पर थोड़ी देर के लिये ग़शी छा गई, फिर जब आपको होश आया तो आप छत की त़रफ़ टकटकी लगाकर देखने लगे। फिर फ़र्माया, अल्लाहुम्मर्रफ़ीक़ुल आला, मैंने कहा कि अब आँह़ज़रत (ﷺ) हमें तरजीह नहीं दे सकते और मैं समझ गई कि ये वही ह़दीष़ है जो हुज़ूर ने एक मर्तबा इर्शाद फ़र्माई थी। रावी ने बयान किया कि ये आँह़ज़रत (ﷺ) का आख़िरी कलिमा था जो आपने अपनी ज़ुबाने मुबारक से अदा फ़र्माया या'नी ये इर्शाद कि अल्लाहुम्मर्रफ़ीक़ुल आला या'नी या अल्लाह! मुझको बुलंद रफ़ीक़ों का साथ पसंद है। (राजेअ : 4435)

मुराद बाशिन्दगाने जन्नत अंबिया व मुर्सलीन व स़ालेह़ीन व मलाइका हैं। अल्लाह पाक हम सबको नेक लोगों स़ालेह़ीन की सुह़बत अ़त़ा फ़र्माए। आमीन या रब्बल आ़लमीन।

बाब 42 : मौत की सख़्तियों का बयान

٤٢- باب سَكَرَاتِ الْمَوْتِ

٦٥١٠- حدَّثنا مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدِ بْنِ مَيْمُونٍ، حَدَّثَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ، عَنْ عُمَرَ بْنِ سَعِيدٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي ابْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ أَنَّ أَبَا عَمْرٍو ذَكْوَانَ مَوْلَى عَائِشَةَ أَخْبَرَهُ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ ا للهُ عَنْهَا كَانَتْ تَقُولُ: إِنَّ رَسُولَ ا للهِ ﷺ كَانَ بَيْنَ يَدَيْهِ

6510. हमसे मुहम्मद बिन उ़बैद बिन मैमून ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ईसा बिन यूनुस ने बयान किया, उनसे उ़मर बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझको इब्ने अबी मुलैका ने ख़बर दी, उन्हें ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) के ग़ुलाम अबू अ़म्र ज़क्वान ने ख़बर दी कि उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत आ़इशा स़िद्दीक़ा (रज़ि.) कहा करती थीं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) (की वफ़ात के वक़्त) आपके सामने एक बड़ा पानी का

प्याला रखा हुआ था जिसमें पानी था। ये इमर को शुब्हा हुआ कि हाँडी या कूँडा था। आँहज़रत (ﷺ) अपना हाथ उस बर्तन में डालने लगे और फिर उस हाथ को अपने चेहरा पर मलते और फ़र्माते अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं, बिला शुब्हा मौत में तकलीफ़ होती है, फिर आप अपना हाथ उठाकर फ़र्माने लगे। फ़िर्रफ़ीक़िल आला यहाँ तक कि आपकी रूहे मुबारक क़ब्ज़ हो गई और आपका हाथ झुक गया। (राजेअ : 890)

رَكْوَةٌ - أَوْ عُلْبَةٌ - فِيهَا مَاءٌ، يَشُكُّ عُمَرُ فَجَعَلَ يُدْخِلُ يَدَيْهِ فِي الْمَاءِ فَيَمْسَحُ بِهِمَا وَجْهَهُ وَيَقُولُ: ((لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ إِنَّ لِلْمَوْتِ سَكَرَاتٍ))، ثُمَّ نَصَبَ يَدَهُ فَجَعَلَ يَقُولُ : ((فِي الرَّفِيقِ الأَعْلَى)) حَتَّى قُبِضَ وَمَالَتْ يَدُهُ. [راجع: ٨٩٠]

मा'लूम हुआ कि मौत की सख़्ती कोई बुरी निशानी नहीं है बल्कि नेक बन्दों पर इसलिये होती है कि उनके दरजात बुलंद हों।

6511. मुझसे सदक़ा ने बयान किया, कहा हमको अब्दह ने ख़बर दी, उन्हें हिशाम ने, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि चंद बदवी जो नंगे पैर रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आते थे और आपसे पूछा करते थे कि क़यामत कब आएगी? आँहज़रत (ﷺ) उनमें सबसे कम उम्र वाले को देखकर फ़र्माने लगे कि अगर ये बच्चा ज़िन्दा रहा तो इसके बुढ़ापे से पहले तुम पर तुम्हारी क़यामत आ जाएगी। हिशाम ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) की मुराद (क़यामत) से उनकी मौत थी।

٦٥١١- حَدَّثَنِي صَدَقَةُ أَخْبَرَنَا عَبْدَةُ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ رِجَالٌ مِنَ الأَعْرَابِ جُفَاةً يَأْتُونَ النَّبِيَّ ﷺ فَيَسْأَلُونَهُ مَتَى السَّاعَةُ؟ فَكَانَ يَنْظُرُ إِلَى أَصْغَرِهِمْ فَيَقُولُ: ((إِنْ يَعِشْ هَذَا لاَ يُدْرِكْهُ الْهَرَمُ حَتَّى تَقُومَ عَلَيْكُمْ سَاعَتُكُمْ)). قَالَ هِشَامٌ، يَعْنِي مَوْتَهُمْ.

तशरीह : आपका मतलब ये था कि क़यामत कुबरा का वक़्त तो अल्लाह तआला के सिवा किसी को मा'लूम नहीं हर आदमी की मौत उसकी क़यामते सुग़रा है। बाब से हदीष़ की मुनासबत इस तरह है कि आपने मौत को क़यामत क़रार दिया और क़यामत में सब लोग बेहोश हो जाएँगे **फ़सइक़ मन फ़िस्समावाति वल्अर्ज़** मौत में भी बेहोशी होती है यही तर्जुमा बाब है।

6512. हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन अम्र बिन हलहला ने, उनसे सअद बिन कअब बिन मालिक ने, उनसे अबू क़तादा बिन रिब्ई अंसारी (रज़ि.) ने, वो बयान करते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के क़रीब से लोग एक जनाज़ा लेकर गुज़रे तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुस्तरीह या मुस्तराह है या'नी उसे आराम मिल गया, या उससे आराम मिल गया। सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! अल मुस्तरीह वल मुस्तराह मिन्हु का क्या मतलब है? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मोमिन बन्दा दुनिया की मशक़्क़तों और तकलीफ़ों से अल्लाह की रहमत में नजात पा जाता है वो मुस्तरीह है और मुस्तराह मिन्हु वो है कि फ़ाजिर बन्दे से अल्लाह के बन्दे, शहर,

٦٥١٢- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، قَالَ حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ حَلْحَلَةَ، عَنْ مَعْبَدِ بْنِ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ، عَنْ أَبِي قَتَادَةَ بْنِ رِبْعِيٍّ الأَنْصَارِيِّ أَنَّهُ كَانَ يُحَدِّثُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ مُرَّ عَلَيْهِ بِجَنَازَةٍ فَقَالَ: ((مُسْتَرِيحٌ وَمُسْتَرَاحٌ مِنْهُ))، قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ مَا الْمُسْتَرِيحُ وَالْمُسْتَرَاحُ مِنْهُ؟ قَالَ : ((الْعَبْدُ الْمُؤْمِنُ يَسْتَرِيحُ مِنْ نَصَبِ الدُّنْيَا وَأَذَاهَا إِلَى رَحْمَةِ اللهِ عَزَّ

पेड़ और चौपाए सब आराम पा जाते हैं। (दीगर मक़ाम : 6513)

وَجَلَّ، وَالْعَبْدُ الْفَاجِرُ يَسْتَرِيحُ مِنْهُ الْعِبَادُ وَالْبِلاَدُ وَالشَّجَرُ الدَّوَابُّ)).

[طرفه في: ٦٥١٣].

तश्रीह : बन्दे इस तरह आराम पाते हैं कि उसके ज़ुल्म व सितम और बुराइयों से छूट जाते हैं ख़स कम जहाँ पाक हुआ। ईमानदार तकालीफ़े दुनिया से आराम पाकर दाख़िले जन्नत होता है।

6513. मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रब बिन सईद ने, उनसे मुहम्मद बिन ड़मर ने बयान किया, उनसे त़लहा बिन कअ़ब ने बयान किया, उनसे अबू क़तादा ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये मरने वाला या तो आराम पाने वाला है या दूसरे बन्दों को आराम देने वाला है। (राजेअ़ : 6522)

٦٥١٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ عَبْدِ رَبِّهِ بْنِ مَعْبَدٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ حَلْحَلَةَ، حَدَّثَنِي ابْنُ كَعْبٍ، عَنْ أَبِي قَتَادَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مُسْتَرِيحٌ وَمُسْتَرَاحٌ مِنْهُ الْمُؤْمِنُ يَسْتَرِيحُ)).

[راجع: ٦٥١٢]

ईमानदार बन्दा तो आराम ही पाता है। जअ़ल्नल्लाहु मिन्हुम, आमीन

6514. हमसे हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबीबक्र बिन अ़म्र बिन ह़ज़्म ने बयान किया, उन्हों ने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया मय्यत के साथ तीन चीज़ें चलती हैं दो तो वापस आ जाती हैं सिर्फ़ एक काम उसके साथ रह जाता है, उसके साथ उसके घर वाले उसका माल और उसका अ़मल रह जाता है, उसके घर वाले और माल तो वापस आ जाते हैं और उसका अ़मल उसके साथ बाक़ी रह जाता है।

٦٥١٤- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي بَكْرِ بْنِ عَمْرِو بْنِ حَزْمٍ سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((يَتْبَعُ الْمَيِّتَ ثَلاَثَةٌ فَيَرْجِعُ اثْنَانِ، وَيَبْقَى مَعَهُ وَاحِدٌ يَتْبَعُهُ أَهْلُهُ وَمَالُهُ وَعَمَلُهُ، فَيَرْجِعُ أَهْلُهُ وَمَالُهُ وَيَبْقَى عَمَلُهُ)).

तश्रीह : दूसरी ह़दीष़ में है उसका नेक अ़मल अच्छे ख़ूबसूरत शख़्स की सूरत मे बनकर उसके पास आकर उसे ख़ुशी की बशारत देता है और कहता है कि मैं तेरा नेक अ़मल हूँ। बाब की मुनासबत इस त़रह़ से है कि मय्यत के साथ लोग इस वजह से जाते हैं कि मौत की सख़्ती उस पर ह़ाल ही में गुज़री हुई है तो उसकी तस्कीन और तसल्ली के लिये साथ रहते हैं।

6515. हमसे अबुन नोअ़मान ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुख़्तियानी ने, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन ड़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जब तुममें से कोई मरता है तो सुबह व शाम (जब तक वो बरज़ख़ में है) उसके रहने की जगह उसे हर रोज़ दिखाई जाती है या दोज़ख़ हो या जन्नत और

٦٥١٥- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِذَا مَاتَ أَحَدُكُمْ عُرِضَ عَلَيْهِ مَقْعَدُهُ غُدْوَةً وَعَشِيًّا، إِمَّا

कहा जाता है कि ये तेरे रहने की जगह है यहाँ तक कि तू उठाया जाए। (या'नी क़यामत के दिन तक) (राजेअ़ : 1379)

النَّارُ وَإِمَّا الْجَنَّةُ، فَيُقَالُ: هَذَا مَقْعَدُكَ حَتَّى تُبْعَثَ)). [راجع: ١٣٧٩]

तश्रीह : मौत की सख़्तियों में से एक सख़्ती ये भी है कि उसे सुबह व शाम उसका ठिकाना बतलाकर उसे रंज दिया जाता है। अल्बत्ता नेक बन्दों के लिये ख़ुशी है कि वो जन्नत की बशारत पाता है।

6516. हमसे अ़ली बिन जअ़दि ने बयान किया, कहा हमको शुअ़बा बिन हज्जाज ने ख़बर दी, उन्हें आ'मश ने, उन्हें मुजाहिद ने, और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जो लोग मर गये उनको बुरा न कहो क्योंकि जो कुछ उन्होंने आगे भेजा था उसके पास वो ख़ुद पहुँच चुके हैं। उन्होंने बुरे भले जो भी अ़मल किये थे वैसा बदला पा लिया। (राजेअ़ : 1393)

٦٥١٦- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الْجَعْدِ، أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ مُجَاهِدٍ، عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لاَ تَسُبُّوا الأَمْوَاتَ فَإِنَّهُمْ قَدْ أَفْضَوْا إِلَى مَا قَدَّمُوا)). [راجع: ١٣٩٣]

अब बुरा कहने से क्या फ़ायदा। लोग उन मुर्दों को बुरा कहा करते थे जो मौत के वक़्त बहुत सख़्ती उठाते थे जो होना था हुआ अब बुरा कहने की ज़रूरत नहीं है हाँ! जो बुरे हैं वो बुरे ही रहेंगे, कुफ़्फ़ार-मुश्रिकीन वग़ैरह वग़ैरह जिनके लिये ख़ुलूद फ़िन् नार का फ़ैसला क़तई है। हदीष में ये भी इर्शाद है कि मरने के बाद बुरे लोगों को भी गाली-गलूच से याद नहीं करना चाहिये क्योंकि वो किये गये अ़मलों का बदला पा चुके हैं। सुब्हानल्लाह! क्या पाकीज़ा ता'लीम है। अल्लाह अ़मल की तौफ़ीक़ दे आमीन।

ख़ात्मा : अल्हम्दुलिल्लाह वल मिन्हु कि आज बुख़ारी शरीफ़ तर्जुमा उर्दू के पारा नम्बर 26 की तस्वीद से फ़राग़त हासिल हो रही है ये पारा किताबुल इस्तीज़ान, किताबुद् दअ़वात और किताबुर्रिक़ाक़ पर मुश्तमिल है जिसमें तहज़ीब व अख़्लाक़ और दुआओं और नसीहतों की बहुत सी क़ीमती बातें जनाब फ़ख़्रे बनी आदम हज़रत रसूले करीम (ﷺ) की ज़ुबाने मुबारक से बयान में आई हैं। जिनके बग़ौर मुतालआ करने और जिन पर अ़मल पैरा होने से दीन व दुनिया की बेशुमार सआ़दतें हासिल हो सकती हैं। इस पारे की तस्वीद पर भी मिष्ले साबिक़ बहुत सा क़ीमती वक़्त सर्फ़ किया गया है। मतन तर्जुमा व तशरीहात के लफ़्ज़-लफ़्ज़ को बहुत ही ग़ौरो ख़ौज़ के हवाला-ए-क़लम किया गया है और सफ़र व हज़र में रंज व राहत व हवादिषे क़षीरा व अम्राज़े क़ल्बी के बावजूद निहायत ही ज़िम्मेदारी के साथ इस अ़ज़ीम ख़िदमत को अंजाम दिया गया है फिर भी बहुत सी ख़ामियों का इम्कान है इसलिये माहिरीने फ़न से बाअदब दरगुज़र की नज़र से काम लेने के लिये उम्मीदवार हूँ। अगर वाक़ई लग़्ज़िशों के लिये अहले इल्म हज़रात मेरी हयाते मुस्तआर में मुत्तलअ़ करेंगे तो बसद शुक्रिया तबेअ़ षानी के मौक़े पर इस्लाह कर दी जाएगी और मेरे दुनिया से चले जाने के बाद अगर वैसे अग़लात को मा'लूम करने वाले भाई अपनी क़लम से दुरुस्तगी फ़र्मा लेंगे और मुझको दुआए ख़ैर से याद करेंगे तो मैं भी उनका पेशगी शुक्रिया अदा करता हूँ।

या अल्लाह! हयाते मुस्तआर बहुत तेज़ी के साथ ख़ात्मे की तरफ़ जा रही है जिस तरह यहाँ तक तूने मुझे पहुँचाया है इसी तरह बक़ाया ख़िदमत को भी पूरा करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़र्माया और इस ख़िदमत को न सिर्फ़ मेरे लिये बल्कि मेरे वालिदैन और औलाद और तमाम मुआविनीने किराम व क़द्रदानाने इज़ाम के हक़ में कुबूल फ़र्माकर बतौरे ईसाले ष़वाब इस अ़ज़ीम नेकी को कुबूले आ़म और हयाते दवाम अ़ता फ़र्मा। **रब्बना तक़ब्बल मिन्ना इन्नक अन्तस्समीउ़ल्अलीम व तुब अ़लैना इन्नक अन्तत्तव्वाबुर्रहीम व सल्लल्लाहु अ़ला ख़ैरि ख़ल्क़िही मुहम्मदिंव्व अ़ला आलिही व अस्हाबिही अज्मईन बिरहमतिक या अर्हमर्राहिमीन, आमीन!**

ख़ादिम मुहम्मद दाऊद राज़ अस् सलफ़ी
साकिन मौज़अ राहपुवा नज़द क़स्बा बंगवाँ ज़िला गुड़गांव
हरियाणा भारत। (10 जमादिष़्ानी 1396 हिजरी)

हम्द-ए-बारी

अज़्मे मुहकम अता कर ख़ुदाया हौसलों को नई ज़िन्दगी दे।
सर उठाये हैं हर सू अंधेरे, अब चराग़ों को तू रोशनी दे।

तू जो चाहे तो ऐ मेरे आक़ा डूबे जग सारा, कश्ती बचेगी।
आग में फूल खिलते रहेंगे। राह दरिया बनाती रहेगी।
तेरी क़ुदरत में क्या कुछ नहीं है। बस हमें जज़्ब-ए-बन्दगी दे।
सर उठाये हैं हर सू अंधेरे, अब चराग़ों को तू रोशनी दे।

हमको तौफ़ीक़ दे, नेक बनकर हर ज़हन से अंधेरे मिटाएँ।
प्यार व इख़्लास के फूलों से हम राह इन्सानियत की सजाएँ।
महके हर घर का आँगन खुशी से ऐसे गुलशन को रुते शबनमी दे।
सर उठाये हैं हर सू अंधेरे, अब चराग़ों को तू रोशनी दे।

बद्र की कामरनी में तू है, तू ही ख़ैबर की अज़्मत की धारा।
हक़ व बातिल के हर मारके में, तू रहा ग़ाज़ियों का सहारा।
आज भी हर तरफ़ क़रबला है, हमको शब्बीर की तिश्नगी दे।
सर उठाये हैं हर सू अंधेरे, अब चराग़ों को तू रोशनी दे।

इल्म भी दे, शऊरे अमल भी सच को पहचान ले, वो नज़र दे।
शके परवाज़ो-पर हो, जहाँ को, या ख़ुदा हमको वो बाल-व पर दे।
लाज दस्ते दुआ की तू रख ले, मौत बेबस हो वो ज़िन्दगी दे।
सर उठाये हैं हर सू अंधेरे, अब चराग़ों को तू रोशनी दे।

बशीर परवाज़, शोलापुर